

# Allinone®

संपूर्ण अध्ययन | संपूर्ण अभ्यास | संपूर्ण मूल्यांकन



arihant

# हिंदी

## ICSE (9 एवं 10)

एकमात्र पुस्तक जिसमें

पाठ्यपुस्तक का पूर्णतया अध्ययन

परीक्षाओं के प्रश्न एवं अभ्यास प्रश्न

5 प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र व  
नमूना प्रश्न-पत्र

पूर्णतया 2021-22

पाठ्यक्रम पर आधारित



**Allinone®**

संपूर्ण अध्ययन | संपूर्ण अभ्यास | संपूर्ण मूल्यांकन

**हिंदी**

ICSE (9 एवं 10)



**All in one®**

संपूर्ण अध्ययन | संपूर्ण अभ्यास | संपूर्ण मूल्यांकन

**हिंदी**

ICSE (9 एवं 10)

लेखक  
कैलाश कोहली, डिम्पल पूनिया, कविता

 **arihant**

अरिहन्त प्रकाशन (स्कूल डिवीज़न सीरीज़)





## अरिहन्त प्रकाशन (स्कूल डिवीज़न सीरीज़)

सर्वाधिकार सुरक्षित

### © प्रकाशक

इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके—इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना वितरण नहीं किया जा सकता है। 'अरिहन्त' ने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए प्रकाशक, संपादक, लेखक अथवा मुद्रक जिम्मेदार नहीं हैं।

सभी प्रतिवाद का न्यायिक क्षेत्र 'मेरठ' होगा।

### ❧ रजि. कार्यालय

'रामछाया' 4577/15, अग्रवाल रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली- 110002  
फोन: 011-47630600, 43518550; फैक्स: 011-23280316

### ❧ मुख्य कार्यालय

कालिन्दी, टी०पी० नगर, मेरठ (यूपी)— 250002  
फोन: 0121-2401479, 2512970, 4004199; फैक्स: 0121-2401648

### ❧ शाखा कार्यालय

आगरा, अहमदाबाद, बरेली, बंगलुरु, चेन्नई, दिल्ली, गुवाहाटी,  
हैदराबाद, जयपुर, झाँसी, कोलकाता, लखनऊ, नागपुर तथा पुणे

❧ ISBN : 978-93-26195-01-0

❧ :

Published by Arihant Publications (India) Ltd.

PO No : TXT-XX-XXXXXXX-X-XX

### प्रोडक्शन टीम

पब्लिशिंग मैनेजर : केशव मोहन, अमित वर्मा  
प्रोजेक्ट हैड : करिश्मा यादव  
प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर : मनीष कुमार  
कवर डिज़ाइनर : शानू मंसूरी

इनर डिज़ाइनर : अंकित सैनी  
पेज लेआउट : जितेन्द्र कुमार  
प्रूफ रीडर : प्राची, जयश्री

'अरिहन्त' की पुस्तकों के बारे में अधिक जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट [www.arihantbooks.com](http://www.arihantbooks.com) पर लॉग इन करें या [info@arihantbooks.com](mailto:info@arihantbooks.com) पर संपर्क करें।

Follow us on    

# हिंदी

ICSE (9 एवं 10)

# आमुख

**All in One** हिंदी कक्षा 9th और 10th विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है, जो ICSE पाठ्यक्रम के अनुसार कक्षा 9th और 10th में अध्ययनरत हैं। अनुभवी शिक्षक व परीक्षक द्वारा लिखी गई इस पुस्तक में वह सामग्री दी गई है, जो विद्यार्थियों के सभी प्रश्नों को हल करने में समर्थ है व अंततः परीक्षा में उन्हें संपूर्ण सफलता दिलाने में सहायक होगी।

पाठ्यक्रम के अनुसार इस पुस्तक को दो खंडों में बाँटा गया है। **खंड 'क'** के अंतर्गत (संक्षिप्त लेखन, कहानी लेखन, चित्र-लेखन, पत्र-लेखन, अपठित गद्यांश एवं व्यावहारिक व्याकरण) को सम्मिलित किया गया है। **खंड 'ख'** के अंतर्गत (साहित्य सागर : संक्षिप्त कहानियाँ एवं पद्य भाग, एकांकी संचय एवं नया रास्ता : उपन्यास) को सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक खंड के आरंभ में संबंधित अध्याय का संपूर्ण परिचय, साधित उदाहरण, अभ्यास के लिए प्रश्न तथा पूर्व परीक्षाओं के प्रश्न दिए गए हैं एवं पाठ्यपुस्तक में दिए गए सभी प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए हैं।

पाठ्य सामग्री के अध्ययन के साथ-साथ विद्यार्थियों को अभ्यास कराने के लिए पुस्तक में उचित सामग्री उपलब्ध है। परीक्षा के संपूर्ण अभ्यास के लिए पुस्तक के अंत में 5 प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र दिए गए हैं। ये सभी प्रश्न-पत्र ICSE के संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित हैं तथा ICSE द्वारा जारी प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र के पैटर्न के अनुरूप हैं।

## इस पुस्तक की कुछ मुख्य विशेषताएँ निम्न हैं

- खंड 'क' (संक्षिप्त लेखन, कहानी लेखन, चित्र-लेखन, पत्र-लेखन, अपठित गद्यांश व व्यावहारिक व्याकरण) तथा खंड 'ख' (पाठ्यपुस्तक) का पूर्णतया अध्ययन, अभ्यास प्रश्न व पूर्व परीक्षाओं के प्रश्नों के साथ
- परीक्षा में पूछे जाने वाले सभी प्रकार के प्रश्नों का समावेश
- सभी खंडों के अलग-अलग अभ्यास के लिए पुस्तक के अंत में परीक्षा के अभ्यास के लिए संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित 5 प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र
- पुस्तक के अंत में **ICSE नमूना प्रश्न-पत्र** एवं नवीनतम **ICSE सॉल्व्ड पेपर** का समावेश

हम इस बात को लेकर पूरी तरह आश्वस्त हैं कि यह पुस्तक अपने नाम **All in One** के अनुरूप ही अपने आप में संपूर्ण पुस्तक है। यह निश्चित रूप से आपको परीक्षा में उच्च श्रेणी दिलाने में सफल होगी।

हम अरिहन्त प्रकाशन, मेरठ का धन्यवाद व्यक्त करते हैं कि उन्होंने हमें इस पुस्तक को लिखने का अवसर प्रदान किया। इस पुस्तक के बनने में अरिहन्त की डीटीपी यूनिट व प्रूफ रीडिंग टीम का सहयोग अति प्रशंसनीय है। इस पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए आपकी ओर से हमें जो भी सुझाव प्राप्त होंगे, हम उनको इस पुस्तक के अगले संस्करण में निश्चित रूप से स्थान देंगे।

शुभकामनाओं सहित!

लेखक  
कैलाश कोहली, डिम्पल पूनिया, कविता

प्रत्येक खंड के अध्याय में छात्रों के अभ्यास के लिए प्रश्न अभ्यास एवं अभ्यास प्रश्नावली को दिया गया है। ये सभी प्रश्न पूर्णतया अध्याय पर आधारित हैं। प्रश्न अभ्यास के अंतर्गत प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए हैं एवं अभ्यास प्रश्नावली में उत्तर रहित प्रश्नों का समावेश किया गया है जिससे विद्यार्थियों का स्वमूल्यांकन हो सके।

# हिंदी

ICSE (9 एवं 10)

इस प्रकार तैयार की गई है कि यह आपके हिंदी भाषा के ज्ञान को बढ़ाने का साधन सिद्ध होगी। यह पुस्तक विशेष रूप से कक्षा 9 एवं 10 हिंदी की परीक्षा के लिए तैयार की गई है। आशा की जाती है कि यह पुस्तक संबंधित विषय के बारे में आपके ज्ञान को सुदृढ़ व विस्तृत करेगी तथा अंततः आपको परीक्षा टॉप करने वाले छात्रों की पंक्ति में स्थान दिलाएगी।

## पाठ्यपुस्तक का अध्ययन

पाठ्यपुस्तक के सभी अध्यायों में संपूर्ण व्याख्या/कहानी का सार दिया गया है। प्रत्येक अध्याय में कहानी का परिचय एवं पात्र परिचय भी दिया गया है। प्रश्न अभ्यास के अंतर्गत प्रत्येक अध्याय से संबंधित प्रश्नों के उत्तर, पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर, पूर्व परीक्षाओं के प्रश्नोत्तर तथा साथ ही परीक्षोपयोगी अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर भी दिए गए हैं। प्रत्येक अध्याय के साथ ही उससे संबंधित अभ्यास प्रश्नावली को भी दिया गया है।

## ICSE प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 1

(हल सहित)

## हिंदी

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 80

- निर्देश 1. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं—'क' और 'ख'।  
2. खंड 'क' के सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।  
3. खंड 'ख' से कोई भी चार प्रश्न करने अनिवार्य हैं, जिनमें दो प्रश्न पाठ्यपुस्तक के होने तथा अन्य दो किसी अन्य पुस्तक से होंगे।

## ICSE नमूना प्रश्न-पत्र

### हिंदी

ICSE की परीक्षा के लिए नमूना प्रश्न-पत्र

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 80

- निर्देश 1. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं—'क' और 'ख'।  
2. खंड 'क' के सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।  
3. खंड 'ख' से कोई भी चार प्रश्न करने अनिवार्य हैं, जिनमें दो प्रश्न पाठ्यपुस्तक के होने तथा अन्य दो किसी अन्य पुस्तक से होंगे।

## ICSE सॉल्वड पेपर 2019

### हिंदी

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 80

- निर्देश 1. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं—'क' और 'ख'।  
2. खंड 'क' के सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।  
3. खंड 'ख' से कोई भी चार प्रश्न करने अनिवार्य हैं, जिनमें दो प्रश्न पाठ्यपुस्तक के होने तथा अन्य दो किसी अन्य पुस्तक से होंगे।

### खंड 'क'

(40 अंका)

1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए।  
(a) "परिचयकार की भावना जीवन-कथाएँ से पूर्ण होती है। इसे भी परिचयकार से भरा जीवन ही जीना चाहिए।" विषय को स्पष्ट करते हुए अपने विचार लिखिए।  
(ii) आरक्षण देश में आरसीय विद्यालयों (Boarding Schools) की शुरुआत की आरंभ है। आरसीय विद्यालयों की छात्रों के जीवन में क्या उपयोगिता हो सकती है? इस प्रकार के विद्यालयों की आवश्यकता एवं बुनियादी के बारे में बताते हुए वर्तमान में इसकी

### संक्षिप्त कहानियाँ

अध्याय

1

## बात अठन्नी की सुदर्शन

### लेखक परिचय

सुदर्शन जी का जन्म 1895 ई. में विद्यालोक (अब पकिस्तान में) में हुआ। इनका पारंपरिक नाम सुदर्शन था। वे मुस्लिम धर्म में शैक्षणिक रूप से शिक्षित थे। इन्होंने कई वर्षों में विभिन्न-विभिन्न 'जर्नलों' के सम्पादन के रूप में कार्य किया। सुदर्शन मुस्लिम समाज व राष्ट्र के कार्य थे। इनकी कहानियों का मुख्य उद्देश्य समाज व राष्ट्र को प्रगल्भ व सुदृढ़ बनाना था। इनकी प्रमुख कहानी 'इस की जीत' थी, जो वर्ष 1920 में सरकारी में प्रकाशित हुई। 'पुष्पलता', 'सुदर्शन', 'सुदर्शन तथा' और 'दण्ड' इनके प्रसिद्ध कहानियों-संग्रह हैं तथा 'परिवर्तन', 'पाठ्यक्रम

### कहानी का परिचय

'बात अठन्नी की' कहानी के माध्यम से सुदर्शन जी ने समाज की ग्राह्य-मनोरंका पर करारा प्रहार किया है। रसीला, इंडीनिगर बाबू जलशक्ति के घर में नौकरानी सरला तथा उसकी मायिक-आय इन्हीं यहाँ की कि उसकी परिचार का गुजारा सही से हो सके। रसीला का परिचार गैर में रहता था, जिसकी शिम्मेदारी उसके कौन पर थी। बाबू-बाबू कार्यवाही करने पर भी इंडीनिगर सरला ने उसका फैसला नहीं बदला। विचारसरणी होने के कारण उसने भी कहीं और नौकरानी नहीं खोजी। शेष सलीमुद्दीन रसीला मजिस्ट्रेट थे, जो इंडीनिगर साहब के पड़ोस में रहते थे। उनके पीछीदार रोज़ान और रसीला में बहुत मैत्री थी। पिताजी की रिश्तियों में रसीला की मदद उसका मित्र रोज़ान बनता है। वह रोज़ान के बारे में कुछ बताता है। केवल अठन्नी भोज रह जाती है। एक दिन जलशक्ति को रिश्ता उसे देखकर रसीला भी बड़े-बानी करने की सोचता है। वह मिस्ट्री के लिए दिए पैसे में से अठन्नी बचाकर जमान बुला देता है, किन्तु इस अवस्था के कारण उसे छः महीने की

### प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. वह सोचता, "वहाँ इतने सख्तों में है। अन्तर जल नौकरों पर विचार नहीं करे, किन्तु गुप्त पर यहाँ कभी किसी ने खिंट नहीं किया। वहाँ से जाऊँ तो साहब कोई ब्याह-ब्याह दे दें, पर ऐसा आदर न मिलेगा।" पृष्ठ सं. 6  
(क) 'वह' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है? वह क्या सोचा करता था? (2)  
(ख) 'वह' शब्द 'रसीला' के लिए प्रयोग किया गया है। वह सोचता था कि अपने लोभ-लालच का फलाना नहीं करेगा है, किन्तु गुप्त पर यहाँ किसी ने खिंट नहीं किया वहाँ से जाऊँ तो साहब कोई ब्याह-ब्याह दे दें पर ऐसा आदर न मिलेगा।

नहीं करे, किन्तु अपने मायिक-मनोरंकि पर उसे विचार था कि वे उस पर संतुष्ट नहीं करे थे। रसीला अपने पूरे परिवार का ध्यान रखता था। अपने परिवार के विचार में ही सोचकर वह इंडीनिगर बाबू से बात करने के लिए कहता है।

2. पहले से रसीला जमान रहा। फिर रोज़ान ने कहा, "कोई बात नहीं है, जो छात्रों की होती।" जमान ने रोज़ान का यह देख जो जमान पर जाई बोल "पर से छात्र आता है, कबसे बीमार है और सफ़ा नहीं है।" पृष्ठ सं. 6  
(क) रोज़ान ने रसीला को सोचने खाने के लिए क्यों कहा? (2)  
(ख) जमान ने जब रसीला को रोज़ान देखा, तो उसने उसकी सोचने का कारण पूछा। रसीला अपनी सोचने की विचार था, इसलिए रोज़ान ने रसीला को सोचने (काम) करने के लिए कहा किसे वह उसकी परेशानी को कारण जान सके।

### अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. शेष साहब न्यायप्रिय आदमी थे। उन्होंने रसीला को छः महीने की सज़ा सुना दी और रसीला से मुँह पोछा। वह वही रसीला था, जिसमें एक दिन पहले किसी ने हज़ार रुपये बाँधकर दिए थे। फ़ैसला सुनकर रोज़ान की आँखों में खुन उतर आया। पृष्ठ सं. 8  
(क) मुकदमा किसकी कचहरी में पेश हुआ तथा क्यों? (2)  
(ख) एक और अपराध करने का साहस कौन नहीं जुटा पा रहा था? (2)  
(ग) अपराध स्वीकार्य की भावना किसमें थी, इसका परिणाम क्या हुआ? (2)  
(घ) 'उसकी' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है? 'हुदुद' मेरा वह पहला अपराध है। इस बार माफ़ कर दीजिए। फिर गलती न होगी।' यह किसने, किससे और क्यों कहा था? (3)  
2. रोज़ान पर पहुँचा। एक दासी ने पूछा, "रसीला का क्या हुआ?"  
'छः महीने की कैद'  
'अच्छा हुआ। वह इसी लायक था।'  
रोज़ान ने गुस्से से कहा, "यह ईसाक नहीं अँधेरे है। सिर्फ़ एक अठन्नी की ही तो बात थी।"  
(क) रोज़ान की आँखों में खुन क्यों उतर आया? (2)  
(ख) रसीला को 'छः महीने की कैद' किसने और क्यों दी थी? (2)  
(ग) अच्छा हुआ, "वह इसी लायक था" यह किसने कहा व क्यों? (3)  
(घ) 'यह ईसाक नहीं अँधेरे है' ऐसा क्यों व किसने कहा है? (3)

## प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र/नमूना प्रश्न-पत्र एवं सॉल्वड पेपर 2019

पुस्तक के अंत में परीक्षा के अभ्यास के लिए संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित 5 प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र, ICSE नमूना प्रश्न-पत्र एवं ICSE सॉल्वड पेपर 2019 का समावेश किया गया है।

## विषय-सूची

### खंड 'क'

|                                            |        |
|--------------------------------------------|--------|
| 1. संक्षिप्त लेखन                          | 3-21   |
| संक्षिप्त लेखन हेतु ध्यान देने योग्य बातें | 3      |
| संक्षिप्त लेखन के अंग                      | 3      |
| संक्षिप्त लेखन के प्रकार                   | 4      |
| प्रश्न अभ्यास                              | 4-20   |
| अभ्यास प्रश्नावली                          | 21     |
| 2. कहानी लेखन                              | 22-29  |
| साधित उदाहरण                               | 22-23  |
| प्रश्न अभ्यास                              | 23-28  |
| अभ्यास प्रश्नावली                          | 29     |
| 3. चित्र-लेखन                              | 30-41  |
| चित्र-लेखन के लिए आवश्यक तथ्य              | 30     |
| साधित उदाहरण                               | 31     |
| प्रश्न अभ्यास                              | 32-40  |
| अभ्यास प्रश्नावली                          | 41     |
| 4. पत्र-लेखन                               | 42-66  |
| पत्र के अंग                                | 42-43  |
| औपचारिक पत्र एवं उसका प्रारूप              | 43-44  |
| औपचारिक पत्रों के उदाहरण                   | 45-49  |
| प्रश्न अभ्यास (औपचारिक पत्र)               | 50-57  |
| अभ्यास प्रश्नावली (औपचारिक पत्र)           | 57     |
| अनौपचारिक पत्र एवं उसका प्रारूप            | 58-59  |
| प्रश्न अभ्यास (अनौपचारिक पत्र)             | 60-66  |
| अभ्यास प्रश्नावली (अनौपचारिक पत्र)         | 66     |
| 5. अपठित गद्यांश                           | 67-86  |
| अपठित गद्यांश को हल करने के चरणबद्ध तरीके  | 67     |
| साधित उदाहरण                               | 68-69  |
| प्रश्न अभ्यास                              | 70-81  |
| अभ्यास प्रश्नावली                          | 82-86  |
| 6. व्यावहारिक व्याकरण                      | 87-118 |
| विलोम शब्द                                 | 87-89  |

|                         |         |
|-------------------------|---------|
| अभ्यास प्रश्नावली       | 89      |
| पर्यायवाची शब्द         | 90-91   |
| अभ्यास प्रश्नावली       | 92      |
| मुहावरे-लोकोक्तियाँ     | 92-97   |
| अभ्यास प्रश्नावली       | 98      |
| भाववाचक संज्ञाएँ बनाना  | 98-99   |
| अभ्यास प्रश्नावली       | 99      |
| लिंग परिवर्तन           | 100-101 |
| अभ्यास प्रश्नावली       | 101     |
| विशेषण                  | 102-105 |
| अभ्यास प्रश्नावली       | 105     |
| पदक्रम                  | 106     |
| अभ्यास प्रश्नावली       | 106     |
| वचन परिवर्तन            | 107     |
| अभ्यास प्रश्नावली       | 108     |
| वाक्यांश के लिए एक शब्द | 108-110 |
| अभ्यास प्रश्नावली       | 110     |
| काल                     | 111-112 |
| अभ्यास प्रश्नावली       | 112     |
| अशुद्धि शोधन            | 113-115 |
| अभ्यास प्रश्नावली       | 116     |
| वाक्य-विचार             | 116-118 |
| अभ्यास प्रश्नावली       | 118     |

### खंड 'ख'

#### साहित्य सागर

|                                          |         |
|------------------------------------------|---------|
| • संक्षिप्त कहानियाँ                     | 121-170 |
| 1. बात अठन्नी की                         | 121-126 |
| कहानी का परिचय एवं पात्र-परिचय           | 121-122 |
| कहानी का सार                             | 122     |
| कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता | 122     |
| प्रश्न अभ्यास                            | 123-125 |
| अभ्यास प्रश्नावली                        | 126     |

|                                          |         |                                                |         |
|------------------------------------------|---------|------------------------------------------------|---------|
| 2. काकी                                  | 127-131 | कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता       | 159     |
| कहानी का परिचय एवं पात्र-परिचय           | 127     | प्रश्न अभ्यास                                  | 159-161 |
| कहानी का सार                             | 128     | अभ्यास प्रश्नावली                              | 161     |
| कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता | 128     |                                                |         |
| प्रश्न अभ्यास                            | 129-130 |                                                |         |
| अभ्यास प्रश्नावली                        | 131     |                                                |         |
| 3. महायज्ञ का पुरस्कार                   | 132-136 | 9. भेड़े और भेड़िए                             | 162-166 |
| कहानी का परिचय एवं पात्र-परिचय           | 132-133 | कहानी का परिचय एवं पात्र-परिचय                 | 162-163 |
| कहानी का सार                             | 133     | कहानी का सार                                   | 163     |
| कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता | 133     | कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता       | 163     |
| प्रश्न अभ्यास                            | 134-136 | प्रश्न अभ्यास                                  | 164-166 |
| अभ्यास प्रश्नावली                        | 36      | अभ्यास प्रश्नावली                              | 166     |
| 4. नेताजी का चश्मा                       | 137-142 | 10. दो कलाकार                                  | 167-170 |
| कहानी का परिचय एवं पात्र-परिचय           | 137-138 | कहानी का परिचय एवं पात्र-परिचय                 | 167     |
| कहानी का सार                             | 138-139 | कहानी का सार                                   | 168     |
| प्रश्न अभ्यास                            | 140-142 | कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता       | 168     |
| अभ्यास प्रश्नावली                        | 142     | प्रश्न अभ्यास                                  | 169-170 |
|                                          |         | अभ्यास प्रश्नावली                              | 170     |
| 5. अपना-अपना भाग्य                       | 143-146 | • पद्य भाग                                     | 171-211 |
| कहानी का परिचय एवं पात्र-परिचय           | 143     | 1. साखी                                        | 171-174 |
| कहानी का सार                             | 144     | साखियों का सार एवं उनकी संदर्भ सहित व्याख्या   | 171-172 |
| कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता | 144     | प्रश्न अभ्यास                                  | 173-174 |
| प्रश्न अभ्यास                            | 145-146 | अभ्यास प्रश्नावली                              | 174     |
| अभ्यास प्रश्नावली                        | 146     | 2. गिरिधर की कुंडलियाँ                         | 175-180 |
| 6. बड़े घर की बेटा                       | 147-151 | कुंडलियों का सार एवं उनकी संदर्भ सहित व्याख्या | 175-177 |
| कहानी का परिचय एवं पात्र-परिचय           | 147-148 | प्रश्न अभ्यास                                  | 178-180 |
| कहानी का सार                             | 148-149 | अभ्यास प्रश्नावली                              | 180     |
| कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता | 149     | 3. स्वर्ग बना सकते हैं                         | 181-185 |
| प्रश्न अभ्यास                            | 150-151 | कविता का सार एवं उसकी संदर्भ सहित व्याख्या     | 181-183 |
| अभ्यास प्रश्नावली                        | 151     | प्रश्न अभ्यास                                  | 183-185 |
| 7. संदेह                                 | 152-156 | अभ्यास प्रश्नावली                              | 185     |
| कहानी का परिचय एवं पात्र-परिचय           | 152-153 | 4. वह जन्मभूमि मेरी                            | 186-188 |
| कहानी का सार                             | 153     | कविता का सार एवं उसकी संदर्भ सहित व्याख्या     | 186-187 |
| कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता | 153     | प्रश्न अभ्यास                                  | 187-188 |
| प्रश्न अभ्यास                            | 154-156 | अभ्यास प्रश्नावली                              | 188     |
| अभ्यास प्रश्नावली                        | 156     | 5. मेघ आए                                      | 189-192 |
| 8. जामुन का पेड़*                        | 157-161 | कविता का सार एवं उसकी संदर्भ सहित व्याख्या     | 189-190 |
| कहानी का परिचय एवं पात्र-परिचय           | 157-158 | प्रश्न अभ्यास                                  | 191-19  |
| कहानी का सार                             | 158     | अभ्यास प्रश्नावली                              | 192     |

|                                            |         |
|--------------------------------------------|---------|
| 6. सूर के पद                               | 193-196 |
| पदों का सार एवं उसकी संदर्भ सहित व्याख्या  | 193-194 |
| प्रश्न अभ्यास                              | 195-196 |
| अभ्यास प्रश्नावली                          | 196     |
| 7. विनय के पद                              | 197-199 |
| पदों का सार एवं उसकी संदर्भ सहित व्याख्या  | 197-198 |
| प्रश्न अभ्यास                              | 198-199 |
| अभ्यास प्रश्नावली                          | 199     |
| 8. भिक्षुक                                 | 200-202 |
| कविता का सार एवं उसकी संदर्भ सहित व्याख्या | 200-201 |
| प्रश्न अभ्यास                              | 201-202 |
| अभ्यास प्रश्नावली                          | 202     |
| 9. चलना हमारा काम है                       | 203-206 |
| कविता का सार एवं उसकी संदर्भ सहित व्याख्या | 203-205 |
| प्रश्न अभ्यास                              | 205-206 |
| अभ्यास प्रश्नावली                          | 206     |
| 10. मातृ-मंदिर की ओर                       | 207-211 |
| कविता का सार एवं उसकी संदर्भ सहित व्याख्या | 207-209 |
| प्रश्न अभ्यास                              | 210-211 |
| अभ्यास प्रश्नावली                          | 211     |

## एकांकी संचय

|                                 |         |
|---------------------------------|---------|
| 1. संस्कार एवं भावना            | 212-216 |
| एकांकी का परिचय एवं पात्र-परिचय | 212-213 |
| एकांकी का सार                   | 213     |
| शीर्षक की सार्थकता व उद्देश्य   | 213     |
| प्रश्न अभ्यास                   | 214-216 |
| अभ्यास प्रश्नावली               | 216     |
| 2. बहू की विदा                  | 217-221 |
| एकांकी का परिचय एवं पात्र-परिचय | 217-218 |
| एकांकी का सार                   | 218     |
| शीर्षक की सार्थकता व उद्देश्य   | 218     |
| प्रश्न अभ्यास                   | 219-221 |
| अभ्यास प्रश्नावली               | 221     |
| 3. मातृभूमि का मान              | 222-226 |
| एकांकी का परिचय एवं पात्र-परिचय | 222-223 |
| एकांकी का सार                   | 223     |

|                                 |         |
|---------------------------------|---------|
| शीर्षक की सार्थकता व उद्देश्य   | 224     |
| प्रश्न अभ्यास                   | 224-226 |
| अभ्यास प्रश्नावली               | 226     |
| 4. सूखी डाली                    | 227-233 |
| एकांकी का परिचय एवं पात्र-परिचय | 227-228 |
| एकांकी का सार                   | 228-229 |
| शीर्षक की सार्थकता व उद्देश्य   | 229     |
| प्रश्न अभ्यास                   | 230-233 |
| अभ्यास प्रश्नावली               | 233     |
| 5. महाभारत की एक साँझ           | 234-239 |
| एकांकी का परिचय एवं पात्र-परिचय | 234-235 |
| एकांकी का सार                   | 235-236 |
| शीर्षक की सार्थकता व उद्देश्य   | 236     |
| प्रश्न अभ्यास                   | 237-239 |
| अभ्यास प्रश्नावली               | 239     |
| 6. दीपदान                       | 240-246 |
| संक्षिप्त सार एवं पात्र-परिचय   | 240-241 |
| एकांकी का सार                   | 241-242 |
| शीर्षक की सार्थकता व उद्देश्य   | 242     |
| प्रश्न अभ्यास                   | 243-246 |
| अभ्यास प्रश्नावली               | 246     |

## नया रास्ता (उपन्यास)

|                                |         |
|--------------------------------|---------|
| उपन्यास परिचय एवं पात्र परिचय  | 247-248 |
| उपन्यास का उद्देश्य एवं सारांश | 248     |
| • अध्याय-1                     |         |
| पाठ का सारांश                  | 249     |
| प्रश्न अभ्यास                  | 249-251 |
| • अध्याय-2                     |         |
| पाठ का सारांश                  | 251-252 |
| प्रश्न अभ्यास                  | 252-253 |
| • अध्याय-3                     |         |
| पाठ का सारांश                  | 254     |
| प्रश्न अभ्यास                  | 255-256 |
| • अध्याय-4                     |         |
| पाठ का सारांश                  | 256-257 |
| प्रश्न अभ्यास                  | 257-258 |
| • अध्याय-5                     |         |
| पाठ का सारांश                  | 259     |
| प्रश्न अभ्यास                  | 260-261 |



|                                               |                    |                                               |                    |
|-----------------------------------------------|--------------------|-----------------------------------------------|--------------------|
| • अध्याय-6<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास  | 261-262<br>262-263 | • अध्याय-19<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 294<br>295-296     |
| • अध्याय-7<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास  | 264<br>265-266     | • अध्याय-20<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 296-297<br>298-299 |
| • अध्याय-8<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास  | 266-267<br>267-268 | • अध्याय-21<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 299-300<br>300-301 |
| • अध्याय-9<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास  | 268-270<br>270-272 | • अध्याय-22<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 301-302<br>302-303 |
| • अध्याय-10<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 272-273<br>273-274 | • अध्याय-23<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 304<br>304-305     |
| • अध्याय-11<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 274-275<br>275-277 | • अध्याय-24<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 306<br>307-308     |
| • अध्याय-12<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 277-278<br>278-279 | • अध्याय-25<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 308-309<br>309-310 |
| • अध्याय-13<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 280<br>281-282     | • अध्याय-26<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 310-311<br>311-312 |
| • अध्याय-14<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 282-283<br>283-284 | • अभ्यास प्रश्नावली (1-26)                    | 313-315            |
| • अध्याय-15<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 284-285<br>285-286 | • ICSE प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र (1-5)            | 319-358            |
| • अध्याय-16<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 286-287<br>288-289 | • ICSE नमूना प्रश्न-पत्र                      | 361-373            |
| • अध्याय-17<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 289-290<br>290-291 | • ICSE सॉल्वड पेपर 2019                       | 377-388            |
| • अध्याय-18<br>पाठ का सारांश<br>प्रश्न अभ्यास | 292<br>293         | • भीड़ में खोया आदमी                          | 389-397            |
|                                               |                    | • ICSE नमूना प्रश्न-पत्र (सेमेस्टर I)         | 401-405            |
|                                               |                    | • ICSE नमूना प्रश्न-पत्र (सेमेस्टर II)        | 406-411            |
|                                               |                    | • ICSE सॉल्वड पेपर 2021-22 (सेमेस्टर I)       | 412-416            |

\* यह पाठ पाठ्यक्रम से हटा दिया गया है। इसके स्थान पर भीड़ में खोया आदमी पाठ जोड़ा गया है।





# पार्यक्रम

Papers will be set in the following languages:

There will be one paper of three hours duration carrying 80 marks and Internal Assessment of 20 marks. The paper will be divided into two sections, Section A and Section B.

**SECTION A:** Language (40 Marks)

**SECTION B:** Prescribed Texts (40 Marks)

Candidates will be required to attempt all questions from Section A. They must attempt four questions from Section B from ONLY two of the prescribed textbooks.

## SECTION A LANGUAGE

(40 Marks)

*This section will consist of four questions, all of which will be compulsory.*

### 1. Composition

(15 Marks)

Candidates will be required to write one composition, in the language, which may include short explanations, directions, descriptions or narratives. There will be a choice of subjects, which will be varied and may be suggested by language or other stimuli such as pictures and objects.

### 2. Letter

(7 Marks)

Candidates will be required to write a letter from a choice of two subjects. Suggestions may be given. The layout of the letter with address, introduction, conclusion, etc., will form part of the assessment.

### 3. Comprehension

(10 Marks)

An unseen passage of about 250 words will be given in the language. Questions on the passage will be set for answers in the language, designed to test the candidates' understanding of the content of the passage.

### 4. Grammar

(8 Marks)

This will consist of tests in the use of language vocabulary, syntax and idioms, synthesis in sentence construction, formation of sentences in the language correctly embodying given words or forms. The question will not require any knowledge of grammatical terms.

## SECTION B PRESCRIBED TEXTS

(40 Marks)

The question paper will consist of structured and short answer questions. Candidates will be required to answer four questions from ONLY two of the prescribed text books. All questions will be set in the language and candidates will be required to answer in the language. The questions set will be designed to test the candidates' understanding of the subject matter of the prescribed books.

The Class X – ICSE examination paper will be set on the entire syllabus prescribed for the subject. The Class IX internal examination is to be conducted on the portion of this syllabus that is covered during the academic year. The Council has not prescribed bifurcation of the syllabus prescribed for this subject.

Recommended for background work:

- Saras Hindi Vyakaran (Evergreen Publications, New Delhi)
- (Only two of the following books are to be offered)
- Sahitya Sagar: A collection of ICSE Short Stories & Poems. (Evergreen Publications, New Delhi)

## पाठ्यपुस्तकों में संकलित अध्याय

### संक्षिप्त कहानियाँ

1. बात अठन्नी की (सुदर्शन)
2. काकी (सियारामशरण गुप्त)
3. महायज्ञ का पुरस्कार (यशपाल)
4. नेताजी का चश्मा (स्वयं प्रकाश)
5. अपना-अपना भाग्य (जैनेन्द्र कुमार)
6. बड़े घर की बेटी (प्रेमचन्द)
7. संदेह (जयशंकर प्रसाद)
8. जामुन का पेड़ (कृष्णा चन्द्र)
9. भेड़े और भेड़िए (हरिशंकर परसाई)
10. दो कलाकार (मन्नू भण्डारी)

### पद्य भाग

1. साखी (कबीरदास)
2. गिरिधर की कुंडलियाँ (गिरिधर कवि राय)
3. स्वर्ग बना सकते हैं (रामधारी सिंह 'दिनकर')

4. वह जन्मभूमि मेरी (सोहनलाल द्विवेदी)
5. मेघ आए (सर्वेश्वर दयाल सक्सेना)
6. सूर के पद (सूरदास)
7. विनय के पद (तुलसीदास)
8. भिक्षुक (सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला')
9. चलना हमारा काम है (शिवमंगल सिंह 'सुमन')
10. मातृ-मंदिर की ओर (सुभद्रा कुमारी चौहान)

### एकांकी संचय

1. संस्कार एवं भावना (विष्णु प्रभाकर)
2. बहू की विदा (विनोद रस्तोगी)
3. मातृभूमि का मान (हरि कृष्णा 'प्रेमी')
4. सूखी डाली (उपेन्द्रनाथ 'अशक')
5. महाभारत की एक साँझ (भारत भूषण अग्रवाल)
6. दीपदान (राम कुमार वर्मा)

उपन्यास : नया रास्ता (सुषमा अग्रवाल)



## खंड 'क'

- संक्षिप्त लेखन
- कहानी लेखन
- चित्र-लेखन
- पत्र-लेखन
- अपठित गद्यांश
- व्यावहारिक व्याकरण

# संक्षिप्त लेखन

## शब्द सीमा/अंक योजना

परीक्षा में विद्यार्थी को 250 शब्दों में एक संक्षिप्त लेख लिखने के लिए कहा जाता है, जिसके लिए 15 अंक निर्धारित किए गए हैं।

‘संक्षिप्त लेखन’ का अर्थ है—‘लघु लेखन’। संक्षिप्त से तात्पर्य है ‘लघु’ तथा लेखन से तात्पर्य है ‘विषय-वस्तु का वर्णन’। इस प्रकार सीमित शब्दों में अपने भावों एवं विचारों को प्रकट करना ही संक्षिप्त लेखन कहलाता है।

संक्षिप्त लेखन आकार में छोटा होने के साथ-साथ सारगर्भित एवं आकर्षक होना चाहिए। संक्षिप्त लेखन की भाषा सरल एवं प्रवाहमयी होती है। संक्षिप्त लेखन करते हुए समय-समय पर प्रसिद्ध पंक्ति, उक्ति, दोहे आदि का प्रयोग किया जाता है। संक्षेप में, किसी विषय पर अपने भावों को विषय केंद्रित कर, प्रभावशाली भाषा द्वारा अपने विचार प्रस्तुत करना ही संक्षिप्त लेखन है।

## संक्षिप्त लेखन हेतु ध्यान देने योग्य बातें

- संक्षिप्त लेखन करते समय विषय पर अपने भावों को केंद्रित कर रूपरेखा का निर्धारण करना चाहिए।
- संक्षिप्त लेखन में विषय का गंभीरतापूर्वक चिंतन एवं मनन करते हुए उसे सीमित शब्दों में प्रस्तुत करने का प्रयास करना चाहिए।
- संक्षिप्त लेखन में विषय-वस्तु के प्रारंभ, मध्य और अंत के अनुसार क्रमबद्धता पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- संक्षिप्त लेखन में विषय-वस्तु से संबंधित नवीन एवं मौलिक तथ्यों का समावेश किया जाना चाहिए।
- संक्षिप्त लेखन में भावों एवं विचारों का आपस में कार्यकारण संबंध होना अनिवार्य है।
- संक्षिप्त लेखन में अवसरानुकूल रोचक घटनाओं एवं पक्षों का वर्णन किया जाना चाहिए।
- संक्षिप्त लेखन में सटीक शब्दों के प्रयोग के साथ ही उक्तियों का प्रयोग करना चाहिए।
- संक्षिप्त लेखन के लिए भाषा की शुद्धता पर बल दिया जाना चाहिए।
- संक्षिप्त लेखन का विषय आकर्षक हो, जिससे पढ़ते या सुनते समय व्यक्ति की रुचि बढ़े।

## संक्षिप्त लेखन के अंग

संक्षिप्त लेखन एक क्रमबद्ध रचना है, जिसमें आदि से लेकर अंत तक भावों एवं विचारों का कुशल प्रस्तुतीकरण महत्व रखता है। इस प्रकार संक्षिप्त लेखन के निम्नलिखित अंग होते हैं

- **प्रारंभ** यह संक्षिप्त लेखन का पहला सोपान है। इसमें विषय-वस्तु की भूमिका या प्रस्तावना के साथ संक्षेप में वर्णन किया जाना चाहिए।
- **मध्य** यह लेखन का मुख्य एवं महत्वपूर्ण भाग होता है, जिसमें कथा को क्रमबद्ध रूप से व तर्कपूर्ण ढंग से स्पष्ट किया जाता है। विषय का प्रतिपादन इसी चरण में होता है।
- **अंत** यह सोपान विषय-वस्तु के उद्देश्य को रेखांकित करता है। अंत में निष्कर्ष एवं उपसंहार विषय की महत्ता या सुझावों को स्पष्ट करता है।

## संक्षिप्त लेखन के अंतर्गत आने वाली रचनाएँ

संक्षिप्त लेखन के अंतर्गत प्रस्ताव (निबंध) लेखन, पक्ष-विपक्ष लेखन, कहानी लेखन आदि को समाहित किया जाता है। यह एक प्रकार का सृजनात्मक लेखन होता है, जिसमें लेखक अपने भावों-विचारों को स्वतंत्रतापूर्वक अभिव्यक्त करता है।

## संक्षिप्त लेखन के प्रकार

कम शब्दों में अपने भावों एवं विचारों को परो देने की कला संक्षिप्त लेखन कहलाती है। विषय से संबंधित भावों एवं विचारों का वर्णन करने के उद्देश्य से संक्षिप्त लेखन को चार भागों में विभाजित किया गया है, जो निम्नलिखित हैं

### 1. विचारात्मक एवं वर्णनात्मक लेखन

इस प्रकार के लेखन का केंद्र कोई भी विषय एवं विचार हो सकता है। अतः किसी विषय एवं विचारधारा पर अपने भावों एवं विचारों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना ही विचारात्मक एवं वर्णनात्मक लेखन कहलाता है।

### 2. भावप्रधान एवं भावात्मक लेखन

भावात्मक लेखन के अंतर्गत विषय से संबंधित मन में उत्पन्न होने वाले भावों एवं विचारों पर संक्षेप में लेखन किया जाता है। ये भाव विषय से संबंधित एवं घटना पर आधारित किसी भी प्रकार के हो सकते हैं; जैसे—प्रेम, करुणा, वात्सल्य, क्रोध और घृणा आदि।

### 3. विषय का पक्षीय-विपक्षीय लेखन

इस प्रकार के लेखन में किसी विषय, घटना, समस्या, विचारधारा आदि के संबंध में पक्ष अथवा विपक्ष में विचार प्रकट किए जाते हैं।

### 4. विवरणात्मक लेखन

इसमें विषय से संबंधित घटना आदि के विवरण का समावेश किया जाता है। अधिकांशतः यह बीती हुई घटना से जुड़ा होता है। इसमें किसी घटना का कहानी के रूप में विवरण प्रस्तुत करना होता है।

## प्रश्न अभ्यास

### अ विचारात्मक एवं वर्णनात्मक लेखन

1. “परोपकार की भावना लोक-कल्याण से पूर्ण होती है। हमें भी परोपकार से भरा जीवन ही जीना चाहिए।” विषय को स्पष्ट करते हुए अपने विचार लिखिए। [2018]

**उत्तर परोपकार का अर्थ** परोपकार से तात्पर्य दूसरों की सहायता करने से है। जब हम अपने स्वार्थ से प्रेरित होकर दूसरों की सहायता करते हैं, तो वह परोपकार नहीं होता है। परोपकार स्वार्थपूर्ण मन से नहीं हो सकता है उसके लिए हृदय की पवित्रता और शुद्धता आवश्यक है। परोपकार क्षमा, दया, बलिदान, प्रेम, ममता आदि गुणों का ही रूप है।

**परोपकार का महत्त्व** परोपकार मनुष्य का धर्म होता है। भूखे को अन्न, प्यासे को जल, वस्त्रहीन को वस्त्र, बूढ़े-बुजुर्गों की सेवा ही मानव का परम धर्म है। संसार में ऐसे ही व्यक्तियों का नाम अमर होता है, जो अपना जीवन दूसरों के हित के लिए जीते हैं। परोपकार को इतना महत्त्व इसलिए दिया जाता है, क्योंकि इससे मनुष्य की पहचान होती है। इस प्रकार सच्चा मनुष्य वही है, जो दूसरों के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तत्पर रहता है।

**उपसंहार** परोपकार की भावना लोक कल्याण से ही पूर्ण होती है। परोपकार मानव समाज का आधार है। समाज में व्यक्ति एक-दूसरे की सहायता और सहयोग हेतु सदा लालायित रहता है। परोपकार सामाजिक जीवन की धुरी है, उसके बिना सामाजिक जीवन गति प्राप्त नहीं कर सकता है। परोपकार मानव का सच्चा आभूषण है। इसीलिए कहा गया है कि “परोपकाराय संतां विभूतयः” अर्थात् सत्पुरुषों का अलंकार तो परोपकार ही है। हमारा कर्तव्य है कि हम परोपकारी महात्माओं से प्रेरित होकर अपने जीवन-पथ को प्रशस्त करें और “वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे”; के लोक कल्याणकारी संदेश को चारों ओर प्रसारित करें।

2. आजकल देश में आवासीय विद्यालयों (Boarding Schools) की बाढ़-सी आ गई है। आवासीय विद्यालयों की छात्रों के जीवन में क्या उपयोगिता हो सकती है? इस प्रकार के विद्यालयों की अच्छाइयों एवं बुराइयों के बारे में बताते हुए वर्तमान में इनकी आवश्यकता पर अपने विचार लिखिए। [2018]

**उत्तर भूमिका** मानव जीवन के विकास के लिए शिक्षा का अहम योगदान होता है। यद्यपि शिक्षा का आरंभ एक व्यक्ति अपने घर-परिवार से ही कर देता है, परंतु औपचारिक शिक्षा ग्रहण करने हेतु उसे विद्यालय में प्रवेश लेना पड़ता है। हमारे देश में विद्यालयों के कई रूप देखने को मिलते हैं; जैसे—निजी विद्यालय, सरकारी विद्यालय, अर्द्धसरकारी विद्यालय, ट्रस्टी विद्यालय, आवासीय विद्यालय (निजी/सरकारी) आदि। इन सभी विद्यालयों के नाम भिन्न तो जरूर हैं, परंतु इनका उद्देश्य एक है—बच्चों का सर्वांगीण विकास करना। हम आज आवासीय विद्यालयों की छात्रों के जीवन में उपयोगिता विषय पर चर्चा निम्न रूप में कर सकते हैं—

**आवासीय विद्यालय** यह एक ऐसा विद्यालय होता है जहाँ छात्रों को विद्यालयी परिसर में ही रहना अनिवार्य होता है। छात्रों के जीवन पर आवासीय विद्यालय के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ते हैं। यदि सकारात्मक पर चर्चा की जाए तो देखा जा सकता है कि आवासीय विद्यालय में कड़ा अनुशासन होता है।

विद्यार्थी जीवन में इसी प्रकार के अनुशासन की आवश्यकता पड़ती है। इसका प्रभाव विद्यार्थी के भविष्य पर पड़ता है। आवासीय विद्यालय में छात्र अपने परिवार से दूर रहते हैं। इस परिस्थिति में उन्हें बहुत-सी समस्याओं का सामना करना

पड़ता है। इन समस्याओं का समाधान भी छात्रों को स्वयं ही करना पड़ता है और इस प्रकार वे आत्मनिर्भरता के गुण को अर्जित कर लेते हैं। कहने का आशय यह है कि आवासीय विद्यालय छात्रों को आत्मनिर्भर बनाते हैं।

इसी आत्मनिर्भरता के कारण वे अपने भविष्य का निर्धारण करने में भी सक्षम हो जाते हैं। आवासीय विद्यालयों के वातावरण में छात्र के अंतर्गत सामाजिक गुणों का विकास होता है। इन सभी अच्छाइयों के साथ ही आवासीय विद्यालयों में कुछ बुराइयाँ भी देखी जा सकती हैं। आवासीय विद्यालय में परिवार से अलग रहना एक बच्चे के लिए बहुत बड़ी समस्या होती है। वह अन्य बच्चों की तरह परिवार के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते। आवासीय विद्यालय में अक्सर विद्यार्थी बुरी संगति में फँस जाते हैं और इस स्थिति से निकल पाने में वह सक्षम नहीं होते। इस कारण वह तनावग्रस्त जीवन व्यतीत करने लगते हैं और स्वयं के जीवन को बर्बादी की कगार पर खड़ा कर देते हैं।

**निष्कर्ष** निष्कर्ष रूप से कहा जाए तो आवासीय विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था उच्च दर्जे की जरूरत है, परंतु कुछ नकारात्मक पक्ष भी हैं, जिन पर प्रशासन का ध्यान देना अनिवार्य है।

- 3. ‘पर्यावरण है तो मानव है’** विषय को आधार बनाकर पर्यावरण सुरक्षा को लेकर आप क्या-क्या प्रयास कर रहे हैं? विस्तार से लिखिए। [2017]

**उत्तर** **भूमिका** पर्यावरण और मनुष्य का गहरा संबंध है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। मनुष्य हो या अन्य जीव-जंतु, सभी पर्यावरण की उपज हैं। उनकी उत्पत्ति, विकास, वर्तमान स्वरूप एवं भावी अस्तित्व सभी पर्यावरण पर ही निर्भर हैं। प्रकृति मनुष्य के जीवन हेतु कितने ही साधन जुटाती है, मनुष्य के पालन-पोषण हेतु स्वच्छ पानी, हवा, वनस्पति, खनिज उपलब्ध कराती रही है। आधुनिक युग में मानव द्वारा अपने स्वार्थ सिद्धि हेतु प्रकृति का इस प्रकार दोहन किया जा रहा है, जिससे हमारा पर्यावरण इतना दूषित हो गया है कि यह विश्व के लिए एक गंभीर समस्या बन गई है।

**पर्यावरण का महत्व** पर्यावरण स्वस्थ जीवन जीने के लिए अति आवश्यक है। प्रकृति ने हमें पर्यावरण रूपी अमूल्य भेंट प्रदान की है। हम अपना जीवन जीने में जिन चीजों (साधनों); जैसे—ऑक्सीजन, अनाज, फल-फूल, सब्जी, पानी आदि का उपयोग करते हैं, वे सभी चीजें पर्यावरण में आती हैं। पृथ्वी पर जीवन जीना इसलिए संभव है, क्योंकि पृथ्वी का पर्यावरण हमारे जीवन जीने के योग्य है, परंतु तकनीक की इस दुनिया में मानव तकनीक को विकसित करने के लिए पर्यावरण का सहारा ले रहा है, जिसके कारण हमारा पर्यावरण बिगड़ रहा है। प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए मानव और पर्यावरण के बीच एक मजबूत संतुलन बनाए रखना जरूरी है।

**पर्यावरण सुरक्षा के प्रयास** पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए हमें विशेष प्रयास करने होंगे। पर्यावरण प्रदूषण जहाँ एक ओर हमारे वातावरण को प्रदूषित कर रहा है, वहीं दूसरी ओर इसके कारण अन्य जटिल समस्याएँ भी उत्पन्न हो रही हैं, जो हमारी पृथ्वी के लिए हानिकारक हैं। हमें अपनी धरती की रक्षा के लिए प्रदूषण को कम करना होगा।

मनुष्य सामानों को ढोने के लिए पॉलिथीन का प्रयोग करके उन्हें घूँ ही फेंक देता है। ये पॉलिथीन भूमि में मिलकर उसकी उर्वरा शक्ति को कम कर देती हैं। अतः पॉलिथीन का प्रयोग न करके भूमि की उर्वरा शक्ति को बचाया जा सकता है, साथ ही इससे भूमि प्रदूषण को भी रोका जा सकता है।

पृथ्वी की रक्षा व पर्यावरण को सुरक्षित करने के लिए वृक्षारोपण का सहारा लिया जा रहा है। अधिक-से-अधिक पेड़-पौधों को लगाकर और उन्हें सुरक्षा प्रदान करके ओजोन परत के संरक्षण में सहयोग देकर पृथ्वी की रक्षा की कोशिश की जा रही है। पेट्रोल व डीजल के स्थान पर सी.एन.जी. का प्रयोग किया जा रहा है तथा लोगों को पर्यावरण के विषय में जागरूक किया जा रहा है।

**उपसंहार** पर्यावरण की सुरक्षा प्रत्येक नागरिक की सामाजिक जिम्मेदारी है। मनुष्य को अपने स्वार्थ के कारण प्रकृति की अमूल्य सौगात को नुकसान पहुँचाना बंद करना होगा तथा पर्यावरण की सुरक्षा के साथ सामंजस्य रखते हुए संतुलित विकास की ओर अग्रसर होना होगा।

- 4. कंप्यूटर तथा मोबाइल मनोरंजन के साथ-साथ हमारी ज़रूरत का साधन अधिक बन गए हैं। हर क्षेत्र में इनसे मिलने वाले लाभों तथा हानियों का वर्णन करते हुए अपने विचार लिखिए।** [2017]

**उत्तर** **भूमिका** विज्ञान ने मनुष्य को सुख-सुविधा के अनेक साधन प्रदान किए हैं, जिनमें कंप्यूटर तथा मोबाइल सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। विज्ञान द्वारा विकसित यह यंत्र मनुष्य के दिमाग की तरह काम करता है। इन यंत्रों ने हमारे जीवन को अनेक सुख-सुविधाओं से भर दिया है। इन्हीं के कारण सूचनाओं की प्राप्ति और इनके संवहन में क्रांतिकारी वृद्धि हुई है। पहले कंप्यूटर और इसके पश्चात् मोबाइल ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांति ला दी है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं, जहाँ इसके महत्व को रेखांकित न किया जा सके।

**मनोरंजन कैसे?** कंप्यूटर एवं मोबाइल, ज्ञान के भंडार के साथ-साथ मनोरंजन के भी साधन हैं। इन यंत्रों पर विभिन्न भाषाओं के सिनेमा देखे जा सकते हैं। इस पर वयस्क लोगों के लिए समाचार, तो बच्चों के लिए सैकड़ों खेल उपलब्ध हैं। ये यंत्र विश्व को एक परिवार बनाने का कार्य करते हैं। विदेश में बैठे लोगों से वीडियो कॉलिंग, मैसेज आदि की सुविधा भी कंप्यूटर एवं मोबाइल पर उपलब्ध है। इस प्रकार कहा जाना चाहिए कि कंप्यूटर एवं मोबाइल की उपलब्धियाँ तो अनगिनत हैं।

**जरूरतें पूरी कैसे?** भारत में शुरुआती दौर में कंप्यूटरों का प्रयोग बहुत सीमित था, लेकिन वर्तमान में अस्पताल, बैंक, अनुसंधान केंद्र, प्रयोगशाला, विद्यालय, दफ्तर आदि सहित कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहाँ कंप्यूटर का उपयोग न किया जाता हो। वर्तमान समय में मोबाइल ने स्वयं को ‘मिनी कंप्यूटर’ के रूप में स्थापित किया है। कंप्यूटर तथा मोबाइल के आगमन से शिक्षा का स्वरूप ही बदल गया है। आज कंप्यूटर एवं मोबाइल के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन संभव है। कंप्यूटर एवं मोबाइल को ज्ञान-भंडार का एक साधन कहा जा सकता है।

**लाभ** कंप्यूटर हो या मोबाइल दोनों ही घर बैठे-बैठे हमारे अनेक कार्य शीघ्रता के साथ कर देते हैं। रेलवे, जहाज आदि के टिकट से लेकर सिनेमा आदि के टिकट का प्रबंध घर बैठे-बैठे हो जाता है। कंप्यूटर व मोबाइल के द्वारा मनुष्य बड़ी-से-बड़ी गणना कुछ सेकंड में ही कर सकता है। इनके द्वारा वीडियो कॉल, सोशल नेटवर्किंग जैसी

सुविधाओं से जुड़ा जा सकता है। बैंकिंग जैसी सुविधाओं में इनके माध्यम से घर बैठे-बैठे किसी को भी रुपये ट्रांसफर किए जा सकते हैं। शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र में भी यह विशेष उपयोगी है। अब पुस्तकालय जाने के बजाय गूगल पर सभी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इन उपकरणों द्वारा समाचार, चुटकले, संगीत आदि का आनंद लिया जा सकता है।

**हानि** कंप्यूटर और मोबाइल हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं, परंतु जितने अधिक लाभ हमें इससे प्राप्त होते हैं, उतनी ही हानि भी। इनके प्रयोग में थोड़ी-सी भी चूक होने पर यह विपरीत परिणाम देते हैं। कंप्यूटर और मोबाइल का गलत प्रयोग मानव जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। बच्चों द्वारा अधिकाधिक गेम खेलना, उनकी पढ़ाई को प्रभावित करता है तथा मानसिक विकृति को उत्पन्न कर देता है। कंप्यूटर एवं मोबाइल पर आजकल बहुत-सी अश्लीलता को दिखाया जा रहा है, जिससे अनेकानेक लोग प्रभावित होते हैं। यह सभी मानव जीवन को दूषित करने का बहुत बड़ा कारण है। इससे बचने के लिए सभी को सही दिशा में सोचने की आवश्यकता है।

**उपसंहार** इस प्रकार कहा जा सकता है कि कंप्यूटर तथा मोबाइल मनोरंजन के साथ-साथ हमारी जरूरत का साधन अधिक बन गए हैं। साथ-ही-साथ यदि इसका सही दिशा में प्रयोग न किया गया, तो यह मानव जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालेगा।

5. “विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषधि है।” कथन के आधार पर बताइए कि मानव के जीवन में मित्रों का क्या महत्व है? वे किस प्रकार व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं? आप अपने मित्र का चुनाव करते समय उसमें किन गुणों का होना आवश्यक समझेंगे? अपने विचार स्पष्टतः लिखिए। [2015]

उत्तर

### मित्र के गुण

**भूमिका** मनुष्य स्वयं में अधूरा है। उसे अपने सुख-दुःख बाँटने के लिए तथा मन की बात कहने के लिए साथी की आवश्यकता पड़ती है। एक मित्र ही इस कार्य को कर सकता है। अतः जीवन को सरसता और आसानी से जीने के लिए मित्र आवश्यक हैं।

**मित्र का महत्व** जीवन में बहुत महत्वपूर्ण वस्तुओं के होने के बावजूद भी मनुष्य के जीवन में मित्रता एक बहुत ही मूल्यवान् रिश्ता है। मित्र के बिना जीवन अधूरा होता है। मित्र जीवन के रोगों की औषधि है। इसलिए मित्रता का बहुत महत्व है। हर प्राणी घर के बाहर मित्र की तलाश करता है। मित्र जीवन का वह साथी है, जो हर बुराई से हमें बचाता है तथा भलाई की ओर बढ़ने के लिए साधन जुटाता है, जो पतन से बचाकर उत्थान के पथ पर ले जाता है, वह सच्चा मित्र है। अतः हमारे जीवन में मित्रों का महत्व बहुत अधिक है।

**जीवन पर प्रभाव** मित्र व्यक्ति के जीवन को बहुत प्रभावित करते हैं। सच्चा मित्र व्यक्ति के अवगुणों को सामने लाकर उन्हें दूर करने तथा स्वभाव को निर्मल बनाने में सहायक सिद्ध होता है, जिससे वह जीवन मार्ग में स्वयं को अकेला महसूस नहीं करता। वहीं दूसरी ओर गलत मित्र की संगति में पड़कर व्यक्ति कुमार्ग की ओर अग्रसर हो जाता है।

**चुनाव करते समय ध्यान देने योग्य बातें** प्रत्येक व्यक्ति को मित्र की आवश्यकता होती है, लेकिन मित्र का चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए, क्योंकि सच्चा मित्र सुख और आनंद प्रदान करता है। वह एक

शिक्षक की भाँति होता है, जो हमें सन्मार्ग की ओर ले जाता है। मित्रता का ढोंग कर अपना स्वार्थ सिद्ध करने वाले लोगों से सावधान रहना चाहिए। मित्र बनाने से पहले उसके स्वभाव तथा आचरण का विशेष ध्यान रखना चाहिए। हमें ऐसे मित्र की खोज में रहना चाहिए, जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। मैं अपने मित्र का चुनाव करते समय उसमें कई गुणों का होना आवश्यक समझता हूँ, जिनमें मुख्यतः सत्यनिष्ठ, धैर्यवान्, परिश्रमी, अनुशासनप्रिय, कर्तव्यपरायण तथा उचित परामर्शदाता आदि शामिल हैं।

**उपसंहार** इस प्रकार कह सकते हैं कि हमारे जीवन में मित्र का बहुत महत्व है। एक सच्चा मित्र मिलना सौभाग्य की बात है।

6. अपने जीवन में घटी उस घटना का वर्णन कीजिए, जिसे याद करके आप आज भी हँसे बिना नहीं रहते तथा इससे आपको क्या लाभ मिलता है? [2014]

उत्तर

### जीवन में घटी एक हास्यास्पद घटना

**भूमिका** बालपन मानव का श्रेष्ठतम काल है। इस दौरान अनेक घटनाएँ घटती हैं, जो सहसा ही हृदय को खुशी का आभास देती हैं तथा उस घटना के स्मरण मात्र से ही चेहरे पर एक मुसकान आ जाती है। ऐसी ही एक घटना मुझे भी याद आ रही है, जिस समय मैं पाँचवीं कक्षा में था।

**हास्यास्पद घटना** एक बार विद्यालय के वार्षिकोत्सव की तैयारी चल रही थी, जिसमें हमारी कक्षा की छात्राओं ने भी भाग लिया। वे नृत्य का कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए तैयार हो रही थीं, तभी पता चला कि उनके ग्रुप (समूह) की एक सदस्य की अचानक तबीयत खराब हो गई, जिस कारण वह प्रस्तुति नहीं दे सकती थी। सभी को चिंता होने लगी कि अब क्या होगा? उनमें शामिल मेरी मित्र ने समाधान खोजते हुए कहा कि हमारी कक्षा का ‘अभय’ बहुत अच्छा नृत्य करता है। अतः उसे यह कार्यक्रम करने के लिए तैयार किया जा सकता है। तभी मुझे वहाँ बुलाया गया और सभी के आग्रह करने पर मैं नृत्य करने के लिए तैयार हो गया। मुझे महिलाओं की पोशाक (साड़ी) पहनाकर तथा मेकअप करके तैयार किया गया। जैसे ही स्टेज पर हमारे कार्यक्रम की प्रस्तुति आरंभ हुई, मेरी साड़ी पैरों में अटक कर खुल गई। यह देख सभी छात्र-छात्राएँ जोर-जोर से हँसने लगे, उन्हें हँसता देख मेरी भी हँसी छूट गई। अध्यापिका ने तुरंत पर्दा गिरा दिया। उस समय मुझे कुछ समझ नहीं आया और मैं घबरा गया कि अब मुझे डाँट पड़ेगी, लेकिन मुझे समझाया गया कि ऐसी घटना हो जाती है, परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। आज मैं जब भी इस घटना को याद करता हूँ, तो मेरे चेहरे पर हँसी आ जाती है।

**हास्य के लाभ** हास्य एक स्वस्थ जीवन का नेतृत्व करता है, हास्य हमारे लिए भगवान के दिए सबसे अच्छे उपहारों में से एक है, जो हमें प्रतिकूल परिस्थितियों में भी खुशीपूर्वक जीवन जीने में मदद करता है। हास्य हमें मनोरंजन प्रदान करता है और गंभीर परिस्थितियों को भी जीवंत रूप में बदल देता है। इसलिए हँसी हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।



**उपसंहार** हिंदी के श्रेष्ठ कवि तथा वात्सल्य सम्राट 'सूरदास' जी ने भी बाल्यकाल को जीवन में श्रेष्ठ माना है। वर्तमान जीवन की कठिन परिस्थितियों में जहाँ मानव हँसने के लिए तरसता रहता है, वहाँ इस प्रकार की घटनाएँ हृदय में खुशी का संचार करती हैं, जो हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अति लाभकारी होती हैं। इसलिए हँसो और हँसाओ हमारे जीवन का सिद्धांत होना चाहिए।

- 7. भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति का वर्णन करते हुए पाश्चात्य संस्कृति की कुछ अपनाने योग्य बातों पर प्रकाश डालिए।** [2014]

**उत्तर**

### भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति

**भारतीय संस्कृति का वर्णन** भारतीय संस्कृति अध्यात्म एवं दर्शन से ओत-प्रोत है। हमारे देश की संस्कृति अद्वितीय है। पावन भारतभूमि से ही मानव-मंगल की कामना का स्वर संपूर्ण विश्व में गूँजा है। भारतीय संस्कृति का ध्येय मानव-मूल्यों को प्रतिष्ठित करना है। भारतीय संस्कृति, भारतीय वेद ऋचाएँ (श्लोक) तथा पुराण अत्यंत प्राचीन हैं। इनमें कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जो आज भी इन्हें महत्वपूर्ण बनाए हुए हैं।

इस वैज्ञानिक युग में भी हम भारतीय आस्थावादी हैं और धर्म हमारे जीवन का आधार है। हमारी संस्कृति में भौतिक सुख को नहीं वरन् आत्मिक संतुष्टि को महत्व दिया गया है। भारतीय संस्कृति में आत्मा को परमात्मा का अंश मानकर आत्मिक ज्ञान पर बल दिया जाता है। वास्तविक सुख-शांति तो संतोष, परोपकार, दया, अहिंसा आदि गुणों को अपनाने पर प्राप्त होती है। आत्मा के सुख के सम्मुख सभी सुख नगण्य हैं। इन्हीं सिद्धांतों को जन्म देने के कारण ही भारत को विश्वगुरु कहा गया है।

**पाश्चात्य संस्कृति का वर्णन** पाश्चात्य सभ्यता उपभोगवाद को जन्म देती है। वहाँ की संस्कृति में स्वतंत्रता के नाम पर स्वच्छंदता देखी जाती है। वहाँ की संस्कृति हमारी संस्कृति से मेल नहीं खाती और दोनों संस्कृतियों में काफी विरोधाभास है, परंतु इन सबके बाद भी कुछ महत्वपूर्ण आविष्कार; जैसे-एक्स-रे, कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल फोन, टेलीविजन आदि पाश्चात्य संस्कृति की ही देन हैं। ये वस्तुएँ हमारे दैनिक जीवन के लिए उपयोगी हैं।

**पाश्चात्य संस्कृति की अपनाने योग्य बातें** पाश्चात्य देशों के लोग साफ-सफाई के प्रति अधिक जागरूक होते हैं। वे अपने आस-पास बहुत सफाई रखते हैं और सड़क, पार्क या सार्वजनिक स्थानों पर कागज का एक टुकड़ा तक नहीं फेंकते। अतः भारतीयों को पाश्चात्य देशों से साफ-सफाई की एवं स्वच्छता से संबंधित बातें सीखनी चाहिए। हमें पश्चिमी लोगों की तरह व्यावसायिक बनना चाहिए। इसके साथ ही समय की पाबंदी और दूसरों का सम्मान करना भी हमें उनसे सीखना चाहिए। अतः कह सकते हैं कि साफ-सफाई, व्यावसायिकता, समयबद्धता आदि ऐसी चीजें हैं, जो हमें पाश्चात्य संस्कृति से अपनानी चाहिए।

**उपसंहार** वर्तमान में भारतीय संस्कृति पर पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव बढ़ता जा रहा है और भारत वैज्ञानिक युग में भौतिक सिद्धांतों की प्राप्ति के लिए उसी दृष्टिकोण से सोचने लगा है। यह पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति का भारतीय सभ्यता-संस्कृति पर एक अच्छा प्रभाव समझा जा सकता है, परंतु भौतिकता के साथ आध्यात्मिकता का समन्वय करते हुए जीवन को भोगपरक नहीं, बल्कि त्यागपरक होना चाहिए।

- 8. अपने प्रिय कवि के विषय में वर्णन करते हुए लिखिए कि आपको वह क्यों प्रिय हैं? उनकी कौन-सी रचनाओं ने आप पर प्रभाव डाला है?**

**उत्तर**

### मेरा प्रिय कवि

**मेरा प्रिय कवि : कबीरदास** साहित्य एक विशाल समुद्र की भाँति है, जिसमें उसकी विभिन्न विधाओं का समावेश है। साहित्य की विभिन्न विधाओं को अपने ज्ञान से संचित करने वाले कबीरदास मुझे अत्यंत प्रिय हैं, क्योंकि भक्तिकालीन काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि कबीरदास की रचनाएँ यथार्थ से परिचय कराती हैं। कबीरदास की रचनाएँ सरल शब्दावली में अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाती हैं तथा लोगों का पथ-प्रदर्शन करने में सहायता करती हैं।

**कवि का वर्णन** कबीरदास का जन्म संवत् 1398 में वाराणसी के पास लहरतारा नामक ग्राम में हुआ। वे जाति से जुलाहा थे, इनकी शिक्षा-दीक्षा उचित रूप से नहीं हो पाई। कबीरदास का अनुभव क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है तथा उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों; जैसे-जात-पाँत, छुआ-छूत, ऊँच-नीच आदि पर तीखा प्रहार किया है।

एक ओर वह मुसलमानों के हज आदि जाने पर तीखा प्रहार करते हैं, तो दूसरी ओर वह हिंदुओं के माला फेरने पर तीखा व्यंग्य करते हुए कहते हैं

*माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।  
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर॥*

कबीरदास ने कहा है पत्थर पूजने से भगवान नहीं मिलते। दिखावा, ढोंग आदि भगवान प्राप्ति के मार्ग नहीं हैं। कबीरदास पुस्तकीय ज्ञान को महत्व न देकर अनुभव आधारित ज्ञान को महत्व देते हैं

*पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोया।  
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होया॥*

कबीर जो कहते थे, वही करते थे। उन्हें न धर्म का आग्रह था, न जाति का बंधन। कबीर समाज में पनप रहे तमाम आडंबरों से विडंबनाओं को ही बाहर निकाल फेंकते थे। वे न सिर्फ भूत और वर्तमान की पड़ताल करते हैं, बल्कि एक सुलझे हुए वैज्ञानिक की तरह भविष्य के लिए नई राह खोजते थे।

**कवि की रचनाओं का प्रभाव** कबीरदास की सभी रचनाएँ चाहे वह सबद हों, साखी हों, कुरीतियों से परिचय कराकर उसका निदान करने में उचित मार्ग दिखाती हैं। कबीरदास की रचनाएँ हिंदू-मुस्लिम भेदभाव को दूर करने में तथा उनकी अलग-अलग मान्यताओं का खंडन करने का प्रयास करती हैं।

**उपसंहार** इस प्रकार कबीरदास ने अहिंसा के मार्ग पर चलकर हिंदू-मुस्लिम दोनों को फटकारा है और सदा सत्य का साथ दिया है, जिस कारण आज वह सभी के लिए लोकप्रिय कवि बन गए हैं।

- 9. अपने परिवार के किसी ऐसे सदस्य का वर्णन कीजिए, जिसने आपके प्रभावित किया हो। बताइए कि उस व्यक्ति के प्रभाव ने आपके जीवन को किस प्रकार परिवर्तित किया? आपके गुणों को निखारने में और अवगुणों को दूर करने में उस व्यक्ति ने आपकी किस प्रकार सहायता की?** [2013]

**उत्तर**

### मेरे जीवन को प्रभावित करने वाला पारिवारिक सदस्य

**भूमिका** परिवार में माता का स्थान सर्वोपरि है। पुत्र, माता के ऋण से कभी उन्मूढ नहीं हो सकता। कहा गया है कि पुत्र कुपुत्र हो

सकता है, परंतु माता कभी कुमाता नहीं होती। माँ एवं मातृभूमि को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ बताते हुए श्रीराम लक्ष्मण से कहते हैं—

“हे लक्ष्मण! मुझे स्वर्णयुक्त लंका में जरा भी रुचि नहीं है। यह लंका मुझे आकर्षित नहीं करती। मुझे तो जन्म देने वाली माँ तथा जन्मभूमि के चरणों में ही स्वर्ग प्राप्त होता है।”

**माँ से प्रभावित** मैं अपने परिवार के सदस्यों में से अपनी माँ से सबसे अधिक प्रभावित हूँ, क्योंकि माँ अपने पुत्र के लिए स्वयं कष्ट सहती है, उसकी रक्षा करती है, उचित पालन-पोषण करती है, उसे चलना सिखाती है और जब तक वह अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो जाता, तब तक वह उसका सही मार्गदर्शन करते हुए उसकी प्रथम गुरु होती है।

**जीवन में माँ का प्रभाव** मेरे जीवन में तो मेरी माता का प्रमुख स्थान है। उन्होंने मेरी हर जरूरत को समझा तथा उसे पूरा किया है। मेरे स्कूल जाने के समय मुझे तैयार करने से लेकर गृहकार्य करने तक मैं मेरी सहायता की। मेरी माँ कहती हैं कि स्वस्थ मस्तिष्क स्वस्थ शरीर में ही रहता है। अतः वह मुझे शाम के समय खेलने के लिए अवश्य भेजती थीं। उन्होंने मुझे संत-महापुरुषों के जीवन की कथाएँ सुनाकर मेरे चरित्र का निर्माण किया।

**गुणों को निखारने और अवगुणों को दूर करने में माँ की भूमिका** मेरी माँ ने मुझे सत्य, न्यायप्रियता, ईमानदारी, परोपकार एवं गुरुजनों की आज्ञा का पालन करना सिखाया। ईश्वर की प्रार्थना करने का भाव भी मेरे हृदय में तब ही जागा, जब मैं छुट्टी के दिनों में माँ के साथ मंदिर जाने लगा। माँ ने न केवल मेरे गुणों को निखारा, बल्कि मेरे अवगुणों को दूर करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**उपसंहार** जैसे शिवाजी का पालन-पोषण करते हुए, उचित संस्कार एवं मार्गदर्शन से उन्हें मराठा साम्राज्य का सम्राट, उनकी माँ जीजाबाई ने ही बनाया, वैसे ही मुझे भी इस समाज सेवा की ऊँचाई तक मेरी माँ ने ही पहुँचाया। मेरे विचार से हमारे प्रत्यक्ष (सामने) कोई ईश्वर है, तो वह माँ ही है।

- 10.** आतंकवाद विश्व के लिए घातक समस्या बनती जा रही है, कैसे? वर्णन कीजिए।

**उत्तर**

### आतंकवाद विश्व के लिए घातक समस्या

**भूमिका** आतंकवाद मानव सभ्यता के नाम पर कलंक है। आतंकवाद शब्द 'आतंक' और 'भय' को विस्तृत रूप में व्याख्यायित करता है। आतंक फैलाने के लिए कई संगठन हैं, जो अपने कुकर्म को अंजाम देने के लिए किसी के हित के बारे में नहीं सोचते हैं। वे बच्चे, युवक, युवती और वृद्ध किसी को भी अपना निशाना बनाने से नहीं चूकते। आतंकवादी अपना आतंक फैलाने के लिए किसी भी प्रकार का धिनौना कार्य कर अपने लक्ष्य को पूर्ण करते हैं।

**आतंकवाद की समस्या** आतंकवाद की समस्या प्रगति के पथ में बाधक है। निर्दोष लोगों की जान इस प्रकार के हमलों में चली जाती है। आतंकवाद किसी भी देश में हो, वह मानवता के लिए खतरा है। आतंकवादी कभी बस, ट्रेन, किसी वस्तु आदि में भी बम रखकर विस्फोट कर देते हैं। कभी विस्फोट का माध्यम हवाई जहाज को बनाते हैं, तो कभी खुले आम व्यक्ति की गोली मारकर हत्या कर दी जाती है। कुछ आतंकवादी पुलिस की गिरफ्त में आ तो जाते हैं, परंतु वह अपना आतंक फैलाना नहीं छोड़ते। आज आतंकवाद की समस्या इतनी अधिक हो गई है कि आतंकवादी भारत की सीमा में ही नहीं, बल्कि देश के भीतर घुसकर अपना आतंक स्थापित किए हुए हैं।

**आतंकवाद विश्व के लिए घातक समस्या** भारत एक शांतिप्रिय देश है। आतंकवाद के लिए भारत में कोई स्थान नहीं है। नवयुवकों को इस मार्ग की ओर ले जाने के लिए इस घृणित कार्य को किया जा रहा है। आतंकवाद आज राष्ट्र में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में फैल चुका है। क्षेत्रवाद, धार्मिक कट्टरता, राजनीतिक स्वार्थ इसके प्रमुख कारण हैं। हिंसा एवं स्वार्थ के वशीभूत होकर अपना वर्चस्व कायम रखना आतंकवादियों का प्रमुख उद्देश्य है। आतंकवाद को देश की सुरक्षा के प्रकाश से देखा जाना चाहिए।

आतंकवाद की समस्या से आज कोई भी देश अछूता नहीं है। देश के कोने-कोने में आतंकवाद ने अपना नियंत्रण कायम कर लिया है। आतंकवाद आज एक ऐसी विकराल समस्या का रूप धारण कर चुका है, जो हमारी सुरक्षा प्रणाली के लिए एक चुनौती है। 16 दिसंबर, 2014 को पेशावर के आर्मी स्कूल में हुए आतंकी हमले में 150 लोग मारे गए थे, जिसे तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान द्वारा अंजाम दिया गया था। 24 नवंबर, 2017 को मिस्र के उत्तरी सिनाई शहर की एक मस्जिद में हुए आतंकी हमले में 235 लोगों की मौत हो गई थी तथा 200 से अधिक लोग घायल हो गए थे। इस प्रकार उपरोक्त आँकड़े आतंकवाद की विकराल होती जा रही समस्या को दर्शाते हैं।

**उपसंहार** इस प्रकार कहा जा सकता है कि आतंकवाद की समस्या अत्यंत घातक है। इसके समाधान के लिए पूरे विश्व को मिलकर एक व्यापक रणनीति बनाना ही वर्तमान समय की माँग है। आज आतंकवाद वैश्विक समस्या का रूप ले चुका है, इसलिए इसका संपूर्ण समाधान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एवं प्रयासों से ही संभव है।

- 11.** वर्तमान युग में इंटरनेट अपनी उपयोगिता के कारण एक आवश्यकता बनता जा रहा है, इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए और बताइए कि इंटरनेट जीवन में सुविधा के साथ-साथ मुसीबत किस प्रकार बन जाता है? [2012]

**उत्तर**

### इंटरनेट उपयोग के लाभ तथा हानि

**भूमिका** मानव एक विकासशील प्राणी है। उसने समय-समय पर अपनी अवस्था में सुधार एवं परिवर्तन किया है। पाषाणकाल से लेकर वर्तमानकाल तक मानव ने अनेक अवस्थाओं को पार करते हुए अपना विकास किया है। वर्तमान युग विज्ञान का युग है। मानव ने आकाश-पाताल लगभग सभी जगह विज्ञान द्वारा विजय प्राप्त कर ली है। इसी विज्ञान की महत्वपूर्ण उपलब्धि है—इंटरनेट।

**इंटरनेट आज की आवश्यकता** वर्तमान समय में इंटरनेट मानव जीवन की आवश्यकता बन गया है। अब एकल परिवार का युग है, इसी कारण व्यक्ति को अपने समस्त कार्य स्वयं ही करने पड़ते हैं। इंटरनेट ने इस समस्या को काफी हद तक हल कर दिया है। सत्य कहा जाए तो वर्तमान दौर में इंटरनेट के बिना जीवन की कल्पना करना तक असंभव हो गया है, परंतु हर सिक्के के दो पहलू हैं।

**इंटरनेट के लाभ** आज मानव घर बैठे ही पूरे विश्व के घटनाक्रम की जानकारी इंटरनेट से प्राप्त कर लेता है। कोई भी परीक्षा हो, उसके लिए आवेदन करना हो, टिकट बुक कराना हो, घरेलू सामान मँगवाना हो, बैंक के कार्य, बिल का भुगतान करना हो इत्यादि कार्य घर बैठे ही इंटरनेट द्वारा संभव हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त सामाजिक कार्य, जैसे—मेल-जोल बढ़ाने, दोस्तों से बातचीत करने, शादी-विवाह कराने इत्यादि में भी इंटरनेट सहायक हो रहा है।

**इंटरनेट की हानियाँ** इंटरनेट के कई लाभ हैं, तो इसकी कई हानियाँ भी हैं। इसके माध्यम से अश्लील सामग्री बच्चों तक पहुँचनी आसान हो गई है। कई लोग इंटरनेट का दुरुपयोग अश्लील साइटों को देखने और सूचनाओं को चुराने में करते हैं। इससे साइबर क्राइम में वृद्धि हुई है। इंटरनेट से जुड़ते समय वायरसों द्वारा सुरक्षित फाइलों के नष्ट या संक्रमित होने का खतरा भी बना रहता है। इन सबके अतिरिक्त कई लोग इस पर अनावश्यक और गलत आँकड़े एवं तथ्य भी प्रकाशित करते रहते हैं। इस तरह यदि इंटरनेट ज्ञान का सागर है, तो इसमें कूड़े-कचरे की भी कमी नहीं है।

**उपसंहार** अतः जब मनुष्य इसका सही ढंग से प्रयोग करेगा, तब पूर्णतः उम्मीद है कि वह इंटरनेट के संपूर्ण लाभ को प्राप्त कर पाएगा।

- 12.** आज के युग में समाचार-पत्र हमारी दैनिक आवश्यकताओं में से एक है। समाचार-पत्र की उपयोगिता स्पष्ट करते हुए बताइए कि एक आदर्श समाचार-पत्र में किन-किन बातों का समावेश होना चाहिए? [2010]

उत्तर

### समाचार-पत्रों की उपयोगिता

**भूमिका** 'समाचार' शब्द सम् + आचार से मिलकर बना है, जिसका अर्थ होता है—बिना भेदभाव के सबसे समान आचरण करना अर्थात् समाज की प्रत्येक जाति, धर्म, समुदाय, वर्ग तथा क्षेत्र के लिए समान व्यवहार होना। समाचार-पत्र को फोर्थ स्टेट अर्थात् 'चौथे स्तंभ' के रूप में भी जाना जाता है। आज समाचार-पत्र के बिना सुबह अधूरी लगती है। समाचार-पत्र जन-जन का सर्वप्रिय, जन-जागरण का सर्वश्रेष्ठ, सस्ता तथा सुलभ साधन है। समाचार-पत्र वर्तमान युग का दर्पण है।

**समाचार-पत्रों की उपयोगिता** प्रातःकाल ही विश्व में घटित घटनाओं को जानने को उत्सुक पाठक वर्ग इसके अभाव में बेचैन हो उठता है। वर्तमान में समाचार-पत्र अनेक भाषाओं के साथ-साथ दैनिक, संध्याकालीन, साप्ताहिक, मासिक एवं वार्षिक अनेकों रूपों में उपलब्ध हैं। उपयोगिता की दृष्टि से देखा जाए, तो समाचार-पत्र समाज, उप-जनपद, जनपद, राज्य, देश तथा विदेश की सभी सूचनाएँ देते हैं और हमें छोटे-बड़े, अच्छे-बुरे, युद्ध-संधि, जल, थल, नभ, सीमा सुरक्षा, नए आविष्कार आदि की जानकारी उपलब्ध कराते हैं।

**आदर्श समाचार-पत्र** एक आदर्श समाचार-पत्र में विश्व के राजनीतिक घटनाक्रम, न्यायालय संबंधी सूचनाएँ, खेल समाचार आदि होने चाहिए तथा ऐसे लेखों का संकलन होना चाहिए, जिससे लोग जातीय दुश्मनी तथा सांप्रदायिक हिंसा की भावना छोड़कर परस्पर शांति, सद्भावना एवं भाईचारे की भावना से ओत-प्रोत होकर जीवन-यापन करें। समाचार-पत्र सूई से तलवार तक, तोप से गोले तक तथा थल से गगन तक के नए आविष्कारों की जानकारी से युक्त होने चाहिए। समाचार-पत्रों में बेरोजगारों के लिए रोजगार संबंधी विवरण दिए जाने चाहिए।

समाचार-पत्रों में बच्चों के ज्ञानवर्द्धन के लिए लघु नाटिका, चित्र व कार्टून होने चाहिए, जिसमें देश की संस्कृति तथा देश-प्रेम की भावना दृष्टिगोचर होती हो।

**उपसंहार** प्रत्येक राष्ट्र के विकास के लिए समाचार-पत्र जनता के अज्ञानरूपी अँधेरे को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश करते हैं तथा उनके लिए अत्यंत उपयोगी होते हैं। अतः निःसंकोच कहा जा सकता है कि आज के युग में 'समाचार-पत्र' हमारी दैनिक आवश्यकताओं में से एक है।

- 13.** प्रातःकालीन भ्रमण से क्या-क्या लाभ हैं? क्या आप प्रातःकाल भ्रमण के लिए जाते हैं? बताइए कि प्रातःकाल का दृश्य कैसा होता है? [2011]

उत्तर

### प्रातःकालीन भ्रमण से लाभ

**भूमिका** 'भ्रमण' शब्द से ही अंतर्मन में स्वाभाविक प्रसन्नता की अनुभूति होने लगती है। इसी प्रसन्नता के लिए व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करता हुआ सुख की अनुभूति करता है। भ्रमण करना एक प्रकार का वैयक्तिक शौक होता है, जिसकी पूर्ति हेतु हम सुदूर-दुर्गम स्थानों, पहाड़ियों तथा समुद्री स्थानों पर घूमने के लिए जाते हैं।

**प्रातःकालीन भ्रमण के लाभ** ब्रह्ममुहूर्त में सूर्योदय से पहले भ्रमण के अनेक लाभ हैं। अथर्ववेद के अनुसार, रात्रि के अंतिम पहर में सूर्योदय से पूर्व की वायु अमृत-तुल्य होकर व्यक्ति के लिए लाभकारी सिद्ध होती है। वहीं दूसरी ओर प्रातःकालीन भ्रमण व्यक्ति को प्रसन्नता भी प्रदान करता है।

प्रातःकालीन भ्रमण से व्यक्ति के शरीर तथा मन-मस्तिष्क में तरौताजगी का संचार होता है एवं तन, मन तथा आत्मा में नवीन उत्साह का संचार होता है। प्रातःकालीन भ्रमण करने वाला व्यक्ति अपने प्रत्येक कार्य तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमेशा सफलता प्राप्त करता है। मैं भी प्रतिदिन प्रातःकाल भ्रमण करने के लिए अपने दादाजी के साथ गाँधी पार्क में जाता हूँ। यह मेरे घर के पास ही है। वहाँ जाना मेरी दिनचर्या का हिस्सा बन चुका है, परंतु जब विद्यालय प्रातःकाल जल्दी खुलता है, तब मैं भ्रमण के लिए नहीं जा पाता हूँ तथा विद्यालय चला जाता हूँ।

**प्रातःकाल का दृश्य** प्रातःकालीन दृश्य वास्तव में, बहुत ही सुहावना एवं मनभावन होता है। भोर में चिड़ियों का चहचहाना, फूलों की भीनी-भीनी सुगंध, खुला-खुला-सा आसमान, धुला-धुला-सा वातावरण मन को लुभाता रहता है। मेरे लिए तो प्रातःकालीन भ्रमण का अर्थ है—पूरे दिन के लिए तरौताजा महसूस करना, जिससे मैं अपना प्रत्येक कार्य फुर्ती के साथ समाप्त करता हूँ।

**उपसंहार** इस प्रकार प्रातःकालीन भ्रमण मनुष्य के लिए वरदान के समान है। इससे हमारे शरीर में नई स्फूर्ति, नई चेतना व नए उत्साह का संचार होता है। यह प्रत्येक आयु वर्ग के लोगों के लिए लाभदायक है। अतः हमें प्रातःकालीन भ्रमण करने की आदत डालनी चाहिए।

- 14.** आजकल की भाग-दौड़ भरी ज़िंदगी में रिश्ते-नातों की अहमियत समाप्त होती जा रही है, इसके क्या कारण हैं? आप इन रिश्तों को सँजोने के लिए क्या करेंगे? [2010]

उत्तर

### वर्तमान युग में रिश्ते-नातों की अहमियत

**भूमिका** मानव जीवन में रिश्ते-नातों का बहुत महत्त्व है। इसके अभाव में तो जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अकेला मानव, जीवन जी ही नहीं सकता। प्राचीनकाल से संयुक्त परिवारों का चलन रहा है, जिससे इंसान में अपनापन, प्रेम, त्याग, भ्रातृत्व, सहयोग की भावना विद्यमान रहती थी। इंसान उन रिश्तों के कारण प्रसन्नचित्त जीवन-यापन करता था। इन रिश्तों के द्वारा ही इंसान सामाजिक जीवन जी पाता है तथा यही मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण भी हैं।

**रिश्तों-नातों की अहमियत समाप्त होने के कारण** समय के साथ संयुक्त परिवार की परंपरा खत्म होती जा रही है। आज के युवाओं में यह मानसिकता पनपती जा रही है कि अगर आप अलग रहोगे, तो अपनी जिंदगी अपने ढंग से जी सकते हो। वे अपनी ही दुनिया में मस्त रहना चाहते हैं, किसी प्रकार की रोक-टोक उन्हें पसंद नहीं आती। वे रिश्तों से निजात पाना चाहते हैं। आज के समय में स्वार्थ और धन-लालसा इतनी बढ़ गई है कि इनके वशीभूत होकर (व्यक्ति) रिश्ते-नातों का गला घोटने से भी पीछे नहीं हटता। परस्पर बढ़ती ईर्ष्या की भावना के कारण भी रिश्ते-नाते समाप्त होते जा रहे हैं।

**रिश्तों को सँजोने के उपाय** रिश्तों को मजबूत बनाने के लिए व्यक्ति को कुछ समय रिश्तेदारों के लिए निकालना ही होगा, सुख-दुःख के समय उनके पास मौजूद रहना होगा, तभी रिश्तों का बने रहना संभव है। एक कहावत है “रिश्ते-नातों के विकास के लिए, मेल-जोल, अपनापन आवश्यक है। बिना पानी के तो पौधे तक सूख जाते हैं।” इंसान को अपने अहंकार को त्यागकर, प्रेम तथा मेल-जोल की भावना का विकास करना होगा, तभी ये रिश्ते-नाते बच पाएँगे, वरना वह दिन दूर नहीं, जब इंसान अपने रिश्ते-नातों से इतनी दूर चला जाएगा कि एकल जीवन नरक की भाँति प्रतीत होने लगेगा और संभवतः यह सृष्टि का अंतिम समय होगा।

**उपसंहार** अतः अपने मानसिक सुख के लिए व्यक्ति को समाज से मिलकर रहना ही होगा, जिसके लिए रिश्तों को निभाना अत्यंत आवश्यक है। रिश्ते-नातों को निभाते हुए हम भारतीयों को संपूर्ण विश्व को ‘वसुधैव कुटुंबकम्’ का संदेश देना चाहिए।

- 15.** दुनिया में अच्छे-बुरे दोनों तरह के लोग होते हैं। एक अच्छा पड़ोसी जहाँ आपका उत्तम मित्र साबित होता है, वहीं स्वभाव से बुरा पड़ोसी आपका सुख-चैन छीन लेता है। अपने पड़ोसी के स्वभाव की चर्चा कीजिए और बताइए कि उसकी कौन-सी बात आप जीवन-भर नहीं भूल पाएँगे? [2009]

**उत्तर** **मेरा पड़ोसी**

**भूमिका** पड़ोसी का अर्थ होता है—अपने पड़ोस (आस-पास) में रहने वाला। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में उसके सबसे समीप रहने वाला यदि कोई है, तो वह है उसका पड़ोसी। पड़ोसी परस्पर एक-दूसरे को अपने व्यक्तित्व, स्वभाव, व्यवहार एवं कार्य से प्रभावित करते हैं।

एक उत्तम आचरण वाला पड़ोसी, जहाँ वरदान साबित होता है और प्रत्येक सुख-दुःख में सहारा देता है, वहीं कुविचार तथा बुरे स्वभाव वाला पड़ोसी हमारा सुख-चैन छीन लेता है। व्यक्ति जब भी अपने रहने हेतु घर के विषय में सोचता है, तो सबसे पहले अच्छे पड़ोसी मिलें यही चिंतन करता है, क्योंकि विपत्ति के समय जो सबसे पहले काम आता है, वह पड़ोसी ही होता है। कहते हैं कि मुसीबत में रिश्तेदार बाद में आते हैं, पहले पड़ोसी ही काम आते हैं।

**हमारे पड़ोसी** हमारे पड़ोसी मुकेश गुप्ता जी का पूरा परिवार सामाजिक प्रवृत्ति का है। हम उन्हें चाचा जी कहकर बुलाते हैं। वे हँसमुख स्वभाव के व्यक्ति हैं। सभी से मधुर वाणी में बात करते हैं तथा हमारे परिवार के साथ उनके मधुर संबंध हैं। वे सदैव पड़ोसियों की सहायता करने के लिए तैयार रहते हैं।

**अविस्मरणीय घटना** एक रात बहुत तेज बारिश हो रही थी। सभी लोग अपने घरों में सो रहे थे। मैं भी सो रहा था, कि अचानक मुझे कुछ सन-सन की आवाज सुनाई दी, उसी समय मैंने टॉर्च जलाकर देखा, तो वहाँ साँप था। मैं जोर से चिल्लाया, तभी माँ जाग गई। माँ ने पैर नीचे रखा ही था कि साँप की पूँछ माँ के पैर से दब गई और माँ को साँप ने

काट लिया। मेरे शोर मचाने की आवाज सुनकर मेरे पड़ोस में रहने वाले चाचा और चाची दोनों आए और मेरी माँ के पैर पर चाची ने तुरंत ही अपना दुपट्टा बाँध दिया। चाचा ने ब्लेड से साँप के द्वारा काटी हुई जगह पर चीरा लगा दिया और अपनी गाड़ी निकालकर मेरी माँ को चिकित्सालय ले गए। वहाँ मेरी माँ का इलाज हुआ। वह स्वस्थ हुई तथा घर आई। मेरे पिताजी जब दूसरे दिन ऑफिस के काम से वापस आए, तो हमने सारी बात उन्हें बताई, उन्होंने कहा अच्छे पड़ोसी का यही लाभ है। पिताजी ने मुकेश चाचा तथा राधा चाची को धन्यवाद दिया।

**उपसंहार** एक अच्छा पड़ोसी वही होता है, जो सुख-दुःख और विपत्ति के समय हमारी सहायता करे और हमेशा मिल-जुल कर रहे।

- 16.** आज संपूर्ण संसार फैशन का दीवाना है। हमारा अधिकांश व्यवहार फैशन पर ही आधारित है। आपकी दृष्टि में फैशन क्या है और यह आज के मनुष्य को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है? [2009]

**उत्तर** **हमारे जीवन पर फैशन का प्रभाव**

**भूमिका** एक फ्रांसीसी विचारक के अनुसार, “व्यक्ति स्वतंत्र पैदा होता है, लेकिन पैदा होते ही वह तरह-तरह की जंजीरों में जकड़ जाता है।” वह परंपराओं, रीति-रिवाजों, शिष्टाचारों, औपचारिकताओं आदि का गुलाम हो जाता है। इसी क्रम में वह तेजी से बदलते फैशन का भी गुलाम हो जाता है। समय के साथ-साथ सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि क्षेत्रों में भी परिवर्तन होते रहते हैं। फैशन क्या है? कुछ लोगों का मानना है कि फैशन आधुनिक संस्कृति एवं सभ्यता के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना है। कालक्रम के अनुसार, “परंपरागत तरीके परिवर्तित होते जाते हैं तथा उनका स्थान नवीनता और आधुनिकता ले लेती है।”

**फैशन का मनुष्य पर प्रभाव** फैशन के दौर में आज का मनुष्य उस स्थान पर खड़ा है, जहाँ फैशन अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है, चाहे यह पॉप संगीत से संबंधित हो, कपड़ों से संबंधित हो, बात-व्यवहार से संबंधित हो या किसी भी अन्य चीज से संबंधित हो। प्रत्येक आधुनिक वस्तु फैशन का हिस्सा है। आज फैशन आधुनिकता और उच्च सामाजिक स्तर का पर्याय बन गया है। समाज का प्रत्येक वर्ग इससे प्रभावित है।

**उपसंहार** मेरे विचार से अच्छे कपड़े पहनकर अपने व्यक्तित्व को आकर्षक बनाना अच्छी बात है, लेकिन आधुनिकता और फैशन के प्रवाह में आकर तंग एवं भद्दे वस्त्रों को केवल इसलिए पहनना कि फैशन है, सर्वथा अनुचित है। इससे व्यक्ति हास्यास्पद तो लगता ही है, साथ-ही-साथ उसके व्यक्तित्व का हास भी होता है। वह वैयक्तिक एवं सामाजिक रूप से प्रभावित होकर अवांछित फैशन के पीछे भागकर अभद्र हरकतें करता है। अतः मनुष्य को फैशन के नाम पर कुछ भी पहनने या करने की मानसिकता को त्यागना चाहिए।

- 17.** विद्यार्थी जीवन में समय प्रबंधन के विषय में बताते हुए उसके महत्व का वर्णन कीजिए।

**उत्तर** **भूमिका** समय का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। खोया हुआ धन पुनः अर्जित किया जा सकता है, खोया वैभव पुनः



प्राप्त किया जा सकता है, स्वास्थ्य उचित चिकित्सा से पाया जा सकता है, विद्या विस्तृत प्रयासों से पुनः अर्जित की जा सकती है, किंतु समय को एक बार खोने के बाद पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता। समय निरंतर गतिशील रहता है। समय का सदुपयोग कर जीवन को नई दिशा और उन्नति प्रदान की जा सकती है।

**विद्यार्थी और समय प्रबंधन** विद्यार्थी जीवन में यदि समय का सही प्रबंधन करके चले, तो वह जीवन-पथ पर आशातीत प्रगति के अवसर पाता है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे हर कार्य को निश्चित समय या अवधि में या पहले ही समाप्त कर लें, जिससे बचे हुए समय में दूसरे कामों को भी देखा जा सके और उनकी रूपरेखा बनाई जा सके।

खाली समय का भी ऐसा प्रबंधन करें कि वह भी उपयोगी सिद्ध हो। इस कार्य में विद्यार्थी अपने शिक्षकों या बड़ों की मदद ले सकते हैं। विद्यार्थी अपने खाने-पीने, खेलने-पढ़ने, सोने-जागने आदि के लिए एक तालिका का निर्माण कर समय को व्यवस्थित करें।

**समय का महत्व** जीवन में वही लोग उन्नति एवं सफलता प्राप्त करते हैं, जो समय का मूल्य एवं महत्व जानते हैं। समय के महत्व को सही प्रकार जानकर उसका सही उपयोग किया जाए, तो समय कभी प्रतिकूल नहीं होगा, अपितु हमारे संग-संग चलने लगेगा। विद्यार्थियों के लिए तो एक-एक पल कीमती होता है।

विद्यार्थियों को चाहिए कि वे उन व्यक्तियों का अनुसरण करें, जीवन से प्रेरणा लें, जिन्होंने समय के सही उपयोग से सफलता अर्जित की है। टाटा, बिरला, सचिन तेंदुलकर, संजीव कपूर, धनराज पिल्लै आदि अनेक नाम हैं, जिन्होंने समय की नब्ज पहचानकर उसे अपने हिसाब से चलने के लिए बाध्य कर दिया; जैसे—एक वृक्ष पर फल लगता है, तो वृक्ष सही समय आने पर उसे गिरा देता है। यदि उस फल को पहले तोड़ लिया जाए, तो उसके गुण-स्वरूप में अंतर आ जाता है और बाद में तोड़ा जाए, तब भी उसका प्रभाव बदल जाता है।

**उपसंहार** समय के लिए अंग्रेजी में एक उक्ति कही जाती है, “टाइम इज मनी” अर्थात् “समय ही धन है।” जो विद्यार्थी इस धन को लापरवाही से लुटाता रहता है, वह एक दिन समय का रोना रोता है। इसलिए समय की बहुमूल्यता को जानकर विद्यार्थियों को इसका सही प्रबंधन सीखना चाहिए, क्योंकि तभी वे जीवन में सफल हो सकेंगे।

## ब भावनात्मक एवं भाव वर्णन

1. पुस्तकें ज्ञान का भंडार होती हैं तथा हमारी सच्ची मित्र एवं गुरु भी होती हैं। हाल ही में पढ़ी गई अपनी किसी पुस्तक के विषय में बताते हुए लिखिए कि वह आपको पसंद क्यों आई और आपने उससे क्या सीखा? [2017]

**उत्तर भूमिका** पुस्तकें ही मानव जीवन की सच्ची साथी हैं। एक अच्छी पुस्तक पढ़ने से मानवीय चेतना और मानवीय विवेक का सही निर्माण होता है। अच्छी पुस्तकें मनुष्य को पथ-भ्रष्ट होने से बचाती हैं। संपूर्ण विश्व का ज्ञान हम पुस्तकों से प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तकों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है कि पुस्तकें ज्ञान का स्थायी आधार होती हैं। बड़े-से-बड़े विचारकों, लेखकों आदि के विचार व ज्ञान संबंधी बातों को हम पुस्तकों के माध्यम से ही भली-भाँति जान

सकते हैं। अतः स्पष्ट है कि पुस्तकें ज्ञान का भंडार होती हैं तथा सच्ची मित्र एवं गुरु भी होती हैं।

**हाल ही में पढ़ी गई पुस्तक** अभी हाल ही में मैंने सुप्रसिद्ध हिंदी महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य ‘रामचरितमानस’ पढ़ा। ‘रामचरितमानस’ मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन-चरित्र को दर्शाने वाला श्रेष्ठ महाकाव्य है, जिसमें तुलसी ने भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, भक्ति और कवित्व का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत किया है। पारिवारिक एवं सामाजिक आदर्श का जो स्वरूप रामचरितमानस में मिलता है, वह और कहीं देखने को नहीं मिलता। इसके साथ ही आदर्श मानवीय मूल्यों की कलात्मक अभिव्यक्ति भी इस ग्रंथ में की गई है। इसमें विभिन्न चरित्रों के माध्यम से मानव व्यवहार का आदर्श रूप प्रस्तुत किया गया है।

**पुस्तक क्यों पसंद आई** यह पुस्तक मुझे इसलिए पसंद आई, क्योंकि इसके माध्यम से हम अनेक प्रकार के दुर्गुणों से दूर हो जाते हैं, जिससे व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है। इसको पढ़ने मात्र से मनुष्य को एक नया ही आनंद प्राप्त होता है।

**सीख** इस पुस्तक के माध्यम से हमें आदर्श मानवीय मूल्यों को अपनाते हुए पथ-भ्रष्ट होने से बचने की सीख दी गई है।

2. आजकल समाज में अराजकता बढ़ती जा रही है। अराजकता के कारण बताते हुए उसके दुष्परिणामों को स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर भूमिका** मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए मनुष्य का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में समाज से संबंध स्थापित हो जाता है या यह कहें कि मनुष्य ही परस्पर मिलकर समाज का गठन करते हैं, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। समाज का उत्थान या पतन उसमें रहने वाले मनुष्यों की प्रवृत्ति पर निर्भर करता है।

आधुनिक समाज में अराजकता अनेक रूपों में विद्यमान हैं। समाज में व्याप्त चोरी, डकैती, हत्याएँ, महिलाओं से छेड़छाड़, रिश्वतखोरी आदि सभी अराजकता के ही रूप हैं। अराजकता फैलाने की प्रवृत्ति रखने वाले तत्त्व जब प्रमुख पदों पर आसीन होते हैं, तब यह समूचे तंत्र को ही खोखला कर देते हैं।

**समाज में व्याप्त अराजकता के कारण** समाज में व्याप्त अराजकता का प्रमुख कारण मनुष्य की स्वार्थ-लोलुपता एवं बढ़ती असंतोष की प्रवृत्ति है। भौतिकता की अंधी दौड़ में मनुष्य इतना अधिक स्वार्थी बन गया है कि वह अपनी गौरवशाली परंपरा व संस्कृति को भुला बैठा है। बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा के युग में अधिकांश लोग संघर्ष करने से पूर्व ही अपनी हार स्वीकार कर लेते हैं। फलस्वरूप उनके अंतःमन में समाहित उनकी हीन भावना उन्हें वह सब कुछ करने के लिए बाध्य करती है, जिन्हें हम असामाजिक कृत्य का नाम देते हैं। वे अपना आत्म-संयम खो बैठते हैं। थोड़ी-सी परेशानियों के सम्मुख वे घुटने टेक देते हैं। इन परिस्थितियों में वे जल्दी ही कुसंगति के चक्रव्यूह में उलझ जाते हैं, जिसके फलस्वरूप उनमें मदिरापान, धूम्रपान, चोरी, डकैती, धोखाधड़ी आदि की बुरी आदतें पड़ जाती हैं।

**समाज में व्याप्त अराजकता के दुष्परिणाम** छात्र आज बात-बात पर अपने गुरुओं का उपहास उड़ाने तथा कभी-कभी उनसे मारपीट पर भी उतर आने को प्रशंसा का विषय समझने लगे हैं। युवाओं व वयस्कों में दिखावे व झूठी शान को ही संस्कृति का रूप समझा जाने लगा है। यह सभी कृत्य समाज में फैली अराजकता का ही परिणाम है। स्वतंत्रता के सात दशकों में जिस गति से हमने

भौतिक सफलताएँ अर्जित की हैं, उसी गति से समाज प्रदूषित हो रहा है।

**उपसंहार** अंततः यही कहा जा सकता है कि हमें किसी भी रूप में उन गतिविधियों को बढ़ावा नहीं देना चाहिए, जो समाज में अराजकता के विस्तार में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सहयोग करती हैं।

### 3. “लड़का-लड़की एक समान।” इस संदर्भ में अपने भाव एवं विचार प्रकट कीजिए।

**उत्तर भूमिका** लड़का व लड़की एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। नर-नारी का जीवन एक-दूसरे के बिना अधूरा है। सृष्टि के अस्तित्व के लिए दोनों की महत्ता अनिवार्य है।

**भेदभाव की स्थिति** नर व नारी के अपने-अपने कार्यक्षेत्र, कर्तव्य व दायित्व हैं, जहाँ पुरुष धन अर्जन करता है, वहीं नारी घर-परिवार के दायित्व को सँभालती है, यहाँ तक कि आज नारी भी पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर हर कार्यक्षेत्र में अपना योगदान दे रही है, परंतु फिर भी लड़का व लड़की को समान नहीं समझा जाता, नारियों पर अत्याचार होता है। ग्रामीण स्त्रियाँ इस शोषण का अधिक शिकार होती हैं। आज के आधुनिक युग में लड़का व लड़की को केवल कहने के लिए एक समान कहा जाता है, परंतु आज भी भ्रूण हत्या जैसी समस्या हमारे समाज में व्याप्त है। लड़कियाँ घर से बाहर निकलने पर स्वयं को असुरक्षित महसूस करती हैं।

**समाज के आधारभूत स्तंभ : नर व नारी** नर व नारी दोनों समाज के आधारभूत स्तंभ हैं। समाज के विकास, उन्नति, प्रगति में दोनों की ही समान भूमिका है। लड़का व लड़की में भेदभाव करने का कारण सामाजिक दृष्टिकोण है। प्राचीनकाल से लेकर आज आधुनिक काल तक हमारे समाज में कई रूढ़ियाँ व्याप्त हैं; जैसे—यह मान लेना कि पुत्र ही वंश को चलाता है, दहेज प्रथा आदि, समस्याएँ लड़की के आकाशरूपी जीवन में धूमकेतु बनकर छा जाती हैं। यद्यपि शिक्षा के द्वारा नारी की स्थिति में सुधार हुआ है। लड़का व लड़की में भेदभाव शिक्षा के द्वारा ही दूर किया जा सकता है। इसके लिए लोगों को जागरूक किया जाना आवश्यक है, लोगों की मानसिकता में परिवर्तन लाना होगा, लड़का-लड़की में भेदभाव न कर, उन्हें समान महत्त्व दिया जाना चाहिए।

**उपसंहार** प्राचीनकाल से देश की धरती पर सीता, गार्गी, भारती जैसी नारियों को पूजनीय माना जाता है। आज के युग में नारी भी अंतरिक्ष तक पहुँच गई है, इसलिए नारी की उपेक्षा न कर उसको समान महत्त्व दिया जाना चाहिए। संविधान में लड़का-लड़की को समान माना गया है, दोनों के समान अधिकार हैं, इसलिए समाज के विकास के लिए जीवनरूपी दोनों पहियों लड़का व लड़की को समान महत्त्व देकर विश्व को विकास के पथ पर ले जाना चाहिए। समानता एक अवधारणा नहीं है, यह एक ज़रूरत है। यह गुरुत्वाकर्षण के समान है, जिसमें हमें पुरुषों व महिलाओं को एक साथ इस धरती पर खड़ा करने की ज़रूरत है। अतः समानता का मुद्दा महिलाओं से संबंधित मुद्दा नहीं है यह मानवता से संबंधित मुद्दा है, जो सभी मनुष्यों को प्रभावित करता है।

### 4. बेरोज़गारी के कारण बताते हुए उसे दूर करने के लिए क्या उपाय किए जाने चाहिए? स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर भूमिका** बेरोज़गारी की समस्या हमारे देश में दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आज हमारे समाज की स्थिति ऐसी हो गई है कि योग्य व उच्च शिक्षा प्राप्त कर व्यक्तियों को मजदूर की दरों पर काम

करने के लिए विवश होना पड़ता है। बेरोज़गारी समाज के लिए एक ऐसी गंभीर समस्या है, जो मानव-शक्ति व विकास को तो क्षति पहुँचा रही है, साथ ही देश के विकास में भी बाधा उत्पन्न कर रही है।

**बेरोज़गारी के कारण** भारत में बेकारी की समस्या के कई कारण हैं; जैसे—भाषा संबंधी समस्या, शिक्षा का रोजगारोन्मुखी न होना, जनसंख्या का अत्यधिक होना, योजनाओं का कार्यान्वयन उचित प्रकार से न हो पाना आदि। बेरोज़गारी समाज के लिए अभिशाप है, इससे देश में निर्धनता, भुखमरी, मानसिक अशांति फैलती है, तो दूसरी ओर चोरी, डकैती, हिंसा, आत्महत्या जैसी समस्याएँ समाज में व्याप्त होती जा रही हैं।

देश की शिक्षा प्रणाली का दोषपूर्ण होना, कृषि में विकास न होना, जिसके कारण किसान पिछड़ते जा रहे हैं। मशीनीकरण ने श्रमिकों के रोजगार के अवसरों में कमी ला दी है। ये सभी कारण आज देश के लिए चुनौती बने हुए हैं। बेरोज़गारी की समस्या देश में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों को दूषित कर रही है।

**बेरोज़गारी दूर करने के उपाय** बेरोज़गारी की समस्या को दूर करने के लिए सर्वप्रथम हमें जनसंख्या पर नियंत्रण करना होगा। शिक्षा प्रणाली में सुधार लाकर शिक्षा अर्थात् पुस्तकीय ज्ञान के साथ व्यावहारिक ज्ञान प्रदान कर बेरोज़गारी की समस्या नियंत्रित की जा सकती है। मशीनीकरण को अत्यधिक महत्त्व न देकर कुटीर उद्योगों का विकास किया जाना चाहिए। सरकार द्वारा, जो योजनाएँ बनाई जाती हैं, उसका उचित प्रकार से कार्यान्वयन किया जाना अति आवश्यक है, तभी बेरोज़गारी की समस्या को दूर किया जा सकता है।

**उपसंहार** हमारी सरकार बेरोज़गारी उन्मूलन के प्रति जागरूक है और इस दिशा में उसने महत्त्वपूर्ण कदम भी उठाए हैं। परिवार नियोजन, नए-नए उद्योगों की स्थापना, प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना आदि अनेक ऐसे कार्य हैं, जो बेरोज़गारी दूर करने में सहायक सिद्ध हुए हैं, परंतु वर्तमान स्थिति को देखते हुए इन्हें और अधिक विस्तृत और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

### 5. परिवारों में बिखराव आने के क्या कारण हैं? परिवार में बिखराव के फलस्वरूप वृद्धों की स्थिति व पीढ़ी का वर्णन कीजिए।

**उत्तर भूमिका** आज आधुनिक युग में परिवारों में बिखराव आ रहा है। संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार बनते जा रहे हैं, जिससे पारिवारिक संबंध टूटते जा रहे हैं। नई पीढ़ी आधुनिकता और पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण कर अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूल रही है, जिससे परिवार टूट रहे हैं।

**परिवारों में बिखराव आने के कारण** कई परिवारों के बिखराव का कारण सदस्यों की स्वार्थ भावना भी होती है। आधुनिक युग में अपने सुख को सर्वोपरि रखकर युवा पीढ़ी किसी के साथ नहीं रहना चाहती। वह केवल आत्मकेंद्रित होकर रहना चाहते हैं।

आधुनिक युग में परिवार में रहने वाले लोग एक-दूसरे से खुलकर बात नहीं कर पाते, जिसके कारण रिश्तों में बिखराव नज़र आने लगा है। यह सब आज की पीढ़ी द्वारा पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण करने के कारण हुआ है। जहाँ वह अपने अहं को सर्वोपरि रखते हैं। पुरानी पीढ़ी एवं नई पीढ़ी के विचारों का आपस में मेल न खाना, बिखराव का अन्य कारण है। यह नहीं है कि नई पीढ़ी के विचार ही इस बिखराव का कारण हैं, पुरानी पीढ़ी को भी

अपने विचारों में समय के अनुसार परिवर्तन करना होगा, तभी इस बिखराव से बचा जा सकता है।

**वृद्धों की स्थिति व पीड़ा का वर्णन** एकल परिवार के कारण वरिष्ठ नागरिक उपेक्षित हो रहे हैं। इस बिखरते परिवार के कारण बुजुर्गों के लिए समस्याएँ उभरती जा रही हैं। आज की तेज रफ़्तार जिंदगी में नई पीढ़ी सुबह से शाम तक अपने निजी कामों में व्यस्त रहती है, जिससे घर में रह रहे बुजुर्ग अकेलापन महसूस करते हैं। अपनी निजी स्वतंत्रता, स्वार्थ, महँगाई के कारण युवा वर्ग अपने बुजुर्गों को समय नहीं दे पाते, जिसके कारण परिवार में बिखराव आ जाता है। जब माता-पिता को सहाय्य की आवश्यकता होती है, तब संतान उन्हें घर से निकाल देती है अर्थात् युवा अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम तक छोड़ आते हैं।

**उपसंहार** वस्तुतः हमें परिवार के महत्त्व को समझकर व वृद्धों की स्थिति व पीड़ा से यह जान लेना चाहिए कि आज जैसी स्थिति हमारे बुजुर्गों की है, वैसी ही स्थिति आने वाले समय में हमारी स्वयं की होगी। अतः संयुक्त परिवार व वृद्धों की स्थिति समझकर परिवार में बिखराव न आने देकर हमें उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करने का प्रयास करना चाहिए, जिससे हमारी सभ्यता व संस्कृति सुरक्षित रह सके।

## 6. वर्तमान शिक्षा पद्धति के संबंध में अपने भावों को प्रकट करते हुए बताइए कि आप वर्तमान में किस प्रकार की शिक्षा पद्धति चाहते हैं?

**उत्तर भूमिका** शिक्षा मानव जीवन की आधारशिला है। शिक्षा व्यक्ति के स्वयं के विकास एवं देश के विकास का एक अभिन्न अंग है। प्राचीनकाल से ही शिक्षा पद्धति संबंधी विचारधारा पर जोर दिया जाता था। शिक्षा अंधकार से प्रकाश की ओर तथा अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाती है। 86वें संविधान संशोधन के अनुसार, शिक्षा की पहुँच सभी तक संभव हो पाई है। अनुच्छेद 21-A बच्चों के शिक्षा संबंधी अधिकार को व्याख्यायित करता है, जिसमें 6-14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार सुरक्षित है।

**वर्तमान शिक्षा-पद्धति** वर्तमान शिक्षा पद्धति तीन श्रेणियों में है—प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च या विश्वविद्यालय शिक्षा। इन तीनों श्रेणियों में माध्यमिक शिक्षा अति महत्वपूर्ण है या कह सकते हैं कि माध्यमिक शिक्षा ही राष्ट्र की रीढ़ है। माध्यमिक शिक्षा के बाद ही विश्वविद्यालय शिक्षा ग्रहण की जा सकती है, इसलिए माध्यमिक शिक्षा की उपयोगिता को देखते हुए ही अनेक योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। ग्रामीण महिलाओं एवं पिछड़े क्षेत्र में रह रहे लोगों के लिए सरकार ने सतत शिक्षा के कार्यक्रम प्रारंभ किए हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को उच्च व अच्छी आधुनिक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए सरकार ने 'नवोदय विद्यालय' तथा केंद्रीय विद्यालय जैसी संस्थाओं को स्थापित करने का प्रशंसनीय कार्य किया है। शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अनुसार, यदि कोई बच्चा शिक्षा के अधिकार से वंचित रह जाता है, तो इसकी जिम्मेदारी कार्यप्रणाली की होगी, क्योंकि वर्तमान में बालकों को उनके शिक्षा के अधिकार से वंचित रखना बच्चे के विकास के साथ ही देश के विकास से भी खिलवाड़ है।

**वर्तमान में आदर्श शिक्षा पद्धति की आवश्यकता** जो शिक्षा हमारे जीवन का निर्माण कर सके, विचारों का सामंजस्य कर सके, वास्तव में वही शिक्षा आदर्श शिक्षा है। वर्तमान समय में हमें इसी प्रकार की आदर्श शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है। हमारी वर्तमान

शिक्षा प्रणाली में कुछ खामियाँ (कमियाँ) हैं; जैसे—छात्रों में अनुशासनहीनता की भावना का होना, वर्तमान शिक्षा को व्यावसायिक योग्यता न दे पाना आदि। आज हमें शिक्षा को रटत न बनाकर उसके व्यावहारिक पक्ष पर जोर देना होगा। इसके अतिरिक्त नवयुवकों के शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक विकास के फलस्वरूप ही देश का विकास हो पाएगा।

**उपसंहार** शिक्षा संबंधी इन खामियों को दूर करके हम बेरोजगारी की समस्या पर भी नियंत्रण पा सकते हैं। 'चाणक्य' के अनुसार, "शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है।"

## 7. बाढ़ का विकराल रूप किस प्रकार देश की अर्थव्यवस्था एवं जन-जीवन को प्रभावित करता है?

**उत्तर भूमिका** बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है। बाढ़ का अर्थ है—चारों ओर पानी का विकराल रूप धारण कर लेना। जब नदियाँ, नाले, झीलें जल को अपने में समाहित कर पाने में असमर्थ हो जाती हैं, तब वह जल आस-पास के क्षेत्रों में फैलकर वहाँ के जन-जीवन को तबाह कर देता है। बाढ़ एक ऐसी तबाही है, जो बड़े पैमाने पर घर-परिवारों को नष्ट कर देती है। आज वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद भी मनुष्य प्रकृति के प्रकोप से बच पाने में असमर्थ है, चाहे वह सुनामी हो, तूफान हो, भूकंप हो या बाढ़। इस प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं का बारंबार आना मानव जीवन का प्रकृति के साथ असंतुलन को दर्शाता है।

**बाढ़ का देश की अर्थव्यवस्था एवं जन-जीवन पर प्रभाव** बाढ़ अपने विकराल रूप में आकर देश की अर्थव्यवस्था व जन-जीवन को नुकसान पहुँचाती है। बाढ़ से धन-जन की अपार हानि होती है। सड़कें टूट जाती हैं। रेल-मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। सड़कों एवं रेलमार्गों के अवरुद्ध होने से यातायात एवं परिवहन बाधित होता है, जिससे जन-जीवन ठप्प हो जाता है। बाढ़ के कारण लाखों एकड़ क्षेत्र की फसल बर्बाद हो जाती है।

बाढ़ में मवेशियों के बह जाने से पशु संसाधन की हानि तो होती है, साथ ही कृषि पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। बाढ़ के कारण लोग विस्थापित हो जाते हैं, उन्हें अपने घरों तक से हाथ धोना पड़ता है। बाढ़ का प्रकोप बाढ़ के बाद भी लोगों को प्रभावित करता है।

**उपसंहार** अतः पर्यावरण के साथ संतुलन बनाकर व प्रकृति के साथ मैत्री संबंध स्थापित कर हम बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं से निपट सकते हैं। हमें ऐसी योजनाओं का क्रियान्वयन करना होगा, जिससे नदियों आदि के जलस्तर में असमान वृद्धि न हो, तभी हम इन आपदाओं पर नियंत्रण कर पाएँगे तथा देश एवं जन-जीवन को सुरक्षित रख पाएँगे।

## 8. आज खेलों में फैला भ्रष्टाचार एक नया ही रूप ले रहा है, विषय को स्पष्ट करते हुए अपने प्रिय खेल का वर्णन कीजिए तथा जीवन में खेलों की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए। [2014]

**उत्तर भूमिका** स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम की आवश्यकता होती है और खेल व्यायाम का एक ऐसा रूप है, जिसमें व्यक्ति का शारीरिक ही नहीं, बल्कि मानसिक विकास भी होता है। खेलकूद व्यक्ति के बहुमुखी विकास के लिए आवश्यक है।

**खेलों में फैला भ्रष्टाचार** खेलों में भी यही भ्रष्टाचार व्याप्त है। सक्षम अधिकारी अपने अधिकारों का दुरुपयोग करके अयोग्य लोगों का चयन करते हैं। आज समाचार-पत्र हाथ में लेते ही खेल पृष्ठ

पर कॉमनवेल्थ घोटाले या मैच फिक्सिंग के मामले प्रकाश में आते रहते हैं, जो अति निंदनीय कृत्य हैं। मैच फिक्सिंग में तो खिलाड़ियों तक के हाथ होने की सूचनाएँ मिलती हैं, जिससे खेल प्रेमियों को गहरा आघात लगता है, वहीं विश्वस्तरीय मंच पर खेल एवं देश की छवि भी धूमिल होती है।

**मेरा प्रिय खेल** मेरा प्रिय खेल 'क्रिकेट' है, जिससे मैं भावनात्मक रूप से जुड़ा हूँ। यह खेल सर्वप्रथम यूरोपीय देश इंग्लैंड से प्रारंभ होकर भारत आया। इस खेल को पहले भारत में शौक के रूप में नवाबों, राजाओं तथा राजकुमारों ने अपनाया। आजकल तो यह खेल अति लोकप्रिय होकर प्रत्येक जगह खेला जाने लगा है, चाहे वह विद्यालय हो या महाविद्यालय, शहर हो या गाँव।

**खेल का वर्णन** इस खेल में दो टीमों होती हैं। दोनों टीमों में ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। इसका मैदान वृत्ताकार होता है। इस खेल में निश्चित दूरी पर आमने-सामने तीन-तीन विकेट भूमि पर गाड़ दिए जाते हैं। इस खेल में तीन अंपायर होते हैं, जिसमें मुख्य रूप से दो होते हैं तथा एक अंपायर अलग होता है। अंपायर ही निर्णय लेता है कि खिलाड़ी आउट हुआ है या नहीं। खिलाड़ियों द्वारा लगाए गए चौके, छक्के, नो बॉल आदि का निरीक्षण भी अंपायर ही करता है, जिस टीम के रन अधिक होते हैं, वही टीम विजयी होती है।

**जीवन में खेलों की आवश्यकता** जीवन में खेलों का अति महत्त्व है। खेलों से व्यक्ति के जीवन में संयम, दृढ़ता, गंभीरता, एकाग्रता, सहयोग एवं अनुशासन की भावना का विकास होता है। खेलकूद में होने वाली हार-जीत भी विद्यार्थियों को जीवन में सफलता-असफलता के समय संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा देती है। खेल खेलने से शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है, मांसपेशियाँ स्वस्थ होती हैं व आलस्य दूर भागता है। खेलों के द्वारा मनुष्य में अपनत्व तथा एकता की भावना भी जन्म लेती है। वर्तमान समय में खेल रोजगार की दृष्टि से भी एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में सामने आया है और एक खिलाड़ी के अतिरिक्त कोच, सहायक, चिकित्सक आदि के रूप में व्यक्ति इसमें अपनी सेवाएँ दे सकता है।

**उपसंहार** खेलों के क्षेत्र में आए इस बदलाव के कारण ही अब लोगों की मानसिकता में भी परिवर्तन दिखाई दिया है, तभी जहाँ पहले कहा जाता था, 'खेलोगे-कूदोगे होगे खराब', अब कहा जाता है, 'खेलोगे-कूदोगे बनोगे नवाब'। अतः खेल व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

9. त्योहार हमें उमंग एवं उल्लास से भरकर अपनी संस्कृति से जोड़े रखते हैं। आजकल लोगों में त्योहारों को मनाने के प्रति उत्साह एवं आस्था का अभाव देखा जाता है। लोगों की इस मानसिकता के कारण बताते हुए जीवन में त्योहारों के महत्त्व का वर्णन कीजिए। [2013]

**उत्तर भूमिका** हमारा देश भारत त्योहारों का देश है। यहाँ राष्ट्रीय तथा धार्मिक दोनों प्रकार के त्योहार बहुत ही उत्साह तथा उल्लास से मनाए जाते हैं। राष्ट्रीय पर्वों में 26 जनवरी, 15 अगस्त तथा 2 अक्टूबर आदि मनाए जाते हैं। धार्मिक पर्वों में दीपावली, दशहरा, महाशिवरात्रि, होली, रक्षाबंधन, ईद आदि मनाए जाते हैं।

**त्योहारों के प्रति उत्साह एवं आस्था का अभाव** आजकल लोगों में त्योहार मनाने के प्रति उत्साह एवं आस्था का अभाव देखा जाता है। इसका कारण है—स्वार्थी प्रवृत्ति, अति व्यस्त जीवन शैली, धन का अभाव, अपनत्व की कमी, आस्था एवं भावना का मृतप्राय होना।

पहले लोग भावनात्मक रूप से जुड़कर आपसी मतभेद तथा रंग, जाति, ऊँच-नीच का भेद-भाव भुलाकर आपस में मिल-जुलकर प्रेमपूर्वक त्योहार मनाते थे, परंतु अब स्थिति बदल गई है।

**लोगों की मानसिकता का कारण** ज्यादातर असामाजिक तत्वों द्वारा त्योहारों के अवसरों पर मद्यपान आदि किया जाता है तथा वे समाज में अशोभनीय भाषा का प्रयोग करके त्योहारों की पवित्रता, स्वच्छता तथा उपादेयता को कलंकित करते हैं। हमें इन बुराइयों को छोड़कर त्योहार का आनंद उठाना चाहिए।

त्योहार हमारे देश की सभ्यता एवं संस्कृति के ही परिचायक नहीं होते हैं, बल्कि सुख-समृद्धि के भी परिचायक होते हैं। ये बुराई पर अच्छाई तथा अन्याय पर न्याय और असत्य पर सत्य की जीत के प्रतीक होते हैं।

**जीवन में त्योहारों का महत्त्व** प्रायः सभी त्योहार भावना प्रधान हैं; जैसे—दीपावली, होली, दशहरा, ईद, क्रिसमस आदि। भारतीयों के सभी त्योहार जहाँ प्रेम, उत्साह, उपासना के साथ देवी-देवताओं की श्रद्धा से जुड़े हुए हैं, वहीं वे समृद्धि तथा प्रकाश के प्रदाता भी हैं। होली के समय लहलहाती गेहूँ की खेती, दीपावली के पूर्व धान की उपज आदि इसके सीधे उदाहरण हैं। 'दशहरा' रावण पर राम की विजय के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जिसे हम बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाते हैं।

**उपसंहार** इस प्रकार, त्योहार मनुष्य के लिए बहुत ही महत्त्व रखते हैं। ये मनुष्य में एकता, भाईचारा, प्रेम तथा सद्भाव बढ़ाने में सहायक होते हैं। अतः हमें इनका महत्त्व समझना चाहिए।

10. कल्पना कीजिए कि आपको किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का साक्षात्कार (Interview) लेने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। बताइए कि वे प्रसिद्ध व्यक्ति कौन हैं और आप उनसे कौन-कौन-से दो प्रश्न पूछेंगे व क्यों? [2012]

**उत्तर भूमिका** सभी के जीवन में बहुत-से महत्वपूर्ण दिन आते हैं। मेरे जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण दिन वह था, जब हमारे विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने मुझे कैलाश स्टेडियम में आने वाले अपने देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का साक्षात्कार लेने का दायित्व दिया।

**प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय** प्रधानाचार्य जी ने मुझे बताया कल विद्यालय की ओर से परिचय तथा अनुमति-पत्र की व्यवस्था कर दी जाएगी और तुम्हें कल दोपहर दो बजे कैलाश स्टेडियम अवश्य पहुँचना है। अगले दिन मैं विद्यालय पहुँचा। वहाँ मुझे कार्यालय से साक्षात्कार लेने का अनुमति-पत्र तथा पहचान-पत्र दिलवा दिया गया। मैं स्टेडियम में पहुँचकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी देर में मोदी जी हृष्ट-पुष्ट, उत्साहयुक्त सुदृढ़ शरीर तथा मनमोहक मुसकान के साथ स्टेज पर आ गए। जब मैंने उन्हें देखा, तो वे सामने स्टेज पर विराजमान थे। अनेक लोग अपनी-अपनी तरह से प्रश्न पूछ रहे थे। वे सभी के प्रश्नों के उत्तर बड़ी ही सहजता से दे रहे थे।

**मेरे द्वारा पूछे गए प्रश्न** अपनी बारी आने पर, मैंने उनका अभिवादन किया और कहा—सर! मैं अपने आपको अति सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे आपका साक्षात्कार करने का अवसर मिला। मेरा पहला प्रश्न है—आपके जीवन का सबसे सुनहरा पल कौन-सा है? वे मुस्कराकर बोले—भारत जैसे विशाल राष्ट्र का प्रधानमंत्री बनकर जनता की सेवा करना उनके जीवन का सबसे सुनहरा पल रहा। मैंने दूसरा प्रश्न किया—इतना उच्च स्थान प्राप्त



करने का श्रेय आप किसे देना चाहते हैं? उन्होंने उत्तर दिया—अपनी माँ को, जिन्हें मैं ईश्वर का प्रत्यक्ष अवतार मानता हूँ। समय की कमी के कारण मैं उनसे ज्यादा देर बात नहीं कर सका, किंतु एक बार पुनः मैं उनसे मिलकर बहुत सारे प्रश्नों के जवाब जानना चाहता हूँ।

**उपसंहार** अंत में मैंने अपने विद्यालय की ओर से निर्मित उन्हीं का चित्र उन्हें उपहारस्वरूप भेंट दिया। सबने तालियाँ बजाई, बाद में मैं विद्यालय पहुँचा प्रधानाचार्य जी ने मुझे शाबाशी दी।

- 11.** कल्पना कीजिए कि आप 'कौन बनेगा करोड़पति' में पाँच करोड़ रुपये जीत गए हैं, उससे आपको कोई तीन कार्य करने हैं। आप कौन-कौन-से कार्य करेंगे, जिससे आपको अधिकतम संतुष्टि हो सके?

**उत्तर भूमिका** धन सब कुछ न होते हुए भी बहुत कुछ है। धन न होने से दुःख निश्चित ही मिलता है, किंतु धन होने पर सुख मिले यह निश्चित नहीं है। धन का आना और जाना निश्चित है। मैं 'कौन बनेगा करोड़पति' कार्यक्रम बहुत ही ध्यान से देखता हूँ। मेरा भी सपना है कि मैं अमिताभ बच्चन जी के सामने बैठकर उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों का जवाब देकर करोड़पति बन जाऊँ।

**ऐसे तीन कार्य, जिससे मुझे संतुष्टि हो** अगर मैं 'कौन बनेगा करोड़पति' कार्यक्रम में पाँच करोड़ रुपये जीतता हूँ, तो सबसे पहले अपने क्षेत्र में एक विद्यालय खोलूँगा, जिसमें गरीब, अनाथ तथा बेसहारा बच्चे पढ़कर भविष्य में देश के सच्चे एवं अच्छे नागरिक बन सकें। मेरा दूसरा कार्य होगा, जल के संरक्षण हेतु गाँव में एक विशाल जलाशय बनवाना, जिसके चारों ओर जाल लगाया जाएगा और उस जलाशय के आस-पास बहुत-से पेड़-पौधे लगवाए जाएँगे, जिससे पर्यावरण प्रदूषण कम होगा। मेरा तीसरा कार्य होगा कि मैं गाँव को मुख्य मार्ग से जोड़ने के लिए एक सड़क बनवाऊँगा, जिससे लोग अपने वाहनों से जल्दी तथा आसानी से मुख्य मार्ग तक पहुँच सकें। इस वर्ष वर्षा ऋतु में जल भराव से वह मार्ग क्षतिग्रस्त होकर बाधित हो गया था। कुछ दिन पूर्व मेरे गाँव में एक सेवानिवृत्त पीसीएस अधिकारी को दिल का दौरा पड़ा। हमने फ़ोन करके एंबुलेंस बुलाई, परंतु मार्ग क्षतिग्रस्त होने के कारण एंबुलेंस उनके घर तक नहीं पहुँची। गाँव के लोग चारपाई पर ही उन्हें उठाकर एंबुलेंस तक ले गए, जिसमें बहुत समय लगा। ऐसी स्थिति दोबारा न उत्पन्न हो, इसलिए मैं सड़क बनवाऊँगा।

**उपसंहार** इस प्रकार मैं अपने धन का उपयोग सामाजिक कार्यों की प्रगति में करके अपने को धन्य समझूँगा। इससे मुझे अधिकतम संतुष्टि होगी।

- 12.** भारतीय संस्कृति में "अतिथि को देवता के समान माना जाता है।" वर्तमान परिस्थितियों में यह मान्यता कहाँ तक सत्य के रूप में दिखाई देती है? विचारों द्वारा समझाइए।

**उत्तर भूमिका** भारतीय संस्कृति अपने उच्च एवं उदात्त मूल्यों के कारण विश्वभर में प्रसिद्ध है। 'अतिथि देवो भवः' अर्थात् अतिथि को देवता के समान मानना भारतीय संस्कृति का एक ऐसा ही मूल्य है, जो इसकी महानता को प्रदर्शित करता है। हमारे यहाँ प्राचीनकाल से ही अतिथि को आदरणीय मानते हुए उसे देवता तुल्य समझा गया है। भारतीय संस्कृति में सेवा करने को बहुत महत्त्व दिया गया है। अतिथि को देवता मानना इसी सेवा-भाव का विस्तारित रूप है।

**अतिथि-सत्कार का मनुष्य पर प्रभाव** दूसरों की सेवा करने का अवसर बड़े सौभाग्य से मिलता है और यह अवसर यदि अनायास

ही मिल जाए तो इससे अधिक खुशी की बात क्या हो सकती है। अतिथि का उचित आदर-सत्कार करने से न केवल अतिथि प्रसन्नता एवं अपनेपन का अनुभव करता है, बल्कि हमें स्वयं भी अच्छा लगता है और मन में संतुष्टि का भाव आता है। अतिथि को सम्मान देने वाले व्यक्ति के यश में वृद्धि होती है, उसके घर में सुख-समृद्धि का वास रहता है और वह सज्जनों के आशीर्वाद का पात्र बनता है, इसलिए भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता मानकर उसकी सेवा करने की सीख दी गई है।

**वर्तमान परिस्थितियों में बदलती मान्यता** वर्तमान समय में बहुत-सी प्राचीन मान्यताएँ और आदर्श बदल रहे हैं। 'अतिथि देवो भवः' का आदर्श भी अब धीरे-धीरे परिवर्तित हो रहा है। आजकल प्रायः सभी व्यक्तियों की जीवन शैली बहुत व्यस्त हो गई है। बढ़ती महँगाई के कारण अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना एवं जीवन के एक निर्दिष्ट-स्तर को बनाए रखना किसी चुनौती से कम नहीं है। ऐसे में लोगों के पास दूसरों के लिए तो क्या स्वयं के लिए भी समय नहीं है। अतः आज लोगों के पास अतिथि के सेवा-सत्कार के लिए पर्याप्त समय ही नहीं है, लेकिन फिर भी लोग अपने अतिथियों का ध्यान रखने की कोशिश करते हैं।

प्रायः यह देखने में आता है कि लोग दो-तीन दिन तक मेहमानों की खूब आवभगत करते हैं, परंतु यदि इसके बाद भी अतिथि जाने का नाम न ले तो अतिथि बोझ बन जाता है। कई बार आवश्यकता न होने पर भी लोग अतिथि बनकर दूसरों के यहाँ कई दिनों तक ठहरे रहते हैं, जिससे पूरा परिवार प्रभावित होता है। अतिथि बनने वाले व्यक्ति के लिए घर के सभी सदस्यों को उसकी सेवा में तत्पर रहना पड़ता है, जो सदैव संभव नहीं हो पाता।

**उपसंहार** अतः अतिथि की भी एक मर्यादा होनी चाहिए। आज के समय में अतिथि बनने वाले व्यक्ति को अपने संबंधी की व्यावहारिक कठिनाइयों को समझना चाहिए। उसे छोटी-मोटी गलतियों या भूलों को दिल से नहीं लगाना चाहिए और अपना मंतव्य पूरा हो जाने के बाद आतिथ्य करने वाले परिवार या व्यक्ति का धन्यवाद करते हुए समय पर विदा लेनी चाहिए। तभी अतिथि का मान बना रहता है।

- 13.** आपकी प्रिय ऋतु कौन-सी है और क्यों? इस ऋतु के मनाए जाने वाले किसी त्योहार का महत्त्व बताइए। [2009]

**उत्तर भूमिका** भारतवर्ष ऋतुओं का देश है। यहाँ पर क्रमशः छः ऋतुएँ—ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, शिशिर, हेमंत, वसंत आती हैं। जहाँ वर्षा ऋतु, ऋतुओं की रानी कहलाती है, वहीं वसंत ऋतु को ऋतुराज या ऋतुपति कहा जाता है।

**मेरी प्रिय ऋतु** मेरी प्रिय ऋतु वसंत ऋतु है। यह ऋतु फाल्गुन महीने के शुक्ल पक्ष के अंतिम दिनों में आती है। वसंत ऋतु में वातावरण का तापमान सामान्य रहता है। इस ऋतु में पेड़ों पर नए-नए पत्ते उग आते हैं। हर तरफ फूलों की सुगंध वातावरण को मनमोहक बना देती है। वसंत ऋतु को ऋतुराज भी कहा जाता है। इस ऋतु के आते ही पृथ्वी स्वर्ग के समान हो जाती है। इसका आगमन ही त्योहारों के साथ होता है।

**वसंत ऋतु में मनाए जाने वाले त्योहार का महत्त्व** वसंत ऋतु में सरस्वती पूजा, वसंतोत्सव, शिवरात्रि, होली जैसे त्योहारों का आगमन होता है। होली रंगों का त्योहार है। इसे नववर्ष का त्योहार भी कहा जाता है। इस त्योहार में लोग एक-दूसरे से अपने पुराने बैर-भाव भुलाकर सबसे गले मिलते हैं व गुलाल लगाते हैं। यह

हिंदुओं के लिए सांस्कृतिक, धार्मिक और पारस्परिक त्योहार है। माना जाता है कि होली की शाम को जो भी होलिका जलाकर पारंपरिक रूप से रस्म निभाता है, उसके जीवन से नकारात्मक चीजें दूर हो जाती हैं तथा सकारात्मक चीजों की शुरुआत होती है। वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला यह त्योहार रंग-बिरंगा व मस्ती से परिपूर्ण होता है, इसलिए इस त्योहार का विशेष महत्व है।

**उपसंहार** वसंत ऋतु मानव को यह संदेश देती है कि दुःख के बाद एक दिन सुख का आगमन भी होता है। वसंत ऋतु में मनाए जाने वाले पर्व धर्म, सत्य, प्रेम और अच्छाई के पथ पर सदैव अग्रसर होने की प्रेरणा देते हैं।

- 14.** आपके जीवन का उद्देश्य क्या है? आज से दस वर्ष बाद की कल्पना कीजिए। बताइए आप स्वयं को कहाँ, किस रूप में देखना चाहते हैं?

**उत्तर**

### जीवन का उद्देश्य

**भूमिका** संसार में प्रत्येक व्यक्ति का अपना उद्देश्य होता है। विद्यार्थी जीवन तो कल्पना तथा उद्देश्य का भंडार होता है। दसवीं कक्षा में आने पर कल्पना साकार करने के लिए विद्यार्थी में लक्ष्य निर्धारित करने की समझ आ जाती है। मेरे पिताजी एक अध्यापक हैं। वे चाहते हैं कि मैं भी अध्यापक बनूँ, किंतु मेरा लक्ष्य कुछ और है।

**मेरे जीवन का उद्देश्य** मैं उच्च शिक्षा प्राप्त कर डॉक्टर बनना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि डॉक्टरी करना बहुत ही मुश्किल है। इसके लिए मुझे अपने घर से दूर छात्रावास में रहना होगा। सर्वप्रथम मुझे मेडिकल कॉलेज में प्रवेश के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी, फिर एमबीबीएस का पाठ्यक्रम भी बहुत विस्तृत होता है, लेकिन मैं डॉक्टर बनने हेतु कुछ भी करने के लिए तत्पर हूँ।

आजकल भारत में अच्छे डॉक्टरों की आवश्यकता है। अधिकतर डॉक्टर इस व्यवसाय को सिर्फ धन कमाने का जरिया मानते हैं। उन्हें लोगों की दुःख-तकलीफ से कोई मतलब नहीं होता। मैं यह कार्य सिर्फ धन कमाने के लिए नहीं करना चाहता, बल्कि मैं यह पेशा लोगों की दुआएँ पाने के लिए भी अपनाया चाहता हूँ।

कहते हैं कि डॉक्टर भगवान का दूसरा रूप है, इसलिए मैं डॉक्टर बनकर समाज की सेवा करना चाहता हूँ। मैं गरीबों का इलाज कम-से-कम खर्च में करूँगा और दवाइयाँ भी निःशुल्क दूँगा तथा धनी लोगों से पूरी फीस लूँगा। मेरा प्रयास रहेगा कि नई-नई तकनीकों का प्रयोग कर सस्ता और अच्छा इलाज कर सकूँ।

**आज से दस वर्ष बाद की कल्पना** इस सपने को देखते हुए मैं कल्पना करता हूँ कि आज से दस वर्ष बाद तो मैं एक उच्च श्रेणी का डॉक्टर बन चुका हूँ और मेरे द्वारा जिनका इलाज किया गया है, वे लोग स्वस्थ होकर अपने घर जाते हैं और मुझे आशीष देते हैं।

**उपसंहार** मैंने अपने जीवन से जुड़े जो भी सपने देखे हैं, उन सपनों को सच्ची निष्ठा और मेहनत से पूरा करूँगा तथा मानव जाति की सेवा करते हुए एक प्रख्यात डॉक्टर बनूँगा। इस अभिलाषा को मैं अपने मन में कब से सँजोए हुए हूँ।

- 15.** कल्पना कीजिए कि आप किसी दूसरे ग्रह की यात्रा पर गए थे, जहाँ आपकी मुलाकात उस ग्रह के प्राणियों से हुई। अपने अनुभवों का वर्णन कीजिए।

**उत्तर**

### दूसरे ग्रह की यात्रा

**भूमिका** एक दिन कक्षा में अध्यापक ने दूसरे ग्रह के विषय में चर्चा की। उन्होंने इस विषय में सभी छात्रों के विचार जाने और अपने विचार भी प्रस्तुत किए। यह सब मुझे बहुत ही दिलचस्प लगा। विद्यालय से लौटते समय भी यही बातें मेरे मन में चल रही थीं। विद्यालय से लौटने के बाद मुझे नींद आ गई और मेरा मन पंख लगाकर स्वप्न लोक में घूमने लगा।

**स्वप्न में दूसरे ग्रह की यात्रा** स्वप्न में मैंने देखा कि मैं और मेरा मित्र मंगल ग्रह की यात्रा पर गए हैं। हम विमान में बैठकर अंतरिक्ष की ओर बढ़ रहे हैं। विमान से बाहर हमें अंधकार दिखाई दिया। कुछ समय बाद हमें भूख लगी, तो हमने कंप्यूटर में लगा बटन दबाया, जिससे हमें कैप्सूल मिला। हमने दो कैप्सूल पानी के साथ खा लिए और हमारी भूख खत्म हो गई। अब हमारा विमान मंगल ग्रह के धरातल पर उतरा। हमने अंतरिक्ष के सूट और हेलमेट पहने हुए थे। शीघ्र ही हम मंगल ग्रह के वातावरण के अनुकूल ढल गए। हमने आस-पास के क्षेत्र का भ्रमण किया।

**मंगल ग्रह के प्राणियों से भेंट** अचानक ही हमें एक विशाल आकृति दिखाई दी। उसका चेहरा सपाट और बहुत ही खराब-सा था। वह बहुत ही लंबे कद का था। पहले तो हम भयभीत हो गए, किंतु बाद में हमें उससे प्राप्त होने वाले संकेतों से वह सही प्रवृत्ति का इंसान लगा। उसने हमें अपना घर दिखाया। उसका घर बहुत छोटा और उजाड़ था। उसके घर में अन्य सदस्य भी थे, जो उससे भी लंबे व पतले थे। आश्चर्यचकित छवि प्रदर्शित हो रही थी।

हमने मंगल पर अनेक छोटी-छोटी पहाड़ियाँ देखीं और उन पर कभी न देखी हुई सुंदर झाड़ियाँ, लताएँ उगी हुई देखीं। अब समय हो गया था कि हम वापस अपने विमान से पृथ्वी की ओर चलें। उसी समय मेरी नींद खुल गई और मैंने स्वयं को अपने घर में पाया। अगले दिन मैंने यह स्वप्न अपने मित्र को बताया। यह सुनकर वह भी रोमांचित हो गया।

**उपसंहार** इस प्रकार मेरी यह काल्पनिक यात्रा मेरे जीवन की सभी यात्राओं में से सबसे अधिक सुखद रही। मैंने यह निश्चय किया है कि मंगल ग्रह की तरह पृथ्वी को भी साफ-स्वच्छ बनाने का प्रयास करूँगा।

- 16.** ज्ञान प्राप्त करने के बहुत-से साधन हैं। यात्रा पर जाना भी किसी पाठशाला में जाकर शिक्षा प्राप्त करने से कम नहीं है। ऐसी ही किसी यात्रा का वर्णन कीजिए। बताइए कि उस यात्रा से आपने क्या-क्या सीखा?

[2012]

**उत्तर**

### यात्रा-वर्णन

**भूमिका** यात्रा ज्ञान प्राप्त करने वाले साधनों में प्रमुख है। यात्रा करने से स्थान, नगर एवं क्षेत्र की सही जानकारी मिलती है। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्थलों को देखने से ज्ञान के साथ-साथ विशेष आनंद का अनुभव भी होता है। विद्यालय द्वारा इसी ज्ञान के विकास हेतु विद्यार्थियों को शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाया जाता है।

**यात्रा का वर्णन** गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी पिताजी ने माताजी तथा हम दोनों भाई-बहनों के साथ, शीतकालीन अवकाश में संगम स्नान तथा प्रयाग भ्रमण का कार्यक्रम बनाया। हमने गाजियाबाद से प्रयागराज नामक ट्रेन से यात्रा आरंभ की और प्रयाग पहुँच गए। स्टेशन से हम एक रिक्शा द्वारा संगम स्थल पर पहुँचे।

वहाँ चारों ओर अत्यंत भीड़ थी। तभी मेरी अटैची को एक व्यक्ति ने उठाना चाहा, परंतु मैंने उसे तुरंत टोक दिया और कहा कि यह अटैची मेरी है। उसी दौरान पता चला कि वहाँ से किसी की एक अटैची गायब हो गई तथा दो यात्रियों की जेब भी काट ली गई। पिताजी ने मेरी इस सचेतता के लिए मुझे शाबाशी दी। इसके पश्चात् हम सब संगम के पास गए और वहाँ सरस्वती घाट तक नाव द्वारा पहुँचे। उसके बाद सबने स्नान का आनंद लिया। कुछ समय बाद हम सबने भोजन किया तथा फिर इलाहाबाद भ्रमण को रवाना हुए। हमने वहाँ अकबर का किला, वट वृक्ष आदि दर्शनीय स्थल देखे। उसके बाद हम आज़ाद पार्क पहुँचे, जिसे अल्फ्रेड पार्क भी कहते हैं। चंद्रशेखर आज़ाद जी ने अंग्रेज़ों से लड़ते हुए इसी स्थान पर खुद को गोली मार ली थी, क्योंकि वे जीते-जी अंग्रेज़ों की गिरफ्त में नहीं आना चाहते थे और अंत में अकेले बच जाने के साथ ही उनकी बंदूक की गोलियाँ भी समाप्त हो गई थीं।

**यात्रा से प्राप्त सीख** यह यात्रा बहुत ही आनंदमयी और ज्ञानवर्द्धक रही, जिसके दौरान मुझे राजनीतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक ज्ञान के साथ-साथ यात्रा करते समय सतर्क रहने की सीख भी मिली।

- 17.** बचपन की मधुर स्मृतियाँ मनुष्य के हृदय पर अंकित हो जाती हैं, उन मधुर स्मृतियों की याद आते ही हृदय अनोखे आनंद से भर जाता है और मुँह से अपने आप ये शब्द निकल पड़ते हैं—“काश! वे दिन फिर लौट आते।” अपने बचपन की उन आनंदमय बातों का वर्णन कीजिए, जिन्हें याद कर आप आज भी आनंदित होते हैं। [2010]

**उत्तर** **बचपन की मधुर स्मृतियाँ**

**भूमिका** “जीवन अनेक अवस्थाओं से गुजरता है, परंतु बचपन मानव जीवन की सर्वाधिक आनंदमयी अवस्था मानी जाती है। संसार के छल-कपट, अच्छाई-बुराई से परे अपनी मासूमियत और भोलेपन से भरपूर बचपन अपना अलग ही महत्त्व रखता है।

बचपन में, सच्चाई और ईमानदारी की मूर्ति ‘बच्चा’ संसार की मलिनता से अछूता रहता है। वह अपने मन का राजा होता है, जहाँ बच्चा किसी भी गलती पर छोटी-सी डाँट पड़ते ही आँसुओं की झड़ी लगा देता है, वहीं वह माँ की गोद में आकर आनंद से भर जाता है। यही स्मृतियाँ मनुष्य के हृदय पर अंकित हो जाती हैं।

**बचपन की आनंदमय बातों का वर्णन** सभी बच्चों की तरह मेरा बचपन भी बहुत मधुर था। मुझे माता-पिता के साथ-साथ, दादी-दादा का भी भरपूर प्यार मिला। मैं दादी जी के जिगर का टुकड़ा था। सुबह जब दादा जी पूजा करते थे, तो उनके शंख की आवाज सुनकर मैं पूजा स्थल पर पहुँच जाता था। वहाँ पहुँचते ही दादा जी चंदन का टीका लगाकर काजू, किशमिश तथा मिश्री के साथ एक तुलसी का पत्ता प्रसादस्वरूप दे देते थे। दादी जी, दादा जी से कहती थीं कि यह बिना नहाए-धोए पूजा स्थल पर आ गया है। दादा जी हँसकर कहते थे, कोई बात नहीं संस्कार तो आ रहे हैं। मैं बड़े बच्चों के साथ बगीचे के चारों ओर चौकड़ी लगाकर तीन-चार चक्कर लगाता था, पीछे-पीछे दादी भी दौड़ती रहती थीं, जब बड़े बच्चे दूर तक चले जाते थे, तब दादी जी रुक जाती थीं

और मैं रोते हुए घर चला आता था, यह कहते हुए कि दूध की मलाई खा जाऊँगा, तो मक्खन कैसे निकालोगी। दादी जी हँसती थीं और मैं रोता था। फिर दादी जी दूध की मलाई तथा चीनी कटोरी में लाती थीं, जिसे मैं मजे से खाता था।

**उपसंहार** इस प्रकार बचपन की मधुर स्मृतियाँ याद करके मैं यह कहने से खुद को रोक नहीं पाता कि “काश! वे दिन फिर से लौट आते।”

## स पक्ष-विपक्ष लेखन

- 1.** “महिलाएँ अबला हैं अथवा सबला।” विषय के पक्ष और विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

**उत्तर**

**पक्ष**

प्राचीनकाल से चली आ रही परंपरा में जहाँ नारी को पूजनीय माना जाता है, वहीं आज के आधुनिक युग में भारतीय नारी को अबला कहना शत-प्रतिशत गलत होगा।

एक महिला के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती, क्योंकि महिला ही हमारी जिंदगी में हर कदम पर हमारे सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, तभी कहा भी जाता है ‘हर सफल आदमी के पीछे एक औरत है।’

*अबला नहीं नारी है सबला  
करती रहती जो सबका भला।*

भारतीय नारी राष्ट्र निर्माण के प्रत्येक क्षेत्र में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। घर-गृहस्थी की देखभाल करने से लेकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी की कुशलता व प्रतिभा को देखा जा सकता है। यही नहीं अनुसंधान के क्षेत्र में नारी हिमालय की चोटी व अंतरिक्ष तक जा पहुँची है।

आधुनिक युग में नारी ने सभी क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। खेल जगत में सानिया मिर्जा एवं साइना नेहवाल ने अपना योगदान देकर भारत का नाम रोशन किया, तो वहीं मैरीकॉम की भूमिका भी प्रशंसनीय है। राजनीति के क्षेत्र में इंदिरा गाँधी, सोनिया गाँधी, भारत की पहली महिला राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल आदि का राष्ट्र की प्रगति में विशेष योगदान है। कल्पना चावला अंतरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय महिला थीं, वहीं सुनीता विलियम्स ने 195 दिन तक अंतरिक्ष की यात्रा की।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रत्येक क्षेत्र में महिलाएँ बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं, यही नहीं शिक्षा के क्षेत्र में भी परीक्षाओं में लड़कियाँ ही आगे रहती हैं।

**विपक्ष**

आज नारी को अबला समझा जाता है, जिसका कारण है, पुरुषों का स्त्रियों पर वर्चस्व होना। पुरुष वर्ग स्वयं को श्रेष्ठ समझकर नारी पर अत्याचार करता है, तो फिर वर्तमान समय में हम महिलाओं को सबला किस प्रकार कह सकते हैं?

आजादी के 70 वर्षों बाद देश तो आजाद हो गया, पर देश में रह रही नारियों को आज भी आजादी नहीं मिली। इस तथ्य को हम और स्पष्ट रूप से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के भाषण से समझ सकते हैं, उन्होंने 15 अगस्त, 2014 को लालकिले की प्राचीर से भाषण देते हुए कहा था कि हर माता-पिता आज लड़की से प्रश्न करते हैं कि तुम कहाँ जा रही हो? कब आओगी? पर यह प्रश्न

कभी बेटे से क्यों नहीं पूछे जाते? आज देश में हो रहे बलात्कार आदि कुकृत्यों को अंजाम देने वाला किसी का बेटा ही होता है। यह कथन भी यही सिद्ध करता है कि आज नारी सुरक्षित नहीं है।

नारी को देवी की प्रतिमूर्ति तो बना दिया जाता है, परंतु कभी भी उसकी आकांक्षाओं की परवाह नहीं की जाती, वह सिर्फ 'भोग्या' बनकर रह जाती है।

स्पष्टतः नारी आज भी पराधीन है। महिलाओं की पराधीनता की समस्या ग्रामीण क्षेत्रों में ही नहीं, अपितु शहरी क्षेत्रों में व्याप्त है। स्त्री न केवल पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर चलना चाहती है, बल्कि वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ना चाहती है, परंतु कदम-कदम पर पुरुषों द्वारा स्त्रियों के अधिकारों का दमन कर दिया जाता है। अतः इन नकारात्मक परिणामों को देखते हुए आज भी महिलाएँ अबला ही कहलाएँगी।

## 2. "विज्ञान मानव जीवन के लिए वरदान है या अभिशाप" प्रस्तुत विषय पर पक्ष और विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

**उत्तर**

**पक्ष**

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान की उन्नति व प्रगति ने मानव की जीवन-शैली बदल दी है। विज्ञान का आविष्कार मानव कल्याण के लिए हुआ है। वैज्ञानिक नित नई खोज कर मनुष्य को अधिक-से-अधिक सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराने में लगे हैं।

प्राचीनकाल में मनुष्य को जीवन की सुख-सुविधाओं की व्यवस्था करने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, वहीं आज आधुनिक युग में विज्ञान के आविष्कार ने यह कार्य आसान कर दिया है, जिससे मनुष्य को शारीरिक श्रम कम करना पड़ता है।

आज के आधुनिक युग में विज्ञान के द्वारा हम कई मीलों की दूरी कम समय में पार कर सकते हैं और हम किसी भी देश में, संसार में कहीं भी बैठे व्यक्ति से संपर्क स्थापित कर सकते हैं। पंखे से लेकर उपग्रह, रॉकेट आदि का आविष्कार हो या चिकित्सा के क्षेत्र में एक्स-रे, प्लास्टिक सर्जरी का आविष्कार हो, यह सब विज्ञान की ही उपलब्धि है। प्राणघातक बीमारियों से बचाव के लिए नई-नई तकनीकों की खोज व औषधियों का आविष्कार विज्ञान द्वारा ही संभव हो पाया है। यहाँ तक कि विज्ञान की सहायता से मृत्यु-दर में भी कमी आई है।

विज्ञान के ही कारण आज मनुष्य अंतरिक्ष तक जा पहुँचा है। विज्ञान ने अनेक मनोरंजन के साधन उपलब्ध करवाए हैं। इंटरनेट, डिजिटल टीवी, थ्री डी सिनेमा, सोशल नेटवर्किंग साइट आदि सभी कुछ विज्ञान की ही देन हैं, इसी कारण विज्ञान आज मनुष्य का मित्र बन गया है। भयानक मिसाइल, बम, अणु व परमाणु बम आदि की खोज विज्ञान की ही देन है। वस्तुतः विज्ञान में एक ऐसी शक्ति है, जिसने मनुष्य को एक नई दुनिया प्रदान की है। इस प्रकार विज्ञान मानव-जीवन के लिए वरदान है।

**विपक्ष**

आज जहाँ विज्ञान ने हमें सुख-सुविधाओं के अत्यंत नवीनतम साधन उपलब्ध करवाए हैं, वहीं मनुष्य इन सुख-सुविधाओं का उपभोग कर, इन साधनों का इतना आदी हो गया है कि वह बिना शारीरिक श्रम किए सभी कुछ प्राप्त करना चाहता है। थोड़ी-सी दूरी की यात्रा के लिए निजी वाहनों के अत्यधिक प्रयोग ने प्रदूषण की

समस्या में वृद्धि की है, जो विज्ञान के दुष्प्रभाव को प्रदर्शित करती है, इन वाहनों के प्रयोग से दुर्घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं।

विज्ञान के आविष्कार ने आतंकवाद जैसी समस्याओं को बढ़ाया है। अणु व परमाणु बम जिसे हम विज्ञान की देन कहते हैं, वही जापान के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों के विनाश का कारण साबित हुए थे। विज्ञान आज के आधुनिक युग के लिए खतरा बन गया है। विज्ञान के आविष्कारों ने मशीनीकरण को जन्म दिया है, जिससे लघु उद्योग नष्ट हो जाने से बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो गई है। विज्ञान द्वारा हुए कंप्यूटर के आविष्कार ने नई पीढ़ी के लिए समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं, उन्हें पथ-भ्रष्ट कर दिया है।

विज्ञान ने मनुष्य को आलसी व स्वार्थी बना दिया है। मनुष्य का विज्ञान के प्रति अत्यधिक झुकाव उसे मानवीय सभ्यता से तो दूर करता ही है, साथ ही उसे व्यवहार में भावशून्य बना देता है। प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान का अत्यधिक प्रयोग मनुष्य के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। विज्ञान एक तलवार के समान है, जिसके द्वारा किसी का भी गला काटा जा सकता है, इसलिए विज्ञान का आविष्कार आज संपूर्ण मानव जाति के लिए घातक सिद्ध हो रहा है।

## 3. टीवी (दूरदर्शन) मनुष्य के जीवन में अपनी भूमिका किस प्रकार निभाता है? प्रस्तुत विषय के पक्ष और विपक्ष में अपने विचार प्रकट कीजिए।

**अथवा**

“वर्तमान समय के लिए दूरदर्शन एक उपयोगी अंग बन गया है।” इस कथन को सत्य ठहराते हुए एक संक्षिप्त प्रस्तावना लिखिए। [2003]

**उत्तर**

**पक्ष**

दृश्य-श्रव्य माध्यमों में टीवी जनसंचार का एक अति महत्वपूर्ण व लोकप्रिय माध्यम है। आधुनिक युग में टीवी ज्ञानार्जन व मनोरंजन का सर्वोत्तम साधन है। आज टीवी के बिना मनुष्य अधूरा अनुभव करता है, जब मनुष्य प्रतिदिन के अपने कार्यों से थक जाता है, तो उसके लिए मनोरंजन व आनंद प्राप्ति के लिए टीवी सर्वश्रेष्ठ माध्यम सिद्ध होता है। टीवी पर कार्यक्रमों का भंडार रहता है। टीवी के माध्यम से हम सांस्कृतिक कार्यक्रमों को देख सकते हैं। दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कई कार्यक्रम प्राचीन संस्कृतियों से हम सभी का परिचय करवाते हैं। टीवी का सबसे बड़ा लाभ यह है कि घर पर ही बैठे-बैठे हिमालय, कश्मीर की पहाड़ियों, शिमला, मसूरी, गोवा, कन्याकुमारी आदि सभी पर्यटन स्थलों को देखकर हम आनंद प्राप्त कर सकते हैं।

दूरदर्शन के द्वारा हम देश-विदेश की खबरों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, जो व्यक्ति देख नहीं सकते वह सुनकर इसका लाभ उठा सकते हैं तथा जो व्यक्ति सुन नहीं सकते वह दृश्यों को देखकर टीवी का लाभ उठा सकते हैं। जनसंचार का सर्वाधिक सस्ता साधन होने के कारण टीवी की पहुँच सर्वसाधारण तक है। युवकों और बच्चों का संसार तो टीवी के बिना अधूरा है। दूरदर्शन समाज में घट रही घटनाओं को सभी के समक्ष लाता है। दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम जैसे सी आई डी, उड़ान आदि समाज की बुराइयों एवं अपराधों के प्रति समाज को जाग्रत करने एवं उनको दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं।



वस्तुतः टीवी ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ आनंद प्रदान करने का साधन है। टीवी सांस्कृतिक रुचि विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले धार्मिक कार्यक्रम धर्म और संस्कृति से हमें परिचित कराते हैं। इस प्रकार दूरदर्शन आज हमारे स्वस्थ मनोरंजन एवं ज्ञानवर्द्धन जीवन का आधार बन गया है।

### विपक्ष

मनुष्य के जीवन में दूरदर्शन उसके जीवन का एक अनिवार्य अंग बन गया है। टीवी का सर्वाधिक दुष्प्रभाव या नकारात्मक प्रभाव युवा पीढ़ी एवं बच्चों पर पड़ता है, क्योंकि टीवी पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों को वह अपने निजी जीवन का हिस्सा बना लेते हैं। इसी कारण दूरदर्शन आज की दुनिया में कुप्रवृत्तियों के विकास का एक माध्यम बन गया है। टीवी की लत ने बच्चों के शारीरिक व मानसिक विकास पर गहरा प्रभाव डाला है, जिसके कारण युवा वास्तविक दुनिया से कट गए हैं तथा बच्चे बचपन की मस्ती से अनजान हो गए हैं।

टीवी से नवयुवकों एवं बच्चों में हिंसा की भावना गहराती जा रही है। टीवी पर दिखाए जा रहे अश्लील कार्यक्रमों से युवा पीढ़ी प्रभावित होती है तथा ऐसे कार्यक्रम एवं फिल्में मनुष्य पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। टीवी से बच्चों की पढ़ाई पर गहरा प्रभाव पड़ता है एवं पढ़ाई में बाधा आने पर उन्हें परीक्षा में कम अंक प्राप्त होते हैं।

लगातार टीवी देखने से आँखों पर बुरा प्रभाव तो पड़ता ही है, साथ ही शरीर कई बीमारियों का शिकार हो जाता है।

आज टीवी पर हत्या, बलात्कार, चोरी, डकैती जैसी घटनाओं को इतना अधिक रोमांचक बनाकर दिखाया जाता है, जिससे नवयुवक प्रभावित होकर अपराध जगत की ओर मुड़ जाते हैं। स्पष्टतः टीवी का अत्यधिक प्रयोग जन-जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

4. विज्ञापन की दुनिया हमारे जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है? कुछ उदाहरण देते हुए अपने विचार व्यक्त कीजिए। [2005]

अथवा

“विज्ञापन विभिन्न उत्पादों का चयन करने में हमारी सहायता करते हैं।” विषय के पक्ष और विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर

पक्ष

आज के युग को यदि विज्ञापन का युग कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। किसी भी नए उत्पाद एवं सेवा से संबंधित जानकारी देने और उसकी विशेषता को बताने के लिए विज्ञापन की आवश्यकता पड़ती है, विज्ञापन का मूल उद्देश्य यही होता है।

प्राचीन समय में किसी भी उत्पाद की जानकारी के लिए हमें अपने आस-पड़ोस, सहयोगी मित्रों आदि से पूछताछ करनी पड़ती थी, वहीं आज के आधुनिक युग में तरह-तरह के विज्ञापनों ने इसे सरल बना दिया है।

सामान्य जन-जीवन पर विज्ञापनों का इतना अधिक प्रभाव है कि ऐसा प्रतीत होता है सभी क्रिया-कलाप विज्ञापनों द्वारा ही संपन्न हो रहे हैं। विज्ञापन एक सशक्त माध्यम है, जो सही चीजों/उत्पादों के चयन में हमारी सहायता करते हैं। विज्ञापन के द्वारा हम घर पर ही वस्तुओं का चयन कर लेते हैं। विज्ञापन उत्पादक और उपभोक्ता के बीच संपर्क स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, यह उत्पाद बेचने का सबसे सस्ता माध्यम है।

अशिक्षित वर्ग जो पढ़-लिख नहीं सकते, उनके लिए विज्ञापन एक सर्वोत्तम साधन है, क्योंकि विज्ञापनों को सुनकर व देखकर, वह अपने

उत्पादों का चयन कर सकते हैं। विज्ञापन व्यावसायिक जगत में भी अत्यंत उपयोगी होते हैं। विज्ञापन के द्वारा वस्तु या उत्पाद बार-बार आँखों के समक्ष आते हैं, जिससे मनुष्य की उस उत्पाद को प्रयोग में लाने की जिज्ञासा बनी रहती है। इस प्रकार विज्ञापन मानव जीवन के लिए लाभदायक हैं एवं यह मनुष्य के जीवन में रच-बस गए हैं।

### विपक्ष

आज के युग में विज्ञापन का बोलबाला है। हर उत्पादक अपने उत्पाद की बिक्री के लिए लुभावनी भाषा का प्रयोग कर उपभोक्ताओं को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करते हैं एवं ऊँचे दामों पर अपने उत्पादों को बेचकर वह अत्यधिक लाभ प्राप्त करना चाहते हैं। विज्ञापन के द्वारा कम गुणवत्ता वाले उत्पाद आसानी से बिक जाते हैं। गोरा बनाने की क्रीम हो या फिर केश लंबे व घने करने का शैंपू तथा तेल आदि भिन्न-भिन्न उत्पादों को विज्ञापन से इतना अधिक लुभावना बनाया जाता है, जिससे ग्राहक दुविधा में पड़ जाता है कि वह कौन-से उत्पाद का चयन करे, यही नहीं आज विज्ञापन में अश्लीलता को परोसकर युवा वर्ग को भ्रमित करने का प्रयास किया जा रहा है। विज्ञापन के प्रचार-प्रसार के लिए बड़े-बड़े अभिनेता-अभिनेत्रियों को अच्छा धन देकर विज्ञापन करने को कहा जाता है।

आज विज्ञापनों द्वारा अपने उत्पाद को सर्वोत्तम व दूसरे उत्पाद को निकृष्ट कोटि का बताए जाने से ग्राहक को भ्रमित किया जा रहा है। विज्ञापन की दुनिया वास्तविकता के आधार पर नहीं, बल्कि कल्पना एवं भ्रम के आधार पर चलती है।

विज्ञापन को देखकर उपभोक्ता उत्पाद तो खरीद लेता है, पर कई बार उसका परिणाम बिलकुल विपरीत होता है। आज विज्ञापनों का उद्देश्य ग्राहकों के साथ छल करके अपने उत्पादों की बिक्री को तीव्र करना है। विज्ञापन मनुष्य को बौद्धिकता और तार्किकता से परे रखकर ग्राहक को भ्रम जाल में फँसा देते हैं। अतः मनुष्य को अपने विवेक का प्रयोग कर, वास्तविकता व गुणवत्ता से परिचित होकर विज्ञापन के आकर्षण में फँसने से बचना होगा, तभी ग्राहक अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पाद को मली-भाँति परखकर खरीद पाएगा।

5. “ऊँचे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए माता-पिता तथा अध्यापकों द्वारा बच्चों पर डाला जाने वाला दबाव अनुचित है।” विषय के पक्ष और विपक्ष में अपने उत्तर दीजिए। [2012]

उत्तर

पक्ष

लक्ष्यहीन जीवन सर्वथा निरर्थक है। प्रत्येक बच्चे की एक कल्पना होती है, उसी कल्पना के अनुसार वह लक्ष्य निर्धारित करता है तथा उसे प्राप्त करने के लिए हमेशा प्रयासरत रहता है। बिना किसी लक्ष्य के व्यक्ति का जीवन पशु समान व्यतीत होता है।

सभी विद्यार्थियों में कोई-न-कोई प्रतिभा अवश्य होती है। खिलाड़ी बनने की प्रतिभा रखने वाला चिकित्सक नहीं बन सकता। अतः व्यक्ति अपनी प्रतिभा के अनुरूप ही अपना लक्ष्य निर्धारित करें तथा उसी के अनुरूप ही प्रयास करें, तो सफलता निश्चित ही उसके कदम चूमेगी। अंग्रेजी में भी कहा गया है “सेट द टारगेट एंड शूट द टारगेट।”

यह कदापि आवश्यक नहीं कि इंजीनियर का बेटा इंजीनियर बनेगा तथा अधिवक्ता का बेटा अधिवक्ता, इसलिए बच्चे की रुचि तथा प्रतिभा के अनुरूप ही माता-पिता तथा अध्यापकों को बच्चों का सहयोग करना चाहिए तथा संसाधनों को उपलब्ध कराना चाहिए; जैसे-कोई बच्चा क्रिकेट का खिलाड़ी बनना चाहता है, तो उसे किसी क्रिकेट प्रशिक्षण केंद्र में पहुँचाना माता-पिता का प्रथम कर्तव्य तथा नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए। माता-पिता तथा गुरु को बच्चों की निगरानी करनी चाहिए कि बालक कहीं मार्ग से भटक तो नहीं रहा है और उसे पुनः लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए, न कि बच्चों पर लक्ष्य के चयन के लिए दबाव डालना चाहिए।

### विपक्ष

एक बच्चा केवल कल्पना कर सकता है। वह कोई भी निर्णय लेने में समर्थ नहीं होता। हमारे संस्कारों में शिक्षा दी जाती है कि अभिवादनशील अर्थात् सदैव बड़ों की सेवा करने वालों की चार चीजें बढ़ती हैं—आयु, विद्या, यश और बल। ऐसे में माता-पिता एवं अध्यापकों के विचार तथा दबाव, विद्यार्थी को उत्तम लक्ष्य निर्धारित करने में पूर्ण सहयोगी होंगे। जिस प्रकार से एक माली पेड़ों को लगाता है, उनकी सिंचाई करता है, खरपतवार एवं घास निकालता है तथा यदि पेड़ टेढ़ा होने लगता है, तो उसके पास एक बाँस का लट्ठा गाड़कर रस्सी से कसकर बाँध देता है, जिससे पेड़ सीधा हो जाता है, ठीक उसी प्रकार माता-पिता तथा अध्यापकों को भी बच्चों के विकास तथा लक्ष्य निर्धारण में उनकी अभिरुचि को ध्यान में रखते हुए दबाव डालना पूरी तरह उचित है, न कि अनुचित।

बच्चों की अभिरुचि तथा लक्ष्य की कल्पना तो अपने मित्रों, विज्ञापनों, समाचार-पत्रों में प्रकाशित विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त उपलब्धियों को देखकर बदलती रहती है। ऐसे में माता-पिता तथा अध्यापक द्वारा दबाव डालकर ऊँचे लक्ष्य की ओर प्रेरित करना उचित ही है। अंततः मैं यही कहना चाहूँगा कि ऊँचे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए माता-पिता तथा अध्यापकों द्वारा डाला जाने वाला दबाव, दबाव नहीं, बल्कि बच्चे के विकास का प्रथम चरण है। अतः यह उचित है।

6. “असफलता ही सफलता का आधार है।” विषय के पक्ष और विपक्ष में अपने विचार प्रकट कीजिए। [2011]

उत्तर

पक्ष

“ठोकरों से डर न साथी, ये सफलता की निशानी,  
राह पर जाते देख तुझे कहती है अपनी कहानी।”

मेरे विचार से असफलता ही सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। दुनिया में जितने भी महान् व्यक्ति हुए हैं, वे सभी असफल होकर ही सफल हुए, चाहे सिकंदर हो, चाहे सम्राट अशोक महान् हो या फिर देश को आजाद कराने वाले महात्मा गाँधी। सभी ने असफलता के बाद ही सफलता प्राप्त की। असफल होने को ही लोग विपरीत परिस्थिति भी कहते हैं, जब परिस्थिति कठिन हो तब भी व्यक्ति को अपने पथ पर चलते रहना चाहिए, तभी उसकी जीत होती है।

मैं कहना चाहता हूँ कि किसी को भी सफलता की आशा का त्याग नहीं करना चाहिए। व्यक्ति के समक्ष कितनी कठिनाइयाँ क्यों न आएँ, लेकिन उसे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिए, तभी सफलता उसको वरण करती है।

आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को ही लीजिए। वे चाय बेचकर, लोगों को निःशुल्क जल पिलाकर, मन में सदैव जीत का लक्ष्य रखते थे। परिणामस्वरूप आज वह भारत जैसे-विशाल जनतांत्रिक देश के प्रधानमंत्री हैं। अतएव असफलता से हार नहीं माननी चाहिए, असफलता तो सफलता पाने का सोपान होती है।

### विपक्ष

‘असफलता ही सफलता का आधार है’, उक्ति सुनने में भले ही अच्छी लगती हो, लेकिन सच्चाई यह है कि असफल व्यक्ति सफल हो ही नहीं सकता, क्योंकि किसी में भी इतना साहस नहीं कि कर्म की गति को टाल सके।

कर्म से व्यक्ति का जन्म होता है। कर्म से ही मृत्यु, कर्म से सुख-दुःख, भय तथा अभय होता है, तभी तो कहा गया है—“बोया पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से होय” अर्थात् यदि कर्म असफलता का किया है, तो व्यक्ति सफल कैसे हो सकता है?

दुनिया में बहुत-से लोग ऐसे हैं, जो असफल हुए और दोबारा सफलता उनसे कोसों दूर चली गई, चाहे वह त्रेतायुग का रावण रहा हो, चाहे द्वापर युग का कंस या फिर कलियुग का ओसामा बिन लादेन। ये सभी जीवन में असफल हुए तो असफल ही होते गए।

ईश्वर ने जिसे अनेक प्रकार का कष्ट देना चाहा, उसकी बुद्धि को ही नष्ट कर दिया, जिससे वह अकर्मण्य हो जाए या अनुचित कार्य करने लगे। उसके बाद कर्म के अकाट्य नियम के अनुसार उस व्यक्ति को असफलता ही मिलती है, सफलता तनिक मात्र भी नहीं। अतः यह स्पष्ट है कि असफल व्यक्ति कभी भी सफल नहीं होता।

## अभ्यास प्रश्नावली

### अ विचारात्मक एवं वर्णनात्मक लेखन

1. जीवन में खेल-कूद का महत्व बताते हुए उसके द्वारा प्राप्त लाभ का वर्णन कीजिए।
2. सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम अनिवार्य है। परिश्रम का महत्व बताते हुए स्पष्ट कीजिए कि परिश्रम मानव की उन्नति का सोपान कैसे है?
3. “जल जीवन का अभिन्न हिस्सा है।” पानी के विभिन्न स्रोतों का विवेचन करते हुए जल संरक्षण के उपाय बताइए।
4. आदर्श विद्यार्थी में किन गुणों का होना आवश्यक है? विद्यार्थी जीवन का उद्देश्य बताते हुए उसके कर्तव्यों का वर्णन कीजिए।
5. “जातिवाद समाज की एकता में बाधक है।” कथन को स्पष्ट करते हुए बताइए कि जातिवाद समाज के लिए किस प्रकार हानिकारक है?

### ब भावनात्मक एवं भाव वर्णन

1. विद्यालय में अपने प्रथम दिन के अनुभव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. रेलवे स्टेशन के दृश्य का आँखों देखा वर्णन कीजिए।
3. वृक्षों से प्राप्त होने वाले लाभ का वर्णन करते हुए यह बताइए कि वृक्षों को काटने से क्या हानि होती है?
4. प्रगति मैदान में आयोजित पुस्तक मेले का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
5. कल्पना कीजिए आपको एक बड़े अभिनेता से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ है। अभिनेता से मिलने से पहले आपकी कौन-कौन-सी योजनाएँ होंगी? स्पष्ट कीजिए।
6. आपके माता-पिता ने जीवन में अनेक कष्टों को केवल आपको सुखी जीवन देने के लिए सहा है। उनके इस व्यवहार से आपने क्या सीखा है?
7. “पशुओं पर कई लोगों द्वारा अत्याचार किए जाते हैं।” प्रस्तुत कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
8. “मानवीयता को भाषा के बंधनों में नहीं बाँधा जा सकता।” कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
9. मनुष्य के जीवन का आधार प्रकृति प्रदत्त उपादान हैं। इनके अभाव में मनुष्य के जीवन की कल्पना करते हुए एक लेख लिखिए।
10. आपको पशु-पक्षियों से अत्यधिक प्रेम है। उनके प्रति मानवीयता के भावों को उजागर करते हुए एक लेख लिखिए।

### स पक्ष-विपक्ष लेखन

1. “औद्योगीकरण का व्यापक स्तर पर फैलाव होता जा रहा है।” प्रस्तुत विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में विचार प्रस्तुत कीजिए।
2. आधुनिक समाज में नवयुवकों एवं नवयुवतियों में बढ़ती फैशन की दौड़ से संबंधित विषय पर पक्ष अथवा विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
3. आधुनिक युग में सहशिक्षा उपयोगी है अथवा अनुपयोगी। प्रस्तुत विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. शिक्षा एवं रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण होना चाहिए अथवा नहीं। प्रस्तुत विषय के संबंध में पक्ष अथवा विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
5. “कंप्यूटर शिक्षा बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए बाधक है।” प्रस्तुत विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में विचार प्रस्तुत कीजिए।
6. “जीवन में प्रसन्नता के लिए धन की आवश्यकता नहीं होती।” प्रस्तुत विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में विचार प्रस्तुत कीजिए।
7. “बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए बोर्डिंग स्कूल आवश्यक होते हैं।” प्रस्तुत विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में विचार प्रस्तुत कीजिए।
8. “बच्चों का रियलिटी शोज़ में भागीदारी करना उनके विकास को प्रभावित करता है।” प्रस्तुत विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में विचार प्रस्तुत कीजिए।
9. “निजी विद्यालय शिक्षा प्रदान करने के स्थान पर व्यवसाय के केंद्र बन चुके हैं।” प्रस्तुत विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में विचार प्रस्तुत कीजिए।
10. “देश की एकता के लिए एक भाषा को महत्व देना अनुचित है।” प्रस्तुत विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में विचार प्रस्तुत कीजिए।



# कहानी लेखन

## शब्द सीमा/अंक योजना

परीक्षा में विद्यार्थी को उक्ति, लोकोक्ति या कहावत देकर उस पर 250 शब्दों में कहानी लिखने के लिए कहा जाता है, जिसके लिए 15 अंक निर्धारित किए गए हैं।

कहानी लेखन करते समय विद्यार्थी को कहानी के तत्वों का ध्यान रखना आवश्यक है।

- मुहावरे अथवा लोकोक्ति का अर्थ अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।
- पूरी कहानी मुहावरे अथवा लोकोक्ति पर आधारित होनी चाहिए।
- कहानी मौलिक होनी चाहिए।
- कहानी दिए गए विषय से संबंधित होनी चाहिए।
- कहानी में रोचकता होनी चाहिए।
- कहानी में कठिन शब्दों का अनावश्यक प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- कहानी की भाषा सरल होनी चाहिए।
- कहानी के अंत में दिया गया शीर्षक सार्थक होना चाहिए।
- कहानी के अंत में उससे मिलने वाली शिक्षा का उल्लेख होना चाहिए।

## साधित उदाहरण

1. अरे मित्र! “तुमने तो सिद्ध कर दिया कि तुम ही मेरे सच्चे मित्र हो।” इस पंक्ति से आरंभ करते हुए कोई कहानी लिखिए। [2017]

**उत्तर भूमिका** अरे मित्र! “तुमने तो सिद्ध कर दिया कि तुम ही मेरे सच्चे मित्र हो।” यही कथन था उस दिन मनोज का जब सुरेंद्र ने उसे कुछ अज्ञात हमलावरों से बचाया था।

**कहानी** मनोज और सुरेंद्र दोनों बहुत अच्छे मित्र थे। दोनों की आयु में भी कोई ज्यादा अंतर न था। दोनों बचपन से एक साथ रहे थे, एक साथ खेलते थे, स्कूल जाते थे तथा एक साथ ही दोनों ने कॉलेज में प्रवेश लिया। उनकी मित्रता के चर्चे पूरे गली-मुहल्ले में हुआ करते थे। किसी एक को ढूँढना हो, तो दूसरा अपने आप मिल जाता था।

घटना उस रात की थी जब मनोज के कॉलेज में पार्टी थी और उसे घर आने में देरी हो गई। बस स्टैंड से घर की दूरी ज्यादा तो नहीं थी, लेकिन रास्ते में रोशनी न होने के कारण पूरे रास्ते में अँधेरा और सन्नाटा पसरा रहता।

मनोज जब घर की ओर लौट रहा था, तो दोनों ओर खड़ी ऊँची-ऊँची झाड़ियों से उसे किसी के गुजरने की आवाज आई। वह डर तो रहा था, लेकिन फिर भी वहाँ उस आवाज के बारे में जानने के लिए रुक गया। उसने झाड़ियों की ओर कान लगाकर सुनने की कोशिश की, पर उसे कुछ सुनाई नहीं दिया और वह उस आवाज को भ्रम मानकर आगे बढ़ गया।

वह थोड़ी दूर ही आगे बढ़ा था कि उसे वह आवाज फिर से सुनाई दी, लेकिन इस बार वह जैसे ही पीछे मुड़ा कुछ लोगों ने उस पर हमला कर दिया और उससे उसका मोबाइल व पैसे छीनने

लगे। मनोज उनसे लड़ता रहा और ज़ोर-ज़ोर से मदद के लिए पुकारने लगा। वहाँ से सुरेंद्र के घर की दूरी ज्यादा न होने के कारण सुरेंद्र बाहर से आने वाले शोर को सुनकर घर से बाहर निकला और टॉर्च लेकर उसी रास्ते की ओर चल दिया, जहाँ से आवाज़ आ रही थी। थोड़ी दूर ही चलने पर उसने मनोज को पहचान लिया और ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ लगाते हुए गली के अन्य लोगों को बुलाकर मनोज की मदद के लिए पहुँच गया। जैसे ही मनोज पर हमला करने वाले बदमाशों ने लोगों को आते देखा वे मनोज को छोड़कर भाग गए।

सुरेंद्र ने जख्मी हालत में रास्ते पर पड़े मनोज को उठाया और उसे घर लेकर आ गया। ऐसी मुसीबत की घड़ी में अपनी मदद के लिए पहुँचे सुरेंद्र का धन्यवाद करते हुए ही उस दिन मनोज ने कहा था अरे मित्र! “तुमने तो सिद्ध कर दिया कि तुम ही मेरे सच्चे मित्र हो।”

**सीख** इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि एक सच्चा मित्र ही मुसीबत में पड़े मित्र के काम आता है तथा उसकी सहायता करता है। वास्तव में, सच्चा मित्र वही है, जो संकट में पड़े मित्र की सहायता करे।

- 2. नीचे लिखी उक्ति को आधार बनाकर एक कहानी लिखिए।** [2016]  
*“मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।”*

**उत्तर** उक्ति का अर्थ “मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना” इस उक्ति का अर्थ यह है कि कोई भी धर्म आपस में भेदभाव करने का पाठ नहीं पढ़ाता।

मानव की उस असीम शक्ति में गहरी आस्था रही है और यह शाश्वत सत्य है कि सभी मानव एक ही ईश्वर की संतानें हैं।

विभिन्न धर्मों से संबंधित होने के कारण सबकी धर्म संबंधी मान्यताएँ अलग-अलग हैं, परंतु सबका ध्येय एक ही है, उस परमपिता की प्राप्ति और साथ ही श्रेष्ठ कार्यों द्वारा अमन-चैन की प्राप्ति।

इसी उक्ति से संबंधित एक कहानी प्रस्तुत है

**कहानी** तीन मित्र थे—राम, असलम और गुरमीत। वे सब एक-दूसरे के घर सभी त्योहारों, उत्सव और विवाह समारोह में सपरिवार सम्मिलित होते थे। उनकी इस एकता से कुछ राजनेता खिन्न थे। वे अपने स्वार्थवश इनमें द्वेष भावना पैदा करने का प्रयास करते और तीनों को उनके धर्म और दंगों से संबंधित बातें बताकर भड़काने की कोशिश करते। वे तीनों थोड़ा विचलित होने लगे। उनका मिलना-जुलना लगभग खत्म हो गया, पर वे द्वेष भावना का शिकार नहीं हुए।

वे एक-दूसरे के धर्म का सम्मान करते थे, क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि धर्म कभी बाँटता नहीं, बल्कि जोड़ता है। धर्म तो मानवीय पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। तभी ईद के दिन, राम और गुरमीत सपरिवार असलम के घर पहुँचते हैं और सबको ईद की मुबारकबाद देते हैं। कुछ दिन पश्चात् दीपावली के अवसर पर असलम भी सपरिवार गुरमीत और राम के घर मुबारकबाद देने आता है। तीनों परिवार खुशी-खुशी समय व्यतीत करते हैं तथा मिठाई व पकवानों का आनंद लेते हैं। उपरोक्त घटना ने इस उक्ति को साक्षात् कर दिया

*“मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।”*

**सीख** प्रस्तुत कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि धर्म के आधार पर भेदभाव करना अनुचित है। अतः हमें सभी धर्मों का आदर करना चाहिए और मिलजुलकर रहना चाहिए।

## प्रश्न अभ्यास

- 1. एक ऐसी मौलिक कहानी लिखिए, जिसके अंत में यह वाक्य लिखा गया हो—“अंततः मैं अपनी योजना में सफल हो सका/हो सकी।”**

[2018]

**उत्तर** कहानी मैं बचपन में अक्सर अपने दादा जी से एक बात सुना करता था कि तुम्हारा जीवन तभी सफल है, जब तुम दूसरों के काम आ सको। तब ये बातें मेरे समझ नहीं आती थीं। लेकिन पिछले दिनों मेरे साथ एक ऐसी घटना घटी जिसने मुझे अंदर तक झकझोर दिया और दादा जी की बातें बार-बार स्मरण होकर अपनी सत्यता को सिद्ध करने लगी।

उस दिन मैं रात को ऐसे ही टहलने के लिए घर से बाहर निकला था। मन में पहले से ही बहुत-सी बातों को लेकर उधेड़-बुन चल रही थी, तभी अचानक मेरी नजर सड़क की दूसरी ओर बने कूड़ेदान पर पड़ी। मैंने देखा वहाँ सात से आठ साल के कुछ बच्चे कूड़ा उठा रहे थे, पर एकदम से मेरी नजर एक बच्चे पर आकर रुक गई। मैं सड़क पार करके उनके पास गया तो देखा वह बच्चा कूड़ेदान में फेंकी गई खाने से भरी हुई पॉलिथीन ढूँढ रहा था और उनमें से खाना निकालकर खा रहा था। मेरा शरीर उस दृश्य को देखकर निःस्तब्ध रह गया।

पूरे रास्ते मेरे मन में वही दृश्य चलता रहा। मैंने घर पहुँचकर निर्णय किया कि भूख से तड़पते इन बच्चों के लिए अपने स्तर पर कुछ-न-कुछ कार्य अवश्य करूँगा। मैंने अपने कुछ साथियों को इस घटना के विषय में बताया और मिलकर उनकी सहायता करने के लिए कहा। मैंने उन्हें सुझाव दिया कि हम लोग शाम के समय मोहल्ले के ढाबों और रेस्टोरेंट से उनका बचा हुआ खाना सस्ते दामों पर खरीदकर इन बच्चों में बाँट देंगे। सभी ने मेरे निर्णय की प्रशंसा करते हुए अपने स्तर पर सहयोग करने की बात कही। अगले दिन शाम को हमने अपनी योजना अनुसार कार्य किया और कुछ बच्चों को भोजन कराया। अंततः अपने दोस्तों की सहायता से मैं अपनी योजना में सफल हो सका।

- 2. एक मौलिक कहानी लिखिए जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो—“मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।”** [2015]

**उत्तर** उक्ति का अर्थ “मन के हारे हार है, मन के जीते जीत” प्रस्तुत उक्ति का अर्थ है—यदि हमारे मन में किसी कार्य के प्रति दृढ़ संकल्प है, तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है। यदि हमारे मन ने हार मान ली तो हार निश्चित हो जाएगी और यदि हमारे मन में आत्मविश्वास है, जीतने की

इच्छा है तो जीत निश्चित होती है। यह उक्ति निम्नलिखित कहानी द्वारा स्पष्ट रूप से समझी जा सकती है।

**कहानी** एक बार की बात है, दो राजाओं के बीच भयंकर युद्ध हुआ। जैसा कि होता है कि युद्ध में एक की ही विजय होती है और एक की हार निश्चित होती है।

इस युद्ध में भी ऐसा ही हुआ। एक राजा इस युद्ध में हार गया। उसे जन-धन की बहुत हानि हुई। उसके सैनिक पराजित राजा को ढूँढ़ रहे थे। पराजित राजा अपना जीवन बचाने के लिए भागा-भाग फिरे रहा था। उसने छिपते-छिपाते एक खोह में शरण ली। वह मन से पूरी तरह पराजित हो चुका था। खोह में छिपा हुआ भी वह मानो अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे इस बात का पूरा विश्वास था कि शत्रु की तलवार कभी भी उसका काम तमाम कर देगी। वह इन्हीं विचारों में खोया हुआ था कि उसकी नज़र एक मकड़ी पर पड़ी, जो खोह के दरवाजे पर जाला बनाने में व्यस्त थी, उसकी कोशिशें बार-बार नाकाम साबित हो रही थीं, लेकिन उसने प्रयास करना नहीं छोड़ा। राजा ने सोचा कि वह बेकार ही प्रयत्न कर रही है। भला आधार के बिना जाला कैसे बन सकता है, लेकिन थोड़ी देर बाद राजा ने देखा कि मकड़ी जाला बनाने में सफल हो गई। थोड़ी ही देर में पूरी खोह के मुँह पर जाला बनाया जा चुका था। तभी शत्रु सैनिक वहाँ आ पहुँचे, लेकिन खोह के मुँह पर मकड़ी का जाला बना देख लौट गए। करीब आई हुई मृत्यु तो टल गई, पर राजा एक गहरे विचार में पड़ गया। उसने सोचा कि मैं स्वयं तन-मन से पराजित था। अतः मैंने मकड़ी को भी हारा हुआ मान लिया था, लेकिन वह छोटी-सी मकड़ी हारी हुई नहीं थी। वह बार-बार गिरकर भी निराश और परास्त नहीं हुई। क्या मैं मनुष्य होकर भी इस मकड़ी से दुर्बल हूँ? उसने अपने मन को मजबूत किया और संकल्प लिया कि वह अपने शत्रुओं को अवश्य पराजित करेगा। वह तुरंत उस खोह से बाहर आया। अब वह एक हताश-निराश, पराजित राजा नहीं था, वरन् मजबूत इरादे वाला व्यक्ति था, जिसे हर हाल में विजय पानी थी। उसने अपने साथियों को एकत्र किया और अंत में अपने शत्रु को हरा कर अपना राज्य पुनः प्राप्त किया। अतः यह सच ही है कि

“मन के हारे हार है, मन के जीते जीत”

**सीख** प्रस्तुत कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने मन को मजबूत और दृढ़-संकल्प करके कार्य करना चाहिए, तभी हमें सफलता प्राप्त हो सकती है।

### 3. “संगठन में शक्ति होती है” कहावत को आधार बनाकर मौलिक कहानी लिखिए।

**उत्तर** उक्ति का अर्थ “संगठन में शक्ति होती है” अर्थात् साथ मिलकर बड़े से बड़ा कार्य भी आसानी से संभव हो जाता है, इसलिए कहा गया है “शक्ति ही जीवन है।” हमें आशावादी, दृढ़ व अनुकूल विचारों को अपनाकर एक साथ संगठन में रहकर कर्म करना चाहिए। संगठन में शक्ति होती है, अकेला व्यक्ति उचित प्रकार कार्य नहीं कर सकता। इसे निम्न कहानी द्वारा भली प्रकार समझा जा सकता है

**कहानी** एक बार अँगुलियों का आपस में झगड़ा हो गया। पाँचों खुद को दूसरे से बड़ा सिद्ध करने में लगी थीं। अँगूठा बोला मैं सबसे बड़ा हूँ, उसके पास वाली अँगुली बोली मैं सबसे बड़ी हूँ। इसी प्रकार खुद को एक-दूसरे से बड़ा सिद्ध करने में जब निर्णय नहीं हो पाया, तो वह सब अदालत में गए। न्यायाधीश ने सारी बात

सुनी और सबसे कहा कि आप लोग सिद्ध करो कि आप कैसे बड़े हैं। अँगूठे ने कहा, मैं सबसे ज्यादा पढ़ा-लिखा हूँ, क्योंकि लोग मुझे हस्ताक्षर के लिए प्रयोग करते हैं। पास वाली अँगुली बोली मुझे लोग किसी इंसान की पहचान के तौर पर इस्तेमाल करते हैं।

उसके पास वाली ने कहा कि आप लोगों ने मुझे नापा नहीं अन्यथा मैं ही सबसे बड़ी हूँ। उसके पास वाली अँगुली बोली मैं सबसे ज्यादा अमीर हूँ, क्योंकि लोग हीरे और जवाहरात की अँगूठी मुझमें ही पहनाते हैं। तभी न्यायाधीश ने एक रसगुल्ला मँगवाया और अँगूठे को उठाने के लिए कहा। अँगूठे ने भरपूर जोर लगाया, लेकिन रसगुल्ला नहीं उठा सका तब सारी अँगुलियों ने एक-एक करके कोशिश की, लेकिन सब विफल रहीं।

अंत में न्यायाधीश ने सबको मिलकर रसगुल्ला उठाने को कहा, तो झट से सबने मिलकर रसगुल्ला उठा दिया, तब न्यायाधीश ने कहा कि तुम सब एक-दूसरे के बिना अधूरे हो, अकेले रहकर तुम्हारी शक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है, जबकि संगठित रहकर तुम कठिन-से-कठिन काम आसानी से कर सकते हो। इसी प्रकार यदि एक लकड़ी को तोड़ा जाए, तो वह आसानी से टूट सकती है, परंतु यदि लकड़ियों को एकत्रित कर उसे मजबूती से बाँध दें, तो उन लकड़ियों के गट्टे को तोड़ पाना असंभव है।

**सीख** एक साथ मिलकर संगठन में रहकर किसी भी कार्य को उचित प्रकार से किया जा सकता है। कहा जाता है—“संगठन में शक्ति होती है” अकेला चना कभी भाड़ नहीं फोड़ सकता।

### 4. “लालच बुरी बला है” उक्ति को आधार बनाकर मौलिक कहानी लिखिए।

**उत्तर** उक्ति का अर्थ “लालच बुरी बला है” अर्थात् मनुष्य लालच के वशीभूत होकर पथ-भ्रष्ट हो जाता है। इस उक्ति को पढ़कर एक कहानी स्मरण हो आती है, जो निम्न प्रकार है

**कहानी** एक गाँव में एक सेठ रहता था। उसके बंगले के पास एक गरीब मोची की छोटी-सी दुकान थी। उस मोची की आदत थी कि वह, जब भी जूते सिलता भगवान का भजन करता था, लेकिन सेठ का भजन की तरफ कोई ध्यान नहीं था। एक दिन सेठ व्यापार के सिलसिले में विदेश गया। घर लौटते वक्त उसकी तबीयत बहुत खराब हो गई, लेकिन पैसे की कमी न होने से देश-विदेश से डॉक्टरों को बुलाया गया, पर कोई भी सेठ की बीमारी का इलाज नहीं कर सका। अब सेठ की तबीयत इतनी अधिक खराब हो गई कि वह चल भी नहीं पाता था। एक दिन बिस्तर पर लेटे हुए उसे मोची के भजन गाने की आवाज सुनाई दी, उसे आज मोची के भजन अच्छे लग रहे थे।

सेठ भजन सुनकर ऐसा मंत्र मुग्ध हो गया कि उसे लगा जैसे उसे साक्षात् परमात्मा के दर्शन हो गए। मोची का भजन सेठ को उसकी बीमारी से दूर ले जा रहा था। भगवान के भजन में लीन होकर वह अपनी बीमारी भूल गया और उसे आनंद की प्राप्ति हुई तथा उसके स्वास्थ्य में भी सुधार आने लगा। एक दिन सेठ ने मोची को बुलाकर ₹ 1000 का इनाम देते हुए कहा कि मेरी बीमारी का इलाज बड़े-से-बड़े डॉक्टर नहीं कर पाए, पर तुम्हारे भजन ने यह काम कर दिया मैं तुम्हें रहने के लिए एक घर भी दूँगा। मोची इनाम पाकर बहुत खुश हुआ, वह रात दिन पैसों के और घर के बारे में सोचता रहा। अगले दिन वह काम पर भी नहीं गया। लालच के कारण धीरे-धीरे उसकी दुकानदारी चौपट होने लगी, उधर सेठ

की बीमारी फिर से बढ़ती जा रही थी। मोची को जब लालच का एहसास हुआ, तो वह सेठ को पैसे वापस करने के लिए सेठ के बंगले में आया। उसने सेठ से निवेदन किया कि आप यह पैसे वापस रख लीजिए, मुझे आपका घर भी नहीं चाहिए, क्योंकि इसके कारण मेरा धंधा चौपट हो गया है, मैं भजन भूल गया हूँ। इस धन ने मेरा परमात्मा से नाता तुड़वा दिया। मोची पैसे वापस करके पुनः अपने काम में जुट गया।

वस्तुतः पैसों और घर के लालच ने मोची को पथ-भ्रष्ट कर दिया था। वह अपने काम को यहाँ तक कि परमात्मा को भी भूलकर पैसों और घर के लालच में ही डूब गया था। अंत में मोची जान गया था कि “लालच बुरी बला है।”

**सीख** इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें लालच नहीं करना चाहिए, क्योंकि लालच बुरी बला है।

### 5. “सावधानी हटी और दुर्घटना घटी” कहावत के आधार पर मौलिक कहानी लिखिए।

**उत्तर** **उक्ति का अर्थ** “सावधानी हटी और दुर्घटना घटी” उक्ति का अर्थ है कि जब सावधानी नहीं बरती जाती, तब दुर्घटनाएँ घट जाती हैं। मनुष्य आज अपने जीवन में इतना अधिक व्यस्त हो गया है कि वह जल्द-से-जल्द अपने कार्य पूर्ण कर लेना चाहता है। देश में वाहनों की संख्या में प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है। सड़कों पर ट्रैफिक (परिवहन) इतना अधिक हो गया है कि कभी-कभी 15 मिनट की दूरी के लिए 45 मिनट या उससे भी अधिक समय लग जाता है। घंटों जाम में फँसकर व्यक्ति तीव्र गति से वाहनों को चलाते हैं, जिससे दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ जाती है, क्योंकि मनुष्य कम-से-कम समय में ज्यादा-से-ज्यादा कार्य कर लेना चाहता है। अत्यधिक ट्रैफिक होने के साथ-साथ लोग लापरवाह होते जा रहे हैं। सड़क पर तीव्र गति से वाहनों को चलाते समय लोग ट्रैफिक के नियमों का पालन नहीं करते। दो पहिए वाले वाहनों को चलाते समय हैलमेट आदि का प्रयोग नहीं करते, तो दूसरी ओर कार, बस, स्कूटर आदि चलाने वाले व्यक्ति शराब पीकर वाहन चलाते हैं, यही सब खामियाँ दुर्घटना को अंजाम देती हैं।

**कहानी** एक दिन ऐसी ही दुर्घटना सड़क के चौराहे पर हुई, जिसमें तेज रफ्तार से चली आ रही कार की साइकिल से टक्कर हो गई। टक्कर होने से साइकिल सवार व्यक्ति सड़क के दूसरी ओर जा गिरा। साइकिल पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। कार चालक को भी बुरी तरह चोट आई। यह दुर्घटना तीव्र गति से वाहन चलाने व ट्रैफिक नियम का पालन न करने से हुई। घटनास्थल पर उपस्थित लोगों ने दोनों व्यक्तियों को पास के ही अस्पताल में पहुँचाया। घटनास्थल पर पुलिस कुछ देर पश्चात् आई। पुलिस ने उन व्यक्तियों का पूरा ब्यौरा लिखा साथ ही कुछ चश्मदीद गवाहों से पूछताछ कर रिपोर्ट तैयार की। अस्पताल में पीड़ित व्यक्तियों का इलाज करवाया गया। इस दुर्घटना ने सभी को एक सीख दी, जैसे ही सावधानी हटती है वैसे ही दुर्घटना घटित हो जाती है।

**सीख** हमें निजी वाहनों का प्रयोग कम-से-कम करना चाहिए। सड़क पर चलते समय मोबाइल आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दुर्घटना होने पर हमें घायल व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए, उसे जल्द-से-जल्द अस्पताल ले जाना चाहिए, ताकि उसकी जान बचाई जा सके। यह प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य और दायित्व होना चाहिए। अतः सड़क

पर वाहनों को चलाते समय हमें हमेशा निम्न उक्ति का स्मरण रखना चाहिए—

“दुर्घटना से देर भली।”

### 6. “करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान” प्रस्तुत कथन को आधार बनाकर एक कहानी लिखिए।

**उत्तर** **उक्ति का अर्थ** “करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान” उक्ति का अर्थ है कि निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख-से-मूर्ख व्यक्ति भी सफलता पाता है। कालिदास निरंतर अभ्यास के द्वारा ही उच्चस्तरीय विद्वान् बन पाए, वहीं अर्जुन महान् धनुर्धर बने, तो केवल अपने परिश्रम और अभ्यास के बल पर। प्राचीनकाल से ही ऋषि-मुनियों द्वारा हम परिश्रम व अभ्यास के महत्त्व को देख व समझ सकते हैं। आज के आधुनिक युग में भी परिश्रम और अभ्यास की महत्ता उतनी ही अधिक है।

**कहानी** एक बालक था। वह पढ़-लिख नहीं सकता था। उसके सहपाठी उसका मजाक उड़ाते थे। वह बहुत दुःखी था। परेशान होकर वह किसी ज्योतिषि के पास गया। ज्योतिषि ने कहा—“तुम पढ़ नहीं पाओगे। तुम्हारे हाथ में विद्या की रेखा नहीं है।” एक दिन रास्ते में जाते हुए उसने कुएँ की जगह पर रस्सी के निशान को देखा। उसने सोचा यदि कठोर पत्थर पर निरंतर रस्सी की रगड़ के निशान पड़ सकते हैं, तो मैं भी निरंतर अभ्यास करके पढ़कर विद्वान् बन सकता हूँ फिर उसने पढ़ाई का अभ्यास किया और एक बड़ा विद्वान् बन गया।

निरंतर अभ्यास व्यक्ति की कार्यकुशलता को निखारता है। अभ्यास के दौरान कभी-कभी नकारात्मक भाव भी उत्पन्न होते हैं, परंतु उसे स्वयं पर हावी नहीं होने देना चाहिए, क्योंकि वह विकास के पथ में बाधा उत्पन्न करते हैं। अभ्यास के द्वारा व्यक्ति अपनी बाधाओं का डटकर मुकाबला करता है तथा विषम परिस्थितियों पर नियंत्रण पा लेता है। अभ्यास ही व्यक्ति को कर्तव्य के पथ पर ले जाता है एवं सफलता प्राप्त करने में सहायता करता है। कोई भी व्यक्ति सर्वगुण संपन्न नहीं होता, न ही ज्ञान का भंडार लेकर पैदा होता है।

**सीख** हमें निरंतर अभ्यास के द्वारा अपने ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। अपनी योग्यता पर विश्वास तो होना चाहिए, किंतु अतिविश्वासी नहीं होना चाहिए, इसलिए कहा गया है

“करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान  
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान।”

### 7. “अभिमान विनाश का कारण है” इस उक्ति को आधार बनाकर कहानी लिखिए।

**उत्तर** **उक्ति का अर्थ** “अभिमान विनाश का कारण है” इस उक्ति का अर्थ है कि घमंड और अहंकार व्यक्ति को विनाश की ओर ले जाता है। अभिमान विनाश का कारण होता है, यह बिलकुल सटीक कथन है। महाभारत, रामायण आदि धार्मिक ग्रंथों में इस तथ्य को उजागर किया गया है। रावण ज्ञानी, बलशाली और शक्तिशाली होते हुए भी अपने अभिमान, अहंकार के कारण अजेय रहा। रावण का अहं, उसके पतन का कारण बना। ऐसी ही एक कहानी अभिमानी व्यक्ति के घमंड को चूर करती है।

**कहानी** एक नगर में दो अत्यंत धनवान व्यक्ति रहते थे। एक व्यक्ति का स्वभाव विनम्र था, वहीं दूसरा व्यक्ति धनी होने के

कारण अभिमानी था। अभिमानी व्यक्ति किसी की सहायता नहीं करता था, उसे अपने बड़प्पन पर घमंड था, वहीं दूसरी ओर विनम्र धनी व्यक्ति विनम्रतापूर्वक सबकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहता था। एक दिन अचानक रात को अभिमानी व्यक्ति की साँप के काटने से तबीयत बिगड़ने लगी। उस समय उसके पास घर का कोई सदस्य नहीं था। वह दर्द से कराह रहा था, साँप का ज़हर उसके शरीर में फैलता जा रहा था, तभी एक गरीब किसान ने वहाँ से गुजरते हुए घर से आ रही आवाज़ सुनी, पास जाकर देखा तो उस अभिमानी व्यक्ति की बिगड़ती हालत को देखा। उसने तुरंत साँप का विष निकाला और विनम्र धनी व्यक्ति को सूचित किया और वह उसी समय उस व्यक्ति को अस्पताल ले गया तथा उसकी जान बचा ली तभी अभिमानी व्यक्ति को अपने अभिमान पर पश्चाताप हुआ उसने सबसे माफी माँगी और सबको धन्यवाद दिया।

**सीख** वस्तुतः यह कहानी हमें संदेश देती है कि जो लोग घमंड और अहंकार में रहते हैं, उनका सर्वथा सर्वनाश होता है और जो व्यक्ति शक्तिशाली, बलशाली होने पर घमंड न करके सबकी सहायता करते हैं वे सर्वथा विजयी होते हैं।

**8. एक मौलिक कहानी लिखिए, जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो**  
*“जान बची तो लाखों पाए।”* [2014, 12, 05]

**उत्तर उक्ति का अर्थ** “जान बची तो लाखों पाए” उक्ति का अर्थ है कि किसी झंझट से मुक्ति पाना। इस उक्ति को निम्न कहानी के माध्यम से अच्छी तरह समझा जा सकता है

**कहानी** पिछले वर्ष मैं सपरिवार केदारनाथ की यात्रा पर गया था। हम बस में सवार थे। बस में लगभग 25 यात्री थे। मेरे सामने वाली सीट पर एक दंपति अपने 6 माह के बेटे के साथ बैठे थे। मेरे पीछे सीट पर दो अस्त-व्यस्त वेशभूषा वाले युवक बैठे थे। उनके क्रियाकलापों से मुझे उन पर कुछ शक हुआ। बस दुर्गम पहाड़ियों से गुजर रही थी। कभी-कभी भय से शरीर में कंपन-सा होता था। अचानक रात 4 बजे के आस-पास मुझे कुछ हिलने का आभास हुआ। मैंने देखा, पीछे वाली सीट पर बैठा एक युवक महिला के गहने चुरा रहा था। मेरे शोर मचाने पर उन युवकों की पीटाई की गई और बस से उतार दिया गया।

बस अपने गंतव्य स्थल की ओर चल पड़ी। तभी 6 बजे बस अचानक चलते-चलते रुक गई, क्योंकि सड़क पर पत्थर पड़ा था। हम कुछ समझ पाते इससे पहले ही 4-5 युवकों ने बस पर धावा बोल दिया, उनमें वे 2 युवक भी शामिल थे। इस हाथापाई में ड्राइवर ने बस चला दी ताकि 2 किमी दूर स्थित पुलिस चौकी तक पहुँच सके पर युवकों ने ड्राइवर को मारा और लूटपाट करने लगे। इसी घटनाक्रम में बस का नियंत्रण बिगड़ गया और बस खाई में फँस गई।

उनमें वे 2 युवक और दंपति का बालक बस से नीचे गिर गए। दोनों युवक गहराई में गिरने पर प्राण गँवा बैठे, परंतु बालक एक झाड़ी में फँस गया और उसकी जान बचा ली गई।

तभी किसी के द्वारा सूचना देने के कारण, वहाँ पुलिस पहुँच गई और बाकी लुटेरों को गिरफ्तार करके ले गई। मुझे और ड्राइवर को थोड़े उपचार के बाद अस्पताल से जाने दिया गया। ड्राइवर और हम सभी यात्री पुनः केदारनाथ की ओर रवाना हो गए। सब यात्री उस बच्चे में साक्षात् परमात्मा का अनुभव कर रोमांचित थे।

दंपति के चेहरे पर भय प्रतीत हो रहा था, परंतु दंपति की सच्ची भक्ति भावना ने उनके बच्चे की जिंदगी बचा ली और उन दुष्कर्म युवकों को अपने कर्मों की सजा भोगनी पड़ी। उस बालक को सुरक्षित देखकर मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि

*“जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोया  
 बाल न बाँका कर सके, जो जग बैरी होया।”*

इस घटना के उपरांत परमपिता के प्रति मेरी श्रद्धा और विश्वास में और वृद्धि हो गई।

**9. एक मौलिक कहानी लिखिए, जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो**  
*“परिश्रम ही सफलता का सोपान है।”* [2013]

**उत्तर उक्ति का अर्थ** “परिश्रम ही सफलता का सोपान है” इस उक्ति का अर्थ है कि मेहनत करने से ही सफलता मिलती है। वर्तमान युग कर्म प्रधान है। प्रत्येक इंसान अपने कर्म और मेहनत के बल पर ही अपना भविष्य निर्मित करता है। कुछ लोग जन्मजात प्रतिभाशाली होते हैं, परंतु वे निरंतर कठिन मेहनत के बल पर ही कामयाबी पाते हैं, जो परिश्रम से जी चुराते हैं, वे अपने जीवन को बरबाद कर लेते हैं।

इस विषय को और बेहतर समझने के लिए एक कहानी प्रस्तुत है

**कहानी** मेरे मित्र के बड़े भाई ने वर्ष 1993 में एलएलबी की परीक्षा पास की, परंतु घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण उन्होंने आगे की पढ़ाई छोड़कर नौकरी करनी आरंभ कर दी और साथ-साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी करने लगे।

वर्ष 2005 तक नियमित अध्ययन और मेहनत के बावजूद उन्हें कामयाबी नहीं मिली, परंतु उन्होंने हार नहीं मानी। एक वकील के अधीन कार्य करते हुए, उन्होंने एलएलएम की परीक्षा दी और प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। उसके बाद पुनः एक अध्यापक के परामर्श से परीक्षाओं की तैयारी आरंभ की। उन्हें सफलता मिली और उन्होंने क्लर्क की नौकरी प्राप्त की। अब थोड़ा आर्थिक स्थिति में सुधार हो गया था, परंतु मन में अभी भी ‘जज’ बनने की इच्छाशक्ति कम नहीं हुई थी। उन्होंने पुनः स्वयं को अध्ययन करने के लिए तैयार किया। दिन में कार्यालय से आने के बाद वे रात 10 से 2 बजे तक प्रतिदिन मेहनत और लगन से परीक्षा की तैयारी करते थे। अपने शुरु के प्रयासों में उन्हें असफलता मिली, वह मायूस तो हुए, परंतु स्वयं पर उन्हें पूरा विश्वास था। अपने अंतिम प्रयास को लक्षित करते हुए उन्होंने 3 महीने के लिए कार्यालय से अवकाश लेकर दिन-रात अथक परिश्रम किया और परीक्षा दी।

2 महीने पश्चात् रिजल्ट आया और इस बार उनकी मेहनत और विश्वास का फल उन्हें मिला। उन्होंने प्रथम रैंक के साथ जज की परीक्षा पास की और परमात्मा की कृपा से उनको हमारे शहर में ही पद सँभालने का अवसर मिला। नियमित अभ्यास, कठोर परिश्रम और आत्मविश्वास से उन्हें लक्ष्य की प्राप्ति हुई।

**सीख** इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि परिश्रम कभी निष्फल नहीं होता। मेहनत करने से ही सफलता पाई जा सकती है। ठीक ही कहा गया है, “परिश्रम ही सफलता का सोपान है।”

**10. एक कहानी लिखिए, जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो** [2011]  
*“वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे।”*

**उत्तर उक्ति का अर्थ** ‘वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे’ अर्थात् जो मनुष्य दूसरे मनुष्य के संकट को देखकर अपने प्राणों की



परवाह किए बिना उसकी हर प्रकार से मदद करे, वही सच्चे अर्थों में मनुष्य कहलाने के योग्य है। वह मनुष्य देवता के समान है और वही श्रेष्ठ मानव है। ऐसी ही एक घटना कुछ दिन पहले घटी, जिसने मेरे मन-मस्तिष्क को बहुत ज्यादा प्रभावित किया है।

**कहानी** पिछले महीने मैं अपने परिवार के साथ मनाली घूमने गया था। बस में हमारे साथ तीस छात्रों का एक समूह भी था, जो अपने दो अध्यापकों के साथ पिकनिक मनाने आया था। हमने दो दिन एक साथ गुजारे और विभिन्न दर्शनीय स्थलों के दर्शन किए। तीसरे दिन हम सब एक साथ व्यास नदी के समीप भ्रमण के लिए गए।

मेरे पिताजी ने नदी के बीच जाने से मना कर दिया, परंतु उस समूह के 15 छात्र नदी के बीच जाकर फोटोग्राफी करने लगे। कुछ समय उपरांत अचानक तीव्र गति से नदी का जल स्तर बढ़ गया। सभी छात्र चिल्लाने लगे। चारों ओर हाहाकार मच गया। छात्र खुद को बचाने के लिए विशाल पत्थर को पकड़े थे। कोई भी छात्रों को बाहर निकालने की हिम्मत न दिखा सका। तभी अचानक दो युवा फरिश्ते बनकर आए और नदी में कूद गए, उन्होंने कठिन संघर्ष करके उन छात्रों को रस्सी द्वारा बाहर निकाला। अब अंतिम छात्र को निकालना शेष था। बचाव करने वाला एक युवा बेहद थक चुका था, किंतु उसने हिम्मत नहीं हारी और उस छात्र को किनारे तक पहुँचा दिया, लेकिन काल के चक्र से वह स्वयं को न बचा सका। अंतिम लहर की तेज गति से वह लहरों में समा गया। अगले दिन उसका शव गोताखोरों को प्राप्त हुआ। वह युवा अपने प्राणों की परवाह किए बिना 15 छात्रों की जान बचा गया।

इस पूरे दृश्य ने सबकी आँखों को नम कर दिया और यह न भूलने वाली घटना हमारे मन-मस्तिष्क में कैद हो गई। उस युवा के त्याग ने हमें नमन करने को मजबूर कर दिया और उसके इस साहसिक कार्य पर यह कहावत चरितार्थ होती है कि

“वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे।”

**सीख** इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें जीवन में परोपकार को अपनाना चाहिए तथा दूसरों की सहायता करनी चाहिए, क्योंकि वास्तव में वही मनुष्य है, जो दूसरों की संकट में सहायता करे।

## 11. एक मौलिक कहानी लिखिए, जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो [2010]

“दूर के ढोल सुहावने”

**उत्तर** उक्ति का अर्थ “दूर के ढोल सुहावने” इस उक्ति का अर्थ है कि दूर से सब आकर्षक और लुभावना लगता है, लेकिन पास जाने पर ही वास्तविकता का पता चलता है। यह एक कटु सत्य है कि मानव का वास्तविक परिचय उसके व्यवहार व आचरण से ही पता चलता है, अन्यथा दूर से तो सब आकर्षक ही प्रतीत होते हैं। उपरोक्त उक्ति इसी का पर्याय है, जिसकी पुष्टि हेतु कहानी प्रस्तुत है

**कहानी** मेरी माताजी के दूर के रिश्ते के भाई थे। माताजी उनका खूब सम्मान एवं प्रशंसा करती थीं। दस वर्षों के अंतराल के बावजूद वह उनसे पुराने स्नेह की उम्मीद रखती थीं। वह उनके बारे में सदैव यही कहती थीं कि वे अत्यंत नेक व मिलनसार हैं। माताजी जब भी उनसे फोन पर बात करतीं, तब वे उनके घर दिल्ली आने का मौखिक निमंत्रण देते रहते थे। इसी स्नेह को हकीकत मानकर माताजी उनका गुणगान करती रहती थीं। एक दिन उन्होंने उनसे मिलने का निश्चय कर लिया, इसकी सूचना उनको दे दी गई।

मैं माताजी सहित बस द्वारा दिल्ली की ओर रवाना हुआ। माताजी बेहद खुश और भावुक थीं। उन्होंने अत्यंत स्नेह से अपने हाथों से बने कुछ पकवान और एक स्वेटर साथ रख लिया। दिल्ली पहुँचने पर उन्हें सूचना दे दी गई थी, परंतु उन्होंने व्यस्तता दिखाते हुए थोड़ा इंतजार करने को कहा। इस घटना से माताजी थोड़ी विचलित हुई, परंतु मेरे समझाने पर शांत हो गई। एक घंटे पश्चात् उनका ड्राइवर अकेले आया, जबकि वे घर पर मौजूद थे।

हम उनके घर पहुँचे, ड्राइवर ने हमें बैठक में बैठाया। कुछ समय पश्चात् उनके आने पर माताजी अत्यंत भावुक हो गईं और हालचाल पूछा, परंतु उनके व्यवहार से ऐसा प्रतीत हुआ कि वे हमसे मिलकर ज्यादा प्रसन्न नहीं हुए, तब माताजी ने उन्हें सस्नेह पकवान तथा स्वेटर भेंट किए, परंतु उन्होंने कोई बहाना बनाते हुए वह भेंट ड्राइवर को दे दी।

इस घटनाक्रम से माताजी का हृदय व्यथित हो चुका था। मैंने तब माँ को सँभाला और यथार्थ को समझाने की कोशिश की। अब वहाँ ठहरना माताजी को कष्टप्रद हो रहा था। हमने किसी तरह रात गुजारी और अगले दिन प्रातःकाल ही अपने घर के लिए प्रस्थान कर गए। घर पहुँचने पर मैंने माताजी को सांत्वना दी, तब माता जी शांत हुईं। मुझे उस वक्त माताजी पर स्नेह और हँसी आ रही थी। मैंने उन्हें स्पष्टतः समझाया कि देखा आज यह उक्ति चरितार्थ हो गई है कि

“दूर के ढोल सुहावने होते हैं।”

**सीख** इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि दूर से अच्छी और लुभावनी लगने वाली प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति अच्छा नहीं होता। अतः जो हमारे पास है, उसका महत्त्व समझना चाहिए।

## 12. एक मौलिक कहानी लिखिए, जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो [2009]

“खोदा पहाड़, निकली चुहिया।”

**उत्तर** उक्ति का अर्थ “खोदा पहाड़, निकली चुहिया” उक्ति का अर्थ है—अत्यंत मेहनत के बावजूद परिणाम शून्य अथवा उम्मीद से कम प्राप्त होता है।

**कहानी** इसी से संबंधित एक कहानी मुझे याद आ रही है। पिछले वर्ष मेरे मित्र राहुल की क्रिकेट अकादमी में यह घोषणा की गई कि अगले माह उनकी टीम दूसरे शहर में प्रतियोगिता खेलने हेतु जाएगी और उसके लिए टीम का चयन दस दिन बाद किया जाएगा। शुल्क भी लिया जाएगा। राहुल ने दिन-रात परिश्रम किया। प्रातः 4 से 8 बजे अभ्यास के उपरांत विद्यालय जाना और सायंकाल में पुनः कठिन अभ्यास करना। इन दिनों क्रिकेट पर ही उसका पूरा ध्यान रहा। दस दिन बाद टीम चयनित की गई, जिसमें राहुल का चयन भी हो गया। सब खिलाड़ी रोमांचित थे। सबने नई पोशाक, नया सामान खरीद लिया और प्रतियोगिता शुल्क भी अदा कर दिया। अब उनकी टीम बस द्वारा रवाना हुई और शहर से लगभग 300 किमी की दूरी पर राजस्थान के एक छोटे से गाँव के विद्यालय में ले जाई गई।

सब खिलाड़ी वहाँ के वातावरण से चोंक गए। विद्यालय जर्जर अवस्था में था और मैदान भी अस्त-व्यस्त था। अगले दिन प्रातः जब मैच आरंभ हुआ, तो विपक्षी टीम के खिलाड़ियों को देखकर सब हैरान रह गए। वे अप्रशिक्षित थे और अस्त-व्यस्त पोशाक में गाँव के ही निवासी थे, जिन्हें बल्ला पकड़ने तक का ज्ञान न था। यह ग्रामीण स्तर का मैच था। सब खिलाड़ी अपमानित व अजीब



महसूस कर रहे थे, क्योंकि टीम जो सोचकर प्रतियोगिता खेलने आई थी, यहाँ ऐसा कोई माहौल नहीं था। वे सब संपूर्ण प्रशिक्षण के साथ, प्रशिक्षित टीम से खेलने आए थे। व्यथित हृदय के साथ उन्होंने मैच खेला और वापस दिल्ली आ गए।

**सीख** इस प्रकार उस वक्त उनकी अवस्था देखकर यह उक्ति सार्थक प्रतीत हो रही थी, “खोदा पहाड़, निकली चुहिया।” सभी अभिभावक इस घटनाक्रम को जानकर अत्यंत नाराज हुए। राहुल ने तो उस अकादमी से नाता ही तोड़ लिया।

- 13. एक मौलिक कहानी लिखिए, जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो**  
*“आगे कुआँ पीछे खाई।”* [2008]

**उत्तर उक्ति का अर्थ** “आगे कुआँ पीछे खाई” अर्थात् दोनों ओर विपत्ति का होना। उपरोक्त उक्ति को बेहतर समझने के लिए एक कहानी प्रस्तुत है

**कहानी** मेरे गाँव का एक निवासी गगनदीप किसी कार्यवश रेलगाड़ी द्वारा भोपाल जा रहा था। वह अत्यंत बहादुर था और अनेक बार अपनी वीरता के लिए प्रशस्ति-पत्र प्राप्त कर चुका था। उनकी गाड़ी दिल्ली से रवाना हुई। रात के लगभग 10 बजे जब गाड़ी चंबल के भयावह क्षेत्र से गुजर रही थी, अचानक विशाल नदी के ऊपर जाकर रुक गई। यात्री इस सुनसान माहौल में थोड़ा भयभीत थे। अचानक ही 4-5 डाकुओं ने हमला कर दिया और लूटपाट करने लगे।

गगन द्वारा विरोध करने पर डाकुओं ने उसे बंदूक से घायल कर दिया। तब भी गगन ने हँसला दिखाते हुए, जान बचाने के उद्देश्य से अपने साथ एक यात्री को चुपचाप गाड़ी से नीचे उतार लिया। वे दोनों गाड़ी के नीचे पटरी पर थे, परंतु परेशानी यही थी कि दोनों तैरना नहीं जानते थे। तब दोनों ने पटरी-पटरी निकलने की योजना बनाई।

सहसा ही रेलगाड़ी धीमी गति से चल पड़ी। अब उन दोनों को साक्षात् मृत्यु का आभास होने लगा था। दोनों पटरी से लटक गए। अब वे न तो नदी में कूद सकते थे और न ही गाड़ी में चढ़ सकते थे। उनकी अवस्था देखकर यह कहावत साक्षात् प्रतीत हो रही थी कि “आगे कुआँ पीछे खाई।”

तभी शायद किसी के सूचना देने पर क्षेत्रीय पुलिस ने आकर डाकुओं को मार भगाया और उन दोनों को भी सकुशल बचा लिया। तत्पश्चात् सभी यात्री गंतव्य स्थल की ओर रवाना हो गए।

- 14. “आ बैल मुझे मार” इस उक्ति के आधार पर एक मौलिक कहानी लिखिए।** [2006]

**उत्तर उक्ति का अर्थ** “आ बैल मुझे मार” का अर्थ है—जानबूझकर मुसीबत में पड़ना या मुसीबत को अपने पास बुलाना। कभी-कभी व्यक्ति भावनाओं में बहकर खुद को संकट में भी डाल लेते हैं। ऐसी अवस्था में उपरोक्त उक्ति सत्य प्रतीत होती है कि “आ बैल मुझे मार।” इसी संदर्भ में एक कहानी प्रस्तुत है

**कहानी** हमारे गाँव में अशोक नाम का एक युवक था, जो अत्यंत साहसी और बहादुर था, परंतु साथ ही चंचल व अधीर था, इसी कारण खुद को संकटग्रस्त कर लेता था। एक बार की घटना है, हमारे गाँव पर डाकुओं ने हमला कर दिया। उन्होंने पूरे गाँव में लूट-पाट की, कई घरों से गहने लूट लिए। सब गाँव वाले भय के

कारण अपने-अपने घरों में छिपे हुए थे। अशोक ने तब हौसला दिखाया और इस घटना की सूचना पुलिस को दे दी।

पुलिस बिना समय गँवाए, गाँव में पहुँच गई और डाकुओं को चारों ओर से घेर लिया। पुलिस ने यह घोषणा भी कर दी कि सभी गाँव वाले अपने-अपने घरों में छिपे रहें और डाकुओं को चेतावनी दी कि वे आत्मसमर्पण कर दें। डाकुओं का हौसला पस्त हो चुका था और वे समर्पण की योजना बना रहे थे। सहसा अशोक अपना संयम खो बैठा और उसने डाकुओं पर हमला कर दिया।

तभी सब डाकुओं ने अशोक को अपने नियंत्रण में कर लिया और उसे मारने की धमकी देते हुए भागने का प्रयास करने लगे। डाकू अशोक को साथ ले गए और दूर सुनसान जगह पर जख्मी हालत में फेंककर फरार हो गए। पुलिस ने अशोक का इलाज करवाया।

कुछ स्वस्थ होने पर पुलिस ने व्यंग्यात्मक लहजे से अशोक को कहा कि अपनी अधीरता के कारण आपने अपने प्राण संकट में डाल लिए और डाकू भी भागने में कामयाब हो गए। यदि अशोक खुद को संयमित रखता तो पुलिस अपने अभियान में सफल होती और अशोक के प्राणों को भी खतरा नहीं होता। अब यह उक्ति इस घटना और अशोक पर सत्य प्रतीत हो रही थी कि “आ बैल मुझे मार।”

**सीख** इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि बिना सोचे-विचारे कार्य करके मुसीबत में नहीं पड़ना चाहिए।

- 15. एक मौलिक कहानी लिखिए, जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो**  
*“जैसी करनी वैसी भरनी।”* [2007]

**उत्तर उक्ति का अर्थ** ‘जैसी करनी वैसी भरनी’ उक्ति का अर्थ है कि मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल उसे भोगना पड़ता है।

यह सर्वविदित है कि मानव अपने कर्मों के आधार पर ही फल भोगता है। सत्कर्मी तथा परिश्रमी मानव सदैव श्रेष्ठ लक्ष्यों को प्राप्त करता है तथा बुरे कर्म करने वाला मानव सदैव कर्मानुरूप व्यर्थ भटकता रहता है। इसी विषय से संबंधित एक कहानी प्रस्तुत है

**कहानी** दो भाई थे। दोनों कुशाग्र बुद्धि, परंतु दोनों के आचरण, व्यवहार और जीवन-शैली में बहुत अंतर था। उसमें राम धैर्यवान व परिश्रमी था, परंतु राज अधीर, चंचल एवं आलसी था। उनके पिताजी ने उन्हें वार्षिक परीक्षा में श्रेष्ठ अंकों से उत्तीर्ण होने का लक्ष्य दिया, ताकि दोनों का देश के प्रतिष्ठित कॉलेज में दाखिला हो सके।

राम ने पूरी मेहनत और योजना के साथ पूरे समय परीक्षा की तैयारी की और परीक्षा में प्रथम स्थान के साथ पास हुआ। तदुपरांत उसने श्रेष्ठ कॉलेज में भी दाखिला पाया और परिश्रम से प्रशासनिक सेवा (आईएएस) में शानदार भविष्य बनाया। इसके विपरीत राज ने अपना समय व्यर्थ के कार्यों व मित्र मंडली में व्यतीत किया, जिससे वह विद्यालय की परीक्षा तक उत्तीर्ण न कर सका।

इस प्रकार राज ने खुद के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगा दिया और राम कामयाबी की बुलंदियों को प्राप्त कर गया। दोनों ने अपने कर्मों के अनुसार ही फल पाया, इसलिए इस घटना से यह कहावत सही सिद्ध हो गई कि

*“जैसी करनी वैसी भरनी।”*

**सीख** इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि मनुष्य जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है।

## अभ्यास प्रश्नावली

1. अपने जीवन के किसी मार्मिक अंश को आधार बनाते हुए, उसे कहानी के रूप में लिखिए।
2. 'पुस्तक मेरी सच्ची मित्र है' विषय पर एक स्वरचित कहानी लिखिए।
3. अपनी कल्पनाशक्ति के आधार पर 'ग्रामीण जीवन' विषय पर एक कहानी लिखिए।
4. 'हमारे जीवन में विद्यालय का महत्त्व' पंक्ति को आधार बनाते हुए कहानी लेखन कीजिए।
5. 'बस्ते का बोझ, जीवन का बोझ' विषय पर कहानी लेखन कीजिए।
6. 'श्रेष्ठतम धर्म परोपकार' विषय आधारित कहानी लेखन कीजिए।
7. 'दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है' प्रस्तुत पंक्ति से आरंभ करते हुए एक कहानी लिखिए।
8. 'सत्य को कभी-भी छिपाया नहीं जा सकता' कथन को आधार बनाकर कहानी लिखिए।
9. 'पराधीन सपने हैं सुख नहीं' पंक्ति को आधार बनाकर एक मौलिक कहानी लिखिए।
10. एक मौलिक कहानी लिखिए जिसका आधार "जब आवै संतोष धन सब धन धूर समान" हो।
11. 'साँच को आँच नहीं' पंक्ति को आधार बनाकर एक मौलिक कहानी लिखिए।
12. 'चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात' उक्ति को आधार बनाकर एक मौलिक कहानी लिखिए।
13. 'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे' पंक्ति को आधार बनाकर एक मौलिक कहानी लिखिए।
14. 'एक गंदी मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है' पंक्ति को आधार बनाकर एक मौलिक कहानी लिखिए।
15. 'अब पछताये होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत' पंक्ति को आधार बनाकर एक मौलिक कहानी लिखिए।

# चित्र-लेखन

## शब्द सीमा/अंक योजना

परीक्षा में एक चित्र दिया जाता है, जिसके आधार पर विद्यार्थी को 250 शब्दों में कोई लेख या कहानी लिखने के लिए कहा जाता है। परीक्षा में इसके लिए 15 अंक निर्धारित किए गए हैं।

चित्र-लेखन एक ऐसी लेखन शैली है, जिसमें हम चित्र को देखकर मन में उठने वाले भावों को कलमबद्ध करते हैं। इससे आपकी कल्पनाशक्ति तथा बौद्धिक क्षमता का पता चलता है। चित्र-लेखन गागर में सागर भरने वाली उक्ति को रेखांकित करता है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में चित्र-लेखन एक महत्वपूर्ण कला है।

## चित्र लेखन के लिए आवश्यक तथ्य

**विषय का गंभीरतापूर्वक अवलोकन** चित्र लेखन करते समय सर्वप्रथम दर्शाए गए चित्र का उचित प्रकार से अवलोकन कर अर्थात् उसमें दिखाई गई वस्तुओं, दृश्यों, जीवों तथा उनकी पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए उसमें उपस्थित उद्देश्य को समझ लेना चाहिए।

**विषय का विभाजन** प्रकरण को समझने के पश्चात् चित्र में उपस्थित प्रमुख समस्या/घटना का विभाजन कर उस पर अपने विचार प्रस्तुत करने चाहिए।

**प्रमुख उद्देश्य** चित्र में प्रदर्शित प्रमुख उद्देश्य को प्रारंभ से अंत तक ध्यान में रखना चाहिए।

**वातावरण** चित्र में दर्शाए जा रहे आस-पास के वातावरण एवं उसके प्रभावों पर भी ध्यान देना चाहिए। प्रस्तुत चित्र किस वर्ग, संस्कृति, भौगोलिक प्रदेश का संकेत कर रहा है, उसका वर्णन संक्षिप्त रूप में करना चाहिए।

**प्रस्तुतीकरण** चित्र वर्णन/लेखन का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है—प्रस्तुतीकरण। प्रस्तुतीकरण करते हुए चित्र में दर्शाई जा रही घटना का वर्णन व्यवस्थित क्रम में करना चाहिए। जिन बातों को प्रमुखता से कहा जाना है, उन्हें प्रारंभ में लिखना चाहिए, तत्पश्चात् मध्य में विस्तारपूर्वक वर्णन और अंत में निष्कर्ष के साथ समाप्त करना चाहिए।

**देशकाल** चित्र वर्णन के अंतर्गत चित्र में दिखाई गई सभ्यता, संस्कृति, व्यक्ति आदि को अभिव्यक्ति का आधार बनाया जाना चाहिए।

**वाक्य विन्यास** वाक्य अत्यधिक बड़े अथवा छोटे नहीं होने चाहिए। चित्र में बताए गए विभिन्न नारों तथा सूचना इत्यादि को उचित प्रकार से अभिव्यक्त करना चाहिए।

**भाषा-शैली** चित्र लेखन की भाषा-शैली रोचक व आकर्षक होनी चाहिए। शब्दों का चयन सरल व स्पष्ट रूप में किया जाना चाहिए। समय-समय पर लोकोक्तियों, मुहावरों, सूक्तियों, काव्यांशों, महापुरुषों के कथनों आदि का वर्णन किया जाना चाहिए।

**निष्कर्ष** चित्र लेखन का अंत समस्या आदि के सुझाव के प्रयास से किया जाना चाहिए। निष्कर्ष इस प्रकार अभिव्यक्त हो, जिससे चित्र में दी गई घटना का पूर्ण उद्देश्य मुखरित होता हो। उचित पृष्ठभूमि के द्वारा चित्र लेखन का अंत करना चाहिए।

**अन्य तथ्य** चित्र की पृष्ठभूमि पर कई बार नारा, उपदेश, विज्ञापन, जन-चेतना, सूचना, साइनबोर्ड या योजना आदि लिखे होते हैं। चित्र के संदर्भ में उन्हें अभिव्यक्ति का आधार अवश्य बनाएँ; जैसे—‘लड़का-लड़की एक समान’, ‘ईश्वर वन टीचर वन’, ‘आओ, पढ़ें पढ़ाएँ’, ‘पोलियो-उन्मूलन’, ‘एड्स से बचें’, ‘ऋण प्राप्त करें’, ‘वृक्षों को बचाओ—स्वास्थ्य बनाओ’ आदि।

## साधित उदाहरण

1. नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर उसका परिचय देते हुए कोई लेख, घटना अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट संबंध चित्र से होना चाहिए। [2018]



**उत्तर** प्रस्तुत चित्र में कुछ विद्यार्थियों को दिखाया गया है, जो शायद विद्यालय से घर आ रहे हैं। उनकी वेश-भूषा देखकर वे किसी सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी लग रहे हैं। उनके पास बैग हैं, जिनमें किताबें हैं। उनके पास टैबलेट जैसा यंत्र भी दिखाई दे रहा है, जो शायद उन्हें विद्यालय से प्राप्त हुआ होगा। वर्तमान शिक्षा में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का अत्यंत महत्त्व है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों की पुस्तकों की जगह कंप्यूटर, लैपटॉप, टैबलेट इत्यादि ने ले ली है। अब विद्यार्थी शिक्षा के लिए, शिक्षण सहायक सामग्रियों में ग्लोब व मानचित्रों का प्रयोग करने के साथ-साथ कंप्यूटर का भी प्रयोग करते हैं। उन्हें कोई भी प्रोजेक्ट पूरे करने हों उनमें वैज्ञानिक आविष्कार का प्रयोग अवश्य होता है। शिक्षक अब केवल विद्यालय तक ही सीमित नहीं रहे, बल्कि कंप्यूटर व इंटरनेट के रूप में प्रत्येक क्षण विद्यार्थियों के साथ जुड़े रहते हैं। प्रस्तुत चित्र में सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों को दिए गए टैबलेट्स विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के इसी महत्त्व को रेखांकित करते हुए प्रतीत होते हैं। शिक्षा किसी भी परिवार, समाज एवं राष्ट्र की उन्नति एवं प्रगति का एकमात्र रास्ता है। शिक्षा वह हथियार है, जो लोगों में चेतना का विकास करती है और समाज एवं राष्ट्र को दिन-प्रतिदिन बेहतर-से-बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमारी सरकारें भी शिक्षा के इस महत्त्व को पहचानती हैं। वे यह नहीं चाहती कि हमारे सरकारी विद्यालयों के बच्चे निजी विद्यालयों के बच्चों से पीछे रहें, इसलिए वह उन विद्यार्थियों को हर संभव सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहती है। प्रस्तुत चित्र शिक्षा के इसी महत्त्व को रेखांकित करता है।

2. प्रस्तुत चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर उसका परिचय देते हुए कोई लेख, कहानी अथवा घटना लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट संबंध चित्र से होना चाहिए। [2017]



**उत्तर** प्रस्तुत चित्र में दो महिलाओं व 11-12 वर्ष की दो बच्चियों को दिखाया गया है, जो बीड़ी बनाने का कार्य कर रही हैं। उन्होंने बाँस की टोकरियों में बीड़ी बनाने का सामान अर्थात् तेंदू के पत्ते व तंबाकू रखा हुआ है, जिसे वे अपनी गोद में रखकर बैठी हुई हैं। उनके आस-पास के वातावरण को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि वे टूटी-फूटी इमारत में छप्पर डालकर रहने वाले हैं। उनमें से एक महिला के पीछे कुछ बर्तन रखे हुए हैं तथा चूल्हा जला हुआ है, जिससे धुआँ उठ रहा है। अपने कार्य के प्रति उनमें पूर्ण तन्मयता दिखाई दे रही है। बाल श्रम हमारे जीवन पर एक अभिशाप है, जिस अभिशाप से हम अब तक मुक्त नहीं हुए हैं। भारत में सभी बच्चे अपने बचपन का आनंद लेने के लिए भाग्यशाली नहीं हैं। उनमें से बहुत से अमानवीय परिस्थितियों में काम करने के लिए मजबूर हैं, जहाँ उनके दुःखों का कोई अंत नहीं है। यद्यपि बाल श्रम पर प्रतिबंध लगाने वाले कानून हैं, फिर भी बच्चों को सस्ते श्रम के रूप में शोषित करना जारी है। इसका कारण यह है कि अधिकारी, मजदूरों के रूप में लगे बच्चों को बचाने वाले कानूनों को लागू करने में असमर्थ हैं।

भारत में महिला सशक्तीकरण के उद्देश्य से 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' व 'सुकन्या समृद्धि योजना' जैसी कई योजनाएँ चल रही हैं, जिनका उद्देश्य कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के साथ-साथ उन्हें शिक्षित करना भी है, ताकि देश के विकास में उनकी आधी आबादी का भी महत्वपूर्ण योगदान हो और देश तीव्रतम गति से विकास करे, लेकिन देश में व्याप्त गरीबी व बेरोजगारी के कारण समाज में आर्थिक विषमता की स्थिति अत्यंत विकट रूप धारण कर चुकी है, जिसका सीधा प्रभाव लड़कियों को स्कूल न भेजने के रूप में दिखाई देता है।

प्रस्तुत चित्र में दिखाई गई महिलाओं व बालिकाओं की स्थिति इसी आर्थिक विषमता का परिणाम है। जहाँ 11-12 वर्ष की लड़कियों को विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने के लिए जाना चाहिए, वहाँ उन्हें बीड़ी जैसी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वस्तु के उत्पादन में सहयोग करना पड़ रहा है। यह कार्य उनके व देश के भविष्य के साथ खिलवाड़ है।



# प्रश्न अभ्यास

नीचे दिए गए चित्र को ध्यानपूर्वक देखिए और चित्र को आधार बनाकर वर्णन कीजिए अथवा उसकी कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट संबंध चित्र से होना चाहिए।

1.



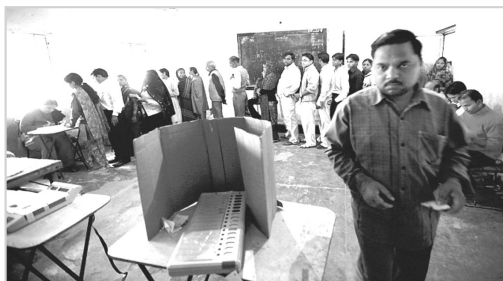
[2015, 07]

5.



[2013]

2.



6.



3.



[2014]

7.



[2012]

4.



8.



9.



[2011]

13.

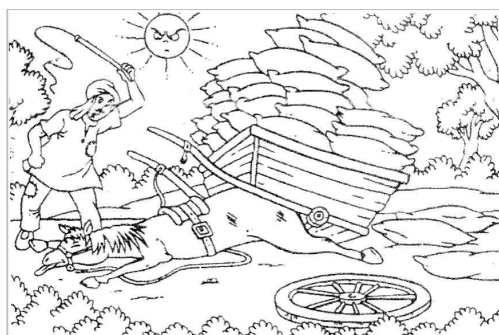


[2006]

10.



14.



[2005]

11.



[2010]

15.



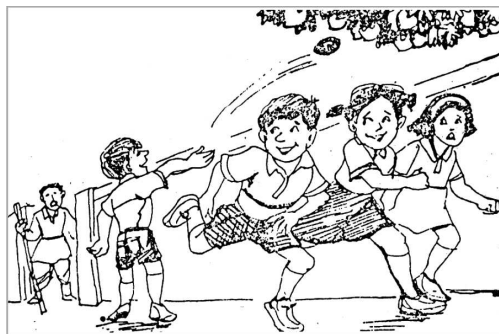
[2003]

12.



[2009]

16.



[2001]



17.



18.



19.



[2000]

[2016]

20.



[2009]

## व्याख्या सहित उत्तर

1. दिए गए चित्र में कुछ विद्यार्थी सफाई करते हुए दिखाई दे रहे हैं। यह चित्र स्वच्छता के प्रति हमारा ध्यान इंगित करता है। अध्यापिका के दिशा-निर्देशानुसार विद्यार्थी स्वच्छता से संबंधित कार्य कर रहे हैं। यह चित्र हमें सफाई के साथ-साथ श्रम की भावना की ओर भी संकेत करता है। शारीरिक श्रम करने से शरीर सुगठित एवं मजबूत बनता है। व्यक्ति में स्वावलंबन की भावना उत्पन्न होती है।

गाँधीजी की श्रमदान की भावना को हमें आज की पीढ़ी में भी विकसित करने का प्रयास करना होगा। अध्यापिका 'कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता' उक्ति द्वारा छात्रों में प्रत्येक कार्य के प्रति निष्ठा एवं सम्मान की भावना जागृत कर सकती है। गाँधीजी का श्रमदान मिशन भारत सरकार द्वारा 2 अक्टूबर को चलाए गए 'स्वच्छ भारत मिशन' के रूप में लागू किया गया।

एक बार मुझे स्वच्छता संबंधी मिशन में भाग लेने का अवसर मिला था, जिसमें एक क्षेत्र को साफ करने की योजना बनाई गई थी। उस मिशन में कई स्कूल के विद्यार्थियों, अध्यापक-अध्यापिकाओं, क्षेत्र के निवासियों आदि सभी ने भाग लिया था। सड़कों पर बिखरे कूड़ा-करकट, दीवारों पर लगे पोस्टरों आदि को स्वच्छ करने में प्रत्येक व्यक्ति ने अपना पूरा योगदान दिया। यह हमारी संस्कृति ही है, जहाँ सभी व्यक्ति मिलकर कार्य को संपन्न करते हैं। जगह-जगह फैली हुई गंदगी एवं पानी के एकत्रित होने से बीमारियों का प्रकोप बढ़ता है।

अतः यह हमारी जिम्मेदारी, कर्तव्य और दायित्व है कि हम अपने आस-पास के वातावरण, परिवेश और देश को स्वच्छ रखने में पूर्ण योगदान दें। कहा भी गया है—“स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।” हमारे शरीर का स्वस्थ होना, हमारे आस-पड़ोस एवं देश की स्वच्छता पर ही निर्भर होता है। देश, आस-पड़ोस, परिवेश को स्वच्छ रखना कर्म की प्रेरणा देता है और कर्म करना हमें आत्मनिर्भर बनाता है। प्रत्येक व्यक्ति की पहल अन्य लोगों में भी स्वच्छता की भावना पैदा करती है। देश को स्वच्छ रखना हमारा दायित्व है। छात्र-जीवन में किए गए स्वच्छता संबंधी कार्य छात्रों को आजीवन स्वच्छता के लिए प्रेरित करते हैं।

2. दिया गया चित्र मतदान केंद्र पर उपस्थित जन-समूह एवं पंक्ति में खड़े लोग, जो मतदान करने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं, के दृश्य को दर्शाता है। प्रत्येक वयस्क को मतदान का अधिकार है। चुनाव के समय देश में जगह-जगह मतदान करने के लिए मतदान केंद्र बनाए जाते हैं। नागरिकों द्वारा किए गए मतदान से ही प्रतिनिधियों का निर्वाचन होता है।

यह चित्र मतदाताओं के उत्साह को प्रदर्शित करता है, जो मतदान के लिए आए हैं। मतदान केंद्र पर सभी जगह चहल-पहल व भीड़ है। मतदान की प्रक्रिया निर्धारित समय पर प्रातःकाल से आरंभ होकर शाम तक चलती है। चुनाव की घोषणा होते ही विभिन्न दल अपने-अपने प्रत्याशियों की चयन प्रक्रिया आरंभ कर देते हैं। मतदान के दिन युवकों में अधिक उत्साह देखने को मिलता है। कुछ लोग पैदल, कुछ साइकिल पर तो कुछ अपनी कारों से मत देने के लिए आते हैं।

सभी वयस्क नागरिक गुप्त रूप से इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन में अपने पसंदीदा उम्मीदवार के नाम के समक्ष बटन दबाकर अपने मतदान के अधिकार का प्रयोग करते हैं। मतदान केंद्र पर पुलिस

व्यवस्था चाक-चौबंद रहती है। लोग बारी-बारी से आकर मतदान करते हैं। स्त्रियों-पुरुषों के साथ बच्चे भी मतदान केंद्र पर दिखाई देते हैं।

मतदान प्रक्रिया संपन्न होने पर तथा चुनाव के परिणाम आने तक सभी उत्साहित दिखाई देते हैं। इस प्रकार मतदान केंद्र का दृश्य बहुत ही मनमोहक प्रतीत होता है। मतदान प्रारंभ होने से लेकर शाम को वोटिंग मशीन सील करने तथा उन्हें सरकारी वाहन द्वारा भेजने तक चहल-पहल व भीड़-भाड़ का वातावरण बना रहता है।

3. प्रस्तुत चित्र पानी के संकट को दर्शाता है। सभी लोग पंक्ति में लगकर अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं। कई क्षेत्र ऐसे हैं, जहाँ नियमित रूप से पानी नहीं मिल पाता, कई स्थानों पर पानी न होने के कारण लोगों को दूर-दराज के क्षेत्रों में पानी लेने जाना पड़ता है, वहीं कुछ ऐसे क्षेत्र भी हैं जहाँ पर पानी का दुरुपयोग होता है। इस प्रकार का असंतुलन पृथ्वी पर जीवन जीने के लिए घातक साबित हो सकता है।

भारत में आज कई क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ स्वच्छ जल न मिल पाने के कारण वहाँ के निवासियों को कई गंभीर बीमारियों का सामना करना पड़ता है। यँ तो जल की समस्या प्राचीनकाल से ही बनी हुई है। सरकार द्वारा किए गए प्रयासों के बावजूद जल की आपूर्ति सभी क्षेत्रों तक उचित रूप में नहीं हो पा रही। जल जीवन के लिए अनिवार्य तत्व है। जल की एक-एक बूँद कीमती है। आज लोगों द्वारा नदियों में स्नान करने, अपशिष्ट पदार्थों को विसर्जित करने व कारखानों और फैक्ट्री आदि का कूड़ा डालने से नदियों का जल प्रदूषित हो गया है, जिससे जल प्रदूषण की समस्या विकराल रूप धारण कर रही है। जल की आपूर्ति न होने से फसलें प्रभावित होती हैं, क्योंकि कृषि के लिए जल प्रमुख साधन है एवं सूखे की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

अतः जल को संरक्षित रखने के लिए हमें विभिन्न उपाय करने चाहिए। भिन्न-भिन्न अभियान चलाकर लोगों को जागरूक करने का प्रयास करना चाहिए। नई पीढ़ी को जल की महत्ता व उसके संरक्षण से अवगत कराना चाहिए। जल के असंतुलन को नियंत्रित करके ही हम भावी पीढ़ी के लिए जल संरक्षित कर सकते हैं, ताकि भावी पीढ़ी के लिए जल की विकराल समस्या उत्पन्न न हो। जल ही जीवन है। यही बात ध्यान में रखकर पृथ्वी पर सुखमय जीवन के लिए जल-संरक्षण हेतु सबको कोशिश करनी चाहिए।

4. प्रस्तुत चित्र भूकंप के कारण आई आपदा को दर्शाता है, जिसमें लोगों के इमारतों के नीचे दब जाने की घटना को इंगित किया गया है। भूकंप एक प्राकृतिक आपदा है, भूकंप पृथ्वी का काँपना या हिलना है। भूकंप का प्रभाव व्यापक स्तर पर होता है, जिससे पूरा क्षेत्र और शहर इसकी चपेट में आ जाते हैं, जिससे जन-जीवन अत्यधिक प्रभावित होता है। जब पृथ्वी की भीतरी परतों पर दाब बढ़ जाता है, तब भूकंप की स्थिति उत्पन्न होती है।

यह चित्र विश्व की व्यापक क्षति को प्रदर्शित करता है। भूकंप आने पर शहर, साधन, बड़े-बड़े भवन आदि नष्ट हो जाते हैं, लोग अपने घर से बेघर हो जाते हैं, मलबों के नीचे लोग दबे रह जाते हैं।

यद्यपि भूकंप आने की पहले से कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती या चेतावनी भी नहीं दी जा सकती। भूकंप कई बार अचानक अपना विकराल रूप लेकर हमारे सामने आता है। कई बार यह भू-स्खलन

का रूप धारण कर लेता है, तो कई बार सुनामी जैसी आपदा लेकर आता है। विश्व के प्रत्येक नागरिक को भी यह ध्यान रखना होगा कि वह पर्वतों आदि को नष्ट न करे। भूकंप आने के बाद उससे बचने के लिए सरकार द्वारा भी समय-समय पर सुरक्षा के प्रावधान किए जाते हैं तथा भूकंप से बचने के उपाय बताए जाते हैं, जैसे-भूकंप आने पर खुले वातावरण में आ जाना, डेस्क के नीचे बैठ जाना आदि।

इन सभी उपायों का सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए तथा बचाव हेतु अधिक-से-अधिक लोगों को सचेत करने का प्रयास करना चाहिए। नुकड़ नाटकों द्वारा भी इस आपदा के प्रति जागरूक करने व उचित उपाय बताने का प्रयास किया जा रहा है। जैसे एक सिक्के के दो पहलू होते हैं, वैसे ही सुख व दुःख व्यक्ति के जीवन में आते हैं। भूकंप से बचने का सर्वप्रथम उपाय व्यक्ति का स्वयं का मनोबल है, जिससे वह इस आपदा का उचित प्रकार से सामना कर सकता है तथा इस परिस्थिति में अपना बचाव कर सकता है।

5. प्रस्तुत चित्र में सेना के कुछ जवान नजर आ रहे हैं, जिनमें से दो जवानों की गोद में एक शिशु है। सभी जवान उसकी मासूम गतिविधियों से वात्सल्यता का अहसास कर रहे हैं, वे प्रसन्न भी हैं और शायद बालिका के जन्म से संबंधी वार्ता भी कर रहे हैं।

पिछले महीने की बात है, सेना के कुछ जवान अपने मिशन के समापन के बाद छुट्टियाँ लेकर अपने-अपने घर जाने के लिए तैयार थे। विभाग द्वारा जवानों के लिए रेलगाड़ी में एक बोगी आरक्षित कर दी गई थी। वे जवान स्टेशन पर जैसे ही अपनी बोगी में चढ़े, तभी उन्हें एक बालिका के रोने की आवाज सुनाई दी। उन्होंने देखा एक नवजात बालिका कपड़े में लिपटी खिड़की के पास वाली सीट पर जोर-जोर से रो रही है। शायद कोई उसे वहाँ छोड़कर चला गया था।

जवानों ने उसे गोद में उठाया और चुप कराने लगे। बाद में किसी ने यह जानकारी दी कि सेना के एक अधिकारी ने उस बालिका को कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के उपरांत गोद ले लिया है। सभी जवान खुशी-खुशी उस बालिका को दुआएँ दे रहे थे। जवानों को यह आभास हुआ कि शायद यह कन्या-हत्या से संबंधित घटना हो। हमारे देश में बालक-बालिकाओं के संबंध में प्रचलित भेद-भाव अत्यंत गंभीर विषय है। आधुनिक युग में भी लिंग भेदभाव की समस्या यथावत् विकराल रूप धारण किए हुए है। अनेक परिवार पुत्र प्राप्ति के मोह में पुत्रियों की हत्या कर देते हैं या फिर जन्म के बाद इस तरह उन्हें मरने के लिए छोड़ देते हैं।

यह एक गंभीर विषय है कि किस प्रकार कोई माता-पिता अपने अंश तथा कलेजे के टुकड़े को अपने से अलग कर देते हैं? ऐसे निर्दयी माता-पिता हेतु सख्त सजा का प्रावधान होना चाहिए। हमारे देश में लड़के-लड़की में भेदभाव करने एवं लड़के को श्रेष्ठ समझने की मानसिकता अत्यंत प्रबल है। उत्तर भारत में यह समस्या अधिक गंभीर है। प्रशासन व न्यायपालिका को इस गंभीर समस्या के समाधान के लिए कठिन प्रयास करने होंगे तथा भ्रूण हत्या के खिलाफ और सख्त कानून बनाने होंगे।

बालिकाओं की शिक्षा एवं उत्थान के लिए और अधिक सार्थक योजनाएँ लानी होंगी। महिलाओं को शिक्षा व रोजगार से जोड़ना होगा। समाज को पूर्ण जागरूक करना होगा, ताकि इस विकराल समस्या को यथाशीघ्र कम किया जा सके। देश की आबादी के आधे भाग का प्रतिनिधित्व करने वाले नारी-वर्ग की उपेक्षा अशोभनीय है।

6. प्रस्तुत चित्र भारत की विभिन्न धर्मों में आस्था और उसके अनुरूप मनाए जा रहे पर्व को दर्शाता है। इस चित्र में एक ओर एक बच्चे द्वारा पटाखे जलाए जाने तथा साथ में खड़े अन्य बच्चे के फूलझंडी जलाने के दृश्य को दिखाया गया है। प्रथम भाग में दीपावली के पर्व को मनाए जाने का संकेत है तथा दूसरे भाग में चन्द्रमा के दर्शन के बाद दो व्यक्तियों का गले मिलने तथा आस-पास उपस्थित लोगों के भी प्रसन्नतापूर्वक मिलने से यह चित्र ईद के पर्व की ओर इशारा करता है। आस-पास मस्जिद का दृश्य मुस्लिम धर्म को दर्शाता है।

दोनों ही पर्व मनाए जाने पर सब ओर प्रसन्नता छाई हुई है। सभी पर्वों की अपनी विशेष महत्ता तथा मान्यताएँ हैं। भारत विभिन्न संस्कृतियों वाला देश है, जहाँ हर संस्कृति के भिन्न-भिन्न पहनावे, अलग-अलग रीति-रिवाज होने पर भी इस विविधता में एकता की भावना कायम है। जाति, वर्ण, धर्म आदि का भेदभाव न होते हुए सभी एक-दूसरे के त्योहार मनाते हैं। आज कोई भी पर्व किसी एक धर्म तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यापक स्तर पर सभी लोगों के द्वारा मनाया जाता है। भारत की संस्कृति अनेकता में एकता वाली उक्ति को चरितार्थ करती है।

हमारे देश में हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई आदि सभी धर्मों के लोग रहते हैं। प्रत्येक त्योहार मानवीय मूल्य एवं आदर्श को स्थापित करते हैं और हमें एकता, एकरूपता आदि के साथ रहने की प्रेरणा देते हैं। चाहे त्योहार किसी भी धर्म का हो, प्रत्येक त्योहार मनुष्य के हृदय में उल्लास का संचार करता है। यह चित्र भी हमें देश में मनाए जाने वाले पर्वों की ओर इंगित करता है और भाईचारे तथा प्रेम-भावना का संदेश प्रदान करता है।

7. प्रस्तुत चित्र में एक महिला सँडासी से भगौना पकड़कर कप में चाय डाल रही है। वह वेशभूषा से अत्यंत निर्धन प्रतीत हो रही है। उसके पास एक चूल्हा है तथा कुछ लकड़ियाँ मौजूद हैं, जिन्हें वह भोजन आदि बनाने के लिए ईंधन के रूप में प्रयोग करती है।

घर की दयनीय दशा देखकर ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी आर्थिक दशा चिंतनीय है। हमारे देश में आज भी 60% जनसंख्या गाँवों में ही निवास करती है। गरीब तो शहरों में भी मौजूद हैं, परंतु ग्रामीण स्तर पर गरीबों की दयनीय अवस्था की तो कल्पना मात्र से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

आज भी ग्रामीण व आदिवासी क्षेत्रों में लोगों के पास न खाने के लिए अन्न है और न पहनने को वस्त्र। यह मकान भी इतना जर्जर व कच्ची अवस्था में है कि उसमें मौसम की विकरालता का सामना करने की सामर्थ्य नहीं है। सच कहा जाए, तो इस घर में रहने वाले लोग जीवित तो हैं, परंतु मृत समान।

भारत में आर्थिक असमानता चिंता का विषय है। एक ओर तो धनी लोग हैं, तो दूसरी ओर ऐसे लोग हैं, जो अपने रहने-खाने की व्यवस्था करने में भी असमर्थ हैं। इस अंतर को दूर करने के लिए समाज के धनी वर्ग तथा प्रशासन को अपना योगदान देना होगा।

लाखों ऐसे निम्न जाति के लोग हैं, जो आर्थिक रूप से अत्यंत सक्षम हैं, तो उच्च समझी जाने वाली जातियों में भी ऐसे लोग हैं, जो आर्थिक तंगी के कारण भूखे मरने को मजबूर हैं। अब इस अंतर को दूर करने का समय आ गया है। प्रशासन को राजनीतिक विचारधारा से ऊपर उठकर उन लोगों को आरक्षण देना होगा, जिन्हें वास्तव में इसकी आवश्यकता है। आरक्षण आर्थिक स्थिति के अनुरूप होना चाहिए न कि जातीय आधार पर। इसके अलावा धनी लोगों को भी सामर्थ्यानुसार गरीबों के उत्थान के लिए संगठन बनाकर उनके उत्थान में योगदान देना चाहिए।

गरीबी एक अभिशाप है। अपने देश को गरीबीमुक्त बनाने में हम सभी को अपना-अपना योगदान देना होगा। देश के आर्थिक स्तर में सुधार के लिए गरीबी-उन्मूलन आवश्यक है।

8. प्रस्तुत चित्र प्रदूषण की गंभीर समस्या को उजागर करता है। प्रस्तुत चित्र में कारखाने लगे हैं, जिनमें से धुआँ निकल रहा है। आस-पास प्राकृतिक वातावरण का दृश्य है। यह धुआँ वातावरण को प्रदूषित कर रहा है। विज्ञान के विकास ने मनुष्य के समक्ष प्रदूषण की समस्या उत्पन्न कर दी है।

शहर में कारखाने स्थापित होने के कारण प्रदूषण का खतरा दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इस प्रदूषण का कारण नदियों में बहाए गए कारखानों आदि का गंदा जल, उनका धुआँ, जनसंख्या-वृद्धि, वृक्षों का काटा जाना आदि हैं।

प्रदूषण एक चिंताजनक विषय बनता जा रहा है, जो वातावरण के पंच तत्वों को प्रदूषित कर रहा है, यही नहीं वैज्ञानिक आविष्कारों एवं पेट्रोल, डीजल के धुएँ ने भी पर्यावरण को दूषित कर दिया है। पर्वतीय प्रदेशों के लोग हालाँकि कुछ हद तक सुरक्षित हैं, परंतु इसका प्रकोप यदि ऐसा ही रहा, तो प्रकृति अपना संतुलन खो देगी।

वायु, जल, मृदा और ध्वनि प्रदूषण के लिए मानव स्वयं उत्तरदायी है। मानव निर्मित, कृत्रिम संसाधनों, वन्य-संपदा के ह्रास, वन्य-जीवन से छेड़-छाड़, वाहनों का अधिक उपयोग, कल-कारखानों से निस्सृत तत्वों का नदियों में प्रवाहित करना आदि प्रदूषण की समस्या उत्पन्न करते हैं। बड़ी मशीनों का अत्यधिक प्रयोग न करके लघु उद्योगों को बढ़ावा देने से प्रदूषण की समस्या का हल होगा, तभी मानव जीवन सुरक्षित रह पाएगा और बीमारियों आदि से बच पाएगा। प्रदूषण से हमारा वातावरण नरक बनता जा रहा है। वर्ष 1947 में मिली आजादी के बाद से हमारी तीन समस्या रोटी, कपड़ा और मकान को पूरा करने के लिए अत्यधिक संसाधनों के प्रयोग करने से प्रदूषण की समस्या विकराल रूप धारण कर हमारे सामने आ रही है।

हमें वृक्ष लगाकर, वाहनों का कम प्रयोग कर, कारखानों को आबादी से दूर स्थापित कर प्रदूषण की समस्या पर नियंत्रण पाना ही होगा, तभी हम वातावरण को सुरक्षित रख पाएँगे।

9. प्रस्तुत चित्र में एक बालक पूर्ण निष्ठा के साथ जूते पर पॉलिश कर रहा है। यह बालक 15-16 वर्ष का प्रतीत हो रहा है, परंतु अपने मजबूत इरादों और इच्छाशक्ति से वह अपने कार्य में लीन है। संभवतः यह दृश्य किसी रेलवे स्टेशन का है और यह बालक वहाँ जमीन पर बैठा हुआ है।

एक समय की बात है, एक स्त्री अपने 15-16 वर्ष के पुत्र के साथ रहती थी। स्त्री के पति का देहांत हो चुका था। पुत्र के पालन-पोषण का भार पूरी तरह उसी पर था। वह स्त्री आस-पास के घरों में मजदूरी आदि करके घर चलाती थी और अपने पुत्र का पालन-पोषण करती थी। अतिरिक्त समय मिलने पर वह घर पर ही सिलाई कार्य करती थी, ताकि बेटे को शिक्षित कर सके और कामयाब बना सके। इतनी मेहनत करने पर भी वह पर्याप्त धन नहीं जुटा पाती थी। वह बालक की शिक्षा के खर्च को वहन करने में भी कठिनाई महसूस कर रही थी। अपनी माता की इस चिंता व निराशा का आभास होने पर उस बालक ने माता की मदद करने का निर्णय लिया। इसलिए विद्यालयी शिक्षा के साथ-साथ अतिरिक्त समय में वह जूते पॉलिश करने का कार्य करने लगा, जिससे कि माता का आर्थिक सहयोग कर सके तथा अपनी पढ़ाई के खर्च को पूरा कर सके।

वार्षिक परीक्षा में कठिन मेहनत करके बालक ने कक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। वह विद्यालय में मन लगाकर पढ़ाई करता और विद्यालय से आने के बाद जूते पॉलिश करता। उसका कठिन परिश्रम रंग लाया और वह अपनी कक्षा के मेधावी विद्यार्थियों में गिना जाने लगा। लगातार मेधावी प्रदर्शन करने के चलते उसे छात्रवृत्ति प्राप्त होने लगी। इसके उपरांत समय बीतता गया और वह आगे बढ़ता गया। कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद उसने प्रशासनिक सेवा की परीक्षा उत्तीर्ण की और प्रशासनिक सेवा में उच्च पद पाकर एक अधिकारी बन गया। इस कहानी से यह विश्वास मजबूत होता है कि दृढ़ इच्छाशक्ति तथा मेहनत से किसी भी लक्ष्य को पाया जा सकता है। संसाधनों का अभाव भी मजबूत इरादों को रोक नहीं पाता।

शायर मोहम्मद इकबाल ने सही कहा है कि

“खुदी को कर बुलंद इतना, कि हर तकदीर से पहले।  
खुदा बंदे से खुद पूछे, बता तेरी रजा क्या है?”

अपने जीवन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए छोटे से छोटा काम करने में भी हिचकिचाया नहीं चाहिए।

10. प्रस्तुत चित्र रेलवे प्लेटफॉर्म के दृश्य को दर्शाता है। कुछ लोग प्लेटफॉर्म पर रेल की प्रतीक्षा कर रहे हैं। प्लेटफॉर्म के दोनों ओर रेलगाड़ी खड़ी हुई है। यह चित्र लोगों के आवागमन को दर्शा रहा है। प्लेटफॉर्म पर कुछ व्यक्ति आपस में बातचीत कर रहे हैं। इस तरह प्लेटफॉर्म पर लोगों की भीड़-भाड़ से चहल-पहल बनी रहती है।

प्लेटफॉर्म पर हर समय रेल-गाड़ियों का आवागमन होता रहता है। रेलगाड़ी का अपना एक अलग महत्व है। वैसे एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए यातायात के कई साधन हैं, पर रेलगाड़ी एक सस्ता व सुगम साधन है।

चित्र में कुछ यात्री अपना सामान लेकर गाड़ी पर चढ़ते हुए दिखाई दे रहे हैं तथा कुछ अपना सामान उठाए गाड़ी से उतरते दिखाई दे रहे हैं। प्लेटफॉर्म पर कुली भी होते हैं, जो व्यक्ति सामान खुद नहीं ले जा सकते, वे कुली की सहायता लेते हैं। प्लेटफॉर्म पर जगह-जगह बैचों की व्यवस्था होती है, जहाँ बैठकर यात्री रेल की प्रतीक्षा करते हैं।

प्लेटफॉर्म पर चाय, समोसा, अखबार, पत्र-पत्रिका, फल आदि की दुकानें होती हैं, तो कहीं पानी पिलाने की व्यवस्था भी होती है। सभी यात्री अपने सगे-संबंधियों के साथ आते-जाते दिखाई दे रहे हैं। कोई ट्रेन के पीछे भागता है, तो कोई अपने परिजनों को अलविदा कर रहा होता है। इंजन की सीटी की आवाज, तो कभी गाड़ी चलने की आवाज सुनाई देती है। प्लेटफॉर्म का पूरा वातावरण अस्त-व्यस्त है, साथ ही प्लेटफॉर्म पर भारतीय संस्कृति की झलक भी मिलती है। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी धर्मों को मानने वाले लोग भाईचारे के साथ एक-दूसरे की सहायता करते एवं बातचीत करते हुए दिखाई देते हैं।

यह दृश्य भी यही भाव प्रदर्शित करता है कि यहाँ किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता, सर्वत्र एकता की भावना दिखाई देती है। प्लेटफॉर्म पर कभी-कभी चोरी जैसी अप्रिय घटनाएँ भी घट जाती हैं। अतः लोगों को सावधानी बरतने की जरूरत है। इस चित्र में प्लेटफॉर्म बिल्कुल साफ-सुथरा है। रेलवे राष्ट्रीय संपत्ति है, इसलिए इसके रख-रखाव में हमें भी सहयोग देना चाहिए।



- 11.** प्रस्तुत चित्र में कुछ बच्चे दिखाई दे रहे हैं, जो अपनी कक्षा में अध्ययनरत हैं। उनमें तीन बच्चों के हाथ में स्लेट है, जिस पर 1, 2, 3...(गिनती) लिखी है। देखने में बच्चे प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी प्रतीत होते हैं। इन बच्चों को देखकर अचानक ही बालपन की स्मृतियों ने मुझमें एक कंपन-सा पैदा कर दिया। बालपन को जीवन का श्रेष्ठकाल कहना उचित होगा। बचपन के दिन तनावरहित व मस्ती-भरे होते थे और सभी मित्र होते थे। किसी से कोई भेदभाव नहीं था। निःस्वार्थ और अबोध हृदय केवल खेलने और मस्ती का अर्थ समझता था, परंतु देश में सभी बच्चों को ऐसा बचपन नसीब नहीं होता।

भारत सरकार ने शिक्षा का अधिकार कानून के तहत 6-14 वर्ष तक के सभी बच्चों की शिक्षा को अनिवार्य कर दिया है। इस कानून के तहत देश में प्राथमिक स्तर पर मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही बालकों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए निःशुल्क मध्याह्न भोजन (मिड डे मील) की व्यवस्था भी की गई है। हमारे देश में आज भी लाखों बच्चे ऐसे हैं, जो कुपोषण के शिकार हैं, उन्हें न पर्याप्त खाना मिलता है और न ही उचित शिक्षा। कहते हैं, बच्चे देश का भविष्य होते हैं, लेकिन जिस देश के बच्चे शिक्षा से वंचित हों, कुपोषित हों, वे देश के भविष्य को भला किस प्रकार सँवार सकते हैं? यदि हम बच्चों में देश का भविष्य देखते हैं, तो हमें आज उन्हें वे सभी अवसर उपलब्ध कराने होंगे, जिससे उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सके।

इस दिशा में 'शिक्षा का अधिकार' निश्चय ही सराहनीय कदम है, लेकिन हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि इस अधिकार का लाभ समाज के सभी वर्गों के बच्चों को मिले, ताकि शिक्षा का प्रचार-प्रसार भली-भाँति हो सके। जिस प्रकार, इस चित्र में बच्चों के चेहरों पर मुस्कान है, ठीक उसी तरह भारत के हर बच्चे के चेहरे पर मुस्कान और खुशी दिखाई पड़े।

- 12.** प्रस्तुत चित्र में एक बालक साइकिल चला रहा है और 8-10 बालक खुशी-खुशी चारों ओर से उसे घेरकर दौड़ रहे हैं। पीछे कुछ स्थानीय निवासी भी मौजूद हैं। संपूर्ण दृश्य पहाड़ी क्षेत्र का प्रतीत होता है। गर्मी का मौसम है और तेज धूप है। बालकों की परछाइयाँ भी दिखाई दे रही हैं। इस चित्र में बच्चे प्रसन्नचित हैं। साइकिल चलाने वाला बालक 15 वर्षीय राज है, जो इसी गाँव का निवासी है तथा पास के ही विद्यालय में दसवीं कक्षा का छात्र है। अभी कुछ दिनों पहले सरकार ने एक प्रतियोगिता का आयोजन किया था, जिसमें जिले के उच्च विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों को भाग लेने की अनुमति थी। यह 30 किमी लंबी साइकिलिंग मैराथन प्रतियोगिता थी। इस प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु गाँव के विद्यालय से राज का चयन किया गया था।

यह प्रतियोगिता अत्यंत कठिन व उतार-चढ़ाव भरी थी। निर्धारित दिवस पर सभी प्रतियोगी समय से प्रतियोगिता-स्थल पर पहुँच गए थे। इस प्रतियोगिता में पूरे जिले के लगभग 100 प्रतिभागी हिस्सा लेने पहुँचे थे। प्रतियोगिता संपन्न कराने की जिम्मेदारी जिला-स्तर के खेल अधिकारी की थी। उनके नेतृत्व में आयोजक दल ने प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। आयोजक किसी अप्रिय घटना से बचने हेतु प्रतियोगिता पर नजर रखे हुए थे। राज बचपन से ही साइकिल चलाने में तेज था। सभी को उसकी जीत पर विश्वास था। राज ने कठोर परिश्रम से यह प्रतियोगिता 30 सेकंड के अंतर से जीती।

अंततः आयोजकों द्वारा राज को स्वर्ण पदक एवं प्रशस्ति-पत्र द्वारा पुरस्कृत किया गया। पूरा गाँव इस घटना से गौरवान्वित था। सभी बालक इस सफलता से गद्गद थे और इसी उपलक्ष में गाँव पहुँचने पर सभी बालकों ने राज को घेर लिया। वर्तमान समय में शिक्षा के साथ-साथ खेलों के महत्त्व में भी बढ़ोतरी हो रही है। आज खेलों को इतना ज्यादा महत्त्व मिलने लगा है कि वो रोजगारपरक हो गए हैं। खेल, स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक होते हैं। अतः हमें बच्चों को खेलने के लिए भी प्रोत्साहित करना चाहिए।

- 13.** प्रस्तुत चित्र में महिलाओं ने भारतीय संस्कृति के अनुरूप वस्त्रों को धारण किया है एवं आधुनिक तकनीकी साधन कंप्यूटर का प्रयोग करते हुए दिखाई दे रही हैं। इंटरनेट जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है। चाहे वह विद्यालय हो, विश्वविद्यालय हो, बैंक हो या रेलवे स्टेशन ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है, जो इंटरनेट से अछूता हो। प्राचीनकाल में महिलाओं को घर की चारदीवारी के भीतर रखा जाता था, आज वे महिलाएँ उन सारे सामाजिक बंधनों को तोड़कर घर की चारदीवारी से बाहर आई हैं।

वे दफ्तरों, कार्यालयों, चिकित्सालयों, संसद भवन आदि में तकनीकी सुविधाओं का उपयोग करती हुई दिखाई देती हैं। आज के आधुनिक समय में महिलाएँ घर में और घर के बाहर भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना तारतम्य स्थापित कर रही हैं। आज महिलाएँ पुरुषों से पीछे नहीं हैं, बल्कि पुरुषों से आगे बढ़कर हर क्षेत्र में उचित प्रकार से अपना कर्तव्य निभा रही हैं।

कंप्यूटर के द्वारा देश-विदेश की खबर हम कुछ ही पलों में प्राप्त कर सकते हैं। कंप्यूटर ने विभिन्न क्षेत्रों में विकास करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह चित्र हमें महिलाओं का कंप्यूटर के प्रति झुकाव को दिखाता है, साथ ही उनकी संस्कृति और सभ्यता को भी दर्शाता है। कंप्यूटर ने आज सभी को एक-दूसरे के निकट ला खड़ा किया है। अतः वह आज मानव जीवन का अभिन्न अंग बन गया है।

आज नारी 'अबला' नहीं 'सबला' है। महिलाओं में शिक्षा के प्रसार से उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। एक महिला के शिक्षित होने से दो परिवार शिक्षित होते हैं। महिलाओं को आत्मविश्वास में और वृद्धि करने के लिए प्रयास करने होंगे। आज की नारियाँ शैक्षणिक योग्यता के बल पर अंतरिक्ष तक जा पहुँची हैं। सूचना क्रांति के इस युग में महिलाओं को तकनीकी शिक्षा प्रदान करने की ओर प्रयास करने होंगे।

- 14.** प्रस्तुत चित्र में एक घोड़ागाड़ी दिखाई दे रही है। अत्यधिक बोझ के कारण गाड़ी का पहिया टूटकर अलग हो गया है, जिससे यह गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई है। घोड़ा गाड़ी के नीचे दब गया है। घोड़े का मालिक अत्यंत क्रूरता का परिचय देते हुए उसे चाबुक से पीट रहा है। घोड़ागाड़ी में अनुमानतः 30-40 बोरियाँ हैं और 3 बोरी नीचे भी गिरी हुई हैं। सूर्य अपनी प्रचंड उष्णता की चरम सीमा पर है। वातावरण में अत्यंत गर्मी है। सड़क के आस-पास कुछ वृक्ष भी दिखाई दे रहे हैं। भारी वजन के कारण घोड़ा बुरी तरह घुटनों के बल गिर गया है तथा उसकी जीभ बाहर निकल आई है। इस भयानक पीड़ा और वेदना के बावजूद घोड़ागाड़ी का मालिक दयाभाव छोड़कर चाबुक के कठोर प्रहारों द्वारा घोड़े को उठाने का प्रयास कर रहा है, परंतु अत्यधिक वजन के कारण घोड़ा उठने में कामयाब नहीं हो पा रहा है। यदि यही अवस्था कुछ देर और रही तो घोड़े के प्राण तक संकट में पड़ सकते हैं। घोड़ागाड़ी का मालिक अपनी वेशभूषा से अत्यंत गरीब नजर आ रहा है। घोड़े के न उठने पर उसे अपनी मजदूरी के व्यर्थ जाने का भय है। शायद इसी कारण जल्दबाजी में वह निर्दयता का परिचय दे रहा है,



परंतु उसे ऐसी स्थिति में पशुओं के साथ अति क्रूरता का व्यवहार नहीं करना चाहिए। यह संभव है कि इस घटना के कारण घोड़ागाड़ी के चालक का समय बर्बाद हुआ हो और उसे आर्थिक हानि भी उठानी पड़ी हो, परंतु भूखे, लाचार घोड़े का इसमें कोई दोष नहीं है।

घोड़ागाड़ी के मालिक को अपनी इस क्रूरता को छोड़ना चाहिए और इस सच्चाई को समझना चाहिए कि पशु भी जीव हैं, उनमें भी संवेदना है। क्षमता से अधिक बोझ देने से घोड़े की जान को खतरा हुआ और गाड़ी भी क्षतिग्रस्त हुई। इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण कदम से गाड़ी चालक को आर्थिक हानि हुई और घोड़े के प्राण संकट में पड़ गए। इंसान यदि पशुओं की पीड़ा को नहीं समझ सके, तो वह उसकी अमानुषिकता का परिचायक है। मनुष्य को पशुओं की पीड़ा को महसूस करना चाहिए और इस दमन को रोकना चाहिए। कहा भी गया है कि

“जीवों पर दया करना हजार पुण्यों के बराबर है।”

- 15.** प्रस्तुत चित्र में एक युवा अध्यापिका कुछ प्रौढ़ लोगों को शिक्षा दे रही है। यह दृश्य किसी ग्रामीण क्षेत्र का प्रतीत होता है, क्योंकि स्त्री-पुरुषों की वेशभूषा ग्रामीण शैली की है। अध्यापिका श्यामपट्ट पर अ, आ, इ, ई (हिंदी की वर्णमाला) लिख रही है। वहीं मेज पर दो पुस्तकें भी रखी हुई हैं, जो अध्यापिका के पढ़ने की पुस्तकें होंगी।

एक व्यक्ति के हाथ में एक पुस्तक है, जिस पर ‘अ’, ‘आ’ इत्यादि लिखा हुआ है। समूचे देश के साथ प्रमुखतः ग्रामीण परिवेश में प्रौढ़ शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है। पुरानी पीढ़ी के बहुत से लोग अशिक्षित हैं। इस कारण उन्हें दैनिक जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

सुदूर किसी यात्रा पर जाना हो, किसी पुस्तक आदि को पढ़ना हो, जमीन-जायदाद या उपज इत्यादि का क्रय-विक्रय करना हो, इन सभी क्षेत्रों में उन्हें शिक्षा के अभाव में किसी अन्य पर आश्रित रहना पड़ता है। इसी कारणवश अनेक बार उन्हें आर्थिक हानि तक उठानी पड़ती है तथा कभी-कभी सामाजिक रूप से तिरस्कृत भी होना पड़ता है।

इन सब कठिनाइयों को महसूस करते हुए मेरी बहन सीता ने, जो आयु में मुझसे पाँच वर्ष बड़ी है, गाँव के वृद्ध लोगों को शिक्षित करने का निश्चय किया। सभी आदरणीय बुजुर्गों तथा प्रौढ़ों को इसकी सूचना दे दी गई, जो भी ग्रामीण पढ़ने में रुचि रखते थे, उन्हें एक निश्चित स्थान तथा समय पर शिक्षा देना आरंभ कर दिया गया। शुरुआत में गाँव के पाँच-सात लोगों ने शिक्षा लेना आरंभ किया, परंतु धीरे-धीरे इस संख्या में वृद्धि हो गई।

परिणामस्वरूप कुछ दिनों के प्रयास के उपरांत ही उन लोगों ने पढ़ना-लिखना भी सीख लिया और जरूरत पड़ने पर जोड़-घटाव भी करने लगे। इस प्रयास के द्वारा इन लोगों के आत्मविश्वास में वृद्धि होने लगी। वे सही-गलत के अंतर को पहचानने लगे और स्वयं निर्णय लेने में सक्षम हो गए।

इस शिक्षा से वे अपनी आय वृद्धि के साथ-साथ, सामाजिक रूप से भी खुद को सम्मानित अनुभव करने लगे। पूरा गाँव सीता के इस प्रयास की हृदय से प्रशंसा कर रहा था।

सीता स्वयं भी इस सराहना से गौरवान्वित अनुभव कर रही थी। भारतीय प्रशासन और सामाजिक संगठनों को प्रौढ़ शिक्षा नीति में वृद्धि के लिए और अधिक प्रयास करने चाहिए। किसी ने सही कहा है कि

“पढ़ा लिखा हो हर इंसान।  
तब ही होगा, देश महान्।”

प्रौढ़ शिक्षा की लोगों तक अधिकाधिक पहुँच उन्नत समाज की परिकल्पना को अवश्य ही साकार करेगी।

- 16.** प्रस्तुत चित्र में दो बालक व दो बालिकाएँ दिखाई दे रही हैं। उनमें से एक बालक पत्थर मारकर प्रसन्न मुद्रा में आम तोड़ने की कोशिश कर रहा है। उनसे कुछ दूरी पर ही एक व्यक्ति हाथ में लाठी लिए क्रोधित मुद्रा में खड़ा है। तीन बच्चे चेहरे पर विभिन्न भाव-भंगिमाओं को दर्शाते हुए भागने का प्रयत्न कर रहे हैं। एक बालिका के चेहरे पर भय व्याप्त है तथा दूसरी बालिका के चेहरे पर नटखटपन आभासित हो रहा है। वहीं पास ही एक आम का वृक्ष भी मौजूद है, जो आमों से लदा हुआ है। इन्हीं पके हुए आमों को देखकर बच्चों के मन में आम खाने की लालसा जागृत हुई और उन सबने आम तोड़कर खाने का निश्चय किया।

यह घटना हमारे गाँव की ही है। गाँव से कुछ दूरी पर ही एक आम का बाग है, जिसमें पेड़ों पर आम पके हुए थे और उनकी सुगंध किसी को भी ललचा देती थी। इस सुगंध से हमारे मुँह में पानी आ जाता था। आज विद्यालय से आने के बाद हम बच्चों ने आम तोड़कर खाने की योजना बनाई, क्योंकि दोपहर के समय भोला काका गहरी निद्रा में लीन होते थे। भोला काका बाग के मालिक थे और स्वयं ही बाग की देखभाल किया करते थे।

हमने अत्यंत चपलता व चतुराई से योजना बनाई। एक बालिका को बाहर खड़ा कर दिया गया, ताकि वह बाहर आने-जाने वालों की सूचना देती रहे। हम दोनों बालकों ने पत्थर द्वारा आम तोड़ने आरंभ कर दिए। एक बालिका गिरे हुए आमों को तीव्र गति से थैले में डालने में व्यस्त थी। मैंने सबको चलने के लिए कहा, परंतु ‘लालच बुरी बला’ वाली कहावत हमारे साथ घटित हो गई। हमने और ज्यादा आम तोड़ने के लिए जोर से पत्थर मारा, तभी तेज आवाज के कारण भोला काका नींद से जाग गए। हम सबको सारे आम वहीं छोड़कर जान बचाने के लिए भागना पड़ा। भोला काका क्रोधित होकर हमारे पीछे दौड़े, परंतु हम तीव्र गति से दौड़ते हुए वहाँ से दूर निकल आए। बाल जीवन बड़ा ही प्यारा व आनंददायक होता है। उस दौर की अनेक घटनाएँ स्मरण होने पर चेहरे पर मंद-मंद मुस्कान उभर आती है। आम को फलों के राजा की संज्ञा दी गई है। इसके रस को दूध में मिलाकर पीने से यह बेहद स्वादिष्ट लगता है। वर्तमान समय में इस प्रकार की बाल सुलभ घटनाओं में कमी आ रही है। बढ़ते हुए शहरीकरण तथा संयुक्त परिवारों के विभाजन के फलस्वरूप, बच्चों की इस प्रकार की चंचलता कहीं खो-सी गई है। आज भी कभी-कभी बचपन की ये स्मृतियाँ हृदय को सुकून प्रदान कर जाती हैं, इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

- 17.** प्रस्तुत चित्र से प्रतीत हो रहा है कि यह दृश्य किसी सड़क जाम का है। सभी गाड़ियाँ अस्त-व्यस्त रूप में खड़ी हैं। एक कार का ड्राइवर बाहर मौजूद व्यक्ति से इस भयंकर जाम का कारण पूछ रहा है, परंतु सही जवाब के अभाव में घटना को समझ पाने में असमर्थ है।

नजदीक में ही एक बालिका मौजूद है। वह वहाँ मौजूद पुलिस वाले से जाम का कारण और उसके समाप्त होने का समय पता कर रही है। जाम भयंकर रूप से लगा हुआ है, इस कारण पुलिस कर्मचारी भी जवाब देने में असमर्थ है। जाम लगने की समस्या हमारे देश के बड़े नगरों में आम बात है, परंतु दिल्ली में यह समस्या विकराल रूप धारण किए हुए है। दिल्ली में आवश्यकतानुसार अनेक चौड़ी-चौड़ी सड़कों व पुलों का निर्माण हुआ है, परंतु जनसंख्या-वृद्धि और वाहनों के प्रयोग में वृद्धि के कारण ये सड़क-निर्माण योजनाएँ अपर्याप्त हैं। प्रदूषण के मामले में दिल्ली का देश में प्रथम स्थान है, जिसका एक मुख्य कारण वाहनों की अधिकता है। वाहनों की अधिकता के कारण ही सर्वत्र जाम से भी जूझना पड़ता है।

राज्य सरकार को इस समस्या के समाधान की ओर विशेष रूप से ध्यान देना होगा। जाम के कारण अधिकतर अवसरों; जैसे—परीक्षा, साक्षात्कार, विवाह आदि में गंतव्य स्थल पर विलंब से पहुँचते हैं। कभी-कभी इस विलंबता के कारण रोजगार के अवसर तक हाथ से निकल जाते हैं। यह स्थिति जीवन के लिए अत्यंत कष्टप्रद है।

जाम की समस्या के समाधान हेतु सरकार को मेट्रो को पूर्णरूप से दिल्ली व आस-पास के क्षेत्रों से वृहत रूप में जोड़ना तथा वाहनों के पार्किंग स्थल के लिए बहुमंजिली इमारतों का निर्माण करना होगा। यह पूरी प्रक्रिया अत्यंत जटिल है, परंतु इस गंभीर विषय को हल करने के लिए प्रशासन को प्रयास करना ही होगा अन्यथा वह दिन दूर नहीं, जब दिल्ली में जाम और प्रदूषण की समस्या के फलस्वरूप लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़े। हो सकता है कि दिल्ली इतनी प्रदूषित हो जाए कि लोगों को साँस लेना भी मुश्किल हो।

- 18.** प्रस्तुत चित्र में बच्चों द्वारा वृक्षारोपण किया जा रहा है, जिसमें वृक्षों एवं पेड़-पौधों के प्रति बच्चों का लगाव दिखाई दे रहा है। वृक्ष हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं। चित्र में विद्यार्थी वृक्षारोपण कर व उनमें पानी डालकर वन संपदा के प्रति अपने कर्तव्य और दायित्व को उचित प्रकार से निभा रहे हैं। आज सभी व्यक्ति वृक्षों के मूल्यों को जानते हैं। वृक्षों के बिना हमारा जीवन असंभव है, इसलिए आज वन संपदा की रक्षा करना अनिवार्य है। वृक्षों के न होने पर प्रदूषण का खतरा और बढ़ जाएगा।

वृक्षारोपण से मनुष्य अपनी ही नहीं, आने वाली पीढ़ी की भी सहायता करता है। वृक्ष हमें प्राण वायु देने के साथ-साथ लकड़ी, कागज इत्यादि अनेक वस्तुएँ प्रदान करते हैं। कहा भी गया है—“वृक्ष ही जीवन है।” वृक्षों से हम अनेक वस्तुओं को प्राप्त कर सकते हैं, पर औद्योगीकरण के फलस्वरूप वृक्षों की कमी से प्रदूषण का खतरा बढ़ रहा है, जिससे वायुमंडल भी प्रभावित हुआ है। वृक्षों के काटने से कई समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं; जैसे—भूस्खलन, बाढ़ आदि। मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए वृक्षों को काट रहा है, यदि वृक्षों को काटने की प्रक्रिया इसी प्रकार चलती रही तो वन संपदा समाप्त हो जाएगी और पृथ्वी पर जीना कठिन हो जाएगा। सरकार ने समय-समय पर वन महोत्सव संबंधी कार्यक्रम लागू किए हैं। विद्यालयों में भी छात्र वृक्षारोपण कर इस कार्य में अपना योगदान देते हैं तथा समय-समय पर पानी देकर उनकी रक्षा करते हैं जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। इस कार्य में कई संस्थाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया है और इस कार्यक्रम को आगे भी बढ़ाया है। हमें इसी प्रकार वृक्षों की रक्षा व सेवा कर इन्हें सुरक्षित रखना होगा, क्योंकि वृक्ष ही हमारा जीवन है और वनों से ही हमारा वर्तमान और भविष्य सुखमय होगा।

- 19.** प्रस्तुत चित्र में दो बालिकाओं को दर्शाया गया है, जो नल से पानी लेते समय प्रसन्नचित्त मुद्रा में दिखाई दे रही हैं। वे दोनों पानी से होली खेल रही हैं और खुश हो रही हैं। जल मानव की मूल आवश्यकता है। पृथ्वी पर जल की उपलब्धता के कारण ही प्राणियों का अस्तित्व और पदार्थों में उपयोगिता का गुण कायम है, कहा भी जाता है—जल ही जीवन है। जल के बिना न तो मनुष्य का जीवन संभव है और न ही वह किसी कार्य को संचालित कर सकता है।

प्रस्तुत चित्र में भी बालिकाओं द्वारा पानी का आनंद लेना जल की महत्ता को दर्शाता है। जल के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। रक्त के संचालन, शरीर के विभिन्न अंगों को स्वस्थ रखने, शरीर के विभिन्न ऊतकों को मुलायम व लोचदार रखने के अतिरिक्त शरीर की कई अन्य प्रक्रियाओं के लिए भी जल की समुचित मात्रा की

आवश्यकता होती है। जल के अभाव में मनुष्य की मृत्यु निश्चित है। जल की आवश्यकता दैनिक जीवन के कार्यों में भी होती है। मनुष्य के साथ-साथ प्रकृति में पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सभी अपने जीवन के लिए जल पर ही निर्भर रहते हैं। फसलों की सिंचाई, विभिन्न प्रकार के उद्योगों में जल की आवश्यकता पड़ती है। इन सभी दृष्टिकोणों से जल की उपयोगिता मनुष्य के लिए बढ़ जाती है। जीवन के लिए सामान्य उपयोगिता एवं दैनिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त जल ऊर्जा का भी एक प्रमुख स्रोत है।

पानी की इन सभी आवश्यकताओं को देखते हुए भी मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति का सन्तुलन बिगाड़ दिया है और अपने लिए खतरे की स्थिति उत्पन्न कर ली है। प्रकृति का श्रेष्ठतम प्राणी होने के नाते उसका कर्तव्य बनता है कि वह जल का समुचित मात्रा में प्रयोग करे।

- 20.** प्रस्तुत चित्र बालक द्वारा अपने कार्य को निष्ठापूर्वक किए जाने को दर्शाता है। यह चित्र बालक द्वारा चाय बनाने के दृश्य को दिखाता है। बालक के समीप स्टोव जल रहा है और यह बालक कप में चाय डाल रहा है। यह दृश्य बालश्रम जैसी समस्या को इंगित करता है। बालश्रम जैसी समस्या आज हमारे समाज के लिए अभिशाप बन रही है। बचपन, एक बालक के जीवन का स्वर्णिम समय होने के साथ ही उसके शारीरिक व मानसिक विकास का बहुमूल्य समय होता है। उस आयु में घर की आर्थिक स्थिति कई बालकों को पैसे कमाने को बाध्य कर देती है।

आजादी के इतने वर्षों के बाद भी आज हमारा समाज उच्च वर्ग व निम्न वर्ग में विभक्त है। निम्न वर्ग के लोग अपनी मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति न होने के कारण अपने बच्चों को कारखानों, फैक्ट्री आदि में कार्य करने के लिए भेज देते हैं। आज भारत ब्रिटिश की गुलामी से तो आजाद हो गया, परंतु गरीबी ने निम्न वर्ग को बेड़ियों में बाँधा हुआ है। यह चित्र हमारे समाज में फैली निर्धनता व आर्थिक समस्या की ओर इशारा करता है।

भारत सरकार ने 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों की शिक्षा के लिए कानून बनाए, जिसमें बालकों के लिए ‘शिक्षा के अधिकार’ को आवश्यक बताया है। इसमें सभी बालकों के लिए ‘मुफ्त व अनिवार्य’ शिक्षा का प्रावधान है, परंतु फिर भी आज हमारे समाज में बालश्रम प्रमुख समस्या बनी हुई है। आज भी 14 वर्ष की आयु से कम के बालक कारखानों में काम करते हैं तथा उच्च वर्ग उनका शोषण करते हैं।

बालश्रम एक विकराल समस्या का रूप धारण करता जा रहा है। आज जगह-जगह विभिन्न नुक्कड़ नाटक, जागरूकता अभियान आदि चलाए जाते हैं, लेकिन जब तक भारत का प्रत्येक नागरिक इस गंभीर समस्या पर चिंतन या मनन नहीं करेगा, इस समस्या के समाधान के लिए प्रयत्न नहीं करेगा; तब तक इस समस्या से मुक्ति पाना कठिन होगा।

इस चित्र में बालक अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और लगन से कार्य तो कर रहा है, परंतु दूसरी ओर वह अपने शिक्षा के अधिकार को खो रहा है। अतः संविधान के 86 वें संशोधन का ध्यान रखते हुए हमें इस समस्या के प्रति सचेत हो जाना चाहिए तथा बालक की शिक्षा के अधिकार को संरक्षित कर उसे पढ़ने का अवसर प्रदान करके उसके शारीरिक व मानसिक विकास में वृद्धि करने हेतु प्रयास करना चाहिए, तभी हमारा देश पूर्णरूप से आजाद कहा जाएगा।

## अभ्यास प्रश्नावली

नीचे दिए गए चित्रों को ध्यान से देखिए और इनको आधार बनाकर इनका अपने शब्दों में वर्णन कीजिए अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट संबंध चित्र से होना चाहिए।

1.



2.



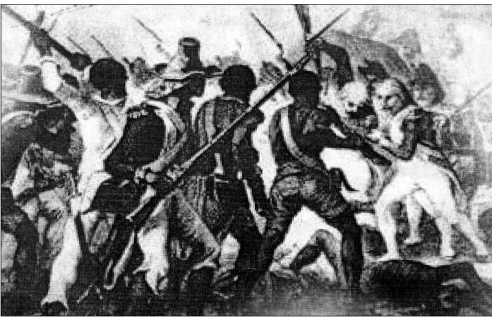
3.



4.



5.



6.



7.



8.





# पत्र-लेखन

## प्रश्नों की प्रकृति

परीक्षा में 120 शब्दों के अन्तर्गत औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र लिखने के लिए आता है। यह प्रश्न अभिव्यक्ति की क्षमता पर केंद्रित होगा।

## अंक योजना

|                                  |       |
|----------------------------------|-------|
| प्रारंभ एवं समापन की औपचारिकताएँ | 2 अंक |
| विषय सामग्री                     | 4 अंक |
| भाषा की शुद्धता एवं प्रस्तुति    | 1 अंक |

पत्र-लेखन एक आवश्यक कौशल है। अपने विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति के लिए पत्र-लेखन का प्रयोग किया जाता है। अपने सगे-संबंधियों, पदाधिकारियों, मित्रों, संपादकों आदि से जोड़ने की कला पत्र-लेखन कहलाती है। पत्र-लेखन हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है, जो लोगों को समाज से जोड़कर रखता है।

## पत्र के प्रकार

पत्र के सामान्यतः दो प्रकार होते हैं

1. औपचारिक पत्र (Formal Letters)
2. अनौपचारिक पत्र (Informal Letters)

## पत्र के अंग

पत्र को जिस क्रम में लिखा जाता है, वे पत्र के अंग कहलाते हैं। सामान्यतः किसी भी पत्र में निम्नलिखित अंग होते हैं

### शीर्षक या प्रारंभ

पत्र में सर्वप्रथम शीर्षक के रूप में पत्र लिखने वाले का नाम व पता लिखा जाता है। तत्पश्चात् पत्र लिखने की तिथि का उल्लेख किया जाता है। परीक्षा में पूछे गए औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र में नाम का उल्लेख न होने पर परीक्षा भवन लिखा जाता है। यह सब पत्र के बाएँ ओर सबसे ऊपर लिखा जाता है। औपचारिक पत्रों के अंतर्गत विषय का उल्लेख सीमित शब्दों में स्पष्ट रूप से किया जाता है। अनौपचारिक पत्रों में इसका उल्लेख नहीं होता।

### संबोधन का उल्लेख

पत्र में संबोधन का महत्वपूर्ण स्थान होता है। औपचारिक पत्र के अंतर्गत 'मान्यवर', 'महोदय' आदि सूचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है तथा अनौपचारिक पत्र के अंतर्गत 'पूजनीय', 'स्नेहमयी' 'प्रिय' आदि सूचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

### अभिवादन अथवा शिष्टाचार संबंधी शब्दों का उल्लेख

पत्र में संबोधन के अनुरूप ही अभिवादन या शिष्टाचार संबंधी शब्दों का प्रयोग किया जाता है। अनौपचारिक पत्रों में बड़ों के लिए प्रणाम, नमस्कार, सादर चरण-स्पर्श तथा छोटों के लिए आशीर्वाद, शुभाशीष, चिरंजीव रहो आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। औपचारिक पत्रों में इसका प्रयोग नहीं किया जाता।

## विषय-वस्तु

विषय-वस्तु पत्र-लेखन का महत्वपूर्ण अंग है। इसे पत्र का मुख्य भाग भी कहते हैं। इस भाग में अपने भावों एवं विचारों को प्रकट किया जाता है।

## समाप्ति अथवा अंत

पत्र के अंत में अपने विषय में लिखते हुए पत्र को समाप्त किया जाता है। औपचारिक पत्र में धन्यवाद लिखते हुए 'भवदीय', 'प्रार्थी', 'आज्ञाकारी' आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है तथा अनौपचारिक पत्र में 'प्यारा', 'स्नेहाकांक्षी', 'हितैषी', 'शुभाकांक्षी' इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। औपचारिक व अनौपचारिक दोनों पत्रों के अंत में यदि परीक्षा में पूछे गए पत्र में नाम व पते का उल्लेख न किया गया हो, तब वहाँ क.ख.ग. का प्रयोग किया जाता है।

# औपचारिक पत्र

प्रधानाचार्य, पदाधिकारियों, व्यापारियों, ग्राहकों, पुस्तक विक्रेता, संपादक आदि को लिखे गए पत्र 'औपचारिक पत्र' कहलाते हैं। औपचारिक पत्र उन लोगों को लिखे जाते हैं, जिनसे हमारा निजी या पारिवारिक संबंध नहीं होता। औपचारिक पत्रों को निम्नलिखित वर्ग में विभाजित किया जा सकता है

1. प्रार्थना-पत्र/आवेदन पत्र
2. शिकायती पत्र
3. संपादकीय पत्र
4. व्यावसायिक पत्र
5. कार्यालयी पत्र

## औपचारिक पत्र के संबोधन, अभिवादन तथा अभिनिवेदन

| पत्र के प्रकार            | पत्र पाने वाले                                   | संबोधन                 | अभिनिवेदन                |
|---------------------------|--------------------------------------------------|------------------------|--------------------------|
| प्रार्थना-पत्र/आवेदन-पत्र | प्रधानाचार्य संबंधित अधिकारी                     | महोदय, महोदया, मान्यवर | आपका, कृपाकांक्षी, भवदीय |
| शिकायती पत्र              | संबंधित अधिकारी                                  | महोदय, महोदया          | भवदीय, भवदीया, प्रार्थी  |
| संपादकीय पत्र             | संपादक                                           | महोदय, महोदया          | भवदीय/भवदीया, प्रार्थी   |
| व्यावसायिक पत्र           | पुस्तक विक्रेता, बैंक प्रबंधक, व्यावसायिक संस्था | श्रीमान, महोदय         | भवदीय, आपका              |
| कार्यालयी पत्र            | संबंधित अधिकारी                                  | मान्यवर, महोदय         | भवदीय, विनीत             |

## औपचारिक पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें

- पत्र लिखते समय लिखने वाले तथा पत्र प्राप्त करने वाले का नाम व पता दिनांक के साथ लिखा जाना चाहिए।
- पत्र का विषय स्पष्ट होना चाहिए तथा अनावश्यक बातों को पत्र में नहीं लिखना चाहिए।
- पत्र लिखते समय क्रमबद्धता का विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
- पत्र का आकार संक्षिप्त होना चाहिए तथा विषय के अनुकूल होना चाहिए। कम शब्दों में अधिक बात कहने की कोशिश करनी चाहिए।
- पत्र की भाषा सरल, सामान्य, मधुर एवं आदर सूचक एवं शुद्ध होनी चाहिए।
- पत्र अधूरा नहीं होना चाहिए अर्थात् पत्र को इस प्रकार समाप्त किया जाना चाहिए कि पत्र का संदेश स्पष्ट हो सके।
- संबोधन से पहले सबसे ऊपर बाईं ओर संबंधित अधिकारी अथवा व्यावसायिक प्रतिष्ठान के प्रमुख तथा कार्यालय का नाम या संस्था का नाम लिखना चाहिए।
- विषय के अंतर्गत पत्र लिखने के उद्देश्य की चर्चा एक पंक्ति में करनी चाहिए।
- औपचारिक पत्र में पद के अनुरूप संबोधन महोदय, महोदया अथवा मान्यवर लिखा जाता है। अभिवादन लिखे बिना सीधे विषय-वस्तु पर आ जाना चाहिए।
- पत्र समाप्त करने के बाद अभिनिवेदन में 'आपका' अथवा 'भवदीय' शब्द लिखने के बाद अपना नाम लिखें या हस्ताक्षर करें।
- प्रश्न में 'पता' नहीं होने पर 'पते के स्थान' पर 'काल्पनिक पता' लिखना चाहिए। यदि प्रश्न में किसी नाम की चर्चा न हो, तो अपने नाम की जगह 'क.ख.ग.' लिखना चाहिए।



## औपचारिक पत्र का प्रारूप

अपने क्षेत्र में भारी यातायात के कारण होने वाली असुविधाओं का वर्णन करते हुए क्षेत्र के सांसद को पत्र लिखकर उन्हें दूर करने का अनुरोध कीजिए।

|                                                                                           |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   |                                                      |                                                                                                      |
|-------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <b>भेजने वाले का पता</b><br>सर्वप्रथम जिसके द्वारा पत्र भेजा जाता है, उसका पता लिखते हैं। | परीक्षा भवन,<br>दिल्ली।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           | <b>विषय</b><br>इसके अंतर्गत मुख्य विषय लिखा जाता है। | <b>अभिवादन</b><br>इसके अंतर्गत पत्र प्राप्त करने वाले को माननीय या महोदय लिखकर संबोधित किया जाता है। |
| <b>दिनांक</b><br>पते के बाद, जिस दिन पत्र लिखा जाता है, उस दिन की दिनांक लिखते हैं।       | दिनांक 12 जनवरी, 20XX<br>सेवा में,<br>श्रीमान सांसद,<br>दिल्ली।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   |                                                      |                                                                                                      |
| <b>प्राप्त करने वाले का पता</b><br>जिसके लिए पत्र लिखा जा रहा है, उसका पता लिखते हैं।     | <b>विषय</b> राष्ट्रीय राजमार्ग के यातायात को नियंत्रित करने के संदर्भ में।<br>महोदय,<br>आपके क्षेत्र का जागरूक नागरिक होने के नाते मैं आपका ध्यान राष्ट्रीय राजमार्ग के यातायात की ओर दिलाना चाहता हूँ। हमारे नगर के जिस भाग से राष्ट्रीय राजमार्ग (दिल्ली-देहरादून) गुजरता है, वहाँ हमेशा दुर्घटनाओं का खतरा बना रहता है। नगरवासी लंबी दूरी के वाहनों और नगर की भीड़ से परेशान रहते हैं।<br>यह समस्या स्थायी है। इसका समाधान करने के लिए दीर्घकालीन और सुविचारित योजना का होना अत्यंत आवश्यक है। मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि आप एक सांसद होने के नाते अपने प्रभाव का प्रयोग करते हुए अपने नगर से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक लंबा पुल बनवाएँ। इसी से समस्या का स्थायी समाधान निकल सकता है।<br>आशा है कि आप मेरे सुझाव पर ध्यान देते हुए इस पर शीघ्र कार्यवाही करेंगे। |                                                      |                                                                                                      |
| <b>सराहनीय समापन</b><br>पत्र की समाप्ति धन्यवाद के साथ की जाती है।                        | धन्यवाद।<br>प्रार्थी<br>क.ख.ग.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    |                                                      |                                                                                                      |
|                                                                                           | <b>लिखने वाले का नाम</b><br>पत्र के अंत में जो पत्र लिख रहा है, उसका पूरा नाम लिखा जाता है। यदि परीक्षा में नाम नहीं दिया, तब उसके स्थान पर क.ख.ग. लिखना चाहिए।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   |                                                      |                                                                                                      |

### विशेष

- भाषा की शुद्धता के लिए 1 अंक निर्धारित है।
- प्रश्न में 'पता' नहीं होने पर 'पते के स्थान' पर काल्पनिक पता लिखना चाहिए। यदि प्रश्न-पत्र में नाम का उल्लेख न हो तो नाम की जगह क.ख.ग. लिखना चाहिए।

## औपचारिक पत्रों के उदाहरण

### (i) प्रार्थना-पत्र/आवेदन-पत्र

प्रार्थना-पत्र/आवेदन-पत्र विद्यालय के प्रधानाचार्य, संस्थाओं के प्रधान (प्रमुख) इत्यादि को लिखा जाता है। इसमें शालीन भाषा तथा शिष्ट शैली का प्रयोग किया जाता है। इन पत्रों में अभिवादन का अभाव होता है।

- आप अपने विद्यालय के सफाई अभियान दल के नेता हैं। एक योजना के अंतर्गत आप छात्रों के एक दल को किसी इलाके में सफाई के प्रति जागरूक करने हेतु ले जाना चाहते हैं। अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या जी को इसके लिए स्वीकृति हेतु पत्र लिखिए। [2018]

**उत्तर** परीक्षा भवन, दिल्ली।

दिनांक 16 मार्च, 20XX

सेवा में,  
प्रधानाचार्य जी,  
राजकीय बाल विद्यालय,  
पंजाबी बाग, दिल्ली

**विषय** सफाई के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाने हेतु स्वीकृति पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं प्रकाश, विद्यालय के सफाई अभियान दल का नेता हूँ। महोदय, हमारे विद्यालय के निकट में ही भगत कॉलोनी है, जहाँ गलियों में गंदगी फैली रहती है, नालियों से पानी बाहर निकलकर सड़कों पर बहता है, जिस कारण वहाँ अनेक प्रकार के रोगों के फैलने का डर बना रहता है।

महोदय, स्वच्छ भारत अभियान के द्वारा माननीय प्रधानमंत्री संपूर्ण देश के लोगों को अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखने का संदेश दे रहे हैं। विद्यालय के सफाई अभियान दल का नेता होने के कारण हमने निर्णय किया है कि हम भगत कॉलोनी के लोगों को सफाई के प्रति जागरूक करके उन्हें सफाई का महत्त्व व गंदगी से होने वाले नुकसान के विषय में बताना चाहते हैं।

अतः हमारा आपसे अनुरोध है कि लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए हमारे दल को स्वीकृति दी जाए। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य  
प्रकाश

- छात्रों के लिए अधिक खेल-सामग्री उपलब्ध कराने का अनुरोध करते हुए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य महोदय को प्रार्थना-पत्र लिखिए।

**उत्तर** परीक्षा भवन, दिल्ली।

दिनांक 12 अप्रैल, 20XX

सेवा में,  
प्रधानाचार्य महोदय,  
राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय,  
सिविल लाइंस,  
दिल्ली

**विषय** अधिक खेल-सामग्री उपलब्ध कराने हेतु।

महोदय,

विनम्र निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय का कक्षा 10 'अ' का विद्यार्थी हूँ। हमारे विद्यालय में खेल का मैदान तो काफ़ी बड़ा एवं आकर्षक है, किंतु खेल-सामग्री छात्रों के अनुपात में अत्यंत कम है। खेल के पीरियड (समय) में छात्र खेल नहीं पाते यहाँ तक कि खेल प्रतियोगिता की तैयारी करने के दौरान भी इस समस्या का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण खेल का स्तर नीचे गिरता जा रहा है। हमारे विद्यालय में काफ़ी समय से कोई खेल का नया सामान नहीं खरीदा गया है, विद्यार्थियों को टूटे-फूटे सामान से ही खेलना पड़ता है। यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि विद्यालय में अधिक खेल-सामग्री उपलब्ध कराने की कृपा करें, जिससे छात्र पढ़ाई के साथ-साथ खेल में जीतकर विद्यालय का नाम ऊँचा करें।

धन्यवाद सहित।

आपका आज्ञाकारी शिष्य  
क.ख.ग.  
कक्षा-10

## (ii) शिकायती पत्र

किसी विशेष कार्य, समस्या अथवा घटना की शिकायत करते हुए, संबंधित अधिकारी को लिखा गया पत्र 'शिकायती पत्र' कहलाता है। इसका स्वरूप प्रार्थना-पत्र की तरह ही होता है। इसकी भाषा शालीन होनी चाहिए।

1. आपके मोहल्ले में आए दिन चोरियाँ हो रही हैं। उनकी रोकथाम के लिए थानाध्यक्ष को गश्त बढ़ाने हेतु पत्र लिखिए।

अथवा

आपके मोहल्ले में विगत एक माह से चोरी की वारदातें होती आ रही हैं। थानाध्यक्ष महोदय को कई पत्र लिखने पर भी कोई सुधार नहीं हुआ है। अतः अपने ज़िले के पुलिस अधीक्षक/आयुक्त महोदय को पत्र लिखकर तुरंत कार्यवाही करने हेतु प्रार्थना कीजिए।

**उत्तर** परीक्षा भवन, उत्तर प्रदेश।

**दिनांक** 14 मार्च, 20XX

सेवा में,  
श्रीमान थानाध्यक्ष महोदय,  
सिविल लाइंस,  
मुरादाबाद

**विषय** मोहल्ले में अपराधों की रोकथाम हेतु।

महोदय,

मुझे बहुत ही खेद के साथ लिखने के लिए विवश होना पड़ रहा है कि पिछले एक माह से हमारे क्षेत्र में अपराधों की संख्या में एकाएक तेज़ी आ गई है। चोरी की घटनाएँ अत्यधिक बढ़ गई हैं, हर दिन कार, स्कूटर चोरी हो रहे हैं। हमारे क्षेत्र के कई घरों में चोरी की घटनाएँ हो चुकी हैं। दिन-दहाड़े चलते हुए राहगीरों को लूटा जा रहा है तथा विरोध करने पर गोली तक मार दी जाती है। पिछले ही सप्ताह एक 60 वर्ष के बुजुर्ग से उनकी पेंशन के दो हजार रुपये लूटकर उन्हें बुरी तरह घायल कर दिया। महिलाओं के गले से चेन खींचने और पर्स आदि छीनकर भागने की घटनाएँ तो आम हो गई हैं। इन सबसे हमारे क्षेत्र में बुरी तरह भय व्याप्त हो गया है।

आपसे विनम्र निवेदन है कि विषय की गंभीरता को देखते हुए मोहल्ले के निवासियों के लिए पर्याप्त सुरक्षा का प्रबंध करें और इस क्षेत्र में पुलिस की गश्त बढ़वाने की कृपा करें, ताकि बढ़ते हुए अपराधों पर रोक लगाई जा सके।

धन्यवाद सहित।

प्रार्थी  
क.ख.ग.

2. अपने क्षेत्र की नालियों तथा सड़कों आदि की समुचित सफाई न होने पर स्वास्थ्य अधिकारी को एक शिकायती पत्र लिखिए।

**उत्तर** परीक्षा भवन, उत्तर प्रदेश।

**दिनांक** 13 मई, 20XX

सेवा में,  
स्वास्थ्य अधिकारी,  
नगर निगम,  
गाज़ियाबाद

**विषय** मोहल्ले की नाली और सड़कों आदि की सफाई के संबंध में।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र की सफाई व्यवस्था की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। हमारा क्षेत्र एक घनी आबादी वाला क्षेत्र है। यहाँ की नालियों की गहराई का स्तर सारे क्षेत्र में एक-सा नहीं है, जिसके कारण नालियाँ अक्सर भरी रहती हैं। इतने बड़े क्षेत्र के लिए मात्र एक सफाई कर्मचारी है और वह भी प्रतिदिन नहीं आता। कई बार तो वह तीन-तीन दिन तक नहीं आता। मुख्य कूड़ेदान भी एक ही है। घरों की सफाई करने वाले घर के कूड़े को मुख्य कूड़ेदान में डाल देते हैं, जिससे वह ऊपर तक गंदगी से भर जाता है। इससे बीमारी फैलने का भी खतरा हो रहा है। कुछ ही दिनों में वर्षा का समय भी आने वाला है। यदि यही हाल रहा तो हमारे क्षेत्र में गंभीर बीमारी फैल जाएगी, जिसके शिकार बच्चे और बूढ़े अधिक संख्या में होंगे।

आपसे विनम्र निवेदन है कि समस्या की गंभीरता को देखते हुए एक बार स्वयं हमारे क्षेत्र का निरीक्षण करने का कष्ट करें, ताकि पत्र में लिखी सारी बातों की सत्यता को जाँचा जा सके।

निरीक्षण तथा उचित कदम की प्रतीक्षा में।

सधन्यवाद।

प्रार्थी  
क.ख.ग.

**(iii) संपादकीय पत्र**

संपादक के नाम लिखे जाने वाले पत्र को 'संपादकीय पत्र' कहा जाता है। ऐसे पत्र एक विशिष्ट शैली में लिखे जाते हैं। इस पत्र में कुछ भाग संपादक को संबोधित होता है, जबकि मुख्य विषय-वस्तु 'जन सामान्य' को लक्षित कर लिखी जाती है।

1. किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखकर चुनाव के दिनों में कार्यकर्ताओं द्वारा घरों, विद्यालयों और मार्गदर्शक चित्रों आदि पर बेतहाशा पोस्टर लगाने के कारण इससे लोगों को होने वाली असुविधा की ओर ध्यान आकृष्ट कीजिए।

**उत्तर** परीक्षा भवन

उत्तर प्रदेश।

**दिनांक** 15 फरवरी, 20XX

सेवा में,

संपादक महोदय,

दैनिक जागरण, मेरठ

**विषय** पोस्टर लगाने के कारण होने वाली असुविधा हेतु।

मान्यवर,

मैं आपके लोकप्रिय दैनिक समाचार-पत्र के माध्यम से चुनाव के दिनों में पोस्टरों से उत्पन्न होने वाली समस्या की ओर प्रशासनिक अधिकारियों, राजनीतिक दलों तथा जनता का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।

चुनाव के दिनों में विभिन्न राजनीतिक दल अपने-अपने उम्मीदवार के पक्ष में जनमत तैयार करने के लिए तरह-तरह के पोस्टरों, होर्डिंग्स आदि को घरों की दीवारों, दरवाजों, खिड़कियों, विद्यालयों, चौराहों, विज्ञापन बोर्डों, सार्वजनिक अस्पतालों के मुख्य द्वारों तथा मार्गदर्शक चित्रों पर चिपका देते हैं। जिसके कारण आम जनता को बहुत अधिक असुविधा का सामना करना पड़ता है। चुनाव आयोग, पुलिस विभाग तथा संबंधित नगर निगम के अधिकारियों से मेरी यह अपील है कि सभी को मिल-जुलकर इस समस्या का समाधान खोजना चाहिए।

मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि आम जनता के हित में सभी राजनीतिक दल, चुनाव आयोग तथा नगर निगम अपने कर्तव्यों का सावधानीपूर्वक निर्वाह करेंगे तथा ऐसा कोई भी कार्य नहीं करेंगे, जो जनता के लिए असुविधाजनक हो।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

2. समाचार-पत्रों में विज्ञापनों की भरमार को कम करने और समसामयिक विषयों पर लेखन की आवश्यकता को दर्शाते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

**उत्तर** परीक्षा भवन

दिल्ली।

**दिनांक** 17 अप्रैल, 20XX

सेवा में,

संपादक महोदय,

नवभारत टाइम्स,

नई दिल्ली

**विषय** विज्ञापनों की भरमार कम करने एवं समसामयिक विषयों पर लेखन करने हेतु।

मैं इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान समाचार-पत्रों में छपने वाले विज्ञापनों की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। आजकल समाचार-पत्रों में विज्ञापनों की भरमार रहती है, जिसके कारण समाज में घटित हो रही घटनाओं एवं समसामयिक विषयों के संदर्भ में जानकारी नहीं मिल पाती। इसके अतिरिक्त कुछ विज्ञापन तो भ्रामक होते हैं, जिन्हें पढ़कर लोग खासकर युवा पीढ़ी गुमराह होती है।

समाचार-पत्रों में दिन-प्रतिदिन की नित्य नवीन घटनाओं को प्रकाशित किया जाना चाहिए। जिससे पाठक वर्ग अधिक-से-अधिक जानकारी ग्रहण कर सकें एवं विज्ञापन विशेषकर भ्रामक विज्ञापनों से बच सकें।

अतः आपसे अनुरोध है कि इस विषय पर गंभीरतापूर्वक विचार करके उचित कदम उठाएँ। विज्ञापनों की भरमार को कम करके केवल उन्हीं विज्ञापनों को समाचार-पत्र में प्रकाशित किया जाए जो विश्वसनीय हों।

धन्यवाद।

भवदीया

क.ख.ग.

## (iv) व्यावसायिक पत्र

व्यावसायिक संबंधों को सुनिश्चित करने के लिए जो पत्र लिखे जाते हैं, 'उन्हें व्यावसायिक पत्र' कहा जाता है। ऐसे पत्रों की भाषा स्पष्ट तथा आकर्षक होनी चाहिए, जिससे बातें पूर्णतः स्पष्टता के साथ संप्रेषित हो सकें। व्यावसायिक पत्रों में सामान माँगवाने, उसकी जानकारी, शिकायतें तथा शिकायतों के निवारण जैसे विषय होते हैं।

1. आपने एक ऑनलाइन शॉपिंग कंपनी के माध्यम से कुछ सामान खरीदा, लेकिन तय राशि के भुगतान के बाद भी आपको अपना सामान नहीं मिला। कंपनी प्रबंधक से इसकी शिकायत करते हुए पत्र लिखिए।

**उत्तर** परीक्षा भवन, दिल्ली।

दिनांक 14 मार्च, 20XX

सेवा में,  
प्रबंधक महोदय  
ऑनलाइन सेवा कंपनी, दिल्ली

**विषय** खरीदे गए सामान की डिलिवरी न होने हेतु।

महोदय,

मुझे बहुत खेद के साथ आपको यह सूचित करना पड़ रहा है कि मैंने एक सप्ताह पूर्व आपकी वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन खरीददारी की थी और तय राशि का भुगतान भी कर दिया था, लेकिन अब तक मुझे मेरा सामान नहीं मिला है। मैंने कई बार टेलीफोन आदि के द्वारा आपकी कंपनी के अधिकारियों से संपर्क करने का प्रयास किया, परंतु सफलता न मिली। इसलिए मुझे विवश होकर आपको यह पत्र लिखना पड़ा। मेरे द्वारा ऑर्डर किए गए सामान का विवरण निम्न है

| सामान                  | संख्या |
|------------------------|--------|
| सैमसंग गैलेक्सी ग्रैंड | 2      |
| सोफा सैट               | 1      |
| डबल बैड                | 1      |

आपसे अनुरोध है कि बिना विलंब किए मेरे ऑर्डर के अनुसार सामान पहुँचाने का प्रबंध करें।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

क.ख.ग.

2. आपको कुछ पुस्तकों की आवश्यकता है, जो बाज़ार में उपलब्ध नहीं हैं। इस संदर्भ में प्रकाशक को पत्र लिखकर वीपीपी द्वारा पुस्तकें भेजने के लिए निवेदन कीजिए।

**उत्तर** परीक्षा भवन, उत्तर प्रदेश।

दिनांक 25 अप्रैल, 20XX

सेवा में,  
प्रबंधक महोदय,  
अ.ब.स. प्रकाशन, मेरठ

**विषय** वीपीपी द्वारा पुस्तकें भेजने हेतु।

महोदय,

मैं राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, दिल्ली का दसवीं कक्षा का विद्यार्थी हूँ। मुझे निम्न पुस्तकों की शीघ्र आवश्यकता है। अतः आपसे अनुरोध है कि ये पुस्तकें यथाशीघ्र वीपीपी द्वारा भेजने का कष्ट करें। कृपया उचित शुल्क लगाकर बिल भी संलग्न कर दें।

| पुस्तकें          | प्रतियाँ |
|-------------------|----------|
| 1. हिंदी व्याकरण  | 2 प्रति  |
| 2. हिंदी गद्य     | 2 प्रति  |
| 3. काव्य चंद्रिका | 2 प्रति  |

आपसे अनुरोध है कि बिना विलंब किए वीपीपी द्वारा पुस्तकें पहुँचाने की कृपा करें।

धन्यवाद सहित।

भवदीया

क.ख.ग.



## (v) कार्यालयी पत्र

विभिन्न सरकारी कार्यालयों में पत्र के माध्यम से कार्य संपादित होते हैं। ऐसे पत्रों को 'कार्यालयी पत्र' कहा जाता है। इन पत्रों में शालीनता तथा शिष्ट भाषा का प्रयोग किया जाता है।

1. किसी महत्वपूर्ण पत्र के प्राप्त न होने की शिकायत करते हुए अपने क्षेत्र के पोस्ट मास्टर को पत्र लिखिए।

**उत्तर** परीक्षा भवन  
दिल्ली।

**दिनांक** 17 अप्रैल, 20XX

सेवा में,  
डाकपाल महोदय,  
केंद्रीय डाकघर, गोल मार्केट,  
नई दिल्ली

**विषय** डाक की अनुचित एवं अनियमित व्यवस्था के संदर्भ में।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि हमारे क्षेत्र 'गोल मार्केट' के निवासियों को पिछले कुछ दिनों से डाक नियमित रूप से नहीं मिल रही है। डाकिया या तो डाक देता ही नहीं या फिर वह कहीं भी फेंककर चला जाता है। जहाँ-तहाँ डाक फेंक देने से कोई भी बच्चा या व्यक्ति उसका दुरुपयोग करता है या फाड़कर फेंक देता है, जिससे डाक प्राप्त करने वाले व्यक्ति को भारी नुकसान होता है।

डाकिया के आने का कोई निश्चित समय भी नहीं है और वह ठीक से बात भी नहीं करता। उसकी लापरवाही के कारण क्षेत्र के लोगों को अत्यधिक नुकसान हो रहा है, जिसकी क्षतिपूर्ति होनी असंभव है। अतः आपसे निवेदन है कि इस क्षेत्र के डाकिए को आप उचित निर्देश दें, ताकि वह नियमित एवं व्यवस्थित तरीके से डाक का वितरण करे।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

2. समस्त औपचारिकताएँ पूर्ण करने के बाद भी अभी तक आपको अपना 'आधार पहचान पत्र' नहीं मिला है। इस समस्या के समाधान हेतु संबंधित अधिकारी को पत्र लिखिए।

**उत्तर** परीक्षा भवन  
दिल्ली।

**दिनांक** 25 फरवरी, 20XX

सेवा में,  
मतदान अधिकारी,  
कश्मीरी गेट  
दिल्ली

**विषय** आधार पहचान पत्र न मिलने के संदर्भ में।

मान्यवर,

मैं पुरानी दिल्ली क्षेत्र का निवासी हूँ। मैं तीन महीने पूर्व ही संबंधित कार्यालय में 'आधार पहचान पत्र' से जुड़ी सारी औपचारिकताएँ पूर्ण कर चुका हूँ, परंतु अभी तक मुझे मेरा आधार कार्ड प्राप्त नहीं हुआ है। इस संबंध में मैं कई बार संबंधित कार्यालय के अधिकारियों से बात कर चुका हूँ, परंतु उनके द्वारा बार-बार आश्वासन दिए जाने के बाद भी मेरी समस्या का हल नहीं हो पाया है। आधार पहचान पत्र समय पर न मिलने के कारण मुझे और मेरे परिवार को जन-कल्याण संबंधी कई सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित होना पड़ रहा है।

मुझे आधार पहचान पत्र की अत्यंत आवश्यकता है। अतः आपसे निवेदन है कि स्थिति की गंभीरता को समझते हुए मुझे मेरा आधार पहचान पत्र शीघ्रता से दिलवाने का कष्ट करें।

सधन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

## प्रश्न अभ्यास

### (औपचारिक पत्र)

1. आपके क्षेत्र में एक ही साधारण या सरकारी अस्पताल है, जिसके कारण आम जनता को बहुत अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। उन परेशानियों का उल्लेख करते हुए, एक और सुविधायुक्त सरकारी अस्पताल खुलवाने का अनुरोध करते हुए स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए। [2017]
2. अपने क्षेत्र के विद्युत विभाग के अधिकारी को विद्युत बिल ठीक कराने के लिए पत्र लिखिए।
3. आज टेलीविजन द्वारा विभिन्न चैनलों पर अंधविश्वास तथा तंत्र-मंत्र से संबंधित कार्यक्रम दिखाकर जनता को भ्रमित किया जा रहा है। भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्री को इसकी जानकारी देते हुए ऐसे कार्यक्रमों पर रोक लगाने का अनुरोध कीजिए। [2016]
4. आप किसी स्थान विशेष की यात्रा करना चाहते हैं। उस स्थान की जानकारी प्राप्त करने के लिए, पर्यटन विभाग के अधिकारी को पत्र लिखकर पूछताछ कीजिए। [2014]
5. अपने मोहल्ले में वर्षा के कारण उत्पन्न जल-भराव की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए नगर निगम के अधिकारी को पत्र लिखिए।
6. आपके क्षेत्र में सड़कों पर अधिक पानी जमा हो जाता है, क्योंकि अधिकांश सड़कें टूटी हुई हैं। जगह-जगह 'स्पीड ब्रेकर' यातायात में सहायक न होकर बाधक बन गए हैं। परिस्थिति की पूर्ण जानकारी देते हुए नगर निगम के अधिकारी को पत्र लिखिए। [2013]
7. अपने राज्य के परिवहन सचिव को एक पत्र लिखिए, जिसमें आपकी बस्ती तक नया बस मार्ग आरंभ कराने का अनुरोध हो।
8. आपके नगर में एक विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यशाला के संयोजक को पत्र लिखकर बताइए कि आप भी इसमें सम्मिलित होना चाहते हैं। [2012]
9. नगरों में कल-कारखानों से प्रदूषण में हो रही वृद्धि को रोकने हेतु किसी दैनिक पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।
10. आपने नया कंप्यूटर खरीदा है, किंतु खरीदने के एक महीने बाद ही उसमें खराबी आ गई। आपकी शिकायत पर दुकानदार ने कोई ध्यान नहीं दिया। कंपनी के मुख्य मैनेजर को पत्र लिखकर घटना की जानकारी देते हुए अनुरोध कीजिए कि वे आपके साथ न्याय करें। [2011]
11. आप पिछले दो दिनों से विद्यालय में ठीक समय पर उपस्थित नहीं हो पा रहे थे। प्रधानाचार्य को विद्यालय में विलंब से पहुँचने का कारण बताते हुए क्षमादान के लिए पत्र लिखिए। [2010]
12. आपके मोहल्ले में जल-आपूर्ति नियमित रूप से नहीं हो रही है। जल संस्थान के अधिकारी को शिकायती पत्र लिखिए और उन्हें अपनी समस्याओं के विषय में बताकर उनसे अनुरोध कीजिए कि वे तत्काल जल-आपूर्ति नियमित कराने की व्यवस्था करें। [2009]
13. अपने नगर के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए, जिसमें आपके क्षेत्र में फैली गंदगी तथा उसके दुष्परिणामों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया हो। [2008, 04]
14. आप किसी पत्रिका के नियमित ग्राहक बनना चाहते हैं। पत्रिका के प्रकाशक से पत्र लिखकर पूछिए कि पत्रिका का वार्षिक मूल्य क्या है और आपको वह पत्रिका क्यों पसंद है? [2007]
15. आपके मोहल्ले में बच्चों के खेलने के लिए किसी प्रकार की व्यवस्था नहीं है। नगर निगम के अध्यक्ष को पत्र लिखकर बाल-उद्यान बनवाने की प्रार्थना कीजिए। [2006]

## उत्तर

1. परीक्षा भवन,  
दिल्ली

दिनांक 12.12.20XX

सेवा में,  
श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी,  
नगर निगम, दिल्ली।

**विषय** सुविधायुक्त सरकारी अस्पताल खुलवाने हेतु।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं दिल्ली के बुराड़ी क्षेत्र का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र की जनसंख्या करीब साठ हजार है। हमारे क्षेत्र में एक ही सरकारी अस्पताल है, जिसमें सामान्य स्तर की सुविधाएँ हैं।

उच्च स्तर की सुविधाएँ न होने के कारण आम जनता को बहुत-सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस अस्पताल में डॉक्टरों का अभाव है। कुछ दिन पूर्व मेरे मित्र के पेट में दर्द होने लगा था। मैं प्राथमिक उपचार हेतु उसे पास के सरकारी अस्पताल ले आया।

यहाँ अस्पताल में शाम के चार बजे एक भी डॉक्टर उपलब्ध नहीं था। मजबूरीवश अपने मित्र को मुझे दस किलोमीटर दूर स्थित एक प्राइवेट अस्पताल में लेकर जाना पड़ा। इसके इलाज में लगभग दो हजार रुपये का खर्च आ गया। यदि मैं अपने मित्र को शीघ्रता से इस अस्पताल में नहीं लाता तो समस्याएँ बढ़ जातीं।

महोदय मेरा आपसे अनुरोध है कि हमारे बुराड़ी क्षेत्र में एक उच्च स्तरीय सरकारी अस्पताल खुलवाया जाए, जिससे हम इस तरह की समस्याओं से निजात पा सकें।

सधन्यवाद

भवदीय

क.ख.ग.

2. परीक्षा भवन,  
उत्तर प्रदेश।

दिनांक 17 अक्टूबर, 20XX

सेवा में,  
एसडीओ (विद्युत वितरण विभाग),  
क्षेत्र संख्या-5,  
मुरादाबाद।

**विषय** बिजली का बिल ठीक करवाने हेतु।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मेरे घर की बिजली की जुलाई-अगस्त, 2016 तक की मीटर रीडिंग 8979 दिखाई गई है, जबकि आज के दिन तक हमारा मीटर 8000 तक ही पहुँचा है। इसका अर्थ है कि बिजली की रीडिंग लेने के संबंध में लापरवाही हुई है और किसी कर्मचारी ने बिना मीटर देखे ही अपने तरीके से विद्युत बिल संबंधी प्रपत्र तैयार कर दिया। इससे पहले कभी भी हमारा बिजली का बिल इतना अधिक नहीं आया है। इसके प्रमाण हेतु मैं पिछले तीन बिलों की छायाप्रतियाँ भी संलग्न कर रहा हूँ।

अतः आपसे अनुरोध है कि इस संबंध में शीघ्र ही उचित कार्यवाही की जाए तथा मेरा बिल ठीक करके सही बिल भेजा जाए, ताकि मैं उसे जमा कर सकूँ।

सधन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

3. परीक्षा भवन,  
दिल्ली।

दिनांक 15.04.20XX

सेवा में,  
सूचना एवं प्रसारण मंत्री,  
भारत सरकार, नई दिल्ली।

**विषय** अंधविश्वास तथा तंत्र-मंत्र से संबंधित कार्यक्रम दिखाने के संबंध में।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि आजकल टेलीविजन पर अंधविश्वास तथा तंत्र-मंत्र को बढ़ावा देने वाले अनेक कार्यक्रम प्रसारित किए जा रहे हैं, जो समाज के लिए अत्यंत घातक हैं। इन कार्यक्रमों के कारण जन सामान्य का दृष्टिकोण संकुचित होता है। इसका बच्चों एवं अशिक्षित लोगों पर अत्यधिक दुष्प्रभाव पड़ता है। उनके मस्तिष्क का विकास वैज्ञानिक एवं आधुनिक दृष्टिकोण के साथ नहीं हो पाता। इसके अतिरिक्त, इसके कारण समाज के लोगों के बीच अनेक भ्रांतियाँ भी फैलती हैं।

आज 21वीं सदी में दूरदर्शन के चैनलों द्वारा इस प्रकार के अंधविश्वासों व तंत्र-मंत्र को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम दिखाना अत्यंत शर्मनाक एवं मूर्खतापूर्ण है।

अतः मेरा आपसे निवेदन है कि ऐसे कार्यक्रम दिखाने वाले चैनलों को इसके विरुद्ध आवश्यक निर्देश दिए जाएँ या उन्हें पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया जाए।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

4. परीक्षा भवन  
दिल्ली।

दिनांक 09.07.20XX

सेवा में,  
पर्यटन अधिकारी,  
पर्यटन विभाग, नालंदा,  
बिहार।

**विषय** नालंदा के प्रमुख स्थलों की जानकारी हेतु पत्र।

महोदय,

मैं और मेरा मित्र सपरिवार आपके शहर नालंदा आने के इच्छुक हैं। हम सब वहाँ के ऐतिहासिक व प्रमुख स्थलों के साथ-साथ विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय के भ्रमण के लिए अत्यंत उत्सुक हैं। हम अगले माह की 10 तारीख को नालंदा पहुँच जाएँगे तथा 15 तारीख की रात को ही रेल द्वारा वापसी का कार्यक्रम निश्चित है।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि हमें नालंदा के सभी प्रमुख स्थलों की जानकारी प्रदान करें तथा साथ ही उपरोक्त कार्यक्रम के अनुसार ठहरने के लिए उचित स्थान व आवागमन के लिए वाहन आदि की व्यवस्था के बारे में भी अवगत कराएँ। मैं इस सहयोग व स्नेह के लिए आपका हार्दिक आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

10, दरियागंज, दिल्ली।

5. परीक्षा भवन,  
इलाहाबाद।

दिनांक 18 नवंबर, 20XX

सेवा में,  
कार्यकारी अधिकारी,  
इलाहाबाद नगर निगम,  
इलाहाबाद।

**विषय** जल-भराव की समस्या के संदर्भ में।

मान्यवर,

मैं इलाहाबाद नगर निगम के अधीन आने वाले क्षेत्र टैगोर टाउन का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र में जल-भराव की अत्यंत गंभीर समस्या है और यह समस्या बरसात के दिनों में विकराल रूप धारण कर लेती है। जगह-जगह पर अत्यधिक पानी जमा हो जाता है।

अभी पिछले कुछ दिनों से लगातार होने वाली वर्षा के कारण सड़कों एवं गलियों में पानी का इतना अधिक भराव हो गया है कि मोहल्ले के निवासियों को आवागमन में बहुत अधिक परेशानी हो रही है। पानी के निकास की उचित व्यवस्था न होने के कारण वह सड़ने लगा है, जिससे गंभीर बीमारियों के फैलने की आशंका उत्पन्न हो गई।

अतः आपसे अनुरोध है कि इस समस्या के समाधान के लिए शीघ्र उचित कार्यवाही की जाए, जिससे क्षेत्र के निवासियों को जल-भराव की समस्या से राहत दिलाने के साथ-साथ संभावित गंभीर बीमारियों से भी बचाया जा सके। आप इस दिशा में शीघ्र ही उचित कदम उठाएँगे।

सधन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

#### 6. परीक्षा भवन, दिल्ली।

दिनांक 19.07.20XX

सेवा में,

मुख्य अधिकारी,

नगर निगम, दिल्ली।

**विषय** टूटी सड़कों एवं गतिरोधकों के कारण होने वाली असुविधाओं के संदर्भ में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान हमारे क्षेत्र के सड़क मार्ग न. 07 की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, क्योंकि पिछले काफी समय से इस मार्ग पर अत्यधिक परेशानी होने लगी है। सड़कें पूर्णतः टूट चुकी हैं, रास्ता ऊबड़-खाबड़ हो गया है, जिस कारण मार्ग पर जगह-जगह पानी जमा होने लगा है। इस दूषित वातावरण में वहाँ से गुजरना कठिन हो गया है और गंदगी व कीचड़ के कारण बीमारियाँ फैलने का खतरा भी बना हुआ है।

वहीं कर्मचारियों ने अत्यधिक गतिरोधक (स्पीड ब्रेकर) बना दिए हैं, जिससे यह मार्ग और संकरा हो गया है। गंदगी और थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बने गतिरोधकों के कारण, इस मार्ग से गुजरना जोखिम भरा काम है।

मान्यवर, आपसे विनम्र अनुरोध है कि हमारी समस्या को समझें तथा इसके समाधान हेतु संबंधित अधिकारी को यथाशीघ्र निर्देश दें, ताकि हमें शीघ्र इस समस्या से निदान मिल सके।

सधन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

ब-65 दिल्ली।

#### 7. परीक्षा भवन, दिल्ली।

दिनांक 15 सितंबर, 20XX

सेवा में,

परिवहन सचिव महोदय,

दिल्ली सरकार,

दिल्ली।

**विषय** अपनी कॉलोनी तक नए बस मार्ग हेतु।

मान्यवर,

मैं उत्तर-पश्चिम दिल्ली के विकासपुरी, डी-ब्लॉक का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र में बड़ी जनसंख्या निवास करती है, जिसमें अधिकांश लोग दिल्ली के विभिन्न भागों में कार्यरत हैं। हमारी कॉलोनी से कोई बस नहीं चलती। इसके कारण लोगों को प्रत्येक दिन अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है तथा लगभग 2 किमी पैदल चलकर ए-ब्लॉक बस स्टैंड तक आना पड़ता है। इसमें समय की बर्बादी के साथ शारीरिक एवं मानसिक परेशानी भी होती है।

अतः आपसे अनुरोध है कि विकासपुरी डी-ब्लॉक तक एक नया बस मार्ग (बस रूट) आरंभ करने की कृपा करें। इसके लिए हम सब आपके आभारी रहेंगे। मुझे विश्वास है कि आप इसे गंभीरता से लेते हुए संबंधित अधिकारी को इसके लिए उचित निर्देश देंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.



8. परीक्षा भवन,  
दिल्ली।

दिनांक 11.07.20XX

सेवा में,  
संयोजक महोदय,  
मंगल विज्ञान केंद्र,  
दिल्ली।

**विषय** विज्ञान कार्यशाला में सम्मिलित होने हेतु निवेदन पत्र।

महोदय,

आज के समाचार-पत्र के माध्यम से मुझे ज्ञात हुआ है कि आपके संयोजन व मार्गदर्शन में शहर में विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। मुझे विज्ञान में अत्यंत रुचि है तथा भविष्य में विज्ञान के क्षेत्र में ही उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता हूँ। इसी कारण मैं इस कार्यशाला का नियमित सदस्य बनना चाहता हूँ तथा भविष्य में भी होने वाली सभी कार्यशालाओं में सम्मिलित होना चाहता हूँ।

महोदय, आपसे विनम्र अनुरोध है कि मुझे इस विज्ञान कार्यशाला में शामिल होने का अवसर देकर कृतार्थ करें, ताकि मैं विज्ञान क्षेत्र से संबंधित नए तथ्यों, उपकरणों आदि की जानकारी प्राप्त कर सकूँ। मैं इस कार्यशाला में शामिल होने की सभी औपचारिकताएँ पूरी करने एवं निर्धारित शुल्क अदा करने के लिए तैयार हूँ।

मुझे पूर्ण आशा है कि आप मुझे इस कार्यशाला में सम्मिलित करके कृतार्थ करेंगे। आपके इस सहयोग व स्नेह के लिए मैं आपका अत्यंत आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद।

भवदीय  
क.ख.ग.  
अंबेडकर नगर, दिल्ली।

9. परीक्षा भवन,  
उत्तर प्रदेश।

दिनांक 17 जुलाई, 20XX

सेवा में,  
संपादक महोदय,  
दैनिक जागरण,  
मेरठ।

**विषय** शहर में बढ़ते प्रदूषण के संदर्भ में।

मान्यवर,

मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से जनता, अधिकारियों तथा सरकार का ध्यान शहरों में कल-कारखानों के कारण होने वाले प्रदूषण की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आशा है कि आप मेरे पत्र को अपने प्रतिष्ठित समाचार-पत्र में प्रकाशित करेंगे।

आज के आधुनिक युग में उद्योग-धंधों का तेजी से प्रसार हो रहा है। इनकी चिमनियों से निकलने वाले धुएँ से वायुमंडल में प्रदूषण की मात्रा बहुत बढ़ गई है। इसके अतिरिक्त औद्योगिक केंद्रों में मशीनों से निकलने वाले कचरे से भी वायुमंडल में प्रदूषण बढ़ रहा है। प्रदूषण चाहे कैसा भी हो, स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक होता है। वायुमंडल में शुद्ध वायु की कमी विभिन्न रोगों को जन्म देती है। अपने शहर के चारों ओर स्थित अनेक उद्योग-धंधों की चिमनियों से निकलने वाला धुआँ तथा कोयले की राख आस-पास के निवासियों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डाल रही है।

मेरा मुख्यमंत्री, जिलाधीशों तथा प्रदूषण विभाग के अधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि वे इस ओर ध्यान दें तथा इस संबंध में आवश्यक एवं कठोर कदम उठाएँ, जिससे समस्या का उचित समाधान हो सके।

सधन्यवाद।

भवदीय  
क.ख.ग.

10. परीक्षा भवन,  
दिल्ली।

दिनांक 09.08.20XX

सेवा में,  
मुख्य प्रबंधक महोदय,  
शिवम् कंप्यूटर्स, गुरुग्राम।

**विषय** कंप्यूटर में खराबी होने की सूचना देते हुए।

महोदय,

मैं इस पत्र के माध्यम से आपके पास अपनी शिकायत दर्ज कराना चाहता हूँ। मैंने 'एकता कंप्यूटर' से आपकी कंपनी का एक कंप्यूटर पिछले माह ही खरीदा था, परंतु आरंभ से ही मुझे अत्यंत परेशानी हो रही है। इसका सीपीयू सही से काम नहीं कर रहा है और स्क्रीन भी धुंधली-सी हो गई है। मैंने इसकी शिकायत स्थानीय दुकानदार से की, परंतु आज 10 दिन बीत जाने के बाद भी कंप्यूटर ठीक नहीं किया गया। पुनः शिकायत करने पर उनके कर्मचारी भी असम्य भाषा का प्रयोग करते हैं।

महोदय, इस प्रकार के व्यवहार से मुझे अत्यंत निराशा हुई है और यह घटना आपकी कंपनी की प्रतिष्ठा के लिए चिंताजनक है। मैं विवशतापूर्वक आपको यह पत्र लिख रहा हूँ और आशा करता हूँ कि आप मेरी समस्या का समाधान करवाने में मेरा सहयोग करेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय  
क.ख.ग.  
ब-70 दरियागंज,  
दिल्ली।

11. परीक्षा भवन,  
उत्तर प्रदेश।

दिनांक 11.07.20XX

सेवा में,  
प्रधानाचार्य महोदय,  
अखिल भारतीय शिक्षा संगठन,  
मेरठ।

**विषय** विलंब से विद्यालय पहुँचने के संदर्भ में क्षमादान पत्र।

महोदय,

मैं राज शर्मा आपके विद्यालय में कक्षा X (क) का विद्यार्थी हूँ। मेरी माताजी का स्वास्थ्य पिछले दो दिनों से सही नहीं है। मुझे उनकी देखभाल के साथ-साथ प्रातःकालीन सभी घरेलू कार्य भी स्वयं करने पड़ रहे हैं। इस कारणवश पिछले दो दिनों से मैं विद्यालय में विलंब से पहुँच रहा हूँ।

महोदय, मैं भली-भाँति समझता हूँ कि अनुशासन व समय-प्रबंधन विद्यालय व विद्यार्थी दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैं भविष्य में यथाशीघ्र सभी कार्य निपटाकर, समय पर विद्यालय पहुँच जाऊँगा।

अतः आपसे प्रार्थना है कि मेरी इन दो दिनों की गलती को क्षमा करें तथा कक्षा अध्यापक को संबंधित निर्देश दें। आशा है आप समस्या को समझते हुए मुझे क्षमा कर देंगे।

सधन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य  
राज शर्मा  
कक्षा X (क)

12. परीक्षा भवन,  
दिल्ली।

सेवा में,  
मुख्य अधिकारी महोदय, जल संस्थान, दिल्ली।

दिनांक 18.06.20XX

**विषय** क्षेत्र में जल-आपूर्ति नियमित करने हेतु पत्र।

महोदय,

मैं राहुल, दरियागंज, दिल्ली निवासी आपका ध्यान अपने क्षेत्र की जल-आपूर्ति की समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आजकल हमारे यहाँ जल-आपूर्ति की दशा अत्यंत चिंतनीय हो गई है। कई दिनों से नियमित आपूर्ति के अभाव में दिनचर्या अत्यंत अस्त-व्यस्त हो गई है। पिछले सप्ताह दो-तीन बार पाइप लाइन टूट चुकी है।

महोदय, इस कारण हम सभी क्षेत्रवासी बहुत परेशान हैं। वयस्क लोग नौकरी पर तथा बच्चे विद्यालय तक नहीं जा पा रहे हैं। आपसे विनम्र अनुरोध है कि हमारी समस्या का समाधान करें, ताकि हम सुचारु रूप से अपने दैनिक कार्य कर सकें।

सधन्यवाद।

भवदीय

राहुल त्यागी

ब-202, दरियागंज,  
दिल्ली।

**13.** परीक्षा भवन, दिल्ली।

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी,

कमला नगर, दिल्ली।

**दिनांक** 14.09.20XX

**विषय** क्षेत्र में गंदगी की समस्या के निदान हेतु।

महोदय,

हमारे क्षेत्र की वर्तमान दशा अत्यंत चिंताजनक है। हमारे क्षेत्र में पिछले 15-20 दिनों से सफ़ाई व्यवस्था बुरी तरह चरमराई हुई है, जिससे दुर्गंध और गंदगी के कारण हम सबका जीना दूभर हो गया है। कई बार शिकायत करने के बाद भी सफ़ाई कर्मचारी इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। जगह-जगह कूड़े के ढेर लग गए हैं तथा सड़कें पूरी तरह से जलमग्न हो गई हैं। मच्छरों के कारण गंभीर बीमारियाँ होने तक का खतरा भी मँडराने लगा है।

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि तुरंत कार्यवाही कीजिए तथा संबंधित कर्मचारियों को निर्देश देते हुए, हमें इस समस्या से छुटकारा दिलाइए। हम सभी क्षेत्रवासी आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय

क्षेत्र के समस्त निवासी

कमला नगर, दिल्ली।

**14.** परीक्षा भवन,

दिल्ली।

सेवा में,

प्रकाशक महोदय,

साहित्य अकादमी,

नई दिल्ली।

**दिनांक** 04.05.20XX

**विषय** साहित्यिक पत्रिका का नियमित ग्राहक बनने हेतु।

महोदय,

मैं आपकी मासिक पत्रिका का नियमित पाठक हूँ, क्योंकि मैं हिंदी साहित्य का विद्यार्थी हूँ। साहित्य से मेरा गहरा संबंध है। वर्तमान समय में, मैं उपलब्धता के आधार पर पड़ोस में स्थित पुस्तक केंद्र से यह पत्रिका लेता रहता हूँ, परंतु सभी अंक नहीं पढ़ पाता हूँ।

अपने नियमित अध्ययन हेतु, अब मैंने आपकी पत्रिका का पूर्णकालिक सदस्य बनने का निश्चय कर लिया है। अतः आपसे अनुरोध है कि वार्षिक ग्राहक बनने की पूरी प्रक्रिया बताने का कष्ट करें तथा साथ ही डाक खर्च एवं अन्य शुल्क की जानकारी भी दें, जिससे मैं पूर्ण शुल्क अदा कर सकूँ।

आपसे पुनः निवेदन है, सभी औपचारिकताओं के उपरांत मेरी प्रति निम्न पते पर पहुँचाने का कष्ट करें।

सधन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

ब-65, गीता कॉलोनी, दिल्ली।

15. परीक्षा भवन,  
दिल्ली।  
सेवा में,  
अध्यक्ष महोदय,  
नगर निगम, दिल्ली।

दिनांक 03.04.20XX

**विषय** बच्चों के खेलने हेतु पार्क की व्यवस्था करने हेतु।

महोदय,

हम सब कमला नगर, दरियागंज के स्थायी निवासी हैं। हम आपका ध्यान बच्चों के लिए पार्क न होने की समस्या की ओर आकर्षित कराना चाहते हैं। हमारे यहाँ 10 हजार से ज्यादा आबादी है, इसके बावजूद बच्चों के खेलने हेतु मोहल्ले में एक भी बाल-उद्यान नहीं है, जिसके अभाव में बालक घर में ही रहते हैं। इस कारण उनका शारीरिक व मानसिक विकास अवरुद्ध होता है।

अतः हम सब निवासी आपसे विनम्र अनुरोध करते हैं कि इस समस्या का समाधान किया जाए तथा बाल-उद्यान की व्यवस्था की जाए। हम सब आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय  
समस्त निवासीगण  
कमला नगर, दिल्ली।

## अभ्यास प्रश्नावली (औपचारिक पत्र)

1. दिल्ली परिवहन निगम के महाप्रबंधक के नाम एक पत्र लिखिए, जिसमें बस कंडक्टर के अभद्र व्यवहार की शिकायत की गई हो।
2. किसी अस्पताल के प्रबंधन पर असंतोष व्यक्त करते हुए अस्पताल के मुख्य चिकित्सा-अधीक्षक को एक पत्र लिखिए।
3. समाज में नशीले पदार्थों के सेवन की बढ़ती प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।
4. रास्ते में गुम हो गए एयरबैग को एक अपरिचित द्वारा लौटाने पर उसे धन्यवाद पत्र लिखिए।
5. नगर की सघन आबादी में कल-कारखानों और यातायात के कारण होने वाले ध्वनि-प्रदूषण के विरुद्ध नगर-योजना अधिकारी को पत्र लिखिए।
6. दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले किसी धारावाहिक की विसंगतियों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए चैनल-विशेष के कार्यक्रम संचालक को मधुरिमा की ओर से पत्र लिखिए।
7. आप अपने विद्यालय में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की ओर से एक कार्यशाला आयोजित कराना चाहते हैं। निदेशक को पत्र लिखकर इस संबंध में सूचना प्राप्त कीजिए।
8. आप अपनी बहन के विवाह के लिए राजस्थान परिवहन निगम की बस किराए पर लेना चाहते हैं। इसके लिए निगम के निदेशक को पत्र लिखिए।
9. आपने हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली से कुछ पुस्तकें मँगवाई थीं, जो फटी हुई निकलीं। इसकी शिकायत करते हुए पुस्तकें वापस करने की सूचना दीजिए।
10. आपके विद्यालय के कुछ छात्र मसूरी भ्रमण पर जाना चाहते हैं। वहाँ स्थित यूथ छात्रावास के प्रबंधक को पत्र लिखकर जानकारी लें कि क्या ठहरने का प्रबंध संभव है और इसके लिए किराया कितना देना होगा।

## अनौपचारिक पत्र

सगे-संबंधियों, मित्रों, रिश्तेदारों, परिचितों आदि को लिखे गए पत्र 'अनौपचारिक पत्र' कहलाते हैं। इन्हें व्यक्तिगत पत्र भी कहा जाता है। इस प्रकार के पत्रों में व्यक्ति से संबंधित सुख-दुःख, हर्ष, उत्साह आदि का वर्णन किया जाता है। अनौपचारिक पत्रों की भाषा आत्मीय व हृदय को स्पर्श करने वाली होती है।

### अनौपचारिक पत्रों में आने वाले संबोधन, अभिवादन तथा अभिनिवेदन

| पत्र पाने वाले के साथ संबंध                                                   | संबोधन                                                            | अभिवादन                  | अभिनिवेदन                               |
|-------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------|--------------------------|-----------------------------------------|
| अपने से बड़े संबंधी (माता, पिता, बड़ा भाई, बड़ी बहन, शिक्षक इत्यादि)          | पूजनीया (माता), पूज्य (पिता), आदरणीय, पूजनीय, आदरणीया (माता, बहन) | चरण-स्पर्श, सादर प्रणाम  | आज्ञाकारी, स्नेहाकांक्षी प्यारा इत्यादि |
| अपने से छोटे संबंधी (छोटा भाई, छोटी बहन, पुत्र, पुत्री, भतीजा, भतीजी इत्यादि) | चिरंजीवी, प्रिया, केवल नाम                                        | शुभाशीर्वाद, प्रसन्न रहो | शुभेच्छु, शुभाकांक्षी, हितैषी इत्यादि   |
| मित्र, सहपाठी                                                                 | प्रिय, मित्रवर, केवल नाम                                          | सप्रेम नमस्कार, नमस्ते   | तुम्हारा सहृदय, मित्र इत्यादि           |
| विदेशी पत्र-मित्र                                                             | प्रिय, मित्र                                                      | नमस्ते                   | आपका, आपका मित्र                        |
| अपरिचित पुरुष                                                                 | महाशय, श्रीमान (नाम), महोदय                                       | नमस्ते, नमस्कार          | भवदीय, भवदीया, हितैषी                   |
| अपरिचित महिला                                                                 | महाशया, श्रीमती (नाम), महोदया                                     | नमस्ते, नमस्कार          | भवदीय, हितैषी                           |

### अनौपचारिक पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें

- पत्र में ऊपर बाईं ओर पत्र भेजने वाले का संक्षिप्त पता लिखा होना चाहिए। प्रश्न में यदि 'पता' दिया गया हो, तो उसका प्रयोग अनिवार्य रूप से करना चाहिए, किंतु यदि 'पता' नहीं दिया गया हो, तो छद्म पता या 'परीक्षा भवन' लिखना चाहिए।
- पते के नीचे पत्र लिखने की तिथि का उल्लेख अवश्य करें।
- पता तथा तिथि के नीचे पत्र पाने वाले (जिसे पत्र लिखा जा रहा है) का संबोधन लिखना चाहिए। संबोधन के साथ अभिवादन लिखा जाता है। अभिवादन में पूर्ण-विराम लगाने के बाद, अगली पंक्ति से पत्र का विषय आरंभ करना चाहिए।
- पत्र समाप्त करने के बाद संबोधन के अनुसार अभिनिवेदन लिखना आवश्यक है। उसके नीचे अपने नाम का प्रमुख हिस्सा लिखकर पत्र समाप्त किया जाता है।
- प्रश्न में 'पता' नहीं होने पर 'पते के स्थान' पर 'परीक्षा भवन' तथा 'नाम' नहीं होने पर 'नाम के स्थान' पर 'क.ख.ग.' लिखना चाहिए।

## अनौपचारिक पत्र का प्रारूप

आप दिव्यांशु गुप्ता हैं। आप स्थानीय संगठन के अध्यक्ष हैं। आप अपने क्षेत्र में स्वच्छ भारत अभियान के तहत एक स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित करना चाहते हैं। इस स्वच्छता कार्यक्रम में अपने मित्र को आमंत्रित करने के लिए उसे पत्र लिखिए।

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; margin-bottom: 10px;"> <b>भेजने वाले का पता</b><br/>         सर्वप्रथम जिसके द्वारा पत्र भेजा जाता है, उसका पता लिखते हैं।       </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; margin-bottom: 10px;"> <b>दिनांक</b><br/>         पते के बाद, जिस दिन पत्र लिखा जाता है, उस दिन की दिनांक लिखते हैं।       </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px;"> <b>सराहनीय समापन</b><br/>         पत्र की समाप्ति धन्यवाद के साथ की जाती है।       </div> | <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin-bottom: 10px;">         परीक्षा भवन,<br/>         उत्तर प्रदेश।       </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin-bottom: 10px;"> <b>दिनांक</b> 12 अगस्त, 20XX       </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin-bottom: 10px;">         प्रिय मित्र —       </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin-bottom: 10px;">         आशा करता हूँ कि तुम सकुशल होंगे। मैं यह पत्र 'स्वच्छ भारत अभियान' के संबंध में लिख रहा हूँ।<br/>         मित्र! मैं प्रधानमंत्री के स्वच्छता अभियान से बहुत प्रभावित हूँ। अपने आस-पास के परिवेश को सुंदर बनाने एवं स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों से बचने के लिए स्वच्छता अत्यंत आवश्यक है। मैं चाहता हूँ कि इस अभियान में अपने क्षेत्र के युवा बढ़-चढ़कर भाग लें और स्थानीय परिवेश को साफ़-सुथरा रखने में अपना योगदान दें। इस कड़ी में, मैं तुम्हें 'स्वच्छ भारत अभियान' का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित करता हूँ। इसे युवा संगठन के अध्यक्ष का नहीं, अपितु मित्र का स्नेहशील निमंत्रण समझना।<br/>         मुझे आशा ही नहीं, वरन् पूर्ण विश्वास है कि तुम निमंत्रण को स्वीकार करते हुए आगामी रविवार को इस अभियान का हिस्सा बनने के लिए संगठन के कार्यालय में अवश्य उपस्थित रहोगे। घर पर सभी बड़ों को मेरा प्रणाम कहना।       </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin-bottom: 10px;">         तुम्हारा मित्र<br/>         दिव्यांशु —       </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; text-align: center;"> <b>लिखने वाले का नाम</b> </div> <div style="padding: 10px;">         पत्र के अंत में जो पत्र लिख रहा है, उसका पूरा नाम लिखा जाता है। यदि परीक्षा में नाम नहीं दिया, तब उसके स्थान पर क.ख.ग. लिखना चाहिए।       </div> | <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; margin-bottom: 10px;"> <b>अभिवादन</b><br/>         इसके अंतर्गत पत्र प्राप्त करने वाले को प्रिय या मेरे प्रिय लिखकर संबोधित किया जाता है।       </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; margin-bottom: 10px;"> <b>पत्र का मुख्य भाग</b><br/>         यह पत्र का मुख्य भाग होता है। इस भाग को पैराग्राफ में बँटकर लिखना चाहिए।       </div> |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

1 अंक

4 अंक

1 अंक

### विशेष

- पत्र की शुद्ध भाषा तथा प्रस्तुति के लिए 1 अंक निर्धारित है।
- प्रश्न में 'पता' नहीं होने पर 'पते के स्थान' पर 'परीक्षा भवन' तथा 'नाम' नहीं होने पर 'नाम के स्थान' पर 'क.ख.ग.' लिखना चाहिए।



## प्रश्न अभ्यास

### (अनौपचारिक पत्र)

1. पिछले महीने कुछ प्रयासों द्वारा आपके विद्यालय के छात्रों ने कुछ धनराशि एकत्रित कर मूक-बधिर विद्यालय के विद्यार्थियों की सहायता की थी। इसका वर्णन करते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए और बताइए कि हमें समाज के विकलांग लोगों के प्रति कैसा व्यवहार रखना चाहिए व उनकी सहायता के लिए किस प्रकार के प्रयास करने चाहिए। [2018]
2. ओलंपिक में अपने देश के बढ़ते कदम देखकर आपको बहुत प्रसन्नता हो रही है। इस वर्ष के ओलंपिक की उपलब्धियों को बताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए। [2017]
3. आपकी चचेरी बहन जो गाँव में रहती है, उसकी दसवीं के बाद शिक्षा रोक दी गई है। अतः उसकी आगे की शिक्षा जारी रखने का निवेदन करते हुए अपने चाचाजी को पत्र लिखिए जिसमें नारी शिक्षा की आवश्यकता और उसके लाभों की भी चर्चा कीजिए। [2016]
4. आपका भाई अधिकांश समय मोबाइल फ़ोन के उपयोग में बिताता है। पत्र में बताइए। [2014]
5. आपके विद्यालय में कुछ अतिथि आए थे, जिनकी देखभाल की ज़िम्मेदारी आपको सौंपी गई थी। अपनी माताजी को पत्र लिखकर बताइए कि वे अतिथि विद्यालय में क्यों आए थे और आपने उनके लिए क्या-क्या किया? [2013]
6. विद्यालय की ओर से कुछ सहपाठियों के साथ शैक्षणिक भ्रमण पर जाने हेतु अपने पिताजी से आज्ञा माँगते हुए उन्हें एक पत्र लिखिए।
7. छात्रावास में रहने वाली अपनी छोटी बहन को फ़ैशन की ओर अधिक रुझान न रख, ध्यानपूर्वक पढ़ाई करने की सीख देते हुए पत्र लिखिए। [2012]
8. 2011 में दिए जाने वाले 'बच्चों के वीरता पुरस्कार' के लिए आपको चुना गया है। अपने मित्र को पत्र द्वारा प्रसन्नता तथा उत्तेजना की भावनाओं से अवगत कराते हुए, उस घटना का संक्षिप्त वर्णन कीजिए, जिसके कारण आपको इस पुरस्कार के लिए चयनित किया गया। [2011]
9. किसी कारण आपका मन कक्षा में नहीं लग रहा है, लेकिन अध्यापक की डाँट के डर से आप पढ़ाए जा रहे पाठ को मज़बूत होकर चुपचाप सुन रहे हैं। अपनी बड़ी बहन को पत्र लिखकर बताइए कि आपका मन कक्षा में क्यों नहीं लग रहा था, उस समय आप क्या सोच रहे थे?
10. आप अपने मित्र की बहन के विवाह में सम्मिलित न हो सके। अतः पत्र लिखकर कारण सहित पूर्ण विवरण देकर मित्र से क्षमा याचना कीजिए।
11. आप अपने मित्रों के साथ किसी पर्वतीय क्षेत्र की यात्रा के लिए गए थे। वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए अपनी माताजी को पत्र लिखिए। [2010]
12. आपका मित्र किसी खेल प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए विदेश यात्रा पर जा रहा है। मंगलकामना करते हुए उसे पत्र लिखिए। [2009]
13. अपने मित्र को पत्र लिखकर 'इंटरनेट के प्रयोग' से होने वाले लाभ और हानियों पर प्रकाश डालिए। साथ में उसे यह भी बताइए कि इसका सदुपयोग किस प्रकार किया जा सकता है?
14. आपके बड़े भाई ने आपको किसी शर्त पर एक खास भेंट देने की बात कही थी। आप वह शर्त जीत गए हैं, उन्हें नम्रतापूर्वक शर्त की याद दिलाते हुए पत्र लिखिए। [2008]
15. स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित एक भाषण प्रतियोगिता में स्वतंत्रता दिवस के महत्त्व पर आपने अपने विचार प्रस्तुत किए थे। विदेश में रहने वाले अपने मित्र को पत्र लिखकर इस कार्यक्रम की जानकारी दीजिए।

## उत्तर

1. जयपुर,  
राजस्थान

दिनांक 16.03.20XX

प्रिय सुरेंद्र,  
नमस्कार

आशा करता हूँ कि तुम सकुशल होगे और घर के अन्य सदस्य भी कुशल-मंगल से होंगे।

प्रिय मित्र सुरेंद्र मैं तुम्हें अपने विद्यालय के छात्रों द्वारा किए गए प्रशंसनीय कार्य से अवगत कराना चाहता हूँ। हमारे विद्यालय के निकट में ही एक मूक-बधिर विद्यार्थियों का विद्यालय है। विद्यालय में शिक्षकों की संख्या तो पूर्ण है, लेकिन विद्यार्थियों के लिए आवश्यक शिक्षण सहायक सामग्रियों का अभाव था। विद्यार्थियों की इस समस्या का समाधान करने के लिए हमारे विद्यालय के लिए कुछ विद्यार्थियों ने विद्यालय के छात्रों से कुछ धनराशि एकत्रित करके उनके लिए आवश्यक सामग्रियाँ उपलब्ध कराके उनकी मदद की। हमें भी विद्यार्थियों से सीख लेकर भिन्न-भिन्न रूप से विकलांग बच्चों की सहायता करनी चाहिए। उनका विद्यालय में दाखिला कराके, शिक्षा के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान करके, साथ ही उनके साथ सामान्य बच्चों की तरह व्यवहार करके हम उन बच्चों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य कर सकते हैं।

विकलांग बच्चों को भी देश के भविष्य निर्माण में सहायक बनाने का कार्य सिर्फ सरकार या उनके माता-पिता का ही नहीं है, अपितु उसमें संपूर्ण समाज का योगदान भी आवश्यक है।

अतः आशा है कि तुम भी मेरी बातों से सहमत होगे और अपने स्तर पर उनकी सहायता करने का प्रयास करोगे।

छात्रों के कुछ अन्य कार्यों का वर्णन मैं तुम्हें अगले पत्र में बताऊँगा।

तुम्हारा मित्र  
राजेंद्र

2. परीक्षा भवन,  
दिल्ली।

दिनांक 20/09/20XX

प्रिय मित्र संदीप,

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ और कामना करता हूँ कि आप भी सपरिवार कुशलपूर्वक होंगे। मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि तुम्हारा कुश्ती में चयन राष्ट्रीय स्तर पर हो गया है। जैसा कि तुम जानते ही हो कि इस वर्ष के रियो ओलंपिक में भारतीय खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन किया है। पी.वी. सिंधु ने बैडमिंटन तथा साक्षी मलिक ने कुश्ती में रजत पदक जीता है और देश का नाम रोशन किया है।

मैं आशा करता हूँ कि अगले ओलंपिक में कुश्ती के लिए तुम्हारा चयन होगा और तुम अच्छा प्रदर्शन करते हुए अपना और अपने देश का नाम रोशन करोगे।

शेष कुशल। चाचा व चाची जी को मेरा प्रणाम तथा रवि को स्नेह।

तुम्हारा मित्र  
क.ख.ग

3. परीक्षा भवन,  
दिल्ली।

दिनांक 20.06.20XX

पूजनीय चाचाजी,  
सादर प्रणाम।

आशा करता हूँ घर पर आप सब कुशलपूर्वक होंगे। चाचाजी मुझे यह जानकर बेहद दुःख हुआ कि स्नेहा द्वारा दसवीं की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करने के उपरांत भी आपने उसको लड़की होने के कारण आगे की शिक्षा जारी रखने की अनुमति नहीं दी है। आपके द्वारा लिया गया यह निर्णय पूर्णतः अनुचित है।

आज विश्व में महिलाएँ अपनी काबिलियत के कारण विभिन्न देशों की राष्ट्राध्यक्ष, वैज्ञानिक इत्यादि होने के साथ ही उच्च पदों पर आसीन हैं। वर्तमान समय में ही नहीं, बल्कि प्राचीनकाल में भी रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल आदि वीरांगनाएँ हुई हैं, जिन्होंने अपनी वीरता से देश का नाम रोशन किया। वहीं आज आप 21वीं सदी में स्नेहा के लड़की होने के कारण उसकी पढ़ाई रुकवाना चाहते हैं, जो बिल्कुल अनुचित है। वर्तमान समय में पश्चिमी सभ्यता से अत्यधिक प्रभावित होने के कारण युवाओं में अनैतिकता बढ़ी है, लेकिन स्नेहा होशियार व समझदार लड़की है और आपके द्वारा दिए गए संस्कार उसे गलत राह पर नहीं जाने देंगे।

अतः मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि आप उसकी पढ़ाई न रुकवाएँ अन्यथा उसका भविष्य अंधकारमय हो सकता है।

आपका स्नेहाकांक्षी

क.ख.ग.

**4.** ब-75, शालीमार बाग,  
दिल्ली।

दिनांक 03.06.20XX

प्रिय अनुज,

शुभाशीष।

हम सब यहाँ पर कुशलमंगल हैं और साथ ही कामना करते हैं कि तुम भी कुशलपूर्वक होंगे। आज सुबह ही माताजी तुम्हें याद करके भावुक हो रही थीं।

मेरे पास आज तुम्हारे अध्यापक महोदय का फ़ोन आया था, उन्होंने मुझे जानकारी दी कि आजकल पढ़ाई से ज़्यादा मोबाइल फ़ोन पर तुम्हारा वक्त गुजरता है। तुम घर की आर्थिक स्थिति से भली-भाँति परिचित हो कि पिताजी ने कितनी कठिनाइयों से तुम्हें छात्रावास पढ़ने के लिए भेजा है, ताकि तुम कामयाब हो सको। आजकल मोबाइल फ़ोन आवश्यक है, परंतु यह सिर्फ मित्रों-परिवार, संबंधियों इत्यादि से आवश्यक बातचीत के लिए है। इसके अलावा इसका अत्यधिक उपयोग करना बेहद हानिकारक है। इससे समय तो व्यर्थ होता ही है, साथ ही यह मानसिक और शारीरिक पीड़ा भी देता है।

इससे एकाग्रता में भी कमी आती है, इसलिए उम्मीद है कि भविष्य में तुम मोबाइल फ़ोन का अत्यधिक उपयोग नहीं करोगे तथा पूर्ण एकाग्रचित होकर शिक्षा पर ध्यान दोगे।

माता-पिता की ओर से तुम्हें स्नेह व आशीर्वाद तथा मेरी ओर से ढेर सारा प्यार।

तुम्हारा अनुज

क.ख.ग.

**5.** छात्रावास

दून पब्लिक स्कूल,

मेरठ।

दिनांक 13.03.20XX

पूजनीय माताजी,

चरण-स्पर्श।

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ और कामना करता हूँ कि आप भी सपरिवार कुशलपूर्वक होंगी। माँ! आज मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ। मुझे विद्यालय में हुए समारोह में सबके सामने प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया, जिसका वर्णन निम्न प्रकार है

हमारे विद्यालय में जिला स्तर पर संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जिसमें बाहर से बड़े-बड़े अधिकारी, प्रतियोगी व अध्यापक हमारे विद्यालय में आए हुए थे। प्रतियोगिता दो दिवसीय थी। इन दो दिनों के दौरान प्रधानाचार्य जी ने सभी अतिथिगण व प्रतियोगियों के खाने-पीने तथा आतिथ्य करने का दायित्व मुझको सौंप दिया।

मैंने पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से इस दायित्व को निभाने का प्रयास किया। दो दिन के बाद प्रतियोगिता का समापन हुआ तो विदाई समारोह में शीर्ष अधिकारी ने मेरे प्रबंधन व व्यवहार के लिए मेरी खूब सराहना की। अंत में पारितोषिक वितरण समारोह के दौरान मुझे भी मुख्य अतिथि द्वारा प्रशस्ति-पत्र देकर पुरस्कृत किया गया।

मैं अत्यंत गौरवान्वित महसूस कर रहा था। शेष सब बाद में। पिताजी को मेरा प्रणाम कहना व बहन को प्यार।

आपका पुत्र

क.ख.ग.

6. कमरा संख्या-23,  
शहीद आज़ाद मेमोरियल छात्रावास,  
लखनऊ।

दिनांक 29 मार्च, 20XX

पूज्य पिताजी,  
सादर चरण-स्पर्श।

मैं यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ तथा आशा करता हूँ कि आप भी सकुशल होंगे। आपका पत्र मिला और घर के समाचार ज्ञात हुए। अभी तक मैं अपनी वार्षिक परीक्षाओं में व्यस्त था, इसलिए पत्र नहीं लिख सका। शुभ समाचार यह है कि वार्षिक परीक्षाओं में इस बार मेरे 96.85% अंक आए हैं और मैं अपनी कक्षा में प्रथम आया हूँ। आशा है कि मैं ऐसे ही परिणामों को भविष्य में भी दोहराऊँगा।

पिताजी, इस बार गर्मियों की छुट्टियों में हमारे विद्यालय की ओर से विद्यार्थियों का एक दल नैनीताल और रानीखेत के शैक्षणिक भ्रमण पर जा रहा है, जिसका उद्देश्य है—पर्वतीय जीवन और संस्कृति का अध्ययन करना। इसके लिए जाने वाले प्रत्येक विद्यार्थी से दो हजार रुपये माँगे गए हैं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं भी इस दल का एक हिस्सा बनूँ तथा पर्वतीय क्षेत्र की संस्कृति व भौगोलिक स्थितियों को अपनी आँखों से देखूँ। मेरे सभी साथी इस यात्रा के लिए अपनी सहमति दे चुके हैं। अब मेरी कक्षा में केवल तीन छात्र ही रह गए हैं। यदि आप मुझे इस भ्रमण पर जाने की अनुमति देंगे, तो निश्चित रूप से मेरी शैक्षणिक गतिविधियों में सुधार तथा मेरे ज्ञान में वृद्धि होगी। पिताजी, आशा है कि आप मेरी इस इच्छा को समझ रहे होंगे। मैं अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान दे रहा हूँ और इसमें आपको किसी शिकायत का मौका नहीं मिलेगा।

घर के सभी बड़ों को मेरा सादर प्रणाम तथा छोटों को स्नेह।

आपका पुत्र  
मानव

7. 102, कश्मीरी गेट,  
दिल्ली।

दिनांक 03.04.20XX

प्रिय लता,  
सस्नेह आशीष।

हम सब यहाँ सकुशल हैं और सदैव परमात्मा से तुम्हारी कुशलता की कामना करते हैं। माताजी-पिताजी तुम्हें याद करके कभी-कभी अत्यंत भावुक हो जाते हैं। लता! तुम्हें ज्ञात है कि पिताजी ने कितनी कठिनाइयों सहकर हमारा पालन-पोषण किया है और उनका सपना है कि तुम आईएएस की परीक्षा उत्तीर्ण करो, परंतु तुम्हारे अध्यापकों व छात्रावास प्रभारी से मुझे ज्ञात हुआ है कि आजकल तुम्हारा ध्यान फैशन की ओर अधिक है और इस कारण तुम्हारा लक्ष्य प्रभावित होने लगा है।

मैं यह सुझाव देना चाहूँगा कि तुम खुद को एकाग्रचित्त करो तथा केवल अपने अध्ययन और लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करो। वार्षिक परीक्षा आने वाली है। यदि तुम समय रहते नहीं सँभली तो अत्यंत गंभीर परिणामों का सामना करना पड़ सकता है और साथ ही तुम्हारा भविष्य भी अंधकारमय हो जाएगा। इसलिए मेरी सलाह है कि अध्ययन पर ध्यान दो तथा माता-पिता का स्वप्न व अपना लक्ष्य साकार करो।

माता-पिता की ओर से तुम्हें स्नेहशील आशीर्वाद।

तुम्हारा बड़ा भाई  
क.ख.ग.

8. परीक्षा भवन  
दिल्ली।

दिनांक 16.05.20XX

प्रिय मित्र राज,

बहुत दिनों से तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला, आशा करता हूँ कि तुम सकुशल होंगे। मुझे तुम्हें यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि अभी-अभी मुझे सरकार द्वारा भेजा गया पत्र प्राप्त हुआ, जिसमें लिखा है कि मुझे वर्ष 2011 के वीरता पुरस्कार के लिए चयनित कर लिया गया है और गणतंत्र दिवस के अवसर पर मुझे यह पुरस्कार राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया जाएगा। पूरा परिवार इस सूचना को पाकर गौरवान्वित अनुभव कर रहा है।

मालूम है राज, यह सब तुम्हारे सहयोग और सलाह का परिणाम है। अन्यथा न हम वह घटना सरकार को बताते और न ही आज यह पुरस्कार प्राप्त होता। आज फिर पुनः वह घटना स्मरण हो रही है। मैं रात को 8 बजे छत पर खड़ा था, अचानक मुझे पड़ोस वाले घर से कुछ शोर सुनाई दिया।

मैंने जाकर देखा कि 2-3 नकाबपोश बुजुर्ग दंपति को बाँध रहे हैं और उनका एक साथी लूट-पाट कर रहा है। मैंने तुरंत 100 नंबर पर फोन करके घटना की पूर्ण जानकारी पुलिस को दे दी।

पुलिस ने तत्काल कार्यवाही करते हुए घर पर धावा बोलकर सभी लुटेरों को गिरफ्तार कर लिया व बुजुर्ग दंपति को सकुशल बचा लिया गया। बुजुर्ग दंपति ने हमें खूब दुआएँ दीं।

मुझे तो यह घटना विस्मृत हो गई थी, परंतु इस पत्र ने सब याद दिला दिया। मैं बहुत प्रसन्न हूँ। आशा है, उस दिन तुम भी पूरा दिन मेरे साथ ही मौजूद रहोगे। अच्छा, अब पत्र समाप्त करता हूँ, तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में।

तुम्हारा मित्र,  
रजत

**9.** श्रीराम छात्रावास,  
दिल्ली।

**दिनांक** 07.04.20XX

आदरणीय दीदी,  
प्रणाम।

मैं यहाँ सकुशल हूँ तथा आशा करता हूँ कि आप सभी भी कुशलतापूर्वक होंगे। दीदी, मैं यहाँ मन लगाकर पढ़ाई कर रहा हूँ। सभी अध्यापक विनम्र एवं दयालु हैं। यहाँ सभी खुशनुमा माहौल में पढ़ाई करते हैं। लेकिन दीदी, आजकल मन थोड़ा अप्रसन्न है, जिस कारण कभी-कभी कक्षा में मन नहीं लगता। पिछले सप्ताह जब मैं घर गया था, तब माताजी-पिताजी प्रतिदिन किसी बात पर झगड़ते रहते थे, इस कारण मुझे घुटन-सी महसूस होती थी। कभी-कभी माताजी की चिंता हो जाती है कि झगड़े को मन से न लगा लें, आप तो माताजी की भावुकता को जानती ही हो। इसी कारणवश आज मन कक्षा में ज़रा खिन्न था। विषय पर ध्यान न देने के कारण अध्यापक ने बहुत जोर से डाँट भी लगाई, लेकिन मेरा हृदय घर की घटना में ही लीन था। अतः आपसे प्रार्थना है कि माताजी-पिताजी से इस विषय को सुलझाने के लिए वार्ता करें, तभी मैं मन लगाकर अध्ययन कर पाऊँगा।

माताजी-पिताजी को मेरा प्रणाम कहना।

आपके पत्र की प्रतीक्षा में।

आपका अनुज,  
अर्जुन

**10.** ब-110, सोनिया विहार,  
दिल्ली।

**दिनांक** 12.06.20XX

प्रिय मित्र मोहन,  
प्यार भरा नमस्कार।

मुझे तुम्हारा निमंत्रण पत्र प्राप्त हुआ था, जिसे पढ़कर अत्यंत खुशी हुई कि तुम्हारी बड़ी बहन का विवाह 10.06.20XX को होना निश्चित हुआ है। मैं इस विवाह में शामिल होने के लिए बहुत उत्सुक था, परंतु मैं दुर्भाग्यवश उपस्थित न हो सका। मैं समझ सकता हूँ कि तुम बहुत नाराज़ होंगे, परंतु परिस्थितियाँ ही इतनी प्रतिकूल हो गई थीं कि मैं चाहकर भी विवाह में सम्मिलित होने के लिए आ न सका।

मैं 09-06-20XX को विवाह में शामिल होने की तैयारी कर रहा था। तभी सहसा सूचना मिली कि मेरी नानीजी की तबीयत अत्यंत खराब हो गई है। अतः मुझे माताजी को लेकर उनके पास जाना पड़ा।

वहाँ पहुँचकर भी 10-06-20XX को वापस आने की कोशिश की, परंतु नानीजी की हालत अत्यंत गंभीर थी। अतः मैं आ न सका। मुझे उम्मीद है कि तुम पूरे घटनाक्रम को समझोगे और मेरी मज़बूरी को समझकर मुझे क्षमा कर दोगे। मेरी अनुपस्थिति अक्षम्य है, परंतु फिर भी मैं माफ़ी की अपेक्षा रखता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि बहन के आगामी दौरे में, मैं स्वयं उनको लेने जाऊँगा, ताकि भाई होने का कुछ फर्ज़ अदा कर सकूँ।

सभी बड़ों को प्रणाम व छोटों को प्यार।

तुम्हारा मित्र,  
निकुंज

**11. परीक्षा भवन, दिल्ली।****दिनांक** 06.05.20XXपूजनीय माताजी,  
सादर प्रणाम।

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ तथा कामना करता हूँ कि आप भी सपरिवार सकुशल होंगी। आपका स्वास्थ्य ठीक है ना? आपकी बड़ी याद आती है। माताजी, मैंने आपको बताया था कि इस बार मेरी और मेरे मित्रों की वार्षिक परीक्षा अच्छी हुई है, इसलिए इस बार हम कुछ मित्रों ने मनाली जाने का निश्चय किया।

हम सब तय कार्यक्रम के अनुसार इस पर्वतीय प्रदेश की यात्रा हेतु वहाँ पहुँच गए थे। वहाँ का मौसम बहुत ही ठंडा तथा मनमोहक था। पर्वतीय क्षेत्रों में कार द्वारा यात्रा करना बहुत ही रोमांचकारी व मजेदार अनुभव सिद्ध हुआ। पहले दिन हम प्रातःकाल ही हिडिंबा मंदिर में गए। वहाँ के अप्रतिम सौंदर्य, शांति और देवदार के वृक्षों ने हृदय को बड़ा सुकून प्रदान किया। उसके बाद हम रोहतांग दर्रे पर बर्फ़ीले पहाड़ों पर पहुँचे तथा वहाँ खूब आनंद लिया। दूसरे दिन हमने सोलांग वैली तथा बाज़ार जाने की योजना बनाई और कुछ खरीददारी भी की।

अच्छा, अब पत्र का समापन करता हूँ। समय मिले तो आप भी पिताजी सहित इस शहर के प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद अवश्य लेना। पिताजी को प्रणाम व गुड़िया को प्यार।

आपका पुत्र  
नयन**12. सेक्टर-18, रोहिणी**

दिल्ली।

**दिनांक** 10.07.20XX

प्रिय मित्र, वंदे!

आशा है कि तुम स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। मुझे आज ही तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ है और यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि तुम्हारा चयन राष्ट्रीय फुटबॉल टीम में हो गया है तथा तुम इस महीने ही प्रतियोगिता हेतु पुर्तगाल की यात्रा पर जा रहे हो।

मुझे अचानक ही वह कॉलेज समय याद आ गया, जब तुम विद्यार्जन के साथ-साथ दिन-रात फुटबॉल का अभ्यास करते रहते थे। आज तुम्हें उस परिश्रम और अभ्यास का ही फल मिला है। मित्र, मैं बहुत खुश हूँ और तुम्हें इस स्वर्णिम अवसर पर बधाई देता हूँ। मैं ईश्वर से कामना करता हूँ कि तुम इस खेल प्रतियोगिता में अत्यंत सफलता प्राप्त करो और देश का नाम रोशन करो।

मैं सपरिवार गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। अच्छा, अब पत्र समाप्त करता हूँ। मेरी शुभकामनाएँ सदैव तुम्हारे साथ हैं। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र,  
राजेश अग्रवाल**13. जी ब्लॉक,**लक्ष्मीनगर,  
दिल्ली।**दिनांक** 12.07.20XX

प्रिय मित्र राज,

नमस्कार

आज बाज़ार में तुम्हारे पिताजी से मुलाकात हुई। वार्ता के दौरान तुम्हारे लिए कंप्यूटर खरीदने की जानकारी मिली, परंतु साथ ही उचित जानकारी न होने के कारण इंटरनेट के सही उपयोग तथा लाभ-हानि संबंधी तुम्हारी समस्या का भी पता लगा।

प्रिय राज! मैं तुम्हारा मित्र हूँ। अतः आशा करता हूँ कि तुम स्वयं निःसंकोच मुझसे पूछ लिया करो, फिर भी कुछ जानकारी दे रहा हूँ। तुम्हें बस एक कनेक्शन लेना होगा, फिर एक अपना ई-मेल 'पता' बनाना होगा। तब तुम सब जानकारी स्वयं ही प्राप्त कर सकोगे।

इंटरनेट और कंप्यूटर से लाभ यह है कि समय और धन की बचत होती है। सावधानीपूर्वक उपयोग करने पर तुम्हारी सूचना भी सुरक्षित रहती है। इंटरनेट के माध्यम से तुम स्वयं आत्मनिर्भर होकर एक जगह से कार्य कर सकते हो। बैंक कार्य, पानी-बिजली के बिल भी घर से ही भर सकते हो, परंतु हानि बस यही है कि कभी-कभी अत्यंत जल्दबाज़ी में हमारी सूचना व धन इत्यादि किसी और के पास पहुँच सकते हैं। अतः इसका प्रयोग करते समय अत्यंत सावधानी की आवश्यकता है।

शेष सभी कुशलमंगल है।

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।

तुम्हारा मित्र,  
उमाशंकर



14. श्रीराम छात्रावास,  
दिल्ली।

दिनांक 10.07.20XX

आदरणीय भाई साहब,  
प्रणाम।

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आप भी सपरिवार कुशलतापूर्वक रहें। आप सबकी बहुत याद आ रही है, इसी कारण अगले सप्ताह मैं घर आ रहा हूँ। भैया, इसके साथ ही मैं आपको कुछ याद दिलाना चाहता हूँ कि गत मार्च में आपने मुझसे शर्त लगाई थी एवं वादा किया था कि यदि वार्षिक परीक्षा में मैंने 90% से ज्यादा अंक प्राप्त किए, तो आप मुझे एक खास भेंट देंगे।

कल ही मेरा परिणाम आया है और आपको यह जानकर अपार खुशी होगी कि मैंने 92% अंकों के साथ परीक्षा उत्तीर्ण की है। मेरा आपसे अनुरोध है कि मुझे वह खास भेंट देकर कृतार्थ करें। मैं उस अमूल्य भेंट की चाह में घर आ रहा हूँ। माताजी-पिताजी को चरण स्पर्श।

आपका अनुज,  
रंजन

15. ब-205, दिलशाद गार्डन,  
दिल्ली।

दिनांक 03.06.20XX

प्रिय राज,

हम सब सकुशल हैं तथा ईश्वर से तुम्हारी कुशलता की भी कामना करते हैं। विगत सप्ताह तुम्हारा पत्र मिला। पत्र पढ़कर बहुत खुशी हुई कि तुम्हारा चयन कॉलेज की टेनिस टीम में हो गया है। मेरी ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ।

राज, तुम्हें जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि मुझे स्वतंत्रता दिवस पर कॉलेज की वाद-विवाद प्रतियोगिता में स्वर्ण-पदक प्राप्त हुआ। यह प्रतियोगिता महाविद्यालय प्रांगण में आयोजित की गई थी, जिसमें राज्यपाल महोदय ने प्रतियोगिता आरंभ होने से पहले दीप प्रज्वलित किया, तदुपरांत आयोजन आरंभ हुआ। वाद-विवाद का विषय था 'स्वतंत्रता प्राप्ति में महिलाओं का योगदान'। मैंने अत्यंत तार्किक दृष्टिकोण सहित अपने विचार रखे। सबने मुक्त कंठ से मेरे भाषण को सराहा तथा अंत में मुझे प्रथम घोषित किया गया। हमारे ही कॉलेज के अन्य छात्र ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। मैं यह पुरस्कार पाकर बहुत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। अब मैं भविष्य में अधिक-से-अधिक प्रतियोगिताओं में भाग लेने का प्रयास करूँगा।

शेष कुशलमंगल।

तुम्हारा मित्र,  
निकेतन

## अभ्यास प्रश्नावली (अनौपचारिक पत्र)

1. अपने मित्र को पत्र लिखकर साक्षरता अभियान के अंतर्गत स्वयं के द्वारा किए जा रहे कार्यों का विवरण दीजिए।
2. प्रथम श्रेणी में दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने पर अपनी छोटी बहन को पत्र लिखिए।
3. जीवन-मूल्यों का महत्व बताते हुए छोटे भाई को पत्र लिखिए।
4. विदेश स्थित अपने मित्र को भारत के गौरवशाली इतिहास के बारे में बताते हुए एक पत्र लिखिए।
5. अपने माता-पिता को अपनी महत्वाकांक्षाओं से अवगत कराते हुए एक पत्र लिखिए।
6. रक्षाबंधन के अवसर पर बड़ी बहन अन्नपूर्णा द्वारा भेजी गई राखी के लिए उन्हें धन्यवाद देते हुए तथा मन की भावनाओं को व्यक्त करते हुए डी.ए.वी. स्कूल के छात्रावास से राहुल की ओर से एक पत्र लिखिए।
7. अपनी माताजी की बीमारी पर चिंता व्यक्त करते हुए अपने पिताजी को पत्र लिखिए।
8. अपनी चाचीजी को पत्र लिखिए, जिसमें उनके द्वारा भेजी हुई अंग्रेजी की कहानी की पुस्तक के लिए धन्यवाद व्यक्त किया गया हो।
9. आपकी परीक्षाएँ खत्म हो चुकी हैं और दो महीने बाद स्कूल खुलने वाला है। इसीलिए इन दो महीनों में 'भारतेंदु नाट्यशाला' से अभिनय का प्रशिक्षण प्राप्त करने की अनुमति प्राप्त करने के लिए अपने पिताजी को पत्र लिखिए।
10. अपनी किसी भूल के लिए क्षमा याचना करते हुए अपने पिताजी को एक पत्र लिखिए।

# अपठित गद्यांश

## प्रश्नों की प्रकृति

अपठित गद्यांश के अंतर्गत विद्यार्थियों को भावार्थ को समझकर उसका सावधानीपूर्वक, गंभीरता व गहनता से अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है। इसमें 2-2 अंक के 5 प्रश्न पूछे जाते हैं।

अपठित गद्यांश का अर्थ है—“गद्य का ऐसा अंश, जिसे पहले पढ़ा न गया हो।” अपठित गद्यांश का मुख्य उद्देश्य किसी भी विषय को समझने, उसका संपूर्ण अर्थों में विश्लेषण करने तथा भाषा एवं शैली के बीच के संबंधों को खोजने के संदर्भ में विद्यार्थियों की क्षमता को परखना होता है। उन्हें शाब्दिक अर्थ के साथ-साथ भावार्थ को भी समझना चाहिए।

## अपठित गद्यांश को हल करने के चरणबद्ध तरीके

- सर्वप्रथम दिए गए अपठित गद्यांश को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके मूलभाव को आत्मसात् करना चाहिए।
- गद्यांश में दी गई महत्वपूर्ण सूचनाओं को रेखांकित करते रहना चाहिए। इससे विषय-वस्तु व पठन कौशल वाले प्रश्नों को हल करने में आसानी होती है।
- भाषिक संरचना एवं व्याकरण संबंधी प्रश्नों के लिए गद्यांश में दिए गए कठिन शब्दों, मुहावरों आदि को रेखांकित करना चाहिए।
- प्रश्न के उत्तर निर्धारित अंक सीमा को ध्यान में रखकर ही लिखने चाहिए।
- प्रत्येक प्रश्न का उत्तर गद्यांश के अनुरूप ही होना चाहिए, गद्यांश के बाहर के मिलते-जुलते भावों का प्रयोग अपने उत्तर लिखने के दौरान नहीं करना चाहिए।
- शीर्षक संबंधी प्रश्न पर विशेष ध्यान देना चाहिए तथा पूरे गद्यांश को पढ़ने व समझने के पश्चात् ही उसका शीर्षक कम-से-कम शब्दों में ही लिखना चाहिए।
- प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ने व समझने के पश्चात् ही उनका उत्तर लिखना प्रारंभ करना चाहिए।
- अंत में एक बार सभी प्रश्नों के उत्तर को पुनः ध्यानपूर्वक पढ़कर जाँच लेना चाहिए।

## साधित उदाहरण

1. सूर्य अस्त हो गया था। पक्षी चहचहाते हुए अपने नीड़ की ओर जा रहे थे। गाँव की कुछ स्त्रियाँ अपने घड़े लेकर कुएँ पर जा पहुँची। पानी भरकर कुछ स्त्रियाँ तो अपने घरों को लौट गईं, परंतु चार स्त्रियाँ कुएँ की पक्की जगत पर ही बैठकर आपस में बातचीत करने लगीं। तरह-तरह की बातचीत करते-करते बात बेटों पर जा पहुँची। उनमें से एक की उम्र सबसे बड़ी लग रही थी। वह कहने लगी “भगवान सबको मेरे जैसा ही बेटा दे। वह लाखों में एक है। उसका कंठ बहुत मधुर है।

उसके गीत को सुनकर कोयल और मैना भी चुप हो जाती है। सच में, मेरा बेटा तो अनमोल हीरा है।” उसकी बात सुनकर दूसरी अपने बेटे की प्रशंसा करते हुए बोली “बहन मैं तो समझती हूँ कि मेरे बेटे की बराबरी कोई नहीं कर सकता। वह बहुत ही शक्तिशाली और बहादुर है। वह बड़े-बड़े पहलवानों को भी पछाड़ देता है। वह आधुनिक युग का भीम है। मैं तो भगवान से कहती हूँ कि वह मेरे जैसा बेटा सबको दे।” दोनों स्त्रियों की बात सुनकर तीसरी भला क्यों चुप रहती? वह भी अपने को रोक न सकी। वह बोल उठी-“मेरा बेटा साक्षात् बृहस्पति का अवतार है। वह तो कुछ पढ़ता है, एकदम याद कर लेता है। ऐसा लगता है बहन, मानों उसके कंठ में सरस्वती का वास हो।”

तीनों की बात सुनकर चौथी स्त्री चुपचाप बैठी रही। उसका भी एक बेटा था। परंतु उसने अपने बेटे के बारे में कुछ नहीं कहा। जब पहली स्त्री ने उसे टोकते हुए पूछा कि उसके बेटे में क्या गुण है, तब चौथी स्त्री ने सहज भाव से कहा “मेरा बेटा ना गंधर्व-सा गायक है, न भीम-सा बलवान और न ही बृहस्पति-सा बुद्धिमान।” यह कहकर वह शांत बैठ गई। कुछ देर बाद जब वे घड़े सिर पर रखकर लौटने लगीं, तभी किसी के गीत का मधुर स्वर सुनाई पड़ा, गीत सुनकर सभी स्त्रियाँ ठिठक गईं। पहली स्त्री शीघ्र ही बोल उठी “मेरा हीरा गा रहा है। तुम लोगों ने सुना, उसका कंठ कितना मधुर है।” तीनों स्त्रियाँ बड़े ध्यान से उसे देखने लगीं। वह गीत गाता हुआ उसी रास्ते से निकल गया। उसने अपनी माँ की तरफ ध्यान नहीं दिया।

थोड़ी देर बाद दूसरी का बेटा दिखाई दिया। दूसरी स्त्री ने बड़े गर्व से कहा, “देखो मेरा बलवान बेटा आ रहा है। वह बातें कर रही थी कि उसका बेटा भी उसकी ओर ध्यान दिए बगैर निकल गया।” तभी तीसरी स्त्री का बेटा उधर से संस्कृत के श्लोकों का पाठ करता हुआ निकला। तीसरी ने बड़े गद्गद स्वर में कहा “देखो, मेरे बेटे के कंठ में सरस्वती का वास है। वह भी माँ की ओर देखे बिना आगे बढ़ गया। वह अभी थोड़ी दूर गया होगा कि चौथी स्त्री का बेटा भी अचानक उधर से आ निकला। वह देखने में बहुत सीधा-सादा और सरल प्रवृत्ति का लग रहा था। उसे देखकर चौथी स्त्री ने कहा, “बहन, यही मेरा बेटा है।” तभी उसका बेटा पास आ पहुँचा। अपनी माँ को देखकर रुक गया और बोला, “माँ लाओ मैं तुम्हारा घड़ा पहुँचा दूँ। माँ ने मना किया, फिर भी उसने माँ के सिर से पानी का घड़ा उतारकर अपने सिर पर रख लिया और घर की ओर चल पड़ा। तीनों स्त्रियाँ बड़े ही आश्चर्य से देखती रहीं। एक वृद्ध महिला बहुत देर से उनकी बातें सुन रही थी। वह उनके पास आकर बोली, “देखती क्या हो। यही सच्चा हीरा है।”

[2018]

- (क) पहली तथा दूसरी स्त्री ने अपने-अपने बेटे के विषय में क्या कहा? (2)

**उत्तर** पहली स्त्री ने अपने बेटे के विषय में कहा कि “मेरा बेटा लाखों में एक है। उसका कंठ बहुत मधुर है। उसके गीत को सुनकर कोयल और मैना भी चुप हो जाती है। सच में मेरा बेटा तो अनमोल हीरा है।” दूसरी स्त्री ने अपने बेटे के विषय में कहा कि मेरे “बेटे की बराबरी कोई नहीं कर सकता। वह बहुत ही शक्तिशाली और बहादुर है। वह बड़े-बड़े पहलवानों को भी पछाड़ देता है। वह आधुनिक युग का भीम है।”

- (ख) तीसरी स्त्री ने अपने बेटे को ‘बृहस्पति का अवतार’ क्यों कहा? (2)

**उत्तर** तीसरी स्त्री ने अपने बेटे को ‘बृहस्पति का अवतार’ इसलिए कहा, क्योंकि वह उसे बुद्धिमान मानती है। वह जो कुछ पढ़ता है उसे एकदम याद कर लेता है। बृहस्पति ज्ञान एवं शिक्षण का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसी कारण तीसरी स्त्री ने अपने बेटे को बृहस्पति का अवतार माना।

- (ग) पहली स्त्री द्वारा पूछे जाने पर चौथी स्त्री ने क्या कहा? (2)

**उत्तर** पहली स्त्री द्वारा पूछे जाने पर कि तुम्हारे बेटे में क्या गुण है, चौथी स्त्री ने सहज भाव से कहा कि “मेरा बेटा ना गंधर्व-सा गायक है, न भीम-सा बलवान और न ही बृहस्पति-सा बुद्धिमान” अर्थात् उसके बेटे में अन्य तीनों स्त्रियों के बेटों के समान कोई गुण नहीं है।

- (घ) चौथी स्त्री के बेटे ने अपनी माँ के साथ कैसा व्यवहार किया, यह देखकर तीनों स्त्रियों को कैसा लगा? (2)

**उत्तर** चौथी स्त्री के बेटे ने अपनी माँ के साथ उचित व्यवहार किया। उसने अपनी माँ के सिर से पानी के घड़े को उतारकर अपने सिर पर रख कर घर पहुँचाया। इस प्रकार उसने अपनी माँ की सहायता की। यह देखकर तीनों स्त्रियाँ आश्चर्यचकित रह गईं।

- (ङ) बच्चों को अपने माता-पिता के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? समझाइए। (2)

**उत्तर** बच्चों को अपने माता-पिता के साथ सद्व्यवहार करना चाहिए तथा उनकी सेवा करनी चाहिए। साथ ही उनके दैनिक कार्यों में सहायता भी करनी चाहिए, जिस प्रकार गद्यांश में चौथी स्त्री के बेटे ने उसकी सहायता की, उसी प्रकार हमें भी अपने माता-पिता की सहायता करनी चाहिए।

2. पंजाब में उस वर्ष भयंकर अकाल पड़ा था। उन दिनों वहाँ महाराणा रणजीत सिंह का राज था। उन्होंने यह घोषणा करवा दी, “महाराज के आदेश से शाही भंडार-गृह हर जरूरतमंद के लिए खुला है। प्रत्येक जरूरतमंद एक बार में जितना उठा सके, ले जाए।” यह घोषणा सुनते ही गाँवों व शहरों से जरूरतमंदों की भीड़ राजमहल में उमड़ पड़ी। उन दिनों लाहौर में एक सद्गृहस्थ बूढ़े सज्जन रहते थे। वे कट्टर सनातनी विचारों के थे। उन्होंने जीवन में कभी भी किसी के आगे अपना हाथ नहीं फैलाया था। अंधेरा होने पर वह शाही भंडार के दरवाजे पर पहुँचे। द्वार खुला था किसी तरह की कोई जाँच-पड़ताल नहीं हुई। उन्होंने बड़े संकोच से अपनी चादर को फैलाया, उसके कोने में थोड़ा सा अनाज बाँध लिया। ज्यादा अनाज उठाना उनके लिए

मुश्किल था। इतने में पगड़ी बाँधे एक व्यक्ति वहाँ आया। उसने कहा, “भ्राताजी आपने तो काफी कम अनाज लिया है।” बूढ़े सज्जन ने कहा, “असल में मैं बूढ़ा लाचार हूँ। इस अकाल में तो थोड़ा अनाज लेना ही सही है, जिससे सब जरूरतमंदों को मिल जाए।”

उस व्यक्ति ने बूढ़े की गठरी खोल दी। उसमें भरपूर अनाज भर दिया। बूढ़े सज्जन ने कहा, “मैं इतना अनाज नहीं उठा सकता और न ही इसकी मजदूरी का पैसा दे सकता हूँ।” इतने में उस अजनबी ने बूढ़े की गठरी अपने कंधों पर ले ली और बूढ़े के पीछे-पीछे चल पड़ा।

जब वे बूढ़े के घर के द्वार पर पहुँचे तो वहाँ दो बच्चे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्हें देखते ही वे बोले—“बाबा, कहाँ चले गए थे?” बूढ़ा खामोश रहा। अजनबी ने कहा, “घर में कोई बड़ा लड़का नहीं है?” बूढ़ा बोला, “लड़का था लेकिन काबुल की लड़ाई में शहीद हो गया। अब बहू है तथा मेरे ये पोते हैं।” वह अजनबी बोला, भाई जी धन्य हैं आप, जिनका बेटा देश के लिए शहीद हो गया।

रोशनी में बूढ़े ने उस अजनबी को पहचान लिया। वे खुद महाराज रणजीत सिंह थे। बूढ़े ने पोतों से कहा, “इनके सामने दंडवत प्रणाम करो” और स्वयं भी प्रणाम करने लगे और थोड़ी देर बाद बोले, “आज मुझसे बड़ा पाप हो गया। आपसे बोझा उठवाया।” “नहीं, यह पाप नहीं, मेरा सौभाग्य था कि मैं शहीद के परिवार की सेवा कर सका। आप सबकी सेवा करना मेरा फर्ज है। अब आप जीवन भर हमारे साथ रहिए और हमें कृतार्थ कीजिए।” [2017]

(क) राज्य को किस विपत्ति का सामना करना पड़ा था? उन दिनों वहाँ के राजा कौन थे और उन्होंने उस समस्या का क्या समाधान निकाला? (2)

**उत्तर** पंजाब राज्य को अकाल रूपी विपत्ति का सामना करना पड़ा था। अकाल के दिनों में पंजाब के राजा महाराणा रणजीत सिंह थे।

उन्होंने अकाल की समस्या का समाधान करने के लिए शाही भंडार गृह के द्वार प्रत्येक जरूरतमंद के लिए खुलवा दिए थे।

(ख) राजा ने राज्य में क्या घोषणा करवाई और क्यों? (2)

**उत्तर** राजा महाराणा रणजीत सिंह ने राज्य में अकाल पड़ने के कारण घोषणा करवाई थी कि शाही भंडारगृह के द्वार प्रत्येक जरूरतमंद के लिए खोल दिए जाएँ और हर जरूरतमंद व्यक्ति एक बार में जितना अनाज उठा सकता है, उतना ले जाए।

(ग) बूढ़े आदमी के बारे में आप क्या जानते हैं? उनका पूर्ण परिचय दीजिए। (2)

**उत्तर** बूढ़े आदमी लाहौर के सद्गृहस्थ परिवार से संबंध रखते थे, वे कट्टर सनातनी विचारों वाले व्यक्ति थे। उनका पुत्र काबुल युद्ध में शहीद हो गया था, जिस कारण परिवार की पूरी जिम्मेदारी उनके ऊपर आ गई थी। वे एक संवेदनशील एवं परिश्रमी व्यक्ति थे। उन्होंने अकाल के समय भंडारगृह से बहुत ही कम मात्रा में अनाज लिया था, ताकि सभी जरूरतमंद लोगों को थोड़ा-थोड़ा अनाज मिल जाए।

(घ) बूढ़े आदमी ने थोड़ा-सा अनाज ही क्यों लिया था? कारण स्पष्ट करते हुए बताइए कि उस अजनबी व्यक्ति ने उस बूढ़े व्यक्ति की कैसे सहायता की? (2)

**उत्तर** बूढ़े व्यक्ति ने अपने बूढ़े एवं लाचार होने व अकाल जैसी विपत्ति के दिनों में सभी जरूरतमंदों को अनाज उपलब्ध हो जाने की मंशा के कारण थोड़ा-सा ही अनाज लिया था। अजनबी व्यक्ति अर्थात् महाराणा रणजीत सिंह ने उनकी गठरी खोल कर उसमें अनाज भरा और उसे उनके घर छोड़कर उनकी सहायता की थी।

(ङ) इस गद्यांश से मिलने वाली शिक्षाओं पर प्रकाश डालिए। (2)

**उत्तर** प्रस्तुत गद्यांश को पढ़कर हमें यह शिक्षा मिलती है कि मनुष्य को चाहे वह राजा हो या प्रजा उसे व्यक्तिगत जरूरतों के स्थान पर राष्ट्रहित को महत्त्व देना चाहिए।

# प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए।

1. कौशल देश के वृद्ध राजा के चार पुत्र थे। उन्हें यह चिंता सताने लगी थी कि राज्य का उत्तराधिकारी किसे बनाया जाए? सोच-विचार के बाद अपने चारों पुत्रों को बुलाकर राजा ने कहा—“तुम चारों में से जो सबसे बड़े धर्मात्मा को मेरे पास लेकर आएगा वही राज्य का स्वामी बनेगा।” तत्पश्चात् चारों राजकुमार अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े।

कुछ दिनों बाद बड़ा पुत्र अपने साथ एक महाजन को लेकर आया और राजा से बोला ये महाजन लाखों रुपयों का दान कर चुके हैं, अनेक मंदिर व धर्मशालाएँ बनवा चुके हैं तथा साधु-संतों और ब्राह्मणों को भोजन कराने के उपरांत ही ये भोजन करते हैं। इनसे बड़ा धर्मात्मा कौन होगा?

“हाँ, वास्तव में ये धर्मात्मा हैं।” राजा ने कहा तथा उन्हें सत्कारपूर्वक विदा किया। इसके बाद दूसरा पुत्र एक कृशकाय ब्राह्मण को लेकर आया और राजा से बोला, “ये ब्राह्मण देवता चारों धामों की यात्रा कर आए हैं, कोई तामसी वृत्ति इन्हें छू नहीं पाई है। इनसे बड़कर कोई धर्मात्मा नहीं है।”

राजा ब्राह्मण के समक्ष नतमस्तक हुए और दान-दक्षिणा देकर बोले—“इसमें कोई संदेह नहीं कि ये एक श्रेष्ठ धर्मात्मा हैं।” तभी तीसरा पुत्र एक साधु को लेकर पहुँचा और बोला—“ये साधु महाराज सप्ताह में केवल एक बार दूध पीकर रहते हैं। भयंकर सर्दी में जल में खड़े रहते हैं और गर्मी में पंचाम्नि तापते हैं। ये सबसे बड़े धर्मात्मा हैं।”

राजा ने साधु को प्रणाम किया और कहा—“निश्चय ही वे एक उत्तम साधु हैं। साधु महाराज राजा को आशीर्वाद देकर विदा हुए।

अंत में सबसे छोटा पुत्र एक निर्धन किसान के साथ आया। किसान दूर से ही भय के मारे हाथ जोड़ता चला आ रहा था। तीनों भाई छोटे भाई की मूर्खता पर ठहाका लगाकर हँस पड़े। छोटा पुत्र बोला—“एक कुत्ते के शरीर पर लगे घाव को यह आदमी धो रहा था। पता नहीं कि यह धर्मात्मा है या नहीं, अब आप ही इससे पूछ लीजिए।”

राजा ने पूछा—“तुम क्या धर्म-कर्म करते हो?” किसान डरते-डरते बोला—“मैं अनपढ़ हूँ धर्म किसे कहते हैं, यह मैं नहीं जानता? कोई बीमार है, तो सेवा कर देता हूँ। कोई माँगता है, तो मुट्ठी भर अन्न अवश्य दे देता हूँ।”

राजा ने कहा—“यह किसान ही सबसे बड़ा धर्मात्मा है।” राजा की बात सुनकर तीनों बड़े लड़के एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। राजा ने पुनः कहा—“तीर्थयात्रा करना, भगवान् की भक्ति में लीन रहना, दान-पुण्य करना और जप-तप करना भी धर्म है, किंतु बिना किसी स्वार्थ के किसी दीन-दुःखी और कष्ट में पड़े हुए प्राणी की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है, जो परोपकार करता है, वही सबसे बड़ा धर्मात्मा है।”

[2015]

- (क) राजा को क्या चिंता थी? उसने अपने पुत्रों को बुलाकर क्या कहा? (2)
- (ख) बड़े पुत्र की दृष्टि में सबसे बड़ा धर्मात्मा कौन था और उसका क्या कारण था? (2)
- (ग) साधु किसके साथ आया था? उसका परिचय किस प्रकार दिया गया? (2)
- (घ) किसान को राजा के सामने कौन लाया था और क्यों? राजा ने किसान को ही सबसे बड़ा धर्मात्मा क्यों कहा? (2)
- (ङ) प्रस्तुत गद्यांश से क्या शिक्षा मिलती है? (2)

2. झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम थे—हीरा और मोती। दोनों पछाई जाति के थे—देखने में सुंदर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक-दूसरे से मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे। एक-दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाते थे, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक-दूसरे को चाटकर और सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे—विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हल्की-सी रहती है, जिस पर अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता। जिस वक्त ये दोनों बैल हल या गाड़ी में जोत दिए जाते और गर्दन हिला-हिलाकर चलते, उस वक्त हर एक की यही चेष्टा होती थी कि अधिक-से-अधिक बोझ मेरी ही गर्दन पर रहे। दिन-भर के बाद दोपहर या संध्या को दोनों खुलते, तो एक-दूसरे को चाट-चूटकर अपनी थकान मिटा लिया करते। नाँद में खली-भूसा पड़ जाने के बाद दोनों साथ उठते, साथ नाँद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे। एक मुँह हटा लेता, तो दूसरा भी हटा लेता था।

संयोग की बात, झूरी ने एक बार गोंई को ससुराल भेज दिया। बैलों को क्या मालूम, वे क्यों भेजे जा रहे हैं? समझे, मालिक ने हमें बेच दिया। अपना यों बेचा जाना उन्हें अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने? पर झूरी के साले गया को घर तक गोंई ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दाँ-बाँ भागते, पगहिया पकड़कर आगे से खींचता, तो दोनों पीछे को ज़ोर लगाते। मारता तो दोनों सींग नीचे करके हुंकारते।

अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती, तो झूरी से पूछते-तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। अगर इतनी मेहनत से काम न चलता था तो और काम ले लेते। हमें तो तुम्हारी चाकरी में मर जाना कबूल था। हमने कभी दाने-चारे की शिकायत नहीं की। तुमने जो कुछ खिलाया, वह सिर झुकाकर खा लिया, फिर तुमने हमें इस जालिम के हाथ क्यों बेच दिया?

संध्या समय दोनों बैल अपने नए स्थान पर पहुँचे। दिन-भर के भूखे थे, लेकिन जब नाँद में लगाए गए, तो एक ने भी उसमें मुँह न डाला। दिल भारी हो रहा था। जिसे उन्होंने अपना घर समझ रखा था, वह आज उनसे छूट गया था। यह नया घर, नया गाँव, नए आदमी, उन्हें बेगानों-से लगते थे।

दोनों ने अपनी मूक-भाषा में सलाह की, एक-दूसरे को कनखियों से देखा और लेट गए। जब गाँव में सोता पड़ गया, तो दोनों ने जोर मारकर पगहे तुड़ा डाले और घर की तरफ चले। पगहे बहुत मज़बूत थे। अनुमान न हो सकता था कि कोई बैल उन्हें तोड़ सकेगा, पर इन दोनों में इस समय दूनी शक्ति आ गई थी। एक-एक झटके में रस्सियाँ टूट गईं।

झूरी प्रातःकाल सोकर उठा, तो देखा कि दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं। दोनों की गर्दनो में आधा-आधा गराँव लटक रहा है। घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे हैं और दोनों की आँखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा है। झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्गद् हो गया। दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। प्रेमालिंगन और चुंबन का वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था।

(क) बैल किसके थे? बैलों की विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (2)

(ख) दोनों बैलों के आपसी संबंधों की विवेचना कीजिए। (2)

(ग) झूरी ने बैलों को कहाँ भेजा? गया को बैलों को घर ले जाने में किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा? (2)

(घ) नए घर में जाने पर भी बैल खुश क्यों नहीं थे? स्पष्ट कीजिए। (2)

(ङ) इस गद्यांश का मूल कथ्य क्या है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। (2)

3. महान् रसायनशास्त्री आचार्य नागार्जुन को अपनी प्रयोगशाला के लिए दो सहायकों की आवश्यकता थी। अनेक युवक उनके पास आए और निवेदन किया कि वे उन्हें अपने सहायक के रूप में नियुक्त कर लें, लेकिन परीक्षा लेने पर सभी प्रत्याशी अयोग्य साबित हुए। अंत में आचार्य निराश हो गए। उनकी निराशा का कारण यह था कि युवकों में रसायनशास्त्र के ज्ञाता तो बहुत थे और अपने विषय से परिचित भी, लेकिन एक रसायनशास्त्री के लिए जो एक पवित्र ध्येय होता है, उसका सभी में अभाव था। प्रत्याशियों में से किसी को अपने वेतन की चिंता थी, किसी को अपने परिवार की, तो किसी को अपना भविष्य उज्ज्वल बनाना था, पर आचार्य नागार्जुन को ऐसे सहायक की आवश्यकता नहीं थी। उनके मन और विचार में कुछ और ही था। निराश होकर उन्होंने सहायक की आवश्यकता होते हुए भी स्वयं ही सारा कार्य करने का निश्चय कर लिया।

कुछ दिन बाद ही दो युवक आचार्य के पास आए, उन्होंने उनसे निवेदन किया कि वे उन्हें अपना सहायक नियुक्त कर लें। आचार्य ने पहले तो उन्हें लौटा देना चाहा, लेकिन युवकों के अधिक आग्रह पर उन्होंने उनकी परीक्षा लेने का निश्चय किया। आचार्य ने दोनों युवकों को एक पदार्थ देकर दो दिन के भीतर ही उसका रसायन तैयार कर लाने को कहा। दोनों युवक पदार्थ लेकर अपने घर लौट गए।

दो दिन बाद एक युवक रसायन तैयार करके सुबह-सुबह ही उनके पास पहुँचा और रसायन का पात्र उन्हें देते हुए बोला “लीजिए आचार्य जी, रसायन तैयार है।” रसायन के पात्र की ओर बिना देखे ही आचार्य ने प्रश्न किया, “तो रसायन तैयार कर लिया तुमने?”

रसायन का पात्र एक ओर रखते हुए युवक ने कहा, ‘जी हाँ’। आचार्य ने दूसरा प्रश्न किया, “रसायन तैयार करते समय किसी भी प्रकार की कोई बाधा तो उपस्थित नहीं हुई?” युवक ने सकुचाते हुए उत्तर दिया, “बाधाएँ तो बहुत आई थीं, लेकिन मैंने किसी भी बाधा की चिंता किए बिना अपना कार्य चालू ही रखा तथा रसायन तैयार कर लिया। यदि मैं बाधाओं में उलझ गया होता, तो रसायन तैयार हो ही नहीं सकता था। एक ओर तो पिता के पेट में भयंकर शूल था, दूसरी ओर माता ज्वर से पीड़ित थीं। ऊपर से मेरा छोटा भाई टाँग तुड़वाकर पीड़ा से कराह रहा था, परंतु ये बातें मुझे रसायन बनाने से विचलित नहीं कर सकीं।”

तभी दूसरा युवक खाली हाथ आकर वहाँ खड़ा हो गया आचार्य जी ने उससे पूछा, रसायन कहाँ है? युवक ने झिझकते हुए उत्तर दिया, “आचार्य जी, मैं क्षमा चाहता हूँ। मैं रसायन तैयार नहीं कर सका, क्योंकि जाते समय मार्ग में एक वृद्ध व्यक्ति मिल गया था। वह एक सड़क दुर्घटना में घायल हो गया था। मेरा सारा समय उसकी सेवा में ही व्यतीत हो गया।”

आचार्य ने पहले युवक से कहा, “तुम जा सकते हो। मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं। रसायनशास्त्री यदि पीड़ा से कराहते हुए व्यक्ति की उपेक्षा करे, तो वह अपने शास्त्र में अपूर्ण है।” दूसरे युवक को उन्होंने अपना सहायक नियुक्त कर लिया। भविष्य में वही युवक उनका दायों हाथ बना और उन्हें अति प्रिय लगने लगा। [2014]

(क) आचार्य को कैसे सहायकों की आवश्यकता थी और क्यों? (2)

(ख) आचार्य की निराशा का क्या कारण था? निराश होकर उन्होंने क्या किया? (2)

(ग) आचार्य ने दोनों युवकों की परीक्षा लेने का क्या उपाय सोचा तथा क्यों? (2)

(घ) दूसरा युवक रसायन क्यों तैयार नहीं कर सका? इससे उसके चरित्र का कौन-सा गुण स्पष्ट होता है? (2)

(ङ) आचार्य ने अपना सहायक किसे और क्यों चुना? (2)

4. रमजान के पूरे तीस रोज़ों के बाद आज ईद आई है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। वृक्षों पर कुछ अज़ीब हरियाली है, खेतों में कुछ अज़ीब रौनक है, आसमान पर कुछ अज़ीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है, मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुर्ते में बटन नहीं हैं, तो पड़ोस के घर से सुई-तागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गए हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर भागा जाता है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें। ईदगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जाएगी। तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलना-भेंटना।

दोपहर के पहले लौटना असंभव है। लड़के सबसे अधिक प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोज़ा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज़ है। रोज़े बड़े-बूढ़ों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज़ ईद का नाम रटते थे। आज वह आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते? इन्हें गृहस्थी की चिंताओं से क्या प्रयोजन?



सेवैयों के लिए दूध और शक्कर घर में है या नहीं, इनकी बला से। ये तो सेवैयाँ खाएँगे। वह क्या जानें कि अब्बाजान क्यों बदहवास चौधरी कायमअली के घर दौड़े जा रहे हैं। उन्हें क्या खबर कि चौधरी आज आँखें बदल ले, तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाए। उनकी अपनी जेबों में तो कुबेर का धन भरा हुआ है? बार-बार जेब से अपना खजाना निकालकर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं।

महमूद गिनता है, एक-दो, दस-बारह। उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास एक, दो, तीन, आठ, नौ पंद्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनत पैसों में अनगिनत चीज़ें लाएँगे—खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और न जाने क्या-क्या और सबसे अधिक प्रसन्न है हामिद? वह चार-पाँच साल का गरीब-सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत-वर्ष हैजे को भेंट हो गया और माँ जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गई? किसी को पता न चला, क्या बीमारी है? कहती भी तो कोई सुनने वाला न था? दिल पर जो कुछ बीतती थी, वह दिल में ही सहती थी और जब न सहा गया तो संसार से विदा हो गई। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है। उसके अब्बाजान रुपये कमाने गए हैं।

बहुत-सी थैलियाँ लेकर आएँगे। अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए बड़ी अच्छी-अच्छी चीज़ें लाने गई हैं, इसलिए हामिद प्रसन्न है। आशा तो बड़ी चीज़ है और फिर बच्चों की आशा! उनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती है।

(क) उपरोक्त गद्यांश में कहाँ जाने की तैयारियाँ हो रही हैं और क्यों?

(2)

(ख) लड़कों की प्रसन्नता का क्या कारण था?

(2)

(ग) “सारी ईद मुहर्रम हो जाए”— इस पंक्ति से क्या अभिप्राय है?

(2)

(घ) हामिद कौन था? वह किसके साथ रहता था?

(2)

(ङ) “आशा बड़ी चीज़ होती है और बच्चों की आशा, उनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती है”— इस सूक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

(2)

5. नामू की माँ ने अपने बेटे से कहा, “जा, कुल्हाड़ी लेकर पलाश के पेड़ से कुछ छाल उतार ला।”

“अभी आया माँ।” कहकर नामू ने कुल्हाड़ी उठाई और जंगल की ओर निकल गया। वहाँ उसने पलाश के पेड़ की छाल उतारी और फिर घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में विचार करने लगा कि जब मैं कुल्हाड़ी से पेड़ पर प्रहार करता था, तो एक आवाज़ पेड़ से निकलती थी, कहीं वह आवाज़ पेड़ की कराह तो नहीं थी? जब मैं कुल्हाड़ी से पेड़ पर प्रहार करता होऊँगा, तो पेड़ को पीड़ा भी तो होती होगी।

नामू ने घर आकर पलाश की छाल माँ को सौंप दी और स्वयं घर से दूर कुल्हाड़ी लेकर जा बैठा। वहाँ बैठकर उसने कुल्हाड़ी से अपना पैर रगड़ना शुरू किया। रगड़ के साथ पाँव में पीड़ा भी होती थी, खून बहता था और नामू के मुँह से हल्की-हल्की चीखें भी निकलती थीं। यह सब उसने पेड़ की पीड़ा को अनुभव करने के लिए किया था।

कुछ देर बाद वह घर लौट आया और माँ से खाना माँगा। चेहरे पर पीड़ा की स्पष्ट रेखाएँ उभर आई थीं, मगर वह चुप था। माँ ने देखा, लेकिन कुछ समझी नहीं। एकाएक माँ की दृष्टि उसके कपड़ों पर पड़ी, जो खून से लाल हो चुके थे। माँ ने घबराकर पूछा! “यह क्या हुआ, नामू?”

“कुछ नहीं माँ, तुम चिंता मत करो।”

माँ और अधिक घबराकर बोली, “चिंता कैसे न करूँ बेटा, तेरे शरीर का खून देखकर मैं चिंता नहीं करूँगी”, तो फिर और कौन चिंता करेगा?

नामू कहने लगा, “माँ तुमने पलाश की छाल मँगवाई थी, तो कुल्हाड़ी से छाल उतारते हुए, मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि पेड़ कराह रहा है जैसे उसे पीड़ा हो रही हो। अपने पाँव पर कुल्हाड़ी की रगड़ से मैं यह जानना चाहता था कि क्या सभी को एक-सी पीड़ा होती है?”

बेटे की बात सुनकर, माँ का हृदय भर आया। माँ की आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली। उसने नामू को गले लगाते हुए कहा, “लगता है, मेरे पुत्र के रूप में किसी संत ने जन्म लिया है। बेटे, तू पराए दुःख से दुःखी होकर, उस दुःख का अनुभव करना चाहता था, पराया दुःख भी पेड़ का, जिसमें तुझे प्राण दिखाई दिए। अवश्य ही तू, एक दिन बड़ा संत बनेगा।” इस प्रकार माँ ने उसे संत बनने का आशीर्वाद दिया।

आगे चलकर यह ‘नामू’ नामदेव के नाम से महाराष्ट्र का प्रसिद्ध संत हुआ।

वास्तव में दया, धर्म का भाव रखना और दूसरे के दुःख को महसूस करना संतों का स्वभाव होता है। आज अपने पर्यावरण को बचाने के लिए नामदेव जैसे संतों की आवश्यकता है, जिनके मन में न केवल जीवों के प्रति ही दया की भावना हो, बल्कि पेड़, पौधों के लिए भी अपनेपन का भाव हो। आज के स्वार्थी मानव ने प्रकृति के प्रति जिस प्रकार का व्यवहार किया है, वह निंदनीय है, क्योंकि मानव के लोभ ने, धरती के अस्तित्व को ही संकट में डाल दिया है। [2013]

(क) नामू को माँ ने क्या आदेश दिया था? माँ के आदेश का पालन करते समय उसने क्या विचार किया?

(2)

(ख) घर आकर नामू ने क्या किया और क्यों?

(2)

(ग) माँ क्या देखकर चिंतित हुई? उनका हृदय क्यों भर आया?

(2)

(घ) संत के स्वभाव की क्या विशेषता होती है? आगे चलकर नामू किस रूप में प्रसिद्ध हुआ?

(2)

(ङ) आपको इस गद्यांश से क्या शिक्षा मिली? पेड़-पौधों की सुरक्षा क्यों आवश्यक है?

(2)

6. एक बार एक ग्राहक चित्रों की दुकान पर गया, उसने वहाँ पर अजीब से चित्र देखे। पहले चित्र में चेहरा पूरी तरह बालों से ढका हुआ था और पैरों में पंख थे। एक-दूसरे चित्र में सिर पीछे से गंजा था। ग्राहक ने पूछा—“यह चित्र किसका है?”

दुकानदार ने कहा—“अवसर का।”

ग्राहक ने पूछा—“इसका चेहरा बालों से ढका क्यों है?”

दुकानदार ने कहा—“क्योंकि अक्सर जब अवसर आता है, तो मनुष्य उसे पहचानता नहीं है।”

ग्राहक ने पूछा—“और इसके पैरों में पंख क्यों हैं?”

दुकानदार ने कहा—“वह इसलिए कि यह तुरंत वापस भाग जाता है, यदि इसका उपयोग न हो तो यह तुरंत उड़ जाता है।”

ग्राहक ने पूछा—“और यह दूसरे चित्र में पीछे से गंजा सिर किसका है?”

दुकानदार ने कहा—“यह भी अवसर का है। यदि अवसर को सामने से ही बालों से पकड़ लेंगे तो वह आपका है। अगर आपने उसे थोड़ी देरी से पकड़ने की कोशिश की, तो पीछे का गंजा सिर हाथ आएगा और वो फिसलकर निकल जाएगा।” वह ग्राहक इन चित्रों का रहस्य जानकर हैरान था, पर अब वह बात समझ चुका था।

आपने कई बार दूसरों को ये कहते हुए सुना होगा या खुद भी कहा होगा कि “हमें अवसर ही नहीं मिला”, लेकिन ये अपनी ज़िम्मेदारी से भागने और अपनी गलती को छुपाने का बस एक बहाना है। वास्तव में, भगवान् ने हमें ठेरों अवसरों के बीच जन्म दिया है।

अवसर हमेशा हमारे सामने से आते-जाते रहते हैं, पर हम उन्हें पहचान नहीं पाते या पहचानने में देर कर देते हैं और कई बार हम सिर्फ इसलिए चूक जाते हैं, क्योंकि हम बड़े अवसर की ताक में रहते हैं, लेकिन अवसर बड़ा या छोटा नहीं होता। हमें हर अवसर का भरपूर उपयोग करना चाहिए।

- (क) ग्राहक कहाँ गया और उसने वहाँ क्या देखा? (2)
- (ख) पहला चित्र किसका था? उसके द्वारा क्या संदेश दिया गया है? (2)
- (ग) दूसरे चित्र का वर्णन करते हुए दुकानदार ने क्या कहा? (2)
- (घ) “हमें अवसर नहीं मिला”— इस कथन को लेखक किस रूप में देखता है? (2)
- (ङ) मनुष्य अवसर का भरपूर लाभ क्यों नहीं उठा पाता? (2)

7. एक चोर किसी मंदिर का घंटा चुराकर ले गया था। वन में जाते हुए उसका सामना बाघ से हो गया और चोर बाघ के द्वारा मारा गया। उसी वन में वह घंटा बंदरों के हाथ में पड़ गया। वन बहुत घना था। बंदर झाड़ियों के अंदर रहते थे, जब उनकी मौज होती, वे घंटा बजाते। घंटे की आवाज़ सुनकर समीप के नगर में यह अफ़वाह फैल गई कि जंगल में भूत रहता है और उसका नाम घंटाकरण है। उसके कान घंटे के समान हैं, जब वह हिलता है, तो कानों से घंटे की आवाज़ आती है। इस अफ़वाह से लोग ऐसे भयभीत हुए कि जंगल की ओर भूलकर भी कोई नहीं जाता था। सब जंगल से दूर-दूर ही रहते थे। जंगल से लकड़हारे लकड़ियाँ न लाते थे, चरवाहे जंगल में पशुओं को चराने के लिए न जाते थे। किसी में इतना हौसला न था कि जंगल में जाने का प्रयत्न कर पाता।

इस प्रकार सारा का सारा जंगल किसी के भी काम में न आकर कल्पित घंटाकरण भूत की राजधानी बन गया। अब तो राजा को भी बड़ी चिंता हुई। उसने सयानों और जादूगरों को इकट्ठा किया और कहा कि भाई इस भूत को जंगल से निकालो, क्योंकि सारा जंगल और हजारों रुपये की सालाना आमदनी बेकार हो रही है।

सब लोगों ने अपने-अपने उपाय करने प्रारंभ किए। पंडितों ने चंडी का जाप किया, हनुमान चालीसा का पाठ किया। मुल्लाओं ने कुरान का पाठ आरंभ किया। किसी ने भैरों को याद किया, किसी ने काली माता की मन्त्र की, किसी ने पीर-पैगंबर को मनाया, किसी ने जादू-टोना किया। इस पर भी घंटाकरण किसी के काबू में न आया। घंटे का शब्द सदा की भाँति सुनाई देता रहा और लोग समझते रहे कि घंटाकरण घंटा बजा रहा है।

तभी एक चतुर मनुष्य उधर कहीं से आ निकला। वह भूत-प्रेत, चंडी-मुंडी, पीर-पैगंबर, जादू-टोने आदि कपोल-कल्पित मिथ्या बातों पर विश्वास नहीं करता था। उसने विचार किया वन में हो न हो कोई विशेष बात होगी। संभव है कि वन में डाकू रहते होंगे और उन्होंने वन को अपने रहने के लिए सुरक्षित बनाने हेतु यह पाखंड रचा हो या कहीं बंदरों के हाथ में घंटा न पड़ गया हो।

ऐसा दृढ़ निश्चय कर वह चतुर मनुष्य साधु का वेश धरकर जंगल में घुसा। अंदर जाकर देखा तो उसने अपने अनुमान को सही पाया। लौटकर उसने नगर निवासियों से कहा, “भाइयों! मैंने भूत को पकड़ने का उपाय विचार लिया है। आप लोग मुझे एक गाड़ी और भुने चने दें, तो मैं कल ही भूत को पकड़ लेता हूँ।”

नगर के निवासी और राजा भूत के नाश के लिए सब कुछ करने को तैयार थे, झटपट सब सामान इकट्ठा कर दिया। चतुर मनुष्य ने जंगल में जाकर चने बंदरों के आगे डाल दिए। इधर सब बंदर चने खाने में लगे, उधर उसने घंटा उठाकर नगर की राह ली। अब क्या था? सारे नगर में और राजसभा में उस चतुर मनुष्य को बड़ा आदर मिला, फिर उसने सब भेद खोलकर लोगों के मिथ्या विश्वास को तोड़ा। उन्हें भूत से मुक्ति दिलाई।

इस कहानी के समान अनेक बातों के भ्रम में पड़कर मनुष्य ने भूत-प्रेत, जादू-टोना आदि अनेक प्रकार की कल्पनाएँ कर ली हैं। लोग भय और मिथ्या विश्वास के कारण वास्तविकता का पता नहीं लगाते हैं और झूठे उपाय कर-करके थकते हैं। वास्तव में भूत-प्रेत आदि यह सब ठग-लीला है। जादू-टोने सब लूटने-खाने के बहाने हैं। इनसे सदा बचने में ही मानव की भलाई है।

मिथ्या विश्वास से ही मनुष्य तरह-तरह के कष्टों में पड़ जाता है।

अतः यथासंभव मिथ्या विश्वास दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। [2012]

- (क) नगर में क्या अफ़वाह फैल गई थी और इस अफ़वाह का क्या कारण था? (2)
- (ख) जंगल किसकी राजधानी बन गया था? इससे नगर निवासियों पर क्या प्रभाव पड़ा? (2)
- (ग) राजा की चिंता का क्या कारण था? भूत को जंगल से निकालने के क्या-क्या उपाय किए गए? (2)
- (घ) चतुर मनुष्य का क्या अनुमान था? उसने नगर निवासियों को भूत से किस प्रकार मुक्ति दिलाई? (2)
- (ङ) प्रस्तुत गद्यांश से आपको क्या शिक्षा मिलती है? (2)

8. लाला झाऊलाल को खाने-पीने की कमी नहीं थी। काशी के ठठेरी बाज़ार में मकान था। नीचे की दुकानों से एक सौ रुपये मासिक के करीब किराया उतर आता था। अच्छा खाते थे, अच्छा पहनते थे, पर ढाई सौ रुपये तो एकसाथ आँख सेंकने के लिए भी न मिलते थे, इसलिए जब उनकी पत्नी ने एक दिन एकाएक ढाई सौ रुपये की माँग पेश की, तब उनका जी एक बार ज़ोर से सनसनाया और फिर बैठ गया। उनकी यह दशा देखकर पत्नी ने कहा—“डरिए मत, आप देने में असमर्थ हों, तो मैं अपने भाई से माँग लूँ?”

लाला झाऊलाल तिलमिला उठे, उन्होंने रोब के साथ कहा—“अजी हटो ढाई सौ रुपये के लिए भाई से भीख माँगोगी, मुझसे ले लेना।”

“लेकिन मुझे इसी ज़िंदगी में चाहिए।”

“अजी इसी सप्ताह में ले लेना।”

“सप्ताह से आपका तात्पर्य सात दिन से है या सात वर्ष से?”

लाला झाऊलाल ने रोब के साथ खड़े होते हुए कहा—“आज से सातवें दिन मुझसे ढाई सौ रुपये ले लेना।”

लेकिन जब चार दिन ज्यों-त्यों में यों ही बीत गए और रुपयों का कोई प्रबंध न हो सका, तब उन्हें चिंता होने लगी। प्रश्न अपनी प्रतिष्ठा का था, अपने ही घर में अपनी साख का था। देने का पक्का वादा करके अगर अब दे न सके, तो अपने मन में वह क्या सोचेगी? उसकी नज़रों में उसका क्या मूल्य रह जाएगा? अपनी वाहवाही की सैकड़ों गाथाएँ सुना चुके थे। अब जो एक काम पड़ा, तो चारों खाने चित हो रहे। यह पहली बार उसने मुँह खोलकर कुछ रुपयों का सवाल किया था। इस समय अगर दुम दबाकर निकल भागते हैं, तो फिर उसे क्या मुँह दिखाएँगे?

खैर, एक दिन और बीता। पाँचवें दिन घबराकर उन्होंने पं. बिलवासी मिश्र को अपनी विपदा सुनाई। संयोग कुछ ऐसा बिगड़ा था कि बिलवासी जी भी उस समय बिलकुल खुश थे, उन्होंने कहा—“मेरे पास हैं तो नहीं, पर मैं कहीं से माँग-जाँचकर लाने की कोशिश करूँगा और अगर मिल गया, तो कल शाम को तुमसे मकान पर मिलूँगा।”

वही शाम आज थी। हफ्ते का अंतिम दिन। कल ढाई सौ रुपये या तो गिनके देने हैं या सारी हँकड़ी से हाथ धोना है। यह सच है कि कल रुपया न आने पर उनकी स्त्री उन्हें डामलफाँसी न कर देगी—केवल ज़रा-सा हँस देगी, पर वह कैसी हँसी होगी, कल्पना मात्र से झाऊलाल में मरोड़ पैदा हो जाती थी।

- (क) झाऊलाल की आर्थिक स्थिति कैसी थी? (2)
- (ख) पत्नी ने झाऊलाल से क्या माँग की तथा उसका क्या परिणाम हुआ? (2)
- (ग) झाऊलाल को किस बात की चिंता होने लगी थी और क्यों? (2)
- (घ) पं. बिलवासी मिश्र कौन थे? उन्होंने लाला झाऊलाल को क्या कहा? (2)
- (ङ) गद्यांश के अंत में झाऊलाल की क्या मनोस्थिति थी, उसका वर्णन कीजिए। (2)

9. राणा संग्राम सिंह वीरगति प्राप्त कर चुके थे। चित्तौड़ के सिंहासन पर उनके पुत्र विक्रमादित्य बैठे, किंतु उनकी अयोग्यता के कारण राजपूत सरदारों ने उन्हें गद्दी से हटा दिया। राणा साँगा के छोटे पुत्र उदय सिंह राज्य के उत्तराधिकारी घोषित किए गए, किंतु वे अभी छः वर्ष के बालक थे। अतएव दासी-पुत्र बनवीर को उनका संरक्षक और उनकी ओर से राज्य का संचालनकर्ता बनाया गया, क्योंकि महारानी करुणावती का भी स्वर्गवास हो चुका था।

राज्य का लोभ मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने देता। बनवीर भी राज्य के लोभ से पिशाच बन गया। उसने सोचा कि यदि राणा साँगा के दोनों पुत्रों को मार दिया जाए, तो चित्तौड़ का सिंहासन उसके लिए निष्कंटक हो जाएगा। इसी विचार से एक रात नंगी तलवार लिए वह अपने भवन से निकला। उसने लालच में अंधे होकर विक्रमादित्य की हत्या कर दी।

राजकुमार उदय सिंह सायंकाल का भोजन करके सो चुके थे, उनका पालन-पोषण करने वाली पन्ना धाय को बनवीर के बुरे अभिप्राय का कुछ पता न था। रात में जूटे पतल उठाने बारिश आई। उसने पन्ना को बनवीर द्वारा विक्रमादित्य की हत्या का समाचार दिया। बारिश उस समय वहीं थी और बनवीर का यह कुकृत्य देखकर किसी प्रकार भागती हुई पन्ना के पास आई थी। उसने कहा—“बनवीर यहाँ आता ही होगा।”

पन्ना चौंकी और उसे अपना कर्तव्य स्थिर करने में क्षणभर भी न लगा। उसने बालक उदय सिंह को उठाकर बारिश को दे दिया और कहा—“इन्हें लेकर चुपचाप निकल जाओ। मैं तुम्हें वीरा नदी के तट पर मिलूँगी।”

उदय सिंह सो रहे थे, उन्हें टोकरे में लिटाकर, ऊपर से पतलें ढककर बारिश राजभवन से निकल गई। इधर पन्ना ने अपने पुत्र चंदन को कपड़ा ओढ़ाकर उदय सिंह के पलंग पर सुला दिया। दोनों बालक लगभग एक ही अवस्था के थे। अपने स्वामी के बालक और राज्य के उत्तराधिकारी की रक्षा के लिए उस धर्मनिष्ठ पन्ना धाय ने अपने कलेजे के टुकड़े का बलिदान करने का निश्चय कर लिया था।

रक्त से सनी नंगी तलवार लिए बनवीर कुछ क्षणों के बाद ही कक्ष में आ धमका। उसने कड़क कर पूछा—“उदय कहाँ है?”

पन्ना धाय ने अँगुली से अपने सोते पुत्र की ओर संकेत कर दिया। तलवार उठी और उस अबोध बालक का सिर धड़ से अलग हो गया। बनवीर चला गया। कर्तव्यनिष्ठ पन्ना धाय के मुख से न चीख निकली, न नेत्रों से आँसू गिरे। उसे तो अभी अपना धर्म निभाना था, उसका हृदय फटा जा रहा था। पुत्र का शव लेकर वह राजभवन से निकली। वीरा नदी के तट पर उसने पुत्र का अंतिम संस्कार किया और चित्तौड़ के नन्हें निद्रित अधीश्वर को लेकर रात्रि में ही चित्तौड़ से बाहर निकल गई। बेचारी पन्ना धाय! कोई उसके आश्रय देकर बनवीर से शत्रुता मोल नहीं लेना चाहता था। अतः वह एक से दूसरे ठिकानों में भटकती फिरी। अंत में देयरा के आशाशाह ने उसे आश्रय दिया।

बनवीर को उसके कर्म का दंड मिलना था, जो मिला। राणा उदय सिंह जब गद्दी पर बैठे, पन्ना धाय की चरणधूलि अपने मस्तक पर लगाकर उन्होंने अपने को धन्य माना। पन्ना चित्तौड़ की सच्ची धात्री सिद्ध हुई और सेवक धर्म के आदर्श पर एक पाठ दुनिया को सिखा गई। पन्ना धाय की उज्ज्वल कीर्ति अमर है। [2011]

- (क) बनवीर कौन था? लोभ में पड़कर उसने क्या सोचा? (2)
- (ख) पन्ना धाय को बनवीर के बुरे अभिप्राय का कब व किस प्रकार पता चला? (2)
- (ग) पन्ना धाय ने क्या निर्णय लिया और क्यों? (2)
- (घ) पन्ना धाय वीरा नदी के तट पर क्यों पहुँची? उसे अनेक ठिकानों पर क्यों भटकना पड़ा? (2)
- (ङ) प्रस्तुत गद्यांश से आपको क्या शिक्षा मिली? (2)

10. 1857 ई. के विद्रोही नेता धुंधूपंत नाना साहब कानपुर में असफल होने पर जब भागने लगे, तो वे जल्दी में अपनी पुत्री मैना को साथ न ले जा सके। देवी मैना बिठूर में पिता के महल में रहती थी, पर विद्रोह दमन करने के बाद अंग्रेजों ने बड़ी ही क्रूरता से उस निरीह और निरपराध देवी को अग्नि में भस्म कर दिया। उसका रोमांचकारी वर्णन पाषाण हृदय को भी एक बार द्रवीभूत कर देता है।

कानपुर में भीषण हत्याकांड करने के बाद अंग्रेजों का सैनिक दल बिदूर की ओर गया। बिदूर में नाना साहब का राजमहल लूट लिया गया, पर उसमें बहुत थोड़ी संपत्ति अंग्रेजों के हाथ लगी। इसके बाद अंग्रेजों ने तोप के गोलों से नाना साहब का महल भस्म कर देने का निश्चय किया। सैनिक दल ने जब वहाँ तोपें लगाईं, उस समय महल के बरामदे में एक अत्यंत सुंदर बालिका आकर खड़ी हो गई। उसे देखकर अंग्रेज सेनापति को बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि महल लूटने के समय वह बालिका वहाँ कहीं दिखाई न दी थी।

उस बालिका ने बरामदे में खड़े होकर अंग्रेज सेनापति को गोले बरसाने से मना किया। उसका करुणापूर्ण मुख और अल्पवयस देखकर सेनापति को भी उस पर कुछ दया आई। सेनापति ने उससे पूछा कि “क्या चाहती है?” बालिका ने उत्तर दिया,

“क्या आप कृपा कर इस महल की रक्षा करेंगे?”

सेनापति—“क्यों, तुम्हारा इसमें क्या उद्देश्य है?”

बालिका—“आप ही बताइए कि यह मकान गिराने में आपका क्या उद्देश्य है?”

सेनापति—“यह मकान विद्रोहियों के नेता नाना साहब का वास स्थान था। सरकार ने इसे विध्वंस कर देने की आज्ञा दी है।”

बालिका—“आपके विरुद्ध जिन्होंने शस्त्र उठाए थे, वे दोषी हैं, पर इस जड़ पदार्थ मकान ने क्या अपराध किया है? मेरा उद्देश्य इतना ही है कि यह स्थान मुझे बहुत प्रिय है, इसलिए मैं प्रार्थना करती हूँ कि इस मकान की रक्षा कीजिए।”

- (क) नाना साहब कानपुर से भागकर क्यों चले गए? (2)
- (ख) मैना कौन थी? उसे भस्म क्यों कर दिया गया? (2)
- (ग) महल लूटने के बाद सैनिकों ने क्या किया? स्पष्ट कीजिए। (2)
- (घ) सैनिक दल बरामदे में खड़ी बालिका को देखकर हैरान क्यों हो गया? (2)
- (ङ) बालिका ने सेनापति से क्या निवेदन किया तथा उसका क्या परिणाम हुआ? (2)

**11.** बादशाह अकबर एक दिन शिकार खेलते हुए जंगल में भटक गए। शाम हो रही थी। अतः वह घोड़े को एक पेड़ से बाँधकर नमाज़ पढ़ने बैठ गए। बादशाह अकबर ने नमाज़ पढ़ना आरंभ ही किया था कि एक औरत उनसे टकराती हुई, उनके पास से निकल गई। बादशाह का ध्यान भंग हो गया। आँख खोलकर देखा, एक बद्धवास औरत तेज़ी से भागी चली आ रही थी। उसका धक्का खाकर बादशाह अकबर को बहुत बुरा लगा, उन्होंने जल्दी-जल्दी नमाज़ पढ़ी और फिर घोड़े पर सवार होकर उस औरत के पीछे भागे।

भागती हुई औरत को उन्होंने शीघ्र ही जा पकड़ा और पूछा, “क्यों री, बद्तमीज़! तूने मुझे धक्का क्यों दिया?”

वह औरत बादशाह अकबर की बात सुनकर हैरान हुई। उसने पूछा “कौन हैं आप? कैसा धक्का? कब लगा? कहाँ थे आप?”

यह बात सुनकर बादशाह अकबर उत्तेजित हो गए। उस औरत की यह गुस्ताखी उन्हें अच्छी नहीं लगी। उन्हें अपने सम्राट होने का अहसास था, इसलिए आँखें लाल करके बोले—“अरी गुस्ताख! मैं नमाज़ पढ़ रहा था, तू पास से भागती हुई आई और धक्का देकर निकल गई। तूने मेरी नमाज़ में खलल डाल दिया।”

औरत ने घबराए बिना सहज स्वभाव से कहा, “इस विषय में मुझे कुछ नहीं मालूम। मैंने आपको नहीं देखा। हो सकता है, भागते हुए मेरा धक्का आपको लग गया हो, मगर आपका धक्का तो मुझे नहीं लगा। धक्के का लगना और उसका अनुभव दोनों ओर से होता है, एक तरफ से तो नहीं होता। आपको मेरा धक्का लगा, मगर मुझे तो कुछ भी पता नहीं।”

बादशाह अकबर और भी अधिक क्रोधित होकर बोले, “तो क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ? नमाज़ पढ़ते हुए धक्का दे दिया और अब ऊपर से बद्ज़बानी और मुँहजोरी करती है।”

वह औरत हँसते हुए बोली, “मुझे क्या पड़ी है, आपको धक्का देने की, मैं तो अपने प्रिय पुत्र से मिलने जा रही हूँ, जो समुद्री यात्रा से लौटा है। पुत्र से मिलने के विचार से, पुत्र-प्रेम में अपना आपा खोकर हो सकता है, मैं आपसे टकरा गई होऊँगी, मगर ताज़्जुब तो इस बात का है कि आप दुनिया के मालिक, सबसे बड़े प्रेमी के ध्यान में, कैसे कच्चे ढंग से बैठे थे कि आपको मेरे धक्के का पता चल गया, जबकि मैं अपने प्रिय पुत्र के ध्यान में, उसके प्रेम में किसी भी धक्के को न जान सकी।”

वह प्रेम ही क्या, जो संसार की अनेकरूपता को मिटाकर प्रेम-पात्र के प्रति समानता न स्थापित कर सके। लंबे समय के बाद पुत्र से मिलने की प्रेम-भावना ने माँ के सामने पुत्र के अतिरिक्त सब कुछ ओझल कर दिया था। उस समय वह बड़े-छोटे बादशाह या प्रजा सभी भेदों को मिटा चुकी थी।

अकबर के लिए यह आँख खोलने वाली घटना थी। वह अल्लाह की इबादत करते हुए, अपने प्रिय के प्रति प्रेम-भाव प्रकट करते हुए भी एकाग्र न हो सके थे।

वास्तव में, सब कुछ छोड़कर केवल ईश्वर को पाने की इच्छा जगाना ही, उनके प्रति सच्ची भक्ति होती है, सच्चा प्रेम होता है। अपने अहम् से मुक्ति पाए बिना व्यक्ति परमात्मा से एकरूपता स्थापित नहीं कर सकता। परमात्मा को नहीं पा सकता। जिस व्यक्ति के हृदय में प्रेम-भाव उत्पन्न नहीं होता, वह जीवित होते हुए भी मृत के समान है। प्रेम परायणों को भी अपना बनाता है, जबकि घृणा और अभिमान मनुष्य को मनुष्य से दूर करता है। [2010]

- (क) बादशाह अकबर कहाँ नमाज़ पढ़ रहे थे और क्यों? (2)
- (ख) औरत तेज़ी से क्यों भागी जा रही थी? उसका धक्का लगने पर बादशाह अकबर को कैसा अनुभव हुआ? (2)
- (ग) औरत की किस बात को सुनकर बादशाह अकबर उत्तेजित हुए और क्यों? (2)
- (घ) बताइए कि बादशाह अकबर ने धक्के को क्यों महसूस किया तथा औरत ने धक्के को क्यों महसूस नहीं किया? (2)
- (ङ) प्रस्तुत गद्यांश से आपको क्या शिक्षा मिली? (2)

**12.** मानव जीवन में रिश्ते-नातों का बहुत महत्व है। इनके अभाव में तो जीवन की कल्पना तक नहीं की जा सकती। अकेला मानव, जीवन जी ही नहीं सकता। सृष्टि निर्माण के समय, प्रलय के दौरान जब चारों ओर जल ही जल था, तब केवल मनु पृथ्वी पर अकेले थे, उन्होंने भी यही उपासना की थी कि उनके उद्धार व लक्ष्य प्राप्ति हेतु पृथ्वी पर किसी को भेजा जाए, तब परमात्मा ने उनकी प्रार्थना स्वीकार करके श्रद्धा को भेजा था।



प्राचीनकाल से संयुक्त परिवारों का चलन रहा है, जिससे इंसान में अपनापन, प्रेम, त्याग, भ्रातृत्व, सहयोग की भावना विद्यमान रहती थी। इंसान उन रिश्तों के कारण प्रसन्नचित्त जीवन-यापन करता था। इन रिश्तों के द्वारा ही इंसान सामाजिक जीवन जी पाता है तथा यही मानव जीवन में महत्वपूर्ण भी है।

वर्तमान समय एकल परिवारों का समय है, जिसमें इंसान अपने कार्यवश इतना अधिक व्यस्त रहने लगा है कि रिश्ते-नातों को भी भूलने लगा है। इस कारण उसमें अपनेपन की भावना समाप्त होने लगी है तथा स्वार्थ में धन-लालसा जीवन में महत्वपूर्ण हो गई है। इस कारण परस्पर ईर्ष्या की भावना बढ़ती जा रही है। अकेला मानव सुखद जीवन जी ही नहीं सकता। अपने मानसिक सुख के लिए उसे समाज से मिलकर रहना ही होगा, जिसके लिए रिश्तों को निभाना अत्यंत आवश्यक है।

रिश्तों को मज़बूत बनाने के लिए इंसान को कुछ समय रिश्तेदारों के लिए निकालना ही होगा, सुख-दुःख के समय उनके पास मौजूद रहना होगा, तभी रिश्तों का बने रहना संभव है।

एक कहावत है 'रिश्ते-नातों के विकास के लिए, मेल-जोल, अपनापन आवश्यक है। बिना पानी के तो पौधे तक सूख जाते हैं।'

इंसान को अपने अहंकार को त्यागकर, प्रेम तथा मेल-जोल की भावना का विकास करना होगा, तब ही इन रिश्ते-नातों का वजूद बच पाएगा वरना वह दिन दूर नहीं कि इंसान अपने रिश्ते-नातों से इतनी दूर चला जाएगा कि एकल जीवन नरक की भाँति प्रतीत होने लगेगा और संभवतः यह सृष्टि का अंतिम समय होगा।

- (क) मानव जीवन में रिश्तों का क्या महत्व है? (2)
- (ख) मनु ने भगवान से क्या प्रार्थना की तथा उसका क्या परिणाम हुआ? (2)
- (ग) एकल परिवार होने का मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है? स्पष्ट कीजिए। (2)
- (घ) रिश्तों को मज़बूत बनाने के लिए मनुष्य को क्या करना होगा? (2)
- (ङ) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक बताते हुए उसकी व्याख्या कीजिए। (2)

**13.** जोखू ने लोटा मुँह से लगाया तो! पानी से सख्त बदबू आई। गंगी से बोला—यह पानी कैसा है? मारे बास के पिया नहीं जाता। गला सूखा जा रहा है और तू सड़ा हुआ पानी पिलाए देती है।

गंगी प्रतिदिन शाम को पानी भर लिया करती थी। कुआँ दूर था, बार-बार जाना मुश्किल था। कल वह पानी लाई, तो उसमें बू बिल्कुल न थी, आज पानी में बदबू कैसी? लोटा नाक से लगाया, तो सचमुच बदबू थी। अवश्य कोई जानवर कुएँ में गिरकर मर गया होगा, मगर दूसरा पानी आवे कहाँ से?

ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा? दूर से लोग डाँट लगाएँगे। साहू का कुआँ गाँव के उस सिरे पर है, परंतु वहाँ भी कौन पानी भरने देगा? चौथा कुआँ गाँव में है ही नहीं।

जोखू कई दिनों से बीमार है। कुछ देर तक तो प्यास रोके चुप पड़ा रहा, फिर बोला—अब तो मारे प्यास के रहा नहीं जाता। ला, थोड़ा-सा पानी नाक बंद करके पी लूँ।

गंगी ने, पानी न दिया। खराब पानी पीने से बीमारी बढ़ जाएगी—इतना जानती थी, परंतु यह न जानती थी कि पानी को उबाल देने से उसकी खराबी जाती रहती है। बोली यह पानी कैसे पीयोगे? न जाने कौन जानवर मरा है। कुएँ से मैं दूसरा पानी लाए देती हूँ।

जोखू ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा—दूसरा पानी कहाँ से लाएगी? "ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं। क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे?"

'हाथ-पाँव तुड़वा आएगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्राह्मण-देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहू जी एक के पाँच लेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है! हम तो मर भी जाते हैं, तो कोई दुआर पर झाँकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे?'

इन शब्दों में कड़वा सत्य था। गंगी क्या जवाब देती, किंतु उसने वह बदबूदार पानी-पीने को नहीं दिया।

- (क) पानी से बदबू क्यों आ रही थी? (2)
- (ख) गाँव में कितने कुएँ थे और वे किसके थे? स्पष्ट कीजिए। (2)
- (ग) गंगी ने जोखू को पानी क्यों नहीं पीने दिया? (2)
- (घ) गंगी ने कहाँ से पानी लाने की बात कही तथा जोखू ने उसे क्यों मना कर दिया? (2)
- (ङ) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक बताते हुए उसकी व्याख्या कीजिए। (2)

**14.** दुर्भाग्य की बात यह है कि लोग अवकाश का ठीक तरह से उपयोग करना नहीं जानते। हममें से अधिकांश लोग अपने खाली समय को व्यर्थ गँवा देते हैं। हम समझते हैं कि कुछ न करना भी अपने खाली समय का एक अच्छा उपयोग है, परंतु इससे हमारी बेचैनी बढ़ती है। ऐसा कहा जाता है कि बेकार आदमी का मस्तिष्क भूत का बंगला होता है, संभवतः यह सत्य प्रतीत होता है। यदि हम खाली बैठते हैं, तो हमारी इच्छाएँ और कल्पनाएँ अपना कार्य शुरू कर देती हैं। उनको नियंत्रित करने का एकमात्र उपाय यह है कि उन्हें किसी-न-किसी प्रकार के श्रम के द्वारा नियंत्रित किया जाए, इसलिए यह आवश्यक है कि जो समय हमें खाली मिले, उसे चुपचाप अथवा बेकार बैठकर नहीं गँवाना चाहिए।

अवकाश के समय को गुज़ारने के लोकप्रिय तरीके उपन्यास पढ़ना, सिनेमा देखना, शिकार खेलना आदि हैं। यदि ये सब काम केवल समय काटने के लिए किए जाएँ तो अच्छे हैं, परंतु भय यह है कि हम इनके दास बन जाते हैं। इसके अतिरिक्त, हमारे शौक केवल अवकाश के समय को बिताने हेतु एक उपाय मात्र नहीं होने चाहिए, बल्कि ये ऐसे होने चाहिए, जिससे समय उपयोगी ढंग से बीते।

ऐसा कहा जाता है कि विश्व के पूर्वी देशों का जीवन आराम का है। यह बात सच है कि पश्चिम में समय ही पैसा है और समय का हिसाब मिनटों और सेकंडों में रखा जाता है। संभवतः यही कारण है कि कई क्षेत्रों में पश्चिम बहुत आगे है। भारत के लोगों ने हाल ही में समय के मूल्य को पहचानना शुरू किया है। यदि हम एक प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं, तो हमें अपने समय का वर्तमान की अपेक्षा अधिक युक्तिसंगत ढंग से सदुपयोग करना होगा। यदि प्रत्येक नागरिक राष्ट्र-निर्माण की गतिविधियों में अपने अवकाश का समय लगाए, चाहे

उसका योगदान कितना ही कम क्यों न हो, तो इसमें संदेह नहीं है कि हमारी योजनाओं के सफल होने की संभावनाएँ काफी बढ़ जाएँगी।

- (क) खाली बैठने के क्या परिणाम होते हैं? (2)  
 (ख) खाली समय बिताने के क्या तरीके बताए गए हैं? (2)  
 (ग) पश्चिमी देशों ने किस प्रकार प्रगति की है? (2)  
 (घ) बेकार बैठे व्यक्ति के मस्तिष्क को 'भूत का बंगला' क्यों कहा गया है? (2)  
 (ङ) प्रस्तुत गद्यांश से हमें क्या शिक्षा मिलती है? (2)

- 15.** बहुत समय पहले एक गाँव में हरिहर नाम का एक दयालु और सीधा-सच्चा किसान रहता था। वह खेती-बाड़ी का काम करता था। वह पूरा दिन अपने खेत में जी-तोड़ मेहनत करता था और शाम का समय ईश्वर की प्रार्थना में बिताता था। जीवन में उसकी मात्र एक इच्छा थी कि वह उडुपि के मन्दिर में भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन करना चाहता था। उडुपि कर्नाटक का प्रमुख तीर्थस्थान है। वह अपनी गरीबी के कारण तीर्थस्थल की इच्छा पूरी नहीं कर पाता था। इसी तरह कुछ वर्ष बीत गए। समय के साथ-साथ हरिहर की आर्थिक स्थिति भी सुधरती गई। अब उसने तीर्थयात्रा की योजना बनाई। उसकी पत्नी ने उसके लिए पर्याप्त भोजन बाँध दिया।

हरिहर तीर्थयात्रियों के एक दल के साथ उडुपि की ओर चल दिया। मार्ग में उसे एक स्थान पर एक बूढ़ा आदमी मिला। उसकी दशा बहुत ही दयनीय थी। वह कई दिनों से भूखा-प्यासा था और पीड़ा के कारण कराह रहा था। जैसे ही हरिहर की नज़र उस पर पड़ी, उसका हृदय करुणा से भर गया। उसने बूढ़े के पास जाकर पूछा, 'बाबा, क्या तुम भी तीर्थयात्रा करने उडुपि जा रहे हो?' बूढ़े आदमी ने उत्तर दिया, 'मेरा एक बेटा बीमार है और दूसरे बेटे ने भी तीन दिनों से कुछ नहीं खाया। फिर मैं तीर्थयात्रा कैसे करूँ।'

हरिहर समझता था कि दीन-दुःखियों की सेवा ही ईश्वर की सबसे बड़ी सेवा है, इसलिए उसने उडुपि जाने से पहले उस बूढ़े के घर जाने

का निश्चय किया। उसके साथियों ने उसे बहुत समझाया। "बहुत मुश्किल से तुमने धन एकत्र किया है, अगर यह नष्ट हो गया तो फिर तुम कभी तीर्थयात्रा नहीं कर पाओगे।" हरिहर पर उनकी बातों का कोई प्रभाव न पड़ा। वह बूढ़े के घर पहुँचा। उसने सबसे पहले घर के सभी व्यक्तियों को भरपेट भोजन कराया। फिर वह बीमार बच्चे के लिए दवा ले आया। उसने बूढ़े आदमी को खेत में बोने के लिए बीज भी ला दिए। वह कुछ दिन वहाँ रुका। उसने बूढ़े आदमी के बेटे की सेवा की, जिससे वह कुछ दिनों में स्वस्थ हो गया, लेकिन इन सारे कार्यों में उसके सारे पैसे खर्च हो गए।

अब उसने तीर्थयात्रा बीच में ही छोड़कर वापस घर लौटने का निश्चय किया। उसे उडुपि न जा पाने का बिल्कुल भी दुःख न था, क्योंकि वह जानता था कि उसने अपना सारा धन दीन-दुःखियों की सेवा में खर्च किया था। घर पहुँचकर उसने अपनी पत्नी को सारी बातें बता दीं। पत्नी भी इस पर प्रसन्न हुई, क्योंकि वह भी धार्मिक स्वभाव की महिला थी। उस रात हरिहर ने सपने में भगवान् श्रीकृष्ण को देखा, जो उससे कह रहे थे, "हरिहर तुम मेरे सच्चे भक्त हो। तुमने उस बूढ़े आदमी की सहायता की और अपनी इच्छा का बलिदान कर दिया। वह बूढ़ा आदमी कोई और नहीं, मैं ही था। तुम्हारी परीक्षा के लिए मैं उस बूढ़े आदमी का वेश धारण कर वहाँ आया था। तुम मेरे सच्चे सेवक हो।" इस तरह हरिहर बगैर तीर्थयात्रा पर गए पुण्य का भागीदार बना। [2016]

- (क) हरिहर क्या काम करता था? उसकी एकमात्र इच्छा क्या थी?  
 (ख) हरिहर को तीर्थयात्रा के मार्ग में कौन मिला? उसकी क्या स्थिति थी?  
 (ग) हरिहर ने बूढ़े व्यक्ति की कैसे सहायता की?  
 (घ) हरिहर ने घर लौटने का निश्चय क्यों किया? वहाँ लौटने पर हरिहर ने क्या स्वप्न देखा?  
 (ङ) इस गद्यांश से आपको क्या शिक्षा मिलती है?



## व्याख्या सहित उत्तर

1. (क) राजा वृद्ध हो चला था, इसलिए उसे यह चिंता सताने लगी थी कि राज्य का उत्तराधिकारी किसे बनाया जाए? उसने अपने चारों पुत्रों को बुलाकर कहा, “तुम चारों में से जो सबसे बड़े धर्मात्मा को मेरे पास लेकर आएगा, वही राज्य का स्वामी बनेगा।”
  - (ख) बड़े पुत्र की दृष्टि में सबसे बड़ा धर्मात्मा महाजन था, क्योंकि ये महाजन लाखों रुपयों का दान कर चुके थे, अनेक मंदिर व धर्मशालाएँ बनवा चुके थे तथा साधु-संतों और ब्राह्मणों को भोजन कराने के उपरांत ही ये भोजन करते थे। बड़े पुत्र की दृष्टि में उनसे बढ़कर कोई अन्य धर्मात्मा नहीं था।
  - (ग) साधु राजा के तीसरे पुत्र के साथ आया था। उस साधु का परिचय इस प्रकार दिया गया है “ये साधु महाराज सप्ताह में केवल एक बार दूध पीकर रहते हैं। भयंकर सर्दी में भी जल में खड़े रहते हैं और गर्मी में पंचाग्नि तापते हैं। ये सबसे बड़े धर्मात्मा हैं।”
  - (घ) किसान को राजा के सामने राजा का सबसे छोटा पुत्र लाया था, क्योंकि वह एक कुत्ते के शरीर पर लगे घाव को धो रहा था। राजा ने किसान को ही सबसे बड़ा धर्मात्मा कहा, क्योंकि स्वार्थरहित होकर किसी दीन-दुःखी और कष्ट में पड़े हुए प्राणी की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म होता है, जो परोपकारी होता है, वही सबसे बड़ा धर्मात्मा होता है।
  - (ङ) प्रस्तुत गद्यांश से यह शिक्षा मिलती है कि परोपकार करना सबसे बड़ा धर्म है और परोपकारी ही सबसे बड़ा धर्मात्मा होता है। यद्यपि तीर्थयात्रा करना, भगवान् की भक्ति में लीन रहना, दान-पुण्य करना, जप-तप करना आदि भी धर्म हैं, परंतु परोपकार करना सर्वश्रेष्ठ धर्म है।
2. (क) बैल, झूरी काछी के थे, उनका नाम ‘हीरा’ और ‘मोती’ था। वे पछाई जाति के बैल थे। दोनों ही बहुत सुंदर और शक्तिशाली थे, काम करने में बहुत मेहनती थे। दोनों बैल खुश होकर हल जोतते थे।
  - (ख) दोनों बैलों में साथ रहते-रहते मित्रता हो गई थी। वे आस-पास बैठकर एक-दूसरे से मूक भाषा में बातें करते थे। दोनों में मित्रता इतनी घनिष्ठ थी कि दोनों एक साथ ही खाते थे। यदि एक मुँह हटा लेता, तो दूसरा भी हटा लेता था। वे एक-दूसरे को चाटकर और सूँघकर अपना प्रेम व्यक्त करते थे।
  - (ग) झूरी ने बैलों को अपने ससुराल भेज दिया था। गया को बैलों को घर ले जाने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वह बैलों को पीछे से हाँकता, तो दोनों दाँएँ-बाएँ भाग जाते, जब रस्सी पकड़कर आगे खींचता तो दोनों पीछे की ओर ज़ोर लगाते, मारता तो दोनों सींग नीचे करके हुंकारते।
  - (घ) नए घर में जाने के बाद भी बैल खुश नहीं थे, क्योंकि जिस घर को उन्होंने अपना घर समझा था, आज वह उनसे छूट गया था। नए घर, नए लोग सभी उन्हें पराये लग रहे थे। यही कारण था कि दिनभर भूखा होने पर भी उन्होंने रात को कुछ भी नहीं खाया।
  - (ङ) इस गद्यांश में मनुष्य और पशुओं के आपसी संबंध को व्यक्त किया गया है। पशु मनुष्य के साथ रहकर आत्मीय रूप से उससे जुड़ जाता है। गद्यांश के अंत में बैलों को देखकर झूरी का स्नेह से गद्गद होना और दौड़कर उन्हें गले लगा लेना इस बात का परिचायक है कि मनुष्य भी पशु से भावात्मक रूप से जुड़ा रहता है।
3. (क) आचार्य नागार्जुन को अपनी प्रयोगशाला के लिए दो ऐसे सहायकों की आवश्यकता थी, जो आत्मीय रूप एवं पूर्ण तन्मयता से उनका सहयोग कर सकें। इसके साथ ही उन सहायकों का ध्येय भी पवित्र होना चाहिए, ताकि वे पूर्ण मानवीयता तथा ईमानदारी से कार्य कर सकें।
  - (ख) अनेक युवकों ने आचार्य के पास आकर सहायक बनने का अनुरोध किया। अपने विषय के अच्छे ज्ञान व भली-भाँति परिचय के बावजूद वे सब अपने स्वार्थ, वेतन, परिवार आदि के लिए अत्यधिक चिंतित प्रतीत हुए, जिस कारण उनमें पवित्र ध्येय का अभाव था। इसी कारण आचार्य जी अत्यंत निराश हुए और अंततः उन्होंने पूरा कार्य स्वयं करने का निश्चय किया।
  - (ग) कुछ समय पश्चात् दो युवक सहायक बनने पहुँचे। प्रथमतः इनकार के उपरांत उन युवकों के अत्यंत आग्रहवश आचार्य ने उन्हें एक पदार्थ देकर दो दिनों में रसायन तैयार करने का आदेश दिया। वस्तुतः आचार्य उनके मानवीय एवं नेक दृष्टिकोण की परीक्षा लेना चाहते थे कि उनमें निःस्वार्थ पवित्र ध्येय मौजूद भी है या नहीं।
  - (घ) दूसरा युवक रसायन को इसलिए तैयार नहीं कर पाया, क्योंकि जब वह आचार्य के घर से निकला तो उसे रास्ते में एक घायल वृद्ध व्यक्ति मिला वह युवक उसकी सेवा में लगा रहा। इससे उसकी दयालुता व परोपकारिता का गुण स्पष्ट होता है।
  - (ङ) आचार्य ने अपना सहायक दूसरे युवक को नियुक्त किया, क्योंकि वे उसके दयालु हृदय व परोपकारिता के गुण से बहुत अधिक प्रभावित हुए थे।
4. (क) गद्यांश में ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। रमजान के पूरे तीस दिनों के बाद ईद का त्योहार आया है। ईद का त्योहार सभी मनुष्यों में खुशियों का संचार कर देता है। सभी अपने घरों का काम जल्दी-जल्दी निपटा रहे हैं, ताकि जल्दी ईदगाह जा सकें।
  - (ख) लड़कों की प्रसन्नता का कारण ईद थी। उन्हें ईद के आने का बड़ी बेसब्री से इंतज़ार था। ईद का दिन खुशी का दिन होता है, क्योंकि इस दिन उन्हें नए-नए कपड़े, पैसे, मिठाई आदि मिलती हैं। ईदगाह जाने की खुशी में लड़के सबसे अधिक प्रसन्न थे, क्योंकि उन्हें मेला देखने और घूमने को मिलेगा।
  - (ग) ‘सारी ईद मुहर्रम हो जाए’ इस पंक्ति से अभिप्राय है कि ‘खुशियाँ गम में न बदल जाएँ’, क्योंकि ईद का त्योहार खुशियों का त्योहार होता है और मुहर्रम गम का। ईद मनाने के लिए जमींदारों से पैसा उधार माँगे जाने पर यदि वे पैसा उधार देने से मना कर देंगे, तो ईद पर होने वाले खर्च के लिए पैसे कहाँ से आएँगे अर्थात् उनकी खुशियाँ गम में बदल जाएँगी।
  - (घ) हामिद चार-पाँच साल का छोटा बालक था, जो अत्यधिक गरीब और देखने में दुबला-पतला था। उसके माता-पिता इस दुनिया में नहीं थे, इसलिए वह अपनी दादी अमीना के साथ रहता था। उन्हीं की गोद में सोता था और खुश रहता था।
  - (ङ) आशा, व्यक्ति में ऊर्जा का संचार कर देती है, व्यक्ति उत्साह से भर जाता है। बच्चों की आशा छोटी-सी बात को भी बहुत बड़ा बना लेती है। हामिद को उसकी दादी ने बताया कि उसके पिता रुपये कमाने गए हैं और बहुत सारे पैसे लेकर आएँगे तथा माता अल्लाह के घर से बड़ी-बड़ी चीज़ें लाने गई हैं। इन सब बातों को सुनकर वह बहुत खुश हो जाता है और आशा करता है कि जब उसके माता-पिता पैसे और बड़ी-बड़ी चीज़ें लेकर आएँगे, तो वह दिल खोलकर अपनी सभी इच्छाएँ पूरी करेगा।

5. (क) माँ ने नामू को पलाश के पेड़ से कुल्हाड़ी द्वारा थोड़ी-सी छाल काटकर लाने का आदेश दिया था। माँ की आज्ञानुसार नामू ने पेड़ की छाल उतारी, तो उसने विचार किया कि कुल्हाड़ी द्वारा पेड़ पर प्रहार करने से उसे भी पीड़ा होती होगी।
- (ख) नामू ने घर आकर, पेड़ की पीड़ा को अनुभव करने हेतु कुल्हाड़ी द्वारा अपना पैर रगड़ना आरंभ किया, क्योंकि वह उसी अनुभूति को अनुभव करना चाहता था कि यथा उसे इस कुल्हाड़ी से दर्द होता है, तो संभवतः कुल्हाड़ी के प्रहार से पेड़ को भी पीड़ा होती होगी।
- (ग) नामू के वस्त्रों पर लगे खून को देखकर माँ चिंतित हुई। माँ द्वारा इस खून का कारण पूछने पर, नामू द्वारा सहृदयता व दर्द के पूर्ण घटनाक्रम को सुनकर माँ का हृदय भर आया था। वह अपने बेटे के मानवीय गुण एवं दयालुता के अहसास को देखकर भावुक हो गई थी।
- (घ) संत लोग मानवीय गुणों से ओत-प्रोत होते हैं तथा दूसरे के दुःख में भी समान दुःख की अनुभूति करते हैं। वे परोपकारी प्रवृत्ति के तथा सबसे प्रेम करने वाले होते हैं। उनको जड़-चेतन प्रत्येक में एक समान अनुभूति का अहसास होता है। भविष्य में यही 'नामू' नामदेव के नाम से महाराष्ट्र के संत के रूप में प्रसिद्ध हुए।
- (ङ) प्रस्तुत गद्यांश हमें मानवीय गुणों तथा दयालुता के भाव को समझने की शिक्षा देने के साथ-साथ 'अहिंसा परमो धर्मः' की शिक्षा प्रदान करता है। पर्यावरण की सुरक्षा पेड़-पौधों द्वारा ही संभव है। अतः हमें पेड़-पौधों, जड़ या चेतन सभी के संरक्षण व संवर्द्धन में सहयोग देना चाहिए।
6. (क) ग्राहक चित्रों की दुकान पर गया और वहाँ उसने अजीब से चित्र देखे। पहले चित्र में चेहरा पूरी तरह बालों से ढका हुआ था और पैरों में पंख लगे थे। दूसरे चित्र में सिर पीछे से गंजा था। इन चित्रों का रहस्य जानकर ग्राहक हैरान था।
- (ख) पहला चित्र अवसर का था। इस चित्र के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि अवसर जब आता है, तो व्यक्ति उसे पहचान नहीं पाता। इसके पंख लगे हुए दिखाए गए हैं, क्योंकि अवसर तुरंत वापस भाग जाता है, यदि व्यक्ति इसका उपयोग न करे, तो यह उड़ जाता है।
- (ग) दूसरे चित्र का वर्णन करते हुए दुकानदार ने कहा कि यह 'अवसर' का चित्र है। यदि अवसर को सामने से ही बालों से पकड़ लेंगे तो वह आपका हो जाता है। अगर उसे पकड़ने में थोड़ी देर कर दी, तो पीछे का गंजा सिर ही हाथ आएगा और वह फिसलकर निकल जाएगा।
- (घ) जो व्यक्ति यह कहते हैं कि हमें अवसर ही नहीं मिला। वे अपनी ज़िम्मेदारियों से भागते हैं और अपनी गलती को छुपाने का बहाना ढूँढते रहते हैं। अवसर हमेशा हमारे सामने रहते हैं, पर हम उन्हें पहचान नहीं पाते।
- (ङ) गद्यांश में लेखक ने स्पष्ट किया है कि व्यक्ति बड़े अवसर की ताक में रहता है, इसलिए उसे अपने सामने आए छोटे अवसर दिखाई नहीं देते, लेकिन अवसर छोटा या बड़ा नहीं होता। व्यक्ति को हर अवसर का पूरा लाभ लेना चाहिए।
7. (क) सारे नगर में यह अफ़वाह फैल गई थी कि वन में घंटाकरण नामक कोई भूत रहता है। इस अफ़वाह का कारण यह था कि चोर द्वारा चोरी किया गया घंटा, वन में रहने वाले वानरों के हाथ लग गया था और वे मस्ती के दौरान घंटा बजाते थे।

- (ख) नियमित घंटों की आवाज़ के कारण, जंगल उन लोगों द्वारा कल्पित एक घंटाकरण नामक भूत की राजधानी बन गया था। नगर निवासी इसी भय के कारण जंगल में जाने तक की सामर्थ्य नहीं जुटा पाए तथा जंगल से दूर रहना ही हितकर समझते थे।
- (ग) राजा की चिंता का मुख्य कारण था—जंगल से हजारों रुपये की आमदनी का प्राप्त न होना। भूत को जंगल से बाहर करने के लिए अनेक ओझा-साधुओं को बुलाया गया तथा सबने अपने-अपने सामर्थ्यानुसार; यथा—पंडितों ने जाप, हनुमान चालीसा तथा मुसलमानों ने कुरान का पठन किया तथा सभी प्रकार के जादू-टोनों का सहारा लिया गया।
- (घ) चतुर मनुष्य ने स्वविवेक द्वारा इस घटना पर शंका जाहिर की कि कुछ डाकुओं ने इस प्रकार की अफ़वाह द्वारा खुद को बचाने का मार्ग खोजा हो या कोई बंदर इत्यादि हों। योजनानुसार साधु के वेश में वह जंगल में पहुँचा और भुने हुए चनों को दिखाकर, सभी बंदरों को चने खाने में व्यस्त करके, उस घंटे को उठा लाया तथा राजा को दे दिया। इस प्रकार, उसने लोगों के अंधविश्वास को समाप्त किया।
- (ङ) वर्तमान वैज्ञानिक युग में भी लोग व्यर्थ की अफ़वाहों, कल्पित कथानकों तथा अंधविश्वासों पर यकीन करते हैं। उन्हें इस तरह की घटनाओं पर विश्वास नहीं करना चाहिए तथा यथासंभव अपने विवेक और बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए।
8. (क) झाऊलाल को खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी, उनका अपना मकान था, दुकान का किराया भी आता था। वह अच्छा खाते और पहनते थे। इस प्रकार कह सकते हैं कि उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी।
- (ख) पत्नी ने झाऊलाल से ढाई सौ रुपये की माँग की। जिस पर उनका जी ज़ोर से सनसनाया और फिर बैठ गया। पति के हाव-भाव देखकर पत्नी ने अपने भाई से पैसे माँग लेने की बात कही, तब रोब दिखाने के लिए उन्होंने पैसे देने के लिए हामी भर दी।
- (ग) चार दिन बीत जाने पर भी जब झाऊलाल पैसे का कोई इंतज़ाम नहीं कर पाए, तो उन्हें चिंता हुई कि बाकी बचे तीन दिनों में पैसे कहाँ से आएँगे। उन्हें पैसे से ज्यादा अपनी मान-प्रतिष्ठा की चिंता हो रही थी कि यदि पैसे समय पर नहीं दिए, तो अपनी पत्नी की नज़रों में ऊँचे नहीं उठ पाएँगे।
- (घ) पं. बिलवासी मिश्र, झाऊलाल के मित्र थे। झाऊलाल ने अपनी समस्या मित्र को बताई और सहायता माँगी। उनके मित्र ने कहा कि उसके पास पैसे नहीं हैं, परंतु कहीं से माँगकर पैसे देने की कोशिश करूँगा।
- (ङ) सप्ताह के अंतिम दिन जब पैसे का प्रबंध न हो पाया, तो झाऊलाल के मन में कई बातें चल रही थीं। उन्हें पता था कि पैसे नहीं देने पर उनकी पत्नी कुछ नहीं कहेगी, लेकिन वे पत्नी की व्यंग्यमयी मुस्कुराहट को सहन नहीं कर सकते थे, उसके बारे में सोचकर ही वे चिंतित हो रहे थे।
9. (क) बनवीर एक दासी का पुत्र था। उदय सिंह को उत्तराधिकारी घोषित कर बनवीर को उनका संरक्षक बनाया गया था, परंतु लोभ के वशीभूत होकर उसने राजा के दोनों पुत्रों की हत्या करने की योजना बनाई, ताकि स्वयं चित्तौड़ के सिंहासन पर कब्जा कर सके।
- (ख) पन्ना धाय को बनवीर के बुरे अभिप्राय का तब पता चलता है, जब रात में जूटे पतल उठाने वाली बारिन, उसे विक्रमादित्य की हत्या करते देख लेती है। वह बारिन तुरंत उदय की संरक्षिका पन्ना धाय को पूरी घटना बताकर बनवीर के क्रूर कृत्य तथा उसके इरादों की जानकारी देती है।

- (ग) पन्ना धाय को जब उदय सिंह के प्राण संकट में नजर आए, तो उन्होंने अपनी कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए अपने पुत्र चंदन को उदय के स्थान पर लिटाकर, बलिदान कर देने का निर्णय लिया, ताकि राज्य के उत्तराधिकारी की रक्षा हो सके।
- (घ) पन्ना धाय के वीरा नदी के तट पर पहुँचने के मुख्य दो कारण थे—प्रथम तो नदी का तट नगर के बाहर होने के कारण उदय सिंह के लिए सुरक्षित था तथा द्वितीय पन्ना धाय को अपने मृत पुत्र का अंतिम संस्कार भी करना था। उसे अनेक ठिकानों पर इसलिए भटकना पड़ा, क्योंकि बनवीर के भय से उसे कोई आश्रय नहीं देना चाहता था।
- (ङ) प्रस्तुत गद्यांश से यह शिक्षा मिलती है कि व्यक्ति को अपनी कर्तव्यपरायणता के लिए सर्वस्व त्याग करने से भी नहीं हिचकिचाना चाहिए एवं अपने कर्तव्यपालन के लिए कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी सदैव तत्पर रहना चाहिए।
- 10.** (क) 1857 ई. के विद्रोह में असफल होने पर नाना साहब को महल छोड़कर भागना पड़ा, क्योंकि अंग्रेजी सैनिकों ने कानपुर में उनके महल पर हमला कर दिया था। अपनी जान बचाने के लिए उन्हें यह कदम उठाना पड़ा।
- (ख) मैना कानपुर के नाना साहब की इकलौती पुत्री थी। नाना साहब को विद्रोही नेता घोषित करने और उनके महल को आग लगाकर जला देने के साथ ही उनकी पुत्री को भी बड़ी क्रूरता से आग में जलाकर मार दिया गया।
- (ग) कानपुर में भीषण हत्याकांड करने के बाद अंग्रेजों का सैनिक दल बिदूर की ओर बढ़ा तथा बिदूर में नाना साहब का महल लूटने के बाद अंग्रेजी सैनिक दल ने तोप के गोलों से उनके महल को जलाकर नष्ट कर देने का निश्चय किया।
- (घ) सैनिक दल बरामदे में खड़ी बालिका को देखकर हैरान इसलिए हो गया था, क्योंकि महल लूटने के समय वह उनको कहीं भी दिखाई नहीं दी थी। वह महल के किसी गुप्त स्थान पर छिपी हुई थी, इसलिए अचानक उसे बरामदे में खड़ा देखकर सैनिकों को बहुत हैरानी हुई।
- (ङ) बालिका ने सेनापति से निवेदन किया कि वह इस महल को न गिराए तथा महल की रक्षा करे, परंतु सेनापति को महल नष्ट कर देने की आज्ञा मिली थी, इसलिए उसने बालिका की प्रार्थना नहीं सुनी और महल को जलाकर भस्म कर दिया।
- 11.** (क) एक बार घने जंगल में शिकार के दौरान, बादशाह अकबर अपना मार्ग भटक गए। इसी दौरान शाम की नमाज़ का वक्त हो गया, तब उन्होंने अपना घोड़ा, वहीं मौजूद एक वृक्ष से बाँध दिया तथा वृक्ष के नीचे बैठकर नमाज़ पढ़ने लगे।
- (ख) एक औरत जिसका पुत्र बहुत समय बाद समुद्री यात्रा से लौटा था, उस प्रिय पुत्र से मिलने की आतुरता में बेसुध होकर दौड़ी आ रही थी। तभी उसका धक्का, वहाँ मौजूद बादशाह अकबर को लगा। इस धक्के से बादशाह अकबर अत्यंत क्रोधित हुए तथा नमाज़ पढ़ने के बाद, उस औरत को पकड़ने हेतु उसके पीछे-पीछे घोड़े पर पहुँचे।
- (ग) बादशाह अकबर ने उस औरत को शीघ्र ही पकड़ लिया तथा उससे धक्का मारने का कारण पूछा, परंतु वह औरत बड़े अचरज से बोली कि कैसा धक्का? कौन हैं आप? इस जवाब को सुनकर अकबर अत्यंत उत्तेजित एवं क्रोधित हुए, क्योंकि उन्हें उस औरत के इस व्यवहार व झूठ पर अत्यंत क्रोध आ रहा था।
- (घ) नमाज़ के दौरान बादशाह अकबर पूरी तन्मयता से अपने आराध्य की आराधना में लीन नहीं हुए थे, तभी उन्हें अपनी क्षीण मग्नता के कारण, उस औरत के धक्के का अहसास हुआ, परंतु वह औरत अपने पुत्र के प्रेम में पूर्णतः लीन थी। इसी कारण उसे इस धक्के का अहसास नहीं हुआ।
- (ङ) यह गद्यांश प्रेरणा देता है कि हमें सच्चे हृदय तथा पूर्ण समर्पण के साथ ही किसी के साथ संबंध स्थापित करना चाहिए तभी उस प्रेम की प्राप्ति संभव है, चाहे वह प्रेम मानव के प्रति हो या उस असीम परमात्मा के प्रति। यही सच्चा प्रेम व सच्ची भक्ति है। अहम् को त्यागकर तथा पूर्ण समर्पण से ही किसी से एकात्म स्थापित हो सकता है।
- 12.** (क) मानव जीवन में रिश्ते-नातों का बहुत महत्व है, क्योंकि इनके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। अकेला व्यक्ति जीवन नहीं जी सकता। इन रिश्तों के द्वारा ही इंसान सामाजिक जीवन जी पाता है। यही कारण है कि मानव जीवन में रिश्ते महत्वपूर्ण हैं।
- (ख) जब धरती पर प्रलय आई तब मनु अकेले रह गए थे, उन्होंने भगवान् से प्रार्थना की थी कि उनके जीवन के उद्धार और लक्ष्य प्राप्ति हेतु धरती पर किसी को भेजा जाए। तब उनकी प्रार्थना स्वीकार करके परमात्मा ने श्रद्धा को पृथ्वी पर भेजा था।
- (ग) एकल परिवार में इंसान अपने कार्यवश के कारण इतना अधिक व्यस्त रहने लगा है कि सभी रिश्ते-नातों को भूलने लग गया है। इसके कारण उसमें अपनेपन की भावना समाप्त होने लगी है और व्यक्ति स्वार्थ व धन-लालसा में लिप्त हो गया है। उसमें परस्पर ईर्ष्या की भावना बढ़ती जा रही है।
- (घ) रिश्तों को मजबूत बनाने के लिए इंसान को कुछ समय रिश्तेदारों के साथ व्यतीत करना चाहिए। सुख-दुःख के समय उनके पास मौजूद रहना चाहिए। इंसान को अपने अहंकार को त्यागकर, प्रेम तथा मेल-जोल की भावना का विकास करना होगा। तभी रिश्तों का बना रहना संभव हो पाएगा।
- (ङ) प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक 'वर्तमान युग में रिश्ते-नातों की अहमियत' हो सकता है, क्योंकि इस गद्यांश में स्पष्ट किया गया है कि मनुष्य को रिश्तों-नातों के महत्व को समझकर उन्हें भविष्य में बनाए रखने के लिए समाज में मिलकर रहना होगा।
- 13.** (क) गाँव में कुएँ के रख-रखाव की कोई खास व्यवस्था नहीं थी और कुआँ घर से अधिक दूरी पर था, इसलिए गंगी सदैव रात के समय ही पानी भरकर ले आती थी। कुएँ में कोई जानवर गिरकर मर गया था, इसलिए पानी से बदबू आ रही थी।
- (ख) गाँव में तीन कुएँ थे—एक निम्न जाति के लिए था, उससे गंगी और जोखू पानी भरते थे। दूसरा ठाकुर का व तीसरा गाँव के दूसरे कोने पर स्थित साहूकारों का था, जिसमें से निम्न जाति के व्यक्ति को पानी लेने की इजाजत नहीं थी।
- (ग) गंगी को जब पानी से बदबू आई, तो उसने जोखू को पानी-पीने नहीं दिया, क्योंकि वह पहले ही बीमार था और गंगी जानती थी कि अगर वह खराब पानी पीएगा, तो उसकी बीमारी और बढ़ जाएगी।
- (घ) गंगी ने ठाकुर के कुएँ से साफ पानी लाने की बात कही, तो जोखू ने उसे वहाँ से पानी लाने को मना कर दिया, क्योंकि वह जानता था कि ठाकुर के पहरेदार उसे पानी नहीं भरने देंगे, क्योंकि वह निम्न जाति की है और यदि उसे चोरी-छिपे पानी भरते देख लिया, तो लाठी से पिटाई करेंगे।

- (ङ) इस गद्यांश का उचित शीर्षक 'ठाकुर का कुआँ' हो सकता है, क्योंकि यहाँ निम्न जाति के लोगों के लिए अस्पृश्य माने गए ठाकुरों के कुएँ का वर्णन है। ठाकुर का कुआँ उच्च वर्ग का प्रतीक है। ठाकुर गाँव का बड़ा व्यक्ति था, जिसके पास धन और बल दोनों ही थे। जमींदारी प्रथा की सामंती मानसिकता का वर्णन यहाँ किया गया है। इसके साथ ही निम्न वर्ग को भेदभाव की दृष्टि से देखा जाता था तथा उन्हें अन्य कुओं का पानी नहीं भरने दिया जाता था।
- 14.** (क) खाली बैठने से व्यक्ति की बेचैनी बढ़ती है, उसकी इच्छाएँ और कल्पनाएँ उड़ान भरने लगती हैं। व्यक्ति का दिमाग व्यर्थ की बातें सोचने लगता है तथा व्यर्थ की बातों को याद करके परेशान होने लगता है। कई बार तो व्यक्ति हीन-भावना से भी ग्रसित हो जाता है।
- (ख) व्यक्ति खाली समय व्यतीत करने के लिए मनोरंजक गतिविधियों का सहारा ले सकता है। उपन्यास पढ़ना, सिनेमा देखना, शिकार आदि लोकप्रिय तरीके अपना सकता है। ये सब काम समय काटने के लिए करने चाहिए, इनका आदी नहीं होना चाहिए।
- (ग) पश्चिमी देशों में समय को सबसे अधिक महत्त्व दिया जाता है। वहाँ के लोगों की दृष्टि में समय ही पैसा है। वे एक भी सेकंड को व्यर्थ नहीं जाने देते, एक-एक क्षण का महत्त्व समझते हैं और समय का सदुपयोग करते हैं। समय के महत्त्व को समझते हुए ही पश्चिमी देशों ने प्रगति की है।
- (घ) बेकार बैठे व्यक्ति के मस्तिष्क में अतीत की अनेक ऐसी घटनाएँ विचरण करने लगती हैं, जिनका यथार्थ से कोई संबंध नहीं होता। जिस तरह भूत का काल्पनिक अस्तित्व होता है, उसी प्रकार खाली बैठे व्यक्ति का मस्तिष्क भी अनेक काल्पनिक विचारों का घर बन जाता है, इसलिए यहाँ खाली बैठे व्यक्ति के मस्तिष्क को 'भूत का बंगला' कहा गया है।
- (ङ) प्रस्तुत गद्यांश से हमें यह शिक्षा मिलती है कि व्यक्ति को अपना खाली समय उपयोगी और सकारात्मक कार्यों में लगाना चाहिए। व्यक्ति को समय का महत्त्व समझते हुए उसका सदुपयोग करना चाहिए। मनोरंजक गतिविधियों का प्रयोग केवल स्वयं को तरोताजा और सक्रिय रखने के लिए करना चाहिए। उनका आदी नहीं बनना चाहिए।
- 15.** (क) हरिहर गाँव का किसान था, जो खेती-बाड़ी का काम करता था। हरिहर पूरा दिन खेत में जी-तोड़ मेहनत करता था और शाम का समय ईश्वर की प्रार्थना में बिताता था। जीवन में उसकी एकमात्र इच्छा यह थी कि वह उडुपि के मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन करना चाहता था, जो दक्षिण कर्नाटक का प्रमुख तीर्थस्थान है।
- (ख) हरिहर की तीर्थयात्रा के मार्ग में एक बूढ़ा आदमी मिला, जिसकी दशा बहुत ही दयनीय थी। वह कई दिनों से भूखा-प्यासा था और पीड़ा के कारण कराह रहा था। जैसे ही हरिहर की नज़र उस बूढ़े आदमी पर पड़ी, उसका हृदय करुणा से भर गया।
- (ग) हरिहर जानता था कि दीन-दुःखियों की सेवा करना ही ईश्वर की सबसे बड़ी सेवा है, इसलिए तीर्थयात्रा के लिए एकत्र किए गए धन को लेकर हरिहर बूढ़े आदमी के घर पहुँचा, पहले उसने सभी को भरपेट भोजन कराया, फिर वह बीमार बच्चे के लिए दवा ले आया, उसने बूढ़े आदमी को खेत में बोने के लिए बीज लाकर दिए। कुछ दिन बूढ़े आदमी के घर रुककर उसके बेटों की सेवा की। इस प्रकार, हरिहर ने बूढ़े व्यक्ति की सहायता की।
- (घ) बूढ़े आदमी की सहायता करने में हरिहर के सारे पैसे खर्च हो गए, इसलिए उसने अपनी तीर्थयात्रा को बीच में ही छोड़कर वापस घर लौटने का निश्चय किया। घर लौटने पर हरिहर ने अपने स्वप्न में भगवान् श्रीकृष्ण को देखा, जो उससे कह रहे थे कि तुम ही मेरे सच्चे भक्त हो, तुमने बूढ़े आदमी की सहायता करके अपनी इच्छा का बलिदान दिया। वह बूढ़ा आदमी मैं ही था अर्थात् मैं ही वेश बदलकर तुम्हारी परीक्षा ले रहा था।
- (ङ) प्रस्तुत गद्यांश से हमें कठिन परिस्थितियों में दूसरों की सहायता करने की शिक्षा मिलती है। जिस प्रकार हरिहर ने अपनी इच्छा का बलिदान करके कठिन परिस्थितियों में अपना जीवन व्यतीत कर रहे बूढ़े आदमी की सहायता की, ठीक उसी प्रकार हम सभी को यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए कि हमें भी सर्वदा दूसरों की सहायता करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. जानवरों में गधा सबसे अधिक बुद्धिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी को पहले दरजे का बेवकूफ़ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ़ है या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्याई हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है, किंतु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहो गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी नहीं दिखाई देगी। वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो, पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा। उसके चेहरे पर एक विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है।

सुख-दुःख, हानि-लाभ, किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा। ऋषियों-मुनियों के जितने गुण हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा पर पहुँच गए हैं, पर आदमी उसे बेवकूफ़ कहता है। सद्गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा। कदाचित् सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है। देखिए न, भारतवासियों की अफ्रीका में क्या दुर्दशा हो रही है? क्यों अमेरिका में उन्हें घुसने नहीं दिया जाता? बेचारे शराब नहीं पीते, चार पैसे कुसमय के लिए बचाकर रखते हैं, जी तोड़कर काम करते हैं, किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं, फिर भी बदनाम हैं। कहा जाता है, वे जीवन के आदर्श को नीचा करते हैं। अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते, तो शायद सभ्य कहलाने लगते। जापान की मिसाल सामने है। एक ही विजय ने उसे संसार की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया।

लेकिन गधे का एक छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है और वह है 'बैल'। जिस अर्थ में हम गधे का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते-जुलते अर्थ में 'बछिया के ताऊ' का भी प्रयोग करते हैं। कुछ लोग बैल को शायद बेवकूफ़ में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे, मगर हमारा विचार ऐसा नहीं है। बैल कभी-कभी मारता भी है, कभी-कभी अड़ियल बैल भी देखने में आता है और भी कई रीतियों से अपना असंतोष प्रकट कर देता है, अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है। "संसार के लिए सीधापन उपयुक्त नहीं है।"

- (क) किसी आदमी को गधा कब और क्यों कहा जाता है? (2)  
 (ख) गधे में कौन-कौन से गुण विद्यमान होते हैं? (2)  
 (ग) गधे की तुलना ऋषि-मुनियों से क्यों की गई है? (2)  
 (घ) "संसार के लिए सीधापन उपयुक्त नहीं है।" इस कथन से क्या अभिप्राय है? (2)  
 (ङ) गधे का छोटा भाई किसे कहा गया है? उसका स्थान गधे से नीचा कैसे है? स्पष्ट कीजिए। (2)

2. दो मित्र थे। दोनों की मित्रता अटूट थी, जिसकी उपमा आस-पास के क्षेत्रों में भी दी जाती थी।

एक का नाम राजन था, जो अत्यंत धनी परिवार से संबंधित था। उसके पिता शहर के प्रतिष्ठित व्यवसायी थे। राजन की माता का स्वर्गवास हो चुका था। उसके पिता अत्यंत व्यस्त रहते थे और धन कमाने की लालसा में गैर-कानूनी कार्य भी करते थे। इसी कारण उनके शत्रु भी अनेक थे। पिता की व्यस्तता के कारण राजन उनके स्नेह और मार्गदर्शन से वंचित था। इसी कारण चंचल और अधीर हो गया था तथा पढ़ाई पर भी अधिक ध्यान नहीं देता था।

दूसरा मित्र मोहन, जिसके पिता का देहांत हो चुका था, वह बहुत योग्य व परिश्रमी था। उसकी माँ ने बड़े संघर्ष और कठिनाइयों से उसका पालन-पोषण किया था। अपनी माँ की स्नेहशील परवरिश व मार्गदर्शन ने मोहन को कभी पथभ्रष्ट नहीं होने दिया। राजन और मोहन अधिकतर साथ रहते, फिर भी उनकी योग्यता एवं व्यवहार में अंतर था, जो उनके घरेलू वातावरण का परिणाम था।

राजन को ज्ञात था कि उसे आगे चलकर अपने पिता का व्यवसाय ही संभालना है, इसी कारण उसने पढ़ाई पर ध्यान नहीं दिया, परंतु मोहन ने दिन-रात परिश्रम करके देश की सर्वश्रेष्ठ परीक्षा उत्तीर्ण की तथा प्रशासनिक सेवा में आ गया। अब मान, सम्मान धन-दौलत सब मोहन के पास मौजूद थे, उधर राजन अपनी परीक्षा में असफल हो गया और उसके पिताजी का व्यवसाय भी धीमा पड़ गया। अब उनकी आर्थिक स्थिति चरमरा गई। पुलिस ने उनके संपूर्ण व्यवसाय को गैर-कानूनी साबित करके सील कर दिया। राजन के पिता इस सदमे को सहन न कर सके और उनकी मृत्यु हो गई।

राजन अकेला हो गया। कर्जदारों ने घर तक नीलाम करवा दिया। वैभवशाली जीवन-यापन करने वाला राजन निर्धन हो गया। दूसरी ओर मोहन अब धनी व सफल बन गया।

इस घटना से यह उक्ति प्रमाणित हो गई कि ईश्वरीय शक्ति से बड़ा कोई नहीं, वह पल में किसको राजा या रंक बना दे, यह वही जानता है। उसकी लीला अपरंपार है। सत्य ही है—

"ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया।।"

जब इस पूर्ण वृत्तांत का मोहन को पता चला, तो वह तुरंत राजन को अपने साथ ले आया और उसकी माता ने अपनी ममता के आँचल में उसे स्थायी जगह दे दी और फिर दोनों मित्र जीवन के कर्मपथ पर चल पड़े।

- (क) राजन अपने पिता के स्नेह और मार्गदर्शन से वंचित क्यों था? (2)  
 (ख) राजन और मोहन की योग्यता और व्यवहार में अंतर स्पष्ट कीजिए। (2)  
 (ग) मोहन के सफल होने के पीछे क्या कारण था? (2)  
 (घ) अमीर राजन, गरीब कैसे हो गया? उपरोक्त गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (2)  
 (ङ) प्रस्तुत गद्यांश से हमें क्या शिक्षा मिलती है? (2)



3. विश्व के अधिकांश समाजों में सदा से ही पुरुषों का वर्चस्व रहा है। यद्यपि इस संसार के परिचालन में पुरुष और स्त्री समान रूप से महत्वपूर्ण हैं, परंतु फिर भी स्त्री को सदा से ही दबाया गया है। भारतीय समाज में भी प्राचीन नीतिकारों ने स्त्रियों को पिता, पुत्र या पति अर्थात् किसी-न-किसी पुरुष के संरक्षण में रहने की वकालत की। पुरुष मानसिकता ने कभी उसे एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में नहीं देखा, लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जिसका प्रभाव यहाँ की आधी आबादी अर्थात् 'स्त्रियों' पर भी पड़ा।

शिक्षा के फलस्वरूप महिला सशक्तीकरण को बल मिला, जिसका परिणाम यह हुआ कि आज महिलाएँ घरों की चारदीवारी से निकलकर अपने व्यक्तित्व का विस्तार कर रही हैं। आज उनकी स्थिति में व्यापक परिवर्तन आया है और उनकी भूमिका पत्नी, बेटी, माँ आदि तक सीमित नहीं है। आज वे एक सफल शिक्षिका, डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, पायलट आदि के रूप में भी अपनी पहचान बना रही हैं। यद्यपि नौकरी करने से महिलाओं की स्थिति में आर्थिक सुधार के साथ-साथ और भी सुखद परिवर्तन आए हैं, लेकिन फिर भी हमारा मानना है कि कामकाजी महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं है। उनका कार्यक्षेत्र जरूर घर तक सीमित नहीं रहा, लेकिन कुछ समस्याएँ उनके सामने पहले की तरह खड़ी हुई हैं, बस उनका स्वरूप बदल गया है।

हमारा समाज अभी भी मूल रूप से पुरुष प्रधान है। पढ़-लिखकर नारी की सोच में अवश्य ही परिवर्तन आया है, परंतु पुरुष मानसिकता में कोई विशेष बदलाव नहीं आया है। यही कारण है कि आज कामकाजी नारी दोहरी ज़िम्मेदारियों को वहन कर रही है। सुबह से शाम तक वह पुरुष की भाँति ही दफ्तर में कार्यरत रहती है और घर आने के बाद पुनः उसे एक आदर्श गृहिणी की भूमिका निभानी पड़ती है। एक गृहिणी के रूप में स्त्री से समाज जो अपेक्षाएँ पहले करता था, आज भी वही करता है। उसे अपने दफ्तर के साथ-साथ घर-परिवार का भी पूरा-पूरा खयाल रखना पड़ता है।

इसके बावजूद, अधिकांश कामकाजी और नौकरी पेशा स्त्रियों को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है। वे धनार्जन तो करती हैं, लेकिन उसे अपनी इच्छानुरूप व्यय करने का अधिकार उनका परिवार उन्हें नहीं देता है। इस प्रकार, उनका कार्यक्षेत्र तो बढ़ गया, किंतु इसका उन्हें लाभ नहीं हुआ। दूसरी ओर, उनका कार्यक्षेत्र बढ़ने के साथ-साथ उनकी समस्याएँ भी बढ़ गई हैं। अब वे घर की ज़िम्मेदारियों और समस्याओं से जूझने के साथ-साथ बाहरी दुनिया की मुश्किलों का सामना भी कर रही हैं। उनको रोज़गार के क्षेत्र में पुरुषों के समान नहीं समझा जाता, उनका वेतन पुरुषों की तुलना में कम होता है। उच्च अधिकारी उनका शारीरिक एवं मानसिक शोषण करते हैं और कई बार वे उनका विरोध भी नहीं कर पातीं। पहले वे घर-परिवार में ही शोषण का शिकार बनती थीं, परंतु अब घर के साथ-साथ बाहरी दुनिया में भी उनका उत्पीड़न किया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि उनका शोषण बंद नहीं हुआ है, बल्कि उसका तरीका बदल गया है।

अतः कामकाजी महिलाओं की स्थिति पर विचार करने के बाद यह स्पष्ट होता है कि केवल नौकरी करने से आर्थिक रूप से सक्षम होने से महिलाओं की स्थिति में संतोषजनक परिवर्तन नहीं आ सकता। हमें उनकी समस्याओं पर विचार कर उन्हें दूर करना होगा।

- (क) भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति को स्पष्ट कीजिए। (2)  
 (ख) महिला सशक्तीकरण को किससे बल मिला है और उसका क्या परिणाम हुआ? (2)  
 (ग) कामकाजी महिलाओं की स्थिति संतोषजनक क्यों नहीं है? स्पष्ट कीजिए। (2)  
 (घ) स्त्रियों का कार्यक्षेत्र बढ़ने के साथ उन्हें किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है? (2)  
 (ङ) प्रस्तुत गद्यांश का मूलभाव बताते हुए उपयुक्त शीर्षक बताइए। (2)

4. प्राचीन समय में राजा-महाराजाओं के मध्य युद्ध होना आम बात थी। एक बार की बात है, दो राजाओं के बीच भयंकर युद्ध हुआ। जैसा कि होता है कि युद्ध में किसी एक की ही विजय होती है और एक की हार निश्चित होती है।

इस युद्ध में भी ऐसा ही हुआ। एक राजा इस युद्ध में हार गया। उसे जन-धन की बहुत हानि हुई। उसके संगी-साथी भी उससे बिछड़ गए। वह पूरी तरह से अकेला पड़ गया। अब बस उसके प्राण ही शेष थे, परंतु शत्रु राजा उसे छोड़ना नहीं चाहता था। उसके सैनिक पराजित राजा को ढूँढ रहे थे। पराजित राजा अपना जीवन बचाने के लिए भागा-भागा फिर रहा था। स्थिति यह थी कि वह अब मरा कि तब मरा। उसने छिपते-छिपाते एक खोह में शरण ली। वह मन से पूरी तरह पराजित हो चुका था। खोह में छिपा हुआ भी वह मानो अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे इस बात का पूरा विश्वास था कि शत्रु की तलवार कभी भी उसका काम तमाम कर देगी। वह इन्हीं विचारों में खोया हुआ था कि उसकी नज़र एक मकड़ी पर पड़ी, जो खोह के दरवाज़े पर जाला बनाने में व्यस्त थी, उसकी कोशिशें बार-बार नाकाम साबित हो रही थीं, लेकिन उसने प्रयास करना नहीं छोड़ा।

राजा ने सोचा कि वह बेकार ही प्रयत्न कर रही है। भला आधार के बिना जाला कैसे बन सकता है, लेकिन थोड़ी ही देर बाद राजा ने देखा कि मकड़ी जाला बनाने में सफल हो गई है। थोड़ी ही देर में पूरी खोह के मुँह पर जाला बनाया जा चुका था, तभी शत्रु सैनिक वहाँ आ पहुँचे, लेकिन खोह के मुँह पर मकड़ी का जाला बना देख लौट गए। करीब आई हुई मृत्यु तो टल गई, पर राजा एक गहरे विचार में पड़ गया। उसने सोचा-मैं स्वयं तन-मन से पराजित था।

अतः मैंने मकड़ी को भी हारा हुआ मान लिया था, लेकिन वह छोटी-सी मकड़ी हारी हुई नहीं थी। वह बार-बार गिरकर भी निराश और परास्त नहीं हुई। क्या मैं मनुष्य होकर भी इस मकड़ी से दुर्बल हूँ। उसने अपने मन को मजबूत किया और संकल्प लिया कि वह अपने शत्रुओं को अवश्य पराजित करेगा। वह तुरंत उस खोह से बाहर आया। अब वह एक हताश-निराश पराजित राजा नहीं था वरन् मजबूत इरादों वाला व्यक्ति था, जिसे हर हाल में विजय पानी थी। उसने अपने साथियों को एकत्र किया और अंत में अपने शत्रु को हरा कर अपना राज्य पुनः प्राप्त किया।

- (क) राजा ने कहाँ शरण ली और क्यों? (2)  
 (ख) गुफा में राजा ने क्या देखा तथा उसका क्या परिणाम हुआ? (2)  
 (ग) राजा के प्रभावित होने का क्या कारण था? स्पष्ट कीजिए। (2)  
 (घ) राजा द्वारा लिए गए संकल्प को स्पष्ट कीजिए। (2)  
 (ङ) प्रस्तुत गद्यांश से हमें क्या शिक्षा मिलती है? (2)



5. हमें अपने पूर्वजों से अनेक चीजें विरासत में प्राप्त होती हैं; जैसे-भाषा, जीवन-दर्शन, साहित्य, कला एवं संस्कृति, परंपराएँ इत्यादि। इनके साथ ही हमें प्राप्त होती हैं-ऐतिहासिक महत्त्व से जुड़ी इमारतें तथा स्थान, जिन्हें हम ऐतिहासिक स्थल कहकर संबोधित करते हैं। हर काल में मनुष्य अपने गौरवशाली पलों की स्मृति में कुछ ऐसे स्थलों का निर्माण करता आया है, जिनके माध्यम से आने वाली पीढ़ियाँ उस पर गर्व कर सकें और उसके विषय में जान सकें।

समय बीतने के बाद ये चीजें इतिहास अवश्य बन जाती हैं, परंतु इनका महत्त्व अत्यधिक बढ़ जाता है। यद्यपि हमें अपने पूर्वजों से भाषा, दर्शन, संस्कृति जैसी महत्त्वपूर्ण चीजें भी प्राप्त होती हैं, परंतु ये परोक्ष रूप से हमारे सामने प्रकट होती हैं, जबकि ऐतिहासिक स्थल प्रत्यक्ष रूप से हमारे सामने उपस्थित होते हैं। उनके माध्यम से हमें अपने पूर्वजों एवं अपने गौरवशाली इतिहास का पता चलता है।

ऐतिहासिक स्थलों के कारण हमें अतीत को जानने-समझने का अवसर तो मिलता ही है और साथ ही हमें आभास होता है-अपने वजूद का, अपने अस्तित्व का। इसी कारण, किसी भी राष्ट्र के लिए उसके ऐतिहासिक स्थल सदैव महत्त्वपूर्ण बने रहते हैं। इनके कारण देशवासियों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास होता है, जो पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे रखती है।

हम भारतीयों को भी अनेक ऐतिहासिक स्थल विरासत में मिले हैं। इनमें लालकिला, ताजमहल, कुतुबमीनार, जयपुर का हवा महल, दिलवाड़े के जैन मंदिर, जंतर-मंतर, सोमनाथ मंदिर आदि प्रमुख हैं। इसी तरह से नालंदा, राजगीर, बोधगया, वैशाली, कुरुक्षेत्र, मथुरा, वाराणसी, प्रयाग, हरिद्वार, दिल्ली, आगरा, जयपुर, अयोध्या, खजुराहो, साँची आदि स्थान भी धार्मिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। ये सभी हमारी गौरवशाली परंपरा के परिचायक हैं। प्रत्येक भारतवासी इन्हें हृदय से अपना मानता है और इन पर अभिमान करता है। ये स्थल लोगों को परस्पर जोड़ते हैं और इससे राष्ट्रीयता की भावना को बल मिलता है।

उदाहरण के लिए, ताजमहल केवल आगरावासियों का नहीं, बल्कि सभी भारतीयों का है, जब इसे विश्व के सात आश्चर्यों में सम्मिलित किया गया, तब पूरे भारत में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई थी।

ऐतिहासिक स्थलों के महत्त्व को देखते हुए यह आवश्यक है कि इनके संरक्षण की ओर पर्याप्त ध्यान दिया जाए। सरकार को भारतीय पुरातत्व विभाग के माध्यम से इनके पुनरुद्धार के लिए उचित कदम उठाने चाहिए। समय की मार से और हमारी लापरवाहियों के कारण ऐतिहासिक स्थलों को नुकसान पहुँचता है, इसलिए सरकार को अपनी योजनाओं में जनता का सहयोग भी लेना चाहिए और उसे इन स्थलों की महत्ता से अवगत कराकर, इन्हें साफ-सुथरा बनाए रखने की अपील करनी चाहिए।

इन्हें गंदा करने वालों के विरुद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्यवाही करनी चाहिए। सरकार और जनता के पारस्परिक सहयोग एवं प्रयासों के द्वारा ही ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण संभव है। इनके महत्त्व के कारण हमें इनके संरक्षण के लिए प्रयासरत रहना होगा।

- (क) पूर्वजों द्वारा प्रदान की गई चीजों को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए। (2)  
(ख) 'ऐतिहासिक स्थल' का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनके महत्त्व पर प्रकाश डालिए। (2)

- (ग) भारतीयों को कौन-कौन से ऐतिहासिक स्थल विरासत में मिले हैं? (2)

- (घ) ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण के लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिए? स्पष्ट कीजिए। (2)

- (ङ) प्रस्तुत गद्यांश का मूलभाव बताते हुए उपयुक्त शीर्षक बताइए। (2)

6. ब्रिज कैण्डी पब्लिक स्कूल शहर का प्रसिद्ध स्कूल था। वहाँ शहर के ही नहीं वरन् सारे देश के प्रभावशाली व्यक्तियों के बच्चे पढ़ने के लिए प्रवेश लेते थे। उस स्कूल में पढ़े हुए विद्यार्थी दुनियाभर में उच्च पदों पर सुशोभित होते थे। शहर के प्रसिद्ध उद्योगपति राजमोहन डालमिया ने भी अपने इकलौते पुत्र को कक्षा छः में उसी स्कूल में दाखिल करा दिया, उन्होंने सोचा कि उनके इकलौते पुत्र को सर्वश्रेष्ठ शिक्षा मिलनी चाहिए, जिससे वह अपने दम पर अपने पैरों पर खड़ा हो पाए।

वे नहीं चाहते थे कि उनके पुत्र को वह सब बड़ी सरलता से मिल जाए, जिसको पाने के लिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ी थी। एक कर्तव्यशील पिता की भाँति वे चाहते थे कि उनका बेटा मेहनत की महिमा समझे और मेहनत से कभी मुँह न चुराए। उनका बेटा दिव्यांशु अब तक बहुत लाड़-प्यार से पला था। उसने अपने नए स्कूल में जाना आरंभ कर दिया, परंतु उसकी आदतें उसके पिता की इच्छाओं के अनुरूप नहीं थीं। दिव्यांशु अपनी पढ़ाई-लिखाई पर बिल्कुल ध्यान नहीं देता था। वह दूसरों पर सदा अपनी अमीरी का रौब झाड़ता रहता था। शायद इसी कारण उसके दोस्तों की संख्या भी बहुत थी। नए स्कूल में दिव्यांशु जल्दी ही रम गया। इसी बीच अर्द्ध-वार्षिक परीक्षाएँ आ गईं।

परीक्षाओं में उसने कुछ पढ़ाई नहीं की, वह अपने दोस्तों की 'सहायता' पर परीक्षा में उत्तीर्ण होने की आस लगाए बैठा था, परंतु परीक्षा परिणाम ने उसे हिलाकर रख दिया। किसी भी दोस्त ने उसकी सहायता नहीं की, परिणामस्वरूप वह तीन विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो सका। अब दिव्यांशु को समझ आ चुका था कि दूसरों पर निर्भर रहने से काम नहीं चलेगा, स्वयं प्रयत्न करने पर ही वह सफल हो सकता है।

अतः उसने जी-जान से पढ़ना आरंभ कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि वार्षिक परीक्षा में वह न केवल अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुआ, बल्कि कक्षा में प्रथम आया। सच ही कहा "अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता" वह अपने पिता की इच्छानुसार जीवन का सबसे बड़ा सबक सीख चुका था।

- (क) राजमोहन ने अपने बेटे का प्रवेश किस स्कूल में कराया तथा उसके पीछे क्या कारण था? (2)

- (ख) दिव्यांशु कैसा बालक था? उसके दोस्तों की संख्या अधिक क्यों थी? (2)

- (ग) परीक्षाओं में दिव्यांशु ने किसकी सहायता ली और उसका क्या परिणाम सामने आया? (2)

- (घ) दिव्यांशु को जब अपनी गलती का अहसास हुआ तब उसने क्या किया? (2)

- (ङ) "अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता"— इस कथन से क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए। (2)

7. भारतीय संस्कृति अपने उच्च एवं उदात्त मूल्यों के कारण विश्वभर में प्रसिद्ध है। 'अतिथि देवो भवः' अर्थात् अतिथि को देवता के समान मानना भारतीय संस्कृति का एक ऐसा ही मूल्य है, जो इसकी महानता को प्रदर्शित करता है। हमारे यहाँ प्राचीनकाल से ही अतिथि को आदरणीय मानते हुए उसे देवता तुल्य समझा गया है। भारतीय संस्कृति में सेवा करने को बहुत महत्व दिया गया है। अतिथि को देवता मानना इसी सेवा-भाव का विस्तारित रूप है। दूसरों की सेवा करने का अवसर बड़े सौभाग्य से मिलता है और यह अवसर यदि अनायास ही मिल जाए, तो इससे अधिक खुशी की बात क्या हो सकती है। अतिथि का उचित आदर-सत्कार करने से न केवल अतिथि प्रसन्नता एवं अपनेपन का अनुभव करता है, बल्कि हमें स्वयं भी अच्छा लगता है और मन में संतुष्टि का भाव आता है। अतिथि को सम्मान देने वाले व्यक्ति के यश में वृद्धि होती है, उसके घर में सुख-समृद्धि का वास रहता है और वह सज्जनों के आशीर्वाद का पात्र बनता है। इसलिए भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता मानकर उसकी सेवा करने की सीख दी गई है।

परंतु वर्तमान समय में बहुत-सी प्राचीन मान्यताएँ और आदर्श बदल रहे हैं। 'अतिथि देवो भवः' का आदर्श भी अब धीरे-धीरे परिवर्तित हो रहा है। आजकल प्रायः सभी व्यक्तियों की जीवनशैली बहुत व्यस्त हो गई है। बढ़ती महंगाई के कारण अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना एवं जीवन के एक निर्दिष्ट-स्तर को बनाए रखना किसी चुनौती से कम नहीं है। ऐसे में लोगों के पास दूसरों के लिए तो क्या स्वयं तक के लिए भी समय नहीं है।

अतः आज लोगों के पास अतिथि के सेवा-सत्कार के लिए पर्याप्त समय ही नहीं है, लेकिन फिर भी लोग अपने अतिथियों का ध्यान रखने की कोशिश करते हैं।

प्रायः यह देखने में आता है कि लोग दो-तीन दिन तक मेहमानों की खूब आवभगत करते हैं, परंतु यदि इसके बाद भी अतिथि जाने का नाम ही न ले, तो अतिथि बोझ बन जाता है। कई बार आवश्यकता न होने पर भी लोग अतिथि बनकर दूसरों के यहाँ कई दिनों तक ठहरे रहते हैं, जिससे पूरा परिवार प्रभावित होता है। अतिथि बनने वाले व्यक्ति के लिए घर के सभी सदस्यों को उसकी सेवा में तत्पर रहना पड़ता है, जो सदैव संभव नहीं हो पाता। आखिरकार देवता की भी एक मर्यादा होती है। अतः अतिथि की भी एक मर्यादा होनी चाहिए। आज के समय में अतिथि बनने वाले व्यक्ति को अपने संबंधी की व्यावहारिक कठिनाइयों को समझना चाहिए। उसे छोटी-मोटी गलतियों या भूलों को दिल से नहीं लगाना चाहिए और अपना मंतव्य पूरा हो जाने के बाद आतिथ्य करने वाले परिवार या व्यक्ति का धन्यवाद करते हुए समय पर विदा लेनी चाहिए, तभी अतिथि का मान बना रहता है।

- (क) भारतीय संस्कृति की प्रसिद्धि के कारणों पर संक्षेप में प्रकाश डालिए। (2)
- (ख) अतिथि के उचित आदर-सत्कार के महत्व को स्पष्ट कीजिए। (2)
- (ग) 'अतिथि देवो भवः' का आदर्श क्यों परिवर्तित हो रहा है? स्पष्ट कीजिए। (2)
- (घ) अतिथि के मान से क्या तात्पर्य है? संक्षेप में प्रकाश डालिए। (2)
- (ङ) प्रस्तुत गद्यांश से हमें क्या शिक्षा मिलती है? (2)

8. एक बार रोम का राजा एक भीषण रोग से पीड़ित हो गया। उस समय के देश-विदेश के प्रख्यात एवं निपुण चिकित्सक राजा के उपचार के लिए बुलाए गए, किंतु अच्छी-से-अच्छी औषधियों के प्रयोग से भी राजा के रोग का निदान न कर सके।

राजा का रोग पहले की अपेक्षा दिन-प्रतिदिन बढ़ता चला गया। असाध्य रोग के कारण राजा के हृदय में विकलता और राज्य में उदासी छा गई।

एक दिन एक वृद्ध पुरुष राजा के पास आया और उसने रोगग्रस्त राजा को कहा—'राजन! एक विशेष औषधि के सेवन से आपका रोग ठीक हो सकता है। यह विशेष औषधि किसी अन्य व्यक्ति के पिताशय (पित्त की थैली) से तैयार की जाती है। यह औषधि आपके रोग को मूल से उखाड़ने की क्षमता ही नहीं रखती, अपितु आपको चिरंजीवी भी बना सकती है।' वृद्ध के वचनों को सुनकर राजा के निराश मन में आशा का संचार हो गया। उसने वृद्ध के प्रति मन-ही-मन कृतज्ञता अभिव्यक्त करते हुए राज्य के चिकित्सकों को एक ऐसे व्यक्ति को तलाश करने का आदेश दिया, जिसके पित्त की थैली से वह औषधि बनाई जा सके। अंततः चिकित्सकों को एक ऐसा परिवार मिल गया, जिसे आर्थिक तंगी के कारण भरपेट भोजन भी उपलब्ध नहीं होता था।

इस परिवार में केवल तीन सदस्य थे—एक लड़का और उसके माता-पिता। चिकित्सकों ने लड़के के माता-पिता को प्रभूत धन का प्रलोभन देकर उनके एकमात्र पुत्र को खरीदने का प्रस्ताव रखा। धन की लालसा ने माता-पिता की आँखों पर पर्दा डाल दिया। उनकी दृष्टि में धन मोह के सम्मुख पुत्र मोह फीका पड़ गया और उन्होंने अपने घर के दीपक को चिकित्सकों के हाथों बेच दिया।

चिकित्सक लड़के को राजा के सामने लेकर आए। राजा ने लड़के के पित्त की थैली को लेने के विषय में राज्य पुरोहित से विचार-विमर्श किया। पुरोहित ने कहा—'राजन! यद्यपि देश सर्वोपरि होता है, किंतु उसका शासक उससे भी बड़ा होता है, क्योंकि वह देश की रक्षा करता है तथा उसकी समृद्धि के लिए हर्संभव प्रयास करता है। ऐसे शासक के लिए किसी व्यक्ति के जीवन की बलि देना कोई अपराध नहीं है।'

पुरोहित के वचनों को सुनकर लड़के को राजा के सम्मुख खड़ा कर दिया गया। जल्लाद भी तलवार लेकर वहाँ आ पहुँचे। चिकित्सक औषधि तैयार करने वाले उपकरणों को लेकर वहाँ खड़े हो गए। अब राजा के आदेश की प्रतीक्षा थी। उसी क्षण लड़का आकाश की ओर देखकर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा। उसे हँसते देखकर, सम्राट ने लड़के से हँसने का कारण पूछा। लड़के ने कहा, 'जिस देश में माँ-बाप धन के लिए संतान को बेचें, पुरोहित निरपराध मनुष्य की हत्या को उचित ठहराए, देश और प्रजा की रक्षा करने वाला शासक निर्दोष प्राणी की जान लेकर अपनी जान बचाए, वहाँ तो ऊपर वाले के न्याय पर ही भरोसा करना पड़ेगा।'

लड़के की बातों को सुनकर राजा की आँखें खुल गईं उसे अपनी भूल पर पश्चाताप होने लगा। उसका मन ग्लानि से भर गया, उसके अंतरात्मा में मानवता के अंकुर फूट पड़े। उसने जल्लादों को वापस भेज दिया।

- (क) राजा को रोग से छुटकारा दिलाने के लिए किए गए प्रयास पर दृष्टि डालिए। (2)
- (ख) राजा के महल में कौन आया? उसने किस औषधि का सुझाव दिया? (2)
- (ग) राजा के सिपाहियों को खोजने पर कैसा परिवार मिला? सिपाहियों ने उस परिवार को क्या प्रलोभन दिया? (2)
- (घ) पुरोहित ने राजा को क्या सलाह दी? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। (2)
- (ङ) प्रस्तुत गद्यांश का मूलभाव स्पष्ट करते हुए उपयुक्त शीर्षक बताइए। (2)

9. कवि दुनिया की भौतिकी में विचरण करते हुए भी एक नैतिक, आत्मिक और मानवीय दुनिया के लिए ताउम्र समर्पित होता है। यही कविता का रसायन है। वास्तव में, कवि का अंतिम लक्ष्य दुनिया की चकाचौंध वैभव नहीं, दुनिया की समरस उज्ज्वलता होती है, जिसे किसी लिखित, पठित, अनूदित दर्शन या विज्ञान से सीमित नहीं किया जा सकता। कभी कवि से पूछकर देखें तो—“जब दुनिया में सर्वत्र बराबरी आ जाएगी, जब मनुष्य का कोई स्वप्न बचा नहीं रहेगा, तब आप क्या चाहेंगे?”

जानते हैं—जो वह कहेगा उसमें सारे पुरातन मूल्य, विचार, दर्शन, चिंतन, ज्ञान-विज्ञान आदि अनुशासन संशोधित होते दिखाई देंगे। जाहिर है कवि अपने समय में अधिकतम सुंदर मनुष्य और दुनिया देखने का एकमात्र स्वप्नदृष्टा होता है। ऐसा स्वप्नदृष्टा भला कैसे अपने सम्मुख उपस्थित दुनिया का निवासी हो सकता है। कवि, जिसे दुनिया अकारज और फुरसतिया कहती है, सबसे अधिक सक्रिय होता है। अपने गतिशील मन और संवेदना के साथ, कवि से बड़ा ‘प्रगतिकामी’ कोई नहीं होता। कवि से अधिक ‘जनाकांक्षी’ और कौन होता है? एक कवि का मन और संवेदना पहले प्रगतिशील या जनप्रिय होती है, बाद में उसकी कविता।

गतिशीलता और जनप्रियता ही कवि को उकसाती हैं। क्या कवि को अलग से ‘प्रगतिशील’ या ‘जनवादी’ कहलाने की जरूरत भी होती है। मूलतः प्रगतिकामी और जनाकांक्षी होने के बाद भी कवि है कि पिछड़ता चला जाता है—समाज में। सभ्यता के केंद्र उसे खारिज कर देते हैं, क्योंकि वह प्रश्नाकुलता से भरा होता है और केंद्र को प्रश्न पसंद नहीं होता।

कवि सभ्यता की फ़िक्र नहीं करता। वह मरता रहता है—संस्कृति के लिए, क्योंकि उसे कोई नहीं बुझा सकता कि सुसंस्कृत नहीं, सभ्य होना ही अधिक आवश्यक है।

- (क) कवि किसके प्रति समर्पित होता है? स्पष्ट कीजिए। (2)
- (ख) कवि के अंतिम लक्ष्य को स्पष्ट कीजिए, उसे स्वप्नदृष्टा क्यों कहा गया है? (2)
- (ग) कवि ‘सबसे अधिक सक्रिय’ किस प्रकार होता है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। (2)

- (घ) कौन समाज में पिछड़ता चला जाता है तथा क्यों? (2)
- (ङ) कवि किसे महत्वपूर्ण मानता है? प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (2)

10. फादर कामिल बुल्के संकल्प से संन्यासी थे, मन से नहीं। रिश्ता बनाते थे, तो तोड़ते नहीं थे। दसियों साल बाद मिलने के बाद भी उसकी गंध महसूस होती थी। वह जब भी दिल्ली आते जरूर मिलते-खोजकर, समय निकालकर, गर्मी, सर्दी, बरसात झेलकर मिलते, चाहे दो मिनट के लिए ही सही।

यह कौन संन्यासी करता है? उनकी चिंता हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की थी। हर मंच से इसकी तकलीफ़ बयान करते, इसके लिए अकाट्य तर्क देते। बस इसी एक सवाल पर उन्हें झुंझलाते देखा है और हिंदी वालों द्वारा ही हिंदी की उपेक्षा पर दुःख करते हुए उन्हें पाया है। घर-परिवार के विषय में, निजी दुःख-तकलीफ़ के बारे में पूछना उनका स्वभाव था और बड़े-से-बड़े दुःख में उनके मुख से सांत्वना के जादू भरे दो शब्द सुनना एक ऐसी रोशनी से भर देता था, जो किसी गहरी तपस्या से जनमती है। “हर मौत दिखाती है, जीवन को नई राह।” मुझे अपनी पत्नी और पुत्र की मृत्यु याद आ रही है और फादर के शब्दों से झरती विरल शांति भी।

आज वह नहीं हैं। दिल्ली में बीमार रहे और पता नहीं चला। बाँहें खोलकर इस बार उन्होंने गले नहीं लगाया। जब देखा तब वे बाँहें दोनों हाथों की सूजी अँगुलियों को उलझाए ताबूत में जिस्म पर पड़ी थी, जो शांति बरसती थी वह चेहरे पर स्थिर थी। तरलता जम गई थी। वह 18 अगस्त, 1982 की सुबह दस बजे का समय था। दिल्ली में कश्मीरी गेट के निकलसन कब्रगाह में उनका ताबूत एक छोटी-सी नीली गाड़ी में से उतारा गया। कुछ पादरी, रघुवंश जी का बेटा और उनके परिजन राजेश्वर सिंह उसे उतार रहे थे, फिर उसे उठाकर एक लंबी संकरी, उदास पेड़ों की घनी छाँह वाली सड़क से कब्रगाह के आखिरी छोर तक ले जाया गया, जहाँ धरती की गोद में सुलाने के लिए कब्र अवाक् मुँह खोले लेटी थी। ऊपर करील की घनी छाँह थी और चारों ओर कब्रें और तेज़ धूप के वृत्त।

- (क) “फादर कामिल संकल्प से संन्यासी थे, मन से नहीं” कथन में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए। (2)
- (ख) कामिल को किस बात पर झुंझलाते और दुःखी होते देखा गया था? (2)
- (ग) घर-परिवार के दुःख-तकलीफ़ के संबंध में फादर के स्वभाव पर प्रकाश डालिए। (2)
- (घ) “हर मौत दिखाती है जीवन को नई राह”— इस पंक्ति के अर्थ को स्पष्ट कीजिए। (2)
- (ङ) “जहाँ धरती की गोद में सुलाने के लिए कब्र अवाक् मुँह खोले लेटी थी” पंक्ति से क्या अभिप्राय है? फादर की अंतिम-क्रिया कहाँ की गई? (2)

# व्यावहारिक व्याकरण

## (क) विलोम शब्द

विलोम का अर्थ है—‘उल्टा’ या ‘विपरीत’। अतः किसी शब्द का उल्टा अर्थ व्यक्त करने वाला शब्द विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहलाता है। विलोम शब्द को विलोमार्थक, विपर्यायवाची और प्रतिलोमार्थक शब्द भी कहते हैं।

विलोम शब्दों के प्रयोग से भाषा में अभिव्यक्ति शक्ति बढ़ जाती है। विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु कुछ विलोम शब्द इस प्रकार हैं

| शब्द                  | विलोम शब्द   | शब्द              | विलोम शब्द       | शब्द                    | विलोम शब्द                  |
|-----------------------|--------------|-------------------|------------------|-------------------------|-----------------------------|
| अंतरंग                | बहिरंग       | आदर               | अनादर/निरादर     | उत्तम                   | अधम                         |
| अंतर्द्वंद्व          | बहिर्द्वंद्व | आश्रित            | अनाश्रित         | उदय                     | अस्त                        |
| अंतर्मुखी             | बहिर्मुखी    | आकर्षण            | विकर्षण          | उपमान                   | व्यतिरेक                    |
| अंदर                  | बाहर         | आक्रमण            | प्रतिरक्षण       | उत्तर                   | दक्षिण                      |
| अंधकार                | प्रकाश       | आस्तिक            | नास्तिक          | उत्थान                  | पतन                         |
| अकर्मक (बिना कर्म के) | सकर्मक       | आत्मीय            | अनात्मीय         | उद्घाटन                 | समापन                       |
| अकाल                  | सुकाल        | आत्मविश्वास       | आत्मसंशय         | उत्पत्ति                | विनाश                       |
| अमृत                  | विष          | आलोक              | तिमिर            | उग्र                    | शांत                        |
| अचल                   | चल           | आवश्यक            | अनावश्यक         | उर्वरा (उपजाऊ)          | बंजर                        |
| अक्षत (अखंडित)        | विक्षत       | आरोही             | अवरोही           | उचित                    | अनुचित                      |
| अक्षम (क्षमा रहित)    | सक्षम        | इच्छुक            | अनिच्छुक         | उक्त (ऊपर)              | अनुक्त                      |
| अदृश्य                | दृश्य        | इच्छा             | अनिच्छा          | उत्तीर्ण                | अनुत्तीर्ण                  |
| अस्तित्व              | अनस्तित्व    | इति (अंत)         | अथ (आदि)         | उद्गम                   | विलय                        |
| अनुकूल                | प्रतिकूल     | इज्जत             | बेइज्जत          | उद्धत (कठोर)            | विनत                        |
| अर्थ                  | अनर्थ        | इधर               | उधर              | उषा                     | संध्या                      |
| अल्पायु               | दीर्घायु     | इहलोक             | परलोक            | उदार (दयालु)            | अनुदार (निर्दय)             |
| आकाश                  | पाताल        | इतिश्री (समाप्ति) | श्री गणेश (आरंभ) | उष्ण                    | शीतल                        |
| आहार                  | निराहार      | ईश्वर             | अनीश्वर          | उपमेय (उपमा देने योग्य) | अनुपमेय (उपमा न देने योग्य) |
| आगत (आया हुआ)         | अनागत        | ईमानदार           | बेईमान           | ऊष्मा                   | शीतलता                      |
| आर्य                  | अनार्य       | ईश                | अनीश             | उन्नत                   | ऋणी                         |
| आचार                  | अनाचार       | ईप्सित (प्रिय)    | अनीप्सित         | ऊँच                     | नीच                         |

| शब्द                                           | विलोम शब्द     | शब्द         | विलोम शब्द      | शब्द                   | विलोम शब्द                 |
|------------------------------------------------|----------------|--------------|-----------------|------------------------|----------------------------|
| एकत्र                                          | विकीर्ण        | खीझना        | रीझना           | चाहा                   | अनचाहा                     |
| एक                                             | अनेक           | ख्यात        | कुख्यात         | चैन                    | बेचैन                      |
| एड़ी                                           | चोटी           | खेचर         | भूचर            | चितित                  | निश्चित                    |
| एकाग्र                                         | चंचल           | खरा          | खोटा            | चिरायु                 | अल्पायु                    |
| एकता                                           | अनेकता         | गोल          | चौकोर           | चिरंतन (शाश्वत)        | नश्वर                      |
| एकांगी (एक अंग वाला)                           | अनेकांगी       | गणतंत्र      | राजतंत्र        | विरस्थायी              | अल्पस्थायी                 |
| एकपक्षीय                                       | बहुपक्षीय      | गुप्त        | प्रकट           | चपल                    | स्थिर                      |
| एकाधिकार                                       | सर्वाधिकार     | गर्म         | ठंडा            | चेष्टा                 | निश्चेष्टा                 |
| एकेश्वरवाद (एक ईश्वर में विश्वास करने वाला मत) | बहुदेववाद      | गहरा         | छिछला/उथला      | छल                     | निश्छल                     |
| एकार्थक                                        | अनेकार्थक      | गति          | अवरोध           | छली                    | निश्छली                    |
| एकाग्रचित्त                                    | अन्यमनस्क      | गद्य         | पद्य            | छादन                   | प्रकाशन                    |
| एषणा (इच्छा)                                   | अनैषणा         | गृही         | त्यागी/संन्यासी | छाया                   | धूप                        |
| एकल                                            | समूह           | गृहीत        | त्यक्त          | छात्र                  | छात्रा                     |
| एकमुखी                                         | बहुमुखी        | ग्राम        | नगर             | छिन्न (अलग)            | संलग्न/युक्त               |
| ऐच्छिक                                         | अनैच्छिक       | गोरी         | साँवली          | छूत                    | अछूत                       |
| ऐश्वर्य                                        | अनेश्वर्य      | गाढ़ा        | पतला            | छोटा                   | बड़ा                       |
| ऐहिक                                           | पारलौकिक       | गुणी         | गुणहीन          | छुटकारा                | बंधन                       |
| ऐतिहासिक                                       | अनैतिहासिक     | गृहस्थ       | संन्यासी        | छरहरा                  | थुलथुल                     |
| ओछा                                            | गंभीर          | गरल (विष)    | सुधा (अमृत)     | जय                     | पराजय                      |
| कर्कश (कठोर)                                   | मधुर           | गरिमा        | लघिमा           | जड़                    | चेतन                       |
| कलंकित                                         | निष्कलंक       | गत           | आगत             | जटिल                   | सरल                        |
| कनिष्ठ                                         | ज्येष्ठ        | गौरक्षक      | गौभक्षक         | जन्म                   | मृत्यु                     |
| कायर                                           | निडर           | गमन          | आगमन            | जंगम (चलने वाला)       | स्थायर                     |
| क्रय                                           | विक्रय         | घर           | बाहर            | जाति                   | विजाति                     |
| जटिल                                           | सरल            | घटना         | बढ़ना           | जागृत                  | सुषुप्त                    |
| कर्मठ                                          | निकम्मा        | घात          | प्रतिघात        | जीत                    | हार                        |
| कुरूप                                          | सुरूप          | घोषित        | अघोषित          | जल                     | थल/स्थल/निर्जल             |
| कृष्ण                                          | शुक्ल          | घोष          | अघोष            | जवानी                  | बुढ़ापा                    |
| काल                                            | अकाल           | घृणा         | प्रेम           | तरल                    | ठोस                        |
| कुशल                                           | अकुशल          | घाटा         | फायदा           | तरुण (युवा)            | वृद्ध                      |
| कृतज्ञ                                         | अकृतज्ञ/कृतघ्न | घना          | विरल/छितरा      | तट                     | मझधार                      |
| कृपा                                           | अकृपा/कोप      | घटित         | अघटित           | तल                     | अतल                        |
| खंडन                                           | मंडन           | चर           | अचर             | तृष्णा                 | वितृष्णा                   |
| खिलना                                          | मुरझाना        | चतुर         | मूर्ख           | तर्कपूर्ण              | अतर्कपूर्ण                 |
| खगोल                                           | भूगोल          | चढ़ाव        | उतार            | तृप्त                  | अतृप्त                     |
| खरीदना                                         | बेचना          | चल           | अचल             | तामसिक (तमोगुण संबंधी) | सात्विक (सत्त्वगुण संबंधी) |
| खुश                                            | नाखुश          | चर्चित       | अचर्चित         | तिमिर                  | प्रकाश                     |
| खुला                                           | बंद            | चाटुकार      | स्वाभिमानी      | तीव्र                  | मंद                        |
| खाद्य                                          | अखाद्य         | चारु (प्रिय) | अचारु           | तुच्छ                  | महान्                      |
| खेद                                            | प्रसन्नता      | चित्र        | विचित्र         | सज्जन                  | दुर्जन                     |
| खाली                                           | भरा            | चिर (पुराना) | अचिर (हाल का)   | सुगंध                  | दुर्गंध                    |
| खुशकिस्मत                                      | बदकिस्मत       | चोर          | साधु (अमृत)     | सरस                    | नीरस                       |
| खुशमिजाज                                       | बदमिजाज        | चिकना        | खुरदरा          | सौभाग्य                | दुर्भाग्य                  |
| खूबसूरत                                        | बदसूरत         | चंचल         | स्थिर           | व्यय                   | आय                         |

## विगत वर्षों की परीक्षाओं में पूछे गए विलोम शब्द

| शब्द              | विलोम शब्द     |              | शब्द         | विलोम शब्द   |        |
|-------------------|----------------|--------------|--------------|--------------|--------|
| कीर्ति            | अपकीर्ति       | [2018]       | शीतल         | उष्ण         | [2008] |
| निर्मल            | मालिन          | [2018]       | मूक          | वाचाल        | [2007] |
| विजय              | पराजय          | [2018]       | बूढ़ा        | जवान         | [2007] |
| निर्दोष           | दोषी/सदोष      | [2018, 13]   | इष्ट         | अनिष्ट       | [2006] |
| आलस्य             | स्फूर्ति       | [2017]       | विख्यात      | कुख्यात      | [2006] |
| सदाचार            | दुराचार        | [2017]       | विकास        | पतन          | [2006] |
| सामिष (मांसयुक्त) | निरामिष        | [2017]       | आग्रह        | अनाग्रह      | [2006] |
| कृत्रिम           | प्राकृतिक      | [2017]       | पुरस्कृत     | दंडित        | [2005] |
| उपकार             | अपकार          | [2016]       | उत्तीर्ण     | अनुत्तीर्ण   | [2005] |
| कोमल              | कठोर           | [2016]       | गौण (गुरुता) | लाघव (लघुता) | [2005] |
| नूतन              | पुरातन         | [2016]       | आंतरिक       | बाह्य        | [2004] |
| स्वामी            | सेवक/दास       | [2016]       | विस्तार      | संकुचन       | [2004] |
| अंत               | आदि            | [2014, 03]   | सहायक        | असहायक       | [2004] |
| पवित्र            | अपवित्र        | [2014]       | नाश          | निर्माण      | [2003] |
| शांत              | अशांत          | [2013, 2002] | विशाल        | क्षुद्र      | [2003] |
| अपमान             | सम्मान         | [2012]       | धर्मात्मा    | पापात्मा     | [2003] |
| निंदा             | प्रशंसा/स्तुति | [2012, 2004] | अपमानित      | सम्मानित     | [2002] |
| साकार             | निराकार        | [2011]       | भलाई         | बुराई        | [2002] |
| विस्तृत           | संकुचित        | [2011]       | सख्त         | नरम          | [2001] |
| भाग्यवान          | भाग्यहीन       | [2010]       | नुकसान       | फ़ायदा       | [2001] |
| सगुण              | निर्गुण        | [2010]       | मामूली       | असाधारण      | [2001] |
| गुप्त             | प्रकट          | [2009]       | दंड          | पुरस्कार     | [2001] |
| त्यागी            | गृहस्थ         | [2008]       |              |              |        |

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

- |                                |             |            |            |
|--------------------------------|-------------|------------|------------|
| 1. आविर्भाव(उत्पत्ति)          | 2. जीवन     | 25. आधार   | 26. स्थिर  |
| 3. चेतन                        | 4. असीम     | 27. धनी    | 28. नीरस   |
| 5. निकट                        | 6. अनुलोम   | 29. नगर    | 30. नेकी   |
| 7. आकर्षण                      | 8. उपमान    | 31. कुकृति | 32. शुष्क  |
| 9. उत्कर्ष                     | 10. उपसर्ग  | 33. स्वप्न | 34. विधवा  |
| 11. समास (योग/मेल)             | 12. उद्घाटन | 35. व्यास  | 36. विषम   |
| 13. ग्राह्य (ग्रहण करने योग्य) | 14. तुच्छ   | 37. मौन    | 38. संगत   |
| 15. नश्वर                      | 16. धरा     | 39. सादर   | 40. भेद    |
| 17. ज्ञानी                     | 18. साक्षर  | 41. भोगी   | 42. विकर्ष |
| 19. खंडन                       | 20. कौटिल्य | 43. वृष्टि | 44. प्रसाद |
| 21. सुगम                       | 22. स्वार्थ | 45. सत्कार | 46. सहयोगी |
| 23. मानवीय                     | 24. वक्रता  | 47. शिव    | 48. भूषण   |
|                                |             | 49. फल     | 50. संयोग  |



## (ख) पर्यायवाची शब्द

पर्याय का अर्थ है—समान। अतः समान अर्थ व्यक्त करने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। पर्यायवाची शब्द किसी भी भाषा की सबलता की बहुलता को दर्शाता है। पर्यायवाची शब्द के लिए प्रतिशब्द और समानार्थक शब्दों का प्रयोग भी होता है।

विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु कुछ शब्दों के पर्यायवाची इस प्रकार हैं

| शब्द    | पर्यायवाची                               |
|---------|------------------------------------------|
| अतिथि   | अभ्यागत, मेहमान, पाहुना, आगंतुक।         |
| अग्नि   | पावक, आग, दहन, ज्वाला।                   |
| अन्वेषण | अनुसंधान, खोज, छानबीन, शोध।              |
| अश्व    | तुरंग, हय, घोड़ा, घोटका।                 |
| असुर    | दानव, राक्षस, निशाचर, दैत्य।             |
| अध्यापक | आचार्य, गुरु, शिक्षक।                    |
| अनुपम   | अद्वितीय, अनोखा, अनूठा, अद्भुत।          |
| अंधा    | नेत्रहीन, सूरदास, अंध, चक्षुविहीन।       |
| अंधकार  | तम, तिमिर, अँधेरा, ध्वांत।               |
| आँख     | नयन, दृग, चक्षु, नेत्र, लोचन, अक्षि।     |
| आभूषण   | गहना, भूषण, अलंकार, जेवर।                |
| आश्रम   | मठ, विहार, कुटी, संघ।                    |
| इनाम    | पुरस्कार, पारितोषिक, आनंदकार।            |
| इंद्र   | देवेंद्र, सुरेंद्र, देवराज, सुरेश।       |
| ईश्वर   | परमात्मा, परमेश्वर, भगवान, प्रभु, जगदीश। |
| उग्र    | प्रचंड, उत्कट, तीव्र, विकट।              |
| उत्पन्न | पैदा, उद्भव, आविर्भाव, प्रादुर्भाव।      |
| उद्यान  | उपवन, बगीचा, बाग, वाटिका।                |
| उद्धार  | मुक्ति, छुटकारा, निस्तार, रिहाई।         |
| उदाहरण  | दृष्टान्त, नमूना, निदर्शन, उद्धरण।       |
| ऋषि     | मुनि, साधु, संन्यासी, तपस्वी।            |
| ओज      | तेज, शक्ति, बल, वीर्य।                   |
| कमल     | राजीव, सरोज, पंकज, जलज।                  |
| कमला    | रमा, लक्ष्मी, लोकमाता, हरिप्रिया।        |
| कामदेव  | मदन, रतिपति, मनोज, अनंग।                 |
| कुबेर   | अनद, यक्षराज, किन्नरेश, राजराज।          |
| काक     | कौआ, काग, वायस, पिशुन।                   |
| कोयल    | पिक, कोकिल, परभृत, बसंतदूत।              |
| क्रोध   | गुस्सा, आक्रोश, रोष, अमर्ष।              |

| शब्द    | पर्यायवाची                           |
|---------|--------------------------------------|
| कृष्ण   | गोपाल, गिरिधर, मोहन, मुरारी।         |
| खल      | दुर्जन, दुष्ट, धूर्त, कुटिल।         |
| गणेश    | गणपति, एकदंत, लंबोदर, गजानन।         |
| गंगा    | भागीरथी, मंदाकिनी, नदीश्वरी, देवनदी। |
| गाय     | गौ, सुरभि, धेनु, गौरी।               |
| घर      | सदन, धाम, भवन, गृह।                  |
| चंद्रमा | शशि, चाँद, सुधाकर, मयंक।             |
| छवि     | शोभा, सौंदर्य, कांति, प्रभा।         |
| जल      | पानी, नीर, पय, सलिल।                 |
| झंडा    | ध्वज, पताका, केतु, निशान।            |
| तलवार   | असि, खड्ग, कृपाण, शमशीर।             |
| तालाब   | सरोवर, पुष्कर, जलाशय, पद्माकर।       |
| तरंग    | लहर, उर्मि, वीचि, हिलोर।             |
| तीर     | बाण, शर, सायक, शिलीमुख।              |
| दिन     | दिवस, वासर, वार, दिवा।               |
| दीन     | दरिद्र, रंक, कंगाल, निर्धन।          |
| दुःख    | पीड़ा, कष्ट, विषाद, वेदना।           |
| देव     | देवता, सुर, निर्जर, वृंदारक।         |
| धनुष    | धनु, पिनाक, सारंग, कमान।             |
| नदी     | सरिता, जलमाता, निर्झरिणी, तटनी।      |
| नर्क    | यमलोक, यमपुर, नरक, यमालय।            |
| नारी    | स्त्री, कामिनी, महिला, कांता, घरनी।  |
| निंदा   | दोषारोपण, अपवाद, बुराई, भर्त्सना।    |
| पंडित   | विद्वान्, बुद्धिमान, वीर, सुधी।      |
| पत्नी   | वधू, गृहिणी, स्त्री, भार्या।         |
| पर्वत   | गिरि, पहाड़, शैल, भू-धर।             |
| पुरुष   | मनुज, आदमी, नर, मनुष्य।              |
| पत्थर   | पाषाण, वज्र, पाहन, शिला।             |
| पुष्प   | कुसुम, सुमन, फूल, प्रसून।            |

| शब्द      | पर्यायवाची                               |
|-----------|------------------------------------------|
| प्रकाश    | ज्योति, चमक, प्रभा, आलोक।                |
| पैर       | पाँव, पद, चरण, पग।                       |
| प्रसन्नता | हर्ष, खुशी, आल्लाद, मोद।                 |
| फल        | फलम्, बीजकोश।                            |
| बादल      | मेघ, जलद, नीरद, पयोद, घन, वारिद।         |
| बिजली     | चपला, चंचला, दामिनी, विद्युत।            |
| ब्राह्मण  | भू-सुर, द्विज, भू-देव, विप्र।            |
| बाल       | अलक, केश, कुंतल, कच।                     |
| बर्फ      | तुषार, हिम, तुहिन।                       |
| भ्रमर     | मधुप, मधुकर, अलि, भौरा।                  |
| भाई       | अनुज, अग्रज, भ्राता, भ्रातृ।             |
| भय        | डर, विभीषिका, भित्ति।                    |
| भिक्षा    | भीख, याचना, माँगना, खैरात।               |
| भूख       | क्षुधा, आहारेच्छा, बुभुक्षा, अन्नलिप्सा। |

| शब्द    | पर्यायवाची                           |
|---------|--------------------------------------|
| मोर     | केकी, शिखंडी, नीलकंठ, मयूर।          |
| मृत्यु  | निधन, मरण, देहांत, देहावसान।         |
| मूढ़    | मूर्ख, अज्ञानी, निर्बुद्धि, गँवार।   |
| मीत     | सहचर, सखा, सुहृद, मित्र।             |
| महादेव  | शिव, शंकर, शंभू, महेश।               |
| यमुना   | कालिंदी, सूर्यसुता, रवितनया, भानुजा। |
| यम      | सूर्यपुत्र, धर्मराज, दंडधर, कृतांत।  |
| रक्त    | खून, लहू, रुधिर, लोहित, लक्ष्मी।     |
| रमा     | इंदिरा, हरिप्रिया, कमला, श्री।       |
| राजा    | नरेश, महीप, नरेंद्र, नृप।            |
| रावण    | दशानन, लंकेश, लंकापति, दशशीश।        |
| लता     | बल्लरी, बल्ली, बेली।                 |
| लौह     | अयस, लोहा, सार।                      |
| लक्ष्मण | लखन, शेषावतार, रामानुज, शेष।         |
| वायु    | हवा, पवन, समीर, अनिल, बयार।          |

### विगत वर्षों की परीक्षाओं में पूछे गए पर्यायवाची शब्द

| शब्द     | पर्यायवाची शब्द |              |
|----------|-----------------|--------------|
| धनवान    | धनी, अमीर       | [2018]       |
| किनारा   | कूल, तट         | [2018]       |
| दूध      | दुग्ध, क्षीर    | [2018]       |
| आनंद     | प्रसन्नता, खुशी | [2017]       |
| पुत्र    | बेटा, सुत       | [2017]       |
| राक्षस   | निशाचर, दानव    | [2017]       |
| स्वतंत्र | आजाद, मुक्त     | [2016]       |
| बादल     | मेघ, जलद        | [2016]       |
| बाधा     | अड़चन, विघ्न    | [2014]       |
| पीड़ा    | दर्द, वेदना     | [2014]       |
| मार्ग    | राह, पथ         | [2013]       |
| माता     | माँ, जननी       | [2013]       |
| पुत्री   | सुता, आत्मजा    | [2012]       |
| घमंड     | अहंकार, दर्प    | [2012, 2009] |
| भाग्य    | किस्मत, नसीब    | [2011]       |
| पवित्र   | शुद्ध, पावन     | [2011]       |
| कपड़ा    | वस्त्र, परिधान  | [2010]       |
| मछली     | मत्स्य, मीन     | [2010]       |
| आकाश     | नभ, व्योम       | [2009]       |

| शब्द   | पर्यायवाची शब्द  |              |
|--------|------------------|--------------|
| उन्नति | विकास, प्रगति    | [2008]       |
| पुत्री | दुहिता, बेटा     | [2008]       |
| इच्छा  | कामना, चाह       | [2007, 2003] |
| रात    | रात्रि, रजनी     | [2007]       |
| मंदिर  | देवालय, देवस्थान | [2006]       |
| अमृत   | सोम, सुधा        | [2006]       |
| पक्षी  | खग, पंछी         | [2006]       |
| दिन    | दिवस, वार        | [2006]       |
| देवता  | सुर, देव         | [2005]       |
| नभ     | आकाश, अंबर       | [2005]       |
| पृथ्वी | धरती, वसुधा      | [2005]       |
| भ्रम   | संशय, संदेह      | [2004]       |
| समुद्र | सागर, सिंधु      | [2004]       |
| अज्ञान | मूर्खता, जड़ता   | [2004]       |
| ब्रह्म | विधाता, अनंत     | [2004]       |
| वृक्ष  | पेड़, द्रुम      | [2003]       |
| नूतन   | नवीन, नया        | [2003]       |
| दुःख   | पीड़ा, कष्ट      | [2003]       |

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

- |             |            |             |            |
|-------------|------------|-------------|------------|
| 1. अन्वेषण  | 2. असुर    | 27. खल      | 28. उक्ति  |
| 3. अध्यापक  | 4. अनुपम   | 29. उचित    | 30. कृपा   |
| 5. अंधा     | 6. आभूषण   | 31. रक्त    | 32. बल     |
| 7. इनाम     | 8. ईश्वर   | 33. लक्ष्मी | 34. मुर्गा |
| 9. उग्र     | 10. ऋषि    | 35. पंडित   | 36. टीका   |
| 11. कपड़ा   | 12. देव    | 37. आँख     | 38. विशाल  |
| 13. पुरुष   | 14. वर्षा  | 39. झंडा    | 40. नमक    |
| 15. पुत्री  | 16. शिव    | 41. सूर्य   | 42. हिरण   |
| 17. हस्त    | 18. समूह   | 43. यमुना   | 44. लोहा   |
| 19. सरस्वती | 20. घास    | 45. खंभा    | 46. तीर    |
| 21. झरना    | 22. अभिमान | 47. केश     | 48. सभा    |
| 23. उपाय    | 24. कृपा   | 49. सफेद    | 50. सीता   |
| 25. पथ      | 26. औरत    |             |            |

### (ग) मुहावरे-लोकोक्तियाँ

#### मुहावरे

ऐसा वाक्यांश, जो लिखने, बोलने या सुनने में अपने शब्दों के सामान्य अर्थ के अतिरिक्त किसी विलक्षण अर्थ का बोध कराए, वह मुहावरा कहलाता है। यद्यपि बिना मुहावरे के भी अर्थ प्रकट किया जा सकता है, परंतु मुहावरे के समुचित प्रयोग से वाक्य के भाव सौंदर्य में वृद्धि होती जाती है अर्थात् किसी वाक्य के भावों को ऊर्जा तथा सौंदर्य प्रदान करने वाला तत्त्व मुहावरा कहलाता है।

मुहावरा शब्द मूलतः अरबी भाषा का शब्द है, अरबी में इसे 'मुहावरा' कहा जाता है, जिसका अर्थ होता है—'अभ्यास करना'। उर्दू में यही शब्द 'मुहाविरा' के रूप में प्रयुक्त होता है, जिसका अर्थ है—'बातचीत करना'। हिंदी में यही मुहावरा शब्द 'रोजमर्रा' व 'पारिभाषिक' शब्द के रूप में प्रयोग किया जाता है। मुहावरों का प्रयोग इस प्रकार होना चाहिए कि सुनने वाला भी समझ जाए तथा कही हुई बात प्रभावशाली भी हो।

#### मुहावरों की विशेषताएँ

मुहावरों का प्रयोग सदैव वाक्य के बीच में किया जाता है, इसलिए यह वाक्य का अंग बन जाता है। मुहावरे के मूल रूप में कभी परिवर्तन नहीं होता; जैसे—'अकल का दुश्मन' एक मुहावरा है। यदि 'अकल' के स्थान पर 'बुद्धि का दुश्मन' प्रयोग किया जाए, तो वह अशुद्ध होगा।

#### महत्त्वपूर्ण मुहावरे : अर्थ एवं वाक्य प्रयोग

1. **अकल के पीछे लाठी लिए फिरना** (मूर्खतापूर्ण कार्य करना) तुम तो सदैव अकल के पीछे लाठी लिए फिरते हो।
2. **अकल घास चरने जाना** (कुछ न सोचना) तुम दूसरों के झगड़ों में बेवजह पड़ते हो, लगता है तुम्हारी अकल घास चरने गई है।
3. **अकल पर पत्थर पड़ना** (बुद्धि भ्रष्ट होना) राजेश की अकल पर पत्थर पड़ गया था, जो उसने पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी।
4. **अकल का दुश्मन** (मूर्ख) राकेश को तुम ही समझाओ, वह तो अकल का दुश्मन बनता जा रहा है।
5. **आँख का तारा** (अत्यंत प्यारा) मेरा पुत्र मेरी आँखों का तारा है।
6. **आँखें चार होना** (दृष्टि का मिलना) कर्जदारों से आँखें चार होते ही विजय वहाँ से चुपचाप भाग निकला।
7. **आँखों से गिरना** (मान घटना) कायर व्यक्ति सबकी आँखों से गिर जाता है।
8. **आँख में धूल झोंकना** (धोखा देना) झूठ बोलकर माता-पिता की आँखों में धूल झोंकना गलत बात है।
9. **आँख दिखाना** (धमकाना) मेहमानों के सामने आयुष के चिल्लाने पर माँ ने उसे आँख दिखाई।

10. कान में तेल डालना (ध्यान न देना) सीरीन तो कानों में तेल डालकर बैठी है, फिर उसे कौन समझा सकता है।
11. कान काटना (दूसरों से अच्छा काम करना) हरीश केवल आठ वर्ष का है, किंतु गाने में अच्छे-अच्छों के कान काटता है।
12. कानों-कान खबर न होना (गुप्त रहना) मुख्यमंत्री शहर में आए, किंतु किसी को कानों-कान खबर भी न हुई।
13. कान पर जूँ न रेंगना (कोई असर न होना) माँ-बाप के समझाने पर भी रमेश के कान पर जूँ न रेंगी।
14. नाक रगड़ना (खुशामद करना) उसकी तो हर एक के सामने नाक रगड़ने की आदत है।
15. नाक कटना (प्रतिष्ठा या मर्यादा नष्ट होना) तुम्हारे बुरे कार्यों के कारण इस परिवार की तो नाक ही कट गई।
16. सिर की बाजी लगाना (भौत से न डरना) देश की स्वतंत्रता के लिए स्वतंत्रता सेनानियों ने सिर की बाजी लगा दी थी।
17. सिर ऊँचा करके चलना (स्वाभिमान से जीना) आदर्श जीवन जीने वाले व्यक्ति सदैव सिर ऊँचा करके चलते हैं।
18. दो-दो हाथ करना (युद्ध करना, लड़ना) पाकिस्तान से दो-दो हाथ किए बिना कश्मीर समस्या सुलझ नहीं सकती।
19. तीन तेरह होना (बिखर जाना) श्यामू का कितना बड़ा परिवार था, पर अब तो सब तीन तेरह हो गया।
20. चार चाँद लगना (सुंदरता बढ़ना) नए फर्नीचर ने घर की शोभा में चार चाँद लगा दिए हैं।
21. छठी का दूध याद आना (अत्यधिक कठिन या कष्टप्रद होना) अंग्रेजी का प्रश्न-पत्र देखते ही मुझे छठी का दूध याद आ गया।
22. आठ-आठ आँसू रोना (पछतावे में रोना) मेरा मित्र जब से माता-पिता से अलग हुआ है, तब से वह आठ-आठ आँसू रोता है।
23. नौ दो ग्यारह होना (भाग जाना) बिल्ली को देखकर चूहे नौ दो ग्यारह हो गए।
24. आनन-फानन में (बिना किसी देर के) मोहन ने आनन-फानन में गृह-कार्य समाप्त कर दिया।
25. अमृत बरसाना (सुखदायी होना) संतों की वाणी से अमृत बरसता है।
26. ओखली में सिर देना (जान बूझकर मुसीबत मोल लेना) रमेश से दोस्ती करके तुमने ओखली में सिर दे दिया।
27. ईद का चाँद होना (बहुत समय बाद दिखना) रमेश तुम तो आजकल ईद के चाँद हो गए हो।
28. ईट-से-ईट बजाना (नष्ट करना) भारतीय जवानों ने आतंकवादियों की ईट-से-ईट बजा दी।
29. उल्टी गंगा बहाना (उल्टा काम करना, नियम विरुद्ध काम करना) इतने बड़े विद्वान् को धर्मशास्त्र की बात बताना क्या उल्टी गंगा बहाना नहीं है।
30. एक अनार सौ बीमार (एक ही वस्तु के अनेक इच्छुक) बेरोजगारी के इस दौर में एक पद के लिए सैकड़ों आवेदन आते हैं, इसी को कहते हैं 'एक अनार सौ बीमार'।
31. काठ का उल्लू (मूर्ख) आज के युग में कंप्यूटर और अंग्रेजी न जानने वाले काठ के उल्लू के समान हैं।
32. कलम घिसना (बेकार की मेहनत) अगर परीक्षा में अवल न आए, तो तुम्हारा पढ़ना-लिखना कलम घिसने के बराबर है।
33. कोल्हू का बैल बनना (दिन-रात काम करना) गरीब व्यक्ति हमेशा कोल्हू के बैल की तरह काम करते हैं।
34. करवटें बदलना (चिंता के कारण नींद न आना) राहुल का दसवीं कक्षा का रिजल्ट अच्छा न होने के कारण वह रात भर करवटें बदलता रहा।
35. कूप मंडूक होना (सीमित ज्ञान होना) उसकी किसी बात में तर्क नहीं होता, क्योंकि वह कूप मंडूक बना रह गया है।
36. खेत रहना (युद्ध में मारा जाना) किसी भी देश में जब भी युद्ध होता है, हजारों वीर खेत रहते हैं।
37. खटाई में पड़ना (संशय में हो जाना) उनकी बातें सुन मैं तो खटाई में पड़ गया।
38. खाट खड़ी करना (परेशान कर देना) रमेश ने आज विधायक जी की खाट खड़ी कर दी।
39. खोपड़ी गंजी करना (अत्यधिक पिटाई करना) भीड़ ने चोरों की खोपड़ी गंजी कर दी।
40. गागर में सागर भरना (थोड़े शब्दों में अधिक कहना) प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में यथार्थ चित्रण करके गागर में सागर भरने का कार्य किया है।
41. गुड़ गोबर करना (बना बनाया काम बिगाड़ देना) इतना अच्छा खेल चल रहा था, मीनाक्षी ने सब गुड़ गोबर कर दिया।
42. गुदड़ी का लाल (सामान्य स्तर के परिवार में असाधारण व्यक्ति का उत्पन्न होना) लालबहादुर शास्त्री जैसे गुदड़ी के लाल ने भारत-भूमि पर जन्म लेकर इसे कृतार्थ किया है।
43. घी के दीये जलाना (अप्रत्याशित लाभ पर प्रसन्नता) भगवान श्रीराम के अयोध्या वापस लौटने की खुशी में अयोध्यावासियों ने घी के दीये जलाए।
44. चिकना घड़ा होना (निर्लज्ज होना) एक ही कक्षा में तीन बार अनुत्तीर्ण होने के पश्चात् वह चिकना घड़ा हो गया है।
45. चूना लगाना (धोखा देना) ठग ने रीना को चूना लगा दिया और जब उसे पता लगा, तो बहुत देर हो चुकी थी।
46. चोली-दामन का साथ (अत्यधिक घनिष्ठ संबंध) मोहन और राहुल का बचपन से चोली-दामन का साथ है।
47. छक्के छुड़ाना (परास्त करना) भारत ने विश्वकप क्रिकेट के पहले ही मैच में पाकिस्तान के छक्के छुड़ा दिए।
48. जले पर नमक छिड़कना (दुःखी व्यक्ति को और दुःख देना) रमेश सड़क पर गिरकर चोट से ग्रसित था, तभी सुरेश उस पर हँसकर जले पर नमक छिड़कने लगा।
49. जीभ चलाना (अधिक बोलना) नेताओं को भाषण देने में बहुत अधिक जीभ चलानी पड़ती है।
50. झाँसे में आना (धोखे में आ जाना) पहले मैं उसकी वास्तविकता नहीं जानता था, पर अब मैं झाँसे में नहीं आऊँगा।

51. टेढ़ी खीर होना (कठिन काम) रमेश को सही रास्ते पर लाना टेढ़ी खीर है।
52. टस-से-मस न होना (विचलित न होना) रमेश अपने काम में इतना लीन था कि भूकंप के झटकों के बाद भी वह टस-से-मस नहीं हुआ।
53. तिल का ताड़ करना (छोटी बात को बड़ा-चढ़ाकर कहना) छोटी-सी बात का तुमने तिल का ताड़ बना दिया।
54. तारे गिनना (रात में नींद न आना) परीक्षा परिणाम के इंतजार में सोनू रातभर तारे गिनता रहा।
55. तूती बोलना (अधिकार और प्रभाव होना) स्वतंत्रता-प्राप्ति से पहले भारत में भी अंग्रेजों की तूती बोलती थी।
56. दूध की मक्खी होना (निष्कासित व्यक्ति) सोनू सेठ ने अपने नौकर टोनू को घर से दूध की मक्खी की तरह निकाल दिया।
57. दो नावों पर पैर रखना (एक साथ दो काम करना) या तो परीक्षा की तैयारी कर लो या फिर व्यापार, क्योंकि दो नावों पर पैर रखना अच्छी बात नहीं होती।
58. दूध का दूध पानी का पानी होना (उचित न्याय करना) अपराधी का अपराध सिद्ध होने पर दूध का दूध पानी का पानी हो गया।
59. पौ बारह होना (अत्यधिक लाभ होना) सोने के व्यापार में उमा के पौ बारह हो गए हैं।
60. पेट में दाढ़ी होना (कम उम्र में अधिक जानना) पाँच वर्षीय मोहन ऐसी-ऐसी बातें करता था कि सभी लोग कहने लगे कि इसके तो पेट में दाढ़ी है।
61. पापड़ बेलना (कष्ट झेलना) हरि को अपने पुत्र की नौकरी के लिए पापड़ बेलने पड़े।
62. पीठ दिखाना (डरकर भाग जाना) शत्रु हमेशा पीठ दिखाकर भाग जाते हैं।
63. बाल की खाल निकालना (बहुत छानबीन करना) रमेश हर बात में बाल की खाल निकालने लगता है, जिस कारण लोग उसे पसंद नहीं करते।
64. बिजली गिरना (मुसीबत आ जाना) भूकंप के कारण अनेक लोगों की मृत्यु से देश में बिजली गिर गई।
65. बेड़ियाँ कट जाना (स्वतंत्रता प्राप्त होना) 15 अगस्त, 1947 को देशवासियों की वर्षों पुरानी दास्ता की बेड़ियाँ कट गईं।
66. भूत सवार होना (किसी बात की धुन लग जाना) वह नई गाड़ी खरीद कर ही रहेगा, क्योंकि उस पर गाड़ी खरीदने का भूत सवार हो गया है।
67. लुटिया डुबोना (काम बिगाड़ना) शेयर बाज़ार ने इस बार बड़े-बड़ों की लुटिया डुबो दी।
68. लोहे के चने चबाना (अत्यधिक कठिन कार्य करना) आज के युग में सरकारी नौकरी पाना लोहे के चने चबाने के बराबर है।
69. लकीर का फकीर होना (पुरानी मान्यताओं को सर्वोपरि मानना) वर्तमान के साथ चलना चाहिए, लकीर का फकीर नहीं बनना चाहिए।
70. लंबी-चौड़ी हाँकना (व्यर्थ की बातें बनाना) आजकल नेता वर्ग जनता को ठगने के लिए लंबी-चौड़ी हाँकते हैं।
71. लाल-पीला होना (क्रोधित होना) परीक्षा में अच्छे अंक न आने पर श्याम के पिताजी लाल-पीले हो गए।
72. शंका का निवारण करना (संदेह दूर करना) कल की सभा में सभी लोगों की शंका का निवारण किया जाएगा।
73. सफेद झूठ (बिल्कुल झूठ) उसके पी.सी.एस. में चयन होने का समाचार सफेद झूठ है।
74. सूरत आँखों में फिरना (सदैव याद रहना) कुछ लोगों की सूरतें उनकी उत्कृष्ट जीवन पद्धति के कारण सभी की आँखों में फिरती रहती हैं।
75. सीधे मुँह बात न करना (घमंड दिखाना) जब से उसे नौकरी में उच्च पद प्राप्त हुआ है, वह किसी से भी सीधे मुँह बात नहीं करता।
76. हिरन हो जाना (दूर भाग जाना) पुलिस को देखकर चोर हिरन हो गया।
77. हाथ-पाँव फूलना (डर से घबरा जाना) घर का ताला टूटा देखकर गुप्ता जी के हाथ-पाँव फूल गए।
78. घड़ों पानी पड़ना (लज्जित होना) पिता के सामने अपनी करतूतों का काला चिट्ठा खुलने पर रवि पर घड़ों पानी पड़ गया।
79. घर का दीपक बुझना (वंश का नाश होना) राधा के इकलौते बेटे की मृत्यु होने से घर का दीपक बुझ गया।
80. घोड़े बेचकर सोना (निश्चित होना) परीक्षा समाप्त होते ही रमेश घोड़े बेचकर सो गया।
81. चूड़ियाँ पहनना (कायरता दिखाना) देश की रक्षा न कर पाने से तो अच्छा है कि कायर युवा चूड़ियाँ पहनकर घर बैठें।
82. चपत लगाना (चोट पहुँचाना) सुनार ने रवि को दस हजार रुपये की चपत लगा दी।
83. चाँदी काटना (अधिक लाभ प्राप्त करना) जब से सुधीर की सरकारी नौकरी लगी है, तब से वह चाँदी काट रहा है।
84. ठगा-सा रह जाना (चकित रह जाना) राजीव का परीक्षा परिणाम देखकर उसके पिताजी ठगे-से रह गए।
85. श्रीगणेश करना (कार्य प्रारंभ करना) तुम शादी के कार्यों का श्रीगणेश कब कर रहे हो?
86. डींगें मारना (बड़ा-चढ़ाकर अपनी प्रशंसा करना) रोहन अपने मित्रों को रोज़ कक्षा में प्रथम आने की डींगें मारता रहता है।
87. तलवे चाटना (खुशामद करना) कामचोर रमेश अपने अधिकारी के सदैव तलवे चाटता है।
88. पीठ ठोकना (शाबाशी देना) खेल प्रतियोगिता में प्रथम आने पर प्रधानाचार्य जी ने मेरी पीठ ठोकी।
89. पत्थर की लकीर (अमित बात) एकलव्य के लिए गुरु की बात पत्थर की लकीर होती थी।
90. पर्दा उठाना (सार्वजनिक कर देना) गुप्ता जी के नया घर लेने की बात से आज पर्दा उठ गया।
91. बगुलाभगत होना (निरा पाखंडी) आजकल अनेक लोग भगवा (गेरुआ) वस्त्र धारण कर बगुलाभगत बन बैठे हैं।

92. बाल बाँका न होना (कुछ भी हानि न होना) सच्चे आदमी पर कितने ही झूठे आरोप क्यों न लगाए जाएँ, उसका बाल भी बाँका नहीं होता।
93. टूट पड़ना (अचानक हमला करना) उसकी बहन की शादी में हम सभी मित्र खाने पर टूट पड़े।
94. टीका-टिप्पणी करना (दूसरों के दोष गिनाना) स्वयं की गलती होने पर भी राहुल अपने मित्र पर टीका-टिप्पणी करना नहीं छोड़ रहा था।
95. कलेजा ठंडा होना (संतुष्ट एवं शांत होना) पांडवों के युद्ध जीतने पर श्रीकृष्ण के कलेजे को ठंडक पहुँची।
96. कलेजे पर पत्थर रखना (दिल मजबूत करना) पारिवारिक सदस्य की मृत्यु को लोग कलेजे पर पत्थर रखकर ही सहन कर पाते हैं।
97. कलेजे पर साँप लोटना (ईर्ष्या से हृदय जलना) पड़ोसी का मकान बनता देख श्यामलाल के कलेजे पर साँप लोटने लगा।
98. कलेजा मुँह को आना (घबरा जाना) सड़क दुर्घटना को देखकर सुमन का कलेजा मुँह को आ गया।
99. कलेजा छलनी होना (बहुत दुःख होना) पड़ोसी के दुर्व्यवहार को देखकर तो उसका कलेजा छलनी हो गया।
100. खून खौलना (क्रोध आना) दुकानदार की खुलेआम बेईमानी देखकर श्याम का खून खौल गया।
101. खून का प्यासा होना (प्राण लेने को तत्पर) राम और श्याम के आपसी झगड़े इतने बढ़ गए कि वो एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गए।
102. खून का घूँट पीना (क्रोध को दबाना) जरूरत के समय दोस्त की मदद करने से इनकार करने पर दिलशाद खून का घूँट पीकर रह गया।
103. खून-पसीना एक करना (कठिन परिश्रम करना) परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए सुनीता ने खून-पसीना एक कर दिया।
104. पानी रखना (मर्यादा की रक्षा करना) परीक्षा की तैयारी कराकर तुमने अंतिम समय में मेरा पानी रख लिया।
105. पानी-पानी हो जाना (बहुत शर्मिदा होना) जब कालू मोबाइल चुराते पकड़ा गया, तो वह शर्म से पानी-पानी हो गया।
106. पानी फेर देना (मेहनत बेकार जाना) मेरा मित्र मेरे सारे करे-कराए पर पानी फेर गया।

## विगत वर्षों की परीक्षाओं में पूछे गए मुहावरे एवं उनका वाक्य प्रयोग

1. आसमान से बातें करना (काफी जैँचा होना) दिल्ली में आसमान से बातें करती हुई बहुत-सी इमारतें हैं। [2018]
2. उड़ती चिड़िया पहचानना (दूरदर्शी होना) हमसे चाल मत चलो, हम भी उड़ती चिड़िया पहचानते हैं। [2018]
3. अपना उल्लू-सीधा करना (स्वार्थ निकालना) मुसीबत पड़ने पर मुकेश अपना उल्लू-सीधा करके निकल जाता है। [2017]
4. हाथ मलना (पछताना) चुनाव हारने पर राजो देवी हाथ मलती रह गई। [2017]
5. अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना (अपना नुकसान स्वयं करना) समय से पहले ही रोहन के पिताजी ने सेवानिवृत्ति का आवेदन देकर अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार ली। [2016]
6. बाल-बाल बचना (बिलकुल बच जाना) चंद्रबाबू नायडू नक्सलवादी हमले में बाल-बाल बच गए। [2016]
7. टका-सा जवाब देना (तुरंत इनकार कर देना) हर बात पर टका-सा जवाब देना अच्छी आदत नहीं है। [2014]
8. सिक्का जमाना (प्रभाव छोड़ना) दीपक ने कक्षा में प्रथम आकर अपना सिक्का जमा लिया। [2014]
9. आँख पर पर्दा पड़ना (वास्तविकता का ज्ञान न होना) क्रोध के कारण राज की आँखों पर पर्दा पड़ गया है। [2013]
10. घुटने टेकना (हार स्वीकार कर लेना) मैच में पाकिस्तान ने भारत के आगे घुटने टेक दिए। [2013]
11. मुँह में पानी भर आना (खाने की लालसा होना) रसमलाई देखकर मेरे मुँह में पानी भर आया। [2012]
12. टाँग अड़ाना (बाधा डालना) व्यर्थ में ही किसी के कार्यों में टाँग अड़ाना बुरी बात है। [2012]
13. ज़हर का घूँट पीना (अपमान सहन करना) बेकसूर होने के बावजूद डॉट पड़ने पर भी राम ज़हर का घूँट पीकर रह गया। [2011]
14. नाक रख लेना (इज़्जत बचा लेना) बुरे वक्त में मेरी मदद करके मोहित ने मेरी नाक रख ली। [2011]
15. चेहरा उतरना (उदास होना) राम ने सबके सामने मोहन को डाँटा, तो उसका चेहरा उतर गया। [2010]
16. गले का हार (अत्यंत प्रिय होना) मैं अपनी माताजी के गले का हार हूँ। [2010]
17. मुट्ठी गर्म करना (रिश्वत देना) सरकारी कार्यालयों में आजकल सभी कार्य मुट्ठी गर्म करने पर ही संभव होते हैं। [2009]
18. हाथ-पैर मारना (अत्यंत प्रयास करना) सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत हाथ-पैर मारने पड़ते हैं। [2009]
19. सिर नीचा होना (अत्यंत शर्मिदा होना) मेरी असफलता से मेरे माता-पिता का सिर नीचा हो गया। [2008]
20. कान खड़े होना (सतर्क होना) रात में पड़ोसी के यहाँ शोर सुनकर मेरे कान खड़े हो गए। [2008]
21. दोनों हाथों में लड्डू होना (सभी ओर से लाभ होना) किशन आज वार्षिक परीक्षा में प्रथम आया तथा आज ही छात्रवृत्ति भी मिली। उसके दोनों हाथों में लड्डू हैं। [2007]
22. कान भरना (चुगली करना) सुनीता को हर वक्त कान भरने की बहुत बुरी आदत है। [2007]



23. फूला न समाना (बहुत प्रसन्न होना) मेरे कक्षा में प्रथम आने पर पिताजी फूले नहीं समा रहे हैं। [2007]
24. दौड़-धूप करना (अत्यंत प्रयत्न करना) मुझे पढ़ाने के लिए पिताजी ने बहुत दौड़-धूप की है। [2006]
25. नाकों चने चबाना (कठिनाई उत्पन्न करना) मेरे भाई ने कुसंगति में आकर पिताजी को नाकों चने चबाने पर मजबूर कर दिया। [2006]
26. फलना-फूलना (उन्नति करना) माता-पिता की सेवा करने पर वे हृदय से फलने-फूलने का आशीर्वाद देते हैं। [2006]
27. दूर के ढोल सुहावने (दूर की अनदेखी चीज आकर्षक लगती है) पड़ोस के गाँव के प्रधान की बड़ी प्रशंसा सुनी थी कि वह बड़े दयावान और दानी हैं। एक दिन मैं उनके यहाँ गया, तो एक भिखारी को उन्हें बुरी तरह फटकारते हुए देखा। मैंने मन में सोचा कि दूर के ढोल सुहावने ही लगते हैं। [2006]
28. मिट्टी का माधो (मूर्ख व्यक्ति) हमारे गाँव में एक लड़का है, जिसका मस्तिष्क कुछ अविकसित है। सभी बच्चे उसे मिट्टी का माधो कहकर चिढ़ाने का प्रयत्न करते हैं, लेकिन वह हँसता रहता है। [2005]
29. कलई खुलना (भेद खुलना) धोखे से किया गया व्यापार थोड़े दिन ही चलता है। अंत में उसकी कलई खुल ही जाती है। [2005]
30. रंग में भंग पड़ना (चलते काम में बाधा आना) मोहन के घर में शादी की खुशी में नाच-गाना हो रहा था, लेकिन अचानक ही उसके घर में लुटेरों ने आक्रमण करके सब सामान लूट लिया, जिससे शादी के रंग में भंग पड़ गया। [2005]
31. काल के गाल में जाना (मृत्यु की चपेट में आना) गुजरात में आए भूकंप से हजारों आदमी काल के गाल में समा गए। [2002]
32. मन मसोस कर रह जाना (मायूस होकर रह जाना) उसे मेला जाने के लिए मना कर दिया गया, तो वह मन मसोस कर रह गया। [2002]
33. एक न चलना (कोई उपाय काम न करना) पुलिस के सामने चोर की एक न चली और उसने चोरी का सब माल बता दिया। [2002]
34. मन भाना (मन को अच्छा लगना) पिताजी के लिए हुए खिलौने बच्चों को इतने मन भा गए कि वे खाने-पीने की सुध भूल गए। [2001]
35. आगबबूला होना (अत्यधिक क्रोध करना) श्रीकृष्ण की युद्ध-चेतावनी सुनकर दुर्योधन आगबबूला हो गया और उसने दूत बनकर आए श्रीकृष्ण को बंदी बनाने का आदेश दे दिया। [2001]
36. अपना-सा मुँह लेकर रह जाना (अपमान सहकर रह जाना) सेठ जी ने किसी बात पर अपने नौकर को ज़ोर से डाँट दिया, तो वह बेचारा अपना-सा मुँह लेकर रह गया। [2001]
37. आव देखा न ताव (बिना सोचे-समझे) राम के द्वारा अपशब्द बोलने पर, अध्यापक ने आव देखा न ताव और राम को ज़ोर से तमाचा जड़ दिया। [2001]
38. आँखें खुलना (यथार्थ का सामना करना) सोहन के पिता अपने बेटे से व्यापार में सावधानी बरतने की बात करते थे, लेकिन उसने ध्यान नहीं दिया। जब उसे घाटा हुआ, तो उसकी आँखें खुल गईं। [2000]

## लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति का अर्थ है—‘लोक में प्रचलित उक्ति’ अर्थात् वह उक्ति, जो लोक में प्रचलित है, लोकोक्ति कहलाती है।

### मुहावरों व लोकोक्तियों में अंतर

मुहावरे व लोकोक्तियों में निम्नलिखित अंतर हैं

- मुहावरा वाक्य का अंश होता है, जबकि लोकोक्ति वाक्य होती है।
- वाक्य में प्रयोग होने पर मुहावरे का रूप बदल जाता है, जबकि लोकोक्ति यथावत् रहती है।
- अर्थ की दृष्टि से मुहावरा अपूर्ण होता है, जबकि लोकोक्ति वाक्य होती है।
- मुहावरे का आशय सरल होता है, लोकोक्ति में कठिन।
- मुहावरा वाक्य नहीं होता, इसलिए इसमें उद्देश्य-विधेय नहीं रहते हैं। लोकोक्ति में उद्देश्य-विधेय दोनों होते हैं।
- मुहावरे में प्रत्यक्ष जगत का किया व्यवहार लक्षित होता है। लोकोक्ति में भूतकाल की अनुभूति व सिद्धांत रहते हैं।

### महत्त्वपूर्ण लोकोक्तियाँ : अर्थ एवं वाक्य प्रयोग

1. अंधेर नगरी चौपट राजा (मूर्ख राजा के राज्य में अन्याय होना) हमारे समाज में गरीब को दिन-रात मेहनत करके भी उतना नहीं मिलता, जितना अमीर को बिना कुछ करे ही मिल जाता है, इसलिए यह उक्ति “अंधेर नगरी चौपट राजा” इस समाज के लिए बिलकुल उचित है।
2. अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत (नुकसान हो जाने के बाद पछताना बेकार है) परीक्षा में असफल होने के बाद रोने से कोई फायदा नहीं, परिश्रम पहले किया होता, तो अब पछताना नहीं पड़ता। सही ही कहा गया है कि “अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।”
3. अंधों में काना राजा (मूर्खों में एक व्यक्ति का थोड़ा समझदार होना) अंकुर अपने परिवार में अकेला था, जिसने 10वीं पास की थी। बाकी सभी उसके परिवार में अनपढ़ थे, इसलिए अंकुर को उसके परिवार में विद्वान् समझा जाता था। ठीक ही कहा है “अंधों में काना ही राजा” होता है।

4. अशर्फियाँ लूटे और कोयलों पर मुहर (मूल्यवान वस्तु की अपेक्षा तुच्छ वस्तु का ध्यान) उस लेखक की पुस्तक गुणवत्ता की दृष्टि से उत्कृष्ट है, किंतु आवरण-पृष्ठ के रंग-संयोजन ने पुस्तक के आकर्षण को नष्ट कर दिया है। इसे ही कहते हैं, "अशर्फियाँ लूटे और कोयलों पर मुहर।"
5. अपना पैसा खोटा, तो परखने वाले का क्या दोष (अपने ही लोग बुरे हों, तो पराए व्यक्तियों को क्या दोष दिया जाए) इंजीनियर के बेटे को चेन लुटेरे के रूप में देखकर पड़ोसी हतप्रभ रह गए, साथ ही कहा गया है 'अपना पैसा खोटा, तो परखने वाले का क्या दोष।'
6. अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है (अपने घर में कमजोर व्यक्ति भी ताकतवर दिखाई पड़ता है) मैं अकेला तुम्हारे मोहल्ले में आ गया हूँ, तो अनाप-शनाप बोले जा रहे हो। अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है।
7. आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास (किसी महान् स्तर के कार्य को करने का लक्ष्य बनाकर भी निम्न स्तर के काम में लग जाना) रवि को ऑफिस में फाइल पकड़ाते देख मोहन कहता है, तुम तो "आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास" अर्थात् अफसर बनने आए थे, चपरासी कैसे बन गए?
8. इधर कुआँ उधर खाई (हर ओर मुसीबत) ऑफिस से घर जाते वक्त एक पागल कुत्ता पीछे पड़ गया, जैसे-तैसे उससे बचते हुए मैं पेड़ पर चढ़ गया, परंतु वहाँ बंदर पीछे पड़ गया। इस परिस्थिति को कहते हैं "इधर कुआँ उधर खाई"।
9. उल्टे बाँस बरेली (विपरीत कार्य) लाला जी आगरा आए, तो दोस्तों के लिए टूंडला स्टेशन से पेठा खरीदने लगे, मैंने कहा "उल्टे बाँस बरेली" क्यों ले जा रहे हो, आगरा तो पेठे की मंडी है।
10. उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई (निर्लज्ज बन जाने पर किसी की चिंता न करना) राजू एक बार जेल क्या गया कि उसे तो अब जेल जाने में कोई शर्म महसूस नहीं होती, अतः सच ही है, "उतर गई लोई, तो क्या करेगा कोई।"
11. खिसियानी बिल्ली खंभा नोंचे (लज्जित होकर क्रोध प्रकट करना) तुम्हें मोहन ने विपरीत बातें कहीं, उससे तो तुमने कुछ न कहा अब तुम मुझे उसका उत्तर देने के लिए कह रहे हो, यह तो वही बात हुई "खिसियानी बिल्ली खंभा नोंचे।"
12. गुड़ खाए, गुलगुलों से परहेज (बनावटी या दिखावटी चीजों का त्याग करना) वर्मा जी ने कह रखा था कि वह प्याज नहीं खाते हैं, परंतु उन्होंने प्याज का डोसा बड़े चाव के साथ खा लिया, बराबर में बैठे हुए टंडन जी ने कह दिया—वाह, वर्मा जी, "गुड़ खाए, गुलगुलों से परहेज।"
13. गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है (अपराधी के संग निरपराधी भी मारा जाता है) निरपराधी सोनू बाइक चोरी के इल्जाम में पकड़ा गया, क्योंकि बाइक चोरी करने वाले उसके दोस्त थे और वह उनके साथ घूमता-फिरता था, इसलिए कहा जाता है कि "गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है।"
14. घर का भेदी लंका ढाए (आपसी फूट का भयंकर परिणाम निकलना) सत्तारूढ़ पार्टी के कुछ नेता विपक्ष में जा मिले और सरकार गिरा दी। इसे ही कहते हैं "घर का भेदी लंका ढाए।"
15. चोर की दाढ़ी में तिनका (अपराधी सदैव सशक्त रहता है) अपराधी-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति के मन में हमेशा एक खटका बना रहता है, मानो "चोर की दाढ़ी में तिनका" हो।
16. चोर-चोर मौसेरे भाई (बुरे व्यक्तियों में जल्दी ही मेल हो जाता है) मोहन और राहुल दोनों चोरी करते हैं, इसलिए उनमें मित्रता हो गई, इसलिए कहा गया है "चोर-चोर मौसेरे भाई।"
17. जब तक साँस तब तक आस (अंतिम समय तक निराश नहीं होना चाहिए) राजू की तबीयत खराब होने से उसकी हालत बहुत गंभीर है, "परंतु जब तक साँस है तब तक आस है।"
18. जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय (जिसका रक्षक ईश्वर है, उसका कोई भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता) कार दुर्घटना में जय की कार चकनाचूर हो गई, लेकिन उसे खरोंच भी नहीं आई, कबीरदास जी ने सही कहा है कि "जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय।"
19. थोथा चना बाजे घना (अल्पज्ञ व्यक्ति अधिक बातें करता है) राम खुद तो ज्यादा पढ़ा-लिखा है नहीं, लेकिन शिक्षण पद्धति की आलोचना करने से बाज नहीं आता। इसे ही कहते हैं—"थोथा चना बाजे घना।"
20. दूध का दूध, पानी का पानी (सही न्याय करना) चोरी का अपराध सिद्ध होते ही जज ने चोर को सजा देकर "दूध का दूध पानी का पानी कर दिया।"
21. रस्सी जल गई, बल नहीं गया (अहित होने पर भी घमंड समाप्त नहीं हुआ) मंत्री जी को सजा होने पर भी उन्होंने दूसरों पर रोब झाड़ना नहीं छोड़ा, इसलिए कहा जाता है "रस्सी जल गई पर बल नहीं गया।"
22. लातों के भूत बातों से नहीं मानते (दुष्ट पर समझाने-बुझाने का कोई असर नहीं होता) जेबकतरे को दो हाथ पड़ेंगे, तभी अपना अपराध कबूल करेगा, क्योंकि "लातों के भूत बातों से नहीं मानते।"
23. साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे (बिना हानि के काम सिद्ध हो जाए) कर्जदारों से अपना पैसा बड़े प्रेम से निकलवाना चाहिए, ताकि तुम्हारा पैसा भी तुम्हें वापस मिल जाए और लड़ाई भी न हो अर्थात् "साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे।"
24. होनहार बिरवान के होत चिकने पात (बड़प्पन के लक्षण बचपन में ही प्रकट हो जाते हैं) बचपन से ही रानी लक्ष्मीबाई के स्वभाव में वीरता थी। ठीक ही तो है "होनहार बिरवान के होत चिकने पात।"

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित मुहावरों एवं लोकोक्तियों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

- गुस्सा नाक पर रहना
- आँखें मैली करना
- कब्र में पाँव लटकना
- आँखें दिखाना
- तीसमार खाँ बनना
- जो खोदता है वही गिरता है
- कान पर जूँ न रेंगना
- रातों की नींद हराम होना
- जंगल में मोर नाचा, किसने देखा
- धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का
- सिर आँखों पर
- साँप सूँघना
- आसमान सिर पर उठाना
- गाँठ बाँधना
- दिमाग दिखाना

निम्नलिखित मुहावरों एवं लोकोक्तियों की सहायता से वाक्य बनाइए।

- किराए का टूटू होना
- टेढ़ी खीर
- उल्टी खोपड़ी
- जमीन-आसमान के कुलाबे मिलाना
- पीठ में छुरा भोंकना
- अपने मुँह मियाँ मिट्टू बनना
- नाच न आवे आँगन टेढ़ा
- मीठी छुरी चलाना
- न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी
- जिसकी लाठी उसकी भैंस
- आप डूबे तो जग डूबा
- किसी का घर जले कोई तपे
- सूत न कपास, जुलाहे से लट्ठमलट्ठा
- जैसा देश वैसा भेष
- स्पट पड़े तो हरगंगा

### (घ) भाववाचक संज्ञाएँ बनाना

जिन संज्ञा शब्दों से किसी वस्तु के गुण, दोष, स्वभाव, दशा या व्यापार का बोध होता है, उन्हें भावात्मक संज्ञा कहते हैं; जैसे—

- गुण के अर्थ में — सुंदरता, कुशाग्रता, बुद्धिमत्ता आदि।
- अवस्था के अर्थ में — जवानी, बचपन, बुढ़ापा आदि।
- दशा के अर्थ में — उन्नति, अवनति, चढ़ाई आदि।
- भाव के अर्थ में — मित्रता, शत्रुता, कृपणता आदि।

#### भावात्मक संज्ञा का निर्माण

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय में 'आव', 'अन', 'इ', 'ता', 'त्व', 'पन', 'आई' आदि प्रत्यय जोड़कर किया जाता है; जैसे—

##### (i) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा

| जातिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा |
|-----------------|----------------|
| मनुष्य          | मनुष्यता       |
| लड़का           | लड़कपन         |
| पुरुष           | पुरुषत्व       |
| नारी            | नारीत्व        |

| जातिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा |
|-----------------|----------------|
| बूढ़ा           | बुढ़ापा        |
| देव             | देवत्व         |
| स्त्री          | स्त्रीत्व      |

##### (ii) व्यक्तिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा

| व्यक्तिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा |
|--------------------|----------------|
| राम                | रामत्व         |
| रावण               | रावणत्व        |
| शिव                | शिवत्व         |

##### (iii) सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा

| सर्वनाम | भाववाचक संज्ञा | सर्वनाम | भाववाचक संज्ञा |
|---------|----------------|---------|----------------|
| अपना    | अपनत्व         | अहं     | अहंकार         |
| मम      | ममत्व          | निज     | निजत्व         |
| आप      | आपा            |         |                |

## (iv) विशेषण से भाववाचक संज्ञा

| विशेषण | भाववाचक संज्ञा |
|--------|----------------|
| कठोर   | कठोरता         |
| चौड़ा  | चौड़ाई         |
| वीर    | वीरता          |
| सुंदर  | सौंदर्य        |
| ललित   | लालित्य        |
| भोला   | भोलापन         |
| हरा    | हरियाली        |

## (v) क्रिया से भाववाचक संज्ञा

| क्रिया | भाववाचक संज्ञा | क्रिया | भाववाचक संज्ञा |
|--------|----------------|--------|----------------|
| घबराना | घबराहट         | खेलना  | खेल            |
| पढ़ना  | पढ़ाई          | मिलना  | मिलाप          |
| भटकना  | भटकाव          |        |                |

## (vi) अव्यय से भाववाचक संज्ञा

| अव्यय | भाववाचक संज्ञा | अव्यय | भाववाचक संज्ञा |
|-------|----------------|-------|----------------|
| दूर   | दूरी           | नीचे  | नीचाई          |
| निकट  | निकटता         | समीप  | सामीप्य        |

## विगत वर्षों की परीक्षाओं में पूछी गई भावात्मक संज्ञा

| शब्द    | भाववाचक संज्ञा में परिवर्तन |            | शब्द      | भाववाचक संज्ञा में परिवर्तन |        |
|---------|-----------------------------|------------|-----------|-----------------------------|--------|
| अधिक    | अधिकता                      | [2016, 06] | प्रतिनिधि | प्रतिनिधित्व                | [2008] |
| भक्त    | भक्ति                       | [2016]     | पूर्ण     | पूर्णता                     | [2008] |
| साधु    | साधुता                      | [2015]     | चिकित्सक  | चिकित्सा                    | [2007] |
| तपस्वी  | तपस्या                      | [2015]     | घबराना    | घबराहट                      | [2007] |
| अतिथि   | आतिथ्य                      | [2014]     | मीठा      | मिठास                       | [2006] |
| निपुण   | निपुणता                     | [2014]     | चढ़ना     | चढ़ाई                       | [2006] |
| ईश्वर   | ईश्वरत्व                    | [2013]     | लड़का     | लड़कपन                      | [2006] |
| उत्तम   | उत्तमता                     | [2013]     | बूढ़ा     | बुढ़ापा                     | [2006] |
| सेवक    | सेवकाई                      | [2012, 09] | दुःखी     | दुःख                        | [2005] |
| बच्चा   | बचपन                        | [2012]     | अपना      | अपनापन                      | [2005] |
| एक      | एकता                        | [2011, 10] | सज्जन     | सज्जनता                     | [2005] |
| उड़ना   | उड़ान                       | [2011, 10] | पंडित     | पंडिताई/पांडित्य            | [2005] |
| देव     | देवत्व                      | [2010]     | बुरा      | बुराई                       | [2005] |
| राष्ट्र | राष्ट्रीयता                 | [2009]     |           |                             |        |

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए।

- |             |            |            |           |
|-------------|------------|------------|-----------|
| 1. खेल      | 2. लड़     | 15. मान    | 16. काठ   |
| 3. ब्राह्मण | 4. बन      | 17. रंग    | 18. चाह   |
| 5. चौड़ा    | 6. खट्टा   | 19. ढीला   | 20. मनुज  |
| 7. चोर      | 8. सुस्त   | 21. अपूर्ण | 22. बूढ़ा |
| 9. सावधान   | 10. महाजन  | 23. निकट   | 24. युवा  |
| 11. कवि     | 12. अक्खड़ | 25. कर्मठ  |           |
| 13. संग     | 14. बाप    |            |           |

## (ड) लिंग परिवर्तन

### लिंग

लिंग शब्द संस्कृत भाषा का है, जिसका अर्थ है—चिह्न। जिस चिह्न द्वारा यह जाना जाए कि अमुक शब्द पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे लिंग कहते हैं। दूसरे शब्दों में, संज्ञा के जिस रूप से पुरुषत्व या स्त्रीत्व का बोध हो उसे लिंग कहते हैं। हिंदी में लिंग दो प्रकार के होते हैं

### पुल्लिंग

जिन संज्ञा शब्दों से यथार्थ या कल्पित पुरुषत्व का बोध होता है, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं; जैसे—लड़का, बैल, घोड़ा, पेड़, नगर इत्यादि। यहाँ 'लड़का' 'बैल' 'घोड़ा' से यथार्थ पुरुषत्व तथा 'पेड़' और 'नगर' से कल्पित पुरुषत्व का बोध होता है।

### स्त्रीलिंग

जिन संज्ञा शब्दों से यथार्थ या कल्पित स्त्रीत्व का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे—लड़की, गाय, लता, पुरी इत्यादि। यहाँ 'लड़की' और 'गाय' यथार्थ स्त्रीत्व का तथा 'लता' और 'पुरी' से कल्पित स्त्रीत्व का बोध होता है।

### लिंग परिवर्तन के नियम

हिंदी में अधिकांश पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग शब्द में परिवर्तित करने के नियम निम्नलिखित हैं

#### 'ई' संबंधी नियम

अकारांत तथा आकारांत पुल्लिंग शब्दों को 'ईकारांत' कर देने से स्त्रीलिंग हो जाते हैं; जैसे—लड़का-लड़की, नाना-नानी, मोटा-मोटी, गोप-गोपी, हिरन-हिरनी, पुत्र-पुत्री आदि।

#### 'इया' संबंधी नियम

'आ' प्रत्ययांत पुल्लिंग शब्दों में 'आ' के स्थान पर 'इया' लगाने से स्त्रीलिंग बन जाते हैं; जैसे—कुत्ता-कुतिया, बूढ़ा-बुढ़िया, बछड़ा-बछिया आदि।

#### 'इन' व 'आइन' संबंधी नियम

व्यवसायबोधक, जातिबोधक तथा उपनामवाचक शब्दों के अंतिम स्वर का लोप करके उनमें 'इन' और 'आइन' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग बन जाता है; जैसे—धोबी-धोबिन, कहार-कहारिन, माली-मालिन, बाघ-बाघिन आदि।

#### 'आनी' संबंधी नियम

कुछ उपनामवाची शब्दों में 'आनी' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है; जैसे—देवर-देवरानी, जेठ-जेठानी, सेठ-सेठानी, खत्री-खत्रानी आदि।

#### 'नी' संबंधी नियम

जातिवाचक या भाववाचक संज्ञाओं का पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने में यदि शब्द का अन्य स्वर दीर्घ है, तो उसे ह्रस्व करते हुए 'नी' प्रत्यय का भी प्रयोग होता है; जैसे—ऊँट-ऊँटनी, हाथी-हाथिनी आदि।

#### 'वती' व 'मती' संबंधी नियम

संस्कृत के 'वान' और 'मान' प्रत्ययांत विशेषण शब्दों में 'वान' तथा 'मान' को क्रमशः 'वती' और 'मती' कर देने से स्त्रीलिंग बन जाते हैं; जैसे—पुत्रवान-पुत्रवती, श्रीमान्-श्रीमती, बुद्धिमान-बुद्धिमती, बलवान-बलवती, भगवान-भगवती इत्यादि।

#### 'आ' संबंधी नियम

संस्कृत के अकारांत विशेषण शब्दों के अंत में 'आ' लगा देने से स्त्रीलिंग बन जाते हैं; जैसे—प्रियतम-प्रियतमा, श्याम-श्यामा, चंचल-चंचला, आत्मज-आत्मजा, कांत-कांता आदि।

#### 'इका' संबंधी नियम

जिन पुल्लिंग शब्दों के अंत में 'अक' होता है, उनमें 'अक' के स्थान पर 'इका' लगा देने से स्त्रीलिंग बन जाते हैं; जैसे—बालक-बालिका, नायक-नायिका, पालक-पालिका, सेवक-सेविका, लेखक-लेखिका आदि।

#### 'इनी' संबंधी नियम

कुछ शब्दों में 'इनी' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है; जैसे—अभिमानी-अभिमानीनी, स्वामी-स्वामिनी, तपस्वी-तपस्विनी, हंस-हंसिनी।

#### 'त्री' संबंधी नियम

कुछ शब्दों का अंत 'ता' से होने पर उनमें 'ता' के स्थान पर 'त्री' का प्रयोग करके स्त्रीलिंग बनाया जाता है; जैसे—नेता-नेत्री, धाता-धात्री, विधाता-विधात्री, वक्ता-वक्त्री।

#### 'नर' या 'मादा' शब्दों के प्रयोग संबंधी नियम

नित्य पुल्लिंग शब्द व नित्य स्त्रीलिंग शब्दों में 'नर' या 'मादा' लगाकर पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग का भेद किया जाता है; जैसे—कछुआ-मादा कछुआ, मगरमच्छ-मादा मगरमच्छ, छिपकली-मादा छिपकली, मच्छर - मादा मच्छर।

### भिन्न रूप वाले शब्दों का लिंग परिवर्तन

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|----------|------------|----------|------------|
| नर       | मादा       | बाप      | माँ        |
| बेटा     | बेटी       | पति      | पत्नी      |
| पुरुष    | महिला      | विद्वान् | विदुषी     |
| युवक     | युवती      | बैल      | गाय        |
| साधु     | साध्वी     |          |            |

### वाक्यों में लिंग संबंधी परिवर्तन

वाक्यों में लिंग के आधार पर बहुत-सी अशुद्धियाँ मिलती हैं, जिन्हें लिंग के उचित रूप के प्रयोग द्वारा शुद्ध किया जा सकता है; जैसे—

1. अशुद्ध साहित्य दो प्रकार की होती है।  
शुद्ध साहित्य दो प्रकार का होता है।
2. अशुद्ध सभी काम के लिए आपको फ़ीस देना ही पड़ेगा।  
शुद्ध सभी काम के लिए आपको फ़ीस देनी ही पड़ेगी।
3. अशुद्ध बहुत सारा मिठाइयाँ खाऊँगा—इस प्रकार कंजिका का विचार घूम रहा था।  
शुद्ध बहुत सारी मिठाइयाँ खाऊँगी—इस प्रकार कंजिका सोच-विचार कर रही थी।
4. अशुद्ध तुम्हारे माँ-बाप क्या काम करती है?  
शुद्ध तुम्हारे माँ-बाप क्या काम करते हैं?

5. अशुद्ध लड़के ने उत्तर दिया कि उसके माँ-बाप बहुत पहले मर गया है।  
शुद्ध लड़के ने उत्तर दिया कि उसके माँ-बाप बहुत पहले मर गए हैं।
6. अशुद्ध उसकी आशा पूरी भी नहीं हो पाया कि तब तक शाम हो गया था।  
शुद्ध उसकी आशा पूरी भी नहीं हो पाई कि तब तक शाम हो गई।
7. अशुद्ध उसकी सारे संपत्ति का मालिक यही एक लड़का था।  
शुद्ध उसकी सारी संपत्ति का मालिक (उत्तराधिकारी) यही एक लड़का था।
8. अशुद्ध सुभद्राकुमारी चौहान उच्चकोटि की कवि थीं।  
शुद्ध सुभद्राकुमारी चौहान उच्चकोटि की कवयित्री थीं।
9. अशुद्ध मुझे बड़ा आनंद आती है।  
शुद्ध मुझे बहुत आनंद आता है।
10. अशुद्ध बातें सुनना पड़ती हैं।  
शुद्ध बातें सुननी पड़ती हैं।

### विगत वर्षों की परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

1. बालक गुड्डे से खेल रहा है। (रेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर वाक्य पुनः लिखिए) [2017, 2010]  
उत्तर बालिका गुड़िया से खेल रही है।
2. राजा का सेवक बहुत बुद्धिमान था। (वाक्य को स्त्रीलिंग में बदलिए) [2016]  
उत्तर रानी की सेविका बहुत बुद्धिमती थी।

3. बुद्धिमान पुरुष सत्य के मार्ग से नहीं हटता है। (वाक्य को स्त्रीलिंग में बदलिए) [2006]  
उत्तर बुद्धिमती स्त्री सत्य के मार्ग से नहीं हटती है।
4. विद्वान् पुरुष सम्राट के साथ रहता है। (वाक्य को स्त्रीलिंग में बदलिए) [2005]  
उत्तर विदुषी स्त्री साम्राज्ञी के साथ रहती है।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित रेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर वाक्यों को पुनः लिखिए।

1. छात्र ने परीक्षा उत्तीर्ण की।
2. श्रीमान् आप दिल्ली जा रहे हैं।
3. रानी अपने पुत्र के साथ खेल रही है।
4. इस लड़की को बहुत प्यास लगती है।
5. पुरुष ने जूते पहने हुए हैं।
6. महारानी धनवान है।
7. राजकुमारी अत्यंत वीरांगना है।
8. बालिकाओं ने नृत्य प्रस्तुत किया।
9. जंगल में शेर घूम रहा है।
10. चाचा अत्यंत बुद्धिमान है।
11. उसकी पत्नी लेखिका और गायिका है।
12. मालिक सेवक से काम करा रहा है।

13. साधु तपस्या कर रहा है।
14. यह हिरन बहुत रूपवान है।
15. माली पौधों को पानी दे रहा है।

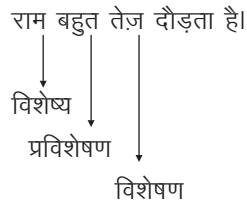
निम्नलिखित वाक्यों को स्त्रीलिंग में परिवर्तित कीजिए।

1. सभा में अनेक पुरुषों को संबोधित किया गया।
2. युवक ने अपनी बात धीमे स्वर में कही।
3. अभिनेता सुंदर लग रहा है।
4. दही बहुत खट्टा है।
5. सभी नर बुद्धिमान हैं।
6. विद्वान् लोग किसी विषय पर चर्चा कर रहे हैं।
7. धोबी ने कपड़े अच्छी तरह से धो दिए।
8. पुत्र आयुष्मान् भव।
9. सम्राट सेवक को आदेश दे रहा है।
10. पति ने बाजार से खरीददारी की।



## (च) विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। विशेषण जिसकी विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं। विशेषणों की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं; जैसे—



दिए गए उदाहरण में **राम** संज्ञा शब्द है, जिसकी विशेषता **तेज दौड़ने** से है। अतः यहाँ **तेज** विशेषण है।

विशेषण (तेज), राम की विशेषता बता रहा है। अतः **राम** विशेष्य है। (तेज) विशेषण की विशेषता (**बहुत**) यहाँ **प्रविशेषण** है। विशेषण के चार प्रमुख भेद निम्नलिखित हैं

### 1. गुणवाचक विशेषण

जिन शब्दों द्वारा संज्ञा के गुण अथवा दोष का बोध होता है, उन्हें 'गुणवाचक विशेषण' कहते हैं; जैसे—शूरवीर, दयालु, ग्रामीण, मासिक, रोगी, कमजोर, काला आदि।

### 2. परिमाणवाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों द्वारा संज्ञा की मात्रा (नाप-तौल) का बोध होता है, उन्हें 'परिमाणवाचक विशेषण' कहते हैं। परिमाणवाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं—

- (i) निश्चित परिमाणवाचक — एक लीटर, दस मीटर, एक किलो।
- (ii) अनिश्चित परिमाणवाचक — थोड़ा, कुछ, बहुत, अधिका।

### 3. संख्यावाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा की संख्या का बोध होता है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे— **एक** मेज, **चार** कुर्सियाँ, **दस** पुस्तकें, **कुछ** रुपये इत्यादि। संख्यावाचक विशेषण तीन प्रकार के होते हैं।

- (i) निश्चित संख्यावाचक — एक, दो, तीन, पहला, दूसरा
- (ii) अनिश्चित संख्यावाचक — थोड़े, कुछ
- (iii) विभागबोधक संख्यावाचक — प्रत्येक, पाँच-पाँच, दस-दस।

### 4. सार्वनामिक विशेषण

जो सर्वनाम शब्द संज्ञा के लिए विशेषण का काम करते हैं, उन्हें 'सार्वनामिक विशेषण' कहते हैं। 'यह', 'वह', 'जो', 'कौन', 'क्या', 'कोई', 'ऐसा', 'ऐसी', 'वैसा', 'वैसी' इत्यादि ऐसे सर्वनाम हैं, जो संज्ञा शब्दों के पहले प्रयुक्त होकर विशेषण का कार्य करते हैं, इसलिए इन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

## विशेषण का निर्माण

संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्ययों में उपसर्ग और प्रत्यय आदि के संयोग से विशेषण का निर्माण किया जा सकता है।

## उपसर्गों के योग से बनने वाले विशेषण शब्द

- 'अ' उपसर्ग से निर्मित
 

|                     |                    |
|---------------------|--------------------|
| अ + पूर्ण = अपूर्ण, | अ + योग्य = अयोग्य |
| अ + समय = असमय,     | अ + बोध = अबोध     |
- 'स' उपसर्ग से निर्मित
 

|                 |              |
|-----------------|--------------|
| स + गुण = सगुण, | स + फल = सफल |
| स + पूत = सपूत, | स + रस = सरस |
- 'निर्' उपसर्ग से निर्मित
 

|                           |                       |
|---------------------------|-----------------------|
| निर् + आकार = निराकार,    | निर् + दोष = निर्दोष, |
| निर् + विकार = निर्विकार, | निर् + आधार = निराधार |
- 'नि' उपसर्ग से निर्मित
 

|                 |                      |
|-----------------|----------------------|
| नि + डर = निडर, | नि + हत्था = निहत्था |
|-----------------|----------------------|
- 'दुर्' उपसर्ग से निर्मित
 

|                     |                     |
|---------------------|---------------------|
| दुर् + गम = दुर्गम, | दुर् + जन = दुर्जन, |
| दुर् + लभ = दुर्लभ, | दुर् + बल = दुर्बल  |
- 'ला' उपसर्ग से निर्मित
 

|                       |                     |
|-----------------------|---------------------|
| ला + चार = लाचार,     | ला + जवाब = लाजवाब, |
| ला + परवाह = लापरवाह, | ला + इलाज = लाइलाज  |
- 'बे' उपसर्ग से निर्मित
 

|                     |                     |
|---------------------|---------------------|
| बे + ईमान = बेईमान, | बे + चारा = बेचारा, |
| बे + कसूर = बेकसूर, | बे + रहम = बेरहम    |
- 'सु' उपसर्ग से निर्मित
 

|                     |                       |
|---------------------|-----------------------|
| सु + कर्म = सुकर्म, | सु + पुत्र = सुपुत्र, |
| सु + लेख = सुलेख,   | सु + गम = सुगम        |
- 'अध' उपसर्ग से निर्मित
 

|                     |                   |
|---------------------|-------------------|
| अध + खिला = अधखिला, | अध + पका = अधपका, |
| अध + कचरा = अधकचरा, | अध + जला = अधजला  |
- 'प्र' उपसर्ग से निर्मित
 

|                         |                        |
|-------------------------|------------------------|
| प्र + बल = प्रबल,       | प्र + दूषण = प्रदूषण,  |
| प्र + ख्यात = प्रख्यात, | प्र + सिद्ध = प्रसिद्ध |
- 'बद' उपसर्ग से निर्मित
 

|                   |                         |
|-------------------|-------------------------|
| बद + बू = बदबू,   | बद + सूरत = बदसूरत,     |
| बद + नाम = बदनाम, | बद + किस्मत = बदकिस्मत। |

**‘प्रत्यय’ के योग से ‘विशेषण’ का निर्माण****प्रत्यय ‘आ’**

| शब्द  | विशेषण | शब्द | विशेषण |
|-------|--------|------|--------|
| भूख   | भूखा   | खटक  | खटका   |
| प्यास | प्यासा | नील  | नीला   |
| बोझ   | बोझा   |      |        |

**प्रत्यय ‘ईला’**

| शब्द | विशेषण  | शब्द | विशेषण  |
|------|---------|------|---------|
| रंग  | रङ्गीला | रेत  | रेतीला  |
| रस   | रसीला   | पथर  | पथरीला  |
| जहर  | जहरीला  | सुर  | सुरीला  |
| चमक  | चमकीला  | खर्च | खर्चीला |
| बर्फ | बर्फीला | गर्व | गर्वीला |
| नोक  | नुकीला  | जोश  | जोशीला  |

**प्रत्यय ‘उ’**

| शब्द  | विशेषण | शब्द | विशेषण  |
|-------|--------|------|---------|
| स्वाद | स्वादु | अल्प | अल्पायु |

**प्रत्यय ‘ऊ’**

| शब्द  | विशेषण | शब्द   | विशेषण  |
|-------|--------|--------|---------|
| गँवार | गँवारू | बाज़ार | बाज़ारू |
| गरज   | गरजू   | टहल    | टहलू    |

**प्रत्यय ‘ऐल’**

| शब्द  | विशेषण | शब्द | विशेषण |
|-------|--------|------|--------|
| झगड़ा | झगड़ैल | तोंद | तोंदैल |
| दाँत  | दाँतैल | रोब  | रौबेल  |

**प्रत्यय ‘हरा’**

| शब्द | विशेषण | शब्द | विशेषण |
|------|--------|------|--------|
| एक   | एकहरा  | तीन  | तिहरा  |
| सोना | सुनहरा | रूप  | रूपहरा |

**प्रत्यय ‘आ’**

| शब्द  | विशेषण | शब्द | विशेषण |
|-------|--------|------|--------|
| जीत   | जीता   | भूख  | भूखा   |
| प्यास | प्यासा | मैल  | मैला   |
| प्यार | प्यारा | हार  | हारा   |

**प्रत्यय ‘आऊ’**

| शब्द  | विशेषण  | शब्द | विशेषण |
|-------|---------|------|--------|
| पंडित | पंडिताऊ | उपज  | उपजाऊ  |
| जड़ा  | जड़ाऊ   | पहना | पहनाऊ  |

**प्रत्यय ‘आर’**

| शब्द | विशेषण | शब्द | विशेषण |
|------|--------|------|--------|
| दूध  | दुधार  | गाँव | गाँवार |

**प्रत्यय ‘आलु’**

| शब्द | विशेषण | शब्द | विशेषण |
|------|--------|------|--------|
| कृपा | कृपालु | दया  | दयालु  |

**प्रत्यय ‘इक’**

| शब्द | विशेषण | शब्द | विशेषण  |
|------|--------|------|---------|
| मास  | मासिक  | धर्म | धार्मिक |
| अंश  | आंशिक  | अर्थ | आर्थिक  |
| नगर  | नागरिक | काल  | कालिक   |

**प्रत्यय ‘इत’**

| शब्द      | विशेषण     | शब्द  | विशेषण |
|-----------|------------|-------|--------|
| उत्साह    | उत्साहित   | चर्चा | चर्चित |
| प्रतिष्ठा | प्रतिष्ठित | लालन  | लालित  |
| विभाजन    | विभाजित    | विकास | विकसित |

**प्रत्यय ‘इल’**

| शब्द | विशेषण | शब्द   | विशेषण   |
|------|--------|--------|----------|
| धूम  | धूमिल  | फेन    | फेनिल    |
| बोझ  | बोझिल  | स्वप्न | स्वप्निल |

**प्रत्यय ‘ई’**

| शब्द   | विशेषण  | शब्द    | विशेषण   |
|--------|---------|---------|----------|
| देश    | देशी    | विश्वास | विश्वासी |
| अनुराग | अनुरागी | अधिकार  | अधिकारी  |
| अभ्यास | अभ्यासी | खानदान  | खानदानी  |
| विवेक  | विवेकी  | विरह    | विरही    |
| सुख    | सुखी    | अज्ञान  | अज्ञानी  |

**प्रत्यय ‘ईन’**

| शब्द | विशेषण | शब्द | विशेषण |
|------|--------|------|--------|
| नमक  | नमकीन  | नव   | नवीन   |

**प्रत्यय ‘ईय’**

| शब्द   | विशेषण   | शब्द          | विशेषण          |
|--------|----------|---------------|-----------------|
| पर्वत  | पर्वतीय  | नाटक          | नाटकीय          |
| पुस्तक | पुस्तकीय | स्वर्ग        | स्वर्गीय        |
| देश    | देशीय    | विश्वविद्यालय | विश्वविद्यालयीय |

## प्रत्यय 'ओड़ तथा ओड़ा'

| शब्द | विशेषण          | शब्द | विशेषण        |
|------|-----------------|------|---------------|
| हँस  | हँसोड़, हँसोड़ा | भाग  | भगोड़, भगोड़ा |

## प्रत्यय 'क'

| शब्द   | विशेषण | शब्द    | विशेषण  |
|--------|--------|---------|---------|
| ठंड    | ठंडक   | आदेश    | आदेशक   |
| आराधना | आराधक  | मीमांसा | मीमांसक |

## प्रत्यय 'ठ'

| शब्द | विशेषण | शब्द | विशेषण |
|------|--------|------|--------|
| जरा  | जरठ    | कर्म | कर्मठ  |

## प्रत्यय 'क्त'

| शब्द  | विशेषण  | शब्द   | विशेषण   |
|-------|---------|--------|----------|
| संयोग | संयुक्त | अभियोग | अभियुक्त |
| वियोग | वियुक्त | योग    | युक्त    |

## प्रत्यय 'मय'

| शब्द  | विशेषण  | शब्द  | विशेषण  |
|-------|---------|-------|---------|
| जल    | जलमय    | मंगल  | मंगलमय  |
| प्रेम | प्रेममय | शांति | शांतिमय |

## प्रत्यय 'वान्'

| शब्द  | विशेषण    | शब्द    | विशेषण      |
|-------|-----------|---------|-------------|
| धन    | धनवान्    | गुण     | गुणवान्     |
| मूल्य | मूल्यवान् | श्रद्धा | श्रद्धावान् |

## प्रत्यय 'मान्'

| शब्द   | विशेषण    | शब्द | विशेषण   |
|--------|-----------|------|----------|
| बुद्धि | बुद्धिमान | श्री | श्रीमान  |
| धी     | धीमान     | आयुष | आयुष्मान |

## प्रत्यय 'य'

| शब्द | विशेषण | शब्द  | विशेषण  |
|------|--------|-------|---------|
| सभा  | सभ्य   | भोग   | भोग्य   |
| योग  | योग्य  | ग्राम | ग्राम्य |

## प्रत्यय 'र'

| शब्द | विशेषण | शब्द | विशेषण |
|------|--------|------|--------|
| मधु  | मधुर   | मुख  | मुखर   |

## प्रत्यय 'ल'

| शब्द  | विशेषण | शब्द | विशेषण |
|-------|--------|------|--------|
| श्याम | श्यामल | वत्स | वत्सल  |
| शीत   | शीतल   | मांस | मांसल  |

## प्रत्यय 'वाला'

| शब्द  | विशेषण               | शब्द   | विशेषण     |
|-------|----------------------|--------|------------|
| गायक  | गानेवाला             | धन     | धनवाला     |
| पैसा  | पैसावाला, पैसेवाला   | विद्या | विद्यावाला |
| घोड़ा | घोड़ावाला, घोड़ेवाला | रथ     | रथवाला     |

## सर्वनाम से बनने वाले विशेषण

| सर्वनाम | विशेषण         | सर्वनाम | विशेषण |
|---------|----------------|---------|--------|
| आप      | आपसा/अपना      | यह      | ऐसा    |
| तुम     | तुमसा/तुम्हारा | वह      | वैसा   |
| कौन     | कैसा           | मैं     | मेरा   |
| जो      | जैसा           | हम      | हमारा  |

## क्रिया से बनने वाले विशेषण

| क्रिया | विशेषण   | क्रिया | विशेषण   |
|--------|----------|--------|----------|
| खाना   | खाऊ      | भगाना  | भगौड़ा   |
| लड़ना  | लड़ाकू   | भूलना  | भुलक्कड़ |
| पीना   | पियक्कड़ | उड़ना  | उड़ाकू   |
| पढ़ना  | पढ़ाकू   | कमाना  | कमाऊ     |

## अव्यय से बनने वाले विशेषण

| अव्यय | विशेषण | अव्यय | विशेषण |
|-------|--------|-------|--------|
| बाहर  | बाहरी  | आगे   | अगले   |
| ऊपर   | ऊपरी   | पीछे  | पिछले  |
| नीचे  | निचला  |       |        |

## विगत वर्षों की परीक्षाओं में पूछे गए विशेषण शब्द

1. मोहन और रमेश सच्चे मित्र थे। ('मित्रता' शब्द का प्रयोग कीजिए।)

[2018]

उत्तर मोहन और रमेश में सच्ची मित्रता थी।

2. अन्याय का सब विरोध करते हैं। (रेखांकित का विशेषण लिखते हुए वाक्य पुनः लिखिए।)

[2017]

उत्तर अन्याय के सब विरोधी हैं।

| शब्द    | विशेषण     |
|---------|------------|
| अपेक्षा | अपेक्षित   |
| गुण     | गुणी       |
| लोभ     | लोभी       |
| इतिहास  | ऐतिहासिक   |
| धर्म    | धार्मिक    |
| पूजा    | पूजनीय     |
| रसायन   | रासायनिक   |
| नुकसान  | नुकसानदायक |
| नीति    | नैतिक      |
| साहित्य | साहित्यिक  |

[2018]

[2018]

[2016]

[2016]

[2015]

[2015]

[2014]

[2014]

[2013]

[2013]

| शब्द    | विशेषण    |
|---------|-----------|
| अनुभव   | अनुभवी    |
| दिन     | दैनिक     |
| माया    | मायावी    |
| नमक     | नमकीन     |
| ईमानदार | ईमानदारी  |
| रोग     | रोगी      |
| परिवार  | पारिवारिक |
| अहिंसा  | अहिंसक    |
| दर्शन   | दर्शनीय   |
| अच्छा   | अच्छाई    |
| बुद्धि  | बुद्धिमान |

[2012]

[2011]

[2011]

[2010]

[2010]

[2009]

[2009]

[2008]

[2008]

[2007]

[2007]

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्द का विशेषण लिखते हुए वाक्य पुनः लिखिए।

1. पुरुष बहुत विवेक से काम लेते हैं।
2. मोहन को भूख लगी है।
3. रामराज्य चर्चा में है।
4. साँप में बहुत अधिक जहर होता है।
5. देश के प्रधानमंत्री डॉ. नरेंद्र मोदी की बहुत प्रतिष्ठा है।
6. हमारा देश विकास कर रहा है।
7. अमित को खाने में नमक पसंद है।
8. यह चित्र बाज़ार से लिया गया है।
9. सहनशील होना एक गुण है।
10. हम पर्वत की यात्रा पर गए।

निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए।

1. भारत
2. अर्थ
3. धन
4. दया
5. कृपा
6. गुरु
7. लघु
8. पूजा
9. नमक
10. इतिहास
11. स्वाद
12. घर

13. साहित्य
14. खटास
15. मिठास
16. हिंसा
17. ओज
18. पत्थर
19. अनुभव
20. संकेत
21. अंक
22. अग्नि
23. अंचल
24. अपेक्षा
25. ज्ञान
26. क्षेत्र
27. क्षमा
28. क्षण
29. हृदय
30. संक्षेप
31. संपादक
32. शोषण
33. श्रद्धा
34. शक्ति
35. विकास
36. वर्ष
37. वंदन
38. लक्षण
39. राजनीति
40. मर्म
41. मार्मिक
42. बुद्ध
43. पुराण
44. जागरण
45. छवि
46. छल
47. खर्च
48. केंद्र
49. कपट
50. खतरा

## (छ) पदक्रम

### पदक्रम

पदक्रम से तात्पर्य है—सार्थक शब्दों को भाषा के नियमों के अनुसार वाक्य में प्रयोग करना। वाक्य में शब्दों को व्याकरणिक कोटियों के अनुसार व्यवस्थित न करने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है; जैसे—नाव में नदी है। इस वाक्य में सभी शब्द सार्थक हैं, फिर भी क्रम के अभाव में वाक्य गलत है। सही क्रम करने पर 'नदी में नाव है' वाक्य बन जाता है, जो शुद्ध है।

### वाक्य-निर्माण में पदक्रम संबंधी नियम

1. वाक्य में शब्दों का प्रयोग क्रमशः कर्ता, कर्म व क्रिया (यदि सकर्मक हो तो) के क्रम में किया जाता है; जैसे—मोहन घूमने जाता है।
2. यदि क्रिया अकर्मक हो तो वाक्य में पहले कर्ता और उसके बाद क्रिया आती है; जैसे—मुकेश गाता है।
3. अप्रत्यक्ष कर्म (संप्रदान कारक में) प्रायः प्रत्यक्ष कर्म के पहले आता है; जैसे—राजेश ने गरीबों को कंबल दिया।
4. विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग वाक्य के प्रारंभ में किया जाता है; जैसे—अरे! तुम कहाँ थे?
5. संबंध कारक (का, की, के) का प्रयोग संबंधित संज्ञा से पूर्व किया जाता है; जैसे—पिता की आज्ञा, राजा का पुत्र।
6. प्रश्नवाचक वाक्यों में हाँ या ना उत्तर वाले प्रश्नों में क्या प्रश्नवाचक शब्द वाक्य के प्रारंभ में आता है और शेष प्रश्नवाचक शब्द वाक्य के मध्य में प्रयोग किए जाते हैं; जैसे—क्या आप वहाँ पहुँच गए हैं? वह वहाँ किस प्रकार पहुँचेगा?
7. क्रिया-विशेषण का प्रयोग सदैव क्रिया के पूर्व में किया जाता है; जैसे—वह तेज गति से दौड़ रहा था।

8. आग्रह के लिए 'न' अव्यय का प्रयोग वाक्य के अंत में होता है; जैसे—तुम घूमने चलो ना, आप भी खाओ ना।

### पदक्रम के उदाहरण

1. को एक बार बुलाया बीरबल ने अकबर। [2006]  
**सही क्रम** एक बार अकबर ने बीरबल को बुलाया।
2. छात्रों ने अतिथि को एक फूलों की माला पहनाई।  
**सही क्रम** छात्रों ने अतिथि को फूलों की एक माला पहनाई।
3. भीड़ में व्यक्ति चार दिल्ली के भी थे।  
**सही क्रम** भीड़ में दिल्ली के चार व्यक्ति भी थे।
4. प्रदर्शन किया कई बैंक के कर्मचारियों ने।  
**सही क्रम** बैंक के कई कर्मचारियों ने प्रदर्शन किया।
5. एक धार्मिक ग्रंथ है रामचरित मानस।  
**सही क्रम** रामचरित मानस एक धार्मिक ग्रंथ है।
6. बच्चे को काटकर फल खिलाओ।  
**सही क्रम** फल काटकर बच्चे को खिलाओ।
7. आचार्य रामचंद्र शुक्ल विचारक गंभीर थे।  
**सही क्रम** आचार्य रामचंद्र शुक्ल गंभीर विचारक थे।
8. उत्सवों और त्योहारों का देश हमारा देश है।  
**सही क्रम** हमारा देश उत्सवों और त्योहारों का देश है।
9. साँप को उसने मारा पीट-पीटकर।  
**सही क्रम** उसने साँप को पीट-पीटकर मारा।
10. नेहरू नगर में रहता मैं हूँ।  
**सही क्रम** मैं नेहरू नगर में रहता हूँ।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित वाक्यों को पदक्रम की दृष्टि से शुद्ध रूप में लिखिए।

1. इस गद्य के लेखक हैं सरदार पूर्णसिंह। उन्होंने मज़दूरी और प्रेम का अर्थ बताते हुए और दोनों के अंतर को समझाते हुए कहते हैं कि ..... ।
2. प्राचीन काल से ही ईश्वर की सृष्टि में श्रेष्ठ कहे जाने वाले मानव अपनी ही जाति का शोषण करते आ रहा।
3. लेखक महोदय का कहना है कि यह कैसी विडंबना है—मानव और मानव के बीच विभेद।
4. आधुनिक काल में जो कवि लेखक होते हैं वे समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होते, उनके लिए प्रतिष्ठा आवश्यक नहीं।
5. अभी अतिथि खाए नहीं, न अभी भगवान को भोग ही नहीं लगे हैं, अभी से खाने के लिए पहुँच गई है।
6. आपका कृपा-पत्र धन्यवाद सहित मिला।
7. एक गर्मियों की बात सुनाता हूँ।
8. मेरे मित्र जो छात्रावास में रहते हैं, ने यह मुझे कलम दी है।
9. वह मनुष्य जिसके हृदय में मातृभूमि का प्यार नहीं, उसे पशु समझना चाहिए।
10. तमस उपन्यास में उस समय की भीषण, भयावह और नृशंसता के आँसुओं से भरी दर्दनाक कहानी है।
11. उसके लाभ से वंचित रहता है, किंतु मज़दूर मेहनत करता है।
12. शिक्षा अनिवार्य हिंदी की कर दी गई है।
13. पुस्तक एक भी अच्छी नहीं इस विषय पर है।
14. बुरा आदमी भी बुरे से सम्मान चाहता है।
15. परिश्रम करते तो यदि तुम उत्तीर्ण हो जाते।
16. कर्तव्य के प्रति निष्ठावान् हमें होना चाहिए।
17. प्रेमचंद ने कहानी कफ़न लिखी है।
18. मैंने लंबी सैर पर जाना शुरू डॉक्टर के कहने पर कर दिया।
19. कागजात ने अधिकारियों की जाँच की।
20. बाघ एक घाट का और बकरी पानी पीते हैं।

## (ज) वचन परिवर्तन

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से एकत्व या अनेकत्व का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। वचन को दो भागों में विभक्त किया गया है

- (i) एकवचन (ii) बहुवचन

शब्द के जिस रूप से एक वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे—लड़का, घोड़ा, कलम, बच्चा आदि।

शब्द के जिस रूप से अनेक वस्तु का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे—लड़के, घोड़े, कलमें, बच्चे आदि।

### वचन परिवर्तन के नियम

#### पुल्लिंग शब्दों के नियम

‘आ’ से अंत होने वाली संज्ञाओं के अंतिम ‘आ’ को ‘ए’ में बदलकर बहुवचन बनाया जाता है; जैसे—

|       |   |       |       |   |       |
|-------|---|-------|-------|---|-------|
| लड़का | — | लड़के | घोड़ा | — | घोड़े |
| कपड़ा | — | कपड़े | केला  | — | केले  |
| रुपया | — | रुपये | बूढ़ा | — | बूढ़े |

**नोट** कुछ ऐसी भी पुल्लिंग संज्ञाएँ हैं, जिनके रूप दोनों वचनों में एक समान रहते हैं; जैसे—दादा, बाबा, मामा, पिता, कर्ता, दाता, योद्धा, युवा, आत्मा, देवता इत्यादि।

#### स्त्रीलिंग शब्दों के नियम

- ‘अ’ से अंत होने वाली स्त्रीलिंग संज्ञाओं में अंतिम ‘अ’ को ‘एँ’  
(ँ) करके, बहुवचन शब्द बनाए जाते हैं।  

|        |   |          |       |   |         |
|--------|---|----------|-------|---|---------|
| बात    | — | बातें    | रात   | — | रातें   |
| सड़क   | — | सड़कें   | झील   | — | झीलें   |
| पुस्तक | — | पुस्तकें | बहन   | — | बहनें   |
| आँख    | — | आँखें    | दीवार | — | दीवारें |

- अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में अंतिम ‘आ’ के आगे ‘एँ’ जोड़कर बहुवचन शब्द बनाए जाते हैं।  

|           |   |             |        |   |          |
|-----------|---|-------------|--------|---|----------|
| कथा       | — | कथाएँ       | लता    | — | लताएँ    |
| कामना     | — | कामनाएँ     | वार्ता | — | वार्ताएँ |
| अध्यापिका | — | अध्यापिकाएँ | भावना  | — | भावनाएँ  |
| महिला     | — | महिलाएँ     | सभा    | — | सभाएँ    |

- ‘इ’ या ‘ई’ से अंत होने वाले स्त्रीलिंग शब्दों में ‘ई’ को ‘इ’ करके तथा अंत में ‘याँ’ जोड़ने से बहुवचन बनाए जाते हैं।  

|      |   |         |        |   |           |
|------|---|---------|--------|---|-----------|
| तिथि | — | तिथियाँ | नारी   | — | नारियाँ   |
| नीति | — | नीतियाँ | रीति   | — | रीतियाँ   |
| थाली | — | थालियाँ | प्याली | — | प्यालियाँ |
| नदी  | — | नदियाँ  | रानी   | — | रानियाँ   |

- ‘आ’, ‘उ’, ‘ऊ’ और ‘औ’ से अंत होने वाले स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में ‘एँ’ लगाकर (अंतिम ‘ऊ’ ह्रस्व कर दिया जाता है।) बहुवचन बनाए जाते हैं।  

|          |   |            |        |   |          |
|----------|---|------------|--------|---|----------|
| ऋतु      | — | ऋतुएँ      | धेनु   | — | धेनुएँ   |
| पुस्तिका | — | पुस्तिकाएँ | बालिका | — | बालिकाएँ |
| बहु      | — | बहुएँ      | वधू    | — | वधुएँ    |
| गौ       | — | गौएँ       | सेना   | — | सेनाएँ   |

- ‘या’ से अंत होने वाली संज्ञाओं को बहुवचन में बदलने के लिए अंत में (ँ) जोड़ा जाता है।  

|         |   |          |         |   |          |
|---------|---|----------|---------|---|----------|
| चिड़िया | — | चिड़ियाँ | चुहिया  | — | चुहियाँ  |
| गुड़िया | — | गुड़ियाँ | पुड़िया | — | पुड़ियाँ |
| कुटिया  | — | कुटियाँ  | बुदिया  | — | बुदियाँ  |
| डिबिया  | — | डिबियाँ  | कुतिया  | — | कुतियाँ  |

**नोट** सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होने वाले शब्द—प्राण, आँसू, दर्शन, होश, बाल, हस्ताक्षर आदि हैं। सदैव एकवचन में प्रयुक्त होने वाले शब्द—माल, जनता, सामान, सामग्री, सोना आदि हैं।

### विगत वर्षों की परीक्षाओं में पूछे गए विशेषण प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यों में वचन बदलिए

- शिक्षक ने अपने शिष्य को आदेश दिया। [2018]  
**उत्तर** शिक्षक ने अपने शिष्यों को आदेश दिए।
- परिश्रमी व्यक्ति विपत्तियों से नहीं घबराता है। [2013]  
**उत्तर** परिश्रमी व्यक्ति विपत्तियों से नहीं घबराते हैं।
- विद्यार्थी पुस्तक पढ़ रहे हैं। [2012]  
**उत्तर** विद्यार्थी पुस्तकें पढ़ रहे हैं।

- आसमान में चिड़िया उड़ रही है। [2010]  
**उत्तर** आसमान में चिड़ियाँ उड़ रही हैं।
- इन फूलों का रंग कितना निराला है। [2007]  
**उत्तर** इस फूल का रंग कितना निराला है।
- उस लड़की ने आज एक पुस्तक पढ़ी। [2005]  
**उत्तर** उन लड़कियों ने आज अनेक पुस्तकें पढ़ीं।
- समुद्र का एक मेंढक कुएँ में आ पहुँचा। [2004]  
**उत्तर** समुद्र के अनेक मेंढक कुएँ में आ पहुँचे।



## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित शब्दों का बहुवचन रूप लिखिए।

- |             |             |
|-------------|-------------|
| 1. किताब    | 2. मेज      |
| 3. रीति     | 4. एक       |
| 5. लेखक     | 6. मनुष्य   |
| 7. विद्यालय | 8. भारतीय   |
| 9. भक्त     | 10. विधा    |
| 11. दुकान   | 12. दवाई    |
| 13. आँख     | 14. नेता    |
| 15. पैर     | 16. नारी    |
| 17. वस्तु   | 18. शत्रु   |
| 19. राष्ट्र | 20. अधिकारी |

निम्नलिखित शब्दों का एकवचन रूप लिखिए।

- |              |              |
|--------------|--------------|
| 1. विद्वानों | 2. साधुओं    |
| 3. पक्षियों  | 4. सरहदें    |
| 5. चश्मे     | 6. चपरासियों |
| 7. ठेकेदारों | 8. कलाएँ     |

- |                |                |
|----------------|----------------|
| 9. गाँवों      | 10. समुद्रों   |
| 11. खिलौने     | 12. जातियाँ    |
| 13. त्रुटियाँ  | 14. देवताओं    |
| 15. कमीजें     | 16. आशंकाएँ    |
| 17. पंखुड़ियाँ | 18. देशवासियों |
| 19. शृंगों     | 20. नेताओं     |

निम्नलिखित वाक्यों के वचन बदलिए।

- आतंकवादी ने पुलिस पर गोली चलाई।
- बच्चा गुड़िया से खेल रहा है।
- विद्यार्थी ने अध्यापक को उपहार दिया।
- डॉक्टर ने रोगी को दवाई दी।
- पुलिसकर्मी को डाकू के अड़्डे का पता चल गया।  
(रेखांकित शब्द का वचन बदलकर वाक्य पुनः लिखिए)
- बच्चा कहानी पढ़ रहा है।  
(रेखांकित शब्द का वचन बदलकर वाक्य पुनः लिखिए)

### (झ) वाक्यांश के लिए एक शब्द

जब हम लंबे वाक्यांश के स्थान पर एक शब्द में अपने भावों व विचारों को स्पष्ट कर देते हैं, तब यह क्रिया 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' कहलाती है। कम शब्दों में अधिक भावों को व्यक्त करने वाली भाषा प्रभावशाली होती है। इसी पर आधारित कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं

| वाक्यांश                                  | एक शब्द     | वाक्यांश                                 | एक शब्द           |
|-------------------------------------------|-------------|------------------------------------------|-------------------|
| जिसके समान कोई दूसरा न हो                 | अद्वितीय    | केवल इसी लोक से संबंधित                  | इहलौकिक           |
| नारी, जिसका पति न हो                      | अपति        | दूसरे की वृद्धि देखकर जलन करने का भाव    | ईर्ष्या           |
| जो आँखों से दिखाई न दे/जिसे देखा न जा सके | अदृश्य      | जिस वस्तु को चाहा गया हो                 | ईप्सित            |
| जो किसी के द्वारा पराजित न हो सके         | अपराजेय     | जो दूसरों से ईर्ष्या करता हो             | ईर्ष्यालु         |
| जो दूर की बात न सोच सके                   | अदूरदर्शी   | जिसका हृदय उदार हो                       | उदारहृदय          |
| आवश्यकता से अधिक वर्षा                    | अतिवृष्टि   | ऊपर कहा गया                              | उपरोक्त/उपर्युक्त |
| किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना              | अतिशयोक्ति  | पर्वत के पास की भूमि                     | उपत्यका           |
| जो मृत्यु के समीप हो                      | आसन्नमृत्यु | जिसका उपकार किया गया हो                  | उपकृत             |
| करुणा स्वर में चिल्लाने की ध्वनि          | आर्तध्वनि   | ऊपर की ओर जाने वाला                      | ऊर्ध्वगामी        |
| आशा से अधिक/जिसकी आशा न की गई हो          | आशातीत      | ऊँचे स्वर से उच्चारण किया गया            | ऊर्ध्वोच्चारित    |
| अतिथि की सेवा करने वाला                   | आतिथेय      | विवाहित स्त्री से उत्पन्न पुत्र          | औरस               |
| अपने जीवन का स्वलिखित इतिहास              | आत्मकथा     | जो केवल कहने-सुनने के लिए हो             | औपचारिक           |
| तत्काल कविता करने वाला                    | आशुकवि      | वह कथा जो जन साधारण में प्रचलित हो       | किंवदंती          |
| इंद्रियों को वश में रखने वाला             | इंद्रियजीत  | जो इंद्रियों से प्राप्त नहीं किया जा सके | अगोचर             |
| जिसकी आकांक्षा हो                         | इष्ट        | जो कहा गया है                            | कथित              |

## वाक्यांश

जिसका कुछ क्षणों में ही नाश हो जाए  
क्षमा करने वाला व्यक्ति  
भूख से व्याकुल  
जो भूमि उपजाऊ हो  
खाने योग्य पदार्थ  
आकाश में चलने वाला  
परंपराओं (रूढ़ियों) के अनुसार चलने वाला  
रात और संध्या के बीच की बेला (समय)  
हाथी का बच्चा  
जहाँ तक जाना है  
अधिक दिनों तक जीने वाला  
बहुत दिनों तक रहने वाला  
जो पहले कभी न हुआ हो  
जिस पर चिह्न लगाया गया  
छिपे वेश में रहना  
सहसा छिपकर आक्रमण करने वाला  
सेना के ठहरने का स्थान  
छोटे-से-छोटे दोषों की खोज करने वाला  
पेट की अग्नि  
जल में रहने वाले जंतु  
जल में जन्म लेने वाला/जल में पैदा होने वाला  
जानने की इच्छा रखने वाला  
किसी भी पक्ष का समर्थन न करने वाला  
हमेशा रहने वाला  
जो ममत्व से रहित हो  
तत्त्व जानने वाला  
वह रोग जिसमें सूर्य की तेज किरणों के कारण  
दिन में बहुत कम दिखाई देता हो  
स्वामी के स्नेह से रहित स्त्री  
जिसको पकड़ने में दिक्कतों का सामना करना पड़े  
अनुचित बातों के लिए आग्रह  
धर्म में आस्था (निष्ठा) रखने वाला  
यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मार्थ बना हुआ घर  
धारण करने वाला  
दूसरे के बच्चे का पालन-पोषण करने वाली स्त्री  
रात्रि में विचरण करने वाला  
जिस पर कोई कलंक न लगा हो  
जिसमें तेज न हो  
जिसे किसी बात की स्पृहा (आकांक्षा) न हो  
अगुआ बनकर मार्ग दिखाने वाला  
परलोक से संबंधित

## एक शब्द

क्षणभंगुर  
क्षमाशील  
क्षुधातुर  
उर्वरा  
खाद्य  
खेचर/नभचर  
गतानुगति/रूढ़िवादी  
गोधूलि  
गजशावक/कलभ  
गंतव्य  
चिरंजीवी  
चिरस्थायी  
अभूतपूर्व  
चिह्नित  
छद्मवेशी  
छापामार  
छावनी  
छिद्रान्वेशी  
जठरानल/जठराग्नि  
जलचर  
जलज  
जिज्ञासु  
तटस्थ  
शाश्वत  
निर्मम  
तत्त्वविद्  
दिनौंधी  
दुर्भगा  
दुरभिग्रह  
दुराग्रह  
धर्मात्मा/धर्मनिष्ठ  
धर्मशाला  
धारक  
धात्री/धाय  
निशाचर  
निष्कलंक  
निस्तेज  
निःस्पृह  
पथ-प्रदर्शक  
पारलौकिक

## वाक्यांश

जो शीघ्र किसी बात या युक्ति को सोच ले  
पीने की इच्छा रखने वाला  
पिता की हत्या करने वाला  
पूर्णिमा की रात्री  
फल की आकांक्षा वाला  
केवल फल खाकर जीवन व्यतीत करने वाला/जो  
केवल फल खाकर रहता हो  
बहुत-सी भाषाओं को जानने वाला  
जो बालकों के लिए उपयोगी हो  
जिसकी जीविका बुद्धि के माध्यम से चलती हो  
जो भूखा हो  
जो अधिक धन खर्च करता हो  
किसी गूढ़ विषय की वृहत् टीका  
भय उत्पन्न करने वाला  
दीवार पर बने हुए चित्र  
संयम से और कम बोलने वाला/जो कम बोलता हो  
मोक्ष की इच्छा रखने वाला  
कम खर्च करने वाला  
जो युद्ध में स्थिर हो  
लड़ाई लड़ने की उत्सुकता  
जो अधिक बोलता हो/व्यर्थ की बहुत बातें बोलने  
वाला  
जिसका पति मर गया हो  
वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गई हो  
जीतने की इच्छा  
जिसका कोई अंग बेकार हो  
जो शक्ति का उपासक हो  
सौ वर्ष की आयु पूरी करने वाला  
शत्रु का हनन करने वाला  
जो शरण का इच्छुक हो  
जिसका स्वभाव उदार हो  
गाय जिसके साथ बछड़ा हो  
ईश्वर को साकार मानने वाला भक्त  
जो सब-कुछ जानता हो  
समान आयु वाला  
अभी-अभी स्नान किया हुआ/की हुई  
जिसे देख-सुनकर हृदय फटता हो  
किसी वस्तु को दूसरे के हाथों देना  
हाथ की कारीगरी  
वह सामग्री जो हवन के लिए हो

## एक शब्द

प्रत्युत्पन्नमति  
पिपासु  
पितृहंता  
पूर्णमासी  
फलासक्त  
फलाहारी  
बहुभाषाविद्  
बालोपयोगी  
बुद्धिजीवी  
बुभुक्षु  
बहुव्ययी  
भाष्य  
भयानक  
भित्तिचित्र  
मितभाषी  
मुमुक्षु  
मितव्ययी  
युधिष्ठिर  
युयुत्सा  
वाचाल  
विधवा  
विधुर  
विजयेच्छा  
विकलांग  
शाक्त  
शतायु  
शत्रुघ्न  
शरणार्थ  
सहृदय  
सवत्सा  
सगुणोपासक  
सर्वज्ञ  
समवयस्क  
सद्यस्नात/सद्यस्नाता  
हृदयविदारक  
हस्तान्तरित  
हस्तकौशल  
हवि

## विगत वर्षों की परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

रेखांकित शब्द के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग कीजिए।

1. मुझसे कोई भी बात कहने में संकोच न करें। [2018]

उत्तर मुझसे कोई भी बात निःसंकोच करें।

2. विद्यार्थी को जानने की इच्छा रखने वाला होना चाहिए। [2017]

उत्तर विद्यार्थी को जिज्ञासु होना चाहिए।

3. महाराणा प्रताप के साहस की तुलना नहीं की जा सकती है। [2016]

उत्तर महाराणा प्रताप का साहस अतुलनीय है।

4. आप परिवार के साथ हमारे घर आइएगा। [2015]

उत्तर आप सपरिवार हमारे घर आइएगा।

5. उसका कार्य प्रशंसा के योग्य था। [2014]

उत्तर उसका कार्य प्रशंसनीय था।

6. जीवन-भर मैं इसी आचरण का पालन करता आया हूँ। [2013]

उत्तर आजीवन मैं इसी आचरण का पालन करता आया हूँ।

7. विष्णु शर्मा अच्छे कुल में जन्म लेने वाले ब्राह्मण थे। [2010]

उत्तर विष्णु शर्मा कुलीन ब्राह्मण थे।

8. गर्मी की छुट्टियों में मैंने अपने मित्रों के साथ मसूरी घूमने जाने का निर्णय किया। [2008]

उत्तर ग्रीष्मावकाश में मैंने अपने मित्रों के साथ मसूरी घूमने जाने का निर्णय किया।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित वाक्यांश के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करते हुए वाक्यों को पुनः लिखिए।

1. व्यक्ति में अच्छे-बुरे की पहचान करने का गुण होना चाहिए।

2. सुमित्रा, भगवान राम की सौतेली माँ थी।

3. विद्यार्थियों में विद्या से विशेष अनुराग का गुण होना चाहिए।

4. भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार नाटक का अंत सुखमय होना चाहिए।

5. मनुष्य को सदैव अपने भरोसे रहना चाहिए।

6. बनारसी साड़ियाँ बनाने वालों की हाथ की कारीगरी कमाल की है।

7. मनुष्य की मानवीयता यही है कि वह सभी की भलाई की इच्छा रखने वाला हो।

8. लाल किले पर सेना के ठहरने का स्थान बनाया गया है।

9. सिकंदर में विश्व को जीतने की इच्छा प्रबल थी।

10. जयशंकर प्रसाद ऊँचे कुल से संबंधित व्यक्ति थे।

11. वह ईश्वर में विश्वास न रखने वाली प्रवृत्ति का व्यक्ति है।

12. रवि का छोटा भाई सत्य, रज व तम तीनों गुणों से परे है।

13. आकाश में दिखाई देने वाले तारे गणना योग्य नहीं हैं।

14. आजकल के नेता तो व्यर्थ की बातें करने वाले हैं।

15. अनुज बहुत ध्यान से पुस्तक पढ़ता है।

## (अ) काल

‘काल’ क्रिया के उस रूप को कहते हैं, जिससे उसके करने या होने के समय तथा पूर्णता या अपूर्णता का ज्ञान होता है। काल के तीन भेद हैं

### (i) भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से कार्य की समाप्ति का बोध हो, उसे ‘भूतकाल’ कहते हैं। दूसरे शब्दों में “जिस क्रिया से बीते हुए समय में क्रिया का होना पाया जाता है, उसे भूतकाल कहते हैं।”

भूतकाल के छः भेद हैं

(क) सामान्यभूत क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का निश्चित ज्ञान न हो, उसे सामान्यभूत कहते हैं; जैसे—

- श्याम गया।
- गीता आई।

(ख) आसन्नभूत क्रिया के जिस रूप से क्रिया के व्यापार (कार्य) का समय आसन्न (निकट) ही समाप्त समझा जाए, उसे आसन्नभूत कहते हैं; जैसे—

- अंकुर नैनीताल से लौटा है।
- मैं खाना खा चुका हूँ।

(ग) अपूर्णभूत क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाए कि क्रिया भूतकाल में हो रही थी, लेकिन उसकी समाप्ति का पता न चले, उसे ‘अपूर्णभूत’ कहते हैं; जैसे—सितार बज रहा था।

(घ) पूर्णभूत क्रिया के जिस रूप से बीते समय में कार्य की समाप्ति का पूर्ण बोध होता है, उसे पूर्णभूत कहते हैं; जैसे—

- मैं खाना खा चुका हूँ।

(ङ) संदिग्धभूत क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में कार्य के पूर्ण होने या न होने में संदेह होता है, उसे संदिग्धभूत कहते हैं; जैसे—

- श्याम ने गाया होगा।

(च) हेतु हेतुमद्भूत क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता हो कि क्रिया भूतकाल में होने वाली थी पर किसी कारणवश न हो सकी, उसे हेतु हेतुमद्भूत कहते हैं; जैसे—

- यदि वह पढ़ता, तो परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता।

### (ii) वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से वर्तमान समय में क्रिया का होना पाया जाए, उसे वर्तमान काल कहते हैं। इसमें क्रिया का आरंभ हो चुका होता है, पर समाप्ति नहीं होती।

वर्तमान काल के तीन भेद हैं

(क) सामान्य वर्तमान क्रिया का वह रूप जिससे वर्तमान काल में क्रिया का होना पाया जाए, सामान्य वर्तमान कहलाता है; जैसे—

- लड़का पढ़ता है।

(ख) संदिग्ध वर्तमान क्रिया का वह रूप जिससे वर्तमान काल में क्रिया के होने में संदेह पाया जाए, उसे संदिग्ध वर्तमान कहते हैं; जैसे—

- राम पढ़ता होगा।

(ग) अपूर्ण वर्तमान क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल में क्रिया की अपूर्णता का बोध होता है, उसे अपूर्ण वर्तमान कहते हैं; जैसे—

- वह पढ़ रहा है।

### (iii) भविष्यत् काल

क्रिया के जिस रूप से भविष्य में होने वाली क्रिया का बोध हो, उसे भविष्यत् काल कहते हैं।

भविष्यत् काल के तीन भेद हैं

(क) सामान्य भविष्यत् क्रिया के जिस रूप से भविष्य में होने वाले कार्य के संबंध में जानकारी हो अथवा यह व्यक्त हो कि क्रिया सामान्यतः भविष्य में होगी, उसे सामान्य भविष्यत् कहते हैं; जैसे—

- लता गीत गाएगी।

(ख) संभाव्य भविष्यत् क्रिया का वह रूप जिससे कार्य होने की संभावना का बोध हो, उसे संभाव्य भविष्यत् कहते हैं; जैसे—

- संभव है कि वह कल जाएगा।

(ग) हेतु हेतुमद् भविष्यत् क्रिया का वह रूप जिससे भविष्य में एक समय में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर करता हो, हेतु हेतुमद् भविष्यत् कहलाता है; जैसे—

- राम जाए, तो मैं बजाऊँ।

## विगत वर्षों की परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

1. रात में सर्दी बढ़ जाएगी। (अपूर्ण वर्तमान काल में बदलिए) [2017]  
उत्तर रात में सर्दी बढ़ रही है।
2. मोहन कल विद्यालय गया था। (भविष्यत् काल में बदलिए) [2017]  
उत्तर मोहन कल विद्यालय जाएगा।
3. मैं कलम से लिखूँगा। (भूतकाल में बदलिए) [2015]  
उत्तर मैं कलम से लिख चुका था।
4. वह मुझे अतिप्रिय लगने लगा। (भविष्यत् काल में बदलिए) [2014]  
उत्तर वह मुझे अतिप्रिय लगने लगेगा।
5. विद्यार्थियों ने एक निबंध लिखा। (वर्तमान काल में बदलिए) [2011]  
उत्तर विद्यार्थी एक निबंध लिख रहे हैं।
6. हलवाई ने जलेबियाँ बनाई थीं। (भविष्यत् काल में बदलिए) [2009]  
उत्तर हलवाई जलेबियाँ बनाएगा।

7. मुसाफिर धर्मशाला में विश्राम करते हैं। (भूतकाल में बदलिए) [2008]  
उत्तर मुसाफिर धर्मशाला में विश्राम करते थे।
8. जंगल के राजा शेर ने पशु-समाज की असुरक्षा से चिंतित होकर पशुओं की एक सभा बुलाई। (भविष्यत् काल में बदलिए) [2006]  
उत्तर जंगल का राजा शेर पशु-समाज की असुरक्षा से चिंतित होकर पशुओं की एक सभा बुलाएगा।
9. प्रशंसा के योग्य जीवन तो उन लोगों का है, जो दूसरों के लिए जीते हैं। (भविष्यत् काल में बदलिए) [2003]  
उत्तर प्रशंसा के योग्य जीवन तो उन लोगों का होगा, जो दूसरों के लिए जीएँगे।
10. माँ ने पुत्र को तप करने के लिए प्रेरित किया। (वर्तमान काल में बदलिए) [2002]  
उत्तर माँ, पुत्र को तप करने के लिए प्रेरित करती है।

## अभ्यास प्रश्नावली

निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए।

1. मैं क्रिकेट मैच देखने जा रहा हूँ। (भूतकाल में)
2. तुमने कितनी रोटियाँ खाई थीं? (भविष्यत् काल में)
3. सीता बाजार जाती होगी। (सामान्य वर्तमान काल में)
4. राम पत्र लिखता है। (अपूर्ण भूतकाल में)
5. सीता गई होगी। (हेतु-हेतुमद् भूतकाल में)
6. कल पुरस्कार बाँटे गए थे। (भविष्यत् काल में)
7. तुम अपने माता-पिता के पास रहोगे। (वर्तमान काल में)

8. जो जैसा करता है, वैसा ही भरता है। (भविष्यत् काल में)
9. विद्यार्थियों ने एक गीत गाया था। (वर्तमान काल में)
10. हम गर्मियों में केरल घूमने जाएँगे। (भूतकाल में)
11. रमेश अंग्रेजी भाषा की पुस्तक पढ़ता है। (संभाव्य भविष्य में)
12. सीता फल खरीदने बाजार जाती होगी। (वर्तमान काल में)
13. राकेश जाता। (संदिग्ध भूत में)
14. मैं कल विद्यालय जाऊँगा। (वर्तमान काल में)
15. राम घूमने गया होगा। (हेतु-हेतुमद्भूत में)

## (ट) अशुद्धि शोधन

मनुष्य सदैव भाषा को उच्चारण एवं लेखन के स्तर पर शुद्ध रूप में प्रयोग करना चाहता है, किंतु कभी-कभी भूल, चूक व त्रुटिवश वह उनका अशुद्ध रूप में प्रयोग कर देता है, जिससे कभी-कभी उच्चारण एवं लेखन में शब्द की वर्तनी या वाक्यगत हो जाती हैं, इन्हीं अशुद्धियों का निवारण करना ही अशुद्धि शोधन कहलाता है। अशुद्धि शोधन को सामान्यतः दो भागों में बाँटा गया है

1. वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ
2. वाक्यगत अशुद्धियाँ

### वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ

लिखने की रीति को 'वर्तनी' या 'अक्षरी' कहते हैं। वर्तनी का सीधा संबंध उच्चारण से होता है। हिंदी में जो उच्चारित किया जाता है, वही लिखा जाता है। यदि उच्चारण अशुद्ध होगा तो वर्तनी भी अशुद्ध होगी, जिन्हें निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा समझा जा सकता है—

| अशुद्ध     | शुद्ध       | अशुद्ध    | शुद्ध     | अशुद्ध        | शुद्ध         |
|------------|-------------|-----------|-----------|---------------|---------------|
| अगामी      | आगामी       | ऊंट       | ऊँट       | विद्यार्थियों | विद्यार्थियों |
| अजमाइश     | आजमाइश      | कंगना     | कँगना     | नीती          | नीति          |
| अहार       | आहार        | अँगूर     | अंगूर     | उत्थान        | उत्थान        |
| अशीर्वाद   | आशीर्वाद    | अँगूली    | अंगुली    | पूण्य         | पुण्य         |
| अवश्यकता   | आवश्यकता    | अलँकार    | अलंकार    | पुरुष         | पुरुष         |
| अकाश       | आकाश        | अँजलि     | अंजलि     | रुख           | रुख           |
| अंत्यक्षरी | अंत्याक्षरी | अयोधा     | अयोध्या   | साधूवाद       | साधुवाद       |
| अतिथी      | अतिथि       | जदि       | यदि       | कूआँ          | कुआँ          |
| अभीनेता    | अभिनेता     | जम        | यम        | आधूनिक        | आधुनिक        |
| अभीमान     | अभिमान      | जमुना     | यमुना     | बंगला         | बँगला         |
| परिणती     | परिणति      | मिष्टान्न | मिष्ठान्न | मुंह          | मुँह          |
| बहीरंग     | बहिरंग      | मुट्ठी    | मुट्ठी    | डाँट          | डाँट          |
| अंतीम      | अंतिम       | यथेष्ट    | यथेष्ट    | तांता         | ताँता         |
| तिथी       | तिथि        | तत्कालिक  | तात्कालिक | दूंगा         | दूँगा         |
| जलांजली    | जलांजलि     | तलाब      | तालाब     | अँगार         | अंगार         |
| वाल्मीकी   | वाल्मीकि    | नदान      | नादान     | अँगुरि        | अंगुरि        |
| उत्पात     | उत्पात      | रमायण     | रामायण    | अँश           | अंश           |
| दूबारा     | दुबारा      | नराज      | नाराज     | गांधी         | गाँधी         |
| रेणू       | रेणु        | ललायित    | लालायित   | जाचना         | जाँचना        |
| भानू       | भानु        | प्रतीज्ञा | प्रतिज्ञा | जुवती         | युवती         |
| हिंदोस्तान | हिंदुस्तान  | ब्रिटीश   | ब्रिटिश   | जुवा          | युवा          |
| उपद्रव     | उपद्रव      | अशुद्धी   | अशुद्धि   | जोग           | योग           |
| गोलामी     | गुलामी      | स्थायीत्व | स्थायित्व | अभीष्ट        | अभीष्ट        |
| गूंगा      | गूँगा       | पतीव्रता  | पतिव्रता  | इकट्ठा        | इकट्ठा        |
| बांस       | बाँस        | कवीता     | कविता     | इष्ट          | इष्ट          |
| ऊंचा       | ऊँचा        | उत्पत्ती  | उत्पत्ति  | धुँआ          | धुआँ          |



## वाक्यगत अशुद्धियाँ

वाक्यगत अशुद्धियों में संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, कारक, पदक्रम आदि से संबंधित अशुद्धियाँ सम्मिलित की जाती हैं।

### वाक्य शुद्धिकरण के सामान्य नियम

वाक्य शुद्धिकरण के नियम निम्नलिखित हैं

- वाक्य रचना में संज्ञा, सर्वनाम, कर्म, विशेषण, क्रिया-विशेषण, वचन, लिंग, कारक का प्रयोग आवश्यकतानुसार होना चाहिए।

वाक्यगत अशुद्धियों के उदाहरण निम्नलिखित हैं

1. अशुद्ध उसे मृत्युदंड की सजा मिली।  
शुद्ध उसे मृत्युदंड मिला।
2. अशुद्ध ईश्वर के अनेकों रूप हैं।  
शुद्ध ईश्वर के अनेक रूप हैं।
3. अशुद्ध आपकी पुस्तक, जो मेरे पास थी खो गई।  
शुद्ध आपकी जो पुस्तक मेरे पास थी, वह खो गई।
4. अशुद्ध वह कुर्सी में बैठा है।  
शुद्ध वह कुर्सी पर बैठा है।
5. अशुद्ध तुम्हें क्षमा माँगना चाहिए।  
शुद्ध तुम्हें क्षमा माँगनी चाहिए।
6. अशुद्ध मैं स्वामी जी का दर्शन करूँगा।  
शुद्ध मैं स्वामी जी के दर्शन करूँगा।
7. अशुद्ध मैं अभी ग्रहकार्य कर लूँगा।  
शुद्ध मैं अभी गृहकार्य कर लूँगा।
8. अशुद्ध हम सब छत में खेलेंगे।  
शुद्ध हम सब छत पर खेलेंगे।
9. अशुद्ध हिमालय पर्वत सबसे ऊँचा पर्वत है।  
शुद्ध हिमालय सबसे ऊँचा पर्वत है।
10. अशुद्ध मैंने झूठ बोला।  
शुद्ध मैंने झूठ कहा।
11. अशुद्ध तुम चोरी के कारण दंड योग्य हो।  
शुद्ध तुम चोरी के कारण दंडनीय हो।
12. अशुद्ध पहली अप्रैल से नया सत्र शुरू हुआ।  
शुद्ध एक अप्रैल से नया सत्र शुरू हुआ।
13. अशुद्ध प्रद्युम्नराज लब्धप्रतिष्ठित अध्यापक हैं।  
शुद्ध प्रद्युम्नराज प्रतिष्ठित अध्यापक हैं।
14. अशुद्ध किंजल्क अनेक विषयों के ज्ञाता हैं।  
शुद्ध किंजल्क अनेक विषय के ज्ञाता हैं।
15. अशुद्ध मैं केवल इतना ही चाहता हूँ।  
शुद्ध मैं इतना ही चाहता हूँ।
16. अशुद्ध प्रज्ञा गुणवान् स्त्री है।  
शुद्ध प्रज्ञा गुणवती स्त्री है।
17. अशुद्ध उन्होंने मेरे समक्ष हाथ जोड़ा।  
शुद्ध उन्होंने मेरे समक्ष हाथ जोड़े।
18. अशुद्ध मैं उसकी चातुर्यता से दंग रह गया।  
शुद्ध मैं उसकी चतुरता से दंग रह गया।
19. अशुद्ध ठंडा घड़े का पानी पिलाइए।  
शुद्ध घड़े का ठंडा पानी पिलाइए।
20. अशुद्ध कृष्णा और राधा नृत्य कर रही हैं।  
शुद्ध कृष्णा और राधा नृत्य कर रहे हैं।
21. अशुद्ध चाँटा लगते ही उसका आँसू निकल पड़ा।  
शुद्ध चाँटा लगते ही उसके आँसू निकल पड़े।
22. अशुद्ध मैं कलम के साथ लिखता हूँ।  
शुद्ध मैं कलम से लिखता हूँ।
23. अशुद्ध तुम बच्चों को कहानी सुनाया कर।  
शुद्ध तुम बच्चों को कहानी सुनाया करो।
24. अशुद्ध यह काम चार आदमी का है।  
शुद्ध यह काम चार आदमियों का है।
25. अशुद्ध साहित्य और जीवन का घोर संबंध है।  
शुद्ध साहित्य और जीवन का घनिष्ठ संबंध है।
26. अशुद्ध मुझे उपर्युक्त नियम स्वीकार हैं।  
शुद्ध मुझे उपरोक्त नियम स्वीकार हैं।
27. अशुद्ध छात्रों ने मंत्री जी को एक फूलों की एक माला पहनाई।  
शुद्ध छात्रों ने मंत्री जी को फूलों की एक माला पहनाई।
28. अशुद्ध डाल में चिड़िया बैठी है।  
शुद्ध डाल पर चिड़िया बैठी है।

29. अशुद्ध प्रत्यूष का भविष्य उज्ज्वल हो।  
शुद्ध प्रत्यूष का भविष्य उज्ज्वल हो।
30. अशुद्ध पद्मा बहुत बुद्धिमान शिक्षिका है।  
शुद्ध पद्मा बहुत बुद्धिमती शिक्षिका है।
31. अशुद्ध मेरे को अभी जाना है।  
शुद्ध मुझे अभी जाना है।
32. अशुद्ध तुलसीदास ने अनेकों ग्रंथ लिखे।  
शुद्ध तुलसीदास ने अनेक ग्रंथ लिखे।
33. अशुद्ध कामायनी एक उच्चकोटि का काव्य है।  
शुद्ध कामायनी उच्चकोटि का महाकाव्य है।
34. अशुद्ध ईश्वर सबका भाग विधाता है।  
शुद्ध ईश्वर सबका भाग्य विधाता है।
35. अशुद्ध संतोस का फल मीठा होता है।  
शुद्ध संतोष का फल मीठा होता है।
36. अशुद्ध आपका स्वास्थ्य कैसा है?  
शुद्ध आपका स्वास्थ्य कैसा है?
37. अशुद्ध वहाँ चेचक के खतरे का डर है।  
शुद्ध वहाँ चेचक के फैलने का डर है।
38. अशुद्ध मैंने भगवद्गीता पढ़ा है।  
शुद्ध मैंने भगवद्गीता पढ़ी है।
39. अशुद्ध अनेकों बार देख चुका हूँ।  
शुद्ध अनेक बार देख चुका हूँ।
40. अशुद्ध महादेवी वर्मा विद्वान् कवयित्री थीं।  
शुद्ध महादेवी वर्मा विदुषी कवयित्री थीं।
41. अशुद्ध आज सभा में अनेकों नेताओं के भाषण हुए।  
शुद्ध आज सभा में अनेक नेताओं के भाषण हुए।
42. अशुद्ध मैं लड़के को पढ़ाया हूँ।  
शुद्ध मैंने लड़के को पढ़ाया है।
43. अशुद्ध इन बातों से तेरे को क्या लेना-देना।  
शुद्ध इन बातों से तुझे क्या लेना-देना।
44. अशुद्ध यह मेरा मित्र है, यह मेरे साथ रहता है।  
शुद्ध मेरा यह मित्र मेरे साथ रहता है।
45. अशुद्ध वृक्षों पर कोयल बैठी है।  
शुद्ध वृक्ष पर कोयल बैठी है।
46. अशुद्ध पेड़ में फल लगा है।  
शुद्ध पेड़ पर फल लगा है।
47. अशुद्ध बेटी पराया घर का धन होता है।  
शुद्ध बेटी पराया धन होती है।
48. अशुद्ध एक विश्वविद्यालय का कर्मचारी गिरफ्तार हो गया।  
शुद्ध विश्वविद्यालय का एक कर्मचारी गिरफ्तार हो गया।
49. अशुद्ध वह दंड देने योग्य है।  
शुद्ध वह दंडनीय है।
50. अशुद्ध वह विलाप करके रोने लगा।  
शुद्ध वह विलाप करने लगा।
51. अशुद्ध माँ की आज्ञा के अनुकूल वह सो गया।  
शुद्ध माँ की आज्ञा के अनुसार वह सो गया।
52. अशुद्ध आपकी कृपा-पत्र मिला।  
शुद्ध आपका कृपा-पत्र मिला।

### विगत वर्षों की परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

- |                                                                                                                              |        |                                                                                                                       |        |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------|
| 1. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध रूप में लिखिए।<br>(i) प्रदर्शनी – प्रदर्शनी<br>(ii) गृंथ – लक्ष्मी<br>(iii) अपरीचीत – अपरिचित  | [2018] | 3. अशुद्ध असफल हो जाने पर, उसे भारी दुःख हुआ।<br>शुद्ध असफल हो जाने पर उसे बहुत दुःख हुआ।                             | [2013] |
| 2. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध रूप में लिखिए।<br>(i) प्रतीष्टा – प्रतिष्ठा<br>(ii) गृंथ – ग्रंथ<br>(iii) परीस्थती – परिस्थिति | [2017] | 4. अशुद्ध घर जाने में एकमात्र चार दिन शेष हैं।<br>शुद्ध घर जाने में मात्र चार दिन शेष हैं।                            | [2011] |
|                                                                                                                              |        | 5. अशुद्ध साँझ होते ही पक्षी अपने-अपने नीर को लौट आते हैं।<br>शुद्ध साँझ होते ही पक्षी अपने-अपने नीड़ को लौट आते हैं। | [2008] |
|                                                                                                                              |        | 6. अशुद्ध कृपया मुझे घर पहुँचाने की कृपा करें।<br>शुद्ध कृपया मुझे घर पहुँचाने का कष्ट करें।                          | [2007] |

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित शब्दों से संबंधित वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को शुद्ध रूप में लिखिए।

- |              |               |
|--------------|---------------|
| 1. पुष्पअवली | 2. कविच्छा    |
| 3. परिष्ठेद  | 4. परमोषध     |
| 5. नेयन      | 6. पौअक       |
| 7. महिन्द्र  | 8. अधिआत्म    |
| 9. देवर्षी   | 10. अतेव      |
| 11. वाक्मय   | 12. देहंत     |
| 13. लघुत्तम  | 14. रामअयन    |
| 15. वारिश    | 16. निस्वार्थ |
| 17. निशुल्क  | 18. दुश्शील   |
| 19. अधापतन   | 20. विशेषतह   |

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए।

- रोगी का अस्पताल में इलाज चलेगा।

- हवा ठंडी बह रही है।
- रामायण का टीका मैंने पढ़ी।
- मुझसे यह काम संभव नहीं हो सकता।
- तुम्हें क्षमा माँगना चाहिए।
- मैं पुस्तक पढ़ा हूँ।
- मुझे दो दिन का अवकाश देकर अनुग्रहित करें।
- उन्हें मृत्युदंड की सजा दी है।
- तुम्हारी सौजन्यता प्रशंसनीय है।
- प्रगल्भ को माता-पिता का आशीर्वाद मिला।
- रेल-दुर्घटना में अनेकों यात्री घायल हो गए।
- आप को दवा लेना चाहिए।
- आज मैं प्रातःकाल में समय वहाँ गया।
- कौन में दोष नहीं होता।
- मुझे भारी दुःख हुआ।

## (ठ) वाक्य-विचार

शब्दों का वह सार्थक समूह, जो व्याकरणिक नियमों से बँधा होता है, वाक्य कहलाता है। वाक्य का वर्गीकरण दो आधारों पर किया जाता है

### 1. रचना के आधार पर

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं

- सरल वाक्य** वे वाक्य जिनमें एक उद्देश्य तथा एक विधेय हो, सरल या साधारण वाक्य कहलाते हैं।  
जैसे—**श्याम खाता है।**
- मिश्र वाक्य** वे वाक्य, जिनमें एक साधारण वाक्य हो तथा उसके अधीन या आश्रित दूसरा उपवाक्य हो, मिश्र वाक्य कहलाते हैं।  
जैसे—**श्याम ने लिखा है कि वह कल आ रहा है।**
- संयुक्त वाक्य** वे वाक्य, जिनमें एक से अधिक प्रधान उपवाक्य हों (चाहे वह मिश्र वाक्य हों या साधारण वाक्य) और वे संयोजक अव्ययों द्वारा जुड़े हों, संयुक्त वाक्य कहलाते हैं।  
जैसे—**वह लखनऊ गया और शाल ले आया।**

### 2. अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं

- विधिवाचक वाक्य** वे वाक्य जिनसे किसी बात या कार्य के होने का बोध होता है, विधिवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—  
• श्याम आया।  
• तुम लोग जा रहे हो।

- निषेधवाचक वाक्य** वे वाक्य, जिनसे किसी बात या कार्य के न होने अथवा इनकार किए जाने का बोध होता है, निषेधवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—  
• राम नहीं पढ़ता है।  
• मैं यह कार्य नहीं करूँगा।

- आज्ञावाचक वाक्य** वे वाक्य, जिनसे किसी प्रकार की आज्ञा का बोध होता है, आज्ञावाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—  
• श्याम पानी लाओ।  
• यहीं बैठकर पढ़ो।

- विस्मयवाचक वाक्य** वे वाक्य जिनसे किसी प्रकार के विस्मय, हर्ष, दुःख, आश्चर्य आदि का बोध होता है, विस्मयवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—  
• अरे! वह उत्तीर्ण हो गया।  
• अहा! कितना सुंदर दृश्य है।

- संदेहवाचक वाक्य** वे वाक्य, जिनसे किसी प्रकार के संदेह या भ्रम का बोध होता है, संदेहवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—  
• वह अब जा चुका होगा।  
• महेश पढ़ा-लिखा है या नहीं।

- इच्छावाचक वाक्य** वे वाक्य, जिनसे किसी प्रकार की इच्छा या कामना का बोध होता है, इच्छावाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—  
• ईश्वर आपकी यात्रा सफल करे।  
• आप जीवन में उन्नति करें।  
• आपका भविष्य उज्ज्वल हो।

- (vii) **संकेतवाचक वाक्य** वे वाक्य, जिनसे किसी प्रकार के संकेत या इशारे का बोध होता है, संकेतवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—
- जो परिश्रम करेगा, वह सफल होगा।
  - अगर वर्षा होगी तो फसल भी अच्छी होगी।
- (viii) **प्रश्नवाचक वाक्य** वे वाक्य, जिनसे किसी प्रश्न के पूछे जाने का बोध होता है, प्रश्नवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—
- आपका क्या नाम है?
  - तुम किस कक्षा में पढ़ते हो?

### वाक्यों का रूपांतरण

किसी वाक्य में अर्थ परिवर्तन किए बिना उसकी संरचना में परिवर्तन की प्रक्रिया वाक्यों का रूपांतरण कहलाती है। एक प्रकार के वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्यों में बदलना वाक्य परिवर्तन या वाक्य रचनांतरण कहलाता है।

वाक्य परिवर्तन की प्रक्रिया में इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वाक्य का केवल प्रकार बदला जाए, उसका अर्थ या काल आदि नहीं।

परीक्षा में वाक्य रूपांतरण से विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं, जो निम्न प्रकार के हैं—

- रचना की दृष्टि से वाक्य रूपांतरण।
- अर्थ की दृष्टि से वाक्य रूपांतरण।
- वाच्य पर आधारित वाक्य रूपांतरण।
- वचन पर आधारित वाक्य रूपांतरण।
- वाक्य में प्रयुक्त किसी शब्द के स्थान पर नए शब्द का प्रयोग करते हुए वाक्य रूपांतरण।

### 1. रचना की दृष्टि से वाक्य परिवर्तन

#### (i) सरल वाक्य से मिश्र वाक्य में परिवर्तन

- लड़के ने अपना दोष मान लिया।  
**उत्तर** लड़के ने माना कि दोष उसका है।
- राम मुझसे घर आने को कहता है।  
**उत्तर** राम मुझसे कहता है कि मेरे घर आओ।

#### (ii) सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन

- पैसा साध्य न होकर साधन है।

**उत्तर** पैसा साध्य नहीं है, किंतु साधन है।

- अपने गुणों के कारण उसका सब जगह आदर-सत्कार होता था।

**उत्तर** उसमें गुण थे, इसलिए उसका सब जगह आदर-सत्कार होता था।

#### (iii) संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन

- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।

**उत्तर** सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।

- जल्दी चलो, नहीं तो पकड़े जाओगे।

**उत्तर** जल्दी न चलने पर पकड़े जाओगे।

### 2. अर्थ की दृष्टि से वाक्य रूपांतरण (परिवर्तन)

- तुम असफल हो जाओगे। (निषेधवाचक वाक्य)

**उत्तर** तुम असफल नहीं होगे।

- रमेश सुरेश से बड़ा है। (प्रश्नवाचक वाक्य)

**उत्तर** क्या रमेश सुरेश से बड़ा है।

- क्या तुम क्रिकेट खेलते हो? (विधानवाचक वाक्य)

**उत्तर** तुम क्रिकेट खेलते हो।

### 3. वाच्य पर आधारित वाक्य रूपांतरण

- राम पत्र लिखता है। (कर्म वाच्य में)

**उत्तर** राम द्वारा पत्र लिखा जाता है।

- गोपाल द्वारा पुस्तक नहीं पढ़ी जाती है। (भाववाच्य में)

**उत्तर** गोपाल से पुस्तक नहीं पढ़ी जाती।

- राजेश से बैठा नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में)

**उत्तर** राजेश बैठता नहीं है।

### 4. वचन पर आधारित वाक्य रूपांतरण

- मेहनती व्यक्ति कर्म से मुँह नहीं मोड़ता। (वचन बदलिए)

**उत्तर** मेहनती व्यक्ति कर्म से मुँह नहीं मोड़ते।

- बच्चों ने एक गीत गाया। (वचन बदलिए)

**उत्तर** बच्चों ने अनेक गीत गाए।

- बहुत सारे पक्षी पेड़ पर बैठे हैं। (वचन बदलिए)

**उत्तर** पक्षी पेड़ पर बैठा है।

### विगत वर्षों की परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

- इतनी आयु होने पर भी वह विवाहित नहीं है।

(नहीं हटाइए परंतु वाक्य का अर्थ न बदले।)

[2017]

**उत्तर** इतनी आयु होने पर भी वह अविवाहित है।

- रामचंद्र जी का आदेश था इसलिए लक्ष्मण को जाना था।

(सरल वाक्य में)

[2017]

**उत्तर** रामचंद्र जी के आदेशानुसार लक्ष्मण को जाना था।

- मेरे घर में जो नौकर काम करता है, वह भाग गया है।

(सरल वाक्य बनाइए)

[2016]

**उत्तर** मेरे घर में काम करने वाला नौकर भाग गया।

- अंत में आचार्य निराश हो गए।

(‘आशा’ शब्द का प्रयोग कीजिए)

[2014]

**उत्तर** अंत में आचार्य को आशा न रही।

- वह दुश्मन की सेना पर टूट पड़ा। (‘टूट पड़ा’ के स्थान पर

‘हमला किया’ का प्रयोग कीजिए)

[2012]

**उत्तर** उसने दुश्मन की सेना पर हमला किया।

- एक नवयुवक को यह बंधन पसंद नहीं आया।

(‘पसंद’ के स्थान पर ‘अच्छा’ का प्रयोग कीजिए)

[2011]

**उत्तर** एक युवक को यह बंधन अच्छा नहीं लगा।

7. कर्तव्य का पालन नहीं करने में दुःख है। [2008]  
(‘नहीं’ हटाइए, किंतु वाक्य का अर्थ न बदले)  
**उत्तर** यदि कर्तव्य का पालन न किया जाए तो दुःखी रहता है।
8. उनका जीवन सुरक्षित था।  
(‘नहीं’ का प्रयोग कीजिए, किंतु वाक्य का अर्थ न बदले) [2007]  
**उत्तर** उनका जीवन असुरक्षित नहीं था।
9. धर्म का मानव-मन पर प्रभाव पड़ता है।  
(वाक्य में ‘प्रभावित’ शब्द का प्रयोग कीजिए) [2006]  
**उत्तर** धर्म से मानव का मन प्रभावित होता है।
10. मेरा छोटा भाई मेरी बात अवश्य सुनेगा।  
(वाक्य में ‘चाहिए’ शब्द का प्रयोग कीजिए) [2005]  
**उत्तर** मेरे छोटे भाई को मेरी बात अवश्य सुननी चाहिए।
11. सतत अध्ययन मनुष्य की आंतरिक सद्प्रवृत्तियों को विकसित करता है। (‘सतत अध्ययन से’ का प्रयोग कर वाक्य पुनः लिखिए) [2004]  
**उत्तर** सतत अध्ययन से मनुष्य की आंतरिक सद्प्रवृत्तियाँ विकसित होती हैं।
12. कुएँ के मेंढक ने समुद्र नहीं देखा था।  
(वाक्य का अर्थ बदले बिना ‘नहीं’ हटाइए)  
**उत्तर** कुएँ का मेंढक समुद्र से अपरिचित था।
13. तुमने छोटों का कभी अपमान नहीं किया।  
(स्वीकारात्मक वाक्य में बदलिए) [2003]  
**उत्तर** तुमने छोटों का सदा सम्मान किया।
14. बाज मनुष्य की-सी भाषा में उदार हृदय राजा से बोला।  
(‘बाज ने’ का प्रयोग कर वाक्य पुनः लिखिए।) [2003]  
**उत्तर** बाज ने मनुष्य की-सी भाषा में उदार हृदय राजा से कहा।
15. तप करने जाते हुए ध्रुव को मार्ग में नारद मिले।  
(वाक्य में ‘जब’ और ‘तब’ का प्रयोग कीजिए।) [2002]  
**उत्तर** जब ध्रुव तप करने जा रहा था, तब मार्ग में उसे नारद मिले।
16. ध्रुव के आगे यक्षों की एक न चली और अंत में उन्होंने घुटने टेक दिए। (वाक्य में ‘क्योंकि’ का प्रयोग कीजिए) [2002]  
**उत्तर** क्योंकि ध्रुव के आगे यक्षों की एक न चली, इसलिए अंत में घुटने टेक दिए।
17. वे कारागार में गए, सेवक से सारी बात की जानकारी ली।  
(गए के स्थान पर ‘जाकर’ का प्रयोग कीजिए) [2001]  
**उत्तर** उन्होंने कारागार में जाकर सेवक से सारी बात की जानकारी ली।
18. महाराज की अनुमति से तीनों फूलदान उसके सम्मुख लाए गए।  
(‘वे’ से वाक्य शुरू कीजिए) [2001]  
**उत्तर** वे तीनों फूलदान महाराज की अनुमति से उसके सम्मुख लाए गए।
19. ये फूलदान मनुष्यों के जीवन से अधिक कीमती नहीं हैं।  
(‘कीमती’ की जगह ‘कीमत’ का प्रयोग कीजिए) [2000]  
**उत्तर** इन फूलदानों की कीमत मनुष्य के जीवन से अधिक नहीं है।
20. रोम का राजा भीषण रोग से पीड़ित हो गया। (कर दिया) [2000]  
**उत्तर** भीषण रोग ने रोम के राजा को पीड़ित कर दिया।
21. राजा के रोग से सारे देश में उदासी छा गई।  
(राजा के रोग ने कर दिया) [2000]  
**उत्तर** राजा के रोग ने सारे देश को उदास कर दिया।
22. एक विशेष औषधि के सेवन से आपके रोग का निदान संभव है।  
(निदान कर सकता है) [2000]  
**उत्तर** एक विशेष औषधि का सेवन ही आपके रोग का निदान कर सकता है।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित प्रश्नों को निर्देशानुसार हल कीजिए।

- यदि पानी न बरसा तो सूखा पड़ जाएगा।  
(सरल वाक्य में परिवर्तित कीजिए)
- काम पूरा कर डालो नहीं तो जुर्माना होगा।  
(मिश्र वाक्य में परिवर्तित कीजिए)
- वाह! कितना सुंदर नगर है। (विधानवाचक वाक्य में परिवर्तित कीजिए)
- रमेश सुरेश से बड़ा है। (निषेधवाचक वाक्य में परिवर्तित कीजिए)
- मुगल शासकों में अकबर श्रेष्ठ था।  
(‘बढ़कर कोई नहीं’ वाक्यांश का प्रयोग करते हुए वाक्य को पुनः लिखिए)
- आश्चर्य है कि वह हार गया। (संयुक्त वाक्य में परिवर्तित कीजिए)
- पढ़ने वाले उत्तीर्ण होते हैं। (मिश्र वाक्य में परिवर्तित कीजिए)
- वह छत पर जाकर क्रिकेट खेलने लगा।  
(संयुक्त वाक्य में परिवर्तित कीजिए)
- राजेश को खेलने-कूदने की आवश्यकता है।  
(निषेधवाचक वाक्य में परिवर्तित कीजिए)
- उसने फल खा लिए थे। (प्रश्नवाचक वाक्य में परिवर्तित कीजिए)
- क्रिकेट मैच में एक खिलाड़ी द्वारा 250 रन मारा जाना असंभव नहीं है।  
(विधानवाचक वाक्य में बदलिए)
- वे जम्मू से आकर, श्रीनगर गए। (गए के स्थान पर आए लगाइए)
- मैं नास्तिक हूँ। (ईश्वर को न मानने वाले वाक्यांश का प्रयोग कीजिए)

## खंड 'ख'

- साहित्य सागर
  - (i) संक्षिप्त कहानियाँ
  - (ii) पद्य भाग
- एकांकी संचय
- नया रास्ता (उपन्यास)





# बात अठन्नी की सुदर्शन

## लेखक परिचय

सुदर्शन जी का जन्म 1895 ई. में सियालकोट (अब पाकिस्तान में) में हुआ। इनका वास्तविक नाम बदरीनाथ था। ये मूलतः उर्दू में लेखन करते थे। इन्होंने उर्दू में प्रकाशित होने वाले दैनिक-पत्र 'आर्यगजट' के संपादक के रूप में कार्य किया। सुदर्शन मुख्यतः समाज व राष्ट्र के कवि थे। इनकी कहानियाँ का मुख्य उद्देश्य समाज व राष्ट्र को स्वच्छ व सुदृढ़ बनाना था।

इनकी पहली कहानी 'हार की जीत' थी, जो वर्ष 1920 में सरस्वती में प्रकाशित हुई। 'पुष्पलता', 'सुप्रभात', 'सुदर्शन सुधा' और 'पनघट' इनके प्रसिद्ध कहानी-संग्रह हैं तथा 'परिवर्तन', 'राजकुमार सागर' आदि इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। इनकी भाषा सहज, स्वाभाविक, प्रभावी एवं मुहावरेदार है। इन्होंने गद्य व पद्य दोनों में रचनाएँ लिखीं। इन्होंने अनेक फिल्मों की पटकथा और गीत भी लिखे। मुंबई में 16 दिसंबर, 1967 को इनका निधन हो गया।

## कहानी का परिचय

'बात अठन्नी की' कहानी के माध्यम से सुदर्शन जी ने समाज की न्याय-व्यवस्था पर करारा प्रहार किया है। रसीला, इंजीनियर बाबू जगतसिंह के घर में नौकरी करता था। उसकी मासिक आय इतनी नहीं थी कि उसके परिवार का गुजारा सही से हो सके। रसीला का परिवार गाँव में रहता था, जिसकी जिम्मेदारी उसके कंधों पर थी। बार-बार प्रार्थना करने पर भी इंजीनियर साहब ने उसका वेतन नहीं बढ़ाया। विश्वासपात्र होने के कारण उसने भी कहीं और नौकरी नहीं खोजी। शेख सलीमुद्दीन जिला मजिस्ट्रेट थे, जो इंजीनियर साहब के पड़ोस में रहते थे। उनके चौकीदार रमज़ान और रसीला में बहुत मैत्री थी। विपत्ति की स्थिति में रसीला की मदद उसका मित्र रमज़ान करता है। वह रमज़ान के सारे पैसे चुका देता है। केवल अठन्नी शेष रह जाती है। एक दिन जगतसिंह को रिश्वत लेते देखकर रसीला भी बेईमानी करने की सोचता है। वह मिठाई के लिए दिए पैसे में से अठन्नी बचाकर ऋण चुका देता है, किंतु इस अपराध के कारण उसे छः महीने की सज़ा सुनाई जाती है। केवल अठन्नी बचाने की इतनी बड़ी सज़ा देना आज के समाज की अमानवीयता को दर्शाता है, जिसे कहानीकार ने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

## पात्र-परिचय

### रसीला

इस कहानी का मुख्य पात्र रसीला है। वह एक ईमानदार, भोला, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति है। रसीला एक निर्धन परिवार से संबंध रखता है। वह अपनी जीविका चलाने के लिए इंजीनियर साहब के यहाँ नौकरी करता है। दस रुपये के मासिक वेतन पर वह अपने परिवार का निर्वाह ठीक से नहीं कर पा रहा था। इस कारण वह अपने मालिक से वेतन बढ़ाने की प्रार्थना करता है, किंतु इंजीनियर साहब उसकी प्रार्थना ठुकरा देते हैं। वह संवेदनशील व्यक्ति होने के कारण कहीं और नौकरी नहीं करता। मित्र रमज़ान के द्वारा सहायता करने पर वह भावुक हो जाता है। साहब को रिश्वत लेता देखकर उसके मन में भी बेईमानी उत्पन्न होती है। वह भी बेईमानी से पैसा कमाने के विषय में सोचकर चोरी करता है। चोरी पकड़े जाने पर वह कचहरी में अपना अपराध स्वीकार कर लेता है।

### रमज़ान

रमज़ान जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के यहाँ चौकीदार है। रमज़ान रसीला का सच्चा मित्र तथा परोपकारी व्यक्ति है। वह रसीला की स्थिति देखकर आर्थिक रूप से उसकी सहायता करता है। जब वह रसीला की सज़ा सुनता है, तो उसका मन आक्रोश से भर जाता है, परंतु वह चाहकर भी कुछ नहीं कर पाता।

### बाबू जगतसिंह

बाबू जगतसिंह पेशे से इंजीनियर थे। वह निर्दयी व्यक्ति थे। रसीला की स्थिति देखकर वह उसकी मदद भी नहीं करते। वह लालची व्यक्ति थे तथा रिश्वत लेकर काम करते थे। उनका स्वभाव उग्र था। रसीला द्वारा एक गलती किए जाने पर वह पुलिस को पाँच रुपये देकर उसके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने को कहते हैं।

### शेख सलीमुद्दीन

शेख सलीमुद्दीन जिला मजिस्ट्रेट थे, वे जगतसिंह के पड़ोसी तथा रिश्वतखोर थे। वह अपने लाभ के अनुसार न्याय करते थे। उन्होंने रसीला को केवल अठन्नी की हेरा-फेरी करने के जुर्म में छः महीने की कड़ी सजा सुना दी थी, जबकि रसीला ने अपनी गलती स्वीकार कर ली थी।

## कहानी का सार

### रसीला का इंजीनियर बाबू जगतसिंह से प्रार्थना करना

रसीला एक गरीब व्यक्ति था। वह कई सालों से बाबू जगतसिंह के घर मासिक वेतन पर कार्यरत था। रसीला के घर की स्थिति बहुत दयनीय थी। उसका परिवार गाँव में रहता था। उसके पिता, पत्नी, बच्चे सभी की जिम्मेदारी उसी की थी। वह अपना सारा वेतन घर पर भेज देता था, किंतु फिर भी घर की हालत ठीक नहीं रहती थी। वह अपने मालिक से बार-बार वेतन बढ़ाने की प्रार्थना करता था, किंतु इंजीनियर बाबू जगतसिंह उसे ठुकरा दिया करते थे। अंततः उसे उसी वेतन से अपने परिवार का पालन-पोषण करना पड़ता था।

### रसीला एवं रमजान के मैत्रीपूर्ण संबंध

रमजान बहुत ही नेक, ईमानदार एवं गरीब व्यक्ति था। वह शेख सलीमुद्दीन साहब के घर चौकीदार था। वह अपने कार्य के प्रति कर्तव्यनिष्ठ व परोपकारी व्यक्ति था। किसी को परेशानी में देखकर वह चुप नहीं रह सकता था। रसीला एवं रमजान दोनों में अच्छी मित्रता थी। वे दोनों साथ बैठकर घंटों तक बातें किया करते थे। रमजान रसीला को फल देता था तथा रसीला रमजान को मिठाई देता था। एक दिन रसीला की उदासी का कारण जानकर रमजान उसकी मदद करके अपनी मित्रता का परिचय देता है। इसी कारण रसीला ने रमजान की तुलना देवता से की थी, क्योंकि रमजान ने गरीब होते हुए भी रसीला की मदद की, किंतु इंजीनियर बाबू ने अमीर होते हुए भी दुःख में रसीला का साथ नहीं दिया।

### इंजीनियर साहब के रिश्वत लेने का रसीला को पता चलना

एक दिन जब रसीला ने सुना कि इंजीनियर साहब कमरे में रिश्वत ले रहे हैं, तो वह सोचने लगा कि यह रुपया कमाने का कितना अच्छा तरीका है। मैं पूरे दिन मेहनत-मजदूरी करने के बाद दस रुपये कमाता हूँ। इस प्रकार रसीला भी बेईमानी से रुपया कमाने के विषय में सोचता है।

### रसीला द्वारा रिश्वत की बात रमजान को बताना

इंजीनियर साहब की रिश्वत की बात सुनकर रसीला ने बाहर आते ही यह बात रमजान को बताई। रमजान से उसे पता चला कि शेख साहब

भी कुछ कम न थे, वे इंजीनियर साहब के भी गुरु थे। वे सोचने लगे कि हम लोग इतना परिश्रम करते हैं, किंतु फिर भी हमें कुछ नहीं मिलता और इंजीनियर व शेख साहब जैसे लोग बेईमानी की कमाई से कोठियों में रहते हैं।

### इंजीनियर साहब का मिठाई मँगाना एवं रसीला की विवशता

इंजीनियर साहब द्वारा पाँच रुपये की मिठाई मँगाने पर रसीला साढ़े चार रुपये की मिठाई खरीदता है और बची हुई अठन्नी रमजान को लौटाकर अपना कर्ज उतारता है। अपनी विवशता के कारण रसीला अठन्नी के लिए अपने मालिक इंजीनियर बाबू से झूठ बोलता है और दुर्भाग्य से वह पकड़ा भी जाता है।

### बाबू जगतसिंह द्वारा क्रूरता एवं निर्दयता की सीमा पार करना

रसीला की चोरी पकड़े जाने पर उसे अपने मालिक व पुलिस से पिटना पड़ता है। मात्र अठन्नी के लिए बाबू जगतसिंह निर्दयता की सारी सीमा पार कर देते हैं। वे रसीला द्वारा वर्षों से की गई सेवा को कुछ ही क्षणों में भुला देते हैं। यहाँ तक कि इंजीनियर साहब रसीला को घसीटते हुए पुलिस थाने भी ले जाते हैं एवं पुलिस को उसे पीटने के लिए पाँच रुपये भी रिश्वत के रूप में देते हैं। इससे जगतसिंह की निर्दयता व क्रूरता का पता चलता है।

### शेख सलीमुद्दीन की कचहरी व रसीला द्वारा अपराध को स्वीकार करना

शेख साहब की कचहरी में रसीला पर मुकदमा चलाया गया। रसीला ने अपना अपराध स्वयं ही स्वीकार कर लिया। यदि वह चाहता तो वह भी झूठ बोल सकता था, किंतु उसने ऐसा नहीं किया। वह हाथ जोड़कर बोला, “हुजूर मेरा पहला अपराध है माफ़ कर दीजिए। फिर गलती न होगी”, किंतु शेख साहब ने रसीला के अपराध स्वीकार करने की भावना पर ध्यान न देते हुए उसे छः महीने की सजा सुना दी।

### इंजीनियर साहब व शेख साहब के प्रति विरोध की भावना

रमजान ने दुनिया के प्रति रोष प्रकट करते हुए दुनिया को अँधेर नगरी कहा। उसकी नज़रों में रसीला के प्रति किया गया फैसला, फैसला नहीं, बल्कि इंजीनियर साहब द्वारा रसीला पर किया गया अन्याय था। शेख साहब व इंजीनियर साहब समाज में ईमानदारी का मुखौटा पहने रहते थे। उनकी चोरी पकड़ी नहीं जाती थी और वे आराम से अपनी ज़िंदगी गुजार लेते थे, किंतु रसीला जैसे लोगों को छोटी-सी गलती के लिए सज़ा भुगतनी पड़ती है।

## कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता

‘बात अठन्नी की’ कहानी के माध्यम से न्याय-व्यवस्था पर करारा व्यंग्य कसा गया है। समाज में उच्च पद पर रहकर उस पद का दुरुपयोग किया जाता है। उच्च पद वाले लोग रिश्वत लेकर सम्मान से जीते हैं, परंतु रसीला जैसे निर्धन लोगों को अठन्नी की चोरी के कारण छः महीने की सज़ा मिलती है। कहानी में इंजीनियर साहब तथा जज की हृदयहीनता का पर्दाफाश किया गया है। अतः शीर्षक की सार्थकता पूर्णतः सत्य है।

## शब्दार्थ

शब्द अर्थ, पाठ्य-पुस्तक साहित्य सागर में दिए गए भाग संक्षिप्त कहानियों के पृष्ठों के अनुसार हैं—

**पृष्ठ सं. 6** तनखाह—वेतन (salary); गुजारा—निर्वाह (subsistence); मैत्री—मित्रता (friendship); सौगंध—कसम (oath); हठ—जिद (persistence); पेशगी—पहले दिया जाने वाला धन (Advance); हथेली—कलाई के आगे का चिकना व चौड़ा भाग (palm)।

**पृष्ठ सं. 7** ऋण—कर्ज (loan); रकम—धन (money); अपमान—बेइज्जती (insult); रिश्वत—घूस (bribe); फँसा—पकड़ा (trapped); गुनाह—अपराध (crime); फल—परिणाम (result); कमाई—आमदनी (earning); परिश्रम—मेहनत (labour); अठन्नी—पचास पैसे (fifty paise); रंग उड़ गया—घबरा गया (disconcerted); दोहराया—दोबारा किया (revised); तमाचा—थप्पड़ (slap)।

**पृष्ठ सं. 8** निर्दयता—कठोरता (fierceness); घसीटना—रगड़ते हुए खींचना (shuffle, dragging); मुकदमा—दावा, अदालत में पेश किया गया मामला (case, sue); कचहरी—अदालत (court); साजिश—षड्यंत्र (conspiracy); साहस—हिम्मत (courage); न्यायप्रिय—जिसे न्याय पसंद हो (justice loving); न्याय नगरी—न्याय का स्थान (place of justice); अँधेर नगरी—ऐसा स्थान जहाँ भ्रष्टाचार और अव्यवस्था फैली हो (exploitative place); धन बटोरना—धन संग्रह करना (raising money); कैद—कारावास, बंधन (imprisonment)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- वह सोचता, “यहाँ इतने सालों से हूँ। अमीर लोग नौकरों पर विश्वास नहीं करते, किंतु मुझ पर यहाँ कभी किसी ने संदेह नहीं किया। यहाँ से जाऊँ तो शायद कोई ग्यारह-बारह दे दे, पर ऐसा आदर न मिलेगा।”

पृष्ठ सं. 6

(क) ‘वह’ शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है? वह क्या सोचा करता था? (2)

**उत्तर** ‘वह’ शब्द ‘रसीला’ के लिए प्रयोग किया गया है। वह सोचता था कि अमीर लोग नौकरों पर विश्वास नहीं करते हैं, किंतु मुझ पर यहाँ किसी ने संदेह नहीं किया। यहाँ से जाऊँ तो शायद कोई ग्यारह-बारह दे दे। पर ऐसा आदर न मिलेगा।

(ख) रसीला के घर की स्थिति का संक्षेप में वर्णन कीजिए। (2)

**उत्तर** रसीला के घर की स्थिति बड़ी ही दयनीय थी। वह जो कुछ भी कमाता था, उसे अपने घर के लिए भेज देता था, किंतु उस वेतन से उसके परिवार का गुजारा नहीं हो पाता था।

(ग) रसीला कौन था? वह इंजीनियर बाबू के यहाँ से नौकरी क्यों नहीं छोड़ना चाहता था? (3)

**उत्तर** रसीला इंजीनियर बाबू जगतसिंह के यहाँ नौकर था, उसका परिवार गाँव में रहता था। रसीला बहुत सालों से इंजीनियर बाबू के यहाँ काम कर रहा था। अमीर लोग नौकरों पर विश्वास नहीं करते थे, परंतु रसीला पर कभी भी किसी ने संदेह नहीं किया उसे वहाँ आदर मिलता था। इसलिए रसीला वहाँ से नौकरी नहीं छोड़ना चाहता था।

(घ) उपरोक्त गद्यांश के आधार पर रसीला के स्वभाव का वर्णन कीजिए। (3)

**उत्तर** रसीला अत्यंत ही परिश्रमी व संकोची स्वभाव का व्यक्ति था। वह कई सालों से बाबू जगतसिंह के घर पर काम कर रहा था। वह सोचता था कि अमीर लोग नौकरों पर विश्वास

नहीं करते, किंतु अपने मालिक जगतसिंह पर उसे विश्वास था कि वे उस पर संदेह नहीं करते थे। रसीला अपने पूरे परिवार का ध्यान रखता था। अपने परिवार के विषय में ही सोचकर वह इंजीनियर बाबू से वेतन बढ़ाने के लिए कहता है।

- पहले तो रसीला छिपाता रहा। फिर रमज़ान ने कहा, “कोई बात नहीं है, तो खाओ सौगंध।” रसीला ने रमज़ान का हठ देखा तो आँखें भर आईं बोला “घर से खत आया है, बच्चे बीमार हैं और रुपया नहीं है।”

पृष्ठ सं. 6

(क) रमज़ान ने रसीला को सौगंध खाने के लिए क्यों कहा? (2)

**उत्तर** रमज़ान ने जब रसीला को परेशान देखा, तो उससे उसकी परेशानी का कारण पूछा। रसीला अपनी परेशानी को छिपाता रहा, इसलिए रमज़ान ने रसीला को सौगंध (कसम) खाने के लिए कहा जिससे वह उसकी परेशानी का कारण जान सके।

(ख) रमज़ान ने रसीला की परेशानी का क्या हल निकाला? (2)

**उत्तर** रमज़ान ने रसीला की परेशानी का यह हल निकाला कि वह इतने साल से अपने मालिक के यहाँ काम कर रहा है, तो वह मालिक से कुछ रुपये क्यों नहीं माँग लेता।

(ग) रसीला की आँखें क्यों भर आईं? वह परेशान क्यों था? (3)

**उत्तर** रमज़ान द्वारा परेशानी का कारण जानने की जिद करने पर रसीला की आँखें भर आईं। रसीला अपनी आर्थिक स्थिति से बहुत परेशान था, उसके घर से खत आया था उसके बच्चे बीमार थे, उसे पैसों की बहुत आवश्यकता थी। इसी कारण रसीला परेशान था।

(घ) रसीला और रमज़ान की वार्ता से किस प्रकार के संबंध का पता चलता है? (3)

**उत्तर** रसीला और रमज़ान की वार्ता से उनके बीच घनिष्ठ मित्रता देखने को मिलती है। रसीला अपनी परेशानी रमज़ान को बताने में संकोच करता है, वहीं रमज़ान अपने हठी व्यवहार से रसीला की परेशानी जान लेता है, और तुरंत कोठरी में जाकर उसके लिए रुपये ले आता है। गरीब होने के बावजूद भी वह विपत्ति में अपने मित्र का साथ देता है। इससे दोनों के बीच के मैत्री संबंध का पता चलता है।

### 3. “तो मालिक से पेशगी माँग लो।”

“कहते हैं, एक पैसा भी न दूँगा।”

रमज़ान ने ठंडी साँस भरी। उसने रसीला को ठहरने का संकेत किया और स्वयं कोठरी में चला गया। थोड़ी देर बाद उसने कुछ रुपये रसीला की हथेली पर रख दिए। रसीला के मुँह से एक शब्द भी न निकला। सोचने लगा, “बाबू साहब की मैंने इतनी सेवा की, पर दुःख में उन्होंने साथ न दिया। रमज़ान को देखो गरीब है, परंतु आदमी नहीं, देवता है। ईश्वर उसका भला करे।” **पृष्ठ सं. 6**

(क) रमज़ान कौन था? रसीला की उदासी का कारण जान, रमज़ान ने क्या किया? (2)

**उत्तर** रमज़ान इंजीनियर बाबू के पड़ोसी शेख सलीमुद्दीन का चौकीदार व रसीला का मित्र था। रसीला की उदासी का कारण जानकर रमज़ान ने रसीला को वहीं रोका और स्वयं कोठरी में जाकर रसीला के लिए रुपये ले आया। यह देखकर रसीला उसे दुआएँ देने लगा।

(ख) मालिक से पेशगी माँगने की सलाह किसने, किसे एवं क्यों दी? (2)

**उत्तर** मालिक से पेशगी माँगने की सलाह रमज़ान ने रसीला को दी, क्योंकि परिवार का भार उसके कंधों पर था और उसके बच्चे बीमार थे। इसके लिए रसीला को पैसों की अत्यंत आवश्यकता थी।

(ग) रसीला की उदासी का क्या कारण था? इससे उसके स्वभाव के विषय में क्या ज्ञात होता है? (3)

**उत्तर** रसीला की उदासी का कारण घर से आया खत था, जिसमें उसके बच्चे के बीमार होने की खबर थी। उसे पैसों की आवश्यकता थी, परंतु मालिक न तो उसका वेतन बढ़ा रहे थे न ही पेशगी दे रहे थे। वह परेशानी में होने के कारण भी रमज़ान को अपनी समस्या नहीं बता पा रहा था। इससे रसीला के संकोची स्वभाव का पता चलता है।

(घ) रमज़ान व रसीला के संबंधों पर विस्तार से चर्चा कीजिए। (3)

**उत्तर** रमज़ान व रसीला अत्यंत घनिष्ठ मित्र थे। दोनों घंटों साथ बैठकर बातें किया करते थे। रमज़ान रसीला को फल देता था, तो रसीला रमज़ान को मिठाई देता था। रमज़ान ने रसीला की विपत्ति में मदद करके अपनी मित्रता का परिचय दिया है। इसी कारण रसीला ने रमज़ान की तुलना देवता से की है।

### 4. ‘वह बाहर आया और रमज़ान को सारी बात सुना दी। रमज़ान बोला, “बस इतनी-सी बात! हमारे शेख साहब तो उनके भी गुरु हैं। आज भी एक शिकार फँसा है। हजार से कम तय न होगा। भैया, गुनाह का फल मिलेगा या नहीं, यह तो भगवान जाने, पर ऐसी ही कमाई से ये लोग कोठियों में रहते हैं और एक हम हैं कि परिश्रम करने पर भी हाथ में कुछ नहीं रहता।”

**पृष्ठ सं. 7**

(क) शेख साहब कौन थे? “हमारे शेख साहब उनके भी गुरु हैं।” इस पंक्ति के आधार पर शेख साहब के चरित्र पर प्रकाश डालिए। (2)

**उत्तर** शेख साहब जिला मजिस्ट्रेट व न्यायप्रिय आदमी थे। उपरोक्त पंक्तियों के आधार पर कहा जा सकता है कि शेख साहब समाज में प्रतिष्ठित उन व्यक्तियों में से एक थे, जो ईमानदारी का मुखौटा पहने हुए थे और पीठ-पीछे रिश्वत लिया करते थे।

(ख) कोठियों में रहने वाले लोगों की किस प्रवृत्ति की ओर संकेत किया गया है? एवं किस प्रकार के व्यक्तियों के हाथ कुछ नहीं रहता? उपरोक्त गद्यांश के आधार पर बताइए। (2)

**उत्तर** कोठियों में रहने वाले लोगों की रिश्वत लेने की प्रवृत्ति की ओर संकेत किया गया है और गरीब, मेहनती लोग जो दिन-रात मेहनत करते हैं, उनके हाथ कुछ नहीं रहता। वे सदैव गरीबी से जूझते रहते हैं।

(ग) पाठ के आधार पर ऐसी ही कमाई से क्या तात्पर्य है? समझाइए। (3)

**उत्तर** प्रस्तुत पाठ में ऐसी ही कमाई से तात्पर्य रिश्वत से है। यहाँ पर स्पष्ट किया गया है, “अच्छा वेतन मिलने के बाद भी इनकी भूख नहीं मिटती। रिश्वत को अपनी कमाई का साधन बना लेते हैं। इसके विपरीत परिश्रम करने वाला, जो दिन-रात मेहनत करता है, वह दाल-रोटी भी ठीक से नहीं खरीद पाता और हमेशा कष्ट का जीवन व्यतीत करता है।”

(घ) रमज़ान ने रसीला से क्या कहा? रमज़ान की बातें सुनकर रसीला के मन में क्या विचार आया? (3)

**उत्तर** जब रसीला ने रमज़ान को जगतसिंह द्वारा रिश्वत लेने के बारे में बताया तो रमज़ान ने रसीला से कहा कि बस इतनी-सी बात। हमारे शेख साहब तो उनके भी गुरु हैं। आज एक शिकार फँसाया है, कम-से-कम हजार में तय होगा। रमज़ान ने कहा कि गुनाह का फल मिलेगा या नहीं पर ऐसे लोग ऐसी ही कमाई से कोठियों में रहते हैं। रमज़ान की बातें सुनकर रसीला के मन में आया कि मेरे हाथ से सैंकड़ों रुपये निकले, पर मन में कभी बेईमानी नहीं आई। एक-एक पैसा भी जोड़ता, तो काफी रकम हो जाती।

### 5. “हुज़ूर, झूठ कहूँ तो .....” रसीला ने अभी अपनी बात पूरी भी न की थी कि इंजीनियर बाबू चिल्लाए, “अभी सच और झूठ का पता चल जाएगा।” **पृष्ठ सं. 7**

(क) इंजीनियर बाबू मिठाई देखकर क्या बोले? (2)

**उत्तर** इंजीनियर बाबू ने जब मिठाई देखी तो वे चौंक उठे और बोले कि “यह मिठाई पाँच रुपये की है।” रसीला के चेहरे का रंग उड़ा देखकर वह उसकी बेईमानी समझ गए।

(ख) इंजीनियर बाबू के चिल्लाने का क्या कारण था? (2)

**उत्तर** इंजीनियर बाबू के बार-बार यह पूछने पर कि यह मिठाई पाँच रुपये की है, इस पर रसीला यही दोहराता रहा कि हाँ! हुज़ूर यह पाँच रुपये की मिठाई है। इस पर वह क्रोधित हो गए और उस पर चिल्लाकर बोले-चल उस हलवाई के पास अभी सब कुछ पता चल जाएगा।

(ग) सच और झूठ का पता लगाने के लिए जगत बाबू ने क्या किया? (3)

**उत्तर** मिठाई देखकर इंजीनियर बाबू क्रोधित हो गए और सच न बताने पर उन्होंने रसीला के मुँह पर एक तमाचा मारा और हलवाई के पास चलने को कहा। उन्होंने कहा, चल मेरे साथ वहीं जहाँ से तू यह मिठाई लाया है, अभी सच और झूठ का पता चल जाएगा और अब अपनी सारी बात उस हलवाई के सामने ही कहना।

(घ) इंजीनियर बाबू का नौकर के प्रति क्रूर व्यवहार किस ओर संकेत करता है? (3)

**उत्तर** नौकर द्वारा मिठाई में से केवल अठन्नी बचाने को लेकर इंजीनियर बाबू उसे बेइज्जत करते हैं तथा उसके साथ मार-पिट्टाई करते हैं। इतना ही नहीं वह पुलिस को पाँच रुपये देकर उसे पिटाते हैं तथा छः महीने की सजा भी दिलवाते हैं। इससे उच्च वर्ग की क्रूरता, असंवेदना व अमानवीय व्यवहार का पता चलता है।

6. उसने कोई बहाना न बनाया। चाहता तो कह सकता था कि यह साजिश है। मैं नौकरी नहीं करना चाहता इसलिए हलवाई से मिलकर मुझे फँसा रहे हैं, पर एक और अपराध करने का साहस वह न जुटा पाया। उसकी आँखें खुल गई थीं। पृष्ठ सं. 8 [2017]

(क) किसे कौन फँसा रहा था? उसने क्या अपराध किया था? (2)

**उत्तर** इंजीनियर बाबू जगतसिंह, रसीला को फँसा रहे थे। रसीला इंजीनियर बाबू के यहाँ नौकर था। उसे वहाँ बहुत कम वेतन मिलता था। पैसा कमाने के लिए ही वह इंजीनियर साहब द्वारा मँगाई मिठाई में से अठन्नी बचाकर और वह अठन्नी रमजान को देकर अपने ऊपर चढ़े कर्ज से मुक्त होने का अपराध करता है।

(ख) रसीला कौन था? उसका परिचय दीजिए। (2)

**उत्तर** रसीला एक स्वामीभक्त, ईमानदार व परिश्रमी व्यक्ति है और कहानी का मुख्य पात्र भी है। वह इंजीनियर साहब के यहाँ नौकरी करता है। वह अपने मालिक द्वारा वेतन न बढ़ाने पर भी कहीं और नौकरी नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसे इंजीनियर साहब के यहाँ आदर व सम्मान दिया जाता था। रसीला अधिक धन कमाने के लिए बेईमानी करता है, परंतु बाद में पकड़े जाने पर वह अपना अपराध स्वीकार भी कर लेता है। अतः रसीला एक भोला, संवेदनशील व ईमानदार व्यक्ति है।

(ग) हमें अपने नौकरों से कैसा व्यवहार करना चाहिए? कहानी के आधार पर उदाहरण देकर समझाइए। (3)

**उत्तर** हमें अपने नौकरों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। हमें उनकी स्थिति को समझकर विपत्ति में उनकी सहायता करनी चाहिए। प्रस्तुत कहानी में इंजीनियर बाबू रसीला द्वारा अपना वेतन बढ़ाने की बात सुनकर उसके साथ क्रूर व्यवहार करने लगते हैं। बार-बार प्रार्थना करने पर भी वह रसीला का वेतन नहीं बढ़ाते। परिवार की स्थिति खराब होने पर वह उसकी सहायता भी नहीं करते। मिठाई के लिए दिए गए पैसों में से अठन्नी की बेईमानी करने पर वह पुलिस को उसे पीटने के लिए पाँच रुपये रिश्वत के रूप में देते हैं। अतः ऐसा क्रूर व्यवहार समाज में पशुता होने का प्रमाण है। नौकर भी मनुष्य होते हैं, जिनके साथ हमें मनुष्यता व संवेदनशील व्यवहार करना चाहिए।

(घ) इस कहानी में लेखक ने समाज की कौन-सी बुराई को प्रकट करने का प्रयास किया है? क्या वे अपने प्रयास में सफल हुए? समझाकर लिखिए। (3)

**उत्तर** इस कहानी में लेखक ने समाज में उच्च पद पर रहकर उस पद का दुरुपयोग करने का चित्रण किया है। इंजीनियर बाबू अमीर

होते हुए भी विपत्ति में अपने नौकर रसीला की सहायता नहीं करते हैं। रसीला द्वारा अठन्नी की बेईमानी करने पर वह क्रूरता की सीमा पार करके पुलिस को पाँच रुपये देकर उसे पीटवाते हैं। इस कहानी के माध्यम से न्याय-व्यवस्था पर भी करारा व्यंग्य किया गया है। लेखक ने इंजीनियर साहब तथा जज की निर्दयता, क्रूरता व हृदयहीनता का पर्दाफाश करके समाज को सच्चाई से अवगत कराने का सफल प्रयास किया है।

7. उसकी आँखें खुल गई थीं। हाथ जोड़कर बोला, “हुजूर यह मेरा पहला अपराध है। इस बार माफ़ कर दीजिए। फिर गलती न होगी।” शेख साहब न्यायप्रिय आदमी थे। उन्होंने रसीला को छः महीने की सज़ा सुना दी और रुमाल से मुँह पोंछा। पृष्ठ सं. 8

(क) रसीला ने क्या गुनाह किया था? उसका मुकदमा किसके सामने पेश हुआ? (2)

**उत्तर** रसीला ने अठन्नी की बेईमानी की थी। उसका मुकदमा शेख सलीमुद्दीन साहब जो जिला मजिस्ट्रेट थे, की कचहरी में पेश किया गया था।

(ख) रसीला चाहता तो झूठ बोल सकता था, लेकिन उसने सच क्यों बोला? (2)

**उत्तर** रसीला चाहता तो झूठ बोल सकता था, परंतु वह झूठ बोलकर एक और अपराध नहीं करना चाहता था। वह जानता था कि बेईमानी का नतीजा क्या है, इसलिए उसने सब कुछ सच बता दिया।

(ग) रसीला को उसके द्वारा किए गए अपराध की क्या सज़ा मिली? (3)

**उत्तर** हालाँकि रसीला ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया था, परंतु फिर भी जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन ने रसीला के अपराध स्वीकार करने की भावना पर ध्यान न देते हुए उसे छः महीने की सज़ा सुना दी तथा उस पर कोई उदारता नहीं दिखाई।

(घ) शेख साहब का व्यक्तित्व कैसा था? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** शेख सलीमुद्दीन जिला मजिस्ट्रेट थे। वे जगतसिंह के पड़ोसी थे। वे रिश्वत लेकर काम करते थे। वे अपने लाभ के अनुसार न्याय करते थे तथा न्याय करने के मामले में अपने विवेक का प्रयोग नहीं करते थे।

रसीला सच बोलकर अपनी गलती मान लेता है, परंतु इसके उपरांत भी वे उसे अठन्नी की हेरा-फेरी करने के जुर्म में छः महीने की सज़ा सुना देते हैं। इससे उनके रिश्वतखोर व बेईमान होने का पता चलता है।



## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. शेख साहब न्यायप्रिय आदमी थे। उन्होंने रसीला को छः महीने की सज़ा सुना दी और रुमाल से मुँह पोंछा। यह वही रुमाल था, जिसमें एक दिन पहले किसी ने हज़ार रुपये बाँधकर दिए थे। फैसला सुनकर रमज़ान की आँखों में खून उतर आया।

पृष्ठ सं. 8

- (क) मुकदमा किसकी कचहरी में पेश हुआ तथा क्यों? (2)  
 (ख) एक और अपराध करने का साहस कौन नहीं जुटा पा रहा था? (2)  
 (ग) अपराध स्वीकार्य की भावना किसमें थी, इसका परिणाम क्या हुआ? (3)  
 (घ) 'उसकी' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है? 'हुजूर मेरा यह पहला अपराध है। इस बार माफ़ कर दीजिए। फिर गलती न होगी।' यह किसने, किससे और क्यों कहा था? (3)

2. रमज़ान घर पहुँचा। एक दासी ने पूछा, "रसीला का क्या हुआ?"

"छः महीने की कैद।"

'अच्छा हुआ। वह इसी लायक था।'

रमज़ान ने गुस्से से कहा, "यह इंसान नहीं अँधेरे है। सिर्फ़ एक अठन्नी की ही तो बात थी!"

पृष्ठ सं. 8

- (क) रमज़ान की आँखों में खून क्यों उतर आया? (2)  
 (ख) रसीला को 'छः महीने की कैद' किसने और क्यों दी थी? (2)  
 (ग) अच्छा हुआ, 'वह इसी लायक था' यह किसने कहा व क्यों? (3)  
 (घ) 'यह इंसान नहीं अँधेरे है' ऐसा क्यों व किसने कहा है? (3)

3. रात के समय जब हज़ार पाँच-सौ के चोर नरम गद्दों पर मीठी नींद ले रहे थे, अठन्नी का चोर जेल की तंग, अँधेरी कोठरी में पछता रहा था।

पृष्ठ सं. 8

- (क) प्रस्तुत गद्यांश में किसका आक्रोश व्यंजित हुआ है व क्यों? (2)  
 (ख) आज की न्याय प्रणाली कैसी है? कहानी के आधार पर समझाइए। (2)  
 (ग) 'पाँच सौ का चोर' व 'अठन्नी का चोर' किस व्यवस्था को दर्शाता है? (3)  
 (घ) लेखक ने यहाँ किस समस्या को उभारने का प्रयास किया है? स्पष्ट कीजिए। (3)

# काकी सियारामशरण गुप्त

## लेखक परिचय

सियारामशरण गुप्त जी का जन्म 4 सितंबर, 1895 में उत्तर प्रदेश झाँसी के पास चिरगाँव में हुआ था। इनके पिता श्री रामचरण एक आस्थावान रामभक्त थे। सियारामशरण गुप्त जी राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के छोटे भाई थे। गुप्त जी महात्मा गाँधी और विनोबा भावे के विचारों के अनुयायी थे, जिसकी झलक इनकी रचनाओं में देखने को मिलती है। प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद इन्होंने घर पर ही गुजराती, अंग्रेज़ी और हिंदी भाषा सीखी।

गुप्त जी को दीर्घकालीन साहित्य सेवाओं के लिए वर्ष 1962 में 'सरस्वती हीरक जयंती' के अवसर पर सम्मानित किया गया तथा 'नागरी प्रचारिणी' सभा वाराणसी द्वारा 'सुधाकर पदक' से भी विभूषित किया गया। 'अनाथ', 'आर्द्रा', 'दूर्वादल-अनुरूपा' और अमृत पुत्र इनकी प्रसिद्ध पद्य रचनाएँ हैं, जबकि मानुषी (कहानी संग्रह), पुण्यपर्व (नाटक), नारी और गोद (उपन्यास) और झूठ-सच (निबंध) इनकी प्रसिद्ध गद्य रचनाएँ हैं। गुप्त जी की भाषा सरल, सहज तथा व्यावहारिक है। 9 मार्च, 1963 को इनका स्वर्गवास हो गया।

## कहानी का परिचय

'काकी' एक अबोध बालक की मनःस्थिति को दर्शाती हुई अत्यंत मार्मिक कहानी है। कहानी का मुख्य पात्र श्यामू है। वह अपनी काकी (माँ) से अत्यधिक प्रेम करता है। 'काकी' की मृत्यु पर वह बड़ा कोहराम मचाता है और उन्हें श्मशान घाट ले जाने से रोकता है। वहाँ उपस्थित लोग उसे शांत तो कर देते हैं, किंतु कुछ दिनों बाद उसे ज्ञात हो जाता है कि उसकी माँ राम (ईश्वर) के घर चली गई है। अपनी माँ को राम के घर से वापस लाने के लिए वह अपनी बाल-बुद्धि के अनुसार एक योजना बनाता है और योजना के अनुसार वह अपनी काकी को पतंग के द्वारा राम के घर से नीचे उतारना चाहता है। यहाँ लेखक ने श्यामू के मातृ-प्रेम की चरम सीमा को दर्शाने का प्रयास किया है।

## पात्र-परिचय

### श्यामू

श्यामू एक अबोध बालक है तथा कहानी का मुख्य पात्र है। वह अपनी माँ से अत्यधिक प्रेम करता है। अपनी अबोधता के कारण माँ को ज़मीन पर सोता देखकर वह यह समझ नहीं पाता कि उसकी माँ की मृत्यु हो चुकी है। आस-पास के बच्चों से उसे यह पता चलता है कि उसकी माँ राम के घर चली गई है। वह अपनी उम्र और समझ के अनुसार माँ को वापस लाने की योजना बनाता है। यह सब श्यामू की भावुकता, मातृ-प्रेम और संवेदनशीलता को दर्शाता है।

### विश्वेश्वर

विश्वेश्वर श्यामू के पिता हैं। वे अपनी पत्नी की अकाल मृत्यु से आहत होकर उदास रहते हैं। उनका मन कहीं भी नहीं लगता है। श्यामू द्वारा पतंग मँगाने की इच्छा जाहिर करने पर वे सहमति दे देते हैं, परंतु मँगाना भूल जाते हैं। वे अपने पुत्र के प्रति जिम्मेदारी को समझते हैं। श्यामू द्वारा उनके कोट से रुपये चुराने की बात जानकर वे उसे दो थप्पड़ लगाते हैं, किंतु पतंग लाने का कारण जानकर वे कुछ भी न सोच पाने की अवस्था में हतप्रभ होकर खड़े रह जाते हैं।

### भोला

भोला सुखिया दासी का पुत्र है तथा श्यामू की उम्र का ही है। वह श्यामू से अधिक समझदार है। जब श्यामू अपनी योजना के विषय में भोला को बताता है, तो वह पतंग में पतली डोरी बाँधने की जगह मोटी रस्सी बाँधने का सुझाव देता है, ताकि काकी आराम से नीचे आ सके। भोला डरपोक भी है। विश्वेश्वर के डाँटने पर वह उन्हें सब कुछ बता देता है।

## कहानी का सार

### श्यामू की व्याकुलता

कहानी का मुख्य पात्र श्यामू है, जिसके इर्द-गिर्द संपूर्ण कहानी घूमती है। एक दिन प्रातःकाल जब श्यामू की नींद खुली, तो उसने देखा कि घर में चारों ओर कोहराम मचा हुआ था। उसकी माँ एक कपड़े से ढकी ज़मीन पर सो रही थी तथा घर के सभी लोग उसे घेरकर रो रहे थे। जब लोग उसकी माँ के पार्थिव शरीर को श्मशान घाट ले जाने लगते हैं, तो वह बहुत रो-रोकर उत्पात मचाता है, क्योंकि वह अपनी माँ से बहुत प्यार करता था, इसलिए वह अपनी माँ को श्मशान घाट ले जाने से रोकने का पूरा प्रयास करता है।

माँ की मृत्यु के बाद श्यामू को लोगों ने यह कहकर सांत्वना दी कि तेरी माँ मामा के घर गई है, किंतु कुछ दिन बाद श्यामू को सत्य का पता चल जाता है कि उसकी माँ अब इस दुनिया में नहीं है, वह राम (भगवान) के घर चली गई है।

### सत्य जानने के बाद श्यामू की मनःस्थिति

श्यामू के मन में माँ के दूर जाने का जो दुःख था, वह समाप्त नहीं हुआ था, जिस प्रकार वर्षा के बाद एक-दो दिन के भीतर धरती पर जमा हुआ पानी तो चला जाता है, परंतु पृथ्वी के अंदर नमी बनी रहती है, यही स्थिति श्यामू की थी। कई दिनों तक रोते-रोते उसका रुदन तो शांत हो गया था, किंतु उसका मन भीतर से अत्यंत दुःखी था।

### श्यामू के हृदय का खिल उठना व उसके पिता की मनोदशा

श्यामू नासमझ बालक था। उसे मालूम था कि उसकी माँ भगवान के घर गई है, इसलिए वह एकांत में बैठकर चुपचाप ऊपर आसमान की ओर देखा करता था। एक दिन जब उसने आसमान में उड़ती पतंग देखी, तो उसके मन में यह विचार आया कि क्यों न उड़ती हुई पतंग को काकी के पास भेजकर उन्हें आसमान से नीचे बुला लिया जाए। यह सोचकर उसका मन खिल उठा और वह भागकर अपने पिता विश्वेश्वर के पास गया और बोला, काका मुझे एक पतंग मँगा दो, किंतु पत्नी की मृत्यु के बाद से श्यामू के पिता विश्वेश्वर कुछ खोए-खोए से रहते थे, इसीलिए 'अच्छा मँगा दूँगा' कहकर वे उदास मन से वहाँ से चले गए। पिता ने 'हाँ' तो कर दी, पर पतंग नहीं मँगवाई।

### श्यामू का अपने पिता के कोट से चवन्नी निकालना

श्यामू ने अपने पिता के कोट से एक चवन्नी चुरा ली और सुखिया दासी के पुत्र भोला से पतंग मँगवा ली। श्यामू ने जब अपनी योजना अपने मित्र 'भोला' को बताई, तो भोला ने पतंग में पतली डोर बाँधने के बजाय 'मोटी रस्सी' बाँधने का सुझाव दिया, ताकि काकी आराम से नीचे आ सके।

### श्यामू की चिंता का कारण

श्यामू और भोला ने मोटी रस्सी द्वारा काकी को नीचे उतारने की योजना तो बना ली, किंतु समस्या यह थी कि मोटी रस्सी मँगाई कैसे जाए? श्यामू के पास पैसे नहीं थे और वह जानता था कि घर के सदस्य उसे इस कार्य के लिए पैसे नहीं देंगे। इसी चिंता के कारण उसे रात भर नींद नहीं आई।

### श्यामू का अपने पिता के कोट से एक रुपया निकालना

अपनी योजना को सफल बनाने के लिए श्यामू ने अगले दिन अपने पिता विश्वेश्वर के कोट से फिर से एक रुपया निकाला और भोला को देते हुए कहा कि किसी को मालूम नहीं होना चाहिए, दो अच्छी-अच्छी रस्सियाँ मँगा दे, क्योंकि एक रस्सी तो छोटी पड़ेगी। मैं पतंग पर काकी का नाम लिखवा लेता हूँ, ताकि पतंग सीधे 'काकी' के पास ही पहुँचे।

### विश्वेश्वर द्वारा श्यामू को पीटना और हैरान रह जाना

श्यामू द्वारा कोट से एक रुपया निकालने वाली बात जानकर विश्वेश्वर ने क्रोध में आकर श्यामू को दो थप्पड़ मार दिए और उसकी पतंग फाड़ दी। रस्सियों के बारे में पूछने पर भोला ने पतंग से काकी को नीचे उतारने वाली बात बताई, जिसे सुनकर विश्वेश्वर हैरान होकर खड़े रह गए। उन्होंने फटी हुई पतंग उठाकर देखी, उस पर लिखा था—'काकी'।

## कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने एक मासूम से बच्चे की संवेदनशीलता, मनःस्थिति तथा उसका अपनी माँ के प्रति अत्यधिक प्रेम का मार्मिक ढंग से चित्रण किया है। यह कहानी बच्चों के भोलेपन, संवेदनशीलता और भावुकता को दर्शाती है तथा बताती है कि कोमल हृदयी बच्चे मातृ वियोग की पीड़ा सहन नहीं कर पाते हैं। कहानी का प्रारंभ श्यामू की माँ, जिसे वह 'काकी' कहता था, की मृत्यु से होता है।

इसके पश्चात् क्रमशः घटनाएँ घटनी आरंभ हो जाती हैं। श्यामू और भोला 'काकी' को पतंग की सहायता से वापस लाने का प्रयास करते हैं, जिसके लिए श्यामू अपने पिता विश्वेश्वर के कोट से रुपये चुराता है। चोरी का पता चलने पर विश्वेश्वर श्यामू को दो थप्पड़ मारते हैं तथा पतंग फाड़ देते हैं। बाद में फटी पतंग पर 'काकी' लिखा देखकर विश्वेश्वर हैरान रह जाते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि 'काकी' शीर्षक पूर्ण रूप से सार्थक है।

### शब्दार्थ

शब्द अर्थ, पाठ्य-पुस्तक साहित्य सागर में दिए गए भाग संक्षिप्त कहानियों के पृष्ठों के अनुसार हैं—

**पृष्ठ सं. 10** कुहराम—हलचल (bustle); ओढ़ना—ढकना, लपेटना (muffle); भूमि-शयन—भूमि पर सोना (land bed); करुण—दयनीय (pitiful); विलाप—बिलख, बिलखकर रोना (moan); उपद्रव—उत्पात, उधम (deuce); कठिना—कड़ाई, मुश्किल से (hardly); दाह-संस्कार—मरे हुए मनुष्य का अंतिम संस्कार करना (cremation); गुरुजन—बड़े लोग, बुजुर्ग (veterans, the elderly); आवरण—पर्दा (a shield); क्रमशः—क्रमानुसार, सिलसिले से (gradually, respectively); अनंतर—उसके बाद (later on, afterwards); अगोचर—गायब होना (disappear); आर्द्रता—नमी (humidity, moisture); अंतस्तल—भीतर स्थिर, मन (innerself); खिल उठना—प्रसन्न होना (glad)।

**पृष्ठ सं. 11** अन्यमनस्क—जिसका मन कहीं और लगा हो (saddish, absentminded); उत्कंठित—दुःखी चिंतित (sorrowful); टटोलना—तलाशना (fumble); आविष्कार करना—खोजना (search, invent); समवयस्क—समान आयु का (of same age); सुझाई गई—सलाह देना (advise, suggest); ओछी—छोटी (short)।

**पृष्ठ सं. 12** उग्र—रौद्र (terrible, angry); सकपकाना—चकिन होना, लज्जित होना, हिचकना (to be taken aback, blench); हतबुद्धि—जो कुछ सोच पाने की अवस्था में न हो (stupefaction)।

# प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. यद्यपि बुद्धिमान गुरुजनों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गई है, परंतु असत्य के आवरण में सत्य बहुत समय तक छिपा न रह सका। आस-पास के अबोध बालकों के मुँह से ही वह प्रकट हो गया। **पृष्ठ सं. 10**

(क) काकी को दाह-संस्कार के लिए ले जाते देखकर श्यामू की स्थिति कैसी थी? (2)

**उत्तर** काकी को जब दाह-संस्कार के लिए ले जाया जा रहा था, तब श्यामू स्वयं को सँभाल नहीं पा रहा था। वह काकी को ले जाने नहीं दे रहा था। श्यामू ने रो-रोकर घर में उत्पात मचा रखा था।

(ख) श्यामू को कौन विश्वास दिला रहा था और कैसे? (2)

**उत्तर** श्यामू को बुद्धिमान गुरुजन विश्वास दिला रहे थे। जब श्यामू ने रो-रोकर सारा घर सरपे उठा रखा था, तब बुद्धिमान लोगों ने उसे समझाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गई है।

(ग) “असत्य के आवरण में सत्य बहुत समय तक छिपा न रह सका।” पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** घर के लोग व गुरुजन श्यामू को उसकी माँ की मृत्यु के सत्य से अवगत न करवाकर यह बता रहे थे कि उसकी काकी उसके मामा के घर गई है। वह सत्य असत्य के आवरण में अधिक समय तक छिप न सका। इस सत्य का ज्ञान श्यामू को उसके आस-पास के अबोध बालकों के माध्यम से हो गया।

(घ) अबोध बालकों ने श्यामू को किस सत्य से अवगत करवाया? बालकों द्वारा सत्य से अवगत करवाना क्या दर्शाता है? (3)

**उत्तर** अबोध बालकों ने श्यामू को उसकी माँ के विषय में बताया कि उसकी काकी उसके मामा के घर नहीं गई, अपितु राम के पास चली गई है। श्यामू इस सत्य को स्वीकार नहीं कर पाया। कई दिनों तक वह लगातार रोता रहा। कुछ दिनों पश्चात् उसका मन शांत हो गया, परंतु शोक शांत न हो सका। बालकों द्वारा श्यामू को सत्य से अवगत करवाना उनकी मासूमियत को दर्शाता है।

2. शोक शांत न हो सका। वर्षा के अनंतर एक-दो दिन में ही पृथ्वी के ऊपर का पानी तो अगोचर हो जाता है, परंतु भीतर-ही-भीतर उसकी आर्द्रता जैसे बहुत दिन तक बनी रहती है, वैसे ही उसके अंतःस्तल में वह शोक जाकर बस गया था। वह प्रायः अकेला बैठा-बैठा शून्य मन से आकाश की ओर ताका करता। **पृष्ठ सं. 10**

(क) घर के लोग विलाप क्यों कर रहे थे? (2)

**उत्तर** श्यामू की माँ का स्वर्गवास होने के कारण घर के लोग विलाप कर रहे थे। घर के सभी लोगों ने उसकी माँ को नीचे लिटाकर कपड़े से ढक दिया था और उसकी माँ को चारों ओर से घेर रखा था।

(ख) श्यामू ने उपद्रव क्यों मचाया? (2)

**उत्तर** श्यामू की माँ का स्वर्गवास होने के कारण उसकी माँ को लोग श्मशान ले जाने लगे। इस पर श्यामू ने बड़ा उपद्रव मचाया, क्योंकि वह अपनी माँ को कहीं नहीं ले जाने देना चाहता था।

(ग) श्यामू का शोक शांत क्यों नहीं हुआ? (3)

**उत्तर** अपनी माँ के मरने का पता लगने पर श्यामू लगातार कई दिनों तक रोता रहा। कुछ दिनों बाद उसका रोना तो बंद हो गया, लेकिन मन से वह दुःखी ही रहा। वह अपनी माँ से बहुत प्रेम करता था, इसलिए अपनी माँ की याद में वह प्रायः अकेला बैठा-बैठा उदास मन से आकाश को निहारता रहता था।

(घ) पृथ्वी की आर्द्रता की तुलना श्यामू के मन से किस प्रकार की गई है? (3)

**उत्तर** जिस प्रकार पृथ्वी के ऊपर गिरा वर्षा का पानी कुछ दिनों बाद धीरे-धीरे गायब हो जाता है अर्थात् सूख जाता है, परंतु पृथ्वी के अंदर उस पानी की आर्द्रता अर्थात् नमी बहुत दिनों तक बनी रहती है; ठीक उसी प्रकार श्यामू लगातार रोते-रोते शांत तो हो गया, परंतु उसकी काकी के मरने का दुःख उसके हृदय में जाकर बस गया। वह अकेला बैठा उदास मन से घंटों तक आकाश की ओर देखता रहता था, जिससे उसकी काकी उसे दिखाई दे जाए।

3. श्यामू पतंग के लिए बहुत उत्कंठित था। वह अपनी इच्छा किसी तरह रोक न सका। एक जगह खूँटी पर विश्वेश्वर का कोट टँगा हुआ था। इधर-उधर देखकर उसने एक स्टूल सरकाकर रखा और ऊपर चढ़कर कोट की जेबें टटोलीं। उनमें से एक चवन्नी का आविष्कार करके वह तुरंत वहाँ से भाग गया। **पृष्ठ सं. 11**

(क) श्यामू का पतंग के लिए उत्सुक होने का क्या कारण था? (2)

**उत्तर** श्यामू ने जब आसमान में उड़ती हुई पतंग देखी तो वह उत्साहित हो गया, उसकी इच्छा हुई कि वह भी पतंग में डोर बाँधकर भगवान के पास भेजेगा, जिससे उसकी माँ राम के घर से नीचे आ जाएगी।

(ख) पतंग लेने के लिए श्यामू ने क्या किया? (2)

**उत्तर** श्यामू आसमान में पतंग देखकर अपनी इच्छा पर काबू न कर सका। उसने खूँटी में टँगे अपने पिता के कोट की जेबों को टटोलकर देखा और उसमें से एक चवन्नी निकाल ली और तुरंत वहाँ से भाग गया।

(ग) श्यामू ने विश्वेश्वर के कोट से पैसे क्यों निकाले? (3)

**उत्तर** श्यामू पतंग लाने के लिए बहुत उत्सुक था, उसने सर्वप्रथम अपने पिता से पतंग लेने की इच्छा व्यक्त की, किंतु पत्नी की मृत्यु के बाद विश्वेश्वर स्वयं बहुत दुःखी व उदास रहते थे, इसलिए उन्होंने उदास भाव से श्यामू को पतंग लाने के लिए बोला। श्यामू जब पतंग पाने की अपनी इच्छा को नहीं रोक सका, तो उसने अपने पिता के कोट की जेब से चवन्नी निकाल ली।

(घ) ‘पतंग के लिए उत्कंठित होना’ श्यामू की किस प्रकार की स्थिति को दर्शाता है? (3)

**उत्तर** पतंग के लिए उत्कंठित होना अबोध बालक श्यामू के मातृ-प्रेम को दर्शाता है। वह अपनी माँ से बहुत प्रेम करता था। माता के वियोग की पीड़ा को वह सहन कर पाने में असमर्थ है, इसलिए पतंग के माध्यम से अपनी माँ को वापस अपने पास लाने की तीव्र इच्छा श्यामू के मन में होती है। यह बालक की मासूमियत व बाल मनोविज्ञान को दर्शाता है।

4. “मैं यह पतंग ऊपर राम के यहाँ भेजूँगा। इसे पकड़कर काकी नीचे उतरेंगी। मैं लिखना नहीं जानता, नहीं तो इस पर उनका नाम लिख देता।”

भोला श्यामू से अधिक समझदार था। उसने कहा, “बात तो बहुत अच्छी है, परंतु एक कठिनता है। यह डोर पतली है। पृष्ठ सं. 11

(क) श्यामू का हृदय क्या देखकर प्रसन्न हो गया? श्यामू ने अपने पिता विश्वेश्वर से पतंग क्यों माँगी? (2)

**उत्तर** आसमान में उड़ती पतंग देखकर श्यामू का हृदय प्रसन्न हो गया और आसमान में उड़ती पतंगों को देखकर उसके मन में विचार आया कि क्यों न ‘काकी’ को पतंग के द्वारा ही नीचे उतारा जाए, यही सोचकर उसने अपने पिता विश्वेश्वर से पतंग माँगी।

(ख) भोला ने श्यामू को किस समस्या से अवगत करवाया? उन्हें किस बात का डर था? (2)

**उत्तर** भोला ने श्यामू को डोर के विषय में बताया कि यह डोर बहुत पतली है। इस डोर को पकड़कर काकी उतर भी नहीं पाएगी, क्योंकि इस डोर के टूट जाने का डर है। अगर पतंग में मोटी रस्सी होगी, तो सब ठीक हो जाएगा।

(ग) श्यामू ने अपनी इच्छापूर्ति किस प्रकार की? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** श्यामू की इच्छा थी कि पतंग के सहारे काकी को नीचे उतारा जाए। अतः पहले तो उसने अपने पिता के कोट से चवन्नी चुराकर पतंग मँगाई। पतंग की डोर पतली होने के कारण उसने पतंग में मोटी रस्सियाँ बाँधने की सोची। इसके लिए उसने दोबारा चोरी की और अपने पिताजी के कोट से एक रुपया चुराकर अपने मित्र भोला के द्वारा मोटी रस्सियाँ मँगाई। अतः इस तरह श्यामू ने अपनी इच्छापूर्ति की।

(घ) उपरोक्त पंक्तियों के आधार पर बताइए कि ‘मैं’ शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है? वह राम के घर क्या भेजना चाहता था और वह पतंग पर क्या लिखना चाहता था? (3)

**उत्तर** ‘मैं’ शब्द श्यामू के लिए प्रयोग किया गया है। वह काकी को नीचे उतारने के लिए राम के घर पतंग भेजना चाहता था, जिसकी डोर पकड़कर काकी आसानी से नीचे उतर आएगी। अपनी मरी हुई माँ को राम जी के घर से वापिस लाने के लिए वह पतंग पर ‘काकी’ लिखना चाहता था, ताकि पतंग सीधे काकी के पास ही पहुँचे।

5. “देख भोला, किसी को मालूम न होने पाए। अच्छी-अच्छी दो रस्सियाँ मँगा दे। एक रस्सी ओछी पड़ेगी। जवाहर भैया से मैं एक कागज़ पर ‘काकी’ लिखवा के रखूँगा। नाम की चिट रहेगी, तो पतंग उन्हीं के पास पहुँच जाएगी।” पृष्ठ सं. 11

(क) भोला कौन था? भोला व श्यामू की चिंता का क्या कारण था? (2)

**उत्तर** भोला सुखिया दासी का लड़का व श्यामू का मित्र था। उनकी चिंता का कारण यह था कि वे मोटी रस्सी के लिए पैसे कहाँ से लाएँ।

(ख) श्यामू को देर रात तक नींद क्यों न आई? श्यामू ने अपने पिता के कोट से क्या निकाला? (2)

**उत्तर** श्यामू को रात भर यही चिंता सताती रही कि वह मोटी रस्सी के लिए पैसे किससे माँगेगा? इसलिए उसे देर रात तक नींद नहीं आई। अतः श्यामू ने अपने पिता के कोट से एक रुपया निकाला।

(ग) “किसी को मालूम न होने पाए। अच्छी-अच्छी दो रस्सियाँ मँगा दे।” यह किसने व किससे कहा? श्यामू जवाहर भैया से पतंग पर क्या लिखवाना चाहता था? (3)

**उत्तर** “किसी को मालूम न होने पाए। अच्छी-अच्छी दो रस्सियाँ मँगा दे।” यह कथन श्यामू ने भोला से कहा, क्योंकि वह पतंग की पतली डोर के बदले उसमें मोटी रस्सियाँ बाँधना चाहता था, जिससे काकी आसानी से नीचे उतर सके। श्यामू जवाहर भैया से पतंग पर ‘काकी’ लिखवाना चाहता था, क्योंकि उनके नाम की चिट रहेगी, तो पतंग सीधे उन्हीं के पास पहुँचेगी।

(घ) ‘ओछी’ शब्द का अर्थ क्या है तथा श्यामू ने भोला से क्या लाने को कहा? (3)

**उत्तर** ‘ओछी’ शब्द का अर्थ है—छोटी। श्यामू को जब यह पता चला कि डोर पतली है, इसे पकड़कर काकी नीचे नहीं उतर पाएगी, पतंग में मोटी रस्सी होती तो ‘काकी’ आसानी से नीचे उतर जाती, तो उसने अपने पिताजी के कोट से एक रुपया चुराया तथा भोला से अच्छी-अच्छी दो रस्सियाँ लाने को कहा।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सुखिया दासी का लड़का भोला, श्यामू का समवयस्क साथी था। श्यामू ने उसे चवन्नी देकर कहा, “अपनी जीजी से कहकर गुपचुप एक पतंग और डोर मँगा दो। देखो, अकेले में लाना, कोई जान न पाए।” पृष्ठ सं. 11
  - (क) विश्वेश्वर ने श्यामू की इच्छा क्यों पूरी नहीं की? (2)
  - (ख) श्यामू अपनी किस इच्छा को अतिशीघ्र पूरी करना चाहता था? (2)
  - (ग) पहले प्रयास में असफल होने पर श्यामू ने इच्छा पूरी करने का क्या रास्ता निकाला? (3)
  - (घ) श्यामू ने अपना साथी किसे और क्यों बनाया? (3)
2. दो घंटे बाद प्रफुल्ल मन से श्यामू और भोला अँधेरी कोठरी में बैठे-बैठे पतंग में रस्सी बाँध रहे थे। अकस्मात् शुभ कार्य में विघ्न की तरह उग्र रूप धारण किए हुए विश्वेश्वर वहाँ आ घुसे। भोला और श्यामू को धमकाकर बोले, “तुमने हमारे कोट से रुपया निकाला है?” पृष्ठ सं. 12
  - (क) श्यामू और भोला का मन प्रसन्न क्यों था? (2)
  - (ख) विश्वेश्वर के आ जाने से किस प्रकार का विघ्न उत्पन्न हुआ? (2)
  - (ग) विश्वेश्वर ने भोला और श्यामू को क्यों धमकाया? (3)
  - (घ) विश्वेश्वर का व्यवहार क्या प्रदर्शित करता है? कहानी के आधार पर बताइए। (3)
3. विश्वेश्वर ने श्यामू को दो तमाचे जड़कर कहा, “चोरी सीखकर जेल जाएगा? अच्छा, तुझे आज अच्छी तरह समझाता हूँ।” यह कहकर फिर तमाचे जड़े और कान मलने के बाद पतंग फाड़ डाली। पृष्ठ सं. 12
  - (क) विश्वेश्वर अत्यंत क्रोधित क्यों थे? (2)
  - (ख) किसने घबराकर श्यामू का भेद खोल दिया था? (2)
  - (ग) विश्वेश्वर ने किसे तमाचे मारे और क्यों? (3)
  - (घ) विश्वेश्वर क्या जानकर हतबुद्धि होकर खड़े हो गए? (3)



# महायज्ञ का पुरस्कार

## यशपाल

### लेखक परिचय

स्वतंत्रता सेनानी यशपाल जी को हिंदी साहित्य के यशस्वी कथाकार और निबंधकार के रूप में जाना जाता है। इनका जन्म 3 दिसंबर, 1903 में फिरोजपुर छावनी में हुआ था। यशपाल जी बचपन से ही क्रांतिकारी गतिविधियों में जुट गए थे। इनकी आरंभिक शिक्षा स्थानीय स्कूल व उच्च शिक्षा लाहौर में संपन्न हुई। इन्होंने 'विप्लव' नामक पत्र निकाला व साहित्य सृजन में लग गए। जिस कारण ये जेल भी गए। इनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं— ज्ञानदान, तर्क का तूफान, पिंजड़े की उड़ान, फूलों का कुर्ता, उत्तराधिकारी आदि। कहानियों के अतिरिक्त इन्होंने उपन्यास, आत्मकथा, निबंध, संस्मरण, नाटक आदि भी लिखे हैं। देशद्रोही, दादा कामरेड, झूठा-सच आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। यशपाल जी की रचनाओं में हिंदी के साथ-साथ उर्दू व अंग्रेज़ी के शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है। इनकी भाषा सहज, स्वाभाविक व प्रभावपूर्ण है। 26 दिसंबर, 1976 को इनका स्वर्गवास हो गया।

### कहानी का परिचय

'महायज्ञ का पुरस्कार' कहानी में यशपाल जी ने स्पष्ट किया है कि प्राणीमात्र की भलाई के लिए किया गया निःस्वार्थ कार्य ही श्रेष्ठ महायज्ञ होता है। कहानी के मुख्य पात्र एक सेठ हैं, जो विनम्र और धर्मपरायण हैं, लेकिन एक समय ऐसा आया कि वे गरीब हो गए। अपनी पत्नी की सलाह से वे कुंदनपुर के सेठ को अपने एक यज्ञ का फल बेचने के लिए तैयार हो जाते हैं। रास्ते में वे भूख से पीड़ित एक कुत्ते को स्वयं भूखे रहते हुए अपनी सारी रोटियाँ खिला देते हैं। धन्ना सेठ की पत्नी, गरीब सेठ द्वारा निःस्वार्थ भाव से किए गए इस महायज्ञ को खरीदने के लिए कहती है, लेकिन सेठ भूखे को अन्न देना सभी का कर्तव्य समझते थे। उन्हें मानवोचित कर्तव्य का मूल्य लेना उचित न लगा और अपने घर वापस लौट आए। सेठ ने विपत्ति में भी धर्म नहीं छोड़ा और उन्हें अपने इस महायज्ञ का पुरस्कार अपने घर से मिले बड़े खजाने के रूप में मिला।

### पात्र-परिचय

#### सेठ

सेठ अत्यंत विनम्र, संवेदनशील एवं दयालु प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनके द्वार से कोई भी व्यक्ति निराश होकर नहीं लौटता था। सेठ धर्मपरायण थे। विकट परिस्थितियों में भी उन्होंने अपनी धर्मपरायणता को नहीं छोड़ा और अपना सारा भोजन भूख से पीड़ित कुत्ते को खिला दिया। धन्ना सेठ की पत्नी के कहने पर भी उन्होंने इसे यज्ञ की श्रेणी में नहीं रखा। वे परोपकारी व दयालु थे। उनका मानना था कि भूखे को भोजन कराना मानवोचित कार्य है, जिसका क्रय-विक्रय नहीं किया जा सकता। अंत में खजाना मिलने पर भी उन्होंने ईश्वर से यह प्रार्थना की कि वह जीवनपर्यंत अपने कर्तव्य का पालन करते रहें।

#### सेठानी

सेठानी निष्ठावान, पतिव्रता और धैर्य को धारण करने वाली स्त्री थी। विकट परिस्थितियों में भी सेठानी ने सेठ का साथ नहीं छोड़ा। निर्धनता को दूर करने के लिए उन्होंने सेठ जी को यज्ञ बेचने का सुझाव दिया। जब सेठ जी खाली हाथ घर वापस पहुँचे तो सेठानी व्यथित हुई, किंतु पूरी घटना जानने के बाद सेठ की धर्मपरायणता से अभिभूत होकर उनका मन प्रसन्न हो उठा। उन्होंने सेठ को धीरज बँधाया और ईश्वर पर विश्वास रखने हेतु प्रेरित किया।

#### धन्ना सेठ की पत्नी

धन्ना सेठ की पत्नी अत्यंत विदुषी थीं। उनके विषय में यह अफ़वाह फैली हुई थी कि उन्हें कोई दैवीय शक्ति प्राप्त है, जिससे वे तीनों लोकों की बात जान लेती हैं। सेठ द्वारा उनके घर पहुँचने पर सेठानी

को अपनी दैवीय शक्तियों के माध्यम से यह ज्ञात हो जाता है कि सेठ जी ने मार्ग में एक भूख से पीड़ित कुत्ते को निःस्वार्थ भाव से अपना सारा भोजन खिला दिया। सेठानी, सेठ के इस कार्य को महायज्ञ बताकर इसे खरीदने का प्रस्ताव उनके समक्ष रखती है, जिससे सेठानी की मानवता और बुद्धिमत्ता का ज्ञान होता है।

## कहानी का सार

### सेठ की धार्मिक प्रवृत्ति

सेठ धार्मिक प्रवृत्ति के एवं स्वभाव से अत्यंत ही विनम्र व उदार व्यक्ति थे। अपनी इस प्रवृत्ति के कारण सेठ ने न जाने कितना ही धन दीन-दुःखियों में बाँट दिया था। उनकी धर्मपरायणता दूर-दूर तक फैली हुई थी। जो भी साधु-संत उनके द्वार पर आता था, वह निराश होकर कभी न लौटता था।

### सेठ द्वारा विपरीत परिस्थितियों का सामना करना

अचानक सेठ को विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। उनके सभी संगी-साथियों ने उनसे मुँह फेर लिया। दिन-प्रतिदिन उनकी स्थिति खराब होती चली गई और नौबत यहाँ तक आ गई कि सेठ व सेठानी की भूख मरने की नौबत आ गई। अपनी गरीबी से बाहर निकलने के लिए सेठानी ने सेठ को एक यज्ञ के पुण्य को बेचने का निर्णय लिया।

### धन्ना सेठ व समाज में प्रचलित प्राचीन मान्यताएँ

सेठ व सेठानी ने धन्ना सेठ को अपने एक यज्ञ के पुण्य को बेचने का निर्णय लिया। धन्ना सेठ कुंदनपुर नाम के एक नगर में रहते थे। उनके पास अपार धन-संपत्ति थी, इसलिए लोग इन्हें 'धन्ना सेठ' कहते थे। उस समय समाज में प्राचीन मान्यताएँ प्रचलित थीं; जैसे—यज्ञ के फल या पुण्य को खरीदने व बेचने की प्रथा। इसी प्रकार धन्ना सेठ की पत्नी के विषय में भी कहा जाता था कि उनके पास कोई दैवीय शक्ति है, जिसके कारण वे तीनों लोकों की बात जान लेती हैं। धन्ना सेठ के पास धन की कोई कमी न थी, इसलिए सेठ ने विपत्ति में उन्हीं को यज्ञ बेचने का विचार किया।

### सेठ की कुंदनपुर यात्रा

सेठ को कुंदनपुर के लिए निकलना था, इसलिए सेठानी पड़ोसी से आटा माँग लाई और चार रोटियाँ बनाकर सेठ को दे दीं। सेठ सुबह जल्दी उठकर धन्ना सेठ के कस्बे की ओर चल दिए। सेठ के लिए जब चलना कष्टप्रद हो गया और भूख भी सताने लगी, तो सेठ ने थोड़ी देर विश्राम करने और भोजन कर लेने के विषय में सोचा और वृक्षों का कुंज देखकर वे वहीं रुक गए।

### कुत्ते की दुर्बल स्थिति व सेठ की दयालुता

सेठ जब विश्राम करने के लिए वृक्षों के कुंज में बैठे और जैसे ही रोटियाँ निकालीं, तभी उनकी नजर पास ही लेटे एक कुत्ते पर पड़ी, जो अत्यधिक भूखा होने के कारण छटपटा रहा था। उसकी स्थिति इतनी दुर्बल थी कि उसके पेट व कमर का पता ही नहीं चल पा रहा था।

सेठ अत्यंत दयालु प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनकी दयालुता केवल मनुष्य मात्र के लिए नहीं थी, अपितु वे किसी भी जीव को दुःखी नहीं देख सकते थे। कुत्ते को देख सेठ को दया आ गई और सेठ ने एक-एक कर अपनी सारी रोटियाँ बीमार पड़े कुत्ते को खिला दीं और स्वयं पानी पीकर आगे की यात्रा पर चल पड़े।

### सेठ का कुंदनपुर पहुँचना

धन्ना सेठ की हवेली में पहुँचने पर सेठ ने अपनी सारी परेशानी धन्ना सेठ के समक्ष रखी, तभी धन्ना सेठ की पत्नी ने कहा कि आप अपना आज का किया हुआ महायज्ञ बेचने को तैयार हो, तो हम उसे अवश्य ही खरीदेंगे, अन्यथा नहीं।

### सेठ का हैरान होना

सेठ को धन्ना सेठ की पत्नी की बात समझ न आई। वे कुछ बोल पाने की स्थिति में न थे, क्योंकि वर्तमान में उनकी स्थिति ऐसी नहीं थी कि वे महायज्ञ कर सकें और धन्ना सेठ की पत्नी उनसे आज के किए गए महायज्ञ को बेचने की बात कर रही थी। पूछने पर उन्हें पता चला कि उन्होंने जो कुत्ते को चारों रोटियाँ खिलाई थीं, धन्ना सेठ की पत्नी उसी महायज्ञ को बेचने की बात कर रही थी, किंतु सेठ को मानवोचित कर्तव्य का मूल्य लेना उचित न लगा और उन्होंने वहाँ से अपना सामान उठाया व खाली हाथ घर आ गए।

### सेठानी का गर्व से प्रसन्न हो जाना

सेठानी घर पर बड़ी-बड़ी आशाएँ लगाए बैठी थी। सेठ के खाली हाथ आने पर वह घबरा जाती है, किंतु जब सेठ उसे शुरू से अंत तक सारी बात बताते हैं, तो उसका हृदय प्रसन्नता से खिल उठता है। उसे अपने पति पर गर्व होता है, क्योंकि सेठ ने विपत्ति में भी अपनी धर्मपरायणता को बनाए रखा। सेठानी सेठ के चरणों की धूल को माथे पर लगाते हुए सेठ का साहस बढ़ाती है और भगवान पर विश्वास करने के लिए कहती है।

### सेठ व सेठानी पर ईश्वरीय कृपा

कहानी के अंत में सेठ व सेठानी को ईश्वरीय कृपा के रूप में एक खज़ाना मिला, जिसे देख दोनों की आँखें आश्चर्यचकित रह गईं। सेठ ने जिस कुत्ते को अपनी चारों रोटियाँ खिलाई थीं, यह खज़ाना उसी का पुरस्कार था। अंततः यही कहा जा सकता है कि प्रत्येक प्राणी के लिए हमारे मन में प्रेमभाव व दयाभाव होना चाहिए, वास्तव में यही महायज्ञ है।

## कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता

'महायज्ञ का पुरस्कार' कहानी में लेखक ने 'सेठ जी' के माध्यम से इस तथ्य को सजीव ढंग से उजागर किया है कि मानव का प्रथम कर्तव्य प्राणियों की सेवा करना है, क्योंकि यही ईश्वर की वास्तविक उपासना है। स्वयं कष्ट सहते हुए अन्य प्राणियों की सेवा करना मानवोचित कार्य होने के साथ-साथ संसार में किया जाने वाला सबसे बड़ा यज्ञ है, जिसका कर्मफल अवश्य मिलता है। यही इस पाठ का मूल उद्देश्य है।

प्रस्तुत कहानी 'महायज्ञ का पुरस्कार' ऐसे पात्रों के इर्द-गिर्द घूमती है, जो मानव जाति के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। सेठ जी मानव जाति के साथ-साथ जीवों के प्रति भी दयाभाव रखते थे। विकट परिस्थितियों में भी उन्होंने अपनी धर्मपरायणता का त्याग नहीं किया तथा निष्काम भाव से अपना सारा भोजन भूखे कुत्ते को खिला दिया। उनके अनुसार, यह मानवोचित कार्य था। खाली हाथ घर वापस आने पर उन्हें जवाहरातों से भरा खज़ाना मिला और दिव्य वाणी सुनाई दी कि यह 'महायज्ञ का पुरस्कार' है। अतः यह शीर्षक पूर्णतः सार्थक है।

## शब्दार्थ

शब्द अर्थ, पाठ्य-पुस्तक साहित्य सागर में दिए गए भाग संक्षिप्त कहानियों के पृष्ठों के अनुसार हैं—

**पृष्ठ सं. 14** विनम्र—विनीत और सुशील (polite); उदार—दयालु (liberal); धर्मपरायण—धर्म के मार्ग पर चलने वाला (religious); भरपेट—पेट भरकर (to full capacity); द्वार—दरवाजा (door); यज्ञ—हवन (oblation); दीन—गरीब (poor); संगी-साथी—साथ रहने वाले (friends, companions); नौबत—दशा (situation); प्रथा—रीति (custom); प्रचलित—ख्याति (popular); क्रय-विक्रय—खरीदना-बेचना (purchase-sale); तंगी—किसी चीज की कमी होना (scarcity, tightness); अफवाह—उड़ाई गई खबर (rumour); विपदग्रस्त—मुसीबत में फँसे (distress, stuck); पड़ोसी—आस-पास रहने वाले (neighbours); पोटली—छोटी गठरी (packet); तड़के—सवेरे (early morning)।

**पृष्ठ सं. 15** कष्ट—पीड़ा (trouble); पसीने—अधिक काम या गरमी के कारण शरीर से निकलने वाला जल (sweat); देह—शरीर (body); लथ-पथ—सना हुआ, तर (soaked up); कुंज—वृक्षों से घिरा हुआ स्थान (Arbor); विश्राम—आराम करना (rest); छटपटाना—अधिक दुःख के कारण परेशान होना (thrash about); दुर्बलता—कमजोरी (weakness); हालत—अवस्था (condition); कृतज्ञता—एहसान मानना (grateful); योग्य—लायक (able); खिसकना—सरकना (dodge, slip away); समीप—पास (near); बस्ती—मोहल्ला (area); याचना—माँगना (beg)।

**पृष्ठ सं. 16** बेचारा—निस्सहाय, गरीब (poor); मूक—गूँगा, लाचार (silent, dumb); निश्चय—अवश्य, संकल्प करना (decision); स्वागत—सत्कार करना (welcome); विस्मित—विमूढ़-हैरान (open-eyed, amazed); खिन्न—दुःखी (heartsick)।

**पृष्ठ सं. 17** निःस्वार्थ—बिना किसी स्वार्थ के (unselfish); कर्म—कार्य (work); कर्तव्य—किसी कार्य को करना (duty); चुपचाप—मौन रहकर (quietly); मानवोचित—मनुष्य के हित में (humane); धर्मशाला—दूसरों के लिए बनवाया गया भवन (hospice); चबूतरा—खुली हुई चौकोर उठी हुई जगह (platform); पौ फटे—सूर्य का निकलना (sunrise); आद्योपांत—शुरू से लेकर अंत तक (from beginning to end); वेदना—कष्ट (anguish); विलीन—गायब (vanish); उल्लसित—अतिप्रसन्न (hilarious); मस्तक—माथा (forehead); अंधकार—अँधेरा (dark); दहलीज—देहरी (vestibule, threshold); बीचों-बीच—बिलकुल बीच में (in centre); अचरज—आश्चर्य (surprise)।

**पृष्ठ सं. 18** ढकना—ढक्कन (lid); माजरा—मामला (the matter); प्रकाश—रोशनी (light); चौंधियाने—चकाचौंध होना (bedazzled); विशाल—बहुत बड़ा (huge); तहखाना—ज़मीन के नीचे बना कमरा (crypt); रहस्य—राज, गुप्त बात (mystery); निस्तब्ध—गतिहीन (motionless); अदृश्य—गायब (vanish); स्पष्ट—साफ (clear); प्रसन्नचित्त—प्रसन्न मन वाला (buoyant); मरणासन्न—जो मरने वाला हो (one foot in the grave); कृतकृत्य—संतुष्ट (satisfaction)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. “पर, ‘सब दिन होत न एक समान’” अकस्मात् दिन फिरे और सेठ को गरीबी का मुँह देखना पड़ा। संगी-साथियों ने भी मुँह फेर लिया और नौबत यहाँ तक आ गई कि सेठ व सेठान्नी भूखों मरने लगे।

(क) अकस्मात् बुरा समय किसका आ गया था तथा बुरा समय आने से पहले उसकी दशा कैसी थी? (2)

**उत्तर** अकस्मात् बुरा समय ‘सेठ’ का आ गया था तथा बुरा समय आने से पहले वह बहुत धनी था। सेठ न जाने कितना ही धन दीन-दुःखियों में बाँट देता था।

(ख) अपना बुरा समय दूर करने के लिए सेठ ने क्या उपाय सोचा? इस उपाय के लिए उन्हें किसके पास जाना पड़ा? (2)

**उत्तर** अपना बुरा समय दूर करने के लिए सेठ ने एक यज्ञ बेचने का उपाय सोचा। इस उपाय के लिए उन्हें कुंदनपुर नाम के नगर में रहने वाले सेठ ‘धन्ना सेठ’ के पास जाना पड़ा।

(ग) सेठ ने मार्ग में कौन-सा महायज्ञ किया था? क्या वह वास्तव में महायज्ञ था? समझाकर लिखिए। (3)

**उत्तर** सेठ बहुत ही दयालु व परोपकारी प्रवृत्ति का व्यक्ति था। आधा रास्ता तय करने के बाद जब सेठ भूख से व्याकुल हो उठा, तो उसने सोचा कहीं रुककर भोजन और विश्राम कर लिया जाए, किंतु जैसे ही वह भोजन करने बैठा तभी उसकी दृष्टि एक दुर्बल कुत्ते पर पड़ी। अतः उसने भूखे-दुर्बल कुत्ते को चारों रोटियाँ खिला दी। उसके द्वारा भूखे व दुर्बल कुत्ते को अपनी चारों रोटियाँ खिलाना ही सेठ का महायज्ञ था। हाँ, वह वास्तव में महायज्ञ था। अतः निःस्वार्थ भाव से किया गया कार्य महायज्ञ कहलाता है।

(घ) कहानी का उद्देश्य लिखिए। (3)

**उत्तर** ‘महायज्ञ का पुरस्कार’ कहानी में लेखक ने ‘सेठ जी’ के माध्यम से इस तथ्य को सजीव ढंग, से उजागर किया है कि मानव का प्रथम कर्तव्य प्राणियों की सेवा करना है, क्योंकि यही ईश्वर की वास्तविक उपासना है। स्वयं कष्ट सहते हुए अन्य प्राणियों की सेवा करना मानवोचित कार्य होने के साथ-साथ संसार में किया जाने वाला सबसे बड़ा यज्ञ है, जिसका कर्मफल अवश्य मिलता है। यही इस पाठ का मूल उद्देश्य है।

2. सुनकर पहले तो सेठ बहुत दुःखी हुए, पर बाद में अपनी तंगी का विचार कर एक यज्ञ बेचने के लिए तैयार हो गए। सेठ के यहाँ से दस-बारह कोस की दूरी पर कुंदनपुर नाम का एक नगर था, जिसमें एक बहुत बड़े सेठ रहते थे। लोग उन्हें 'धन्ना सेठ' कहते थे। यह अफ़वाह थी कि उनकी सेठानी को कोई दैवीय शक्ति प्राप्त है, जिससे वह तीनों लोकों की बात जान लेती हैं। **पृष्ठ सं. 14**

(क) अपनी व्यथा को दूर करने के लिए सेठ व सेठानी ने क्या निर्णय लिया? (2)

**उत्तर** अपनी व्यथा/गरीबी को दूर करने के लिए सेठ व सेठानी ने एक यज्ञ को बेचने का निर्णय लिया। उस समय यज्ञ के पुण्य का क्रय-विक्रय हुआ करता था। सेठ व सेठानी ने निर्णय लिया कि यज्ञ के फल को बेचकर कुछ धन प्राप्त किया जाए, ताकि कुछ गरीबी दूर करके अपनी स्थिति को सुधारा जा सके।

(ख) यज्ञ बेचने सेठ कहाँ और किसके पास गए? (2)

**उत्तर** अपनी तंगी का विचार करके सेठ जी यज्ञ बेचने के लिए कुंदनपुर के धन्ना सेठ के पास गए, जो सेठ के यहाँ से दस-बारह कोस की दूरी पर बसा हुआ था।

(ग) कुंदनपुर नगर के सेठ का क्या नाम था? उनकी प्रसिद्धि का क्या कारण था? (2)

**उत्तर** कुंदनपुर नगर में एक बहुत बड़े सेठ रहते थे, जिनका नाम धन्ना सेठ था। उनके पास धन की कोई कमी नहीं थी अर्थात् उनके पास अपार धन-संपत्ति थी। लोग उन्हें धन्ना सेठ के नाम से जानते थे।

उनकी सेठानी को कोई दैवीय शक्ति प्राप्त थी, जिससे वे तीनों लोकों की बात जान लेती थीं। यही उनकी प्रसिद्धि का कारण था।

(घ) उपरोक्त गद्यांश के आधार पर बताइए कि दैवीय शक्ति किसे प्राप्त थी? उनके चरित्र पर संक्षेप में विचार व्यक्त कीजिए। (3)

**उत्तर** धन्ना सेठ की पत्नी के बारे में अफ़वाह थी कि उन्हें दैवीय शक्ति प्राप्त है, जिसके द्वारा वे भूत व भविष्य जान लेती हैं। वे स्वभाव से धार्मिक विचारों वाली महिला थीं। वे सदा धर्म-कर्म के कार्यों में विशेष रुचि दिखाती थीं। वह सेठ द्वारा किए गए कार्य को महायज्ञ बताकर उसे खरीदने का प्रस्ताव रखती हैं, जो उनकी बुद्धिमत्ता को दर्शाता है।

3. सामने वृक्षों का एक कुंज और कुआँ देखकर सेठ ने विचार किया कि यहाँ थोड़ी देर रुककर भोजन और विश्राम कर लेना चाहिए। यह सोच वे उस कुंज की ओर बढ़े। पोटली से लोटा-डोर निकालकर पानी खींचा और हाथ-पैर धोए। **पृष्ठ सं. 15**

(क) सेठ जी कुंदनपुर में किसके पास जा रहे थे और क्यों? (2)

**उत्तर** सेठ जी कुंदनपुर में धन्ना सेठ के पास जा रहे थे, क्योंकि वह उन्हें अपना एक यज्ञ बेचना चाहते थे ताकि कुछ धन की प्राप्ति हो सके।

(ख) सेठानी ने सेठ को रास्ते के लिए क्या बाँधकर दिया? (2)

**उत्तर** घर में गरीबी आ जाने के कारण सेठानी ने पड़ोसी से थोड़ा-सा आटा माँगा और सेठ को रास्ते के लिए चार मोटी-मोटी रोटियाँ बनाकर एक पोटली में बाँधकर दीं।

(ग) सेठ को कष्ट क्यों हो रहा था? सेठ विश्राम क्यों करना चाहते थे? (3)

**उत्तर** सेठ बड़े सवेरे ही घर से निकल गए थे। आधा रास्ता पार करते-करते धूप इतनी तेज हो गई थी कि चलने में भी कष्ट होने लगा। पसीने से उनका सारा शरीर लथ-पथ हो गया और भूख भी सताने लगी, इसलिए सेठ कहीं रुककर विश्राम करना चाहते थे।

(घ) सेठ तेज चलकर रास्ता क्यों पार करना चाहते थे? सेठ ने वृक्षों का कुंज और कुआँ देखकर क्या विचार किया और उनकी पोटली में क्या-क्या था? (3)

**उत्तर** गर्मी के दिन थे। सेठ यह सोच रहे थे कि सूरज निकलने से पहले जितना रास्ता पार कर लूँगा, उतना अच्छा है, क्योंकि धूप में चलने से कष्ट होगा और शरीर भी पसीने से लथ-पथ हो जाएगा, इसलिए वह तेज चलकर रास्ता पार करना चाहते थे।

सेठ ने वृक्षों का कुंज और कुआँ देखकर विचार किया कि यहाँ थोड़ी देर रुककर भोजन और विश्राम कर लेना चाहिए।

सेठ की पोटली में चार मोटी-मोटी रोटियाँ और पानी के लिए लोटा और डोर थी।

4. यह देख सेठ का हृदय दया से भरा आया—“बेचारे को कई दिन से खाना नहीं मिला है, तभी तो यह हालत हो गई है।” सेठ ने एक रोटी उठाई और टुकड़े-टुकड़े कर कुत्ते के सामने डाल दी। कुत्ता भूखा तो था ही, धीरे-धीरे सारी रोटी खा गया। अब उसके शरीर में थोड़ी जान आती दिखाई दी। **पृष्ठ सं. 15**

(क) कुत्ते की स्थिति कैसी थी? (2)

**उत्तर** कुत्ता बहुत दुर्बल था। वह भूख से छटपटा रहा था। खाना नहीं मिलने के कारण उसका पेट कमर से लगा हुआ था। सेठ को रोटी खोलते देखकर वह बार-बार गर्दन उठाता, पर अधिक दुर्बलता के कारण उसकी गर्दन गिर जाती थी।

(ख) कुत्ते की दुर्बलता को दूर करने के लिए सेठ ने क्या किया? (2)

**उत्तर** सेठ ने एक रोटी के टुकड़े-टुकड़े किए व कुत्ते के सामने डाल दिए। कुत्ता भूखा तो था ही, सारी रोटी धीरे-धीरे खा गया, जिसके फलस्वरूप उसके शरीर में जान आती हुई-सी दिखाई दी।

(ग) उपरोक्त गद्यांश के आधार पर बताइए कि सेठ द्वारा निःस्वार्थ भाव से किया गया कार्य क्या था? (3)

**उत्तर** सेठ बहुत ही दयालु व परोपकारी प्रवृत्ति का व्यक्ति था। आधा रास्ता तय करने के बाद जब सेठ भूख से व्याकुल हो उठा, तो उसने सोचा कहीं रुककर भोजन और विश्राम कर लिया जाए, किंतु जैसे ही वह भोजन करने बैठा तभी उसकी दृष्टि एक दुर्बल कुत्ते पर पड़ी। अतः उसने भूखे-दुर्बल कुत्ते को चारों रोटियाँ खिला दीं। उसके द्वारा भूखे व दुर्बल कुत्ते को अपनी चारों रोटियाँ खिलाना ही सेठ का निःस्वार्थ भाव से किया गया कार्य था।

(घ) कुत्ते को देखकर सेठ के हृदय में कैसा भाव उत्पन्न हुआ? कहानी के आधार पर समझाइए। (3)

**उत्तर** कुत्ते की दुर्बल स्थिति को देखकर सेठ के मन में दया भाव उत्पन्न हुआ। कुत्ता कई दिनों से भूखा था, जिसके कारण उसकी गर्दन भी नहीं उठ पा रही थी। भूख के कारण उसके शरीर में जान नहीं थी। कुत्ते को ऐसी स्थिति में देखकर सेठ से स्वयं रोटी न खाई और दया भाव के कारण सेठ ने अपनी चारों रोटियाँ कुत्ते को दे दीं।

5. 'महायज्ञ!' सेठ ने आश्चर्य से कहा।

“हाँ, वही जो आज आपने किया,” धन्ना सेठ की पत्नी ने कहा। सेठ बड़े आश्चर्य में पड़े-महायज्ञ! और आज! वे समझे कि उनका मज़ाक उड़ाया जा रहा है। विनम्र भाव से बोले, “आप आज की कहती हैं, मैंने तो बरसों से कोई यज्ञ नहीं किया। मेरी स्थिति ऐसी नहीं थी।”

पृष्ठ सं. 16

(क) सेठ ने अपनी परेशानी का बखान किसके समक्ष किया? (2)

**उत्तर** धन्ना सेठ अत्यधिक धनी तथा संपन्न व्यक्ति थे, उनके पास धन की कमी न थी। अतः धन्ना सेठ की संपन्नता को देखते हुए सेठ ने अपनी परेशानी का बखान 'धन्ना सेठ' के समक्ष किया।

(ख) सेठ 'धन्ना सेठ' की हवेली में क्यों गया था? (2)

**उत्तर** धन्ना सेठ के पास धन की कमी न थी। अतः विपरीत परिस्थितियों से बाहर निकलने के लिए सेठ 'धन्ना सेठ' की हवेली में अपने एक यज्ञ के पुण्य को बेचने के लिए गए थे।

(ग) 'महायज्ञ' की बात सुनकर सेठ आश्चर्यचकित क्यों हो गए? (3)

**उत्तर** सेठ ने बरसों से कोई यज्ञ नहीं किया था, अपितु वह तो अत्यंत ही गरीबी की स्थिति से गुज़र रहा था और ऐसी स्थिति में धन्ना सेठ की पत्नी उन्हें आज ही महायज्ञ करने की बात कह रही थी, इसलिए सेठ 'महायज्ञ' की बात सुनकर आश्चर्य में पड़ गए।

(घ) कहानी के अनुसार सेठ को महायज्ञ का क्या पुरस्कार मिला? (3)

**उत्तर** कहानी के अनुसार लेखक का मानना है कि अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए धन-दौलत लुटाकर किया गया यज्ञ, वास्तविक यज्ञ नहीं हो सकता, बल्कि निःस्वार्थ और निष्काम भाव से किया गया कर्म ही सच्चा महायज्ञ कहलाता है। स्वयं कष्ट सहकर दूसरों की सहायता करना ही मानव-धर्म है। सेठ ने भूखे कुत्ते को रोटी खिलाना अपना मानवीय कर्म समझा न कि महायज्ञ। उन्होंने अपने कर्म को मानवीय-कर्तव्य समझा और उसे धन्ना सेठ को नहीं बेचा। ईश्वर की कृपा-दृष्टि से सेठ को अपने घर में एक तहखाने में हीरे-जवाहरात मिले। यह सेठ के महायज्ञ का पुरस्कार था।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सेठ विस्मित-विमूढ़ हो गए। उन्हें निश्चय हो गया कि उन लोगों को यज्ञ खरीदना नहीं है, इसलिए ऐसी बातें की जा रही हैं। “क्या सोचते हो सेठ? बोलो राज़ी हो?” धन्ना सेठ की पत्नी ने पूछा! सेठ ने खिन्न होकर कहा, “सेठानी जी हँसी छोड़िए। काम की बात कीजिए। बरसों से मैंने यज्ञ नहीं किया, आप आज क्या कहती हैं।”

पृष्ठ सं. 16

(क) सेठ का विस्मित-विमूढ़ होने का क्या कारण था? (2)

(ख) सेठ को ऐसा क्यों लगा कि धन्ना सेठ और सेठानी को यज्ञ नहीं खरीदना। (2)

(ग) सेठ खिन्न क्यों हो गए? (3)

(घ) सेठ ने धन्ना सेठ व सेठानी से महायज्ञ का पुरस्कार स्वीकार क्यों नहीं किया? (3)

2. सेठानी ने समझाया कि आज रास्ते में स्वयं न खाकर चारों रोटियाँ भूखे कुत्ते को खिला दीं, यह महायज्ञ नहीं तो और क्या है? यज्ञ कमाने की इच्छा से धन-दौलत लुटाकर किया गया यज्ञ,

सच्चा यज्ञ नहीं है, निःस्वार्थ भाव से किया गया कर्म ही सच्चा

यज्ञ-महायज्ञ है। क्या आप इसे बेचने के लिए तैयार हैं? पृष्ठ सं. 17

(क) धन्ना सेठ की पत्नी सेठ जी से क्या खरीदना चाहती थीं? (2)

(ख) सेठानी ने सेठ को क्या समझाने का प्रयास किया? (2)

(ग) 'सच्चा यज्ञ' से आप क्या समझते हैं? कहानी के आधार पर उदाहरण देकर बताइए। (3)

(घ) भूखे कुत्ते को रोटी किसने और क्यों खिलाई? सेठ कुत्ते को रोटी खिलाने को महायज्ञ क्यों नहीं मानता? (3)

3. देव की इस माया का रहस्य उनकी समझ में नहीं आया। दोनों निस्तब्ध खड़े थे, तभी अदृश्य, पर स्पष्ट स्वर में उन्हें सुनाई दिया, “ओ सेठ! स्वयं भूखे रहकर, अपना कर्तव्य मानकर प्रसन्नचित्त, तुमने मरणासन्न कुत्ते को चारों रोटियाँ खिलाकर उसकी जान बचाई, उस महायज्ञ का यह पुरस्कार है।

पृष्ठ सं. 18

(क) उपरोक्त गद्यांश में देव की किस माया की बात कही गई है? (2)

(ख) सेठ और सेठानी की आँखें क्यों चौंधियाने लगीं? (2)

(ग) दिव्य वाणी के समय सेठ और सेठानी को क्या सुनाई दिया? (3)

(घ) दिव्य वाणी को सुनकर सेठ और सेठानी ने क्या किया? (3)



# नेताजी का चश्मा स्वयं प्रकाश

## लेखक परिचय

सशक्त उपन्यासकार तथा कहानीकार स्वयं प्रकाश का जन्म 20 जनवरी, 1947 को मध्य प्रदेश के इंदौर में हुआ। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में ही प्राप्त की तथा मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की और उच्च शिक्षा प्राप्त करते हुए इन्होंने लेखन-कार्य आरंभ किया। वर्तमान में स्वयं प्रकाश जी भोपाल में रहकर साहित्य सृजन कर रहे हैं, साथ ही वे 'वसुधा' नामक पत्रिका के संपादन से भी जुड़े हैं।

स्वयं प्रकाश जी के अब तक तेरह कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें 'सूरज कब निकलेगा', 'आएँगे अच्छे दिन भी' तथा 'आदमी जात का आदमी' बहुचर्चित हैं। 'विनय' और 'ईधन' इनके लोकप्रिय उपन्यास हैं। 'हमसफ़रनामा' इनके रेखाचित्रों का संकलन है। स्वयं प्रकाश जी को राजस्थान साहित्य अकादमी के 'रंगेय राघव पुरस्कार', 'पहल सम्मान', 'बनमाली पुरस्कार' आदि से सम्मानित किया गया है। स्वयं प्रकाश जी को वर्ष 2011 के प्रतिष्ठित 'आनंद सागर कथाक्रम सम्मान' से भी विभूषित किया गया है। इन्होंने अपनी रचनाओं में मध्यमवर्गीय जीवन के विविध पक्षों को यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

## कहानी का परिचय

देश-प्रेम की भावना को व्यक्त करती हुई यह कहानी नेताजी की प्रतिमा व उस पर लगे चश्मे पर आधारित है। हालदार साहब एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, जिन्हें काम के सिलसिले से अकसर बाहर जाना पड़ता था। रास्ते में एक छोटा-सा कस्बा पड़ता था, जिसके चौराहे पर नेताजी की एक संगमरमर की मूर्ति बनी हुई थी। हालदार साहब जब भी कस्बे से निकलते, उन्हें मूर्ति के चश्मे में परिवर्तन देखने को मिलता। नेताजी की मूर्ति पर चश्मे लगाने और उन्हें बदलने का काम एक चश्मे वाला करता था, किंतु उसकी मृत्यु के पश्चात् चश्मे बदलने का काम बंद हो गया और पुनः नेताजी की मूर्ति बिना चश्मे की हो गई। एक दिन हालदार साहब ने मूर्ति को ध्यान से देखा तो मूर्ति पर एक सरकंडे से बना चश्मा था। उसे देखकर वह भावुक हो गए तथा उनकी आँखों से आँसू निकल आए। लेखक ने चश्मे बेचने वाले कैप्टन के माध्यम से एक ऐसे साधारण व्यक्ति के कार्य का वर्णन किया है, जो गरीबी की जिंदगी व्यतीत करते हुए भी देशभक्ति की भावना रखता है, परंतु हमारी कौम ऐसे व्यक्तियों को सम्मान देने के बजाय उन पर हँसती है।

## पात्र-परिचय

### हालदार साहब

हालदार साहब एक जिम्मेदार नागरिक होने के साथ-साथ सच्चे देशभक्त भी थे। वे देशभक्तों का आदर करते थे। पानवाले द्वारा कैप्टन का मजाक उड़ाने पर उन्हें अच्छा नहीं लगा। वे कैप्टन के प्रति सम्मान और सहानुभूति की भावना रखते थे। उन्हें यह सोचकर दुःख हुआ कि उस कौम का कुछ नहीं हो सकता, जो देश पर कुर्बान होने वाली शहीदों पर हँसती है और स्वयं बिकने के लिए बहाने ढूँढती रहती है। उनमें भावुकता और संवेदनशीलता के गुण भी परिलक्षित होते हैं।

### कैप्टन

कैप्टन चश्मे बेचने वाला एक बेहद बूढ़ा मरियल-सा लंगड़ा आदमी था। वह सिर पर गाँधी टोपी और काला चश्मा लगाए रहता था। उसकी अपनी कोई दुकान नहीं थी, इसलिए वह एक हाथ में संदूकवी और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे बहुत-से चश्मे लेकर गली-गली फेरी लगाता था। वह एक सच्चा देशभक्त था, इसलिए वह नेताजी की मूर्ति पर अपने फ्रेम लगा देता था। इस प्रकार वह नेताजी के प्रति अपना आदर प्रकट करता था।



## पानवाला

पानवाला एक काला, मोटा और खुशमिजाज आदमी था। वह पान खाता रहता था, जिसके कारण उसकी बत्तीसी लाल-पीली हो गई थी। वह जब हँसता था, तो उसकी तोंद थिरकती थी। वह कैप्टन का मजाक उड़ाया करता था, किंतु कैप्टन की मौत पर वह दुःखी हो जाता है और उसकी आँखें नम हो जाती हैं।

## कहानी का सार

### हालदार साहब द्वारा कस्बे से गुजरते हुए मूर्ति को देखना

हालदार साहब एक ज़िम्मेदार नागरिक थे। वे जब भी काम के सिलसिले में कस्बे से निकलते थे, तो नगरपालिका द्वारा किए गए कार्यों की चर्चा अवश्य किया करते थे। कस्बा अधिक बड़ा नहीं था, किंतु नगरपालिका समय-समय पर कुछ-न-कुछ करती ही रहती थी। कभी कोई सड़क पक्की करवा दी, कभी कुछ पेशाब घर बनवा दिए, कभी कबूतरों की छतरी बनवा दी, तो कभी कवि सम्मेलन करवा दिया। हालदार साहब ने जब कस्बे के चौराहे पर नेताजी की मूर्ति देखी, तो वे अत्यधिक प्रसन्न हुए और उन्होंने कस्बे के लोगों की प्रशंसा की।

### नेताजी की संगमरमर की मूर्ति

यह कहानी नेताजी सुभाषचंद्र बोस की संगमरमर की प्रतिमा के एक हिस्से पर आधारित है। नेताजी की मूर्ति टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची थी। वह बहुत ही सुंदर मूर्ति थी। फौजी वर्दी में नेताजी सुंदर व मासूम लग रहे थे। मूर्ति ऐसी बनाई गई थी, जिसे देख 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो ..... ' जैसे नारे याद आने लगते थे।

### नेताजी की मूर्ति में खटकती कमी

नेताजी की मूर्ति पर एक कमी थी, जो देखते ही खटकती थी। वह यह थी कि नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था या यूँ कहें कि चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का नहीं था। एक सामान्य व सचमुच के चश्मे का काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था। हालदार साहब का ध्यान मूर्ति के चश्मे ने ही अपनी ओर आकर्षित किया और उनके चेहरे पर मुस्कान फैल गई।

### नेताजी की मूर्ति के चश्मे का बदलना

हालदार साहब जब-जब कस्बे से निकलते, उन्हें मूर्ति में अंतर दिखाई देता। उन्होंने पहली बार ध्यान से देखा, तो पता चला कि चश्मा दूसरा है। पहले मोटे फ्रेम वाला चौकोर चश्मा था, अब तार के फ्रेम वाला गोल चश्मा था। यह देख हालदार साहब आश्चर्यचकित हो गए, किंतु उन्हें यह विचार भी अच्छा लगा, मूर्ति कपड़े नहीं बदलती, किंतु चश्मा ज़रूर बदलती है। तीसरी बार फिर नया चश्मा। यह सिलसिला यूँ ही चलता रहा। एक बार हालदार साहब ने पानवाले से पूछ ही लिया कि नेताजी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है?

## पानवाले द्वारा नेताजी के चश्मे बदलने का कारण बताना

पानवाला हालदार साहब के प्रश्न पर हँसा और दाँत दिखाते हुए बोला कि नेताजी के चश्मे कैप्टन चश्मेवाला बदलता है, किंतु हालदार साहब को उसके द्वारा बताई गई बात समझ नहीं आई, तब पानवाले ने हालदार साहब को समझाया कि मानों कोई ग्राहक आ गया और उसको मूर्ति को पहनाया हुआ चश्मा चाहिए तो कैप्टन कहाँ से लाएगा, इसलिए कैप्टन उसे मूर्तिवाला चश्मा दे देता है और मूर्ति पर दूसरा चश्मा पहना देता है।

## नेताजी का ओरिज़िनल चश्मा और मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल

हालदार साहब ने एक बार फिर पानवाले से पूछा कि नेताजी का ओरिज़िनल चश्मा कहाँ गया? पानवाले से हालदार साहब को पता चला कि मास्टर बनाना भूल गया। यह सुन हालदार साहब चकित हुए और उन्हें लगा कि वह ठीक ही सोच रहे थे। नेताजी की मूर्ति के नीचे मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल लिखा हुआ था, जो कस्बे का एक अध्यापक था। उसने महीने भर में मूर्ति बना देने का वायदा किया होगा तथा बना भी दी होगी, किंतु चश्मा बनाने पर उसने सोचा होगा, तय नहीं कर पाया होगा, कोशिश की होगी, किंतु सफलता प्राप्त नहीं हुई होगी।

## कैप्टन चश्मेवाले की देशभक्ति की भावना

कैप्टन चश्मेवाला एक सच्चा देशभक्त था। हालदार साहब चश्मेवाले की देशभक्ति के प्रति नतमस्तक हुए और पानवाले से एक बार फिर पूछ ही लिया कि क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है या आज़ाद हिंद फौज़ का भूतपूर्व सिपाही? किंतु पानवाले द्वारा यह बोलना कि वह लँगड़ा क्या फौज़ में जाएगा? पागल है पागल! हालदार साहब को अच्छा नहीं लगा।

हालदार साहब जब कैप्टन चश्मेवाले को देखते हैं, तो हैरान रह जाते हैं। कैप्टन सिर पर गाँधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा पहने, एक हाथ में छोटी-सी संदूकवी व दूसरे हाथ में बाँस पर टँगे बहुत-से चश्मे लिए हुए था। वह अपाहिज होने के बावजूद भी नेताजी का चश्मा बदलना नहीं भूलता था।

## मूर्ति के बदलते चश्मों का सिलसिला

लगभग दो साल तक लगातार हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुजरते रहे और नेताजी की मूर्ति के बदलते चश्मों को देखते रहे। कभी गोल चश्मा, तो कभी चौकोर, कभी लाल, कभी काला, कभी धूप का चश्मा, कभी बड़े काँचों वाला गोगो चश्मा ... कोई-न-कोई चश्मा होता अवश्य था। नेताजी की मूर्ति के बदलते चश्मे ही हालदार साहब का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते थे।

## मूर्ति पर चश्मा नहीं होने का कारण

हालदार साहब भावुक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। एक दिन उन्होंने देखा कि मूर्ति पर कोई भी चश्मा नहीं था। चौराहे पर दुकानें भी बंद थीं। अगली बार भी उन्हें मूर्ति बिना चश्मे के दिखी। पूछने पर पता चला कि कैप्टन मर गया है। यह पता चलने पर हालदार साहब को बहुत दुःख हुआ, जिसके बाद वे गाड़ी में बैठकर वहाँ से चले गए।

## मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा

पंद्रह दिन बाद हालदार साहब को फिर उसी कस्बे से निकलना था, किंतु कैप्टन की मृत्यु की बात जान उनका मन अब कस्बे में रुकने का नहीं करता था। अंत में जब हालदार साहब ने देखा कि एक सरकंडे से बना चश्मा नेताजी के चेहरे पर था, तो वे भावुक हो गए और उनकी आँखें भर आईं। मूर्ति पर किसी बच्चे ने सरकंडे का बना हुआ चश्मा लगा दिया था। हालदार साहब भावुक हो उठे कि बड़ों के साथ बच्चों में भी अर्थात् प्रत्येक नागरिक में देशभक्ति की भावना व्याप्त है।

## कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता

प्रस्तुत कहानी 'नेता जी का चश्मा' के माध्यम से लेखक ने इस तथ्य को उजागर किया है कि देश के सभी छोटे-बड़े, बच्चे-बूढ़े देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत रहते हैं, किंतु उन सबका अपनी देशभक्ति प्रकट करने का तरीका भिन्न-भिन्न होता है। लेखक ने यह भी समझाने का प्रयास किया है कि हमें किसी के छोटे प्रयासों का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए, अपितु उनकी सराहना करनी चाहिए। कैप्टन के चरित्र द्वारा लेखक ने उन असंख्य देशभक्तों को स्मरण करने का कार्य किया है, जिन्होंने देशहित के लिए कार्य किया और देशभक्तों को सम्मान दिलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। 'नेताजी का चश्मा' कहानी में केंद्रबिंदु नेताजी की मूर्ति पर लगा चश्मा ही है। हालदार साहब जब भी कस्बे से गुजरते थे, उनका ध्यान मुख्य बाजार में स्थापित मूर्ति पर ही जाता था। नेताजी की मूर्ति का चश्मा उनके आकर्षण का केंद्र बन गया था। अतः प्रस्तुत कहानी का शीर्षक 'नेताजी का चश्मा' कहानी में अपनी सार्थकता को सिद्ध करता है।

## शब्दार्थ

शब्द अर्थ, पाठ्य-पुस्तक साहित्य सागर में दिए गए भाग संक्षिप्त कहानियों के पृष्ठों के अनुसार हैं—

**पृष्ठ सं. 20** सिलसिला—पंक्ति, क्रम (continuation); कस्बा—छोटा-सा शहर (town); कारखाना—मिल, कार्य करने का स्थान (factory); नगरपालिका—नगर की सफाई आदि की व्यवस्था करने वाली संस्था (municipality); पेशाब घर—मूत्र विसर्जन का स्थान (toilet); सम्मेलन—सभा (conference); उत्साही—उत्साहयुक्त (zealous); प्रशासनिक—प्रशासन संबंधी (administrative); संगमरमर—एक प्रकार की मूल्यवान चट्टान (marble); प्रतिमा—मूर्ति (Statue); मूर्तिकार—मूर्ति बनाने वाला (sculptor); लागत—कीमत (cost); बजट—आय-व्यय का लेखा (budget); उहापोह—सोच-विचार (cogitation); शासनावधि—शासन का समय (period of rule); स्थानीय—उसी स्थान का (local); कलाकार—कला जानने वाला (artist); इकलौते—एकमात्र (only one); पटकना—उठाकर नीचे मारना (tossing throw); सराहनीय—प्रशंसनीय (appreciable); प्रयास—कोशिश (try); कसर—कमी (lack)।

**पृष्ठ सं. 21** लक्षित करना—देखना (see); कौतुकभरी—आश्चर्य से (surprisingly); निष्कर्ष—समापन (conclusion); आजकल—हाल ही, वर्तमान (nowadays); कौतुक—हैरानी (curiosity); चौराहे—चारों ओर से मिलने वाला रास्ता (crossroad); दुर्दमनीय—जिसे दबाना कठिन हो (incepressible); बत्तीसी—बत्तीस दाँतों की पंक्ति (a set of tooth); खुशमिजाज—हँसमुख (cheerful, jolly); तोंद—बड़ा पेट (potbelly)।

**पृष्ठ सं. 22** गिराक—ग्राहक (customer); बगैर—बिना (without); आहत—घायल (injured); असुविधा—अड़चन (discomfort); दरकार—जरूरत (need); भीड़-भाड़—अधिक लोगों का एक जगह इकट्ठा होना (crowd); मजेदार—आनंददायक (joyfull); चकित—आश्चर्य करता हुआ (confounded); द्रवित—पसीजा हुआ (fluid); अध्यापक—गुरु (teacher); पारदर्शी—आर-पार चमकना (transparent)।

**पृष्ठ सं. 23** विचित्र—अजीब (funny); देशभक्ति—देश का सम्मान करना (patriotism); समक्ष—सामने (before, in front of); नतमस्तक—झुकना (bow); भूतपूर्व—पिछला (former); लंगड़ा—एक टाँग वाला (lame); फौज—सेना (army); अवाक्—कुछ न बोल पाना (speechless); बेहद—बहुत ज्यादा (much); मरियल—अधिक कमजोर (most weaker); वास्तविक—असली (real); प्रफुल्लता—प्रसन्नता (pleasureness); अधिकांश—अधिकतर (mostly)।

**पृष्ठ सं. 24** होम करना—कुर्बान करना (sacrifice); प्रतिष्ठापित—स्थापित (establish); सरकंडे—एक पौधा (a kind of plant)।

# प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. “नेताजी सुंदर लग रहे थे। कुछ-कुछ मासूम और कमसिन। फ़ौजी वर्दी में। मूर्ति को देखते ही ‘दिल्ली चलो’ और ‘तुम मुझे खून दो .....’ वगैरह याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह सफल और सराहनीय प्रयास था। केवल एक चीज़ की कसर थी, जो देखते ही खटकती थी।”

पृष्ठ सं. 20 [2017]

(क) मूर्ति किसकी थी और वह कहाँ लगाई गई थी? (2)

**उत्तर** मूर्ति नेताजी सुभाषचंद्र बोस की थी, जो टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची थी। इसे नगरपालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने शहर के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर लगाया था।

(ख) यह मूर्ति किसने बनाई थी और इसकी क्या विशेषताएँ थीं? (2)

**उत्तर** मूर्ति ‘मास्टर मोतीलाल’ ने बनाई थी। मूर्ति संगमरमर की थी। मूर्ति लगभग कोई दो फुट की थी। नेताजी की मूर्ति सुंदर लग रही थी। कुछ-कुछ मासूम और सुंदर मूर्ति को देखकर ‘दिल्ली चलो’ और ‘तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा’ के नारे याद आने लगते थे।

(ग) मूर्ति में क्या कमी थी? उस कमी को कौन पूरा करता था और कैसे? (3)

**उत्तर** मूर्ति अत्यंत सुंदर बनी हुई थी, लेकिन उसमें केवल एक ही चीज़ की कमी थी, जो देखते ही खटकती थी। नेताजी की आँखों पर पत्थर यानी संगमरमर का चश्मा नहीं था, बल्कि असली चश्मा लगा था।

मूर्ति की कमी को कैप्टन पूरी करता था। वह नेताजी की मूर्ति पर कभी गोल, कभी चकोर, कभी लाल, कभी काला, कभी धूप का चश्मा, तो कभी बड़े काँच का गोगो चश्मा लगा देता था।

(घ) नेताजी का परिचय देते हुए बताइए कि चौराहे पर उनकी मूर्ति लगाने का क्या उद्देश्य रहा होगा? क्या उस उद्देश्य में सफलता प्राप्त हुई? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** सुभाषचंद्र बोस का देश को आज़ादी दिलाने में विशेष योगदान है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ने के लिए उन्होंने जापान के सहयोग से आजाद हिंद फ़ौज का गठन किया। उनके द्वारा दिया गया नारा ‘जय हिंद’, ‘तुम मुझे खून दो .....’ प्रचलित है। चौराहे पर उनकी मूर्ति लगाने का उद्देश्य नागरिकों में देशभक्ति की भावना भरना है।

कैप्टन की मृत्यु के बाद जब बच्चों द्वारा मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा लगाया जाता है, तो उससे सिद्ध होता है कि बड़ों के साथ बच्चों में भी देशभक्ति की भावना व्याप्त है।

2. महत्त्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है वरना तो देशभक्ति भी आजकल मज़ाक की चीज़ होती जा रही है। पृष्ठ सं. 21

(क) नेताजी की मूर्ति को देखकर हालदार साहब ने क्या निष्कर्ष निकाला? (2)

**उत्तर** हालदार साहब ने जबसे मूर्ति को देखा था, वे उसी के बारे में सोचते रहे। अंत में उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि मूर्ति को बनाने का कस्बे के नागरिकों का प्रयास कुल मिलाकर सराहनीय ही कहा जाना चाहिए।

(ख) हालदार साहब के चेहरे पर क्या देखकर कौतुक भरी मुस्कान फैल गई? (2)

**उत्तर** हालदार साहब ने जब मूर्ति को ध्यान से देखा, तो उनके चेहरे पर कौतुक भरी मुस्कान फैल गई, क्योंकि मूर्ति पत्थर की थी और चश्मा सचमुच का। हालदार साहब को यह सब विचित्र लगा।

(ग) किसने नागरिकों के प्रयास की सराहना की है और क्यों? (3)

**उत्तर** हालदार साहब किसी भी चीज़ का आकलन करने में माहिर थे। अतः जब हालदार साहब ने मूर्ति को देखा तो उन्होंने मात्र मूर्ति को ही नहीं देखा, अपितु उसे बनाने के पीछे छिपी भावना को भी पहचाना। वे मूर्तिकार की देशभक्ति की भावना से प्रभावित हुए, इसलिए हालदार साहब ने नागरिकों के प्रयास की सराहना की है।

(घ) मूर्ति बनाने के पीछे छिपी हुई भावना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। आज के समय में मज़ाक की चीज़ किसे बताया गया है? (3)

**उत्तर** नेताजी की मूर्ति मात्र रंग-रूप या कद को दर्शाने के लिए ही नहीं थी, अपितु मूर्ति को बनवाने के पीछे उसमें लोगों की देशभक्ति की भावना छिपी हुई थी। मूर्ति को देखते ही नेताजी के देश के हित के लिए किए गए कार्य याद आने लगते थे और आज के समय में देशभक्ति की भावना को ही मज़ाक की चीज़ बताया गया है।

3. “क्यों भई! क्या बात है? यह तुम्हारे नेताजी का चश्मा हर बार कैसे बदल जाता है?” पृष्ठ सं. 21

(क) उपरोक्त कथन किसने किससे कहा? हालदार साहब को कस्बे से गुजरते समय कैसी आदत पड़ गई थी? (2)

**उत्तर** उपरोक्त कथन हालदार साहब ने पानवाले को कहा। हालदार साहब जब भी कस्बे से गुजरते उन्हें चौराहे पर रुकने तथा पान खाने और नेताजी की मूर्ति को ध्यान से देखने की आदत पड़ गई थी।

(ख) हालदार साहब का कौतुक बढ़ता ही जा रहा था, क्यों? (2)

**उत्तर** मूर्ति के चश्मे के निरंतर बदलते स्वरूप को देखकर हालदार साहब का कौतुक बढ़ता ही जा रहा था, क्योंकि पहले उन्होंने मूर्ति पर मोटे फ्रेमवाला चौकोर चश्मा देखा था, लेकिन अब तार के फ्रेमवाला गोल-चश्मा था।

(ग) पानवाले के विषय में बताइए कि उसका व्यक्तित्व कैसा था? (3)

**उत्तर** पानवाला एक काला, मोटा और खुशमिज़ाज़ आदमी था। पान खाने के कारण उसकी बत्तीसी लाल-काली हो गई थी। हँसते समय उसकी तोंद थिरकती थी। वह हँसोड़ स्वभाव का व्यक्ति था तथा कैप्टन का मज़ाक उड़ाता है, परंतु कैप्टन की मृत्यु हो जाने पर पानवाला भी बहुत उदास हो जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि वह एक सहृदय व संवेदनशील व्यक्ति था।

(घ) किसका कौतूहल दुर्दमनीय हो उठा और उसने पानवाले से क्या पूछा और उन्हें बदलते चश्मे के विषय में क्या पता चला? (3)

**उत्तर** हालदार साहब का कौतूहल दुर्दमनीय हो उठा था और उन्होंने पानवाले से पूछा कि यह नेताजी का चश्मा हर बार कैसे बदल जाता है।

उन्हें बदलते चश्मे के विषय में पता चला कि एक बूढ़ा-लंगड़ा चश्मेवाला नेताजी को चश्मा पहना जाता था, इसलिए नेताजी का चश्मा हर बार बदल जाता था।

4. “कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए, तो कैप्टन किदर से लाएगा? तो उसे मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बैठा दिया।” **पृष्ठ सं. 22**

(क) कैप्टन चश्मेवाला कौन था? (2)

**उत्तर** कैप्टन चश्मेवाला एक बूढ़ा-लंगड़ा चश्मेवाला था। पैर से अपाहिज होने के बावजूद भी वह नेताजी को नया चश्मा पहना देता था। वह बहुत ही परिश्रमी एवं सच्चा देशभक्त था।

(ख) कैप्टन चश्मेवाला क्या करता था? हालदार साहब क्या नहीं समझ पा रहे थे? (2)

**उत्तर** कैप्टन चश्मेवाला नेताजी की मूर्ति का चश्मा बदल दिया करता था।  
मूर्ति के बदलते चश्मे की बात ही हालदार साहब समझ नहीं पा रहे थे।

(ग) “कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट के चश्मे चाहिए, तो कैप्टन किदर से लाएगा?” यह किसने व किससे कहा? (3)

**उत्तर** “कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए, तो कैप्टन किदर से लाएगा?” यह बात पानवाले ने हालदार साहब से कही। कहने का तात्पर्य यह है कि जब भी हालदार साहब नेताजी की मूर्ति के पास से गुजरते थे, तो उन्हें हर बार मूर्ति पर अलग रंग का चश्मा मिलता था। वे हैरान थे कि ऐसा क्यों होता है, जब उन्होंने यह बात पानवाले से पूछी तो उसने हालदार साहब को बताया कि ग्राहक की माँग के अनुसार कैप्टन चश्मेवाला मूर्ति से चश्मा उतारकर ग्राहक को दे देता है और मूर्ति पर नया चश्मा लगा देता है।

(घ) पानवाले ने हालदार साहब को बदलते चश्मों का क्या राज बताया? (3)

**उत्तर** पानवाले ने हालदार साहब को बताया कि कैप्टन की कोई दुकान नहीं है, वह फेरी लगाकर अपने चश्मे बेचता है। देशभक्ति की भावना भरी होने के कारण वह मूर्ति पर कोई-न-कोई चश्मा लगा देता है, किंतु जब कोई ग्राहक कैप्टन से उसी चश्मे का फ्रेम माँगता है, जो नेताजी की मूर्ति पर लगा होता है, तो कैप्टन वही चश्मा उतारकर दे देता है और मूर्ति को नया चश्मा पहना देता है।

5. क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है या आज़ाद हिंद फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही? **पृष्ठ सं. 23**

(क) प्रस्तुत पंक्ति कौन, किससे पूछ रहा है? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत पंक्ति हालदार साहब पानवाले से पूछ रहे हैं।

(ख) वक्ता का परिचय दीजिए। (2)

**उत्तर** हालदार साहब इस कहानी के मुख्य पात्र तथा सूत्रधार भी हैं जिनके माध्यम से यह कहानी आगे बढ़ती है। हालदार साहब किसी कंपनी के अधिकारी हैं। वे अत्यंत भावुक, संवेदनशील तथा देशभक्त व्यक्ति हैं। उन्हें कस्बे के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर स्थापित नेताजी की संगमरमर की प्रतिमा में गहरी दिलचस्पी है।

(ग) श्रोता चश्मेवाले के लिए क्या टिप्पणी करता है? श्रोता की टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया दीजिए। (3)

**उत्तर** कैप्टन के बारे में हालदार साहब द्वारा पूछे जाने पर पानवाले ने टिप्पणी की कि वह लंगड़ा फ़ौज में क्या जाएगा, वह तो पागल है। पानवाले द्वारा ऐसी टिप्पणी करना उचित नहीं था। कैप्टन शारीरिक रूप से अक्षम था, जिसके लिए वह फ़ौज में नहीं जा सकता था, परंतु उसके हृदय में जो अपार देशभक्ति की भावना थी, वह किसी फ़ौज से कम नहीं थी। कैप्टन अपने कार्यों से जो असीम देशप्रेम प्रकट करता था, उसी कारण पानवाला उसे पागल कहता था। ऐसा कहना पानवाले की स्वार्थपरता की भावना को दर्शाता है, जो सर्वथा अनुचित है।

वास्तव में, पागलपन की हद तक देश के प्रति त्याग व समर्पण की भावना रखने वाला व्यक्ति श्रद्धा का पात्र है, उपहास का नहीं।

(घ) सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे? (3)

**उत्तर** सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन इसलिए कहते थे, क्योंकि उसके अंदर देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। वह स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले सेनानियों का भरपूर सम्मान करता था। वह नेताजी की प्रतिमा को बार-बार चश्मा पहना कर देश के प्रति अपनी अटूट श्रद्धा प्रकट करता था। देश के प्रति त्याग व समर्पण की भावना उसके हृदय में किसी भी फ़ौजी से कम नहीं थी।

6. अगली बार भी मूर्ति की आँखों पर चश्मा नहीं था। हालदार साहब ने पान खाया और धीरे से पानवाले से पूछा, “क्यों भई, क्या बात है, आज तुम्हारे नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं है?” **पृष्ठ सं. 24**

(क) मूर्ति के चेहरे पर कोई चश्मा क्यों नहीं था? (2)

**उत्तर** मूर्ति को चश्मा कैप्टन चश्मेवाला पहनाता था। वह अपनी देशभक्ति की भावना के कारण मूर्ति को अलग-अलग रंग के चश्मे पहना देता था। कैप्टन चश्मे वाले की मृत्यु हो चुकी थी, इसलिए मूर्ति के चेहरे पर कोई चश्मा नहीं था।

(ख) हालदार साहब किससे और क्या पूछना चाहते थे? (2)

**उत्तर** एक बार जब हालदार साहब मूर्ति के आगे से गुजरे, तो उन्हें मूर्ति पर कोई चश्मा नजर नहीं आया। अतः हालदार साहब पानवाले से यह पूछना चाहते थे कि नेताजी की मूर्ति की आँखों पर चश्मा क्यों नहीं लगा हुआ है।

(ग) पानवाला हालदार साहब की किस बात को सुनकर उदास हो गया? (3)

**उत्तर** मूर्ति पर कोई चश्मा न देखकर जब हालदार साहब ने पानवाले से पूछा, “क्यों भई, क्या बात है? आज तुम्हारे नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं है।” यह सुनकर पानवाला उदास हो गया, क्योंकि नेताजी की आँखों पर चश्मा लगाने वाला कैप्टन चश्मेवाला मर चुका था।

(घ) मूर्ति के चश्मे के विषय में पूछने पर पानवाले की क्या प्रतिक्रिया हुई? (3)

**उत्तर** एक बार हालदार साहब ने देखा कि मूर्ति पर कोई चश्मा नहीं था। उन्होंने दूसरी बार भी मूर्ति पर कोई चश्मा नहीं देखा। मूर्ति के चश्मे के विषय में पानवाले से पूछने पर वह उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछते हुए कहा, “साहब, कैप्टन मर गया।”

**7.** लेकिन आदत से मजबूर आँखें चौंराहा आते ही मूर्ति की तरफ उठ गई। कुछ ऐसा देखा कि चीखे, ‘रोको!’ जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक मारी। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रुकते-रुकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज़-तेज़ कदमों से मूर्ति की तरफ लपके और उसके ठीक सामने जाकर अटेंशन में खड़े हो गए। **पृष्ठ सं. 24**

(क) हालदार साहब की आदत का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (2)

**उत्तर** हालदार साहब अक्सर कंपनी के काम से उस कस्बे से निकलते थे और कस्बे से निकलते समय चौंराहे पर अवश्य ही रुकते थे, पान खाते और मूर्ति को ध्यान से देखते थे। ये कार्य उनकी आदत में शामिल हो गए थे।

(ख) रास्ता चलते लोग हालदार साहब को क्यों देखने लगे? (2)

**उत्तर** चौंराहे पर मूर्ति की तरफ नज़र पड़ते ही हालदार साहब ने चीखकर जीप रोकने के लिए कहा। जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने ब्रेक जोर से लगाया, जिसके कारण रास्ता चलते लोग हालदार साहब को देखने लगे।

(ग) हालदार साहब चौंराहे पर आकर रुकना क्यों नहीं चाहते थे? (3)

**उत्तर** हालदार साहब चौंराहे पर आकर इसलिए रुकना नहीं चाहते थे, क्योंकि कैप्टन की मृत्यु के बाद उन्हें चौंराहे पर लगी नेताजी सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति पर चश्मा लगा हुआ नहीं मिलता था। साथ ही उन्हें वहाँ रुकते ही कैप्टन चश्मेवाले की याद आ जाती थी। यह सब सोचकर उन्हें बहुत दुःख होता था।

(घ) हालदार साहब की आँखें क्या देखकर भर आईं और क्यों? (3)

**उत्तर** जब अंतिम बार हालदार साहब ने मूर्ति को देखा तो मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा लगा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। बच्चों में देशभक्तों के प्रति आदर की भावना देखकर ही हालदार साहब की आँखें भर आईं। उन्हें इसकी आशा नहीं थी कि मूर्ति पर चश्मा लगाने का कार्य कोई और भी कर सकता है। उन्हें यह विश्वास हो गया कि देशभक्ति की भावना भावी पीढ़ी के मन में भी पूरी तरह भरी हुई है।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

**1.** नगरपालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने एक बार ‘शहर’ के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौंराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी। **पृष्ठ सं. 20**

- (क) कस्बे की विशेषताएँ संक्षेप में लिखिए। (2)
- (ख) कस्बे की नगरपालिका क्या-क्या काम करवाती थी? (2)
- (ग) नेताजी सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा किसने और कहाँ लगवाई? (3)
- (घ) मूर्ति के निर्माण का कार्यभार स्थानीय कलाकार को क्यों सौंपा गया था? (3)

**2.** उसने हालदार साहब को ध्यान से देखा, फिर अपनी लाल-काली बत्तीसी दिखाई और मुस्कुराकर बोला, “नहीं साब! वो लंगड़ा क्या जाएगा फौज़ में? पागल है पागल! वो देखो, वो आ रहा है। आप उसी से बात कर लो। फ़ोटो-वोटो छपवा दो उसका कहीं।” **पृष्ठ सं. 23**

- (क) हालदार साहब द्वारा तीसरी बार प्रश्न पूछने पर पानवाले की क्या प्रतिक्रिया थी? (2)

(ख) पानवाले ने मुस्कुराकर क्या उत्तर दिया? (2)

(ग) कैप्टन को देखने से पहले हालदार साहब के मन में उनका कैसा प्रतिबिंब था? (3)

(घ) हालदार साहब क्या देखकर अवाक् रह गए? (3)

**3.** हालदार साहब चक्कर में पड़ गए। पूछना चाहते थे, इसे कैप्टन क्यों कहते हैं? क्या यही इसका वास्तविक नाम है? लेकिन पानवाले ने साफ बता दिया था कि अब वह इस बारे में और बात करने को तैयार नहीं। ड्राइवर भी बेचैन हो रहा था। काम भी था। हालदार साहब जीप में बैठकर चले गए। **पृष्ठ सं. 23**

(क) हालदार साहब चक्कर में क्यों पड़ गए? (2)

(ख) कैप्टन दिखने में कैसा था? (2)

(ग) हालदार साहब किस कारण कैप्टन के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं प्राप्त कर सके? (3)

(घ) हालदार साहब कैप्टन के बारे में क्या पूछना चाहते थे? (3)



# अपना-अपना भाग्य जैनेंद्र कुमार

## लेखक परिचय

हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कथाकार, उपन्यासकार व निबंधकार लेखक जैनेंद्र कुमार का जन्म वर्ष 1905 में अलीगढ़ जिले के कोडियागंज नामक कस्बे में हुआ था। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा हस्तिनापुर के जैन गुरुकुल में प्राप्त की तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए काशी हिंदू विश्वविद्यालय गए। इन्होंने असहयोग आंदोलन में भी अपना योगदान दिया। इनकी रचनाओं में जगह-जगह गाँधीवादी विचारों का प्रभाव देखने को मिलता है।

‘सुनीता’, ‘सुखदा’, ‘मुक्तिबोध’ इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। ‘साहित्य का श्रेय और प्रेय’, ‘मन्थन’ इनके प्रसिद्ध निबंध संग्रह तथा ‘फाँसी’, ‘जय संधि’, ‘वातायन’, ‘नीलम देश की राजकन्या’, ‘एक रात’, ‘दो चिट्ठियाँ’, ‘पाज़ेब’ इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं। जैनेंद्र कुमार को अनेक पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। इनका निधन वर्ष 1990 में हुआ।

## कहानी का परिचय

इस कहानी के माध्यम से जैनेंद्र कुमार ने समाज में व्याप्त गरीब व अमीर वर्ग के बीच के अंतर को दिखाने का प्रयास किया है। ‘अपना-अपना भाग्य’ अत्यंत मार्मिक कहानी है।

यह कहानी एक ऐसे गरीब बच्चे के चारों ओर घूमती है, जो अपनी गरीबी से लड़ने के लिए नैनीताल के ठंडे प्रदेश में आता है। सुविधा-संपन्न वर्ग उस गरीब बच्चे की कोई सहायता नहीं करता और न ही उसके प्रति करुणा व सहानुभूति का भाव रखता है। वह गरीब बच्चे को नैनीताल की ठंड में मरने के लिए छोड़ देता है। अंततः वह गरीब बच्चा मर जाता है। उसकी मृत्यु के बाद उसके भाग्य को दोषी ठहराया जाता है। इस प्रकार कहानी के माध्यम से लेखक ने यह बताया है कि समाज का प्रतिष्ठित वर्ग गरीबों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करता है और उनकी मृत्यु होने पर उनके भाग्य को ही दोषी मानता है।

## पात्र-परिचय

### पहाड़ी बालक

पहाड़ी बालक की आयु लगभग दस-बारह वर्ष थी। उसका रंग गोरा था, किंतु मैल के कारण काला पड़ गया था। आँखें बड़ी थीं, लेकिन दर्द के कारण सूनी पड़ गई थीं। उसके बाल बड़े-बड़े थे। उसने सिर्फ एक मैली-सी कमीज पहन रखी थी। उसके सिर और पैरों में कुछ नहीं था। भूख और ठंड के कारण उसकी स्थिति बहुत भयानक हो गई थी। वह गरीबी के कारण अपने घर से भाग आया था। उसका एक साथी भी था, जो मर गया था। पहाड़ी बालक एक जगह काम करता था, लेकिन उसे वहाँ से निकाल दिया गया था। पहाड़ी बालक संवेदनशील व मेहनती है।

### लेखक का मित्र

लेखक का मित्र उसके साथ नैनीताल की सैर करने आया था। वह अपनी जिज्ञासा को शांत करने हेतु पहाड़ी बालक से उसके बारे में पूछता है और उस पर दया भी दिखाता है, किंतु वह उसकी स्वयं कोई सहायता नहीं करता है। वह न तो उसे भोजन खिलाता है, न उसे कपड़े देता है और न ही उसकी आर्थिक सहायता करता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उसकी सहानुभूति मात्र दिखावा थी, जिसे दिखाते हुए वह पहाड़ी बालक को भाग्य के भरोसे छोड़ देता है।

### वकील साहब

वकील साहब लापरवाह व्यक्ति थे। वह गरीबों पर विश्वास नहीं करते थे और उनके हृदय में दया का कोई स्थान तक नहीं था। वह शक्की स्वभाव के थे, वे पहाड़ी बालक पर शक करते हैं, इसलिए वे उसे काम पर भी नहीं रखते।



## कहानी का सार

### नैनीताल का प्राकृतिक सौंदर्य

नैनीताल अपनी प्राकृतिक शोभा के लिए विश्वविख्यात है। कहानी के शुरू में नैनीताल के सौंदर्य का वर्णन इस प्रकार किया गया है—शाम के समय कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो भाप से बादल हमारे सिरों को छू-छूकर घूम रहे हों। हल्के प्रकाश व अँधेरे में बादल कभी नीले दिखते, कभी सफेद तो कभी लाल-से दिखाई देते। बादलों को देख ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे हमारे साथ खेलना चाह रहे हों।

### गरीब व असहाय लड़का

यह कहानी एक गरीब बच्चे की है, जो काम की तलाश में दर-दर की ठोकें खा रहा था। वह नंगे पैर, नंगे सिर व एक मैली-सी कमीज़ पहने हुए था। उसे कहाँ जाना था और कहाँ उसके पैर पड़ रहे थे, उसे कुछ पता नहीं था। वह करीब दस-बारह साल का लड़का था। गोरा रंग, आँखें बड़ी, किंतु सूजी हुई थीं। वह अत्यंत ही असहाय था, जिसकी सहायता करने वाला इस संसार में कोई नहीं था।

### लेखक के मित्र की गरीब बच्चे के प्रति सहानुभूति

लेखक के मित्र को गरीब बच्चे पर दया आ जाती है और वह उसे आवाज़ लगाकर अपने पास बुलाता है और पूछता है कि पूरी दुनिया सो गई, किंतु तू क्यों घूम रहा है? बालक चुप खड़ा रहता है, किंतु उसका चेहरा देखकर ऐसा लगता है, जैसे वह कुछ बोलना चाहता है, किंतु बोल नहीं पाता।

मित्र फिर पूछता है कि कहाँ सोएगा? तो बालक द्वारा जवाब दिया जाता है, यहीं कहीं। इसी प्रकार कई प्रश्न लेखक के मित्र द्वारा पूछे जाने पर बालक ऐसे ही जवाब देता है। इसी बीच लेखक के मित्र को पता चलता है कि बालक काम की तलाश में दर-दर की ठोकें खा रहा है तथा गरीबी के कारण वो अपना घर छोड़ आया है। उसके पास खाने व पहनने के लिए कुछ न था। उसका एक और साथी था, जिसके साथ वह गाँव से भाग आया था, किंतु अब वह इस दुनिया में नहीं था। लेखक का मित्र उस गरीब बच्चे को अपने साथ वकील साहब के होटल में ले आता है।

### वकील साहब का गरीब बच्चे के प्रति दृष्टिकोण

लेखक का मित्र उस गरीब बच्चे को काम दिलाने के लिए वकील साहब के पास लाता है, गरीब बच्चे को देखकर वकील साहब को दया नहीं आती, अपितु उनकी गरीबी के प्रति अलग ही विचारधारा थी। वे गरीबों पर विश्वास ही नहीं करते थे। वकील साहब उस गरीब बच्चे के लिए कहते हैं कि ये पहाड़ी बच्चे बहुत शैतान होते हैं। इनमें अनेक बुराइयाँ होती हैं। क्या जाने कब-क्या लेकर चंपत हो जाएँ?

### लेखक के मित्र की असमंजस की स्थिति

लेखक का मित्र गरीब बच्चे की सहायता करने के लिए उसे वकील साहब के पास काम दिलाने के उद्देश्य से ले आता है, किंतु लेखक के मित्र द्वारा यह बताने पर कि यह लड़का अन्य सभी काम करने वाले लड़कों-सा नहीं निकलेगा, फिर भी वकील साहब द्वारा पहाड़ी गरीब बच्चे को काम के लिए मना करने पर लेखक का मित्र असमंजस की स्थिति में था।

### गरीब बच्चे की दर्दनाक मौत

यह कहानी शुरू से अंत तक गरीब बच्चे के चारों ओर घूमती रहती है। इस गरीब बच्चे की मृत्यु एक लावारिस बच्चे की तरह हो जाती है। उसके मुँह, छाती, मुट्ठियों और पैरों पर बर्फ की हल्की-सी चादर बिछ गई थी, उसका सारा शरीर अकड़ गया था। बालक सड़क के किनारे पेड़ के नीचे ठिठुरकर मर गया था।

### कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता

प्रस्तुत कहानी 'अपना-अपना भाग्य' में लेखक ने समाज में व्याप्त स्वार्थपरता, हृदयहीनता और संवेदनशून्यता का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही लेखक ने इस ओर ध्यान आकर्षित किया है कि संपन्न समाज गरीबों के प्रति सहानुभूति तो दिखाते हैं, किंतु उनकी किसी भी प्रकार से सहायता नहीं करते और उन्हें भाग्य के भरोसे छोड़ देते हैं।

'अपना-अपना भाग्य' कहानी एक गरीब पहाड़ी बालक के चारों ओर घूमती है। कहानी के प्रारंभ में लेखक और उसके मित्र गरीब बालक से मिलते हैं, जिसकी स्थिति बहुत खराब रहती है। लेखक का मित्र उसके प्रति सहानुभूति दिखाता है और उसे अपने वकील दोस्त के यहाँ नौकरी पर लगवाने के लिए ले जाता है, परंतु वकील साहब उसे नौकरी पर नहीं रखते हैं। लेखक और उसके मित्र उस बालक को बिना कुछ खिलाए और बिना कपड़े दिए अगले दिन होटल आने के लिए कहकर उसे वहाँ से भेज देते हैं। ठंड से ठिठुरकर एक पेड़ के नीचे उस बालक की मौत हो जाती है। लेखक और उसके मित्र इस समाचार को सुनकर उसे उसके भाग्य का दोष बताते हैं और अपना-अपना भाग्य कहकर अपना पीछा छुड़ा लेते हैं। अतः यह शीर्षक उपयुक्त है।

### शब्दार्थ

शब्द अर्थ, पाठ्य-पुस्तक साहित्य सागर में दिए गए भाग संक्षिप्त कहानियों के पृष्ठों के अनुसार हैं—

**पृष्ठ सं. 26** निरुद्देश्य—बिना उद्देश्य के (aimless); बेरोक—बिना रुके (unimpeded); अरुण—लाल (red); झुंझलाकर—कुद्व व व्यथित होना (madden); सनक—धुन, पागलपन (eccentricity); जरा—थोड़ा (little); कुहरा—धुंध (fog); मैली—गंदी (dirty); चुंगी—कर वसूल करने के लिए बनाई गई चौकी (tax, custom); प्रकाश—वृत्त-रोशनी का घेरा (circle of light)।

**पृष्ठ सं. 27** एकाकी—अकेला (lonely); वर्तमान—आज का (present); मूक—गूँगा (speechless)।

**पृष्ठ सं. 28** अचरज—आश्चर्य (surprise); लापरवाही—बेफिक्री (negligence)।

**पृष्ठ सं. 29** शैतान—दुष्ट व्यक्ति (naughty); अवगुण—दोष, बुराई (fault); अजीब—विचित्र (strange); चंपत—भाग जाना (run away); सिकुड़ना—संकुचित (shrink); भयानक शीत—बहुत ज्यादा सर्दी (extreme cold); निटुराई—निर्दयता (cruelty); बेहयाई—बेशर्मी (shamelessness)।

**पृष्ठ सं. 30** ठिठुरना—काँपना (shiver); कफन—शव का कपड़ा (shroud); प्रबंध—व्यवस्था करना (arrangement)।

# प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. तीन गज की दूरी से दिख पड़ा, एक लड़का, सिर के बड़े-बड़े बाल खुजलाता चला आ रहा था। नंगे पैर, नंगे सिर, एक मैली-सी कमीज़ लटकाए है।

पृष्ठ सं. 26

(क) लेखक ने अपने मित्र से वापस चलने को क्यों कहा? (2)

**उत्तर** लेखक और उसका मित्र निरुद्देश्य घूमने के बाद सड़क के किनारे बेंच पर बैठ गए। लेखक को वहाँ चुपचाप बैठना अच्छा नहीं लग रहा था। अतः उसने अपने मित्र से वापस चलने के लिए कहा।

(ख) मित्र के इशारा करने पर लेखक ने क्या देखा और क्या कहा? (2)

**उत्तर** मित्र के इशारा करने पर लेखक ने देखा कि कुछ ही हाथ की दूरी पर कोहरे से एक काली-सी परछाई उनकी तरफ आ रही थी। लेखक ने उसे देखकर कहा कि 'होगा कोई'।

(ग) कहानी में नैनीताल की सुंदरता का वर्णन किस प्रकार किया गया है? (3)

**उत्तर** नैनीताल अपनी प्राकृतिक शोभा के लिए विश्वविख्यात है। शाम के समय नैनीताल ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो भाप से बादल सिरों को छू-छूकर घूम रहे हों, हल्के प्रकाश के अँधेरे में बादल कभी नीले दिखते, कभी सफेद, तो कभी लाल से दिखाई देते। वे ऐसे लगते थे जैसे लेखक और उसके मित्र के साथ खेलना चाहते हों।

(घ) नंगे पैर, नंगे सिर, एक मैली-सी कमीज़ द्वारा लड़के की स्थिति का वर्णन कीजिए। (3)

**उत्तर** 'नंगे पैर, नंगे सिर एवं एक मैली-सी कमीज़' उस बच्चे की पूरी स्थिति को उजागर कर देते हैं। वह बच्चा अत्यंत गरीब था। उसके पैर इधर-उधर पड़ रहे थे। उसका गोरा रंग होने के बावजूद भी मैल के कारण काला लग रहा था। उसके पास पहनने व खाने के लिए कुछ भी नहीं था। मैली-सी कमीज़ उसकी गरीबी को दर्शाती है।

2. वह हमें न देख पाया, वह जैसे कुछ भी न देख रहा था। न नीचे की धरती, न ऊपर चारों ओर फैला हुआ कुहरा, न सामने का तालाब और न एकाकी दुनिया। वह बस अपने निकट वर्तमान को देख रहा था।

पृष्ठ सं. 27

(क) लेखक के अनुसार बालक क्या देख रहा था? (2)

**उत्तर** लेखक के अनुसार, बालक कुछ भी नहीं देख रहा था। न नीचे की धरती, न ऊपर चारों ओर फैला हुआ कुहरा, न सामने का तालाब और न एकाकी दुनिया। वह बस अपने निकट वर्तमान को देख रहा था। गरीबी की विवशता में वह कुछ भी देख पाने में असमर्थ था।

(ख) चुंगी की लालटेन के प्रकाश-वृत्त में लेखक ने क्या देखा? (2)

**उत्तर** चुंगी की लालटेन के छोटे-से प्रकाश-वृत्त में लेखक ने देखा कि लगभग दस-बारह वर्ष का कोई लड़का सामने से आ रहा है, जो मैल के कारण काला हो चुका था तथा मैली-सी कमीज़ पहने हुए था। वह अत्यंत ही असहाय था।

(ग) बालक क्या करता था? उसने अपने बारे में क्या बताया? (3)

**उत्तर** बालक किसी दुकान पर काम करता था। उसके बदले में इसे जूठा खाना और मेहनताने के रूप में एक रुपया मिलता था, उसने बताया कि वह अपने साथी के साथ नैनीताल से पंद्रह कोस दूर गाँव से काम की तलाश में आया था। गाँव में उसके कई भाई-बहन थे। माँ-बाप इतने गरीब थे कि उन्हें भूखे पेट ही सोना पड़ता था। मालिक ने उसके साथी को इतना मारा कि उसकी मृत्यु हो गई।

(घ) लेखक के मित्र ने किसे और क्यों आवाज़ दी? (3)

**उत्तर** लेखक के मित्र ने एक गरीब बालक को आवाज़ दी, जो कुहरे में काली-सी मूर्ति के समान नज़र आ रहा था और न जाने कहाँ जा रहा था। जानना चाहता था कि बालक कुहरे से ढकी संध्या में ऐसे क्यों घूम रहा है, कौन है, वह क्या काम करता है और उसकी स्थिति इतनी खराब क्यों है?

3. "अजी, ये पहाड़ी बड़े शैतान होते हैं। बच्चे-बच्चे में अवगुण छिपे रहते हैं, आप भी क्या अज़ीब हैं, उठा लाए कहीं से-लो जी यह नौकर लो।"

पृष्ठ सं. 29

(क) लड़का अपना घर छोड़ नैनीताल क्यों आया था? (2)

**उत्तर** लड़के के कई भाई बहन थे एवं उसके गाँव में कोई काम नहीं था। उसके घर की स्थिति अत्यंत ही दयनीय थी। अतः अत्यधिक गरीबी के कारण लड़का अपना घर छोड़ नैनीताल पैसा कमाने के उद्देश्य से आया था।

(ख) अपने मित्र के विषय में लड़के ने क्या बताया? (2)

**उत्तर** लड़के ने बताया कि उसका एक साथी और था, जिसके साथ वह गाँव से भाग आया था, किंतु वह अब इस दुनिया में नहीं है। उसके मालिक ने उसे मार दिया था।

(ग) लेखक का मित्र बच्चे को वकील साहब के पास क्यों लाया? वकील साहब की वेशभूषा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (3)

**उत्तर** गरीब बच्चे को देखकर लेखक के मित्र को दया आ गई और वह उसकी सहायता करने के लिए उसे वकील साहब के पास ले गया। वकील साहब लापरवाह प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वह कश्मीरी शॉल लपेटे हुए थे तथा पैरों में मोज़े व चप्पलें पहने हुए थे।

(घ) "अजी, ये पहाड़ी बड़े शैतान होते हैं।" यह किसने व किससे कहा? वकील साहब का पहाड़ी बच्चों के प्रति दृष्टिकोण कैसा था? (3)

**उत्तर** "अजी, ये पहाड़ी बच्चे बड़े शैतान होते हैं।" यह वकील साहब ने लेखक के मित्र से कहा।

वकील साहब का मानना था कि पहाड़ी बच्चे शैतान होते हैं। छोटे-छोटे बच्चों में बुराईयाँ होती हैं। वे अपने अवगुणों को छुपाए रहते हैं। वकील साहब को पहाड़ी बच्चों पर विश्वास नहीं था तथा उन बच्चों को पसंद नहीं करते थे। इसी कारण वह पहाड़ी लड़के को काम पर नहीं रखना चाहते थे।

4. मैं असमंजस में रहा। तब वह तेज़ गति से एक ओर बढ़ा और कुहरे में मिल गया। हम भी होटल की ओर बढ़े।

पृष्ठ सं. 29

(क) वकील साहब क्या मानने को तैयार नहीं थे? (2)

**उत्तर** जब लेखक के मित्र पहाड़ी बालक को वकील साहब के पास लेकर पहुँचे और उन्होंने उसे नौकरी पर रखने के लिए कहा तो

वकील साहब ने मना कर दिया। लेखक के मित्र ने कहा भी कि यह लड़का अन्य काम करने वाले लड़कों के जैसा नहीं निकलेगा। लेकिन वकील साहब यह सब मानने को तैयार नहीं थे।

(ख) उपरोक्त पंक्तियों में 'मैं' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है और वह असमंजस की स्थिति में क्यों था? (2)

**उत्तर** यहाँ 'मैं' शब्द लेखक के मित्र के लिए प्रयोग किया गया है और वकील साहब द्वारा पहाड़ी गरीब बच्चे को काम के लिए मना करने पर लेखक का मित्र असमंजस की स्थिति में था।

(ग) "तब वह तेज़ गति से एक ओर बढ़ा और कुहरे में मिल गया।" इस कथन में 'वह' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है और कुहरे में कौन मिल गया? (3)

**उत्तर** "तब वह तेज़ गति से एक ओर बढ़ा और कुहरे में मिल गया।" इस कथन में 'वह' शब्द गरीब बच्चे के लिए प्रयोग किया गया है। लेखक का मित्र गरीब बच्चे की सहायता करना चाहता था, इसलिए वह उस बच्चे को वकील के पास ले जाता है, किंतु वकील साहब द्वारा काम पर न रखने पर, वह गरीब बच्चा कुहरे में जाकर मिल गया।

(घ) लेखक के मित्र के चरित्र की विशेषता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (3)

**उत्तर** लेखक का मित्र दयालु व भावुक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। उसे गरीब बच्चे को देखकर दया आ जाती है। वह उस बच्चे को काम दिलाने के लिए वकील साहब के पास भी लाता है, किंतु सफल नहीं हो पाता। उसके बाद बच्चा कहीं और चला जाता है। लेखक के मित्र को इस बात का दुःख होता है कि इतनी भयानक सर्दी है और उसके पास बहुत ही कम कपड़े हैं।

**5.** नैनीताल स्वर्ग के किसी काले गुलाम पशु के दुलार का वह बेटा-वह बालक, निश्चित समय पर हमारे 'होटल डि पव' में नहीं आया। हम अपनी नैनीताल-सैर खुशी-खुशी खत्म कर चलने को हुए। उस लड़के की आस लगाए बैठे रहने की ज़रूरत हमने न समझी। **पृष्ठ सं. 29**

(क) "नैनीताल स्वर्ग के किसी काले गुलाम पशु के दुलार का वह बेटा" से कवि का क्या आशय है? (2)

**उत्तर** यहाँ लेखक का आशय है कि नैनीताल जैसे स्वर्ग में वह पहाड़ी बालक किसी काले गुलाम पशु के समान मनुष्य का बेटा था। लेखक ने यहाँ अपने शब्दों के द्वारा स्थान समाज की असमानता पर व्यंग्य किया है। कहाँ तो स्वर्ग जैसा मनोरम स्थान नैनीताल और कहाँ इसमें रहने वाला वह गरीब, मैला, भूखा-प्यासा बालक।

(ख) लेखक के मित्र ने लेखक से सिकुड़ते हुए क्या कहा? (2)

**उत्तर** लेखक के मित्र ने लेखक से सिकुड़ते हुए कहा कि सर्दी बहुत भयानक पड़ रही है और उस लड़के के पास बहुत कम कपड़े हैं और न ही उसके पास कोई सोने की जगह है।

(ग) लेखक और उसके मित्र किसकी तैयारी कर रहे थे और क्यों? (3)

**उत्तर** लेखक और उसका मित्र, जोकि नैनीताल के होटल डि पव में ठहरे हुए थे। "उन दोनों को शाम के समय कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो भाप से बादल उनके सिरों को छूकर घूम रहे हों।" अब घूमने के बाद वहाँ से जाने की तैयारी कर रहे थे, क्योंकि वे नैनीताल की सैर पर आए थे, जो पूरी हो चुकी थी।

(घ) पहाड़ी बालक की मृत्यु कैसे हुई? प्रकृति ने उसके शव के लिए क्या प्रबन्ध किया था? (3)

**उत्तर** भूख और भयानक ठंड के कारण सड़क के किनारे एक पेड़ के नीचे पहाड़ी बालक की मृत्यु हो गई। उसके पूरे शरीर पर बर्फ की हल्की-सी चादर बिछ गई थी, जो ऐसे लग रही थी कि मानो दुनिया की निर्दयता को ढँकने के लिए प्रकृति ने शव के लिए सफ़ेद और ठंडे कफ़न का प्रबंध कर दिया था।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

**1.** नैनीताल की संध्या धीरे-धीरे उतर रही थी। रूई के रेशे से, भाप से बादल हमारे सिरों को छू-छूकर बेरोक घूम रहे थे। हल्के प्रकाश और अँधियारे से रंग कर कभी वे नीले दिखते, कभी सफ़ेद और फिर ज़रा अरुण पड़ जाते, जैसे हमारे साथ खेलना चाह रहे हों। **पृष्ठ सं. 26**

(क) लेखक और उसके मित्र कहाँ बैठे हुए थे? (2)

(ख) लेखक ने अपने मित्र से क्या कहा? (2)

(ग) लेखक को बादल कैसे प्रतीत हो रहे थे? (3)

(घ) लेखक किस बात पर कुढ़ रहा था और क्यों? (3)

**2.** मेरे कई भाई-बहन हैं, सो भाग आया। वहाँ काम नहीं, रोटी नहीं। बाप भूखा रहता था और माँ भूखी रहती थी, रोती थी, सो भाग आया। एक साथी और था। उसी गाँव का था, मुझसे बड़ा। दोनों साथ यहाँ आए। वह अब नहीं है। **पृष्ठ सं. 28**

(क) बालक के मूक खड़े होने का क्या कारण था? (2)

(ख) बालक ने अपने परिवार के विषय में क्या बताया? (2)

(ग) बालक के भागने का क्या कारण था? कहानी बालक की किस विवशता को उद्घाटित करती है? (3)

(घ) बालक किसके साथ आया था? अब दोनों साथ में क्यों नहीं हैं? (3)

**3.** गरीब के मुँह, छाती, मुट्ठियों और पैरों पर बर्फ़ की हल्की-सी चादर चिपक गई थी, मानो दुनिया की बेहयाई ढँकने के लिए प्रकृति ने शव के लिए सफ़ेद और ठंडे कफ़न का प्रबंध कर दिया था। **पृष्ठ सं. 30**

(क) उपरोक्त गद्यांश में किसकी मृत्यु की बात कही गई है? (2)

(ख) मृत्यु के पश्चात् बालक के शरीर की दशा कैसी थी? (2)

(ग) दुनिया की बेहयाई का क्या अर्थ है? (3)

(घ) उपरोक्त गद्यांश में सफ़ेद और ठंडे कफ़न की संज्ञा किसे और क्यों दी गई है? (3)

# बड़े घर की बेटी मुंशी प्रेमचंद

## लेखक परिचय

हिंदी साहित्य में कथा सम्राट के नाम से प्रसिद्ध मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी के पास लमही नामक गाँव में हुआ था। इनका वास्तविक नाम 'धनपतराय' था। उन्हें बचपन से ही अनेक आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। आर्थिक संकट के कारण ये प्राइमरी विद्यालय में शिक्षक की नौकरी करने लगे। असहयोग आंदोलन में भाग लेने के दौरान सरकारी नौकरी से त्याग-पत्र देकर उन्होंने लेखन कार्य प्रारंभ कर दिया। वे 'नवाबराय' के नाम से उर्दू में लिखते थे, बाद में मुंशी प्रेमचंद के नाम से लेखन कार्य करने लगे। प्रेमचंद ने लगभग 300 कहानियाँ लिखीं। इनकी पहली कहानी वर्ष 1916 में 'सरस्वती पत्रिका' में 'पंच परमेश्वर' के नाम से प्रकाशित हुई। इनकी कहानियाँ मानसरोवर नाम से आठ खंडों में संकलित हैं। इन्होंने कई प्रसिद्ध उपन्यास भी लिखे। 8 अक्टूबर, 1936 को इनका देहांत हो गया।

## कहानी का परिचय

पारिवारिक संबंधों के महत्त्व को उजागर करती 'बड़े घर की बेटी' कहानी एक संयुक्त परिवार की कहानी है, जो परिवार में रहने वाले व्यक्तियों के आपसी मतभेदों को दर्शाती है। गाँव के ज़मींदार बेनीमाधव सिंह के दो बेटे थे—श्रीकंठ और लालबिहारी। श्रीकंठ का विवाह एक प्रतिष्ठित ज़मींदार घराने की पुत्री आनंदी से होता है। आनंदी जल्दी ही स्वयं को नई परिस्थितियों के अनुसार ढाल लेती है। एक दिन लालबिहारी आनंदी को मांस बनाने के लिए कहता है, जिसके कारण दोनों के बीच कहा-सुनी हो जाती है और लालबिहारी आनंदी को खड़ाऊँ (लकड़ी की चप्पल) फेंककर मारता है। श्रीकंठ को जब आनंदी व लालबिहारी के मध्य हुए झगड़े के विषय में ज्ञात होता है, तो वह दोनों भाइयों में से किसी एक के घर में रहने की बात पिता के समक्ष रखता है। श्रीकंठ की बात सुन लालबिहारी घर से जाने को तैयार हो जाता है, किंतु आनंदी अपने मधुर व्यवहार से उसे जाने से रोकती है, तभी बाहर से आते बेनीमाधव सिंह कहते हैं कि 'बड़े घर की बेटियाँ' ऐसी ही होती हैं, जो बिगड़ा काम बना लेती हैं।

## पात्र-परिचय

### आनंदी

आनंदी एक बड़े उच्च कुल की लड़की थी। वह रूपवती होने के साथ-साथ गुणवती भी थी। वह संतोषी व उदार चित्त वाली स्त्री थी। उसके पिता भूपसिंह उससे बहुत प्रेम करते थे। ससुराल में मैके से विपरीत परिस्थितियाँ मिलने पर भी वह स्वयं को उनके अनुकूल बना लेती है। वह क्रोधावेश में आकर लालबिहारी की शिकायत श्रीकंठ से करती है, किंतु लालबिहारी का पश्चात्ताप देखकर उसे क्षमा कर देती है और दोनों भाइयों में सुलह करवा देती है।

### लालबिहारी

लालबिहारी बेनीमाधव सिंह का छोटा पुत्र था। वह शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट था। वह कभी-कभी उग्र हो जाता था, जिसके कारण उसकी आनंदी से नोक-झोंक हो जाती है। वह अपना कृत्य अपने भाई श्रीकंठ से छुपाने का प्रयास करता है, क्योंकि वह उससे असीम प्यार करता था। वह चाहता था कि श्रीकंठ उसका पक्ष ले, किंतु विपरीत परिस्थितियाँ होने पर वह अपने भाई की खातिर घर छोड़ने को तैयार हो जाता है। उसमें पश्चात्ताप का भाव था, इसलिए वह अपने कृत्य पर पछताकर आनंदी से क्षमा याचना भी करता है।

## श्रीकंठ

श्रीकंठ बेनीमाधव सिंह के बड़े पुत्र थे। उन्होंने बी.ए. की डिग्री प्राप्त की थी। उनका शरीर दुर्बल और कांतिहीन था। वह पाश्चात्य सामाजिक प्रथाओं का पुरजोर विरोध करते थे और प्राचीन सभ्यता व संयुक्त परिवार के समर्थक थे। वह अपने छोटे भाई लालबिहारी से बहुत प्रेम करते थे, किंतु पत्नी के अपमान की बात सुनकर वे क्रोधित हो जाते हैं। क्रोधावेश में आकर श्रीकंठ लालबिहारी को घर छोड़ने के लिए विवश करते हैं, परंतु भाई का पश्चात्ताप देखकर उनका हृदय पिघल जाता है और वे उसे गले लगा लेते हैं।

## बेनीमाधव सिंह

बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के ज़मींदार और नंबरदार थे। उनके पितामह धन-धान्य से संपन्न थे। बेनीमाधव सिंह अपनी आधी से अधिक संपत्ति वकीलों को दे चुके थे। उनकी वर्तमान आय एक हजार वार्षिक से अधिक नहीं थी। उनका मानना था कि स्त्रियों को बहुत सिर पर नहीं चढ़ाना चाहिए। बेनीमाधव सिंह अनुभवी व्यक्ति थे। जब श्रीकंठ लाल बिहारी से रुष्ट होकर बेनीमाधव से ऊँचे स्वर में बात कर रहे थे, तो कुछ गाँव वाले उनकी लड़ाई का आनंद लेने उनके घर आ गए। वे गाँव वालों के भावों को समझ गए, इसलिए उन्होंने श्रीकंठ को दूसरे तरीके से समझाने का प्रयत्न किया। आनंदी के माध्यम से दोनों भाइयों की सुलह होने पर बेनीमाधव प्रसन्नता से यह कहते हैं कि 'बड़े घर की बेटियाँ' ऐसी ही होती हैं, जो बिगड़ता हुआ काम बना लेती हैं।

## कहानी का सार

### गौरीपुर गाँव के ज़मींदार 'बेनीमाधव सिंह'

बेनीमाधव सिंह गाँव के ज़मींदार थे। उनके दादा के पास अधिक धन-संपत्ति थी। गाँव के पुराने तालाब, मंदिर, कुएँ आदि उन्हीं के द्वारा बनवाए गए थे। बेनीमाधव सिंह के दो पुत्र थे। किसी समय में वे धन-धान्य से संपन्न लोग कहे जाते थे, किंतु वर्तमान में उनकी आय एक हजार रुपये वार्षिक थी। घर की स्थिति कुछ ज्यादा अच्छी नहीं थी। बेनीमाधव सिंह के बड़े बेटे श्रीकंठ ने बी.ए. की डिग्री प्राप्त की थी और एक दफ्तर में कार्यरत थे, वहीं दूसरा बेटा लालबिहारी दोहरे बदन का सजीला जवान था, जो श्रीकंठ से एकदम विपरीत था।

### प्राचीन सभ्यता का गुणगान करते श्रीकंठ

श्रीकंठ सिंह एक ऐसे चरित्र के रूप में सामने आए हैं, जो प्राचीन सभ्यता के नियमों पर चलते हैं। वे स्वयं अंग्रेज़ी के ज्ञाता थे, किंतु अंग्रेज़ी की निंदा करने में भी पीछे नहीं रहते थे। वे रामलीला में भी बड़े उत्साह से भाग लिया करते थे। उनका मानना था कि परिवार में एकजुटता की भावना होनी चाहिए। वे संयुक्त परिवार के पक्षधर थे। श्रीकंठ के ऐसे विचारों पर गाँव की औरतें उनकी निंदा भी करती थीं, स्वयं उनकी पत्नी ने भी उनका विरोध किया था।

### ठाकुर साहब 'भूपसिंह' का धर्मसंकट

भूपसिंह एक छोटी-सी रियासत के बड़े ज़मींदार थे तथा अत्यधिक धन-धान्य से संपन्न व्यक्ति थे। आनंदी उनकी चौथी व अति सुंदर पुत्री थी। दुर्भाग्य से उनका कोई लड़का नहीं था। वे अपनी पुत्री आनंदी से अधिक प्रेम करते थे। इस बात को लेकर वे धर्मसंकट में थे कि आनंदी का विवाह कहाँ करें?

भूपसिंह अपनी पुत्री आनंदी का विवाह ऐसी जगह करना चाहते थे, जिससे न तो उन पर अधिक ऋण का बोझ हो और न ही उन्हें स्वयं को भाग्यहीन समझना पड़े। वे एक अच्छे और कुशल व्यक्ति की तलाश में थे। श्रीकंठ को देख भूपसिंह उसके स्वभाव पर रीझ गए और आनंदी का विवाह श्रीकंठ के साथ हो गया।

### आनंदी का नई परिस्थितियों को स्वीकार करना

आनंदी एक उच्चकुलीन परिवार की बेटी थी। उसने कभी भी आर्थिक संकट नहीं झेला था। वो बचत करना नहीं जानती थी, किंतु ससुराल की परिस्थितियाँ उसके लिए अलग थीं। यहाँ मकान में खिड़कियाँ तक न थीं, न ज़मीन पर फ़र्श और न दीवार पर तस्वीरें। यह एक देहाती गृहस्थ मकान था, किंतु आनंदी ने इनसे मुँह नहीं मोड़ा, अपितु उसने स्वयं को परिस्थितियों के अनुसार ढाल लिया।

एक दिन लालबिहारी सिंह द्वारा मांस पकाने के लिए कहने पर आनंदी ने सारा घी मांस में डाल दिया। लालबिहारी को दाल में 'घी' न मिलने पर आनंदी व लालबिहारी में नोक-झोंक हो जाती है और वह आनंदी को खड़ाऊँ फेंककर मारता है। लालबिहारी के इस व्यवहार को देखकर आनंदी खून का घूँट पीकर रह जाती है।

### आनंदी का कोपभवन में जाना

लालबिहारी द्वारा खड़ाऊँ फेंककर मारने पर आनंदी को अधिक क्रोध आता है, किंतु वह करती क्या? श्रीकंठ भी घर में नहीं था। आनंदी का गुस्सा मानों सातवें आसमान पर था। दो दिन तक वह कोपभवन में रहकर बिना कुछ खाए-पिए श्रीकंठ का इंतज़ार करती रही।

श्रीकंठ के आने पर लालबिहारी ने कहा कि भाई, आप भाभी को समझा दीजिएगा, नहीं तो बेकार में ही अनर्थ हो जाएगा। बेनीमाधव सिंह ने भी लालबिहारी का पक्ष लेते हुए कहा कि बहू-बेटियों का मर्दाने के मुँह लगना अच्छा नहीं।

### श्रीकंठ सिंह का क्रोधित होना व उनके सिद्धांतवादी विचार

श्रीकंठ अत्यंत ही धैर्यवान व शांत स्वभाव वाले पुरुष थे। उन्हें क्रोध नहीं आता था, किंतु अपने भाई द्वारा किए गए कार्य पर उन्हें अत्यधिक क्रोध आया। श्रीकंठ सिद्धांतवादी विचारधारा के पक्षधर थे। वे विद्रोहपूर्ण बातें कहने पर अपने मित्रों को आड़े हाथों लिया करते थे। उनके सिद्धांतवादी विचारों ने ही गाँव के घरों को सँभाल रखा था।

वे स्त्रियों के प्रति होते अत्याचार के विरोधी थे। वे स्त्रियों की मान-प्रतिष्ठा पर बल दिया करते थे, किंतु दुर्भाग्यवश आज स्वयं उनके घर की स्त्री पर अन्याय व अत्याचार किया जा रहा था। जो बातें वे लोगों से कहते थे, वे उन्हें आज स्वयं अपने घर के लिए अपने मुँह से कहनी पड़ीं।

### गाँव वालों की प्रवृत्ति

श्रीकंठ अत्यधिक क्रोध में थे। बेनीमाधव सिंह को भी गुस्सा आ गया। उन्होंने कहा कि लालबिहारी तुम्हारा भाई है। गलती की है सज़ा दे दो, किंतु यह कहना कि मैं लालबिहारी को अपना भाई नहीं समझता, उचित नहीं है।

श्रीकंठ सिंह व पिता बेनीमाधव के बीच होती बहस को सुन गाँव के लोग हुक्के-चिलम के बहाने वहाँ आ गए। गाँव के कुछ लोग जो इनकी नीतिपूर्ण गति से जलते थे, उन्हें मन-ही-मन प्रसन्नता हो रही थी। गाँव के लोग तमाशा देखना चाहते थे, किंतु बेनीमाधव सिंह ने गाँव के लोगों की मनसा को जान लिया और बात को पलट दिया।



## श्रीकंठ सिंह का अंतिम निर्णय

श्रीकंठ सिंह अत्यधिक क्रोध में थे। वे लालबिहारी की दुष्टता को कभी भी माफ़ नहीं कर सकते थे। अतः उन्होंने अपना अंतिम निर्णय पिता के सामने रख दिया। उनका अंतिम निर्णय यह था कि दोनों भाइयों में से कोई एक ही घर में रहेगा। उन्होंने पिता से कहा कि अगर आपको वह अधिक प्यारा है, तो मुझे विदा कीजिए। यदि मुझे रखना चाहते हैं, तो उसे कहिए कि यहाँ से चला जाए। यही मेरा अंतिम निर्णय है।

## लालबिहारी का ग्लानि भाव

श्रीकंठ की बातें सुनकर लालबिहारी को अपनी गलती पर पछतावा होता है और वह रोने लगता है। वह अपने भाई से आँखें नहीं मिला पाता। लालबिहारी की आँखें शर्म से झुक जाती हैं और वह अपने भाई के सामने आने पर भी झिझकता है। उसे अपनी गलती का बहुत दुःख हो रहा था।

## आनंदी की दयालु प्रवृत्ति

आनंदी ने बेशक अपने देवर की शिकायत की थी, किंतु अपने स्वभाव के अनुसार उसे अब पछतावा हो रहा था। आनंदी दया की मूर्ति थी। लालबिहारी के माफ़ी माँगने पर उसका क्रोध मानों कहीं खो जाता है और उसकी आँखें नम हो जाती हैं।

## श्रीकंठ का हृदय परिवर्तन

कहानी के अंत में भाई द्वारा माफ़ी माँगने पर श्रीकंठ का हृदय अधिक समय तक कठोर नहीं रह सका। दोनों भाई खूब फूट-फूटकर रोने लगे। श्रीकंठ ने लालबिहारी को जाने से रोक लिया। बाहर से आते बेनीमाधव सिंह जब दोनों भाइयों को इस प्रकार गले मिलते देखते हैं, तो खुशी से फूले नहीं समाते और आनंदी की प्रशंसा में कहते हैं 'बड़े घर की बेटियाँ' ऐसी ही होती हैं।

## कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता

प्रस्तुत कहानी 'बड़े घर की बेटी' में कथाकार मुंशी प्रेमचंद ने भारतीय परिवार का मार्मिक ढंग से सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। कथाकार ने 'आनंदी' के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि बहुएँ परिवार में सामंजस्य और स्नेह बनाए रखने में अहम भूमिका का निर्वाह करती हैं। वे अपने गुणों के माध्यम से पारिवारिक कलहों को समाप्त कर देती हैं, जिससे परिवार में पुनः खुशहाली लौट आती है।

कहानी की मुख्य पात्र 'आनंदी' है, जो एक बड़े उच्च कुल से विवाह करके अपनी ससुराल आती है। ससुराल में मैके से विपरीत परिस्थितियाँ पाने पर वह स्वयं को उनके अनुकूल बना लेती है, परंतु देवर द्वारा मायके के बारे में बुरा-भला कहने पर वह क्रोधित हो जाती है। इस घटना का पता चलने पर उसका पति क्रोधावेश में आकर अपने भाई को घर से निकलने के लिए कहता है। अंत में आनंदी अपने देवर को क्षमा कर देती है और दोनों भाइयों में पुनः मेल करवा देती है। पूरे गाँव में यह चर्चा फैल जाती है कि बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रस्तुत कहानी का शीर्षक 'बड़े घर की बेटी' पूर्ण रूप से सार्थक है।

## शब्दार्थ

शब्द अर्थ, पाठ्य-पुस्तक साहित्य सागर में दिए गए भाग संक्षिप्त कहानियों के पृष्ठों के अनुसार हैं—

**पृष्ठ सं. 32** पितामह—दादा (grandfather); कीर्तिस्तंभ—यश या कीर्ति कायम रखने वाला स्तंभ (tower of victory); संपत्ति—जायदाद (property); उद्योग—यत्न (diligently); दोहरे—दुगुना (double); बदन—शरीर (body); विपरीत—उल्टी (opposite); नेत्र प्रिय—आँखों को प्यारा लगना (apple of eye); न्योछावर—बलिहारी जाना (sacrifice); कांतिहीन—चमकहीन (pale); अधिपति—प्रधान (overlord); पाश्चात्य—पश्चिमी (western); तिरस्कार—अपमान (insult); सम्मिलित होना—शामिल होना (include); पात्र—भूमिका (role); अभिनय करना—भूमिका निभाना (acting); प्राचीन—पुराना (old); प्रधान—मुख्य (main)। अंग—भाग (part); अरुचि—रुचि न होना (uninterest); हानिकारक—नुकसानदायक (harmful); ललनाएँ—किशोरी (young girl); निंदक—बुराई करने वाला (cynic); कलह—झगड़ा (quarrel)।

**पृष्ठ सं. 33** उच्च—ऊँचे (high); ताल्लुकेदार—बड़े जमींदार (big landlord); प्रतिष्ठित—स्थापित (established); विद्यमान—उपस्थिति (present); प्रतिभाशाली—गुणों से संपन्न (brilliant); दुर्भाग्य से—बुरे भाग्य से (unfortunately); रीझ गए—मन आ गया (impressed); टीम-टाम—बनाव शृंगार (ostentation); नाममात्र—बहुत थोड़ा या कम (nominal); देहाती—गाँव का (rural); विलास—आनंददायक चीजें (luxury); हाँडी—मिट्टी की पत्तीली (pipkin); किराया—बचत (saving)।

**पृष्ठ सं. 34** भुधा—भूख (hungry); तिनक जाना—नाराज होना (angry); नित्य—प्रतिदिन (daily); उजड़-उदड़ (boorish); खड़ाऊँ—लकड़ी की बनी खुली खूँटीदार चप्पल (wooden Sandal); गुमान—घमंड (proud); पुरुषत्व—पुरुष होने की अवस्था (virility); संध्या—साँझ (evening)।

**पृष्ठ सं. 35** वार्तालाप—बातचीत (conversation); भद्र—सज्जन (gentleman); पिंड छुड़ाना—पीछा छुड़ाना (to get free); पंचायत—पंचों की सभा (pentad, panchayat); एकांत—अकेलापन (lonely); अनर्थ—अर्थहीन (perversion); साक्षी—गवाह (witness); स्वभाव—आदत (habit); त्योंरी चढ़ना—क्रोध आना (to be angry); शऊर—अच्छी आदतें (good manners)।

**पृष्ठ सं. 36** धैर्यवान—धीरजवान (patient); उद्विग्नता—आकुलता, परेशानी (concern); निर्वाह—निबाहना (subsistence); उपदेश देना—शिक्षा देना (preach); ख्याल—लिहाज़ (heed); हठ—जिद (stubbornness); तेवर—भौहें चढ़ाना (Frown)।

**पृष्ठ सं. 37** उत्तरदाता—जवाब देने वाला (respondents); पशुवत—पशु के स्वभाव वाला (brutish); असह्य—सहन न करने योग्य (unbearable); गरमाए—क्रोधित होना (angry); क्रूरता—कठोर होने की क्षमता (atrocious); अविवेक—भला-बुरा समझने की शक्ति का अभाव (indirection); अकुलाना—परेशान (upset); महानुभाव—उच्च विचार वाले (gentleman); लगान—कर (tax); द्वेषी—वैरी शत्रु (spiteful, jealous)।

**पृष्ठ सं. 38** पुचकारना—प्यार जताना (show love); हार्दिक—हृदय से होने वाला (heartly); ड्योढ़े—बड़े हृष्ट-पुष्ट (powerful); पुलकित होना—खुश होना (please); हृदय विदारक—दुःखद (dissecting)।

**पृष्ठ सं. 39** कतराना—नजर बचाकर निकलना (to cut off); ग्लानि—पश्चात्ताप (regret)।

**पृष्ठ सं. 40** सौगंध—शपथ (swear); कदापि—कभी (rare); वृत्तांत—विवरण (chronicle)।



# प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. आनंदी की तयारी चढ़ गई। झुँझलाहट के मारे बदन में ज्वाला-सी दहक उठी। बोली “जिसने तुमसे यह आग लगाई है, उसे पाऊँ तो मुँह झुलस दूँ।” पृष्ठ सं. 35 [2018]

(क) आनंदी की तयारी क्यों चढ़ी हुई थी? वह किसका इंतजार कर रही थी? (2)

**उत्तर** श्रीकंठ सिंह के यह कहने पर कि तुमने आजकल यह क्या उपद्रव मचा रखा है? आनंदी की तयारी चढ़ गई थी। वह (आनंदी) अपने पति श्रीकंठ का इंतजार कर रही थी।

(ख) श्रीकंठ सिंह ने आनंदी से क्या जानना चाहा? (2)

**उत्तर** श्रीकंठ सिंह ने आनंदी से उसके क्रोध का कारण जानना चाहा, क्योंकि श्रीकंठ सिंह घर में नहीं थे। वे शनिवार को ही घर आया करते थे। उनको घर में हुए झगड़े का पता नहीं था।

(ग) इससे पहले लालबिहारी और बेनीमाधव सिंह श्रीकंठ सिंह से क्या कह चुके थे? (3)

**उत्तर** लालबिहारी ने श्रीकंठ से कहा कि भैया आप भाभी को समझा लीजिए कि मुँह सँभालकर बातचीत करें, कभी-कुछ अनर्थ हो जाएगा। तभी बेनीमाधव सिंह ने लालबिहारी की बात को सही मानते हुए कहा कि घर कि बहू-बेटियों का यह स्वभाव अच्छा नहीं कि मदों के मुँह लगें।

(घ) आनंदी से घटना का हाल जानकर श्रीकंठ सिंह को कैसा लगा? उन्होंने अपने पिता से क्या कहा? (3)

**उत्तर** आनंदी से घटना का हाल जानकर श्रीकंठ की आँखें लाल हो गई अर्थात् उन्हें क्रोध आ गया। जबकि श्रीकंठ सिंह को कदाचित ही क्रोध आता था। उन्होंने अपने पिता से कहा कि अब इस घर में मेरा निर्वाह नहीं होगा।

2. “दशहरे के दिनों में वे बड़े उत्साह से रामलीला में सम्मिलित होते और स्वयं किसी-न-किसी पात्र का अभिनय करते थे। प्राचीन सभ्यता का गुणगान उनकी प्रकृति का प्रधान अंग था। सम्मिलित कुटुंब के तो वे एकमात्र उपासक थे।” पृष्ठ सं. 32

(क) श्रीकंठ के पिता का क्या नाम था? वे क्या कार्य करते थे? (2)

**उत्तर** श्रीकंठ के पिता का नाम बेनीमाधव सिंह था। वे गौरीपुर गाँव के ज़मींदार और नंबरदार थे, किंतु वर्तमान में उनकी आय एक हजार रुपये वार्षिक थी, जिसके कारण घर की स्थिति कुछ ज़्यादा अच्छी नहीं थी।

(ख) पाश्चात्य सामाजिक प्रथाओं के निंदक कौन थे? (2)

**उत्तर** श्रीकंठ पाश्चात्य सामाजिक प्रथाओं के निंदक थे। वे प्राचीन सभ्यता तथा संयुक्त परिवार के समर्थक थे। बेशक स्वयं उन्होंने अंग्रेज़ी की डिग्री प्राप्त की हुई थी, किंतु वे इसकी निंदा करने से भी पीछे नहीं हटते थे।

(ग) परिवार में एकजुटता की भावना पर बल किसने दिया है और क्यों? (3)

**उत्तर** श्रीकंठ ने परिवार की एकजुटता पर बल दिया है। उनका मानना था कि परिवार में एकजुटता की भावना का होना आवश्यक है। मिल-जुलकर रहने का भाव सबके मन में होना चाहिए। अतः संयुक्त परिवार ही एक सफल परिवार की नींव है। हम कह सकते हैं कि वे सम्मिलित कुटुंब के उपासक थे।

(घ) उपरोक्त गद्यांश के आधार पर श्रीकंठ की धार्मिक प्रवृत्ति का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (3)

**उत्तर** श्रीकंठ धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। धर्म-कर्म के प्रति उनकी विशेष आस्था थी। वे अंग्रेज़ी की डिग्री प्राप्त करते हुए भी पाश्चात्य सामाजिक प्रथाओं का अनुसरण नहीं करते थे। अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण वे बड़े ही उत्साह से रामलीला में अभिनय भी करते थे। वे प्राचीन हिंदू परिवारों के संयुक्त रूप को भी स्वीकार करते थे। वे सभ्यता के पक्षधर भी थे।

3. “विशाल भवन, एक हाथी, तीन कुत्ते, झाड़ू-फानूस, आनंदेरी मजिस्ट्रेटी और ऋण, जो एक प्रतिष्ठित ताल्लुकेदार के योग्य पदार्थ हैं, सभी यहाँ विद्यमान थे। नाम था भूपसिंह।” पृष्ठ सं. 33

(क) आनंदी के पिता का क्या नाम था? वे किस कुल से संबंधित थे? (2)

**उत्तर** आनंदी के पिता का नाम भूपसिंह था। भूपसिंह अत्यधिक धन-धान्य से संपन्न व्यक्ति थे। वे छोटी-सी रियासत के ताल्लुकेदार थे तथा उच्च कुल से संबंधित थे।

(ख) ‘ताल्लुकेदार’ शब्द का अर्थ क्या होता है? छोटी रियासत के ताल्लुकेदार कौन थे तथा इनकी प्रवृत्ति कैसी थी? (2)

**उत्तर** ताल्लुकेदार शब्द का अर्थ है-ज़मींदार या भूमिपति। छोटी रियासत के ताल्लुकेदार आनंदी के पिता भूपसिंह थे। वे बड़े उदार-चित्त और प्रतिभाशाली पुरुष थे, लेकिन दुर्भाग्य से उनके कोई लड़का न था।

(ग) गाँव की औरतें किसकी निंदक थीं और उन्हें अपना शत्रु क्यों समझती थीं? (3)

**उत्तर** गाँव की औरतें श्रीकंठ की निंदक थीं, क्योंकि वे संयुक्त परिवार को अधिक महत्त्व देते थे। उनका मानना था कि आजकल की स्त्रियाँ में मिल-जुलकर रहने में अरुचि देखने को मिलती है। श्रीकंठ औरतों की इस अरुचि को जाति और देश के लिए हानिकारक समझते थे, इसलिए स्त्रियाँ श्रीकंठ को अपना शत्रु समझती थीं।

(घ) भूपसिंह कौन था? उसकी आर्थिक स्थिति का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (3)

**उत्तर** आनंदी के पिता भूपसिंह एक छोटी-सी रियासत के बड़े ज़मींदार थे तथा उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ थी। वे धन-धान्य से परिपूर्ण व्यक्ति थे। सुख-सुविधाओं के पर्याप्त साधन उनके पास थे। किसी प्रकार की कमी उनके यहाँ नहीं दिखती थी।

4. जिस तरह सूखी लकड़ी जल्दी से जल उठती है, उसी तरह क्षुधा से बावला मनुष्य ज़रा-ज़रा सी बात पर तिनक जाता है। पृष्ठ सं. 34

(क) धर्मसंकट की स्थिति में कौन था व क्यों? (2)

**उत्तर** आनंदी के पिता भूपसिंह धर्मसंकट में थे, क्योंकि भूपसिंह अपनी पुत्री आनंदी का विवाह ऐसी जगह करना चाहते थे, जिससे न तो उन पर अधिक ऋण का बोझ हो और न ही स्वयं को भाग्यहीन समझना पड़े।

- (ख) लालबिहारी कौन था? उसने आनंदी को क्या पकाने को कहा? (2)  
**उत्तर** लालबिहारी, बेनीमाधव सिंह का छोटा बेटा व आनंदी का देवर था। वह स्वभाव से अत्यंत ही कठोर प्रवृत्ति का था। एक दिन लालबिहारी ने आनंदी को मांस बनाने को कहा।
- (ग) आनंदी के नए घर की स्थिति का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (3)  
**उत्तर** आनंदी के नए घर की स्थिति कुछ अलग ही थी। जिस प्रकार के वातावरण में वह बचपन से रही थी, वैसा वातावरण उसके नए घर (ससुराल) में नाममात्र को भी नहीं था। उसका नया घर किसी देहाती घर से कम न था। वहाँ घोड़े-हाथी तथा सैर करने के लिए बाग नहीं थे तथा न ही जमीन पर फर्श था, न ही दीवारों पर तस्वीरें थीं।
- (घ) लालबिहारी के क्रोध का क्या कारण था? सूखी लकड़ी की तुलना किससे की गई है? (3)  
**उत्तर** लालबिहारी जब खाना खाने बैठा तो उसे दाल में घी न मिला। पूछने पर पता चला कि घी तो खत्म हो गया है। इसी कारण लालबिहारी को गुस्सा आ गया और उसने आनंदी के घरवालों को बुरा-भला बोल दिया। सूखी लकड़ी की तुलना भूख से पीड़ित व्यक्ति से की गई है।
5. “उन्हें कदाचित ही क्रोध आता था, पर स्त्रियों के आँसू पुरुषों की क्रोधान्नि भड़काने में घी का काम कर देते हैं?” **पृष्ठ सं. 36**
- (क) आनंदी व लालबिहारी की नोक-झोंक का क्या कारण था? (2)  
**उत्तर** आनंदी ने मांस पकाते समय सारा घी उसी में डाल दिया था। लालबिहारी खाना खाने बैठा तो दाल में घी न था। दाल में घी न मिलने पर ही लालबिहारी भड़क उठा। दोनों के बीच नोक-झोंक का यही कारण था।
- (ख) आनंदी को क्रोध क्यों आ गया? (2)  
**उत्तर** आनंदी का विवाह श्रीकंठ के साथ हुआ था तथा श्रीकंठ के यह कहने पर कि तुमने आजकल घर में यह क्या उपद्रव मचा रखा है। यह सुनकर आनंदी को क्रोध आ गया।
- (ग) “उन्हें कदाचित ही क्रोध आता था।” प्रस्तुत पंक्ति में ‘उन्हें’ शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है व उन्हें क्रोध क्यों आ गया? (4)  
**उत्तर** प्रस्तुत पंक्ति में ‘उन्हें’ शब्द श्रीकंठ के लिए प्रयोग किया गया है। वे अत्यंत ही धैर्यवान व शांत स्वभाव वाले पुरुष थे। उन्हें क्रोध नहीं आता था, किंतु अपने भाई द्वारा खड़ाऊँ आनंदी पर फेंककर मारने के कारण उन्हें क्रोध आ गया।
- (घ) उपरोक्त पंक्तियों के आधार पर श्रीकंठ के चरित्र का वर्णन कीजिए। (3)  
**उत्तर** श्रीकंठ स्वभाव से अत्यंत ही शांत व धैर्यवान प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उन्हें क्रोध नाममात्र को ही आता था। स्त्रियों के प्रति उनकी विशेष सहानुभूति थी। वे पाश्चात्य सामाजिक प्रथाओं के निंदक तथा सिद्धांतवादी विचारधारा के पक्षधर थे। इसके साथ ही स्त्रियों के प्रति होते अत्याचार के विरोधी थे।
6. “पर जिस स्त्री की मान-प्रतिष्ठा का मैं ईश्वर के दरबार में उत्तरदाता हूँ, उसके प्रति ऐसा घोर अन्याय और पशुवत व्यवहार असह्य है।” **पृष्ठ सं. 37**
- (क) बेनीमाधव के यह कहने पर कि ‘स्त्रियाँ घर का नाश कर देती हैं, उन्हें सिर चढ़ाना अच्छा नहीं है’ का श्रीकंठ क्या उत्तर देते हैं? (2)  
**उत्तर** बेनीमाधव के कथन का उत्तर देते हुए श्रीकंठ कहता है कि मैं मूर्ख नहीं हूँ मेरे ही समझाने-बुझाने से इसी गाँव में कई घर सँभल गए हैं।
- (ख) वक्ता के लिए कौन-सी बात असह्य थी तथा क्यों? (2)  
**उत्तर** लालबिहारी द्वारा अपनी पत्नी आनंदी के साथ किया गया घोर अन्याय और पशुवत व्यवहार श्रीकंठ के लिए असह्य था, क्योंकि वह स्त्रियों का बहुत सम्मान करते थे और अपने ही घर की स्त्री के अपमान के कारण वह आहत थे।
- (ग) वक्ता ईश्वर के दरबार में किस बात के लिए उत्तरदाता है, क्यों? (3)  
**उत्तर** वक्ता श्रीकंठ ईश्वर के दरबार में अपनी पत्नी आनंदी की मान-प्रतिष्ठा की रक्षा करने के लिए उत्तरदाता है, क्योंकि विवाह के समय ईश्वर को साक्षी मानकर उसने उसके सम्मान की रक्षा का वचन दिया था। इसलिए लालबिहारी द्वारा किए गए अपमान से आनंदी की रक्षा करना उसका कर्तव्य था।
- (घ) वक्ता के कथन से उसके चरित्र की किन-किन विशेषताओं का पता चलता है? (3)  
**उत्तर** वक्ता श्रीकंठ एक धैर्यवान और शांत प्रकृति का पुरुष था। वह अपने पिता का बहुत आदर करता था, लेकिन वह स्त्रियों की मान-प्रतिष्ठा की रक्षा करने के प्रति भी सचेत था। इसलिए वह अपनी पत्नी पर किए गए अत्याचार को बर्दाश्त नहीं कर पाता और लालबिहारी को अपना भाई नहीं समझना चाहता।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. लालबिहारी दरवाज़े की चौखट पर चुपचाप खड़ा बड़े भाई की बातें सुन रहा था। वह श्रीकंठ के सामने चारपाई पर बैठ जाए, हुक्का पी ले या पान खा ले। बाप का भी वह लिहाज न करता था जितना बड़े भाई का। **पृष्ठ सं. 38**
- (क) लालबिहारी कहाँ और क्या सुन रहा था? (2)
- (ख) दंगल में लालबिहारी द्वारा अपने से तगड़े जवान को पछाड़ने पर श्रीकंठ ने क्या किया था? (2)
- (ग) श्रीकंठ ने आवेश में आकर अपने पिता से क्या कहा? (3)
- (घ) ‘बाप का भी वह लिहाज न करता था जितना बड़े भाई का’ आशय स्पष्ट कीजिए। (3)
2. बेनीमाधव सिंह बाहर से आ रहे थे। दोनों भाइयों को गले मिलते देखकर आनंद से पुलकित हो गए और बोल उठे, “बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं। बिगड़ता हुआ काम बना लेती हैं।” **पृष्ठ सं. 40**
- (क) बेनीमाधव क्या देखकर पुलकित हो उठे? (2)
- (ख) श्रीकंठ ने काँपते हुए स्वर में लालबिहारी से क्या कहा? (2)
- (ग) बेनीमाधव ने आनंदी की प्रशंसा में क्या कहा और क्यों? (3)
- (घ) “बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं।” इस कथन को समझाइए। (3)

# संदेह

## जयशंकर प्रसाद

### लेखक परिचय

बहुमुखी प्रतिभा के धनी व प्रसिद्ध छायावादी साहित्यकार जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी के एक प्रतिष्ठित सूँघनी-साहू वैश्य परिवार में 1889 ई. में हुआ था। इन्होंने अंग्रेज़ी, संस्कृत, हिंदी, उर्दू तथा फ़ारसी भाषाओं का गहन अध्ययन किया था। बाल्यकाल से ही इनकी कविता के प्रति विशेष रुचि थी। प्रारंभ में इनकी रचनाओं पर ब्रज भाषा का प्रयोग देखने को मिलता है, किंतु बाद में इन्होंने खड़ी बोली को अपनाया। प्रसाद जी ने कहानी के साथ-साथ नाटक, उपन्यास आदि भी लिखे हैं। अजातशत्रु, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी इनके प्रसिद्ध नाटक हैं। कंकाल और तितली-उपन्यास; काव्य और कला-निबंध; कामायनी, आँसू लहर, झरना-काव्य तथा आकाशदीप, इंद्रजाल, आँधी और छाया-कहानी संग्रह हैं। इनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग स्पष्टतः परिलक्षित होता है। वर्ष 1937 में 48 वर्ष की अल्पायु में ही प्रसाद जी का स्वर्गवास हो गया।

### कहानी का परिचय

यह कहानी द्वंद्व उत्पन्न करती हुई एक ऐसे पुरुष की ओर संकेत करती है, जो असमंजस की स्थिति में रहता है। रामनिहाल एक ऐसा व्यक्ति है, जो काम करने के लिए 'श्यामा' के घर में किराए पर रह रहा है। श्यामा का पति अब इस दुनिया में नहीं था। श्यामा को रामनिहाल पर संदेह होता है कि वह उससे प्रेम करता है। दूसरी ओर, रामनिहाल के पास मनोरमा के पत्र आते हैं कि वह उसकी मदद के लिए उसके पास चला आए।

इससे रामनिहाल को यह संदेह होता है कि मनोरमा उससे प्रेम करने लगी है। रामनिहाल इसी कारण असमंजस की स्थिति में है। वह श्यामा के घर को छोड़कर नहीं जाना चाहता, किंतु मनोरमा की मदद के लिए उसे श्यामा का घर छोड़कर जाना ही होगा। इसी कारण रामनिहाल की आँखों से निरंतर आँसू बहते रहते हैं। इसके साथ ही वह श्यामा के प्रति अपने प्रेमभाव को छुपाता है, किंतु श्यामा, रामनिहाल द्वारा हाथ में लिए अपने चित्र को देखकर समझ जाती है कि रामनिहाल उससे प्रेम करता है और उसके इस कार्य पर हँसती है तथा उसे मनोरमा की मदद कर वापस लौट आने के लिए कहती है।

### पात्र-परिचय

#### रामनिहाल

रामनिहाल एक महत्वाकांक्षी और अस्थिर मन का व्यक्ति है। वह काम के लिए अपने घर से दूर श्यामा के घर में किराए पर रहता है। वह भावुक प्रवृत्ति का व्यक्ति भी है। श्यामा के घर से जाने के बारे में सोचकर वह अत्यंत भावुक हो जाता है। उसका मानना है कि अधिक चतुरता व्यक्ति के लिए हानिकारक है, क्योंकि अधिक चतुर व्यक्ति स्वयं को अभागा बना लेता है और ईश्वर की कृपा-दृष्टि से वंचित हो जाता है। जब रामनिहाल श्यामा के घर में आता है, तो उसे ऐसा लगता है कि उसे उसका घर मिल गया। मनोरमा द्वारा भेजे गए पत्रों को देखकर रामनिहाल को संदेह होता है कि मनोरमा उसे प्यार करती है और उसे यह भी लगने लगता है कि वह श्यामा से प्यार करता है।

#### श्यामा

श्यामा एक आदर्श नारी की प्रतिमूर्ति है। वह चरित्रवती महिला के साथ-साथ बुद्धिमती भी है। वह विधवा का जीवन व्यतीत कर रही है। रामनिहाल द्वारा सारी बात ज्ञात होने पर भी वह क्रोधित नहीं होती है और उसे वास्तविकता तथा संदेह में अंतर बताती है। वह उसे समझाती है कि प्यार करना बहुत कठिन है और उसे मनोरमा की सहायता हेतु उसके पास जाने के लिए कहती है।

## मनोरमा

मनोरमा एक सुंदर और सुशील स्त्री है, किंतु उसका पति मोहन बाबू उस पर संदेह करता है और उसे बुरे चरित्र वाली स्त्री समझता है। मनोरमा जानती है कि ब्रजकिशोर उसके पति को पागल साबित करके उसकी सारी संपत्ति प्राप्त करना चाहता है। इसलिए वह अपने पति की रक्षा हेतु रामनिहाल को पत्र लिखकर उससे सहायता माँगती है।

## मोहन बाबू

मोहन बाबू मनोरमा के पति हैं। वे भावुक और संवेदनशील हैं। उन्हें लगता है कि मनोरमा और ब्रजकिशोर मिलकर उन्हें पागल सिद्ध करना चाहते हैं, जिस कारण उनका हृदय आहत है। गंगा घाट पर दीपदान का दार्शनिक अर्थ समझाते हुए उनकी कल्पना शक्ति का अनुभव होता है। भ्रम रूपी जाल में फँसकर उनकी मानसिक स्थिति खराब हो जाती है और वह पागल हो जाते हैं।

## कहानी का सार

### रामनिहाल का श्यामा के घर में किराए पर रहना

रामनिहाल एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति था, जो मकान की तलाश में था। श्यामा उसे अपने घर में किराए पर रखती है। रामनिहाल स्वयं पर श्यामा का बहुत बड़ा उपकार मानता है। वह कहता है कि श्यामा ने मुझे उस समय सहारा दिया, जब मैं बेघर था। रामनिहाल के मन में उसके प्रति प्रेमभाव उत्पन्न हो जाता है, किंतु श्यामा, रामनिहाल को मात्र अपना दोस्त समझती थी।

### रामनिहाल की असमंजस व भावुक प्रवृत्ति

रामनिहाल अत्यंत भावुक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। वह अपना बिखरा हुआ सामान बाँधने में लगा था। शीशे पर पड़ती धूप उसे तड़पा रही थी। उसके हाथों में एक कागज़ों का बंडल था, जिसे संदूक में रखने से पहले वह खोलना चाहता था। वह उसे पढ़ना चाहता था, किंतु स्वयं ही खुद को मना कर रहा था। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसके हाथों में एक चित्र था और आँखों से आँसू झरना बनकर लगातार बह रहे थे।

### श्यामा पवित्रता की मूर्त

श्यामा एक समृद्ध व पवित्र स्त्री थी। वह एक विधवा का जीवन व्यतीत कर रही थी, किंतु उसके चरित्र में कोई दोष नहीं था। वह रामनिहाल को मात्र अपना अच्छा दोस्त समझती थी। रामनिहाल को श्यामा के विधवापन का आदर्श रूप देखकर लगता है कि मनुष्य अपनी वासनाओं का दमन कर सकता है। उनके अनुसार श्यामा ने न जाने कितनी ही देवप्रतिमाओं को अपने हृदय की कोठरी में दबा रखा है।

### रामनिहाल की परोपकारी प्रवृत्ति

रामनिहाल के मन में परोपकार की भावना विद्यमान थी। ब्रजकिशोर बाबू, रामनिहाल के सहकर्मी थे। समय के अभाव के कारण ब्रजकिशोर ने रामनिहाल को एक काम की जिम्मेदारी दी। ब्रजकिशोर के घर अतिथियों के रूप में आए मोहन व मनोरमा को बनारस के घाटों पर घुमाने की

जिम्मेदारी अब रामनिहाल के ऊपर थी। रामनिहाल प्रसन्नतापूर्वक ब्रजकिशोर द्वारा रखे गए प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता है तथा मोहन बाबू और मनोरमा को घाटों पर घुमाता है। इसी बीच रामनिहाल, मनोरमा के संपर्क में आता है।

### मोहन बाबू का संदेह

भ्रमण के दौरान मोहन बाबू को मनोरमा के चरित्र पर संदेह होता है। वह सोचता है कि उसकी पत्नी (मनोरमा) और ब्रजकिशोर ने मिलकर षड्यंत्र रचा है। वह सोचता है कि ये लोग मुझे पागल बनाना चाहते हैं। मोहन बाबू संसार द्वारा दिए गए विश्वासघात से परेशान हो उठने की बात कहते हैं। वे मनोरमा से कहते हैं कि मुझे निःस्वार्थ प्रेम की आवश्यकता है, जो मुझे जीवन में कभी नहीं मिला, किंतु मनोरमा, मोहन के संदेह को व्यर्थ बताती है।

### मनोरमा की दयनीय स्थिति

मनोरमा की स्थिति बड़ी ही दयनीय थी। उसका पति उसके चरित्र पर संदेह करता था। मनोरमा, रामनिहाल को अपनी पारिवारिक स्थिति व क्लेश के बारे में बताती है। मनोरमा न केवल अपनी दयनीय स्थिति के बारे में बताती है, अपितु उसकी आँखें सहायता के लिए लगातार रामनिहाल की ओर टकटकी लगाए रहती हैं, मानो रामनिहाल से मदद की गुहार लगाती हों। मनोरमा अपने पति से दुःखी थी, क्योंकि वह सदैव उसकी आलोचना किया करता था।

### श्यामा-एक समझदार महिला

श्यामा एक समझदार महिला थी। वह कहानी में शुरू से अंत तक अपनी समझदारी का परिचय देती है, जब उसे पता चलता है कि रामनिहाल उसे एकतरफा प्रेम करता है, तो वह रामनिहाल को समझाती है, वहीं दूसरी तरफ अंत में भी वह रामनिहाल को समझाती है कि एक दुःखी स्त्री मनोरमा तुम्हें सहायता के लिए बुला रही है। जाओ, तुम उसकी सहायता करो और फिर वापस आ जाना। तुम्हारा सामान यहीं रहेगा। तुम्हें अभी यहीं रहना है। तुम्हें मेरी संरक्षकता की आवश्यकता है।

## कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता

प्रस्तुत कहानी 'संदेह' के माध्यम से छायावादी साहित्यकार जयशंकर प्रसाद ने यह स्पष्ट किया है कि कभी-कभी परिस्थितियाँ ऐसे-ऐसे संदेह उत्पन्न करती हैं, जो वास्तविकता से बिलकुल परे ही होते हैं। संदेह की यह स्थिति कभी-कभी इतनी गंभीर हो जाती है कि व्यक्ति अपनी मानसिक क्षमता खो देता है अर्थात् पागल हो जाता है। इसलिए संदेहों को दूर करना आवश्यक है, क्योंकि संदेह ही समस्याओं को उत्पन्न करते हैं।

प्रस्तुत कहानी का शीर्षक 'संदेह' पूर्ण रूप से सार्थक है, क्योंकि कहानी में मोहनबाबू को संदेह था कि उनकी पत्नी मनोरमा ब्रजकिशोर के साथ मिलकर उन्हें पागल बनाना चाहती है। रामनिहाल को संदेह था कि मनोरमा उससे प्रेम करती है, इसलिए अपने पास बुला रही है। उसे तो यहाँ तक भी संदेह था कि वह श्यामा से प्रेम करता है। इस प्रकार पूरी कहानी कुछ संदेहों के इर्द-गिर्द ही घूमती रहती है। अतः शीर्षक पूर्णतः उपयुक्त है।

## शब्दार्थ

शब्द अर्थ, पाठ्य-पुस्तक साहित्य सागर में दिए गए भाग संक्षिप्त कहानियों के पृष्ठों के अनुसार हैं—

**पृष्ठ सं. 42** जंगला—खिड़की (window); उज्ज्वल—सफेद, स्वच्छ, चमकीला (bright, clean); ध्यानमग्न—ध्यान में डूबा हुआ (meditating); बंडल—पुलिंगा, गट्टा (package); विराग—अरुचि (absence of desire); निर्झरिणी—सरिता (river); हल्ला मचाना—शोर मचाना (scream); विस्मृत—भुलाया हुआ (forgotten); प्रायश्चित्त—ग्लानिवश (remorse); प्रस्तुत होना—सामने उपस्थित होना (introduce)।

**पृष्ठ सं. 43** प्रतिबिंब—परछाई (shadow); वैधव्य—विधवापन (widowhood); वासना—कामना, इच्छा (lust); दमन करना—बलपूर्वक शांत करना (suppression); अवलंब—सहारा (support); गृहहीन—बेघर (homeless); उत्तराधिकार—विरासत (inheritance); गृहस्थी—घर-बार और बाल-बच्चे (husbandry); अभागा—जिसका भाग्य अनुकूल न हो (unlucky); महत्वाकांक्षा—बड़ा बनने की इच्छा (ambition); उन्नतिशील—आगे बढ़ने वाला (progressive);

दाँव—अवसर (bet, trick); मृग-मरीचिका—ऐसी तृष्णा, जो संभव न हो (mirage); सुशिक्षित—अच्छी तरह पढ़ा-लिखा (highly educated); व्यर्थ—बेकार (waste)।

**पृष्ठ सं. 44** शुभचिंतक—हितैषी (wellwisher); बजरा—बड़ी नाव (big boat); सुरभित—सुगंधित (fragrant); निःश्वास—गहरी साँस (deep breath); दीपक—दीया (lamp); मतभेद—अंतर (difference)।

**पृष्ठ सं. 45** अनंत—जिसका अंत न हो (infinite); अनुभूति—अनुभव (feeling); विश्वासघात—धोखा देना (to betray); विक्षिप्त—परेशान (upset); विमुख—विरत, प्रतिकूल (unfavourable); अकपट—छलहीन (positive, earnest); निश्चेष्ट—जिसमें हलचल न हो (steady, motionless); षड्यंत्र—किसी के विरुद्ध कुछ करना (conspiracy); संख्या—एक विष (a kind of poison)।

**पृष्ठ सं. 46** कोमलता—नरमी (softness); ऊभ-चूभ—आशा और निराशा की अवस्था (state of hope and hopelessness); धृष्टता—उद्दंडता (audacity)।

**पृष्ठ सं. 47** दुश्चरित्रा—बुरा चरित्र (immorality); हतबुद्धि—मूर्ख (puzzle-headed, foolish); भ्रम—संदेह (delusion)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. किशोरी ने आकर हल्ला मचा दिया—“भाभी, अरे भाभी! देखा नहीं तूने, न! निहाल बाबू रो रहे हैं। अरे, तू चल भी!” **पृष्ठ सं. 42**

(क) रामनिहाल की भावुक प्रवृत्ति को दर्शाएँ तथा उनके हाथों में क्या था? (2)

**उत्तर** रामनिहाल एक भावुक प्रवृत्ति का व्यक्ति था, वह अपने चारों तरफ बिखरे सामान को इकट्ठा कर रहा था। शीशे पर पड़ती धूप उसे परेशान कर रही थी। उसके हाथों में एक कागज़ों का बंडल था।

(ख) रामनिहाल की असमंजस की स्थिति का क्या कारण था? (2)

**उत्तर** रामनिहाल की असमंजस की स्थिति का कारण यह था कि वह हाथों में रखे कागज़ के बंडल को न तो पढ़ पा रहा था और न ही उसे संदूक में रख पा रहा था।

कागज़ के बंडल को वह संदूक में रखने से पूर्व खोलना चाहता था। रामनिहाल को पढ़ने की इच्छा थी, किंतु वह उसे पढ़ने से हिचक रहा था।

(ग) कमरे में विद्यमान प्रतिमाओं का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (3)

**उत्तर** कमरे में दो प्रतिमाएँ विद्यमान थीं, जिसमें एक बुद्धदेव की तथा दूसरी रामनिहाल की थी। कमरे में रखी बुद्ध की प्रतिमा चमक रही थी तथा ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उस प्रतिमा का मुख प्रसन्न था।

बुद्धदेव अपनी विराग-महिमा में निमग्न से प्रतीत हो रहे थे, किंतु रामनिहाल एक अचल व्यक्ति की तरह प्रतीत हो रहा था मानो वह प्रसन्न नहीं था।

(घ) “भाभी, अरे भाभी! देखा नहीं तूने, न! निहाल बाबू रो रहे हैं।” यह किसने, किससे व क्यों कहा? (3)

**उत्तर** “भाभी, अरे भाभी! देखा नहीं तूने, न! निहाल बाबू रो रहे हैं।” यह किशोरी ने श्यामा से कहा। रामनिहाल की आँखों में आँसू देखकर किशोरी ने हल्ला मचाना शुरू कर दिया। वस्तुतः वह किसी कारण से दुःखी था और अपना दुःख किसी से बाँटना नहीं चाहता था। इसलिए एकांत में चुपचाप रो रहा था, किंतु किशोरी ने उसे रोता हुआ देखकर शोर मचा दिया और अपनी भाभी को यह बात बता दी।

2. भारत के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में, छोटा-मोटा व्यवसाय, नौकरी और पेट पालने की सुविधाओं को खोजता हुआ, जब तुम्हारे घर में आया, तो मुझे विश्वास हुआ कि मैंने घर पाया। मैं जब से संसार को जानने लगा, तभी से मैं गृहहीन था। **पृष्ठ सं. 43**

(क) नौकरी की तलाश में कौन था और वह किसके घर में किराए पर रहता था? (2)

**उत्तर** रामनिहाल एक शिक्षित युवक था, परंतु नौकरी की तलाश में वह इधर-उधर भटक रहा था। रामनिहाल नौकरी की तलाश में घर से दूर किराए पर रहने के लिए आया था और वह श्यामा के घर में किराए पर रहता था।

(ख) श्यामा कौन थी? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** श्यामा एक समृद्ध एवं समझदार स्त्री थी। वह एक विधवा का जीवन व्यतीत कर रही थी, किंतु उसके चरित्र में कोई दोष नहीं था। वह पवित्रता की मूर्त थी। वह रामनिहाल की बहुत मदद करती है और पूरी निष्ठा, पवित्रता और दृढ़ता के साथ रामनिहाल को अपना मित्र मानती है।



- (ग) रामनिहाल ने श्यामा के किस आदर्श पर विश्वास जताया है? (3)  
**उत्तर** रामनिहाल ने श्यामा के विधवापन का आदर्श देखकर विश्वास जताया है। उन्होंने कहा कि तुम्हारे विधवापन का आदर्श देखकर ही मेरे हृदय में विश्वास हुआ कि मनुष्य अपनी वासनाओं का दमन कर सकता है, किंतु तुम्हारा अवलंब बड़ा दृढ़ है। तुम्हारे सामने बालकों का झुंड हँसता है, खेलता है, लड़ता है, झगड़ता है, किंतु फिर भी तुमने जैसे बहुत-सी देवप्रतिमाएँ अपने हृदय की कोठरी में दबा रखी हैं।
- (घ) “तो मुझे विश्वास हुआ कि मैंने घर पाया। मैं जब से संसार को जानने लगा, तभी से गृहहीन था।” यह किसने, किससे एवं क्यों कहा है? यहाँ ‘मैं’ शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है? (3)  
**उत्तर** “तो मुझे विश्वास हुआ कि मैंने घर पाया। मैं जब से संसार को जानने लगा, तभी से गृहहीन था।” यह रामनिहाल ने श्यामा से कहा, क्योंकि रामनिहाल श्यामा को विश्वास दिलाना चाहता था कि वह श्यामा के घर को अपना घर समझता है। रामनिहाल श्यामा से प्रेम करने लगा। वह श्यामा से विवाह करना चाहता था और अपनी इसी भावना को प्रकट करने के लिए उसने श्यामा से कहा था कि उसने अपना घर पा लिया है। यहाँ ‘मैं’ शब्द रामनिहाल के लिए ही प्रयुक्त किया गया है।
3. “मैंने स्वीकार कर लिया। ऑफिस में बैठा रहा। थोड़ी देर में भीतर से एक पुरुष के साथ एक सुंदर स्त्री निकली और मैं समझ गया कि मुझे इन्हीं लोगों के साथ जाना होगा।” **पृष्ठ सं. 44**
- (क) ब्रजकिशोर बाबू कौन थे? (2)  
**उत्तर** ब्रजकिशोर बाबू रामनिहाल के ऑफिस में ही काम करते थे। रामनिहाल के मन में परोपकार की भावना विद्यमान थी। ब्रजकिशोर बाबू व रामनिहाल दोनों ही सहकर्मि थे।
- (ख) मोहन व मनोरमा कौन थे और वे किसके घर आए थे और क्यों? (2)  
**उत्तर** मोहन व मनोरमा पति-पत्नी थे। वे ब्रजकिशोर के संबंधी थे तथा ब्रजकिशोर के घर अतिथि के रूप में बनारस के घाटों पर घूमने के लिए आए थे।
- (ग) “मैंने स्वीकार कर लिया।” यह किसने कहा व इसमें क्या स्वीकार करने की बात छिपी है? (3)  
**उत्तर** “मैंने स्वीकार कर लिया।” यह रामनिहाल ने कहा। समयाभाव के कारण ब्रजमोहन रामनिहाल से अपने अतिथियों को बनारस के घाटों का भ्रमण करवाने की ज़िम्मेदारी सौंपता है। अतः इसमें ब्रजकिशोर के अतिथियों को गंगा के घाट पर घुमाने ले जाने की स्वीकारात्मक भावना छिपी हुई है।
- (घ) सुंदर स्त्री कौन थी? उसकी व्यथा क्या थी? (3)  
**उत्तर** सुंदर स्त्री मनोरमा थी। उसकी व्यथा यह थी कि उसका पति मोहन उस पर संदेह करता है कि ब्रजकिशोर और मनोरमा दोनों मिलकर उसे पागल बना देना चाहते हैं। अपने संदेह के कारण मोहन की हालत पागलों जैसी हो गई थी। वह पागलों जैसी हरकतें करने लगता था।
4. “तुम लोगों ने मुझे पागल समझ लिया है, मैं यह जानता हूँ ओह! संसार की विश्वासघात की ठोकरों ने मेरे हृदय को विक्षिप्त बना दिया है।” **पृष्ठ सं. 45**

- (क) ब्रजकिशोर बाबू स्वयं गंगा घाट पर क्यों नहीं गए? (2)  
**उत्तर** आवश्यक काम एवं समयाभाव के कारण ब्रजकिशोर बाबू स्वयं अपने अतिथियों के साथ गंगा घाट पर नहीं जा सके। उन्होंने रामनिहाल को मोहन बाबू व मनोरमा के साथ गंगा घुमाने के लिए भेज दिया।
- (ख) मनोरमा कौन थी व उसके पति की मानसिक स्थिति का वर्णन कीजिए? (2)  
**उत्तर** मनोरमा एक दुखिया स्त्री थी। उसके पति की मानसिक स्थिति कुछ ठीक नहीं थी। वह कभी-कभी पागलों जैसा व्यवहार भी करता था, जिसके कारण मनोरमा दुःखी रहती थी।
- (ग) “तुम लोगों ने मुझे पागल समझ लिया” यह किसने व किससे कहा है तथा यहाँ पागल समझने की बात किसके लिए कही गई है? (3)  
**उत्तर** “तुम लोगों ने मुझे पागल समझ लिया” यह मोहन बाबू ने मनोरमा व ब्रजकिशोर के लिए कहा है। यहाँ मोहन बाबू को ही पागल समझने की बात कही गई है। उसे संदेह है कि वे दोनों मिले हुए हैं और उसे पागल बना देना चाहते हैं।
- (घ) “विश्वासघात की ठोकरों ने मेरे हृदय को विक्षिप्त बना दिया है।” किसने, किससे कहा? (3)  
**उत्तर** “विश्वासघात की ठोकरों ने मेरे हृदय को विक्षिप्त बना दिया है।” यह मोहन ने मनोरमा से कहा। उसे संदेह है कि ब्रजकिशोर व मनोरमा मिलकर उसे पागल बनाना चाहते हैं। वह मनोरमा से कहता है कि जब भी मैं मानसिक रूप से परेशान हुआ, मुझे किसी ने सहारा नहीं दिया, लेकिन मैंने विपत्ति में सबकी सहायता की। मैं अब सहन नहीं कर सकता। मुझे कपटहीन प्यार की आवश्यकता है।
5. उसने धीरे-से मुझसे कहा, “रामनिहाल जी! मेरी विपत्ति में आप सहायता न कीजिएगा! मैं अवाक् था।” **पृष्ठ सं. 46**
- (क) मोहन बाबू के अनुसार षड्यंत्र किसने रचा था? स्पष्ट कीजिए। (2)  
**उत्तर** मोहन बाबू के अनुसार, ब्रजकिशोर बाबू व मनोरमा ने मिलकर षड्यंत्र रचा था। मोहन बाबू अपने संबंधी ब्रजकिशोर के घर अतिथि के रूप में आए थे। समय की कमी के कारण ब्रजकिशोर ने रामनिहाल को मोहन व मनोरमा की ज़िम्मेदारी दे दी थी।
- (ख) ‘संख्या’ मँगाने की बात किसने व क्यों कही? (2)  
**उत्तर** ‘संख्या’ मँगाने की बात मनोरमा ने अपने पति मोहन बाबू से कही, क्योंकि उनके मन में मनोरमा के प्रति संदेह उत्पन्न हो गया था।
- (ग) “मेरी विपत्ति में आप सहायता न कीजिएगा।” यह किसने व किससे कहा? यहाँ किस विपत्ति की बात की गई है? (3)  
**उत्तर** “मेरी विपत्ति में आप सहायता न कीजिएगा।” यह मनोरमा ने रामनिहाल से कहा।  
 मनोरमा अपने पति से परेशान थी। कभी-कभी उसका पति पागलों जैसी हरकतें करता था। बाद में वह मनोरमा पर संदेह भी करने लगता है। जिस कारण वह बहुत परेशान हो गई थी। अपनी इसी विपत्ति की बात मनोरमा ने की है।
- (घ) ‘अवाक्’ शब्द का अर्थ बताते हुए बताइए कि उपरोक्त पंक्तियों में ‘मैं’ शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है तथा वह अवाक् क्यों था? (3)  
**उत्तर** अवाक् शब्द का अर्थ है—जो कुछ बोल पाने की स्थिति में न हो। यहाँ ‘मैं’ शब्द रामनिहाल के लिए प्रयोग किया गया है।



मनोरमा द्वारा उससे मदद माँगे जाने पर वह कुछ बोल पाने की स्थिति में नहीं था, इसलिए वह अवाक् था।

6. “प्यार करना बड़ा कठिन है। तुम इस खेल को नहीं जानते। इसके चक्कर में पड़ना भी मत। हाँ, एक दुखिया स्त्री तुमको अपनी सहायता के लिए बुला रही है। जाओ, उसकी सहायता करके लौट आओ।” **पृष्ठ सं. 47**

(क) “प्यार करना बड़ा कठिन है।” यह कथन किसने और किससे कहा है? (2)

**उत्तर** “प्यार करना बड़ा कठिन है।” यह कथन श्यामा ने रामनिहाल से कहा, क्योंकि रामनिहाल उससे प्यार करने लगा था। वह उससे प्यार के चक्कर में न पड़ने के लिए भी कहती है।

(ख) रामनिहाल को किस बात का संदेह था और क्यों? (2)

**उत्तर** रामनिहाल को इस बात का संदेह था कि मनोरमा उससे प्यार करती है और वह बुरे चरित्र वाली स्त्री है, क्योंकि मनोरमा उसे बुलाने के लिए बार-बार चिट्ठियाँ भेज रही थी।

(ग) रामनिहाल के हाथ में किसका चित्र था? चित्र देखकर श्यामा की क्या प्रतिक्रिया थी? (3)

**उत्तर** रामनिहाल के हाथ में श्यामा का चित्र था। चित्र देखकर श्यामा ने आश्चर्य भरे स्वरों में रामनिहाल से कहा कि तुम समझते हो कि मनोरमा तुम्हें प्यार करती है और तुम मुझे। इसलिए तुमने कायरों की तरह यहाँ से भागने की तैयारी कर ली है।

(घ) श्यामा ने रामनिहाल को समझाते हुए क्या कहा? (3)

**उत्तर** श्यामा ने रामनिहाल को समझाते हुए कहा कि प्यार करना बहुत कठिन है। इसके चक्कर में मत पड़ो। एक दुखिया स्त्री तुम्हें अपनी सहायता हेतु बुला रही है, वहाँ जाकर उसकी सहायता करो। उसके पश्चात् यहीं लौट आओ, क्योंकि तुम्हें मेरी संरक्षकता की आवश्यकता है। इसी के साथ श्यामा ने कहा कि तुम अपने हृदय का सारा भ्रम निकाल दो, यह तुम्हारा संदेह था वास्तविकता इससे भिन्न है।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. “कोई चिंता नहीं, किंतु ऊपर जाकर बैठ जाने पर भी मेरे कानों के समीप उस सुंदर मुख का सुरभित निःश्वास अपनी अनुभूति दे रहा था। मैंने मन को शांत किया। चाँदनी निकल आई थी। घाट पर आकाशदीप जल रहे थे और गंगा की धारा में भी छोटे-छोटे दीपक बहते हुए दिखाई देते थे।” **पृष्ठ सं. 44**

- (क) उपरोक्त गद्यांश में ‘मेरे’ शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? (2)  
 (ख) मनोरमा ने रामनिहाल के कान में धीरे से क्या कहा? (2)  
 (ग) संध्या के समय गंगा घाट का क्या नजारा था? (3)  
 (घ) मनोरमा और मोहन बाबू के अनुसार दीपदान का क्या अर्थ है? (3)

2. सचमुच मैं देख रहा था। गंगा की घोर धारा पर बजरा फिसल रहा था। नक्षत्र बिखर रहे थे और एक सुंदर युवती मेरा आश्रय खोज रही थी। अपनी सब लज्जा और अपमान लेकर वह दुर्वह संदेह भार से पीड़ित स्त्री जब कहती थी कि ‘आप देखते हैं न’ तब, मानो मुझसे प्रार्थना करती थी कि कुछ मत देखो, मेरा व्यंग्य उपहास देखने की वस्तु नहीं। **पृष्ठ सं. 46**

- (क) वक्ता कौन है? वह किसके बारे में सोच रहा था? (2)  
 (ख) सुंदर युवती किसका आश्रय खोज रही थी? और क्यों? (2)  
 (ग) ‘आप देखते हैं न’ किसके लिए, किन परिस्थितियों में कहा गया है? (3)  
 (घ) ‘मेरा व्यंग्य उपहास देखने की वस्तु नहीं’ किसने, किससे और क्यों कहा? (3)

3. “भगवान जाने इसमें क्या रहस्य है, किंतु संसार तो दूसरे को मूर्ख बनाने के व्यवसाय पर चल रहा है। मोहन अपने संदेह के कारण पूरा पागल बन गया है। तुम जो यह चिट्ठियों का बंडल देख रही हो, वह मनोरमा का है।” **पृष्ठ सं. 46**

- (क) ब्रजकिशोर किससे व क्या चाहता था? (2)  
 (ख) मोहनलाल की स्थिति कैसी हो गई थी? (2)  
 (ग) रामनिहाल के पास किसकी चिट्ठियाँ थीं और क्यों? (3)  
 (घ) रामनिहाल श्यामा से किस संदेह के बारे में बात करता है? (3)

# जामुन का पेड़ कृष्ण चंदर

## लेखक परिचय

हिंदी साहित्य जगत के विख्यात कहानीकार कृष्ण चंदर जी का जन्म वर्ष 1914 में पंजाब (अविभाजित) के गुजरावाला जिले के वजीराबाद गाँव में हुआ था।

प्रेमचंद जी के बाद कहानी विधा को कृष्ण चंदर ने ही सर्वोत्कृष्ट स्वरूप प्रदान किया। 'एक गिरजा-ए-खंदक', 'नज़ारे', 'ज़िंदगी का मोड़', 'अन्नदाता', 'मैं इंतज़ार करूँगा', 'यूकेलिप्टस की डाली' इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं। इन्होंने कहानियों के साथ-साथ उपन्यास व फ़िल्मी नाटक भी लिखे। 'शिकस्त', 'जरागाँव की रानी', 'सड़क वापस जाती है', 'आसमान रोशन हैं', 'बावन पत्ते', 'कागज़ की नाव', 'मेरी यादों के किनारे' आदि उपन्यास उल्लेखनीय हैं। इनकी रचनाओं में सामाजिक और राजनैतिक विषमताओं पर तीखा व्यंग्य किया गया है। 'गधे की आत्मकथा' इनका बहुचर्चित व्यंग्यात्मक उपन्यास है। इनका देहावसान वर्ष 1977 में हुआ।

## कहानी का परिचय

कृष्ण चंदर की प्रसिद्ध कहानी 'जामुन का पेड़' एक व्यंग्यात्मक कहानी है। यह कहानी एक ऐसे फलदायी पेड़ के चारों ओर घूमती है, जिसके नीचे दबकर एक व्यक्ति अपने प्राणों को त्याग देता है। कहानी के प्रारंभ में सेक्रेटेरियट के लॉन में जामुन का एक पेड़ गिर जाता है। देखने पर पता चलता है कि पेड़ के नीचे एक आदमी भी दबा हुआ है। सरकारी कार्यालयों में समय पर कोई भी फैसला नहीं लिया जाता और मामला ज्यों-का-त्यों एक विभाग से दूसरे विभाग तक चलता रहता है। सरकारी कार्यालयों में काम करने वाले कर्मचारियों को आम आदमी की परेशानी, पीड़ा, दुःख आदि की कोई चिंता नहीं होती।

इसी प्रकार यहाँ भी दबे हुए व्यक्ति की फाइल एक विभाग से दूसरे विभाग, दूसरे से तीसरे विभाग चलती रहती है, किंतु कोई निर्णय नहीं लिया जाता। अंत में पेड़ उठाने या काटने की कार्यवाही में इतनी अधिक देर हो जाती है कि पेड़ के नीचे दबा हुआ व्यक्ति अपने प्राणों से हाथ धो बैठता है।

## पात्र-परिचय

### माली

सेक्रेटेरियट के लॉन की देख-रेख माली करता है। माली ने ही सबसे पहले लॉन में जामुन के पेड़ के नीचे दबे आदमी को देखा था। माली ही ऐसा पात्र है, जो दबे हुए व्यक्ति की सहायता करता है, उसे बचाने का प्रयास करता है। माली दयालु स्वभाव का व्यक्ति होने के साथ-साथ परोपकारी, भावुक आदि गुणों से युक्त है।

### सुपरिंटेंडेंट

सुपरिंटेंडेंट कहानी का ऐसा पात्र है, जो भ्रष्टाचारी व कामचोर है। वह जामुन के पेड़ के नीचे दबे हुए आदमी को बचाने की बजाए उसकी फाइल एक विभाग से दूसरे विभाग में पहुँचाता है और अंततः पेड़ के नीचे दबे हुए आदमी की मृत्यु हो जाती है।

### चपरासी

चपरासी एक सुस्त, कामचोर और मोटा आदमी है, जो दबे हुए आदमी की सहायता करने के स्थान पर पेड़ की खूबियों को उजागर करता है।

## दबा हुआ आदमी

दबा हुआ आदमी कहानी का केंद्रबिंदु है, जिसके चारों ओर ही संपूर्ण कहानी चलती है। दबा हुआ आदमी असहाय है, जो भ्रष्टाचारी व्यवस्था से पीड़ित आम आदमी का प्रतिनिधित्व करता है और अंत में भ्रष्ट व्यवस्था से लड़ते-लड़ते अपने प्राण त्याग देता है।

## कहानी का सार

### जामुन के पेड़ की समस्या एवं लोगों की संवेदनहीनता

जामुन के पेड़ की समस्या कहानी में शुरू से अंत तक एक फाइल के रूप में इधर-से-उधर घूमती रहती है, किंतु पेड़ की समस्या का समाधान नहीं किया जाता।

लोगों को जब फलदायी जामुन के पेड़ के गिरने की बात पता चलती है, तो वे पेड़ के नीचे दबे व्यक्ति को अनदेखा करके पेड़ के गिरने पर दुःख व्यक्त करते हैं, किंतु दबे हुए व्यक्ति की पीड़ा व दुःख का एहसास नहीं करते।

### माली द्वारा दबे हुए व्यक्ति को बचाने का प्रयास करना

भीड़ में एकमात्र माली ही ऐसा व्यक्ति था, जो दबे हुए व्यक्ति को बचाने का प्रयास करना चाहता है। वह बोलता है कि पंद्रह-बीस माली, चपरासी और क्लर्क मिलकर दबे हुए आदमी को निकाल सकते हैं, किंतु सुपरिंटेंडेंट भ्रष्टाचारी व कामचोर होने के कारण उनको यह कार्य करने से भी रोक देता है। वह अंडर सेक्रेटरी से पूछने के लिए कहता है। इस प्रकार अंडर सेक्रेटरी डिप्टी सेक्रेटरी के पास जाता है तथा डिप्टी सेक्रेटरी ज्वाइंट सेक्रेटरी के पास जाता है। इसी में आधा दिन बीत जाता है।

### फाइल को विभिन्न विभागों में इधर-से-उधर घुमाना

फाइल एक-एक कड़ी के रूप में इधर-से-उधर घूमती रहती है, किंतु कोई भी विभाग इसका कोई निष्कर्ष नहीं निकालता। मिनिस्टर तक बात पहुँचती है, किंतु मिनिस्टर भी दबे हुए व्यक्ति की सहायता न कर फाइल पर कुछ कार्यवाही नहीं करता। मामला ज्यों-का-त्यों बरकरार रहता है। फाइल कृषि विभाग से व्यापार विभाग, व्यापार विभाग से पुनः कृषि विभाग होते हुए हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट पहुँचती है, किंतु फिर भी अंतिम निर्णय नहीं लिया जाता।

### पुलिस कांस्टेबल का दयाभाव व माली द्वारा दबे हुए व्यक्ति को खाना खिलाना

दबे हुए व्यक्ति के चारों ओर पुलिस का पहरा था। किसी भी व्यक्ति को उसके पास जाने की इजाजत नहीं दी जाती थी, किंतु दबे हुए व्यक्ति को देखकर एक पुलिस कांस्टेबल को दया आ गई और उसने माली को दबे हुए व्यक्ति को खाना खिलाने की इजाजत दे दी व माली ने उसे दाल-भात खिलाया।

### माली की दबे हुए व्यक्ति के प्रति सहानुभूति

माली को दबे हुए व्यक्ति को देखकर बहुत दया आ रही थी। वह मन से उसकी सहायता करना चाहता था, किंतु हर बार असफल रह जाता था। माली बार-बार दबे हुए व्यक्ति का धीरज बढ़ाता रहता था। माली दबे

हुए व्यक्ति से उसके घर के लोगों का भी पता पूछता है, जिससे वह उन्हें खबर कर दे, किंतु उसे पता चलता है कि दबा हुआ व्यक्ति लावारिस है।

### वहाँ उपस्थित लोगों की मानसिकता

वहाँ उपस्थित लोग सोचने लगते हैं कि यदि पेड़ को नहीं काटा जा सकता, तो आदमी को ही काटकर निकाल लिया जाए। लोगों की यह बात सुनकर दबा हुआ व्यक्ति डर गया और आपत्ति व्यक्त करते हुए बोला कि इस तरह तो मैं मर जाऊँगा।

### दबा हुआ व्यक्ति एक शायर के रूप में

माली एक बार फिर दबे हुए व्यक्ति को उम्मीद की किरण जगाता है और बोलता है कि कल सेक्रेटेरियट के सारे सेक्रेटेरियों की मीटिंग होगी और तुम्हारा केस रखा जाएगा। उम्मीद है सब ठीक हो जाएगा। दबा हुआ व्यक्ति शायरों के अंदाज में आह भरकर बोलता है, जिसे सुनकर माली अचंभे में पड़ जाता है कि दबा हुआ व्यक्ति कोई आम व्यक्ति नहीं, अपितु एक शायर है और यह बात बहुत ही जल्दी पूरे शहर में फैल जाती है और सेक्रेटेरियट का लॉन भाँति-भाँति के कवियों से भर जाता है।

### फाइल का कल्चरल डिपार्टमेंट पहुँचना

दबे हुए व्यक्ति के विषय में जब यह पता चला कि वह कवि है, तो उसकी फाइल को कल्चरल डिपार्टमेंट भेज दिया जाता है। कल्चरल डिपार्टमेंट के विभिन्न विभागों से घूमती हुई फाइल साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी के पास पहुँचती है। साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी को जब पता चलता है कि दबा हुआ व्यक्ति कवि है, तो वह उसका इंटरव्यू लेने पहुँच जाता है, किंतु उसकी स्थिति पर अब तक कोई निर्णय नहीं लिया जाता। अंततः साहित्य अकादमी द्वारा दबे हुए व्यक्ति को अपनी केंद्रीय शाखा का मंबर चुन लिया जाता है।

### फाइल का फॉरेस्ट डिपार्टमेंट पहुँचना

कल्चरल डिपार्टमेंट से फाइल फॉरेस्ट डिपार्टमेंट पहुँचती है। एक बार फिर माली दबे हुए व्यक्ति की आशा को टूटने नहीं देता। वह उसे आकर बताता है कि अब तुम जल्दी ही इस पेड़ से छुटकारा पा लोगे। अगले दिन जब फॉरेस्ट डिपार्टमेंट के व्यक्ति पेड़ को काटने आते हैं, तो पता चलता है कि यह पेड़ तो पीटोनिया राज्य के प्रधानमंत्री ने सेक्रेटेरियट के लॉन में लगाया था। एक बार फिर दो राज्यों के संबंधों के बिगड़ने के ख्याल से पेड़ को काटने से रोक दिया जाता है।

### प्रधानमंत्री का दौरे से वापस आना व दबे हुए व्यक्ति की दर्दनाक मौत

अंततः प्रधानमंत्री के दौरे से वापस आने की खबर मिलती है और पता चलता है कि विदेश विभाग इस पेड़ की फाइल उनके सामने पेश करेगा और प्रधानमंत्री का फैसला ही सबको मान्य होगा, प्रधानमंत्री पेड़ को काटने की इजाजत दे देते हैं, किंतु वे यह नहीं जानते थे कि अब बहुत देर हो चुकी थी। पेड़ के नीचे दबा हुआ व्यक्ति मर चुका था। उसका हाथ ठंडा था, आँखों की पुतलियाँ निर्जीव थीं और चींटियाँ एक लंबी कतार से उसके मुँह में जा रही थीं।

## कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता

प्रस्तुत कहानी 'जामुन का पेड़' के माध्यम से कहानीकार ने सरकारी दफ्तरों और विभागों द्वारा की जाने वाली लापरवाही पर तीखा व्यंग्य करते हुए यह बताया है कि सरकारी दफ्तरों में किसी भी समस्या का निवारण समय पर और सरलता से नहीं होता है।

कभी-कभी तो निर्णय आने में इतना विलंब हो जाता है कि उसका कोई महत्व ही नहीं रह जाता। यही कारण है कि साधारण व्यक्ति इन सबसे दूर रहना चाहता है।

कहानी का प्रारंभ सेक्रेटरीयट के लॉन में एक जामुन के पेड़ के गिरने से होता है। पेड़ के नीचे एक आदमी दब जाता है। वहाँ खड़े लोग उसे निकालने का प्रयास करते हैं, परंतु व्यापार विभाग का यह निर्णय आता है कि फाइल कृषि विभाग भेजी जा रही है। इस प्रकार फाइल एक विभाग से दूसरे विभाग जाती रहती है।

अंत में फाइल प्रधानमंत्री के पास पहुँचती है और पेड़ को काटने का हुक्म दे दिया जाता है। इस प्रकार जामुन के पेड़ के नीचे दबा व्यक्ति सरकारी कर्मचारियों की उदासीनता और लापरवाही के कारण दम तोड़ देता है। अतः शीर्षक 'जामुन का पेड़' पूर्ण रूप से सार्थक है।

## शब्दार्थ

शब्द-अर्थ, पाठ्य-पुस्तक साहित्य सागर में दिए गए भाग संक्षिप्त कहानियों के पृष्ठों के अनुसार हैं—

**पृष्ठ सं. 49** झक्कड़—तेज़ आँधी (storm); सेक्रेटरीयट—सचिवालय (secretariate); रुआँसा—रोनी सूरत (weepy); कराहना—आहें भरना (whine); ताज्जुब—आश्चर्य, हैरानी (surprised); कामचोर—काम से जी चुराने वाला (slacker)।

**पृष्ठ सं. 50** हुक्म—आज्ञा (order); हुकूमत—शासन, राज्य (government); अधीन—आश्रित (under); फौरन—शीघ्र ही (immediately)।

**पृष्ठ सं. 51** हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट—उद्यान विभाग (horticulture department); एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट—कृषि विभाग (agricultural department); वारिस—उत्तराधिकारी (heir)।

**पृष्ठ सं. 52** आपत्ति—एतराज (objection); युक्ति—विचार (idea); विरोध—बाधा (obstruction); छानबीन—जाँच-पड़ताल (scrutiny); तगाफुल—ध्यान न देना (neglect)।

**पृष्ठ सं. 53** लगाव—स्नेह, वास्ता (affinity); अनुरोध—विनती (request); आलोचना—गुण-दोष जाँचना (criticism); शोभित—शोभा से युक्त (embellished); प्रकाशित—छपना (publish)।

**पृष्ठ सं. 54** गुमनामी—बिना नाम के (nameless); बंदोबस्त—प्रबंध (arrange); वज़ीफा—सहायता वृत्ति (scholarship)।

**पृष्ठ सं. 55** फॉरेस्ट डिपार्टमेंट—वन विभाग (forest department); अंदेशा—शंका, संदेह (doubt); सदा के लिए—हमेशा (always); निर्जीव—जीवन-शक्ति से रहित (lifeless)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. "रात को बड़े जोर का झक्कड़ चला। सेक्रेटरीयट के लॉन में जामुन का पेड़ गिरा। सुबह को जब माली ने देखा तो उसे पता चला कि पेड़ के नीचे एक आदमी दबा पड़ा है।" **पृष्ठ सं. 49** [2018]

(क) माली ने यह देखकर क्या किया और क्यों? (2)

**उत्तर** माली यह देखकर भागा-भागा चपरासी के पास गया, क्योंकि आँधी के कारण जामुन का पेड़ गिरने से उसके नीचे आदमी दब गया था।

(ख) पहले, दूसरे और तीसरे क्लर्क ने क्या कहा? क्या तीसरे क्लर्क को उस दबे हुए आदमी से सहानुभूति थी? (2)

**उत्तर** पहले, दूसरे व तीसरे क्लर्क ने जामुन के पेड़ के प्रति भाव दिखाते हुए कहा कि कितना फलदार पेड़ था। इसकी जामुन कितनी रसीली होती थी, मेरे बच्चे इसकी जामुन कितनी खुशी से खाते थे। नहीं, तीसरे क्लर्क को भी उस दबे हुए आदमी से सहानुभूति नहीं थी।

(ग) माली ने क्या सुझाव दिया। मोटे चपरासी की बात सुनकर माली क्या बोला? (3)

**उत्तर** माली ने सुझाव दिया कि पेड़ को हटाकर इसे जल्दी से निकाल लेना चाहिए। मोटे चपरासी की बात सुनकर माली बोला कि अगर

सुपरिंटेंडेंट साहब हुक्म दें, तो पंद्रह बीस माली, चपरासी और क्लर्क मिलकर दबे हुए आदमी को बाहर निकाल सकते हैं।

(घ) कहानी के अंत में क्या हुआ था? देर से मिलने वाला न्याय महत्वहीन होता है, कैसे? (3)

**उत्तर** कहानी के अंत में दबा हुआ आदमी मर गया। देर से मिलने वाला न्याय महत्वहीन होता है, क्योंकि जब निर्णय आने में इतना विलंब हो जाता है, तो उसका कोई महत्व ही नहीं रह जाता। प्रस्तुत कहानी में भी जामुन के पेड़ के नीचे दबा व्यक्ति सरकारी कर्मचारियों की उदासीनता और लापरवाही के कारण दम तोड़ देता है।

2. "बेचारा जामुन का पेड़। कितना फलदार था"— एक क्लर्क बोला "और इसकी जामुन कितनी रसीली होती थीं।"

— दूसरा क्लर्क याद करते हुए बोला।

**पृष्ठ सं. 49**

(क) जामुन का पेड़ कैसे व कहाँ गिरा था? उसके गिरने से क्या हुआ? (2)

**उत्तर** सेक्रेटरीयट के लॉन में जामुन का एक पेड़ था, जो रात को तेज़ आँधी के कारण लॉन में गिर गया था। उस जामुन के पड़े के गिरने से उसके नीचे एक आदमी दब गया, जिसे सबसे पहले लॉन के माली ने देखा।

(ख) जामुन के पेड़ की विशेषता अपने शब्दों में बताइए। (2)

**उत्तर** जब सेक्रेटरीयट के लॉन में आँधी के कारण जामुन का पेड़ गिरा, तो वहाँ काम करने वाले सभी कर्मचारियों को जामुन की विशेषताएँ याद आने लगीं। उनके अनुसार जामुन बहुत ही ज्यादा फलदार था। उस पर रसीली जामुनें लगती थीं। लोग उस पेड़ की जामुनों को घर ले जाते थे, जिन्हें उनके बच्चे बड़ी खुशी से खाते थे।

(ग) माली के द्वारा सुपरिंटेंडेंट तक खबर कैसे पहुँची? (3)

**उत्तर** प्रातःकाल जब माली ने यह देखा कि आँधी के कारण जामुन के पेड़ के गिरने से उसके नीचे आदमी दबा हुआ है, तो माली भागा हुआ चपरासी के पास गया, चपरासी भागकर क्लर्क के पास गया और क्लर्क तुरंत सुपरिंटेंडेंट के पास पहुँचा। जिससे सुपरिंटेंडेंट दौड़कर बाहर लॉन में जामुन के पेड़ के पास आया। इस प्रकार माली के द्वारा ये खबर सुपरिंटेंडेंट तक पहुँच गई।

(घ) उपरोक्त गद्यांश के आधार पर पहले व दूसरे क्लर्क की अमानवीयता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (3)

**उत्तर** पहले व दूसरे क्लर्क को जामुन का गिरा हुआ पेड़ तो दिखा, किंतु पेड़ के नीचे दबा हुआ व्यक्ति नहीं दिखाई दिया अर्थात् उन्हें दुःख इस बात का था कि जामुन का पेड़ गिर गया है, अब हमें इसके जामुन खाने को नहीं मिलेंगे, किंतु पेड़ के नीचे दबे व्यक्ति की पीड़ा का एहसास उन्हें नहीं हो रहा था। दबे व्यक्ति के प्रति मानवीय भाव उनके मन में नहीं था।

3. “माली ठीक कहता है” बहुत से क्लर्क एक साथ बोल पड़े—“लगाओ जोर, हम तैयार हैं।” एक साथ बहुत से लोग पेड़ को उठाने को तैयार हो गए।

पृष्ठ सं. 50

‘ठहरो!’ सुपरिंटेंडेंट बोला—‘मैं अंडर-सेक्रेटरी से पूछ लूँ।’

(क) भीड़ में इकट्ठे हुए लोगों की चिंता का क्या कारण था? (2)

**उत्तर** भीड़ में इकट्ठे हुए लोगों की चिंता का कारण वह फलदार जामुन का पेड़ था, जो तेज़ आँधी के कारण गिर पड़ा था। उनकी चिंता यह थी कि अब उनको रसदार जामुन खाने को नहीं मिलेंगे।

(ख) दबे हुए व्यक्ति की पीड़ा का अनुभव किसे हुआ व उसने क्या योजना बनाई? (2)

**उत्तर** दबे हुए व्यक्ति की पीड़ा का अनुभव केवल माली को हुआ और उसने योजना बनाई कि सभी लोग मिलकर दबे हुए व्यक्ति को निकाल सकते हैं, किंतु उसकी यह योजना कारगर सिद्ध नहीं हुई।

(ग) माली क्या चाहता था तथा उसके द्वारा किया गया प्रयास सफल क्यों न हो सका? (3)

**उत्तर** माली किसी भी तरह पेड़ के नीचे दबे व्यक्ति को निकालना चाहता था। माली ने उसे निकालने का प्रयास भी किया, किंतु सफल न हो सका, क्योंकि सुपरिंटेंडेंट ने अंडर-सेक्रेटरी से अनुमति लेने की बात कहकर उसे पेड़ उठाने से रोक दिया था।

(घ) उपरोक्त गद्यांश के आधार पर माली के चरित्र का संक्षेप में वर्णन कीजिए। (3)

**उत्तर** माली भावुक और दयालु प्रवृत्ति का व्यक्ति था। उसमें मानवीयता के गुण विद्यमान थे। पेड़ के नीचे दबे हुए व्यक्ति के प्रति उसके मन में बहुत सहानुभूति हो रही थी और उसे उसकी पीड़ा का अनुभव भी हो रहा था। वह दबे हुए व्यक्ति को किसी भी तरह निकालना चाहता था पर उसका साथ देने को कोई भी तैयार नहीं हुआ।

4. दूसरे दिन भी फाइल चलती रही। शाम को जवाब आ गया। हम इस मामले को हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट के हवाले कर रहे हैं, क्योंकि यह एक फलदार पेड़ का मामला है और एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट अनाज और खेती-बाड़ी के मामलों में फैसला करने का हकदार है।

पृष्ठ सं. 51

(क) सुपरिंटेंडेंट ने आकर लोगों को क्या बताया? (2)

**उत्तर** सुपरिंटेंडेंट ने लोगों को यह बताया कि हम स्वयं इस पेड़ को नहीं हटा सकते, हम लोग व्यापार विभाग से संबंधित हैं और यह पेड़ कृषि विभाग के अधीन है। मैं इस फाइल को जल्दी ही कृषि विभाग को भेज रहा हूँ। वहाँ से उत्तर आते ही इस पेड़ को हटवा दिया जाएगा।

(ख) पेड़ की समस्या का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (2)

**उत्तर** पेड़ की समस्या का मुख्य कारण यह था कि वह किस डिपार्टमेंट के अंतर्गत आता है, क्योंकि सभी डिपार्टमेंट पेड़ को अपने डिपार्टमेंट के अंतर्गत न आने की बात कर एक-दूसरे विभाग पर यह मामला टाल रहे थे और किसी भी विभाग के व्यक्ति इस विषय पर सही निर्णय लेने को तैयार नहीं थे।

(ग) व्यापार विभाग के गुस्से का क्या कारण था? (3)

**उत्तर** कृषि विभाग द्वारा जवाब में यह लिखने पर कि पेड़ व्यापार विभाग के लॉन में गिरा है, इसलिए इसे हटाने या न हटाने की ज़िम्मेदारी व्यापार विभाग की है, यह पढ़कर व्यापार विभाग को गुस्सा आ गया। जबकि व्यापार विभाग के अनुसार पेड़ को हटवाने या न हटवाने की ज़िम्मेदारी कृषि विभाग की है।

(घ) ‘एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट’ किस मामले में फैसला देने का हकदार था तथा फाइल हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट के हवाले क्यों कर दी गई? (3)

**उत्तर** ‘एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट’ अनाज और खेती-बाड़ी के मामलों में फैसला करने का हकदार था। अतः फाइल ‘हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट’ के हवाले कर दी गई, क्योंकि यह एक फलदार पेड़ का मामला था। इसलिए यह पेड़ हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट के अंतर्गत आता था। इस तरह अब फाइल ‘एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट’ से ‘हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट’ में पहुँच चुकी थी।

5. “आश्चर्य है, इस समय जब हम ‘पेड़ लगाओ’ स्कीम ऊँचे स्तर पर चला रहे हैं, हमारे देश में ऐसे सरकारी अफसर मौजूद हैं, जो पेड़ों को काटने का सुझाव देते हैं और वह भी एक फलदार पेड़ जामुन को, जिसके फल जनता बड़े चाव से खाती है! हमारा विभाग किसी हालत में इस फलदार वृक्ष को काटने की इज़ाजत नहीं दे सकता।”

पृष्ठ सं. 51

(क) दबे हुए व्यक्ति के चारों ओर किसका पहरा था और क्यों? (2)

**उत्तर** दबे हुए व्यक्ति के चारों ओर पुलिस का पहरा था, जिससे लोग कानून को अपने हाथ में न लें और पेड़ को हटाकर दबे हुए व्यक्ति को बचाने की कोशिश न करने लें।

(ख) पुलिस कांस्टेबल को किस पर और क्यों दया आ गई और उसने क्या किया? (2)

**उत्तर** पेड़ के नीचे दबे हुए व्यक्ति की हालत को देखकर माली उस दबे हुए व्यक्ति को खाना खिलाना चाहता था। अतः पुलिस कांस्टेबल को दया आ गई और दबे हुए व्यक्ति को खाना खिलाने की इज़ाजत दे दी।



- (ग) हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट का सेक्रेटरी कैसा व्यक्ति था व उसे आश्चर्य किस बात पर हो रहा था? (3)
- उत्तर** हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट का सेक्रेटरी साहित्य-प्रेमी था। उसे आश्चर्य इस बात पर हो रहा था कि जब हम 'पेड़ लगाओ' की स्कीम ऊँचे स्तर पर चला रहे हैं, तो फिर सरकारी अफसर पेड़ों को काटने का सुझाव क्यों दे रहे हैं और वह भी एक फलदार पेड़ को जिस पर रसीले फल लगते हैं। अतः उसने भी फलदार पेड़ को काटने से मना कर दिया।
- (घ) हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट ने क्या जवाब दिया? (3)
- उत्तर** 'हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट' द्वारा दिया गया जवाब यह था कि हमारा विभाग किसी भी हालत में फलदार वृक्ष को काटने की इजाजत नहीं दे सकता। यह तो जामुन का फलदार पेड़ था, जिसके फल जनता बड़े ही चाव से खाती है। अतः हमारा विभाग किसी भी हालत में इस पेड़ को काटने की अनुमति नहीं देगा।
6. बस, फिर क्या था। लोगों का झुंड शायर को देखने के लिए उमड़ पड़ा। इसकी चर्चा शहर में भी फैल गई और शाम तक गली-गली से शायर जमा होने शुरू हो गए। **पृष्ठ सं. 53**
- (क) वहाँ उपस्थित लोग क्या सोचने लगे व उनकी किस बात पर दबे हुए व्यक्ति ने आपत्ति व्यक्त की? (2)
- उत्तर** वहाँ उपस्थित लोग सोचने लगे कि यदि पेड़ को नहीं काटा जा सकता, तो आदमी को ही काटकर निकाल लिया जाए। लोगों की इस बात को सुनकर दबे हुए व्यक्ति ने आपत्ति व्यक्त की।

- (ख) दबे हुए व्यक्ति के प्रति माली की सहानुभूति पर प्रकाश डालिए। (2)
- उत्तर** माली संवेदनशील व्यक्ति था। उसे दबे हुए व्यक्ति के प्रति विशेष सहानुभूति हो रही थी। वह उसे खाना भी खिलाता है तथा उसे बचाने का हर संभव प्रयास भी करता है और उसे यह विश्वास भी दिलाता है कि तुम चिंता न करो सब ठीक हो जाएगा।
- (ग) माली को अचंभा क्यों हुआ? सेक्रेटेरियट में क्या अफ़वाह फैल गई थी? (3)
- उत्तर** जब माली ने दबे हुए आदमी के मुँह में खिचड़ी डालते हुए दबे हुए व्यक्ति को बताया की मामला ऊपर चला गया है, तो दबे हुए व्यक्ति ने माली की बात का जवाब शायरी के द्वारा दिया, तो यह जानकर कि दबा हुआ व्यक्ति एक शायर है, उसे अचंभा हुआ और यही खबर थोड़ी ही देर में सेक्रेटेरियट में फैल गई।
- (घ) कहानी से सरकारी विभागों की कार्यशैली के बारे में क्या पता चलता है? (3)
- उत्तर** इस कहानी के माध्यम से लेखक ने सरकारी कर्मचारियों और अधिकारियों में फैली अकर्मण्यता पर भी करारा व्यंग्य किया है। प्रत्येक विभाग अपनी जिम्मेदारी को दूसरे विभाग पर तरह-तरह के बहाने बनाकर डाल देता है। फाइल एक विभाग से दूसरे विभाग तक घूमती रहती है, किंतु परिणाम कुछ नहीं निकलता है। प्रस्तुत कहानी सरकारी विभागों की लापरवाही और जिम्मेदारी से मुँह मोड़ने की प्रवृत्ति को उजागर करती है। इस तरह की कार्यशैली के अंतर्गत अनावश्यक नियमों का उल्लेख कर विभाग अपनी जिम्मेदारी एक-दूसरे पर थोप देते हैं।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. फाइल कल्चरल डिपार्टमेंट के अनेक विभागों से गुजरती हुई साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी के पास पहुँची। बेचारा सेक्रेटरी उसी समय अपनी गाड़ी में सवार होकर सेक्रेटेरियट पहुँचा और दबे हुए आदमी से इंटरव्यू लेने लगा। **पृष्ठ सं. 53**
- (क) कल्चरल डिपार्टमेंट से क्या अनुरोध किया गया? (2)
- (ख) "दबा हुआ आदमी एक कवि है", यह ज्ञात होने पर सेक्रेटेरियट की सब कमेटी ने क्या फैसला लिया? (2)
- (ग) फाइल मिलने पर साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी ने क्या किया? (3)
- (घ) साहित्य अकादमी के द्वारा कवि का इंटरव्यू लेने पर क्या हुआ? (3)
2. "मुसीबत यह है," सरकारी साहित्य अकादमी का सेक्रेटरी हाथ मलते हुए बोला—"हमारा विभाग सिर्फ कल्चर से संबंधित है। पेड़ काटने का मामला कलम-दवात से नहीं, आरी-कुल्हाड़ी से संबंधित है। उसके लिए हमने फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट को लिख दिया है और अर्जेंट लिखा है।" **पृष्ठ सं. 54**

- (क) "मुसीबत यह है।" यह कथन किसने और किससे कहा है? (2)
- (ख) सरकारी साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी ने कवि से क्या कहा? (2)
- (ग) माली ने दबे हुए आदमी को क्या बताया? (3)
- (घ) माली की खुशी का क्या कारण था? (3)
3. "दूसरी ओर दो राज्यों के संबंधों का सवाल है" दूसरे क्लर्क ने पहले क्लर्क को समझाया—"और यह भी तो समझो कि पीटोनिया सरकार हमारे राज्य को कितनी सहायता देती है। क्या हम उनकी मित्रता की खातिर एक आदमी के जीवन का भी बलिदान नहीं कर सकते?" **पृष्ठ सं. 55**
- (क) विदेश-विभाग को जामुन के पेड़ के कट जाने पर किस बात का अंदेशा था? (2)
- (ख) विदेश-विभाग का क्या हुक्म आया और क्यों? (2)
- (ग) अंतिम निर्णय आने पर कवि की स्थिति का वर्णन कीजिए। (3)
- (घ) फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट का क्या निर्णय आया? उसके बाद क्या हुआ? (3)



# भेड़ें और भेड़िए हरिशंकर परसाई

## लेखक परिचय

हिंदी साहित्य जगत के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं व्यंग्यकार श्री हरिशंकर परसाई का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमनिया नामक गाँव में 22 अगस्त, 1922 को हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई।

परसाई जी ने जबलपुर से 'वसुधा' नामक साहित्यिक मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया। परसाई जी एक व्यंग्य लेखक थे। उनके साहित्य-सृजन की विषय-वस्तु शिक्षा जगत, राजनीति, चिकित्सा क्षेत्र, धर्म, संस्कृति आदि से जुड़े शोषण, आडंबरों, ढोंगों व पाखंडों से संबद्ध हैं। परसाई जी की भाषा का अपना एक अलग ही अंदाज था, जिसके कारण वह पाठकों के हृदय को छू लेते हैं। इनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं— 'हँसते हैं, रोते हैं,' 'जैसे उनके दिन फिरे,' 'भोलाराम का जीव' आदि। 'रानी नागफनी की कहानी', 'तट की खोज,' 'ज्वाला और जल' इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं; 'तिरछी रेखाएँ'— संस्मरण तथा 'तब की बात और थी,' 'भूत के पाँव पीछे,' 'सदाचार का ताबीज़,' 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र', 'शिकायत मुझे भी है' तथा 'विकलांग श्रद्धा का दौर' इनके उल्लेखनीय निबंध संग्रह हैं। 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए परसाई जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। 10 अगस्त, 1995 को इनका निधन हो गया।

## कहानी का परिचय

'भेड़ें और भेड़िए' सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य करती हुई एक प्रतीकात्मक कहानी है। 'भेड़ें' आम जनता का प्रतीकात्मक रूप धारण किए हुए हैं और भेड़िए उच्च वर्ग से संबंधित हैं, जो लगातार मासूम 'भेड़ रूपी' जनता का शोषण व उनके अधिकारों का हनन करते रहे हैं। कहानी वन प्रदेश के भीतर प्रजातंत्र की स्थापना से संबंधित है। एक बार पशु समाज में प्रजातंत्र की स्थापना की बात उठती है, जिसे सुनकर वन प्रदेश में रहने वाली 'भेड़ें' खुश हो जाती हैं। भेड़ें अत्यंत सीधी और आशावादी थीं। वे अपने मत से अच्छे प्रतिनिधि का चुनाव करना चाहती थीं, किंतु दूसरी ओर प्रजातंत्र की स्थापना की बात सुनकर भेड़िए चिंतित थे, उन्हें अपना संकटकाल निकट आता प्रतीत हो रहा था।

बूढ़े सियार ने भेड़िए से उसकी चिंता का कारण जानकर एक योजना बनाई और योजना के अनुसार, उसने तीन रंगे हुए सियारों की सहायता से भेड़ियों को भेड़ों की सभा में प्रस्तुत कर दिया और भेड़ों को विश्वास दिलाया कि भेड़ियों का हृदय परिवर्तन हो गया है। बहुमत पाते ही भेड़ियों ने भेड़ों की भलाई के लिए सबसे पहला कानून यह बनाया कि नाश्ते में भेड़ का मुलायम बच्चा, दोपहर में एक पूरी भेड़ व शाम को आधी भेड़ दी जाए। अंततः बहुमत पाते ही भेड़ियों का असली चेहरा सामने आ गया। इसी तरह शासन में आने के बाद नेता जनता का शोषण करने लगते हैं तथा अपने हितों की पूर्ति में लग जाते हैं।

## पात्र-परिचय

### भेड़ें

प्रस्तुत कहानी में भेड़ें सीधी-सादी जनता का प्रतीक हैं। वे बहुत ईमानदार, कोमल, विनयी, निश्छल व दयालु तथा घास को भी फूँक-फूँककर खाती हैं, किंतु वे अपने सीधेपन के कारण बूढ़े सियार के बहकावे में आकर अपना नेता चुन लेती हैं, जिससे उन्हें बाद में बहुत पछतावा होता है।

### भेड़िए

कहानी में भेड़िए ऐसे नेताओं के चरित्र को प्रदर्शित करते हैं, जो चुनाव के समय अपने सहयोगियों द्वारा जनता को तरह-तरह के लोभ देकर और उन्हें बेवकूफ बनाकर चुनाव जीत जाते हैं और पद प्राप्त होने के पश्चात् केवल अपने हित के विषय में सोचते हैं। भेड़िए सीधी-सादी भेड़ों को बेवकूफ बनाकर उनका बहुमत प्राप्त कर लेते हैं और अपनी योजना में सफल हो जाते हैं।

## सियार

कहानी में सियार उन लोगों का प्रतीक है, जो चुनाव के समय नेताओं की हॉ में हॉ मिलाकर अपने स्वार्थ को सिद्ध करते हैं। रंगे हुए सियार लेखक, विचारक, पत्रकार और धर्मगुरु के प्रतीक हैं, जिन्हें जनता को सही राह दिखानी चाहिए, किंतु अपने पथ से भ्रष्ट होने के कारण वे भ्रष्ट नेताओं का प्रचार करते हैं और अपने स्वार्थ की सिद्धि करते हैं।

## कहानी का सार

### वन प्रदेश में प्रजातंत्र की स्थापना

यह कहानी वन प्रदेश में प्रजातंत्र की स्थापना के चारों ओर घूमती है। पशु समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन की लहर दौड़ गई थी। भेड़ें, जो स्वभाव से बहुत ही सीधी, ईमानदार, कोमल, दयालु व निर्दोष थीं, उनमें प्रजातंत्र की स्थापना से खुशी की लहर दौड़ गई थी, वहीं दूसरी ओर भेड़िए प्रजातंत्र की स्थापना से चिंतित थे। उन्हें अपना संकटकाल निकट आता नज़र आ रहा था। उनका सोचना था कि भेड़ों की संख्या अधिक है, इसलिए बहुमत उन्हीं को प्राप्त होगा और अगर भेड़ों ने कानून बना दिया कि कोई पशु किसी को न मारे तो हम खाएँगे क्या? इसी कारण चुनाव के पास आते-आते भेड़ियों का दिल बैठा जा रहा था।

### भेड़ियों की चिंता व बूढ़े सियार की ध्यानमग्न अवस्था

वन प्रदेश में नई सरकार बनने वाली थी। भेड़ियों की चिंता का कारण यही था। नई सरकार बनने की बात जानकर भी बूढ़ा सियार बात के जानने से अनजान बनता है और स्वयं भेड़िए से उसकी चिंता का कारण जानता है। कारण जानने के बाद वह भेड़िए को पहले सर्कस में भर्ती होने की सलाह देता है, फिर अजायबघर चले जाने की सलाह देता है और अंत में स्वयं ध्यानमग्न अवस्था में जाकर भेड़ियों को बहुमत में लाने की योजना बनाता है। अपनी योजना के अनुसार, वह भेड़िए का रूप परिवर्तित कर देता है व तीन रंगे हुए सियारों को अपनी योजना में शामिल करता है।

### रंगे हुए सियारों की प्रवृत्ति

रंगे हुए सियारों ने बूढ़े सियार की योजना को सफल बनाने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कपटी भेड़िए के प्रचार-प्रसार की ज़िम्मेदारी रंगे हुए सियारों की ही थी। इन्हीं के बल पर भेड़िए को चुनाव लड़ना था। पीला सियार बड़ा विद्वान्, विचारक, कवि व लेखक की भूमिका में था। नीला सियार नेता और पत्रकार तथा हरा धर्मगुरु की भूमिका में विद्यमान था।

### भेड़ों की सभा व भेड़ियों के हृदय परिवर्तन की अफवाह फैलाना

मस्तक पर तिलक, गले में कंठी, मुख में घास के तिनके, अत्यंत गंभीरतापूर्वक सिर झुकाए भेड़िया महाराज रंगे हुए सियारों के बीच चलते हुए भेड़ों की सभा में पहुँचे। जैसे ही भेड़ों ने देखा कि यह तो भेड़िया है, तो वे भागने लगीं, किंतु बूढ़े सियार ने भेड़ों का विश्वास जीतने के लिए भेड़ियों के हृदय परिवर्तन की बात 'भेड़ों' की सभा में रखी। उसने कहा कि भेड़ियों का हृदय परिवर्तन हो गया है। वे केवल घास ही खाते हैं। भेड़ों पर किए गए अत्याचारों से वे स्वयं लज्जित हैं, अब वे अपना पूरा जीवन भेड़ों की रक्षा व सुरक्षा में व्यतीत करना चाहते हैं।

## बूढ़े सियार की चतुराई

बूढ़ा सियार अपने द्वारा बनाई गई योजना को बड़ी ही चतुराई से भोली-भाली भेड़ों के सामने प्रस्तुत करता है। वह भरी सभा में भेड़ियों के गुणों का बखान करता है और तीन रंगे हुए प्राणियों (सियारों) को सभा में प्रस्तुत करके उनकी विशेषताओं को भेड़ों के सामने रखता है और अपनी बनाई गई योजना में बड़ी चतुराई से सफल भी होता है। वह भोली-भाली भेड़ों को भेड़ियों के मुँह का निवाला बना देता है।

### बहुमत पाते ही भेड़ियों द्वारा बनाया गया पहला कानून

भोली-भाली भेड़ें बूढ़े सियार द्वारा बनाई गई योजना में फँस गईं और उन्होंने अपना मत भेड़ियों को ही दे दिया। भेड़ों ने अपने हित की रक्षा के लिए भेड़ियों का चुनाव किया, किंतु हुआ इसके विपरीत। बहुमत पाते ही भेड़ियों द्वारा बनाया गया कानून था—प्रत्येक भेड़िए को प्रातःकाल नाश्ते में भेड़ का एक मुलायम बच्चा, दोपहर में पूरी भेड़ व शाम को आधी भेड़ दी जाए।

## कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता

प्रस्तुत कहानी 'भेड़ें और भेड़िए' के माध्यम से कहानीकार ने प्रजातंत्र में निहित कमियों का बड़े ही रोचक और सजीव ढंग से चित्रण किया है। कहानीकार ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि ढोंगी नेता अपने सहयोगियों के माध्यम से बड़े-बड़े वादे तथा जनता को भ्रमित करके उनका बहुमत प्राप्त कर लेते हैं और बाद में उनके हितों के लिए किए गए वचनों को भूल जाते हैं। कहानी में लेखक ने भेड़ियों को ढोंगी नेताओं और सियारों को उन स्वार्थी लोगों का प्रतीक माना है, जो नेताओं के आगे-पीछे घूमते रहते हैं। यहाँ सीधी-सादी जनता को भेड़ों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। इस प्रकार पूरी कहानी भेड़ों और भेड़िए के इर्द-गिर्द ही घूमती रहती है। अतः कहानी का शीर्षक 'भेड़ें और भेड़िए' अत्यंत प्रभावशाली व सार्थक है।

## शब्दार्थ

शब्द अर्थ, पाठ्य-पुस्तक साहित्य सागर में दिए गए भाग संक्षिप्त कहानियों के पृष्ठों के अनुसार हैं—

**पृष्ठ सं. 57** स्तर—तल, परत (level); मत—राय (opinion);

प्रजातंत्र—लोकतंत्र (democracy); बंधुत्व—भाईचारा (brotherhood);

निर्दोष—जिसका कोई दोष न हो (innocent); प्रतिनिधि—किसी के लिए

काम करने वाला व्यक्ति (representative); उल्लास—खुशी (glad);

कुतरकर—दाँतों से काटना (nibble)।

**पृष्ठ सं. 58** माई-बाप—सब कुछ, स्वामी (lord); अजायबघर—संग्रहालय

(museum); ध्यानमग्न—एकाग्रता (concentration)।

**पृष्ठ सं. 59** एकटक—बिना पलक गिराए (Unwinking looking with eyes); प्रचार—लोक प्रसिद्धि व्यवहार में आना (publicity);

खोंसना—फँसाना (trap); हिंसक—हिंसा करने वाला (violent)।

**पृष्ठ सं. 60** सहस्रों—हजारों (thousands); प्रायश्चित—ग्लानिवश किया गया कठोर आचरण (remorse)।

**पृष्ठ सं. 61** मुखारविंद—सुंदर मुख (beautiful face); भावातिरेक—

भावों की अधिकता (extremely emotional); सर्वत्र—सब जगह

(everywhere); क्षुद्र—तुच्छ (insignificant)।

**पृष्ठ सं. 62** निश्चित—बेफिक्र (worryless); धर्मगुरु—धार्मिक गुरु

(religious teacher); परोपकारी—भलाई करने वाला (beneficent)।

# प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. ज्यों-ज्यों चुनाव समीप आता, भेड़ों का उल्लास बढ़ता जाता।  
ज्यों-ज्यों चुनाव समीप आता, भेड़ियों का दिल बैठता जाता।

पृष्ठ सं. 57

(क) पशु समाज में हर्ष की लहर क्यों दौड़ गई? (2)

**उत्तर** भेड़ें अत्यंत ही सीधी, सरल और आशावादी थीं, वे वन प्रदेश में अपने मत से अच्छे प्रतिनिधि का चुनाव चाहती थीं, इसलिए 'वन प्रदेश' में प्रजातंत्र की स्थापना की बात सुनकर पशु समाज में हर्ष की लहर दौड़ गई।

(ख) 'वन प्रदेश' में विद्यमान भेड़ों के चरित्र पर प्रकाश डालिए। (2)

**उत्तर** 'वन प्रदेश' में विद्यमान भेड़ें बहुत ही नेक, ईमानदार, कोमल, विनयी, दयालु, निर्दोष और भोली-भाली थीं, जो घास तक को फूँक-फूँककर खाती थीं। वे प्रदेश में शांति, स्नेह, बंधुत्व और सहयोग पर आधारित कानून बनवाना चाहती थीं।

(ग) चुनाव के समीप होने पर भेड़ों की खुशी का क्या कारण था? (3)

**उत्तर** भेड़ों की खुशी का कारण यह था कि वे सोचती थीं कि प्रजातंत्र की स्थापना के बाद हमें डर-डरकर जीने की आवश्यकता नहीं होगी। वे एक ऐसे प्रतिनिधि का चुनाव चाहती थीं, जिससे समाज में शांति, स्नेह और बंधुत्व की भावना का विकास हो सके। कोई जीवधारी किसी को न सताए।

(घ) भेड़ियों ने क्यों सोचा कि अब संकट काल आया? तथा भेड़ियों की चिंता का क्या कारण था? (3)

**उत्तर** जैसे ही भेड़ियों ने भेड़ों की वन-प्रदेश में प्रजातंत्र की स्थापना करने की बात सुनी, तो उन्हें अपना संकटकाल समीप आता नज़र आया।

वे सोच रहे थे कि यदि भेड़ें चुनाव में जीत गईं और यह कानून बना दिया गया कि कोई पशु किसी को न मारे तो हम क्या खाएँगे, यह विचार ही भेड़ियों की चिंता का प्रमुख कारण था।

2. "हम क्या जानें महाराज! हमारे तो आप ही 'माई-बाप' हैं। हम तो कोई और सरकार नहीं जानते। आपका दिया खाते हैं, आपके गुन गाते हैं।"

पृष्ठ सं. 58

(क) वन प्रदेश में किसके शासन पर खतरा बना हुआ था और क्यों? (2)

**उत्तर** वन प्रदेश में भेड़ियों के शासन पर खतरा बना हुआ था, क्योंकि भेड़ों की संख्या अधिक थी। उनके बहुमत से यदि कानून बनाया जाएगा, तो उनको खाने के लिए कुछ नहीं मिलेगा।

(ख) उपरोक्त पंक्तियों में 'आपका' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है तथा यह भी बताएँ कि कौन किसका दिया खाता था? (2)

**उत्तर** 'आपका' शब्द भेड़िए के लिए प्रयोग किया गया है। भेड़िए द्वारा अपना शिकार खा लेने के बाद सियार हड्डियों में लगे मांस को कुतरकर खाते थे, इसलिए सियार द्वारा कहा गया है कि आपका दिया खाते हैं, आपके गुन गाते हैं।

(ग) किसके मुख पर चिंता के बादल छाए हुए थे और क्यों? (3)

**उत्तर** भेड़ियों के मुख पर चिंता के बादल छाए हुए थे, क्योंकि वन प्रदेश में नई सरकार बनने वाली थी और भेड़ों की संख्या अधिक थी,

इसलिए बहुमत उन्हीं को प्राप्त होना था। भेड़ियों को इस बात का भी अंदेश था कि यदि उन्होंने कानून बना दिया कि कोई पशु किसी को न मारे तो हम (भेड़िए) क्या खाएँगे?

(घ) "हम क्या जानें महाराज! हमारे तो आप ही 'माई-बाप' हैं।" यह किसने, किससे और क्यों कहा? (3)

**उत्तर** "हम क्या जानें महाराज! हमारे तो आप ही माई-बाप हैं।" यह बूढ़े सियार ने भेड़िए से कहा! वन प्रदेश में नई सरकार के बनने की बात से अनभिज्ञ बने सियार को जब भेड़िए ने बताया कि चुनाव द्वारा नई सरकार बनाई जा रही है, तो वह जानते हुए भी अनभिज्ञ बना रहा।

3. "आप खिन्न मत होइए सरकार! एक दिन का समय दीजिए। कल तक कोई योजना बन ही जाएगी, मगर एक बात है। आपको मेरे कहे अनुसार कार्य करना पड़ेगा।"

पृष्ठ सं. 59

(क) सियार भेड़िए की चिंता का कारण जानते हुए भी अनजान क्यों बन रहा था? (2)

**उत्तर** बूढ़ा सियार बहुत ही चतुर व चालाक था। वह भेड़िए को यह नहीं बताना चाहता था कि वह बुद्धिमान है और उसे सब पता है। वह स्वयं को भेड़िए के सामने सीधा-सादा प्रकट करना चाहता था।

(ख) बूढ़े सियार ने भेड़िए को कहाँ चले जाने की सलाह दी? (2)

**उत्तर** बूढ़े सियार ने भेड़िए को पहले सर्कस में भर्ती होने की सलाह दी, फिर अजायबघर चले जाने की सलाह दी और अंत में जंगल में रहकर बहुमत प्राप्त करने की योजना बताई।

(ग) बूढ़ा सियार ध्यानमग्न अवस्था में क्या सोच रहा था? बूढ़े सियार की योजना पर भेड़िया चिढ़ क्यों गया? (3)

**उत्तर** बूढ़ा सियार ध्यानमग्न अवस्था में भेड़िया जाति का बहुमत प्राप्त करने की बात सोचने लगा और भेड़िए से बोला कि अगर पंचायत में आपकी भेड़िया जाति का बहुमत हो जाए तो। सियार की यह बात सुनकर भेड़िया चिढ़ गया, क्योंकि उसे लग रहा था कि भेड़ों की संख्या अधिक है और हमारी कम। ऐसे में बहुमत भेड़ों को ही प्राप्त होगा। इसलिए भेड़िए को सियार की ये बातें आसमानी (फालतू) लग रही थीं, इसलिए वह चिढ़ गया।

(घ) "आप खिन्न मत होइए सरकार! एक दिन का समय दीजिए।" यह किसने किससे कहा? भेड़िए को सियार द्वारा बनाई गई योजना पर विश्वास क्यों नहीं हुआ? (3)

**उत्तर** "आप खिन्न मत होइए सरकार! एक दिन का समय दीजिए।" यह बूढ़े सियार ने मुसीबत में फँसे भेड़िए से कहा। भेड़िए को सियार द्वारा बनाई गई योजना पर विश्वास नहीं हुआ, क्योंकि वन प्रदेश में भेड़िए दस फीसदी थे, जबकि भेड़ें व अन्य पशु नब्बे फीसदी थे और भेड़ें स्वयं को भेड़ियों के हाथ सौंपकर अपनी मौत को आमंत्रित नहीं कर सकती थीं।

4. "बड़े भोले हैं आप सरकार! अरे मालिक, रूप-रंग बदल देने से तो सुना है आदमी तक बदल जाते हैं। फिर ये तो सियार हैं।"

पृष्ठ सं. 59 [2017]

(क) उपरोक्त कथन कौन, किससे क्यों कह रहा है? (2)

- उत्तर** उपरोक्त कथन बूढ़े सियार ने भेड़िए से कहा है। बूढ़े सियार ने तीन रँगें हुए सियार द्वारा भेड़िए की ओर से चुनाव का प्रचार-प्रसार करने की बात कही थी, जिस पर भेड़िए ने कहा था कि सियार तो छल-कपट के लिए बदनाम हैं। इनकी बात पर कौन विश्वास करेगा?
- (ख) बूढ़े सियार ने भेड़िए का रूप किस प्रकार बदला? (2)
- उत्तर** बूढ़े सियार ने भेड़िए के मस्तक पर तिलक लगाया, गले में कंठी पहनाई और मुँह में घास के तिनके खोंस दिए और इस प्रकार उसे संत का रूप दे दिया।
- (ग) यह कैसी कहानी है, बूढ़े सियार ने किन तीन बातों का खयाल रखने के लिए कहा और क्यों कहा? (3)
- उत्तर** कहानी 'भेड़ें और भेड़िए' प्रजातंत्र में निहित कमियों को प्रदर्शित करती हुई एक प्रतीकात्मक कहानी है, जिसमें भेड़रूपी सीधी-सादी जनता का भेड़िए रूपी ढोंगी और धोखेबाज नेता शोषण करते हैं। बूढ़े सियार ने भेड़िए से तीन बातों का खयाल रखने के लिए कहा कि अपनी हिंसक आँखों को ऊपर मत उठाना, हमेशा ज़मीन की ओर देखना और कुछ बोलना मत। उसने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि ऐसा करने पर भेड़िए की पोल खुल जाती और योजना भंग हो जाती।
- (घ) सियारों को किन-किन रंगों में रंगा गया? वे किसके प्रतीक थे? इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? (3)
- उत्तर** सियारों को पीले, नीले और हरे रंग में रंगा गया। पीला सियार विद्वान्, विचारक, कवि व लेखक का प्रतीक था। नीला सियार नेता और पत्रकार का तथा हरा सियार धर्मगुरु का प्रतीक था। इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने मताधिकार का प्रयोग बहुत ही सोच-समझकर करना चाहिए, क्योंकि सही नेता का चुनाव ही हमारी और देश की प्रगति का आधार होता है। इसके साथ-साथ हमें ढोंगी, चालबाज और स्वार्थी राजनेताओं के भ्रमजाल में नहीं पड़ना चाहिए।
- 5.** 'ये बड़े काम के हैं। आपका सारा प्रचार तो ये ही करेंगे। इन्हीं के बल पर आप चुनाव लड़ेंगे। यह पीला वाला सियार बड़ा विद्वान् है, विचारक है, कवि भी है, लेखक भी। यह नीला सियार नेता और पत्रकार है और यह हरा धर्मगुरु। बस, अब चलिए।' पृष्ठ सं. 59
- (क) सियार को अपना गुरु किसने माना और क्यों? (2)
- उत्तर** बूढ़े सियार को अपना गुरु मुसीबत में फँसे भेड़िए ने माना, क्योंकि भेड़िए के पास कोई अन्य मार्ग नहीं था तथा उसे बूढ़े सियार की चतुरता व चालाकी पर पूरा विश्वास था।
- (ख) बूढ़े सियार ने किसके बल पर चुनाव लड़ने की बात कही? (2)
- उत्तर** बूढ़े सियार ने रँगें हुए सियारों के बल पर चुनाव लड़ने की बात कही। अतः बूढ़े सियार ने भेड़िए को यह विश्वास दिलाया था कि इन रँगें सियारों की सहायता से भेड़ियों की सरकार बनेगी।
- (ग) बूढ़े सियार ने रँगें हुए सियारों के विषय में क्या बताया? (3)
- उत्तर** बूढ़े सियार ने रँगें हुए सियारों के विषय में बताया कि आपके प्रचार-प्रसार का काम ये ही करेंगे। ये बड़े काम के हैं। ये सभी भेड़ियों की सेवा करेंगे, भेड़ियों के लिए चुनाव प्रचार करेंगे। बूढ़े सियार ने भेड़िए को विश्वास दिलाया कि आवश्यकता पड़ने पर जब आदमी बदल जाते हैं। फिर ये सियार क्यों नहीं बदल सकते।

(घ) सियारों ने भेड़िए का प्रचार क्यों किया था? (3)

**उत्तर** सियार समाज के स्वार्थी और अवसरवादी, भ्रष्ट-चापलूस लोगों के प्रतीक हैं। ऐसे लोग शोषक वर्ग की दया पर पलते हैं और उनके हर अनैतिक और गलत कार्यों में उनका साथ देते हैं। बूढ़ा सियार भी भेड़िए द्वारा फँकी गई हड्डियों को चूस-चूसकर खाता था।

इन लोगों की स्वार्थपरता इन्हें मानवता-विरोधी बना देती है। भेड़िए के जीतने पर अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए ही सियारों ने चुनाव में उसका प्रचार किया था।

- 6.** उनका 'हृदय परिवर्तन' हो गया है। वे आज सात दिनों से घास खा रहे हैं। रात-दिन भगवान के भजन और परोपकार में लगे रहते हैं। उन्होंने अपना जीवन जीव-मात्र की सेवा में अर्पित कर दिया है।

**पृष्ठ सं. 60**

(क) किसके दर्शन के लिए भोली-भाली भेड़ें इकट्ठी हो गई थीं? (2)

**उत्तर** सियारों ने भेड़िए को संत का रूप धारण करा दिया था, जिसके दर्शन के लिए भोली-भाली भेड़ें इकट्ठी हो गई थीं, जिसकी चर्चा बूढ़े सियार ने पूरे वन-प्रदेश में फैला रखी थी।

(ख) भेड़िए को देखकर भेड़ों की क्या प्रतिक्रिया थी? बूढ़े सियार ने उन्हें क्या कहकर रोक लिया? (2)

**उत्तर** संत भेड़िए को देखकर भेड़ें डर गईं और उन्होंने वहाँ से भागने की सोची, किंतु बूढ़े सियार ने उन्हें यह कहकर रोक लिया कि तुम डरो मत! भेड़िया राजा अब संत बन गए हैं, उन्होंने हिंसा को त्याग दिया है। अब वे तुम्हारी रक्षा करेंगे।

(ग) हृदय परिवर्तन की बात किसके लिए व क्यों कही गई है? जीव-मात्र की सेवा में अपना जीवन किसने अर्पित कर दिया था? (3)

**उत्तर** हृदय परिवर्तन की बात भेड़िया राजा के लिए कही गई है, क्योंकि भेड़िया राजा वन प्रदेश में अपना बहुमत चाहते थे। वे चुनाव जीतकर भेड़ों पर राज करना चाहते थे। बूढ़े सियार के अनुसार भेड़िया राजा संत हो गए हैं तथा उन्होंने जीव-मात्र की सेवा में अपना जीवन अर्पित कर दिया है।

(घ) बूढ़े सियार ने भेड़िया राजा के विषय में क्या बताया? (3)

**उत्तर** बूढ़े सियार ने भेड़िया राजा के विषय में बताया कि अब भेड़िया राजा पहले वाले भेड़िए नहीं रहे हैं, वे परोपकार के कार्यों में लगे रहते हैं तथा इन्होंने हिंसा को त्याग दिया है। अब वे घास खाते हैं, रात-दिन भगवान का भजन करते हैं। उन्होंने अपना जीवन जीव-मात्र की सेवा में अर्पित कर दिया है।

- 7.** "जो यहाँ त्याग करेगा, वह उस लोक में पाएगा। जो यहाँ दुःख भोगेगा, वह वहाँ सुख पाएगा। जो यहाँ राजा बनाएगा व वहाँ राजा बनेगा। जो यहाँ वोट देगा वह वहाँ वोट पाएगा। इसलिए सब मिलकर भेड़िए को वोट दो। वे दानी हैं, परोपकारी हैं, संत हैं। मैं उनको प्रणाम करता हूँ।" **पृष्ठ सं. 62**

(क) पीले सियार द्वारा हुआ-हुआ करने पर बूढ़े सियार ने बात को कैसे सँभाला? (2)

**उत्तर** पीले सियार द्वारा हुआ-हुआ करने पर बूढ़े सियार ने आँख के इशारे से शेष सियारों को मना किया और चतुराई से बात सँभालते हुए कहा कि कवि जी कोरस में गाते हैं।

(ख) भेड़िए व्यर्थ ही क्यों बदनाम थे? (2)

**उत्तर** बूढ़े सियार के अनुसार भेड़िए व्यर्थ ही बदनाम थे कि वे भेड़ों को खाते हैं, क्योंकि भेड़ों को कोई और खाता था तथा उनकी हड्डियाँ भेड़िए के द्वार पर फेंक देता था।

(ग) बूढ़े सियार के अनुसार पीले सियार ने क्या कहकर भेड़िए की प्रशंसा की? (3)

**उत्तर** बूढ़े सियार के अनुसार पीले सियार ने यह कहकर भेड़िए की प्रशंसा की, “हे भेड़िया जी, महाराज! आप सर्वत्र व्याप्त हैं, सर्वशक्तिमान हैं। प्रातः आपके मस्तक पर तिलक करती है, साँझ को उषा आपका मुख चूमती है, पवन आप पर पंखा करती

है और रात्रि आपकी ही ज्योति लक्ष-लक्ष खंड होकर आकाश में तारे बनकर चमकती है। हे विराट! आपके चरणों में इस क्षुद्र का प्रणाम है।”

(घ) हरे रंग के सियार ने क्या उपदेश दिया? (3)

**उत्तर** हरे रंग के सियार ने यह उपदेश दिया कि “जो यहाँ त्याग करेगा, वह उस लोक में पाएगा। जो यहाँ दुःख भोगेगा, वह वहाँ सुख पाएगा। जो यहाँ राजा बनेगा, वह वहाँ राजा बनेगा। जो यहाँ वोट देगा, वह वहाँ वोट पाएगा। इसलिए सब मिलकर भेड़िए को वोट दो। वे दानी हैं, परोपकारी हैं, संत हैं।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. पशु-समाज में इस ‘क्रांतिकारी’ परिवर्तन से हर्ष की लहर दौड़ गई कि सुख-समृद्धि और सुरक्षा का स्वर्ण-युग अब आया और वह आया। पृष्ठ सं. 57

(क) वन के पशुओं को क्या लगा? (2)

(ख) पशु-समाज में किस परिवर्तन से हर्ष की लहर दौड़ गई? (2)

(ग) वन-प्रदेश की भेड़ों का स्वभाव कैसा था? (3)

(घ) भेड़ और भेड़िए समाज के किस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं? (3)

2. उसने एक आँख बंद की, नीचे के होंठ को ऊपर के दाँत से दबाया और एकटक आकाश की तरफ देखने लगा। फिर बोला, “बस सब समझ में आ गया।” पृष्ठ सं. 58

(क) बूढ़े सियार को क्या युक्ति सूझी? (2)

(ख) किसने आँखें बंद कीं और क्यों? (2)

(ग) ‘बस सब समझ में आ गया।’ कथन किसने, किस संदर्भ में कहा? (3)

(घ) बूढ़े सियार की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (3)

3. “भाइयों और बहनों मैं भेड़िया संत से अपने मुखारविंद से आपको प्रेम और दया का संदेश देने की प्रार्थना करता पर प्रेमवश उनका हृदय भर आया है, वे गद्गद हो गए हैं और भावातिरेक से उनका कंठ अवरुद्ध हो गया है।” पृष्ठ सं. 61

(क) भेड़िया संत का माथा किस लज्जा के कारण झुका हुआ था? (2)

(ख) बूढ़े सियार ने भेड़ के बच्चे के विषय में क्या बताया? (2)

(ग) “भाइयों और बहनों” प्रस्तुत पंक्तियाँ किससे, किसके द्वारा और कहाँ कही गई हैं? (3)

(घ) बूढ़े सियार ने भेड़िए के चुप रहने का क्या कारण बताया? (3)



# दो कलाकार श्रीमती मन्नू भंडारी

## लेखक परिचय

हिंदी साहित्य जगत की आधुनिक कहानीकार और उपन्यासकार श्रीमती मन्नू भंडारी का जन्म 3 अप्रैल, 1931 को मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले के भानपुरा नामक गाँव में हुआ था। इन्हें बचपन में महेंद्र कुमारी के नाम से जाना जाता था। इनकी कहानियों में मान्यताओं, विश्वासों, प्रथाओं, परंपराओं, प्राणहीन रूढ़ियों तथा अर्थहीन धारणाओं के प्रति सहज व सकारात्मक विद्रोह उभरता है। 'एक प्लेट सैलाब', 'मैं हार गई', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यही सच है', 'त्रिशंकु', 'आँखों देखा झूठ' इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं। 'आपका बंटी', 'एक इंच मुस्कान', 'महाभोज' इनके उपन्यास तथा 'बिना दीवारों का घर' इनका प्रसिद्ध नाटक है।

मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है' पर आधारित 'रजनीगंधा' नामक फिल्म को वर्ष 1974 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ। इन्हें हिंदी अकादमी दिल्ली के 'शिखर सम्मान', राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के 'व्यास सम्मान' से भी विभूषित किया गया है।

## कहानी का परिचय

यह कहानी दो ऐसी सहेलियों की है, जिनके मध्य घनिष्ठ मित्रता थी। उनकी घनिष्ठ मित्रता ही लोगों की ईर्ष्या का कारण बनती है। दोनों सहेलियाँ शिक्षा प्राप्त करने के लिए घर से दूर हॉस्टल में रहने के लिए आई थीं। चित्रा धनी परिवार से संबंधित थी। उसके पास सुख-सुविधा के सभी साधन उपलब्ध थे। किसी भी वस्तु का अभाव उसके जीवन में नहीं था। चित्रा को चित्रकला में दक्षता प्राप्त थी।

दूसरी ओर अरुणा एक साधारण परिवार से संबंधित थी। वह परोपकारी व दयावान लड़की थी। वह गरीबों की सेवा करने को ज्यादा महत्त्व दिया करती थी। चित्रा द्वारा मरी हुई भिखारिन और उसके दो बच्चों के चित्र से संबंधित घटना जानकर अरुणा वहाँ से तुरंत चली जाती है और भिखारिन के बच्चों को गोद लेकर उन्हें एक नई पहचान देती है। अंततः जब चित्रा को यह पता चलता है कि उसके जाने के पश्चात् 'अरुणा' ने भिखारिन के बच्चों को गोद ले लिया था, तो चित्रा के पास अरुणा के बड़प्पन पर विचार व्यक्त करने हेतु शब्द ही नहीं होते हैं।

## पात्र-परिचय

### चित्रा

चित्रा एक धनी परिवार की इकलौती पुत्री है। वह एक प्रसिद्ध चित्रकार बनना चाहती है। वह अरुणा की प्रिय सखी है, किंतु वह अरुणा के सेवा के भावों को नहीं समझ पाती है। वह हर घटना में अपने चित्र के लिए आड़िया ढूँढती नज़र आती है। मरी हुई भिखारिन और उसके बच्चों को देखकर भी वह केवल उनका चित्र बनाती है, सहायता के लिए आगे नहीं आती। इस प्रकार उसकी भाव-शून्यता और संवेदनहीनता प्रदर्शित होती है। अंत में अरुणा की सच्ची कला जानकर वह हतप्रभ होकर उसके समक्ष नतमस्तक हो जाती है।

### अरुणा

अरुणा, चित्रा की सहेली है। वह और चित्रा दोनों एक साथ हॉस्टल में रहकर पढ़ाई करती हैं। अरुणा एक समाज-सेविका है। वह अपना कुछ समय निकालकर बस्ती के बच्चों को पढ़ाती है। अरुणा भावुकता, संवेदनशीलता और अन्य मानवीय गुणों को धारण किए हुए है। बाढ़ की जानकारी मिलने पर वह बाढ़ पीड़ितों की सेवा करने हेतु जाती है। जब चित्रा उसे भिखारिन की मृत्यु और बच्चों के चित्र से संबंधित घटना बताती है, तो अरुणा उन दोनों बच्चों को गोद लेकर उन्हें एक नई पहचान देती है।



## कहानी का सार

### चित्रा की कला : चित्रकारी

चित्रा धनी परिवार से संबंधित है, उसके पास सुख-सुविधा के सभी साधन हैं। किसी भी वस्तु का अभाव उसके जीवन में नहीं है। चित्रा को चित्रकारी में दक्षता प्राप्त है। वह जीवन की प्रत्येक घटना को अपने चित्रों में उतार लेती है। वह स्वयं को चित्रकारी में व्यस्त रखा करती है।

अपने द्वारा बनाए गए चित्र को दिखाने के लिए वह सोती हुई अरुणा को भी जगा देती है, किंतु अरुणा को उसके द्वारा बनाया गया चित्र समझ में नहीं आता।

### ‘चित्रा’ की भौतिकवादी प्रवृत्ति

‘चित्रा’ भौतिकवादी प्रवृत्ति की लड़की है तथा धनी परिवार से संबंधित है। वह जीवन में धन व शोहरत को अधिक महत्व देती है। दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से यदि उसके चित्र को कोई आधार नहीं मिलता था, तो वह घटना उसके लिए व्यर्थ ही होती थी। उसके मन में संवेदना का भाव नहीं था।

### अरुणा की त्यागमय व परोपकारी प्रवृत्ति

अरुणा त्यागमय व परोपकारी प्रवृत्ति की लड़की है तथा एक साधारण परिवार से संबंधित होने के बावजूद भी वह अपने जीवन में गरीबों की सेवा को अधिक महत्व देती है। वह गरीब लोगों की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहती है। वह बस्ती के गरीब नौकरों, चपरासियों, चौकीदारों के बच्चों को पढ़ाया करती है। इसके साथ ही वह स्वयं-सेवकों के साथ बाढ़-पीड़ितों की सेवा करने चली जाती है।

### चित्रा व अरुणा के मैत्रीपूर्ण संबंध

चित्रा व अरुणा के बीच घनिष्ठ मित्रता है। उनकी घनिष्ठ मित्रता ही लोगों की ईर्ष्या का कारण बनती है। वे दोनों छः साल से साथ रह रही हैं, किंतु जब अपनी आगे की पढ़ाई के लिए ‘चित्रा’ हॉस्टल छोड़कर जाने लगती है, तो ‘अरुणा’ उसके चले जाने पर दुःख व्यक्त करते हुए बोलती है कि तू चली जाएगी, तो मैं कैसे रहूँगी? काफी समय से साथ रहते-रहते यह बात मैं तो भूल ही गई कि एक दिन तो हमें दूर होना ही होगा। यह अरुणा व चित्रा के स्नेह भाव को दर्शाता है।

### गरीब भिखारिन व उसके बच्चों का रफ-स्केच

‘चित्रा’ अपने गुरुओं से आशीर्वाद लेने जाती है, किंतु काफी देर तक लौटती नहीं है। आने पर वह अपनी देरी का कारण बताती है कि गर्ग स्टोर के सामने पेड़ के नीचे अक्सर एक भिखारिन बैठी रहती थी। आज अचानक वह मरी पड़ी थी और उसके दोनों बच्चे उससे चिपककर रो रहे थे, इसी कारण उसे आने में देरी हो गई। इस दृश्य को देख ‘चित्रा’ स्वयं को रोक न सकी और गरीब भिखारिन व उसके बच्चों का एक रफ-स्केच बना लिया और इसी रफ-स्केच को वह एक चित्र में परिवर्तित करती है, जिससे उसे देश-विदेश में प्रसिद्धि प्राप्त होती है।

### ‘चित्रा’ के चित्रों की प्रदर्शनी व अरुणा का बच्चों को गोद लेना

‘चित्रा’ विदेश जाकर तन-मन से अपने कार्य में लग जाती है। विदेशों में उसके चित्रों की धूम मच जाती है। भिखारिन व उसके दो अनाथ बच्चों का चित्र उसकी प्रसिद्धि का कारण बनता है। दिल्ली में चित्रा के चित्रों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया और उसके उद्घाटन के लिए चित्रा को ही बुलाया गया। वहाँ चित्रा की भेंट अरुणा से हुई और चित्रा को पता चला कि अरुणा ने गरीब भिखारिन के दोनों बच्चों को गोद लेकर उनके पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी ली है।

अरुणा के इस कार्य पर चित्रा के पास उसकी प्रशंसा में कहने के लिए शब्द ही नहीं थे। गरीब भिखारिन के बच्चों को गोद लेकर उनका पालन-पोषण करना ‘अरुणा’ के सच्ची समाज-सेविका के रूप को सामने लाता है।

### कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता

प्रस्तुत कहानी ‘दो कलाकर’ में लेखिका ने ‘अरुणा’ पात्र के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि मानवता की सेवा ही सबसे बड़ी और सच्ची कला है। दुनिया की सारी कलाएँ इसके समक्ष निरर्थक और निराधार प्रतीत होती हैं। कहानी चित्रा और अरुणा के चारों ओर घूमती है। चित्रा एक महान् चित्रकार बनना चाहती है और अरुणा एक सच्ची समाज-सेविका। इस प्रकार कहानी के दोनों पात्र अपनी-अपनी कला को समर्थ बनाना चाहते हैं। कहानी दो कलाकारों पर आधारित है। अतः कहानी का शीर्षक ‘दो कलाकार’ पूर्णतः सार्थक है।

### शब्दार्थ

शब्द अर्थ, पाठ्य-पुस्तक साहित्य सागर में दिए गए भाग संक्षिप्त कहानियों के पृष्ठों के अनुसार हैं—

**पृष्ठ सं. 64 झकझोरना**—झटका देना (to shake violently);

**खिझलाहट**—जलन, चिड़चिड़ाहट (irritation); **घनचक्कर**—चक्कर में डालने वाला (playful man); **प्रतीक**—चिह्न (symbol)।

**पृष्ठ सं. 65 प्रतीक्षा**—इंतजार (wait); **समाज-सेविका**—समाज की सेवा करने वाली (social-worker); **इकलौती**—एकमात्र संतान (only child); **टालना**—स्थगित करना (postpone, avoid); **सामर्थ्य**—शक्ति (capacity); **निरर्थक**—बेकार (pointless); **तूलिका**—चित्रकार का ब्रुश (paint brush)।

**पृष्ठ सं. 66 मूसलाधार**—लगातार तेज वर्षा (heavy rain);

**भटकना**—इधर-उधर घूमना (wander); **इम्तिहान**—परीक्षा (exam); **स्वयंसेवक**—स्वेच्छा से काम करने वाला (volunteer); **ईर्ष्या**—जलन (jealousy)।

**पृष्ठ सं. 67 बड़बड़ाना**—धीरे-धीरे बोलना (murmuring); **विदेश**—परदेश (foreign); **शोहरत**—प्रसिद्धि (fame); **प्रदर्शनी**—प्रदर्शन करना (exhibition); **विराट**—बहुत बड़ा (huge); **आयोजन**—समारोह जुटाना (organizing); **उद्घाटन**—शुभारंभ (inauguration, opening)।

**पृष्ठ सं. 68 अवाक्**—चुप (speechless); **फ़रमाइश**—अनुरोध (recommendation); **बड़प्पन**—महानता (greatness)।

**पृष्ठ सं. 69 ओझल**—गायब (vanish); **विस्मय**—आश्चर्य, हैरानी (amazement); **शायद**—संभवतः (perhaps)।

# प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. “अरे, यह क्या? इसमें तो सड़क, आदमी, ट्राम, बस, मोटर, मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं। मानो सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है?” **पृष्ठ सं. 64**

(क) चित्रा ने चादर खींचकर सोती हुई अरुणा को क्यों उठा दिया? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** चित्रा को चित्रकला में दक्षता प्राप्त थी। वह स्वयं को चित्रकारी में ही व्यस्त रखा करती थी, इसलिए अपने द्वारा बनाए गए चित्र को दिखाने के लिए चित्रा ने सोती हुई अरुणा को उठा दिया।

(ख) अरुणा ने चित्रा द्वारा बनाए गए चित्र पर विरोध क्यों प्रकट किया? (2)

**उत्तर** अरुणा सो रही थी और ‘चित्रा’ ने ‘अरुणा’ की नींद खराब कर दी थी, जिस कारण अरुणा को गुस्सा आ गया और इसलिए उसने चित्र पर विरोध प्रकट किया।

(ग) ‘अरुणा’ ने ‘चित्रा’ को चित्र पर क्या लिखने को कहा और क्यों? (3)

**उत्तर** अरुणा ने चित्रा को उसके द्वारा बनाए गए चित्र पर उसका शीर्षक लिखने को कहा, क्योंकि चित्रा द्वारा बनाए गए चित्र से स्पष्ट रूप से पता नहीं चल पा रहा था कि आखिर चित्र किसका बनाया गया था? चित्र को देखकर चित्रा कुछ समझ ही नहीं पाई और बोली कि उसने क्या घनचक्कर बनाया है।

(घ) ‘घनचक्कर’ शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि अरुणा ने घनचक्कर किसे कहा है और क्यों? (3)

**उत्तर** ‘घनचक्कर’ शब्द का अर्थ है—चक्कर में डालने वाला। अरुणा ने ‘घनचक्कर’ चित्रा द्वारा बनाए गए चित्र को कहा है, क्योंकि उसके चित्र में सड़क, आदमी, ट्राम, बस, मोटर, मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे थे, जिसे देखकर कुछ भी समझ नहीं आ रहा था, इसलिए ‘अरुणा’ ने ‘चित्रा’ द्वारा बनाए गए चित्र को ‘घनचक्कर’ कहा है।

2. “क्या ये बंदर पाल रखे हैं तूने?” फिर ज़रा हँसकर चित्रा बोली, “एक दिन तेरी पाठशाला का चित्र बनाना होगा। लोगों को दिखाया करेंगे कि हमारी एक मित्र साहिबा थीं, जो बस्ती के चौकीदारों, नौकरों और चपरासियों के बच्चों को पढ़ा-पढ़ाकर ही अपने को भारी पंडिताइन और समाज-सेविका समझती थीं।” **पृष्ठ सं. 65**

(क) स्वयं द्वारा बनाए गए चित्र को ‘चित्रा’ ने किसका प्रतीक बताया है? अपने शब्दों में बताइए। (2)

**उत्तर** जब अरुणा, चित्रा द्वारा बनाए गए चित्रों को उसकी बेवकूफी का प्रतीक बताती है, तब चित्रा ने स्वयं द्वारा बनाए गए चित्र को ‘आज की दुनिया में कंप्यूजन’ का प्रतीक बताया।

(ख) बच्चे किसकी प्रतीक्षा कर रहे थे और क्यों? (2)

**उत्तर** बस्ती के चौकीदारों, नौकरों और चपरासियों के बच्चे अपनी निर्धनता के कारण विद्यालयों में पढ़ नहीं पाते थे और अरुणा उन्हें पढ़ाती थी, इसलिए बच्चे अरुणा की प्रतीक्षा कर रहे थे।

(ग) “क्या ये बंदर पाल रखे हैं तूने?” यह किसने व किससे कहा है? यहाँ बंदर किसे कहा गया है? (3)

**उत्तर** “क्या ये बंदर पाल रखे हैं तूने?” यह चित्रा ने अरुणा से कहा, क्योंकि अरुणा आस-पास के गरीब बच्चों को पढ़ाया

करती थी। यहाँ ‘बंदर’ शब्द बस्ती के चौकीदारों, नौकरों और चपरासियों के बच्चों को, जो अरुणा के पास पढ़ने आए थे, के लिए ही कहा गया है।

(घ) समाज-सेविका की संज्ञा किसे व क्यों दी गई है? (3)

**उत्तर** ‘समाज-सेविका’ की संज्ञा अरुणा को दी गई है, क्योंकि वह बस्ती के चौकीदारों, नौकरों व चपरासियों के बच्चों को पढ़ाकर समाज-सेवा का कार्य करती थी। अरुणा के हृदय में समाज-सेवा की भावना व्याप्त थी, वह खाली समय में गरीब बच्चों को पढ़ाने में अपना कुछ समय व्यतीत करने में विश्वास रखती थी।

3. “वह काम तो तेरे लिए छोड़ दिया। मैं चली जाऊँगी तो जल्दी से सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए झंडा लेकर निकल पड़ना!” और चित्रा हँस पड़ी। **पृष्ठ सं. 66**

(क) किसकी ‘कला को निरर्थक’ किसने व क्यों कहा है? (2)

**उत्तर** ‘चित्रा’ की कला को ‘अरुणा’ ने निरर्थक कहा है, क्योंकि उसकी दृष्टि में ऐसी कला का कोई महत्त्व नहीं, जो व्यक्ति को व्यक्ति न रहने दे।

(ख) उपरोक्त पंक्तियों में ‘मैं’ शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है और दुनिया के कल्याण पर निकलने के लिए किसे कहा गया है? (2)

**उत्तर** उपरोक्त पंक्तियों में ‘मैं’ शब्द चित्रा के लिए प्रयोग किया गया है और दुनिया के कल्याण पर निकलने के लिए ‘अरुणा’ को कहा गया है।

(ग) “वह काम तो तेरे लिए छोड़ दिया।” यह किसने व किससे कहा है? यहाँ किस काम की ओर संकेत किया गया है? (3)

**उत्तर** “वह काम तो तेरे लिए छोड़ दिया।” यह ‘चित्रा’ ने ‘अरुणा’ से कहा।

यहाँ गरीबों की सेवा करके उनकी ज़िंदगी बनाने वाले काम की ओर संकेत किया गया है। अरुणा अपनी सुख-सुविधाओं को त्यागकर बाढ़-पीड़ितों की सहायता करती है। इसके साथ ही वह गरीब बच्चों को भी पूरी मेहनत व लगन से पढ़ाती है।

(घ) ‘चित्रा’ व ‘अरुणा’ के चरित्र पर प्रकाश डालिए। (3)

**उत्तर** ‘चित्रा’ धनी परिवार की इकलौती पुत्री थी। उसे चित्रकला में महारत प्राप्त थी। उसे दुनिया से कोई मतलब नहीं था। वह अपने में ही रहना पसंद करती थी।

वहीं दूसरी ओर साधारण परिवार से संबंधित ‘अरुणा’ परोपकारी व दयालु लड़की थी। वह हमेशा गरीबों की सेवा करने के लिए तत्पर रहती थी। वह एक सच्ची समाज-सेविका थी। भूखी भिखारिन के मरने पर उसके दोनों बच्चों को अपने साथ ले आती है तथा उनका पालन-पोषण करती है।

4. “क्यों चित्रा! तेरा जाने का तय हो गया?”

“हाँ, अगले बुध को मैं घर जाऊँगी और बस एक सप्ताह बाद हिंदुस्तान की सीमा के बाहर पहुँच जाऊँगी।” उल्लास उसके स्वर में छलक पड़ रहा था। **पृष्ठ सं. 66**

(क) बाढ़-पीड़ितों की दशा सुधारने के लिए अरुणा ने क्या किया? (2)

**उत्तर** बाढ़-पीड़ितों की दशा सुधारने के लिए अरुणा ने सारा दिन चंदा इकट्ठा किया, जिससे उनकी कुछ सहायता की जा सके।

(ख) 'स्वयं-सेवकों' का दल कहाँ जा रहा था तथा उनके साथ कौन गया था? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** 'स्वयं-सेवकों' का दल बाढ़-पीड़ितों की सहायता करने के लिए जा रहा था। उनके साथ अरुणा भी गई थी, क्योंकि अरुणा स्वभाव से समाज-सेविका थी।

(ग) 'चित्रा' द्वारा बनाए गए चित्रों को देखकर अरुणा के सामने कौन-सा चित्र साकार हो गया? (3)

**उत्तर** चित्रा द्वारा बनाए गए चित्रों को देखकर अरुणा के सामने बाढ़-पीड़ितों का दृश्य साकार हो गया, जो वह स्वयं अपनी आँखों से देखकर आ रही थी। चित्रा ने तीन चित्र बना रखे थे। चित्रा द्वारा बनाए गए तीनों चित्र बाढ़ से संबंधित ही थे।

(घ) 'चित्रा' को कहाँ व क्यों जाना था और उसकी खुशी का क्या कारण था? (3)

**उत्तर** 'चित्रा' को अपनी चित्रकारी में महारत प्राप्त करने के लिए विदेश जाना था। चित्रा के पिताजी ने उसे विदेश जाने की अनुमति दे दी थी। वे चाहते थे कि वह चित्रकारी में नाम कमाए। अतः अब वह अपनी आगे की पढ़ाई के लिए विदेश जा रही थी, इसलिए उसे खुशी हो रही थी।

5. "क्या.....!" चित्रा की आँखें विस्मय से फैली रह गईं।

"क्या सोच रही है चित्रा?"

"कुछ नहीं...मैं...सोच रही थी कि....." पर शब्द शायद उसके विचारों में खो गए। पृष्ठ सं. 69

(क) ऐसी क्या बात हुई जिसे सुनकर चित्रा की आँखें फैली की फैली रह गईं? समझाकर लिखिए। (2)

**उत्तर** जब दिल्ली में चित्रा के चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया तब वहाँ अरुणा भी उस मृत भिखारिन के दो बच्चों के साथ पहुँची, जिसे अरुणा ने गोद ले लिया था। चित्रा के पूछने पर जब अरुणा ने बताया कि ये दोनों बच्चे उसी भिखारिन के हैं जिसे देखकर चित्रा ने रफ़ स्केच बनाया था, तब चित्रा की आँखें फटी रह गईं।

(ख) किस तस्वीर को प्रथम पुरस्कार व प्रसिद्धि मिली थी? वह किस जगह का चित्र था? (2)

**उत्तर** विदेश जाकर चित्रा उन्नति के शिखर पर पहुँच गई। विदेश में उसकी कला बहुत सराही गई। विशेषकर भिखारिन व उसके दोनों

अनाथ बच्चों की तस्वीर की प्रशंसा से अनेक समाचार-पत्रों के पन्ने रंग गए थे। अनेक प्रतियोगिताओं में चित्रा का 'अनाथ' शीर्षक वाला चित्र प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर चुका था। वह चित्र, चित्रा ने अपने हॉस्टल के बाहर गर्ग स्टोर के सामने पेड़ के नीचे बनाया था, जहाँ एक भिखारिन अपने दो बच्चों को अनाथ छोड़कर मर गई थी।

(ग) अरुणा के किन शब्दों से चित्रा सोच में पड़ गई और अपने ही विचारों में खो गई? चित्रा की सोच के आधार पर अपने विचार लिखिए। (3)

**उत्तर** चित्र-प्रदर्शनी के समय जब चित्रा ने अरुणा के साथ आए दोनों बच्चों के बारे में पूछा कि वे किसके हैं तब अरुणा ने बताया कि वे दोनों बच्चे उसके हैं। चित्रा ने इसे अरुणा का मज़ाक समझा। जब बच्चे पिता के साथ विदा हुए तब चित्रा ने दोबारा पूछा कि ये प्यारे बच्चे किसके हैं। इस पर अरुणा ने 'अनाथ' शीर्षक वाली तस्वीर के दोनों बच्चों पर उँगली रखकर कहा कि ये ही वे दोनों बच्चे हैं। यह सुनकर चित्रा के पैरों तले की धरती खिसक गई। वह स्तब्ध रह गई। वह विचारों में खो गई कि जीवन का उद्देश्य क्या है और उसकी सार्थकता किसमें है। उसने पहचाना कि जो शोहरत उसने पाई है, वह अरुणा के निःस्वार्थ सेवाभाव के आगे कितनी फीकी है।

(घ) "कला को सत्य, शिव और सुंदर होना चाहिए" कहानी के आधार पर एक अनुच्छेद लिखिए। (3)

**उत्तर** मानव जीवन में कला और संस्कृति का बहुत महत्त्व है। कला के विभिन्न रूपों के माध्यम से मानव-जीवन में आदर्श और यथार्थ का मिलन संभव होता है। कला के विभिन्न रूपों की सार्थकता सत्यम् शिवम् सुंदरम् में ही निहित है। संगीत, नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला आदि कला के कई रूप हैं, जिसमें जीवन के सत्य को मानव कल्याण अर्थात् शिवम् के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए तभी वह कला सुंदर मानी जाएगी और उसके कलाकार को समुचित सम्मान प्राप्त होगा। प्रस्तुत कहानी में चित्रा ने मृत भिखारिन और उसके दो अनाथ बच्चों की तस्वीर बनाकर जीवन के कटु सत्य को तो अभिव्यक्त कर दिया, किंतु उन बच्चों की अनदेखी कर उसने कला के सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्से शिवम् की अवहेलना कर दी।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. पिछले एक साल से तो उसे यह भी मालूम नहीं कि वह कहाँ है? अनेक प्रतियोगिताओं में उसका 'अनाथ' शीर्षक वाला चित्र प्रथम पुरस्कार पा चुका था। जाने क्या था उस चित्र में, जो देखता चकित रह जाता। पृष्ठ सं. 67

(क) विदेश जाकर चित्रा ने क्या किया? (2)

(ख) 'अनाथ' शीर्षक वाले चित्र के विषय में लिखिए। (2)

(ग) भारत लौटने पर चित्रा का किस प्रकार स्वागत हुआ? (3)

(घ) प्रदर्शनी में अरुणा को देखकर चित्रा ने क्या किया? (3)

2. "कुछ नहीं..... मैं ..... सोच रही थी कि ....." पर शब्द शायद उसके विचारों में खो गए। पृष्ठ सं. 69

(क) क्या बच्चे वास्तव में अरुणा के थे? बताइए। (2)

(ख) चित्रा को क्यों विश्वास नहीं था कि बच्चे अरुणा के हैं? (2)

(ग) बच्चे किसके थे? यह जानकर चित्रा की कैसी दशा हुई? (3)

(घ) सच्चाई जानकर चित्रा के मन में क्या विचार आए होंगे? अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए। (3)

# साखी कबीरदास

## कवि परिचय

हिंदी के संत कवियों में कबीरदास जी का महत्वपूर्ण स्थान है, इनका नाम हिंदी की संत काव्यधारा की ज्ञानाश्रयी निर्गुण शाखा के प्रमुख कवियों में बड़े ही आदर से लिया जाता है। इनका जन्म संवत् 1398 में वाराणसी के पास लहरतारा नामक ग्राम में हुआ था, परंतु कुछ विद्वानों द्वारा इनका जन्म 1495 में भी माना जाता है। इनकी माता का नाम 'नीमा' तथा पिता का नाम 'नीरू' था। वे संतानहीन तथा जाति से मुसलमान जुलाहा थे।

कबीर प्राचीन संकीर्ण रूढ़ियों एवं अंधविश्वास के खिलाफ थे। इन्होंने वैष्णव संत 'स्वामी रामानंद जी' से दीक्षा ली। कबीर पदे-लिखे नहीं थे। वे निर्गुण भक्ति के उपासक थे। इन्होंने समाज में व्याप्त मूर्ति पूजा, कर्मकांड, बाहरी आडंबरों का खुलकर विरोध किया। इन्होंने हिंदू और मुस्लिम एकता पर बल दिया।

'बीजक' कबीर की प्रसिद्ध रचना है, जो तीन भागों में है- 1. साखी 2. सबद 3. रमैनी

इनकी भाषा को 'सधुक्कड़ी' या 'पंचमेल खिचड़ी' कहा जाता है। अपनी बात को प्रभावपूर्ण तरीके से कहने के कारण ही हजारों प्रसाद द्विवेदी ने इन्हें 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है। इनकी मृत्यु के विषय में सभी विद्वान् एकमत नहीं हैं, किंतु कुछ विद्वानों के अनुसार, कबीरदास जी की मृत्यु 1518 में 'मगहर' उत्तर प्रदेश में हुई थी।

## साखियों का सार

कबीरदास जी ने अपनी साखियों के माध्यम से समाज में व्याप्त बाहरी आडंबर, कर्मकांड तथा कुरीतियों पर प्रहार किया है। कबीरदास जी कहते हैं कि गुरु का स्थान हमेशा ईश्वर से सर्वोपरि होता है। उनके अनुसार ईश्वर की प्राप्ति में अहंकार सबसे बड़ा बाधक है। वे कहते हैं कि मनुष्य को कंकड़-पत्थर से बनी मस्जिद में शोर मचाने के बजाय शांत भाव से ईश्वर की उपासना करनी चाहिए। कबीरदास जी मूर्तिपूजा का विरोध करते हुए कहते हैं कि पत्थर की मूर्ति को पूजना व्यर्थ है।

अंत में कबीरदास जी ईश्वर की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि ईश्वर की महिमा अपार है। उसके गुणों का बखान करना मुश्किल है।

## संदर्भ सहित व्याख्या

1. गुरु गोबिंद दोऊ खड़े, काके लागू पाँय।  
बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोबिंद दियौ बताय॥

### शब्दार्थ

गुरु—अध्यापक (teacher); गोबिंद—ईश्वर (god); दोऊ—दोनों (both); काके—किसके (whose); पाँय—पाँव (foot); बलिहारी—कृतज्ञ होना (grateful)।

**संदर्भ** प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य सागर' के 'पद्य भाग' के पाठ 'साखी' से उद्धृत है, जिसके रचयिता कबीरदास जी हैं।

**प्रसंग** युग प्रवर्तक कवि संत कबीरदास जी ने उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से व्यक्ति के जीवन में 'गुरु की महत्ता' को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

**व्याख्या** कबीरदास जी गुरु की तुलना ईश्वर से करते हुए कहते हैं कि गुरु का स्थान हमारे जीवन में सर्वोपरि है। वे कहते हैं कि यदि हमारे सामने गुरु और ईश्वर दोनों खड़े हों तो हमें सबसे पहले किसके चरणों में नतमस्तक होना चाहिए और इसका उत्तर भी वे स्वयं ही देते हुए कहते हैं कि हमें सबसे पहले गुरु के चरणों को ही छूना चाहिए, क्योंकि वे ही हमें ईश्वर प्राप्ति का सरल रास्ता दिखाते हैं। हमें हमेशा गुरु के प्रति कृतज्ञता की भावना रखनी चाहिए।

2. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहि।  
प्रेम गली अति साँकरी, तामे दो न समाहि।।

### शब्दार्थ

मैं—अहंकार (ego); प्रेम गली—प्रेमरूपी गली (the path of love);  
अति—बहुत अधिक (too much); साँकरी—कम चौड़ी (narrow);  
तामे—इसमें (here in); समाहि—समाहित होना (contained)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग युग प्रवर्तक संत कबीरदास जी ने उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से बताया है कि ईश्वर की प्राप्ति में अहंकार बड़ी बाधा है।

व्याख्या कबीरदास जी कहते हैं कि जब मेरे हृदय में 'मैं' अर्थात् अहंकार था, तब उसमें हरि अर्थात् ईश्वर का वास नहीं था, लेकिन जब हृदय में ईश्वर का वास हो गया, तब उसमें अहंकार नहीं रहा। कबीरदास जी कहते हैं कि प्रेमरूपी गली इतनी साँकरी अर्थात् कम चौड़ी है कि उसमें दो चीजें एक साथ नहीं समा सकती अर्थात् हृदय में अहंकार तथा ईश्वर दोनों का एक साथ वास नहीं हो सकता।

3. काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई बनाय।  
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।

### शब्दार्थ

काँकर—कंकड़ (pebble); पाथर—पत्थर (stone); जोरि कै—इकट्ठा कर, जोड़कर (collect); बनाय—बनाना (to built); मुल्ला—मौलवी (mullah, maullavi)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग युग प्रवर्तक संत कबीरदास जी ने उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से उन लोगों पर कठोर व्यंग्य किया है, जो धर्म एवं पूजा के नाम पर दिखावा करते हैं।

व्याख्या कबीरदास जी बाह्य आडंबरों का विरोध करते हुए कहते हैं कि कंकड़-पत्थर इकट्ठा करके मस्जिद बना लेने से तथा उसमें मुर्गे की तरह बाँग देकर अज्ञान देने से ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती। क्या खुदा अर्थात् ईश्वर बहरा है जो तेज़ आवाज़ में की गई

प्रार्थनाओं को ही सुनेगा? अतः कबीरदास जी कहते हैं कि ईश्वर मन में की गई प्रार्थनाएँ भी सुन सकता है। इस तरह आडंबर रचाकर तेज़ आवाज़ में चिल्लाना व्यर्थ है।

4. पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार।  
ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार।।

### शब्दार्थ

पाहन—पत्थर (stone); पहार—पहाड़ (mountain); ताते—इससे तो (from that); चाकी—चक्की (gristmill); भली—अच्छी (good)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग युग प्रवर्तक संत कबीरदास जी ने उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से धर्म के नाम पर होने वाले बाहरी दिखावे पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या कबीरदास जी कहते हैं कि यदि पत्थरों की पूजा करने से ईश्वर की प्राप्ति होती है, तो मैं पहाड़ की पूजा करने को तैयार हूँ। पत्थर की मूर्ति से तो पत्थर की बनी हुई चक्की ही अच्छी है, जिससे अन्न को पीसकर मनुष्य की भूख शांत होती है। अतः पत्थर-पूजने से ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती।

5. सात समंद की मसि करौं, लेखनि सब बनराय।  
सब धरती कागद करौं, हरि गुन लिखा न जाय।।

### शब्दार्थ

समंद—समुद्र (ocean); मसि—स्याही (ink); लेखनि—कलम (pen);  
बनराय—वन की लकड़ी (forest-wood); कागद—कागज (paper);  
गुन—गुण (quality)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग युग प्रवर्तक संत कवि कबीरदास जी ने उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से निर्गुण ईश्वर की महानता और उनके गुणों का वर्णन किया है।

व्याख्या कबीरदास जी ईश्वर की अपार महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि यदि सातों समुद्रों की स्याही बना ली जाए और सभी वनों की लकड़ी की कलम बना ली जाए तथा सारी धरती को कागज के रूप में प्रयोग किया जाए, तब भी ईश्वर के गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता। तात्पर्य यही है कि ईश्वर में अनेक गुण हैं, उनका वर्णन करना आसान नहीं है।



# प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित दोहों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. गुरु गोबिंद दोऊ खड़े, काके लागू पाँय।

बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोबिंद दियौ बताय।।

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहि।

प्रेम गली अति साँकरी, तामे दो न समाहि।

[2017]

(क) कवि किसके बारे में क्या सोच रहे हैं? (2)

**उत्तर** कवि गुरु व ईश्वर दोनों के बारे में सोच रहे हैं। उनके सामने गुरु व ईश्वर दोनों खड़े हैं। वे विचार कर रहे हैं कि दोनों में सबसे पहले किसके चरणों को छूना चाहिए अर्थात् सबसे पहले मुझे किसको नमन करना चाहिए।

(ख) कवि किसके ऊपर न्योछावर (समर्पण) हो जाना चाहते हैं तथा क्यों? (2)

**उत्तर** कवि अपने गुरु के प्रति न्योछावर हो जाना चाहते हैं, क्योंकि गुरु का महत्त्व हमारे जीवन में सर्वोपरि है। गुरु ने ही हमें हरि के दर्शन कराए हैं। गुरु ही हैं, जो हमारा मार्गदर्शन कर हमें सही राह दिखाते हैं। अतः उनके चरणों में हमें सदैव नतमस्तक रहना चाहिए।

(ग) ईश्वर का वास कहाँ नहीं होता है? कवि हमें क्या त्यागने की प्रेरणा दे रहे हैं? कवि का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताइए। (3)

**उत्तर** ईश्वर का वास अहंकार से युक्त हृदय में नहीं होता तथा कवि हमें अहंकार को त्यागने की ही प्रेरणा दे रहे हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि मनुष्य को अहंकार का त्याग करना चाहिए और मन में ईश्वर के प्रति प्रेमभाव विद्यमान रखना चाहिए। हिंदी के संत कवियों में कबीरदास जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनका नाम हिंदी की संत काव्यधारा की ज्ञानाश्रयी निर्गुण शाखा के प्रमुख कवियों में बड़े ही आदर से लिया जाता है। इनका जन्म 1398 में वाराणसी के पास लहरतारा नामक ग्राम में तथा मृत्यु 1518 में 'मगहर' उत्तर प्रदेश में हुई।

(घ) साँकरी शब्द का क्या अर्थ है? प्रेम गली से कवि का क्या तात्पर्य है? उसमें कौन दो एक साथ नहीं रह सकते हैं, समझाइए। (3)

**उत्तर** 'साँकरी' शब्द का अर्थ होता है—तंग अर्थात् कम चौड़ी। प्रेम गली से कवि का तात्पर्य प्रेमरूपी गली अर्थात् हृदय में स्थित प्रेम की भावना से है। कवि कहता है कि प्रेम की गली इतनी तंग अर्थात् कम चौड़ी है कि इसमें एक साथ 'ईश्वर' और 'अहंकार' का वास नहीं हो सकता। भाव यही है कि यदि ईश्वर की प्राप्ति करनी है, तो हृदय से अहंकार को निकालना होगा। अहंकारी मनुष्य कभी भी ईश्वर को नहीं प्राप्त कर सकता।

2. काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई बनाय।

ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।

पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार।

ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार।।

(क) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि का क्या आशय है? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि का आशय है कि ईश्वर की साधना के लिए हमें किसी भी प्रकार के दिखावे व ढोंग की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर की प्राप्ति कंकड़-पत्थरों को पूजने या तेज आवाज़ में चिल्लाने से नहीं होती। ईश्वर तो हमारे अंतर्मन में निवास करते हैं। हमें उनका शांति से ध्यान करना चाहिए।

(ख) "काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई बनाय"—इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने मनुष्य की किस प्रवृत्ति की ओर संकेत किया है? (2)

**उत्तर** "काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई बनाय"—इन पंक्तियों के माध्यम से कवि मनुष्य की दिखावे की प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है। मनुष्य, कंकड़ और पत्थरों को जोड़कर मंदिर, मस्जिद का निर्माण करता है, इस प्रकार वह दिखावे के लिए पूजा-अर्चना करता है।

(ग) प्रस्तुत पंक्तियों के कवि कौन हैं? उनका साहित्यिक परिचय दीजिए। (3)

**उत्तर** प्रस्तुत पंक्तियों के कवि निर्गुण शाखा के प्रमुख कवियों में से एक कबीरदास जी हैं।

कबीरदास जी एक संत व समाज सुधारक कवि थे। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से समाज में व्याप्त पाखंड, कुरीतियों, बाह्य आडंबर, कर्मकांड आदि का विरोध किया। कबीरदास जी ने अपने काव्य में साधारण बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग किया। इनके काव्य में बहुत-सी भाषाओं के दर्शन होते हैं, इसलिए इनकी भाषा को 'सधुक्कड़ी' तथा 'पंचमेल खिचड़ी' कहा जाता है। इनकी भाषा में अरबी, फारसी, पंजाबी, ब्रजभाषा, खड़ीबोली आदि के शब्द मिलते हैं। इन्होंने अपनी काव्य रचनाओं में काव्य के विभिन्न रूपों का प्रयोग किया जिनमें साखी, सबद, रमैनी सर्वप्रमुख हैं।

(घ) कबीरदास जी ने मनुष्य की मूर्ति पूजा व दिखावे की भावना का खंडन किया है, क्यों? (3)

**उत्तर** कबीरदास जी समाज में व्याप्त मूर्ति पूजा, बाहरी आडंबर आदि के विरोधी थे। वे निर्गुण निराकार ईश्वर के भक्त थे। उनका मानना था कि ईश्वर का कोई आकार नहीं है। उनकी मूर्ति-पूजा करना, मंदिरों-मस्जिदों का निर्माण करना आदि मनुष्य के मात्र बाहरी दिखावे के साधन हैं। इनके द्वारा मनुष्य ईश्वर की प्राप्ति नहीं कर सकता। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए किसी प्रकार के बाहरी आडंबर की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर तो प्रत्येक व्यक्ति के मन में निवास करता है, इसलिए कवि ने मूर्ति-पूजा व बाहरी आडंबरों का विरोध किया है।

3. सात समंद की मसि करौं, लेखनि सब बनराय।

सब धरती कागद करौं, हरि गुन लिखा न जाय।।

(क) 'मसि' शब्द का क्या अर्थ होता है? प्रस्तुत साखी का प्रसंग लिखिए। (2)

**उत्तर** 'मसि' शब्द का अर्थ 'स्याही' होता है। प्रस्तुत साखी में कबीरदास जी ने ईश्वर के अनेक गुणों के विषय में बताया है कि किसी भी तरह से उनका उल्लेख नहीं किया जा सकता।

(ख) कबीरदास जी के काव्य में अधिकतर क्या देखने को मिलता है? (2)

**उत्तर** कबीरदास जी के काव्य में अधिकतर समाज में व्याप्त कुरीतियों बाह्य आडंबरों, मूर्ति-पूजा, कर्मकांडों आदि का विरोध देखने को मिलता है। कबीरदास जी निर्गुण ईश्वर के उपासक थे। अतः उनके काव्य में निर्गुण ईश्वर की उपासना के रूप में स्पष्ट रहस्यवाद के भी दर्शन होते हैं।



(ग) कवि ने ईश्वर की महानता का वर्णन किस प्रकार किया है तथा क्यों? (3)

**उत्तर** कवि ईश्वर की महानता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि यदि सातों समुद्रों की स्याही बनाई जाए, सारे वनों की लकड़ी की कलम बनाई जाए तथा सारी धरती का प्रयोग कागज के रूप में किया जाए, तो भी ईश्वर के गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता। कवि ऐसा इसलिए कह रहा है, क्योंकि ईश्वर के अनेक गुण हैं। उनकी कोई सीमा नहीं है। अतः ईश्वर के गुणों का वर्णन केवल शब्दों के माध्यम से नहीं किया जा सकता।

(घ) प्रस्तुत दोहे के आधार पर कबीरदास जी की भक्ति-भावना को स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** यह स्पष्ट ही है कि कबीरदास जी ईश्वर के निराकार व निर्गुण स्वरूप के उपासक थे। अतः प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने ईश्वर के अनंत गुणों का बखान किया है। उन्होंने, अपनी साखियों में ईश्वर की अनंत महिमा का वर्णन किया है। इन्होंने अपने काव्य के माध्यम से समाज में निर्गुण भक्ति की धारा प्रवाहित की। कबीरदास जी निराकार पार-ब्रह्म की ही उपासना करने पर जोर देते थे, इसीलिए प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने निराकार ईश्वर की भक्ति करते हुए बताया है कि हरि अर्थात् उनके गुण अपार हैं, जिन्हें लिखा नहीं जा सकता।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित दोहों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहि।

प्रेम गली अति साँकरी, तामे दो न समाहि।।

(क) प्रस्तुत दोहा कहाँ से उद्धृत है? (2)

(ख) 'तामे दो न समाहि' का भाव स्पष्ट कीजिए। (2)

(ग) 'प्रेम गली अति साँकरी' में प्रेम गली का अर्थ स्पष्ट करते हुए इस भाव को अपनी भाषा में समझाइए। (3)

(घ) शब्दों के अर्थ लिखिए।

1. प्रेमगली

2. साँकरी

3. तामे

4. समाहि

(3)

2. पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार

ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार

(क) प्रस्तुत साखी के माध्यम से कवि ने किसका खंडन किया है? (2)

(ख) कवि ने पहाड़ को पूजने की बात क्यों की है? स्पष्ट कीजिए। (2)

(ग) कवि ने पत्थरों की पूजा के स्थान पर किसकी पूजा करने पर बल दिया है? साखी के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (3)

(घ) प्रस्तुत साखी के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए। (3)

# गिरिधर की कुंडलियाँ

## गिरिधर कविराय

### कवि परिचय

गिरिधर कविराय के विषय में कोई विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है। श्री शिवसिंह के अनुसार, इनका जन्म संवत् 1770 में माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि वे पंजाब के रहने वाले थे, किंतु बाद में इलाहाबाद के आस-पास आकर बस गए। इनका वास्तविक नाम 'हरिदास' था। इनका कविता-काल संवत् 1800 के बाद ही माना जाता है।

इन्होंने नीति, वैराग्य और अध्यात्म को ही अपनी कविता के विषय के रूप में चुना। इनके काव्य में केवल व्यावहारिक पक्ष की ही प्रधानता देखने को मिलती है।

'गिरिधर कविराय ग्रंथावली' में इनकी पाँच सौ से अधिक कुंडलियाँ संकलित हैं।

### कुंडलियों का सार

गिरिधर कविराय ने अपनी कुंडलियों के माध्यम से नीतिपरक विचारों का उल्लेख किया है। यहाँ उनकी सात कुंडलियाँ संग्रहीत हैं। कवि के अनुसार लाठी हमारे लिए बहुत उपयोगी है। इसके सही समय पर सही उपयोग से हम अपनी रक्षा स्वयं कर सकते हैं। कवि आगे बताते हैं कि कम कीमत का होने के बावजूद कंबल हमारे लिए कितना उपयोगी है। कौए और कोयल के माध्यम से कवि ने गुणवान् व गुणहीन प्राणियों के विषय में बताया है कि गुणवान् व्यक्ति का महत्त्व गुणहीन व्यक्ति की अपेक्षा अधिक होता है।

इसके पश्चात् कवि ने कुंडली में संसार के मतलबी व्यवहार पर व्यंग्य किया है। कवि गिरिधर जी के अनुसार हमें केवल धनवान् व बलवान् व्यक्तियों से ही सलाह लेनी चाहिए। कवि कहते हैं कि अधिक संपदा होने पर उसे परोपकारी कार्यों में लगा देना चाहिए। अंत में कवि ने इस विषय पर प्रकाश डाला है कि राजदरबार में मनुष्य को किस प्रकार का आचरण करना चाहिए, जिससे उसकी प्रतिष्ठा बढ़े।

### संदर्भ सहित व्याख्या

1. लाठी में गुण बहुत हैं, सदा राखिये संग।  
गहरि, नदी, नारी जहाँ, तहाँ बचावै अंग॥  
तहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता कहँ मारै।  
दुश्मन दावागीर, होयँ तिनहूँ को झारै॥  
कह 'गिरिधर कविराय', सुनो हो धूर के बाठी।  
सब हथियार न छाँड़ि, हाथ महाँ लीजै लाठी॥

### शब्दार्थ

गहरि—गहरी (deep); नारी—नाला (drain); अंग—शरीर का हिस्सा (part of body);  
झपटि—आक्रमण करना (attack); दावागीर—बलशाली (strong mighty); झारै—चूर-चूर करना (crush); बाठी—पथिक, मुसाफिर (footslogger, pilgrim); छाँड़ि—छोड़कर (leaving)।

संदर्भ प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य सागर' के 'पद्य भाग' से लिया गया है। इसके कवि 'गिरिधर कविराय' हैं।

**प्रसंग** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने लाठी के महत्त्व व उपयोगिता पर प्रकाश डाला है।

**व्याख्या** वे कहते हैं कि लाठी अनेक गुणों से संपन्न है, इसलिए लाठी को सदैव अपने पास रखना चाहिए। लाठी की उपयोगिता बताते हुए वे कहते हैं कि यदि कहीं गहरी नदी व नाला हो, तो वहाँ लाठी ही हमारी सहायता करती है, क्योंकि लाठी की सहायता से हम पानी की गहराई आदि को नापकर अपनी यात्रा सफल व कष्टरहित बना सकते हैं। इसी प्रकार यदि राह चलते कभी कुत्ता काटने को झपटे, तब ऐसी स्थिति में भी हम अपनी रक्षा लाठी के माध्यम से कर सकते हैं। यदि कोई अहंकारी व्यक्ति हम पर बल का प्रयोग करता है, तो लाठी के बल से हम उसके बल को भी चूर-चूर कर सकते हैं। गिरिधर कविराय लोगों को संबोधित करते हुए कहते हैं कि सब हथियारों को छोड़कर अपने हाथ में लाठी रखो। इसके सही उपयोग से हम अपनी रक्षा स्वयं कर सकते हैं।

- 2.** कमरी थोरे दाम की, बहुतै आवै काम।  
खासा मलमल वाफ़ता, उनकर राखै मान॥  
उनकर राखै मान, बँद जहँ आड़े आवै।  
बकुचा बाँधे मोट, राति को झारि बिछावै॥  
कह 'गिरिधर कविराय', मिलत है थोरे दमरी।  
सब दिन राखै साथ, बड़ी मर्यादा कमरी॥

### शब्दार्थ

कमरी—कंबल (blanket); वाफ़ता—रंगीन सूती कपड़ा (coloured cotton clothes); उनकर—उनका, मनुष्य का (their); मान—सम्मान, इज्जत (respect); आड़े—बाधा (problem); बकुचा—छोटी गठरी (small pack); दमरी—दाम, मूल्य (price)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** प्रस्तुत पंक्तियों में गिरिधर कविराय ने कंबल के प्रकारों तथा मनुष्य के जीवन में कंबल की उपयोगिता के विषय में बताया है।

**व्याख्या** गिरिधर जी कहते हैं कि कंबल अत्यधिक सस्ता व कम मूल्य में आता है। परंतु इसकी उपयोगिता अधिक है, यह मनुष्य के बहुत काम आता है। कंबल विभिन्न प्रकार के होते हैं। मलमल के कंबल से मनुष्य की मान-प्रतिष्ठा बढ़ती है। जहाँ एक ओर मलमल का कंबल व्यक्ति की मान-प्रतिष्ठा बढ़ाने में सहायक होता है, वहीं दूसरी ओर किसी बाधा के आने पर इसके उपयोग से उसको भी दूर किया जाता है; जैसे—अनाज को बाँधने के लिए, रात को बिछाने के लिए आदि के रूप में कंबल का उपयोग किया जा सकता है। अंत में गिरिधर कविराय कहते हैं कि यह कंबल कम मूल्य में आता है। कम मूल्य का होने के पश्चात् भी कंबल हमारा मान व सम्मान बढ़ाता है। अतः हमें सदैव इसे अपने पास रखना चाहिए।

- 3.** गुन के गाहक सहस नर, बिन गुन लहै न कोय।  
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय॥  
शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।  
दोऊ को एक रंग, काग सब भये अपावन॥  
कह 'गिरिधर कविराय', सुनो हो ठाकुर मन के।  
बिनु गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के॥

### शब्दार्थ

गाहक—ग्राहक (customer); सहस—हजारों (thousands); नर—मनुष्य (human); लहै—पूछना (asking); कोय—कोई (anybody); कागा—कौआ (crow); कोकिला—कोयल (cuckoo); सुहावन—सुंदर (beautiful); अपावन—अपवित्र (impure)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से गिरिधर कविराय मनुष्यों के गुणों की तुलना करते हुए कहते हैं कि गुणवान व्यक्तियों की चर्चा सदैव होती है, किंतु गुणहीन व्यक्तियों की चर्चा कोई नहीं करता।

**व्याख्या** यहाँ गिरिधर कविराय मनुष्य के गुणों पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि गुणी व्यक्ति की चर्चा चारों ओर होती है, उसका सदैव मान-सम्मान किया जाता है, किंतु वहीं अवगुणी व्यक्ति को कोई भी नहीं पूछता। जिस प्रकार कौआ और कोयल दोनों एक ही रंग के होते हुए भी समाज में अपनी अलग-अलग पहचान बनाए हुए हैं। लोग कोयल की आवाज़ भी सुनते हैं और कौआ की भी, किंतु कोयल की मधुर आवाज़ सुनकर लोग कोयल की प्रशंसा करते हैं, वहीं दूसरी ओर कौआ को उसकी कर्कश आवाज़ के कारण सब घृणा की दृष्टि से देखते हैं। यहाँ अंतर यही है कि कोयल अपनी मधुर वाणी के कारण लोगों को प्रिय है, किंतु कौआ नहीं है।

अतः गिरिधर कविराय कहते हैं कि गुणहीन व्यक्ति को समाज में कोई महत्त्व नहीं देता और गुणी व्यक्ति का गुणगान प्रत्येक व्यक्ति करता है, इसलिए हमें अच्छे गुणों को अपनाना चाहिए।

- 4.** साँई सब संसार में, मतलब का व्यवहार।  
जब लग पैसा गाँठ में, तब लग ताको यार॥  
तब लग ताको यार, यार संग ही संग डोले।  
पैसा रहे न पास, यार मुख से नहिं बोले॥  
कह 'गिरिधर कविराय', जगत यहि लेखा भाई।  
करत बेगरजी प्रीति, यार बिरला कोई साँई॥

### शब्दार्थ

साँई—भगवान (god); मतलब—स्वार्थ (selfishness); ताको—देखता (see); जगत—संसार (world); लेखा—भाग्य (destiny); बेगरजी—निःस्वार्थ (unselfishness); प्रीति—प्रेम (love); बिरला—दुर्लभ (scarce)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि गिरिधर कविराय कहना चाहते हैं कि इस संसार में सभी अपने स्वार्थ के वशीभूत हैं। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो, जो किसी से निःस्वार्थ भाव से प्रेम करता हो।

**व्याख्या** कवि कहता है कि इस संसार में सभी जगह केवल मतलब अर्थात् स्वार्थ का ही व्यवहार रह गया है। धन-धान्य से परिपूर्ण व्यक्तियों को ही समाज में पूछा जाता है, मित्र बनाया जाता है और धनी व्यक्तियों के साथ ही स्वार्थी मनुष्य मित्रता करना चाहता है, किंतु जब व्यक्ति के पास धन नहीं होता, तब मित्र भी साथ छोड़ देते हैं। मनुष्य की इसी प्रवृत्ति के कारण कवि ने संसार को मतलबी संसार की संज्ञा दी है। गिरिधर कविराय कहते हैं कि संसार की यही रीति है, यहाँ निःस्वार्थ भाव से शायद ही कोई प्रेम करता हो।

5. रहिए लटपट काटि दिन, बरु घामे माँ सोय।  
छाँह न बाकी बैठिए, जो तरु पतरो होय।।  
जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा देहैं।  
जा दिन बहै बयारि, टूटि तब जर से जैहैं।।  
कह 'गिरिधर कविराय', छाँह मोटे की गहिए।  
पाती 'सब झरि जायँ, तरु छाया में रहिए।।

### शब्दार्थ

लटपट—कष्टपूर्ण जीवन, विपत्ति (troublefull life); बरु—भले ही (even); घामे—धूप में (in the sun); छाँह—छाँव (shade); तरु—पेड़ (tree); पतरो—पतला (thin); बयारि—हवा (wind); जर—जड़ से (root); गहिए—पकड़िए (to hold)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि हमें दुःख में धनवान् व बलवान् व्यक्तियों की शरण ही लेनी चाहिए।

व्याख्या कवि कहते हैं कि भले ही हमें अपना दिन तेज धूप में बैठकर व्यतीत करना पड़े, लेकिन कभी भी पतले अथवा कमजोर वृक्ष की छाँव में नहीं बैठना चाहिए, क्योंकि जो वृक्ष पतला होगा, वो एक दिन धोखा दे जाएगा। तेज हवा चलने पर वह जड़ सहित उखड़ जाएगा। गिरिधर जी कहते हैं कि हमेशा मोटे अर्थात् मजबूत वृक्ष की छाँव में ही बैठना चाहिए, क्योंकि तेज हवा चलने पर उसकी पत्तियाँ भले ही झड़ जाएँ, लेकिन छाँव फिर भी बनी रहेगी।

यहाँ कवि का अभिप्राय है कि हमें कष्टपूर्ण दिनों में गरीब व कमजोर व्यक्ति की अपेक्षा धनी तथा बलवान् व्यक्ति से सहायता माँगनी चाहिए, क्योंकि कष्ट के दिनों में एक कमजोर व्यक्ति अधिक दिनों तक हमारी सहायता नहीं कर सकता।

6. पानी बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम।  
दोरु हाथ उलीचिए, यही सयानो काम।।  
यही सयानो काम, राम को सुमिरन कीजै।  
पर-स्वारथ के काज, शीश आगे धर दीजै।।  
कह 'गिरिधर कविराय', बड़न की याही बानी।  
चलिए चाल सुचाल, राखिए अपना पानी।।

### शब्दार्थ

दाम—धन, पैसा (money); उलीचिए—बाहर निकालना चाहिए (should take out); सयानो—बुद्धिमान (intelligent); पर-स्वारथ—परोपकार, कृपा (benevolence, goodness); काज—काम (work); शीश—सिर (head); बड़न—महान् लोग (great people); सुचाल—अच्छा व्यवहार (good behaviour); पानी—प्रतिष्ठा, (prestige)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से गिरिधर कविराय उन व्यक्तियों को गुणी बताते हैं, जो सत्कर्मों में लगे रहते हैं तथा परोपकारी प्रवृत्ति के होते हैं।

व्याख्या कवि बुद्धिमान लोगों की ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि नाव में पानी आ जाने से स्वयं को डूबने से बचाने के लिए बुद्धिमान व्यक्ति दोनों हाथों से नाव के पानी को बाहर फेंकता है, ठीक इसी प्रकार घर में अत्यधिक धन के बढ़ जाने पर उसे सत्कर्मों में लगाना चाहिए, यही बुद्धिमान व्यक्ति की पहचान है।

बुद्धिमान व्यक्ति ही सदैव राम का नाम लेते हैं और सदैव परोपकार के कार्यों में लगे रहते हैं। वे दानी प्रवृत्ति के होते हैं तथा सदैव दान-पुण्य के कार्यों में अपना समय लगाते हैं, वे परोपकार के लिए अपना सिर भी आगे कर देते हैं।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि बुद्धिमान लोगों की यही वाणी होती है, वे सत्य मार्ग पर चलकर सदैव अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखते हैं।

7. राजा के दरबार में, जैये समया पाए।  
साँई तहाँ न बैठिये, जहाँ कोउ देय उठाय।।  
जहाँ कोउ देय उठाय, बोल अनबोले रहिए।  
हँसिये नहीं हहाय, बात पूछे ते कहिए।।  
कह 'गिरिधर कविराय', समय सों कीजै काजा।  
अति आतुर नहिं होय, बहुरि अनखैहँ राजा।।

### शब्दार्थ

कोउ—कोई (any); अनबोले—चुपचाप रहना (silent); हहाय—ज़ोर से हँसना या कहकहे लगाना (loud laugh); आतुर—उत्सुकता, बेचैनी (eagerness, perplexed); अनखैहँ—क्रोधित होना (to angry)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने, राजदरबार में किस प्रकार का आचरण करना चाहिए, इस पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या कवि कहते हैं कि राजा के दरबार में हमें समयानुसार ही जाना चाहिए। सदैव राजदरबार में आना-जाना उचित नहीं है। काम होने पर ही जाना चाहिए। कवि आगे कहते हैं कि हमें वहाँ नहीं बैठना चाहिए, जहाँ से उठाए जाने का डर हो, क्योंकि कोई भी आकर उठा सकता है, इसके साथ ही राजदरबार में हमें ज़रूरत से ज़्यादा नहीं बोलना चाहिए, जितना उचित हो, सदैव उतना ही बोलना चाहिए।

ज़रूरत से ज़्यादा ठहाके मारकर हँसना भी नहीं चाहिए, क्योंकि ज़रूरत से ज़्यादा बोलना, ज़रूरत से ज़्यादा हँसना राजदरबार में हमारी छवि को बिगाड़ता है, इसलिए अपनी एक अच्छी छवि बनाए रखने के लिए हमें राजदरबार में उतना ही बोलना चाहिए, जितना हमसे पूछा जाए।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि हमें समय के अनुसार ही अपने कार्य करने चाहिए, धैर्य रखना चाहिए तथा अधिक आतुरता नहीं दिखानी चाहिए, अन्यथा राजा क्रोधित हो सकता है।

# प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. लाठी में गुण बहुत हैं, सदा रखिए संग।  
गहरि नदी, नारी जहाँ, तहाँ बचावै अंग॥  
तहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता कहँ मारै।  
दुश्मन दावागीर, होयँ तिनहूँ को झारै॥  
कह 'गिरिधर कविराय' सुनो हो धूर के बाठी।  
सब हथियार न छाँड़ि, हाथ महँ लीजै लाठी॥ [2018]

(क) इस कुंडली में किसकी उपयोगिता बताई गई है? कवि ने किस समय मनुष्य को लाठी रखने का परामर्श दिया है? (2)

**उत्तर** इस कुंडली में लाठी की उपयोगिता बताई गई है। लाठी अनेक गुणों से संपन्न है, इसलिए लाठी को सदैव अपने पास रखना चाहिए।

(ख) लाठी हमारे शरीर की सुरक्षा किस प्रकार करती है? (2)

**उत्तर** यदि राह चलते कभी कुत्ता काटने को झपटे तब ऐसी स्थिति में हम लाठी के माध्यम से अपने शरीर की सुरक्षा कर सकते हैं।

(ग) लाठी किन तीनों से निपटने में सहायक होती है और किस प्रकार? (3)

**उत्तर** लाठी गहरी नदी व नाले, कुत्ते तथा अहंकारी व्यक्ति से निपटने में सहायक होती है। यदि कहीं गहरी नदी व नाला हो, तो वहाँ लाठी ही हमारी सहायता करती है, क्योंकि लाठी की सहायता से हम पानी की गहराई आदि को नापकर अपनी यात्रा सफल बना सकते हैं। इसी प्रकार यदि राह चलते कभी कुत्ता काटने को झपटे तब ऐसी स्थिति में भी हम अपनी रक्षा लाठी के माध्यम से कर सकते हैं। यदि कोई अहंकारी व्यक्ति हम पर बल का प्रयोग करता है, तो लाठी के बल से हम उसके बल को भी चूर-चूर कर सकते हैं।

(घ) कवि सब हथियार छोड़कर लाठी लेने की बात क्यों कर रहे हैं? अपने विचार व्यक्त करते हुए कुंडलियाँ लेखन का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** कवि सब हथियार छोड़कर लाठी लेने की बात इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि लाठी सबसे महत्वपूर्ण हथियार है। अतः अन्य सभी हथियारों को छोड़कर अपने हाथ में लाठी रखनी चाहिए। इसके सही उपयोग से तुम स्वयं अपनी रक्षा कर सकते हो अर्थात् यह सदैव तुम्हारी रक्षा करेगी और इसमें कोई खतरा भी नहीं है। लाठी हमारी आत्मरक्षा के साथ-साथ और कई तरीकों से भी उपयोगी है। कुंडलियों के माध्यम से कवि हमें शिक्षा दे रहा है। इनके साथ ही कवि ने हमें निःस्वार्थ भाव से अपना कर्म करने और हमें सामाजिक जीवन में उचित आचरण करने की सीख दी।

2. कमरी थोरे दाम की, बहुते आवै काम।  
खासा मलमल वाफता, उनकर राखै मान॥  
उनकर राखै मान, बँद जहँ आड़े आवै।  
बकुचा बाँधे मोट, राति को झारि बिछावै॥  
कह 'गिरिधर कविराय', मिलत है थोरे दमरी।  
सब दिन राखै साथ, बड़ी मर्यादा कमरी ॥

(क) 'कमरी' शब्द का अर्थ बताते हुए, बताएँ कि कवि ने सदैव क्या पास रखने को कहा है? (2)

**उत्तर** 'कमरी' शब्द का अर्थ कंबल होता है। कम मूल्य का होने के बावजूद कंबल हमारे बहुत काम आता है। यह मनुष्य की प्रतिष्ठा को भी बढ़ाने में सहायक होता है। अतः कवि ने कंबल को सदैव पास रखने के लिए कहा है।

(ख) प्रथम दो पंक्तियों से कवि का क्या आशय है? (2)

**उत्तर** गिरिधर कविराय के अनुसार, कंबल भले ही सस्ता व कम मूल्य में आता हो, किंतु इसकी उपयोगिता अधिक है। यह मनुष्य के बहुत काम आता है। कंबल के विभिन्न प्रकारों में से मलमल का कंबल मनुष्य की मान-प्रतिष्ठा बढ़ाता है।

(ग) कमरी बाधाओं को दूर करने में किस प्रकार सहायक है? (3)

**उत्तर** एक ओर कंबल मनुष्य की मान-प्रतिष्ठा बढ़ाता है, तो दूसरी ओर कहीं-न-कहीं बाधाओं को भी दूर करने में सहायक होता है। अनाज को बाँधने के लिए कंबल का गठरी के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार, यदि बिछाने के लिए हमारे पास कुछ न हो और कंबल पास हो, तो कंबल से हम बिछाने की समस्या का भी हल निकाल सकते हैं।

(घ) गिरिधर कविराय के अनुसार, कमरी को किस-किस रूप में उपयोग में लाया जा सकता है? (3)

**उत्तर** गिरिधर कविराय के अनुसार, मनुष्य के जीवन में कंबल बहुत उपयोगी होता है। 'मलमल' का कंबल मनुष्य की मान-प्रतिष्ठा बढ़ाता है। जब कोई समस्या आती है, तो इसका उपयोग करके समस्या का समाधान निकाला जा सकता है। कंबल में अनाज बाँधकर उसकी गठरी बनाई जा सकती है, रात में सोने के लिए बिस्तर न हो, तो कंबल को बिछाकर उस पर सोया जा सकता है। इस प्रकार कह सकते हैं कि कंबल हमारे लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होता है।

3. गुन के गाहक सहस नर, बिन गुन लहै न कोय।

जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय॥

शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।

दोऊ को एक रंग, काग सब भये अपावन॥

कह 'गिरिधर कविराय', सुनो हो ठाकुर मन के।

बिनु गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के॥

(क) प्रस्तुत पद्यांश का प्रसंग स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि गुणहीन व्यक्ति की अपेक्षा गुणवान् व्यक्ति की प्रशंसा सभी करते हैं। अतः मनुष्य को हमेशा अच्छा आचरण करना चाहिए और अपने अंदर अच्छे गुणों को ही धारण करना चाहिए।

(ख) लोग कौए से घृणा करते हैं और कोयल को पसंद करते हैं, क्यों? (2)

**उत्तर** कौआ और कोयल दोनों एक ही रंग के हैं, लेकिन लोग कौए से घृणा करते हैं, क्योंकि उसकी आवाज़ कर्कश है, परंतु कोयल की आवाज़ मधुर है, इसलिए उसे सब पसंद करते हैं।

(ग) 'गुण के गाहक सहस नर' से क्या तात्पर्य है? (3)

**उत्तर** 'गुण के गाहक सहस नर' से कवि का तात्पर्य है कि जो व्यक्ति गुणवान् होते हैं, उनकी प्रशंसा सभी करते हैं। उनकी चर्चा सभी लोगों द्वारा होती है, लेकिन गुणहीन मनुष्य को उसके अवगुणों के कारण कोई पसंद नहीं करता। ऐसे व्यक्ति की समाज में कोई भी चर्चा नहीं करता तथा न ही उन्हें कोई महत्व देता है। अतः गुणवान् व्यक्तियों को सभी पसंद करते हैं।

(घ) प्रस्तुत पद्यांश का सार स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** जिस प्रकार कौआ और कोयल एक रंग के होते हुए भी, दोनों में से कोयल को लोग अधिक पसंद करते हैं, क्योंकि कोयल अपनी मधुर आवाज़ से सबके मन को जीत लेती है, लेकिन कौए की कर्कश आवाज़ को सुनकर उससे सभी घृणा करते हैं। इसी प्रकार जो व्यक्ति गुणवान् होते हैं, उनका मान-सम्मान प्रत्येक जगह होता है। उन्हें सभी लोग पसंद करते हैं, लेकिन गुणहीन व्यक्ति को कोई पसंद नहीं करता। सभी लोग ऐसे लोगों से घृणा करते हैं। अतः मनुष्य को हमेशा अच्छे गुणों को ही ग्रहण करना चाहिए, जिससे सभी लोग उन्हें पसंद करें।

4. साँई सब संसार में, मतलब का व्यवहार।

जब लग पैसा गाँठ में, तब लग ताको यार।।

तब लग ताको यार, यार संग ही संग डोले।

पैसा रहे न पास, यार मुख से नहीं बोले।।

कह 'गिरिधर कविराय', जगत यहि लेखा भाई।

करत बेगरजी प्रीति, यार बिरला कोई साँई।।

(क) संसार में किस प्रकार का व्यवहार है? (2)

**उत्तर** कवि ने बताया है कि संसार में अधिकांशतः मतलब का व्यवहार होता है। लोग अपने स्वार्थ के लिए ही किसी दूसरे को पूछते हैं। बिना किसी स्वार्थ के कोई भी व्यक्ति किसी के पास नहीं जाता और मुँह से भी नहीं बोलता।

(ख) स्वार्थी संसार का मनुष्य कब तक अपने मित्र को खोजता है? (2)

**उत्तर** स्वार्थी संसार का मनुष्य केवल तब तक ही अपने मित्र को खोजता है तथा उसके आस-पास मँडराता रहता है, जब तक मित्र के पास पैसा एवं धन-दौलत होती है और उसका स्वार्थ पूरा नहीं हो जाता है। उसके बाद वह उससे बात करना भी पसंद नहीं करता।

(ग) कवि ने संसार को स्वार्थी संसार की संज्ञा क्यों दी है? (3)

**उत्तर** कवि ने संसार को स्वार्थी संसार की संज्ञा इसलिए दी है, क्योंकि मनुष्य स्वार्थी हो गया है। वह अपने स्वार्थ के लिए ही धनी व्यक्तियों से मित्रता करना चाहता है, किंतु जब व्यक्ति के पास धन नहीं होता है, तो तब मित्र भी साथ छोड़ देते हैं। मनुष्य की इसी स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण कवि ने संसार को मतलबी संसार या स्वार्थी संसार की संज्ञा दी है।

(घ) उपरोक्त पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** कवि कहते हैं कि इस संसार में सभी व्यक्ति मतलबी हो गए हैं, जो अपने-अपने स्वार्थ हेतु प्रेम का ढोंग और दिखावा करते हैं। यह दुनिया स्वार्थी और मतलबी होती जा रही है। जब किसी के पास धन होता है, तो सब उसके मित्र बनना चाहते हैं, किंतु जब नहीं होता तो कोई उससे बात तक नहीं करना चाहता। कहने का अभिप्राय यह है कि धनी व्यक्ति के सब मित्र बनना चाहते हैं, लेकिन निर्धन को कोई नहीं पूछता और न ही उससे कोई मित्रता करना पसंद करता है। निःस्वार्थ प्रेम करने वाले इस संसार में दुर्लभ ही मिलते हैं।

5. रहिए लटपट काटि दिन, बरु घामे माँ सोय।

छाँह न बाकी बैठिये, जो तरु पतरो होय।।

जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा देहैं।

जा दिन बहै बयारि, टूटि तब जर से जैहैं।।

कह 'गिरिधर कविराय', छाँह मोटे की गहिए।

पाती सब झरि जायँ, तऊ छाया में रहिए।।

(क) कवि के अनुसार किस वृक्ष की छाँह में बैठना उपयुक्त होता है और किसमें अनुपयुक्त? (2)

**उत्तर** कवि के अनुसार, पतले वृक्ष की छाँह की अपेक्षा मोटे वृक्ष की छाँह में बैठना उपयुक्त होता है, क्योंकि मोटा वृक्ष तेज़ हवा के झटकों को सहन कर टूटता नहीं है और पतला वृक्ष तेज़ हवा का झोंका सहन न कर पाने के कारण जड़ से ही उखड़ जाता है।

(ख) 'घामे' शब्द का अर्थ बताते हुए 'बरु घामे माँ सोय' पंक्ति का आशय समझाइए। (2)

**उत्तर** 'घामे' शब्द का अर्थ होता है—'धूप'। 'बरु घामे माँ सोय' से तात्पर्य है कि भले ही धूप में सोना पड़ जाए, परंतु हमें पतले वृक्ष की छाँह में कभी नहीं सोना चाहिए, क्योंकि पतले वृक्ष की छाँह में सोना हमारे लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

(ग) पतले व मोटे वृक्ष की संज्ञा किसे दी गई है व क्यों? (3)

**उत्तर** प्रस्तुत पद्यांश में मोटे व पतले वृक्ष की संज्ञा क्रमशः धनी (बलवान्) व निर्धन (कमजोर) व्यक्ति को दी गई है। कष्टपूर्ण दिनों में हमें गरीब व कमजोर व्यक्ति की अपेक्षा धनी व बलवान् व्यक्ति की शरण लेनी चाहिए, क्योंकि कमजोर व्यक्ति अधिक समय तक हमारी सहायता नहीं कर सकता, परंतु धनी व्यक्ति हमारे लिए अधिक समय तक सहायक हो सकता है। इसलिए हमें धनवान् व्यक्तियों की शरण में जाना चाहिए।

(घ) जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा देहैं।

जा दिन बहै बयारि, टूटि तब जर से जैहैं।।

पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** यहाँ कवि वृक्ष के माध्यम से धनी व कमजोर व्यक्ति की बात करते हुए कहते हैं कि हमें पतले वृक्ष की छाँह में नहीं बैठना चाहिए अर्थात् हमें दुःख की स्थिति में कमजोर व निर्धन व्यक्ति की सहायता नहीं लेनी चाहिए, क्योंकि जिस प्रकार तेज़ हवा से पतला वृक्ष जड़ सहित गिर जाता है, ठीक उसी प्रकार एक निर्धन व कमजोर व्यक्ति कठिनाई भरे दिनों में हमारी सहायता नहीं कर सकता।

6. पानी बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम।

दोरु हाथ उलीचिए, यही सयानो काम।।

यही सयानो काम, राम को सुमिरन कीजै।

पर-स्वारथ के काज, शीश आगे धर दीजै।।

कह 'गिरिधर कविराय', बड़न की याही बानी।

चलिए चाल सुचाल, राखिए अपना पानी।।

(क) कवि के अनुसार नाव में पानी तथा घर में दाम बढ़ने पर क्या करना चाहिए? (2)

**उत्तर** नाव में पानी बढ़ जाने पर दोनों हाथों से पानी बाहर निकालने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा नाव के डूब जाने का खतरा बना रहता है। उसी प्रकार घर में ज्यादा धन-दौलत आ जाने पर हमें उसे परोपकार में लगाना चाहिए।

(ख) 'चलिए चाल सुचाल, राखिए अपना पानी' में कवि क्या कहना चाहता है? (2)

**उत्तर** यहाँ कवि कहना चाहता है कि मनुष्य को अच्छा व्यवहार करते हुए हमेशा अपनी मान-प्रतिष्ठा को बनाए रखना चाहिए। परहित जैसे सत्कर्मों को करते हुए मनुष्य संसार में हमेशा यश का ही भागी बनता है।

(ग) सयाने काम कौन-कौन से कहे जाते हैं? (3)

**उत्तर** 'यही सयानो काम' से कवि का तात्पर्य यह है कि नाव में पानी भर जाने पर और घर में पैसा ज्यादा हो जाने पर उन्हें बाहर निकाल देना चाहिए अर्थात् नाव में से पानी को दोनों हाथों से बाहर फेंक



देना चाहिए तथा पैसा अधिक होने पर उसे परोपकार के कार्यों में लगा देना चाहिए। ऐसे कामों को ही संसार में 'सयाने काम' कहा जाता है।

(घ) प्रस्तुत पद्यांश का सार स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** कवि के अनुसार, जिस प्रकार नाव में पानी भर जाने पर उसे बाहर निकालने में ही लाभ है, क्योंकि पानी के बढ़ने से नाव के डूबने का खतरा बना रहता है। उसी तरह घर में धन के बढ़ जाने पर उसे सत्कर्मों में लगा देना चाहिए। बुद्धिमान लोगों की प्रवृत्ति ही यही होती है कि वे हमेशा दान-पुण्यों के कार्यों में लगे रहते हैं और अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखते हैं।

7. राजा के दरबार में, जैये समया पाए।

साँई तहाँ न बैठिये, जहाँ कोउ देय उठाय।।

जहाँ कोउ देय उठाय, बोल अनबोले रहिए।।

हँसिये नहीं हहाय, बात पूछे ते कहिए।।

कह 'गिरिधर कविराय', समय सों कीजै काजा।

अति आतुर नहिं होय, बहुरि अनखैहँ राजा।।

(क) बिना पूछे कोई बात क्यों नहीं कहनी चाहिए? (2)

**उत्तर** राजा के दरबार में बिना पूछे कोई बात नहीं कहनी चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से राजा के नाराज होने का खतरा बना रहता है और ऐसा करने से हम वहाँ हँसी के भी पात्र बन सकते हैं, जिससे हमारी प्रतिष्ठा के गिरने का भय बना रहता है।

(ख) 'हँसिये नहीं हहाय, बात पूछे तो कहिए' -पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** 'हँसिये नहीं हहाय, बात पूछे तो कहिए' -पंक्ति का अर्थ है कि

राजदरबार में कभी-भी जोर-से नहीं हँसना चाहिए और जब तक कोई न पूछे, तब तक किसी भी बात का जवाब नहीं देना चाहिए, क्योंकि यह सब राजदरबार में आचरण के विरुद्ध होता है तथा इससे हमारे आत्मसम्मान को भी ठेस पहुँच सकती है।

(ग) गिरिधर कविराय का साहित्यिक परिचय दीजिए। (3)

**उत्तर** गिरिधर कविराय ने अपनी कविताओं में नीति, वैराग्य और अध्यात्म को आधार बनाया। उन्होंने अधिकांशतः कुंडलियों में ही काव्य-सृजन किया। इनकी कुंडलियाँ जन-मानस में अत्यंत लोकप्रिय थीं। इनके काव्य में केवल व्यावहारिक पक्ष ही देखने को मिलता है। शिल्प की दृष्टि से गिरिधर जी का काव्य नीरस है। इनकी कविताओं में भाषा की सजावट के लिए अलंकारों, रसों का प्रयोग नहीं मिलता। फिर भी इनकी कुंडलियों की लोकप्रियता जन-जन में देखने को मिलती है।

(घ) क्या गिरिधर कविराय की कुंडलियाँ आज भी प्रासंगिक हैं? (3)

**उत्तर** गिरिधर कविराय की कुंडलियाँ दैनिक जीवन की बातों से संबद्ध हैं और सीधी-सरल भाषा में कही गई हैं। वे प्रायः नीतिपरक हैं जिनमें परंपरा के अतिरिक्त अनुभव का पुट भी है। गिरिधर कवि ने नीति, वैराग्य और अध्यात्म को ही अपनी कविता का विषय बनाया है। जीवन के व्यावहारिक पक्ष का इनके काव्य में प्रभावशाली वर्णन मिलता है। इस आधार पर निःसंदेह गिरिधर कविराय की कुंडलियाँ आज भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि उनमें लाठी और कंबल जैसे दैनिक जीवन में आने वाली वस्तुओं की महत्ता का वर्णन किया गया है, कोयल के समान गुणी व्यक्ति की समाज में आवश्यकता पर जोर दिया है, निःस्वार्थ भाव से अपना कर्म करने की सीख दी गई है और सामाजिक जीवन में उचित आचरण करने की जरूरत भी है।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. लाठी में गुण बहुत हैं, सदा राखिए संग।

गहरी नदी, नारी जहाँ, तहाँ बचावै अंग।।

तहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता कहँ मारै।

दुश्मन दावागीर, होयँ तिनहूँ को झारै।।

कह 'गिरिधर कविराय', सुनो हो धूर के बाठी।

सब हथियार न छाँड़ि, हाथ महँ लीजै लाठी।।

(क) प्रस्तुत पद्यांश का प्रसंग लिखिए। (2)

(ख) गहरी नदी-नाले और कुत्ते से कैसे बचा जा सकता है? (2)

(ग) 'दुश्मन दावागीर, होयँ तिनहूँ को झारै' से कवि का क्या तात्पर्य है? (3)

(घ) प्रस्तुत पद्यांश में कवि क्या स्पष्ट करना चाहता है? (3)

2. साँई सब संसार में, मतलब का व्यवहार।

जब लग पैसा गाँठ में, तब लग ताको यार।।

तब लग ताको यार, यार संग ही संग डोले।

पैसा रहे न पास, यार मुख से नहिं बोले।।

कह 'गिरिधर कविराय', जगत यहि लेखा भाई।

करत बेगरजी प्रीति, यार बिरला कोई साँई।।

(क) कवि ने संसार में किस प्रकार का व्यवहार बताया है? (2)

(ख) स्वार्थी मित्र कब तक साथ बना रहता है? (2)

(ग) 'करत बेगरजी प्रीति, यार बिरला कोई साँई' से कवि का क्या तात्पर्य है? (3)

(घ) प्रस्तुत पंक्तियों का सार स्पष्ट कीजिए। (3)

# स्वर्ग बना सकते हैं

रामधारी सिंह 'दिनकर'

## कवि परिचय

राष्ट्रकवि की उपाधि से सम्मानित रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 30 सितंबर, 1908 को बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया गाँव में एक कृषक परिवार में हुआ। जब दिनकर जी दो वर्ष के थे, तब इनके पिता का निधन हो गया था तथा इनका पालन-पोषण पूर्णतः माता ने ही किया। मैट्रिक की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर इन्हें 'भूदेव स्वर्णपदक' मिला। इन्होंने बीए (ऑनर्स) करने के उपरांत अध्यापक के पद पर कार्य किया। सन् 1950 में ये एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष बने। रामधारी सिंह 'दिनकर' सन् 1952 में राज्यसभा के सदस्य भी रहे तथा भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया। 'दिनकर' जी की रचनाओं में राष्ट्रीयता की गूँज तथा भारतीय संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। इनका स्मरण 'ओज' के कवि के रूप में किया जाता है। दिनकर जी की कुछ प्रमुख कृतियाँ हैं—उर्वशी, कुरुक्षेत्र, रेणुका, हुँकार, रसवंती, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा आदि काव्य रचनाएँ तथा 'संस्कृति के चार अध्याय' इनकी प्रमुख गद्य रचना है। राष्ट्रकवि दिनकर जी का निधन 24 अप्रैल, 1974 को हुआ था।

## कविता का सार

प्रस्तुत कविता रामधारी सिंह 'दिनकर' जी की रचना 'कुरुक्षेत्र' से ली गई है, जिसमें भीष्म पितामह युधिष्ठिर को अंतिम उपदेश दे रहे हैं। कवि कहता है कि धरती को स्वर्ग तभी बनाया जा सकता है, जब धरती पर जन-जन का भेद समाप्त होगा। कवि कहते हैं कि धरती किसी की खरीदी हुई दासी नहीं है, इस पर सभी का समान अधिकार है तथा सभी मनुष्यों को अपना जीवन जीने के लिए पर्याप्त समान सुविधाएँ व बाधारहित विकास की आवश्यकता है, किंतु कई बाधाएँ मनुष्य की राह रोककर खड़ी हो जाती हैं। जब तक देश के प्रत्येक मनुष्य को न्याय का सुख प्राप्त नहीं होता, तब तक पृथ्वी पर शांति की स्थापना नहीं की जा सकती।

भीष्म पितामह के माध्यम से कवि युधिष्ठिर को कहते हैं कि जब तक पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को समान दृष्टि से नहीं देखा जाएगा, तब तक धरती पर अशांति बनी रहेगी। यहाँ मनुष्य केवल अपने लिए ही सुख-साधनों को जुटाने में लगा है। कवि के अनुसार, प्रभु ने मनुष्य को धरती पर असंख्य सुख दिए हैं, किंतु इन सुखों को व्यक्ति तभी भोग सकता है, जब उसमें समानता, प्रेम और परोपकार की भावना व्याप्त हो, तभी मनुष्य धरती को स्वर्ग बना सकता है।

## संदर्भ सहित व्याख्या

1. धर्मराज यह भूमि किसी की नहीं क्रीत है दासी।  
हैं जन्मना समान परस्पर  
इसके सभी निवासी॥

### शब्दार्थ

धर्मराज—युधिष्ठिर का एक अन्य नाम (an other name of Yudhishtira); क्रीत—खरीदी हुई (purchased); दासी—नौकरानी (maid-servant); जन्मना—जन्म से (by birth); परस्पर—एक-दूसरे के साथ (with each other)।

**संदर्भ** प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य-सागर' के 'पद्य भाग' से लिया गया है।  
ये पंक्तियाँ रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित कविता 'स्वर्ग बना सकते हैं' से ली गई हैं।

**प्रसंग** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि के माध्यम से भीष्म पितामह, धर्मराज युधिष्ठिर को स्पष्ट करना

चाहते हैं कि धरती पर सबका समान अधिकार है और इस धरती पर जन्म लेने वाले सभी मनुष्य समान हैं।

**व्याख्या** कवि कहता है कि यह धरती किसी की खरीदी हुई दासी नहीं है, इस पर जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति का समान अधिकार है तथा सभी इसके निवासी हैं। कवि का आशय यह है कि इस धरती पर जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति का समान रूप से अधिकार है, क्योंकि सभी मनुष्य एक समान हैं। इस धरती को हम स्वर्ग तभी बना सकते हैं, जब सभी मनुष्यों को एक समान दृष्टि से देखा जाए, क्योंकि सभी व्यक्ति इस पृथ्वी के निवासी हैं।

- 2.** सबको मुक्त प्रकाश चाहिए, सबको मुक्त समीरण  
बाधा रहित विकास, मुक्त आशंकाओं से जीवन।

### शब्दार्थ

मुक्त—आज़ाद (free); समीरण—वायु, हवा (wind); विकास—प्रगति (progress); आशंका—संदेह, शक (doubt)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने कहा है कि जब धरती पर जीवन व्यतीत करने वाले सभी प्राणियों का व्यवहार भेदभाव रहित होगा और सभी को समान अवसर प्राप्त होंगे, तभी इस धरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है।

**व्याख्या** कवि के माध्यम से भीष्म कहते हैं कि इस धरती को स्वर्ग तभी बना सकते हैं, जब धरती पर व्याप्त सभी प्राणियों को अपना जीवन जीने के लिए समान अवसर व समान सुविधाएँ उपलब्ध होंगी। सभी को समान प्रकाश व मुक्त वायु मिलेगी अर्थात् जब सभी के लिए एकसमान वातावरण होगा। मनुष्य का जीवन तब आशंकाओं से रहित होगा, जब किसी प्रकार का संदेह मनुष्य के मन में विद्यमान नहीं होगा; किसी के विकास में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होगी अर्थात् धरती पर जीवन व्यतीत करने वाले प्रत्येक प्राणी का व्यवहार भेदभाव रहित होगा तथा सभी को समान अवसरों की प्राप्ति होगी, तभी इस धरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है।

- 3.** लेकिन विघ्न अनेक अभी इस पथ पर अड़े हुए हैं,  
मानवता की राह रोककर पर्वत अड़े हुए हैं।

### शब्दार्थ

विघ्न—बाधा, रुकावट (obstruction); पथ, राह—मार्ग (path); मानवता—मनुष्यता (humanity)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने मनुष्य के मार्ग में आने वाली अनेक बाधाओं की चर्चा की है।

**व्याख्या** कवि कहता है कि मनुष्य के विकास के मार्ग में अनेक बाधाएँ हैं। उसके विकास का मार्ग कठिनाइयों से घिरा हुआ है। इन कठिनाइयों तथा बाधाओं के कारण ही मनुष्य का विकास अवरुद्ध हो गया है। ये बाधाएँ पर्वत के समान मनुष्य के सामने आकर खड़ी हैं अर्थात् मानवता के विकास में पर्वत रूपी बाधाएँ राह रोककर खड़ी हैं, जिसके कारण मनुष्य प्रगति के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो पा रहा है। हमें इन बाधाओं को जड़ से खत्म करना होगा, तभी मनुष्य प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकता है।

- 4.** न्यायोचित सुख सुलभ नहीं, जब तक मानव-मानव को  
चैन कहाँ धरती पर तब तक, शांति कहाँ इस भव को?

### शब्दार्थ

न्यायोचित—न्यायपूर्ण (justified); सुलभ—आसान (easy); चैन—शांति (relief); भव—संसार (world)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने मनुष्य के जीवन में न्याय के महत्त्व को उजागर किया है, साथ ही स्पष्ट किया है कि सच्चे न्याय से ही सुख और शांति मिलती है।

**व्याख्या** कवि कहता है कि इस संसार में व्यक्ति को न्याय का सुख प्राप्त नहीं है अर्थात् जब तक इस धरती पर रहने वाले सभी प्राणियों को न्याय रूपी सुख प्राप्त नहीं होगा, तब तक विकास का मार्ग अवरुद्ध ही रहेगा।

कवि कहता है कि संसार में जब तक व्यक्ति को उचित न्याय का सुख नहीं मिलेगा, तब तक प्रत्येक मनुष्य को इस धरती पर आराम नहीं मिलेगा तथा संसार में शांति की स्थापना नहीं होगी। कहने का तात्पर्य यही है कि इस संसार में सुख-चैन तभी मिल सकता है, जब प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से न्याय मिलने लगेगा।

अतः कह सकते हैं कि मनुष्य के न्यायपूर्ण सुख से ही संसार में चैन व शांति को स्थापित किया जा सकता है।

- 5.** जब तक मनुज-मनुज का यह सुख भाग नहीं सम होगा  
शमित न होगा कोलाहल संघर्ष नहीं कम होगा।

### शब्दार्थ

मनुज—मनुष्य (human); सम—समान (equal); शमित—शांत (peace); कोलाहल—शोर (noise); संघर्ष—परिश्रम (struggle)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है कि जब तक समाज में समानता का भाव विद्यमान नहीं होगा, तब तक संसार में अशांति ही रहेगी।

**व्याख्या** कवि कहता है कि जब तक समाज में रहने वाले सभी प्राणियों में समानता का भाव होगा; सभी मनुष्यों को समाज में समान दृष्टि से नहीं देखा जाएगा, तब तक संसार में अशांति ही रहेगी। कवि धरती पर स्वर्ग बनाने पर बल देते हुए कहता है कि जब तक पृथ्वी पर रहने वाले सभी प्राणियों को समान दृष्टि से नहीं देखा जाएगा, उन्हें उनके सुख की प्राप्ति समान रूप से नहीं होगी। पृथ्वी पर अशांति बरकरार रहेगी तथा समानता के लिए मनुष्य का संघर्ष निरंतर गतिशील अवस्था में रहेगा।

- 6.** उसे भूल वह फँसा परस्पर ही शंका में भय में  
लगा हुआ केवल अपने में और भोग-संचय में।

### शब्दार्थ

शंका—संदेह (doubtful); भय—डर (fear); भोग—आनंद लेना (enjoyment); संचय—संग्रह करना (collect)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने व्यक्ति की स्वार्थ प्रवृत्ति के विषय में चर्चा की है। व्यक्ति अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर भोग-संचय में लगा रहता है।

**व्याख्या** कवि कहता है कि जब तक मनुष्य एक समतापूर्ण समाज की स्थापना नहीं करेगा, तब तक उसके जीवन का संघर्ष निरंतर गतिशील अवस्था में रहेगा, किंतु समतापूर्ण समाज की सच्चाई जानते हुए भी मनुष्य केवल स्वार्थ की पूर्ति में लगा हुआ है। वह अपने आदर्श को भूलकर, स्वार्थ की पूर्ति में ऐसा फँस गया है कि उसके मन में जीवन के प्रति एक भय व शंका निरंतर बनी रहती है, किंतु फिर भी वह आनंद-युक्त सामग्रियों के संग्रह में निरंतर संलग्न रहता है अर्थात् मनुष्य परस्पर समानता के आदर्श को भूलकर अपने स्वार्थ की पूर्ति में लगा हुआ है और मनुष्य की इसी प्रवृत्ति के कारण ही उसका विकास रुका हुआ है।

**7. प्रभु के दिए हुए सुख इतने हैं विकीर्ण धरती पर**  
भोग सकें जो उन्हें जगत में, कहाँ अभी इतने नर?

**शब्दार्थ**

प्रभु—ईश्वर (god); विकीर्ण—बिखरा हुआ (scattered); जगत—संसार (world); नर—मनुष्य (human)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने ईश्वर द्वारा दिए गए सुखों का वर्णन किया है।

**व्याख्या** कवि कहता है कि इस धरती पर ईश्वर के अनेक उपकार हैं अर्थात् धरती पर चारों ओर ईश्वर की कृपा ही फैली हुई है। ईश्वर इतना दानी है कि मनुष्य के लिए उसने विस्तृत रूप में

सुख-सुविधाओं का भंडार लगा रखा है, किंतु मनुष्य की प्रवृत्ति ही ऐसी है कि ईश्वर द्वारा प्रदान की गई सुख-सुविधाओं का वह सदुपयोग नहीं कर पाता।

ईश्वर की इतनी कृपा इस संसार में विद्यमान है कि इस पृथ्वी पर रहने वाले लोग प्रभु द्वारा दी गई सुख-सुविधाओं को भोगने में कम प्रतीत होते हैं।

**8. सब हो सकते तुष्ट, एक-सा सब सुख पा सकते हैं**  
चाहें तो पल में धरती को स्वर्ग बना सकते हैं।

**शब्दार्थ**

तुष्ट—संतुष्ट; प्रसन्न (satisfied, happy); स्वर्ग—देवलोक (heaven)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने स्पष्ट किया है कि सभी मनुष्य संतुष्टि और सुख को प्राप्त कर सकते हैं, यदि वे स्वार्थरहित व प्रेमपूर्ण जीवन-यापन करें।

**व्याख्या** कवि कहता है कि प्रभु ने मनुष्य को धरती पर बहुत-से सुख दिए हैं, किंतु इन सुखों को व्यक्ति तभी उठा सकता है, जब उसमें समानता, प्रेम तथा परोपकार की भावना विद्यमान हो। इसके साथ ही समानता के आदर्श के महत्त्व को समझकर तथा अपनी स्वार्थी प्रवृत्ति को त्यागकर मनुष्य धरती को स्वर्ग बनाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

धरती पर जीवन व्यतीत करने वाले प्राणी संतुष्ट हो सकते हैं और सुख की प्राप्ति कर सकते हैं, परंतु यह तभी संभव है, जब सभी में आपसी प्रेम-भाव, समानता आदि का भाव विद्यमान हो। कवि कहता है कि पृथ्वी पर जीवन व्यतीत करने वाले सभी प्राणी चाहें तो अपने अथक परिश्रम से पलभर में पृथ्वी को स्वर्ग बना सकते हैं।

## प्रश्न अभ्यास

*निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

**1. धर्मराज यह भूमि किसी की नहीं क्रीत है दासी**  
है जन्मना समान परस्पर इसके सभी निवासी  
सबको मुक्त प्रकाश चाहिए सबको मुक्त समीरण  
बाधा रहित विकास, मुक्त आशंकाओं से जीवन।

(क) कवि के अनुसार, धरती को स्वर्ग कैसे बनाया जा सकता है? (2)

**उत्तर** कवि के अनुसार, जब सभी को एक समान वातावरण उपलब्ध होगा तथा मनुष्य का जीवन आशंकाओं से रहित होगा अर्थात् जब मनुष्य के मन में किसी प्रकार का संदेह विद्यमान नहीं होगा तथा सभी को समान अवसरों की प्राप्ति होगी, तभी इस धरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है। अतः धरती को स्वर्ग बनाने के लिए समान अवसर व भेदभावरहित वातावरण उपलब्ध कराना होगा।

(ख) कवि ने धरती के विषय में क्या कहा है? (2)

**उत्तर** कवि ने धरती के विषय में कहा है कि यह धरती किसी की खरीदी हुई दासी नहीं है, इस पर सबका समान अधिकार है। यहाँ रहने

वाले सभी मनुष्य जन्म से परस्पर समान हैं। सभी को एक-दूसरे के प्रति श्रद्धाभाव की भावना रखनी चाहिए।

(ग) कवि ने मुक्त प्रकाश व मुक्त समीरण की बात क्यों कही है? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** कवि कहता है कि धरती किसी की खरीदी हुई दासी नहीं है। यहाँ जन्म लेने वाले प्रत्येक नागरिक का इस पर समान रूप से अधिकार है। सभी को समान प्रकाश व मुक्त वायु मिलेगी अर्थात् जब सभी के लिए एक समान वातावरण होगा तथा सभी को समान अवसरों की प्राप्ति होगी, तभी व्यक्ति विकास के मार्ग तक पहुँच सकता है, इसलिए कवि ने मुक्त प्रकाश व मुक्त समीरण अर्थात् वायु की बात की है।

(घ) उपरोक्त पद्यांश के रचयिता कौन हैं? उनका साहित्यिक परिचय दीजिए। (3)

**उत्तर** उपरोक्त पद्यांश के रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। रामधारी सिंह 'दिनकर' एक ओजस्वी कवि थे। उन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से विभूषित किया गया था। इन्होंने गद्य व पद्य दोनों विधाओं में

अपना साहित्यिक योगदान दिया। दिनकर जी का अधिकांश काव्य छायावाद के प्रभाव से मुक्त है। इसलिए इनका नाम प्रगतिवादी कवियों में गिना जाता था। उनकी देश-प्रेम से युक्त कविताएँ ओजमयी हैं। इन्होंने अपने काव्य में प्रबंध तथा मुक्तक दोनों प्रकार की शैली का प्रयोग किया है।

2. लेकिन विघ्न अनेक अभी न्यायोचित सुख सुलभ नहीं  
इस पथ पर अड़े हुए हैं जब तक मानव-मानव को  
मानवता की राह रोककर चैन कहाँ धरती पर तब तक  
पर्वत अड़े हुए हैं। शांति कहाँ इस भव को?

(क) किस मार्ग में अनेक बाधाएँ हैं तथा मानवता की राह रोककर कौन खड़ा हुआ है? (2)

**उत्तर** मनुष्य के विकास के मार्ग में अनेक बाधाएँ हैं तथा मानवता की राह में ये ही पर्वत समान बाधाएँ खड़ी हुई हैं। जब तक इन बाधाओं का समाधान नहीं होगा, तब तक मानवता का विकास होना असंभव है।

(ख) संसार में व्यक्ति को कौन-सा सुख प्राप्त नहीं है? (2)

**उत्तर** संसार में व्यक्ति को न्यायोचित सुख प्राप्त नहीं है। न्यायोचित सुख से तात्पर्य है कि संसार में मनुष्य को समान रूप से न्याय का सुख नहीं मिल रहा है। कुछ को संसार में बहुत ज्यादा सुख मिले हुए हैं, तो किसी को न के बराबर सुखों की प्राप्ति है। अतः संसार में असमानता बनी हुई है।

(ग) विकास के मार्ग में आने वाली किन समस्याओं का वर्णन कवि ने किया है? (3)

**उत्तर** विकास का मार्ग सदैव कठिनाइयों से घिरा हुआ है। इस धरती पर जीवन व्यतीत करने वाले सभी प्राणियों की सबसे बड़ी समस्या ही यही है कि यहाँ पर सभी को न्यायपूर्ण सुख प्राप्त नहीं है।

जब तक व्यक्ति को न्यायपूर्ण सुख प्राप्त नहीं होगा, तब तक व्यक्ति को चैन नहीं मिलेगा। संसार में भेदभाव की भावना फैली हुई है, जिससे असमानता की स्थिति बनी हुई है, जिसके कारण व्यक्ति के विकास का मार्ग रुका हुआ है।

(घ) “चैन कहाँ धरती पर तब तक, शांति कहाँ इस भव को?” ऐसा क्यों कहा गया है? (3)

**उत्तर** “चैन कहाँ धरती पर तब तक, शांति कहाँ इस भव को?” ऐसा इसलिए कहा गया है, क्योंकि जब तक व्यक्ति को समान अधिकार व न्यायोचित सुख प्राप्त नहीं होगा, तब तक उसे चैन व शांति नहीं मिलेगी अर्थात् संसार में शांति की स्थापना नहीं होगी।

कहने का तात्पर्य है कि मनुष्य के न्यायोचित सुख से ही संसार में चैन व शांति को स्थापित किया जा सकता है। इसलिए मनुष्य को शांति स्थापित करने के लिए एक-दूसरे के प्रति समर्पण की भावना पैदा करनी होगी।

3. जब तक मनुज-मनुज का यह शमित न होगा कोलाहल  
सुख भाग नहीं सम होगा संघर्ष नहीं कम होगा।

(क) कवि ने समाज में रहने वाले सभी प्राणियों में कौन-से भाव के विद्यमान होने की बात कही है? (2)

**उत्तर** कवि ने समाज में रहने वाले सभी प्राणियों में समानता का भाव विद्यमान होने की बात कही है अर्थात् कवि द्वारा प्रत्येक मनुष्य को समान सुख मिलने की बात कही गई है।

(ख) ‘सम’ शब्द का अर्थ बताते हुए यह बताएँ कि ‘सुख भाग नहीं सम होगा’ ऐसा क्यों कहा गया है? (2)

**उत्तर** ‘सम’ शब्द का अर्थ है—समान। ‘सुख भाग नहीं सम होगा’ ऐसा इसलिए कहा गया है, क्योंकि जब तक जन-जन के मध्य भेदभाव की भावना खत्म नहीं होगी, तब तक देश विकास के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकता। प्रगति के लिए सभी में समानता का दृष्टिकोण होना चाहिए।

(ग) संघर्ष के कम न होने की बात क्यों कही गई है? (3)

**उत्तर** संघर्ष के कम न होने की बात इसलिए कही गई है, क्योंकि जब तक सभी मनुष्यों को समाज में समान रूप से नहीं देखा जाएगा, तब तक संसार में अशांति ही विद्यमान रहेगी। समानता के लिए मनुष्य का संघर्ष निरंतर गतिशील अवस्था में ही चलता रहता है। प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि उसको भी समान अवसर प्राप्त हों, ताकि वह जीवन पथ पर आगे बढ़ सके, प्रगति कर सके, किंतु उसे यह अवसर नहीं मिल पाता और वह संघर्ष करता रहता है।

(घ) उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं? (3)

**उत्तर** उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि यदि धरती पर स्वर्ग बनाना है, तो हमें सभी के लिए समान दृष्टिकोण रखना होगा, किंतु यदि ऐसा नहीं होता है, तो समाज में सदैव अशांति ही विद्यमान रहेगी व निरंतर संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी, जिसके कारण मनुष्य की उन्नति का रास्ता अवरुद्ध हो जाएगा। अशांति को मिटाकर कर ही हम अपने उन्नति के द्वार खोल सकते हैं।

4. उसे भूल वह फँसा परस्पर लगा हुआ केवल अपने में  
ही शंका में भय में और भोग-संचय में।

(क) कवि कैसे समाज की कल्पना कर रहा है? (2)

**उत्तर** कवि स्वार्थरहित तथा समतापूर्ण समाज की कल्पना कर रहा है। कवि कहता है कि यदि मनुष्य शंकारहित होकर एक-दूसरे के सुख की कामना करे, तो वह एक आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकता है। और चारों ओर खुशहाली का वातावरण पैदा कर सकता है।

(ख) ‘उसे भूल वह फँसा परस्पर’, यहाँ ‘वह’ शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है तथा वह क्या भूलकर किसमें फँसा हुआ है? (2)

**उत्तर** ‘वह’ शब्द प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रयोग किया गया है। आज व्यक्ति स्वार्थ के लिए अपने आदर्श को भूलकर, सुख-सुविधाओं की पूर्ति करने में फँसा हुआ है अर्थात् अपने लिए आनंद की वस्तुओं के संग्रह में लगा हुआ है।

(ग) “शंका में भय में, लगा हुआ केवल अपने में”—इन पंक्तियों के माध्यम से कवि किस ओर संकेत कर रहा है? (3)

**उत्तर** “शंका में भय में, लगा हुआ केवल अपने में”—इन पंक्तियों के माध्यम से कवि स्वार्थी मनुष्य की ओर संकेत करते हुए कहता है कि मनुष्य परस्पर भोग-संचय की प्रवृत्ति में निरंतर संलग्न रहता है और केवल अपनी ही उन्नति के विषय में सोचता रहता है। उसके मन में जीवन के प्रति एक भय व शंका घर कर गई है, जिसके कारण उसके विकास का मार्ग अवरुद्ध हो गया है।

(घ) प्रस्तुत पद्यांश का भावार्थ स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** प्रस्तुत पद्यांश का मूल भाव स्वार्थरहित होकर समतापूर्ण समाज की कल्पना करना है, किंतु मनुष्य समतापूर्ण समाज की सच्चाई जानते हुए भी अपने स्वार्थ की पूर्ति में ही लगा हुआ है और इसमें ऐसा फँस गया है कि जीवन के प्रति निराशा, शंका, भय उसके मन में घर कर गए हैं। मनुष्य की इसी प्रवृत्ति के कारण सर्वथा उसका विकास रुका हुआ है।

5. प्रभु के दिए हुए सुख इतने भोग सकें जो उन्हें जगत में,  
हैं विकीर्ण धरती पर कहाँ अभी इतने नर?

(क) प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता कौन हैं तथा धरती पर प्रभु ने क्या बिखेर रखे हैं? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। धरती पर प्रभु ने मनुष्य के लिए विभिन्न प्रकार के सुख-सुविधा के साधन बिखेर रखे हैं। उसने मनुष्य को धरती के माध्यम से प्रकृति, अन्न, कीमती रत्न आदि उपभोग के लिए दिए हैं।

(ख) मनुष्य सुखी क्यों नहीं है? (2)

**उत्तर** मनुष्य के पास प्रभु ने सुख-सुविधा के असीमित भंडार दे रखे हैं, लेकिन वह फिर भी सुखी नहीं है, क्योंकि वह इन सुख-सुविधाओं का न्यायोचित उपभोग नहीं कर पा रहा है। मनुष्य में समता का भाव विकसित न होने के कारण वह सुख का अनुभव नहीं कर पा रहा है।

(ग) "भोग सकें जो उन्हें जगत में, कहाँ अभी इतने नर?" से कवि का क्या तात्पर्य है? (3)

**उत्तर** कवि के अनुसार, प्रभु ने पृथ्वी पर सुख-सुविधाओं का भंडार लगा रखा है। धरती पर चारों ओर ईश्वर की कृपा ही फैली हुई है, किंतु मनुष्य की प्रवृत्ति ऐसी ही है कि वह उसकी कृपा का समान रूप से उपभोग नहीं कर पा रहा है।

कवि कहता है कि प्रभु ने धरती के माध्यम से मनुष्य के उपभोग हेतु इतना दे रखा है कि इस संसार में इतने प्राणी नहीं हैं, जो ईश्वर प्रदत्त चीजों का संपूर्ण रूप से भोग कर सकें, लेकिन फिर भी मनुष्य को इन सुख-सुविधाओं की कमी ही प्रतीत होती है, जिसका कारण मनुष्य की स्वार्थपरकता, न्यायोचित भाव न होना तथा समता का अभाव होना है।

(घ) उपरोक्त पद्यांश का केंद्रीय भाव लिखिए। (3)

**उत्तर** कवि कहता है कि प्रभु की कृपा धरती पर बिना किसी भेदभाव के बनी हुई है। उसने धरती पर रहने वालों के लिए यहाँ सुख-सुविधा के असीमित साधन जुटा रखे हैं। इस संसार में अभी भी इतने प्राणी नहीं हैं, जो ईश्वर प्रदत्त चीजों का संपूर्ण रूप से उपभोग कर सकें। अतः मनुष्य को बिना स्वार्थ के सभी वस्तुओं का समान रूप से उपभोग करते हुए इस धरती को स्वर्ग बनाने में अपना योगदान देना चाहिए।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सबको मुक्त प्रकाश चाहिए सबको मुक्त समीरण  
बाधा रहित विकास, मुक्त आशंकाओं से जीवन।

(क) प्रस्तुत पद्यांश के रचयिता कौन हैं तथा बताइए कि 'मुक्त समीरण' से कवि का क्या तात्पर्य है? (2)

(ख) बाधा रहित विकास पाने के लिए सबको क्या करना होगा? (2)

(ग) धरती पर सभी को समान अवसरों की प्राप्ति चाहिए, क्यों? (3)

(घ) प्रस्तुत पद्यांश का सार स्पष्ट कीजिए। (3)

2. जब तक मनुज-मनुज का यह

सुख भाग नहीं सम होगा

शमित न होगा कोलाहल

संघर्ष नहीं कम होगा।

(क) सुख भाग के समान होने से क्या होगा? (2)

(ख) 'शमित न होगा कोलाहल' से कवि का क्या तात्पर्य है? (2)

(ग) कवि ने पद्यांश में किस प्रकार के 'संघर्ष' की बात कही है? (3)

(घ) प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवि क्या स्पष्ट करना चाहता है? (3)

3. प्रभु के दिए हुए सुख इतने

हैं विकीर्ण धरती पर

भोग सकें जो उन्हें जगत में,

कहाँ अभी इतने नर?

(क) प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने किस प्रकार के सुख की बात की है? (2)

(ख) 'विकीर्ण धरती' से कवि का क्या आशय है? (2)

(ग) कवि ने क्या भोगने की चर्चा की है और क्यों? (3)

(घ) प्रस्तुत पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए। (3)



# वह जन्मभूमि मेरी सोहनलाल द्विवेदी

## कवि परिचय

‘सोहनलाल द्विवेदी’ का जन्म वर्ष 1906 में उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले के ‘बिंदकी’ नामक गाँव में हुआ था। इन्होंने हिंदी के साथ-साथ संस्कृत का भी अध्ययन किया। इन्होंने काशी विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। द्विवेदी जी के काव्य में जगह-जगह राष्ट्रीय जागरण, भारत की गरिमापूर्ण संस्कृति, हरिजन-उद्धार आदि के दर्शन होते हैं। वर्ष 1938 से 1942 तक इन्होंने दैनिक राष्ट्रीय पत्र ‘अधिकार’ का लखनऊ से संपादन किया।

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं— भैरवी, सेवाग्राम, जयभारत जय, कुणाल, इनकी बालोपयोगी कविताएँ हैं— दूध बताशा, बाल भारती, बाँसुरी और झरना, बच्चों के बापू, शिशु भारती, हँसो-हँसाओ, चाचा नेहरू आदि। वासवदत्ता और ‘विषपान’ इनके आख्यान काव्य हैं।

वर्ष 1969 में भारत सरकार ने इन्हें ‘पद्मश्री’ से सम्मानित किया। इन्होंने आजीवन साहित्य सर्जना की। वर्ष 1988 में इनका निधन हो गया।

## कविता का सार

प्रस्तुत कविता में सोहनलाल द्विवेदी जी ने देश-प्रेम की भावना का परिचय कराया है। उन्होंने भारत भूमि की भौगोलिक विशेषताओं का वर्णन करने के साथ-साथ उसकी प्राकृतिक सुंदरता का भी बहुत सुंदर तरीके से गुणगान किया है। कवि ने भारतभूमि को महापुरुषों की जन्मभूमि बताया है, जहाँ पर राम, कृष्ण, बुद्ध जैसे अनेक महान् पुरुषों ने जन्म लिया है। अतः कवि कहता है कि ऐसी पवित्र भूमि पर प्रत्येक भारतवासी को गर्व करना चाहिए।

## संदर्भ सहित व्याख्या

1. वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी  
ऊँचा खड़ा हिमालय, आकाश चूमता है,  
नीचे चरण तले पड़, नित सिंधु झूमता है।  
गंगा, यमुना, त्रिवेणी, नदियाँ लहर रही हैं,  
जगमग छटा निराली, पग-पग पर छहर रही हैं।  
वह पुण्यभूमि मेरी, वह स्वर्णभूमि मेरी।  
वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी।

## शब्दार्थ

चरण-पैर (foot); नित-रोजाना (daily); सिंधु-सागर (sea); छटा-शोभा (grace, beauty);  
छहर-बिखरने की क्रिया (scatter); पुण्यभूमि—अच्छे कर्मों की भूमि (auspicious land);  
स्वर्णभूमि—सोने की भूमि (golden land)।

**संदर्भ** प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक ‘साहित्य-सागर’ के ‘पद्य भाग’ में सोहनलाल द्विवेदी द्वारा रचित कविता ‘वह जन्मभूमि मेरी’ से उद्धृत है।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने अपनी मातृभूमि पर गर्व करते हुए उसकी भौगोलिक सुंदरता का वर्णन किया है।

**व्याख्या** कवि कहता है कि यह भारत भूमि मेरी जन्मभूमि व मातृभूमि है। जिसके उत्तर में आकाश को छूता हिमालय पर्वत है, तो दक्षिण में समुद्र/सागर मेरी जन्मभूमि के चरणों को स्पर्श करते हुए प्रतीत होते हैं। इनके अतिरिक्त गंगा, यमुना, सरस्वती पवित्र त्रिवेणी नदियाँ अपनी छटा बिखेरती हुई मेरी मातृभूमि की सुंदरता को पग-पग पर बढ़ाती हैं। कवि अपनी मातृभूमि की सुंदरता एवं महानता का वर्णन करते हुए इसे पवित्र व सुंदर बताता है तथा इस मातृभूमि पर गर्व करते हुए इसे पुण्यभूमि व स्वर्णभूमि कहकर संबोधित करता है।

2. झरने अनेक झरते, जिसकी पहाड़ियों में,  
चिड़ियाँ चहक रही हैं, हो मस्त झाड़ियों में।  
अमराइयाँ घनी हैं, कोयल पुकारती है।  
बहती मलय पवन है, तन-मन सँवारती है।  
वह धर्मभूमि मेरी, वह कर्मभूमि मेरी।  
वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी।

### शब्दार्थ

झरते हैं—गिरते हैं (fall); अमराइयाँ—आम के बगीचे (mango garden);  
घनी—बहुत सारे पेड़ (many trees); मलय—दक्षिण भारत का एक पर्वत  
(a mountain of South India); पवन—हवा (wind);  
सँवारना—सजाना (decorate)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने अपनी मातृभूमि के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया है।

व्याख्या जिसकी पहाड़ियों में अनेक झरने बहते हैं, जहाँ की सुंदर झाड़ियों में रंग-बिरंगी चिड़ियों की चहचहाहटें सुनने को मिलती हैं। जहाँ घने आम के बगीचों में कोयल की मधुर तान गूँजती है तथा जहाँ के (दक्षिण भारत के) मलय पर्वत से आने वाली सुगंधित हवा से तन-मन झूम उठता है। ऐसी पवित्र भूमि मेरी धर्मभूमि तथा कर्मभूमि है अर्थात् ऐसी भारत भूमि की सेवा करना ही हमारा धर्म व कर्म है।

3. जन्मे जहाँ थे रघुपति, जन्मी जहाँ थीं सीता,  
श्रीकृष्ण ने सुनाई, वंशी पुनीत गीता।

गौतम ने जन्म लेकर, जिसका सुयश बढ़ाया,  
जग को दया दिखाई, जग को दिया दिखाया।  
वह युद्धभूमि मेरी, वह बुद्धभूमि मेरी।  
वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी।

### शब्दार्थ

रघुपति—भगवान् राम (Lord Rama); पुनीत—पवित्र (sacred);  
सुयश—प्रसिद्धि (fame); जग—संसार (world)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग उपरोक्त पंक्तियों में कवि स्वयं को धन्य मानता है कि उसका जन्म उस भूमि पर हुआ है, जहाँ राम, कृष्ण और गौतम बुद्ध जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया है।

व्याख्या कवि अपनी भूमि को महान् युद्धभूमि और बुद्धभूमि कहकर संबोधित करते हुए कहते हैं कि मेरी मातृभूमि ऐसी पवित्र भूमि है, जहाँ रघुपति राम व माता सीता ने जन्म लिया है। श्रीकृष्ण, जिन्होंने अपनी मधुर बाँसुरी की तान से गोपियों के मन को मोहित किया तथा अर्जुन को गीता का पाठ पढ़ाया तथा गौतम बुद्ध ने मेरी जन्मभूमि पर जन्म लेकर इसके सुयश को बढ़ाया तथा भारतभूमि पर जन्म लेकर इस संसार को दया व प्रेम का संदेश दिया एवं संसार को एक नई राह दिखाकर भारतवासियों का मार्गदर्शन किया। कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि जिस भूमि पर भगवान् राम, माता सीता तथा श्रीकृष्ण व गौतम बुद्ध जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया, उस भूमि पर मेरा जन्म लेना मेरे लिए गौरव की बात है।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी  
ऊँचा खड़ा हिमालय, आकाश चूमता है,  
नीचे चरण तले पड़, नित सिंधु झूमता है।  
गंगा, यमुना, त्रिवेणी, नदियाँ लहर रही हैं,  
जगमग छटा निराली, पग-पग पर छहर रही हैं।  
वह पुण्यभूमि मेरी, वह स्वर्णभूमि मेरी।  
वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी।

(क) उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि किसका बखान करता है?

(2)

उत्तर उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि अपनी मातृभूमि की भौगोलिक सुंदरता का बखान कर रहा है अर्थात् वह अपनी जन्मभूमि में उपस्थित पर्वत, झरने, नदियों, सागरों आदि की प्रशंसा कर रहा है।

(ख) भारतभूमि पर स्थित हिमालय तथा समुद्र की प्रशंसा कवि ने किस प्रकार की है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

(2)

उत्तर हिमालय की प्रशंसा करते हुए कवि कहते हैं कि हिमालय पर्वत अपनी ऊँचाई के कारण आसमान को चूमता हुआ प्रतीत होता है। इस प्रकार वह देश की सुंदरता को बढ़ाता है और भारत की

दक्षिण दिशा में हिलोरे भरता समुद्र मातृभूमि के चरण चूमता प्रतीत होता है।

(ग) कवि ने अपनी जन्मभूमि को पुण्यभूमि व स्वर्णभूमि कहकर क्यों संबोधित किया है?

(3)

उत्तर कवि ने अपनी जन्मभूमि को पुण्यभूमि व स्वर्णभूमि कहकर इसलिए संबोधित किया है, क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहाँ की भूमि अत्यधिक उपजाऊ भूमि है, दूसरी ओर यहाँ पर्वत, पहाड़, नदियाँ आदि को पूजा जाता है अर्थात् यहाँ पर्वत, पहाड़, पठार, नदियाँ सभी को पवित्र माना जाता है, इसलिए कवि ने भारतभूमि को पुण्यभूमि व स्वर्णभूमि कहकर संबोधित किया है।

(घ) उपरोक्त पद्यांश के कवि कौन हैं? उनका साहित्यिक परिचय दीजिए।

(3)

उत्तर इस कविता के रचयिता सोहनलाल द्विवेदी जी हैं उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जन-जन में राष्ट्रीय चेतना को जगाने का कार्य किया उनकी कविताएँ राष्ट्र प्रेम से प्रेरित तथा ओजपूर्ण हैं। उन्हें 'राष्ट्रकवि' की ख्याति प्राप्त है। अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होंने देश के नवयुवकों को देश प्रेम का संदेश दिया। सोहनलाल द्विवेदी जी की भाषा शैली सरल एवं परिष्कृत खड़ी बोली है। कहीं-कहीं इन्होंने संस्कृत भाषा का भी प्रयोग किया है। इन्होंने प्रबंध व मुक्तक दोनों ही शैलियों में रचनाएँ की हैं।

2. जन्मे जहाँ थे रघुपति, जन्मी जहाँ थी सीता,  
श्रीकृष्ण ने सुनाई, वंशी पुनीत गीता।  
गौतम ने जन्म लेकर, जिसका सुयश बढ़ाया,  
जग को दया दिखाई, जग को दिया दिखाया।  
वह युद्धभूमि मेरी, वह बुद्धभूमि मेरी,  
वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी।

(क) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने कौन-कौन-से महापुरुषों के विषय में बताया है? गीता का ज्ञान किसने किसको दिया? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने श्रीराम, माता सीता, श्रीकृष्ण, गौतम बुद्ध आदि महापुरुषों के विषय में बताया है। गीता का ज्ञान भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन का मोहभंग करने के लिए उन्हें दिया।

(ख) जग को दया किसने और किस प्रकार दिखाई? (2)

**उत्तर** जग को दया गौतम बुद्ध ने दिखाई। उन्होंने जन-जन को दया, प्रेम और अहिंसा का पाठ पढ़ाया तथा जीवों पर दया करने का उपदेश दिया। उनका मानना था कि हमें हर समस्या का समाधान प्रेम और दया भाव से करना चाहिए।

(ग) रघुपति राम तथा श्रीकृष्ण जी के महान् कार्यों का वर्णन कीजिए। (3)

**उत्तर** रघुपति राम अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र थे। उन्होंने अहंकारी राजा रावण का वध किया तथा अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हुए 14 वर्ष तक का समय वनवास में बिताया।

श्रीकृष्ण जी वसुदेव और देवकी के पुत्र थे। उन्होंने अत्याचारी कंस का वध किया और महाभारत के समय अर्जुन को पवित्र गीता का उपदेश देकर उसका मोह भंग किया।

(घ) 'वह युद्धभूमि मेरी, वह बुद्धभूमि मेरी' से कवि का क्या आशय है? (3)

**उत्तर** 'वह युद्धभूमि मेरी' से कवि का तात्पर्य है कि यहीं अर्थात् भारत भूमि में कौरव-पांडव (महाभारत) युद्ध तथा राम-रावण युद्ध हुए, जो 'धर्म की अधर्म पर विजय' के प्रतीक थे। ऐसे महान् युद्धों की भूमि मेरी भारत भूमि है।

'वह बुद्धभूमि मेरी' से कवि का तात्पर्य है कि सारे जग को प्रेम, दया, अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाले गौतम बुद्ध का जन्म, मेरी भूमि अर्थात् भारत भूमि पर ही हुआ।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. झरने अनेक झरते, जिसकी पहाड़ियों में,  
चिड़ियाँ चहक रही हैं, हो मस्त झाड़ियों में।  
अमराइयाँ घनी हैं, कोयल पुकारती है,  
बहती मलय पवन है, तन-मन सँवारती है।  
वह धर्मभूमि मेरी, वह कर्मभूमि मेरी,  
वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी।

(क) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने किस प्रकार की सुंदरता का वर्णन किया है? (2)

(ख) पद्यांश में किस प्रकार की पवन का वर्णन किया गया है? यह कहाँ से आती है? (2)

(ग) 'वह धर्मभूमि मेरी, वह कर्मभूमि मेरी' से कवि का क्या आशय है? (3)

(घ) उपरोक्त पद्यांश का केंद्रीय भाव लिखिए। (3)

2. जन्मे जहाँ थे रघुपति, जन्मी जहाँ थी सीता,  
श्रीकृष्ण ने सुनाई, वंशी पुनीत गीता।  
गौतम ने जन्म लेकर, जिसका सुयश बढ़ाया,  
जग को दया दिखाई, जग को दिया दिखाया।  
वह युद्धभूमि मेरी, वह बुद्धभूमि मेरी।  
वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी।

(क) कवि स्वयं को धन्य क्यों मानते हैं? (2)

(ख) कवि ने किन-किन महापुरुषों के जन्म लेने की बात कही है? (2)

(ग) 'जग को दया दिखाई, जग को दिया दिखाया'— पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताएँ कि जग को दया व प्रेम का संदेश किसने दिया? (3)

(घ) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? (3)

# मेघ आए सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

## कवि परिचय

हिंदी जगत में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले 'सर्वेश्वर दयाल सक्सेना' का जन्म 15 सितंबर, 1927 को उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में हुआ था। इन्होंने अपनी उच्च शिक्षा काशी में प्राप्त की। सक्सेना जी पहले अध्यापन कार्य से जुड़े रहे, फिर आकाशवाणी में कार्यरत रहे। तत्पश्चात् वर्ष 1965 में इन्होंने 'दिनमान' साप्ताहिक पत्रिका के उपसंपादक के पद का कार्यभार संभाला। 'दिनमान' में 'चरखे और चरचे' स्तंभ के प्रकाशन में इन्हें बहुत लोकप्रियता प्राप्त हुई। सक्सेना जी ने बालप्रिय व लोकप्रिय मासिक पत्रिका 'पराग' के संपादन की ज़िम्मेदारी भी संभाली।

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, गर्म हवाएँ, एक सूनी नाव, कुआनो नदी, जंगल का दर्द, खूंटियों पर टँगें लोग-काव्य संग्रह, पागल कुत्तों का मसीहा, सोया हुआ जल-उपन्यास; बकरी, लड़ाई, अब गरीबी हटाओ इनके नाटक हैं। वर्ष 1983 में सक्सेना जी की आकस्मिक मृत्यु हो गई।

## कविता का सार

इस कविता के माध्यम से कवि ने मेघ (बादल) का अतिथि के रूप में मानवीकरण करते हुए प्रकृति के परिवर्तित होते रहने वाले रूपों का वर्णन किया है। मेघ अतिथि के रूप में सज-धज कर बड़े ही सुंदर रूप में आते हैं, जैसे कोई मेहमान सज-धज कर शहर से गाँव आया हो। मेघ के आते ही प्राकृतिक वातावरण में हलचल-सी होती है। कवि पेड़, आँधी, धूल, नदी आदि को मानवीकृत रूप में साकार करते हुए कहते हैं कि मेघों के आने पर पेड़ भी उत्सुक लगते हैं तथा आँधी चलने के कारण धूल भागती हुई सी प्रतीत होती है और नदियाँ ऐसी लगती हैं, मानो नई दुल्हनों की भाँति घूँघट से छिप कर मेघों को निहार रही हों।

कवि प्रकृति के हर्षित और उल्लसित होते रूप का वर्णन करते हुए कहते हैं कि बूढ़ा पीपल का पेड़ उनका अभिवादन करता है तथा तालाब-पोखरों में पानी भर जाता है। जिस प्रकार काफी दिनों के बाद आए अतिथि से मिलने पर खुशी के आँसू बहते हैं, उसी प्रकार मेघों के आने पर खुशी के आँसुओं की तुलना वर्षा की बूँदों से की गई है अर्थात् अब सब्र का बाँध टूट गया है तथा वर्षा का पृथ्वी से मिलन हो गया है। मेघ के आने पर पूरी प्रकृति में प्रसन्नता का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

## संदर्भ सहित व्याख्या

1. मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,

दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली,

पाहुन ज्यों आए हो, गाँव में शहर के।

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

## शब्दार्थ

मेघ—बादल (cloud); बन-ठन के—सज-सँवरना (made-up); बयार—हवा (air);

पाहुन—मेहमान (guest)।

**संदर्भ** प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य सागर' के 'पद्य भाग' से सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा रचित कविता 'मेघ आए' से उद्धृत है।

**प्रसंग** प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने बादलों के घिर आने पर प्रकृति के मनोहारी एवं सुंदर रूप का मानवीय चित्रण किया है।

**व्याख्या** वर्षा के समय आसमान में घने-काले बादल अर्थात् मेघ छा जाते हैं। उन बादलों को देखकर कवि उनका मानवीकरण करते हुए कहता है कि बादल पूरी तरह से सज-सँवर कर तैयार हो गए हैं। उनसे पहले चलने वाली शीतल हवा ऐसे बह रही है, मानो कोई ग्राम कन्या अर्थात् गाँव की कोई किशोरी खुश होकर नाच-गा रही हो। हवा के चलने से घरों के खिड़की-दरवाजे इस

तरह खुल रहे हैं, मानो बादल रूपी मेहमान, जो शहर से गाँव आए हैं, को देखने के लिए ग्रामवासियों ने अपने घरों के खिड़की व दरवाजे खोल दिए हैं।

2. पेड़ झुक झँकने लगे गरदन उचकाए,  
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,  
बाँकी चितवन उठा नदी ठिठकी, घूँघट सरके।  
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

### शब्दार्थ

झँकना—छिपकर देखना (to peep); उचकाना—ऊपर उठाना (raise up); घाघरा—घेरे वाला स्त्रियों का पहनावा (skirt); बाँकी—टेढ़ी, तिरछी (skew); चितवन—नज़र (sight); ठिठकना—सहसा रुक जाना (suddenly stop); घूँघट—परदा (a veil)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने आँधी, धूल, पेड़ और नदी आदि का बहुत ही सुंदर मानवीकरण किया है।

व्याख्या कवि कहता है कि मेघ के आने पर पेड़ ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो वे झुककर अपनी गर्दन उठा-उठाकर लगातार मेघों की ओर देख रहे हों, जिस प्रकार अतिथि के आने पर लोग उत्सुकता भरी नज़र से गर्दन उठा-उठाकर देखते हैं, ठीक उसी प्रकार यहाँ पेड़ भी उत्सुकतापूर्ण अवस्था में नज़र आ रहे हैं। इसी प्रकार मेघों के आने पर आँधी चलने के कारण धूल भागती हुई-सी प्रतीत होती है अर्थात् जिस प्रकार अतिथि के आने पर गाँव की महिलाएँ स्वयं को छुपाने का प्रयास करते हुए इधर-उधर भागती हैं, ठीक उसी प्रकार धूल भी गाँव की महिलाओं की भाँति ऐसी प्रतीत होती है, मानो घाघरा उठाकर भाग रही हो।

कवि नदी का मानवीकृत रूप में वर्णन करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार गाँव में अतिथि के आने पर गाँव की महिलाएँ अपने घूँघट से ही अतिथि को निहारती हैं, ठीक उसी प्रकार नदियाँ भी मानो दुल्हन की भाँति मेघ को निहार रही हों। अतः जिस प्रकार गाँव में शहर से अतिथि सज-धजकर आते हैं, ठीक उसी प्रकार मेघ भी ऐसे प्रतीत होते हैं, जैसे अतिथि के रूप में सज-धज कर आए हों।

3. बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की  
'बरस बाद सुधि लीन्हीं'  
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,  
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।  
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

### शब्दार्थ

जुहार—अभिवादन (salutation); सुधि—खोज खबर, याद (remembrance); अकुलाई—व्याकुल, परेशान (to be confused); लता—बेल (creeper); ओट—आड़ (veil); किवार—किवाड़, दरवाजा (door); हरसाया—खुश होना (happy); ताल—तालाब (pond)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने मेघों के आने पर प्रकृति के हर्षोल्लासित रूप का वर्णन किया है।

व्याख्या कवि कहता है कि जिस प्रकार अतिथि के आने पर घर के बड़े लोग उनका स्वागत/सत्कार करते हैं, ठीक उसी प्रकार मेघों के आने पर बूढ़े पीपल के वृक्ष ने आगे आकर मेघों का अभिवादन किया और 'बरस बाद सुधि लीन्हीं' इस प्रकार कहकर लता ने भी बादलों को साल भर बाद आने का उलाहना दिया, जैसे अतिथि के आने पर घर की बहू-बेटियाँ दरवाजे के पीछे छिपकर अपनी बातें व शिकायतें उनके सामने रखती हैं, उसी प्रकार लताएँ भी मेघों के देर से आने पर अपना क्रोध प्रकट करती हुई-सी प्रतीत होती हैं तथा मेघों के आगमन से तालाब-पोखर ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो अतिथि रूपी मेघों के आने पर उनके स्वागत के लिए परात भर कर पानी लाया गया हो अर्थात् मेघों के आने पर पोखर व तालाब खुशी से झूम उठे हैं।

4. क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी,  
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की।'  
बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।  
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

### शब्दार्थ

क्षितिज—भूमि और आकाश का मिलन स्थान (horizon, skyline); अटारी—छत का आगे को निकला भाग (attic); दामिनी—बिजली (lighting); दमकी—चमकी (shine); भरम—भ्रम, वहम (doubt, confusion); अश्रु—आँसू (tear); ढरके—आँख से पानी बहना (water flow from eyes)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने बादल रूपी अतिथि के वर्षा बाद आने पर खुशी और मिलन के आँसू के रूप में वर्षा का यथार्थ वर्णन किया है।

व्याख्या कवि कहता है कि बादलों के छा जाने पर चमकती हुई बिजली ऐसी प्रतीत होती है, मानो बादलरूपी मेहमान क्षितिज रूपी अटारी पर छाए हुए हों अर्थात् मेघरूपी मेहमानों के सज-धज कर आने से आकाशरूपी क्षितिज पर अँधेरा-सा छा गया और बिजली चमकने लगी, अब विश्वास हो गया कि अब वर्षा का होना निश्चित है, जो एक प्रकार का संदेह लोगों के मन में विद्यमान था कि वर्षा होगी या नहीं, अब वह टूट गया। जिस प्रकार वर्षा बाद घर आए अतिथि के प्रति क्रोध समाप्त हो जाता है, उसके प्रति मन से मैल दूर हो जाता है, ठीक उसी प्रकार अतिथि के रूप में आए मेघों के आने पर खुशी के आँसुओं की तुलना वर्षा की बूँदों से की गई है। अब सब का बाँध टूट गया तथा वर्षा का पृथ्वी से मिलन हो गया है अर्थात् जिस प्रकार बहुत दिनों बाद किसी से मिलने पर खुशी के आँसू निकल आते हैं, ठीक उसी प्रकार सज-धज कर आए बादलों के वर्षारूपी अश्रु का मिलन पृथ्वी से हो गया।

# प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## 1. मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,  
दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली,  
पाहुन ज्यों आए हों, गाँव में शहर के।  
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

[2017]

(क) मेघ कहाँ आए हुए हैं? मेघों को देखकर कवि को क्या प्रतीत हो रहा है? (2)

**उत्तर** ऐसा लग रहा है, जैसे मेघ बहुत समय बाद गाँव में आए हों। आकाश में छाए हुए मेघों को देखकर कवि को ऐसा प्रतीत हो रहा है मानों मेघ रूपी मेहमान, सज-सँवरकर शहर से गाँव में आए हों।

(ख) 'बयार' शब्द से आप क्या समझते हैं? कवि इसके बारे में क्या बताना चाहता है? (2)

**उत्तर** 'बयार' शब्द का अर्थ 'हवा' होता है। कवि कहना चाहता है कि मेघ आने पर शीतल हवा इस तरह से चल रही है मानो कोई ग्राम कन्या अर्थात् गाँव की किशोरी हर्षित होकर नाच रही हो अर्थात् कवि का तात्पर्य है कि बादलों के घिरने पर हवा तेजी से चलने लगी।

(ग) दरवाजे-खिड़कियाँ क्यों खुलने लगे हैं? किसका स्वागत कहाँ पर किस प्रकार किया जाने लगा है? कवि के भाव स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** हवा के तेजी से चलने पर घरों के दरवाजे-खिड़कियाँ अपने आप खुलने और बंद होने लगे। ऐसा लग रहा है मानो शहर से गाँव में आए मेहमान रूपी मेघ को देखने के लिए लोग अपने घरों के दरवाजे-खिड़कियाँ खोलकर उत्साहपूर्वक उसे देखने लगे। यहाँ कवि का भाव यह है कि मेघरूपी मेहमान के स्वागत में लोगों ने अपने दरवाजे-खिड़कियाँ खोल दिए हों।

(घ) कविता का केंद्रीय भाव लिखिए। (3)

**उत्तर** कवि कहता है कि आकाश में बादल इस तरह छा गए हैं, जैसे बादल अर्थात् मेघ सज-सँवरकर तैयार हो गए हों। शीतल हवा इस तरह चलने लगी है, जैसे कोई कन्या खुशी से नाचती-गाती आगे-आगे चल रही हो। हवा के चलने से घरों के दरवाजे व खिड़कियाँ तेजी से खुलने व बंद होने लगे हैं जैसे लोगों ने शहर से गाँव आए मेहमानों को देखने के लिए अपने घरों के दरवाजे व खिड़कियाँ खोल लिए हों। भाव यह है कि वर्षा ऋतु के आने पर प्राकृतिक वातावरण में विभिन्न गतिविधियाँ होने लगती हैं। उन्हीं गतिविधियों का मानवीकरण यहाँ कवि ने अपनी कविता में किया है। वर्षा ऋतु में चारों तरफ वातावरण हर्षमय और खुशनुमा हो जाता है। प्रकृति मनोरम दिखाई पड़ती है।

## 2. पेड़ झुक झँकने लगे गरदन उचकाए, आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए, बाँकी चितवन उठा नदी ठिठकी, घूँघट सरके। मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

(क) मेघों के आने पर पेड़ कैसे प्रतीत हो रहे हैं? (2)

**उत्तर** मेघों के आने पर पेड़ ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो वे अपनी गर्दन उठा-उठाकर लगातार मेघों की ओर देख रहे हों अर्थात् मेघों को देखकर पेड़ उत्सुकतापूर्ण अवस्था में नज़र आते हैं।

(ख) "आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए" धूल भागती हुई किसके समान प्रतीत हो रही है? (2)

**उत्तर** "आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए" जिस प्रकार अतिथि के आने पर गाँव की महिलाएँ स्वयं को छिपाने का प्रयास करते हुए इधर-उधर भागती हैं, ठीक उसी प्रकार धूल भी गाँव की स्त्रियों की भाँति ऐसी प्रतीत होती है, मानो घाघरा उठाकर भाग रही हो।

(ग) नदियाँ किसकी भाँति बादलों को निहार रही हैं व क्यों? (3)

**उत्तर** जिस प्रकार गाँव में अतिथि के आने पर गाँव की महिलाएँ अपने घूँघट से ही अतिथि को निहारती हैं, ठीक उसी प्रकार नदियाँ भी जैसे बादलों को निहार रही हैं, क्योंकि बादलों को देखकर ऐसा लग रहा है जैसे बादल अतिथि के रूप में सज-धज कर काफी दिनों के बाद गाँव में आ रहे हों।

(घ) प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि मेघों के आगमन से पूरी प्रकृति उत्सुकतापूर्ण अवस्था में प्रसन्नचित्त दिखाई देती है।

पेड़ गर्दन उठाकर मेघों को देखने लगे। आँधी के चलने पर धूल स्वयं ही भागने लगी तथा नदी भी प्रसन्नचित्त अवस्था में मेघों को निहारती हुई सी प्रतीत होने लगी।

## 3. बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की 'बरस बाद सुधि लीन्हीं'

बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,  
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।  
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

(क) बूढ़े पीपल को किसकी संज्ञा दी गई है? उसने आगे बढ़कर क्या किया? (2)

**उत्तर** बूढ़े पीपल को 'बुजुर्ग' की संज्ञा दी गई है। अधिक उम्र वाले लोगों को अधिकांशतः बुजुर्ग कहा जाता है। जिस प्रकार आने वाले मेहमानों से पहले घर के बड़े-बुजुर्ग मिलते हैं। उसी तरह मेघ रूपी मेहमानों के आने पर बूढ़े पीपल ने उनका स्वागत किया।

(ख) मेघ की समानता किससे की गई है? वे कहाँ, कितने समय बाद आए? (2)

**उत्तर** मेघ की समानता गाँव के किसी दामाद से की गई है। वह अपने ससुराल एक वर्ष के बाद आया है। वह बहुत बन-ठन कर आया है। उसे देखकर ऐसा लगता है जैसे कोई मेहमान शहर से आया हो। वर्षा के मेघ भी एक बरस के बाद सज-सँवर कर साफ़-सुथरे जल से भरकर आए हैं।

(ग) लता ने बादलों को क्या कहकर उलाहना दिया और क्यों? (3)

**उत्तर** बादल रूपी मेहमान को आते देखकर लता ने 'बरस बाद सुधि लीन्हीं' कहकर उलाहना दिया कि आपने इतने बरसों बाद हमारी सुध ली है, अब तक आप कहाँ रहे। लता ने मेघों अर्थात् बादलों को यह बात इसलिए कही, क्योंकि कई वर्षों तक उनसे न मिलने के कारण लताएँ मेघों से नाराज थीं। इसी कारण लताओं ने बादलों को देर से आने का उलाहना दिया।



(घ) ताल किसका प्रतीक है? वह क्या लेकर आया और क्यों? उसकी प्रसन्नता का क्या कारण है? समझाकर लिखिए। (3)

**उत्तर** ताल मेहमान के रिश्तेदार का प्रतीक है। गाँव में आज भी यह परंपरा है कि मेहमान के घर आते ही पैर धुलवाए जाते हैं। यह अत्यंत वैज्ञानिक परंपरा है। धूल-मिट्टी के साथ आए कीटाणु भी पैर धोने से साफ हो जाते हैं, साथ ही मार्ग की थकान भी दूर हो जाती है। ताल रूपी रिश्तेदार प्रसन्न होकर परात में पानी लाता है और पैर धुलवाता है। तालाब भी मेघ के लिए यह कार्य खुशी-खुशी करता है। उसकी खुशी का कारण है कि जब बादल बरसेंगे तो वह भी जल से भर जाएगा। इसलिए वह बहुत खुश है।

4. 'क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी,  
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की'

(क) 'क्षितिज' का अर्थ स्पष्ट कीजिए। मेघों के आने से क्षितिज कैसा दिखाई दे रहा था? (2)

**उत्तर** वह स्थान, जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए से प्रतीत होते हैं, उसे 'क्षितिज' कहते हैं। जब जल से भरे काले मेघ आकाश में छाने लगे, तो क्षितिज में अँधेरा-सा छा गया। फिर क्षितिज में बिजली चमकने लगी। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि अब बारिश अवश्य होगी।

(ख) जब मेघों का मिलन धरती से हुआ तो क्या हुआ? (2)

**उत्तर** 'धरती रूपी प्रेमिका का मिलन जब अपने मेघ रूपी प्रेमी से हुआ, तो एक लंबे विरह के बाद मिलने की खुशी में उनके सब्र का बाँध टूट गया अर्थात् खुशी के कारण उनकी आँखों से वर्षा रूपी आँसू झर-झर टपकने लगे।

(ग) 'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की' से कवि का क्या तात्पर्य है? (3)

**उत्तर** 'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की' से कवि का तात्पर्य यह है कि अब तक यह भ्रम अर्थात् संदेह बना हुआ था कि मेघ आएँगे या नहीं। बारिश होगी कि नहीं, लेकिन क्षितिज में काले बादलों के आने के कारण अँधेरा छा जाने से तथा फिर बिजली चमकने से सारा भ्रम दूर हो गया। धीरे-धीरे बारिश होनी शुरू हो गई। अतः कवि कहता है कि हे मेघों हम क्षमा प्रार्थी हैं। हमारा संदेह दूर हो गया है कि बारिश आएगी या नहीं।

(घ) प्रस्तुत कविता के कवि कौन हैं? उनका साहित्यिक परिचय दीजिए। (3)

**उत्तर** प्रस्तुत कविता के कवि 'सर्वेश्वर दयाल सक्सेना' हैं। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना मूल रूप से कवि एवं साहित्यकार थे। इन्होंने साहित्य के दोनों रूपों काव्य व गद्य में सर्जना की। सर्वेश्वर जी के समय में ही हिंदी कविता तुकांतात्मकता (अर्थात् बिना तुक वाली कविता) से बाहर आई। इन्होंने मुक्त रूप से कविताओं की रचना की। इन्होंने हिंदी की 'नई कविता' को अपनी रचनाओं से नए आयाम दिए।

उनकी कविताओं में दलितों के प्रति हो रहे अन्याय के प्रति उग्रता और विद्रोह भी है तो एक ओर भावों की प्रधानता भी है। उनकी हर रचना में सामाजिक चेतना का ओजपूर्ण आह्वान है। सर्वेश्वर जी की भाषा शैली सरल, सरस व रोचक है। उसमें प्रवाहमयता भी है। उनकी रचनाओं में आम बोलचाल के शब्दों के साथ-साथ अंग्रेजी व उर्दू के शब्द भी मिलते हैं।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,  
दरवाज़े-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली,  
पाहुन ज्यों आए हों, गाँव में शहर के।  
मेघ आए बड़े बन-ठन के सवर के।

(क) मेघों को कवि ने किसके समरूप बताया है और क्यों? (2)

(ख) काव्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि हवा मदमस्त होकर क्या करने लगी और क्यों? (2)

(ग) "दरवाज़े-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली" – इन पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि दरवाज़े व खिड़कियाँ क्यों खुलने लगीं? (3)

(घ) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? (3)

2. पेड़ झुक झँकने लगे गरदन उचकाए,  
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए।

बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके,  
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

(क) पेड़ झँककर क्या देख रहे हैं? (2)

(ख) 'धूल भागी घाघरा उठाए' से कवि का क्या तात्पर्य है? (2)

(ग) प्रस्तुत पद्यांश के मानवीकरण को स्पष्ट कीजिए। (3)

(घ) नदी क्यों ठिठक गई? स्पष्ट कीजिए। (3)

3. क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी,  
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की।'  
बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।  
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

(क) "क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी" का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (2)

(ख) कवि किस संदेह को दूर करने की बातें कह रहा है और क्यों? (2)

(ग) प्रस्तुत पंक्तियों में किस बाँध के टूटने की बात की गई है और क्यों? (3)

(घ) उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए। (3)

# सूर के पद सूरदास

## कवि परिचय

हिंदी की समृद्ध भक्ति शाखा की कृष्णाश्रयी धारा के महत्वपूर्ण कवियों में श्रेष्ठ कवि सूरदास जी के जन्म के विषय में मतभेद हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार उनका जन्म आगरा के रुनकता या रेणुका ग्राम में हुआ था, परंतु कुछ विद्वानों का मानना है कि महाकवि सूरदास का जन्म 1478 ई. में दिल्ली के निकट सीही में हुआ था। सूरदास जी के जन्मांध होने में भी मतभेद हैं, क्योंकि श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का जो सूक्ष्म वर्णन उनके पदों में मिलता है ऐसा वर्णन कोई जन्म से अंधा व्यक्ति नहीं कर सकता। सूरदास जी महाप्रभु बल्लभाचार्य के शिष्य थे। उन्हें वात्सल्य रस का सम्राट माना जाता है। इनकी रचनाओं में शृंगार रस की प्रधानता है। इनकी प्रमुख तीन रचनाएँ हैं—सूरसागर, साहित्य लहरी और सूर सारावली, जिनमें सूरसागर सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ है और श्रीमद्भागवत् इसका ही आधार है। 1583 ई. में पारसौली में इनका देहावसान हो गया।

## पदों का सार

सूरदास जी श्रीकृष्ण के परम भक्त हैं। प्रस्तुत पदों में इन्होंने श्रीकृष्ण के मनोहारी बाल रूप का सजीव और मार्मिक ढंग से वर्णन किया है। सूरदास जी कहते हैं कि यशोदा माता श्रीकृष्ण को सुलाने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रयास करती हैं, किंतु श्रीकृष्ण उनके सभी प्रयासों को विफल कर देते हैं। कवि श्रीकृष्ण के बाल रूप का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जब वे घुटनों के बल चलते हैं, तो उनकी पायलों की आवाज मन को मोह लेती है। माता यशोदा श्रीकृष्ण की इन क्रीड़ाओं और उनके अनुपम सौंदर्य को निरंतर निहारना चाहती हैं।

कवि पुनः श्रीकृष्ण के बाल हठी रूप का स्वाभाविक चित्रण करते हुए कहते हैं कि कृष्ण चंद्रमा रूपी खिलौना पाने की जिद करते हुए एक ऐसे हठी बालक की भाँति प्रतीत होते हैं, जो खिलौने को पाने के लिए सब कुछ त्यागने की बात करते हैं, किंतु माता द्वारा चंद्रमा से भी सुंदर दुल्हन लाने की बात सुनकर तुरंत विवाह करने को तैयार हो जाते हैं और कहते हैं कि मेरे सभी सखा बाराती बनकर मंगल गीत गाएँगे।

## संदर्भ सहित व्याख्या

### 1. जसोदा हरि पालने झुलावै।

हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोइ-सोइ कछु गावै॥  
मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहे न आनि सुवावै।  
तू काहे नहिं बेगहिं आवै, तोको कान्ह बुलावै॥  
कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै।  
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि-करि सैन बतावै॥  
इहिं अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरै गावै।  
जो सुख 'सूर' अमर मुनि दुरलभ, सो नंद भामिनी पावै॥

### शब्दार्थ

हरि—ईश्वर (God/Lord Krishna); हलरावै—हिला रही हैं (shaking); दुलराइ—लाड़-प्यार करना (cherish); मल्हावै—पुचकारना (fondle); जोइ-सोई —जो भी मन में आए वो ही; निंदरिया—नींद (sleep); आनि—आकर (come); बेगहिं—शीघ्र ही (immediately); अधर—होंठ (lip); इहिं अंतर—इसी बीच (in the mean time); नंद-भामिनी—नंद बाबा की पत्नी (wife of Nand Baba)।

**संदर्भ** प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य सागर' के पद्य भाग से सूरदास द्वारा रचित 'सूर के पद' से उद्धृत है।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने श्रीकृष्ण के बाल रूप एवं माता यशोदा द्वारा सुलाने के प्रयास का सजीव वर्णन किया है।

**व्याख्या** माता यशोदा श्रीकृष्ण को पालने में हिलाती हैं, झुलाती हैं, कभी श्रीकृष्ण के प्रति स्नेह भाव दिखाती हैं, कभी लोरियाँ गाती हुई उन्हें सुलाने का प्रयास करती हैं, कभी नींद को कोसती हुई कहती हैं कि हे नींद! तू जल्दी से आती क्यों नहीं है? जल्दी से आकर मेरे लाल को सुलाती क्यों नहीं है। तुझे स्वयं कान्हा बुलाता है, तू फिर भी नहीं आती है। श्रीकृष्ण कभी आँखें बंद कर लेते हैं, तो कभी अपने होंठ हिलाते हैं। श्रीकृष्ण को मौन देखकर माता यशोदा को लगता है कि वह सो गए हैं।

वे स्वयं शांत हो जाती हैं और अन्य सदस्यों को भी इशारे से शांत रहने के लिए कहती हैं, किंतु दूसरे ही पल कृष्ण परेशान होने लगते हैं अर्थात् श्रीकृष्ण लुका-छिपी का-सा खेल खेलते हुए कभी ऐसा दर्शाने का प्रयास करते हैं मानो सो गए हों, किंतु अगले ही पल उठ जाते हैं। श्रीकृष्ण को जागता हुआ जानकर यशोदा माता पुनः लोरी गाने लगती हैं। कवि कहते हैं कि श्रीकृष्ण को भिन्न-भिन्न तरीके अपनाकर सुलाने का प्रयत्न करती हुई माता यशोदा को जो सुख प्राप्त हो रहा है, वह सुख ऋषि-मुनियों को भी प्राप्त नहीं होता।

## 2. खीजत जात माखन खात।

अरुण लोचन, भौंह टेढ़ी, बार-बार जम्हात॥

कबहुँ रुनझुन चलत घुटुरन, धूर धूसर गात।

कबहुँ झुक केँ अलक खेंचत, नैन जल भर लात॥

कबहुँ तुतरे बोल बोलत, कबहुँ बोलत तात।

'सूर' हरि की निरखि सोभा, निमिख तजत न मात॥

## शब्दार्थ

खीजत-दुःखी और क्रुद्ध होना (upset); लोचन-नेत्र (eye);

जम्हात-जम्हाई लेना (to yawn); घुटुरन-घुटनों से (from knee);

धूर-धूसर-धूल में सना (wrapped in dirt, full of dust);

अलक-बाल (hair); नैन-आँख (eye); तुतरे-तोतले (stammering);

निरखि-देखना (to see); निमिख-एक पल (very little time);

तजत-छोड़ना (leave)।

## संदर्भ पूर्ववत्।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने श्रीकृष्ण की बाल क्रीड़ाओं का मार्मिक व मनोहारी चित्रण प्रस्तुत किया है।

**व्याख्या** श्रीकृष्ण मक्खन खा रहे हैं और दुःखी व क्रुद्ध हो रहे हैं। नींद आने के कारण उनकी आँखें लाल हो गई हैं। उन्होंने अपनी भौंहें टेढ़ी कर चढ़ा ली हैं और बार-बार जम्हाई ले रहे हैं। जब वे घुटने के बल चलते हैं, तो उनकी पायलों में धुँधरुओं की आवाज़ इतनी मधुर प्रतीत होती है, मानो मन को मोह लेने वाली हो। घुटनों के बल चलने के कारण श्रीकृष्ण का सारा शरीर धूल से सन जाता है। वे स्वयं ही चलते हुए अपने बालों को खींच लेते हैं, जिसके कारण

उनकी आँखों में आँसू भर आते हैं। वे कभी अपनी तोतली भाषा में बोलते हैं, तो कभी वे 'तात' कहकर पुकारते हैं। यशोदा माता को श्रीकृष्ण की ये सारी क्रियाएँ इतनी मनमोहक लगती हैं कि वे श्रीकृष्ण की मधुरतम शोभा को क्षण भर के लिए भी स्वयं से दूर नहीं करना चाहती हैं। अतः वे श्रीकृष्ण को पल भर के लिए भी स्वयं की आँखों से दूर नहीं होने देना चाहतीं।

## 3. मैया मेरी, चंद्र खिलौना लैहौं॥

धौरी को पय पान न करिहौं, बेनी सिर न गुथैहौं।

मोतिन माल न धरिहौं उर पर, झुंगली कंठ न लैहौं॥

जैहौं लोट अबहिं धरनी पर, तेरी गोद न ऐहौं।

लाल कहैहौं नंद बबा को, तेरो सुत न कहैहौं।

कान लाय कछु कहत जसोदा, दाउहिं नाहिं सुनैहौं।

चंदा हूँ ते अति सुंदर तोहिं, नवल दुलहिया ब्यैहौं॥

तेरी सौं मेरी सुन मैया, अबहीं ब्याहन जैहौं।

'सूरदास' सब सखा बराती, नूतन मंगल गैहौं॥

## शब्दार्थ

चंद्र-चंद्रमा (moon); लैहौं-लूँगा, चाहिए (take, want); धौरी-सफेद गाय (a white cow) पय-दूध (milk); पान-पीना (drink); बेनी-बालों की चोटी (hair braid); उर-हृदय, छाती (chest); झुंगली-ढीला कुरता (loose kurta); कंठ-गला (neck); लोट-लेट जाऊँगा (lie down); धरनी-धरती (earth); ऐहौं-आऊँ (come); सुत-पुत्र (son); दाउहिं-बलराम (elder brother of Krishna); दुलहिया-दुल्हन (bride); ब्यैहौं-शादी करना (marry); सौं-सौगंध (sweat); गैहौं-गाना (sing)।

## संदर्भ पूर्ववत्।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने श्रीकृष्ण का हठी बालक के रूप में चित्रण किया है।

**व्याख्या** श्रीकृष्ण आकाश में चमकते हुए चाँद को देखकर उसे खिलौना समझ माता यशोदा से उसे लेने की ज़िद करते हैं। वे कहते हैं कि यदि मुझे यह खिलौना नहीं मिला, तो मैं न तो कुछ खाऊँगा और न ही धौरी गाय का दूध पीऊँगा, न अपने बाल बँधवाऊँगा, न मोतियों की माला धारण करूँगा और न ही कुरता पहनूँगा। वे कहते हैं कि यदि चंद्रमा उन्हें नहीं मिला, तो वे मिट्टी से भरी धरती पर लेट जाएँगे, माता की गोद में नहीं आएँगे। इसके साथ ही वे नंद-बाबा के पुत्र कहलाएँगे, माता के नहीं।

श्रीकृष्ण के हठी रूप को देखकर माता यशोदा श्रीकृष्ण को बहलाने का प्रयास करते हुए कहती हैं कि मैं तुझे कान में एक बात बताती हूँ, किंतु तू बलराम दाऊ को मत बताना। मैं तुम्हारी शादी चाँद से भी सुंदर दुल्हन से करा दूँगी। यह सुनकर बालकृष्ण कहते हैं कि मैं अभी तुरंत ही विवाह करने जाऊँगा। सूरदास कहते हैं कि श्रीकृष्ण के विवाह में उनके सभी साथी बाराती बनकर मंगल गीत गाएँगे। कवि ने श्रीकृष्ण के बाल रूप का वर्णन करने के साथ-साथ एक अबोध बालक की मनःस्थिति का भी वर्णन किया है।

# प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित दोहों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै।  
सोवत जानि मौन है कै रहि, करि-करि सैन बतावै।।

(क) यशोदा माता किसे सुलाने का प्रयास कर रही हैं? (2)

**उत्तर** यशोदा माता श्रीकृष्ण को सुलाने का प्रयास कर रही हैं। यशोदा माता कृष्ण को सुलाने के लिए कभी पालना हिलाती हैं, कभी उन्हें लाड़ करती हैं तथा कभी लोरी सुनाती हैं। वे नींद को भी उलाहना देती हैं कि तू आकर मेरे लाल को क्यूँ नहीं सुलाती।

(ख) यशोदा माता नींद को कोसती हुई क्या कहती हैं? (2)

**उत्तर** यशोदा माता नींद को कोसती हुई कहती हैं कि हे नींद! तू जल्दी से मेरे लाल को क्यों नहीं आती है? तुझे स्वयं कान्हा बुलाता है, तू फिर भी नहीं आती। अतः तू जल्दी आ जा और मेरे लाल को सुला दे।

(ग) “कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै” पंक्ति का तात्पर्य बताइए। (3)

**उत्तर** माता यशोदा बाल कृष्ण को सुलाने का प्रयत्न कर रही हैं, लेकिन उन्हें नींद नहीं आ रही है। अतः “कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै” से कवि का तात्पर्य है कि बालकृष्ण सोते हुए कभी पलकों को बंद कर लेते हैं, तो कभी होठों को फड़काने लगते हैं। अतः श्रीकृष्ण का यह बालरूप अत्यंत मनमोहक है।

(घ) बाल कृष्ण को सोता जानकर माता यशोदा क्या-क्या करती हैं? (3)

**उत्तर** माता यशोदा के प्रयास स्वरूप जब बालकृष्ण आँखें बंद कर लेते हैं, तो माता यशोदा उन्हें सोता जानकर शांत हो जाती हैं तथा दूसरों को भी इशारा करके चुप रहने के लिए कहती हैं, लेकिन श्रीकृष्ण आलस्य त्यागकर फिर जाग जाते हैं, जिससे माता यशोदा दोबारा मधुर आवाज में लोरी गाने लगती हैं।

2. कबहुँ झुक केँ अलक खेंचत, नैन जल भर लात।।  
कबहुँ तुतरे बोल बोलत, कबहुँ बोलत तात।  
'सूर' हरि की निरखि सोभा, निमिख तजत न मात।।

(क) कवि ने किसके बाल रूप का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है? श्रीकृष्ण का शरीर धूल से क्यूँ सना है? (2)

**उत्तर** कवि ने श्रीकृष्ण के बाल रूप के सौंदर्य तथा उनकी बाल लीलाओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। धरती पर घुटनों के बल चलने के कारण शरीर धूल में सना है।

(ख) श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं का वर्णन कीजिए। (2)

**उत्तर** बाल कृष्ण माखन खा रहे हैं, उनके नेत्र अत्यंत सुंदर और लाल हैं। उनकी भौंहे तिरछी हैं। वे बार बार जम्हाई ले रहे हैं। ऐसा लगता है कि उन्हें नींद आ रही है। वे घुटनों के बल चल रहे हैं तथा उनका शरीर धूल से सना हुआ है। वे स्वयं ही अपने बाल खींच लेते हैं तथा कभी वे अपनी तोतली आवाज में तात (पिता) बोल देते हैं।

(ग) किसकी आँखों में आँसू भर आते हैं व क्यों? श्रीकृष्ण अपनी क्रीड़ाओं से किसका मन मोह रहे हैं? (3)

**उत्तर** श्रीकृष्ण की आँखों में आँसू भर आते हैं, क्योंकि कवि ने श्रीकृष्ण के बाल रूप का चित्रण करते हुए स्पष्ट किया है कि वे घुटनों के बल चलते हुए स्वयं ही अपने बालों को खींच लेते हैं। बाल खींचने से

उन्हें दर्द का अनुभव होता है, जिसके कारण उनकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। वे अपनी क्रीड़ाओं से माता यशोदा का मन मोह रहे हैं।

(घ) माता यशोदा श्रीकृष्ण की किस मधुरतम् शोभा को क्षण-भर के लिए भी दूर नहीं करना चाहती? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** श्रीकृष्ण के कभी घुटनों के बल चलने, कभी धूल से लथपथ हो जाने, कभी स्वयं ही अपने बालों को खींचना व आँखों में आँसू आ जाना, कभी अपनी तोतली भाषा में 'तात' कहकर पुकारना यशोदा माता को इतना मनमोहक लगता है कि वे श्रीकृष्ण की मधुरतम् शोभा को क्षण-भर के लिए भी स्वयं से दूर नहीं करना चाहती।

3. जैहों लोट अबहिं धरनी पर, तेरी गोद न ऐहौं।

लाल कहैहौं नंद बाबा को, तेरो सुत न कहैहौं।।

(क) बाल श्रीकृष्ण माता यशोदा से क्या माँगने की हठ कर रहे हैं? (2)

**उत्तर** श्रीकृष्ण आकाश में चाँद को देखकर उसे खिलौना समझकर माता यशोदा से उसे लेने की हठ कर रहे हैं। वे कह रहे हैं कि अगर इन्हें चंद्रमा रूपी खिलौना नहीं मिला, तो वे धरती पर लेट जाएँगे पर माता यशोदा की गोद में न आएँगे।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने श्रीकृष्ण के किस रूप का बातें सुना सुनाकर वर्णन किया है? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने श्रीकृष्ण के बाल हठ का अति स्वाभाविक, अद्भुत एवं अप्रतिम वर्णन किया है। इसके साथ-साथ कवि ने श्रीकृष्ण के बालरूप का वर्णन करते हुए एक अबोध बालक की मनोस्थिति का भी वर्णन किया है।

(ग) चंद्रमा रूपी खिलौना न मिलने की स्थिति में बाल श्रीकृष्ण क्या-क्या कहते हैं? (3)

**उत्तर** चंद्रमा रूपी खिलौना न मिलने की स्थिति में बाल श्रीकृष्ण कहते हैं कि यदि तुमने मुझे यह खिलौना नहीं दिलाया तो न तो मैं कुछ खाऊँगा और न ही मैं धौरी गाय का दूध पीऊँगा, न अपने बाल बँधवाऊँगा, न मोतियों की माला धारण करूँगा। धरती पर जाकर लेट जाऊँगा और केवल नंद बाबा का पुत्र कहलाऊँगा, माता का नहीं।

(घ) “जैहों लोट अबहिं धरनी पर, तेरी गोद न ऐहौं” इन पंक्तियों में धरती पर लेटने की बात किसने व क्यों कही है तथा 'तेरी' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है? (3)

**उत्तर** “जैहों लोट अबहिं धरनी पर, तेरी गोद न ऐहौं” इन पंक्तियों में धरती पर लेटने की बात श्रीकृष्ण ने कही है, क्योंकि वे चाँद को खिलौना समझ उसे पाने की जिद कर रहे हैं। श्रीकृष्ण माँ से कहते हैं कि यदि उन्हें खिलौना न मिला तो वह ज़मीन पर लेटकर खुद को धूल से भर लेंगे। यहाँ 'तेरी' शब्द माता यशोदा के लिए प्रयोग किया गया है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि यदि मुझे खिलौना नहीं मिला तो मैं तेरी (यशोदा की) गोद में नहीं आऊँगा और केवल नंद बाबा का पुत्र ही कहलाऊँगा।

4. चंदा हूँ ते अति सुंदर तोहिं, नवल दुलहिया ब्यैहौं

(क) बाल श्रीकृष्ण की जिद पर माता यशोदा क्या कर रही हैं? (2)

**उत्तर** बाल श्रीकृष्ण की जिद पर माता यशोदा उन्हें तरह-तरह से समझाने का प्रयास कर रही हैं, लेकिन बालकृष्ण मान नहीं रहे हैं। माता यशोदा रुठे हुए कृष्ण को बहुत से लालच दे रही हैं, लेकिन वे उनकी बातों में नहीं आते।

(ख) माता यशोदा ने बाल कृष्ण के कान में क्या कहा? (2)

**उत्तर** माता यशोदा बाल कृष्ण द्वारा चंद्रमा रूपी खिलौना लेने की हठ पकड़ने पर बड़ी चतुराई से उनके कान में कहती हैं कि मैं तुम्हें एक बात बताऊँगी, उसे बलराम से मत कहना। मैं तेरा विवाह चंद्रमा से भी सुंदर दुल्हन से करवाऊँगी।

(ग) माता यशोदा की बात सुनकर श्रीकृष्ण ने क्या किया? (3)

**उत्तर** जब माता यशोदा ने बाल कृष्ण को चंद्रमा से भी सुंदर दुल्हन से विवाह करने की बात कही, तो वे खुश हो गए। वे कहने लगे कि तेरी सौगंध माता मैं अभी विवाह करवाऊँगा। बाल कृष्ण माता यशोदा से कहने लगे कि मेरे सभी मित्र बाराती बनेंगे और नए-नए मंगल गीत गाएँगे। अतः बाल कृष्ण इस तरह चंद्रमा रूपी खिलौना लेने की हठ छोड़ देते हैं।

(घ) प्रस्तुत पंक्ति के कवि कौन हैं? उनका साहित्यिक परिचय लिखिए। (3)

**उत्तर** प्रस्तुत पंक्ति के कवि सूरदास जी हैं। सूरदास जी वात्सल्य व शृंगार रस से ओत-प्रोत श्रीकृष्ण की लीलाओं से युक्त पदों की रचना करते थे। उन्होंने एक लाख से भी अधिक पदों की रचना की, लेकिन उनमें से केवल आठ से दस हजार पदों की ही प्राप्ति हुई है।

सूरदास जी ने अधिकांशतः अपनी रचनाओं में ब्रजभाषा का ही प्रयोग किया। उन्होंने श्रीकृष्ण के विरह में व्याकुल राधा तथा अन्य गोपियों का अत्यंत सूक्ष्म चित्रण किया है। इनका काव्य मुक्तक शैली में रचित है।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. खीजत जात माखन खात।

अरुण लोचन, भौंह टेढ़ी, बार-बार जम्हात।।

कबहुँ रुनझुन चलत घुटुरन, धूर धूसर गात।

(क) कौन क्या खा रहा है? (2)

(ख) श्रीकृष्ण की आँखें लाल क्यों हो गई हैं? (2)

(ग) बाल कृष्ण के सौंदर्य का वर्णन कीजिए। (3)

(घ) उपरोक्त पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (3)

2. 'मैया मेरी, चंद्र खिलौना लैहों।'

धौरी को पय पान न करिहों, बेनी सिर न गुथैहों।

मोतिन माल न धरिहों उर पर, झुंगली कंठ न लैहों।'

(क) उपरोक्त पंक्तियों में कौन किसे खिलौना समझ रहा है? (2)

(ख) खिलौना न मिलने पर कृष्ण किस प्रकार से अपना आक्रोश व्यक्त करते हैं? (2)

(ग) 'मोतिन माल न धरिहों उर पर' इस पंक्ति का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए। (3)

(घ) प्रस्तुत पद्यांश का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए। (3)

3. तेरी सौ मेरी सुन मैया, अबहीं ब्याहन जैहों।

'सूरदास' सब सखा बराती, नूतन मंगल गैहों।।

(क) किसने किसे बहलाने का प्रयास किया? (2)

(ख) 'तेरी सौ मेरी सुन मैया, अबहीं ब्याहन जैहों' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। (2)

(ग) माता यशोदा की बात सुनकर श्रीकृष्ण पर क्या प्रभाव पड़ा? (3)

(घ) 'सूरदास' सब सखा बराती, नूतन मंगल गैहों। इस पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (3)

# विनय के पद गोस्वामी तुलसीदास

## कवि परिचय

हिंदी जगत में महत्त्वपूर्ण स्थान रखने वाले 'गोस्वामी तुलसीदास' जी भक्तिकाल की सगुण धारा की रामभक्ति शाखा के मुख्य प्रवर्तक के रूप में सामने आए। इनके जन्म स्थान के संबंध में प्रायः मतभेद हैं, किंतु कुछ विद्वानों के अनुसार, इनका जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के 'राजापुर' नामक गाँव में 1532 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम 'आत्माराम दुबे' और माता का नाम 'हुलसी' था। 'गुरु नरहरिदास' इनके गुरु थे। इन्होंने ही तुलसीदास जी को वेद, पुराण तथा अन्य शास्त्रों का अध्ययन करवाया था। तुलसीदास जी को हिंदी जगत का सूर्य भी कहा जाता है।

रामचरितमानस के अतिरिक्त दोहावली, गीतावली, कवितावली, कृष्णगीतावली विनयपत्रिका, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, वैराग्य संदीपनी, बरवै रामायण, हनुमान बाहुक आदि तुलसीदास जी के प्रमुख ग्रंथ हैं। इनकी मृत्यु 1623 ई. में हुई।

## पदों का सार

तुलसीदास जी श्रीराम के अनन्य भक्त थे। 'विनय के पद' में उन्होंने राम की महिमा का वर्णन किया है। इन्होंने श्रीराम को कृपालु, दयालु व मानवता का उद्धार करने वाले प्रभु के रूप में माना है। तुलसीदास जी कहते हैं कि श्रीराम जी ने हमेशा दीन-हीनों का ही उद्धार किया है। अतः कठोर तप साधना न करके केवल राम नाम के सुमिरन से ही प्रभु खुश हो जाते हैं। तुलसीदास जी के अनुसार उन लोगों का साथ छोड़ देना चाहिए, जो श्रीराम में आस्था नहीं रखते। ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठा रखकर ही उनकी प्राप्ति की जा सकती है। तुलसीदास जी कहते हैं कि जिस व्यक्ति को राम और सीता प्रिय हैं, वही हमारा परम हितैषी और शुभचिंतक है।

## संदर्भ सहित व्याख्या

### 1. ऐसो को उदार जग माहीं।

बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं॥  
जो गति जोग विराग जतन करि नहिं पावन मुनि ज्ञानी॥  
सो गति देत गीध सबरी कहूँ प्रभु न बहुत जिय जानी॥  
जो संपत्ति दस सीस अरप करि रावन सिव पहुँ लीन्ही॥  
सो संपदा-विभीषण कहूँ अति सकुच सहित प्रभु दीन्ही॥  
तुलसीदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।  
तौ भजु राम, काम सब पून कर कृपानिधि तेरो॥

## शब्दार्थ

उदार—दयावान (kind hearted); द्रवै—द्रवित हो जाते हैं (ejaculatory); सरिस—समान (equal); विराग—वैरागी, सांसारिक मामलों से अलग (recluse); सीस—सिर (head); अरप—चढ़ाकर, देवता की भेंट (an offering to a God); सकल—सभी (all); भजु—भजना (to worship)।

**संदर्भ** प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य सागर' के 'पद्य भाग' में तुलसीदास द्वारा रचित 'विनय के पद' से उद्धृत है।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने श्रीराम की उदारता का वर्णन किया है।

**व्याख्या** तुलसीदास जी कहते हैं कि इस संसार में भगवान श्रीराम के समान कोई दूसरा उदार चित्त वाला नहीं है। प्रभु बिना किसी सेवा के ही दीन-हीन पर प्रसन्न हो जाते हैं। जिस गति अर्थात् मोक्ष को ऋषि-मुनि अनेक तप, साधना जैसे यत्न करके भी प्राप्त नहीं कर पाते, उस गति को गिद्ध (जटायु) और शबरी ने श्रीराम का नाम जपकर ही प्राप्त कर लिया। जिस संपत्ति



अर्थात् स्वर्ण नगरी श्रीलंका को रावण ने भगवान शिव को अपने दस सिरों को अर्पण करके प्राप्त किया था, उस संपत्ति को भगवान् राम ने विभीषण को सहज ही प्रदान कर दिया। तुलसीदास जी मन को संबोधित करते हुए कहते हैं कि हे मन! यदि तुझे संसार के सभी सुखों से फलीभूत होना है अर्थात् सभी सुखों का आनंद प्राप्त करना है, तो तू राम के नाम का जप कर, उस कृपानिधि का नाम जपने मात्र से ही तेरे सारे काम पूर्ण हो जाएंगे।

## 2. जाके प्रिय न राम वैदेही।

तजिए ताहि कोटि वैरी सम जदपि परम सनेही॥  
तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषण बंधु, भरत महतारी॥  
बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रज बनितहि, भए-मुद मंगलकारी॥  
नाते नेह राम के मनियत, सुहुद सुसेव्य जहाँ लौं।  
अंजन कहा आँख जेहि फूटै, बहु तक कहीं कहाँ लौं।  
तुलसी सो सब भाँति परमहित पूज्य प्रान ते प्यारो।  
जासों होय सनेह राम-पद, एतो मतो हमारो॥

### शब्दार्थ

तजिए—त्याग करना (to sacrifice); कोटि—करोड़ों (crore); वैरी—शत्रु (enemy); जदपि—यद्यपि (although); सनेह—प्रेम (love); महतारी—माता (mother); कंत—पति (husband); बनितहि—स्त्रियाँ (ladies); भए-मुद—प्रसन्न हुए (pleased); सुसेव्य—उचित हो (deserve); अंजन—काजल, नेत्रबिंदु (lampblack); मत—राय (opinion)।

संदर्भ पूर्ववत्।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने प्रभु राम के प्रति स्नेह भाव रखने वाले मनुष्यों के जीवन को मंगलमय बताया है।

**व्याख्या** जिस मनुष्य के हृदय में प्रभु राम व सीता माता के प्रति प्रेम भाव विद्यमान नहीं है, वह मनुष्य हमें कितना ही प्रिय क्यों न हो, शत्रुओं के समान हमें उसका त्याग कर देना चाहिए। जिस प्रकार ईश्वर के प्रति भक्ति-भाव में लीन होने के कारण प्रह्लाद ने अपने पिता का, विभीषण ने अपने भाई रावण का व भरत ने अपनी माता का, राजा बलि ने अपने गुरु का तथा ब्रज की स्त्रियों ने अपने पतियों का त्याग किया था, क्योंकि उनके हृदय में प्रभु के प्रति स्नेह भाव विद्यमान नहीं था।

कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वरीय प्रेम के कारण हमें घनिष्ठ संबंधों का त्याग करने से भी पीछे नहीं हटना चाहिए।

कवि के अनुसार, हमें राम का स्मरण रखने वाले व्यक्ति के प्रति ही प्रेम भाव रखना चाहिए। यहाँ कवि उदाहरण देते हुए कहते हैं कि ऐसे काजल का क्या उपयोग, जिसे लगाने से आँखें फूट जाएँ? इसलिए हमें ऐसे मनुष्यों का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए, जिनके हृदय में प्रभु के प्रति स्नेह भाव विद्यमान न हो।

तुलसीदास जी का मत है कि जिस मनुष्य का मन ईश्वर के प्रति पूर्णरूप से भक्ति-भाव में समर्पित होगा, उसका जीवन मंगलमय होगा। भगवान राम की कृपा उस पर सदैव बनी रहेगी।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### 1. ऐसो को उदार जग माहीं।

बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं।  
जो गति जोग विराग जतन करि नहिं पावत मुनि ज्ञानी।  
सो गति देत गीध सबरी कहूँ प्रभु न बहुत जिय जानी॥

(क) कवि ने किसकी महिमा का बखान करते हुए उन्हें उदार चित्त वाला बताया है और क्यों? (2)

**उत्तर** कवि ने प्रभु श्रीराम की महिमा का बखान करते हुए उन्हें उदार हृदय वाला बताया है, क्योंकि प्रभु राम बिना सेवा के गरीबों पर दया करते हैं तथा उनका कल्याण करते हैं।

(ख) संसार में किसके समान कोई और नहीं है और क्यों? (2)

**उत्तर** संसार में प्रभु श्रीराम के समान दयालु व कृपालु कोई और नहीं है, क्योंकि वे सदैव गरीबों के उद्धार में लगे रहते हैं तथा उन पर जल्दी ही अपनी कृपा दृष्टि बरसा देते हैं।

(ग) “जो गति जोग विराग जतन करि नहिं पावन मुनि ज्ञानी” इस पंक्ति से कवि का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** “जो गति जोग विराग जतन करि नहिं पावन मुनि ज्ञानी” इस पंक्ति के माध्यम से कवि प्रभु श्रीराम की महानता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जो सुख ऋषि-मुनियों को अपनी वैराग्य भावना,

योग, जतन आदि करने से भी प्राप्त नहीं होता, वह राम के नाम जपने से प्राप्त हो जाता है। उनकी माया अपार है। उन्होंने सहज में ही अपने अनेक साधारण भक्तों का उद्धार किया है।

(घ) कवि ने श्रीराम की कल्याणकारी भावना का बखान किस प्रकार किया है? (3)

**उत्तर** कवि ने श्रीराम की कल्याणकारी भावना का बखान करते हुए कहा है कि इस संसार में भगवान श्रीराम के समान दयालु प्रवृत्ति का कोई और नहीं है, वे अपने भक्तों का सदैव कल्याण करते हैं। कवि उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जो सुख ऋषि-मुनि योग-साधना द्वारा भी प्राप्त नहीं कर सके, वह सुख राम की शरण में जाने मात्र से जटायु व शबरी को प्राप्त हो गया था।

2. जो संपत्ति दस सीस अरप करि रावन सिव पहुँ लीन्ही।  
जो संपदा-विभीषण कहँ अति सकुच सहित प्रभु दीन्ही॥  
तुलसीदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।  
तो भजु राम, काम सब पूरन कर कृपानिधि तेरो॥

(क) किसने और किसकी कृपा पाने के लिए दसों सिरों का अर्पण किया और क्यों? (2)

**उत्तर** रावण ने भगवान शिव की कृपा पाने के लिए अपने दसों सिरों को उन पर अर्पण कर दिया था। वह लंका और उसकी संपूर्ण संपत्ति

को पाना चाहता था। उसने उसे पाने के लिए तथा शिवजी को प्रसन्न करने के लिए अथक प्रयास किया था।

(ख) विभीषण ने प्रभु श्रीराम की कृपा पाने के लिए क्या किया? (2)

**उत्तर** विभीषण ने प्रभु श्रीराम की कृपा पाने के लिए किसी भी प्रकार का जतन नहीं किया, अपितु उन्होंने केवल प्रभु श्रीराम का स्मरण किया। उसने उन्हें प्रसन्न करने के लिए कोई कठोर तप नहीं किया। वह केवल श्रीराम की शरण में आ गया और राम नाम का स्मरण किया।

(ग) श्रीराम की कृपा प्राप्ति के लिए कवि के अनुसार क्या करना चाहिए? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** कवि के अनुसार, भगवान राम की कृपा प्राप्त करने के लिए हमें किसी भी प्रकार के कठोर परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं है। राम की शरण में जाने और उनका नाम स्मरण करने से ही उनकी कृपा प्राप्त की जा सकती है अर्थात् सच्चे हृदय से प्रभु का ध्यान करने मात्र से ही प्रभु श्रीराम अपने भक्तों पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखते हैं।

(घ) उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि भगवान राम की महिमा का बखान तथा मन को संबोधित करते हुए कहते हैं कि हे मन! यदि तुझे संसार के सभी सुखों से अभिभूत होना है अर्थात् सभी सुखों का आनंद प्राप्त करना है, तो तू राम के नाम का जाप कर। कृपानिधि राम के नाम जपने मात्र से ही तेरे सारे काम पूर्ण हो जाएंगे।

3. जाके प्रिय न राम वैदेही।

तजिए ताहि कोटि वैरी सम जदपि परम सनेही॥

तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषण बंधु, भरत महतारी।

बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रज बनितहि, भए-मुद मंगलकारी॥

(क) कवि के अनुसार, कैसे व्यक्ति का जीवन मंगलमय है? (2)

**उत्तर** कवि के अनुसार, प्रभु श्रीराम के प्रति स्नेह भाव रखने वाले व्यक्ति का जीवन मंगलमय है। राम अत्यंत दयालु हैं। वे बिना किसी यत्न के प्रसन्न हो जाते हैं और अपने भक्तों का उद्धार कर देते हैं।

(ख) कैसे व्यक्तियों को शत्रुओं के समान समझना चाहिए? (2)

**उत्तर** जिन व्यक्तियों के मन में ईश्वर के प्रति भक्ति-भाव नहीं है अर्थात् प्रभु श्रीराम व सीता माता के प्रति प्रेम भाव विद्यमान नहीं है, ऐसे मनुष्य को शत्रुओं के समान समझना चाहिए।

(ग) प्रह्लाद, विभीषण, भरत आदि के उदाहरण द्वारा कवि क्या स्पष्ट करना चाहते हैं? (3)

**उत्तर** प्रह्लाद, विभीषण, भरत आदि के उदाहरण द्वारा कवि ईश्वर के प्रति भक्ति-भावना को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार ईश्वर के प्रति भक्ति-भाव में लीन होने के कारण प्रह्लाद ने अपने पिता, विभीषण ने अपने भाई व भरत ने अपनी माता का त्याग किया, उसी प्रकार ईश्वरीय प्रेम के कारण हमें घनिष्ठ संबंधों का त्याग करने से पीछे नहीं हटना चाहिए।

(घ) प्रस्तुत पद का सार स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** तुलसीदास जी कहते हैं कि कोई व्यक्ति हमारे लिए कितना भी प्यारा क्यों न हो, परंतु यदि वह श्रीराम का भक्त नहीं है, तो हमें उससे स्नेह अर्थात् प्रेम नहीं करना चाहिए। तुलसीदास जी के अनुसार, जिस प्रकार काजल लगाने से आँखों की सुंदरता बढ़ती है, लेकिन यदि उससे आँखों के खराब होने का डर है, तो वह हमारे लिए किसी भी काम का नहीं है। अतः तुलसीदास जी कहते हैं कि जो व्यक्ति राम से स्नेह रखते हैं, वही मित्र हमारे लिए सुसेव्य हैं अर्थात् पूजनीय हैं।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. ऐसो को उदार जग माहीं।

बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं॥

(क) सबसे अधिक उदार कौन हैं और क्यों? (2)

(ख) श्रीराम दीन पर कृपा किस प्रकार करते हैं? (2)

(ग) 'बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर' का भाव स्पष्ट कीजिए। (3)

(घ) उपरोक्त पंक्तियों का केंद्रीय भाव लिखिए। (3)

2. तुलसीदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।

तौ भजु राम, काम सब पूरन कर कृपानिधि तेरो॥

(क) संसार के सभी सुखों की प्राप्ति किस प्रकार संभव है? (2)

(ख) उपरोक्त पंक्तियों में 'कृपानिधि' कौन हैं और क्यों? (2)

(ग) 'सकल सुख जो चाहसि मन मेरो' से कवि का क्या तात्पर्य है? (3)

(घ) उपरोक्त पंक्तियों का मूल भाव लिखिए। (3)

3. "नाते नेह राम के मनियत, सुहुद सुसेव्य जहाँ लौ।

अंजन कहा आँख जेहि फूटै, बहु तक कहाँ कहाँ लौ॥"

(क) किसके बिना जीवन का कल्याण संभव नहीं है? (2)

(ख) कवि ने ईश्वर भक्ति में किन वस्तुओं को त्याज्य बताया है? (2)

(ग) भगवान श्री राम का गुणगान कवि ने किस प्रकार किया है? (3)

(घ) उपरोक्त पंक्तियों का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए। (3)

4. तुलसी सो सब भाँति परमहित पूज्य प्रान ते प्यारो।

जासों होय सनेह राम-पद, एतो मतो हमारो॥

(क) कवि के अनुसार, हमें कैसे व्यक्ति के प्रति प्रेम भाव रखना चाहिए? (2)

(ख) कवि के अनुसार किसका जीवन मंगलमय होगा? (2)

(ग) भगवान श्री राम की कृपा सदैव किस पर बनी रहती है और क्यों? (3)

(घ) उपरोक्त पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

# भिक्षुक सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

## कवि परिचय

बहुमुखी प्रतिभा के धनी 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' का जन्म 1897 ई. में बंगाल के मेदिनीपुर जिले में हुआ था। इनके पिता का नाम पंडित 'रामसहाय त्रिपाठी' था तथा वे उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में रहते थे। निराला जी का पारिवारिक जीवन बड़ा ही कष्टमय रहा। ढाई वर्ष की अल्पायु में ही इनकी माताजी का स्वर्गवास हो गया तथा इनके पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी इनके पिता के कंधों पर आ गई। इन्होंने हाईस्कूल तक आते-आते हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत व बांग्ला भाषा भी सीख ली थी। इन्होंने रामकृष्ण मिशन के पत्र 'समन्वय', 'गंगा पुस्तकमाला' तथा 'मतवाला' का संपादन भी किया।

निराला जी की प्रमुख रचनाएँ हैं—परिमल, जूही की कली, गीतिका, अनामिका, राम की शक्ति पूजा, तुलसीदास, कुरुरमुत्ता, अपरा, प्रभावती आदि। निराला जी का 15 अक्टूबर, 1961 को देहावसान हो गया।

## कविता का सार

इस कविता के माध्यम से कवि भिखारी की दयनीय स्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि उसकी स्थिति इतनी दयनीय है कि वह स्वयं अपने भाग्य को कोसता है। भूख की व्याकुलता से उसका पेट व पीठ दोनों एक समान प्रतीत होते हैं। वह अपनी भूख को मिटाने के उद्देश्य से मुट्ठी भर दानों की तलाश में पछताता हुआ-सा मार्ग पर भटकता हुआ प्रतीत होता है। कवि भिक्षुक व उसके बच्चों का अत्यंत ही मार्मिक चित्र प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि वह अपने बच्चों के साथ खाने की तलाश में दर-दर भटकता है, किंतु किसी की कृपा दृष्टि न पाकर वह स्वयं ही आँसुओं के घूँट पीकर रह जाता है। जब भूखे भिखारी के पास अपनी भूख को शांत करने का कोई चारा नहीं बचता, तो वह सड़क के किनारे पड़ी पत्तलों की जूठन को खाने की सोचता है, किंतु गरीब भिखारी जूठन खाने का भी हकदार नहीं रहता, क्योंकि जूठन पर भी कुत्ते नजर लगाए खड़े हैं। अंत में भिक्षुक की दर्दनाक व दयनीय स्थिति को देखते हुए कवि को दया आ जाती है और कवि, भिक्षुक के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहते हैं कि मैं तुम्हारे दुःख-दर्द को बाँट लूँगा।

## संदर्भ सहित व्याख्या

1. वह आता दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।  
पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक, चल रहा लकुटिया टेक,  
मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को, मुँह फटी-पुरानी झोली का फैलाता  
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।

## शब्दार्थ

टूक—टुकड़े (piece); पछताता—पश्चाताप करना (to repent); पथ—मार्ग, रास्ता (path); लकुटिया—लाठी (stick, rod); मुट्ठी भर—थोड़े से (little); झोली—छोटा थैला (wallet)।

**संदर्भ** प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य-सागर' के 'पद्य-भाग' में संकलित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता 'भिक्षुक' से उद्धृत है।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने भिक्षुक की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है।

**व्याख्या** कवि कहता है कि वह भिक्षुक स्वयं अपने भाग्य को कोसता हुआ, दुःखी व निराशा के भाव से मार्ग पर चलता हुआ आता है। उसकी स्थिति इतनी दयनीय है कि उसका पेट व पीठ दोनों सिकुड़ कर एक समान प्रतीत हो रहे हैं अर्थात् भिक्षुक को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो उसने कई दिनों से कुछ न खाया हो, इसलिए उसे आज भीख माँगनी पड़ रही है। उसमें इतना साहस नहीं रह गया है कि वह मार्ग पर या पथ पर बिना सहारे के चल सके। उसे चलने के

लिए लाठी का सहारा लेना पड़ रहा है। उसे अपनी भूख मिटाने के लिए मुट्ठी भर दानों की तलाश में दर-दर भटकना पड़ रहा है। वह एक फटी-पुरानी झोली को लोगों के सामने फैलाता हुआ, भीख माँगता हुआ, पथ पर भटकता हुआ-सा प्रतीत होता है।

2. साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,  
बाएँ से वे मलते हुए पेट को चलते,  
और दाहिना दया-दृष्टि पाने की ओर बढ़ाए।  
भूख से सूख ओंठ जब जाते,  
दाता-भाग्य, विधाता से क्या पाते?  
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।

### शब्दार्थ

दाहिना-दायाँ (right); दया-दृष्टि-कृपा-दृष्टि (kindness);  
ओंठ- होंठ (lip); भाग्य-किस्मत (luck); विधाता-भगवान (god)।

### संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने भिक्षुक के बच्चों की दीन-हीनता का वर्णन किया है तथा लोगों की संवेदनहीनता को उजागर किया है।

व्याख्या बेबस भिखारी के साथ भीख माँगते हुए, उसके दो बच्चे भी हैं, जो उसके साथ भीख माँगते हुए चलते हैं। उनका बायाँ हाथ पेट पर है तथा दाहिना हाथ भिक्षा माँगने के लिए लोगों के सामने फैला हुआ है अर्थात् बायाँ हाथ पेट पर रखकर वे लोगों के सामने अपने भूखे होने की स्थिति को दर्शा रहे हैं तथा दूसरी ओर दाहिना हाथ लोगों के सामने बढ़ाकर अपनी बेबस स्थिति को बयान करते हैं।

भूख की व्याकुलता से उनके होंठ सूख गए हैं, किंतु किसी की कृपादृष्टि न होने के कारण वे स्वयं आँसुओं के घूँट पीकर रह जाते

हैं। उनकी दयनीय, बेबस व लाचार स्थिति को देखकर भी कोई उन पर अपनी दया दृष्टि नहीं दिखाता अर्थात् उनको अपनी भूख मिटाने के लिए मुट्ठी भर अनाज भी प्राप्त नहीं होता।

3. चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,  
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।  
ठहरो, अहो मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा।  
अभिमन्यु-जैसे हो सकोगे तुम,  
तुम्हारे दुःख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा।

### शब्दार्थ

जूठी-जूठन (leftover food); सड़क-मार्ग (road); झपटना-छीन लेना (snatched away)।

### संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने भिखारी की व्याकुलता का वर्णन करते हुए स्वयं उसके दुःख-दर्द को बाँटने की बात की है।

व्याख्या जब भिखारी व उनके बच्चे के पास अपनी भूख को शांत करने का कोई चारा नहीं बचता, तो वे सड़क के किनारे पड़ी पत्तलों की जूठन खाने पर विवश हो जाते हैं, किंतु यहाँ भी उनके भाग्य ने उनका साथ नहीं दिया, क्योंकि उस जूठन पर भी कुत्ते नज़र लगाए खड़े थे।

कवि भिक्षुक की दयनीय स्थिति को देखकर दुःखी होता है तथा भिखारी को उसकी स्थिति से उबारने के लिए व्याकुल हो उठता है। वे अपने हृदय में भरे दया और प्रेम रूपी अमृत को भिक्षुक व उसके बच्चों को देने के लिए लालायित हो जाते हैं। वे उनके दुःखों को दूर करने का संकल्प करते हैं। वे उन्हें कहते हैं कि अभिमन्यु के समान इस समाज में संघर्ष करो और अपने समस्त कष्टों का निवारण करो।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. वह आता दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।  
पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक, चल रहा लकुटिया टेक।

(क) अपने भाग्य को कौन कोस रहा है और क्यों? (2)

उत्तर अपने भाग्य को भिक्षुक कोस रहा है, क्योंकि भूख के कारण उसकी दशा बहुत खराब हो गई है। उसे अपने आप पर बहुत रोना आ रहा है कि विधाता ने उसका भाग्य कितना खराब बनाया है कि वह दो वक्त की रोटी का भी प्रबंध नहीं कर सकता। इसलिए वह अपने भाग्य को कोस-कोस कर पछता रहा है।

(ख) “पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक” ऐसा क्यों कहा गया है? (2)

उत्तर गरीब भिक्षुक की स्थिति इतनी दयनीय है कि उसका पेट व पीठ दोनों सिकुड़ कर एक समान प्रतीत हो रहे हैं अर्थात् उसे देखकर ऐसा लग रहा है, मानो उसने कई दिनों से कुछ न खाया हो।

(ग) ‘चल रहा लकुटिया टेक’ पंक्ति के आधार पर बताएँ कि लाठी के सहारे कौन चल रहा है और क्यों? (3)

उत्तर ‘चल रहा लकुटिया टेक’ पंक्ति में लाठी के सहारे गरीब भिक्षुक चल रहा है। वह लाठी के सहारे चलता हुआ आता है। उसे देखकर यह भी प्रतीत हो रहा है; जैसे उसने कई दिनों से कुछ न खाया हो। उसमें इतना भी साहस नहीं रह गया कि वह बिना सहारे के चल सके, इसलिए उसे चलने के लिए लाठी का सहारा लेना पड़ रहा है।

(घ) उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि का क्या आशय है? (3)

उत्तर उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि भिखारी की दयनीय स्थिति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि भिक्षुक अत्यधिक दुःख के साथ स्वयं अपनी स्थिति पर पछताता हुआ भीख माँगने को विवश है।

वह इतना शक्तिहीन हो गया है कि बिना सहारे के चलने योग्य नहीं है। अतः चलने के लिए उसे सहारे की आवश्यकता पड़ती है। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने भिखारी की दयनीय स्थिति को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

## 2. भूख से सूख होंट जब जाते,

दाता-भाग्य, विधाता से क्या पाते?

घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।

(क) 'होंट' किसके और क्यों सूख गए हैं? (2)

**उत्तर** भिक्षुक व उसके बच्चों के होंट भूख की व्याकुलता के कारण सूख गए हैं, क्योंकि उन्हें काफी दिनों से कुछ भी खाने को नहीं मिला है। उनका शरीर भी अत्यंत दुर्बल हो गया है। भूख के मारे वे केवल आँसुओं के घूँट पीकर ही रह जाते हैं।

(ख) भिक्षुक के साथ और कौन-कौन हैं? उनकी दशा कैसी है? (2)

**उत्तर** भिक्षुक के साथ उसके दो बच्चे भी हैं। वे भी भूख से अत्यंत व्याकुल हैं और पेट को मलते हुए भिक्षुक के साथ चल रहे हैं। वे भी अपना हाथ फैलाए भिक्षुक के समान भीख माँग रहे हैं।

(ग) आँसुओं का घूँट पीकर कौन और क्यों रह जाता है? (3)

**उत्तर** आँसुओं का घूँट पीकर बेबस भिखारी और उसके साथ भीख माँगते हुए उसके दो बच्चे रह जाते हैं, क्योंकि भीख माँगने के बावजूद भी कोई उनको भोजन नहीं देता तथा उन पर अपनी कृपा-दृष्टि नहीं बनाता। कोई भी इतनी सामर्थ्य नहीं दिखाता कि आगे बढ़कर उनकी सहायता कर सके।

(घ) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने भिखारी और उसके बच्चों की दीनता, हीनता, लाचारी व बेबसी का यथार्थ वर्णन करने के साथ-साथ भिखारी के प्रति समाज के अन्य लोगों की खत्म होती संवेदनहीनता को भी उजागर करने का प्रयास किया है। समाज में लोग इतने कठोर हो गए हैं कि वे उन पर थोड़ी-सी भी दया करने की कोशिश नहीं करते।

## 3. चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,

और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।

ठहरो, अहो मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा,

अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम,

तुम्हारे दुःख, मैं अपने हृदय में खींच लूँगा।।

[2018]

(क) पहली दो पंक्तियों में कवि ने क्या दृश्य प्रस्तुत किया है? (2)

**उत्तर** पहली दो पंक्तियों में कवि दृश्य प्रस्तुत करते हुए कहता है कि जब भिक्षुक और उसके बच्चे सड़क पर पड़ी जूठी पत्तलों को चाटकर पेट भरने का प्रयास कर रहे हैं, तो कुत्ते भी पत्तलों को छीन लेने के लिए तैयार खड़े हैं।

(ख) इस भावुक दृश्य से हमारे हृदय में क्या भाव उत्पन्न होते हैं? (2)

**उत्तर** इस भावुक दृश्य से हमारा हृदय भिक्षुक की दयनीय स्थिति देखकर दुःखी होता है तथा हम भिखारी को उसकी स्थिति से उबारने के लिए व्याकुल हो उठते हैं। अपने हृदय में संचित प्रेम से अमृत तत्त्व को उन भिखारी के बच्चों पर न्योछावार करना चाहते हैं।

(ग) क्या भिक्षुकों की मदद करना मानवीय धर्म नहीं है? यहाँ

अभिमन्यु का उदाहरण कवि ने क्यों दिया है? (2)

**उत्तर** भिक्षुकों की मदद करना हमारा मानवीय धर्म है। हमें मानवता के प्रति उनकी पूर्ण रूप से सहायता करनी चाहिए। यहाँ अभिमन्यु का उदाहरण कवि ने इसलिए दिया है, क्योंकि जिस प्रकार अभिमन्यु ने अपने जीवन के अंत तक हार नहीं मानी और संघर्ष करता रहा, उसी प्रकार तुम (भिक्षुक) भी अभिमन्यु के समान इस समाज से संघर्ष करो और अपने समस्त कष्टों का निवारण करो।

(घ) प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव लिखिए। (3)

**उत्तर** भिक्षुक कविता में कवि ने एक भिखारी और उसके दो बच्चों की दयनीय अवस्था का वर्णन किया है। भिखारी का पेट और पीठ भुखमरी के कारण एक हो गए हैं। वे अपनी भूख मिटाने के लिए भीख माँगते रहते हैं, सड़क पर चलते हुए जूठी पत्तलों को चाट रहे हैं, जिसके लिए उन्हें कुत्तों से भी छिना-झपटी करनी पड़ रही है। भिक्षुक की दीनता को देखकर कवि उनके प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करता है।

# अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## 1. पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक, चल रहा लकुटिया टेक,

(क) प्रस्तुत पंक्तियों का प्रसंग बताइए। (2)

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि किसकी दशा का वर्णन कर रहा है और क्यों? (2)

(ग) 'लकुटिया का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि कवि प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से क्या संदेश देना चाहता है? (3)

(घ) प्रस्तुत पंक्तियों का भिक्षुक लाठी टेककर क्यों चल रहा है? कवि का यहाँ क्या तात्पर्य है? (3)

## 2. "साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,

बाएँ से वे मलते हुए पेट को चलते,

और दाहिना दया-दृष्टि पाने की ओर बढ़ाए।"

(क) बच्चे पेट मलते हुए क्यों चल रहे हैं? (2)

(ख) 'दाहिना दया-दृष्टि पाने की ओर बढ़ाए'—इस पंक्ति का क्या आशय है? (2)

(ग) प्रस्तुत पद्यांश में किस स्थिति का वर्णन किया गया है? (3)

(घ) उपरोक्त पंक्तियों का मूलभाव अपने शब्दों में लिखिए। (3)

# चलना हमारा काम है

शिवमंगल सिंह 'सुमन'

## कवि परिचय

श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म 14 अगस्त, 1915 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के 'झगरपुर' नामक गाँव में हुआ था। इन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर तथा पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। वर्ष 1974 में इनको अपनी कृति 'मिट्टी की बारात' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला तथा वर्ष 1974 में ही इन्हें पद्म श्री व सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड से भी सम्मानित किया गया। इसके साथ ही इन्हें अपने काव्य संग्रह पर 'देव पुरस्कार' तथा 'पर आँखें नहीं भरी' पर नवीन पुरस्कार प्राप्त हुआ है। कुछ समय तक ये नेपाल में भारतीय दूतावास के सांस्कृतिक सचिव भी रहे। इनकी कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं- जीवन के गान, हिल्लोल, प्रलय, सृजन, विश्वास बढ़ता गया, (काव्य संग्रह), प्रकृति पुरुष कालिदास (नाटक) आदि। हिंदी के सशक्त गीतकार कहलाने वाले 'सुमन' जी का 27 नवंबर, 2002 को निधन हो गया।

## कविता का सार

प्रस्तुत कविता में कवि ने जीवन पथ पर हमेशा अग्रसर रहने की सीख दी है। मनुष्य के पैरों में इतनी गति है कि वह अपने निर्धारित लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सकता है। उसे परस्पर सहयोग की भावना को मन में रखकर कर्मपथ पर डटे रहना चाहिए।

कवि कहता है कि जीवन अपूर्ण है। जीवन में सुख-दुःख, आशा-निराशा, हँसना-रोना आदि निरंतर बना रहता है, किंतु इन सबके चलते मनुष्य को हारकर नहीं बैठना चाहिए।

हमें अपनी परेशानियों का कारण विधाता को नहीं मानना चाहिए, अपितु ईश्वर पर विश्वास रखते हुए निरंतर कर्मपथ पर चलते रहना चाहिए। संसार में ऐसा कोई भी सुख नहीं है, जिसे पाकर मनुष्य की इच्छाएँ समाप्त हो जाएँ। अतः हमें पूरी मेहनत व लगन से निरंतर कठिनाइयों का सामना करते रहना चाहिए। हार मानने वालों को सुख व सफलता प्राप्त नहीं होती। अतः सदैव पथ पर चलना ही हमारा कर्तव्य है।

## संदर्भ सहित व्याख्या

1. गति प्रबल पैरों में भरी, फिर क्यों रहूँ दर-दर खड़ा,  
जब आज मेरे सामने है रास्ता इतना पड़ा।  
जब तक न मंजिल पा सकूँ, तब तक मुझे न विराम है।  
चलना हमारा काम है।

## शब्दार्थ

गति—रफ्तार, चाल (speed); प्रबल—तेज (strong); मंजिल—लक्ष्य (aim); विराम—रुकना (stop)।

**संदर्भ** प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य-सागर' के 'पद्य-भाग' में संकलित 'शिवमंगल सिंह सुमन' द्वारा रचित कविता 'चलना हमारा काम है' से उद्धृत है।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने यह स्पष्ट किया है कि सदा कर्म में लगे रहना ही हमारा कर्तव्य है। जब तक जीवन में मंजिल न मिल जाए, कर्म करना नहीं छोड़ना चाहिए।

**व्याख्या** कवि कहता है कि मेरे पैरों में इतनी गति है कि मैं बहुत तेजी से चल सकता हूँ, तो फिर मैं जगह-जगह क्यों खड़ा रहूँ? जबकि मेरे सामने इतना लंबा रास्ता पड़ा है। जब तक मुझे मंजिल नहीं मिल जाती, तब तक मेरी गति को विराम नहीं मिलेगा। सदैव चलना ही मेरा काम



है। कहने का तात्पर्य यह है कि जब मेरे पास इतनी शक्ति है कि मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता हूँ, तो मैं जगह-जगह क्यों ठहरूँ? कवि कर्म करने की प्रवृत्ति को प्रमुख मानते हुए कहते हैं कि हमें कर्म करना चाहिए, हार मानकर नहीं बैठना चाहिए। व्यक्ति को जीवन में एक लक्ष्य निर्धारित कर उसे प्राप्त करना चाहिए, फिर मार्ग में कितनी ही बाधाएँ क्यों न आएँ, अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले रुकना नहीं चाहिए।

2. कुछ कह लिया, कुछ सुन लिया, कुछ बोझ अपना बँट गया,  
अच्छा हुआ तुम मिल गई, कुछ रास्ता ही कट गया।  
क्या राह में परिचय कहूँ? राही हमारा नाम है,  
चलना हमारा काम है।

### शब्दार्थ

राह—मार्ग (way, path); परिचय—पहचान (introduction);  
राही—मुसाफिर, यात्री (traveller)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने जीवन पथ पर आगे बढ़ते हुए हर किसी से सहयोग लेने की बात कही है।

व्याख्या हमें अपने सुख-दुःख में परस्पर आदान-प्रदान की भावना रखनी चाहिए। राह में चलते हुए हमें स्वयं कुछ कहना भी चाहिए व दूसरों की सुननी भी चाहिए, इससे मन का बोझ कम हो जाता है। कवि कहता है कि यह बहुत अच्छा हुआ कि रास्ते में चलते हुए तुम मुझे मिल गए। अब तुम्हारे आने से रास्ते में एक साथी मिल गया है, जिससे रास्ता अच्छी तरह से कट जाएगा। हम दोनों एक ही रास्ते पर चल रहे हैं। इस लिए हम दोनों राही हुए, तो एक दूसरे को परिचय देने की आवश्यकता नहीं है।

कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन की राह में कोई भी पराया नहीं है, हमें सदैव मिलकर रहना चाहिए। परस्पर सहयोग की भावना प्रत्येक राही के मन में विद्यमान होनी चाहिए, क्योंकि राह में चलने वाला प्रत्येक व्यक्ति 'राही' के नाम से ही जाना जाता है और 'राही' की पहचान ही सदैव मार्ग पर चलते रहने से है, रुकना उसका काम नहीं है।

3. जीवन अपूर्ण लिए हुए, पाता कभी, खोता कभी  
आशा-निराशा से घिरा, हँसता कभी रोता कभी।  
गति-मति न हो अवरुद्ध, इसका ध्यान आठों याम है।  
चलना हमारा काम है।

### शब्दार्थ

अपूर्ण—अधूरा (incomplete); मति—बुद्धि, राय (mind); अवरुद्ध—रुका हुआ (hindered); याम—हर समय (every time)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने जीवन पथ पर कर्म करते हुए निरंतर आगे बढ़ने की बात कही है।

व्याख्या मनुष्य का जीवन अपूर्ण है, क्योंकि कभी वह कुछ पाता है, तो कभी वह कुछ खोता है। कभी उसका जीवन आशाओं से परिपूर्ण है, तो कभी उसका जीवन निराशाओं से घिरा है। कभी वह हँसता है, तो

कभी वह रोता है। हमें सदैव इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि हमारी गति व वृद्धि में किसी प्रकार की रुकावट उपस्थित नहीं होनी चाहिए। हर समय कर्मपथ पर चलना ही हमारा काम है अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य के जीवन में सुख-दुःख, आशा-निराशा, हँसना-रोना आदि निरंतर चलता रहता है, किंतु इन सबके चलते मनुष्य को हारकर नहीं बैठना चाहिए, अपितु निरंतर मार्ग पर चलते रहना चाहिए।

4. इस विशद् विश्व-प्रवाह में, किसको नहीं बहना पड़ा  
सुख-दुःख हमारी ही तरह, किसको नहीं सहना पड़ा।  
फिर व्यर्थ क्यों कहता फिरूँ, मुझ पर विधाता वाम है।  
चलना हमारा काम है।

### शब्दार्थ

विशद्—बड़ा (large); प्रवाह—बहाव (flow); व्यर्थ—बेकार ही (useless);  
वाम—विरुद्ध (reverse, opposite)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है कि सभी के जीवन में दुःख व परेशानियाँ आती हैं, परंतु उनके लिए ईश्वर को जिम्मेदार नहीं मानना चाहिए।

व्याख्या इतने बड़े संसार में ऐसा कौन है, जिसे इस संसार की धारा में बहना नहीं पड़ता? हमारे ही समान सभी के जीवन में सुख-दुःख का सिलसिला निरंतर गतिमान रहता है। ऐसा कौन है जिसे यह सहना नहीं पड़ता, फिर मैं बेकार ही क्यों अपने दुःखों व परेशानियों के लिए ईश्वर को दोषी ठहराऊँ? मैं राही हूँ और निरंतर चलते रहना ही मेरा काम है अर्थात् सुख-दुःख सभी के जीवन में चलता रहता है, यह तो संसार की गति है, जिसमें सभी को बहना पड़ता है। कवि के अनुसार, हमें अपने दुःखों व परेशानियों के लिए ईश्वर को जिम्मेदार नहीं मानना चाहिए, अपितु निरंतर मार्ग पर चलते हुए समस्याओं का समाधान करना चाहिए।

5. मैं पूर्णता की खोज में दर-दर भटकता ही रहा  
प्रत्येक पग पर कुछ-न-कुछ रोड़ा अटकता ही रहा  
पर हो निराशा क्यों मुझे? जीवन इसी का नाम है।  
चलना हमारा काम है।

### शब्दार्थ

पूर्णता—पूरे तौर से (fully complete); रोड़ा—बाधा (obstruction);  
निराशा—आशा का न होना (disappointment)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है कि जीवन में कर्मपथ पर आगे बढ़ते हुए, अगर समस्याओं का सामना करना पड़े तो भी हमें घबराना नहीं चाहिए।

व्याख्या कवि कहता है कि मैं पूर्णता की तलाश में सदैव दर-दर भटकता रहा, क्योंकि संसार में पूर्णता विद्यमान ही नहीं है। पूर्णता की तलाश में मेरा मार्ग सदैव कठिनाइयों से परिपूर्ण रहा। कवि के अनुसार, हमें मार्ग में आने वाली कठिनाइयों से निराश नहीं होना चाहिए। सुख-दुःख का आना-जाना तो लगा रहता है। हमें सदैव कठिनाइयों

का सामना करते हुए निरंतर कर्मपथ पर अग्रसर रहना चाहिए। जीवन इसी का नाम है अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य का पूर्णता की तलाश करना व्यर्थ है, क्योंकि मनुष्य की यह तलाश कभी पूर्ण हो ही नहीं सकती। संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जिसे पाकर व्यक्ति संतुष्ट हो जाए या उसकी इच्छाएँ समाप्त हो जाएँ।

6. कुछ साथ में चलते रहे, कुछ बीच ही से फिर गए।  
पर गति न जीवन की रुकी, जो गिर गए सो गिर गए  
चलता रहे हरदम, उसी की सफलता अभिराम है।  
चलना हमारा काम है।

### शब्दार्थ

सफलता—कामयाबी (success); अभिराम—सुखद; मोहक (pleasure)।

संदर्भ पूर्ववत्।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि स्पष्ट करना चाहता है कि जीवन की सफलता का सुख उसे ही प्राप्त होता है, जो जीवन पथ पर सदा चलता रहता है अर्थात् कर्म करता रहता है।

**व्याख्या** कवि कहता है कि कठिनाइयों से पूर्ण जीवन में कुछ राही तो मेरे साथ चलते रहे, किंतु कुछ बीच से ही लौट गए अर्थात् कुछ लोगों ने उनका साथ आधे रास्ते में ही छोड़ दिया, किंतु क्या उनकी इस प्रवृत्ति से मेरे जीवन की गति रुक गई?

कवि कहते हैं कि जो लोग आधे रास्ते से चले गए या फिर जीवन में आती कठिनाइयों से डर कर पीछे हट गए वे सदैव पीछे ही रह जाते हैं और जो व्यक्ति निरंतर कठिनाइयों का सामना करते हुए मार्ग पर चलते रहते हैं, उन्हें ही जीवन में सफलता प्राप्त होती है अर्थात् जीवन का सुख उन्हें ही प्राप्त होता है। अतः हम राही हैं सदैव चलना ही हमारा काम है।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. है रास्ता इतना पड़ा, जब तक न मंजिल पा सकूँ,  
तब तक मुझे न विराम है। चलना हमारा काम है।  
(क) कवि जगह-जगह खड़ा क्यों नहीं रहना चाहता? (2)  
**उत्तर** कवि सदा जीवन पथ पर आगे बढ़ते रहना चाहता है, इसलिए वह जगह-जगह रुकना नहीं चाहता, क्योंकि वह लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश में निरंतर कर्म करते रहना चाहता है।  
(ख) 'है रास्ता इतना पड़ा' ऐसा क्यों कहा गया है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। (2)  
**उत्तर** 'है रास्ता इतना पड़ा' ऐसा इसलिए कहा गया है, क्योंकि जब हमारे सामने रास्ता है, उस पर चलने का साहस मुझे ही करना है अर्थात् जीवन में जब कर्म करने का मार्ग खुला है, तो हमें हार मानकर नहीं बैठना चाहिए।  
(ग) कवि की गति को विराम कब तक नहीं मिलेगा व क्यों? (3)  
**उत्तर** कवि की गति को विराम तब तक नहीं मिलेगा, जब तक वह अपनी मंजिल को पूर्णतः प्राप्त नहीं कर लेता, क्योंकि उसके पैरों में इतनी गति है कि वह तेज गति से चल सकता है फिर चाहे कितना ही लंबा रास्ता क्यों न हो, उसकी गति को विराम नहीं मिलेगा अर्थात् कवि तब तक अपने पाँवों को विराम नहीं देना चाहता, जब तक उसे लक्ष्य प्राप्त नहीं हो जाता। वह यँ ही बिना रुके चलते रहना चाहता है।  
(घ) उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? (3)  
**उत्तर** उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है, जब हमारे पास अपने लक्ष्य को साधने की शक्ति विद्यमान है, तो हमें अपने पथ पर निरंतर गतिमान रहना चाहिए। हार मानकर नहीं बैठना चाहिए अर्थात् व्यक्ति को जीवन में एक लक्ष्य निर्धारित कर उसे प्राप्त करना चाहिए, फिर मार्ग में कितनी ही बाधाएँ क्यों न आएँ? हमें उन बाधाओं से डरकर रुकना नहीं चाहिए। भाव यही है कि कवि राह में आई हुई बाधाओं से न डरकर अपनी मंजिल को प्राप्त करना चाहता है।

2. अच्छा हुआ तुम मिल गई, कुछ रास्ता ही कट गया।  
क्या राह में परिचय कहूँ? राही हमारा नाम है,  
चलना हमारा काम है।  
(क) राह में चलते हुए कुछ कहने-सुनने की बात कवि ने क्यों कही है? (2)  
**उत्तर** राह में चलते हुए कुछ कहने-सुनने की बात कवि ने इसलिए कही है, क्योंकि इससे उसके मन का बोझ कम हो गया, कवि को राह में एक साथी मिल गया। उसने कुछ बातें उसकी सुनी और कुछ बातें अपनी कहीं।  
(ख) कवि ने हर्ष क्यों प्रकट किया है? किसके मिलने पर कुछ रास्ता कट जाता है? (2)  
**उत्तर** कवि को राह में चलते हुए कोई साथी मिल जाने के कारण हर्ष हुआ, क्योंकि उसके मिलने से उसका रास्ता कट गया। अतः कवि का यहाँ तात्पर्य है कि रास्ते में कोई अन्य राही मिल जाने से कुछ रास्ता आसानी से कट जाता है।  
(ग) "क्या राह में परिचय कहूँ, राही हमारा नाम है, चलना हमारा काम है" पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (3)  
**उत्तर** "क्या राह में परिचय कहूँ, राही हमारा नाम है, चलना हमारा काम है"—इस पंक्ति में जीवन पथ पर चलते हुए कवि को राह में कोई मिल जाता है और उसके सहयोग से कवि का कुछ रास्ता तय हो जाता है। उस सहयोगी को अपना परिचय देते हुए कवि कहता है कि राह में चलने वाला प्रत्येक व्यक्ति 'राही' के नाम से जाना जाता है। सदैव मार्ग पर चलना ही उसका काम होता है।  
(घ) उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने किस पर बल देने का प्रयास किया है और क्यों? (3)  
**उत्तर** उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने परस्पर सहयोग की भावना के विकास पर बल देने का प्रयास किया है। उनके अनुसार, जीवन में कोई भी पराया नहीं है। जीवन पथ पर आगे बढ़ते हुए हमें हर किसी का सहयोग लेना-देना चाहिए। सदैव मिलकर रहना चाहिए। अतः राह में मिलने वाले राही का परस्पर सहयोग लेते हुए जीवन रूपी पथ पर आगे बढ़ना चाहिए।

3. हँसता कभी रोता कभी, गति-मति न हो अवरुद्ध,  
इसका ध्यान आठों याम है। चलना हमारा काम है।

(क) कवि के अनुसार, मनुष्य का जीवन अपूर्ण है और क्यों? (2)

**उत्तर** कवि के अनुसार, मनुष्य का जीवन अपूर्ण है, क्योंकि वह सदैव एक-सा नहीं रहता। वह कभी कुछ पाता है, तो कभी कुछ खोता है। संसार में ऐसी कोई इच्छित वस्तु नहीं है, जिसे पाकर व्यक्ति शांति एवं खुशी से बैठ जाए।

(ख) किसका जीवन आशा व निराशा से घिरा है और क्यों? (2)

**उत्तर** संसार में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति का जीवन आशा व निराशा से घिरा है, क्योंकि जीवन सदैव समान परिस्थितियों में नहीं रहता। सुख-दुःख, आशा-निराशा का आना-जाना लगा रहता है।

(ग) "गति-मति न हो अवरुद्ध। इसका ध्यान आठों याम है।"

पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** "गति-मति न हो अवरुद्ध, इसका ध्यान आठों याम है" इस पंक्ति के माध्यम से कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि जीवन पथ पर चाहे जितनी भी परेशानियाँ आएँ, परंतु मेरी गति नहीं रुकनी चाहिए और न कभी मेरे विचारों में कोई बाधा आनी चाहिए। मेरी गति और बुद्धि दोनों में किसी भी प्रकार की रुकावट उपस्थित नहीं होनी चाहिए। वह सदैव कर्मपथ पर आठों पहर चलता रहना चाहता है।

(घ) प्रस्तुत पंक्तियों के कवि कौन हैं? उनका साहित्यिक परिचय दीजिए। (3)

**उत्तर** प्रस्तुत पंक्तियों के कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' हैं। सुमन जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से जन साधारण और शोषित-पीड़ितों की व्यथा व पीड़ा को उजागर किया है। इन्होंने एकांत क्षणों की कोमल अनुभूतियों को भी अपने काव्य में स्थान दिया है। इन्होंने अपने काव्य में सरल व ओजपूर्ण भाषा का प्रयोग किया है। इनकी कविताओं व गीतों में कहीं-कहीं तत्सम शब्दों की भी झलक मिलती है। इनका अधिकांश काव्य मुक्त शैली में लिखा गया है। सुमन जी हिंदी के सशक्त गीतकारों में से एक हैं।

4. "में पूर्णता की खोज में दर-दर भटकता ही रहा  
प्रत्येक पग पर कुछ-न-कुछ रोड़ा अटकता ही रहा

पर हो निराशा क्यों मुझे? जीवन इसी का नाम है।

चलना हमारा काम है।"

[2018]

(क) कवि ने मनुष्य के जीवन के बारे में क्या कहा है तथा क्यों? (2)

**उत्तर** कवि ने मनुष्य के जीवन के बारे में कहा है कि मनुष्य का जीवन पूर्णता की तलाश में सदैव दर-दर भटकता रहता है, क्योंकि संसार में पूर्णता विद्यमान ही नहीं है।

(ख) कवि के अनुसार जीवन का महत्त्व किसमें है? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** जीवन में कर्मपथ पर आगे बढ़ते हुए, अगर समस्याओं का सामना करना पड़े, तो भी हमें घबराना नहीं चाहिए। जीवन का महत्त्व इसी में है।

(ग) जीवन में सुख-दुःख और आशा-निराशा के प्रति हमारा क्या दृष्टिकोण होना चाहिए? अपने दुःखों और निराशा के लिए हमें किसको दोष देना उचित नहीं है तथा क्यों? समझाकर लिखिए। (3)

**उत्तर** जीवन में सुख-दुःख और आशा-निराशा के प्रति हमारा सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए, क्योंकि जीवन में सुख-दुःख का आना-जाना तो लगा रहता है। हमें अपने दुःखों और निराशा के लिए किसी को दोष देना उचित नहीं है, क्योंकि यह प्रकृति का नियम है। जीवन में यदि सुख हमारी जिंदगी में आएँगे, तो दुःख भी तो हमें ही सहने चाहिए। दुःखों से हमें मार्ग में आने वाली कठिनाइयों से भी निराशा नहीं होना चाहिए। अपितु दुःखों व निराशा का सामना करते हुए हमें निरंतर कर्मपथ पर अग्रसर रहना चाहिए।

(घ) प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने पाठकों को क्या संदेश दिया है? (3)

**उत्तर** प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि संदेश देना चाहता है कि जब तक हमारे शरीर में जान है, हमें तब तक अपने जीवन पथ पर निरंतर बढ़ते रहना चाहिए। हमें बीच में किसी प्रकार का बहाना बनाकर नहीं रुकना चाहिए। कवि कहता है कि हमेशा चलते रहना ही हमारा कर्म व धर्म है। जीवन रूपी रास्ते में चलते हुए यदि कोई सहयोगी मिल जाए, तो हमें आपस में सुख-दुःख बाँट लेने चाहिए, इससे जीवन-पथ पर चलना आसान हो जाता है। कवि के अनुसार इस जीवन में दुःख तो आते हैं। अतः इन सबसे घबराकर निराश नहीं होना चाहिए। यदि हमने अपने जीवन-पथ को सफलतापूर्वक तय कर लिया तो उसके बाद जो सुख हमें मिलेगा, उसका वर्णन भी नहीं किया जा सकता। अतः भाव यही है कि हमें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हर कठिनाइयों का सामना करना चाहिए।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. प्रत्येक पग पर कुछ-न-कुछ रोड़ा अटकता ही रहा  
पर हो निराशा क्यों मुझे? जीवन इसी का नाम है।  
चलना हमारा काम है।

(क) कवि पूर्णता की तलाश में दर-दर क्यों भटकता रहा? (2)

(ख) "प्रत्येक पग पर कुछ-न-कुछ रोड़ा अटकता ही रहा"—पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं? (2)

(ग) "जीवन इसी का नाम है" ऐसा क्यों कहा गया है? (3)

(घ) प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है? (3)

2. जो गिर गए सो गिर गए, चलता रहे हरदम,  
उसी की सफलता अभिराम है। चलना हमारा काम है।

(क) स्पष्ट कीजिए कि कुछ व्यक्ति बीच से ही क्यों लौट गए? (2)

(ख) कैसे लोग सदैव जीवन में पीछे ही रह जाते हैं? (2)

(ग) कवि के अनुसार, बताइए कि जीवन का सुख (सफलता) किसे प्राप्त होता है? (3)

(घ) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि का क्या तात्पर्य है? (3)

# मातृ-मंदिर की ओर सुभद्रा कुमारी चौहान

## कवयित्री परिचय

‘सुभद्रा कुमारी चौहान’ का जन्म 16 अगस्त, 1904 को इलाहाबाद के निकट ‘निहालपुर’ गाँव में हुआ था। सुभद्रा कुमारी चौहान देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत थीं। उनकी रुचि काव्य-ग्रंथों के प्रति थी। इन्होंने अपनी शिक्षा प्रयाग में ही प्राप्त की। इनका विवाह खंडवा के ‘ठाकुर लक्ष्मण सिंह’ से हुआ। विवाह के पश्चात् देशभक्ति की भावना उनमें और प्रबल रूप में नज़र आने लगी। इन्होंने असहयोग आंदोलन में भी भाग लिया। ये मध्य प्रदेश की विधानसभा की सदस्या भी रहीं। भारतीय तटरक्षक सेना ने सुभद्रा जी को सम्मानित करते हुए नवीन नियुक्त तटरक्षक जहाज को उनका नाम दिया।

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—मुकुल, त्रिधारा (काव्य संग्रह) बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे-साधे चित्र (कहानी संग्रह)।

दुर्भाग्यवश वर्ष 1948 में एक सड़क दुर्घटना में इनका स्वर्गवास हो गया।

## कविता का सार

प्रस्तुत कविता ‘मातृ-मंदिर की ओर’ देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत है। कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने प्रस्तुत कविता में अपनी मातृभूमि अर्थात् भारत भूमि को मातृ मंदिर का रूप दिया है। कवयित्री भारत माता पर होते अत्याचार को देखकर अत्यंत दुःखी हैं। वे व्याकुल हैं कि भारत माता के कष्टों को दूर करने में उन्होंने अभी तक अपना योगदान नहीं दिया है। वे कहती हैं कि देश-रक्षा का कार्य दुष्कर है, लेकिन वे इस कार्य को करने के लिए तन-मन से तैयार हैं। वे भारत माता को अत्याचारों से मुक्त कराने के लिए स्वयं को बलिदान करने के लिए तत्पर हैं।

अतः स्पष्ट है कि प्रस्तुत कविता स्वतंत्रता-प्राप्ति से पूर्व की है। कवयित्री अन्य देशभक्तों की तरह ही स्वयं को भी देशहित में बलिदान करना चाहती हैं।

## संदर्भ सहित व्याख्या

- व्यथित है मेरा हृदय-प्रदेश, चलूँ, उसको बहलाऊँ आज।  
बताकर अपना सुख-दुःख उसे, हृदय का भार हटाऊँ आज॥

### शब्दार्थ

व्यथित—दुःखी (woeful, sad); भार—बोझ (burden)।

**संदर्भ** प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक ‘साहित्य सागर’ के ‘पद्य भाग’ में संकलित, ‘सुभद्रा कुमारी चौहान’ द्वारा रचित कविता ‘मातृ मंदिर की ओर’ से उद्धृत है।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री अपने दुःख को अपनी मातृभूमि अर्थात् भारत-माता से बाँटने का प्रयास करती हैं।

**व्याख्या** कवयित्री कहती है कि मेरा हृदय व्यथित है, दुःखी है! चलो आज मैं मातृभूमि के साथ अपने व्यथित मन को बहलाती हूँ। अपना सुख-दुःख माँ को बताकर अपने हृदय की पीड़ा, व्यथा को कम करती हूँ अर्थात् कवयित्री का मन भारत माँ के कष्टों को देखकर अत्यंत दुःखी है। वे चाहती हैं कि वे भी मातृभूमि के दुःखों को दूर करने में अपना योगदान दें।

- चलूँ माँ के पद-पंकज पकड़, नयन जल से नहलाऊँ आज।  
मातृ मंदिर में मैंने कहा.... चलूँ दर्शन कर आऊँ आज॥

### शब्दार्थ

पद—पैर (foot); पंकज—कमल (lotus); नयन—नेत्र (eye)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों में कवयित्री भारत माँ के दर्शन कर अपनी सारी पीड़ा और दुःख को माँ के चरणों में व्यक्त करना चाहती हैं।

**व्याख्या** कवयित्री कहती हैं कि भारत माता के कमलरूपी चरण पकड़कर अपने नयनरूपी जल से उन्हें धो दूँ अर्थात् आज अपनी सारी व्यथा व दुःख उसके चरणों में प्रकट कर दूँ। कवयित्री इस समय भारत माता के दर्शन करने के लिए उत्सुक है। कहने का तात्पर्य यह है कि कवयित्री को इस बात का दुःख है कि वे भारत माता के कष्टों को दूर नहीं कर सकती और उन्होंने माता की पीड़ा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

3. किंतु यह हुआ अचानक ध्यान, दीन हूँ, छोटी हूँ, अज्ञान।  
मातृ-मंदिर का दुर्गम मार्ग, तुम्हीं बतला दो हे भगवान्।।

### शब्दार्थ

दीन—गरीब, असमर्थ (poor, unable); अज्ञान—नासमझ (fool)  
दुर्गम—जहाँ पहुँचना कठिन हो (pathless, out of the way)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों में कवयित्री मातृ मंदिर तक पहुँचने के मार्ग को दुर्गम जानकर माता से सहायता की गुहार लगाती हैं।

**व्याख्या** कवयित्री कहती है कि अचानक मुझे ज्ञात हुआ कि मैं तो दीन हूँ, छोटी हूँ, अज्ञानी हूँ और मातृ-मंदिर का मार्ग बड़ा ही दुर्गम है अर्थात् मातृ-मंदिर तक पहुँचना अत्यंत ही कठिन है, इसलिए कवयित्री स्वयं को दीन, हीन, अज्ञानी आदि मानते हुए ईश्वर को संबोधित करते हुए कहती हैं कि हे भगवान् ! इस दुर्गम मार्ग को पार करने का मार्ग तुम ही मुझे दिखाओ अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है अपनी मातृभूमि अर्थात् भारत माता की सेवा करने का जो उचित मार्ग है, भगवान आप ही उसे दिखाओ।

4. मार्ग के बाधक पहरेदार, सुना है ऊँचे-से सोपान।  
फिसलते हैं ये दुर्बल पैर, चढ़ा दो मुझको हे भगवान्।।

### शब्दार्थ

बाधक—रुकावट डालने वाला (obstructive); सोपान—सीढ़ी (ladder);  
दुर्बल—कमजोर (weak)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों में कवयित्री स्वयं को मातृभूमि के मंदिर तक पहुँचने में असमर्थ पाती हैं और भगवान से शक्ति माँगती हैं।

**व्याख्या** कवयित्री स्वयं को असाहाय महसूस करती हुई कहती हैं कि माँ के मंदिर तक पहुँचने के मार्ग में पहरेदार बाधक रूप में खड़े हुए हैं। मंदिर तक पहुँचने की सीढ़ियाँ अत्यंत ही ऊँची-ऊँची हैं। मेरे दुर्बल पैर उन सीढ़ियों पर फिसलते हैं। अतः भगवान से प्रार्थना करती हुई कहती हैं कि हे भगवान! तुम मुझे वहाँ तक चढ़ा दो अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि कवयित्री स्वयं को निर्बल मानती हैं व भगवान से प्रार्थना करती हैं कि देश के प्रति समर्पण की भावना कष्टमय है। इसके लिए लौकिक सुखों का त्याग करना आवश्यक है। मातृभूमि की सेवा के लिए तन-मन से अर्पित होना पड़ता है। अतः इसके लिए हे भगवान! इन सभी बाधाओं से पार पाने के लिए आप ही मेरी सहायता करो।

5. अहा! वे जगमग-जगमग जगी, ज्योतियाँ दीख रही हैं वहाँ।  
शीघ्रता करो वाद्य बज उठे, भला मैं कैसे जाऊँ वहाँ?

### शब्दार्थ

ज्योतियाँ—प्रकाश (lights); शीघ्रता—जल्दी (fast); वाद्य—बाजा, संगीत बजाने का यंत्र (instrument)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों में कवयित्री मंदिर की सुंदरता का वर्णन करती हैं।

**व्याख्या** कवयित्री कहती हैं कि मंदिर में जलती हुई ज्योतियाँ जगमगा उठी हैं, जो दूर से बहुत सुंदर दिखाई दे रही हैं। मातृ-मंदिर में बजते हुए वाद्य यंत्रों की ध्वनि सुनकर कवयित्री उत्साहित हो जाती हैं और कहती हैं कि जितनी जल्दी हो सके, मुझे वहाँ ले चलो। मैं अपनी मातृभूमि के दर्शन अतिशीघ्र करना चाहती हूँ, लेकिन कवयित्री को यह संदेह भी है कि वह वहाँ कैसे पहुँचे।

6. सुनाई पड़ता है कल-गान, मिला दूँ मैं भी अपनी तान।  
शीघ्रता करो मुझे ले चलो, मातृ मंदिर में हे भगवान्।।

### शब्दार्थ

गान—संगीत (music); तान—आलाप (musical tone)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों में कवयित्री द्वारा मंदिर की जगमगाहट व घंटियों की आवाज को सुनकर बढ़ती हुई उत्सुकता का वर्णन किया गया है।

**व्याख्या** कवयित्री कहती है कि माता के मंदिर में बजता मधुर संगीत अपनी ओर आकर्षित करता है। वह स्वयं इस देश राग से अपना स्वर मिलाना चाहती हैं। वह शीघ्र ही माता के मंदिर में पहुँचना चाहती हैं तथा भगवान से प्रार्थना करती हैं कि हे भगवान! मुझे शीघ्र ही मातृ-मंदिर में पहुँचा दो। कहने का तात्पर्य यह है कि कवयित्री स्वयं को अतिशीघ्र देश के ऊपर बलिदान करना चाहती हैं। वे देश के लिए मरने वाले देशभक्तों में अपना नाम भी शामिल करना चाहती हैं।

7. चलूँ मैं जल्दी से बढ़-चलूँ, देख लूँ माँ की प्यारी मूर्ति।  
अहा! वह मीठी-सी मुसकान, जगा जाती है, न्यारी स्फूर्ति।।

### शब्दार्थ

मुसकान—हल्का हँसना (to smile); स्फूर्ति—फुर्ती (passion, zeal)।

**संदर्भ** पूर्ववत्।

**प्रसंग** उपरोक्त पंक्तियों में कवयित्री माता के दर्शन करने को तत्पर है तथा अपनी इच्छा को प्रकट करती हैं।

**व्याख्या** कवयित्री कहती है कि जल्दी-से-जल्दी चल कर मैं माता के दर्शन कर लूँ और माँ की प्यारी-सी मूर्ति देख लूँ। आगे कवयित्री कहती हैं कि माँ की प्यारी-सी मुसकान से मेरे हृदय में एक नई-सी स्फूर्ति जाग जाती है, अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि कवयित्री माँ के दर्शन करना चाहती हैं, क्योंकि माँ की मूर्ति उनकी आँखों में बसी हुई है। वह किसी भी तरह माता के दर्शन करना चाहती हैं, क्योंकि माता के दर्शन से उनका शरीर नई उमंग, नई चेतना, नए उत्साह से भर उठता है। अतः वह माता की प्यारी-सी मुसकान के दर्शन करना चाहती हैं।

8. उसे भी आती होगी याद? उसे, हाँ आती होगी याद।  
नहीं तो रूठूँगी मैं आज, सुनाऊँगी उसको फरियाद।।

### शब्दार्थ

रूठना—नाराज होना (displeased, dissatisfied); फरियाद—प्रार्थना (request)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री अधिकारपूर्वक माता के सामने अपनी फरियाद को रखती हैं।

**व्याख्या** कवयित्री मन में विचार करती हैं कि जिस तरह उसे (कवयित्री) माँ की याद आती है, उसी तरह क्या माँ को भी उसकी याद आती होगी? आगे वह संदेह प्रकट करते हुए कहती हैं, अगर माता उसको याद (स्मरण) नहीं करती होगी, तो मैं आज माँ से रूठ जाऊँगी और अपनी फरियाद सुनाऊँगी।

कवयित्री माँ को संबोधित करती हुई कहती हैं कि मातृभूमि के स्मरण मात्र से उसके शरीर में नई स्फूर्ति जाग जाती है। यदि माँ उसे (कवयित्री) स्मरण नहीं करती, तो आज वह माँ से रूठकर अपनी फरियाद माँ के समक्ष रखेंगी।

9. कलेजा माँ का, मैं संतान, करेगी दोषों पर अभिमान।  
मातृ-वेदी पर हुई पुकार, चढ़ा दो मुझको, हे भगवान्।।

### शब्दार्थ

कलेजा—दिल (heart); दोष—कमी, अवगुण (defect, fault); अभिमान—घमंड (pride)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री ने देशभक्ति की भावनाओं को प्रकट किया है।

**व्याख्या** कवयित्री कहती है कि माँ का हृदय बहुत ही विशाल है। कवयित्री स्वयं को देवी माँ की संतान मानते हुए कहती हैं कि मैं भारत माता का अभिमान हूँ। यदि मातृभूमि की रक्षा की पुकार उठती है, तो हे भगवान! मैं अपने प्राणों को त्यागने के लिए तैयार हूँ। कवयित्री देवी माँ के हृदय की विशालता का गुण-गान करते हुए कहती हैं कि जिस प्रकार एक माँ अपनी संतान के अवगुणों को अनदेखा कर देती है, उसी प्रकार देवी माँ का हृदय भी इतना विराट व विशाल है कि वे भी मुझ पर (कवयित्री) अभिमान करेंगी।

वे भगवान को संबोधित करती हुई कहती हैं कि यदि मातृभूमि की रक्षा के लिए मुझे प्राणों का बलिदान भी करना पड़ा, तो मैं पीछे नहीं हटूँगी।

10. सुनूँगी माता की आवाज़, रहूँगी मरने को तैयार।  
कभी भी उस वेदी पर देव, न होने दूँगी अत्याचार।।

### शब्दार्थ

वेदी—धार्मिक कार्य हेतु बनाया गया मंडप (a platform prepared for religious rites); देव—भगवान (god); अत्याचार—जुल्म, यातना (torture)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री ने देश पर मिटने की भावना को प्रकट किया है।

**व्याख्या** कवयित्री कहती है कि जब भी मैं अपनी मातृभूमि की पुकार सुनूँगी, तो सदैव उसकी रक्षा के लिए तैयार रहूँगी। कभी भी अपनी मातृभूमि पर अत्याचार नहीं होने दूँगी।

कहने का तात्पर्य यह है कि जब भी मेरी मातृभूमि पर संकट के बादल छाएँगे, तब मैं सदैव उसकी रक्षा के लिए तत्पर रहूँगी। मातृभूमि की रक्षा के लिए मुझे अपने प्राणों को न्योछावर भी करना पड़े तो मैं पीछे नहीं हटूँगी। अतः अपने प्राणों का त्याग कर दूँगी, किंतु अपनी मातृभूमि पर अत्याचार नहीं होने दूँगी।

11. न होने दूँगी अत्याचार, चलो, मैं हो जाऊँ बलिदान।  
मातृ-मंदिर में हुई पुकार, चढ़ा दो मुझको, हे भगवान्।।

### शब्दार्थ

बलिदान—समर्पण, परित्याग (sacrifice); पुकार—बुलाना (call)।

संदर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री ने देशभक्ति व देशप्रेम की भावना को प्रकट किया है।

**व्याख्या** कवयित्री कहती है कि मैं अपनी मातृभूमि पर अत्याचार नहीं होने दूँगी। मातृभूमि पर होते अत्याचार को खत्म करने के लिए मुझे अपने प्राणों का बलिदान भी देना पड़ा, तो मैं बलिदान के लिए तैयार हूँ। कवयित्री भगवान को संबोधित करती हुई कहती हैं कि हे भगवान! जब भी मातृभूमि की रक्षा की पुकार उठे, तो मुझे उस पर बलिदान कर देना।

कहने का तात्पर्य यह है कि कवयित्री देश में व्याप्त अत्याचार, हिंसा आदि के वातावरण का सदा के लिए नाश करना चाहती है तथा देश में समता-समानता व बंधुत्व की भावना का विकास करना चाहती हैं।



# प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. चलूँ माँ के पद-पंकज पकड़, नयन जल से नहलाऊँ आज।

मातृ-मंदिर में मैंने कहा..... चलूँ दर्शन कर आऊँ आज।

(क) कवयित्री मातृ-मंदिर में क्यों जाना चाहती है? (2)

**उत्तर** कवयित्री मातृ-मंदिर में जाकर अपना दुःख माँ को बताकर अपने हृदय की पीड़ा, व्यथा आदि को कम करना चाहती है। कवयित्री माता से अपने मन की भावना साझा करना चाहती है।

(ख) 'मातृ-मंदिर' से कवयित्री का क्या तात्पर्य है? (2)

**उत्तर** 'मातृ-मंदिर' से कवयित्री का तात्पर्य अपनी मातृभूमि से है, जहाँ से कवयित्री को किसी संकट के आने का स्वर सुनाई दे रहा है। वे अपनी मातृभूमि की रक्षा करना चाहती हैं।

(ग) कवयित्री की इच्छा क्या है? वह किसके दर्शन करना चाहती है? अपने शब्दों में बताइए। (3)

**उत्तर** कवयित्री की इच्छा है कि वह आज जाकर मातृभूमि के दर्शन करे। कवयित्री माता के दर्शन कर अपनी सारी पीड़ा व दुःख माँ के चरणों में प्रकट करना चाहती हैं। कवयित्री अपने मन की वेदना को माता से बताना चाहती हैं। वे चाहती हैं कि मैं अपनी दुःख दर्द की भावना माता के सामने रखूँ। अतः कवयित्री मातृभूमि के ही दर्शन करने को आतुर है।

(घ) यहाँ किस माँ की बात हो रही है? कवयित्री ने उन तक पहुँचने का मार्ग दुर्गम क्यों बताया है? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** यहाँ भारत माता की बात हो रही है जिसे अंग्रेजों ने गुलामी की जंजीरों में जकड़ रखा है। कवयित्री का मन बहुत भारी है। भारत माता के मंदिर तक पहुँचने का मार्ग कठिनाइयों से भरा हुआ है। मंदिर की सीढ़ियाँ बहुत ऊँची हैं, जहाँ विदेशी सरकार रूپی पहरेदार स्वतंत्रता सेनानियों पर अत्याचार कर रहे हैं। देशभक्तों को राजद्रोही मान कर उनके साथ अन्याय करते हैं। कवयित्री कहती हैं कि उसके पैर भी कमजोर हैं जो बार-बार फिसल रहे हैं, जिससे वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल नहीं हो पा रही है।

2. मार्ग के बाधक पहरेदार, सुना है ऊँचे-से सोपान।

फिसलते हैं ये दुर्बल पैर, चढ़ा दो मुझको, हे भगवान्।।

(क) कवयित्री को अचानक क्या ज्ञात हुआ? (2)

**उत्तर** कवयित्री को अचानक यह ज्ञात हुआ कि मैं तो दीन-हीन हूँ, छोटी हूँ, अज्ञानी हूँ। शायद मैं वहाँ तक न जा पाऊँ। अतः अपनी दीन-हीन स्थिति के कारण ही उन्हें मातृ-मंदिर का रास्ता दूर लग रहा था, क्योंकि ऊँची-ऊँची सीढ़ियाँ रास्ते में पहरेदार के रूप में रास्ते की बाधा बन रही हैं।

(ख) कवयित्री भगवान से ही सहायता की गुहार क्यों लगाती है? (2)

**उत्तर** कवयित्री माँ के दर्शन करने को इच्छुक हैं तथा मातृभूमि के मंदिर तक पहुँचने के मार्ग को दुर्गम जानकर वे भगवान से सहायता की गुहार लगाती हैं कि अपनी मातृभूमि की रक्षा करने के लिए वहाँ तक जाने में मेरी सहायता करो।

(ग) कवयित्री स्वयं को कहाँ पहुँचने में अक्षम पाती है व क्यों? (3)

**उत्तर** कवयित्री स्वयं को माँ के मंदिर तक पहुँचने में अक्षम (असमर्थ) पाती हैं, क्योंकि मंदिर तक पहुँचने के मार्ग में अनेक लंबी व ऊँची सीढ़ियाँ हैं, जो पहरेदार के रूप में उसके रास्ते पर बाधक बनकर

खड़ी हैं। अतः उसके दुर्बल पैर उन सीढ़ियों पर फिसलते हैं, इसलिए कवयित्री स्वयं को माता के मंदिर तक पहुँचने में अक्षम पाती हैं।

(घ) उपरोक्त पंक्तियों के आधार पर बताइए कि कवयित्री स्वयं को निर्बल मानकर भगवान से क्या प्रार्थना करती है? अपने शब्दों में बताइए। (3)

**उत्तर** कवयित्री मंदिर तक जाना चाहती हैं, लेकिन वहाँ तक जाने के लिए वह स्वयं को कमजोर समझती है तथा मार्ग में आने वाली बाधाएँ बहुत ज्यादा हैं। इसलिए वे भगवान से प्रार्थना करती हैं कि आप मुझे मार्ग की बाधाओं का सामना करने की शक्ति प्रदान करें। वे कहती हैं कि हे भगवान! मुझे इतनी शक्ति और बल दो, जिससे मैं देवी माँ के मंदिर तक पहुँचने में समर्थ हो सकूँ तथा अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए स्वयं को तैयार कर सकूँ।

3. अहा! वे जगमग-जगमग जगी, ज्योतियाँ दीख रही हैं वहाँ।

शीघ्रता करो वाद्य बज उठे, भला मैं कैसे जाऊँ वहाँ?

(क) प्रस्तुत पंक्तियों का प्रसंग बताइए। (2)

**उत्तर** प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री कह रही है कि उन्हें मातृ-मंदिर में जगमगाकर जलती हुई रोशनियाँ दिखने लगी हैं। मंदिर से वाद्य यंत्रों से बजने वाला मधुर संगीत सुनाई देने लगा है। अतः मुझे वहाँ शीघ्रता से जाना होगा। उपरोक्त पंक्तियों में कवयित्री की देश-प्रेम की भावना दिखाई दे रही है।

(ख) कवयित्री को क्या दिखाई देने लगा है? (2)

**उत्तर** कवयित्री को दूर से ही मातृ-मंदिर में जलते हुए दीपक दिखाई देने लगे हैं। उन्हें मातृ-मंदिर में दीपकों की लौ से जगमगाने वाला प्रकाश दिख रहा है। यह देखकर कवयित्री प्रसन्नता के कारण वहाँ जाने के लिए बहुत अधिक उत्सुक दिखाई दे रही है।

(ग) 'शीघ्रता करो वाद्य बज उठे' से कवयित्री का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** कवयित्री अपनी मातृभूमि से मिलने को व्याकुल है। इसलिए वे कहती हैं कि शीघ्रता से मुझे वहाँ ले चलो। प्रार्थना का समय हो चुका है। वाद्य यंत्र बज चुके हैं। यहाँ कवयित्री का अभिप्राय यह है कि वे जितनी जल्दी हो सके, मातृ-मंदिर में जाना चाहती हैं। उन्हें मातृभूमि की रक्षा करने के लिए शीघ्रता से वहाँ जाना होगा, क्योंकि मातृभूमि संकट में है। वाद्य यंत्र बज चुके हैं। अतः कवयित्री को मातृ मंदिर से दिव्य व पवित्र संगीत की आवाजें सुनाई दे रही हैं।

(घ) कवयित्री की उत्सुकता और अधिक क्यों बढ़ जाती है? (3)

**उत्तर** मंदिर की जगमगाहट व घंटों की ध्वनियों ने कवयित्री की माता के दर्शन की उत्सुकता को और भी अधिक बढ़ा दिया है। वह शीघ्र ही मंदिर में पहुँचने के लिए माता से अनुनय-विनय करती है। मंदिर में बज रहा मधुर संगीत उसे आकर्षित कर रहा है, लेकिन कवयित्री को यह भी लग रहा है कि वह वहाँ कैसे पहुँचे?

4. उसे भी आती होगी याद, उसे, हाँ आती होगी याद।

नहीं तो रूढ़ंगी मैं आज, सुनाऊँगी उसको फरियाद।।

(क) प्रस्तुत पंक्तियों का प्रसंग बताइए। (2)

**उत्तर** प्रस्तुत पद्यांश में कवयित्री स्पष्ट करना चाहती है कि जिस तरह मातृभूमि की याद में वे तड़प रही हैं, उसी तरह मातृभूमि को भी कवयित्री की याद आती होगी। भाव यह है कि प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री ने अपने देशप्रेम की भावना को दर्शाया है।

- (ख) 'फरियाद' शब्द से कवयित्री का क्या तात्पर्य है? (2)
- उत्तर** 'फरियाद' शब्द से कवयित्री का तात्पर्य 'याचना' अर्थात् प्रार्थना से है। कवयित्री को संदेह है कि क्या माँ उसे भी याद करती है या नहीं? यदि ऐसा नहीं है तो वे माता से नाराज हो जाएँगी और उनसे याचना करेंगी हे माँ! मेरी फरियाद जल्दी-ही सुन ले जिससे मैं माँ के सामने अपनी फरियाद कर सकूँ।
- (ग) 'उसे भी आती होगी याद?' पंक्ति में 'उसे' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है व ऐसा क्यों कहा गया? (3)
- उत्तर** 'उसे भी आती होगी याद' पंक्ति में 'उसे' शब्द देवी माँ अर्थात् मातृभूमि के लिए प्रयोग किया गया है। कवयित्री कहती है कि जिस तरह वे माता अर्थात् मातृभूमि को याद कर रही हैं, उसी तरह माता भी उसे याद कर रही होंगी। वे पुनः कहती हैं कि अगर मातृभूमि उसको याद नहीं कर रही होंगी, तो वे आज माता से रूठ जाएँगी तथा उनसे प्रार्थना करेंगी।
- (घ) प्रस्तुत पद्यांश की कवयित्री कौन है? उनका साहित्यिक परिचय दीजिए। (3)
- उत्तर** प्रस्तुत पद्यांश की कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। वे एक कवयित्री होने के साथ-साथ प्रसिद्ध गद्यकार भी थीं। इन्होंने अनेक कहानियाँ लिखीं। इनकी कविताओं में देश प्रेम की भावना प्राथमिक रूप से दिखाई देती है। इनकी 'खूब लड़ी मर्दानी' कविता जन-जन में प्रिय है। इसके साथ-साथ इनकी कविताओं में पीड़ितों और शोषितों के प्रति करुणा की भावना भी देखने को मिलती है। इनकी कहानियाँ भी गरीब, पीड़ित शोषित जनता के प्रति गहरी सहानुभूति प्रकट करती है। सुभद्रा कुमारी चौहान की भाषा सरल व सुबोध है। इनकी रचनाओं में चित्र-प्रधान शैली के दर्शन होते हैं। इनकी वीर रस से ओत-प्रोत कविताएँ ओजपूर्ण हैं।
- 5. सुनूँगी माता की आवाज, रहूँगी मरने को तैयार।**  
कभी भी उस वेदी पर देख, न होने दूँगी अत्याचार।।  
न होने दूँगी अत्याचार, चलो, मैं हो जाऊँ बलिदान।  
मातृ-मंदिर में हुई पुकार, चढ़ा दो मुझको हे भगवान्।। [2017]

- (क) मातृ मंदिर से कवयित्री को क्या पुकार सुनाई दे रही है? (2)
- उत्तर** कवयित्री को अपनी मातृभूमि की पुकार सुनाई दे रही है। वे शीघ्रता से वहाँ जाकर अपनी मातृभूमि की रक्षा करने के लिए तैयार हैं। भले ही इससे उनके प्राण भी चले जाएँ।
- (ख) कवयित्री अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए क्या करने को तैयार है और क्यों? (2)
- उत्तर** कवयित्री अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए स्वयं को बलिदान करने को तैयार है, क्योंकि उसका प्रण है कि वह अपने जीते-जी अपनी मातृभूमि पर होने वाले अत्याचार को सहन नहीं करेगी। वे स्वयं को उसकी रक्षा के लिए अर्पित कर देंगी।
- (ग) मंदिर तक पहुँचने के मार्ग में कवयित्री को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है? (3)
- उत्तर** मंदिर तक पहुँचने के मार्ग में कवयित्री को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मातृभूमि का मंदिर अत्यधिक ऊँचाई पर बना हुआ था, जिसमें बहुत-सी लंबी एवं ऊँची सीढ़ियाँ थीं, जिनमें चढ़ते समय उसके छोटे व दुर्बल पैर फिसलने लगते हैं कि यह सीढ़ियाँ उसे अपने मार्ग में पहरदार की भाँति लग रही थीं, जो उसके मार्ग में विघ्न उत्पन्न कर रही थीं।
- (घ) प्रस्तुत पद्यांश में कवयित्री की किस भावना को दर्शाया गया है? वह इस कविता के माध्यम से पाठकों को क्या संदेश देना चाहती है? (3)
- उत्तर** प्रस्तुत पद्यांश में कवयित्री को अपने देश के प्रति प्रेम, समर्पण व निष्ठा की भावना को दर्शाया गया है। इसके साथ ही वे कविता के माध्यम से पाठकों को यह संदेश देना चाहती हैं कि व्यक्ति को अपने देश की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। अपने देश तथा मातृभूमि पर आने वाले संकट के समय व्यक्ति को अपने प्राण न्योछावर करने से भी पीछे नहीं हटना चाहिए।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित अवतरणों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- 1. "कलेजा माँ का, मैं संतान, करेगी दोषों का अभिमान  
मातृ वेदी पर हुई पुकार, चढ़ा दो मुझको, हे भगवान्।।"**
- (क) कवयित्री ने स्वयं को किस माँ की संतान कहा है? (2)
- (ख) 'मातृ-वेदी पर हुई पुकार' इस पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (2)
- (ग) कवयित्री किसके लिए तैयार है तथा क्यों? (3)
- (घ) प्रस्तुत पद्यांश का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए। (3)

- 2. न होने दूँगी अत्याचार, चलो, मैं हो जाऊँ बलिदान।  
मातृ-मंदिर में हुई पुकार, चढ़ा दो मुझको, हे भगवान्।।**
- (क) कवयित्री ने देवी माँ के हृदय की विराटता का वर्णन किस प्रकार किया है? (2)
- (ख) 'न होने दूँगी अत्याचार' यह किसने कहा है? (2)
- (ग) "मातृ-मंदिर में हुई पुकार, चढ़ा दो मुझको, हे भगवान्!" इस पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (3)
- (घ) कवयित्री की देशभक्ति की भावना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (3)

# संस्कार एवं भावना

विष्णु प्रभाकर

## एकांकीकार का परिचय

विष्णु प्रभाकर जी का जन्म उत्तर प्रदेश में 21 जून, 1912 में हुआ था। इन्होंने प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। इन्होंने कुछ समय तक पंजाब सरकार के कृषि विभाग में कार्य किया, परंतु बाद में नौकरी छोड़कर पूर्णरूप से लेखन-कार्य में संलग्न हो गए। विष्णु प्रभाकर जी बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न साहित्यकार थे। इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं; जैसे—कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी आदि पर अपनी लेखनी चलाई। इनके द्वारा रचित रचनाएँ निम्न प्रकार हैं

**कहानी** धरती अब भी घूम रही है, पुल टूटने से पहले, मेरा वतन।

**उपन्यास** निशिकांत, अर्द्धनारीश्वर, स्वप्नमयी।

**नाटक** डॉक्टर, समाधि, कुहासा और किरण इत्यादि।

प्रभाकर जी को अपनी उत्कृष्ट लेखनी के कारण अर्द्धनारीश्वर (उपन्यास) के लिए वर्ष 2009 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 11 अप्रैल, 2009 में विष्णु जी का देहांत हो गया। इनकी सभी रचनाओं में मानवतावादी दृष्टिकोण मुखरित हुआ है। इनकी एकांकी समस्या प्रधान तथा मानव प्रकृति से ओत-प्रोत एवं भावनात्मक गहराई से संबंधित है।

## एकांकी का परिचय

‘संस्कार एवं भावना’ एक मध्यवर्गीय परिवार को आधार बनाकर लिखी गई एकांकी है। अपने बड़े बेटे अविनाश द्वारा बंगाली युवती से विवाह करने से नाराज़ माँ अपनी परंपराओं को आधार बनाकर उससे अलग होकर अपने छोटे बेटे अतुल व उसकी पत्नी उमा के साथ रहने लगती है। एक दिन उन्हें पता चलता है कि उनके बेटे (अविनाश) को हैजा होने पर उनकी बहू ने उसकी सेवा करके उसके प्राणों को बचाया था और अब वह स्वयं मरने की स्थिति में है, तो वह उससे मिलने के लिए व्याकुल हो उठती है, क्योंकि वह जानती है कि यदि उनकी बहू को कुछ हुआ, तो उनका पुत्र भी जीवित नहीं बचेगा, इसलिए वह अपनी रूढ़िग्रस्त परंपराओं व संस्कारों को भूलकर अपने बड़े बेटे अविनाश और उसकी बहू को स्वीकार कर लेती है।

## पात्र-परिचय

### मुख्य पात्र

#### माँ

माँ प्रस्तुत एकांकी के प्रमुख पात्रों में से एक मुख्य पात्र है और संपूर्ण घटनाचक्र इनके आस-पास ही घटित होता है। वह रूढ़िवादी संस्कारों से बँधी हुई है, किंतु कोमल हृदयी एवं ममत्व भाव रखने वाली महिला भी है।

#### अतुल

अतुल एकांकी का प्रमुख पुरुष पात्र तथा घर का छोटा बेटा है, जो आधुनिक विचारों वाला, रूढ़िवादी तथा परंपराशील विचारों के विरुद्ध बोलने वाला, कोमल हृदयी, बड़ों का सम्मान करने वाला एवं परंपरावादी विचारों का विरोधी, जैसे गुणों से युक्त पात्र है।

#### उमा

उमा, अतुल की पत्नी है, जो आधुनिक विचारों वाली एवं खुली मानसिकता रखने वाली, पठनशील, चिंतनशील, बड़ों का सम्मान करने वाली, दयालु स्वभाव की स्त्री है।

## गौण-पात्र

### अविनाश

अविनाश घर का बड़ा बेटा है तथा आधुनिक विचारों को मानने वाला, स्वाभिमानी और अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम करने वाला पुरुष है।

### बड़ी बहू

बड़ी बहू अविनाश की पत्नी है। वह आधुनिक विचारों से परिपूर्ण, सहृदयी, कोमल और सरल स्वभाव वाली आधुनिक युग की महिला है, जो अपने सरल स्वभाव से किसी का भी हृदय मोह लेती है।

### रामसिंह

रामसिंह घर का नौकर है, जो घर के सभी काम पूरी मेहनत से करता है। वह घर का विश्वासपात्र व ईमानदार नौकर (सेवक) है।

### मिसरानी

मिसरानी, माँ की पड़ोसन तथा कुमार की पत्नी है। जो आर्थिक रूप से कमजोर है तथा यह समय-समय पर माँ को बड़े बेटे अविनाश के बारे में बताती रहती है।

## एकांकी का सार

### माँ को अविनाश की बीमारी का पता लगना

माँ के बड़े पुत्र अविनाश ने एक विजातीय स्त्री से विवाह किया तथा वह उसी के साथ अलग रहता है। एक दिन माँ को मिसरानी से पता चलता है कि कुछ दिनों पहले अविनाश की तबीयत बहुत अधिक खराब हो गई थी उसे हैजा हो गया था, जिसे सुनकर माँ व्याकुल हो जाती है कि आज उनके बेटे की बीमारी की खबर उन्हें दूसरों से पता चल रही है।

माँ कहती है कि बचपन में कभी अगर अविनाश बीमार होता था, तो वह दिन-रात एक करके उसकी सेवा करती थी। कई-कई दिनों तक न खाती थी, न सोती थी। उमा आश्चर्यपूर्वक कहती है कि उन्हें अर्थात् अतुल को भी इसकी जानकारी नहीं हुई, जिस पर माँ कहती है कि यदि उसे पता भी होता, तो वह उन्हें न बताता।

माँ कहती है कि मैं अपने बेटों को अच्छी तरह जानती हूँ, ये भावरहित हैं इनके लिए देश, धर्म और कर्तव्य भावनाओं से अधिक महत्वपूर्ण है। इनके पिता भी ऐसे ही निर्मम थे। माँ बताती है कि बचपन में जब अतुल की बहुत ज्यादा तबीयत खराब हुई थी, तो इसके पिता उसे धरती पर लिटाने के लिए सामान हटाने लगे थे, जिसे देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गए थे। माँ बताती है कि मेरे भावुक होने की इन्होंने सदैव ही निंदा की है।

### उमा का बड़ी भाभी से मिलना

माँ को अविनाश की बीमारी का पता चलने एवं स्वयं को आत्मग्लानि से व्याकुल होता देख उमा, माँ को बताती है कि कुछ दिनों पहले आप अविनाश भैया से गुस्सा होने के कारण दुःखी थीं, तो आपके दुःख से दुःखी होकर मैं बड़ी भाभी को समझाने उनके घर गई थी। मैंने भाभी से कहा कि वह बड़े भैया अर्थात् अविनाश को छोड़ दें, लेकिन भाभी ने खुद ही मुझसे प्रश्न किया कि क्या मैं अतुल को छोड़ सकती हूँ? जिसे मैं अत्यधिक प्रेम करती हूँ?

उनके प्रश्न को सुनकर मैं आश्चर्यचकित हो गई और मैंने उन्हें न मैं जवाब दिया था। उमा कहती है कि मुझे जब यह पता चला कि अतुल भी वहाँ गया था, तो मैं स्वयं हैरान हो गई थी। वह बताती है कि बड़ी भाभी कोमल और मृदु स्वभाव की आकर्षक व्यक्तित्व वाली महिला हैं।

### माँ का अपने रूढ़िग्रस्त संस्कारों को धिक्कारना

माँ को जब यह पता चलता है कि अतुल व उमा भी अविनाश एवं बड़ी बहू से मिलते हैं, तो वह बहुत दुःखी होती है। माँ अपने संस्कारों को धिक्कारते हुए कहती है कि अतुल व उमा भी उनसे मिलकर आते हैं, केवल मैं अपने संस्कारों के बंधन से मुक्त नहीं हो पाती। इन रूढ़िग्रस्त संस्कारों के कारण ही आज मेरा बेटा अविनाश मुझसे दूर है।

### अतुल का माँ के संस्कारों का विरोध करना

अतुल जब घर आता है, तो माँ अतुल से, अविनाश से मिलने की बात पूछती है, तब अतुल मिलने की बात स्वीकारते हुए माँ के रूढ़िग्रस्त संस्कारों का विरोध करता है। अतुल कहता है कि अगर वह उन्हें बता भी देता, तो भी वह उनके पास न जा पातीं, क्योंकि उनकी रूढ़िवादी मानसिकता, उनके परंपरावादी संस्कार, जिनके कारण उन्होंने अविनाश की पत्नी को स्वीकार नहीं किया, उन्हीं संस्कारों के कारण आज अविनाश उनसे अलग रहता है। अतुल अपनी माँ से कहता है कि तुम्हारे भीतर इतनी भी सामर्थ्य नहीं कि तुम रूढ़िवादी संस्कारों से मुक्त हो सको या उन्हें तोड़ सको।

### माँ द्वारा परंपरावादी संस्कारों को तोड़ना

माँ को जब पता चलता है कि अविनाश को तो बड़ी बहू ने अपने कठोर परिश्रम से बचा लिया था, किंतु अब बहू की तबीयत खराब है और वह मरने की स्थिति में है, तो माँ का हृदय पसीज़ उठता है, क्योंकि वह जानती है कि अगर बहू को कुछ होता है, तो उनका बेटा भी जीवित नहीं बचेगा।

माँ अपनी परंपरावादी विचारधारा को तोड़ते हुए, अपनी बड़ी बहू को स्वीकारने की बात कहती है, जिसके पश्चात् उमा अनुभव करती है कि जीवन में कई बातें, जिनका हम जीवनभर विरोध करते हैं, उन्हें किसी-न-किसी कारणवश न चाहते हुए भी स्वीकार करना पड़ता है।

## शीर्षक की सार्थकता व उद्देश्य

‘संस्कार एवं भावना’ एक मध्यवर्गीय परिवार को आधार बनाकर लिखी गई एकांकी है। एक माँ अपने रूढ़िवादी विचारों व संस्कारों के चलते दूसरी जाति की बहू को स्वीकार नहीं कर पाती, जिसके कारण वह अपने बेटे व बहू से दूर रहने के लिए विवश है, किंतु जब उसे पता चलता है कि उसके बेटे को बचाने के लिए दूसरी जाति की बहू स्वयं मरने की अवस्था में पहुँच गई है तो वह रह नहीं पाती और अपने रूढ़िवादी संस्कारों को त्याग कर बहू को घर ले आती है।

इस प्रकार एकांकी में संस्कारों की अपेक्षा भावनाएँ अपने बलवती रूप में नजर आती हैं, जो इसके शीर्षक को सार्थकता प्रदान करती हैं। इसके माध्यम से लेखक ने रूढ़िवादी-विचारों व संस्कारों के स्थान पर भावनाओं को महत्व दिया है। जातिवाद की पुरानी सोच को त्याग कर संबंधों को बनाए रखने पर बल दिया है। साथ ही भेदभाव न करने की प्रेरणा देना एकांकीकार का प्रमुख उद्देश्य रहा है।

## शब्दार्थ

**पृष्ठ सं. 6** कर्णफूल—कान का एक आभूषण (earring); केश—बाल (hair); कपोल—गाल (cheek); सहसा—अचानक (suddenly); दिवा—सूर्य (sun); स्निग्धता—चमक, सुंदरता (shine); अचरज—हैरान, आश्चर्य (surprise); वेदना—दुःख, पीड़ा (pain)।

**पृष्ठ सं. 7** सांत्वना—तसल्ली देना (consolation); विद्वप—उपहास (to mock at)।

**पृष्ठ सं. 8** निर्मम—ममतारहित, कठोर (ruthless)।

**पृष्ठ सं. 9** भौचक—हैरान (astonished)।

**पृष्ठ सं. 10** साक्षी—गवाही (witness); वरण—चुना, चयन करना (selection)।

**पृष्ठ सं. 11** अंतर्मन—मन की भीतरी चेतना (innermost); चेतन—जिसमें चेतना हो (consciousness); अचेतन—जिसमें चेतना न हो (unconsciousness); संस्कार—धार्मिक अनुष्ठान (sacrament); दासता—गुलामी (slavery); दुहाई देना—दीनतापूर्वक चिल्लाना (to cry out)।

**पृष्ठ सं. 12** परितोष—प्रसन्नता (gratification)।

**पृष्ठ सं. 13** विजातीय—दूसरी जाति की (intercaste)।

**पृष्ठ सं. 14** उद्विग्न—परेशान (distressed); मरणासन्न—जिसकी मृत्यु निकट हो (dying)।

**पृष्ठ सं. 15** फौलाद—असली-लोहा (steady); अवाक्—चुप हो जाना (speechless)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. “काश कि मैं निर्मम हो सकती, काश कि मैं संस्कारों की दासता से मुक्त हो सकती। हो पाती तो कुल, धर्म और जाति का भूत मुझे तंग न करता और मैं अपने बेटे से न बिछुड़ती।” **पृष्ठ सं. 6** [2018]

(क) वक्ता कौन है? यह वाक्य वह किसे कह रही है? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण का वक्ता ‘माँ’ है। यह वाक्य वह अपनी छोटी बहू उमा से कह रही है।

(ख) “संस्कारों की दासता सबसे भयंकर शत्रु है”, यह कथन एकांकी में किसका है? उसने ऐसा क्यों कहा? (2)

**उत्तर** “संस्कारों की दासता सबसे भयंकर शत्रु है”, यह कथन एकांकी में बड़े बेटे अविनाश का है। उसने ऐसा इसलिए कहा था, क्योंकि उसकी माँ अपने संस्कारों के कारण उसे दूसरी जाति की लड़की से विवाह नहीं करने दे रही थी।

(ग) संस्कारों की दासता के कारण वक्ता को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा? (3)

**उत्तर** संस्कारों की दासता के कारण वक्ता अर्थात् माँ को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अपने रुढ़िवादी विचारों और संस्कारों के चलते दूसरी जाति की बहू को स्वीकार नहीं कर पाती, जिसके कारण वह अपने बेटे व बहू से दूर रहने के लिए विवश होती है। इसके चलते उसे समाज की आलोचना का शिकार होना पड़ा।

(घ) प्रस्तुत एकांकी द्वारा एकांकीकार ने क्या संदेश दिया है? (3)

**उत्तर** प्रस्तुत एकांकी द्वारा एकांकीकार ने यह संदेश दिया है कि समय व परिस्थितियों के बदलने पर हमें अपनी सोच में भी परिवर्तन लाना होगा। जाति व धर्म पर आधारित पुरानी मान्यताओं से ऊपर उठकर मानवता व मानवीय मूल्यों को स्थापित करना होगा। जातिवाद की पुरानी सोच का त्याग कर संबंधों को बनाए रखना चाहिए।

2. मेरे ही तो बेटे हैं। माया-ममता किसी को नहीं छू गई है। हर बात में देश, धर्म और कर्तव्य की दुहाई देना उन्होंने सीखा है। आखिर इनका बाप भी तो ऐसा ही निर्मम था, मुझे याद है, जिस समय अतुल छोटा-सा था। बचने की कोई आशा न थी, उस समय वे शांत मन से उसको धरती पर लिटाने के लिए सामान हटा रहे थे।

**पृष्ठ सं. 7**

(क) प्रस्तुत अवतरण के वक्ता और श्रोता का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (2)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण में वक्ता माँ है और श्रोता छोटी बहू उमा है। माँ उमा से बातें कर रही है। माँ पुराने संस्कारों व विचारों से जकड़ी हुई है, लेकिन इसके साथ ही वे कोमल हृदय वाली ममतामयी माँ व समझदार स्त्री भी हैं। उमा घर की छोटी बहू हैं, जो आधुनिक विचारों वाली एवं खुली मानसिकता रखने वाली, बड़ों का सम्मान करने वाली, दयालु महिला हैं।

(ख) “माया-ममता किसी को नहीं छू गई है।” प्रस्तुत पंक्ति का वक्ता कौन है और उसने यह पंक्ति किनके लिए व क्यों कही? (2)

**उत्तर** “माया-ममता किसी को नहीं छू गई है।” प्रस्तुत पंक्ति की वक्ता माँ है और उसने यह पंक्ति अपने बेटों अविनाश एवं अतुल के लिए कही है, क्योंकि उनके बड़े बेटे अविनाश का लगाव अपनी माँ से अधिक अपनी पत्नी के प्रति था। उसके लिए कर्तव्य भावनाओं से अधिक महत्वपूर्ण है।

(ग) “आखिर उनका बाप भी तो ऐसा ही निर्मम था।” पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** “आखिर उनका बाप भी तो ऐसा ही निर्मम था।” ऐसा माँ ने अविनाश एवं अतुल के पिता का स्वभाव बताने के लिए कहा था। माँ स्पष्ट करना चाह रही थी कि जब उनका छोटा बेटा अतुल बचपन में बीमार पड़ा था और वह उसकी अस्वस्थता को लेकर चिंतित थीं, उस समय में भी अतुल के पिता शांत मन से उसे जमीन पर लिटाने के लिए सामान हटा रहे थे।



ठीक उसी प्रकार, आज अविनाश का लगाव अपनी माँ से अधिक अपनी पत्नी के प्रति था, इसलिए माँ ने कहा—“आखिर इनका बाप भी तो ऐसा ही निर्मम था।”

- (घ) “देश, धर्म और कर्तव्य की दुहाई कौन देता है और क्यों?  
अवतरण के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** देश, धर्म और कर्तव्य की दुहाई माँ के दोनों बेटे अविनाश व अतुल देते हैं, क्योंकि माँ ने जब भी अपने बेटों को अपने संस्कारों के अनुरूप चलने को कहा है या उन्हें, माँ के प्रति कर्तव्यों का बोध कराने का प्रयत्न किया है, तो उन्होंने सदैव ही मोह-ममता, भावनाओं को देश, धर्म एवं अपने कर्तव्यों से नीचे स्थान दिया है। उनके लिए देश एवं उनके कर्तव्य, भावनाओं से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

3. तुम अपने पति को प्यार करती हो, तभी तो यहाँ आई हो। मैं अतुल को भी जानती हूँ, उनका भाई है वह भी। पृष्ठ सं. 10

- (क) बड़ी बहू ने अतुल के बारे में किसे व क्या बताया? एकांकी के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** बड़ी बहू ने अतुल के बारे में उमा को बताया। जब उमा बड़ी बहू के पास उसे समझाने या उससे बात करने गई थी तब बड़ी बहू ने उसे बताया कि अतुल हमारे यहाँ आता है। भाई के पास नहीं, दफ्तर के काम से आता है। तुम्हारे बारे में मुझे अतुल ने ही बताया है कि तुम उससे अत्यधिक प्रेम करती हो।

- (ख) वक्ता का श्रोता पर क्या प्रभाव पड़ा तथा वह क्यों लौट आई? (2)

**उत्तर** वक्ता (बड़ी बहू) का श्रोता (छोटी बहू) पर गहरा प्रभाव पड़ा। उमा बड़ी बहू की बातें सुनकर लौट आई थी, क्योंकि वह उसकी बातों से अत्यंत प्रभावित हुई। वह उसकी बातों पर मोहित हो गई थी और कुछ भी नहीं बोल पा रही थी, इसलिए बड़ी बहू के रोकने पर भी उमा लौट आई।

- (ग) उपरोक्त कथन कौन, किससे क्यों कह रहा है? (3)

**उत्तर** उपरोक्त कथन अविनाश की पत्नी, अतुल की पत्नी उमा से कह रही है, क्योंकि उमा अविनाश की पत्नी को समझाने उनके घर गई थी कि वे अविनाश भैया को छोड़ दें ताकि भैया माँ के साथ रह सके, लेकिन तब उन्होंने स्वयं उमा से प्रश्न किया कि क्या तुम अतुल को छोड़ सकती हो?

उनके प्रश्न को सुनकर उमा आश्चर्यचकित हो गई और उसने उन्हें न में जवाब दिया। उमा कहती है भाभी ने कहा कि मैं अतुल को जानती हूँ उनका भाई है मेरे पास वह कई बार आया है, तब उमा को पता चला कि अतुल भी वहाँ गया था, यह सुनकर वह हैरान हो गई।

- (घ) प्रस्तुत कथन से वक्ता की किस चारित्रिक विशेषता का पता चलता है? अपने विचार भी प्रस्तुत कीजिए। (3)

**उत्तर** प्रस्तुत कथन से वक्ता की सूझ-बूझ एवं मानवीय गुणों से युक्त जैसी चारित्रिक विशेषताओं का पता चलता है। वक्ता अपने पति से अत्यधिक प्रेम करती है, जिसका प्रमाण वह अपने पति के बीमार होने के समय दे देती है। साथ ही वह अपनी सूझ-बूझ का परिचय भी समय-समय पर देती रहती है जब उमा उसके घर जाती है तब वह उमा से पूछती है कि यदि अतुल की माँ या उनका परिवार उमा के विवाह से नाराज़ हो, तो उनकी खुशी के लिए क्या वह अतुल को छोड़ देगी?

यदि नहीं तो वह अपने पति को भी कभी नहीं छोड़ सकती। इससे स्पष्ट है कि वक्ता आधुनिक विचारों वाली सहृदयी, कोमल और सरल स्वभाव वाली आधुनिक युग की महिला है, जो अपने स्वभाव से किसी का भी हृदय मोह लेती है।

4. मैं जानती हूँ, तुम उन्हें प्यार करती हो। सोचो तो, कोई तुमसे कहे-तुम अतुल को छोड़ दो, क्योंकि उनकी माँ या उनका परिवार इस विवाह से नाराज़ है, तो क्या तुम, मैं आगे न सुन सकी। मैंने चिल्लाकर कहा, “भाभी, बस करो पर उन्होंने बात पूरी करके दम लिया, बोली, तो क्या तुम उन्हें छोड़ दोगी, बोलो .....।”

पृष्ठ सं. 10

- (क) उमा वक्ता से मिलने क्यों गई थी? (2)

**उत्तर** उमा ने माँ को अविनाश के वियोग में दुःखी होते देखा था, जिस कारण वह बड़ी बहू वक्ता को यह समझाने के लिए गई थी कि वह अविनाश का साथ छोड़ दे, ताकि अविनाश पुनः अपने परिवार के साथ रह सके और माँ खुशी से जीवन व्यतीत कर सके।

- (ख) वक्ता से मिलने के उपरांत उमा के हृदय में वक्ता की कैसी छवि अंकित हुई? (2)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् बड़ी बहू के लिए उमा के हृदय में रूपवती, गुणवान, संस्कारी, कोमल हृदयी एवं स्नेहशील नारी की छवि अंकित हुई। साथ ही उमा को वह एक साहसी महिला के रूप में नज़र आई।

- (ग) वक्ता का संक्षेप में चरित्र-चित्रण कीजिए। (3)

**उत्तर** वक्ता (बड़ी बहू) अविनाश की पत्नी थी, जोकि एक बंगाली परिवार से संबंध रखती थी, उसने अविनाश से विजातीय विवाह किया था, जिस कारण माँ ने उनसे अपने संबंध तोड़ लिए थे। बड़ी बहू रूपवान, गुणी, संस्कारी और दयालु थी, साथ ही वह एक साहसी महिला भी थी, जिसने संकट के समय अकेले होते हुए भी अपने पति अर्थात् अविनाश के प्राणों की रक्षा की थी।

- (घ) वक्ता ने उमा से अतुल को छोड़ने के लिए प्रश्न क्यों किया? (3)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् बड़ी बहू ने उमा से अतुल को छोड़ने के लिए प्रश्न किया कि क्या वह अतुल को छोड़ सकती है, जिससे वह अत्यधिक प्रेम करती है? क्योंकि वह जानती थी कि उमा, अतुल को बहुत प्रेम करती थी यदि वह अतुल को नहीं छोड़ सकती तो मैं (बड़ी बहू) किस प्रकार अविनाश को छोड़ सकती हूँ। इस बात का अहसास कराने के लिए उसने उमा से यह प्रश्न किया।

5. चेतन से अचेतन अधिक शक्तिशाली है। उसमें अधिक आकर्षण है। इसलिए तुम एक-दूसरे के प्रति खिंचे। चाहे वह प्रेम था, घृणा थी, पर असल बात रक्त के खिंचाव की थी, वह होकर रही। पृष्ठ सं. 11

- (क) उपरोक्त गद्यांश में वक्ता कौन है? ‘वक्ता’ का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (2)

**उत्तर** उपरोक्त गद्यांश में वक्ता माँ है। माँ का अपनी परंपराओं, सामाजिक मान्यताओं इत्यादि पर अटूट विश्वास है। उनकी यही परंपराएँ उनके जीवन का आधार हैं। इसी कारण से वे न चाहते हुए भी अपने बड़े बेटे अविनाश से दूर रहती हैं। इसके विपरीत उनमें अपने बच्चों के प्रति ममत्व का भाव भी दिखाई देता है, जिसके कारण वह पुत्र मोह में अपने आदर्शों को भुलाकर बड़ी बहू को स्वीकारती हैं। अतः माँ परंपराओं में विश्वास रखने वाली व कोमल हृदयी एवं ममत्व का भाव रखने वाली महिला हैं।



(ख) “असल बात रक्त के खिंचाव की थी।” वक्ता ने यह क्यों कहा?

**उत्तर** “असल बात रक्त के खिंचाव की थी” वक्ता अर्थात् माँ ने यह इसलिए कहा, क्योंकि उन्हें पता चलता है कि अतुल व छोटी बहू उमा भी अविनाश और उसकी पत्नी से मिल चुके हैं। माँ कहती है कि भले ही अतुल दफ़्तर के काम से और उमा माँ के दुःख की वजह से उनसे मिले हों, लेकिन इसके पीछे उनका आपसी प्रेम अर्थात् लगाव था, जिसके कारण वे स्वयं को अविनाश से मिलने से रोक न पाए थे।

(ग) वक्ता किस प्रकार के बंधन से मुक्त नहीं हो पाया? इस एकांकी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? (3)

**उत्तर** वक्ता अपने रूढ़िवादी विचारों व संस्कारों से मुक्त नहीं हो पाया, क्योंकि रूढ़िवादी विचारों व संस्कारों के कारण ही वक्ता अपने बेटे व बहू से दूर रहने को विवश है। यदि वह संस्कारों के बंधन में नहीं बँधी होती तो वह विजातीय युवती को बहू के रूप में सहर्ष स्वीकार कर लेती, किंतु इसके विपरीत माँ (वक्ता) संस्कारों की दासता से मुक्त नहीं हो पाती, इसलिए अविनाश के यहाँ न जाकर भीतर-ही-भीतर व्यथित रहती है।

इस एकांकी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि समय व परिस्थितियों के बदलने पर हमें अपनी सोच में भी परिवर्तन लाना होगा। जाति व धर्म पर आधारित पुरानी मान्यताओं से ऊपर उठकर मानवता व मानवीय मूल्यों को स्थापित करना होगा। जातिवाद की पुरानी सोच का त्याग कर संबंधों को बनाए रखना चाहिए।

(घ) “चेतन से अचेतन अधिक शक्तिशाली है।” पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** उपरोक्त पंक्ति का आशय है कि चेतन अवस्था में व्यक्ति अपनी बुद्धिमत्ता से अपने हित-अहित, लाभ-हानि का आकलन करता है, लेकिन अचेतन अवस्था में व्यक्ति केवल अपनी भावनाओं से संचालित होता है।

वे भावनाएँ, जिनके द्वारा वे एक-दूसरे से जुड़े होते हैं, जिनमें वे हित-अहित, लाभ-हानि का आकलन नहीं करते। इसलिए माँ ने कहा कि “चेतन-से-अचेतन अधिक शक्तिशाली है।”

6. मैं जानता था, तुम वहाँ नहीं जा सकोगी और जाने से भी क्या होता है, जब तुम उस नीची श्रेणी की विजातीय भाभी को घर नहीं ला सकती, तब तक प्रेम और ममता की दुहाई व्यर्थ है। तुम सब निर्मम हो, निर्मम .....। पृष्ठ सं. 13

(क) किसने और किसको कहा कि तुम वहाँ नहीं जा सकोगी? (2)

**उत्तर** अतुल ने अपनी माँ से कहा कि तुम वहाँ नहीं जा सकोगी, क्योंकि वह जानता है कि माँ रूढ़िवादी संस्कारों से बँधी हुई है और वे एक विजातीय एवं नीची जाति की लड़की को स्वीकार नहीं करेंगी।

(ख) वक्ता ने निर्मम किसको और क्यों कहा है? (2)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् अतुल ने अपनी माँ को निर्मम कहा था, क्योंकि एक माँ अपने बेटे से केवल विजातीय लड़की से विवाह करने के कारण संबंध तोड़ ले एवं जिसके लिए उसके रूढ़िग्रस्त संस्कार उसके बेटे से अधिक महत्वपूर्ण हों, वह निर्मम नहीं तो क्या है? इसलिए अतुल ने अपनी माँ को निर्मम कहा था।

(ग) “प्रेम और ममता की दुहाई व्यर्थ है।” पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** किसी भी माँ के ममत्व का भाव जातीय या धार्मिक बंधनों के बाँधे नहीं रुकता, अपितु वह तो बिना किसी बाधा के सभी पर ममता लुटाती है, किंतु एकांकी में माँ को जैसे ही पता चलता है कि अविनाश ने एक विजातीय लड़की से विवाह कर लिया है, तो वह अविनाश से अपने संबंध तोड़ लेती है, इसलिए जब तक वह अविनाश की पत्नी को स्वीकार नहीं कर लेती, तब तक उनका प्रेम या ममत्व की बातें करना बेकार है, यही कारण है कि अतुल ने कहा कि “प्रेम और ममता की दुहाई व्यर्थ है।”

(घ) प्रस्तुत अवतरण का संदर्भ स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** माँ को जब इस बात का पता चलता है कि अतुल और उमा दोनों ही अविनाश एवं उसकी पत्नी से मिलते हैं, लेकिन माँ को खबर नहीं होने देते। इस पर माँ अतुल से पूछती है कि उसने, उसे क्यों नहीं बताया? तब अतुल माँ से कहता है कि जब तुम उस बड़ी बहू को स्वीकार नहीं कर सकती, उसके घर नहीं जा सकती, तो तुम्हारा इस प्रकार चिंतित होना व्यर्थ है।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. मैं उनसे लड़ने गई थी, क्योंकि वे आपके दुःख का कारण थीं।

पृष्ठ सं. 9

(क) वक्ता किससे मिलने गई थी? (2)

(ख) बड़े भैया किससे अलग हुए थे और क्यों? (2)

(ग) “वे आपके दुःख का कारण थीं”—पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

(घ) प्रस्तुत अवतरण का संदर्भ स्पष्ट कीजिए। (3)

2. काश कि मैं निर्मम हो सकती, संस्कारों की दासता से मुक्त हो सकती! हो पाती तो कुल, धर्म और जाति का भूत मुझे तंग न करता और मैं अपने बेटे से न बिछुड़ती। स्वयं उसने मुझसे कहा था, “संस्कारों की दासता सबसे भयंकर शत्रु है।” पृष्ठ सं. 11

(क) वक्ता की मनोदशा को स्पष्ट कीजिए। (2)

(ख) वक्ता ने क्यों कहा कि “काश कि मैं संस्कारों की दासता से मुक्त हो सकती?” (2)

(ग) “संस्कारों की दासता सबसे भयंकर शत्रु है।” यह कथन किसने, किससे व क्यों कहा था? (3)

(घ) “कुल, धर्म और जाति का भूत मुझे तंग न करता”—प्रस्तुत पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

# बहू की विदा विनोद रस्तोगी

## एकांकीकार का परिचय

हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध नाटककार एवं एकांकीकार विनोद रस्तोगी का जन्म उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले के शमसाबाद गाँव में वर्ष 1923 में हुआ था। विनोद रस्तोगी ने प्रारंभिक शिक्षा फर्रुखाबाद से तथा स्नातक स्तरीय शिक्षा कानपुर से प्राप्त की। रस्तोगी जी ने हिंदी विषय में एम. ए. करने के उपरान्त आकाशवाणी के इलाहाबाद केंद्र में नाट्य निर्देशक के पद पर कार्य करना आरंभ किया।

रस्तोगी जी ने साहित्य की अनेक विधाओं में अपने रचना कौशल से साहित्य को समृद्ध किया। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं—बर्फ की मीनार, गोपा का दान, आज़ादी के बाद, नए हाथ, भगीरथ के बेटे, दरारें इत्यादि। रस्तोगी जी ने अपने लेखन कौशल के माध्यम से जीवन की समस्याओं को समाज के सामने प्रस्तुत किया।

## एकांकी का परिचय

प्रस्तुत एकांकी की कथावस्तु धनी व्यापारी जीवनलाल की सोच एवं प्रमोद की गरीबी के कारण उत्पन्न समस्या (दहेज की कुप्रथा) पर आधारित है। प्रमोद अपनी बहन कमला को लेने के लिए उसके ससुराल आता है। जहाँ पर उसकी भेंट कमला के ससुर जीवनलाल से होती है, जो दहेज में पाँच हजार रुपयों की माँग करता है और न दिए जाने पर कमला की विदाई करने से मना कर देता है। रमेश की माँ राजेश्वरी भी बहू कमला को विदा करना चाहती हैं, लेकिन पति की ज़िद के सामने उसकी एक नहीं चलती है।

वह कमला को तिजोरी में से पाँच हजार रुपये लाकर प्रमोद को देने के लिए कहती है कि वह इन रुपयों को जीवनलाल को देकर कमला की विदाई करवा ले। इसी दौरान, जीवनलाल का पुत्र रमेश जो अपनी बहन गौरी को लेने उसके ससुराल गया हुआ था, अकेले ही घर लौटता है। जीवनलाल जब उससे अकेले लौटने का कारण पूछता है, तब वह बताता है कि उनका कहना है कि हमने दहेज पूरा नहीं दिया। यह बात सुनते ही जीवनलाल चकित (हैरान) रह जाता है। उन्हें अपनी गलती का अहसास होता है और वह बहू (कमला) की विदाई के लिए तैयार हो जाते हैं।

## पात्र-परिचय

### मुख्य पात्र

#### जीवनलाल

जीवनलाल एक पचास वर्षीय गंभीर स्वभाव का धनवान व्यापारी है। वह एक लोभी, अहंकारी, भावनाओं से रहित व्यक्ति है, जो संबंधों की अपेक्षा धन को अधिक महत्त्व देता है।

#### राजेश्वरी

राजेश्वरी जीवनलाल की पत्नी है, जोकि छियालीस वर्षीय महिला है। राजेश्वरी एक सरल हृदय वाली, ममतामयी, भावनाओं से परिपूर्ण तथा बेटी और बहू को एक समान समझने वाली महिला है।

#### रमेश

रमेश जीवनलाल एवं राजेश्वरी का पुत्र तथा कमला का पति है, जोकि बाइस वर्षीय युवक है। वह पिता का आज्ञाकारी पुत्र, खुली विचारधाराओं वाला एक सरल हृदय वाला युवक है।

### कमला

कमला, रमेश की पत्नी है, जोकि एक उन्नीस वर्षीय नवयुवती है। कमला बड़ों का आदर करने वाली, सभ्य एवं संस्कारी बहू है, जो अपने परिवार की खुशियों के लिए अपनी खुशियाँ भी न्योछावर कर देती है।

### प्रमोद

प्रमोद, कमला का भाई है, जो उसकी ससुराल से उसे विदा करवाने के लिए आया है। वह एक स्वाभिमानी, संस्कारी, सरल हृदय वाला और बड़ों का सम्मान करने वाला युवक है।

### गौण-पात्र

#### गौरी

गौरी एकांकी की गौण-पात्र है। वह जीवनलाल की बेटी है। वह एक सरल हृदय वाली, हँसमुख एवं अच्छे स्वभाव की लड़की है, जिसका प्रमाण कमला के मुख से प्रमोद के सामने गौरी की प्रशंसा करने पर मिलता है।

## एकांकी का सार

### जीवनलाल द्वारा कमला की विदाई करने से मना करना

प्रमोद अपनी बहन कमला के ससुराल में उसे विदा करवाने अर्थात् लेने के लिए आता है, जहाँ कमला का ससुर जीवनलाल उसकी विदाई करने से मना कर देता है और कहता है कि जब तक प्रमोद और उसका परिवार दहेज नहीं देंगे, तब तक कमला की विदाई नहीं हो सकती।

प्रमोद जब अपनी क्षमता एवं सामर्थ्य के अनुसार, दहेज देने की बात करता है, तो जीवनलाल उसे फटकारते हुए कहता है—अगर तुम्हारा सामर्थ्य कम था, तो तुम्हें अपनी बराबरी का घर देखना चाहिए था। जीवनलाल, प्रमोद पर आरोप लगाते हैं कि उनके द्वारा दहेज कम दिए जाने व बारात का स्वागत भी भली-भाँति नहीं करने के कारण समाज ने हमारी हँसी उड़ाई हुई है और हमारे सम्मान को चोट पहुँचाई है। इस चोट पर मरहम केवल दहेज के पाँच हजार रुपये देकर ही लगाया जा सकता है।

### प्रमोद द्वारा कमला की विदाई के लिए विनती करना

प्रमोद अपनी बहन कमला के ससुर जीवनलाल से विनती करता हुआ कहता है कि गौने में उनकी सभी माँगें पूरी कर देंगे, किंतु जीवनलाल प्रमोद की इस बात का विरोध करते हुए कहता है कि पाँच हजार नकद देने पर ही कमला की विदाई होगी। प्रमोद उनके इस व्यवहार को कमला के प्रति अन्याय कहते हैं। प्रमोद द्वारा उन्हें स्वयं बेटी का पिता होने का स्मरण दिलाने पर वह कहता है कि उन्होंने अपनी बेटी को इतना दहेज दिया है कि देखने वाले दंग रह गए और रमेश अभी उसे घर लेकर आता ही होगा। प्रमोद द्वारा यह कहने पर कि वह (कमला) आपकी भी कुछ लगती है, जीवनलाल स्पष्ट कहता है कि बेटी व बहू को एक तराजू में नहीं तौला जा सकता।

### कमला एवं राजेश्वरी का प्रमोद को समझाना

जीवनलाल द्वारा कमला की विदाई करने से मना करने के बाद जब प्रमोद, कमला से मिलता है, तो वह घर बेचकर दहेज के पाँच हजार रुपये देने एवं कमला की विदाई करवाने की बात कहता है। कमला प्रमोद को समझाती है एवं अपने सुख-सुहाग की कसम देते हुए ऐसा करने से मना करती है। वह कहती है कि अभी उन्हें विमला का विवाह भी करना है, इसलिए वे उसकी चिंता न करें। वैसे भी गौरी का हँसमुख स्वभाव उसे सखियों की कमी का अनुभव नहीं होने देगा। भले ही पिताजी का स्वभाव जिद्दी हो, लेकिन माता जी बहुत अच्छी हैं। प्रमोद सभी को एक स्वभाव का बताता है। इसी बीच कमला की सास राजेश्वरी वहाँ आकर प्रमोद की समस्या को समझते हुए बताती हैं कि प्रमोद की चिट्ठी आने पर ही उन्होंने विदाई करने से मना कर दिया था और कमला को तिजोरी की चाबियाँ देते हुए प्रमोद को पाँच हजार रुपये देने के लिए कहती हैं, जिसे स्वाभिमानी प्रमोद लेने से मना कर देता है।

### रमेश का अकेले ही लौटना

जीवनलाल कमरे में प्रवेश कर राजेश्वरी से गौरी के स्वागत के लिए तैयारी करने के लिए कहते हैं और प्रमोद पर ताना कसते हुए कहते हैं कि यह भी देखें कि कैसे वाले/अमीर लोग किस प्रकार अपनी बेटी का स्वागत करते हैं। प्रमोद उन्हें जवाब देते हुए कहता कि आपने उचित कहा, आज के समय में धन से ही व्यक्ति का सम्मान होता है, जीवनलाल का बेटा एवं कमला का पति रमेश अपनी बहन गौरी की विदाई करवाने के लिए उसके ससुराल गया था, जहाँ से वह अकेले ही लौटता है और बताता है कि उन्होंने दहेज कम देने के कारण गौरी की विदाई करने से मना कर दिया है, जिसे सुनकर जीवनलाल चकित रह जाता है, क्योंकि उसने तो अपने जीवन की सारी धन-दौलत गौरी के विवाह में लगा दी थी।

### राजेश्वरी द्वारा जीवनलाल को समझाना

जीवनलाल हतप्रभ होकर गौरी के ससुराल वालों को गलत शब्द कहने लगता है, तब राजेश्वरी उसे समझाते हुए कहती है कि जो व्यवहार अपनी बेटी के लिए तुम दूसरों से चाहते हो, वही दूसरे की बेटी को भी दो। जिस प्रकार एक बेटी के पिता होने के कारण तुमने अपने जीवन की सारी कमाई अपनी बेटी को दहेज में दे दी लेकिन उसके ससुराल वालों की इच्छाएँ तब भी संतुष्ट नहीं कर पाए, उसी प्रकार तुम अपनी बहू के साथ भी वही व्यवहार कर रहे हो, जो तुम्हारी बेटी के साथ उसके ससुराल वालों ने किया है। राजेश्वरी के समझाने के बाद जीवनलाल, प्रमोद को कमला को मायके ले जाने के लिए कह देते हैं।

## शीर्षक की सार्थकता व उद्देश्य

प्रस्तुत एकांकी 'बहू की विदा' में समाज में व्याप्त दहेज की समस्या को चित्रित किया गया है। एकांकी का केंद्र बिंदु बहू की विदाई ही है। जीवनलाल अपनी बहू को कम दहेज के कारण विदा कराने से मना कर देता है। वहीं दूसरी ओर जीवनलाल की पुत्री को उसके ससुराल वाले भी दहेज कम मिलने के कारण उसे विदा नहीं करते। यह जानकर जीवनलाल का मन बदल जाता है तथा उसे अपनी गलती का अहसास हो जाता है। अंततः वह अपनी बहू की विदाई के लिए तैयार हो जाता है। अतः 'बहू की विदा' शीर्षक कथावस्तु की दृष्टि से सार्थक है।

'बहू की विदा' एकांकी के माध्यम से लेखक ने दहेज प्रथा की कड़ी आलोचना की है। लेखक ने बहू व बेटी में कोई अंतर नहीं करने तथा दहेज जैसी कुप्रथा का विरोध करने की प्रेरणा दी है। यही इस एकांकी का उद्देश्य है।

## शब्दार्थ

**पृष्ठ सं. 18** समृद्धि—संपन्नता (wealth); विनम्र—विनीत (polite); जमुहाई—उबासी (yawning); सामर्थ्य—योग्यता (ability)।

**पृष्ठ सं. 19** बिरादरी—समुदाय, समाज (a community); चेष्टा—कोशिश (try); उत्तेजित—जोश से भरा हुआ (excited); सरासर—पूरी तरह से (completely)।

**पृष्ठ सं. 20** खातिरदारी—आवभगत (hospitality); दंग रह गए—हैरान रह गए (astonished); व्यर्थ—बेकार (waste)।

**पृष्ठ सं. 21** आर्द्र—नम (wet); व्याकुलतापूर्ण—परेशान होकर (distracted); सौगंध—कसम (swear)।

**पृष्ठ सं. 22** प्रवेश—आगमन (enter); क्षेम—कुशल-मंगल (well being)।

**पृष्ठ सं. 23** मौन—चुप (silence); गूढ़—गहरा (deep); मूर्तिवत्—मूर्ति की तरह स्थिर हो जाना (statue)।

**पृष्ठ सं. 24** उतावला—तेजी करने वाला (hasty); कुंजियों—चाबियाँ (keys); बेदंगी—बेकार (useless)।

**पृष्ठ सं. 25** नेपथ्य—रंगमंच के पीछे का स्थान (back stage); हतप्रभ—निस्तेज, शिथिल (amazed)।

**पृष्ठ सं. 26** शराफत—सज्जनता (gentleness); इंसानियत—मानवता (humanity); चीखकर—चिल्लाकर (screaming)।

**पृष्ठ सं. 27** द्वार—दरवाजा (gate); यवनिका—रंगमंच का परदा (a curtain of theatre)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. दहेज देना तो दूर, बारात की खातिर भी ठीक से नहीं की गई। मेरे नाम पर जो धब्बा लगा, मेरी शान को जो ठेस पहुँची, भरी बिरादरी में जो हँसी हुई, उस करारी चोट का घाव आज भी हरा है। जाओ, कह देना अपनी माँ से कि अगर बेटी को विदा कराना चाहती हैं, तो पहले उस घाव के लिए मरहम भेजें।

**पृष्ठ सं. 19 [2017]**

(क) प्रस्तुत कथन किसने, किससे कहा? संदर्भ सहित उत्तर लिखिए। (2)

**उत्तर** 'बहू की विदा' एकांकी में प्रमोद जब अपनी बहन कमला को विवाह के बाद प्रथम सावन के लिए उसके ससुराल से उसकी विदाई कराने के लिए आता है, तब कमला के ससुर जीवनलाल प्रमोद को प्रस्तुत कथन कहते हैं।

(ख) 'मरहम' का क्या अर्थ है? यहाँ मरहम से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** मरहम का शाब्दिक अर्थ किसी चोट पर लगाई जाने वाली औषधि से है। अवतरण में मरहम से तात्पर्य दहेज से है, जिसे जीवनलाल विवाह में कम मिले दहेज व ठीक प्रकार से बारात का स्वागत न होने के कारण अपने सम्मान पर लगी चोट के इलाज के रूप में माँगता है।

(ग) वक्ता के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए। (3)

**उत्तर** अवतरण में वक्ता जीवनलाल है, जो अहंकारी, लोभी व धन को मनुष्य से अधिक महत्व देने वाला व्यक्ति है। अपनी लोभी प्रवृत्ति के कारण वह दहेज जैसी कुप्रथा को बढ़ावा देता है और अपनी इच्छानुसार दहेज न मिलने पर प्रमोद को लज्जित करता है। धन को महत्व देने के कारण ही वह अपनी बहू कमला की विदाई करने से मना कर देता है और मरहम अर्थात् दहेज देने पर ही विदाई करने की बात कहता है।

(घ) प्रस्तुत एकांकी में किस समस्या को उठाया गया है? उस समस्या को दूर करने के लिए क्या-क्या कदम उठाए जा रहे हैं? अपने विचार दीजिए। (3)

**उत्तर** प्रस्तुत एकांकी में दहेज की समस्या को उठाया गया है। दहेज रूपी कुप्रथा को समाप्त करने के लिए सरकारी व गैर-सरकारी संगठनों द्वारा निरंतर सामान्य जन में जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। सरकार ने दहेज निरोधक कानून बनाकर इस समस्या के निवारण हेतु सराहनीय कदम उठाया है। किंतु मेरे विचार से इस समस्या का पूर्णरूप से समाधान तभी संभव है, जब लोग स्वयं दहेज देने एवं दहेज लेने का विरोध करें और इसके लिए युवा पीढ़ी को आगे आकर कठोर कदम उठाना ही होगा।

2. जी... आप इस समय तो विदा कर दें। हम गौने में आपकी हर माँग पूरी करने की चेष्टा करेंगे। **पृष्ठ सं. 19**

(क) कथन का वक्ता व श्रोता कौन है? श्रोता की माँग क्या थी? (2)

**उत्तर** कथन का वक्ता कमला का भाई प्रमोद है तथा श्रोता कमला का ससुर जीवनलाल है। प्रमोद, कमला को पहला सावन अपने मायके में मनाने तथा विदा कराने के लिए उसके ससुराल आता है, लेकिन श्रोता जीवनलाल दहेज कम मिलने तथा विवाह में बारात का स्वागत भी ठीक से नहीं होने के कारण पाँच हजार रुपये की माँग करता है।

(ख) वक्ता की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (2)

**उत्तर** वक्ता कमला का भाई प्रमोद है जो एक विनम्र, स्वाभिमानी, संस्कारी, सरल हृदय वाला और बड़ों का सम्मान करने वाला युवक है। उसके विचारों में स्पष्टता है, वह जीवनलाल से अपनी बात स्पष्ट शब्दों में कहता है। कमला के दुःखी होने पर वह भी भावुक हो जाता है। इससे उसकी भावुकता का परिचय मिलता है।

(ग) वक्ता श्रोता से क्या आग्रह कर रहा है व क्यों? एकांकी के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** वक्ता श्रोता से अपनी बहन कमला को ससुराल से विदा कराने के लिए आग्रह कर रहा है। कमला का विवाह के बाद यह पहला सावन है। शादी के बाद पहला सावन लड़की अपने मायके में

अपनी सखी-सहेलियों के साथ मनाती है। प्रमोद कमला को अपने साथ ले जाने के लिए आया है। इसलिए वह कमला की विदाई के लिए जीवनलाल से बार-बार आग्रह करता है।

- (घ) श्रोता विदाई की अनुमति क्यों नहीं दे रहा? इस एकांकी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? (3)

**उत्तर** श्रोता विदाई की अनुमति इसलिए नहीं दे रहा, क्योंकि श्रोता को लगता है कि कमला के घरवालों ने उचित दहेज तथा विवाह की खातिरदारी भी ठीक से नहीं की, जिससे उनका बहुत अपमान हुआ। अतः दहेज की पूरी रकम मिलने पर ही वह विदाई की अनुमति देगा।

इस एकांकी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि दहेज की माँग अनुचित माँग है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारी बहू किसी की बेटी और हमारी बेटी किसी की बहू है। दहेज के नाम पर हमें अपनी बहू को परेशान नहीं करना चाहिए। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष किसी भी प्रकार से लिया गया दहेज अनुचित है। अतः इस एकांकी के द्वारा लेखक ने समाज में फैली दहेज की समस्या का सजीव वर्णन कर बेटी व बहू को समान समझने का संदेश दिया है।

3. तुम्हारी बहन के सपने कभी पूरे नहीं होंगे और उसके सपनों के खून का दाग तुम्हारे हाथों और तुम्हारी माँ के आँचल पर होगा!

पृष्ठ सं. 20

- (क) श्रोता ने वक्ता की बात से अपमानित होकर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की? (2)

**उत्तर** श्रोता (प्रमोद) ने वक्ता जीवनलाल की बात से अपमानित होकर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि बाबूजी बेटी वाला समझकर आप मेरा अपमान कर रहे हैं, परंतु यह मत भूलिए कि आप भी बेटी वाले हैं अर्थात् यदि आपके साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जाए तो आपको कैसा लगेगा।

- (ख) श्रोता कौन था? उसकी बहन के क्या सपने थे? (2)

**उत्तर** श्रोता प्रमोद था। प्रमोद की बहन अर्थात् कमला का सपना था कि वह भी अन्य नव वधुओं की तरह अपने विवाह के पहले सावन का त्योहार अपने मायके में अपनी सखियों के साथ मनाए।

- (ग) “तुम्हारी बहन के सपने कभी पूरे नहीं होंगे।” प्रस्तुत पंक्ति किसने व किससे कही? (3)

**उत्तर** “तुम्हारी बहन के सपने कभी पूरे नहीं होंगे।” प्रस्तुत पंक्ति जीवनलाल ने प्रमोद से कही है।

जीवनलाल ने यह कथन इसलिए कहा, क्योंकि उसने प्रमोद के समक्ष पाँच हजार रुपये दहेज के रूप में देने की माँग रखी थी और कहा था कि जब तक वह पाँच हजार रुपये नहीं देगा, तब तक वह कमला को विदा अर्थात् मायके ले जाने की अनुमति नहीं देंगे, इसलिए जीवनलाल ने कहा कि तुम्हारी बहन के सपने कभी पूरे नहीं होंगे।

- (घ) “उसके सपनों के खून का दाग तुम्हारे हाथों और तुम्हारी माँ के आँचल पर होगा।” वक्ता ने यह कथन क्यों कहा? पंक्ति में ‘उसके’ शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है? (3)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् जीवनलाल ने यह कथन इसलिए कहा, क्योंकि उसने प्रमोद और उसके परिवार पर विवाह में पूरा दहेज न देने का आरोप लगाया। साथ ही प्रमोद के समक्ष प्रस्ताव रखा कि वह दहेज के रूप में पाँच हजार रुपये देकर अपनी बहन के सपनों अर्थात् विवाह के बाद के पहले सावन का त्योहार अपने

घर में मनाने की इच्छा को पूरा कर सकते हैं, किंतु यदि वे दहेज देने में असमर्थ होते हैं, तो कमला के सपनों को तोड़ने का पूरा कसूर उन्हीं का होगा, इसलिए वक्ता ने कहा कि उसके सपनों के खून का दाग तुम्हारे हाथों और तुम्हारी माँ के आँचल पर होगा। प्रस्तुत पंक्ति में ‘उसके’ शब्द ‘कमला’ के लिए प्रयोग किया गया है।

4. पागल मत बनो, कमला! रोओ मत, मैं कहता हूँ! रोओ मत, इन मोतियों का मूल्य समझने वाला यहाँ कोई नहीं है। पानी से पत्थर नहीं पिघल सकता। पृष्ठ सं. 21

- (क) ‘मैं कहता हूँ! रोओ मत’ कथन में ‘मैं’ शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है तथा उसने ऐसा क्यों कहा? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत कथन में ‘मैं’ शब्द प्रमोद के लिए प्रयुक्त हुआ है। उसने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि कमला उसके सामने आते ही रोने लगती है। अतः वह कमला को रोता हुआ नहीं देख पाता तथा उसे सांत्वना (धैर्य) देते हुए कहता है कि रोओ मत।

- (ख) वक्ता एवं कमला के बीच क्या संबंध है? वक्ता कहाँ आया हुआ था? (2)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् प्रमोद और कमला के बीच भाई-बहन का संबंध है। वक्ता अर्थात् प्रमोद कमला को पहला सावन मायके में मनाने के लिए विदा कराने उसके ससुराल आया हुआ था।

- (ग) वक्ता ने क्यों कहा कि “पानी से पत्थर नहीं पिघल सकता।” (3)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् प्रमोद ने यह इसलिए कहा, क्योंकि कमला के ससुर ने दहेज पूरा न देने की बात कहकर कमला की विदाई करने से मना कर दिया था जिस पर प्रमोद, जीवनलाल की तुलना पत्थर से करते हुए कहता है कि यह कठोर हृदयी, लोभी एवं भावशून्य (भावनाओं से रहित) व्यक्ति तुम्हारे आँसुओं से नहीं पिघल सकता, इसलिए प्रमोद अर्थात् वक्ता ने कहा कि पानी से पत्थर नहीं पिघल सकता।

- (घ) प्रस्तुत अवतरण में श्रोता कौन है तथा उसके रोने की वजह क्या थी? (3)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण में श्रोता कमला है तथा उसके रोने की वजह यह थी कि परंपरा के अनुसार विवाह के बाद लड़की को अपना पहला सावन अपने मायके में मनाना होता है। इसी वजह से प्रमोद कमला को लेने के लिए उसके ससुराल आता है, लेकिन उसका ससुर पूरा दहेज न मिलने के कारण उसे लज्जित करते हुए कमला की विदाई करने से मना कर देता है।

5. ठीक ही कहा आपने! आज के युग में पैसा ही नाक और मूँछ है, जिसके पास पैसा नहीं वह नाक-मूँछ होते हुए भी नकटा है, मूँछकटा है। पृष्ठ सं. 25

- (क) प्रस्तुत कथन किसने, किससे व किस संदर्भ में कहा है? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत कथन प्रमोद ने कमला के ससुर जीवनलाल से कहा है। जीवनलाल धन को ही मान-सम्मान व प्रतिष्ठा का आधार मानता है। उसकी इस प्रवृत्ति के कारण प्रमोद प्रस्तुत कथन कहता है।

- (ख) अवतरण में नाक और मूँछ को किस संदर्भ में प्रयुक्त किया गया है? (2)

**उत्तर** अवतरण में नाक और मूँछ को मान-सम्मान के संदर्भ में प्रयुक्त किया गया है, जिस व्यक्ति का समाज में मान-सम्मान नहीं है, उस व्यक्ति का जीवन व्यर्थ है।

- (ग) अवतरण में वर्तमान समय की किस प्रवृत्ति पर तीखा प्रहार किया गया है? (3)

**उत्तर** अवतरण में वर्तमान समय में लोगों के अंदर विकसित होती लालची प्रवृत्ति व धन को मनुष्य से अधिक महत्त्व देने की प्रवृत्ति पर तीखा



प्रहार किया गया है। लोगों में विकसित होती इस प्रवृत्ति के कारण जीवनलाल धन को ही मनुष्य के मान-सम्मान का एकमात्र आधार मानता है और इसी कारण वह अपनी बहू कमला की विदाई भी नहीं करता।

(घ) धन को रिश्तों का आधार बनाना कितना उपयुक्त है? इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (3)

**उत्तर** धन को रिश्तों का आधार बनाना पूर्णतः अनुचित है। धन मनुष्य की केवल भौतिक इच्छाओं की पूर्ति का साधन मात्र है। धन को रिश्तों से अधिक महत्त्व देने के कारण ही जीवनलाल कमला को उसके विवाह के बाद पहले सावन में अपने मायके भेजने के लिए मना कर देते हैं। मेरे विचार से धन को रिश्तों से अधिक महत्त्व देने के कारण मनुष्य की मानवीयता एवं उसकी भावनाएँ समाप्त हो जाती हैं। अतः यह पूर्णतः उपयुक्त कार्य नहीं है।

6. अब भी आँखें नहीं खुलीं, जो व्यवहार अपनी बेटी के लिए तुम दूसरों से चाहते हो, वही दूसरे की बेटी को भी दो। जब तक बहू और बेटी को एक समान नहीं समझोगे, न तुम्हें सुख मिलेगा और न शांति। पृष्ठ सं. 26

(क) वक्ता कौन है? उसकी मनोदशा को स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** वक्ता, राजेश्वरी है जो जीवनलाल की पत्नी तथा कमला की सास है, वह सरल हृदय वाली, दयालु व ममतामयी माँ है, किंतु वह जीवनलाल के दोहरे व्यवहार, उनकी लोभी प्रवृत्ति और दहेज माँगने की बात से बहुत दुःखी थीं।

(ख) श्रोता कौन है? उसके चरित्र पर प्रकाश डालिए। (2)

**उत्तर** श्रोता राजेश्वरी का पति जीवनलाल है। वह एक धनी व्यापारी, लोभी, दोहरे चरित्र वाला स्वार्थी तथा अहंकारी व्यक्ति है। वह संबंधों से अधिक पैसों को महत्त्व देता है। वह बेटी और बहू को एक समान नहीं मानता।

(ग) वक्ता ने क्यों कहा कि बहू और बेटी को एक समान समझो? (3)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् राजेश्वरी ने जीवनलाल के चरित्र में शामिल दोहरेपन की प्रवृत्ति से खिन्न होने के कारण कहा कि बहू व बेटी को एक समान समझो। जीवनलाल अपनी बेटी गौरी की उसके ससुराल वालों के द्वारा विदाई न करने से आहत होकर उन्हें बुरे शब्द कहता है, वहीं वह स्वयं अपनी बहू कमला को दहेज पूरा न देने के कारण उसकी विदाई करने से मना कर देता है, जो उसके चरित्र के दोहरेपन को दर्शाता है।

इसी दोहरेपन की प्रवृत्ति को जानकर राजेश्वरी, जीवनलाल से कहती है कि बहू और बेटी को एक समान समझो।

(घ) 'न तुम्हें सुख मिलेगा और न शांति'—पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 'तुम्हें' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? (3)

**उत्तर** राजेश्वरी, जीवनलाल के चारित्रिक गुणों पर प्रश्न चिह्न अंकित करते हुए कहती है कि तुम्हारे लोभी स्वभाव, दोहरेपन और धन को मनुष्य से अधिक महत्त्व देने वाली कुप्रवृत्तियों के कारण ही न तुम्हें सुख मिलेगा और न शांति। 'तुम्हें' शब्द जीवनलाल के लिए उसकी पत्नी द्वारा प्रयुक्त हुआ है।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. यह तो सरासर अन्याय है। शिकायत आपको हमसे है। उस भोली-भाली लड़की ने आपका क्या बिगाड़ा है, जो विदा न करके आप उससे बदला ले रहे हैं? पृष्ठ सं. 19

(क) अवतरण में वक्ता और श्रोता किसके बारे में बातें कर रहे हैं? (2)

(ख) श्रोता को वक्ता से क्या शिकायत थी? (2)

(ग) अवतरण में किसकी विदाई की बात चल रही थी और क्यों? (3)

(घ) वक्ता ने क्यों कहा 'यह तो सरासर अन्याय है?' (3)

2. मैं जल्दी ही फिर आऊँगा और उस बार विदा अवश्य होगी, क्योंकि मैं चोट का मरहम लेकर आऊँगा। पृष्ठ सं. 21

(क) प्रस्तुत कथन में 'मैं' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है तथा वो किस मरहम की बात कर रहा है? (2)

(ख) 'चोट के मरहम' से वक्ता का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए। (2)

(ग) वक्ता जल्दी ही आने की बात क्यों कह रहा है? एकांकी के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (3)

(घ) श्रोता कौन है तथा वक्ता, श्रोता को धीरज कैसे बँधाता है? स्पष्ट कीजिए। (3)

3. लेकिन आज नहीं तो कल रुपया तो देना ही पड़ेगा, कमला! कागज के टुकड़ों पर अपना स्नेह और प्यार बेचने वालों के बीच तुम इस तरह कब तक रह सकोगी? पृष्ठ सं. 22

(क) अवतरण के वक्ता और श्रोता कौन हैं? वे किस विषय पर बात कर रहे थे? (2)

(ख) "कल रुपया तो देना ही पड़ेगा।" वक्ता ने यह कथन क्यों कहा? (2)

(ग) "कागज के टुकड़ों पर अपना स्नेह और प्यार बेचने वालों के बीच तुम इस तरह कब तक रह सकोगी?" प्रस्तुत पंक्ति किसने व क्यों कही? (3)

(घ) कौन कागज के टुकड़ों पर अपना स्नेह और प्यार बेचने वाला था? उसकी चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (3)

4. (लौटती हुई) यह क्या कह रहे हो, बेटा? मेरे रहते विदा न हो यह कभी नहीं हो सकता। मैं माँ हूँ, माँ के दिल को समझती हूँ। (भारी स्वर में) जिस तरह उतावली होकर मैं गौरी की राह देख रही हूँ, उसी तरह तुम्हारी माँ भी कमला की राह देख रही होगी। नहीं, विदा जरूर होगी। तुम अकेले नहीं जाओगे। पृष्ठ सं. 24

(क) "मेरे रहते विदा न हो यह कभी नहीं हो सकता।" वक्ता ने यह क्यों कहा? (2)

(ख) वक्ता की उत्सुकता का क्या कारण था? (2)

(ग) "तुम अकेले नहीं जाओगे।" वक्ता ने किससे व क्यों कहा? (3)

(घ) अवतरण में किसकी विदाई की बात हो रही है एवं उसकी विदाई में किस प्रकार की अड़चन आ रही थी? (3)



# मातृभूमि का मान हरिकृष्ण 'प्रेमी'

## एकांकीकार का परिचय

हरिकृष्ण 'प्रेमी' जी का जन्म वर्ष 1908 में मध्य प्रदेश के गुना शहर में हुआ था। 'प्रेमी' जी ने एक पत्रकार के रूप में अपने साहित्यिक जीवन का आरंभ किया। इन्होंने नाटक एवं एकांकी जैसी साहित्यिक विधाओं पर धाक जमाकर इनके विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनके लेखन कौशल की उत्कृष्टता का ही परिणाम है कि वे एक सफल एवं प्रसिद्ध नाटककार के रूप में विख्यात हैं। 'प्रेमी' जी की प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं

**नाटक** स्वर्ण विहान, पाताल विजय, छाया, ममता, रक्षाबंधन, प्रतिशोध, शिवसाधना, बंधन, आहुति, विषपान इत्यादि।

**एकांकी** मातृ मंदिर, राष्ट्र मंदिर, मान मंदिर, वाणी मंदिर, बेड़ियों, बादल के पार, न्याय मंदिर, नया समाज, निष्ठुर न्याय इत्यादि।

सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक विषयों को अपनी रचना का आधार बनाते हुए 'प्रेमी' जी ने देशभक्ति, साहस, राष्ट्रीयता, वीरता, प्रेम आदि मानवीय मूल्यों को अपनी रचना के द्वारा व्यक्त किया। इनका निधन वर्ष 1974 में हुआ था।

## एकांकी का परिचय

'मातृभूमि का मान' राष्ट्रप्रेम की भावना को व्यक्त करती एकांकी है। प्रस्तुत एकांकी में मेवाड़ शासक महाराणा लाखा अपने सेनापति अभय सिंह को बूंदी नरेश राव हेमू के पास अपनी अधीनता स्वीकार करने का संदेश देकर भेजता है, जिसे राव हेमू अस्वीकार कर देता है। राव हेमू की स्वीकार न करने की बात को सुनकर महाराणा लाखा इसे अपने सम्मान के विरुद्ध मानता है और प्रण करता है कि जब तक वह बूंदी को पराजित नहीं करता, तब तक वह अन्न-जल ग्रहण नहीं करेगा। महाराणा लाखा की कठोर प्रतिज्ञा को सुनकर चारणी हाड़ाओं की वीरता और कठिनाइयों के समय में उनके द्वारा की गई सहायता का उल्लेख करते हुए उन्हें सुझाव देती है कि वे बूंदी का नकली दुर्ग बनवाकर व छल से युद्ध में उसे पराजित करके अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कर सकते हैं।

उनके सुझाव को स्वीकारते हुए छल से युद्ध की तैयारी की जाती है और वीर सिंह व कुछ अन्य सैनिकों को नकली दुर्ग में भेजा जाता है। वीरसिंह अपनी मातृभूमि बूंदी के सम्मान हेतु अपनी कर्मभूमि मेवाड़ के विरुद्ध अपने साथियों के साथ संपूर्ण सामर्थ्य से लड़ता है और वीरगति को प्राप्त करता है। महाराणा लाखा वीरसिंह के युद्ध कौशल पर गर्व का अनुभव करते हुए अपने निर्णय पर दुःख व्यक्त करता है। राव हेमू वहाँ आकर महाराणा लाखा के प्रायश्चित्त भाव को महसूस करते हुए संपूर्ण राजपूत जाति के एक होने की बात कहता है।

## पात्र-परिचय

### मुख्य पात्र

#### राव हेमू

राव हेमू बूंदी का शासक है, वह स्वयं एक निडर, साहसी, स्वाभिमानी, विवेकशील, चतुर एवं कूटनीतिज्ञ प्रशासक है। उसका मेवाड़ जैसे शक्तिशाली राज्य की अधीनता अस्वीकार करना, संपूर्ण राजपूताने को एक सूत्र में बाँधने की इच्छा रखना आदि उसकी चारित्रिक विशेषताओं को प्रकट करते हैं।

#### अभय सिंह

अभय सिंह मेवाड़ के शासक महाराणा लाखा का विश्वासपात्र सेनापति है, जो चतुर, समझदार, वफ़ादार, महाराणा का अच्छा सलाहकार, वीरता एवं साहस का सम्मान करने वाला वीर योद्धा है।

## महाराणा लाखा

महाराणा लाखा मेवाड़ का शासक है। महाराणा एक पराक्रमी, साहसी, विवेकशील तथा वीरता का सम्मान करने वाला शासक है। उसका बूँदी को पराजित करने के लिए कठोर प्रतिज्ञा लेना, युद्ध की विभीषिका से बचने के लिए छल से युद्ध करना व वीर सिंह के युद्ध कौशल की प्रशंसा करना उसके गुणों को भली-भाँति प्रस्तुत करते हैं।

## वीर सिंह

वीर सिंह मेवाड़ का सिपाही है, किंतु उसकी मातृभूमि बूँदी प्रदेश है। वह अपने नाम की तरह वीर, साहसी, मातृभूमि का रक्षक, निडर एवं देशभक्ति की भावना से परिपूर्ण सिपाही है। वीर सिंह के द्वारा छल युद्ध को वास्तविक युद्ध में बदलकर अंतिम साँस तक युद्ध करना उसकी वीरता का परिचायक है।

## चारणी

चारणी एक महिला पात्र है। वह चाहती है कि सभी मिलकर रहें। वह मेवाड़ और बूँदी के मध्य एकता स्थापित करना चाहती है। इसके लिए वह मेवाड़ के शासक महाराणा को अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए नकली दुर्ग बनाने का सुझाव भी देती है।

## एकांकी का सार

### अभय सिंह का बूँदी नरेश के दरबार में आना

मेवाड़ का सेनापति अभय सिंह बूँदी नरेश के दरबार में महाराणा का संदेश लेकर आता है। अभय सिंह बूँदी नरेश राव हेमू को महाराणा लाखा का संदेश सुनाते हुए कहता है कि महाराणा राजपूतों की असंगठित एवं बिखरी हुई शक्तियों को विदेशी आक्रमण से बचाने के लिए एकत्रित एवं संगठित करना चाहते हैं, जिसके लिए बूँदी को मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करनी होगी। अभय सिंह की बात सुनकर राव हेमू जवाब देता है कि बूँदी के राजपूतों ने आज तक किसी की अधीनता स्वीकार नहीं की है। बूँदी एक छोटा एवं स्वतंत्र राज्य है। वह किसी के अधीन होना स्वीकार नहीं करेगा, फिर चाहे वह विदेशी शक्ति हो या मेवाड़। राव हेमू, महाराणा को हृदय में घमंड न पालने की सलाह देता है।

### महाराणा द्वारा भीषण प्रतिज्ञा लेना

महाराणा लाखा पूर्व में हड़ाओं से मिली पराजय के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानते हैं। वे कहते हैं कि उन्हीं के कारण बप्पा रावल व वीरवर हम्मीर के वंश पर कलंक लगा है। अभय सिंह उन्हें धैर्य बँधाते हुए उसे एक अचानक होने वाले आक्रमण का परिणाम बताते हैं, किंतु महाराणा पराजय को, पराजय स्वीकार करते हुए कहते हैं कि जिनका कोई मान-सम्मान नहीं होता, उन्हें अपमान से कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन वे इस अपमान को सहन नहीं कर सकते।

अभय सिंह द्वारा जब उन्हें पता चलता है कि राव हेमू ने उनकी अधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया है, तो इसे वे स्वयं के आत्मसम्मान पर प्रहार-सा अनुभव करते हैं और बूँदी प्रदेश को पराजित करने के लिए एक कठोर प्रतिज्ञा लेते हुए कहते हैं कि जब तक वह बूँदी प्रदेश में ससैन्य प्रवेश नहीं कर लेते, तब तक वह अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। अभय सिंह, महाराणा को इतनी कठोर प्रतिज्ञा लेने से मना करता

है, लेकिन महाराणा सूर्यवंश के गौरव एवं वचन से बँधे होने की याद दिलाते हुए कहते हैं कि सूर्यवंशी कभी भी अपने दिए हुए वचन से नहीं पलटते, अपितु उसे पूरा करने के लिए अपने प्राण तक न्योछावर कर देते हैं।

### चारणी का युद्ध न करने का सुझाव देना

चारणी देश एवं राजपूतों की एकतारूपी माला को न तोड़ने का गीत गाते हुए दरबार में प्रवेश करती है। चारणी को जब पता चलता है कि महाराणा ने बूँदी प्रदेश को पराजित करने की कठोर प्रतिज्ञा कर ली है, तब वह महाराणा को समझाते हुए कहती है कि बूँदी के राजपूतों ने विपत्ति के समय में मेवाड़ की सहायता की है, इसलिए मेवाड़ को युद्ध नहीं करना चाहिए। चारणी महाराणा की प्रतिज्ञा पूरी कराने के लिए सलाह देती है कि वे बूँदी का नकली दुर्ग बनवाकर उस पर अपना ध्वज फहराकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लें।

### वीर सिंह द्वारा सिपाहियों को मातृभूमि की रक्षा के लिए प्रोत्साहित करना

महाराणा, चारणी के नकली दुर्ग के सुझाव को स्वीकार करते हुए, वीर सिंह व कुछ अन्य सिपाहियों को छल से युद्ध करने के लिए नकली दुर्ग में भेजते हैं। वीर सिंह, अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अन्य सिपाहियों का हौंसला बढ़ाता है। वह उनसे कहता है कि बूँदी की पराजय हमारी मातृभूमि का अपमान है, जब एक सिपाही महाराणा के साथ इस प्रकार छल करने की बात पर प्रश्न उठाता है, तब वीर सिंह कहता है कि हम इस मातृभूमि में खेलकर बड़े हुए हैं। यह मातृभूमि हमें अपने प्राणों से भी अधिक प्यारी है, इसकी पराजय हमें स्वीकार नहीं हो सकती, इसलिए जब तक हमारे शरीर में प्राण हैं, तब तक हम मेवाड़ की प्रतिज्ञा पूर्ण नहीं होने देंगे।

### वीर सिंह का वीरतापूर्वक युद्ध करना

संध्या होने लगती है, लेकिन वीर सिंह अपने साथियों के साथ मिलकर मेवाड़ के साथ युद्ध लड़ता रहता है। उसके युद्ध कौशल व साहस को देखकर महाराणा लाखा व अभय सिंह का घमंड हो जाता है। महाराणा, वीर सिंह की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि इन्होंने इस छल युद्ध को वास्तविकता प्रदान कर दी है, लेकिन वे वीर सिंह जैसे वीर योद्धा को खोना नहीं चाहते हैं। महाराणा, वीर सिंह की वीरता को देखकर कहते हैं कि ऐसे वीर पुत्र को जन्म देने वाली माँ धन्य है।

### वीर सिंह का वीरगति को प्राप्त होना

वीर सिंह अत्यधिक वीरता एवं साहस के साथ लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त होता है। महाराणा अपने निर्णय एवं अपनी प्रतिज्ञा पर अफ़सोस प्रकट करते हुए कहते हैं कि उनके द्वारा लिए गए मूर्खतापूर्ण निर्णय के कारण आज वीर सिंह जैसे कितने ही सिपाही मारे गए। चारणी द्वारा उन्हें इस संपूर्ण घटना के जिम्मेदार मानने पर महाराणा कहते हैं कि वीर सिंह ने उनकी आँखें खोल दी हैं, क्योंकि ऐसी वीर जाति किसी की अधीनता स्वीकार नहीं कर सकती और इसकी इच्छा रखना भी व्यर्थ है।

महाराणा अपने इस निर्णय द्वारा पछतावे से भर जाते हैं और वीर सिंह के शव के पास बैठकर अपने अपराध के लिए क्षमा माँगते हैं। राव हेमू, महाराणा को पश्चाताप से भरा देखकर उन्हें आश्वासन देते हैं कि राजपूत युग-युग से एक हैं और भविष्य में भी एक ही रहेंगे।

## शीर्षक की सार्थकता व उद्देश्य

प्रस्तुत एकांकी 'मातृभूमि का मान' में महाराणा लाखा मेवाड़ की शक्ति को संगठित करने के लिए बूंदी को मेवाड़ के अधीन करने की कोशिश करते हैं, परंतु बूंदी के शासक राव हेमू अधीनता स्वीकार नहीं करते। महाराणा लाखा बूंदी का नकली दुर्ग बनाकर उस पर अपना ध्वज फहराना चाहते हैं, लेकिन मेवाड़ की सेना का एक हाड़ा सिपाही वीर सिंह मातृभूमि का मान रखने के लिए महाराणा लाखा से लड़ते हुए शहीद हो जाता है। पूरे एकांकी में मातृभूमि के मान का महत्त्व बताया गया है। अतः शीर्षक उपयुक्त और प्रभावशाली के साथ-साथ सार्थक है। प्रस्तुत एकांकी का उद्देश्य व्यक्तिगत स्वार्थ की भावना से ऊपर उठकर मातृभूमि की रक्षा व उसका सम्मान बनाए रखने के लिए पाठकों को प्रेरित करता है।

### शब्दार्थ

**पृष्ठ सं. 28** पौराणिक—पुराणों से संबंधित (related with puran); स्नेह—प्यार (love); अधीनता—गुलामी (slavery)।

**पृष्ठ सं. 29** गत—बीता हुआ (past); आश्रित—निर्भर (depend); नाज़—गर्व (proud); दंभ—अहंकार (ego); श्रीगणेश—शुरुआत (beginning)।

**पृष्ठ सं. 30** व्यथित—परेशान, दुःखी (distressed); कलंक—अपयश (stigma); शिविर—किला (fort); आक्रमण—हमला (attack); आकस्मिक—अचानक (suddenly)।

**पृष्ठ सं. 31** अपयश—बदनामी (slander); उपहासजनक—हँसी की (derision); धृष्टता—दुस्साहस (audacity)।

**पृष्ठ सं. 32** नेपथ्य—रंगमंच के पीछे की जगह (back stage); शृंखला—कड़ी (chain); विद्वेष—ईर्ष्या (jealous)।

**पृष्ठ सं. 33** विध्वंस—नाश (destruction); बाध्य—मजबूर, विवश (obligate); सिंहनाद—सिंह जैसा गर्जन, ललकार, युद्ध ध्वनि (war cry); प्रतिरोध—विरोध रुकावट, बाधा (obstruction)।

**पृष्ठ सं. 34** छूँछे—खाली (empty); व्याघात—रुकावट (obstacle)।

**पृष्ठ सं. 35** अवसर—मौका (opportunity); पताका—ध्वज (flag)।

**पृष्ठ सं. 36** विलंब—देरी (delay); पराक्रम—बहादुरी (bravery); निष्प्राण—प्राणों से रहित (devitalized)।

**पृष्ठ सं. 37** विजयश्री—जीत (victory); दुंदुभि—डंका, नगाड़ा (a drum); सायत—शुभ मुहूर्त (auspicious beginning)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- प्रत्येक राजपूत को अपनी ताकत पर नाज़ है। इतने बड़े दंभ को मेवाड़ अपने प्राणों में आश्रय न दे, इसी में उनका कल्याण है। रह गई बात एक माला में गूँथने की, सो वह माला तो बनी है। हाँ, माला को तोड़ने का श्रीगणेश हो गया है। **पृष्ठ सं. 29**

(क) अवतरण का श्रोता कौन है? वह कहाँ आया हुआ है? (2)

**उत्तर** अवतरण का श्रोता मेवाड़ का सेनापति अभय सिंह है। वह महाराणा लाखा के संदेश अर्थात् बूंदी द्वारा मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने का प्रस्ताव लेकर बूंदी नरेश राव हेमू के दरबार में आया हुआ है।

(ख) वक्ता ने क्यों कहा प्रत्येक राजपूत को अपनी ताकत पर नाज़ है? (2)

**उत्तर** वक्ता ने यह इसलिए कहा, क्योंकि मेवाड़ के शासक महाराणा लाखा ने वक्ता अर्थात् बूंदी नरेश राव हेमू को मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने के लिए कहा था, जिससे उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँची थी, इसलिए उन्होंने कहा था कि प्रत्येक राजपूत को अपनी ताकत पर नाज़ है।

(ग) “उस माला को तोड़ने का श्रीगणेश हो गया है।” पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि अभी तक, जो राजपूत शक्ति अलग-अलग दिखते हुए भी एकत्रित एवं संगठित थी, जो एक प्रदेश पर विपदा आने पर सहायता के लिए तत्पर रहती थी, उस एकता की माला को आज महाराणा लाखा ने बूंदी नरेश राव हेमू

को मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने के लिए कहकर उस एकता की माला को तोड़ने की शुरुआत कर दी है।

- (घ) वक्ता कौन है? वक्ता ने क्यों कहा कि इतने बड़े दंभ को मेवाड़ अपने प्राणों में आश्रय न दे? (3)

**उत्तर** वक्ता बूंदी प्रदेश के शासक राव हेमू हैं। राव हेमू ने मेवाड़ के शासक महाराणा लाखा द्वारा मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने वाले संदेश का जवाब देते हुए कहा था कि बूंदी प्रदेश एक छोटा एवं स्वतंत्र राज्य है और यहाँ के राजपूतों ने किसी के अधीन रहकर जीना नहीं सीखा। मेवाड़ एक विशाल साम्राज्य अवश्य है, किंतु वह इतना शक्तिशाली नहीं है कि बूंदी के राजपूतों को हरा सके। इसलिए राव हेमू ने महाराणा को सलाह देने के स्वर में कहा कि मेवाड़ अपने सर्वशक्तिमान होने एवं सभी पर शासन करने का झूठे दंभ अर्थात् अहंकार को अपने प्राणों में आश्रय न दे, इसी में उनका कल्याण है।

- जिनकी खाल मोटी होती है, उनके लिए किसी भी बात में कोई भी अपयश, कलंक या अपमान का कारण नहीं होता, किंतु जो आन को प्राणों से बढ़कर समझते आए हैं, वे पराजय का मुख देखकर भी जीवित रहें, यह कैसी उपहासजनक बात है? **पृष्ठ सं. 31**

(क) महाराणा प्राणों से बढ़कर किसे मानते हैं और क्यों? (2)

**उत्तर** महाराणा प्राणों से बढ़कर मान-सम्मान को मानते हैं, क्योंकि वीर एवं पराक्रमी योद्धा, युद्ध में प्राणों के मोह में बँधकर रणभूमि से पीछे नहीं हटते, अपितु वे तो रणभूमि में शहीद होकर अपने मान-सम्मान को बढ़ाते हैं।

(ख) “जिनकी खाल मोटी होती है”—पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** जिनकी खाल मोटी होती है, पंक्ति का अर्थ है—वे व्यक्ति, जिन्हें अपने आत्मसम्मान और अपने गौरव की परवाह नहीं होती और वे अपमानित एवं कलंकित जीवन जीने से भी नहीं हिचकते।

(ग) श्रोता कौन है? वक्ता श्रोता से किस विषय पर बात कर रहा है? (3)

**उत्तर** श्रोता मेवाड़ का सेनापति अभय सिंह है। वक्ता अर्थात् महाराणा, अभय सिंह से बूंदी प्रदेश से मिली पराजय का बदला लेने के विषय में लाखा से बात कर रहे हैं। महाराणा लाखा बूंदी के द्वारा मेवाड़ की पराजय को लेकर बहुत चिंतित व दुःखी हैं, क्योंकि एक राजपूत का युद्ध में शहीद होना, एक पराजित एवं कलंकित जीवन जीने से कहीं अधिक बेहतर है।

(घ) वक्ता कौन है? वक्ता की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (3)

**उत्तर** वक्ता मेवाड़ के शासक महाराणा लाखा हैं। वक्ता एक वीर, साहसी, पराक्रमी, विवेकशील शासक एवं योद्धा है, जिसका प्रमाण उनके कथनों से मिलता है। वे सिसोदिया वंश के थे। उन्हें अपने पूर्वजों बप्पा रावल और वीरवर हम्मीर की वीरता और शौर्य पर गर्व था। उनका मानना था कि एक योद्धा का युद्धभूमि में वीरगति को प्राप्त होना, मैदान से पीठ दिखाकर अपने प्राणों की रक्षा करने से श्रेष्ठकर है।

3. ‘प्राण जाएँ पर वचन न जाए’—यह हमारे जीवन का मूलमंत्र है, जो तीर-तरकश से निकलकर कमान से छूट गया, उसे बीच में लौटाया नहीं जा सकता। मेरी प्रतिज्ञा कठिनाई से पूरी होगी, यह मैं जानता हूँ और इस बात की हाल के युद्ध में पुष्टि भी हो चुकी है कि हाड़ा जाति वीरता में हम लोगों से किसी प्रकार भी हीन नहीं है। [2017]

पृष्ठ सं. 31

(क) उपरोक्त कथन के वक्ता और श्रोता का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (2)

**उत्तर** उपरोक्त कथन के वक्ता मेवाड़ शासक महाराणा लाखा हैं, जो पराक्रमी, साहसी व वीरता का सम्मान करने वाले शासक हैं। वे सिसोदिया वंश के थे। वे राजपूत राजाओं की एकजुटता पर बल देते थे। इसके लिए उन्होंने प्रयास भी किया। वे अपने वचन की मर्यादा का पालन दृढ़तापूर्वक करते थे। इस कथन में श्रोता मेवाड़ का सेनापति अभय सिंह है, जो चतुर, ईमानदार व महाराणा लाखा का सलाहकार है।

(ख) वक्ता ने क्या प्रतिज्ञा ली थी? कारण सहित लिखिए। (2)

**उत्तर** वक्ता महाराणा लाखा ने यह प्रतिज्ञा ली कि जब तक बूंदी के दुर्ग में सेना सहित प्रवेश नहीं कर लेते तब तक वे अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे।

उन्होंने यह प्रतिज्ञा इसलिए ली, क्योंकि वे नीमच के मैदान में बूंदी के शासक राव हेमू से पराजित हो गए थे। उन्हें वहाँ से भागना पड़ा। इससे उनके आत्मसम्मान को गहरी ठेस पहुँची। उनका मानना था कि एक योद्धा का युद्धभूमि में वीरगति को प्राप्त होना मैदान से पीठ दिखाकर अपने प्राणों की रक्षा करने से श्रेष्ठकर है। अतः वे हाड़ाओं को हराकर अपने माथे का कलंक जल्द-से-जल्द धो डालना चाहते थे।

(ग) हाड़ा वंश के राजा कौन थे? हाड़ा लोगों की क्या विशेषताएँ थीं? उन पर प्रकाश डालिए। (3)

**उत्तर** हाड़ा वंश के राजा राव हेमू थे, हाड़ा लोग निर्भीक, साहसी, स्वाभिमानी व चतुर कूटनीतिज्ञ थे। जो अपने मान-सम्मान व स्वाभिमान के लिए शक्तिशाली साम्राज्य से भी युद्ध करने के लिए

तत्पर रहते थे। वे अपनी बूंदी को किसी के भी अधीन नहीं देख सकते थे। वे सच्चे देशभक्त थे। उनके लिए स्वयं के प्राणों से अधिक महत्वपूर्ण मातृभूमि का मान था, जिसका प्रमाण वीर सिंह मेवाड़ के विरुद्ध युद्ध लड़कर देता है।

(घ) ‘प्राण जाएँ पर वचन न जाए’ इस कहावत का क्या अर्थ है?

एकांकी के संदर्भ में समझाइए। (3)

**उत्तर** ‘प्राण जाएँ पर वचन न जाए’ इस कहावत का सामान्य अर्थ है कि अपने वचन को पूरा करने के लिए अपनी संपूर्ण सामर्थ्य लगा देना। मेवाड़ के महाराणा लाखा बूंदी नरेश से पराजित हुए थे, जिससे उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँची थी। अतः उन्होंने बूंदी के राव को हराने की प्रतीज्ञा ले ली थी। अभय सिंह के समझाने पर भी वे अपनी बात पर अटल रहे, किंतु चारणी द्वारा सुझाव दिए जाने पर वे नकली दुर्ग बनाकर उसे नष्ट कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए मान गए। बूंदी का नकली दुर्ग बनाया गया, जहाँ हाड़ा सैनिक वीर सिंह ने छल से युद्ध को वास्तविक युद्ध में बदलकर अपनी वीरता तथा मातृभूमि के प्रति सम्मान का परिचय दिया। अतः महाराणा लाखा ने बूंदी के नकली दुर्ग को नष्ट कर अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया।

4. किंतु मैं तो शृंखला को तोड़ने जा रहा हूँ। दो जातियों में जानी दुश्मनी पैदा करने जा रहा हूँ। पृष्ठ सं. 32

(क) प्रस्तुत अवतरण में वक्ता व श्रोता कौन है तथा श्रोता अपने गीत के माध्यम से क्या संदेश दे रही थी? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण में वक्ता मेवाड़ का शासक महाराणा लाखा है तथा श्रोता चारणी है। चारणी अपने गीत के माध्यम से सारे राजपूतों को एकता के सूत्र में बाँधकर देश की स्वाधीनता के लिए प्रयासरत होने का संदेश दे रही थी।

(ख) “मैं तो शृंखला को तोड़ने जा रहा हूँ।” कथन में ‘मैं’ शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है तथा वह शृंखला को तोड़ने की बात क्यों कर रहा है? (2)

**उत्तर** “मैं तो शृंखला को तोड़ने जा रहा हूँ।” कथन में ‘मैं’ शब्द महाराणा लाखा के लिए प्रयुक्त हुआ है। वह शृंखला को तोड़ने की बात इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि महाराणा लाखा बूंदी के द्वारा मेवाड़ की पराजय को लेकर अत्यंत चिंतित व दुःखी थे। वे चाहते थे कि बूंदी भी मेवाड़ की अधीनता स्वीकार कर ले, किंतु बूंदी नरेश ने उनकी अधीनता स्वीकार करने से साफ इनकार कर दिया। वे स्वयं को अपमानित महसूस कर रहे थे।

(ग) प्रस्तुत अवतरण में किन दो जातियों की बात की गई है तथा वक्ता उन में दुश्मनी क्यों पैदा करना चाहता है? (3)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण में जिन दो जातियों की बात की गई है, उनमें से एक मेवाड़ के शासक महाराणा लाखा की सूर्यवंशी जाति तथा दूसरी बूंदी नरेश की हाड़ा जाति है।

वक्ता दुश्मनी इसलिए पैदा करना चाहता है, क्योंकि हाड़ाओं द्वारा रात के समय अचानक मेवाड़ पर आक्रमण करने से मेवाड़ की पराजय हुई। अपनी पराजय से महाराणा लाखा अत्यंत चिंतित थे। वे चाहते थे कि बूंदी, मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करे ताकि राजपूतों की असंगठित शक्ति को संगठित करके एक सूत्र में बाँधा जा सके, किंतु राव हेमू किसी की भी अधीनता स्वीकार करने से साफ इनकार कर देते हैं। अतः महाराणा लाखा अपने अपमान का बदला लेने के लिए दोनों जातियों में दुश्मनी पैदा करना चाहते हैं।

(ग) प्रस्तुत एकांकी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? (3)

**उत्तर** प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपनी मातृभूमि का सम्मान करना चाहिए तथा मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों को न्योछावर करने से भी पीछे नहीं हटना चाहिए। हमें सदैव आपस में मिलजुल कर देश के मान की रक्षा करनी चाहिए। साथ ही इसके माध्यम से यह भी शिक्षा देने का प्रयास किया गया है कि हमें आपसी वैर-भाव व अहंकार को छोड़कर संगठित होकर काम करना चाहिए तभी हमें सफलता प्राप्त होगी।

5. मैं आपसे निवेदन करने आई हूँ कि यद्यपि समय के फेर से हाड़ा शक्ति और साधनों में मेवाड़ के उन्नत राज्य से छोटे हैं, फिर भी वे वीर हैं। मेवाड़ को उसकी विपत्ति के दिनों में सहायता देते रहे हैं। यदि उनसे कोई धृष्टता बन पड़ी हो, तो महाराणा उसे भूल जाएँ और राजपूत शक्तियों में स्नेह का संबंध बना रहने दें। पृष्ठ सं. 32

(क) वक्ता कौन है? वह किससे व क्या निवेदन करने आई थी? (2)

**उत्तर** वक्ता चारणी है। चारणी महाराणा लाखा से बूँदी प्रदेश पर आक्रमण न करने का निवेदन करने आई थी कि विपत्ति के दिनों में भी वे मेवाड़ की सहायता करते रहे हैं।

(ख) वक्ता ने हाड़ाओं के विषय में क्या बताया था? (2)

**उत्तर** वक्ता ने हाड़ाओं के विषय में बताया कि वे शक्ति व साधनों में हमसे कम अवश्य हैं, लेकिन वे वीर हैं। वह बताती है कि हाड़ाओं ने विपदा के समय में कई बार मेवाड़ शासकों की सहायता की है।

(ग) वक्ता ने क्यों कहा कि “राजपूत शक्तियों में स्नेह का संबंध बना रहने दें?” स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् चारणी ने यह इसलिए कहा, क्योंकि महाराणा लाखा ने बूँदी पर ससैन्य आक्रमण कर उसको अपने अधीन करने का निर्णय लिया था और चारणी इस तथ्य से अवगत थी कि हाड़ा वंश वीर है और वे किसी की अधीनता स्वीकार नहीं करेंगे, जिस कारण राजपूतों के मध्य जो एकता का सूत्र बँधा हुआ था, वह टूट जाएगा।

इसी एकता के सूत्र को बचाए रखने के लिए उसने महाराणा से कहा था कि “राजपूत शक्तियों में स्नेह का संबंध बना रहने दें।”

(घ) प्रस्तुत अवतरण का संदर्भ स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** महाराणा लाखा अपने अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए बूँदी पर आक्रमण करने का निर्णय करते हैं। महाराणा की प्रतिज्ञा को जानने के बाद चारणी उन्हें ऐसा करने से रोकने के लिए समझाती है कि बूँदी प्रदेश वीरों की भूमि है और वे किसी की अधीनता स्वीकार नहीं करेंगे और इस प्रकार दो राजपूत वंशों के आपस में युद्ध करने से उनके मध्य आपसी प्रेम और एकता के टूटने का भी भय है, इसलिए महाराणा को इस एकता को बनाए रखने के लिए बूँदी प्रदेश पर आक्रमण करने का विचार त्याग देना चाहिए। यही इस अवतरण का संदर्भ है।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. इस मिट्टी के दुर्ग को मिट्टी में मिलाने से मेरी आत्मा को संतोष नहीं होगा, लेकिन अपमान की वेदना में जो विवेकहीन प्रतिज्ञा मैंने कर डाली थी, उससे तो छुटकारा मिल ही जाएगा। पृष्ठ सं. 33

(क) मिट्टी का दुर्ग क्यों बनाया गया था? स्पष्ट कीजिए। (2)

(ख) कौन अपमान की वेदना से जल रहा था? उसका अपमान किस प्रकार हुआ था? (2)

(ग) वक्ता ने क्या प्रतिज्ञा की थी व क्यों? स्पष्ट कीजिए। (3)

(घ) वक्ता और श्रोता कौन हैं? वक्ता ने क्यों कहा कि “मिट्टी के दुर्ग को मिट्टी में मिलाने से मेरी आत्मा को संतोष नहीं होगा?” स्पष्ट कीजिए। (3)

2. निश्चय ही जहाँ पर बूँदी है, वहाँ पर हाड़ा है और जहाँ पर हाड़ा है, वहाँ पर बूँदी है। कोई नकली बूँदी का भी अपमान नहीं कर सकता। जन्मभूमि हमें प्राणों से भी अधिक प्रिय है। पृष्ठ सं. 35

(क) वक्ता कौन है? हाड़ा और बूँदी का संबंध बताइए। (2)

(ख) वक्ता ने क्यों कहा कि “कोई नकली बूँदी का भी अपमान नहीं कर सकता?” (2)

(ग) वक्ता का संक्षिप्त परिचय दीजिए। वक्ता के कथन “जन्मभूमि हमें प्राणों से भी अधिक प्रिय है।” का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

(घ) अवतरण का श्रोता कौन है? गद्यांश के कथन के पीछे वक्ता के मन की दशा का वर्णन कीजिए। (3)

3. तुम महाराणा के नौकर हो, तुम्हें उनके विरुद्ध हथियार नहीं उठाना चाहिए, किंतु उसने उत्तर दिया कि महाराणा ने हाड़ाओं को चुनौती दी है। पृष्ठ सं. 36

(क) वक्ता और श्रोता कौन हैं? वक्ता ने किससे निवेदन किया था? (2)

(ख) वक्ता का अनुरोध करने का क्या कारण था? स्पष्ट कीजिए। (2)

(ग) वक्ता ने किससे व क्यों कहा कि “तुम्हें उनके विरुद्ध हथियार नहीं उठाना चाहिए?” (3)

(घ) प्रस्तुत अवतरण का संदर्भ स्पष्ट कीजिए। (3)



# सूखी डाली उपेंद्रनाथ 'अशक'

## एकांकीकार का परिचय

उपेंद्रनाथ 'अशक' हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार हैं। 'अशक जी' का जन्म पंजाब के जालंधर में 14 दिसंबर, 1910 में हुआ था। स्नातक की डिग्री लेने के पश्चात् उन्होंने अध्यापक के रूप में अपना व्यावसायिक जीवन आरंभ किया। उपेंद्रनाथ 'अशक' ने उर्दू भाषा में साहित्य लिखकर अपने साहित्यिक जीवन का आरंभ किया, लेकिन उन्हें प्रसिद्धि हिंदी के साहित्यकार के रूप में प्राप्त हुई। अशक जी ने सिनेमा के लिए भी पटकथाएँ, संवाद और गीत लिखे। अशक जी को उनके उत्कृष्ट लेखन कार्य के लिए वर्ष 1972 में 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। अशक जी ने उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी कई विधाओं में लेखन कार्य किया। लेखन में लीन रहते हुए ही 19 जनवरी, 1996 को उपेंद्रनाथ 'अशक जी' का निधन हो गया। 'अशक' जी की प्रसिद्ध रचनाएँ निम्न प्रकार हैं

**उपन्यास** गिरती दीवारें, गर्म राख, बड़ी-बड़ी आँखें, पत्थर अल पत्थर।

**कहानी** अंकुर, नासूर, डावी, पिंजरा, गोखरू इत्यादि।

**नाटक** अंजो दीदी, अंधी गली, पैतरे, तौलिए इत्यादि।

**एकांकी** देवताओं की छाया में, चरवाहे, तूफान से पहले इत्यादि।

## एकांकी का परिचय

उपेंद्रनाथ 'अशक' द्वारा रचित यह एकांकी एक संयुक्त परिवार के बनते-बिगड़ते आपसी संबंधों तथा परंपरावादी एवं आधुनिक विचारों के बीच उत्पन्न जटिलताओं पर आधारित है। एकांकी में नई सदस्य छोटी बहू, जो अभी कुछ ही दिनों पहले घर में आई है, वह छोटी-छोटी बातों पर घर की तुलना अपने मायके से करने लगती है, जिस कारण घर की अन्य महिला सदस्य उसे पसंद नहीं करतीं। परेश, जोकि छोटी बहू बेला का पति है, दादा जी से मिलता है और बताता है कि बेला का इस घर में मन नहीं लग रहा है और वह स्वतंत्र होकर अलग घर में रहना चाहती है, जहाँ किसी प्रकार का कोई बंधन न हो। परेश की समस्या को सुनकर दादा जी घर के सभी सदस्यों को बुलाकर उन्हें समझाते हुए कहते हैं कि यदि पेड़ की डालियाँ साथ रहती हैं, तो हरी-भरी रहती हैं। पेड़ से अलग हो जाने या टूट जाने पर वे सूख जाती हैं। उनका कोई वजूद नहीं रहता। उसी प्रकार परिवार के सदस्यों को भी मिलकर रहना चाहिए, क्योंकि घर, परिवार के सभी सदस्यों के साथ मिलकर रहने से बनता है। इस प्रकार, दादा जी परिवार के सदस्यों को अलग होने से रोकते हैं। अंततः घर में एकता बनी रहती है।

## पात्र-परिचय

### मुख्य पात्र

#### दादा जी

अपने जीवन के 72 बसंत देखने वाले दादा जी इस संयुक्त परिवार एवं एकांकी के सबसे वरिष्ठ पात्र हैं। साहस, परिश्रम, निष्ठा और दूरदर्शिता दादा जी की चारित्रिक विशेषताएँ हैं। दादा जी का परिवार में एकछत्र राज है, कोई भी उनके निर्णय के विरुद्ध जाने की प्रयास नहीं करता। उन्होंने एक वट वृक्ष की भाँति पूरे परिवार को एक सूत्र में बाँधे रखने का कार्य किया है।

#### छोटी बहू बेला

छोटी बहू बेला एकांकी की प्रमुख महिला पात्र है। कथानक का संपूर्ण घटनाचक्र बेला के इर्द-गिर्द ही घूमता है। बेला परिवार की सबसे छोटी बहू है। वह एक संपन्न एवं प्रतिष्ठित परिवार की बेटी एवं शिक्षित और आधुनिक विचारों वाली युवती है। वह निश्चल हृदय वाली है, किंतु उसे मायके की संपन्नता का अहंकार है, जिस कारण से घर की कोई भी महिला उसे पसंद नहीं करती।



## परेश

परेश, दादा जी का सबसे छोटा पोता है। वह एक शिक्षित, बुद्धिमान और संस्कारी युवक है। वह एक सरकारी नौकर है, जिसकी अभी-अभी नायब तहसीलदार के रूप में अपने ही कस्बे में नियुक्ति हुई है। उसका विवाह लाहौर के एक संपन्न एवं प्रतिष्ठित परिवार की सुशिक्षित, बुद्धिमान और संस्कारी लड़की से हुआ है। वह परिवार में सामंजस्य स्थापित करने वाला पुरुष पात्र है।

## बड़ी भाभी

बड़ी भाभी घर की सबसे बड़ी बहू है, जिनके पति वर्ष 1914 के विश्वयुद्ध में शहीद हो गए थे। वह एक शांत स्वभाव, सहृदयी और नौकरों को भी घर का सदस्य समझने वाली महिला हैं। उनकी सहृदयता का पता तब चलता है, जब उन्हें मालूम होता है कि छोटी बहू ने घर की पुरानी नौकरानी रजवा को काम से निकाल दिया है, जिससे वह आश्चर्यचकित होने के साथ-साथ दुःखी भी होती हैं।

## इंदु

वह छोटी भाभी की बेटी और परेश की बहन है। वह दादा जी की लाड़ली है। इंदु ने केवल प्राथमिक विद्यालय तक ही शिक्षा ग्रहण की है, वह छोटी बहू के आने से पहले तक घर की सबसे अधिक शिक्षित महिला थी। इंदु को बेला का बार-बार अपने मायके की तारीफ करना पसंद नहीं था, जिस कारण उन दोनों के बीच नौक-झोंक होती रहती है। वह बड़ों का सम्मान करने वाली सहृदयी, अन्याय के विरुद्ध खड़ी होने वाली एक हठी स्वभाव की युवती है।

## कर्मचंद

कर्मचंद दादा जी का मँझला बेटा है। वह पितृभक्त, शांत स्वभाव और पिताजी का आज्ञाकारी पुत्र है। कर्मचंद घर की समस्याओं को पिताजी के सम्मुख रखकर उनका समाधान खोजने की कोशिश करता है। वह अपने छोटे भाई के साथ जमीन, फार्म, डेयरी और चीनी के कारखाने के काम की देखभाल भी करता है।

## मँझली भाभी

मँझली भाभी कर्मचंद की पत्नी है। वह बड़ों का सम्मान एवं आदर करने वाली और भावुक स्त्री है। मँझली भाभी दादा जी के दिए हुए आदेश का पूरी निष्ठा के साथ पालन करती है और साथ ही वह रजवा को लेकर चिंतित भी है, जो उनके भावुक एवं सहृदयी होने का परिचायक है।

## मँझली बहू

मँझली बहू एक हँसमुख स्त्री है और यही उनकी अपरिपक्वता को भी दर्शाता है। मँझली बहू की अपरिपक्वता का प्रमाण तब मिलता है, जब दादा जी उन्हें समझाते हुए कहते हैं कि “मँझली बहू, तुम अपनी हँसी को उन लोगों तक ही सीमित रखो बेटा, जो उसे सहन कर सकते हैं। बाहर के लोगों पर घर में बैठकर हँसा जा सकता है, किंतु घर के लोगों को तब तक हँसी का निशाना नहीं बनाना चाहिए, जब तक वे पूर्णतया घर का अंग न बन जाएँ।”

## रजवा

रजवा अथवा मिश्रानी घर की नौकरानी है। उनकी कई पीढ़ियाँ इसी घर में काम कर चुकी हैं। रजवा से पहले उसकी सास इस घर में काम करती थी और अब रजवा की बहू भी इसी घर में काम करती है। वह

एक समझदार, विश्वसनीय और आज्ञाकारी नौकरानी होने के साथ एक भावुक स्त्री भी है। रजवा के उपरोक्त गुण उसके घर के प्रति आदरभाव एवं अपनत्व को दर्शाते हैं।

## छोटी भाभी

छोटी भाभी बेला की सास एवं इंदु और परेश की माँ हैं। वह एक भावुक, सहृदयी, कर्मठ एवं शांत स्वभाव की महिला हैं, जिनका संयुक्त परिवार की परंपरा पर अटूट विश्वास है। उनको अपने परिवार पर गर्व है, जिसका वर्णन करते हुए वह कहती हैं कि हमारे घर में तो मिल-जुल कर रहना, बड़ों का आदर करना, नौकरों पर दया करना उनके परिवार के संस्कार हैं।

## भाषी, मल्लू, जगदीश

भाषी, मल्लू, जगदीश तीनों बाल पात्र एकांकी के गौण पात्र हैं, जो दादा जी के पोते-पोती हैं।

# एकांकी का सार

## छोटी बहू का रजवा को नौकरी से निकालना

इंदु आज सुबह से ही नाराज होकर बैठी है। जब बड़ी बहू, इंदु से नाराज होने का कारण पूछती है, तो वह बताती है कि छोटी बहू ने रजवा को नौकरी से यह कहकर निकाल दिया कि उसे ठीक से काम करने का सही तरीका नहीं आता। इंदु बताती है कि जब उसने छोटी बहू को समझाने का प्रयास किया कि आपको छोड़कर घर का प्रत्येक सदस्य उसके काम से संतुष्ट है। उसकी बातें सुनकर छोटी बहू नाराज हो जाती है और उसके मायके में भी नौकर होने की बात कहते हुए बोलती है कि ऐसी नौकरानी वहाँ कुछ क्षणों के लिए भी नहीं रुक सकती। इंदु बड़ी बहू से कहती है कि उन्हें लगता है कि उनके मायके वालों को ही खाने-पीने, रहने-सहने का सही ढंग आता है और वे हमें गँवार समझती है, इसलिए वह उन्हें वहीं से नौकरानी लाने की बात कह देती है। छोटी भाभी रजवा के रोने व इंदु की नाराजगी का कारण पूछते हुए छोटी बहू से लड़ाई होने का शक जाहिर करती है, तभी रजवा छोटी भाभी से छोटी बहू का कार्य न करने व उन्हीं के साथ रहने के लिए कहती है।

इंदु द्वारा छोटी बहू का अपने मायके का घमंड दिखाने की बात कहने पर छोटी भाभी कहती है कि हमारे घर सभी का सम्मान किया जाता है और अपनी तुच्छ चीजों को भी दूसरों से श्रेष्ठ माना जाता है।

## छोटी बहू द्वारा पुराने फर्नीचर को बाहर निकालना

मँझली बहू बाहर से हँसते हुए प्रवेश करती है, तब इंदु द्वारा उनसे उनके हँसने का कारण पूछने पर वह बताती है कि आज छोटी बहू ने कमरे में रखे पुराने फर्नीचर को अपने कमरे से बाहर निकाल दिया, जब परेश ने उनसे फर्नीचर निकालने का कारण पूछा, तो उन्होंने फर्नीचर के टूटे हुए एवं पुराने होने की बात कहकर फर्नीचर कमरे में रखने से मना कर दिया। परेश ने फर्नीचर से पुरानी यादें जुड़ी होने व दादा जी द्वारा नाराजगी प्रकट करने की बात कहते हुए छोटी बहू को समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह न मानी। इंदु छोटी बहू द्वारा काम न करने के बारे में बताते हुए कहती है कि दादा जी ने छोटी बहू को कपड़े धोने के लिए दिए थे, लेकिन उन्होंने उनके कपड़े नहीं धोए, जो अभी तक गुसलखाने (बाथरूम) में पड़े हुए हैं।

### कर्मचंद द्वारा दादा जी को घर की स्थिति के विषय में बताना

कर्मचंद दादा जी को बताता है कि घर का माहौल ठीक नहीं है। वह बताता है कि अभी तक हम जो एक संयुक्त परिवार में रहते हैं, उस परिवार के टूटने के आसार बन रहे हैं। दादा जी उन्हें इस बारे में अब तक न बताए जाने की बात कहते हुए ऐसी समस्याओं को शुरुआत में ही समाप्त करने के लिए कहते हैं। दादा जी जब कर्मचंद से इसका कारण पूछते हैं, तो वह बताता है कि छोटी बहू को अपने मायके का घमंड ज़रूरत से ज्यादा है और वह हमारे घर को घृणा की दृष्टि से देखती है, जिसके कारण घर की महिलाएँ उसे पसंद नहीं करतीं। दादा जी उन्हें समझाते हैं कि घृणा को घृणा से नहीं, स्नेह से समाप्त किया जा सकता है और बड़प्पन मन से होता है, जो एक छायादार वृक्ष की भाँति अपने कार्यों के द्वारा सबके समक्ष प्रकट होता है।

### दादा जी का परेश से मिलना

कर्मचंद से घर के माहौल का पता चलने के बाद दादा जी परेश से मिलते हैं। परेश उन्हें बताता है कि छोटी बहू का इस घर में मन नहीं लग रहा है और वह आधुनिक विचारों वाली महिला है। वह स्वतंत्र एवं मुक्त भाव से जीना चाहती है, जहाँ किसी प्रकार का कोई बंधन न हो, और वह स्वेच्छापूर्वक जीवन व्यतीत कर सके, इसलिए उन्हें बाग वाला मकान दे दिया जाए। दादा जी परेश को समझाते हुए कहते हैं कि उनके जीवित रहने तक यह परिवार वट वृक्ष की तरह एक रहेगा। वे परेश से कहते हैं कि वह घर के सभी सदस्यों को समझा देंगे, जिससे बहू को कोई परेशानी नहीं होगी।

### दादा जी का परिवार के सदस्यों को समझाना

परेश की बातें सुनने के बाद दादा जी घर के सभी सदस्यों को बुलाते हैं और उन्हें समझाते हैं कि छोटी बहू एक संपन्न परिवार की सुशिक्षित युवती है, जो अपने घर पर अत्यधिक आदर-सत्कार प्राप्त करती थी, किंतु यहाँ वह आदर में सबसे छोटी है, जिस कारण उसे सबकी बातें माननी पड़ती हैं। दादा जी कहते हैं कि वह आयु में हमसे छोटी अवश्य है, किंतु बुद्धि और योग्यता में हमसे कहीं अधिक बड़ी है, इसलिए हमें उसकी योग्यताओं का लाभ उठाना चाहिए और उसका आदर करना चाहिए। वे कहते हैं कि उनके लिए यह घर एक महान् वट वृक्ष के समान है, जिसका प्रत्येक सदस्य उनके लिए महत्वपूर्ण है, इसलिए वे नहीं चाहते कि इसका कोई सदस्य इससे अलग हो। वे आदेश देते हुए कहते हैं कि कोई भी छोटी बहू का निरादर नहीं करेगा। यदि किसी ने ऐसा कुछ किया तो वे अपना इस घर से नाता सदा के लिए तोड़ लेंगे। दादा जी इंदु और मँझली बहू को विशेष रूप से समझाते हुए छोटी बहू का आदर करने के लिए कहते हैं।

### घर के सदस्यों के व्यवहार में आए परिवर्तन से छोटी बहू का दुःखी होना

छोटी बहू घर के सदस्यों के बदले व्यवहार के विषय में सोच रही होती है कि तभी छोटी भाभी वहाँ आकर उसके द्वारा पुराने फर्नीचर को बाहर निकलवाने को उचित ठहराती है। बेला द्वारा उन्हें बैठने के लिए कहने पर छोटी भाभी (बेला की सास) घर के अन्य कामों को करने की बात

कहते हुए उसे समझाती है कि रजवा को अपने सामने एक बार झाड़ना-बुहारना सिखा देना फिर वह गलती नहीं करेगी। बेला उनके व्यवहार में आए अचानक परिवर्तन से आश्चर्यचकित होती है, तभी मँझली भाभी भी वहाँ आकर उसे समझाती है कि उन्होंने बड़े घरों में काम करने वाली नौकरानी लाने के लिए किसी से कह दिया है, लेकिन स्वयं दादा जी को केवल पुराने नौकरों पर ही विश्वास होता है और उसे बताती है कि रजवा का परिवार तो कई पीढ़ियों से यहाँ काम कर रहा है।

बेला, परेश को घर के सदस्यों के व्यवहार में आए परिवर्तन के विषय में बताती है, जिस पर परेश, बेला पर ही क्रोधित होते हुए कहता है कि तुम स्वयं असमंजस की स्थिति में हो, तुम स्वयं यह नहीं जानती कि तुम लोगों से कैसे व्यवहार की अपेक्षा रखती हो? परेश के इस व्यवहार से बेला अत्यधिक दुःखी होती है।

### इंदु द्वारा बेला को दादा जी के निर्णय के विषय में बताना

इंदु, बेला के कमरे में आती है और उसे दुःखी पाती है। इंदु के द्वारा उसकी परेशानी का कारण पूछने पर बेला स्वयं के लिए 'जी' संबोधन का प्रयोग करने से मना करती है और उनके द्वारा किए जाने वाले अत्यधिक आदर-सत्कार को अपनी परेशानी का कारण बताती है और उसके साथ कपड़े धोने चली जाती है। इंदु, बेला को कपड़े धोते समय बताती है कि दादा जी ने घर के सदस्यों को तुम्हारा आदर-सत्कार करने के लिए कहा था, जिस कारण तुम्हारे प्रति सभी के व्यवहार में परिवर्तन आया है। तब बेला दुःखी होते हुए दादा जी से कहती है कि आप संयुक्त परिवार बनाए रखने के लिए इस परिवार से किसी को अलग होता हुआ नहीं देख सकते, लेकिन क्या आप यह देख सकते हैं कि कोई इन परिस्थितियों में अपना दम तोड़ दे। बेला के इन्हीं संवादों के साथ एकांकी का अंत हो जाता है।

### शीर्षक की सार्थकता व उद्देश्य

इस एकांकी में एकल परिवार की अपेक्षा संयुक्त परिवार को श्रेष्ठ ठहराया गया है। दादा जी इस परिवार के मुखिया हैं, जो परिवार को बरगद के पेड़ के समान मानते हैं। उनका मानना है कि एक बार वृक्ष से डाली टूट जाए तो उसे लाख पानी दो, उसमें वह सरसता नहीं आएगी और डाली सूख जाएगी।

बेला एकल परिवार की पक्षधर है और दादा संयुक्त परिवार के पक्षधर हैं, परंतु दादा अपने आदर्श को उस पर थोपते नहीं, बल्कि पारिवारिक परिस्थितियों को नियंत्रित करके उसे संयुक्त परिवार का महत्व समझाते हैं। बेला दादा जी से कहती है कि आपको पेड़ से किसी डाली का टूटकर अलग होना पसंद नहीं, पर क्या वे चाहेंगे कि पेड़ से लगी डाल सूखकर मुरझा जाए। अतः वह सूखी डाली नहीं बनना चाहती जो पेड़ के विकास में अपना कोई योगदान न दे सके। इस प्रकार एकांकी का शीर्षक 'सूखी डाली' सर्वथा उचित है।

इस प्रकार 'सूखी डाली' एकांकी के माध्यम से संयुक्त परिवार का महत्व बताना ही लेखक का प्रमुख उद्देश्य रहा है।

## शब्दार्थ

**पृष्ठ सं. 39** अराजकता—राजतंत्र का न होना (anarchy);

तानाशाही—निरंकुश शासन (dictatorship); आच्छादित—ढका हुआ (covered)।

**पृष्ठ सं. 40** वट—बरगद (banyan tree); मुरब्बा—जमीन का एक मापदंड, जो 25 एकड़ के बराबर होता है (a measurement of land that equal to 25 acre); दूरदर्शिता—आगे की सोचने की शक्ति (foresightedness)।

**पृष्ठ सं. 41** कोलाहल—शोर (uproar, noise); निस्तब्धता—गतिहीनता (serenity); भ्रुकुटी—भौंह (eyebrow); बिफरी—नाराज होना (to be displeased)।

**पृष्ठ सं. 42** असभ्य—जिसमें सभ्यता न हो (uncivilised); झाड़न—सफाई करने वाला कपड़ा (a duster); सलीका—तरीका (way)।

**पृष्ठ सं. 43** तुनक—जरा-जरा-सी बात पर अप्रसन्न होना (annoyed); विस्मित—आश्चर्य (surprised)।

**पृष्ठ सं. 44** झगड़ा—लड़ाई (fight); अनादर—अपमान (insult); बरबस—अचानक (suddenly)।

**पृष्ठ सं. 45** गत बनाई—दुर्दशा (poor condition); अनुकरण—पीछे चलना (emulation);

**पृष्ठ सं. 49** नासूर—गला-सड़ा गंदा घाव (chancre, ulcer); घृणा—नफरत (hate); लुप्त—गायब, नष्ट (disappear); पुलक—उल्लसित (Joyful)।

**पृष्ठ सं. 50** अबरे—ऊपर का पल्ला (upper cover); थान—बँधी हुई लंबाई के कपड़े का बड़ा टुकड़ा (full length of cloth)।

**पृष्ठ सं. 51** हस्तक्षेप—अनावश्यक दखल (interruption); आलोचना—गुण व दोषों को बताना (criticism)।

**पृष्ठ सं. 52** उद्विग्नता—व्याकुलता (distressed); अन्यमनस्कता—चित्त कहीं और लगना, अनमना (distracted); सिहर—रोमांचित होना (thrilling); तिरस्कार—उपेक्षा, अनादर (insult)।

**पृष्ठ सं. 54** कुटुंब—कुल, संयुक्त परिवार (joint family)।

**पृष्ठ सं. 55** पृथक्—अलग (separate)।

**पृष्ठ सं. 56** ज्ञानार्जन—ज्ञान, समझ को बढ़ाना (knowledge acquisition); आकांक्षा—इच्छा (desire); विटप—वृक्ष (tree)।

**पृष्ठ सं. 57** सुदृढ़—बहुत कठोर (strong); तोला माशा—बदलाव आ जाना (changes in position); प्रशंसा—तारीफ, सराहना करना (praise)।

**पृष्ठ सं. 59** वृथा—बेकार (useless); सयानी—चतुर (clever); हक—अधिकार (right); दयानतदार—ईमानदार (honest)।

**पृष्ठ सं. 61** इयोढ़ी—दहलीज (threshold); खंडहर—टूटा हुआ भाग (wreckage)।

**पृष्ठ सं. 62** नीरवता—सन्नाटा (soundlessness); क्लान्त—मुरझाया हुआ (taster) खिन्न—दुःखी, उदास (sad)।

**पृष्ठ सं. 64** आर्द्र कंठ—रूँआसा होना, गला भर आना (weep); अपरिचितों—अजनबी (stranger)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. इस पर पूर्णरूप से अपना प्रभुत्व जमाए, उस महान् वट की भाँति अटल खड़े हैं, जिसकी लंबी-लंबी डालियाँ उनके आँगन में एक बड़े छाते की भाँति धरती को आच्छादित किए हुए, अगणित घोंसलों को अपने पत्तों में छिपाए, वर्षों से तूफान और आँधियों का सामना किए जा रही हैं।

पृष्ठ सं. 39

- (क) अवतरण में किसके संबंध में बात हो रही है? इससे उनके व्यक्तित्व की किस चारित्रिक विशेषता का पता चलता है? (2)

**उत्तर** अवतरण में एकांकी के वरिष्ठ पात्र दादा जी अर्थात् मूलराज के संबंध में बातें हो रही हैं। इससे उनके व्यक्तित्व की सबको एक-साथ चलने और संयुक्त परिवार में विश्वास रखने के चारित्रिक गुण का पता चलता है।

- (ख) उपरोक्त अवतरण में 'वट' की तुलना किससे की गई है? और क्यों? (2)

**उत्तर** उपरोक्त अवतरण में 'वट' की तुलना दादा जी से की गई है, क्योंकि जिस प्रकार वट वृक्ष की कई शाखाएँ हैं और वे सब अलग-अलग होते हुए भी एक वृक्ष के कारण आपस में जुड़ी हुई हैं, उसी प्रकार दादा जी ने अपने विशाल परिवार को एकता के सूत्र में बाँधा हुआ है, उसी का परिणाम है कि उनका परिवार आज तक संयुक्त है।

- (ग) "पूर्णरूप से अपना प्रभुत्व जमाए" प्रस्तुत पंक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि किसने और किस प्रकार अपना प्रभुत्व जमाए रखा? (3)

**उत्तर** "पूर्णरूप से अपना प्रभुत्व जमाने" का अर्थ है—किसी वस्तु पर अपना एकछत्र अधिकार करना। संपूर्ण एकांकी में दादा जी ने परिवार पर अपना एकाधिकार स्थापित किया हुआ है। दादा जी एक तानाशाह की भाँति परिवार के प्रत्येक सदस्य से अपनी बातें मनवाते हैं। दादा जी अपने परिवार को एकजुट व एक-दूसरे से प्रेम और स्नेह के साथ रहने के लिए समय-समय पर सभी सदस्यों को समझाते हैं। परिवार का कोई भी सदस्य उनके निर्णय के विरुद्ध जाने की चेष्टा तक नहीं कर सकता। इस प्रकार दादा जी ने घर पर अपना प्रभुत्व जमा रखा है।

(घ) वक्ता कौन है? वक्ता की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (3)

**उत्तर** वक्ता मूलराज अर्थात् दादा जी हैं। दादा जी एकांकी के सबसे वरिष्ठ पात्र हैं। 72 वर्ष की आयु के पश्चात् भी उनका शरीर अभी तक झुका नहीं है और उनकी सफ़ेद दाढ़ी वट की लंबी-लंबी जटाओं की भाँति उनकी नाभि तक पहुँच चुकी है। दादा जी साहसी, परिश्रमी, निष्ठावान और दूरदर्शी हैं, उनके इन्हीं गुणों के कारण आज तक उनका परिवार संयुक्त है। घर में वह एक तानाशाह की भूमिका का निर्वाह करते हैं, जिस कारण घर का कोई सदस्य उनके लिए गए निर्णय के विरुद्ध जाने की चेष्टा नहीं करता।

**2.** वह किसी को कुछ गिनती ही नहीं। हम तो उसके लिए मूर्ख, गँवार और असभ्य हैं। पृष्ठ सं. 42

(क) प्रस्तुत कथन किसने, किससे कहा? संदर्भ सहित स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** प्रस्तुत कथन इंदु ने बड़ी बहू से कहा। जब छोटी बहू मिश्रांनी (रजवा) को काम ठीक से न करने पर काम से हटा देती है। इस बात का जैसे ही इंदु को पता चलता है, तो वह अत्यंत गुस्से में बड़ी बहू से छोटी बहू बेला के संदर्भ में यह कथन कहती है।

(ख) प्रस्तुत अवतरण में 'वह' सर्वनाम किसके द्वारा किसके लिए प्रयुक्त हुआ है श्रोता की भूमिका यहाँ कौन निभा रहा है? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण में इंदु द्वारा छोटी बहू बेला के लिए 'वह' सर्वनाम प्रयुक्त हुआ है। इंदु छोटी बहू के मिश्रांनी (रजवा) के साथ किए व्यवहार से क्रोधित है। इंदु के क्रोधित स्वर को सुनकर यहाँ बड़ी बहू श्रोता की भूमिका निभा रही है।

(ग) इंदु ने मिसरांनी (रजवा) की किस प्रकार तरफदारी की? (3)

**उत्तर** इंदु दादा जी की लाड़ली पोती है। उसने दस वर्षों से रजवा को घर में काम करते देखा है। साफ-सफाई बर्तन धोने आदि सभी काम रजवा ठीक से ही करती आई है। नौकरों से काम लेने का ढंग होता है। इतने सालों से कोई काम करता आया है। यदि कभी उससे कोई भूल हो भी जाए, तो उसे प्रेमपूर्वक समझाया जा सकता है, न कि उसे गलती करने पर नौकरी से निकाला जाता है।

(घ) मूर्ख, गँवार और असभ्य कौन हैं? वक्ता ने इनका क्यों और किस संदर्भ में प्रयोग किया है? (3)

**उत्तर** परिवार के सभी सदस्य मूर्ख, गँवार और असभ्य हैं। वक्ता अर्थात् इंदु छोटी बहू द्वारा ये कहने पर कि नौकर अच्छे हैं, उसके मायके में खाना-पीना अच्छा है, उसके मायके वालों को कपड़े पहनने का ढंग आता है, हम तो न जाने कैसे जी रहे हैं, हमें तो कुछ नहीं आता। हमारे नौकर गँवार, हम गँवार, हमारे पड़ोसी गँवार। इसी संदर्भ में सभी सदस्यों के लिए वक्ता (इंदु) ने मूर्ख, गँवार और असभ्य जैसे विशेषणों का प्रयोग किया है।

**3.** उस बेचारी ने कहा भी कि मैं दस-पाँच दिन में सब कुछ सीख जाऊँगी। भला कितने दिन हुए हैं मुझे आपका काम करते? किंतु बहुरानी न मानी। झाड़न उन्होंने उसके हाथ से छीन लिया और कहा कि हट तू, मैं सब कुछ कर लूँगी। पृष्ठ सं. 42

(क) बहुरानी कौन थी? बहुरानी की अप्रसन्नता का कारण बताइए। (2)

**उत्तर** बहुरानी, घर की छोटी बहू परेश की पत्नी बेला थी। छोटी बहू घर की नौकरानी के द्वारा किए जाने वाले काम से संतुष्ट नहीं थी तथा परिवार के सभी सदस्यों के व्यवहार की तुलना वह अपने मायके वालों से किया करती थी और साथ ही उनसे सामंजस्य न होने के कारण उसका मन घर में नहीं लगता था। इसी कारण वह अप्रसन्न थी।

(ख) 'बेचारी' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? बेचारी की घर में क्या स्थिति थी? (2)

**उत्तर** 'बेचारी' शब्द घर की नौकरानी रजवा के लिए प्रयुक्त हुआ है। रजवा घर में दस वर्षों से काम कर रही थी, जिसके कारण वह एक आज्ञाकारी, विश्वसनीय और समझदार होने के रूप में जानी जाती थी।

(ग) अवतरण का वक्ता कौन है? उसकी चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (3)

**उत्तर** अवतरण की वक्ता इंदु है। इंदु दादा जी की लाड़ली पोती है। उसने प्राइमरी स्कूल में बड़ी सफलतापूर्वक शिक्षा पाई है। वह छोटी बहू के आने से पहले तक घर की सबसे अधिक साक्षर स्त्री पात्र थी। वह बड़ों का सम्मान करने वाली, अन्याय के विरुद्ध बोलने वाली और सभी को एकसमान समझने वाली युवती है।

(घ) झाड़न किसने, किससे छीनी और क्यों? (3)

**उत्तर** छोटी बहू बेला ने घर में काम करने वाली नौकरानी रजवा से झाड़न छीनी, क्योंकि छोटी बहू के अनुसार, रजवा को ठीक से काम करना नहीं आता था, उसके अनुसार सुबह शाम झाड़ू लगाने मात्र से कमरा साफ नहीं हो जाता, उसकी सजावट-बनावट भी कोई चीज है। अभी तक इतना भी नहीं आता कि बैठक कैसे साफ की जाती है। इसी कारण वह रजवा को काम से निकाल देती है।

**4.** यदि कोई शिकायत थी, तो उसे मिटा देना चाहिए था। हल्की-सी खरोंच भी, यदि उस पर तत्काल दवाई न लगा दी जाए, बढ़कर एक बड़ा घाव बन जाता है और यही घाव नासूर हो जाता है, फिर लाख मरहम लगाओ ठीक नहीं होता। पृष्ठ सं. 49

(क) अवतरण में शिकायत किसको थी और क्यों? (2)

**उत्तर** अवतरण में घर की छोटी बहू (बेला) को घर के सभी सदस्यों से शिकायत थी, क्योंकि उसे घर की नौकरानी रजवा व अपने प्रति अन्य महिलाओं का व्यवहार पसंद नहीं था। बेला को लगता है कि घर के लोग उसके साथ परायों-सा व्यवहार करते हैं, जिसके कारण उसका घर में मन नहीं लगता, इसीलिए वह अपनी अलग गृहस्थी बसाना चाहती थी।

(ख) श्रोता कौन है? श्रोता की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (2)

**उत्तर** श्रोता दादा जी का मँझला बेटा कर्मचंद है। वह पितृभक्त, शांत स्वभाव और पिताजी का आज्ञाकारी पुत्र है। कर्मचंद घर की समस्याओं को पिताजी के समुख रखकर उनका समाधान खोजने की कोशिश करता है।

(ग) श्रोता ने ऐसा क्या कहा कि वक्ता को उपरोक्त वक्तव्य कहने के लिए विवश होना पड़ा? (3)

**उत्तर** श्रोता अर्थात् कर्मचंद दादा जी को बताता है कि घर का माहौल बिगड़ रहा है, जिसका कारण वह छोटी बहू के अहंकारी स्वभाव और उसका घर के सदस्यों के साथ समायोजित (तालमेल) न होना है। कर्मचंद बताता है कि छोटी बहू शायद परिवार से अलग रहने का विचार बना रही है, जिसको सुनकर दादा जी ने छोटी बहू की शिकायत का समाधान ढूँढ़ने और समस्या को शीघ्र खत्म करने के संदर्भ में यह वक्तव्य कहा।

(घ) 'घाव का नासूर होना' का अर्थ बताते हुए इसे अवतरण के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** घाव का नासूर होने का अर्थ है, ऐसा घाव, जो कभी ठीक न होता हो।



अवतरण में इसे घर के सदस्यों के बीच उत्पन्न हुई दूरियों और उनके मध्य के द्वेष-भाव के संदर्भ में प्रयोग किया गया है। दादा जी का मानना है कि छोटी बहू बेला व घर के अन्य सदस्यों के बीच द्वेष-भाव को यदि शुरुआत में ही नहीं सुलझाया गया, तो यह कभी ठीक न होने वाले घाव के समान हो जाएगा, इसलिए इनकी समस्याओं का समाधान करना आवश्यक है।

5. वह आज़ादी चाहती है। दूसरों का हस्तक्षेप, दूसरों की आलोचना पसंद नहीं। वे समझती हैं वह छोटी बहू है, इसलिए सब उसकी आलोचना करना, उसे आदेश देना, अपना कर्तव्य समझती हैं। और वह अपनी पृथक् गृहस्थी बसाना चाहती है, जहाँ उसे कोई रोकने वाला न हो। **पृष्ठ सं. 51**

(क) वक्ता और श्रोता कौन हैं? वे किसके विषय में बातें कर रहे हैं? (2)

**उत्तर** वक्ता दादा जी का छोटा पोता परेश है और श्रोता दादा जी हैं। परेश और दादा जी, उसकी पत्नी छोटी बहू बेला को घर में होने वाली कठिनाइयों के कारण उसकी अलग रहने की इच्छा के विषय में बातें कर रहे हैं।

(ख) कौन आज़ादी चाहता है और क्यों? (2)

**उत्तर** घर की छोटी बहू अर्थात् बेला आज़ादी चाहती है, क्योंकि उसको ऐसा लगता है कि घर के सदस्य उसे पसंद नहीं करते हैं, जिस कारण वह अभी तक घर के सदस्यों के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाई है।

(ग) वक्ता की चारित्रिक विशेषताएँ बताते हुए उसके कथन का संदर्भ स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् परेश, दादा जी का सबसे छोटा पोता है। परेश एक शिक्षित और संस्कारी युवक है। वह एक सरकारी नौकर है, जिसकी अभी-अभी नायब तहसीलदार के रूप में नियुक्ति हुई है। परेश प्रत्येक परिस्थिति में सामंजस्य स्थापित करने वाला पुरुष है। परेश की पत्नी छोटी बहू, जो एक आधुनिक विचारों वाली युवती है। वह परेश से शिकायत करती है कि घर की महिलाएँ उसे पसंद नहीं करती और उसका इसी कारण घर में मन नहीं लगता और उसे घर में परायों-सा व्यवहार सहना पड़ता है, जिस संबंध में वह दादा जी से बात करता है।

(घ) वक्ता की बातों को सुनकर श्रोता की मनोदशा का विवरण देते हुए बताइए कि उन्होंने उसका क्या समाधान खोजा? (3)

**उत्तर** परेश की बातों को सुनकर दादा जी आश्चर्यचकित रह जाते हैं, क्योंकि उनकी कल्पना एक संयुक्त परिवार को बनाए रखने की है। परेश की बातों को सुनकर वे दुःखी भी होते हैं, क्योंकि वे नहीं चाहते कि उनका परिवार विभाजित हो।

दादा जी परेश की बातों को सुनने के पश्चात् घर के सभी सदस्यों को बुलाकर समझाते हैं और उन्हें छोटी बहू के साथ उचित व्यवहार करने की सलाह देते हुए कहते हैं कि अगर किसी ने उनकी बात नहीं मानी, तो वह घर से सदा के लिए अपना संबंध तोड़ लेंगे।

6. मेरी आकांक्षा है कि सब डालियाँ साथ-साथ फलें-फूलें, जीवन की सुखद, शीतल वायु के स्पर्श से झूमें और सरसराएँ। विटप से अलग होने वाली डाली की कल्पना ही मुझे सिहरा देती है। **[2017]**

**पृष्ठ सं. 56**

(क) उपरोक्त कथन कौन, किससे और किस संदर्भ में कह रहा है? (2)

**उत्तर** उपरोक्त कथन दादा जी कर्मचंद से कह रहे हैं। वे कहते हैं कि छोटी बहू बेला का घर के सभी सदस्यों के साथ सामंजस्य (तालमेल) न होने के कारण वह अपनी अलग गृहस्थी बसाना चाहती है। तब दादा जी द्वारा सभी सदस्यों को समझाने के पश्चात् इंदु और मँझली बहू को विशेष रूप से रोककर छोटी बहू बेला के साथ अच्छा व्यवहार करने के संबंध में उपरोक्त कथन कहा गया है।

(ख) सब डालियाँ साथ-साथ फलने-फूलने से क्या आशय है? 'डालियाँ' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? (2)

**उत्तर** सब डालियाँ साथ-साथ फलने-फूलने से लेखक का आशय घर के सभी सदस्यों का एक-साथ मिल-जुलकर रहते हुए अपना-अपना विकास करने से है। 'डालियाँ' शब्द घर के विभिन्न सदस्यों के लिए प्रयुक्त हुआ है।

(ग) किसकी आकांक्षा है कि सब खुशहाल रहें और क्यों? इस एकांकी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? (3)

**उत्तर** दादा जी की आकांक्षा है कि सब खुशहाल रहें, क्योंकि वे घर के सभी सदस्यों में एकता व प्रेम का भाव देखना चाहते हैं।

इस एकांकी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि एक स्थान पर द्वेष एवं ईर्ष्या के भाव के साथ रहना परिवार नहीं कहलाता, बल्कि परिवार का आशय है, जहाँ एक स्थान पर रहने वाले लोगों के बीच प्रेम व सौहार्द का भाव हो, इसलिए हम सभी को आपस में मिल-जुलकर रहना चाहिए।

(घ) प्रस्तुत कथन से वक्ता की किस चारित्रिक विशेषता का पता चलता है? अपने विचार भी प्रस्तुत कीजिए। (3)

**उत्तर** प्रस्तुत कथन से वक्ता (दादा जी) की एक परिवार के भीतर आपस में परस्पर मिल-जुलकर प्रेमपूर्वक रहने को महत्त्व देने की चारित्रिक विशेषता का पता चलता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उनके मध्य पारस्परिक सहयोग की भावना ही उन्हें मानवीयता का गुण प्रदान करती है।

एक परिवार के सदस्यों के मध्य प्रेम एवं सौहार्द का भाव बनाने के लिए वह सशक्त व तानाशाह के रूप में दिखाई देते हैं, जिनके द्वारा लिए गए निर्णयों के विरुद्ध जाने की कोई भी सदस्य चेष्टा तक नहीं करता। अपने सशक्त चरित्र के कारण ही वह आज तक संयुक्त परिवार की नींव को बनाए रखते हैं।

7. कोई तुम्हारा आदर नहीं करता, अब सब तुम्हारा आदर करते हैं। तुम्हें शिकायत थी कि तुम्हें सबसे दबना पड़ता है, अब सब तुमसे दबते हैं। तुम्हें शिकायत थी कि तुम सबका काम करती हो, अब सब तुम्हारा काम करते हैं। आदर, सत्कार, आराम—न जाने तुम क्या चाहती हो? **पृष्ठ सं. 65**

(क) प्रस्तुत कथन में किसे, किससे शिकायत थी? और क्यों? (2)

**उत्तर** परेश की पत्नी व घर की छोटी बहू बेला को शिकायत थी कि घर के सदस्य उसका आदर नहीं करते, उसको अपने कार्य बताते हुए उन्हें करने का आदेश देते हैं, जिससे उसे यह महसूस होता था कि घर के सभी लोग उससे कार्य करवाकर उसे दबाकर रखना चाहते हैं। परिवार के सदस्यों के इन्हीं कृत्यों के कारण उसे उनसे शिकायत थी।

(ख) “कोई तुम्हारा आदर नहीं करता, अब सब तुम्हारा आदर करते हैं।”  
वक्ता ने यह कथन किसे कहा? प्रस्तुत पंक्ति में ‘सब’ शब्द किनके  
लिए प्रयोग किया गया तथा उनके व्यवहार में परिवर्तन क्यों था? (2)

**उत्तर** “कोई तुम्हारा आदर नहीं करता, अब सब तुम्हारा आदर करते  
हैं।” वक्ता ने यह कथन अपनी पत्नी बेला से कहा था। प्रस्तुत  
पंक्ति में ‘सब’ शब्द परिवार के सभी सदस्यों के लिए प्रयोग किया  
गया है। परिवार के सदस्यों के व्यवहार में परिवर्तन दादा जी के  
द्वारा बेला के साथ औचित्यपूर्ण एवं उसका आदर करने के लिए  
कहने के उपरांत आया था।

(ग) वक्ता कौन है? वक्ता ने क्यों कहा कि “न जाने तुम क्या चाहती  
हो?” (3)

**उत्तर** वक्ता परेश है। परेश ने यह कथन इसलिए कहा, क्योंकि बेला घर  
के सदस्यों के व्यवहार में आए परिवर्तन से अचंभित एवं दुःखी होती  
है और वह यह नहीं समझ पा रही थी कि परिवार का प्रत्येक

सदस्य उसकी इतनी अधिक आव-भगत क्यों कर रहा है? जिसके  
विषय में वह परेश को बताती है। बेला के इस प्रकार आदर पाने के  
बाद भी दुःखी होने का कारण परिवार के सदस्यों को बताए जाने  
पर, परेश कहता है कि “न जाने तुम क्या चाहती हो?”

(घ) घर के सदस्यों के व्यवहार में आए परिवर्तन से कौन परेशान थी?  
श्रोता वक्ता से क्या कहता है? (3)

**उत्तर** बेला घर के सदस्यों के व्यवहार में आए त्वरित परिवर्तन से हैरान  
एवं परेशान थी, क्योंकि अभी तक परिवार के जो सदस्य उसे  
आदेश दिया करते थे, आज वह उसका आदेश पाने के लिए तत्पर  
थे। बेला कोई कार्य करने जाती, तो उसे स्वयं करने लगते, जिससे  
दुःखी होकर वह पुनः परिवार के सदस्यों के व्यवहार के प्रति  
असंतोष प्रकट करते हुए उनकी शिकायत परेश से करती है, तब  
परेश बेला की असमंजस की स्थिति पर व्यंग्य करते हुए कहता है  
कि “आदर-सत्कार, आराम-न जाने तुम क्या चाहती हो।”

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों  
के उत्तर दीजिए।

1. मैं अच्छी तरह तो नहीं जानता, पर जहाँ तक मेरा विचार है छोटी बहू  
के मन में दर्प की मात्रा जरूरत से कुछ ज्यादा है। मैंने वह मलमल के  
थान और रजाई के अंबरे लाकर दिए थे न? और सबने तो रख लिए,  
पर सुना है कि छोटी बहू को पसंद नहीं आए। **पृष्ठ सं. 49**

- (क) वक्ता कौन है और वह क्या जानने की बात कहता है? (2)  
(ख) वक्ता को किसमें घमंड का भाव दिखाई दिया व क्यों? (2)  
(ग) वक्ता और श्रोता किसके विषय में बातें कर रहे थे और क्यों? (3)  
(घ) छोटी बहू का संक्षिप्त परिचय दीजिए। छोटी बहू के प्रति अपने विचार  
प्रकट करते हुए बताइए कि क्या छोटी बहू में अहंकार का भाव व्याप्त था  
या नहीं? (3)

2. अपनी मूर्खता से उसे तंग कर देंगे? तुम जाओ बेटा, किसी प्रकार की  
चिंता को मन में स्थान न दो। मैं कोई-न-कोई उपाय ढूँढ निकालूँगा।  
तुम विश्वास रखो, वह अपने आप को परायों से घिरी अनुभव न  
करेगी। उसे वही आदर-सत्कार मिलेगा, जो उसे अपने घर में प्राप्त  
था। **पृष्ठ सं. 53**

- (क) वक्ता और श्रोता की बातों का आधार क्या था? स्पष्ट कीजिए। (2)  
(ख) श्रोता कौन है और वह वक्ता के पास क्यों आया था? (2)  
(ग) वक्ता किस समस्या का हल ढूँढ निकालने की बात कहता है और इस  
समस्या का वक्ता के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ रहा था? (3)  
(घ) कौन परायों जैसा अनुभव कर रहा था व क्यों? (3)

3. यह कुटुंब एक महान् वृक्ष है। हम सब इसकी डालियाँ हैं। डालियों से  
ही पेड़ हैं और डालियाँ छोटी हों चाहे बड़ी, सब उसकी छाया को  
बढ़ाती हैं। मैं नहीं चाहता, कोई डाली इससे टूटकर पृथक् हो जाए।  
**पृष्ठ सं. 55**

- (क) वक्ता ने घर की तुलना वृक्ष से क्यों की? (2)  
(ख) वक्ता ने किनसे यह बातें कहीं और क्यों? (2)  
(ग) “डालियाँ छोटी हों चाहे बड़ी, सब उसकी छाया को बढ़ाती हैं।” पंक्ति  
का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)  
(घ) अवतरण का संदर्भ बताते हुए वक्ता की घर में स्थिति का वर्णन कीजिए। (3)

4. कोई मुझे काम को हाथ लगाने नहीं देता। तनिक-सा भी काम करने  
लगूँ, तो सब भागी आती हैं। सब मेरा इस प्रकार आदर करती हैं,  
मानो मैं ही इस घर में सबसे बड़ी हूँ। **पृष्ठ सं. 64**

- (क) वक्ता कौन है? वह श्रोता से किस संबंध में बात कर रहा है? (2)  
(ख) वक्ता की घर में स्थिति स्पष्ट करते हुए उसकी मनोदशा व्यक्त कीजिए। (2)  
(ग) श्रोता और वक्ता का संबंध बताते हुए घर में श्रोता की स्थिति स्पष्ट  
कीजिए। (3)  
(घ) अवतरण का संदर्भ स्पष्ट करते हुए बताइए कि ऐसी स्थिति क्यों और  
कैसे उत्पन्न हुई? (3)

5. “हम सब एक महान् पेड़ की डालियाँ हैं” वे कहा करते हैं और  
इससे पहले कि कोई डाली टूटकर अलग हो, मैं ही इस घर से अलग  
हो जाऊँगा। **पृष्ठ सं. 66**

- (क) वक्ता कौन है? वक्ता ने श्रोता से किसके कथन कहे? (2)  
(ख) श्रोता कौन है? श्रोता की मनोदशा को बताइए। (2)  
(ग) उपरोक्त पंक्तियों से किसके व्यक्तित्व का परिचय मिलता है और उसने  
यह कथन क्यों कहे? (3)  
(घ) वक्ता एवं श्रोता के चरित्रिक गुणों की तुलना करते हुए गद्यांश का संदर्भ  
स्पष्ट कीजिए। (3)



# महाभारत की एक साँझ

भारत भूषण अग्रवाल

## एकांकीकार का परिचय

भारत भूषण अग्रवाल हिंदी साहित्य में बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न एक अविस्मरणीय कथाकार रहे हैं। इनका जन्म वर्ष 1910 में हुआ था। इन्होंने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में उत्कृष्ट साहित्य की रचना की। वे मुख्य रूप से एक कवि थे। वर्ष 1960 में साहित्य अकादमी के उपसचिव बने। उनकी साहित्य एवं लेखन की उत्कृष्टता का ही परिणाम था कि वर्ष 1978 में उन्हें उनकी कृति 'उतना बस सूरज है' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इनकी भाषा सरल, सरस और प्रभावमयी थी। इनकी रचनाओं की विषय-वस्तु जीवन की सामान्य घटनाओं से निकलती है। वर्ष 1975 में भारत भूषण जी का निधन हो गया।

## एकांकी का परिचय

'महाभारत की एक साँझ' महाभारत के युद्ध के लिए एक-दूसरे को जिम्मेदार ठहराते हुए युधिष्ठिर व दुर्योधन के बीच हुए संवादों पर आधारित एकांकी है। एकांकी का आरंभ धृतराष्ट्र एवं संजय के संवादों से होता है। धृतराष्ट्र को पता चलता है कि दुर्योधन अपने प्राणों की रक्षा के लिए जलाशय में छिपा हुआ है, लेकिन युधिष्ठिर और भीम को उसके जलाशय में छिपे होने का पता चल गया है। युधिष्ठिर व भीम दुर्योधन को कायर व भाइयों का हत्यारा कहकर युद्ध के लिए ललकारते हैं, पर वह एक निःशस्त्र व्यक्ति से युद्ध को अधर्म कहता है। उनके द्वारा शस्त्र दिए जाने की बात कहने पर वह उनकी चुनौती स्वीकार कर लेता है, जिसमें भीम दुर्योधन को पराजित कर देते हैं।

संध्या में युधिष्ठिर दुर्योधन के प्रति सांत्वना प्रकट करने के लिए रणभूमि में आते हैं, लेकिन वह उन्हें महत्वाकांक्षी, अधर्मी आदि कहते हुए युद्ध के लिए जिम्मेदार ठहराता है। युधिष्ठिर उसे समझाने का प्रयास करते हैं, लेकिन वह स्वयं को राज्य का वास्तविक अधिकारी घोषित करता है। साथ ही वह अपने किसी कृत्य पर कोई पश्चाताप न होने की बात स्वीकारते हुए कहता है कि उसे केवल इस बात का दुःख है कि उसके पिता अंधे हैं।

## पात्र-परिचय

### मुख्य पात्र

#### धृतराष्ट्र

धृतराष्ट्र हस्तिनापुर के राजा और कौरवों के पिता थे। धृतराष्ट्र जन्म से अंधे थे। उनकी सबसे बड़ी कमी उनका पुत्र मोह था, जिस कारण उन्होंने अपने पुत्रों द्वारा किए जाने वाले अनुचित कार्यों का कभी भी विरोध नहीं किया। वे हस्तिनापुर के राजा अवश्य थे, किंतु उन्होंने कभी एक राजा के अधिकारों का प्रयोग नहीं किया। जन्म से अंधे होने के कारण वे सदा ही दूसरों पर निर्भर रहे।

#### संजय

संजय, धृतराष्ट्र का मंत्री था उसके पास एक दिव्य दृष्टि थी, जिसके माध्यम से वह अपने सामने न होने वाली घटनाओं को भी देख सकता था। संजय, धृतराष्ट्र का अधिक निकट का एवं

विश्वसनीय मंत्री था, जिसकी बातों पर धृतराष्ट्र बिना किसी संदेह के विश्वास करते थे, इसलिए महाभारत के युद्ध का संपूर्ण विवरण संजय अपनी दिव्य दृष्टि के माध्यम से धृतराष्ट्र को सुनाते थे।

## युधिष्ठिर

युधिष्ठिर, पांडु और कुंती के ज्येष्ठ पुत्र थे। वे धर्मराज के रूप में प्रसिद्ध थे। वे दयालु, सदाचारी गुणों से युक्त निर्लोभी, शांति के पक्षधर व न्यायप्रिय व्यक्ति थे। अपने इन्हीं गुणों के कारण वे अंतिम समय तक युद्ध के भयंकर परिणाम से दोनों पक्षों को बचाने की कोशिश करते हैं और अंत में असहाय एवं बेबस तड़प रहे दुर्योधन को सांत्वना देने के लिए उससे मिलने जाते हैं।

## दुर्योधन

दुर्योधन, धृतराष्ट्र के पुत्रों में से सबसे ज्येष्ठ पुत्र था। वह एक कुशल योद्धा था, जो गदा युद्ध में अत्यंत निपुण था। दुर्योधन अहंकारी स्वभाव, और अनैतिक आचरण वाला पात्र था। वह एक कुशल कूटनीतिज्ञ भी था। अपनी कूटनीति के द्वारा ही उसने पांडवों को तेरह वर्ष का वनवास दिलवाया था।

## भीम

भीम, कुंती के दूसरे पुत्र और युधिष्ठिर के छोटे भाई थे। भीम बलवान, गदा युद्ध में पारंगत वीर योद्धा थे। वह दृढ़निश्चयी थे। भीम के बल एवं वीरता से पूरा कौरव पक्ष भयभीत रहता था। गदा युद्ध में अपनी निपुणता को पहचानते हुए ही उन्होंने दुर्योधन जैसे वीर योद्धा को गदा युद्ध के लिए आमंत्रित किया था।

## एकांकी का सार

### दुर्योधन का जलाशय में छिपना

धृतराष्ट्र को जब यह पता चलता है कि पांडवों को दुर्योधन के जलाशय में छिपे होने की खबर लग गई है, तब वह अपने अतीत का मूल्यांकन करते हुए शोक व्यक्त करते हैं तथा पांडवों के वहाँ पहुँचने की खबर से चिंतित होते हैं। युधिष्ठिर और भीम जलाशय पर पहुँचकर दुर्योधन को ललकारते हुए जलाशय से बाहर आने और युद्ध करने की चुनौती देते हुए भाइयों का हत्यारा व भाभी का अपमान करने वाला लज्जाविहीन व्यक्ति कहते हैं।

दुर्योधन द्वारा अब भी उसकी भुजाओं में बल होने की बात कहने पर युधिष्ठिर उसे अपने झूठे अहंकार के कारण वीरता न दिखाने के लिए कहते हैं, जिस पर दुर्योधन उन्हें गुरुजनों एवं बंधुओं की हत्या के लिए जिम्मेदार ठहराता है। दुर्योधन पांडवों को रक्त के प्यासे कहकर निहत्ये से युद्ध करने को अन्याय और अधर्म की नीति कहता है। भीम, दुर्योधन को धर्म की नीति का पाठ न पढ़ाने के लिए कहते हुए उसे याद दिलाते हैं कि किस प्रकार उन्होंने अभिमन्यु का वध किया था।

### दुर्योधन एवं भीम के बीच युद्ध होना

दुर्योधन अपनी कूटनीति को व्यर्थ होता देख जलाशय से बाहर निकल आता है और कहता है कि मैं तो शांति और मेल-मिलाप से जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ, किंतु तुम्हारी हिंसात्मक प्रवृत्ति के कारण मेरी यह कामना भी पूर्ण न हो सकी। युधिष्ठिर, दुर्योधन को अस्त्र-शस्त्र देकर

धर्म से हटकर हत्या न करने की बात कहते हुए उसे युद्ध करने को कहते हैं। दुर्योधन और भीम के बीच भीषण युद्ध होता है, लेकिन भीम, कृष्ण के कहे अनुसार, दुर्योधन की जंघा पर प्रहार कर उसे पराजित कर देते हैं। संजय अपनी दिव्य दृष्टि से पूरी घटना का विवरण धृतराष्ट्र को सुनाते हैं।

### युधिष्ठिर का दुर्योधन से मिलने के लिए आना

पराजित दुर्योधन जब युद्धभूमि में घायल अवस्था में पड़ा था तब युधिष्ठिर, दुर्योधन से मिलने के लिए युद्धभूमि में आते हैं। युधिष्ठिर को युद्धभूमि में आया देखकर दुर्योधन, युधिष्ठिर पर लांछन लगाते हुए कहता है कि तुम मुझे तड़पकर मरते हुए देखने के लिए तथा मेरी मृत्यु का पर्व मनाने के लिए यहाँ आए हो।

युधिष्ठिर जब दुर्योधन को समझाते हुए कहते हैं कि वह अर्थ का अनर्थ न करे, वे तो केवल उसे सांत्वना देने और पश्चाताप के दुःख को कम करने आए थे, किंतु दुर्योधन उनकी बातों पर विश्वास न करते हुए उन्हें स्वार्थी, अभिमानी, ढोंगी कहते हुए उन पर गुरुजनों की हत्या करवाने का आरोप लगाता है।

### दुर्योधन द्वारा युधिष्ठिर को युद्ध का दोषी ठहराना

दुर्योधन, युधिष्ठिर पर अपनी स्वार्थ पूर्ति और साम्राज्य प्राप्त करने के लिए अधर्म और अन्याय का सहारा लेते हुए महाभारत का युद्ध करवाने का दोषी ठहराता है। वह युधिष्ठिर पर बिना किसी अधिकार के राज्याधिकार माँगने का आरोप लगाता है। वह कहता है कि मेरे पिता के जन्म से अंधे होने के कारण उनके पिता को राज-पाट केवल देखभाल के लिए सौंपा गया था, अन्यथा उनका इस पर कोई अधिकार नहीं था। युधिष्ठिर उसकी बातों को उसका निजी मत कहते हुए कहता है कि पितामह भीष्म, कृपाचार्य, महात्मा विदुर ने कभी ऐसी कोई बात नहीं कही है, तब दुर्योधन उन्हें कायर बताते हुए कहता है कि वे सब तुम्हारे गुणों से प्रभावित थे और तुम्हारी वीरता से डरते थे, इसलिए किसी ने मेरे पक्ष को सुना ही नहीं है कि मैं धर्म और न्याय की ओर था, इसीलिए सभी धार्मिक और न्यायी व्यक्ति मेरी ओर से लड़े और कृष्ण तक ने मुझे सैनिक सहायता प्रदान की।

### युधिष्ठिर का दुर्योधन को समझाना

युधिष्ठिर, दुर्योधन को समझाने की कोशिश करते हुए कहते हैं कि वे तो केवल उसके दुःख को कम करने और उसे सांत्वना देने आए थे, जिस पर दुर्योधन उनकी कथनी और करनी में अंतर होने का आरोप लगाकर कहता है कि उनका प्रत्येक कार्य युद्ध की तैयारी से युक्त था। युधिष्ठिर, दुर्योधन से कहते हैं कि तुम अपनी सुध-बुध खो चुके हो, तुम्हारी समझने की क्षमता क्षीण हो चुकी है, इसलिए तुम ऐसी बातें कर रहे हो और तुम्हारी बातों पर कोई विश्वास नहीं करेगा, तब दुर्योधन कहता है कि तुम अपने सामर्थ्य से किसी को विश्वास न करने दोगे, लेकिन मेरे पास इसके प्रमाण हैं कि किस प्रकार तुमने पुरोचन की हत्या करके द्रुपद को अपनी ओर मिलाया।

अर्जुन को दिग्विजय के लिए भेजते हुए जरासंध व शिशुपाल का वध कराया। तुम्हारी बढ़ती शक्ति के डर से ही मेरे पिता ने तुम्हें आधा राज्य दिया। वह उन पर आरोप लगाता है कि उसकी राज्य पाने की महत्वाकांक्षा के कारण ही उन्होंने अपना राज्य जुए में दाँव पर लगाया और अपने बुरे कार्यों के कारण वनवास पाया।

## युधिष्ठिर द्वारा दुर्योधन के बुरे कार्यों पर प्रश्नचिह्न

### अंकित करना

युधिष्ठिर उनकी बातों के उल्टे अर्थ लगाए जाने की बात कहकर दुर्योधन के बुरे कार्यों पर प्रश्नचिह्न अंकित करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार तुमने भरी सभा में द्रौपदी को अपमानित किया और अभिमन्यु का युद्धभूमि में अधर्म से वध किया, ये कार्य किस प्रकार के न्याय से उचित थे? इस पर दुर्योधन द्रौपदी को जीती हुई दासी बताते हुए कहता है कि जिस प्रकार भीष्म, द्रोण और कर्ण की हत्या व भीम द्वारा उसे पराजित करना हो सकता है, उसी प्रकार अभिमन्यु की मृत्यु भी हो सकती है और रणभूमि में प्रत्येक बुरे कार्यों को धर्म-अधर्म, न्याय-अन्याय की नज़र से देख पाना संभव नहीं है।

युधिष्ठिर, दुर्योधन से कहते हैं कि तुम वास्तव में, सत्य-असत्य में भेद करना भूल गए हो। दुर्योधन, युधिष्ठिर को महत्वाकांक्षी बताते हुए कहता है कि तुमने पूरे जीवन तो मुझे सुख से जीने नहीं दिया, अब मेरे अंतिम समय में भी मुझे दुःखी करते हो। वह कहता है कि अब तुम उस रक्त-से सने हुए सिंहासन पर बैठो, जिसके लिए तुमने यह सब षड्यंत्र रचा और अब मैं तुम्हारे मार्ग से सदा के लिए हटता हूँ। मुझे अपने किसी भी बुरे कार्य पर पश्चाताप नहीं है, केवल एक ही दुःख है कि मेरे पिता अंधे क्यों हुए?

## शीर्षक की सार्थकता व उद्देश्य

भारत भूषण अग्रवाल द्वारा प्रस्तुत एकांकी 'महाभारत की एक साँझ' का शीर्षक अत्यंत प्रासंगिक है। महाभारत के युद्ध में कौरव पक्ष में दुर्योधन के अतिरिक्त सभी लोग मारे जा चुके हैं। दुर्योधन द्वारा अपनी जान बचाने के लिए जलाशय में छिपने पर युधिष्ठिर व भीमसेन उसे बाहर आने के लिए ललकारते हैं, जिसे सुनकर दुर्योधन बाहर आ जाता है, तत्पश्चात् भीमसेन और दुर्योधन के मध्य भीषण युद्ध होता है, जिसमें दुर्योधन घायल अवस्था में युद्ध क्षेत्र में पड़ा है और कहता है "साँझ हो रही है। मेरे जीवन की अंतिम साँझ।" अतः यह शीर्षक उचित है।

प्रस्तुत एकांकी का उद्देश्य यह है कि आप चाहे कितने भी कूटनीतिज्ञ, बलवान और बुद्धिमान क्यों न हों, परंतु यदि आपका रास्ता धर्म का नहीं है, तो आपका अंत होना निश्चित है। इसलिए हमें जीवन में सदा सत्य, धर्म न्याय, संयम व धैर्यतापूर्वक व्यवहार कर एक-दूसरे से सामंजस्य बनाना चाहिए। यही इस एकांकी का मुख्य उद्देश्य है।

## शब्दार्थ

**पृष्ठ सं. 69** बहुमुखी प्रतिभा—प्रतिभाशाली (brilliant); युद्ध का विवरण—युद्ध की जानकारी (information of war); दिव्य दृष्टि—अलौकिक दृष्टि (supernatural sight); जलाशय—सरोवर, नदी (river); भीषण—भयंकर (frightful); व्यर्थ—बेकार (waste)।

**पृष्ठ सं. 70** आत्मरक्षा—स्वयं की रक्षा (self defence); अहेरी—शिकारी (hunter); दुरात्मा—बुरी आत्मा (scoundrel)।

**पृष्ठ सं. 71** घृत—घी (ghee); क्षीण—कमजोर (weak); अनायास—अचानक (suddenly); दंभ—अहंकार (arrogance); स्मरण—याद रखना (remembrance)।

**पृष्ठ सं. 72** पामर—दुष्ट, नीच (sinful); निहत्था—बिना किसी हथियार के (unarmed); रक्तरंजित—खून से सने (blood pigmented); कूटनीति—गुप्त चाल (diplomacy)।

**पृष्ठ सं. 73** बधिक—हत्यारा (murderer); मरुस्थल—रेगिस्तान (desert); महत्वाकांक्षा—बड़ा बनने की इच्छा, आकांक्षा (aspiration); वरण—स्वीकार (accept)।

**पृष्ठ सं. 74** प्रहार—हमला करना (attacking); चीत्कार—चीख (scream); उत्कट—तीव्र (passionate); पोत—जहाज (ship); कर्णधार—मल्लाह (seafarer); चेष्टा—प्रयास (effort)।

**पृष्ठ सं. 75** पश्चाताप—पछतावा (repentance); व्यथा—दुःख (sorrow); षड्यंत्र—साजिश (conspiracy); वध—हत्या (slaughter); शोणित—रक्त (blood)।

**पृष्ठ सं. 76** आत्मप्रवंचना—अपने आप को धोखा देना (self deception)।

**पृष्ठ सं. 78** सांत्वना—तसल्ली (consolation); कदापि—कभी नहीं (Never); प्रलाप—रोना/रुदन (cry); असंभाव्य—जो घटित न हो सकता हो (impossible); तिरस्कृत—अपमानित (humiliated)।

**पृष्ठ सं. 80** मिथ्या—झूठ (false); आचरण—व्यवहार (behaviour); चक्रांत—षड्यंत्र, साजिश (conspiracy); मरणोन्मुख—जो मृत्यु के समीप हो (near to death); विकल—बेचैन/व्याकुल (restless)।

**पृष्ठ सं. 81** निष्फल—जिसका कोई फल न हो (ineffective); अभिषेक—जल छिड़कना (water spray); रौंदे हुए—पैरों से कुचले हुए (crushed); उत्तेजित—अधिक प्रसन्न होना (excited)।

# प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. “जानता हूँ युधिष्ठिर भली-भाँति जानता हूँ। किंतु सोच लो, मैं थककर चूर हो गया हूँ, मेरी सभी सेना तितर-बितर हो गई है, मेरा कवच फट गया है, मेरे शस्त्रास्त्र चुक गए हैं। मुझे समय दो युधिष्ठिर! क्या भूल गए मैंने तुम्हें तेरह वर्ष का समय दिया था।”

[2018]

(क) वक्ता कौन है? वह क्या जानता था? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण का वक्ता दुर्योधन है। वह धृतराष्ट्र का सबसे ज्येष्ठ पुत्र है। वह यह जानता है कि पांडव उसकी कूटनीतिपूर्ण बातों में नहीं आएँगे और उसके प्राण लिए बिना शांत नहीं होंगे।

(ख) वक्ता इस समय असहाय क्यों हो गया था? क्या वह वास्तव में असहाय था? (2)

**उत्तर** दुर्योधन इस समय असहाय इसलिए हो गया था, क्योंकि वह थककर चूर हो गया था। उसकी सेना तितर-बितर हो गई थी, उसका कवच फट गया था तथा शस्त्रास्त्र खत्म हो गए थे। वह वास्तव में असहाय नहीं था, अपितु कूटनीति चाल चलता है ताकि स्वयं की रक्षा कर सके।

(ग) श्रोता कौन है? श्रोता को तेरह वर्ष का समय किसने दिया था? इस कथन को आप कितना सही मानते हैं? (3)

**उत्तर** प्रस्तुत कथन का श्रोता युधिष्ठिर है। श्रोता ने युधिष्ठिर को तेरह वर्ष का समय जुए में हारने के कारण दिया था। धृतराष्ट्र ने कौरवों और पांडवों को जुआ खेलने की आज्ञा दी। उसमें तय यह हुआ कि एक ही दौंव रखा जाएगा। उसमें जो भी हारेगा वह बारह वर्ष वनवास और एक वर्ष अज्ञातवास में रहेगा। दुर्योधन ने शकुनी के साथ मिलकर धोखे से बाजी जीत ली और युधिष्ठिर सहित पांडवों को 12 वर्ष का वनवास और एक वर्ष अज्ञातवास मिला। इसी संदर्भ में दुर्योधन ने कहा कि मैंने तुम्हें तेरह वर्ष दिए थे। इस कथन को हम बिलकुल भी सही नहीं मानते।

(घ) वक्ता ने जो समय दिया था उसका उद्देश्य क्या था? क्या वह अपने उद्देश्य में सफल हो सका? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** वक्ता यानी दुर्योधन ने पांडवों को जो समय दिया था उसका उद्देश्य पांडवों को राजमहल से दूर करना तथा उन्हें कष्ट पहुँचाना था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने कई तरीके अपनाए, ताकि वह पांडवों को मार कर संपूर्ण राज्य पर स्वयं अधिकार कर सके, परंतु वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सका। पांडव 12 वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास पूरा करके पुनः लौट गए।

2. लज्जा! उस पापी को लज्जा! भीमसेन ऐसी अनहोनी बात की तुमने कल्पना कैसे की? जो अपने सगे-संबंधियों को गाजर-मूली की भाँति कटवा सकता है, जो अपने भाइयों को जीवित जलवा देने में भी नहीं हिचकता, जो आदमी अपनी भाभी को भरी सभा में अपमानित करने में आनंद ले सकता है, उसका लज्जा से क्या परिचय? पृष्ठ सं. 70

(क) वक्ता कौन है? वह किससे और किसके बारे में बात कर रहा है? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण में वक्ता युधिष्ठिर हैं, जो अपने छोटे भाई भीमसेन से दुर्योधन की क्रूरता, अहंकारी व राज्य की चाह रखने वाला के विषय में बात कर रहे हैं।

(ख) प्रस्तुत अवतरण में पापी किसको कहा गया है और क्यों? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण में पापी दुर्योधन को कहा गया है, क्योंकि दुर्योधन ने अपनी स्वार्थता, अपने अहंकार के कारण युद्ध की पृष्ठभूमि रची, जिस कारण कितने ही वीर योद्धा मारे गए थे और दोनों पक्षों को जान-माल की हानि हुई थी।

(ग) “जो अपने सगे-संबंधियों को गाजर-मूली की भाँति कटवा सकता है।” वक्ता ने ऐसा क्यों कहा? वक्ता के इस कथन का प्रसंग स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** वक्ता ने यह कथन इसलिए कहा, क्योंकि दुर्योधन ने अपने झूठे अभिमान, हठी स्वभाव और लोभी प्रवृत्ति के कारण महाभारत के युद्ध की नींव रखी थी, जिस कारण पितामह भीष्म, कृपाचार्य, कर्ण, अभिमन्यु जैसे दोनों ही पक्षों के कई वीर योद्धा मारे गए थे, लेकिन आज वह स्वयं कायरों की भाँति युद्ध करने के स्थान पर जलाशय में छिपकर अपने प्राणों की भीख माँग रहा है।

(घ) भरी सभा में किसको अपमानित किया गया और क्यों? (3)

**उत्तर** भरी सभा में द्रौपदी को अपमानित किया गया था। दुर्योधन पांडवों को दिए गए आधे राज्य को भी हड़पना चाहता था, इसलिए उसने युधिष्ठिर को जुआ खेलने के लिए आमंत्रित किया। युधिष्ठिर उसके षड्यंत्र में फँसकर अपना राज-पाट हारने के साथ-साथ अपने भाइयों और अपनी पत्नी द्रौपदी को भी हार गए, जिस कारण दुर्योधन, द्रौपदी से अपने अपमान का प्रतिशोध लेने और पांडवों को अपमानित करने के लिए द्रौपदी को अपमानित करता है।

3. जितना जी चाहे हँस लो, पर यह न भूलना कि मैं अभी जीवित हूँ। मेरी भुजाओं का बल अभी नष्ट नहीं हुआ है। पृष्ठ सं. 70

(क) उपरोक्त कथन में वक्ता कौन है? वह किससे व क्या कह रहा है? (2)

**उत्तर** उपरोक्त कथन में वक्ता दुर्योधन है। जब दुर्योधन मृत्यु के भय से जलाशय में छिप जाता है तो युधिष्ठिर और भीमसेन उस पर हँसते हैं, तब दुर्योधन, युधिष्ठिर से ये कथन उसे कमजोर न समझने के लिए कहता है।

(ख) “मेरी भुजाओं का बल अभी नष्ट नहीं हुआ है।” यह कथन वक्ता द्वारा किससे किस संदर्भ में कहा गया है? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत कथन वक्ता (दुर्योधन) युधिष्ठिर से कह रहा है। दुर्योधन द्वारा जल में छिपने पर युधिष्ठिर के उपहास करने पर दुर्योधन उसे ललकारते हुए यह कथन उसके उत्तर में कहता है।

(ग) दुर्योधन सरोवर में क्यों छिपा था? (3)

**उत्तर** युद्ध में दुर्योधन के सभी भाई मारे जा चुके थे, सारी सेना का संहार हो चुका था तथा उसकी युद्ध संबंधी सभी कूटनीतियाँ सफल नहीं हुई थीं। भीमसेन ने दुर्योधन को मारने की प्रतिज्ञा ली थी, जिस कारण दुर्योधन अपनी आत्मरक्षा का और कोई उपाय न देखकर स्वयं को महाबली कहने वाला द्वैत वन के सरोवर में घुसकर उसके जल स्तंभ में छिपकर बैठ गया था।

(घ) उपरोक्त गद्यांश में किसका घमंड अभी तक नहीं टूटा? अपने विचार व्यक्त कीजिए। (3)

**उत्तर** उपर्युक्त गद्यांश ‘में दुर्योधन का घमंड अभी तक नहीं टूटा। दुर्योधन के सरोवर में छिप जाने पर युधिष्ठिर और भीमसेन उसे बाहर आने के लिए उकसाते हैं, परंतु वह युद्ध में हुए भीषण नरसंहार के लिए युधिष्ठिर को ही जिम्मेदार ठहराता है और स्वयं को निर्दोष बताते हुए अपने वीरत्व का बखान करता है। जब कोई व्यक्ति

दूसरों की उन्नति व उनके सुखों से ईर्ष्या करता है तब उसकी बुद्धि व विवेक नष्ट हो जाता है तथा वह भीषण दुष्कर्म कर बैठता है। दुर्योधन के मन में भी शकुनि ने बाल्यावस्था में ही अपने चचेरे भाइयों के प्रति ईर्ष्या के बीज बो दिए थे, जिसके फलस्वरूप कौरवों की यह दुर्दशा हुई।

4. पहले वीरता का दंभ और अंत में करुणा की भीख! कायरों का यही नियम है, परंतु दुर्योधन! कान खोलकर सुन लो। हम तुम्हें दया करके छोड़ेंगे भी नहीं और तुम्हारी भाँति अधर्म से हत्या कर बधिक भी न कहलाएँगे। **पृष्ठ सं. 73**

(क) “पहले वीरता का दंभ और अंत में करुणा की भीख” पंक्ति का वक्ता कौन है और उसने यह उक्ति किसके लिए कही? (2)

**उत्तर** उपरोक्त पंक्ति का वक्ता युधिष्ठिर है और उसने यह उक्ति दुर्योधन के लिए कही। दुर्योधन युद्ध से पूर्व अपनी वीरता पर घमंड दिखाता था और युद्ध के अंत में वह अपने प्राणों की रक्षा के लिए भीख माँगता है, इसलिए युधिष्ठिर ने ये पंक्तियाँ कहीं कि पहले वीरता का दंभ और अंत में करुणा की भीख।

(ख) वक्ता की मनोदशा स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् युधिष्ठिर, दुर्योधन के प्रत्येक बुरे कार्य का, जिनके कारण पांडवों को वनवास जाना पड़ा तथा द्रौपदी को अपमानित होना पड़ा और वीर अभिमन्यु को अल्पायु में ही वीरगति प्राप्त हुई, उन सभी का धर्म, न्याय के रास्ते पर चलते हुए प्रतिशोध लेने की मनोदशा के साथ वह जलाशय के पास आए हैं।

(ग) “तुम्हारी भाँति अधर्म से हत्या कर बधिक भी न कहलाएँगे” वक्ता कौन है? उसने दुर्योधन के लिए यह कथन क्यों कहा स्पष्ट कीजिए? (3)

**उत्तर** वक्ता कुंती और पांडु का ज्येष्ठ पुत्र युधिष्ठिर है। युधिष्ठिर ने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि दुर्योधन के महारथियों ने निहत्थे अभिमन्यु को अधर्म एवं युद्धनीति के विरुद्ध जाकर चक्रव्यूह में फँसाकर मार दिया था, दुर्योधन आज स्वयं अपने प्राणों की रक्षा के लिए जलाशय में जाकर छिप गया है और स्वयं के पास अस्त्र-शस्त्र न होने की बात कहकर युद्ध करने से मना कर देता है। दुर्योधन के इस कथन के पश्चात् युधिष्ठिर उससे कहते हैं कि तुम्हारी भाँति अधर्म से हत्या कर हम (पांडव) बधिक न कहलाएँगे।

(घ) ‘अधर्म’ का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए एकांकी के आधार पर बताइए कि दुर्योधन ने किस प्रकार के अधर्म किए थे? (3)

**उत्तर** ‘अधर्म’ का तात्पर्य है पाप, अन्याय या धर्म-विरुद्ध कार्य। दुर्योधन द्वारा किए गए कार्य अधर्म की भावना से प्रेरित थे। द्रौपदी का चीरहरण करवाना, भीम को विष देना, कर्ण का उनके ही भाइयों के प्रति दुरुपयोग करना आदि उसके द्वारा किए गए अधर्मपूर्ण कार्य थे। राज्य लोभ की भावना से प्रेरित होकर उसने पांडवों को बारह वर्ष का वनवास एवं एक वर्ष का अज्ञातवास दिया था। छल-धोखे से पांडवों की संपत्ति पर अधिकार कर लिया था। ऐसी स्थिति में दुर्योधन को अधर्मी कहना ही तर्कसंगत है।

5. हाय रे मिथ्याभिमानी! अब भी दया का ढोंग नहीं छोड़ा। पर युधिष्ठिर! तनिक अपनी ओर तो देखो। पश्चाताप तो तुम्हें होना चाहिए। मैं क्यों पश्चाताप करूँगा? मैंने ऐसा कौन-सा पाप किया है? मैंने अपने मन के भावों को गुप्त नहीं रखा, मैंने षड्यंत्र नहीं किया, मैंने गुरुजनों का वध नहीं किया। **पृष्ठ सं. 75**

(क) वक्ता कौन है? उसकी चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (2)

**उत्तर** वक्ता धृतराष्ट्र और गांधारी का ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन है। दुर्योधन हठी, अहंकारी, स्वार्थी, लोभी और गदा युद्ध में निपुण योद्धा है। इसीलिए उसे इतिहास में अपनी दुर्गति व भीषण नरसंहार का जिम्मेदार माना जाता है।

(ख) वक्ता किस षड्यंत्र की बात कर रहा है? (2)

**उत्तर** दुर्योधन (वक्ता) युधिष्ठिर पर आरोप लगाता है कि उसने धर्म और न्याय की बातें करके राज्याधिकार की माँग की और सभी आत्मजनों को अपनी ओर मिलाकर युद्ध की नींव रखी और षड्यंत्र रचकर महाभारत का युद्ध करवाया।

(ग) वक्ता ने क्यों कहा कि मैंने गुरुजनों का वध नहीं किया? (3)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् दुर्योधन ने यह इसलिए कहा, क्योंकि उसका मानना है कि युधिष्ठिर ने अपने स्वार्थ के कारण युद्ध लड़ा और अधर्म व अन्याय का उपयोग करते हुए अपने सगे-संबंधियों को पराजित किया। अपने स्वार्थ के कारण ही उसने अपने आदरणीय पितामह और बचपन से युद्धनीति और अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा देने वाले गुरुजनों को भी नहीं बख्शा (छोड़ा), जो कौरवों अर्थात् धर्म की ओर से युद्ध लड़ रहे थे।

(घ) वक्ता ने मिथ्याभिमानी किसको कहा और क्यों? (3)

**उत्तर** वक्ता ने युधिष्ठिर को मिथ्याभिमानी और ढोंगी कहा, क्योंकि जब युधिष्ठिर युद्ध की साँझ को दुर्योधन से मिलने रणभूमि में जाता है, तो दुर्योधन को लगता है कि वह उसे तड़पते हुए मरने के लिए देखने आया है, लेकिन जब युधिष्ठिर कहते हैं कि वह उसे सांत्वना देने आए हैं, तो वह उन्हें मिथ्याभिमानी और ढोंगी कहता है।

6. यही तो मुझे दुःख है युधिष्ठिर कि तथ्य तक पहुँचने की किसी ने भी चेष्टा नहीं की। एक अन्याय की प्रतिष्ठा के लिए इतना ध्वंस किया गया और सब अंधों की भाँति उसे स्वीकार करते गए। सबने मेरा हठ ही देखा, मेरे पक्ष का न्याय किसी ने न देखा और जानते हो इसका कारण क्या था? **पृष्ठ सं. 77**

(क) वक्ता ने किनके लिए कहा कि तथ्य तक पहुँचने की किसी ने भी चेष्टा नहीं की? (2)

**उत्तर** वक्ता ने पितामह भीष्म, महात्मा विदुर, गुरु कृपाचार्य और महाराजा धृतराष्ट्र के लिए कहा कि किसी ने भी तथ्य तक पहुँचने की चेष्टा नहीं की।

(ख) वक्ता किस अन्याय की प्रतिष्ठा की बात कर रहा है? (2)

**उत्तर** वक्ता (दुर्योधन) युधिष्ठिर का राज्याभिषेक करते हुए कहता है कि तुम्हारे पिता को आधा राज्य देने के पश्चात् भी तुम लोगों को चैन न आया। यहाँ तक कि जुआ खेलते समय भी तुमने अपना आधा राज्य यही सोचकर दाँव पर लगाया था कि तुम जीतो और पूरा राजा-पाट तुम्हें मिल जाए, इसलिए वह युधिष्ठिर को राजा बनाने के निर्णय को अन्याय की प्रतिष्ठा कहता है।

(ग) ‘ध्वंस’ का कथा के संदर्भ में अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि ध्वंस का कारण क्या था? (3)

**उत्तर** ‘ध्वंस’ का कथा के संदर्भ में अर्थ है—‘महाभारत का युद्ध’। युद्ध का मुख्य कारण कौरवों और पांडवों में राज सिंहासन प्राप्ति की प्रबल इच्छा तथा दुर्योधन का हठी और लोभी स्वभाव था, जिसके कारण वह पांडवों को सूई की नोक के बराबर भी ज़मीन देने के लिए तैयार न था।

(घ) वक्ता और श्रोता के बीच संबंध बताते हुए श्रोता की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (3)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् दुर्योधन और श्रोता अर्थात् युधिष्ठिर चचेरे भाई थे।



युधिष्ठिर एक सत्यवादी, अहिंसक, धर्मप्रिय और न्यायप्रिय था। युधिष्ठिर की धर्मप्रियता और न्यायप्रियता के कारण ही उन्हें धर्मराज की संज्ञा प्रदान की गई। उनकी वीरता के कारण ही उनके गुणों से सभी आत्मीयजन उनसे प्रभावित थे।

7. सत्य को ढँकने का प्रयत्न न करो युधिष्ठिर! उसे निष्पक्ष होकर जाँचो। मेरे पास प्रमाणों की कमी नहीं है। आधा राज्य पाकर भी तुमने चैन न लिया। तुमने अर्जुन को चारों ओर दिग्विजय के लिए भेजा। राजसूय यज्ञ के बहाने तुमने जरासंध और शिशुपाल को समाप्त किया। यहाँ तक कि जुए में खेल-खेल में भी तुम अपनी ईर्ष्या न भूले और तुमने झूट से अपना राज्य दाँव पर लगा दिया कि यदि तुम जीते तो तुम्हें मेरा राज्य अनायास ही मिल जाए। वनवास उसी महत्वाकांक्षा का परिणाम था, मेरा उसमें कोई हाथ न था।

पृष्ठ सं. 79

- (क) “सत्य को ढँकने का प्रयत्न न करो”—पंक्ति में वक्ता कौन है और वह ऐसा क्यों कह रहा है? (2)

**उत्तर** “सत्य को ढँकने का प्रयत्न न करो”—पंक्ति में वक्ता दुर्योधन है। वह ऐसा इसलिए कह रहा है, क्योंकि वह जानता था कि यदि, उसके पिता धृतराष्ट्र अंधे न होते, तो वही राज्य का उत्तराधिकारी होता।

- (ख) किसके पास प्रमाणों की कमी नहीं है? इस कथन के पीछे वक्ता का क्या उद्देश्य था? (2)

**उत्तर** दुर्योधन के पास प्रमाणों की कमी नहीं है। वह अपने उन प्रमाणों को सत्य मान रहा है, जो उसके लालच और हठ के प्रतीक हैं। इस कथन को कहने का उद्देश्य दुर्योधन का स्वयं को सत्ता का वास्तविक अधिकारी मानना है।

- (ग) अवतरण के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि “आधा राज्य पाकर भी तुमने चैन न लिया” यह पंक्ति किसने, किसके लिए कही थी? (3)

**उत्तर** “आधा राज्य पाकर भी तुमने चैन न लिया” यह पंक्ति दुर्योधन ने युधिष्ठिर के लिए कही थी। दुर्योधन ने यह कथन इसलिए कहा, क्योंकि उसे ऐसा लगता था कि पांडव आधे राज्य पर राज करते हुए भी चैन से नहीं बैठे और उन्होंने अर्जुन को दिग्विजय के लिए भेजा और राजसूय यज्ञ के बहाने जरासंध और शिशुपाल जैसे राजाओं को मार डाला। साथ ही वह यह भी आरोप लगाता है कि जुआ खेलते समय तुरंत अपना राज्य इसलिए दाँव पर लगा दिया, ताकि कौरवों की हार होते ही उन्हें सारा राज्य मिल जाए।

- (घ) महाभारत के युद्ध से हमें कौन-सी सीख मिलती है? (3)

**उत्तर** महाभारत का युद्ध तो शुरू से अंत तक बहुत-सी सीखों से भरा हुआ है, परंतु मुख्य रूप से यह युद्ध हमें यह सीख देता है कि कभी भी पारिवारिक धन-संपत्ति के लिए अपने ही भाइयों से ईर्ष्या नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि इस प्रकार के लड़ाई-झगड़े में जीतकर भी हार ही होती है।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. आत्मरक्षा का और कोई उपाय न देखकर महाबली दुर्योधन द्वैत वन के सरोवर में घुस गए और उसके जल स्तंभ में छिपकर बैठे रहे। पर न जाने कैसे पांडवों को इसकी सूचना मिल गई और वे तत्काल रथ पर चढ़कर वहाँ पहुँच गए।

पृष्ठ सं. 70

- (क) वक्ता कौन है? वक्ता का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (2)  
(ख) जलाशय में कौन छुपा हुआ था और क्यों? (2)  
(ग) वक्ता के साथ उपरोक्त पात्र का क्या संबंध था और वे किससे इसके विषय में बात कर रहे हैं? (3)  
(घ) वक्ता जलाशय पर किसके पहुँचने से दुःखी थे और क्यों? (3)

2. तुम विजेता हो, अपने गुरुजनों और सगे-संबंधियों के शोणित की गंगा में नहाकर तुमने राजमुकुट धारण किया है। तुम अपनी देख-रेख में इतिहास लिखवाओगे और उसका पूरा-पूरा लाभ उठाने में क्यों चूकोगे?

पृष्ठ सं. 75

- (क) वक्ता ने क्यों कहा कि शोणित की गंगा में नहाकर तुमने राजमुकुट धारण किया है? (2)  
(ख) वक्ता ने श्रोता से किस प्रकार का लाभ उठाने की बात कही? (2)  
(ग) अवतरण का प्रसंग स्पष्ट कीजिए। (3)  
(घ) अवतरण और श्रोता में चारित्रिक भेद स्पष्ट करते हुए बताइए कि आपकी दृष्टि में कौन श्रेष्ठ है? (3)

3. मेरा अपमान भी द्रौपदी ने भरी सभा में ही किया था। तब तुम्हारी न्याय भावना क्या सो रही थी? फिर द्रौपदी को दाँव पर लगाकर क्या तुमने उसका सम्मान करने की चेष्टा की थी? जिस समय द्रौपदी सभा में आई द्रौपदी नहीं थी, वह जुए में जीती हुई दासी थी।

पृष्ठ सं. 79

- (क) द्रौपदी ने कब, किसका और किस तरह अपमान किया? (2)  
(ख) प्रस्तुत गद्यांश में वक्ता कौन है तथा वह श्रोता से किस विषय में बात कर रहा है? (2)  
(ग) यदि श्रोता की न्याय भावना जागृत होती तो क्या होता? (3)  
(घ) पांडवों ने द्रौपदी का अपमान किस प्रकार किया? उपरोक्त अवतरण के आधार पर बताइए। (3)

4. मेरे सम्मुख यदि तुम सत्य स्वीकार कर भी लोगे, तो तुम्हारे राजस्व को कोई हानि न पहुँचेगी (कराहता है) पर नहीं, मैं भूल गया। तुम तो अपने शत्रु की इस विकल मृत्यु पर प्रसन्न हो रहे होंगे। आज वह हुआ, जो तुम चाहते थे और जो मैं नहीं चाहता था।

पृष्ठ सं. 80

- (क) वक्ता श्रोता से किस बात को स्वीकारने की बात कह रहा है? (2)  
(ख) वक्ता ने श्रोता से क्यों कहा कि “तुम तो अपने शत्रु की इस विकल मृत्यु पर प्रसन्न हो रहे होंगे?” (2)  
(ग) “आज वह हुआ, जो तुम चाहते थे और जो मैं नहीं चाहता था”—पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)  
(घ) वक्ता और श्रोता के बीच उपरोक्त संवाद कहाँ पर हुआ और उसका आधार क्या था? (3)



# दीपदान डॉ. रामकुमार वर्मा

## एकांकीकार का परिचय

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. रामकुमार वर्मा का जन्म 15 सितंबर, 1905 को मध्य प्रदेश के सागर जिले के एक संपन्न परिवार में हुआ। वर्मा जी ने आरंभिक शिक्षा सागर में तथा उच्च शिक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय से प्राप्त की। इन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इनको भारत सरकार ने वर्ष 1963 में पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया।

वर्मा जी हिंदी के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। कविता, नाटक, एकांकी, आलोचना आदि साहित्यिक विधाओं में इन्होंने अपने रचना कौशल को प्रदर्शित किया है। इन्होंने हिंदी एकांकी के प्रवर्तक एवं श्रेष्ठ एकांकीकार के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। डॉ. रामकुमार वर्मा का निधन वर्ष 1990 में हुआ। इनकी प्रसिद्ध रचना निम्न प्रकार हैं

**एकांकी** बादल की मृत्यु, शिवाजी, रम्यरास, रेशमी टाई आदि।

**नाटक** सत्य का स्वप्न, अशोक का शोक, महाराणा प्रताप।

**कविता संग्रह** अभिशाप, चित्र रेखा, चंद्रकिरण, रूपराशि आदि।

**भाषा** इनकी भाषा सरल, सरस, प्रभावमयी होने के साथ-साथ कथा के अनुरूप है।

## संक्षिप्त सार

दीपदान एकांकी में एक राजपूत क्षत्राणी पन्ना धाय के त्याग की गाथा प्रस्तुत की गई, जिसने राजकुमार उदय सिंह की रक्षा के लिए अपने पुत्र चंदन का बलिदान कर दिया था। एकांकी में स्पष्ट किया गया है कि महाराणा साँगा की मृत्यु के बाद उनका पुत्र (कुँवर उदय सिंह) राज सिंहासन का उत्तराधिकारी था, परंतु उस समय उसकी आयु केवल 14 वर्ष थी, इसलिए महाराणा साँगा के भाई पृथ्वीराज के दासी पुत्र बनवीर को राज्य की देखरेख के लिए नियुक्त किया गया। अपने स्वार्थी स्वभाव के कारण बनवीर संपूर्ण राज्य पर अपना अधिकार जमाने के लिए योजना बनाने लगा। उसने नगर में दीपदान के उत्सव का आयोजन करवाया तथा सभी को इस उत्सव में व्यस्त रखकर कुँवर उदय सिंह की हत्या की योजना बनाई, लेकिन कुँवर की संरक्षिका पन्ना धाय को बनवीर के षड्यंत्र का पता चल गया।

अतः उसने बहुत सावधानीपूर्वक कुँवर को जूटी पतल उठाने वाले कीरत बानी के टोकरे में छिपाकर राजभवन से बाहर भेज दिया और कुँवर की शैया पर अपने पुत्र चंदन को सुला दिया। बनवीर ने पहले महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर दी फिर कुँवर उदय सिंह को मारने के लिए उनके कक्ष में प्रवेश किया। बनवीर ने शैया पर सोए चंदन को उदय सिंह समझकर क्रूरता से उसकी हत्या कर दी। अपने पुत्र की हत्या होते देख पन्ना धाय बेहोश होकर जमीन पर गिर गई। इस प्रकार पन्ना धाय ने अपने पुत्र की बलि चढ़ाकर मेवाड़ के राज सिंहासन के उत्तराधिकारी की रक्षा की।

## पात्र-परिचय

### मुख्य पात्र

#### कुँवर उदय सिंह

कुँवर उदय सिंह एकांकी के प्रमुख पात्रों में से एक हैं। कुँवर चित्तौड़ के स्वर्गीय राजा महाराणा साँगा के सबसे छोटे पुत्र हैं और चित्तौड़ साम्राज्य के एकमात्र उत्तराधिकारी हैं, उनकी आयु केवल 14 वर्ष है। उनके अवयस्क होने के कारण ही महाराणा विक्रमादित्य को राज-पाठ सौंपा गया था। उनमें बालहठ है, जिसका प्रमाण पन्ना धाय के नृत्य देखने से मना करने पर उनका रूठकर भूखे पेट ज़मीन पर सो जाना है।

### पन्ना (धाय माँ)

पन्ना खीचो जाति की तीस वर्षीय राजपूतानी महिला है। वह उदय सिंह की संरक्षिका है। पन्ना धाय कर्तव्यनिष्ठ और चित्तौड़ के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाली महिला है। पन्ना धाय एक धैर्यवान, दूरदर्शिता और विपत्ति के विकट क्षणों में भी संयम रखने वाली क्षत्राणी है।

### सोना

सोना, रावल सरूप सिंह की पुत्री है। वह अत्यंत सुंदर, नटखट व कुशल नृत्यांगना है। उसके सौंदर्य व नृत्य को देखकर कुँवर उदय सिंह उसकी ओर आकर्षित होते हैं। वह अत्यधिक वाचाल (बोलने वाली) महिला पात्र है।

### चंदन

चंदन, पन्ना धाय का तेरह वर्षीय पुत्र है। उसमें बालपन है, किंतु उसमें साहस, वीरत्व और शौर्य की कमी नहीं है, जिसका प्रमाण उसकी कही ये पंक्तियाँ देती हैं, जिनमें वह कहता है कि “धावा करने वाले कहीं नाच देखते हैं?” चंदन अपनी माँ से अत्यधिक प्रेम करता है, इसलिए वह अपनी माँ का मंदिर बनवाने की बात कहता है।

### सामली

सामली चित्तौड़ के अंतःपुर की 28 वर्षीय परिचारिका है। वह राजवंश के प्रति वफ़ादार और पन्ना धाय की विश्वासपात्र महिला हैं। सामली की वफ़ादारी का ही परिणाम है कि कीरत बानी के अतिरिक्त केवल सामली को ही पन्ना धाय की रणनीति का पता होता है।

### कीरत बानी

कीरत बानी एक चालीस वर्षीय जूटे पतल उठाने वाला पुरुष पात्र है। वह भी सामली की तरह राजवंश का वफ़ादार है। वह जूटे पतल उठाने का कार्य अवश्य करता है, लेकिन उसमें वीरत्व का भाव कूट-कूटकर भरा है। वह अपनी कार्यकुशलता का परिचय देते हुए कुँवर उदय सिंह को अपनी टोकरी में छिपाकर बनवीर से उसके प्राणों की रक्षा करता है। अतः उसमें वीरत्व के गुण भी व्याप्त हैं।

### बनवीर

‘बनवीर’ महाराणा के भाई पृथ्वीराज का दासी पुत्र है। वह 32 वर्षीय क्रूर, विलासी, छल-कपट वाला पुरुष पात्र है। बनवीर की क्रूरता का परिचय उसके द्वारा राज-सिंहासन हथियाने के लिए निर्ममता से किए महाराणा विक्रमादित्य और चंदन की हत्या से मिलता है। वह छल से षड्यंत्र रचकर संपूर्ण साम्राज्य पर अधिकार करना चाहता है। इस प्रकार वह एक विश्वासघाती प्रवृत्ति का पात्र है।

### गौण पात्र

#### महाराणा साँगा

महाराणा साँगा का एकांकी में कोई संवाद भले ही न हो, लेकिन अन्य पात्रों के माध्यम से मिली जानकारी के आधार पर कहा जा सकता है कि महाराणा साँगा वीर, शौर्यवान आदि गुणों से युक्त पात्र हैं।

#### महाराणा विक्रमादित्य

विक्रमादित्य एक विलासी, असफल शासक, असफल संरक्षक और मल्ल क्रीड़ा के प्रशंसक हैं।

## एकांकी का सार

### कुँवर उदय सिंह का पन्ना धाय से रूठना

महल में नृत्यांगनाएँ तुलजा भवानी के सम्मुख दीप अर्पण कर नृत्य कर रही हैं, जिन्हें नृत्य करता देख कुँवर उदय सिंह अत्यधिक प्रसन्न होते हैं। कुँवर, पन्ना धाय को भी उनका नृत्य देखने के लिए चलने को कहते हैं, लेकिन पन्ना धाय उन्हें मना करते हुए कहती हैं—तुम दिन में चित्तौड़ के सूरज व रात में राजवंश के दीपक हो, इसलिए तुम्हें अँधेरे में बाहर नहीं जाना चाहिए। उन्हें कुल दीपक कहने पर कुँवर पन्ना धाय से पूछते हैं कि कहीं वे भी नृत्यांगनाओं की तरह मुझे भी दान तो नहीं कर देंगी और उनसे नृत्य देखने के लिए चलने को कहते हैं। पन्ना धाय उन्हें मना करते हुए तलवार अलग रखकर विश्राम करने के लिए कहती हैं। कुँवर हठ करते हुए तलवार को अलग रखने से मना करके उनसे पूछते हैं कि क्या वे तलवार से डरती हैं? पन्ना धाय कहती हैं कि चित्तौड़ में वीर तलवार से नहीं डरते, बल्कि यह तो उनके हाथों में फूल के समान खिलती है। कुँवर जब अकेले ही बाहर जाने की बात करते हैं, तो पन्ना धाय उन्हें मना करते हुए कहती हैं कि बाहर जहरीले साँप घूम रहे हैं, जो किसी भी समय तुम्हें डस सकते हैं। कुँवर पन्ना धाय से रूठकर भोजन न करने की जिद करते हुए सोने चले जाते हैं और ज़मीन पर ही सो जाते हैं।

### सोना द्वारा कुँवर को नृत्य महोत्सव के लिए आमंत्रित करने के लिए आना

सोना जो रावल सरूप सिंह की बेटी है, वह कुँवर के कक्ष में प्रवेश करती हुई कुँवर को नृत्य महोत्सव में आमंत्रित करती है, किंतु पन्ना धाय सोना को मना करते हुए कहती हैं कि वे सो रहे हैं। सोना, पन्ना धाय से कहती है कि उन्होंने अपने कर्तव्य के आगे अपने मातृत्व को भुला दिया है अर्थात् कुँवर की संरक्षिका होने के कर्तव्य को तो वह भली-भाँति निभा रही हैं, किंतु अपने पुत्र चंदन का ध्यान नहीं रखती। पन्ना द्वारा बनवीर का राज्य होने की बात कहने पर सोना उन्हें महाराज बनवीर कहने के लिए कहती है और बताती है कि वे बागड़ के क्षेत्र से उसके लिए रेशम का झूल लेकर आए थे। वह पन्ना धाय से कहती है कि बनवीर उनकी तुलना अरावली पर्वत से करता है। वह कहता है कि पन्ना धाय ने कर्तव्यों के बोझ से स्वयं को जड़ बना दिया है। सोना, पन्ना धाय से कहती है कि पहाड़ बनकर ज़िओगी, तो बोझ समझी जाओगी, लेकिन अगर नदी बनकर रही, तो तुम्हारा बोझ भी सभी उठाएँगे। इसलिए सभी बंधनों को तोड़ते हुए तुम्हें नदी के समान बहना चाहिए।

### पन्ना धाय द्वारा सोना को बनवीर के अनुग्रह में अति उत्साहित न होने के लिए कहना

सोना द्वारा स्वयं को महल पर बोझ कहे जाने पर पन्ना धाय, सोना से कहती है कि बनवीर के अनुग्रह ने उसे पागल बना दिया है। जिस पर सोना तर्क देती हुई कहती है कि जैसे महाराणा विक्रमादित्य मल्ल क्रीड़ा में, नगरवासी दीपदान के महोत्सव में, तुम कुँवर के स्नेह में पागल हो, वैसे ही सभी किसी-न-किसी आदत के कारण पागल होते हैं। जिस प्रकार पर्वत बढ़कर छोटे नहीं होते, नदियाँ वापस नहीं लौटती, फूल खिलने के बाद कली नहीं बनते, उसी प्रकार यह पागलपन कभी खत्म नहीं होता, बढ़ता ही रहता है। वह कहती है कि वह भी शायद सामंत या महाराज की बेटी बने, लेकिन बढ़कर ही बनेगी, परंतु तुम धाय माँ थी और केवल धाय माँ ही रहोगी। सभी किसी-न-किसी आदत के कारण पागल होते हैं। पन्ना

धाय इसे भाग्य की बात कहती हैं, किंतु सोना उन्हें कहती है कि उसके पैरों में बंधे नूपुर जो उसके आने-जाने, उसके नृत्य करने, उसके रुकने आदि प्रत्येक कृत्य का संदेश देते हैं। अतः मनुष्य अपना भाग्य स्वयं निर्मित करता है।

वह कहती है कि महाराज बनवीर का साथ देना या न देना, उनकी इच्छा है। पन्ना धाय द्वारा उनके उत्सव में जाने को बनवीर की इच्छा होने की बात पूछने पर सोना उन्हें स्पष्टतः कुछ न कहकर चलने या कुँवर को भेजने के लिए कहती है। पन्ना धाय उसकी इच्छा को अस्वीकार करते हुए कहती हैं कि बनवीर ने अपनी कूटनीति (गुप्तचाल) से बड़े-बड़े योद्धाओं की हत्या की है। बनवीर को हत्यारा कहने का सोना विद्रोह कहती है। पन्ना धाय, सोना को समझाते हुए अति उत्साहित न होने और बनवीर के अनुग्रह से मुक्त होकर स्वतंत्र जीवन जीने के लिए कहती है।

### चंदन द्वारा माँ को कुँवर के विषय में बताना

पन्ना धाय का पुत्र चंदन कक्ष में प्रवेश करते हुए सोना के गुमसुम होकर जाने के विषय में पूछता है और साथ ही कुँवर के विषय में बताता है कि आजकल वे हमारे साथ नहीं खेलते और सोना को नृत्य करते हुए देखते रहते हैं। पन्ना धाय कुँवर को समझाने की बात कहते हुए उससे पूछती है कि वह किसकी ओर देखता है? चंदन द्वारा पहाड़ी के खरगोश को देखने की बात कहने पर पन्ना धाय कहती है कि वीरों को भी ऐसी ही होशियारी से धावा (हमला) करना चाहिए। जिस पर चंदन वीरों द्वारा नृत्य न देखने की बात कहते हुए कुँवर के विषय में पूछता है। पन्ना धाय, चंदन को भोजन करने के लिए कहती है, लेकिन वह अकेले भोजन न करने की जिद करता है, किंतु उनके समझाने के उपरांत वह मान जाता है।

### सामली का पन्ना को बनवीर के विषय में सूचित करना

चंदन के जाने के उपरांत सामली कक्ष में प्रवेश करते हुए पन्ना धाय को बताती है कि कुँवर के प्राण संकट में हैं। धाय माँ जब उससे पूछती है, तो वह बताती है कि बनवीर ने महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर दी है और वह कुँवर की हत्या करने के लिए कभी-भी आक्रमण कर सकता है। सामली बताती है कि बनवीर राज सिंहासन पर बिना किसी बाधा के अधिकार करना चाहता है, इसलिए वह सिंहासन के किसी भी उत्तराधिकारी को जीवित नहीं छोड़ेगा। सामली की बातें सुनकर पन्ना धाय चिंतित हो उठती है और वह निर्णय करती है कि चंदन को महल में छोड़कर वह रात को ही कुँवर को कुंभलगढ़ लेकर चली जाएगी। सामली उन्हें बताती है कि बनवीर के सैनिक महल को घेरने के लिए आ रहे हैं, जिस कारण उनका वहाँ से जाना मुश्किल है। वह कहती है कि कुँवर के प्राणों की रक्षा के लिए उन्हें सैनिकों व सामंतों की सहायता न मिलने पर वह स्वयं युद्ध करेगी, नहीं तो कुँवर के प्राणों की भिक्षा में माँग लेगी। सामली उन्हें बताती है कि बनवीर आज खून का प्यासा बना हुआ है और वह किसी भी समय आ सकता है। यह सुनकर पन्ना धाय कुँवर के प्राणों की रक्षा के लिए उपाय खोजने लगती है।

### कीरत बानी का कुँवर को बचाना

कीरत बानी महल में जूटे पतल उठाने का कार्य करता है। वह जैसे ही कुँवर के कक्ष में प्रवेश करता है, तो उसे पूरी घटना का पता चलता है। पन्ना धाय, कुँवर को बचाने की युक्ति निकालते हुए कीरत बानी को निर्देश देते हुए कहती है कि वह कुँवर को अपनी टोकरी में छिपाकर महल से बाहर ले जाएगा और बेरिस नदी पर उनसे मिलेगा। कीरत बानी, पन्ना धाय की आज्ञा का पालन करते हुए उनके कहे अनुसार, वह कुँवर को अपनी टोकरी में छिपाकर सुरक्षित महल से बाहर ले जाता है।

### पन्ना धाय का चंदन को कुँवर की शैया पर सुलाने का निर्णय लेना

कीरत बानी कुँवर को महल से सुरक्षित बाहर ले जाने के उपरांत सामली पन्ना धाय से कहती है कि अगर बनवीर को कुँवर न मिले, तो वह आपके प्राण ले लेगा और आपके जीवित न रहने के उपरांत कुँवर भी जीवित नहीं रह पाएँगे। तब पन्ना धाय इस समस्या का समाधान खोजते हुए निर्णय करती है कि वे अपने पुत्र चंदन को कुँवर की शैया पर सुलाएंगी और अपने पुत्र को अपने कर्तव्यों के लिए बलिदान कर देंगी। तब चंदन कक्ष में प्रवेश करता है और पन्ना धाय से कहता है कि आज उससे अकेले खाना नहीं खाया गया। पन्ना धाय उसे खाना खाने के लिए कहती है, लेकिन वह कुँवर के साथ ही अगले दिन ही खाना खाने की बात करता है। वह उनसे कहता है कि वह बड़ा होकर बहुत से राज्य जीतेगा और उनके नाम का मंदिर बनवाएगा। पन्ना धाय चंदन को चित्तौड़ के वीर पुरुषों बप्पा रावल, राजा नरवाहन, हंसपाल का स्मरण कराते हुए सोने के लिए कहती है तथा उसे लोरी गाकर सुलाने लगती है और स्वयं को उसकी हत्या का जिम्मेदार मानते हुए धिक्कारती है।

### बनवीर द्वारा चंदन की हत्या करना

चंदन के सोने के पश्चात् बनवीर मदिरा के नशे में लड़खड़ाते हुए कक्ष में प्रवेश करता है और नृत्य महोत्सव की भव्यता का बखान करता है। बनवीर, पन्ना धाय से कुँवर उदय सिंह के विषय में पूछता है, तो वह उनके सोए हुए होने की बात कहती है। बनवीर, पन्ना धाय को अपनी चाल में शामिल होने के लिए लालच देते हुए उन्हें एक जागीर देने और उनका मंदिर बनवाने का लालच देता है, किंतु वह बनवीर के प्रलोभन को अस्वीकार करते हुए उन्हें कहती है कि राजपूत क्षत्राणी व्यापार नहीं करतीं, वे तो केवल युद्ध करती हैं या चिता में जौहर होती हैं।

बनवीर अपनी रक्त से सनी हुई तलवार निकालते हुए कुँवर के कक्ष की ओर जाने लगता है, पन्ना धाय, बनवीर को रोकते हुए कुँवर के प्राणों की भिक्षा माँगती है। बनवीर अत्यधिक क्रूर होते हुए कुँवर की शैया के पास पहुँचकर पन्ना धाय को आगे से हटने के लिए कहता है, लेकिन वह अपनी कटार निकालकर उस पर वार करती है। बनवीर उनके वार को अपनी ढाल से रोककर कठोर प्रहार करते हुए चंदन की हत्या कर देता है।

### एकांकी की सार्थकता व उद्देश्य

दीपदान ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित एक आदर्श एकांकी है। दीपदान एकांकी का आरंभ दीपदान उत्सव से होता है। बनवीर इसी उत्सव की चकाचौंध में नगरवासियों को डालकर राणा साँगा के छोटे पुत्र और चित्तौड़ के उत्तराधिकारी कुँवर उदयसिंह को समाप्त करने का षड्यंत्र रचता है। कुँवर के शयन कक्ष में पहुँचकर वह कहता है “मैं भी यमराज को इस दीपक का दान करूँगा। यमराज! लो इस दीपक को। यह मेरा दीपदान है।” वहीं दूसरी तरफ पन्ना धाय माँ राणा परिवार के कुलदीपक को बचाने के लिए अपने पुत्र चंदन को बलिवेदी पर चढ़ा देती है। अतः इस प्रकार शीर्षक ‘दीपदान’ सर्वथा उपयुक्त है। ‘दीपदान’ एकांकी का उद्देश्य पन्ना धाय के माध्यम से लोगों को स्वामिभक्ति तथा देश भक्ति का संदेश देना है। साथ ही लोगों में वफादारी, त्याग, दूरदर्शिता तथा वीरता आदि गुणों का विकास करना है।

## शब्दार्थ

**पृष्ठ सं. 83** धाय-बच्चे को पालने वाली सेविका (a foster mother); परिचारिका-सेविका (maid); कक्ष-कमरा (room); शैया-पलंग (bed)।

**पृष्ठ सं. 85** लता-बेल (creeper); उद्यत-तैयार (ready); प्रस्थान-जाना (departure)।

**पृष्ठ सं. 86** अट्टहास-जोर की हँसी, ठहाका (loud laughter); नूपुर-घुंघरू, पायल (anklet)।

**पृष्ठ सं. 87** रेशम की झूल-रेशम की चुनरी (chunari of silk); थिरकना-नाचना (dancing); भवसागर-संसार रूपी सागर (world like ocean); उमंग-उत्साह (exultation)।

**पृष्ठ सं. 88** उषा-सूर्य निकलने की लाली, भोर (early morning); अंतःपुर-स्त्रियों के रहने का स्थान (a harem); प्रलाप-गपशप (gossip)।

**पृष्ठ सं. 89** कूटनीति-गुप्त चाल (diplomacy); अतृप्त-अपूर्ण इच्छाएँ (dissatisfied)।

**पृष्ठ सं. 91** दर्शन-मुलाकात, मुआयना (visit); धावा-हमला (attack); रूठकर-गुस्सा होना (annoy)।

**पृष्ठ सं. 93** सर्वनाश-सब कुछ नष्ट हो जाना (total destruction); त्रिशूल-लोहे का तीन नोकों वाला एक हथियार (trident); कुसमय-बुरा समय (a bad time); शंका-शक (doubt)।

**पृष्ठ सं. 94** निष्कंटक-बाधा रहित (free from enemies); असंतुष्ट-जो संतुष्ट न हो (dissatisfied)।

**पृष्ठ सं. 96** पैसारा-प्रवेश (entrance); ब्यारू-संध्या के समय किया जाने वाला भोजन (dinner); सगर जहान-सारा संसार (all world)।

**पृष्ठ सं. 99** सामंत-बड़ा जमींदार (feudal lord); श्मशान-मृतकों को जलाने का स्थान (cemetery); उपाय-तरकीब (solution)।

**पृष्ठ सं. 101** विचित्र-अनोखा (unique); भिक्षा-भीख (begging); दैत्य-राक्षस (demon); वज्र-बहुत कठोर (very hard)।

**पृष्ठ सं. 103** परोसना-थाली आदि में भोजन रखना (serve); आखेट-शिकार (hunting); रक्त-खून (blood)।

**पृष्ठ सं. 105** स्मरण-याद करना (reminder); शूल-काँटा, चुभन (colic); आराध्य-पूजा के योग्य, पूज्यनीय (worshipful)।

**पृष्ठ सं. 111** अबोध-मासूम (innocent); कंटक-काँटा (thorn); मूर्च्छित-बेहोश हो जाना (unconscious)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. तुम कभी रात में अकेले नहीं जाओगे। चारों तरफ जहरीले सर्प घूम रहे हैं। किसी समय भी तुम्हें डस सकते हैं। **पृष्ठ सं. 85**

(क) वक्ता एवं श्रोता का परिचय देते हुए बताइए कि कौन किसको रात में अकेले जाने से मना कर रहा है? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत कथन की वक्ता 'पन्ना धाय' है। वह कुँवर उदय सिंह की संरक्षिका है तथा श्रोता 'कुँवर उदय सिंह' हैं। वह चित्तौड़ के स्वर्गीय राजा महाराणा साँगा के सबसे छोटे पुत्र हैं और चित्तौड़ के एकमात्र उत्तराधिकारी हैं, उनकी आयु केवल 14 वर्ष है। यहाँ पन्ना धाय कुँवर उदयसिंह को रात में अकेले दीपदान के उत्सव को देखने जाने से मना कर रही है।

(ख) "चारों तरफ जहरीले सर्प घूम रहे हैं।" इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** "चारों तरफ जहरीले सर्प घूम रहे हैं।" इस कथन का आशय यह है कि कुँवर उदय सिंह महल में सुरक्षित नहीं हैं, क्योंकि वहाँ उनके कई दुश्मन हैं, जो हमेशा अवसर की तलाश में रहते हैं। वे अवसर पाते ही कुँवर को डसने अर्थात् हानि पहुँचाने का प्रयास कर सकते हैं। इस प्रकार यहाँ कुँवर के दुश्मनों की तुलना साँप से की गई है।

(ग) वक्ता श्रोता के प्रति हमेशा चिंतित क्यों रहती है? (3)

**उत्तर** वक्ता (पन्ना धाय) श्रोता (कुँवर उदय सिंह) की सुरक्षा के प्रति हमेशा चिंतित रहती है, क्योंकि वह केवल उसकी धाय माँ ही नहीं

है, बल्कि संरक्षिका भी है। वह कुँवर को सुरक्षित रखना चाहती थी ताकि चित्तौड़ को उसका सही उत्तराधिकारी मिल सके। वह जानती है कि बनवीर कुँवर उदय सिंह को राज सिंहासन प्राप्त करने के मार्ग में बाधा मानता है, इसलिए वह कुँवर को किसी भी प्रकार अपने रास्ते से हटाना चाहता है।

राज सिंहासन के लालच में वह क्रूर-से-क्रूर कार्य करने से भी पीछे नहीं हटेगा। यहाँ तक कि वह कुँवर की हत्या भी कर सकता है, ताकि बाधा रहित होकर राज सिंहासन प्राप्त कर सके। इन्हीं सब बातों के कारण पन्ना धाय को कुँवर उदय सिंह की चिंता रहती थी।

(घ) दीपदान कहाँ और क्यों हो रहा था? उत्सव का वर्णन कीजिए। (3)

**उत्तर** दीपदान उत्सव का आयोजन बनवीर द्वारा बनाए गए मयूर पक्ष कुंड में किया जा रहा था। बनवीर चाहता था कि सभी नगरवासी दीपदान उत्सव की चकाचौंध में डूब जाएँ और वह षड्यंत्र रचकर कुँवर उदय सिंह को समाप्त कर चित्तौड़ पर राज्य कर सके।

दीपदान उत्सव मयूर पक्ष कुंड में तुलजा के सामने मनाया जा रहा था। नगर की सुंदर-सुंदर लड़कियाँ दीपदान करके नाच और गा रही थीं। पूरा माहौल अत्यंत मनमोहक था। छोटे-छोटे दीपक कुंड में नाचते हुए से प्रतीत हो रहे थे।

2. कुँवर का रूठना भी मुझे अच्छा लगता है। मना लूँगी। नाच-गान, दीपदान। इसी से चित्तौड़ की रक्षा होगी। चित्तौड़ में यह बहुत हो चुका, बहुत हो चुका और अब तो बनवीर का राज्य है।

**पृष्ठ सं. 85, 86**

(क) वक्ता कौन है और कुँवर क्यों रूठ गए थे? (2)

**उत्तर** वक्ता पन्ना धाय है। कुँवर, पन्ना धाय से नृत्य उत्सव में चलने के लिए कहते हैं, लेकिन पन्ना धाय द्वारा मना करने के कारण कुँवर पन्ना धाय से रूठ गए और ज़मीन पर ही सो गए।

(ख) वक्ता का कुँवर से क्या संबंध था? कुँवर का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (2)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् पन्ना, कुँवर की धाय माँ होने के साथ-साथ उनकी संरक्षिका भी थी। कुँवर चित्तौड़ के उत्तराधिकारी थे, किंतु अवयस्क होने के कारण महाराणा विक्रमादित्य राज-पाट चलाते थे। कुँवर हठी स्वभाव के थे।

(ग) “नाच-गान, दीप-दान! इसी से चित्तौड़ की रक्षा होगी?” इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि वक्ता ने यह क्यों कहा? (3)

**उत्तर** “नाच-गान, दीप-दान! इसी से चित्तौड़ की रक्षा होगी?” पंक्ति का आशय है कि क्या सिर्फ नाचने-गाने, दीप-दान करने और उत्सव मनाने से ही चित्तौड़ राज्य की शत्रुओं से रक्षा हो पाएगी? वक्ता ने यह उक्ति इसलिए कही, क्योंकि चित्तौड़ जो वीरों, रणबाँकुरों और योद्धाओं का गढ़ था। आज उस स्थान पर विलासिता से युक्त उत्सव मनाया जा रहा था, इसलिए पन्ना धाय ने विलासी, लोभी, भोगी शासकों पर कटाक्ष करने के लिए यह उक्ति कही थी।

(घ) “अब तो बनवीर का राज्य है।” वक्ता ने ऐसा क्यों कहा? (3)

**उत्तर** “अब तो बनवीर का राज्य है।” वक्ता ने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि बनवीर, एक लोभी, भोगी, षड्यंत्रकारी और विश्वासघाती चरित्र का व्यक्ति है। वह दिन-रात भोग-विलास में डूबा रहता है। वह एक छल-कपट वाला व्यक्ति है, जो षड्यंत्र रचकर संपूर्ण साम्राज्य पर अपना अधिकार करना चाहता है और अगर ऐसे दुश्चरित्र वाले व्यक्ति शासन करेंगे, तो नगर में अव्यवस्था का होना स्वाभाविक है।

**3.** महल में धाय माँ अरावली पहाड़ बनकर बैठ गई है। अरावली पहाड़ (हँसती है) तो तुम लोग बनास नदी बनकर बहो न! खूब नाचो, गाओ। यों आज कोई उत्सव का दिन नहीं था, फिर भी उन्होंने कहा, मेरे बनवाए हुए मयूर पक्ष कुंड में दीपदान करो। **पृष्ठ सं. 87**

(क) वक्ता कौन है? उसकी चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (2)

**उत्तर** वक्ता रावल सरूप सिंह की पुत्री सोना है। वह अत्यंत सुंदर, कुशल नृत्यांगना, वाक्पटु व नटखट स्वभाव वाली युवती है। उसके सौंदर्य और नृत्य को देखकर कुँवर सिंह उसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं।

(ख) “तो तुम लोग बनास नदी बनकर बहो न”—पंक्ति में ‘तुम’ शब्द किसके लिए और किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है? (2)

**उत्तर** “तो तुम लोग बनास नदी बनकर बहो न”—पंक्ति में ‘तुम’ शब्द ‘नृत्यांगना’ सोना के लिए प्रयुक्त हुआ है।

सोना पन्ना धाय को बताती है कि बनवीर तुम्हें अपने मार्ग की बाधा मानता है। बनवीर सोना से कहता है कि तुम बनास नदी बनकर बहो (और महल में खूब नाचो-गाओ, उत्सव मनाओ) ताकि इस उत्सव का लाभ उठाकर मैं अपने मार्ग की बाधा को दूर कर सकूँ।

(ग) किसने पन्ना धाय की तुलना अरावली पहाड़ से की और क्यों? (3)

**उत्तर** पन्ना धाय की तुलना बनवीर ने अरावली पहाड़ से की, क्योंकि उन्होंने अपनी सभी भावनाओं को जड़ बना लिया था और वह अपनी कर्तव्यनिष्ठता से कुँवर के प्राणों की रक्षा में तत्पर थीं। वहीं

दूसरा कारण यह था कि बनवीर, कुँवर उदय सिंह की हत्या करना चाहता था और पन्ना धाय उसकी राह में पहाड़ की तरह अडिग होकर उसकी मंशाओं को पूर्ण नहीं होने दे रही थी।

(घ) कोई उत्सव न होने पर भी उत्सव मनाया गया, उसका कारण क्या था? (3)

**उत्तर** कोई उत्सव न होने पर भी उत्सव मनाया गया, उसका कारण यह था कि बनवीर चित्तौड़ पर अधिकार करना चाहता था। कुँवर चित्तौड़ के उत्तराधिकारी थे, कुँवर की हत्या किए बिना उसकी इस मंशा का पूरा होना असंभव था, इसलिए उसने उत्सव का आयोजन कर एकांत का लाभ उठाकर कुँवर की हत्या करने की योजना बनाई थी।

**4.** “आज कुसमय नाच-रंग की बात सुनकर मेरे मन में शंका हुई थी, इसलिए मैंने कुँवर को वहाँ जाने से रोक दिया था। संभव था कि कुँवर वहाँ जाते और बनवीर अपने सहायकों से ~~बृष्ट सं. 87~~ [2018]

(क) उपरोक्त कथन का वक्ता कौन है? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। (2)

**उत्तर** उपरोक्त कथन का वक्ता ‘पन्नाधाय’ है। ‘पन्ना’ खीचो जाति की तीस वर्षीय राजपूतानी महिला है। वह उदय सिंह की संरक्षिका है। वह एक धैर्यवान, दूरदर्शिता और विकट क्षणों में भी संयम रखने वाली महिला है।

(ख) नाच-रंग का आयोजन किसने और किस उद्देश्य से किया था? (2)

**उत्तर** नाच-रंग का आयोजन बनवीर ने किया था। उसने यह सब इसलिए किया ताकि नगर निवासियों का ध्यान नाच-रंग में ही रहे और वह मौका देखकर कुँवर उदय सिंह की हत्या कर सके। अतः उसने उदय सिंह की हत्या करने के उद्देश्य से ऐसा किया।

(ग) बनवीर कौन है? उसका परिचय देते हुए उसका चरित्र-चित्रण कीजिए। (3)

**उत्तर** ‘बनवीर’ महाराणा के भाई पृथ्वीराज का दासी पुत्र है। वह 32 वर्षीय क्रूर, विलासी, छल-कपट वाला पुरुष पात्र है। बनवीर की क्रूरता का परिचय उसके द्वारा राज-सिंहासन हथियाने के लिए निर्ममता से किए महाराणा, विक्रमादित्य और चंदन की हत्या से मिलता है। वह छल से षड्यंत्र रचकर संपूर्ण साम्राज्य पर अधिकार करना चाहता है। इस प्रकार वह एक विश्वासघाती प्रवृत्ति का पात्र है। एकांकी में उसका क्रूर एवं स्वार्थी चरित्र उभर कर आता है।

(घ) ‘दीपदान’ एकांकी के शीर्षक की सार्थकता बताइए तथा एकांकी के माध्यम से एकांकीकार ने क्या शिक्षा दी है? (3)

**उत्तर** दीपदान एकांकी का आरंभ दीपदान के उत्सव से होता है। बनवीर, कुँवर उदय सिंह के शयनकक्ष में पहुँचकर कहता है कि “मैं भी यमराज को इस दीपक का दान करूँगा। यमराज! लो इस दीपक को। यह मेरा दीपदान है।” वहीं दूसरी तरफ पन्ना धाय महाराणा परिवार के कुलदीपक को बचाने के लिए अपने पुत्र चंदन को बलिवेदी पर चढ़ा देती है। अतः इस एकांकी का शीर्षक ‘दीपदान’ सर्वथा उपयुक्त है। इस एकांकी के माध्यम से एकांकीकार ने यह शिक्षा दी है कि हमें भी पन्ना धाय की तरह स्वामिभक्ति और देशभक्ति की भावना को अपनाना चाहिए।



5. सर्प की भाँति उसकी भी दो जीभें हैं जो एक रक्त से नहीं बुझेंगी।  
उसे दूसरा रक्त भी चाहिए। पृष्ठ सं. 95, 96

(क) प्रस्तुत अवतरण का वक्ता और श्रोता कौन है तथा वे किस विषय में बात कर रहे हैं? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण की वक्ता राजमहल की परिचारिका सामली है तथा श्रोता पन्ना धाय है। वे दोनों दासी पुत्र बनवीर के विषय में बात कर रहे हैं। सामली पन्ना धाय को बताती है कि कुँवर के प्राण संकट में हैं। बनवीर कुँवर उदय सिंह की हत्या करने के लिए कभी भी आक्रमण कर सकता है।

(ख) वक्ता की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (2)

**उत्तर** वक्ता सामली चित्तौड़ के अंतःपुर की 28 वर्षीय परिचारिका है। वह राजवंश के प्रति वफादार और पन्ना धाय की विश्वासपात्र महिला है। सामली की वफादारी का ही परिणाम होता है कि कीरत बानी के अतिरिक्त केवल सामली को ही पन्ना धाय की रणनीति का पता होता है।

(ग) “सर्प की तरह उसकी भी दो जीभें हैं”—इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** “सर्प की तरह उसकी भी दो जीभें हैं”—इस कथन का आशय यह है कि जिस प्रकार साँप की दो जीभें होती हैं, उसी प्रकार बनवीर की भी दो जीभें हैं। उसकी प्यास एक के रक्त से नहीं बुझेगी, उसे दोनों का खून चाहिए। पहला खून उसने महाराणा विक्रमादित्य का किया है। अब वह अपनी दूसरी प्यास बुझाने के लिए कुँवर उदयसिंह का खून अवश्य करेगा। इसलिए वह कभी-भी कुँवर की हत्या कर सकता है।

(घ) प्रस्तुत एकांकी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? (3)

**उत्तर** प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से हमें यह शिक्षा मिलती है कि पन्ना धाय की तरह हमें भी स्वामिभक्ति और देशभक्ति की भावना को अपनाना चाहिए तथा अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने से भी पीछे नहीं हटना चाहिए। इसके साथ ही एकांकी में त्याग, वफादारी तथा वीरता जैसे गुणों को अपनाने की शिक्षा भी दी गई है। इनके माध्यम से समाज में उच्च आदर्श स्थापित किए जा सकते हैं।

6. मुझे बल दो कि मैं राजवंश की रक्षा में अपना रक्त दे सकूँ। यही राजपूतानी का व्रत है। यही राजपूतानी की मर्यादा है। यही राजपूतानी का धर्म है। मेरा हृदय वज्र बना दो! माता के हृदय के स्थान पर पत्थर रख दो, जिससे ममता का स्रोत बंद हो जाए। पृष्ठ सं. 102

(क) वक्ता ने राजवंश की रक्षा के लिए क्या निर्णय लिया? (2)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् पन्ना धाय ने कुँवर के प्राणों की रक्षा करने के लिए अपने पुत्र चंदन को बलिदान कर राजवंश के प्रति अपने कर्तव्य तथा चित्तौड़ के उत्तराधिकारी को बचाने का निर्णय लिया था।

(ख) वक्ता ने कुँवर के प्राणों की रक्षा किस प्रकार की? (2)

**उत्तर** वक्ता पन्ना धाय ने कुँवर को कीरत बानी की टोकरी में छिपाकर उन्हें महल से बाहर निकलवा दिया तथा चंदन को उनकी शैया पर सुलाकर कुँवर के प्राणों की रक्षा की।

(ग) राजपूतानी कौन थी और वह किस धर्म को पूरा करने की बात कह रही थी? (3)

**उत्तर** राजपूतानी पन्ना धाय थी, जो खीचो राजपूत घराने से संबंध रखती थी। पन्नाधाय राजपूत क्षत्राणी होने का धर्म निभाने की बात

कह रही थी, क्योंकि क्षत्रिय रण में वीरगति को प्राप्त होते हैं, किंतु अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटते और पन्ना धाय का इस समय केवल एक ही कर्तव्य था, कुँवर के प्राणों की रक्षा करना, जिसको उसने अपना धर्म माना था। इसी धर्म को पूरा करने की बात वह कह रही थी।

(घ) “मेरा हृदय वज्र बना दो।” वक्ता ने यह क्यों कहा? (3)

**उत्तर** प्रस्तुत पंक्ति वक्ता ने इसलिए कही, क्योंकि पन्ना धाय ने कुँवर की रक्षा के लिए अपने पुत्र का बलिदान करने का निर्णय लिया था और एक माँ के लिए अपनी संतान का बलिदान करना अत्यंत कठिन कार्य है, इसलिए उसने अपने हृदय को वज्र के समान कठोर करने की बात कही, ताकि उस पर किसी प्रकार की भावनाओं का प्रभाव न पड़े और वे अपने कर्तव्य को पूर्ण निष्ठा के साथ पूरा कर सकें।

7. तुम राज्य करो, चित्तौड़ पर, मेवाड़ पर, राजपूताने पर राज्य करो, पर कुँवर उदय सिंह को छोड़ दो। पृष्ठ सं. 110

(क) श्रोता कौन है? वह वक्ता के कक्ष में क्यों आया था? (2)

**उत्तर** श्रोता क्रूर और अत्याचारी बनवीर है। वह वक्ता पन्ना धाय के कक्ष में कुँवर उदय सिंह की हत्या करने के उद्देश्य से आया था, क्योंकि कुँवर की हत्या करके वह चित्तौड़ पर पूर्ण अधिकार स्थापित करके स्वयं राजा बनना चाहता था।

(ख) वक्ता किसको छोड़ने की बात कह रही है और क्यों? (2)

**उत्तर** वक्ता कुँवर उदय सिंह के प्राणों को छोड़ने की बात कह रही है, क्योंकि वह चित्तौड़ का उत्तराधिकारी था, वहीं दूसरा कारण यह था कि कुँवर की शैया पर चंदन सोया हुआ था, जो पन्ना धाय का पुत्र था।

(ग) श्रोता का चरित्र चित्रण कीजिए। (3)

**उत्तर** बनवीर महाराणा के भाई पृथ्वीराज का दासी-पुत्र था। वह बत्तीस वर्षीय क्रूर, विलासी, छल-कपट वाला निर्मम और षड्यंत्रकारी पात्र था। बनवीर एक अत्यंत महत्वाकांक्षी पुरुष था, जो दूसरे के राज्य पर अधिकार करने के लिए उसी से विश्वासघात करता है और निर्ममता से महाराणा विक्रमादित्य और चंदन की हत्या कर देता है।

(घ) क्या वक्ता कुँवर उदय सिंह को बनवीर के हाथों से बचा पाई यदि हाँ तो कैसे? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् पन्ना धाय ने बनवीर के हाथों से कुँवर उदय सिंह के प्राणों की रक्षा तो अवश्य कर ली और अपने उद्देश्य में सफल भी हो गई, किंतु इसके लिए उन्हें अपने पुत्र चंदन का बलिदान करना पड़ा, जिसको उन्होंने कुँवर की शैया पर बनवीर को धोखा देने के लिए सुलाया हुआ था। इस प्रकार, उन्होंने अपना दीपदान करके राजवंश के दीप की रक्षा की।

8. “यही है, यही है मेरे मार्ग का कंटक। आज मेरे नगर में स्त्रियों ने दीपदान किया है। मैं भी यमराज को इस दीपक का दान करूँगा। यमराज! लो इस दीपक को यह मेरा दीपदान है।” पृष्ठ सं. 111

(क) प्रस्तुत अवतरण में वक्ता कौन है? वह किससे वार्तालाप कर रहा है? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण में वक्ता बनवीर है। वह कुँवर उदय सिंह की संरक्षिका पन्ना धाय से वार्तालाप कर रहा है। वह कुँवर की शैया के पास खड़ा होकर कुँवर के विषय में कहता है कि यही मेरे मार्ग की बाधा है। अतः इसे मारकर मैं यमराज को इस दीपक (कुँवर) का दान करूँगा।



(ख) 'मार्ग का कंटक' किसे कहा गया है तथा क्यों? (2)

**उत्तर** अवतरण में बनवीर ने 'मार्ग का कंटक' कुँवर उदय सिंह को कहा है, क्योंकि वह चित्तौड़ पर अधिकार करना चाहता है और कुँवर की हत्या किए बिना वह राज सिंहासन प्राप्त नहीं कर सकता।

(ग) "यह मेरा दीपदान है।" इस पंक्ति में 'यह' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? वास्तविक रूप से किसने दीपदान किया था? (3)

**उत्तर** अवतरण में 'यह मेरा दीपदान है।' पंक्ति में 'यह' शब्द कुँवर उदय सिंह के लिए प्रयुक्त किया गया है, किंतु बनवीर को इस बात की जानकारी नहीं थी कि कुँवर की शैया पर पन्ना धाय का पुत्र चंदन सोया हुआ है। राज्य के उत्तराधिकारी की रक्षा के लिए पन्ना धाय स्वयं के पुत्र का बलिदान करने का निर्णय लेती है।

अतः वास्तविक रूप से पन्ना धाय ने राज्य के प्रति वफादारी प्रकट करते हुए स्वयं के दीप (चंदन) का दान किया था।

(घ) अवतरण का 'प्रसंग' उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** राज्य का उत्तराधिकारी कुँवर उदय सिंह था। दासी पुत्र बनवीर जान गया था कि कुँवर के बड़े होने पर उससे राज्य की देखरेख की जिम्मेदारी छिन जाएगी।

बनवीर चित्तौड़ के राज्य पर अधिकार करना चाहता था, लेकिन कुँवर उदय सिंह की हत्या किए बिना उसकी यह इच्छा पूर्ण नहीं हो सकती थी। इसलिए वह उनकी हत्या करने के लिए उनके कक्ष में आता है और अनजाने में पन्ना धाय के पुत्र चंदन की हत्या कर देता है।

## अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. द्रौपदी के चीर की तरह। आज प्रातःकाल उन्होंने मुझे बुलाया और कहा... धाय माँ तुम बुरा तो नहीं मानोगी? पृष्ठ सं. 87

(क) प्रस्तुत अवतरण में वक्ता और श्रोता कौन हैं? वे किस संदर्भ में बात कर रहे हैं? (2)

(ख) वक्ता ने द्रौपदी के चीर के समान किसे बताया और क्यों? (2)

(ग) 'धाय माँ तुम बुरा तो नहीं मानोगी' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

(घ) 'उन्होंने मुझे बुलाया और कहा...' पंक्ति में उन्होंने शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है तथा उन्होंने श्रोता से क्या कहा? (3)

2. 'ये नूपुर मेरे पैरों में पड़े हैं, तो इनका भी भाग्य है। मेरे पैरों की गति में गीत गाते हैं, तो वह भी इनका भाग्य है। मेरे आगमन का संदेश पहले ही पहुँचा देते हैं, तो वह भी इनका भाग्य है और जब मेरे पैर रुक जाते हैं, तो ये मौन हो जाते हैं, वह भी इनका भाग्य है। भाग्य तो सबका होता है, धाय माँ।' पृष्ठ सं. 88

(क) अवतरण में वक्ता कौन हैं? उसके चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (2)

(ख) पैरों में पड़े नूपुर का भाग्य क्या है? अवतरण के आधार पर बताइए। (2)

(ग) "भाग्य तो सबका होता है।" वक्ता इस पंक्ति के माध्यम से क्या कहना चाहता है? (3)

(घ) प्रस्तुत अवतरण का प्रसंग (संदर्भ) स्पष्ट कीजिए। (3)

3. न जाने किस हवा का झोंका तुम्हारे गीत की इन लहरों को निगल जाएगा। यह सुख और सुहाग पास-पास उठे हुए दो बुलबुलों की तरह बिना सूचना दिए फूट जाएगा। चित्तौड़ राग-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है। पृष्ठ सं. 89

(क) वक्ता कौन हैं? वक्ता किसको समझाने की कोशिश कर रहा है? (2)

(ख) श्रोता कौन है और उसे इस प्रकार से समझाने के पीछे वक्ता का क्या उद्देश्य था? (2)

(ग) "चित्तौड़ राग-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है।" पंक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए वक्ता ने ऐसा क्यों कहा? (3)

(घ) प्रस्तुत अवतरण का प्रसंग बताते हुए वक्ता का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (3)

4. हाय! सर्वनाश हो रहा है। क्या मेवाड़ को ऐसे ही दिन देखने थे? क्या चित्तौड़ के साके का यही फल होना था? हाय! क्या हो रहा है? तुलजा भवानी। तुम चित्तौड़ की देवी हो। कैसे कहूँ कि तुम्हारे त्रिशूल में अब शक्ति नहीं रही। पृष्ठ सं. 93

(क) वक्ता कौन हैं? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। (2)

(ख) श्रोता कौन हैं? वक्ता, श्रोता से क्या कहना चाहती है? (2)

(ग) वक्ता किस बात से चिंतित है और क्यों? (3)

(घ) श्रोता के प्रति वक्ता का स्वभाव कैसा है तथा कथा में उसने क्या भूमिका निभाई और क्या वह श्रोता की कुछ सहायता कर पाई? स्पष्ट कीजिए। (3)

5. "कुँवर जी की रक्षा (सोचते हुए) कुँवर जी की रक्षा? अवश्य होगी। अब मेवाड़ का उत्तराधिकारी एक यही तो राजपूती-रक्त है।" दासी पुत्र बनवीर को चित्तौड़ सहन नहीं कर सकेगा। पृष्ठ सं. 94

(क) प्रस्तुत अवतरण में वक्ता कौन हैं? उसकी मनोदशा का वर्णन कीजिए। (2)

(ख) "मेवाड़ का उत्तराधिकारी एक यही तो राजपूती-रक्त है।" यह पंक्ति किसके संदर्भ में कही गई है तथा क्यों? (2)

(ग) "दासी पुत्र बनवीर को चित्तौड़ सहन नहीं कर सकेगा।" इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

(घ) वक्ता किस विषय में सोच रहा है? इसके पीछे उसकी क्या मंशा थी? (3)

6. "तब मैं स्वयं तलवार लेकर कुँवर की रक्षा करूँगी। भैरवी बनकर युद्ध करूँगी। मरते-मरते मैं तलवार के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगी। पृष्ठ सं. 95

(क) प्रस्तुत अवतरण में वक्ता कौन हैं? वह किससे अपनी बात कह रही है? (2)

(ख) वक्ता को स्वयं तलवार उठाने की आवश्यकता क्यों आन पड़ी? (2)

(ग) 'भैरवी बनकर युद्ध करूँगी' का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

(घ) उपरोक्त अवतरण का मूल भाव स्पष्ट कीजिए। (3)

# नया रास्ता (सुषमा अग्रवाल)

## उपन्यास परिचय

‘नया रास्ता’ नामक उपन्यास लेखिका सुषमा अग्रवाल द्वारा लिखा गया है, जिसमें एक ओर जहाँ दहेज रूपी सामाजिक कलंक और उसके दुष्प्रभावों को सबलता से उभारा गया है, वहीं दूसरी ओर इस कलंक से छुटकारा पाने का उपाय भी सुझाया गया है। इस उपन्यास की नायिका, जो खुद दहेज की कुप्रथा का शिकार होती है, निराश हुए बिना एक नया रास्ता अपनाती है और ‘जहाँ चाह, वहाँ राह’ की उक्ति चरितार्थ करते हुए अपना लक्ष्य ही नहीं हासिल करती है, बल्कि समाज के दहेज लोभियों को बहुत कुछ सोचने पर विवश कर देती है। सचमुच इस नए रास्ते के सहारे नायिका ने अपनी मंजिल को हासिल कर लिया।

## लेखिका परिचय

लेखिका सुषमा अग्रवाल का जन्म दिल्ली में हुआ था। वे दिल्ली में ही पली-बढ़ीं। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि ग्रहण की। उनका विवाह विजय अग्रवाल से हुआ। विवाह के बाद सुषमा कनाडा चली गईं। कालांतर में उनके दो पुत्र पैदा हुए। सुषमा ने कई क्षेत्रों में काम किया। उन्होंने कनाडा ट्रस्ट में बैंक टेलर के रूप में अपने कार्य की शुरुआत की। बाद में बीमा, म्यूचुअल फंड आदि की सलाहकार का कार्य भी किया।

वर्तमान समय में सुषमा अग्रवाल ऑन्टारियो स्थित ओक विले, कनाडा में अपने पति के साथ रह रही हैं। उन्हें अपने पोते-पोतियों के साथ खेलना और मानव व्यवहार से जुड़ी ‘आध्यात्मिक शिक्षाएँ पढ़ना पसंद है। वे पेरेंट्स, फैमिलीज एण्ड लेसबियन्स एण्ड गेज़ (पी.एफ.एल.ए.जी.) के साथ निरंतर अपनी सक्रियता बनाए हुए हैं।

## पात्र परिचय

‘नया रास्ता’ उपन्यास के पात्रों का परिचय दो भागों में बाँटकर दिया जा रहा है

### मुख्य पात्र

- **मीनू** यह नवयुवती उपन्यास की प्रमुख पात्र एवं दयाराम की सबसे बड़ी संतान है। उपन्यास की पूरी कथा मीनू के आस-पास ही घूमती है। मीनू का रंग साँवला होने के कारण व दहेज की कमी होने के कारण उसका विवाह कई बार टूट जाता है, जिससे वह शुरुआत में निराश हो जाती है, लेकिन फिर वह आगे की पढ़ाई पूरी कर वकील बनने का निश्चय करती है और एक प्रतिष्ठित वकील बन समाज में आदर व सम्मान पाती है।

- **अमित** उपन्यास का प्रमुख पुरुष पात्र एवं अपने माता-पिता का आज्ञाकारी पुत्र, जो चाहकर भी मीनू से विवाह के लिए हाँ नहीं कर पाता, परंतु अंत में अपनी भूल सुधार लेता है और मीनू का हाथ माँगने मीनू के घर जाता है और उसी से विवाह करता है। वह एक सच्चा प्रेमी है, जो मीनू को हृदय से प्रेम करता है।
- **दयाराम** उपन्यास की नायिका मीनू के पिता, सीधे-सादे एवं सरल इंसान हैं। वे बेटियों की उच्च शिक्षा के पक्षधर पर समाज भीरु व्यक्ति हैं। बड़ी बेटी मीनू के स्थान पर छोटी बेटी आशा का विवाह पहले करने की बात पर भी उन्हें समाज में बदनामी का भय सताने लगता है।
- **मायाराम जी** उपन्यास के नायक अमित के पिता तथा गुणों के पारखी हैं। उनका व्यक्तित्व अपनी पत्नी के व्यक्तित्व के सामने दब जाता है पर अंत में वे अमित की शादी उसकी पसंद के अनुरूप मीनू से ही करते हैं।
- **अमित की माँ** अमित की माँ दहेज लोभी महिला हैं, जो पाँच लाख रुपये के लालच में मीनू से अमित के विवाह की जगह सरिता से करने को बाध्य कर देती हैं, लेकिन जब धनीमल जी विवाह के बाद अमित व सरिता के अलग फ्लैट में जाकर रहने की बात करते हैं, तब अमित की माँ को अपनी गलती का एहसास होता है।
- **मीनू की माँ** एक समझदार, धैर्यवान और स्नेहमयी गृहिणी हैं, जो कदम-कदम पर बच्चों का साथ देती हैं। वे मानती हैं कि बेटी पराया धन होती है।
- **नीलिमा** यह उपन्यास नायिका मीनू की सहेली है, जो मीनू के घर के पास ही रहती है। नीलिमा सुंदर है और अपने विवाह के बाद भी मीनू से मिलती-जुलती रहती है।

### गौण पात्र

- **आशा** मीनू की छोटी बहन, परंतु रूप-रंग में मीनू से अधिक सुंदर है। इसका विवाह मीनू के विवाह से पहले कर दिया जाता है।
- **रोहित** मीनू का छोटा भाई, जो इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बाद दिल्ली में नौकरी करने लगता है।
- **माया** मीनू की सहेली जो मीनू के साथ मेरठ के छात्रावास में रहकर वकालत की पढ़ाई करती है।
- **सुरेंद्र** मीनू की सहेली नीलू (नीलिमा) के पति और अमित के मित्र हैं। उपन्यास में समय-समय पर इनकी उपस्थिति होती रहती है।
- **अशोक** मीनू की सहेली नीलिमा का भाई है। वह मीनू को मन ही मन चाहता है और विवाह भी करने की इच्छा रखता है।
- **बुआ जी** पुराने एवं घटिया विचारों वाली महिला, जिनके कटु शब्द मीनू को आहत कर देते हैं।

- **धनीमल** नाम के अनुरूप ही धनी, सरिता के पिता, जो पाँच लाख रुपये का लोभ देकर अमित के परिवार वालों पर अपना हक जमा लेते हैं।
- **सरिता** धनीमल की पुत्री, रंग दबा हुआ, घर-गृहस्थी के कार्यों में अरुचि, पेंटिंग एवं कार ड्राइविंग की शौकीन तथा अलग गृहस्थी बसाने की अभिलाषा रखने वाली।
- **राजो** महेरी की बारह वर्षीया पुत्री, जो मीनू के साथ मेरठ में रहकर घरेलू कामों में उसका हाथ बँटाती है।
- **मनोहर** राजो का चचेरा भाई, जो फैक्ट्री में काम करते हुए अपाहिज हो गया था। बाद में मीनू अपने विवाह के खर्च से कुछ रुपये बचाकर इसके लिए पान की दुकान खुलवा देती है।

## उपन्यास का उद्देश्य

‘नया रास्ता’ उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य-समाज में फैली दहेज की समस्या, उसके दुष्प्रभाव, दहेज लोभियों को कुछ सोचने के लिए विवश करना है।

इसके अतिरिक्त दहेज की व्यथा झेल रही नवयुवतियों को साहस, धैर्य एवं विवेक बनाए रखने की सीख देते हुए उनकी योग्यताओं को उभारना है, जिससे वे आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाकर स्वावलंबी बनें और दहेज लोभियों को अपनी भूल के लिए पछताने पर विवश कर दें।

## उपन्यास का सारांश

दयाराम जी के मध्यवर्गीय परिवार में उनकी पत्नी, दो बेटियाँ-मीनू और आशा तथा उनका बेटा रोहित है। वे मीरापुर गाँव में रहते हैं। मीनू की सहेली नीलिमा एक खूबसूरत लड़की है। वह अपना चेहरा दर्पण में देखकर मुसकराती है, तभी उसकी सहेली मीनू उसके घर आती है और बताती है कि मेरठ वालों द्वारा उसकी फोटो पसंद कर ली गई है। कल वे हमारे घर आ रहे हैं, परंतु कुछ सोचते ही छोटे कद वाली, साँवली लड़की मीनू उदास हो जाती है, क्योंकि उसे कई लड़के पहले भी नापसंद कर चुके हैं। उसकी उदासी दूर करने के लिए नीलिमा उसे अपनी कई फोटो दिखाती है। इसी बीच अखबार से पता चलता है कि मीनू एम.ए. प्रथम श्रेणी में और नीलिमा द्वितीय श्रेणी में पास हुई हैं।

दूसरे दिन मीनू को देखने के लिए अमित, उसके पिता मायाराम जी, उसकी माता और बहन मधु आए थे। अमित को मीनू अच्छी लगी पर मायाराम जी अपना निर्णय, पत्र द्वारा बताने की बात कहकर चले गए।

इधर मायाराम जी के घर धनीमल जी अपनी बेटी सरिता का रिश्ता लेकर आए हैं। वे आते ही बताते हैं कि वे अपनी बेटी सरिता के विवाह में पाँच

लाख रुपये तक खर्च करने को तैयार हैं। अमित की माँ पाँच लाख रुपये की बात सुनते ही दहेज के लालच में सभी सदस्यों पर दबाव बनाती है कि अमित का विवाह सरिता से ही हो। दहेज प्रथा हमारे समाज के लिए अभिशाप है, किंतु फिर भी यह समाज में ज्यों की त्यों बनी हुई है। इसके कारण आज न जाने कितने ही घर परिवार टूट रहे हैं। आज्ञाकारी अमित चाहकर भी उनका विरोध नहीं कर पाता है। पत्नी के दबाव में आकर मायाराम जी अमित के विवाह के लिए नकारात्मक उत्तर भरा पत्र दयाराम जी के यहाँ भिजवा देते हैं।

पत्र पढ़कर घर के सभी सदस्य दुःखी होते हैं, परंतु मीनू निराश होने के बजाय वकालत पढ़ने का निश्चय करती है और मेरठ में एडमिशन ले लेती है। इसी बीच नीलिमा की शादी मेरठ में ही रहने वाले सुरेंद्र के साथ हँसी-खुशी हो जाती है। इसे एक संयोग ही कहा जाएगा कि अमित का विवाह भी सरिता से नहीं हो पाता है, क्योंकि सरिता के पिता अपनी बेटी को एक फ्लैट देकर उसकी अलग गृहस्थी बसाना चाहते हैं।

सरिता की रुचि घर-गृहस्थी के कार्यों में न होने से अमित उससे विवाह करने का पक्षधर नहीं था। सरिता से भी रिश्ता टूटने के बाद अमित मीनू को भूल नहीं पाता है। उसे नीलिमा के विवाह में मीनू को अपनी बातें बताने का अवसर मिलते-मिलते रह जाता है। ऐसा ही नीलिमा के बेटे के नामकरण के अवसर पर भी होता है और वह अपनी बातें मीनू को नहीं बता पाता है। मीनू वकालत की परीक्षाएँ (प्रथम और द्वितीय वर्ष) प्रथम श्रेणी में पास कर लेती हैं।

इसी बीच मीनू की छोटी बहन आशा का विवाह हो जाता है, जहाँ मीनू को लोगों की बातें सुननी पड़ती हैं। समय बीतता जा रहा था। मीनू की पढ़ाई को तीसरा साल चल रहा था। इधर एक एक्सीडेंट में अमित बुरी तरह घायल हो जाता है। यह बात मीनू को नीलिमा और उसके पति से पता चलती है। वह अस्पताल जाकर अमित से मिलती है।

वहीं दूसरी ओर वह वकालत की आखिरी परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में पास कर लेती है और अपने माता-पिता की अनुमति से मेरठ में प्रैक्टिस करती है। संयोग से इधर अमित स्वस्थ हो जाता है। शनिवार को दो दिन की छुट्टी के दौरान मीनू अपने घर मीरापुर आई। कुछ ही दिन बाद अमित और उसके पिता, दयाराम जी के पास आते हैं और अपनी भूल के लिए प्रायश्चित्त ही नहीं करते, बल्कि मीनू का हाथ भी माँग लेते हैं।

धैर्य एवं साहस से परिस्थितियों का सामना करने वाली मीनू की मेहनत रंग लाती है और उसे उसकी मंजिल मिल जाती है। वह अमित के साथ विवाह के बंधन में बँध जाती है। इस तरह एक सुखद अंत होता है।

# अध्याय 1

## पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में नीलिमा द्वारा दर्पण में अपना चेहरा देखकर खुश होने तथा उसकी घनिष्ठ सहेली मीनू के साथ हुई प्रसन्न बातचीत और मीनू की बदलती मनोदशा का उल्लेख हुआ है।

### मीनू की प्रसन्नता

दर्पण में अपना चेहरा निहार रही नीलिमा अपने सौंदर्य पर मुग्ध हो रही थी, तभी उसकी सहेली मीनू ने पीछे से आकर उसकी आँखें बंद कर दीं। सामने आने पर नीलिमा ने पूछा कि आज वो इतनी खुश क्यों है? मीनू अपनी प्रसन्नता को छिपाने की कोशिश करते हुए बोली कि शादी के लिए मेरठ वालों ने उसकी फोटो पसंद कर ली है। वे लोग कल उसके घर आ रहे हैं।

### मीनू के चेहरे पर उदासी की छाया

मीनू के चेहरे की प्रसन्नता अचानक ही समाप्त हो गई, क्योंकि उसकी पुरानी यादें ताजा हो गई थीं। पहले भी कई लड़कों ने उसे देखने के बाद शादी से मना कर दिया था। किसी ने कद में छोटी होने को कारण बताया, तो किसी ने उसके साँवलेपन को। पुरानी बातों को याद कर मीनू की आँखों में आँसू आ गए।

### नीलिमा द्वारा बात बदलना

मीनू का ध्यान बँटाने के लिए नीलिमा ने उसे अपने कई सुंदर फोटो दिखाए। मीनू ने नीलिमा की सुंदरता की बहुत प्रशंसा की, जिससे नीलिमा भी अत्यंत प्रसन्न हो गई। नीलिमा की प्रशंसा करने तथा अपने चेहरे पर खुशी के भाव दिखाने के बाद भी मीनू के दिल में उदासी ही व्याप्त रही। नीलिमा भी मीनू के दिल में छिपे दर्द को समझ रही थी।

## परीक्षा-परिणाम की प्रसन्नता

उसी समय कमरे में मीनू का भाई रोहित तथा नीलिमा की माँ ने प्रवेश किया। रोहित के हाथ में परीक्षा परिणाम वाला अखबार था। उसने बताया कि एम.ए. की परीक्षा में मीनू प्रथम श्रेणी से तथा नीलिमा द्वितीय श्रेणी से पास हुई है। माँ ने दोनों का मुँह मीठा कराया और उन्हें अपना आशीर्वाद दिया।

### मीनू के चेहरे पर आई पुनः प्रसन्नता

अच्छा परीक्षा परिणाम सुनकर मीनू के हृदय में दबा दर्द थोड़ी देर के लिए गायब हो गया और उसके चेहरे पर फिर से खुशी छा गई। नीलिमा की आँखों ने मीनू के हृदय की वास्तविकता को समझ लिया। उसने 'कभी खुशी, कभी गम' वाली स्थिति को स्पष्ट रूप से मीनू के चेहरे पर पढ़ लिया था। वह गीत गुनगुनाते हुए अपने बिखरे फोटुओं को उठाने लगी।

### शब्दार्थ

यौवन-जवानी (youthness); दहलीज़-प्रवेश द्वार (entrance); दर्पण-आइना (mirror); विस्मित-आश्चर्य (surprise); लालिमा-लाल होने का भाव (redness); आँखें मूँदने-आखे बंद करना (close eyes); अहसास-अनुभव (feelings); क्षण-पल, सेकेंड (moments); प्रसन्न-खुश (happy); अतीत-पुरानी (old, past); स्मृति-यादें, स्मरण (memories); मुद्रा-भंगिमा (posture); आकर्षक-लुभावना (attractive); फुरसत-अवकाश, खाली (leisure); नाक-नक्शा-मुख की आकृति (features); श्रेणी-वर्ग (category); हीनभावना-स्वयं को वंचित या पिछड़ा हुआ महसूस करने की भावना (inferiority complex); प्रसन्नचित्त-हृदय में व्याप्त खुशी, हर्ष (joyful); ओझल-गायब (disappear)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

1. दर्पण में निहारने पर यौवन की लालिमा उसके चेहरे पर छा गई। अपना चेहरा वह अभी दर्पण में निहार ही रही थी कि इतने में उसकी सहेली मीनू ने पीछे से आकर उसकी आँखों पर अपने हाथ रख दिए। मीनू के कोमल हाथों से आँखें मूँदने पर नीलिमा को कुछ अजीब-सा अहसास हुआ। दूसरे ही क्षण मीनू उसके सामने आ गई और खुशी से उसके हाथों को चूम लिया।

(क) दर्पण में अपना चेहरा कौन देख रही थी और देखते हुए वह मुसकुरा क्यों रही थी? (2)

**उत्तर** दर्पण में अपना चेहरा नीलिमा देख रही थी। वह अपने चेहरे की सुंदरता को देख खुश हो रही थी। यौवन की लालिमा उसके चेहरे पर छा गई थी। इसलिए वह अपने सुंदर रूप पर मोहित होकर मुसकरा रही थी।

(ख) नीलिमा को अजीब-सा अहसास क्यों हुआ? (2)

**उत्तर** नीलिमा जब स्वयं को दर्पण में निहारने में मग्न थी, तभी अचानक उसकी सहेली मीनू ने पीछे से आकर उसकी आँखों पर अपने हाथ रख दिए। मीनू के हाथों से आँखें बंद होने पर नीलिमा को कुछ अजीब-सा अहसास हुआ।

(ग) 'चेहरे पर यौवन की लालिमा छाने' से क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** 'चेहरे पर यौवन की लालिमा छाने' से अभिप्राय यह है कि नवयुवती नीलिमा अपनी युवावस्था के प्रारंभिक दौर से गुजर रही थी। वह देखने में सुंदर थी, उसके नैन-नक्श आकर्षक थे, उसका रंग गोरा था और अपनी सुंदरता का अहसास उसे भी था। इस अहसास के कारण ही उसमें एक संकोच या लज्जा भाव भी व्याप्त था, जो लालिमा के रूप में चेहरे पर फैल गया। इसी को 'चेहरे पर यौवन की लालिमा छाने' के रूप में व्यक्त किया गया है।

(घ) मीनू की प्रसन्नता को नीलिमा ने कैसे भाँप लिया? (3)

**उत्तर** नीलिमा की सहेली मीनू ने आते ही नीलिमा को चौंकाने के लिए अपने हाथों से उसकी आँखें ढँक दीं। वह नीलिमा से आँख-मिचौली कर रही थी, जब कोई व्यक्ति आंतरिक रूप से प्रसन्न होता है, तो सामान्यतया उसकी गतिविधियाँ बढ़ जाती हैं। मीनू द्वारा अपनी सहेली नीलिमा की आँखों को ढँकना इस बात का संकेत करता है कि मीनू की ऐसी चंचलता उसकी प्रसन्नता के कारण है। मीनू द्वारा नीलिमा की आँखें ढँकने से ही नीलिमा ने जान लिया कि मीनू अत्यधिक प्रसन्न है।

2. परंतु कुछ सोचते ही मीनू के चेहरे पर उदासी छा गई। मीनू को अपनी जिंदगी के कुछ क्षण याद आ गए। पहले भी कई लड़कों ने उसे देखा, पर किसी ने कद की छोटी व किसी ने साँवली बताते हुए उससे शादी करने से इनकार कर दिया। अतीत की स्मृतियों में खो जाने पर उसकी आँखें छलछला पड़ीं। नीलिमा उसके हृदय की बात समझ रही थी।

(क) मीनू के चेहरे पर अचानक उदासी क्यों छा गई? (2)

**उत्तर** मीनू के चेहरे पर अचानक उदासी छाने का कारण यह था कि अतीत में भी कई लड़के वालों ने उसकी फोटो को पसंद किया था, लेकिन जब वे उसे देखने के लिए आते थे, तो किसी-न-किसी कारण से उसे नापसंद कर देते थे। अतीत की इन्हीं स्मृतियों को याद करके मीनू का चेहरा उदास हो गया।

(ख) मीनू से शादी करने आए लड़कों ने शादी करने से इनकार क्यों किया? (2)

**उत्तर** मीनू से शादी करने आए लड़कों ने मीनू को देखकर उसमें कमियाँ निकालीं। किसी ने उसके छोटे कद को बड़ी कमी माना, तो किसी ने उसके साँवले रंग को। उन लड़कों को प्रत्येक दृष्टि से एक ऐसी लड़की चाहिए थी, जिसमें किसी भी प्रकार की कोई कमी न हो, भले ही खुद में अनेक कमियाँ मौजूद हों।

(ग) नीलिमा किसके हृदय की बात समझ रही थी और कौन-सी बात? (3)

**उत्तर** नीलिमा अपनी सहेली मीनू के हृदय की बात समझ रही थी। दोनों के बीच बहुत अच्छी मित्रता थी। मेरठ से अतीत में कई लड़के वाले मीनू को देखने आए थे और उसे नापसंद कर गए थे। नीलिमा को लग रहा था कि यदि अगले दिन आने वाले मेरठ वालों ने भी उसे नापसंद कर दिया, तो मीनू मानसिक रूप से पूरी तरह टूट सकती है। मीनू के मन में आई ऐसी हीनभावना को नीलिमा अच्छी तरह समझ रही थी।

(घ) अतीत की स्मृतियों का क्या अभिप्राय है? इन स्मृतियों से मीनू दुःखी क्यों हो गई? (3)

**उत्तर** अतीत की स्मृतियों का अभिप्राय है बीते दिनों की यादें, जो समय-समय पर जीवंत हो उठती हैं। इन स्मृतियों से मीनू इस लिए दुःखी हो गई, क्योंकि ये उसके लिए सुखद न थीं। उसे देखने आने वाले कई लड़कों ने उससे विवाह करने से इनकार (मना) कर दिया था। उनकी दुःखद यादें उसके मन में बार-बार ताजी हो उठती थीं।

3. नीलिमा सुंदर तो थी ही, उसके फोटो और भी अधिक आकर्षक लग रहे थे। नीलिमा की सुंदरता देखकर मीनू से चुप न रहा गया। वह उसकी प्रशंसा करते हुए बोल ही पड़ी, 'नीलिमा, लगता है ईश्वर ने तुझे फुरसत से बैठकर बनाया है। क्या नैन-नक्श हैं तेरे और ऊपर से गोरा रंग वाह! जो कोई भी तुझसे विवाह करेगा, वह वास्तव में बहुत ही भाग्यशाली होगा।' मीनू के मुँह से अपनी प्रशंसा सुनकर नीलिमा दिल-ही-दिल में प्रसन्न हो उठी।

(क) अपने अनेक चित्रों (फोटो) को नीलिमा ने मीनू के सामने क्यों रखा? (2)

**उत्तर** मीनू अपनी शादी की बात सोचकर अतीत की स्मृतियों (यादों) में खो गई थी, जिसके कारण उसकी आँखों में आँसू आ गए थे। मीनू का ध्यान उस ओर से हटाने के लिए ही नीलिमा ने अपनी अनेक मुद्राओं में खींचे गए फोटो को उसके सामने रख दिया, जिससे मीनू का ध्यान बँट जाए और वह अपनी पीड़ा भूल जाए।

(ख) नीलिमा के चित्रों को देखकर मीनू ने क्या कहा? (2)

**उत्तर** नीलिमा के चित्रों को देखकर मीनू ने कहा कि तुम इतनी सुंदर हो कि लगता है जैसे ईश्वर ने तुम्हें फुरसत से बनाया है। तुम्हारा रंग भी गोरा है, जिससे तुम्हारी सुंदरता में चार चौंद लग गए हैं। तुम्हारी सुंदरता में कहीं कोई कमी नहीं है।

(ग) नीलिमा के प्रसन्न होने का क्या कारण था? (3)

**उत्तर** नीलिमा और मीनू दोनों आपस में अच्छी सहेलियाँ थीं, लेकिन उन दोनों के बाहरी रंग-रूप में बहुत अंतर था। नीलिमा जहाँ अत्यंत सुंदर एवं आकर्षक थी, वहीं मीनू साधारण लड़की थी। मीनू ने जब नीलिमा की सुंदरता की खुलकर प्रशंसा की, तब अपनी सुंदरता की प्रशंसा सुनकर नीलिमा भी मन-ही-मन में प्रसन्न हो उठी।

(घ) अवतरण के अनुसार कौन भाग्यशाली होगा और क्यों? (3)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण के अनुसार, नीलिमा से शादी करने वाला लड़का, बहुत भाग्यशाली होगा, क्योंकि उसे नीलिमा जैसी सुंदर, गोरी तथा आकर्षक लड़की जीवनसंगिनी के रूप में मिलेगी, जिससे उसके पति को हमेशा गर्व महसूस होगा कि नीलिमा जैसी सुंदर, सुशील एवं पढ़ी-लिखी लड़की उसकी पत्नी है। इसी अर्थ में यहाँ नीलिमा के भावी और अनजाने (संभावित) पति को भाग्यशाली कहा गया है।

4. परंतु नीलिमा की आँखों में मीनू का वह उदास चेहरा घूमता रहा, जो हीनभावना के कारण उदास हो गया था, परंतु दूसरे ही क्षण विजय की खुशी में उभरी इसकी खुशी की भावना भी आँखों से ओझल न हो सकी। तभी नीलिमा गुनगुनाने लगी, कभी सुख है ... कभी दुःख है।

(क) मीनू के हृदय में व्याप्त हीनभावना का कारण क्या था? इस हीनभावना का परिणाम क्या निकला? (2)

**उत्तर** मीनू के हृदय में व्याप्त हीनभावना का कारण शादी के लिए आने वाले लड़कों द्वारा उसे बार-बार नापसंद किया जाना था। इसी हीनभावना के कारण वह हमेशा दुःखी रहती थी। इसी हीनता की भावना का परिणाम उसके दुःखी चेहरे के रूप में सामने आया।

(ख) मीनू के हृदय में मौजूद दुःख किन कारणों से खुशी में परिवर्तित हो गए? (2)

**उत्तर** मीनू के हृदय का दुःख तब खुशी में परिवर्तित हो गया, जब मीनू के भाई रोहित ने एम. ए. की परीक्षा का सुखद परिणाम उसे बताया। अपनी सफलता का समाचार सुनते ही मीनू के अंदर खुशी की लहर दौड़ गई। वह कुछ समय के लिए अपना दुःख एवं अपनी पीड़ा भूल गई।

(ग) नीलिमा अपनी सहेली के लिए क्यों चिंतित थी? (3)



**उत्तर** नीलिमा मीनू की बहुत अच्छी सहेली थी, वह उसके साथ पूरी सहानुभूति रखती थी। नीलिमा अपनी अच्छी सहेली मीनू को भी खुश देखना चाहती थी। जब शादी के लिए आने वाले लड़के किसी-न-किसी कारण से मीनू को नापसंद कर देते, तब नीलिमा को भी बहुत दुःख होता।

परीक्षा-परिणाम सुनने के बाद उत्साहित एवं खुश मीनू के घर जाने के बाद भी नीलिमा की आँखों में उसका उदास चेहरा ही घूमता रहा, क्योंकि मीनू की उदासी बहुत गहरी तथा खुशी थोड़े समय के लिए थी। इसी कारण नीलिमा अपनी सहेली के लिए चिंतित रहती थी।

(घ) 'कभी सुख है ... कभी दुःख है' का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** परीक्षा में अपनी सफलता का समाचार सुनकर मीनू दौड़ते हुए अपने घर की ओर भागती है। इस समय उसमें अत्यधिक खुशी एवं उत्साह भरा हुआ था। यह देखकर नीलिमा को कुछ पंक्तियाँ याद आ गईं और वह गुनगुनाने लगी, "कभी सुख है ... कभी दुःख है।"

वस्तुतः इसके पीछे नीलिमा का अभिप्राय मीनू की बदलती मनोदशा से था। मीनू, जो अभी थोड़ी देर पहले अपनी शादी को लेकर अत्यंत दुःखी व उदास थी। वही मीनू अपनी परीक्षा संबंधी सफलता को सुनकर अत्यधिक खुश और उत्साहित हो गई। वास्तव में जीवन ऐसा ही है, "जहाँ कभी खुशी है, तो कभी गम है।"

## अध्याय 2

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में मेरठ वालों को मीनू की फोटो पसंद आने के बाद उसे देखने आने, मेहमानों का भरपूर स्वागत करने, अमित को मीनू में भावी पत्नी के गुण दिखाई देने, मेहमानों के जाने के बाद मीनू और उसके पिता दयाराम के आशंकित (शंका से ग्रस्त) होने का उल्लेख किया गया है।

#### मेहमानों के स्वागत की तैयारी

मेरठ वालों के द्वारा मीनू का फोटो पसंद किए जाने के बाद मीनू के घर में खुशी का माहौल बन गया था। आज मेरठ वालों का परिवार मीनू के घर उसे देखने आने वाला था। इस कारण सुबह से ही मीनू के घर पर मेहमानों के स्वागत की तैयारियाँ जोर-शोर से चल रही थीं। मीनू के पिता दयाराम जी एक मध्यम श्रेणी की अच्छी आर्थिक स्थिति वाले व्यक्ति थे और उसी स्थिति के अनुसार ड्राइंग-रूम को सजाया गया था। घर की सफाई अच्छे तरीके से की गई थी तथा मेहमानों के खाने के लिए विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाए गए थे। बाहर से कई प्रकार की मिठाइयाँ भी मँगवाई गई थीं।

#### मेहमानों का आगमन एवं उनका स्वागत-सत्कार

मीनू को देखने के लिए मेरठ वाले उसके घर पहुँचे, जहाँ उसके परिवार वालों ने उनका बहुत अच्छे से स्वागत किया। इन मेहमानों में शादी करने की इच्छा रखने वाला अमित, उसके पिता मायाराम जी, माता जी एवं छोटी बहन मधु शामिल हैं। उनकी खातिरदारी में मीनू के घरवालों ने किसी भी प्रकार की कमी नहीं छोड़ी थी। मीनू के परिवार के प्रत्येक सदस्य के मन में नया जोश एवं उमंग व्याप्त था। मीनू के घरवालों को लग रहा था कि उनके घर कोई देवता आए हैं, जिनको किसी भी प्रकार की शिकायत का कोई अवसर नहीं देना चाहिए।

#### अमित को मीनू में भावी पत्नी की छवि दिखना

थोड़ी देर बाद गुलाबी साड़ी पहने साँवले रंग की मीनू कमरे में प्रवेश करती है, जो शर्म से थोड़ी सकुचाई लग रही थी। अमित ने उससे

बातचीत आरंभ करते हुए उसकी पढ़ाई-लिखाई एवं घर से संबंधित रुचियों के विषय में पूछा। बातचीत के द्वारा यह जानकर अमित को बड़ा अच्छा महसूस हुआ कि मीनू उसके माता-पिता के साथ संयुक्त परिवार में रहना पसंद करेगी।

अमित अपनी भावी (भविष्य में होने वाली) पत्नी से यह अपेक्षा करता था कि वह घर में संयुक्त परिवार बनाए रखे और उसके माता-पिता एवं अन्य सदस्यों के साथ मिल-जुलकर रहे। मीनू द्वारा संयुक्त परिवार में रहने की सहमति देने के बाद अमित को बड़ी राहत महसूस हुई। मीनू को देखने के बाद अमित के हृदय में उसकी अच्छी छवि बन गई थी। अमित को मीनू जैसी ही पढ़ी-लिखी, सुशील पत्नी चाहिए थी।

#### आशा और माँ की आशंका

आशा अपनी बड़ी बहन मीनू से अधिक सुंदर थी, इसलिए उनकी माँ चाहती थी कि जब रिश्ते के लिए लड़के वाले आएँ, तो आशा उनके सामने न आए। माँ को यह आशंका रहती थी कि आशा की सुंदरता देखकर लड़के वालों को मीनू में कमियाँ नज़र आने लगेंगी।

अमित एवं उसके माता-पिता द्वारा पूछे गए प्रश्नों का आशा द्वारा हँस-हँस कर उत्तर देना, उसकी माँ को अच्छा नहीं लगा, इसलिए उन्होंने आशा को कमरे से बाहर बुलाकर डाँटा और मेहमानों के पास दोबारा जाने से मना किया।

#### मेहमानों का जाना तथा दयाराम जी का सुस्त हो जाना

थोड़ी देर बाद मीनू को देखने आए अमित एवं उसके घरवाले विदा लेकर चले गए और जाते समय उन्होंने कहा कि शादी के बारे में घर जाकर विचार करेंगे, उसके बाद पत्र लिखेंगे।

उन लोगों के जाने के पश्चात् मीनू के माता-पिता के मन में तरह-तरह के विचार उठने लगे। मीनू के पिता दयाराम जी मायूस (निराश) होकर सोफे पर बैठ गए और उन्होंने कहा कि जो ईश्वर को मंजूर होगा, वही होगा। देखते हैं, क्या होता है?



## मीनू के मन में भी आशंका

अब तक मीनू भी आशा के पास अंदर कमरे में आ चुकी थी। आशा ने माँ के डाँटने की बात को छिपाते हुए उसकी सुंदरता की प्रशंसा की, तो मीनू बोली, उसे सुंदर लगने से क्या होगा? जिन लोगों को वह सुंदर लगनी चाहिए थी, उनके बारे में तो पता ही नहीं चला कि उन्हें मैं सुंदर लगी या नहीं?

उसे भी इस बात की आशंका थी कि पता नहीं वह अमित और उसके घरवालों को पसंद आई या नहीं? यही सोचती हुई वह साड़ी बदलने चली गई।

## शब्दार्थ

यथा-स्थान—उचित स्थान (proper place); हैसियत—क्षमता (status, capacity); सुसज्जित—अच्छी तरह से सजाना (well groomed); बेताबी—बेसब्री (impatient); मनोतियाँ—मनोकामनाएँ (desires); आतिथ्य—आवभगत, आदरसत्कार (welcomeness); रुचि—पसंद (interest); संयुक्त परिवार—जहाँ कम-से-कम दो पीढ़ियाँ साथ रहती हों (joint family); आभास—अहसास (realisation); अंतर्द्वंद्व—अंतःसंघर्ष (inner conflict); बचकानी—बच्चों जैसी (childish); निढाल होना—सुस्त हो जाना, निराश होना (become lazy, upset); संजोग—संयोग (accidentally, by chance)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

- अमित मेज पर बैठा खाना खाने लगा। माँ भी उसके पास बैठ गई। बैठे-बैठे वह न जाने किन विचारों में खो गई और एकटक अमित की ओर ही देखती रहीं। [2018]
  - माँ अमित की तरफ देखते हुए क्या सोच रही थी? (2)  
**उत्तर** माँ अमित की तरफ देखते हुए यह सोच रही थी कि दीपक अमित से छोटा है, फिर भी उसका विवाह तय हो गया है, लेकिन अमित का विवाह अभी तक नहीं हो पाया है।
  - दीपक कौन है? उन्हें किस बात का कार्ड मिला? (2)  
**उत्तर** दीपक अमित की माँ का भतीजा है। उन्हें अपने भतीजे दीपक के विवाह का कार्ड मिला था, जिसे पाकर अमित की माँ अत्यधिक प्रसन्न हुई थी।
  - मधु के बारे में माँ ने अमित से क्या कहा? (3)  
**उत्तर** मधु के बारे में माँ ने अमित से कहा कि मधु भी विवाह योग्य हो गई है। मैं उसका भी विवाह करना चाहती हूँ, लेकिन मेरी इच्छा है कि मधु के विवाह से पूर्व तुम्हारा विवाह हो, क्योंकि मधु तुमसे आयु में छोटी है। मैं उसके विवाह के कार्य अकेले नहीं कर पाऊँगी, इसलिए तुम शीघ्र ही विवाह कर लो।
  - माँ को घर में बहू की कमी क्यों अखरती थी? (3)  
**उत्तर** अमित तथा मायाराम जी के कारखाने के लिए चले जाने तथा मधु के कॉलेज जाने के पश्चात् माँ घर में अकेली रह जाती थी। इस कारण उन्हें घर में बहू की कमी लगती थी। अतः वह चाहती थी कि अगर उनके बेटे का विवाह हो जाए तो बहू के आने से उनका अकेलापन दूर हो जाएगा।
- दूसरे दिन प्रातः होते ही दयाराम जी के घर पर मेहमानों के स्वागत के लिए विभिन्न प्रकार की तैयारियाँ प्रारंभ हो गई थीं। घर की सारी चीज़ें झाड़ू-पोंछकर यथा-स्थान लगा दी गई थीं। एक मध्यम श्रेणी के व्यक्ति की हैसियत के अनुसार बैठक को विशेष रूप से सुसज्जित किया गया था।
  - प्रस्तुत पंक्तियों में कौन किसके घर आ रहा है? (2)  
**उत्तर** प्रस्तुत पंक्तियों में मायाराम जी अपने परिवार के साथ मेरठ से मीरापुर दयाराम जी के घर उनकी बड़ी बेटी मीनू को देखने आ रहे हैं।

- आने वाले मेहमान को विशेष महत्व क्यों दिया जा रहा है? (2)

**उत्तर** आने वाले मेहमानों को विशेष महत्व दिए जाने का कारण यह था कि उन्हें हर प्रकार से खुश किया जाए, जिससे वे मीनू से विवाह करने की सहमति दे दें। आने वाले मेहमान मीनू को विवाह के लिए देखने आ रहे थे। अतः मीनू के घरवाले चाहते थे कि उन्हें किसी प्रकार की कोई कमी न महसूस हो और वे संतुष्ट होकर शादी पक्की कर दें।

- “विभिन्न प्रकार की तैयारियाँ .....” विशिष्ट संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** “विभिन्न प्रकार की तैयारियाँ ...” से तात्पर्य यह है कि मीनू को देखने के लिए आने वाले मेहमानों का स्वागत करने के लिए पूरे घर की अच्छी तरह साफ-सफाई की गई थी। एक मध्यम श्रेणी के व्यक्ति की हैसियत के अनुसार बैठक को विशेष रूप से सजाया गया था। यहाँ तक कि घर में विशेष प्रकार के व्यंजन भी बनाए गए थे तथा बाजार से विभिन्न प्रकार की मिठाइयाँ भी मँगवाई गई थीं।

- आने वाले मेहमान से परिवार के लोगों को क्या उम्मीद है? (3)

**उत्तर** आने वाले मेहमानों से दयाराम जी के परिवार वालों को उम्मीद है कि मीनू को देखने के लिए आ रहे लड़के, अमित को मीनू पसंद आ जाए और अमित के घरवाले भी शादी के लिए अपनी स्वीकृति दे दें। वे मीनू की बाहरी सुंदरता पर ज्यादा ध्यान न देकर उसके गुणों व योग्यताओं को अधिक महत्व दें। तात्पर्य यह है कि दयाराम जी के परिवार वाले आने वाले मेहमानों से मीनू को अपने घर की बहू बना लेने की सहमति देने की उम्मीद रखते थे।

- कुछ क्षण बाद घंटी बजी। रोहित शीघ्र ही दरवाजा खोलने के लिए बढ़ा। मेहमानों का शानदार स्वागत किया गया। मीनू को देखने के लिए अमित, उसके पिता मायाराम जी, माताजी व छोटी बहन मधु आये थे। उनके आतिथ्य में किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ी गई थी। परिवार के हर सदस्य के हृदय में नया जोश व उमंग थी। मानों उनके घर कोई देवता आ गए हों।

- रोहित कौन था? वह दरवाजा खोलने की जल्दी में क्यों था? (2)

**उत्तर** रोहित मीनू का छोटा भाई था। आज मीनू को देखने के लिए मेरठ से लड़के वाले आने वाले थे। वे किसी भी समय आ सकते थे। घर आने पर उन्हें अंदर आने के लिए इंतजार न करना पड़े और दरवाजा खोलने में देर होने पर वे लोग बुरा न मान जाएँ, इसलिए रोहित दरवाजा खोलने की जल्दी में था।

(ख) मेहमानों के शानदार स्वागत के पीछे क्या अपेक्षा छिपी थी? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** मीनू को देखने के लिए मेरठ से अमित, उसके माता-पिता और उसकी छोटी बहन आए हुए थे। यद्यपि उन लोगों को मीनू की फोटो पसंद आ चुकी थी, फिर भी उन लोगों की हाँ अभी बाकी थी। ऐसे में मीनू के माता-पिता मेहमानों के स्वागत-सत्कार में कोई कमी न छोड़कर यह अपेक्षा कर रहे थे कि आए हुए मेहमान मीनू के विवाह के लिए 'हाँ' कह दें।

(ग) परिवार के हर सदस्य की मनोदशा कैसी थी? इसका कारण क्या था? (3)

**उत्तर** मीनू के परिवार के हर सदस्य अर्थात् उसके पिता दयाराम, उसकी माँ, उसका भाई रोहित एवं उसकी छोटी बहन आशा इन सभी की मनोदशा एक नई आशा एवं उमंग से भरी थी। इसका कारण यह था कि वे चाहते थे कि मीनू को देखने आए अमित एवं उसके परिवार के लोग मीनू की सुंदरता व गुणों को समझते हुए अपने पुत्र अमित का विवाह उनकी बेटी मीनू से करने की स्वीकृति प्रदान करेंगे।

(घ) ऐसा क्यों कहा गया है कि कोई देवता आ गए हों? (3)

**उत्तर** मीनू के माता-पिता और घर के अन्य सदस्य पूरे उत्साह एवं उमंग से घर आए मेहमानों के स्वागत-सत्कार में लगे थे। उन्होंने घर की साज-सज्जा के अतिरिक्त अनेक प्रकार के पकवान भी बनाए तथा विभिन्न प्रकार की मिठाइयाँ बाजार से मँगवाई गईं। उनके व्यवहार में विनम्रता एवं सेवा भावना थी। ऐसा लगता था यह सब वह घर आए किसी देवता को प्रसन्न करने के लिए कर रहे हों।

4. 'मीनू, तुम्हारा एम.ए. का रिजल्ट आ गया है?' मीनू ने सहज भाव से उत्तर दिया, 'जी, प्रथम श्रेणी में पास किया है।' वैरी गुड! कहकर अमित के चेहरे पर प्रसन्नता के भाव उभर गए। 'घर के किन-किन कार्यों में तुम्हारी रुचि है?' अमित ने दूसरा प्रश्न किया। 'जी, सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, खाना बनाना, पेंटिंग आदि सभी कर लेती हूँ।' 'क्या तुम संयुक्त परिवार में मेरे माता-पिता व बहन के साथ रहना पसंद करोगी?' 'जी।' कहकर मीनू ने अपनी गर्दन झुका ली।

(क) मीनू से उसके एम.ए. के रिजल्ट के बारे में किसने पूछा और क्यों? (2)

**उत्तर** मीनू से उसके एम.ए. के रिजल्ट के बारे में अमित ने पूछा, जो विवाह के लिए मीनू को पसंद करने आया था। अमित मीनू से मिलकर उसके बारे में जानना चाहता था, ताकि वह यह निर्णय कर सके कि मीनू से विवाह करके वह खुश रह सकेगा या नहीं।

(ख) अमित के चेहरे पर प्रसन्नता के भाव उभरने के क्या कारण थे? (2)

**उत्तर** अमित के चेहरे पर प्रसन्नता के भाव उभरने के पीछे मुख्य कारण मीनू की शैक्षिक योग्यता थी। जब मीनू ने अमित को यह बताया कि उसने एम.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की है, तो अमित को यह जानकर अच्छा लगा कि मीनू पढ़ने-लिखने में अच्छी है। उसे ऐसी ही पढ़ने-लिखने में तेज लड़की अपनी पत्नी के रूप में पसंद थी।

(ग) संयुक्त परिवार में रहने के विषय पर अमित क्यों ज़ोर दे रहा था? (3)

**उत्तर** संयुक्त परिवार में रहने के विषय पर अमित ज़ोर इसलिए दे रहा था, क्योंकि उसे अपनी पत्नी के रूप में ऐसी लड़की नहीं चाहिए थी, जो संयुक्त परिवार से अलग रहकर केवल अपने पति और बच्चों के साथ ही रहना पसंद करती हो। अमित की इच्छा संयुक्त परिवार

में ही रहने की थी। वह शादी के बाद अपने माता-पिता एवं बहन से अलग नहीं रहना चाहता था।

(घ) अवतरण के आधार पर बताइए कि अमित किस प्रकार की पत्नी की अपेक्षा रखता है? (3)

**उत्तर** अवतरण के आधार पर कहा जा सकता है कि अमित को एक पढ़ी-लिखी एवं सुशील लड़की अपनी पत्नी के रूप में चाहिए थी, जो घर की ज़िम्मेदारियों को कुशलता के साथ सँभालने के अतिरिक्त घर के सभी सदस्यों का उचित ध्यान भी रख सके तथा उसके माता-पिता एवं छोटी बहन को सम्मान एवं प्यार दे सके और परिवार को एकसूत्र में बाँधकर रखे, जिससे किसी को भी उपेक्षा का अहसास न होने पाए। इसके अलावा वह अपना अलग घर बसाने की इच्छा न रखती हो।

5. जब लड़का-लड़की को देखने आए, तो यह समय एक परीक्षा का समय होता है। लड़की के हृदय में एक अंतर्द्वंद्व होता है कि वह इस परीक्षा में पास हो सकेगी या नहीं। मीनू इस परीक्षा में कई बार असफल हो चुकी थी, इसलिए उसके हृदय का अंतर्द्वंद्व और अधिक तीव्र हो गया था। इसी कारण उसके चेहरे पर और अधिक उदासीनता व घबराहट झलक रही थी।

(क) मीनू को देखने कौन आ रहा था? उसके आने का उद्देश्य क्या था? (2)

**उत्तर** मीनू को देखने मेरठ से अमित और उसके घरवाले आ रहे थे, क्योंकि अमित के घरवालों को मीनू का फोटो पसंद आया था। वे लोग मीनू से अमित का विवाह करना चाहते थे, लेकिन इससे पहले मीनू को प्रत्यक्ष रूप से देखना और उसके बारे में जानना चाहते थे। इसी कारण वे लोग मीनू के घर आ रहे थे।

(ख) अवतरण के अनुसार, लड़की के हृदय में किस तरह का अंतर्द्वंद्व होता है? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** अवतरण के आधार पर कहा जा सकता है कि जब कोई लड़का विवाह के लिए लड़की देखने जाता है, तो लड़की के हृदय में एक अंतर्द्वंद्व चलता रहता है कि लड़के वाले उसे पसंद करेंगे या नहीं। वह पसंद और नापसंद के भँवर में फँसी रहती है।

(ग) मीनू के चेहरे पर व्याप्त उदासीनता एवं घबराहट का क्या कारण था? (3)

**उत्तर** मीनू के चेहरे पर व्याप्त उदासीनता एवं घबराहट का कारण लड़के वालों द्वारा उसे पसंद या नापसंद किए जाने का अंतर्द्वंद्व था। पहले भी कई लड़कों ने उसे देखने के बाद शादी से मना कर दिया था। इसलिए पहले की भाँति कहीं इस बार भी लड़के वाले उसे विवाह के लिए नापसंद न कर दें, इसी चिंता के कारण उसके चेहरे पर उदासीनता एवं घबराहट थी।

(घ) रचनाकार का 'परीक्षा' से क्या अभिप्राय है? क्या यह लड़कों के लिए प्रासंगिक नहीं है? (3)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण के रचनाकार का 'परीक्षा' से तात्पर्य विवाह के लिए लड़के वालों द्वारा लड़की को पसंद या नापसंद करने से है। यदि लड़के वालों ने लड़की को पसंद कर लिया, तो वह इस 'परीक्षा' में 'पास' हो जाती है और यदि उन लोगों ने नापसंद कर दिया, तो वह इस परीक्षा में 'फेल' हो जाती है।

यह 'परीक्षा' हमारे पुरुष प्रधान समाज में लड़कों के लिए नहीं है, क्योंकि विवाह के लिए लड़कों को नापसंद करने वाली लड़कियाँ कम ही होती हैं। हमारे समाज में लड़कियों को अपनी पसंद के अनुरूप 'हाँ' या 'न' कहने का प्रचलन सामान्यतया नहीं है।

# अध्याय 3

## पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में धनीमल द्वारा अमित से अपनी बेटी का विवाह करने के लिए भारी दहेज का प्रलोभन (लालच) देने, अमित की माँ का धन के प्रति लोभ प्रकट करने, अमित और उसके पिता मायाराम को कुछ कहने का अवसर न देने और बड़ी चाल चलकर दयाराम से मीनू व अमित के रिश्ते के लिए इनकार (मना) करने का उल्लेख किया गया है।

### धनीमल जी द्वारा दिया गया दहेज का प्रलोभन

दयाराम जी के यहाँ से मीनू को देखने के बाद अमित एवं उसके पिता मायाराम जी, जब अपने घर पहुँचे, तो वहाँ शहर के धनी व्यक्ति धनीमल जी उनका इंतज़ार कर रहे थे। वे अपनी बेटी सरिता का रिश्ता लेकर आए थे और अमित से शादी तय होने पर वे पाँच लाख रुपये दहेज तक देने को तैयार थे। वे अपनी बेटी सरिता की शादी के लिए अमित के घरवालों को दहेज का प्रलोभन दे रहे थे।

### अमित के पिता का दहेज विरोधी होना

अमित के पिता मायाराम जी दहेज के विरोधी थे। उन्होंने सोचा कि दहेज लेकर बेटे की शादी करना एक तरह से बेटे को बेचना है, ऐसा करने से उसके पाँवों में बेड़ियाँ पड़ जाएँगी। इसके बावजूद, जब धनीमल जी ने अपनी पूरी संपत्ति का लालच देते हुए कहा कि “उनके मरने के बाद सब कुछ तो उनकी तीनों बेटियों को ही मिलना है”, तो उनके इस प्रस्ताव पर अमित के घरवालों ने गंभीरता से विचार किया, लेकिन अमित की माता जी धन की तरफ कुछ अधिक झुक चुकी थीं।

### अमित द्वारा दबे स्वर में विरोध करना

धनीमल जी द्वारा अपनी बेटी सरिता का अमित के साथ विवाह करने के लिए धन का प्रलोभन दिया गया, जिसका अमित ने दबे स्वर में विरोध किया। अमित ने धनी घर की लड़की का संयुक्त परिवार में घुलने-मिलने पर प्रश्न उठाते हुए अपना विरोध जताया, पर माँ द्वारा सरिता के पक्ष में जोर दिए जाने पर वह माँ से कुछ नहीं कह सका।

### अमित के घरवालों की विवाह अस्वीकार करने की योजना

अमित के घरवालों ने मीनू के साथ विवाह करने से इनकार करने का एक नया मार्ग निकाला। अमित की माँ ने मीनू के पिता जी को पत्र लिखवाया कि उन्हें मीनू नहीं, बल्कि उनकी छोटी बहन आशा पसंद है, चूँकि बड़ी बेटी के अविवाहित रहते वे छोटी बेटी की शादी के लिए तैयार नहीं होंगे, इसलिए मीनू के माता-पिता इस रिश्ते को अपने आप मना कर देंगे। अमित की माँ की इस कुटिल योजना का घरवालों ने विरोध नहीं किया।

### पत्र लिखते समय अमित के पिता जी को आत्म लानि होना

अमित की माँ ने अमित के पिताजी से अपनी योजना के अनुसार पत्र तो लिखवा दिया, लेकिन उसे लिखते हुए अमित के पिताजी की मनःस्थिति अत्यंत विकल हो गई। उन्हें लड़की के घरवालों की पीड़ा का अहसास था। उनकी बेटी मधु को लेकर यदि कोई ऐसा व्यवहार करता तो उन्हें बहुत दुःख होता, यही सोचकर पत्र लिखते समय उन्हें आत्मग्लानि हो रही थी।

### शब्दार्थ

सज्जन—सभ्य व्यक्ति (gentle man); गुणवती—गुणवान लड़की, योग्य लड़की (capable girl); तीखे—तेज (sharp); तौर-तरीका—व्यवहार (manner); आभास—अनुमान (guess, prediction); मंज़ूर—स्वीकार (accept); युक्ति—विचार (idea); क्रूर—कठोर (cruel); योजना—सोची-समझी नीति (planning); उकसाना—भड़काना, उतेजित करना (provoke, priming); मनःस्थिति—मन की दशा (internal state); विकल—बेचैन (restless)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. मायाराम व धनीमल जी की कुछ समय तक बातें होती रहीं। धनीमल जी अपनी बेटी सरिता का रिश्ता लेकर आए थे। उन्होंने उसका फोटो मायाराम जी के सामने रख दिया। शादी में पाँच लाख रुपये लगाने के लिए कहा।

(क) मायाराम जी की प्रतीक्षा कौन कर रहा था? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** मायाराम जी की प्रतीक्षा धनीमल जी उनके ही घर में कर रहे थे। जब मायाराम जी अपने बेटे अमित के साथ अपने घर पहुँचे, तब उन्होंने अपनी प्रतीक्षा कर रहे धनीमल जी से बात की। अमित के विवाह के विषय में इन दोनों के बीच बातें कुछ समय तक चलती रहीं।

(ख) धनीमल जी के आने का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** धनीमल जी, मायाराम जी के बेटे अमित के साथ अपनी बेटी सरिता की शादी कराना चाहते थे। वे इसी उद्देश्य से उनके घर आए थे। उन्होंने अपनी बेटी का फोटो मायाराम जी के सामने रखते हुए उनसे अपनी बेटी के विवाह के विषय में बातचीत भी की।

(ग) शादी में पाँच लाख रुपये लगाने पर ज़ोर देने से धनीमल जी के बारे में क्या पता चलता है? (3)

**उत्तर** धनीमल जी शहर के एक धनी व्यक्ति थे, जिनके पास पैसों की कमी नहीं थी। वे शादी में पाँच लाख रुपये खर्च करने पर ज़ोर देकर अमित के घरवालों को प्रलोभन (लालच) देना चाहते थे, ताकि वे धन से प्रलोभित होकर विवाह के लिए अपनी स्वीकृति दे दें। इससे यह पता चलता है कि धनीमल जी पैसों को अत्यधिक महत्त्व देते थे तथा यह समझते थे कि दुनिया में अधिकांश चीज़ें पैसों के बल पर अपने पक्ष में की जा सकती हैं। वे व्यक्ति के गुणों को कम एवं पैसों को अधिक महत्त्व देते थे।

(घ) दहेज के बारे में आपके विचार क्या हैं? संक्षेप में लिखिए। (3)

**उत्तर** दहेज एक सामाजिक कुप्रथा है, जिससे आज हमारा पूरा समाज प्रभावित है। दहेज ने लाखों योग्य एवं गुणी लड़कियों के जीवन को नरक बना दिया है। दहेज प्रथा के प्रचलन का सबसे नकारात्मक पक्ष यह है कि इसके कारण अनेक परिवार तबाह हो रहे हैं। पढ़ी-लिखी योग्य लड़कियों के माता-पिता दहेज से परेशान होकर लड़की को अभिशाप मानने लगे हैं। इस कुप्रथा को शीघ्र-अति-शीघ्र समाप्त किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

2. “साधारण परिवार की है, तो क्या हुआ? पढ़ी-लिखी है, काफी गुणवती लगती है। उसके बात करने का तौर-तरीका मुझे बहुत पसंद आया।”

माताजी शायद कुछ पैसों की तरफ झुक चुकी थीं। वह बोलीं, “रूप-रंग में कम धनीमल जी की लड़की भी नहीं है।”

(क) “साधारण परिवार की है, तो क्या हुआ?” यह किसने कहा एवं साधारण परिवार से संबंधित कौन थी? (2)

**उत्तर** “साधारण परिवार की है, तो क्या हुआ?” यह अमित के पिता मायाराम जी द्वारा कहा गया है। मीनू साधारण परिवार से संबंधित

थी। वह अत्यधिक पढ़ी-लिखी एवं गुणवती थी। इसके साथ ही वह सिलाई, बुनाई-कढ़ाई, खाना बनाना, पेंटिंग करना आदि कई कामों में भी निपुण (अच्छी) थी।

(ख) “उसके बात करने का तौर-तरीका मुझे बहुत पसंद आया” यह किसने, किसके लिए एवं किस उद्देश्य से कहा? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** उसके बात करने का तौर-तरीका मुझे बहुत पसंद आया, यह अमित के पिताजी मायाराम जी ने मीनू के विषय में कहा। मीनू का समग्र व्यक्तित्व उन्हें बहुत पसंद आया था। वे चाहते थे कि उनके बेटे अमित से मीनू की ही शादी हो ताकि मीनू उनके घर की बहू बने।

(ग) अमित की माताजी की आंतरिक इच्छा क्या थी? (3)

**उत्तर** अमित की माताजी का वास्तव में झुकाव पैसों की ओर था। वे अमित की शादी में धनीमल जी से पाँच लाख रुपये मिलने के लालच में आ गई थीं। उन्होंने धन के सपने देखने भी शुरू कर दिए थे। वे चाहती थीं कि अमित की शादी धनीमल जी की बेटी से ही हो, ताकि उनके घर धन आ सके और वे भी अमीरों की तरह जीवन-यापन कर सकें।

(घ) माताजी ने किसकी प्रशंसा की और प्रशंसा में क्या कहा? (3)

**उत्तर** माताजी अपने बेटे अमित की शादी के लिए आए धनीमल जी की बेटी के रिश्ते से अत्यंत प्रभावित थीं, क्योंकि इस शादी में धनीमल जी पाँच लाख रुपये तक खर्च करने के लिए तैयार थे। अमित की माँ को इस धन के प्रति लालच हो गया। इसी के कारण वे धनीमल जी की बेटी सरिता की प्रशंसा कर रही थीं और उसकी प्रशंसा करती हुई कहती भी हैं कि रूप-रंग की दृष्टि से सरिता किसी भी तरह मीनू की तुलना में कम नहीं है।

3. परंतु यह क्रूर योजना पिताजी की समझ में नहीं आई। वह किसी लड़की वाले का दिल नहीं दुखाना चाहते थे, परंतु जब सबकी यही इच्छा थी, तो उन्हें पत्र लिखना ही पड़ा।

पत्र लिखते समय पिताजी बोले, “अरे अमित की माँ, मुझसे तो ये सब नहीं हो पा रहा है। देखो न, हमारी भी तो बेटी मधु है। यदि कोई हमारे साथ ऐसा करे, तो क्या बीतेगी हमारे दिल पर?”

(क) ‘क्रूर योजना’ से क्या तात्पर्य है तथा यह किसके द्वारा बनाई गई थी? (2)

**उत्तर** ‘क्रूर योजना’ से तात्पर्य उस योजना से है, जिसके तहत मीनू के पिताजी दयाराम जी को एक पत्र लिखा जाना था, जिसमें मीनू से विवाह करने के प्रस्ताव को प्रत्यक्ष रूप से अस्वीकार न करते हुए यह कहना कि उन लोगों को मीनू की अपेक्षा उसकी छोटी बहन आशा पसंद है। यह ‘क्रूर योजना’ मूल रूप से अमित की माताजी द्वारा बनाई गई थी।

(ख) अमित के पिताजी क्या नहीं चाहते थे और क्यों? (2)

**उत्तर** अमित के पिताजी अपनी पत्नी की क्रूर योजना को क्रियान्वित करना नहीं चाहते थे। वे यह नहीं चाहते थे कि मीनू की छोटी बहन आशा से विवाह करने की इच्छा व्यक्त कर मीनू के घरवालों को और दुःखी किया जाए, क्योंकि उनकी भी अपनी बेटी मधु थी। यदि कोई उनके परिवार के साथ भी ऐसा करता, तो उन्हें कितना बुरा लगता?

(ग) अवतरण के आधार पर पिताजी के व्यक्तित्व की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** अवतरण के आधार पर कहा जा सकता है कि अमित के पिताजी का व्यक्तित्व अपनी पत्नी की तुलना में अधिक संवेदनशील एवं सुलझा हुआ था। उनके व्यक्तित्व में संवेदनशीलता के अतिरिक्त बौद्धिकता एवं तार्किकता मौजूद थी। वे एक समझदार पिता की भाँति सोच रहे थे और मीनू के गुणों एवं योग्यता की मन-ही-मन प्रशंसा कर रहे थे। उनका व्यक्तित्व एक सुलझे हुए व्यक्ति एवं संवेदनशील पिता की भाँति था।

(घ) अमित की माँ के व्यक्तित्व के बारे में आप क्या सोचते हैं? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** अमित की माँ का व्यक्तित्व लालची एवं स्वार्थी प्रवृत्ति का था, वे नारी मन की कोमल भावनाओं को नज़रअंदाज कर रही थीं और धन के लालच में अपने बेटे की शादी उस लड़की से करना चाहती थीं, जिसके बारे में उन्हें भी पता है कि वह मीनू की अपेक्षा कम गुणवान एवं कम योग्य थी। वह परिवार को ठीक से सँभाल भी नहीं पाएगी। उनका बेटा अमित भी उसे पसंद नहीं करता था। इसके बावजूद भी वे धन के लोभ में अमित की शादी धनीमल जी की बेटी से कराना चाहती थीं।

4. माँ को लगा, शायद अमित सरिता के रिश्ते को तैयार नहीं है। इसलिए वह बोली, “बेटे! व्यवहार का तो किसी का भी पता नहीं है। न सरिता के बारे में ही कुछ कहा जा सकता है और न ही मीनू के बारे में, व्यवहार का तो साथ रहने पर ही पता चलता है।”

[2017]

(क) माँ को कैसे पता चलता है कि अमित सरिता के रिश्ते के लिए तैयार नहीं है? (2)

**उत्तर** मीनू को देखकर आने के बाद भी जब माँ सरिता से विवाह के लिए ज़ोर डाल रही थी, तो अमित ने पूछा कि सरिता जो बड़े घर की लड़की है, क्या वह तुम्हारे साथ, हमारे घर के वातावरण में

घुल-मिल कर रह पाएगी? यह सुनकर माँ को लगा कि अमित इस रिश्ते के लिए तैयार नहीं है।

(ख) अमित के पिता मायाराम जी सरिता के रिश्ते को क्यों स्वीकार नहीं करना चाहते हैं? (2)

**उत्तर** अमित के पिता मायाराम जी दहेज विरोधी थे। वे नहीं चाहते थे कि धनीमल जैसे बड़े व्यक्ति की बेटी से अमित का विवाह कर अपने बेटे को बेच डालें। वे मीनू को अमित के लिए पसंद कर चुके थे, इसलिए सरिता के रिश्ते को स्वीकार नहीं करना चाहते थे।

(ग) अमित और सरिता का रिश्ता तय होने के लिए माँ किसको और क्यों उकसाती है? माँ की ऐसी धारणा से उनके स्वभाव के बारे में क्या पता चलता है? समझाकर लिखिए। (3)

**उत्तर** अमित और सरिता का रिश्ता तय होने के लिए माँ अमित के पिता मायाराम को पत्र लिखने के लिए उकसाती है कि वे दयाराम जी को मीनू के विवाह का इनकार करने संबंधी पत्र लिखें, ताकि मीनू का रिश्ता टूटे और वे सरिता से अमित का विवाह कर सकें। माँ की ऐसी धारणा से उनके स्वार्थी, दहेज लोभी और संवेदनहीन होने का पता चलता है। एक नारी होकर भी उनके मन में लड़की के प्रति कोमल भावनाएँ नहीं हैं। वे दहेज देखते ही रूप-गुण, योग्यता सब भूल बैठती हैं।

(घ) शादी के विषय में समाज की क्या परंपरा है? आप इससे कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** शादी के विषय में समाज की परंपरा यह है कि वैवाहिक रिश्ते की बात होते ही लड़का-लड़की एक-दूसरे को देखते हैं, परंतु अंतिम फैसला उनके माता-पिता की स्वीकृति से ही लिया जाता है। विवाह के लिए समझदार माता-पिता लड़की के गुण और योग्यता को महत्व देकर दोनों परिवारों में समानता होने को भी महत्वपूर्ण मानते हैं। इसके विपरीत कुछ दहेज लोभी माता-पिता कन्या के रूप-गुण और योग्यता को नज़रअंदाज करके लड़के का रिश्ता वहीं करने की जिद भरा फैसला लेते हैं, जहाँ दहेज मिलता है। मैं ऐसी सोच एवं ऐसे फैसलों से असहमत हूँ।

## अध्याय 4

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में मायाराम के परिवार की स्वीकृति की आशा में बैठे दयाराम के परिवार की आशाएँ टूट जाने, मीनू में हीनभावना आने, किसी मित्र के समझाने पर अमित के साथ आशा का विवाह तय करने के लिए दयाराम का मानना और मेरठ जाने पर सच्चाई का पता चलने पर अमित के परिवार के प्रति घृणा से भरने का उल्लेख किया गया है।

### आशा-निराशा के बीच पत्र का इंतज़ार

अमित एवं उसके परिवार के सदस्यों ने मीनू के पिताजी को कहा था कि घर जाकर विचार-विमर्श करके अपनी राय के बारे में पत्र लिखेंगे। मीनू के घरवाले उनके पत्र का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। उन्हें आशंका थी कि पता नहीं, वे लोग मीनू को पसंद करेंगे या नहीं? मीनू की माँ को लग रहा था कि संभवतः उन्हें यह रिश्ता मंजूर नहीं है, इसलिए पत्र

नहीं लिखा, जबकि पिताजी थोड़े आशान्वित थे, क्योंकि ऐसे मामलों में थोड़ी देर तो लगती ही है। उन्हें लग रहा था कि पत्र अवश्य आएगा। मीनू भी अतीत की स्मृतियों के कारण घबरा रही थी। इतनी घबराहट तो उसे किसी परीक्षा का परिणाम निकलने वाले दिन भी नहीं होती थी।

### पत्र में निराशा भरी खबर

पोस्टमैन ने जब रोहित को पत्र दिया, तो सभी के दिल की धड़कन एकदम तेज़ हो गई, विशेषकर मीनू की। वह समझ नहीं पा रही थी कि इस परीक्षा में वह पास हो पाएगी या नहीं। पत्र पढ़ने के बाद घर के सभी सदस्यों के चेहरे पर उदासी छा जाने पर मीनू समझ गई कि उसे एक बार फिर से नापसंद किया गया है, उसका दिल रो पड़ा। वह समझ नहीं पा रही थी कि कुरूप न होने के बावजूद उसमें ऐसी कौन-सी कमी है, जिसके कारण सभी लड़के वाले उसे नापसंद कर देते हैं।



## हीनभावना का शिकार हुई मीनू और अमित के घरवालों की योजना

अमित के घरवालों द्वारा नापसंद किए जाने के बाद मीनू के अंदर एक हीनभावना बैठ गई। उसे लगा कि संभवतः वह विवाह के योग्य है ही नहीं। अतः उसने विवाह नहीं करने का निश्चय किया और तकिये में मुँह छिपाकर लेट गई। आज उसे स्वयं पर ही खीझ हो रही थी। अमित के घरवालों ने योजना बनाते हुए पत्र में यह स्पष्ट किया गया था कि उन लोगों को मीनू की जगह आशा पसंद है। अतः वे अमित का विवाह आशा से करना चाहते हैं।

इस प्रस्ताव से मीनू के माता-पिता असमंजस में पड़ गए। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि बड़ी बेटी मीनू के अविवाहित रहते छोटी बेटी आशा की शादी कैसे कर दी जाए? वह तो अभी इंटर की परीक्षा ही दे रही है। उन्हें अपनी बड़ी बेटी मीनू के प्रति अत्यधिक सहानुभूति होने लगी।

## मीनू द्वारा विवाह नहीं करने के प्रति दृढ़ता दिखाना

अपने माता-पिता के उदास चेहरों को देखकर अत्यधिक दुःखी हुई मीनू ने अपने अंदर साहस एकत्र करके पिताजी से आशा की शादी कर देने की बात की। पिताजी द्वारा समाज का वास्ता देने पर मीनू ने कहा कि यह समाज हमारे लिए क्या करता है?

समाज के बारे में सोचने से कोई लाभ नहीं। माँ के विरोध करने पर वह बोली कि मैं अब अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हूँ। मैंने अपनी शादी का विचार छोड़ दिया है, अब मैं अपने जीवन में कुछ करना चाहती हूँ।

## मीनू के पिताजी का अमित के पिताजी से मिलने जाना

मीनू के माता-पिता ने उलझन से बाहर निकलकर यह निर्णय लिया कि एक बार मेरठ जाकर अमित के पिताजी से मिल लेना चाहिए। मीनू के पिताजी अमित के घर पहुँचे। मायाराम जी उस समय बाहर गए थे। नौकर ने दरवाजा खोलकर उन्हें अंदर बैठाया। कुछ ही देर में वहाँ धनीमल भी आ गए। उन्होंने बताया कि अमित के साथ उनकी बेटी सरिता का रिश्ता पक्का हो गया है और वे इस विवाह पर पाँच लाख रुपये खर्च कर रहे हैं। मीनू के पिताजी को यह समझते देर नहीं लगी कि अमित के पिताजी ने अपने बेटे को बेच दिया है। उन्हें लगने लगा कि पैसे के सामने इस दुनिया में इंसानियत, शर्म, लज्जा कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है। यह दुनिया बड़ी क्रूर है। दयाराम जी के वापस आने पर सारी सच्चाई जानकर परिवार के सभी सदस्यों के हृदय में अमित के परिवार के प्रति घृणा भर गई।

## शब्दार्थ

मौन—सन्नाटा, चुप्पी (silence); कुरूप—असुंदर (ugly); कसूर—अपराध, गलती (crime, guilt); अभागन—अभाग्यशाली (unlucky); सांत्वना—धीरज, दिलासा (patience); विवश—मजबूर (compel); रीति-रिवाज—परंपरा (custom, tradition); अभिप्राय—तात्पर्य, मतलब (meaning); उलझन—असमंजस, ऊहापोह (dilemma); घनिष्ठ—गहरे (close); ज्ञात—मालूम, जानकारी (known); ज़ालिम—क्रूर, कठोर (cruel); इंसानियत—मानवता (humanity); वास्तविकता—सच्चाई (reality)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- पढ़ाई के परीक्षाफल में वह हमेशा प्रथम आती थी, परंतु इस परीक्षा में वह समझ नहीं पा रही थी कि वह पास भी हो सकेगी या नहीं। तभी उसे रोहित की आवाज़ सुनाई दी, जोकि जोर-जोर से बोल रहा था कि मेरठ से पत्र आ गया है।

पिताजी ने पत्र पढ़ा, एक-एक करके सबने पत्र पढ़ा, परंतु पत्र पढ़ने के बाद सबके चेहरों पर उदासी छा गई। घर में सन्नाटा छा जाने से मीनू समझ गई थी कि यहाँ से भी वह नापसंद कर दी गई है। यह कल्पना कर उसका दिल रो पड़ा। वह समझ नहीं पा रही थी कि उसमें क्या कमी है? कुरूप तो नहीं है वह.....।

- प्रस्तुत अवतरण में किस परीक्षा के विषय में चर्चा की गई है? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण में मीनू के विवाह संबंधी परीक्षा की चर्चा की गई है। पढ़ाई की परीक्षा में हमेशा प्रथम आने वाली मीनू अपनी शादी के लिए लड़के वालों की 'हाँ' या 'ना' की परीक्षा के दौर से गुजर रही थी। उसे यह पता भी नहीं था कि इसमें वह सफल होगी भी या नहीं, क्योंकि इस परीक्षा का परिणाम उसके नियंत्रण से बाहर था।

- अमित के घरवालों ने पत्र में क्या लिखा था? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** अमित के घरवालों की बुरी योजना के चलते हुए पत्र में अमित की शादी मीनू की जगह उसकी छोटी बहन आशा से करने का प्रस्ताव रखा था। उनका कहना था कि उन लोगों को मीनू की अपेक्षा आशा अधिक पसंद आई है, इसलिए वे अमित की शादी आशा के साथ करना चाहते हैं। यद्यपि सच्चाई इसके विपरीत थी।

- मीनू का दिल क्यों रो पड़ा? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** अमित के घरवालों का पत्र आने के बाद मीनू के परिवार के सदस्यों के चेहरों पर छाई उदासी से मीनू समझ गई कि मेरठ वालों ने उसके साथ अमित के विवाह के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया है। वह समझ नहीं पा रही थी कि कुरूप न होने के बावजूद भी उसमें ऐसी कौन-सी कमी है, जिसके कारण सभी लड़के वाले शादी से इनकार कर देते हैं। वह अपनी एवं अपने घरवालों की दयनीय स्थिति से अत्यंत विचलित हो उठी। उसका हृदय अत्यंत दुःखी होने के कारण रो पड़ा।

- मेरठ वालों द्वारा अस्वीकार किए जाने के बाद मीनू ने क्या निर्णय लिया? (3)

**उत्तर** मेरठ वालों ने जब अमित के साथ मीनू के विवाह के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया, तो मीनू के अंदर एक हीनभावना बैठ गई। उसे लगने लगा कि संभवतः वह विवाह के योग्य है ही नहीं। वह विवाह के लिए कोशिश करके अनावश्यक ही स्वयं को एवं अपने घरवालों को दुःखी कर रही है। इसी हीनभावना के कारण उसने मन-ही-मन निश्चय कर लिया कि अब वह कभी विवाह नहीं करेगी।



2. उसके हृदय में अंतर्द्वंद्व चल रहा था कि वह जो निर्णय ले रही है, वह उचित है कि नहीं। अंत में इसी निर्णय को उचित मानकर वह कमरे से बाहर निकली। पिताजी व माताजी के उदास चेहरों को देखकर उसकी आँखें दुःख से बोझल हो गईं। वह उनके दुःख को भली-भाँति समझ रही थी। कितनी अभागन थी वह, जिसके कारण उसके माता-पिता इतने परेशान थे।

(क) किसके हृदय में अंतर्द्वंद्व चल रहा था और अंतर्द्वंद्व क्या था? (2)

**उत्तर** मेरठ वालों द्वारा अमित के साथ रिश्ते के लिए इनकार किए जाने के कारण मीनू के हृदय में अंतर्द्वंद्व चल रहा था और अंतर्द्वंद्व यह था कि इतने लड़के वालों द्वारा नापसंद कर दिए जाने के बाद वह आगे अपने विवाह के लिए कोशिश करे या नहीं? वह इसी तरह नापसंद किए जाने के दुःख एवं क्षोभ को सहने के लिए तैयार रहे या नहीं?

(ख) मीनू द्वारा लिया गया निर्णय क्या था? क्या उसके निर्णय से आप सहमत हैं? (2)

**उत्तर** मीनू ने विवाह नहीं करने का निर्णय लिया था। मीनू का निर्णय बहुत तार्किक है, क्योंकि किसी व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य सिर्फ विवाह तक सीमित नहीं हो सकता। उसे अपने जीवन का एक व्यापक एवं ऊँचा लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। मीनू ने अपनी योग्यता एवं क्षमता को समझते हुए उचित निर्णय लिया था एवं मैं इसके इस निर्णय से पूर्णतया सहमत हूँ।

(ग) उसके माता-पिता का दुःख क्या था? (3)

**उत्तर** मीनू के माता-पिता को मीनू के विवाह न हो पाने का अत्यधिक दुःख था। उन्होंने अपनी बेटी को पढ़ाया-लिखाया और योग्य बनाया। जीवन के पड़ाव में एक पड़ाव विवाह का भी होता है, जिसे उसके माता-पिता सफलतापूर्वक संपन्न करना चाहते थे, लेकिन दुर्भाग्य से मीनू को विवाह के लिए देखने आने वाले लड़के या उसके परिवार वाले उसे पसंद नहीं कर रहे थे, जिसके कारण मीनू के माता-पिता अत्यंत दुःखी थे।

(घ) उसका स्वयं को अभागन मानना क्या उचित है? यदि नहीं, तो क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू को लगने लगा कि वह अत्यंत दुर्भाग्यशाली है, जिसके कारण उसकी शादी नहीं हो पा रही है। उसकी शादी नहीं होने से उसके माता-पिता चिंतित एवं परेशान हैं। अपने माता-पिता की चिंता या परेशानी का कारण मीनू स्वयं को मान रही है। इसी कारण वह स्वयं को अभागन मानती है, जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। मीनू की शादी नहीं होने का एक बड़ा कारण दहेज भी है और इस सामाजिक कुप्रथा के लिए वह कदापि दोषी नहीं है।

3. “आप समाज की चिंता न करते हुए आशा की शादी कर दीजिए।” तभी पास बैठी माँ बोल पड़ी, “बेटी, हमारे यहाँ इस तरह का रिवाज़ नहीं है कि बड़ी बेटी के घर में रहते हुए छोटी बेटी की शादी हो।” “माँ, तुम मेरी शादी की चिंता न करो। मैंने तो निश्चय कर लिया है कि मैं शादी नहीं करूँगी। मैं अपने पाँव पर खड़ी होना चाहती हूँ, जिससे मैं बोझ न बन सकूँ।” मीनू भरे कंठ से बोली।

(क) समाज की चिंता नहीं करने का परामर्श कौन दे रहा है और क्यों? (2)

**उत्तर** समाज की चिंता नहीं करने का परामर्श मीनू द्वारा अपने पिताजी को दिया जा रहा है, क्योंकि मीनू का तर्क है कि यह समाज जब हम लोगों के बारे में नहीं सोचता है, तो फिर हम लोगों को भी उसके बारे में अधिक नहीं सोचना चाहिए।

(ख) माँ किस तरह की परंपरा का हवाला दे रही थी? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** माँ सामाजिक परंपरा का हवाला दे रही थी कि हम लोगों के समाज में बड़ी बेटी के अविवाहित रहते हुए छोटी बेटी की शादी नहीं होती है। यह रिवाज़ हमारे यहाँ बहुत पहले से ही प्रचलन में है। ऐसी स्थिति में लोग तरह-तरह की बातें बनाते हैं।

(ग) मीनू ने अपने किस दृढ़ निश्चय को व्यक्त किया? (3)

**उत्तर** मीनू ने अपना विवाह नहीं करने के दृढ़ निश्चय को व्यक्त किया। उसने यह दृढ़ निश्चय कर लिया था कि अब वह अपने पैरों पर खड़ी होगी, आत्मनिर्भर बनेगी और समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करेगी। वह विवाह के लिए परेशान न होकर अपनी ऊर्जा, क्षमता एवं समय को अपने मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति में लगाएगी। वह विवाह करने के बजाय इस समाज में अपना एक ऊँचा रुतबा, आदर-सम्मान स्थापित करेगी।

(घ) ‘बोझ’ से मीनू का क्या तात्पर्य है? उसके माता-पिता ने इस पर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की? (3)

**उत्तर** ‘बोझ’ से मीनू का तात्पर्य दूसरों पर ‘निर्भरता’ से है। मीनू अब अपने पैरों पर खड़ी होकर आत्मनिर्भर और सफल बनना चाहती थी। वह इस समाज को अपनी योग्यता एवं क्षमता से परिचित कराना चाहती थी। मीनू द्वारा ‘बोझ’ शब्द का प्रयोग किए जाने पर उसके माता-पिता को अच्छा नहीं लगा। उसकी माँ ने कहा कि तुमने ऐसा कैसे सोच लिया कि एक बेटी अपने माता-पिता के लिए बोझ है? लेकिन मीनू ने माँ को समझाते हुए कहा कि उसका तात्पर्य यह है कि अब वह आत्मनिर्भर बनना चाहती है।

4. कैसी ज़ालिम है ये दुनिया! सब कुछ पैसा ही है इस दुनिया में? इंसान की इंसानियत, शर्म, लज्जा कुछ भी तो नहीं रही है। पिताजी के मन में अंतर्द्वंद्व चल रहा था।

(क) अवतरण में उपरोक्त वाक्य किस संदर्भ में कहे गए हैं? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** दयाराम जी को जब यह पता चला कि मायाराम जी अमित का विवाह धनीमल जी की बेटी के साथ करने के लिए राजी हो गए हैं। वे केवल अधिक धन पाने के लालच में अपने बेटे की शादी धनीमल जी की बेटी के साथ करने के लिए तैयार हैं। इसी संदर्भ में उनके द्वारा उपरोक्त वाक्य कहे गए हैं।

(ख) पिताजी के मन में किस तरह का अंतर्द्वंद्व चल रहा था? (2)

**उत्तर** मीनू के पिता दयाराम जी के मन में यह अंतर्द्वंद्व चल रहा था कि उनके घर पर सभी लोग अमित के साथ आशा के विवाह की बात सोच रहे होंगे, जबकि अमित के पिता मायाराम जी ने तो पाँच लाख रुपये के लालच में अपने बेटे की शादी धनी व्यक्ति धनीमल जी की बेटी से करने की ठान ली है।

(ग) पिताजी के घर पहुँचने पर लोगों की क्या प्रतिक्रिया हुई? (3)

**उत्तर** मीनू के पिताजी जब घर पहुँचे, तो घर के लोगों ने उनका उदास एवं बुझा हुआ चेहरा देखा। दयाराम जी को देखते ही घर वाले समझ गए कि अमित के साथ आशा के विवाह की बात भी बनी नहीं है। उन लोगों ने पत्र लिखने के बावजूद आशा से विवाह करने को भी मना कर दिया है। मीनू के पिताजी ने जब अमित के घर का सारा वृत्तांत सुनाया, तो सबके हृदय में अमित के परिवार वालों के प्रति घृणा भर गई।

(घ) मीनू ने किस प्रकार अपने साहस का परिचय दिया? (3)

**उत्तर** अमित के घरवालों द्वारा मीनू को नापसंद कर दिए जाने के बाद मीनू के अंदर एक गहरी हीनभावना बैठ गई थी। वह स्वयं को विवाह के लिए अयोग्य समझने लगी थी। इन विषम परिस्थितियों के अतिरिक्त उसने स्वयं को सँभाला तथा अपने साहस का परिचय देते हुए उसने अपनी जिंदगी के लिए एक ऊँचा लक्ष्य निर्धारित किया। उसने विवाह न करने का दृढ़ निश्चय करके एक बड़ा वकील बनने का फैसला किया, जिसकी समाज में अपनी कुछ प्रतिष्ठा हो। इस प्रकार मीनू ने समझदारी एवं साहस का परिचय दिया।

# अध्याय 5

## पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में मीनू द्वारा विपरीत परिस्थितियों में हिम्मत न हारने, वकील बनने के सपने को पूरा करने के लिए वकालत की पढ़ाई के लिए दाखिला लेने, हॉस्टल में अकेला होने पर बचपन की स्मृतियों में खोने, दो दिन बाद ही पिता से मिलकर खुश होने एवं घर के स्नेह की यादों में डूबने का उल्लेख किया गया है।

### दृढ़ता एवं साहस की प्रतिमूर्ति : मीनू

जीवन की विषम परिस्थितियों के कारण मीनू में हीन भावनाएँ उत्पन्न हो गई थीं, लेकिन मीनू बहुत समझदार लड़की थी। उसे इस बात का अहसास था कि जीवन का उद्देश्य केवल विवाह तक ही सीमित नहीं है। यदि विवाह की बात नहीं बनी तो क्या वह अपना जीवन व्यर्थ (बेकार) कर देगी? उसने दृढ़ता एवं साहस का परिचय देते हुए विवाह का सपना देखना छोड़कर अपने जीवन का लक्ष्य निश्चित कर लिया था।

### बचपन के सपने को साकार करना

मीनू की बचपन से ही वकील बनने की इच्छा थी, जिसे अब वह पूरी करना चाहती थी। उसकी लगन को देखते हुए उसके माता-पिता ने भी उसे वकालत पढ़ने की स्वीकृति दे दी। मीनू ने वकालत में दाखिला ले लिया। वह सफल होकर इतना पैसा कमाना चाहती थी कि समाज में उसका सिर ऊँचा रह सके, क्योंकि चारों ओर केवल पैसे वालों का ही महत्त्व दिखाई देता है। हर व्यक्ति पैसा कमाने में ही लगा रहता है।

### मीनू का हॉस्टल जाना

मीनू अभी तक अपने घर में माता-पिता के साथ रहकर ही पढ़ी थी। वह हॉस्टल में रहने के लिए पहली बार घर से अलग हो रही थी। वकील बनने के लिए उसके अंदर इतनी अदम्य (जो दबाया जा सके/प्रबल) इच्छाशक्ति जाग्रत हो गई थी कि उसने किसी भी प्रकार की समस्या का सामना करने के लिए अपने आप को पूरी तरह से तैयार कर लिया था।

आखिर हॉस्टल जाकर अपने सपने को पूरा करने का दिन आ ही गया। घर छोड़ना उसे अच्छा नहीं लग रहा था। माँ ने उसे सीने से लगाकर आशीर्वाद और उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ दीं। माता-पिता का आशीर्वाद एवं छोटे भाई-बहन का प्यार साथ लेकर वह अपने जीवन के सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए घर से निकल पड़ी। उसने वकालत की पढ़ाई के लिए दाखिला लिया और हॉस्टल में रहने लगी।

### हॉस्टल में शुरुआती दिन

हॉस्टल के शुरुआती कुछ दिनों में तो मीनू का मन बिलकुल भी नहीं लगा। वह अपना अधिकांश समय पुस्तकों के साथ ही व्यतीत करती थी। कई बार वह अपने बचपन की स्मृतियों में खो जाती थी। बचपन में जिस तरह वह वकील बनने की इच्छा व्यक्त करती थी, तब उसकी माँ बोलती कि “इतना कौन पढ़ाएगा तुझे? इससे पहले ही तेरी शादी कर देंगे।” ऐसी बातें मीनू को ठेस पहुँचाती थीं।

### हॉस्टल में पिता से मिलकर यादें ताजा होना

हॉस्टल में रहते हुए मीनू को दो दिन ही हुए थे। वह अतीत की स्मृतियों में खोई हुई थी, तभी उसकी एक सहेली ने आकर बताया कि उसके पिताजी आए हैं। मीनू उछलकर भागी और पिताजी से मिलने पहुँची। दो दिन बाद ही उसके पिताजी मिलने गए थे, पर मीनू को ऐसा लग रहा था मानो कितने लंबे समय के बाद वह अपने पिताजी से मिल रही है। लगभग एक घंटा रुककर पिताजी वापस चले गए, लेकिन मीनू की घर वालों के साथ स्नेह भरी स्मृतियों को ताजा कर गए।

### शब्दार्थ

परिस्थितियाँ—हालात (circumstances); होनहार—तेज (brilliant); दृढ़ता—मजबूती (strongly); लगन—इच्छाशक्ति (will-power); पुलकित—प्रसन्न (happy); दैदीप्यमान—चमकता हुआ (shining); प्रकाशमय—प्रकाश से परिपूर्ण (lighted); उद्देश्य—लक्ष्य (aim, target); पूर्ति—पूरा करना (fulfil); ठेस-चोट (hurt)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- वह स्वयं ही दृढ़ता व साहस की मूर्ति थी। उतार-चढ़ाव तो हर इंसान की जिंदगी में आते ही रहते हैं, उसने साहस से काम लिया। उसने विवाह का सपना देखना ही छोड़ दिया। उसके सामने इतनी लंबी जिंदगी पड़ी थी, जिसको वह एक क्षण भी व्यर्थ नहीं होने देना चाहती थी।

(क) लेखिका मीनू को दृढ़ता व साहस की मूर्ति क्यों कह रही है? (2)

**उत्तर** लेखिका मीनू को दृढ़ता व साहस की मूर्ति इसलिए कह रही है, क्योंकि मीनू ने समाज के विरुद्ध खड़े होने का फैसला कर लिया था। वह स्पष्ट रूप से फैसला करती है कि वह अभी विवाह नहीं करेगी। साथ ही वह वकील बनने का निर्णय करती है। उससे पहले वह समाज को कुछ बनकर दिखाएगी।

(ख) विवाह के अलावा मीनू के जीवन का लक्ष्य क्या था? (2)

**उत्तर** विवाह के अलावा मीनू के जीवन का लक्ष्य एक प्रतिष्ठित वकील बनना था। विवाह न होने की चिंता में पड़कर वह अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहती थी। उसकी इच्छा थी कि पैसे के पीछे भागने वाली दुनिया को वह इतना पैसा कमाकर दिखाए कि सभी उसका आदर-सत्कार करने लगें।

(ग) मीनू समाज के झूठे आवरण को हटाकर एक सत्य दिखाना चाहती है। स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** मीनू पैसे के महत्व को अच्छी तरह से समझ गई थी। अतः वह अपने पैरों पर खड़ा होकर समाज में अपना सर ऊँचा करना चाहती थी तथा मीनू समाज के झूठे आवरण को हटाकर एक सत्य दिखाना चाहती थी कि समाज में सब-कुछ पैसा ही नहीं होता। योग्यता और दृढ़ इच्छा-शक्ति के बल पर इस दुनिया में सबकुछ पाया जा सकता है तथा वह यह भी दिखाना चाहती थी कि लड़कियाँ लड़कों से किसी प्रकार कम नहीं हैं।

(घ) प्रस्तुत पंक्तियों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए। (3)

**उत्तर** प्रस्तुत पंक्तियों में लेखिका स्पष्ट करना चाहती है कि मीनू एक साहसी व मजबूत लड़की थी। वह इस बात को जानती थी कि जिंदगी के उतार-चढ़ाव से हर आदमी को गुजरना पड़ता है अर्थात् जीवन में संघर्ष तो करना ही पड़ता है। अतः मीनू ने साहस से काम लिया। उसने अभी विवाह न करने की सोची। विवाह से पहले वह कुछ बनना चाहती थी और इसके लिए उसके पास काफी समय था, परंतु वह इस समय को एक पल के लिए भी बेकार नहीं करना चाहती थी।

- अपने पाँव पर खड़े होकर वह इतना पैसा कमा लेना चाहती थी कि जिससे वह समाज में सिर ऊँचा करके रह सके। इस समाज में चारों ओर पैसे वालों की तो इज्जत है... हर जगह पैसे का ही बोल-बाला है। बस पैसा... पैसा... पैसा... हर व्यक्ति इसी होड़ में जुटा है।

(क) अपने पाँव पर खड़े होने से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** अपने पाँव पर खड़े होने से तात्पर्य आत्मनिर्भर होने से है। मीनू समाज में स्वयं को प्रतिष्ठित करना चाहती थी। उसकी इच्छा थी कि वह एक बड़ी वकील बने और चारों ओर उसकी इतनी प्रसिद्धि रहे कि उसके पास दुनिया की हर सुविधा मौजूद हो।

(ख) वह समाज में सिर ऊँचा किस प्रकार करना चाहती थी? (2)

**उत्तर** मीनू पैसे के महत्व को अच्छी तरह समझ गई थी, इसलिए उसे लगता था कि जब तक पैसा नहीं आएगा, तब तक वह समाज में प्रतिष्ठित नहीं हो पाएगी। वह पैसा कमाकर समाज में अपना सिर ऊँचा करना चाहती थी।

(ग) हर व्यक्ति कौन-सी होड़ में जुटा है? समझाइए। (3)

**उत्तर** समाज का हर व्यक्ति पैसे कमाने की होड़ में जुटा है। चारों ओर सिर्फ पैसे का ही बोल-बाला है, जिसे देखो! वही पैसे के पीछे भागा जा रहा है। समाज में चारों ओर पैसे वालों की ही इज्जत है। बिना पैसे वाले योग्य रहते हुए भी समाज के हाशिए पर पड़े हैं। मीनू यह बात अच्छी तरह जान गई थी कि यदि उसके पिताजी के पास दहेज में देने के लिए पाँच लाख रुपये होते, तो अमित के घरवाले कभी भी उसे नापसंद नहीं करते।

(घ) मीनू किससे अलग हो रही थी और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वकालत पढ़ने जा रही थी, क्योंकि उसे एक प्रसिद्ध वकील बनना था। वकालत पढ़ने के लिए उसे हॉस्टल में रहना था, इसलिए वह अपने माता-पिता एवं घर से अलग हो रही थी। वह हॉस्टल जा रही थी, जहाँ उसे अपना पूरा समय एवं ध्यान अपनी वकालत की पढ़ाई में लगाना था। वकालत पढ़कर वकील बनने के लिए ही वह अपने घर से, अपने माता-पिता से तथा भाई-बहन से अलग हो रही थी।

- “बेटी, एक देदीप्यमान नक्षत्र बनकर तुम जग को प्रकाशमय कर दो। जीवन की सारी खुशियाँ तुम्हारे पास हों, तुम अपने उद्देश्य प्राप्त में सफल हो, यही ईश्वर से मेरी प्रार्थना है।”

अपने माता-पिता का आशीर्वाद और छोटे भाई-बहन का प्यार साथ लिए मीनू ऐसी डगर पर चली जा रही थी, जहाँ उसे यह ज्ञात नहीं था कि कितने परिश्रम के बाद उसे सफलता मिल सकेगी, परंतु अपने जीवन का एक उद्देश्य बनाकर उसकी पूर्ति के लिए वह अपने कदम बढ़ाए जा रही थी।

(क) माँ ने अपनी बेटी को क्या आशीर्वाद दिया और क्यों? (2)

**उत्तर** माँ ने अपनी बेटी मीनू को नक्षत्र की भाँति चमकने का आशीर्वाद दिया, ताकि वह अपनी चमक से दुनिया के अँधेरे को दूर कर सके। वकील बनकर प्रतिष्ठा पाना ही अब मीनू के जीवन का उद्देश्य था। माँ चाहती थी कि उसकी बेटी अपने लक्ष्य को प्राप्त करे।

(ख) मीनू कौन-सी सफलता की खोज में जा रही थी और कहाँ? (2)

**उत्तर** मीनू वकालत की पढ़ाई के लिए घर से निकलकर हॉस्टल जा रही थी, क्योंकि वह एक प्रसिद्ध वकील बनकर इस दुनिया में खूब पैसा एवं यश कमाना चाहती थी एवं अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होना चाहती थी।

(ग) ‘जग को प्रकाशमय’ करने से क्या अभिप्राय है? (3)

**उत्तर** ‘जग को प्रकाशमय’ करने से तात्पर्य यह है कि मीनू एक चमकता हुआ सितारा बनकर अपने उज्ज्वल प्रकाश से इस संसार को प्रकाशित करे। इस जग के अनेक क्षेत्रों में अंधकार व्याप्त है। सामाजिक कुरीतियाँ, संकीर्ण परंपराएँ, अमीर-गरीब का अंतर, स्त्री-पुरुष का लिंग-भेद आदि क्षेत्रों में प्रकाश की आवश्यकता है, ताकि इन क्षेत्रों में प्रकाश हो सके।

(घ) हॉस्टल में मीनू के जीवन के प्रारंभिक दिन कैसे थे? (3)

**उत्तर** हॉस्टल में मीनू के जीवन के प्रारंभिक दिन बहुत ही उदासी भरे थे। मीनू का मन हमेशा अपने घर में व्यतीत किए गए समय, अतीत की घटनाओं एवं स्मृतियों में ही खोया रहता था। उसे घर के लोगों की बहुत याद आती रहती थी। प्रारंभ में उसकी अधिक सहेलियाँ भी नहीं थीं, इसलिए वह अपना अधिकांश समय पुस्तकों को पढ़ने में ही व्यतीत करती थी।

4. “अरे हट! वकील वगैरह कुछ नहीं बनना है। कौन पढ़ाएगा तुझे इतना? बस, अठारह साल की उम्र में शादी कर देंगे। फिर लड़कियों को कौन पढ़ाता है इतना। लड़कों की बात और है।”

(क) वकील बनने की किसकी इच्छा है और किसे यह पसंद नहीं है? (2)

**उत्तर** वकील बनने की इच्छा मीनू की है। जब भी बचपन में उसके पिताजी उससे पूछते थे कि वह बड़ी होकर क्या बनना चाहती है? तो वह हमेशा वकील बनने की अपनी इच्छा व्यक्त करती थी। मीनू की वकील बनने की इच्छा उसकी माँ को बिलकुल पसंद नहीं थी।

(ख) “लड़कों की बात और है।” यह किसने, किससे कहा? का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** “लड़कों की बात और है”—यह मीनू की माँ ने मीनू से कहा। इसका अभिप्राय यह है कि लड़कों की स्थिति लड़कियों की अपेक्षा

अधिक उच्च है, क्योंकि लड़कियों को तो अंततः घर-गृहस्थी ही सँभालनी है, जबकि लड़के घर के उत्तराधिकारी होते हैं। उनकी एवं लड़कियों की स्थिति में बहुत अंतर है। इससे समाज में लड़के व लड़कियों के बीच भेदभाव व पक्षपात का पता चलता है।

(ग) अवतरण में बोलने वाले की मानसिकता किस प्रकार की है? (3)

**उत्तर** अवतरण में पंक्तियाँ मीनू की माँ द्वारा कही गई हैं। उनकी मानसिकता लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को अधिक महत्त्व देने की है। वे पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता से जुड़ी हुई हैं, जहाँ लड़कियों को दोयम दर्जे का नागरिक माना जाता है। इसी कारण लड़के एवं लड़कियों के बीच भेद किया जाता है। उनकी नैतिकता दोनों के लिए अलग-अलग होती है।

(घ) लड़के-लड़कियों में भेदभाव करना समाज के लिए कितना हितकर है? (3)

**उत्तर** लड़के-लड़कियों के बीच भेदभाव करना किसी भी दृष्टि से समाज के लिए हितकर नहीं है। समाज के दोनों अंग—स्त्री एवं पुरुष समान हैं तथा सम्य समाज में उनका महत्त्व भी समान है। यदि समाज के आधे भाग को समाज की मुख्यधारा से काट दिया जाएगा, तो वह समाज कभी भी उन्नति नहीं कर सकता है, इसलिए लड़के-लड़कियों के बीच भेदभाव करना उचित नहीं है। इस भेदभाव को तुरंत समाप्त करने की आवश्यकता है।

## अध्याय 6

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में अमित की माँ द्वारा बार-बार सरिता की प्रशंसा करने, घरवालों का इस तरह सरिता के प्रति झुकाव न समझ पाने की अमित की मनोदशा तथा माँ को मीनू में बहू के अच्छे लक्षणों को दिखाने, धनीमल का कश्मीरी सेब लेकर आना, अमित की नाराज़गी और सरिता को दिखाने के लिए तिथि तय करने का उल्लेख किया गया है।

### मीनू के प्रति अमित की संवेदना एवं तरफ़दारी

अमित के घर में धनीमल जी एवं उनकी बेटी सरिता की ही चर्चा चलती रहती थी। अमित की माँ हमेशा धनीमल जी की प्रशंसा करती रहती थीं, लेकिन अमित इन बातों में अधिक रुचि नहीं लेता था। वह इस बात को समझता था कि वास्तव में यह शादी तय नहीं की जा रही, बल्कि उसे बेचा जा रहा है। वह स्वयं को बेचना नहीं चाहता था। अमित को मीनू पसंद थी, उसे मीनू के प्रति सच्ची गहरी संवेदना थी। एक दिन अमित ने अपनी माँ से पूछ ही लिया कि वह सरिता को घर लाने में इतनी रुचि क्यों ले रही हैं? सरिता की तुलना में मीनू अच्छी क्यों नहीं है? मीनू में कौन-सी कमी है? वह अधिक अच्छी पत्नी साबित हो सकती है। मीनू के दिल को हम लोगों ने बहुत ठेस पहुँचाई (दुःख पहुँचाया) है। हम लोगों को ऐसा नहीं करना चाहिए था।

### अमित द्वारा मौसी का उदाहरण सामने रखना

अमित ने अपनी माँ को बड़े घर की लड़की की कमियों को बताते हुए अपनी मौसी का उदाहरण सामने रखा। उसने कहा कि जिस तरह मौसी की लाड़ली बहू घर के कार्यों से दूर रहती है और सारा काम मौसी को ही करना पड़ता है, ठीक उसी तरह अमीर घर की लड़की सरिता भी करेगी। वह घर की ज़िम्मेदारियों को नहीं सँभाल सकती, उसे काम करने या ज़िम्मेदारी उठाने की आदत ही नहीं होगी। जिस तरह मौसी बुखार में तपने के बावजूद घर का काम करने के लिए मजबूर रहती हैं, वही स्थिति तुम्हारी भी हो सकती है।

### धनीमल के प्रलोभन देने पर अमित की नाराज़गी

जब धनीमल जी अमित के घर आए, उस समय उसके पिताजी घर पर नहीं थे। ऐसे में अमित ने ही उनका स्वागत किया। धनीमल जी अपने साथ कश्मीर के सेबों की एक पेटी भी लाए थे। अमित को यह उचित नहीं लगा। उसने सोचा कि जब अभी रिश्ता पक्का ही नहीं हुआ है, तो फिर सेब की पेटी लाने का क्या अर्थ है?

यह तो प्रलोभन देना है। इस बात पर वह अपने क्रोध को व्यक्त करना चाहता ही था कि उसके पिताजी आ गए और अमित वहाँ से उठकर अपनी माँ के पास चला गया।

### माँ द्वारा अमित के क्रोध को शांत करने की कोशिश

अमित इस बात से क्रोधित था कि धनीमल जी सेब की पेटी लेकर उनके घर क्यों आए? अमित के क्रोध को शांत करने की कोशिश करती हुई उसकी माँ ने कहा कि वे सरिता को दिखाने के लिए तिथि निश्चित करने आए हैं और हमारे यहाँ यह परंपरा है कि जब संबंध जुड़ जाता है, तब बेटी के घर खाली हाथ नहीं जाया जाता। उन्होंने तो इसी परंपरा का पालन किया है। इसमें गुस्सा करने की आवश्यकता नहीं है। अमित को लग गया कि उसकी माँ ने सरिता को इस घर में लाने की ठान रखी है। वह गुस्से में बड़बड़ाता हुआ समाचार-पत्र देखने लगा।

### शब्दार्थ

स्वाभिमान—आत्म-सम्मान (self-respect); सलोनी—प्यारी (lovely); उतावली—व्याकुल होना (excited); गृहिणी—पत्नी (house wife); सिलसिला—क्रम (continuation); कुशल-क्षेम—कुशलता (wellness); अनुपस्थिति—गैर-हाज़िरी (absence); कर्तव्य—दायित्व (duty, responsibility); भा—अच्छा लगना, पसंद आना (liking)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- अमित की माँ के मुँह से तो हमेशा धनीमल जी की ही प्रशंसा सुनाई देती। परंतु अमित को इन बातों में कोई रुचि नहीं थी। अमित धनी घर की लड़की से शादी करके स्वयं को बेचना नहीं चाहता था। आखिर उसका भी तो कोई स्वाभिमान है। अभी हाल ही में उसने एक फैक्ट्री लगाई है। ईश्वर की कृपा से पैसे की भी कमी नहीं। फिर सब पैसे वाले घर की लड़की क्यों लाना चाहते हैं?

(क) अमित के घर में हमेशा किसकी चर्चा होती रहती थी और क्यों? (2)

**उत्तर** धनीमल जी शहर के धनी व्यक्तियों में शामिल थे। उनकी संपत्ति से आकर्षित होने के कारण ही अमित का विवाह सरिता से कराए जाने का विचार किया जा रहा था, इसलिए अमित के घर में हमेशा धनीमल जी व उनकी बेटी सरिता की चर्चा होती रहती थी।

(ख) धनीमल जी की बेटी के बारे में अमित की क्या सोच थी? (2)

**उत्तर** धनीमल जी की बेटी सरिता के बारे में अमित की सोच नकारात्मक (बुरी) थी, क्योंकि अमित, मीनू को सरिता की तुलना में श्रेष्ठ पाता था, इसी कारण उसे सरिता पसंद नहीं थी। उसे संदेह था कि बड़े घर की लड़की होने के कारण सरिता अच्छी बहू शायद ही बन पाए।

(ग) अमित ने मीनू के बारे में अपनी माँ से क्या कहा? (3)

**उत्तर** अमित, मीनू के पक्ष में अपना मत प्रकट करते हुए, माँ से कहता है कि मीनू में ऐसी कौन-सी कमी है? जिसके कारण वे उसका विवाह मीनू से नहीं करना चाहती हैं, जबकि मीनू हर तरह से अच्छी है। वह सुशिक्षित है, अच्छे परिवार से संबंध रखती है एवं प्रत्येक कार्य को करने में निपुण भी है, जिस वजह से मीनू एक सुशील गृहिणी की भूमिका बेहतर ढंग से निभा सकती है।

(घ) अमित अपने मन की इच्छा व्यक्त क्यों नहीं कर पाता था? (3)

**उत्तर** अमित अपने मन की इच्छा को अप्रत्यक्ष (बिना दिखाए, गौण) रूप से उजागर करता था, लेकिन आज्ञाकारी पुत्र होने के कारण अपने माता-पिता के सामने खुलकर नहीं बोल पाता था। उसे अपनी माँ एवं पिताजी से अपनी भावी पत्नी के बारे में बातें करते हुए संकोच होता था। वह हमेशा अपनी इच्छा को साफ-साफ व्यक्त करने में असहजता महसूस करता था।

यही कारण है कि वह अपने घर में अपनी पसंद की लड़की मीनू का भी खुलकर पक्ष नहीं ले सका और मीनू को घरवालों द्वारा नापसंद कर दिया गया।

- एक दिन उसने माँ के सामने कहने का साहस किया—“माँ, तुम सरिता से ही मेरी शादी क्यों करना चाहती हो। क्या तुमने उसे देखा है, जो तुम इतनी उतावली हो उसे घर में लाने के लिए?” “नहीं, मैंने उसे देखा नहीं है, परंतु उसकी फोटो तो अच्छी है। क्या बुरी है देखने में?” माँ ने जवाब दिया।

(क) अमित की माँ अमित की शादी सरिता से करने के पक्ष में क्यों हैं? (2)

**उत्तर** अमित की माँ अमित की शादी सरिता से ही करने के पक्ष में इसलिए है, क्योंकि सरिता एक अमीर पिता की बेटी है। शादी में अमित की माँ को दहेज के रूप में काफी धन मिलने की आशा है। इतना ही नहीं, धनीमल जी की केवल तीन बेटियाँ ही हैं। अतः उनके मरने के बाद उनकी संपत्ति बेटियों के बीच ही बँटेगी। धन का यह लोभ उन्हें सरिता का पक्ष लेने के लिए विवश कर रहा है। यह प्रलोभन अमित की माँ को है।

(ख) मीनू के व्यक्तित्व में कौन-कौन-सी प्रमुख विशेषताएँ हैं? (2)

**उत्तर** मीनू के व्यक्तित्व में कई विशेषताएँ मौजूद थीं। मीनू न केवल पढ़ने-लिखने में बहुत तेज थी, बल्कि सिलाई, कढ़ाई-बुनाई आदि सभी कामों में भी वह अधिक निपुण थी। वह बहुत समझदार थी। पारिवारिक रिश्तों के महत्त्व को अच्छी तरह समझती थी। इस आधार पर कहा जा सकता है कि वह संयुक्त परिवार के माहौल में अच्छी तरह तालमेल बिठा सकने वाली एक कुशल गृहिणी साबित होती।

(ग) अमित, सरिता से विवाह करने का इच्छुक क्यों नहीं है? (3)

**उत्तर** अमित, सरिता से विवाह करने का इच्छुक इसलिए नहीं है, क्योंकि मीनू को देखने के बाद उसका साँवला-सलोना चेहरा अमित को आकर्षित कर चुका था। अमित उसे मन-ही-मन पसंद करने लगा था। इसके अलावा, उसे यह भी लगता था कि मीनू उसके घर को अधिक बेहतर तरीके से सँभाल सकती है। उसकी शिक्षा, गुण, योग्यता सब कुछ सरिता से बेहतर है। उसे लगता था कि सरिता विवाह के बाद उसके घर के माहौल में ताल-मेल नहीं बिठा पाएगी और उसके माता-पिता की सेवा भी नहीं कर पाएगी।



(घ) अमित ने मीनू का पक्ष लेते हुए क्या कहा? (3)

**उत्तर** अमित ने मीनू का पक्ष लेते हुए, उसके पढ़ी-लिखी होने एवं प्रत्येक कार्य को करने में उसकी निपुणता; जैसे-उसके गुणों एवं योग्यताओं को तो सामने रखा ही, साथ ही उसने अपनी माँ से कहा कि हम लोगों के घर में जितनी अच्छी तरह मीनू ताल-मेल बिठा सकती है, उतनी अच्छी तरह सरिता नहीं। इसके अतिरिक्त, अमित को इस बात का भी अफसोस था कि मीनू को नापसंद किए जाने से उसके दिल को अत्यधिक ठेस पहुँची होगी।

3. “बस इतनी-सी बात सोच रहा है। अमित, तुम हमारे एकमात्र पुत्र हो। एक ही बहू घर में आनी है। दो-चार जगह से पसंद करके ही तो लाई जाएगी। और फिर शादी गुड़ड़े-गुड़िया का खेल तो नहीं है, जो जब चाहे कर ले, और जब चाहे छोड़ दे? ज़िंदगी में एक बार ही होता है विवाह?” माँ ने गर्दन हिलाते हुए कहा।

(क) प्रस्तुत पंक्तियों में किसकी तरफदारी की जा रही है और क्यों? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत पंक्तियों में अमित की माँ द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से सरिता की तरफदारी की जा रही है। अमित की माँ, अमित को समझाते हुए कहती हैं कि आखिर विवाह तो एक ही बार होता है, तो उसे ठीक से जाँच-परख कर करना चाहिए। सरिता में उन्हें कोई कमी दिखाई नहीं दे रही है, इसलिए वे अमित की शादी सरिता से ही करने के पक्ष में हैं और वे सरिता का पक्ष ले रही हैं।

(ख) ‘दो-चार जगह से पसंद करने’ से क्या तात्पर्य है? (2)

**उत्तर** ‘दो-चार जगह से पसंद करने’ से तात्पर्य यह है कि शादी करने से पहले कुछ प्रस्तावों पर विचार अवश्य करना चाहिए, भावी बहू की पारिवारिक हैसियत, उसका रूप-रंग, योग्यता, घरेलू काम-काज करने की कुशलता की परख कर लेनी चाहिए और उसके बाद सभी का मूल्यांकन करके उनमें से किसी एक का चयन करना चाहिए। शादी तो जीवन में एक ही बार होती है। अतः पूर्णतः जाँच-परख कर करनी चाहिए।

(ग) विवाह करने के संबंध में अमित क्या तर्क देता है और क्यों? (3)

**उत्तर** विवाह करने के संबंध में अमित तर्क देता है कि शादी जीवन में एक बार ही होती है। अतः शादी वहीं करनी चाहिए, जहाँ लड़की अधिक पसंद हो, क्योंकि लड़की का गुणवान एवं सुशील होना अधिक आवश्यक है। वह घर के कार्यों में हाथ बँटाए तथा घर के लोगों का ध्यान रखे। बड़े घर की लड़की यह सब नहीं कर पाती। अमित यह तर्क इसलिए रखता है, क्योंकि वह मीनू से विवाह करना चाहता था, लेकिन उसके माता-पिता उसका विवाह धनीमल जी की बेटी सरिता से करवाने के पक्ष में थे, इसलिए अमित अप्रत्यक्ष रूप से अपनी इच्छा प्रकट करते हुए यह तर्क प्रस्तुत करता है।

(घ) अमित की माँ अपने पक्ष में क्या तर्क देती है? (3)

**उत्तर** अमित की माँ का अपना तर्क है कि शादी कोई गुड़ड़े-गुड़िया का खेल नहीं है कि जब मन करे और जिससे मन करे उससे शादी

कर ली जाए। शादी करने से पहले लड़की के घरवालों एवं उनकी हैसियत को देखना भी आवश्यक है। माँ यह तर्क इसलिए रखती है, क्योंकि वे अमित का विवाह शहर के धनी व्यक्तियों में शामिल सेठ धनीमल की बेटी से करवाना चाहती थीं, क्योंकि वे गुणों की अपेक्षा धन को अधिक महत्व दे रही थीं और सेठ धनीमल ने विवाह में पाँच लाख रुपये खर्च करने का भी वचन दिया था, इसलिए उन्होंने यह तर्क दिया था।

4. घर में अमित के पिताजी नहीं थे, इसलिए अमित ने ही उनका कुशल-क्षेम पूछकर उन्हें सम्मान के साथ बिठाया। पिताजी की अनुपस्थिति में उसका ही कर्तव्य था कि वह घर आए मेहमान का स्वागत करे। धनीमल जी के साथ आई फल की पेटी अमित को एक आँख भी नहीं भा रही थी। वह समझता था कि वे अपने पैसे का जादू डालकर सबको मोह लेना चाहते हैं, जब अभी रिश्ता पक्का ही नहीं हुआ तो फल किस बात के। अमित से रहा नहीं गया। उसने धनीमल जी से पूछ ही लिया, “ये फल क्यों ले आए हैं आप! इन सबकी क्या जरूरत थी?”

(क) अमित ने किसका कुशल-क्षेम पूछा और स्वागत किया? (2)

**उत्तर** अमित ने अपने घर आए धनीमल जी का कुशल-क्षेम पूछा और उनका स्वागत किया, क्योंकि उस समय अमित के पिताजी घर पर नहीं थे, इसलिए अमित को ही यह दायित्व निभाना पड़ा। यह एक सामान्य शिष्टाचार है, जिसे सामान्यतया सभी घरों में निभाया जाता है।

(ख) धनीमल जी अपने साथ क्या लाए थे और क्यों? (2)

**उत्तर** धनीमल जी अपने साथ कश्मीरी सेब की एक पेटी लेकर आए थे, ताकि वे अमित के घरवालों पर अपना प्रभाव छोड़ पाएँ। वे अपनी बेटी की शादी अमित से करने को इच्छुक थे, वे चाहते थे कि अमित के घरवाले उनसे प्रसन्न रहें।

(ग) धनीमल जी द्वारा लाए गए उपहार का अमित पर क्या प्रभाव पड़ा? (3)

**उत्तर** धनीमल जी द्वारा लाए गए उपहार के कारण अमित को गुस्सा आ रहा था, चूँकि अमित को उनकी बेटी सरिता पसंद नहीं थी, इसलिए वह नहीं चाहता था कि दोनों घरों का संबंध आगे बढ़े। उसका यह भी मानना था कि जब अभी रिश्ता तय नहीं हुआ है, तो यह सेब लाने की क्या आवश्यकता है। इस उपहार को वह एक प्रकार का प्रलोभन समझ रहा था।

(घ) अमित धनीमल जी के पास से उठकर कहाँ चला गया और क्यों? (3)

**उत्तर** अमित धनीमल जी के पास से उठकर अपनी माँ के पास चला गया, क्योंकि तब तक उसके पिताजी बाहर से आ गए थे। वह धनीमल जी और अपने पिताजी की बातों को सुनने एवं जानने में दिलचस्पी नहीं रखता था। वह धनीमल द्वारा सेब की पेटी लाने और उनके व्यवहार से नाराज़ था, इसलिए वह वहाँ से उठकर अपनी माँ के पास चला गया।



# अध्याय 7

## पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में सरिता को देखने के लिए अमित के परिवार की उत्सुकता, स्वयं को बेचे जाने की बात सोचकर अमित की उदासी, माँ और सरिता का हँसकर बातें करना, सरिता की रुचियाँ जानकर अमित को आश्चर्य होने, घर आने पर माँ द्वारा सरिता का पक्ष लेने, अमित की अरुचि जानने पर उस पर व्यंग्य करने तथा अमित द्वारा विरोध न कर पाने का उल्लेख किया गया है।

### सरिता को देखने जाना

आज अमित और उसका परिवार धनीमल जी के घर जाने वाला था, जिस कारण घर में सभी उत्साहित (खुश) नज़र आ रहे थे। अमित की माताजी विशेष रूप से उत्साहित थीं, उनके उत्साह को देखते हुए पिताजी भी इस रिश्ते से प्रसन्न थे। केवल अमित इस रिश्ते के लिए निरुत्साहित था। उसे ऐसा लग रहा था कि उसके माता-पिता कुछ रुपयों के लिए उसे धनी घर की लड़की के हाथों बेचना चाह रहे हैं। सभी नए वस्त्र पहनकर तैयार थे धनीमल जी का ड्राइवर उनके घर आता है और वे सभी गाड़ी में बैठकर उनके घर पहुँचते हैं। ड्राइवर जब कार का दरवाज़ा खोलता है, तो मायाराम जी स्वयं को अफसर के समान समझने लगते हैं।

### कोठी को देखकर आश्चर्यचकित होना

मायाराम जी का परिवार कोठी देखकर आश्चर्यचकित हो उठता है। उन्हें वहाँ स्वर्ण-सी अनुभूति होती है। लॉन में मखमल के समान बिछी घास व बेंत की रंग-बिरंगी सुंदर कुर्सियाँ तथा फूलों के गमले कोठी की शोभा को बढ़ा रहे थे। बैठक कक्ष का द्वार खुलने पर धनीमल जी बाहर आते हैं और उनका स्वागत करते हैं। धनीमल जी, मायाराम जी व उनके परिवार के सदस्यों के खाने के लिए विभिन्न प्रकार की मिठाइयाँ व फल रखते हुए घर के सदस्यों से सरिता को बुलाने के लिए कहते हैं।

### माँ का सरिता से बातें करना

सरिता अपनी चाची के साथ बैठक कक्ष में प्रवेश करती है। अमित, सरिता को देखता है, लेकिन वह उसे पसंद नहीं आती। वह उसकी तुलना मीनू से करने लगता है और सोचता है कि नैन-नक्श और रंग में भी मीनू, सरिता से कहीं अधिक सुंदर थी। सरिता को माताजी के पास बैठाया जाता है। वे उससे बहुत स्नेह से बात करती हैं। अमित और उसकी बहन मधु चुप ही बैठे रहते हैं। माँ को इस प्रकार बात करते देख अमित को बिलकुल अच्छा नहीं लगता। उसके दिमाग में अनेक प्रश्न उठते हैं कि माँ को सरिता पसंद आई या उसका पर्स?

### सरिता के जवाब से अमित का आश्चर्यचकित होना

धनीमल जी, मायाराम जी से अमित व सरिता को आपस में बात करने का अवसर देने के विषय में कहते हुए बाहर चले जाते हैं। अमित सरिता

से उसकी रुचि व घर के काम के बारे में प्रश्न पूछता है। सरिता बिना किसी हिचकिचाहट के कहती है कि उसे पेंटिंग और कार ड्राइविंग में रुचि है तथा उसे घर के काम नहीं आते। शादी के बाद काम करना पड़े तो .. के जवाब में सरिता बोल पड़ी कि पिताजी शादी के बाद उसके साथ एक नौकर भी भेजेंगे, जिसे सुनकर अमित आश्चर्यचकित हो उठता है। वह सरिता से उसकी शिक्षा के संबंध में पूछता है, तो वह बताती है कि उसने बी.ए. द्वितीय श्रेणी से पास किया है। अमित और सरिता की आपस में बातचीत चल रही थी, उसी समय कमरे में परिवार के अन्य सदस्य भी प्रवेश करते हैं। धनीमल जी बड़े ही आदर-सत्कार के साथ सभी को खाना खिलाते हैं। अमित खाना न खाने की इच्छा व्यक्त करता है, किंतु धनीमल जी के कहने पर उसे खाना ही पड़ता है।

### सरिता के प्रति सभी का अपने विचार अभिव्यक्त करना

धनीमल जी के घर से आने के उपरांत (बाद) सभी सरिता के बारे में अपने-अपने विचार व्यक्त करते हैं। माँ को सरिता पसंद आती है और वह कहती है कि केवल रंग जरा-सा गिरा हुआ है, वह भी शादी के बाद निखर जाएगा। पिताजी, धनीमल जी द्वारा दिए जाने वाले रुपयों के कारण सरिता की प्रशंसा करते हैं और दुनिया में दो ही रंग होने की बात कहते हैं।

मधु बीच में ही कहती है कि जरूरी नहीं कि हमारे घर काली भाभी ही आए। पिताजी उसे चुप होने के लिए कहते हुए अमित से अपनी राय प्रकट करने के लिए कहते हैं। अमित उदासी भरे स्वर में कहता है कि जब आपने धनीमल जी की बेटी से मेरा विवाह करना तय ही कर लिया है, तो मुझसे पूछना व्यर्थ (बेकार) है, वैसे मुझे वह बिलकुल पसंद नहीं है।

### माँ का अमित के विचारों पर कटाक्ष करना

अमित की इच्छा सुनने के उपरांत जहाँ पिताजी अनुभव करते हैं कि उसके साथ जबरदस्ती हो रही है और उसकी जिंदगी के साथ कोई खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। वहीं माँ, अमित की इच्छा पर कटाक्ष करते हुए कहती हैं कि आज के समय के लड़के-लड़कियों को आपस में मिलवाने से वे एक-दूसरे में कमियाँ निकालना शुरू कर देते हैं। थोड़ा रुकने के पश्चात् माँ कहती हैं कि आज के लड़के-लड़कियों का दिमाग खराब हो गया है। अमित, माँ की बातें सुनता रहता है और एक शिक्षित युवक होने के बाद भी वह उनका विरोध नहीं कर पाता और उठकर अपने कमरे में चला जाता है।

### शब्दार्थ

उत्सुक—उत्साहित (eager); एकांत—अकेले में (secluded); तपाक—शीघ्रता से (immediate); निःसंकोच—बिना किसी हिचकिचाहट के (without any hesitation); भौचक्का—आश्चर्यचकित (astonished); व्यंग्य—ताना कसना (scoff)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- कोठी का दरवाज़ा खुलते ही जैसे ही उन सबने अंदर प्रवेश किया। उन्हें लगा मानो स्वर्ग में आ गए हों। कोठी के बाहर लॉन में मखमल के समान घास बिछी थी। लॉन में बेंत की सुंदर रंग-बिरंगी कुर्सियाँ पड़ी थीं। रंग-बिरंगे फूलों के गमले कोठी की शोभा में चार चाँद लगा रहे थे।

(क) कोठी में किस-किस ने प्रवेश किया और क्यों? (2)

**उत्तर** धनीमल जी की कोठी में मायाराम जी, उनकी पत्नी, उनका बेटा अमित व बेटी मधु ने प्रवेश किया। मायाराम जी अपने परिवार के साथ अपने बेटे अमित के विवाह की बात धनीमल जी की बेटी सरिता के साथ करने और उसे देखने के लिए आए थे।

(ख) माताजी व पिताजी इस रिश्ते से प्रसन्न क्यों थे? कारण देते हुए स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** इस रिश्ते से अमित को छोड़कर सभी लोग खुश थे। अमित की माताजी शादी में धनीमल जी द्वारा दिए जाने वाले पाँच लाख रुपये के खर्च की बात सुनकर खुश थीं, तो पिताजी, माताजी के दबाव के कारण रिश्ते में रुचि लेने लगे थे। इन दोनों के मन में दहेज का लालच था।

(ग) अमित इस रिश्ते से असंतुष्ट क्यों था? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** अमित इस रिश्ते से पूर्णतः असंतुष्ट था, क्योंकि अमित को मीनू, सरिता की अपेक्षा अधिक गुणकारी और संस्कारी लगती थी। मीनू घर के कामकाज में निपुण तथा परिवार के साथ मिल-जुलकर रहने को तैयार थी, जबकि सरिता को न घर के काम करने आते थे और न वह उसके माता-पिता के साथ रहना चाहती थी। वहीं दूसरी ओर वह अपने माता-पिता के व्यवहार से भी असंतुष्ट था।

(घ) कोठी किसकी थी? कोठी का संक्षिप्त विवरण दीजिए। (3)

**उत्तर** कोठी शहर के एक बहुत बड़े व्यक्ति धनीमल जी की थी। कोठी में प्रवेश करते ही ऐसा लगता है मानो किसी स्वर्ग में आ गए हों। कोठी के बाहर लॉन में मखमल के समान घास बिछी थी तथा बेंत की रंग-बिरंगी सुंदर कुर्सियाँ रखी हुई थीं। रंग-बिरंगे फूलों के गमले कोठी की शोभा को और अधिक बढ़ा रहे थे, जिससे कोठी स्वर्ग के समान प्रतीत हो रही थी।

- धनीमल जी व मायाराम जी ने आपस में कुछ बातें की और सब वहाँ से उठकर चल दिए। अमित व सरिता को एकान्त में बातें करने का अवसर दिया गया। अमित ने सरिता से कुछ प्रश्न किए। अमित ने पूछा, “आपकी किस चीज में रुचि है?”

सरिता ने तपाकू से जवाब दिया, “जी, मुझे पेंटिंग व कार ड्राइविंग में विशेष रुचि है।”

(क) धनीमल व मायाराम कौन हैं? उनके बीच क्या बातचीत हो रही है? (2)

**उत्तर** धनीमल व मायाराम दोनों मेरठ के निवासी हैं। धनीमल जी शहर के एक धनी व्यक्ति हैं। वे अपनी पुत्री सरिता का रिश्ता मायाराम जी के पुत्र अमित से करना चाहते हैं। अतः उनके बीच इसी विषय पर बातचीत हो रही है।

(ख) अमित व सरिता किस विषय में बात कर रहे हैं? (2)

**उत्तर** जब अमित व सरिता को एकांत में मिलने का अवसर दिया गया, तो अमित ने सरिता से उसकी पढ़ाई, शौक, काम से संबंधित प्रश्न पूछे। सरिता ने जो उत्तर दिए, उन्हें सुनकर अमित को काफी हैरानी हुई। सरिता पढ़ाई में तो कमजोर थी ही, उसे घर के काम भी नहीं आते थे। वह पूरी तरह से नौकरों पर निर्भर थी।

(ग) “मुझे पेंटिंग व कार ड्राइविंग में विशेष रुचि है।” स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** अमित ने सरिता से जब यह पूछा कि आपकी किस चीज में रुचि है, तो सरिता ने बताया कि उसे पेंटिंग व कार ड्राइविंग में रुचि है। यह सुनकर अमित ने अनुमान लगा लिया कि वह व्यर्थ के कामों में समय व पैसे को खर्च करती है। उसकी रुचि घर के कामों में बिलकुल भी नहीं है। सरिता एक धनी पिता की बिगड़ी हुई लड़की है। वह केवल व्यर्थ घूमना तथा अपनी इच्छाओं की पूर्ति करना ही पसंद करती है।

(घ) उनकी बातचीत का निष्कर्ष क्या होगा? (3)

**उत्तर** अमित और सरिता की बातचीत से यह निष्कर्ष निकलेगा कि अमित को सरिता पसंद नहीं आएगी, क्योंकि जिस तरह की पत्नी अमित को चाहिए, वे गुण सरिता में बिलकुल भी नहीं हैं। अमित इस बात का अनुमान आसानी से लगा लेगा कि सरिता उसके माता-पिता की सेवा तो दूर, शायद उचित तरीके से उनका आदर-सत्कार भी नहीं करेगी। अतः वह निश्चित रूप से सरिता से विवाह करने के लिए तैयार नहीं होगा।

- पिताजी के मुँह से भी धनीमल जी के द्वारा दिए जाने वाले पाँच लाख रुपये बोल रहे थे, “देखो जी लड़की तो देखने में अच्छी है। क्या बुराई है उसमें, जहाँ तक रंग की बात है, इस दुनिया में दो ही रंग होते हैं—गोरा या काला। शादी तो सभी की होती है।”

(क) अवतरण में किसके बारे में बातें हो रही हैं? (2)

**उत्तर** अवतरण में धनीमल जी की बेटी सरिता के बारे में बातें हो रही हैं, क्योंकि अमित के विवाह के लिए मायाराम जी और उनकी पत्नी ने सरिता को दहेज के लालच में पसंद किया था। अब अमित के पिता सरिता का पक्ष लिए जा रहे हैं।

(ख) वक्ता कौन है और उसने अपनी क्या राय प्रकट की? (2)

**उत्तर** वक्ता अमित के पिताजी मायाराम हैं। सरिता से मिलने के उपरांत उन्हें उसमें कोई दोष नज़र नहीं आया। उनका मानना था कि दुनिया में केवल दो ही रंग होते हैं। उसके आधार पर किसी के अच्छे या बुरे होने का निर्णय नहीं करना चाहिए, वैसे भी शादी सभी की होती है चाहे काला हो या गोरा।

(ग) माताजी ने अपनी क्या इच्छा प्रकट की और क्यों? (3)

**उत्तर** सरिता से मिलने के बाद जब मायाराम जी व उनका परिवार घर पहुँचकर सरिता के प्रति अपने-अपने विचार प्रकट कर रहे थे, तब अमित की माताजी कहती हैं कि उन्हें सरिता दिखने में अच्छी लगी थी। केवल उसका रंग गहरा था, जो विवाह के बाद निखर जाएगा, इसलिए उन्हें सरिता से अमित का विवाह करवाने पर कोई आपत्ति (परेशानी) नहीं थी। इसके अलावा उन्हें धनीराम जी द्वारा सरिता के विवाह में पाँच लाख रुपये खर्च करने का लोभ भी था।

(घ) सभी अपने-अपने विचार क्यों प्रकट कर रहे थे? अमित के लड़की के प्रति क्या विचार थे? (3)

**उत्तर** सभी अपने-अपने विचार इसलिए प्रकट कर रहे थे, क्योंकि अमित व सरिता के माता-पिता उनका विवाह करवाना चाहते थे। वे आज ही सरिता से मिलकर भी आए थे, इसलिए वे अपने विचार प्रकट कर रहे थे। अमित को सरिता न तो संस्कारी मालूम हुई और न ही गुणी, घर के कार्यों में भी उसकी रुचि नहीं थी, जिस कारण वह अमित को पसंद नहीं आई थी।

4. बेटे के ये शब्द सुनकर मायाराम जी को लगा कि बेटे के साथ ज़बरदस्ती की जा रही है। एक बार पिता के नाते उनके हृदय में यह भाव उठा कि बेटे की ज़िंदगी के साथ खिलवाड़ करना उचित नहीं है। अभी इसी भाव में डूबे थे कि दूसरी ओर से उनकी पत्नी ने अपने विचार प्रकट करने शुरू किए।

(क) मायाराम जी के मन में पिता होने के नाते कौन-सा भाव उठा? (2)

**उत्तर** अमित का विवाह सरिता के साथ करवाने की बात पर उसके द्वारा असंतोष प्रकट करने के कारण मायाराम जी के मन में बेटे की ज़िंदगी के साथ खिलवाड़ न करने का भाव उठा। अब उन्हें लग रहा था कि अमित के साथ जबरदस्ती की जा रही है।

(ख) मायाराम जी की पत्नी ने क्या विचार प्रकट किए और क्यों? (2)

**उत्तर** अमित के द्वारा सरिता से विवाह करवाने पर असंतोष प्रकट करने के कारण मायाराम जी की पत्नी ने अमित पर कटाक्ष करते हुए

कहा कि आजकल की पीढ़ी को थोड़ी आज़ादी देने से उनका दिमाग खराब हो जाता है, जबकि हमारी पीढ़ी में तो लड़के-लड़कियों को एक-दूसरे को दिखाया तक नहीं जाता था।

(ग) बेटे के किन शब्दों को सुनकर मायाराम जी को लगा कि बेटे के साथ जबरदस्ती हो रही है? (3)

**उत्तर** अमित जब सरिता को नापसंद करने की बात कहकर शादी के संबंध में अपनी नापसंदगी की बात कहता है और अपने माता-पिता के निर्णय पर असंतोष प्रकट करते हुए उनसे कहता है कि जब आपने मेरी शादी धनीमल जी की बेटे से करने की ठान ही ली है, तो कर लीजिए। मुझे तो सरिता बिल्कुल पसंद नहीं है। अमित के इन शब्दों को सुनकर मायाराम जी को लगा कि बेटे के साथ जबरदस्ती हो रही है।

(घ) अमित के पिता ने सच्चा पिता होने का फर्ज़ किस तरह निभाया? (3)

**उत्तर** अमित के पिता दयाराम पहले तो धनीमल जी द्वारा सरिता के विवाह में पाँच लाख रुपये खर्च करने के लालच और अपनी पत्नी के दबाव में आ जाते हैं और सरिता को पसंद कर लेते हैं, परंतु अमित की राय जानकर वे अपनी भूल महसूस कर लेते हैं। उन्हें लगने लगा कि इस तरह की ज़बरदस्ती करना अमित की ज़िंदगी के साथ खिलवाड़ है। वे तुरंत ही अपनी राय बदलकर उचित निर्णय लेते हैं। इस तरह उन्होंने 'सच्चा पिता' होने का फर्ज़ निभाया।

## अध्याय 8

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में कॉलेज में छुट्टी होने, वर्षा की बूँदें पड़ने के उपरांत सुहावने मौसम में बाहर जाकर चाय-समोसे खाने, मीनू और माया का हँसी मजाक करने, मीनू की सहेली नीलिमा के आने, शादी का कार्ड देने, नीलिमा को विदा करने के बाद कमरे में लौटकर मीनू द्वारा पुनः निमंत्रण पत्र देखने और अतीत की स्मृतियों में खोने का उल्लेख किया गया है।

### छात्रावास में डाकिया और माया की उदासी

कॉलेज में हड़ताल होने के कारण आज सभी की छुट्टी थी। सभी लड़कियाँ छात्रावास के आँगन में घूम रही थीं। बारिश की बूँदें पड़ने के कारण मौसम सुहाना हो रहा था। ऐसे सुहाने मौसम में मीनू ने अपनी सहेलियों के साथ बाहर घूमने जाने, चाय और समोसे खाने की योजना बनाई थी।

मीनू और उसकी सहेलियाँ बाहर जाने की योजना बना ही रही थीं, तभी छात्रावास में डाकिया प्रवेश करता है और सभी लड़कियाँ उसे घेर लेती हैं। सभी को अपने-अपने पत्रों की प्रतीक्षा थी। मीनू दूर ही खड़ी रही, क्योंकि उसका पत्र कल ही आ गया था। सभी लड़कियाँ अपने पत्र की प्रतीक्षा कर रही थीं। कुछ के पत्र आए थे और कुछ के नहीं, जिनके आए थे, वे प्रसन्न थीं और जिनके नहीं आए थे, वे उदास थीं। मीनू की

सहेली माया का भी पत्र नहीं आया था, जिस कारण वह उदास होने के साथ-साथ चिंतित भी थी कि कहीं उसके माता-पिता की तबीयत खराब न हो। माया को उदास देखकर मीनू उसे चुटकुले सुनाकर हँसाने का प्रयास करती है, जिससे उसके चेहरे पर हँसी झलक गई थी।

### कैंटीन से चाय मँगवाना और नीलिमा का आना

मीनू और उसकी सहेलियों ने बाहर जाने की योजना बनाई ही थी कि बारिश तेज हो गई, इसलिए उन्होंने छात्रावास की कैंटीन के नौकर को बुला कर उससे ही बाहर की कैंटीन से चाय-समोसे मँगवा लिए थे। सभी लड़कियाँ नौकर की प्रतीक्षा कर रही थीं कि एक टैक्सी छात्रावास के बाहर आकर रुकती है, जिसमें से मीनू की घनिष्ठ सहेली नीलिमा उतरती है। नीलिमा के आने से मीनू अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव करती है। उसकी अन्य सहेलियों ने भी नीलिमा का स्वागत किया, जिसे देखकर नीलिमा को अपनत्व का अहसास होता है, जिसे देखकर वह भी अत्यधिक प्रसन्न होती है।

### मीनू का आश्चर्यचकित होना

चाय पीने के उपरांत मीनू, नीलिमा को अपने कमरे में ले जाती है, जहाँ नीलिमा उसे अपनी शादी का निमंत्रण-पत्र देती है। निमंत्रण-पत्र देखकर मीनू आश्चर्यचकित हो जाती है और उससे विवाह के बारे में न बताने का कारण पूछती है।

नीलिमा उसे सरप्राइज देने की बात कहते हुए, उसे विवाह में अवश्य पहुँचने का आग्रह करती है। मीनू, नीलिमा से कहती है कि वही उसकी सब कुछ है, इसलिए वह विवाह में अवश्य आएगी।

### मीनू का सुरेंद्र के विषय में पूछना

मीनू, नीलिमा से लड़के के विषय में प्रश्न पूछती है कि वह क्या करते हैं? कहाँ रहते हैं और दिखने में कैसे हैं? जिस पर नीलिमा उसे धैर्य रखने के लिए कहते हुए बताती है कि उनका नाम सुरेंद्र है, वे देखने में भी अच्छे हैं वे मेरठ में रहते हैं उनकी अपनी फैक्ट्री है। नीलिमा उसे यह भी बताती है कि उसके भैया अशोक डॉक्टर बन गए हैं और वे आजकल दिल्ली में ही कार्यरत हैं।

### मीनू का अतीत की यादों में खोना

नीलिमा घड़ी की ओर देखते ही शीघ्रतापूर्वक उठकर, घर के लिए देरी होने की बात कहते हुए जाने लगती है। नीलिमा के जाने के बाद मीनू उसके विवाह के निमंत्रण-पत्र को देखकर अतीत की स्मृतियों में खो जाती है। वह सोचती है कि कई लड़कों ने उसे विवाह के लिए नापसंद किया, जिस कारण से आज वह स्वयं को भाग्यहीन समझने लगी है। वह अत्यधिक भावुक हो उठती है, परंतु स्वयं को सँभालते हुए वह अपनी सहेलियों के साथ बाहर चली जाती है।

### शब्दार्थ

सुंड—समूह (group); प्रतीक्षा—इंतजार (wait); कल्पना—सोचना (imagination); प्रफुल्लित—बहुत खुश होना (very happy); स्मृतियाँ—यादें (memories)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- मीनू, माया की परेशानी भली-भाँति समझ रही थी। वह जानती थी कि बाहर हॉस्टल में माता-पिता से अलग रहकर सिर्फ चिट्ठियाँ ही तो एकमात्र सहारा रह जाती हैं। माया को प्रसन्न करने के लिए मीनू ने चुटकुले सुनाने शुरू कर दिए।

(क) डाकिए के आने के उपरांत मीनू अन्य लड़कियों की अपेक्षा निश्चित क्यों थी? (2)

**उत्तर** मीनू के लिए कल ही उसके माता-पिता का पत्र आ गया था। आज उसे किसी के पत्र की प्रतीक्षा नहीं थी, इसलिए मीनू डाकिए के आने के उपरांत भी अन्य लड़कियों की अपेक्षा निश्चित थी।

(ख) लड़कियाँ हॉस्टल में क्यों घूम रही थीं और उन्होंने क्या योजना बनाई? (2)

**उत्तर** कॉलेज में हड़ताल होने के कारण छुट्टी थी, इसलिए लड़कियाँ हॉस्टल में घूम रही थीं। छुट्टी होने और मौसम सुहाना होने के कारण लड़कियों ने हॉस्टल के बाहर वाली कैटीन में जाकर चाय और समोसे खाने की योजना बनाई थी।

(ग) हॉस्टल में किसको आता देखकर सभी लड़कियाँ खुश थीं और क्यों? (3)

**उत्तर** हॉस्टल में डाकिए को आता देखकर लड़कियाँ खुश थीं, क्योंकि हॉस्टल में अपने घरवालों एवं परिजनों से दूर होने के कारण वे केवल चिट्ठियों के द्वारा ही अपने माता-पिता व सगे संबंधियों की कुशल-क्षेम प्राप्त कर व भेज सकती थीं। डाकिया ही इसका एकमात्र माध्यम था, इसलिए उसे आता देख सभी लड़कियाँ खुश थीं।

(घ) माया क्यों परेशान थी? मीनू ने उसके लिए क्या किया? (3)

**उत्तर** हॉस्टल में डाकिए द्वारा लाए गए पत्रों में अपना पत्र न पाने के कारण माया परेशान हो उठी। वह अपने माता-पिता के स्वास्थ्य के लिए चिंतित हो उठती है, क्योंकि वह चार पत्र लिख चुकी थी।

उसे डर लग रहा था कि कहीं उसके माता-पिता की तबीयत खराब न हो गई हो। माया को परेशान एवं अपने माता-पिता के बारे में चिंतित देखते हुए मीनू ने माया को हँसाने की योजना बनाते हुए, उसे चुटकुले सुनाने शुरू कर दिए।

- चाय पीने के बाद मीनू नीलिमा को अपने कमरे में ले गई। कमरे में पहुँचने पर नीलिमा ने अपना पर्स खोलकर एक कार्ड निकाला और मीनू को दिया।

(क) मीनू ने नीलिमा का स्वागत किस प्रकार किया और नीलिमा की उस पर क्या प्रतिक्रिया थी? (2)

**उत्तर** नीलिमा के आने पर मीनू ने प्रसन्नता से उसे गले लगाया और चाय-समोसे खिलाकर उसका स्वागत किया। नीलिमा, मीनू तथा छात्रावास की अन्य लड़कियों के आदर भाव में एक अपनत्व महसूस कर रही थी, जिस कारण वह अत्यधिक प्रसन्न हुई।

(ख) नीलिमा और मीनू में कैसे संबंध थे? (2)

**उत्तर** नीलिमा और मीनू के संबंध अत्यधिक मधुर थे। दोनों ही अच्छी सहेलियाँ थीं नीलिमा मीनू की बचपन की सहेली थी वे दोनों एक दूसरे के सुख-दुःख को मिलकर बाँटती थी और अपनी सभी बातें एक-दूसरे को बताया करती थीं। इस प्रकार दोनों में घनिष्ठ मित्रता थी।

(ग) नीलिमा ने मीनू को क्या दिया था? मीनू की उस पर क्या प्रतिक्रिया थी? (3)

**उत्तर** नीलिमा और मीनू बहुत ही घनिष्ठ सहेलियाँ थीं, जिस कारण नीलिमा ने मीनू के छात्रावास आकर उसे अपने विवाह में आमंत्रित करने के लिए निमंत्रण-पत्र दिया। निमंत्रण-पत्र देखकर मीनू आश्चर्यचकित हो जाती है, क्योंकि नीलिमा ने इस बारे में उससे कोई बात नहीं की थी। नीलिमा द्वारा अपने विवाह के बारे में न बताने पर वह अपनी नाराजगी व्यक्त करती है।

(घ) मीनू ने निमंत्रण-पत्र देखकर नीलिमा से अपनी उत्सुकता किस तरह प्रकट की? (3)

**उत्तर** मीनू, नीलिमा के विवाह के निमंत्रण-पत्र को देखकर आश्चर्यचकित हो उठी, मीनू ने नीलिमा से नाराज़गी प्रकट करते हुए उससे विवाह के बारे में न बताने का कारण पूछा, साथ ही उसने नीलिमा से उसके पति के संबंध में, उनके व्यवसाय, उनके रंग-रूप इत्यादि के विषय में भी जानना चाहा कि वह क्या करते हैं, कहाँ रहते हैं और दिखने में कैसे हैं? इस तरह मीनू ने अपनी उत्सुकता (जिज्ञासा) प्रकट की।

3. तू ही मेरी एकमात्र सहेली है, जिसको कि मैं अपना सब कुछ समझती हूँ। तुझसे ही मैं अपने दिल की हर बात कह सकती हूँ।

(क) अवतरण के वक्ता और श्रोता कौन हैं? (2)

**उत्तर** अवतरण की वक्ता मीनू तथा श्रोता नीलिमा है। दोनों अत्यंत घनिष्ठ सहेलियाँ हैं, जिस कारण नीलिमा, मीनू से मिलने और अपने विवाह का निमंत्रण-पत्र देने उसके छात्रावास आई थी।

(ख) श्रोता ने वक्ता से क्या आग्रह किया था? (2)

**उत्तर** श्रोता अर्थात् नीलिमा ने मीनू को विवाह में आने का निमंत्रण देते हुए, उससे विवाह में जरूर आने का आग्रह किया था। नीलिमा ने मीनू से शादी में न पहुँचने पर उससे कभी बात न करने की बात भी कही थी।

(ग) श्रोता के आग्रह पर वक्ता ने क्या प्रतिक्रिया दी और क्यों? (3)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् मीनू, नीलिमा के आग्रह करने पर भावुक हो उठती है और उससे कहती है कि वही उसकी एकमात्र सहेली है, जिसको वह अपना सब कुछ समझती है और उसी से वह अपने दिल की प्रत्येक बात कह सकती है। वे दोनों बहुत घनिष्ठ सहेलियाँ हैं, जिस कारण उनके संबंध अत्यधिक मधुर हैं और उसी का ही परिणाम है कि नीलिमा, मीनू को निमंत्रण-पत्र देने उसके छात्रावास में आई थी।

(घ) श्रोता, वक्ता से मिलने क्यों आई थी? वे किस विषय पर बातें कर रहे थे? (3)

**उत्तर** श्रोता अर्थात् नीलिमा, मीनू को अपनी शादी का निमंत्रण-पत्र देने के लिए उसके छात्रावास आई थी। नीलिमा ने मीनू से विवाह में आने का

विशेष आग्रह किया था, जिस पर मीनू उसे अपना सब कुछ समझने की बात कहते हुए उससे विवाह में अवश्य पहुँचने का वायदा करती है। मीनू, नीलिमा से लड़के के संबंध में भी अनेक प्रश्न पूछती है, इस प्रकार दोनों आपस में बहुत सारी बातें करती हैं।

4. तभी नीलिमा एक झटके के साथ खड़ी हो उठी। घड़ी में पाँच बज चुके थे। उसे मेरठ से अपने घर भी वापस आना था। मीनू उसे छोड़ने के लिए बाहर तक आई। चलते-चलते भी नीलिमा उससे वादा कराकर गई थी कि उसे शादी में अवश्य आना है।

(क) नीलिमा ने मीनू को क्या बताया था? (2)

**उत्तर** नीलिमा ने मीनू को अपनी शादी की बात बताते हुए उसे शादी में आने का निमंत्रण दिया। उसने मीनू को अपने भावी पति सुरेंद्र, उनके व्यवसाय आदि के साथ ही यह भी बताया कि उसके भैया डॉक्टर बन गए हैं।

(ख) नीलिमा शीघ्रता के साथ क्यों उठ खड़ी हुई? (2)

**उत्तर** नीलिमा को मेरठ से वापस घर भी आना था। मीनू के साथ बातें करते-करते उसे समय का पता ही नहीं चला। अब तक पाँच बज चुके थे। उसे देर हो रही थी, इसलिए वह शीघ्रता के साथ उठ खड़ी हुई।

(ग) नीलिमा, मीनू से किस बात का आग्रह करती है? (3)

**उत्तर** मीनू और नीलिमा बहुत ही घनिष्ठ सहेलियाँ थीं। नीलिमा का विवाह तय हो चुका था, जिस कारण वह मीनू को निमंत्रण-पत्र देकर अपने विवाह में आमंत्रित करने के लिए उसके छात्रावास आई थी। नीलिमा जब वापस घर के लिए जा रही थी, तो वह मीनू से विवाह में अवश्य पहुँचने का आग्रह करती है।

(घ) नीलिमा के जाने के बाद मीनू की मनोदशा किस प्रकार की थी? उसने अपने-आपको किस तरह सँभाला? (3)

**उत्तर** नीलिमा के जाने के उपरांत मीनू अपनी अतीत की स्मृतियों में खो गई और विवाह के लिए उसे देखने आए युवकों द्वारा उसे नापसंद करने के विषय में सोचने लगी, जिससे वह अत्यधिक भावुक एवं अत्यंत दुःखी होकर स्वयं को भाग्यहीन समझने लगती है। इस दुःखी मनोदशा से मुक्त होने और खुद को सँभालने के लिए वह सहेलियों के साथ बाहर चली गई।

## अध्याय 9

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में नीलिमा के विवाह में शामिल होने के लिए मीरापुर आने, नीलिमा के भाई अशोक द्वारा उसे घर छोड़ने, बाद में नीलिमा के घर जाने, वापस आकर माँ से बातें करते-करते सो जाने, नाश्ता करने के बाद नीलिमा के घर जाने, बारात आने, विवाह की रस्में पूरी होने, वहाँ अमित को देखकर मन घृणा से भरने तथा नीलिमा की विदाई के बाद दुःखी मन से मेरठ लौटने का उल्लेख किया गया है।

### पढ़ाई में मीनू की व्यस्तता

मीनू बचपन से ही पढ़ाई में होशियार थी, उसे पढ़ने का शौक भी था। वकालत में भी प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए वह अपना अधिकतम समय अपनी पढ़ाई में ही व्यतीत करती थी। वर्तमान परिस्थितियों के

कारण उसमें विशेष उत्साह था, इसलिए उसने अपने पैरों पर खड़े होकर और कुछ बनकर दिखाने की ठानी हुई थी। वह हमेशा सोचती थी कि क्या नारी सदैव पुरुष की दासी बनकर ही रहेगी? क्या वह सदा ही माता-पिता के लिए अभिशाप बनी रहेगी? मीनू इन विचारों में मग्न थी, तभी उसे ख्याल आया कि उसे तो अपनी सहेली नीलिमा की शादी में मीरापुर जाना है। मीनू एक सुंदर-सी दीवार घड़ी खरीदकर उसे नीलिमा को उपहारस्वरूप देने का निर्णय करती है।

### मीनू का अपने घर पहुँचना

नीलिमा के विवाह में शामिल होने के लिए मीनू मीरापुर स्टेशन पहुँचती है। स्टेशन से अपने घर पहुँचने के लिए वह रिक्शे का इंतजार कर रही थी कि उसे वहाँ पर नीलिमा का बड़ा भाई अशोक मिल गया, जो अपनी



मौसी को लेने स्टेशन पर आया था। अभी मौसी के न आने के कारण वह मीनू से उसे उसके घर तक छोड़ने की बात कहता है। रास्ते में वह मीनू से कई प्रकार के प्रश्न पूछता है, जिनमें मीनू के प्रति उसका विशेष स्नेह स्पष्टतः दिखाई दे रहा था, लेकिन मीनू अशोक के प्रति कोई प्रतिक्रिया प्रकट नहीं करती। घर पर पहुँचते ही सभी अच्छे से उसका स्वागत करते हैं। आशा और रोहित उसके गले लगकर अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हैं। माँ ने भी उसके आने की खुशी में उसकी पसंद के बेसन के लड्डू पहले ही बना रखे थे।

### नीलिमा से मीनू का मिलना

मीनू घर पहुँच कर चाय पी रही थी, तभी नीलिमा के घर से उनका नौकर उसे बुलाने के लिए आ पहुँचता है। मीनू, माँ से नीलिमा के घर जाने की बात कहकर उसके घर के लिए निकल पड़ती है, जहाँ वे दोनों इस प्रकार से गले लगती हैं जैसे लंबे समय के बाद आपस में मिली हों। नीलिमा और मीनू कमरे में पहुँचती हैं। मीनू, नीलिमा से उसके होने वाले जीजा जी की फोटो दिखाने के लिए कहती है, लेकिन नीलिमा मजाक करते हुए कहती है कि वह विवाह के दिन ही उन्हें देख ले। मीनू जब नीलिमा से फोटो दिखाने की जिद करती है, तब नीलिमा फोटो दिखाते हुए सुरेंद्र के बारे में पूछती है कि वे उसे कैसे लगे? मीनू, सुरेंद्र और नीलिमा दोनों की ही प्रशंसा करती है। माँ के कहने के बाद नीलिमा, मीनू को अपनी शादी की साड़ियाँ व अन्य सामान दिखाने लगती है।

### मीनू का देर रात घर पहुँचना

रात के नौ बज चुके थे, मीनू अनुभव करती है कि सुबह आने के बाद भी वह अपने माता-पिता से बातें नहीं कर पाई, इसलिए वह नीलिमा से घर जाने की बात कहती है। नीलिमा का भाई अशोक मीनू को छोड़ने उसके घर आता है। जहाँ पर मीनू के पिताजी देर होने के कारण उसका इंतजार कर रहे थे। मीनू अपनी माँ के कमरे में पहुँचती है, जहाँ वे दोनों एक-दूसरे से देर तक बातें करते हैं।

### मीनू का नीलिमा के घर के लिए तैयार होना

सुबह उठते ही मीनू को जब माँ चाय देती है, तो वह अत्यधिक प्रसन्न होती है। उसे छात्रावास का स्मरण हो उठता है, जहाँ उसे स्वयं उठकर चाय बनानी पड़ती है। स्नान इत्यादि करने के उपरांत मीनू, माँ के हाथ से बने नाश्ते को खुश होकर खाती है। मीनू आज अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रही थी, किंतु तभी वह अचानक अतीत की स्मृतियों से दुःखी हो उठती है। वह सोचती है कि काश! वह भी नीलिमा जैसी ही रूपवती होती, तभी कुछ शब्द उसके कानों में पड़ते हैं, जो उसकी विचारों में खुई हुई स्थिति को तोड़ते हैं। वह देखती है कि उसके सामने नीलिमा का भाई अशोक खड़ा था, जो उसे बुलाने के लिए आया था। मीनू हरे रंग का सलवार-सूट पहनकर तैयार होती है और स्वयं को शीशे में निहारती है, किंतु जो हीनभावना उसके हृदय में घर कर चुकी थी, उसी कारण वह स्वयं को कभी सुंदर समझ ही नहीं पाई थी। मीनू शीशे के सामने से हटकर माँ से आज्ञा लेते हुए नीलिमा के घर चली गई।

### नीलिमा की अंतर्द्वंद्व की स्थिति

मीनू, नीलिमा के घर पहुँची। पूरा घर मेहमानों से भरा हुआ था। मीनू, नीलिमा के कमरे में जैसे ही पहुँची नीलिमा उससे लिपटकर रोने लगी। नीलिमा अपने मेहँदी से रचे हुए हाथ मीनू को दिखाती है, जिस पर मीनू उसकी मेहँदी की प्रशंसा करती है तभी मीनू को स्मरण होता है कि वह

उपहार की घड़ी घर पर ही भूल आई है, यह ध्यान आते ही वह तुरंत घर जाकर उपहार लेकर आती है और नीलिमा को घड़ी उपहार के रूप में प्रदान करती है। उसी समय नीलिमा की माँ कमरे में प्रवेश करती हैं और नीलिमा से कहती हैं कि कुछ रस्में पूरी करनी हैं। जहाँ एक ओर वह जीवनसाथी के मिलने से खुशी की अनुभूति कर रही थी वहीं, दूसरी ओर अपने घर से दूर होने का सोचने से ही उसके चेहरे पर उदासी छा गई थी और वह सुख एवं दुःख की अनुभूति एकसाथ करने लगती है।

### बारात का घर पहुँचना

सभी रस्में पूरी होने के उपरांत नीलिमा से अनुमति लेकर मीनू अपने घर पहुँचकर कपड़े बदलने लगी। गुलाबी रंग की साड़ी पहनने एवं थोड़ा-सा मेकअप करने के उपरांत वह अत्यधिक सुंदर लगने लगी थी। उसकी माँ उसकी प्रशंसा करती है। अपनी प्रशंसा सुनकर वह आत्मविभोर होती हुई प्रसन्नता से झूम उठती है।

नीलिमा अपने कमरे में तैयार हो रही थी। सभी औरतें उसे देखने के लिए उत्सुक थीं। तैयार होने के बाद वह एक परी के समान प्रतीत हो रही थी। बेंड की ध्वनि जितनी स्पष्ट होती जाती, नीलिमा की धड़कन उतनी ही तीव्र गति से बढ़ने लगती। अब बारात भी घर के पास आ गई थी, दूसरी ओर सभी मेहमान बारात और दूल्हे को देखने के लिए बेचैन हो रहे थे। बारात आ जाने पर सभी दूल्हे की प्रशंसा करते हैं।

### मीनू का उदास होना

जयमाला की रस्म होने के बाद मीनू अपनी मधुर आवाज़ में एक गीत गाती है। सभी उसकी आवाज़ की प्रशंसा करते हैं। उसी वक्त एक नवयुवक भी उसके गीत की प्रशंसा करता है। मीनू देखती है कि यह वही अमित है, जिसके परिवार वालों ने दहेज के लिए उसका रिश्ता अस्वीकार किया था। इस घटना से उसकी अतीत की स्मृतियाँ एक बार फिर ताजा हो गई थीं।

अमित भी अनुभव करता है कि उसके परिवार द्वारा किए गए कुकृत्य की वजह से मीनू उससे नाराज़ है। मीनू जब घर पहुँचती है, तो उसका उदास चेहरा देखकर माँ के मस्तिष्क में विभिन्न प्रकार के विचार आने लगते हैं, परंतु वे कुछ भी समझने में असमर्थ रहती हैं। दूसरी ओर मीनू अमित के बारे में सोचती है कि जिस दिन वह देखने आया था, उस दिन कितने अच्छे ढंग से बात कर रहा था, लेकिन कुछ पैसों के लिए उसने रिश्ते को अस्वीकार कर दिया। वह सोचती है कि उसमें इतनी हिम्मत भी नहीं थी कि वह अपने माता-पिता का विरोध ही कर पाता। इस प्रकार के कई प्रश्न उसके मस्तिष्क में घूमने लगे, लेकिन उनके उत्तर पाने में वह असमर्थ रहती है।

### मीनू का कॉलेज लौटना

मीनू के घर चले जाने के बाद नीलिमा उसे ढूँढती है। वह अपने भैया अशोक से भी उसके बारे में पूछती है, किंतु काम की व्यस्तता की बातें कहकर वे उसके बारे में पता न होने की बात कहते हैं। विदाई के समय नीलिमा, मीनू के न मिलने से दुःखी होती है। रातभर अमित के बारे में सोचने पर मीनू सुबह लेट उठती है, तो देखती है कि विदाई का समय हो गया है। मीनू के वहाँ पहुँचते ही नीलिमा उससे लिपटकर रो पड़ती है। नीलिमा की विदाई के बाद मीनू घर आकर अपना सारा सामान बाँधती है और मेरठ जाने की तैयारी करने लगती है। माँ ने उसे रुकने के लिए कहा, तो वह पढ़ाई की मजबूरी बताते हुए कॉलेज के लिए निकल जाती है।



## शब्दार्थ

व्यतीत—समय बिताना (to spend); अभिशाप—शाप (curse); तल्लीन—सुधबुध खोना (immersed); स्नेह—प्रेम (love); साक्षात्—सामने से (in front of); प्रशंसा—तारीफ करना (appreciate); आभास—किसी बात को महसूस करना (feel); निःस्वार्थ—बिना किसी लालच के (selfless); निश्चल—बिना किसी छल-कपट के (without deception, faithful); निवृत्त—मुक्त (free); बोझिल—भारी (heavy); पुलकित—रोमांचित (excited); उमंग—उत्साह (joy); अकुला उठी—दुःखी हुई (disturbed); द्वेष—वैर (hatred)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. हमारे भारतीय समाज में क्या नारी सदैव पुरुषों की दासी बनकर ही रहेगी? क्या हर लड़की अपने माता-पिता के लिए अभिशाप बनकर रह जाएगी? क्या लड़की को यह भी अधिकार नहीं है कि वह अपना जीवन अपने ढंग से व्यतीत कर सके? ऐसे अनेक प्रश्न मीनू के मस्तिष्क में उठते हैं। उसके हृदय में तूफान उठता है कि वह एक लड़की ज़रूर है, परंतु उसके अंदर इतनी हिम्मत, इतना साहस अवश्य है कि वह भी कुछ बन सके।

(क) मीनू के अनुसार भारतीय समाज में नारी की स्थिति कैसी है? (2)

**उत्तर** मीनू के अनुसार भारतीय समाज में नारी की स्थिति बड़ी ही दयनीय है। उसे सदा ही पुरुष की दासी और माता-पिता पर अभिशाप समझा जाता है तथा उसे इतना अधिकार भी नहीं दिया जाता कि वह अपना जीवन अपनी इच्छानुसार व्यतीत कर सके।

(ख) मीनू अन्य लड़कियों से किस प्रकार अलग है? (2)

**उत्तर** मीनू साहसी, दृढ़ निश्चयी, अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने वाली एवं हिम्मती लड़की है। वह विपरीत परिस्थितियों के आगे घुटने टेककर निराश होने तथा दुर्भाग्य से दुःखी होने के बजाय साहसपूर्वक उनका सामना करती है। यही गुण उसको अन्य लड़कियों से भिन्न बनाता है।

(ग) “क्या लड़की को यह अधिकार भी नहीं की वह अपना जीवन अपने ढंग से व्यतीत कर सके?” पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** उपरोक्त पंक्ति में समाज में महिलाओं की दयनीय स्थिति को दर्शाया गया है। समाज में पुरुष सदैव ही महिलाओं पर अपना अधिकार तथा उनको अपनी उपभोग की वस्तु समझते रहे हैं। महिलाओं को समाज के पुराने विचारों में बाँधकर उसको स्वयं की इच्छानुसार जीवन जीने तक का अधिकार नहीं देते हैं।

(घ) मीनू कौन है? अवतरण के आधार पर उसकी विशेषताएँ बताइए। (3)

**उत्तर** मीनू उपन्यास की नायिका है। वह एक बुद्धिमान व होशियार लड़की है, जो सदैव ही प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होती रही है। मीनू समाज की रूढ़ियों के विरुद्ध खड़ी होने वाली नवयुवती है। अपने इसी स्वभाव के कारण ही रिश्ता टूटने के उपरांत (बाद) वह विवाह करने से मना करते हुए पढ़ने के लिए मेरठ पहुँचती है। उसमें आत्मविश्वास कूट-कूटकर भरा हुआ है, उसी का परिणाम है वह कुछ बनकर दिखाने एवं अपने पैरों पर खड़ी होने की इच्छा रखती है। इस प्रकार मीनू एक साहसी, परिश्रमी, दृढ़ निश्चयी, आत्मविश्वासी युवती है।

2. अभी उसने चाय पी ही थी कि नीलिमा ने अपने नौकर को बुलाने के लिए भेज दिया। मीनू का मन था कि वह उड़कर नीलिमा के पास पहुँच जाए। अपने पिताजी तथा माँ की आज्ञा लेकर वह नीलिमा के घर पहुँच गई। मीनू के आते ही नीलिमा ने उसे गले लगा लिया। ऐसा लग रहा था कि मानों दोनों सहेलियाँ एक लंबे समय के बाद मिल रही हों।

(क) माँ ने मीनू के लिए क्या बनाया था और क्यों? (2)

**उत्तर** मीनू को बेसन के लड्डू अत्यधिक पसंद थे, इसलिए माँ ने उसके लिए बेसन के लड्डू बनाए थे। मीनू छात्रावास जाने के उपरांत पहली बार घर पर आई थी, इसलिए माँ ने उसकी पसंद की चीज बनाई थी।

(ख) नीलिमा ने किसको और कहाँ भेजा था? (2)

**उत्तर** नीलिमा को जैसे ही पता चला कि मीनू मेरठ से मीरापुर आ गई है, उसने अपने नौकर को मीनू को बुलवाने के लिए उसके घर भेज दिया था।

(ग) मीनू को किसके घर पहुँचने की आतुरता थी और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू को नीलिमा के घर पहुँचने की आतुरता थी, क्योंकि नीलिमा और मीनू अत्यधिक घनिष्ठ मित्र थीं। नीलिमा का विवाह होने वाला था। मीनू, नीलिमा के विवाह में शामिल होने के लिए ही कॉलेज से छुट्टियाँ लेकर मीरापुर आई थी, ताकि वह उससे बातें कर सके, इसलिए मीनू को नीलिमा के घर पहुँचने की आतुरता थी।

(घ) लेखिका ने क्यों कहा कि मानो दोनों सहेलियाँ एक लंबे समय के बाद मिल रही हों? (3)

**उत्तर** लेखिका ने यह इसलिए कहा, क्योंकि मीनू को नीलिमा के घर पहुँचने की बहुत जल्दी थी। जब मीनू नीलिमा के घर पहुँची, तो दोनों ने ही अपनी-अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हुए एक-दूसरे को गले लगा लिया था। उनकी आपस में मिलने की आतुरता को देखकर ही लेखिका ने कहा कि ऐसा लग रहा था कि मानो दोनों सहेलियाँ लंबे समय के बाद मिली हों।

3. नीलिमा और मीनू बहुत घनिष्ठ सहेलियाँ थीं। नीलिमा का विवाह होने वाला था और इसलिए वह मीनू को अपनी साड़ियाँ एवं अन्य सामान दिखा रही थी, जिस कारण से उसे नीलिमा के घर पर अत्यधिक देर हो गई थी, इसलिए अशोक उसे छोड़ने आया था। सड़क पर घोर अंधकार था। शायद सड़क पर लगी बिजली की ट्यूबें खराब हो गई थीं। अंधकार में मीनू अशोक के पीछे-पीछे चलने लगी, मीनू का पैर एक पत्थर पर पड़ने से उसका संतुलन बिगड़ गया तभी उसने अपने को सँभाला, दो कदम पर उसका घर था।

- (क) मीनू कहाँ से आ रही थी? (2)  
**उत्तर** मीनू, नीलिमा के भाई अशोक के साथ उसके घर से आ रही थी, जहाँ पर नीलिमा के विवाह की तैयारियाँ हो रही थीं। मीनू अपनी घनिष्ठ मित्र नीलिमा से मिलने उसके घर गई हुई थी।
- (ख) मीनू को क्या आभास हुआ और उसने क्या किया? (2)  
**उत्तर** मेरठ से मीरापुर पहुँचने के बाद मीनू शीघ्र ही नीलिमा के घर पहुँच गई थी। वह अपने माता-पिता के साथ थोड़ा समय भी व्यतीत नहीं कर पाई थी, इसका आभास मीनू को नीलिमा के घर पर हुआ था। वह नीलिमा को घर पर माता-पिता के इंतजार करने की बात कहकर घर के लिए लौट आई।
- (ग) मीनू को छोड़ने कौन व क्यों आया था? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। (3)  
**उत्तर** मीनू को छोड़ने के लिए अशोक आया था। अशोक, नीलिमा के भाई थे, वे पेशे से डॉक्टर थे, जो दिल्ली के ही एक अस्पताल में कार्यरत थे। अशोक के हृदय में मीनू के लिए विशेष स्थान था। वह मीनू को पसंद करते थे।
- (घ) मीनू के देरी से आने का कारण बताते हुए बाहरी परिवेश का वर्णन कीजिए। (3)  
**उत्तर** मीनू अपनी प्रिय सखी नीलिमा के घर गई हुई थी, जहाँ दोनों ही आपस में खूब बातें कर रही थीं। नीलिमा ने मीनू को सुरेंद्र का फोटो और विवाह के लिए खरीदी गई साड़ियाँ दिखाई, जिससे मीनू को घर के लिए देर हो गई। बाहर पूरी तरह अंधकार छाया हुआ था। रात्रि के नौ बज चुके थे, सड़कों पर लगी हुई बिजली की ट्यूब लाइटें भी खराब थीं, इस कारण कुछ भी दिखाई देने में कठिनाई हो रही थी।
4. शीशे के सामने खड़ी होकर मीनू ने सुंदर ढंग से अपने केश सँवारे। इससे उसका रूप और सलोना हो उठा। गेहुँआ रंग होने पर भी उसके तीखे नाक-नक्शा उसकी सुंदरता में चार चाँद लगा रहे थे, परंतु मीनू के हृदय में जो हीनभावना घर कर गई थी, उसके कारण वह कभी अपने को सुंदर समझ ही न सकी।
- (क) मीनू कहाँ जाने के लिए तैयार हो रही थी? (2)  
**उत्तर** मीनू की सहेली नीलिमा का आज विवाह था। उसका भाई अशोक मीनू को बुलाने उसके घर आ गया था, जिस कारण मीनू बड़ी ही शीघ्रता से उसके घर जाने के लिए तैयार हो रही थी।
- (ख) “रूप और सलोना हो उठा” पंक्ति का अर्थ बताते हुए इसका संदर्भ स्पष्ट कीजिए। (2)  
**उत्तर** प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ है—अत्यधिक सुंदर दिखना। मीनू जब नीलिमा के घर जाने के लिए तैयार होते हुए अपने बाल सँवारती है, तो उसका रंग गेहुँआ होने के उपरांत भी वह अत्यधिक सुंदर दिखाई दे रही थी।
- (ग) मीनू में हीनभावना क्यों घर कर गई थी? उसका उस पर क्या असर पड़ा? (3)  
**उत्तर** मीनू एक गुणवती, शिक्षित व समझदार लड़की थी, किंतु दहेज के कारण उसके कई बार रिश्ते टूट गए थे। इस कारण उसे यह अनुभव होने लगा था कि वह सुंदर नहीं है, इसी वजह से उसके रिश्ते टूट रहे हैं। इससे उसमें हीनभावना घर कर गई थी। इसी हीनभावना से ग्रसित होने के कारण वह स्वयं को कभी सुंदर समझ ही नहीं पाई।
- (घ) तैयार होने के उपरांत मीनू ने क्या अनुभव किया और माताजी की इस पर क्या प्रतिक्रिया थी? (3)

**उत्तर** नीलिमा के घर जाने के लिए मीनू ने हरे रंग का सलवार-सूट पहना था और बहुत ही सुंदर ढंग से अपने केशों को सँवारा था, जिस कारण वह सुंदर दिख रही थी। स्वयं को इस प्रकार सजी-सँवारी होने के बाद जब मीनू ने स्वयं को दर्पण में भली-भाँति निहारा तो उसे अनुभव हुआ कि वह बदसूरत नहीं है। बेटी को इस तरह से सजा हुआ देखकर उसकी माँ को भी बेहद अच्छा लग रहा था।

5. इतना कहकर दोनों खिल-खिलाकर हँस पड़ीं। तभी अचानक मीनू को ख्याल आया कि नीलिमा को देने वाला उपहार वह घर ही छोड़ आई है। यह ध्यान आते ही मीनू झटपट खड़ी हो गई और नीलिमा से यह कहकर कि मैं अभी आ रही हूँ, बाहर चली गई।

(क) मीनू कहाँ आई हुई थी और क्यों? (2)

**उत्तर** मीनू अपनी प्रिय सहेली नीलिमा के घर आई हुई थी, क्योंकि आज नीलिमा का विवाह था और वह उसमें शामिल होने के लिए उसके घर आई हुई थी।

(ख) कौन दोनों खिल-खिलाकर हँस पड़ीं और क्यों? (2)

**उत्तर** मीनू और नीलिमा दोनों खिल-खिलाकर हँस पड़ी थीं, क्योंकि मीनू ने नीलिमा के हाथों में रची हुई मेहँदी की प्रशंसा करते हुए कहा था कि “तेरा पति तुझे बहुत प्यार करेगा। देख कितनी गहरी रची है तेरी मेहँदी।” जिस पर नीलिमा ने कहा “हाँ मीनू, बात तो सही है।” और दोनों खिल-खिलाकर हँस पड़ी थीं।

(ग) मीनू को क्या याद आया था और उसने क्या किया? (3)

**उत्तर** मीनू नीलिमा की मेहँदी की प्रशंसा कर रही थी और दोनों ही अपनी बातों में व्यस्त थीं, तभी मीनू को याद आया कि नीलिमा को विवाह के उपलक्ष्य में देने के लिए उसने जो घड़ी उपहारस्वरूप खरीदी थी, उसे वह लाना भूल गई थी, किंतु जैसे ही उसे ख्याल आया कि वह उपहार घर पर ही भूल आई है, वह जल्दी से उठकर नीलिमा से अभी आने की बात कहते हुए बाहर चली गई थी।

(घ) मीनू कहाँ चली गई थी और उसके उपहार पर नीलिमा की क्या प्रतिक्रिया थी? (3)

**उत्तर** मीनू ने नीलिमा को देने के लिए जो उपहार खरीदा था, उसे वह घर पर ही भूल आई थी, इसलिए वह उपहार लेने के लिए अपने घर गई थी। मीनू ने लौटकर जब उसे उपहार दिया, तो नीलिमा अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव करते हुए जल्दी से उपहार खोलकर देखने लगी। एक बहुत सुंदर घड़ी देखकर नीलिमा उसकी प्रशंसा करने लगी।

6. “सुंदर!” सुंदर शब्द सुनकर उसका हृदय प्रसन्नता से झूम उठा। वह गुनगुनाती हुई नीलिमा के घर की ओर चल दी। ऊपर के कमरे में नीलिमा को सजाया जा रहा था। मीनू भी ऊपर के कमरे में नीलिमा के पास पहुँच गई। रूप-रंग में सुंदर दिखने वाली नीलिमा का आज लाल रंग की साड़ी में रूप और अधिक निखरा हुआ लग रहा था।

(क) मीनू प्रसन्न क्यों थी? (2)

**उत्तर** मीनू ने नीलिमा के विवाह के लिए गुलाबी रंग की साड़ी पहनी थी, जिसमें वह बहुत सुंदर लग रही थी उसे साड़ी पहना देखकर माँ ने भी उसकी प्रशंसा करते हुए कहा था कि वह बहुत सुंदर लग रही है। माँ के द्वारा प्रशंसा किए जाने के कारण वह प्रसन्न थी।

(ख) मीनू कहाँ जा रही थी? उसकी मनोदशा कैसी थी? (2)

**उत्तर** मीनू, नीलिमा के विवाह में शामिल होने के लिए उसके घर जा रही थी। इस समय उसका मन बहुत प्रसन्न था। वह कुछ गुनगुनाती हुई नीलिमा के घर की ओर चली जा रही थी।

(ग) नीलिमा के विवाह के अवसर पर मीनू अधिक सुंदर क्यों लग रही थी? उस पर माँ ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की? (3)

**उत्तर** मीनू ने नीलिमा के विवाह के उपलक्ष में गुलाबी रंग की सुनहरे काम वाली साड़ी पहनी थी और चेहरे पर हल्का-सा मेकअप कर एक छोटी-सी बिंदी माथे पर लगाई थी। उसने अपने बाल खोलकर एक जूड़ा बनाया था, जिस कारण वह अत्यधिक सुंदर दिखाई दे रही थी। मीनू को इस प्रकार सजी-सँवरी देखकर माँ ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा था कि वह अत्यधिक सुंदर लग रही है।

(घ) मीनू कहाँ पहुँची और उसने क्या देखा? (3)

**उत्तर** मीनू जब नीलिमा के घर पहुँची तो उसने देखा कि नीलिमा, जो रूप-रंग में सुंदर दिखती ही थी, आज दुल्हन के कपड़े पहनने के बाद उसका रूप अत्यधिक निखर गया था। सभी औरतों का यही प्रयास था कि किस तरह वे नीलिमा के कमरे में प्रवेश कर उससे जा मिलें। पूर्णतः सजने के बाद वह अप्सरा-सी लग रही थी। इस समय हर कोई उसके रूप की प्रशंसा कर रहा था।

7. “दूसरे ही क्षण मीनू उसके सामने आ गई और खुशी से उसके हाथ चूम लिए। अरे मीनू, आज तो बहुत प्रसन्न दिखाई दे रही हो! क्या बात है? नीलिमा ने पूछा।” [2018]

(क) मीनू कौन है? उसकी प्रसन्नता का कारण क्या है? (2)

**उत्तर** ‘मीनू’ उपन्यास की नायिका तथा नीलिमा की सहेली है। उसकी प्रसन्नता का कारण शादी के लिए मेरठ के लोगों द्वारा उसकी फोटो पसंद करना था।

(ख) ‘उसके’ सर्वनाम का प्रयोग किसके लिए किया गया है? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। (2)

**उत्तर** ‘उसके’ सर्वनाम का प्रयोग नीलिमा के लिए किया गया है। नीलिमा मीनू की बचपन की सहेली है, वह मीनू के साथ पूरी सहानुभूति रखती है तथा उसे खुश देखना चाहती है।

(ग) मीनू के चेहरे पर किस बात को सोचकर उदासी छा जाती है? मीनू की उदासी कब और किस प्रकार दूर होती है? समझाकर लिखिए। (3)

**उत्तर** मीनू के चेहरे पर यह बात सोचकर उदासी छा जाती है कि अतीत में भी कई लड़के वालों ने उसकी फोटो को पसंद किया था, लेकिन जब वे उसे देखने के लिए आते तो किसी न किसी कारण से उसे नापसंद कर देते थे। जब मीनू के भाई रोहित ने एम. ए. की परीक्षा का सुखद परिणाम उसे बताया तब उसकी उदासी दूर हो गई। अपनी सफलता का समाचार सुनते ही मीनू के अंदर खुशी की लहर दौड़ गई।

(घ) प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य समाज में फैली दहेज की समस्या, उसके दुष्प्रभाव, दहेज लोभियों को कुछ सोचने के लिए विवश करना है। इसके अतिरिक्त दहेज की व्यथा सहन कर रही नवयुवतियों को साहस, धैर्य एवं विवेक बनाए रखने की सीख देते हुए उनकी योग्यता को उभारना है, जिससे वे आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाकर स्वावलंबी बनें और दहेज लोभियों को अपनी भूल के लिए पछताने पर विवश कर दें।

## अध्याय 10

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में मीनू के कॉलेज में वार्षिकोत्सव की तैयारी, मीनू द्वारा कथक नृत्य में भाग लेने की स्वीकृति देने, बचपन में कथक नृत्य की प्रस्तुति, कॉलेज में कथक का पुनः अभ्यास करने का निर्णय और पिताजी की बीमारी का टेलीग्राम मिलने पर दुःखी होने का उल्लेख किया गया है।

#### वार्षिकोत्सव की तैयारी

नीलिमा की विदाई के उपरांत मीनू वापस कॉलेज के लिए निकल गई। कॉलेज पहुँचने पर मीनू को पता चलता है कि कॉलेज में वार्षिकोत्सव मनाया जाने वाला है। कॉलेज में विभिन्न प्रकार के सामूहिक नृत्य, गीत व नाटक इत्यादि कार्यक्रमों की तैयारियाँ चल रही हैं। माया व अन्य लड़कियों ने मीनू से वार्षिकोत्सव में कथक नृत्य प्रस्तुत करने के लिए कहा। उसने कथक सीखे होने का जिक्र एक बार माया से किया था। मीनू ने अपने विद्यालय एवं महाविद्यालय में कई बार कथक नृत्य की प्रस्तुति दी थी और पुरस्कार भी प्राप्त किए थे। सभी के आग्रह करने पर वह मना नहीं कर सकी। यात्रा में हुई थकान को दूर करने के लिए वह अपने कमरे में चली गई और पलंग पर लेटे-लेटे बचपन के बारे में सोचने लगी।

#### मीनू द्वारा बचपन को याद करना

मीनू बचपन की यादों को याद करती हुई सोचती है कि कस्बे में जब एक कथक सिखाने का स्कूल खुला था, तो सबसे पहले वही वहाँ पर नृत्य सीखने पहुँची थी। अपनी लगन और परिश्रम से उसने दो वर्षों में ही नृत्य में निपुणता प्राप्त कर ली थी। उसने अपने विद्यालय के वार्षिकोत्सव में भी कथक नृत्य प्रस्तुत किया था। अपनी माँ की सुनहरी साड़ी पहनकर जब वह नृत्य के लिए तैयार हुई, तो वह उत्साह और उमंग से भरी हुई थी। उसके नृत्य को देखकर सभी मोहित हो उठे। मुख्य अतिथि ने पुरस्कार देते हुए उसकी प्रशंसा की थी। घर पहुँचने पर मीनू ने अपनी माँ को पुरस्कार दिखाया और उनके गले लग गई थी।

#### माया का आगमन कथक अभ्यास का निर्णय

मीनू बचपन की यादों में खोई हुई थी, तभी माया कमरे में प्रवेश करती है और नीलिमा की शादी के बारे में पूछती है। दोनों कुछ देर तक बातें करती हैं, उसके बाद मीनू अपनी पढ़ाई के लिए बैठ जाती है। कॉलेज वार्षिकोत्सव में दस दिन शेष हैं, इस बात को ध्यान में रखकर मीनू कथक नृत्य का अभ्यास करने का निर्णय लेती है। वह निश्चय करती है कि वह कॉलेज में ही नृत्य का अभ्यास करेगी।

## मीनू को टेलीग्राम मिलना

मीनू नृत्य का अभ्यास कर रही थी, तभी चपरासी ने आकर बताया कि उसका टेलीग्राम आया है, जिसको सुनते ही वह घबरा जाती है। टेलीग्राम से उसे पता चलता है कि उसके पिताजी बीमार हैं। पिताजी के बीमार होने की खबर सुनते ही मीनू व्याकुल हो उठती है और छात्रावास पहुँचकर घर जाने की तैयारी करने लगती है। मीनू को उदास व सामान बाँधते हुए देखकर माया उसके उदास होने का कारण पूछती है। मीनू, माया को अपने पिताजी के बीमार होने के विषय में बताती है। माया उसे सुबह जाने के लिए कहती है। व्याकुल और बेचैन मीनू के लिए रात गुजारना बड़ा ही कष्टपूर्ण था। वह तो सुबह का इंतज़ार कर रही थी।

## शब्दार्थ

वार्षिकोत्सव—वर्ष में होने वाला उत्सव (annual function); कुशलतापूर्वक—दक्षता से (efficiently, with perfection); अभ्यास—एक ही कार्य को बार-बार दोहराना (practice); मुखरित—प्रदर्शित हो जाना (expressed); निरंतर—लगातार (continuously); निहारना—ध्यानपूर्वक देखना (to see); थिरकन—नाचते समय पैरों को तेजी से चलाना (to dance with expressive actions, friskiness); नाजुक—कोमल (soft); टेलीग्राम—तार अर्थात् संदेश को अतिशीघ्र भेजने का माध्यम (telegram); परतंत्र—गुलाम (slave)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- यद्यपि वह अब इन सब बातों में विशेष रुचि नहीं रखती थी। इस समय उसके सामने एक ध्येय था, एक मंजिल थी, जिस पर पहुँचने के लिए उसे विशेष परिश्रम की आवश्यकता थी और फिर अब नीलिमा की शादी में भी उसके तीन दिन बेकार हो गए थे।  
(क) कॉलेज पहुँचने पर मीनू ने क्या दृश्य देखा? (2)  
**उत्तर** छात्रावास पहुँचने पर मीनू को ज्ञात हुआ कि कॉलेज में वार्षिकोत्सव मनाया जाना है। छात्रावास की लगभग सभी लड़कियाँ वार्षिकोत्सव में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में भाग ले रही थीं, जिस कारण छात्रावास में अत्यधिक चहल-पहल का दृश्य था।  
(ख) मीनू अब किन बातों में विशेष रुचि नहीं रखती थी? (2)  
**उत्तर** मीनू ने बचपन में कथक नृत्य सीखा था। एक अच्छी नृत्यांगना होने के कारण उसने कई पुरस्कार भी जीते थे, किंतु वकालत की पढ़ाई करने का नया लक्ष्य बना लेने के कारण अब उसकी रुचि नृत्य, गीत, नाटक इत्यादि में कम हो गई थी।  
(ग) प्रस्तुत अवतरण मीनू की किन विशेषताओं को रेखांकित करता है? (3)  
**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण से मीनू की कई विशेषताओं का पता चलता है; जैसे—वह एक कुशल नृत्यांगना, समय के महत्व को समझने वाली व अपने लक्ष्य की ओर दृढ़ निश्चयी होकर बढ़ने वाली युवती है। वह हमेशा प्रथम आती है, जिससे पता चलता है कि वह पढ़ाई में बहुत होशियार है।  
(घ) मीनू का ध्येय क्या था और क्यों था? (3)  
**उत्तर** मीनू का एकमात्र लक्ष्य वकालत प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर स्वयं को स्थापित करते हुए कुछ बनकर दिखाने का था, क्योंकि समाज में व्याप्त कुरीतियों के कारण नारी की स्थिति अत्यधिक दयनीय थी। बेटियों को माता-पिता पर अभिशाप समझा जाता था। मीनू अपने दम पर वकील बनकर समाज की इस धारणा को बदलना चाहती थी।

- नृत्य करते समय उसके पैरों की ताल व हाथों की थिरकन देखने योग्य थी। अपने नाजुक बदन को वह हर दिशा में आसानी से मोड़ लेती थी। उसका नृत्य समाप्त होने पर पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा था। प्रत्येक दर्शक उसके नृत्य की प्रशंसा कर रहा था।  
(क) मीनू ने नृत्य कहाँ से सीखा था? (2)  
**उत्तर** मीनू ने अपने ही कस्बे मीरापुर से कथक नृत्य सीखा था। वह अपने कस्बे के कथक विद्यालय की प्रथम विद्यार्थी थी। उसने अपनी लगन और परिश्रम से दो वर्षों में ही नृत्य में दक्षता प्राप्त कर ली थी।  
(ख) विद्यालय के वार्षिकोत्सव के लिए मीनू ने क्या-क्या तैयारियाँ की थीं? (2)  
**उत्तर** विद्यालय के वार्षिकोत्सव के लिए मीनू ने कई दिनों तक कथक नृत्य का अभ्यास किया और अपनी माँ की हरे रंग की जरी की सुनहरी साड़ी पहनकर, सज-सँवर कर वार्षिकोत्सव में नृत्य प्रस्तुत किया था।  
(ग) मीनू ने कौन-सा नृत्य किया था? दर्शकों ने उसके नृत्य पर कैसी प्रतिक्रियाएँ दीं? (3)  
**उत्तर** मीनू ने विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर कथक नृत्य प्रस्तुत किया था। दर्शक मीनू द्वारा कुशलतापूर्वक एवं निपुणता से किए गए नृत्य पर मंत्रमुग्ध हो उठे थे और पूरा हॉल उनकी तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा था। मुख्य अतिथि ने भी पुरस्कार देते हुए उसकी प्रशंसा की थी। इस प्रकार, दर्शकों की ओर से मिले सकारात्मक दृष्टिकोण ने मीनू का उत्साह और अधिक बढ़ा दिया।  
(घ) नृत्य की समाप्ति पर मीनू की मनःस्थिति कैसी थी? कोई दो कारण बताते हुए स्पष्ट कीजिए। (3)  
**उत्तर** नृत्य की समाप्ति पर मीनू अत्यधिक प्रसन्न एवं उत्साहित नज़र आ रही थी। मीनू की प्रसन्नता का एक कारण दर्शकों एवं मुख्य अतिथि द्वारा उसके नृत्य की प्रशंसा करना था, वहीं दूसरी ओर उसकी अध्यापिका ने मुख्य अतिथि से उसकी प्रशंसा करते हुए उसके सदैव पढ़ाई में प्रथम आने और प्रत्येक कार्य में कुशल होने की बात कही थी। अध्यापिका के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर मीनू को बहुत हर्ष महसूस हुआ।

3. काश, उसके पंख होते तो वह उड़कर अपने घर पहुँच जाती। इस समय उसकी दशा पिंजरे में बंद एक पक्षी की तरह थी। उसके हृदय में उड़ जाने के लिए छटपटाहट-सी थी। एक परतंत्र पक्षी के समान अपनी स्थिति जानकर उसकी आँखों में आँसू छलक आए।

(क) मीनू को अपने पिताजी के बारे में किस प्रकार और क्या मालूम हुआ? (2)

**उत्तर** मीनू कॉलेज के वार्षिकोत्सव के लिए नृत्य का अभ्यास कर रही थी, उसी समय डाकिए ने उसे टेलीग्राम दिया, जिससे मीनू को अपने पिताजी के बीमार होने की खबर मालूम हुई।

(ख) मीनू को घर पहुँचने की जल्दी क्यों थी? (2)

**उत्तर** मीनू अभी कुछ दिनों पहले ही घर में सभी से मिलकर आई थी। वह जानती है कि अगर पिताजी की तबीयत अत्यधिक खराब न होती, तो उसे टेलीग्राम भेजकर घर न बुलाया जाता, इसलिए उसे घर पहुँचने की जल्दी थी।

(ग) मीनू की तुलना पिंजरे में बंद एक पक्षी से क्यों की गई है? (3)

**उत्तर** जिस प्रकार एक पक्षी पिंजरे में बंद होने के उपरांत चाहकर भी विवशता के कारण पिंजरे से बाहर नहीं निकल पाता, उसी प्रकार बाहर अँधेरा होने और रास्ता खराब होने के कारण मीनू के समक्ष ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है कि वह चाहकर भी घर नहीं जा पाती, इसलिए मीनू की तुलना पिंजरे में बंद पक्षी से की गई है।

(घ) छात्रावास में अनिच्छा से रुकने पर मीनू की मनोदशा का वर्णन कीजिए। (3)

**उत्तर** पिताजी की तबीयत खराब होने के कारण मीनू घर जाने के लिए तैयार होती है, किंतु बाहर अँधेरा होने के कारण उसे रात को अनिच्छा से छात्रावास में ही रुकना पड़ता है। इस विवशता के कारण उसके मस्तिष्क में अनेक प्रकार के विचार आने लगे, वह स्वयं को उस परतंत्र पक्षी के समान समझने लगती है, जो चाहकर भी कुछ नहीं कर पाता। इस विवशता के कारण मीनू अत्यधिक व्याकुल और परेशान हो जाती है और दुःखी होने के कारण उसकी आँखों से आँसू छलक पड़ते हैं।

## अध्याय 11

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में दिल का दौरा पड़ने से मीनू के पिता की तबीयत खराब होने, दो-दो बेटियों के विवाह की बात सोचकर माँ के दुःखी होने, मीनू को देख पिताजी के प्रसन्न होने, सप्ताह भर में उनकी तबीयत में सुधार आने, उन्हें देखने आए मीनू के फूफा और बुआ की सलाह से पिता के दुःखी होने, माँ के चिंतित होने के बावजूद मीनू द्वारा अपने उद्देश्य की प्राप्ति से पूर्व विवाह के लिए मना करने का उल्लेख है।

### पिता को मीनू का इंतजार

मीनू के पिता की हालत काफी गंभीर थी, इसलिए डॉक्टरों ने उन्हें बात करने से मना करते हुए पूर्ण आराम करने के लिए कहा था। परिवार के सभी सदस्य उनकी सेवा में लगे रहते थे। माँ उनकी यह स्थिति देखकर बहुत दुःखी होती थीं। जब भी वह मीनू और आशा के विवाह के बारे में सोचती थीं तो वे और अधिक व्याकुल हो उठतीं। पिताजी को मीनू से विशेष स्नेह था, इसलिए जब भी होश आता उसके बारे में पूछते। सभी जान-पहचान वाले उनकी तबीयत के बारे में सुनकर उनसे मिलने आ रहे थे। मेरठ से पहली बस के आने का समय हो गया था, सभी मीनू की प्रतीक्षा कर रहे थे। पिताजी ने रोहित से मीनू के बारे में पूछा था, किंतु उसका नकारात्मक जवाब सुनकर उन्होंने पुनः आँखें मूँद ली थीं।

### मीनू का घर पहुँचना और पिता से मिलना

माँ रसोई में काम कर रही थीं, लेकिन उनका सारा ध्यान दरवाजे पर ही था। तभी उन्होंने मीनू को रिक्शे से उतरते हुए देखा और मीनू अंदर आते ही माँ से लिपट गई और पिताजी की तबीयत के बारे में पूछा। माँ ने रुँधे कंठ से बताया कि वे कमरे में लेटे हैं। मीनू पिताजी से मिलने के

लिए कमरे में प्रवेश करती है, जहाँ रोहित बैठा था। पिताजी को सोए हुए देख मीनू उन्हें जगाना उचित नहीं समझती और समाचार-पत्र पढ़ने लगती है। कुछ देर बाद जब पिताजी जागते हैं, तो वे मीनू से उसके आने के बारे में पूछते हैं, किंतु अत्यधिक कमजोरी के कारण उन्हें बोलने में बहुत जोर लगाना पड़ रहा था। मीनू उनकी यह स्थिति देखकर बहुत दुःखी होती है।

### माँ और मीनू का आपस में बातें करना

आशा कमरे में प्रवेश करती हुई मीनू से कहती है कि दीदी आपको माँ ने खाना खाने के लिए बुलाया है। मीनू भूख न होने की बात कहते हुए खाना खाने से मना करती है। माँ उसे बताती है कि जिस दिन तेरे पिताजी की तबीयत खराब हुई थी, उस दिन तो रसोई में खाना ही नहीं बना था। माँ कहती है कि यदि तुम खाना नहीं खाओगी तो पिताजी की सेवा कैसे कर पाओगी। पिताजी की गंभीर स्थिति को देखते हुए परिवार का एक सदस्य सदैव उनके पास ही रहता था, जिस कारण अब उनकी स्थिति में बहुत सुधार आ गया था और अब वे बैठने व बातें भी करने लगे थे।

### बुआजी की व्यर्थ की बातें

सुबह के लगभग नौ बजे थे। बाहर हल्की-हल्की बारिश-सी हो रही थी। तभी मीनू की बुआजी और फूफाजी, पिताजी से मिलने घर पहुँचते हैं। पिताजी की कुशल-क्षेम (कुशलता) पूछने के उपरांत बुआजी व्यर्थ की बातें करने लगती हैं। मीनू को बुआजी का इस प्रकार व्यर्थ की बातें करना अच्छा नहीं लगता, क्योंकि इस कारण पिताजी को भी बातें करनी पड़ रही थीं, जबकि डॉक्टर ने उन्हें बातें करने से मना किया था। मीनू का मन तो किया कि वह बुआजी को बात करने से मना कर दे, किंतु उनके बड़े होने का आदर कर वह कुछ न बोली। फूफाजी का इशारा



करने पर भी जब बुआजी न मानी, तो मीनू ने उन्हें कहा कि आप सफर से थकी होंगी, पहले खाना खा लीजिए, तब तक पिताजी भी आराम कर लेंगे।

### बुआजी द्वारा पिताजी को जिम्मेदारी का ध्यान दिलाना

फूफाजी को फैक्ट्री में काम होने के कारण वे वापस दिल्ली जाने की तैयारी करने लगे। बुआजी पिताजी के कमरे में जाकर उनसे मीनू व आशा के जवान होने और जवान बेटियों को एक बड़ी जिम्मेदारी बताते हुए उनका विवाह शीघ्र-अति-शीघ्र (जल्दी से) करने को कहती हैं। वे रोहित के विषय में अधिक चिंतित न होने को कहती हैं। बुआजी, पिताजी को बेटियों के लिए लड़का ढूँढने व अपनी जिम्मेदारी कम करने की बात कहते हुए बाहर निकल आती हैं। पिताजी को छोड़कर अन्य सभी सदस्य उन्हें गाड़ी तक विदा करने जाते हैं।

### पिताजी का चिंतित होना

बुआजी की बातों को सुनकर पिताजी गहरी चिंता में डूब जाते हैं। उनकी बड़ी बेटी मीनू एम.ए. करने के बाद वकालत कर रही थी, तो छोटी बेटी आशा भी बी. ए. कर चुकी थी। पिताजी इन्हीं विचारों में खोए हुए थे कि माताजी कमरे में प्रवेश करती हैं। पिताजी, माताजी से अपनी चिंता प्रकट करते हुए कहते हैं कि अगर मुझे कुछ हो गया तो तुम बेटियों की शादी किस प्रकार करोगी? रोहित लड़का है, इसलिए मुझे उसकी चिंता नहीं है। माँ पिताजी की बात सुनकर दुःखी होती हैं और उन्हें ऐसी अशुभ बातें न करने के लिए कहती हैं। पिताजी अपनी चिंता प्रकट करते हुए कहते हैं कि तुम मेरी मनोदशा नहीं समझ सकती और जब तक मैं अपनी बेटियों का विवाह न कर दूँ, मुझे शांति नहीं मिलेगी। माँ विवाह के संबंध में अपने विचार रखती हुई कहती हैं कि अच्छे लड़के मिलना भी कोई आसान बात नहीं है और यदि अच्छे लड़के मिलते भी हैं, तो वे लड़की में ही कमी निकालते हैं। इसके साथ ही माँ, मीनू की वकालत में पढ़ने और शादी के लिए तैयार न होने की बात कहती हुई उसे अपने कमरे में बुलाती हैं।

### पिता की विवशता और मीनू का निश्चय

मीनू कमरे में प्रवेश करती है। पिताजी अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए कहते हैं कि मैं चाहता हूँ कि तुम शादी कर लो, क्योंकि आशा का भी विवाह करना है। ऐसे हालातों में अगर मेरी मृत्यु हुई तो मैं चैन से मर

भी नहीं पाऊँगा, किंतु मीनू से उसकी इच्छा जानना चाहते हैं तब मीनू कहती है कि अभी मेरी वकालत के दो वर्ष शेष हैं। अगर मैंने शादी कर ली तो मेरी पढ़ाई पूरी न हो पाएगी। माँ आशा का विवाह भी करने की बात कहती है, परंतु मीनू विवाह न करने की बात कहते हुए आशा का विवाह करवाने के लिए कहती है। पिताजी मीनू का विरोध करते हुए कहते हैं कि ऐसे कार्य के लिए उनका हृदय उनका साथ नहीं देगा। मीनू पिताजी को समझाते हुए कहती है कि प्रत्येक उचित कार्य के लिए हृदय साथ देता है। वह कहती है कि अगर मैं अपने लक्ष्य को बीच में ही छोड़कर शादी कर लूँ, तो उससे न ही आपका और न ही मेरा हृदय साथ देगा, लेकिन अगर मैं अपने लक्ष्य पर चलते हुए सफल होती हूँ, तो मेरे साथ ही आप भी खुशी का अनुभव करेंगे। मीनू की बातें सुन माँ व पिताजी दोनों ही स्वयं को दुविधा की स्थिति में महसूस करते हैं।

### मीनू की कॉलेज लौटने की तैयारी

मीनू को घर आए एक सप्ताह से अधिक हो गया था और पिताजी की तबीयत में बहुत सुधार था, इसलिए वह कॉलेज वापस जाने के बारे में सोचती है। शाम के समय माँ रसोई में कार्य कर रही थी। मीनू, माँ से कॉलेज वापस जाने की इच्छा व्यक्त करती है। माँ उसको अगले दिन जाने की आज्ञा देती हैं।

मीनू कमरे में जाकर अपना सामान बाँधना शुरू करती है। मीनू रात को पलंग पर लेटी थी, लेकिन उसके मन में सुबह शादी को लेकर हुई बातें घूम रही थीं। एक क्षण वह सोचती है कि उसकी बातों से उसके माता-पिता आहत तो नहीं हुए? तो दूसरे क्षण उसे अपने लक्ष्य का स्मरण हो उठता है। ऐसे में उसे कब नींद आई उसे स्वयं ही पता नहीं चला। सुबह माँ आकर उसे चाय देकर उठाती है। मीनू मेरठ जाते समय पिताजी से मिलती है और दुःखी होती है, क्योंकि अपनी पढ़ाई के कारण उसे जाना पड़ रहा था अन्यथा वह तो पिताजी की सेवा करना चाहती थी। माँ उसके मंगल भविष्य की कामना करते हुए उसे आशीर्वाद देती है।

### शब्दार्थ

विचलित-दुःखी (disturbed); मंद-धीरे से (slowly); यत्न-मेहनत (diligently, hard work); गवाही-साक्ष्य (witness); सायंकाल-दिन ढलने का समय (evening time); प्रस्ताव-सुझाव (proposal, suggestion)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. तभी उन्होंने मीनू को रिक्शे से उतरते हुए देखा। जैसे ही मीनू अंदर आई, माँ को देखकर उसका दिल भर आया।

(क) मीनू घर क्यों आई थी?

(2)

**उत्तर** कॉलेज में मीनू को तार मिला जिससे पता चला कि उसके पिताजी की तबीयत अत्यधिक खराब है, इसलिए वह कॉलेज से अपने पिताजी से मिलने घर आई थी।

- (ख) माँ क्या कर रही थीं और उनकी नजर दरवाजे की ओर क्यों थी? (2)

**उत्तर** माँ रसोई में काम कर रही थीं। मीनू सवरे की बस से मेरठ से घर आने वाली थी, दिल का दौरा पड़ने से उसके पिताजी की तबीयत खराब थी। उनसे मिलने के लिए वह कॉलेज से घर आ रही थी। इसलिए माँ की नजरें दरवाजे पर थीं।

- (ग) घर में मीनू का इंतजार क्यों हो रहा था?

(3)

**उत्तर** घर में पिताजी की तबीयत अत्यधिक खराब थी। मीनू को इस बारे में टेलीग्राम देकर सूचित भी किया जा चुका था, लेकिन वह फिर भी अभी तक घर नहीं पहुँची थी, जिस कारण पिताजी बार-बार उसके बारे में पूछ रहे थे, इसलिए घर में मीनू का इंतजार हो रहा था।



(घ) 'दिल भर आया' से क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** दिल भर आना का अर्थ है—अत्यधिक भावुक हो जाना। मीनू अपने पिताजी की तबीयत खराब होने के कारण चिंतित थी, किंतु जैसे ही वह माँ को देखती है, वह अत्यधिक भावुक हो उठती है और भावावेश में दुःखी होकर माँ से लिपट जाती है। दुःख की अधिकता और अत्यधिक भावुक होने के कारण उसका दिल भर आया था।

2. मीनू चुपचाप बैठी समाचार-पत्र पढ़ने लगी। फिर भी उसकी एक नज़र समाचार-पत्र की ओर थी और दूसरी नज़र पिताजी की ओर।

(क) मीनू को पिताजी की तबीयत के बारे में किसने और क्या बताया था? (2)

**उत्तर** मीनू जब घर पहुँचती है, तो वह माँ को देखकर अत्यधिक भावुक हो उठती है। उसके पूछने पर माँ बताती है कि उनको दिल का दौरा पड़ा था। डॉक्टरों ने उन्हें बोलने के लिए मना किया है तथा पूर्ण आराम करने के लिए कहा है।

(ख) मीनू को कौन और कहाँ बैठाकर गया था? (2)

**उत्तर** मीनू के पिताजी की तबीयत ठीक नहीं थी इसलिए मीनू जब पिताजी से मिलने कमरे में जाती है, तो देखती है कि रोहित वहाँ पहले से बैठा था। मीनू के प्रवेश करते ही रोहित उसे पिताजी के पास बैठने के लिए कहता है। इतना कहकर वह बाहर चला गया।

(ग) मीनू क्या पढ़ रही थी और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू समाचार-पत्र पढ़ रही थी, क्योंकि जब माँ ने उसे यह बताया कि उसके पिताजी की तबीयत खराब होने के बाद भी वह उसे बार-बार याद कर रहे थे। मीनू व्याकुल होकर पिताजी से मिलने उनके कमरे में जाती है, जहाँ तबीयत अत्यधिक खराब होने व दवाइयों का नशा होने के कारण वे सोए हुए थे, इसलिए मीनू ने उन्हें जगाना उचित न समझा। वह उनके जागने की प्रतीक्षा करते हुए उनके पास में ही बैठकर समाचार-पत्र पढ़ने लगी।

(घ) "उसकी एक नज़र समाचार-पत्र की ओर थी और दूसरी पिताजी की ओर।" पंक्ति से क्या अभिप्राय है? (3)

**उत्तर** प्रस्तुत पंक्ति का अभिप्राय है पिताजी से मिलने के लिए, उनसे बात करने के लिए मीनू व्याकुल, बेचैन व आतुर थी। मीनू जब घर पहुँची थी, तो माँ ने उसे पिताजी के द्वारा उसे बार-बार याद करने के बारे में बताया था।

मीनू की पिताजी से मिलने की इसी छटपटाहट को व्यक्त करते हुए लेखिका ने लिखा कि उसकी एक नज़र समाचार-पत्र की ओर और दूसरी पिताजी की ओर थी।

3. उन्हें देखकर वे बोले, "मीनू की माँ, यदि मुझे कुछ हो गया तो मीनू और आशा की शादी कैसे करोगी तुम? रोहित लड़का है। उसकी शादी की मुझे इतनी चिंता नहीं।"

(क) कमरे में कौन आया था और उसने क्या देखा? (2)

**उत्तर** कमरे में मीनू की माँ ने प्रवेश किया था और अंदर आकर उन्होंने देखा कि मीनू के पिताजी परेशान होने के कारण गहन चिंता एवं विचारों में खोए हुए थे।

(ख) पिताजी किन विचारों में खोए हुए थे? (2)

**उत्तर** पिताजी मीनू और आशा के विवाह की चिंता में खोए हुए थे, क्योंकि उनकी दोनों ही बेटियाँ बड़ी हो गई थीं। उनकी तबीयत भी बहुत अच्छी नहीं थी, बेटियों के अविवाहित होने के कारण पिताजी विचारों में खोए हुए थे।

(ग) उपरोक्त पंक्तियों का वक्ता कौन है? ये पंक्तियाँ उसकी किस मनोदशा को प्रकट करती हैं? (3)

**उत्तर** उपरोक्त पंक्तियों का वक्ता मीनू के पिताजी दयाराम जी हैं। इनसे दयाराम जी की चिंताग्रस्त, निराश एवं हताशा भरी मनोदशा प्रकट होती है। इसका कारण उनका स्वयं का खराब स्वास्थ्य और दोनों बेटियों का अभी तक अविवाहित होना था। इसी विषय में बुआजी भी उन्हें चिंतातुर कर गई थीं।

(घ) प्रस्तुत अवतरण समाज की किस मनोदशा को प्रकट करता है? (3)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण समाज की एक अपरिपक्व मानसिकता को प्रकट करता है, जिसमें लड़के-लड़कियों में अंतर करते हुए बेटियों को माता-पिता पर बोझ व जिम्मेदारी समझा जाता है। बेटियों के विवाह को उनके आत्मनिर्भर बनने और उनके शिक्षित होने से अधिक महत्त्व दिया जाता है। महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा कमजोर व असमर्थ समझा जाता है। अपने बेटे रोहित के विवाह के संबंध में पिताजी का निश्चित होना समाज की इसी मानसिकता को पुष्ट करता है।

4. "अच्छे लड़कों का मिलना भी तो आसान नहीं है और जब लड़के अच्छे मिलते हैं, तो लड़की में कमी निकाल देते हैं।" कहते-कहते माँ भी उदास हो गई।

"लड़के तो देखने ही पड़ेंगे, फिर अपनी मीनू को तो समझा लो।"

(क) वक्ता और श्रोता किस विषय पर बातें कर रहे थे? (2)

**उत्तर** वक्ता और श्रोता अर्थात् मीनू के माता-पिता अपनी बेटियों के विवाह न हो पाने के विषय में चिंतित थे। वे विवाह के संबंध में ही बातें कर रहे थे। वे लड़कों द्वारा लड़कियों में कमी निकाले जाने से चिंतित थे।

(ख) वक्ता ने लड़कों के विषय में क्या कहा था? (2)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् माताजी ने विवाह के लिए अच्छे लड़के न मिलने की बात कही थी। वे यह भी कहती हैं कि विवाह के लिए जो लड़के उपयुक्त होते हैं, वे लड़कियों में किसी-न-किसी रूप में कमी निकालकर विवाह के लिए मना कर देते हैं।

(ग) "जब लड़के अच्छे मिलते हैं, तो लड़की में कमी निकाल देते हैं।" वक्तव्य का वक्ता कौन है और उसने ऐसा क्यों कहा था? (3)

**उत्तर** प्रस्तुत वक्तव्य की वक्ता माताजी हैं। माताजी के वक्तव्य का आशय यह है कि मीनू को देखने के लिए कई लड़के घर आए थे, परंतु किसी ने उसका कद छोटा होना, किसी ने उसके साँवले रंग को कारण बताते हुए विवाह से इनकार कर दिया था, इसलिए माताजी ने कहा कि जब अच्छे लड़के मिलते हैं, तो लड़की में कमी निकाल देते हैं।

(घ) वक्ता ने श्रोता से मीनू को क्या समझाने के लिए कहा था और क्यों? (3)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् मीनू के पिताजी ने उसकी माताजी से मीनू को विवाह करने के लिए समझाने को कहा था, क्योंकि मीनू को कई लड़कों ने विवाह के लिए नापसंद किया था, जिस कारण मीनू ने वकालत में प्रवेश लेकर आत्मनिर्भर बनने का लक्ष्य निर्धारित किया था और विवाह न करने का निर्णय लिया था। उन्होंने माँ से मीनू को समझाने के लिए कहा, क्योंकि मीनू का विवाह करवाने के उपरांत ही वह अपनी छोटी बेटी आशा का विवाह करवा पाते। मीनू से पहले आशा का विवाह करवाना, उन्हें अनुचित जान पड़ता था।

5. आप तो जानते ही हैं कि मैं अब वकालत पढ़ रही हूँ, तीन साल का कोर्स है। एक साल पूरा होने वाला है। दो साल और बाकी हैं। यदि मैंने शादी कर ली, तो क्या मेरी पढ़ाई पूरी हो सकेगी?

(क) मीनू पर विवाह करने का दबाव क्यों डाला जा रहा था? (2)

**उत्तर** मीनू विवाह नहीं करना चाहती थी। उसके विवाह न करने की स्थिति में उसकी छोटी बहन आशा का विवाह करना पिताजी को अनुचित कार्य मालूम होता था, इसलिए मीनू पर विवाह करने का दबाव डाला जा रहा था।

(ख) मीनू विवाह क्यों नहीं करना चाहती थी? (2)

**उत्तर** मीनू स्वाभिमानी और स्वावलंबी स्वभाव की युवती थी। आत्मनिर्भर बनने के लिए वह वकालत की पढ़ाई कर रही थी। उसकी पढ़ाई पूरी होने में अभी दो वर्ष का समय शेष था, इसलिए मीनू विवाह नहीं करना चाहती थी।

(ग) मीनू किनके और किस प्रश्न का स्पष्टीकरण दे रही थी? (3)

**उत्तर** जब बुआजी दयाराम जी को समझाते हुए कहती हैं कि उनकी दोनों बेटियाँ विवाह योग्य हो गई हैं और उन्हें अब उनका विवाह कर देना चाहिए, तो बुआजी की बातें सुनकर दयाराम जी गहरी चिंता में डूब जाते हैं। वे मीनू को अपने पास बुलाकर विवाह के विषय में उसकी इच्छा जानने की कोशिश करते हैं। पिताजी के द्वारा विवाह के विषय में पूछे गए प्रश्न का ही मीनू स्पष्टीकरण दे रही थी।

(घ) मीनू के स्पष्टीकरण पर किसने और क्या प्रतिक्रिया दी? (3)

**उत्तर** मीनू के स्पष्टीकरण पर मीनू की माताजी ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की। मीनू विवाह के उपरांत पढ़ाई में व्यवधान पड़ने और वकालत पूरी न हो पाने का तर्क रखते हुए विवाह करने से मना करती है। मीनू के इस तर्क को नकारते हुए माँ कहती हैं कि पढ़ाई इच्छाशक्ति पर निर्भर करती है और अगर पढ़ने की इच्छा हो तो विवाह के उपरांत भी पढ़ाई की जा सकती है।

## अध्याय 12

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में अमित के विवाह की तैयारियाँ, कपड़े गहने, खरीदने तथा बहू के लिए ज्यादा-से-ज्यादा साड़ियाँ चढ़ाने, मायाराम जी अपनी हैसियत के अनुसार खर्च करने, धनीमल के आने तथा पाँच लाख रुपये खर्च करने के विषय में मायाराम से बातें करने तथा तीन लाख का प्लैट देने की बात सुनते ही मायाराम और उनकी पत्नी की नाराजगी का उल्लेख हुआ है।

#### विवाह की तैयारियाँ

अमित के विवाह में एक महीना शेष था, इसलिए मायाराम जी व उनकी पत्नी विवाह की तैयारियों में लगे हुए थे। गहने और वस्त्र सभी कुछ अभी ही खरीदने थे। कितने कार्ड छपवाए जाएँगे? विवाह में किन-किन को बुलाना होगा और उनके आने के उपरांत उन्हें भेंट स्वरूप क्या उपहार दिए जाएँगे? सभी बातें निश्चित की जा रही थीं।

#### प्रीतिभोज करवाने का निर्णय

मायाराम जी अपनी पत्नी से विवाह के बाद होने वाले प्रीतिभोज के विषय में पूछते हैं, जिस पर उनकी पत्नी कहती हैं कि उनके यहाँ तो प्रीतिभोज नहीं करवाया जाता, अपितु विवाह से पूर्व संध्या पर ही रिश्तेदारों और परिचितों को भोजन करवा दिया जाता है। मायाराम जी विवाह के उपरांत दावत देने के प्रचलन की बात करते हुए कहते हैं कि दावत न देने पर दुनिया वाले क्या कहेंगे और वैसे भी एक बड़े घर की बेटी आ रही है। दावत देने की बात स्वीकारते हुए उनकी पत्नी अपने बेटे अमित से बात करने के लिए कहती हैं। मायाराम जी कहते हैं— अमित तो कुछ बता ही नहीं रहा है। बस इतना कह देता है कि जैसा उपयुक्त हो आप वैसा ही करें।

#### जेवर चढ़ाने पर विचार-विमर्श

मायाराम जी की पत्नी उनसे बहू के लिए जेवर और कपड़े खरीदने के विषय में पूछती हैं, जिस पर मायाराम जी सोने के दो सेट और चार

कंगन चढ़ाने की बात कहते हैं। उनकी पत्नी को जेवर कम-सा लगा, इसलिए वह एकदम बोल पड़ी कि एक ही बेटा है हमारा क्या, इतना ही जेवर चढ़ाओगे? यह सुनकर मायाराम जी क्रोधित होते हुए कहते हैं कि इतना सोना कम-से-कम ढाई लाख रुपयों का आएगा। उनकी पत्नी चौंकते हुए महँगाई के अत्यधिक बढ़ जाने की बात कहती हैं और उन्हें अपने जेवर देने का भी सुझाव देती हैं, जिससे सरिता के लिए नए गहने बनवाए जा सकें। मायाराम जी अपनी पत्नी को बुढ़ापे के लिए गहने सँभालने की बात समझाते हुए कहते हैं कि जब अपने पास धन होता है, तो बच्चे लालच के कारण ही सेवा करते हैं। उनकी पत्नी अपने बेटे को लोभी न होने की बात कहती हैं, फिर भी वे उनकी बातें समझते हुए अपने सामर्थ्य के अनुसार जेवर बनवाने की बात कहती हैं।

#### दहेज के अनुरूप बहू को साड़ियाँ

मायाराम जी की पत्नी उनसे बहू को विवाह में चढ़ाई जाने वाली साड़ियों के विषय में पूछती हैं। वह बहू को ग्यारह साड़ियाँ चढ़ाने की बात कहते हैं। उनकी पत्नी कम-से-कम इक्कीस साड़ियाँ चढ़ाने की बात कहती हैं। वह धनीमल जी द्वारा विवाह में खर्च किए जाने वाले पाँच लाख रुपयों के विषय में भी याद दिलाती हैं। मायाराम जी रुपयों की बात सुनते ही क्रोधित हो उठते हैं। वे कहते हैं कि वे चाहे कुछ भी दें हमने उनसे कुछ नहीं माँगा और हमसे जितना बन पड़ेगा हम उतना ही जेवर और कपड़ा चढ़ाएँगे। मायाराम जी उत्तेजनापूर्ण बातें सुनकर अमित और मधु कमरे में आते हैं। अब पिताजी, अमित व मधु से विवाह के कार्ड के विषय में सलाह लेने लगते हैं।

#### धनीमल जी का आगमन

परिवार के सदस्य विवाह के निमंत्रण-पत्रों के विषय में बातें कर रहे थे कि उसी समय दरवाजे की घंटी बजती है। मधु दरवाजा खोलती है, तो देखती है धनीमल जी आए हैं। वह उन्हें बैठक कक्ष में बैठने के लिए कहती है। धनीमल जी मायाराम जी से कहते हैं कि वह विवाह में होने वाले लेन-देन के विषय में बात करने आए हैं। वह अपनी इच्छा बता दें

कि वे रुपये किस प्रकार खर्च करवाना चाहते हैं। धनीमल जी के उक्त वचनों पर मायाराम जी असहमति प्रकट करते हुए कहते हैं कि उनके घर में सुख-सुविधा के सभी सामान हैं।

### फ्लैट देने की बात कहना

धनीमल जी ने मायाराम जी को कहा कि वह अपनी बेटी को विवाह में तीन लाख रुपये का फ्लैट देना चाहते हैं। धनीमल जी की बात सुनकर मायाराम जी ने कहा कि उनका अपना बड़ा मकान है और सरिता को वहाँ कोई परेशानी नहीं होगी। धनीमल जी कहते हैं कि उन्होंने अपनी दोनों बेटियों को भी फ्लैट दिया है और सरिता को भी देना चाहते हैं। मायाराम जी उनकी चालाकी समझते हुए पूछते हैं कि क्या उनकी बेटी को यहाँ रहने में परेशानी होगी। धनीमल जी सरिता को कभी काम न करने और लाड़-प्यार में पले होने की बात कहते हैं। यह सुनकर मायाराम जी क्रोधित हो उठते हैं। वे अमित के भी लाड़-प्यार में पले होने की बात कहते हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें एक सुशील बहू चाहिए, जो घर में प्रेम से रह सके। धनीमल जी जाने के लिए उठते हुए कहते हैं कि वे अपनी बेटी को फ्लैट तो देंगे ही, दो लाख रुपये वे किस तरह खर्च करवाना चाहते हैं, वे सोच लें।

### मायाराम जी का परेशान होना

मायाराम जी धनीमल जी की बातों से परेशान हो उठते हैं और स्वयं को दुविधा में पाते हैं। उनकी पत्नी उन्हें देखकर उनकी परेशानी का कारण

पूछती हैं। वे धनीमल जी द्वारा अपनी बेटी को दिए जाने वाले तीन लाख रुपये के फ्लैट के बारे में बताते हैं, जिसे सुनकर उनकी पत्नी भी क्रोधित हो उठती है और कहती है उन्होंने यह बात कहने का साहस कैसे किया और वह क्या जाने बेटे के अलग होने का दुःख?

### अमित के सामने साहसी फैसला लेने की चुनौती

अमित उनकी बातें सुनकर कमरे में प्रवेश करता है। उसे आता देख मायाराम जी उसे धनीमल जी द्वारा सरिता को फ्लैट देने के विषय में कहते हैं। अमित क्रोधित होकर पूछता है, आपने उन्हें क्या जवाब दिया? वे कोई जवाब न देने की बात कहते हैं। धनीमल चाहते हैं कि मैं अपने बेटे को बेच दूँ। मायाराम अत्यधिक उत्तेजित होते हुए अमित को 'जैसा उचित समझो वैसा करने की बात' कहते हुए कमरे से बाहर चले जाते हैं। अमित के हृदय में एक तूफान उठा हुआ था, उसके मस्तिष्क में अनेक विचार-विचरण लगते हैं, क्योंकि आज उसे अपने जीवन का महत्वपूर्ण फैसला लेना था।

### शब्दार्थ

प्रीतिभोज—दावत (feast); इकलौता—केवल एक (only one);

उत्तेजित—क्रुद्ध (angry); आमंत्रित—बुलाना (to invite);

अभिवादन—आदर करना (respect, honour); गृहस्थी—परिवार

(family); दोराहे—दुविधा (confused, dilemma)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. "परंतु तुम ये तो सोचो कि आजकल शादी के बाद ही दावत दी जाती है। यदि हम प्रीतिभोज नहीं देंगे तो दुनिया वाले क्या कहेंगे और फिर बड़े घर की लड़की आ रही है। दावत नहीं देंगे तो सब लोग बात बनाएँगे।" [2018]

(क) उपरोक्त कथन किसने, किस अवसर पर कहा था? (2)

**उत्तर** उपरोक्त कथन मायाराम जी ने अपनी पत्नी से कहा था। उन्होंने अपने बेटे अमित के विवाह की तैयारियों के अवसर पर विवाह के उपरांत प्रीतिभोज के संदर्भ में यह कथन कहा था।

(ख) 'बड़े घर की लड़की' किसको कहा गया है? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। (2)

**उत्तर** 'बड़े घर की लड़की' सरिता को कहा गया है। सरिता सेठ धनीमल जी की बेटी है। वह केवल व्यर्थ घूमना तथा अपनी इच्छाओं की पूर्ति करना ही पसंद करती है। अतः वह एक धनी सेठ की बिगड़ी हुई लड़की है।

(ग) उपरोक्त कथन के विषय में अमित के क्या विचार हैं? वह इस शादी से सहमत क्यों नहीं है? धनीमल जी ने शादी के प्रस्ताव के साथ क्या लालच दिया था? (3)

**उत्तर** उपरोक्त कथन के विषय में अमित के विचार यह थे कि वे सरल स्वभाव का व्यक्ति था तथा दिखावा करने का सख्त विरोधी था। वह नहीं जानता था कि लोगों को दिखाने के लिए विवाह के उपरांत प्रीतिभोज कराया जाए। वह इस शादी से सहमत नहीं था, क्योंकि वह

दहेज का विरोधी था। धनीमल जी ने शादी के प्रस्ताव के साथ पाँच लाख रुपए तथा एक फ्लैट देने का लालच दिया था।

(घ) आजकल के मध्यमवर्गीय परिवारों में विवाह आदि रीति-रिवाजों के अवसर पर होने वाले फिजूलखर्च पर अपने विचार लिखिए। (3)

**उत्तर** आजकल के मध्यवर्गीय परिवारों में विवाह आदि रीति-रिवाजों के अवसर पर बहुत फिजूलखर्च किए जाते हैं। पंडाल की सजावट में चंद घंटों की चकाचौंध के लिए हजारों रुपए खर्च करके पैसों की बर्बादी की जाती है, साथ ही खाने के लिए विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाने से पैसे और भोजन दोनों की बर्बादी होती है। अतः हमें इस प्रकार की फिजूलखर्ची नहीं करनी चाहिए।

2. "कुछ सोना मैं अपने पास से दे दूँगी। सरिता के लिए नए फैशन के जेवर उस सोने से बनवा देना।"

"तुम अपना सोना दोगी चढ़ाने के लिए? नहीं-नहीं अपने बुढ़ापे के लिए रखो अपना सोना।"

(क) वक्ता ने क्यों कहा कि कुछ सोना मैं अपने पास से दे दूँगी? (2)

**उत्तर** मायाराम जी की पत्नी (वक्ता) ने कुछ सोना अपने पास से देने की बात इसलिए कही, ताकि दुल्हन को विवाह में दिया जाने वाला ज्यादा जेवर भी चढ़ा दिया जाए और उन पर खर्च का अत्यधिक बोझ भी न पड़े, इसके अलावा समाज में उनका सम्मान भी बना रहे।

(ख) सरिता कौन थी? उसके लिए जेवर क्यों बनवाए जा रहे थे? (2)

**उत्तर** सरिता धनीमल जी की बेटी थी। सरिता के लिए जेवर इसलिए बनवाए जा रहे थे, क्योंकि उसका विवाह अमित से तय हुआ था और विवाह के अवसर पर उसको गहने दिए जाने थे।

(ग) “अपने बुढ़ापे के लिए रखो अपना सोना” किसने कहा? वक्ता ने उसे यह सलाह क्यों दी? (3)

**उत्तर** प्रस्तुत पंक्ति मायाराम जी ने कही, क्योंकि अमित का विवाह सरिता से सुनिश्चित हुआ था और उसको देने के लिए जेवर बनाए जाने थे। मायाराम जी द्वारा सरिता के लिए बनाए जाने वाले गहने उनकी पत्नी को कम लग रहे थे, इसलिए वह अपने गहने देने की बात करती हैं। मायाराम जी का मानना था कि जब बुढ़ापे में उनके पास धन होगा, तभी बच्चे उनकी सेवा करेंगे अन्यथा नहीं, इसलिए वे अपनी पत्नी को सोना बुढ़ापे के लिए बचाए रखने को कहते हैं।

(घ) “तुम अपना सोना दोगी चढ़ाने के लिए?” इस पंक्ति से क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** विवाह में दुल्हन को उसके ससुराल वाले जो गहने देते हैं, उसे जेवर चढ़ाना कहा जाता है। मायाराम जी जब सरिता के लिए सोने के दो सेट और चार कंगन देने की बात कहते हैं, तो उनकी पत्नी को ये जेवर कम लगे। वह एक-दो किलो देने की बात कहती हैं, पर इतना सोना ढाई लाख से कम का न बनेगा, यह बात सुनकर उनकी पत्नी अपने गहने देकर सरिता के लिए नए फैशन के जेवर बनाने को कहती हैं, तब मायाराम जी कहते हैं कि तुम अपना सोना दोगी चढ़ाने के लिए।

3. जितना जेवर तुम खरीद सकते हो, उतना ही चढ़ा देना। पर हाँ, एक बात का ध्यान रखना, बड़े घर की लड़की आ रही है। थोड़ा ज्यादा जेवर ही खरीद लेना। कम जेवर चढ़ाएँगे, तो हमारी नाक नहीं कटेगी?

(क) वक्ता और श्रोता कौन हैं तथा मायाराम जी दुल्हन को कितना जेवर देना चाह रहे थे? (2)

**उत्तर** वक्ता मायाराम जी की पत्नी है तथा श्रोता स्वयं मायाराम जी हैं। घर में शादी के अवसर पर दुल्हन को जेवर चढ़ाया जाता है, इसलिए मायाराम जी सरिता को सोने के दो सेट और चार कंगन देना चाह रहे थे।

(ख) मायाराम जी की पत्नी ने अपने बेटे के विषय में क्या कहा था? (2)

**उत्तर** मायाराम जी ने अपनी पत्नी से कहा कि अपने जेवर तुम बुढ़ापे के लिए बचाकर रखना। यह सुनकर उनकी पत्नी ने अपने बेटे अमित के बारे में कहा था कि वह एक अच्छा लड़का है। वह उनका ध्यान रखता है तथा वह बुढ़ापे में हमारी सेवा करेगा।

(ग) मायाराम जी की पत्नी को क्या समझ आ गया था? उसके उपरांत उन्होंने क्या कहा? (3)

**उत्तर** मायाराम जी की पत्नी अपने बेटे को एक अच्छा बेटा साबित करते हुए कहती हैं कि वह बुढ़ापे में भी हमारी सेवा करेगा। यह सुनकर मायाराम जी कहते हैं कि वह अवश्य सेवा करने वाला है, किंतु घर में प्रवेश करने वाली बहू के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता। अगर वह तेज़ हुई, तो बेटा भी कुछ नहीं कर पाएगा। उनकी यह बात समझते हुए उनकी पत्नी सामर्थ्य के अनुसार जेवर देने की बात कहते हुए कहती हैं कि अगर हम जेवर कम चढ़ाएँगे, तो हमारा सम्मान कम होगा, इसलिए जेवर थोड़ा अधिक ही खरीदना।

(घ) “कम जेवर चढ़ाएँगे, तो हमारी नाक नहीं कटेगी?” पंक्ति से वक्ता का क्या अभिप्राय है? (3)

**उत्तर** उक्त पंक्ति से वक्ता का अभिप्राय यह है कि सरिता एक धनी एवं संपन्न परिवार की लड़की है। अगर विवाह में हमारे द्वारा उसको जेवर कम चढ़ाया गया तो समाज में हमारे सम्मान में कमी होगी, क्योंकि सरिता एक अमीर परिवार की बेटी है और उसके पिता

विवाह में पाँच लाख रुपये भी खर्च कर रहे हैं, इसलिए कम जेवर देने पर हमारी इज्जत कम हो सकती है।

4. जैसे ही उसने दरवाजा खोला तो दरवाजे पर धनीमल जी खड़े थे। मधु ने उनका अभिवादन किया और अंदर बुलाकर बैठने को कहा।

(क) दरवाजा किसने खोला और उसे किसका इंतजार था? (2)

**उत्तर** दरवाजा मायाराम जी की बेटी मधु ने खोला था। उसे डाकिए का इंतजार था, क्योंकि उसने सोचा था कि उसकी सहेली रेखा का पत्र आया होगा।

(ख) मधु को कितने कार्ड चाहिए थे और क्यों? (2)

**उत्तर** मधु को अमित के विवाह के तीस निमंत्रण-पत्र चाहिए थे, क्योंकि अमित उसका इकलौता भाई था और उसे अपने भैया के विवाह में अपनी सभी सहेलियों को आमंत्रित करना था।

(ग) अतिथि के आने से पूर्व घर में क्या वार्तालाप चल रहा था? (3)

**उत्तर** अतिथि के आने से पूर्व घर में विवाह की तैयारियों की योजना बन रही थी कि दुल्हन को क्या जेवर-कपड़े दिए जाएँगे और विवाह में किसे-किसे बुलाया जाए? साथ ही मायाराम जी अमित व मधु को अपने पास बुलवाकर निमंत्रण-पत्र छपवाने की सलाह ले रहे थे।

(घ) दरवाजे पर कौन था और वह क्यों आए थे? (3)

**उत्तर** मधु दरवाजा खोलने पर देखती है कि दरवाजे पर सेठ धनीमल जी आए हैं। सेठ धनीमल जी की बेटी का विवाह मायाराम जी के बेटे अमित से होना तय हुआ था, इसलिए वह उनके विवाह में किए जाने वाले खर्च एवं लेन-देन अर्थात् दहेज के विषय में बात करने आए थे।

5. धनीमल जी ने कुछ सँभलकर कहा, “बात ऐसी है, मैंने अपनी दोनों बड़ी बेटियों को भी एक-एक फ्लैट शादी में दिया था। इससे उन्हें शादी के बाद गृहस्थी बसाने में किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ा।”

(क) धनीमल जी मायाराम जी के यहाँ क्यों आए थे? मायाराम जी क्यों नाराज हो गए थे? (2)

**उत्तर** मायाराम जी धनीमल जी की अपनी बेटी को फ्लैट देने की बात से नाराज हो गए थे। वे चाहते थे कि वे अपनी बेटी सरिता के नाम एक फ्लैट कर दें। धनीमल जी मायाराम जी के यहाँ विवाह में किए जाने वाले लेन-देन के विषय में बातें करने आए थे।

(ख) वक्ता कौन है तथा उसकी बातों का श्रोता पर क्या प्रभाव पड़ा मायाराम जी नाराज क्यों हुए थे? (2)

**उत्तर** वक्ता धनीमल जी हैं धनीमल जी अपनी बेटी को अलग गृहस्थी बसाने के लिए फ्लैट देने की बात पर अड़े थे। बेटे के अलग होने की आशंका से मायाराम जी धनीमल जी से नाराज एवं क्रोधित हो उठे थे।

(ग) धनीमल जी किसे फ्लैट देना चाहते थे और क्यों? (3)

**उत्तर** धनीमल जी अपनी बेटी सरिता को तीन लाख रुपये का एक फ्लैट देना चाहते थे, क्योंकि उन्होंने अपनी दोनों बड़ी बेटियों को भी अलग से गृहस्थी बसाने के लिए फ्लैट दिया था, इसके अलावा वे चाहते थे कि सरिता अमित के साथ अलग गृहस्थी बसाए। उसे घर का काम-काज करना भी नहीं आता था। इससे संयुक्त परिवार में समस्या हो सकती थी।

(घ) धनीमल जी की बातें सुनकर मायाराम जी ने क्या प्रतिक्रिया प्रकट की? (3)

**उत्तर** धनीमल जी की बातें सुनकर मायाराम जी आश्चर्यचकित होते हुए अत्यधिक क्रोधित हो उठे। वे अपनी नाराजगी प्रकट करते हुए बोले कि हमने अपने बेटे को क्या इसी दिन के लिए पाला था कि वह विवाह के उपरांत अलग गृहस्थी बसा ले। वह धनीमल जी की चालाकी भी समझ गए कि वह अमित को उनसे अलग करना चाहते हैं।

# अध्याय 13

## पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में हॉस्टल के वातावरण में आई शांति, मीनू की तबीयत ठीक न होने, उसे माँ की याद आने, माया द्वारा मीनू के लिए दवा और चाय का प्रबंध करने, मीनू का बुखार उतरने और परीक्षा समाप्त होते ही घर जाने की उत्सुकता का उल्लेख है।

### मीनू की तबीयत खराब होना

छात्रावास का वातावरण आजकल शांत-सा था। परीक्षाएँ आरंभ होने वाली थीं, इसलिए सभी छात्राएँ अपनी पढ़ाई में व्यस्त थीं। मीनू, जो पढ़ाई में विशेष रुचि रखती थी, बेसुध होकर दिन भर परीक्षा की तैयारी में लगी रहती थी और जब पढ़ते-पढ़ते थक जाती, तो अपनी सहेली माया से बातें कर लेती। सिर में दर्द और थकान महसूस करने के कारण मीनू तकिए के सहारे लेट गई। मीनू को इस प्रकार लेटा हुआ देखकर माया, मीनू के पास आती है और उसके माथे को छूते ही वह दंग रह जाती है, क्योंकि मीनू का शरीर तेज़ बुखार के कारण तप रहा था। मीनू को बुखार से तपता हुआ देखकर माया स्वयं ही उसके लिए दवाई लेने चली गई।

### मीनू को माँ की याद आना

मीनू अपने कमरे में अकेली थी। बुखार होने के कारण उसके पूरे शरीर में दर्द था। उसे अपनी माँ का स्मरण हो आया। बिस्तर पर लेटे-लेटे ही वह सोचने लगी कि जब वह आठवीं कक्षा में थी तब उसे अत्यधिक तेज़ बुखार आया था। इसके कारण उसने बड़बड़ाना आरंभ कर दिया था, जिसे देखकर माँ की आँखों में आँसू आ गए थे। उन्होंने पूरी रात जागकर उसके माथे पर बर्फ की पट्टियाँ रखी थीं। सुबह माँ के चेहरे पर रात भर जागने की थकान दिखाई दे रही थी, लेकिन मीनू का बुखार कम होने का संतोष भी स्पष्ट दिखाई दे रहा था। इस समय शरीर में दर्द होने के कारण वह सोच रही थी कि अगर माँ यहाँ होती तो मेरी कितनी सेवा करती, किंतु यहाँ तो वह किसी से कुछ कह भी नहीं सकती।

### माया द्वारा मीनू की सेवा करना

माया भी मीनू की अत्यधिक सेवा करती थी। मीनू को बुखार से तपता हुआ देखकर ही माया स्वयं ही डॉक्टर से उसके लिए दवाई लेकर आ गई थी। वह मीनू के लिए चाय बनाती और उसे दवाई देकर उसका सिर दबाने के लिए बैठ जाती। माया के व्यवहार में आए इस अपनत्व को देखकर मीनू अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव करती है। माया के प्रति उसका मन स्नेह से भर जाता है। माया के द्वारा सिर दबाने पर उसे आराम व सुकून का अनुभव हुआ। रात में वह कब सोई, उसे स्वयं ही पता न चला था।

सुबह उठने पर उसने अनुभव किया कि उसका बुखार कम और शरीर का दर्द अब समाप्त हो गया था। मीनू, माया की ओर मुँह करके उसे देख रही थी। आज माया के प्रति मीनू के हृदय में अत्यधिक प्रेम उमड़ रहा था। वह महसूस करती है कि परिवार से दूर रहकर दूसरे लोग ही अपने हो जाते हैं, तभी माया उठकर मीनू को दवाई देती है।

### मीनू को घर लौटने की प्रसन्नता

मीनू का बुखार अब उतर गया था, लेकिन वह अत्यधिक कमजोर हो गई थी। कुछ दिनों के उपरांत ही उसकी परीक्षाएँ आरंभ हो गईं। उसकी मेहनत और लगन से उसके सभी पेपर अच्छे हो रहे थे। उसे केवल प्रतीक्षा थी, तो परीक्षाओं के समाप्त होने की, ताकि वह अपने घर जा सके। कितना समय बीत गया था, उसे अपने घर गए। आज मीनू अत्यधिक प्रसन्न थी, क्योंकि उसकी परीक्षाएँ समाप्त हो गई थीं और अब वह अपने घर लौट सकती थी। उसने अत्यधिक उत्साहित एवं प्रसन्न होते हुए अपने कमरे में आकर अपना सामान बाँधना आरंभ कर दिया।

परीक्षाओं में व्यस्तता के कारण वह अपने कपड़े नहीं धो पाई थी, इसलिए उसने गंदे कपड़े ही बैग में रख लिए थे। माया भी घर जाने के लिए अपना सामान बाँधती है। मीनू को मीरापुर जाना था, तो माया को अलीगढ़, इसलिए दोनों अपने-अपने घर जाने के लिए छात्रावास से एक साथ निकली, लेकिन वहीं से ही एक-दूसरे को विदा कर अपने-अपने घर के लिए चली गईं।

## शब्दार्थ

महसूस—अनुभव करना (feel); ज्वर—बुखार (fever); बड़बड़ाना—अपने आप में ही बातें करना (murmuring, grumble); स्पष्ट—साफ (clear); प्रातःकाल—सुबह (morning); पश्चात्—बाद में (after)।



## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- वह अपनी किताब पेट पर रखकर तकिए के सहारे लेट-सी गई। मीनू का चेहरा बुखार के कारण तमतमा रहा था। माया अपनी पलंग से उठकर मीनू के पास आई और उसके माथे पर हाथ रखा, तो दंग रह गई। उसका शरीर ज्वर से तप रहा था।

(क) छात्रावास का वातावरण शांत क्यों था? (2)

**उत्तर** सभी लड़कियों की परीक्षाएँ आरंभ होने वाली थीं। इस कारण सभी लड़कियाँ अपनी-अपनी पढ़ाई में व्यस्त हो गई थीं। इससे छात्रावास का वातावरण शांत था।

(ख) मीनू कॉलेज क्यों नहीं जा रही थी? (2)

**उत्तर** मीनू की वकालत की परीक्षाएँ शुरू होने वाली थीं और कॉलेज में परीक्षा से पूर्व का अवकाश चल रहा था, जिस कारण मीनू कॉलेज नहीं जा रही थी।

(ग) तकिए के सहारे कौन लेट गई थी और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू तकिए के सहारे लेट गई थी, क्योंकि मीनू के सिर में तेज दर्द और बुखार था, जिस कारण वह आज कुछ अधिक थकान महसूस कर रही थी, इसलिए वह किताब पेट पर रखकर तकिए के सहारे ही लेट गई थी।

(घ) माया क्या देखकर दंग रह गई और उसके पश्चात् उसने क्या किया? (3)

**उत्तर** मीनू को तकिए के सहारे लेटा हुआ देखकर जब माया ने उसके माथे को छुआ, तो उसका शरीर बुखार से तप रहा था और उसका चेहरा तमतमा रहा था, जिसे देखकर माया दंग रह गई। मीनू को बुखार में तपता देखकर माया उसके लिए स्वयं ही दवाई लेने चली गई और जब तक उसका बुखार ठीक नहीं हुआ, उसने उसकी देखभाल बहुत अच्छे से की।

- सारी रात माँ उसी के पास बैठी रही। सुबह जब उसकी आँखें खुलीं, तो माँ के चेहरे पर सारी रात जागने की थकान स्पष्ट दिखाई दे रही थी, परंतु उस समय तक मीनू का ज्वर उतर चुका था। इस बात का उन्हें संतोष था।

(क) माँ सारी रात किसके समीप बैठी रही? (2)

**उत्तर** माँ सारी रात मीनू के समीप बैठी रही, क्योंकि बचपन में मीनू जब आठवीं कक्षा में पढ़ती थी, तब उसे अत्यधिक तेज बुखार हुआ था, जिस कारण सारी रात उसके समीप बैठकर माँ उसकी सेवा करती रही थी।

(ख) आँखें खुलने पर वक्ता ने क्या पाया? (2)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् मीनू की जब सुबह आँखें खुलीं तो उसने पाया कि पूरी रात उसकी देखभाल करने के कारण माँ को रात भर जागना पड़ा। नींद पूरी न होने की थकान ही माँ के चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

(ग) माँ की आँखों में आँसू क्यों आए थे और उन्होंने क्या किया? (3)

**उत्तर** मीनू जब छोटी थी, तो तेज ज्वर में उसने बड़बड़ाना आरंभ कर दिया था। मीनू की इस अस्थिर हालत को देखकर माँ परेशान हो गई थी। उनकी आँखों में आँसू छलक आए थे। बेटी की नाजुक

हालत को देखते हुए वे सारी रात जागकर उसके समीप बैठी रहीं और उसके माथे पर बर्फ की पट्टियाँ रखकर उसकी सेवा करती रहीं।

(घ) माँ को किस बात का संतोष था और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू का बुखार कम होने से उसके स्वास्थ्य में सुधार हो रहा था। इस सुधार से माँ को संतोष था, क्योंकि रात को तेज बुखार से तबीयत ज्यादा खराब होने के कारण उसने बड़बड़ाना शुरू कर दिया था। इससे माँ बहुत परेशान एवं व्याकुल हो उठी थी। उन्होंने पूरी रात जागकर मीनू की देखभाल की थी, जिसकी थकान उनके चेहरे पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। माँ के अथक परिश्रम के कारण ही उनकी बेटी का बुखार उतरा था, इसलिए वे संतुष्ट दिखाई दे रही थीं।

- मीनू को ज्वर से पीड़ित देखकर वह स्वयं ही दवाई लेने चली गई थीं। जैसे ही मीनू ने करवट लेने की कोशिश की वैसे ही माया ने कमरे में प्रवेश किया।

(क) मीनू को माँ की याद क्यों आई थी? (2)

**उत्तर** मीनू को तेज बुखार होने के कारण उसके सिर में बहुत तेज दर्द था। छात्रावास में होने के कारण वह किसी को सिर दबाने के लिए नहीं कह सकती थीं। यदि माँ ऐसी दशा में उसे देखती तो स्वयं ही उसकी सेवा के लिए तत्पर हो उठती थीं, इसलिए उसे माँ की याद आ रही थी।

(ख) माया कहाँ गई थी और क्यों? (2)

**उत्तर** माया, मीनू की दवाई लेने के लिए डॉक्टर के पास गई थी, क्योंकि मीनू की तबीयत खराब थी, जिससे उसका पूरा शरीर दर्द कर रहा था और उसका चेहरा बुखार के कारण तमतमा रहा था।

(ग) माया ने मीनू की सेवा किस प्रकार से की? (3)

**उत्तर** जब मीनू की तबीयत खराब हुई और वह डॉक्टर के पास जाने में असमर्थ थी, तो माया स्वयं ही उसके लिए डॉक्टर के पास जाकर दवाई लाई तथा मीनू की देखभाल करते हुए, उसके खान-पान का भी ध्यान रखा, उसको दवाई खिलाई। माया देर रात तक जागकर अपनी पढ़ाई छोड़कर मीनू की सेवा में लगी रही।

(घ) माया द्वारा सेवा करने के उपरांत मीनू की क्या प्रतिक्रिया थी? (3)

**उत्तर** माया द्वारा कठिन घड़ी में मीनू की सेवा करने से वह अत्यधिक प्रसन्न थी। उसे माया के व्यवहार में अपनत्व का अनुभव हो रहा था। माया की सेवा का ही परिणाम था कि मीनू दो दिन में ठीक हो गई थी। माया के द्वारा निःस्वार्थ रूप से की गई सेवा के कारण माया के प्रति मीनू के हृदय में उसके लिए अत्यंत प्रेमभाव उमड़ रहा था। आज उसे घर से बाहर रहकर भी अपनों का-सा अहसास हो रहा था।

- प्रातःकाल जब मीनू की आँखें खुलीं, तो उसके शरीर का दर्द समाप्त हो गया था। ज्वर भी कम लग रहा था। माया अभी सो रही थी। शायद रात देर तक पढ़ी होगी। मीनू ने करवट बदली और माया की ओर मुँह करके लेट गई। सोती हुई माया को देखकर मीनू के हृदय में उसके लिए प्यार उमड़ पड़ा।



(क) किसे व क्यों लगा कि माया देर रात तक पढ़ी होगी? (2)

**उत्तर** माया द्वारा मीनू का सिर दबाने पर उसे अत्यधिक आराम हुआ था और उसे नींद आ गई थी, किंतु सुबह उठने पर उसने माया को सोया हुआ पाया। इस कारण मीनू को लगा कि शायद माया देर रात तक पढ़ी होगी।

(ख) सुबह जागने पर मीनू ने क्या अनुभव किया? (2)

**उत्तर** मीनू बुखार से पीड़ित थी। उसके पूरे शरीर में दर्द हो रहा था, किंतु माया ने उसकी पूरी सेवा की जिससे मीनू को कब नींद आ गई उसे पता भी नहीं चला और सुबह जागने पर मीनू ने अनुभव किया कि उसका बुखार कम था और उसके शरीर का दर्द भी खत्म हो गया है।

(ग) मीनू के हृदय में किसके लिए प्यार उमड़ पड़ा और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू के हृदय में माया के लिए प्यार उमड़ आया था, क्योंकि मीनू की, तबीयत जब अत्यधिक खराब थी और शरीर ज्वर से तप रहा था, उस समय में माया ने निःस्वार्थ एवं निश्छल (छल रहित) भाव से मीनू की सेवा की थी। माया की इस निःस्वार्थता के कारण ही मीनू को उसके व्यवहार में अपनत्व का अहसास हुआ था। माया की अपनत्वपूर्ण निःस्वार्थ सेवा के कारण मीनू के हृदय में उसके लिए प्यार उमड़ आया था।

(घ) माया द्वारा की गई सेवा का क्या परिणाम हुआ? (3)

**उत्तर** माया द्वारा की गई, सेवा का यह परिणाम हुआ कि मीनू का ज्वर दो दिन में उतर गया था और मीनू शीघ्र ही स्वस्थ हो गई। मीनू की अस्वस्थ अवस्था में माया ने मीनू को इस बात का अहसास नहीं होने दिया कि वह घर से दूर हॉस्टल में रह रही है। माया द्वारा की गई सेवा से उसे इस बात की अनुभूति हुई कि घर से बाहर रहने पर पराए लोग भी अपने हो जाते हैं।

## अध्याय 14

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में मीनू के घर लौटने, पिताजी द्वारा दिल्ली में इंजीनियर लगे लड़के से उसके रिश्ते की बात चलाने, मीनू द्वारा आशा की शादी करने का सुझाव देने, आशा की शादी तय होने, नीलिमा के आने की खबर सुनकर उससे मिलने जाने, वहाँ अशोक से विवाह की बात नीलिमा द्वारा करने और मीनू द्वारा वकालत की पढ़ाई पूरी होने तक विवाह न करने का निश्चय नीलिमा को बताने आदि का उल्लेख है।

### मीनू का घर पहुँचना

घर पहुँचने पर मीनू देखती है कि पिताजी अब पूरी तरह से स्वस्थ हैं। माँ, मीनू को गले से लगा लेती हैं, तो आशा और रोहित उसे अपनी बातें बताने लगते हैं। वह प्रसन्नतापूर्वक उनकी बातें सुनती है। माँ, मीनू से उसकी परीक्षाओं के विषय में पूछती हैं। मीनू पेपर अच्छे होने और परीक्षा परिणाम पर सब कुछ निर्भर होने की बात माँ से कहती है। माँ विश्वास के साथ कहती है कि हमेशा की तरह ही तुम इस बार भी प्रथम श्रेणी में पास हो जाओगी। मीनू ने अपनी माँ से कहा, “माँ आपके आशीर्वाद की वजह से ही मुझे लक्ष्य तक पहुँचने की प्रेरणा मिली है।” “लगन और परिश्रम सफलता का मार्ग प्रशस्त (प्रशंसा योग्य) करने वाला कारक है।” इतना कहकर माँ बाहर चली जाती हैं।

### पिताजी द्वारा मीनू के विवाह की चर्चा

मीनू अपने कमरे में साप्ताहिक पत्रिका पढ़ रही थी, तभी पिताजी कमरे में प्रवेश कर कुर्सी पर बैठते हुए उसे बुआजी के पत्र के बारे में बताते हैं कि बुआजी ने दिल्ली में एक लड़का देखा है, जो इंजीनियर है। उसका वेतन तीन हजार रुपये है। मीनू पिताजी की बात पूरी होने से पहले ही पढ़ाई छोड़कर शादी करने से मना कर देती है। पिताजी लड़का अच्छा होने की बात कहते हैं, किंतु मीनू,

आशा के सुंदर होने की बात कहते हुए उसके विवाह की बात चलाने के लिए कहती है। पिताजी उदास होकर ऐसा करने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। मीनू विश्वासपूर्वक आशा के विवाह की बात करने के लिए कहती है, जिस पर माँ भी रसोईघर से बाहर आकर मीनू की बात का समर्थन करती हैं।

### आशा का रिश्ता तय होना

सबकी सलाह पर पिताजी आशा का फोटो लेकर दिल्ली जाते हैं। उन्हें लड़का पसंद आता है। लड़के वालों को भी आशा पसंद आती है। वे कहते हैं कि उन्हें दहेज के रूप में केवल सुंदर लड़की चाहिए थी। आशा को देखने के लिए आलोक, उसके माता-पिता व उसकी भाभी आते हैं। आशा सुंदर तो थी ही, आज साड़ी पहनने और बिंदी लगाने से वह अत्यधिक सुंदर लग रही थी। आशा का रिश्ता तय हो जाने पर वे मीनू के विषय में भी बताते हैं कि वह आशा से बड़ी है और वकालत पढ़ रही है, इसलिए उसने अभी विवाह न करने का निश्चय कर रखा है। विवाह की तिथि चार माह पश्चात् तय होने के बाद सभी उसकी तैयारियों में लग जाते हैं।

### मीनू का नीलिमा के घर जाकर उससे मिलना

मीनू घर में टेलीविजन देख रही थी, तभी अशोक ने आकर बताया कि मेरठ से नीलिमा आई है और उससे मिलना चाहती है। मीनू अत्यधिक प्रसन्न हो उठती है, किंतु घर पर माँ के न होने के कारण उसका अभी वहाँ जाना असंभव था। माँ के आते ही मीनू, माँ को बताकर नीलिमा के घर चली जाती है।

मीनू, नीलिमा को देखकर बहुत प्रसन्न होती है। दोनों आराम से बैठकर बातें करने के लिए कमरे में चली जाती हैं। मीनू, नीलिमा की उदासी देखकर कारण पूछती है, नीलिमा उसे तबीयत खराब होने एवं उल्टियाँ होने की बात कहती है, जिसे सुनते ही मीनू हँसते हुए, उसे ‘खुशखबरी सुनाने जा रही हो’ की बात कहती है, तभी अशोक कमरे में प्रवेश करता है। वे तीनों बातें करने लगते हैं। मीनू जो अशोक से बातें करने में पहले लज्जा का अनुभव करती थी, अब छात्रावास में रहने के कारण अशोक से निःसंकोच (संकोचरहित) भाव से बातें कर रही थी।

### नीलिमा द्वारा आशा के विवाह के विषय में पूछना

अशोक के जाने के बाद नीलिमा, मीनू से उसके अभी विवाह न करने के विषय में पूछते हुए आशा का विवाह तय होने के बारे में पूछती है। मीनू, नीलिमा को बताती है कि आशा का विवाह तय हो गया है। लड़का इंजीनियर है। नीलिमा, मीनू से उसके विवाह न करने का कारण पूछती है। वह बताती है कि वह अब विवाह को लेकर निराश हो गई है, क्योंकि उसे लगता है कि कोई उससे विवाह नहीं करना चाहता।

### नीलिमा द्वारा मीनू को अशोक की इच्छा बताना

मीनू की बात सुनकर नीलिमा बताती है कि अशोक भैया हर समय उसकी प्रशंसा करते रहते हैं। मीनू मुस्कराते हुए कहती है “चल कोई तो है अपनी प्रशंसा करने वाला भी।” नीलिमा कहती है कि अगर वह तैयार हो जाती है, तो वह उसका विवाह अशोक भैया से करवा देगी। मीनू वकालत का एक वर्ष पूरा होने और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के उपरांत ही विवाह करने के बारे में सोचने की बात कहती है। नीलिमा ने उसे समझाते हुए कहा कि वह विवाह के उपरांत भी पढ़ाई कर सकती है, किंतु मीनू विवाह के बाद उतने ही लगन से पढ़ पाने में अपनी असमर्थता प्रकट करती है। मीनू की हठ के आगे आज नीलिमा भी असफल हो गई।

### मीनू के मन में अंतर्द्वंद्व

घर पहुँचने पर मीनू को बार-बार नीलिमा के कहे शब्दों का स्मरण हो आता, जिन्हें सुनकर उसका हृदय प्रसन्न हो उठता, क्योंकि अन्य लड़कियों की तरह उसे भी अपनी प्रशंसा सुनना अच्छा लगता था, किंतु नीलिमा के शब्दों ने उसे दुविधा में डाल दिया था।

वह यह नहीं समझ पा रही थी कि उसे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए या उसे बीच में ही छोड़कर विवाह कर लेना चाहिए। इसी असामंजस्य की स्थिति में उसे कब नींद आ गई, इसका पता ही न चला।

### शब्दार्थ

प्रेरणा—उत्साह बढ़ाना (motivation); प्रशस्त—प्रशंसा करने योग्य (commendable); समर्थन—सहयोग करना (support); निखरना—बढ़ना (clean out, enhanced); संकोच—शर्म (hesitation); हठ—जिद (persistence); झंकृत—झंकार उत्पन्न करने वाला (jumble)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. पिताजी अभी वाक्य पूरा कर भी न पाए थे कि मीनू बोल पड़ी, “पिताजी, मैंने आपसे पहले भी कहा था कि मैं अभी अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़कर शादी नहीं करूँगी।” “बेटी यह बात तो ठीक है, परंतु लड़का बहुत अच्छा है। ऐसे लड़के रोज-रोज कहाँ मिलते हैं।”

(क) पिताजी मीनू को क्या बता रहे थे? (2)

**उत्तर** पिताजी मीनू को बुआजी द्वारा भेजे गए पत्र के विषय में बता रहे थे, जिसमें बुआजी ने दिल्ली में रहने वाले एक लड़के के बारे में बताया था। लड़का इंजीनियर था और तीन हजार रुपये महीना वेतन पाता था।

(ख) पिताजी अपना वाक्य पूरा क्यों नहीं कर पाए थे? (2)

**उत्तर** पिताजी अपना वाक्य पूरा इसलिए नहीं कर पाए थे, क्योंकि मीनू, पिताजी की इंजीनियर लड़के से अपना विवाह करवाने का इरादा जान गई। उसने उनका वाक्य पूरा होने से पूर्व ही विवाह न करने की अपनी इच्छा को व्यक्त कर दिया।

(ग) मीनू ने पिताजी के सम्मुख क्या प्रस्ताव रखा था और क्यों? (3)

**उत्तर** पिताजी ने मीनू से पुनः विवाह के विषय में चर्चा की, परंतु मीनू ने विवाह न करने की इच्छा प्रकट करते हुए पिताजी के सम्मुख अपनी छोटी बहन आशा का विवाह करवाने का प्रस्ताव रखा था। मीनू बीच में ही पढ़ाई छोड़कर विवाह करने की इच्छुक न थी और न ही वह यह चाहती थी कि उसकी वजह से आशा के विवाह में देरी हो, इसलिए उसने पिताजी के सम्मुख आशा का विवाह करवाने का प्रस्ताव रख दिया।

(घ) पिताजी ने क्यों कहा कि ऐसे लड़के रोज-रोज कहाँ मिलते हैं? (3)

**उत्तर** पिताजी के कथन का यह अभिप्राय था कि बुआजी के पत्र में, जिस लड़के का वर्णन किया गया था वह दिल्ली में इंजीनियर था और तीन हजार रुपये महीना वेतन पाता था। पिताजी, मीनू का विवाह उसके साथ करवाना चाहते थे, किंतु मीनू अपने विवाह न करने के दृढ़ निश्चय पर डटी हुई थी, इसलिए पिताजी उस पर विवाह के लिए दबाव डालते हुए कहते हैं कि ऐसे लड़के रोज-रोज कहाँ मिलते हैं।

2. नीलिमा का नाम सुनते ही वह खुशी से झूम उठी और अपनी प्रिय सखी से मिलने के लिए बेचैन हो गई। इस समय माँ घर में नहीं थी। पड़ोस में किसी के घर गई थी, इसलिए इस समय उसका जाना संभव न था।

(क) कौन खुशी से झूम उठा था और क्यों? (2)

**उत्तर** नीलिमा के मेरठ से आने की खबर सुनकर मीनू अत्यधिक प्रसन्नता के कारण खुशी से झूम उठी थी, क्योंकि दोनों घनिष्ठ सहेलियाँ थीं और उनको आपस में मिले हुए काफी समय बीत गया था।

(ख) नीलिमा कहाँ से आई थी और उसके आने की सूचना किसने दी? (2)

**उत्तर** नीलिमा अपनी ससुराल मेरठ से अपने मायके आई थी। नीलिमा के आने की सूचना उसके भैया अशोक ने मीनू को दी थी, जिस कारण वह उससे मिलने के लिए अत्यधिक उत्सुक थी।

(ग) “खुशी से झूम उठी।” प्रस्तुत पंक्ति से क्या अभिप्राय है? अवतरण में यह पंक्ति किस संदर्भ में प्रयुक्त हुई है? (3)

**उत्तर** “खुशी से झूम उठी” प्रस्तुत पंक्ति से अभिप्राय है— बहुत अधिक आनंदित या प्रसन्नता का अनुभव करना। मीनू जब कॉलेज में

अवकाश होने के कारण घर आई हुई थी, तब उसे उसकी सहेली के भैया बताते हैं कि नीलिमा घर आई हुई है और उसे याद कर रही है। इस खबर को सुनते ही मीनू अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव करती हुई खुशी से झूम उठती है।

(घ) किसका कहाँ जाना संभव नहीं था और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू का नीलिमा के घर जा पाना संभव नहीं था, क्योंकि मीनू को जब नीलिमा के आने का समाचार मिला तो वह अत्यधिक आनंदित हो उठी और उससे मिलने के लिए उत्सुक हो गई थी, लेकिन उस समय माँ के पड़ोस में किसी के घर जाने के कारण मीनू का नीलिमा के घर जाना संभव नहीं था।

3. तभी नीलिमा ने मीनू से शादी के बारे में पूछ लिया, “मीनू तू शादी नहीं कर रही है अभी? मैंने सुना है आशा का रिश्ता हो गया है।” “हाँ, नीलिमा! आशा का रिश्ता हो गया है। लड़का इंजीनियर है। घर भी अच्छा है।”

“पर मीनू, तू अभी शादी के लिए तैयार क्यों नहीं है?” नीलिमा ने पूछा। “नीलिमा अब मैं कुछ निराश-सी हो गई हूँ। कौन करेगा मुझसे शादी?”

(क) नीलिमा कौन है? वह मीनू को राय क्यों दे रही है? (2)

**उत्तर** नीलिमा मीनू की बचपन की सहेली हैं। उसका विवाह सुरेंद्र के साथ मेरठ में हुआ है। नीलिमा मीनू के भविष्य के प्रति चिंतित हैं। वह उसे शादी कर लेने की राय देती हैं। मीनू की छोटी बहन आशा का विवाह तय हो चुका है, लेकिन बड़ी होने के बावजूद मीनू का अभी तक विवाह नहीं हुआ है। अतः इस कारण नीलिमा मीनू को शादी करने की राय दे रही हैं।

(ख) शादी के नाम से मीनू उदास क्यों हो जाती है? (2)

**उत्तर** मीनू शादी के नाम से ही उदास हो जाती है, क्योंकि शादी की बात आते ही उसे अपने बीते हुए समय की घटनाएँ याद आ जाती हैं। उसका कद छोटा होने तथा रंग साँवला होने के कारण बहुत से लड़कों ने उससे शादी करने से मना कर दिया। यह याद करके मीनू काफी आहत होती है।

(ग) नीलिमा उसकी शादी के लिए इतनी उत्साहित क्यों है? (3)

**उत्तर** नीलिमा यह अच्छी तरह से जानती है कि मीनू एक बहुत ही अच्छी तथा गुणवान लड़की है। वह यह भी जानती है कि उसका भाई अशोक मीनू को पसंद करता है। अतः वह यह सोचकर उत्साहित है कि यदि मीनू की शादी उसके भाई

अशोक से हो जाए, तो यह बहुत ही अच्छा रहेगा। उसकी प्यारी सहेली उसी के घर उसकी भाभी बनकर आ जाएगी।

(घ) “कौन करेगा मुझसे शादी”? भाव स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** जब नीलिमा मीनू को शादी करने के लिए जोर देती है, तो मीनू उदास होकर नीलिमा से कहती है कि मुझसे शादी कौन करेगा? ऐसा वह इसलिए कहती है, क्योंकि उसके छोटे कद व साँवले रंग के कारण उसे बहुत से लड़कों ने नापसंद कर दिया था। इससे वह बहुत दुःखी होती है और उसे लगने लगता है कि उससे कौन शादी करेगा? वह सोचती है कि शायद वह विवाह के योग्य है ही नहीं।

4. यह बात सुनकर मीनू के चेहरे पर कुछ मुस्कराहट-सी झलकी। मुस्कराते हुए वह बोली, “चल कोई तो है अपनी प्रशंसा करने वाला भी।” “मीनू, मैं मजाक नहीं कर रही हूँ। तू तैयार हो जा, तेरी शादी अशोक भैया से करा दूँगी।” नीलिमा ने बड़े विश्वास से कहा।

(क) मीनू के चेहरे पर मुस्कराहट क्यों थी? (2)

**उत्तर** नीलिमा के द्वारा मीनू को यह बताने पर कि उसके अशोक भैया उसको पसंद करते हैं और हर समय उसकी प्रशंसा करते रहते हैं। नीलिमा के इस कथन को सुनकर मीनू के चेहरे पर मुस्कराहट आ गई थी।

(ख) “कोई तो है अपनी प्रशंसा करने वाला भी” किसने कहा और क्यों? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत उक्ति मीनू द्वारा कही गई है। मीनू को जब नीलिमा बताती है कि उसके भैया उसकी प्रशंसा करते रहते हैं, तब मीनू ने मुस्कराते हुए कहा कि ‘चल कोई तो है अपनी प्रशंसा करने वाला भी।’

(ग) नीलिमा ने विश्वासपूर्वक क्या कहा था और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू द्वारा विवाह करने के लिए अनिच्छा प्रकट करने के उपरांत नीलिमा ने विश्वासपूर्वक कहा था कि अगर मीनू विवाह के लिए तैयार हो जाती है, तो वह उसका विवाह अपने भैया से करवा देगी, क्योंकि उसे पता था उसके भैया मीनू को पसंद करते हैं और मीनू द्वारा तैयार होते ही उनका विवाह सुगमतापूर्वक करवाया जा सकता है।

(घ) मीनू ने नीलिमा के प्रस्ताव का क्या जवाब दिया था? (3)

**उत्तर** नीलिमा द्वारा अशोक भैया से विवाह करवाने का प्रस्ताव रखने पर मीनू ने उसे अस्वीकार करते हुए कहा कि वह अभी वकालत की पढ़ाई पढ़ रही है। वकालत का अभी केवल एक ही वर्ष पूरा हुआ है। वह अपने जिस लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ी है, उसके पूरा होने के उपरांत ही वह विवाह के बारे में सोचेगी।

## अध्याय 15

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में मीनू के प्रथम श्रेणी में पास होने, दो महीने बाद हॉस्टल लौटने और वहाँ माया से मिलने, अपनी बहन आशा के लिए बाजार में चप्पलें खरीदते हुए अमित को देखते ही मन घृणा से भरने, हॉस्टल लौटने पर मीनू के हाथ में साड़ियों का डिब्बा देखकर लड़कियों द्वारा तरह-तरह के प्रश्न पूछने और सच्चाई जानने पर वापस अपने-अपने कमरे में चले जाने का उल्लेख (वर्णन) किया गया है।

### मीनू का परीक्षाफल आना

आज मीनू का परीक्षाफल आया था। हमेशा की तरह ही उसने इस बार भी प्रथम श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण की थी। वह आज प्रसन्न थी। वह अनुभव कर रही थी कि मंजिल का पहला पड़ाव वह पार कर चुकी है। उसकी छुट्टियाँ समाप्त हो गई थीं, इसलिए आशा के विवाह की तैयारी छोड़कर वह अपने कॉलेज जाने की तैयारी करने लगी। दो महीने की छुट्टियाँ घर में बिताने के कारण, उसे अब घर छोड़कर जाने में एक अजीब-सा अनुभव महसूस हो रहा था।

## छात्रावास में नई छात्राएँ और बाजार में अमित का मिलना

छात्रावास पहुँचने पर मीनू को कई नई छात्राएँ दिखाई दीं, किंतु माया को देखते ही वह खुश हो गई माया ने उसे प्रथम श्रेणी से पास होने के लिए बधाई दी। कॉलेज में पढ़ाई आरंभ हो गई थी, मीनू नियमित रूप से पढ़ने के कारण ही सदैव प्रथम श्रेणी से पास होती थी।

माँ ने मीनू को आशा के लिए साड़ियाँ व चप्पल खरीदने के लिए रुपये दिए थे। मीनू के आग्रह करने पर माया भी उसके साथ रविवार को बाज़ार चली गई। मीनू, आशा के लिए साड़ियाँ खरीदने के उपरांत चप्पल खरीदने के लिए एक दुकान में प्रवेश करती है, जहाँ मीनू को अमित दिखाई देता है, जो अपनी छोटी बहन के साथ आया था। मीनू को देखते ही वह उसे एकटक देखने लगता है।

## अमित के मन में बेचैनी तथा मीनू के हृदय में घृणा के भाव

अमित, मीनू से बात करना चाहता था, किंतु अवसर न मिलने के कारण वह उससे बात नहीं कर पा रहा था। मीनू, अमित को अपनी ओर आता देखकर माया से उसे चप्पलें पसंद न आने की बात कहते हुए चलने के लिए कहती है, किंतु माया उसकी बातें न समझते हुए वहीं से चप्पलें खरीदने के लिए कहती है। मीनू वहाँ से दो जोड़ी चप्पलें खरीदकर बाहर चली जाती है। माया, मीनू की व्याकुलता को महसूस करती है, किंतु उसका कारण समझने में असमर्थ रहती है।

मीनू जब भी अमित को देखती, उसे अमित के घरवालों के द्वारा दिए गए धोखे का स्मरण हो आता था और उसके हृदय में एक अजीब-सी घृणा भर जाती थी।

## छात्रावास में लड़कियों का हँसी-मजाक

छात्रावास पहुँचने पर सभी लड़कियाँ उसकी खरीदी हुई साड़ियों को देखती हैं। वे सभी मीनू से मजाक करते हुए कई प्रश्न पूछती हैं। पहली लड़की साड़ियों की प्रशंसा करते हुए पूछती है “क्या अपने विवाह के लिए लाई हो?” तो दूसरी लड़की विवाह के तय होने और उन्हें न बताने के बारे में प्रश्न करती है। तीसरी लड़की हँसी मजाक करते हुए जीजाजी का फोटो दिखाने के लिए कहती है, तो चौथी लड़की उनके काम के विषय में पूछती है। पाँचवीं लड़की उससे विवाह के बाद कहाँ जाने के बारे में पूछती है, तभी सभी एक साथ हँस पड़ती हैं। कई प्रश्नों के एक साथ पूछे जाने पर मीनू जवाब नहीं दे पाती, किंतु सबके शांत होने पर वह बताती है कि उसकी छोटी बहन का विवाह है और उसने यह सब उसी के लिए खरीदा है। उसका जवाब सुनकर सभी चुप हो जाती हैं और कुछ पूछने का साहस नहीं कर पातीं। अब मीनू व अन्य सभी लड़कियाँ अपने-अपने कमरे में चली जाती हैं।

## शब्दार्थ

व्यस्त—किसी कार्य में पहले से लगे हुए होना (busy); मोह—लगाव (andearment); नियमित—रोज़ाना (regular); सदैव—हमेशा ही (always); एकटक—लगातार (continuously); यद्यपि—फिर भी (though, still); साहस—हिम्मत (courage)

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. आखिर मेरठ जाने का दिन आ ही गया। दो महीने घर में सबके साथ रहने पर घर के प्रति मोह और अधिक बढ़ गया था। कितना अजीब-सा लग रहा था, उसे घर छोड़कर जाना।

(क) हॉस्टल जाने से पूर्व मीनू किन कार्यों में व्यस्त थी? (2)

**उत्तर** आशा के विवाह में एक महीना शेष था, इसलिए हॉस्टल जाने से पूर्व मीनू अपनी बहन आशा के विवाह की तैयारियों तथा घर के कार्यों में लगी हुई पूरी तरह से व्यस्त थी।

(ख) कहाँ जाने का दिन आ गया था और क्यों? (2)

**उत्तर** मीनू के मेरठ जाने का दिन आ गया था, क्योंकि उसकी परीक्षा का परिणाम आने के साथ-साथ परीक्षा के उपरांत का अवकाश भी समाप्त हो गया था। अब उसकी पढ़ाई एवं वकालत की कक्षाएँ आरंभ होने वाली थीं।

(ग) किसे घर छोड़ने पर अजीब-सा लग रहा था और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू को घर छोड़ने पर अजीब-सा लग रहा था, क्योंकि परीक्षा के बाद मिलने वाले दो माह के अवकाश में मीनू ने अपना पूरा समय घर में रहकर ही व्यतीत (बिताया) किया था और घर में आशा के विवाह की तैयारियाँ भी चल रही थीं, जिस कारण हर समय घर के सदस्यों के साथ रहने से घर के प्रति मीनू

का मोह और अधिक बढ़ गया था। हॉस्टल जाने पर घर के सदस्यों से वह इस तरह मिलकर नहीं रह सकेगी।

(घ) “घर के प्रति मोह और अधिक बढ़ गया था” पंक्ति से क्या अभिप्राय है? (3)

**उत्तर** मीनू की परीक्षा के बाद का अवकाश समाप्त हो गया था। उसे अब पुनः वापस छात्रावास जाना था, किंतु अवकाश के समय परिवार के सदस्यों के साथ अपना समय व्यतीत करने के कारण परिवार के सदस्यों के प्रति उसका लगाव और अधिक बढ़ गया था। उनसे दूर होने के कारण उसे एक अजीब-सा लग रहा था, इसी लगाव को अभिव्यक्त करते हुए लेखिका मीनू की स्थिति का वर्णन करते हुए कहती है कि घर के प्रति मोह और अधिक बढ़ गया था।

2. उसने आशा के लिए चार साड़ियाँ खरीदीं। उसके बाद वे दोनों चप्पलों की दुकान पर पहुँचीं। अभी वे दोनों चप्पल पसंद कर ही रही थीं कि मीनू को सामने अमित दिखाई दे गया।

(क) माया, मीनू के साथ क्यों गई थी? (2)

**उत्तर** मीनू को बाज़ार से सामान खरीदना था। वह अकेले बाज़ार जाकर खरीददारी नहीं कर सकती थी। उसने माया से साथ चलने के लिए कहा। उसकी बात को मानकर माया, मीनू के साथ बाज़ार गई थी।

(ख) कौन-कौन बाज़ार गए थे और उन्होंने क्या खरीदा? (2)

**उत्तर** मीनू और माया बाज़ार गए थे। उन्होंने विवाह के अवसर पर आशा के लिए चार साड़ियाँ व दो जोड़ी चप्पलें खरीदी थीं।

(ग) साड़ियाँ किसने और क्यों खरीदीं? (3)

**उत्तर** मीनू ने अपनी छोटी बहन आशा के लिए साड़ियाँ खरीदीं, क्योंकि मीनू की माँ ने मीनू को छात्रावास जाते समय आशा के विवाह के लिए साड़ियाँ और चप्पलें खरीदने के लिए रुपये दिए थे, इसलिए मीनू ने साड़ियाँ खरीदी थीं।

(घ) मीनू को कौन दिखाई दिया और वह वहाँ एवं क्यों आया हुआ था? (3)

**उत्तर** मीनू ने जब साड़ियाँ खरीदने के बाद चप्पलें खरीदने के लिए दुकान में प्रवेश किया तो मीनू को अमित दिखाई दिया। अमित स्वयं अपनी छोटी बहन मधु को चप्पल दिलवाने के लिए बाजार आया हुआ था। मीनू को देखने के उपरांत अमित, उसको एकटक देखने लगा था।

3. अमित को अपनी ओर आता देखकर तथा एकटक लगातार देखते हुए पाकर मीनू, माया से बोली, “चलो माया, यहाँ चप्पलें कुछ पसंद नहीं आ रही हैं।”

माया उसकी बात समझ नहीं पाई थी, इसलिए वह बोली, “नहीं मीनू यहाँ तो बहुत सुंदर-सुंदर चप्पलें हैं, इन्हीं में से पसंद कर लो।”

(क) मीनू ने कहाँ से और किसे चलने के लिए कहा तथा क्यों? (2)

**उत्तर** मीनू ने माया से दुकान से बाहर चलने के लिए कहा। दुकान में अमित भी उपस्थित था। उसकी उपस्थिति के कारण मीनू असहज महसूस कर रही थी, इसलिए मीनू ने माया से बाहर चलने के लिए कहा।

(ख) माया कौन-सी बात नहीं समझ पाई थी? (2)

**उत्तर** दुकान में अमित की उपस्थिति से मीनू स्वयं को असहज स्थिति में महसूस कर रही थी। वह अमित द्वारा एकटक देखने एवं बात करने के लिए पास आता हुआ देखकर माया से चलने के लिए कहती है, किंतु माया उसकी असहजता की बात समझ नहीं पाती है।

(ग) अमित किसे एकटक देख रहा था और क्यों? (3)

**उत्तर** अमित, मीनू को एकटक देख रहा था, क्योंकि मीनू को दुकान में देखने के उपरांत वह मीनू से बात करने के लिए बेचैन हो उठा था। वह मीनू के साथ अपने माता-पिता के द्वारा किए गए व्यवहार के लिए उससे माफी माँगना चाहता था और उसके प्रति अपने लगाव के कारण बात करने का अवसर ढूँढ रहा था, किंतु ऐसा न हो पाने के कारण वह उसे लगातार एकटक देख रहा था।

(घ) प्रस्तुत अवतरण के आधार पर मीनू की मनःस्थिति का विश्लेषण कीजिए। (3)

**उत्तर** अमित को देखने के बाद मीनू व्याकुल एवं बेचैन होने के कारण स्वयं को असहज मनःस्थिति में पाती है। उसे अतीत की स्मृतियाँ स्मरण हो उठती हैं और उसे परेशान करने लगती हैं। इससे उसके मन में अमित के परिवार के प्रति घृणा एवं द्वेष-भाव उत्पन्न हो उठता है। इसी बेचैन एवं असहज मनःस्थिति के कारण वह स्वयं ही दुकान से बाहर निकल जाना चाहती है।

## अध्याय 16

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में आशा के विवाह की तैयारियाँ, मीनू की बुआ को समझाने, बड़ी बहन द्वारा कुछ रस्में निभाते हुए मीनू द्वारा कुछ कटु बातें सुनने, उसके दुःखी होने, आशा को तैयार करने, मीनू को देखकर कुछ महिलाओं की बातचीत, आशा की विदाई होने, माँ को सांत्वना देने तथा छात्रावास लौटने की अनुमति लेने का उल्लेख किया गया है।

#### विवाह की तैयारियाँ

आशा के विवाह में दो दिन शेष थे, इसलिए मीनू भी तीन दिन पूर्व ही मेरठ से घर आ गई थी। वह विवाह की तैयारियों में माँ का हाथ बँटा रही थी। घर में अब भी काफी काम शेष बचा हुआ था, जो अगले दो दिनों में किया जाना था। आशा मीनू से छोटी थी, किंतु मीनू को कभी इस बात का दुःख न था कि आशा का विवाह उससे पहले हो रहा है।

#### पिताजी द्वारा बुआजी को समझाना

आशा के विवाह में शामिल होने के लिए बुआ जी भी घर पहुँच गई थीं। मीनू के माँ एवं पिताजी उनके स्वभाव को जानते थे, इसलिए उन्हें शंका थी कि कहीं वे कुछ ऐसे शब्द न कह दें, जिन्हें सुनकर मीनू दुःखी हो

उठे। दयाराम जी अवसर पाकर बुआ जी को समझाते हैं कि वह मीनू से उसकी शादी के विषय में कुछ न पूछें। बुआ जी उनकी बात मानते हुए, उनसे पूछती हैं कि आखिर वे आशा का विवाह मीनू से पहले क्यों कर रहे हैं? जबकि यह करना उचित नहीं है। पिताजी बताते हैं कि वह अभी वकालत की पढ़ाई कर रही है, इसलिए अभी उसका विवाह करना संभव नहीं था। यह कहकर वे विवाह के कार्यों में व्यस्त हो जाते हैं।

#### रस्म अदायगी में बुआ का तर्क देना

विवाह की रस्में आरंभ हो चुकी थीं। एक रस्म के अनुसार, बड़ी बहन को आरती उतारनी थी। बुआ जी प्रश्न करती हैं कि यह रस्म कौन करेगा? माँ, मीनू को रस्म अदायगी (निभाने) के लिए कहती है, तभी बुआ जी उत्तेजित होकर कहती हैं कि यह रस्म केवल विवाहित बहनें ही करती हैं, इसलिए मीनू यह रस्म कैसे कर सकती है? मीनू बुआ जी की बात सुनकर उदास हो जाती है, माँ उसकी उदासी को समझते हुए कहती हैं कि “आजकल कौन मानता है इन सब बातों को। मीनू ही करेगी सारी रस्में” और वे थाल सजाने लगती हैं।



## मीनू का दुःखी होना

मीनू जैसे ही रस्में करना शुरू करती है, सभी महिलाओं द्वारा उसको कटाक्ष पूर्ण नजरों से देखने व आपस में बातें करने से वह दुःखी हो उठती है। उसका मन हो रहा था कि वह थाल छोड़कर कमरे में जाकर खूब रोए, लेकिन वह धैर्य के साथ रस्म पूरी करती रही और उसके बाद अपने कमरे में चली गई। एकांत में पहुँचने पर उसका संयम टूट जाता है और उसकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं। इसी बीच आशा कमरे में प्रवेश करती है। उसे देखकर मीनू स्वयं को साहस बँधाते हुए उससे बातें करने लगती है।

## प्रशंसा का पात्र बनी आशा

घर में काफी मेहमान आ गए थे। बारात भी आने वाली थी, इसलिए चहल-पहल बढ़ गई थी। एक ओर बच्चे समूह में खेल रहे थे, तो दूसरी ओर सभी बड़े अपने कार्यों में व्यस्त थे। कुछ रस्में पूरी करने के बाद आशा को ऊपर कमरे में भेज दिया, जहाँ मीनू व आशा की सहेलियाँ उसको तैयार करती हैं। सजने के बाद आशा बहुत सुंदर दिखाई दे रही थी, सभी उसके रंग-रूप की प्रशंसा करते हैं।

## मीनू का भी निखरा रूप

मीनू ने आशा के विवाह के लिए हरे रंग की साड़ी खरीदी थी। साड़ी पहनकर उसे सँभालना उसके लिए थोड़ा कठिन था। उसने विवाह के लिए विशेष रूप से साड़ी खरीदी थी, इसलिए उसने साड़ी ही पहनी। मीनू साड़ी में अत्यधिक सुंदर दिख रही थी। थोड़ा सजने के बाद उसका रूप और भी निखर गया था। साड़ी सँभालने के लिए उसने कई पिन लगा रखी थीं, ताकि उसे कोई असुविधा न हो। तैयार होकर नीचे आने के बाद उसने घर में आए मेहमानों का स्वागत किया और आशा की सहेलियों से बातें करने लगी। बातें करते समय उसका ध्यान दो महिलाओं की ओर आकर्षित हुआ।

## महिलाओं का मीनू के विषय में बातें करना

विवाह में आई महिलाएँ मीनू के विषय में बातें कर रही थीं, उनमें से एक ने पूछा, “दयाराम जी की बड़ी बेटी कौन-सी है, जो अभी तक अविवाहित है?” तभी एक महिला ने मीनू की ओर इशारा करते हुए बताया। एक अन्य महिला ने मीनू की सुंदरता की प्रशंसा करते हुए अब तक उसके विवाह न करने का कारण पूछा। पहली महिला विवाह को लेकर लड़कियों के कई नखरे होने की बात कहती है। पास ही में खड़ी एक परिचित महिला उन्हें बताती है कि मीनू वकालत की पढ़ाई कर रही है, इसलिए उसने अभी विवाह करने से मना कर दिया है। पहली महिला कटाक्ष करते हुए कहती है कि पढ़ाई के चक्कर में कौन अपनी बेटियों को घर में रखता है, उनकी आधी उम्र तो पढ़ाई के चक्कर में ही निकल जाती है।

## मीनू की बेचैनी और आशा की विदाई

महिलाओं की बातें सुनकर मीनू सोचती है कि इस समाज में क्या कोई अपनी इच्छा से जी भी नहीं सकता? कोई विवाह करे या न करे, कोई क्यों चिंता करता है? महिलाओं की बातों से वह दुःखी हो उठती है, लेकिन कोई उसकी पीड़ा समझ नहीं पाता। अपनी सहनशक्ति के कारण वह अपनी पीड़ा व दुःख को चेहरे पर नहीं आने देती है। मीनू विवाह के प्रत्येक कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग ले रही थी।

विदाई के समय आशा और मीनू एक-दूसरे से लिपट कर रोती हैं। दयाराम जी व उनकी पत्नी अत्यधिक भावुक हो उठते हैं, उनके आँसू बहने लगते हैं। मीनू सोचती है कि यह कैसी अजीब घड़ी है। जिस बेटी को माता-पिता बचपन से लाड़-प्यार के साथ पालते हैं और अंत में उसे किसी दूसरे को सौंप देते हैं। साथ रहने वाली बेटी के लिए घर पराया हो जाता है और घर ही क्या, बेटी ही पराया धन हो जाती है। आशा के विदा होते ही माँ फूट-फूटकर रोने लगी। पिताजी की आँखों में आँसू थे, किंतु उन्होंने स्वयं पर धैर्य रखकर स्वयं को अन्य कार्यों में व्यस्त कर लिया था।

## माँ के प्रति स्नेह उमड़ना एवं उन्हें सांत्वना देना

माँ को दुःखी देखकर मीनू सोचती है कि वह सदैव माँ के पास ही रहेगी और विवाह नहीं करेगी। वह सोचती है कि माँ हमारे लिए कितने ही कष्ट सहती है, हमारी खुशियों के लिए अपनी सुख-सुविधाएँ छोड़ देती है और बीमारी में भी उन्हें हमारी चिंता सताती है, लेकिन यह कैसा रिश्ता है कि कुछ समय में ही बेटी पराई हो जाती है और माँ से अलग हो जाती है। मीनू माँ को सांत्वना देती हुए कहती है कि आप न रोएँ, आपकी एक ही बेटी विदा हुई है और दूसरी आपको छोड़कर कहीं नहीं जाएगी, सदैव आपके पास ही रहेगी। माँ मीनू को गले लगा लेती है और रुआँसे स्वर में कहती है कि वह ऐसा न कहे, बेटी तो पराया धन होती है और वह अपने घर में ही शोभा देती है। तभी दयाराम जी आते हैं और अपनी पत्नी को किसी काम से बुलाकर ले जाते हैं।

## मेरठ जाने की अनुमति लेना

विवाह के कारण घर अव्यवस्थित हो गया था, मीनू ने माँ के साथ मिलकर घर को पुनः व्यवस्थित किया था। विवाह के कार्यों में व्यस्त होने के कारण उसका ध्यान पढ़ाई की ओर नहीं गया था, किंतु विवाह संपन्न होते ही उसे पढ़ाई का ध्यान आया। उसने सोचा कि उसे अब अधिक परिश्रम से पढ़ना होगा, क्योंकि उसकी काफी छुट्टियाँ हो गई थीं। माँ को छोड़कर मेरठ जाने का उसका मन न था, किंतु पढ़ाई के लिए उसे जाना ही पड़ रहा था। उसने माँ से मेरठ जाने की अनुमति माँगी। माँ ने उसे अनुमति दे दी, क्योंकि वे जानती थीं कि विवाह के कारण उसकी छुट्टियाँ कुछ ज्यादा ही हो गई हैं।

## शब्दार्थ

नम्रतापूर्वक—प्रेम से (politely); रस्म—प्रथा (ritual); मुरझाना—उदास होना (upset); विचित्र—अजीब (bizarre); अव्यवस्थित—अस्त-व्यस्त होना (disorganised)।



## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. यह बात सुनकर सामने बैठी मीनू का चेहरा मुरझा गया। मीनू के मुरझाए चेहरे को देखकर माँ उसकी मनःस्थिति समझ गई और बुआ जी से बोलीं, “आजकल कौन मानता है इन सब बातों को। मीनू ही करेगी सारी रस्में।” यह कहकर माँ पूजा का थाल सजाने लगीं।

(क) मीनू का चेहरा क्यों मुरझाया हुआ था? (2)

**उत्तर** बुआ जी ने जब मीनू को आशा के विवाह की रस्म करने से मना कर दिया, तब मीनू उदास हो गई थी। इसी उदासी के कारण उसका चेहरा मुरझाया हुआ था।

(ख) माँ क्या समझ गई थी? (2)

**उत्तर** बुआ जी द्वारा रस्म निभाने के लिए मना करने के कारण मीनू उदास एवं दुःखी हो जाती है, जो उसके मुरझाए हुए चेहरे से स्पष्ट प्रतीत हो रहा था, इसलिए माँ उसके दुःखी एवं उदास होने की मनःस्थिति को समझ गई थी।

(ग) माँ ने बुआ जी को क्या कहा और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू उदास थी, क्योंकि बुआ जी ने उसे बड़ी बहन के द्वारा की जाने वाली रस्में करने से रोका था, क्योंकि यह रस्म केवल विवाहित बहनों के द्वारा ही की जाती है। बुआ जी द्वारा यह बात कहने के बाद माँ ने उन्हें समझाते हुए कहा था कि “आजकल कौन मानता है, इन सब बातों को। मीनू ही करेगी सारी रस्में” माँ कहना चाहती थी कि भले ही मीनू का विवाह न हुआ हो, लेकिन बड़ी बहन होने के नाते वह बड़ी बहन की सारी रस्मों को निभाएगी।

(घ) मीनू को रस्म करते समय किन-किन स्थितियों का सामना करना पड़ा? (3)

**उत्तर** माँ के द्वारा रस्में पूरी करने के लिए कहने पर मीनू जब रस्म अदायगी करना शुरू करती है, तो आस-पास की सभी महिलाएँ उसे कटाक्ष भरी नज़रों से देखने लगती हैं, जिससे मीनू बेचैन हो उठती है। उसका मन करता है कि वह रस्म पूरी किए बिना ही उठ जाए, जो उसके अत्यधिक दुःखी एवं परेशान होने की स्थिति को प्रकट करता है।

2. एकांत में उसका हृदय रो पड़ा। उसके नेत्रों से आँसू टपक पड़े। इतने में ही आशा ने कमरे में प्रवेश किया। आशा को देखकर उसने झटपट अपने आँसू पोंछे और स्वयं को संयमित करके आशा से बातें करनी शुरू कर दीं।

(क) कौन एकांत में रो रहा था और क्यों? (2)

**उत्तर** मीनू एकांत में रो रही थी, क्योंकि आशा के विवाह में उसके द्वारा की गई रस्म को करते समय सभी महिलाएँ उसे कटाक्ष भरी नज़रों से देख रही थीं, जिस कारण वह अत्यंत दुःखी हो उठी और स्वयं को न सँभाल पाने के कारण कमरे में आकर रोना शुरू कर देती है।

(ख) कमरे में किसने प्रवेश किया और उस पर मीनू की क्या प्रतिक्रिया हुई? (2)

**उत्तर** कमरे में मीनू की छोटी बहन आशा ने प्रवेश किया। आशा के कमरे में प्रवेश करते ही मीनू ने जल्दी से अपने आँसू पोंछे और स्वयं को संयमित करते हुए आशा से बातें करना शुरू कर दिया।

(ग) “एकांत में उसका हृदय रो पड़ा।” पंक्ति से क्या अभिप्राय है? इसका प्रसंग भी स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** ‘हृदय के रोने’ से अभिप्राय है-व्यक्ति का अत्यधिक दुःख और पीड़ा के कारण भावों में बहकर रो पड़ना। मीनू जब अपनी छोटी बहन आशा के विवाह की रस्में पूरी कर रही थी, तो बुआ जी और विवाह में सम्मिलित अन्य महिलाएँ उसके अविवाहित होने की बात कहकर उसे कटाक्ष भरी व्यंग्यपूर्ण नज़रों से देखती हैं। इस कारण मीनू अत्यंत दुःखी और आहत होती है। रस्म पूरी करते ही मीनू कमरे में जाकर भावावेश में आकर रोने लगती है।

(घ) किसने स्वयं को संयमित किया और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू अत्यधिक दुःखी होने के कारण कमरे में रो रही थी, लेकिन आशा के कमरे में पहुँचते ही, वह स्वयं को सँभालते हुए जल्दी से आँसू पोंछकर संयम रखती है। मीनू ऐसा इसलिए करती है, क्योंकि वह अपने दुःख एवं अपनी पीड़ा को अपने माता-पिता व आशा के सम्मुख प्रकट नहीं करना चाहती।

3. इस तरह की बातें सुनकर मीनू का चंचल हृदय बेचैन हो उठता है। उसके हृदय की पीड़ा को कोई नहीं समझ पाता था, फिर भी मीनू के अंदर बहुत सहनशक्ति थी। अपने दिल की पीड़ा को वह चेहरे तक न आने दे रही थी।

(क) किसका हृदय बेचैन हो उठा और क्यों? (2)

**उत्तर** मीनू का हृदय बेचैन हो उठा था, क्योंकि आशा के विवाह में आई हुई कुछ महिलाएँ मीनू के अब तक अविवाहित रहने पर विभिन्न प्रकार की बातें कर रही थीं। वे उसके माता-पिता पर पढ़ाई करवाने के कारण बेटी का विवाह न करवाने का आरोप भी लगा रही थीं, जिसे सुनकर मीनू का हृदय बेचैन हो उठा।

(ख) महिलाओं की बातें सुनकर मीनू ने क्या सोचा? (2)

**उत्तर** महिलाओं की बातें सुनकर मीनू ने सोचा कि समाज किसी को भी स्वेच्छा से जीवन व्यतीत करने का अधिकार नहीं देता। कोई विवाह करे अथवा न करे, किसी को भी इस बात की चिंता नहीं होनी चाहिए, लेकिन समाज हस्तक्षेप करने की अपनी प्रवृत्ति के कारण किसी व्यक्ति को चैन से जीने नहीं देता।

(ग) “मीनू के अंदर बहुत सहनशक्ति थी” लेखिका ने ऐसा क्यों कहा? (3)

**उत्तर** मीनू के अंदर बहुत सहनशक्ति थी, लेखिका ने यह बात इसलिए कही है, क्योंकि मीनू अपने अंदर के दुःख और पीड़ा को चेहरे पर कभी व्यक्त नहीं करती है। विवाह में सम्मिलित महिलाओं की व्यर्थ की बातें और माता-पिता पर लगाए जाने वाले आरोपों से वह आहत जरूर होती है। यह उसकी सहनशीलता का ही परिणाम था कि वह किसी को पलटकर जवाब नहीं देती और मन-ही-मन दुःखी होकर सब बात सहन कर लेती है।

(घ) मीनू अपने चेहरे पर किसे नहीं आने दे रही थी और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू अपने चेहरे पर पीड़ा को नहीं आने दे रही थी, क्योंकि उसकी पीड़ा के प्रदर्शित होने से, उसके माता-पिता व आशा दुःखी होते, मीनू किसी भी स्थिति में ऐसा नहीं होने देना चाहती थी, वह नहीं चाहती थी कि प्रसन्नता का जो माहौल बना हुआ था, उसमें व्यवधान उत्पन्न हो। यही कारण था कि अत्यंत दुःखी होने के बावजूद वह सबके सामने सामान्य बनी रहती है और अपनी पीड़ा व्यक्त नहीं करती।

4. माँ के प्रति एक विचित्र स्नेह उसके हृदय में उमड़ पड़ा। कितना कष्ट सहा है माँ ने हमारे लिए? उन्होंने हमारी हर खुशी व सुख-सुविधा का ध्यान रखा है। अपनी बीमारी में भी सदैव उन्हें हमारी ही चिंता रहती है पर यह कैसा रिश्ता होता है, जोकि पलभर में बेटी को माँ से अलग कर देता है।

(क) “उन्होंने हमारी हर खुशी व सुख-सुविधा का ध्यान रखा है” पंक्ति में ‘उन्होंने’ शब्द किसके लिए व किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है? (2)

**उत्तर** “उन्होंने हमारी हर खुशी व सुख-सुविधा का ध्यान रखा है” पंक्ति में ‘उन्होंने’ शब्द मीनू की ‘माँ’ के लिए प्रयुक्त हुआ है। आशा की विदाई के समय माँ को भावुक होता देखकर मीनू अपने मन में यह सब बातें सोच रही है कि माँ ने हमारी हर खुशी और सुख-सुविधा का ध्यान रखा है और हमारे लिए बहुत कष्ट सहे हैं।

(ख) “यह कैसा रिश्ता है, जोकि पलभर में बेटी को माँ से अलग कर देता है” इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** “यह कैसा रिश्ता है, जोकि पलभर में बेटी को माँ से अलग कर देता है” इस पंक्ति का आशय यह है कि एक माँ अपनी बेटी की हर सुख-सुविधा का ध्यान रखती है। यहाँ तक कि अपनी बीमारी में

भी उसे अपने बच्चों की चिंता रहती है। भावात्मक रूप से वह अपनी बेटी के अधिक करीब होती है, परंतु शादी एक ऐसा रिश्ता होता है जो एक क्षण में माँ को उसकी बेटी से अलग कर देता है अर्थात् विवाह के पश्चात् माँ को बेटी से अलग होना पड़ता है।

(ग) मीनू के हृदय में किसके प्रति एक विचित्र स्नेह उमड़ रहा था और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू के हृदय में माँ के प्रति एक विचित्र स्नेह उमड़ रहा था, क्योंकि आशा की विदाई के पश्चात् मीनू के माता-पिता दोनों भावुक हो गए थे। माँ अंदर जाकर फूट-फूटकर रो रही थी, तो पिताजी के नेत्र भी आँसुओं से भरे हुए थे, किंतु उन्होंने स्वयं को संयमित करते हुए अन्य कार्यों में व्यस्त कर लिया था। माँ स्वयं को संयमित नहीं कर पा रही थीं व रोए जा रही थीं। माँ को इस प्रकार रोता देखकर मीनू के हृदय में माँ के ममत्व एवं उनकी भावुकता के कारण एक विचित्र स्नेह उमड़ पड़ा था।

(घ) माँ को रोता हुआ देखकर मीनू के मस्तिष्क में किस प्रकार के विचार आ रहे थे? (3)

**उत्तर** माँ को रोता हुआ देखकर मीनू के मस्तिष्क में अनेक विचार आने लगे थे, जैसे माँ ने उनके लिए कितने ही कष्ट सहे हैं, उनकी खुशी एवं सुख-सुविधा का उन्होंने सदैव ही ध्यान रखा है, वे स्वयं बीमार होतीं, लेकिन उन्हें हमेशा अपनी बेटियों की चिंता सताती रहती थी। मीनू के मस्तिष्क में यह विचार भी आ रहा था कि कैसे एक नए रिश्ते के जुड़ने से बेटियाँ पलभर में ही माँ से बिछड़कर अलग हो जाती हैं और माँ अकेली रह जाती है।

## अध्याय 17

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में माँ द्वारा मीनू का उत्साह बढ़ाने वाले पत्रों को भेजने, सुरेंद्र के आने, मीनू को अपने पुत्र के नामकरण का निमंत्रण-पत्र देने, वहाँ जाने पर अमित को देखकर चकित होने, नीलिमा द्वारा अमित और सरिता का रिश्ता टूटने तथा मीरापुर में कोई लड़की पसंद आने, अमित की सच्चाई जानकर उसके प्रति व्यवहार बदलने, अमित द्वारा मीनू से मिलने की इच्छा प्रकट करने तथा उससे न मिल पाने पर आत्मग्लानि होने का उल्लेख किया गया है।

#### माँ के उत्साहवर्द्धक-पत्र

आशा के विवाह को हुए पाँच माह बीत गए थे। माँ मीनू को पत्र भेजा करती थी, जिसे पढ़कर उनके अकेले होने का आभास होता था। मीनू के पास जब भी माँ-पिताजी के पत्र आते, तब उनसे मिलने के लिए मीनू की व्याकुलता बढ़ जाती थी। माँ पत्र में हमेशा कहती थीं कि वह लगन से पढ़ाई करे, क्योंकि उसे अपने पैरों पर खड़ा होना है। आज भी माँ का पत्र आया था। पत्र में लिखे प्रत्येक शब्द से उनका ममत्व (माँ की ममता) झलक रहा था, जिससे उसके हृदय में माँ के प्रति श्रद्धा बढ़ गई थी।

#### मीनू को मिला नामकरण संस्कार का निमंत्रण

मीनू जैसे ही पत्र पढ़कर रख रही थी, उसी समय सुरेंद्र उसके कमरे में प्रवेश करता है। उन्हें देखकर वह आश्चर्यचकित होकर उनके आने का कारण पूछती है। वह उसे बताते हैं कि नीलिमा ने पुत्र को जन्म दिया है। वह उसी के नामकरण संस्कार का निमंत्रण-पत्र देने आए हैं। मीनू प्रसन्न होकर अवश्य आने की बात कहती है। सुरेंद्र के जाने के बाद वह निमंत्रण-पत्र उठाकर नीलिमा के विषय में सोचने लगती है कि उसे एक अच्छा पति मिला और अब वह एक पुत्र की माँ भी बन गई है। वह कितनी सौभाग्यशाली है।

#### मीनू का नामकरण संस्कार में जाना तथा वहाँ अमित का मिलना

मीनू ने कॉलेज से अवकाश लिया और बच्चे के लिए उपहार खरीदकर नीलिमा के घर पहुँच गई। नीलिमा, मीनू को देखकर बहुत प्रसन्न हुई। वे दोनों अपनी बातों में खो जाती हैं, तभी सुरेंद्र के कई मित्र कमरे में प्रवेश करते हैं। उनमें एक घनिष्ठ मित्र अमित भी था, जो नीलिमा से सुरेंद्र के बारे में पूछता है। नीलिमा ने बताया कि सुरेंद्र बाहर के काम

में व्यस्त हैं। मीनू अमित का नाम सुनते ही पीछे देखती है, तो दंग रह जाती है। अमित का सामना न करना पड़े, इसलिए बाज़ार में चप्पलों की दुकान से तो वह किसी तरह निकल गई थी, किंतु यहाँ से निकल पाना मुश्किल था। अमित को देखकर उसे एक अजीब-सी घृणा होने लगी।

### मीनू ने जाना अमित का सच

सुरेंद्र के सभी मित्र वहाँ से जा चुके थे। मीनू सोच में डूबी हुई थी। नीलिमा उसे अमित का रिश्ता टूटने के विषय में बताती है। वह चौंकते हुए रिश्ता टूटने का कारण पूछती है। नीलिमा उसे बताती है कि लड़की वालों ने कुछ अनुचित बातें कहीं, जिस कारण इन्हें रिश्ता तोड़ना पड़ा। मीनू कहती है कि उन्होंने कुछ तीखे वचन कहे होंगे, अन्यथा रिश्ता तोड़ना सरल कार्य नहीं है।

नीलिमा, मीनू को बताती है कि लड़की वाले अपनी बेटी को फ्लैट देना चाहते थे, ताकि वह अलग गृहस्थी बसा सके। उसने यह भी बताया कि अमित तो पहले ही यह विवाह नहीं करना चाहते थे, लेकिन आरंभ में वे अपने माता-पिता का विरोध नहीं कर पाए, परंतु लड़की वालों के अनुचित व्यवहार को देखकर उनके पिताजी ने अमित को ही निर्णय करने के लिए कह दिया था। हाँ, इससे पहले अमित को मीरापुर में कोई लड़की पसंद थी और वे उसी से विवाह करना चाहते थे।

### मीनू के व्यवहार में परिवर्तन

मीनू को जब नीलिमा से इस बात का पता चलता है कि अमित, धनी लड़की से विवाह नहीं करना चाहता था और लड़की पक्ष की ओर से फ्लैट देने तथा गृहस्थी अलग बसाने की बात पर अमित द्वारा रिश्ता तोड़ दिया गया, तो इस तथ्य ने मीनू की नज़रों में अमित का स्थान ऊँचा कर दिया था। अब मीनू का व्यवहार अमित के प्रति बदल रहा था। अभी तक अगर मीनू को कहीं अमित दिखाई देता या कोई उसकी बात करता, तो उसके हृदय में अमित के लिए घृणा भर जाती थी, लेकिन आज उसके विषय में इतना कुछ जानकर भी उसे बुरा नहीं लगा था। घर में आए सभी अतिथियों ने बच्चे को शुभाशीष प्रदान किए। कार्यक्रम समाप्त हो गया था, रात बहुत हो चुकी थी, इसलिए सुरेंद्र मीनू को छात्रावास छोड़ने चले गए।

### अमित की मीनू के प्रति जिज्ञासा एवं मिलने की उत्सुकता

अमित पूरे दिन कार्य में व्यस्त था। जब वह मीनू से बात करने के लिए उसे ढूँढ़ने नीलिमा के पास आया, तो वह उसे कहीं नज़र नहीं आई। इस प्रकार आज फिर वह अपने हृदय की बात मीनू को न बता सका।

अमित, मीनू के विषय में जानने के लिए उत्सुक था, इसलिए उसने नीलिमा के पास जाकर मीनू के विषय में पूछा। नीलिमा ने उसे बताया कि वह छात्रावास जा चुकी है। अमित जब मीनू की पढ़ाई के विषय में पूछता है, तो वह बताती है कि डेढ़ वर्ष पूर्व एक लड़के ने उससे विवाह करने से मना कर दिया था। इस कारण उसमें निराशा उत्पन्न हो गई और उसने आत्मनिर्भर बनने का निर्णय लिया ताकि वह अपने पैरों पर खड़ी होकर आत्मसम्मान के साथ जीवन व्यतीत कर सके।

### अमित को हुई आत्मग्लानि

नीलिमा की बातें सुनकर अमित को आत्मग्लानि अनुभव होने लगी। वह स्वयं को मीनू की निराशा एवं दुःख का कारण समझने लगा। उसने नीलिमा को यह नहीं बताया कि वह युवक वही खुद है, जिसने उसे विवाह के लिए अस्वीकार कर दिया था। वह घर जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। नीलिमा उसे बैठने के लिए कहती है, किंतु वह उदास स्वर में रात अधिक होने की बात कहकर चला जाता है। पूरे रास्ते उसके मस्तिष्क में मीनू का मासूम चेहरा घूमता रहा, जिसने प्रथम मुलाकात में ही अमित का दिल मोह लिया था।

### शब्दार्थ

व्याकुल—बेचैन (distraught); भाग्यशाली—सौभाग्य (fortunate);

भंग—टूटना (dissolution); विरुद्ध—विरोध में (against);

निर्णय—फैसला लेना (decision); दुर्भाग्यवश—बदकिस्मती से

(unfortunately); नार्मजूर—अस्वीकार करना (rejected);

आत्मग्लानि—पछतावा (remorse)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. जिस समय भी माँ या पिताजी का कोई पत्र उसके पास आता, उस समय उसका हृदय व्याकुल हो उठता। उसे घर जाने की बेचैनी होने लगती, परंतु माँ सदैव उसे अपने पत्र में यही शिक्षा देती थी कि उसे लगन से पढ़कर अपने पाँव पर खड़ा होना है।

(क) किसका हृदय व्याकुल हो उठता था और कब? (2)

**उत्तर** जब भी मीनू को माँ अथवा पिताजी के द्वारा भेजा गया पत्र प्राप्त होता था, उस समय उस पत्र को पढ़कर मीनू का हृदय व्याकुल हो उठता था।

(ख) पत्र कौन भेजता था और उसमें क्या लिखा होता था? (2)

**उत्तर** मीनू के माता-पिता उसे पत्र भेजा करते थे। माँ जब भी पत्र भेजा करती, तो सदैव ही मीनू को लगन से पढ़ने और अपने पाँव पर खड़े होने की शिक्षा देती थी।

(ग) पाँव पर खड़े होने से क्या तात्पर्य है? माँ सदैव मीनू को यह शिक्षा क्यों देती थी? (3)

**उत्तर** पाँव पर खड़े होने से तात्पर्य है—आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनना। मीनू की माँ सदैव पत्र में उसे मन लगाकर पढ़ने और अपने पैरों पर खड़े होने की बात इसलिए लिखती थी ताकि मीनू का मनोबल बना रहे और वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके तथा किसी पर बोझ न बनने और समाज में आत्म-सम्मान के साथ जीने की उसकी अभिलाषा पूरी हो सके।

(घ) पत्र को पढ़कर मीनू की क्या मनःस्थिति होती है और क्यों? (3)

**उत्तर** जब कभी भी मीनू के माँ या पिताजी का पत्र आता, तो उसका हृदय व्याकुल हो उठता। वह छात्रावास को छोड़कर घर पहुँचने के लिए बेचैन होने लगती। मीनू की घर पहुँचने की इस बेचैनी एवं आतुरता का कारण उसकी माँ के द्वारा भेजे जाने वाले वे पत्र थे, जिन्हें पढ़कर उसे सदैव यह प्रतीत होता था कि दोनों बेटियों मीनू व आशा के बिना वे अकेली-सी हो गई हैं।

2. अमित का नाम सुनते ही दरवाजे की ओर पीठ किए बैठी मीनू ने मुड़कर देखा, तो वह आश्चर्यचकित रह गई। मीनू जब भी अमित को देखती, उसके मन में अजीब-सी घृणा उत्पन्न हो जाती। अमित व उसके सभी मित्र वहाँ आ चुके थे, परंतु मीनू अभी भी सोच में डूबी हुई थी। [ICSE 2017]

(क) मीनू कहाँ थी? वहाँ अमित से उसकी मुलाकात कैसे हो गई? (2)

**उत्तर** मीनू अपनी सहेली नीलिमा के बेटे के नामकरण संस्कार में गई थी। मीनू नीलिमा के पास बैठी हुई थी। उसकी पीठ दरवाजे की ओर थी। उसी समय नीलिमा के पति सुरेंद्र का घनिष्ठ मित्र अमित कमरे में आया, जहाँ अमित से उसकी मुलाकात हो गई।

(ख) मीनू और अमित के बीच क्या संबंध था? वह उससे घृणा क्यों करती थी? (2)

**उत्तर** अमित अपने माता-पिता और छोटी बहन मधु के साथ अपने विवाह के लिए मीनू को देखने गया था। उसे मीनू पसंद थी, परंतु घर आने पर उसके माता-पिता ने दहेज के लालच में कहीं और रिश्ता तय करके मीनू और उसके घरवालों का दिल दुखाया था। अमित और मीनू में बस इतना ही रिश्ता था, परंतु अमित को देखते ही मीनू का दुःख उभर आता था, इसलिए वह उससे घृणा करती थी।

(ग) उसे वहाँ किस सच्चाई का पता चला? उन बातों का उस पर क्या प्रभाव पड़ा? (3)

**उत्तर** वहाँ अर्थात् नीलिमा के घर पहुँचकर मीनू को यह पता चला कि अमित की गलती बस इतनी-सी ही थी कि वह अपने माता-पिता का मुखर विरोध न कर सका। इसके अलावा वह ज्यादा दहेज और पलैट मिलने पर भी दूसरा रिश्ता स्वीकार करने को तैयार न हुआ।

उसने मीरापुर में कोई लड़की देखी थी, जिससे वह विवाह करना चाहता था। इन बातों को जानकर मीनू के हृदय में अमित के प्रति घृणा कम हुई और अमित के बारे में सुनकर उसे बुरा नहीं लग रहा था।

(घ) “मीनू परिस्थितियों से हार मानने वाली कोई साधारण नारी नहीं थी” स्पष्ट कीजिए कि उसने अपने जीवन को कैसे नई दिशा दी? (3)

**उत्तर** मीनू देखने में साधारण किंतु असाधारण गुणों वाली लड़की थी। उसका कद छोटा और रंग साँवला होने के कारण विवाह के लिए लड़कों द्वारा कई बार मना किया जा चुका था। अमित के माता-पिता द्वारा मना किए जाने पर उसे दुःख तो होता है, परंतु वह हिम्मत हारे बिना लक्ष्य तय करती है।

वह परिश्रम से वकालत की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करती है तथा अपनी प्रतिभा से मेरठ कचहरी में प्रैक्टिस करके प्रसिद्धि अर्जित करती है। वह अपने विवाह के बारे में दूसरों के व्यंग्य सहती है, परंतु हार माने बिना आगे बढ़ती रहती है।

3. “परंतु अमित भैया उस लड़की से शादी करने के इच्छुक नहीं थे, जब उस लड़की से रिश्ता हुआ था, तब वे अपने माता-पिता के विश्वास न बोल सके, परंतु लड़की वालों की ये सब हरकतें देखकर अमित के पिताजी ने अमित के ऊपर ही सौंप दिया था कि वह इस बात का निर्णय स्वयं ही करे कि यहाँ शादी करनी है या नहीं।”

(क) नीलिमा मीनू को किस विषय में बता रही थी? (2)

**उत्तर** नीलिमा मीनू को अमित के विवाह टूटने के विषय में बता रही थी कि किस प्रकार लड़की वालों द्वारा अपनी अनुचित इच्छाएँ व्यक्त करने के कारण अमित का विवाह टूट गया था।

(ख) मीनू ने अमित के विवाह टूटने की खबर सुनकर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की थी? (2)

**उत्तर** अमित के विवाह के टूटने की खबर सुनते ही मीनू चौंक पड़ी। उसने कुछ और कारण जानने की कोशिश करते हुए कहा कि लड़की वालों ने कुछ तीखे वचन कह दिए होंगे, तभी रिश्ता टूटा होगा वरना रिश्ता टूटना आसान काम नहीं है।

(ग) अमित अपने पिताजी से क्या नहीं कह पाया था? (3)

**उत्तर** अमित को धनीमल जी की बेटी सरिता पसंद नहीं थी, इसलिए वह उससे विवाह नहीं करना चाहता था। वह अपने माता-पिताजी की इच्छा को देखकर एवं उनके द्वारा सरिता से विवाह के लिए दबाव डालने के कारण चुप रह गया और इस विवाह के लिए अपनी अनिच्छा को माता-पिता से नहीं कह पाया था।

(घ) पिताजी ने अमित को क्या निर्णय लेने के लिए कहा था और क्यों? (3)

**उत्तर** पिताजी ने अमित को विवाह करने या न करने के लिए निर्णय लेने के लिए कहा था, क्योंकि लड़की वाले विवाह में अपनी बेटी को पलैट देने की इच्छा प्रकट कर रहे थे। अमित के पिताजी को उनका कृत्य अनुचित जान पड़ता था, इसलिए उन्होंने अमित के ऊपर ही निर्णय छोड़ दिया था कि वह शादी करना चाहता है या नहीं।

4. उसे लगा कि उसने मीनू के हृदय को पीड़ा पहुँचाई है। उसी के कारण मीनू जीवन में इतनी निराश हो चुकी है। अमित ने नीलिमा को नहीं बताया कि अमित ही वह लड़का है, जिसने मीनू के दिल को ठेस पहुँचाई है, अब उसे वहाँ एक पल बैठना भी मुश्किल लगा, इसलिए वह वहाँ से उठ खड़ा हुआ था और जाने लगा।

(क) किसे लगा कि उसने मीनू को दुःख पहुँचाया है और क्यों? (2)

**उत्तर** अमित को लगा कि उसने मीनू को दुःख पहुँचाया है, क्योंकि अमित को जब नीलिमा से पता चला कि एक लड़के के द्वारा विवाह के लिए अस्वीकार करने के कारण मीनू निराश हो गई थी, इसलिए उसकी निराशा का कारण वह स्वयं को मानता है।

(ख) अमित ने नीलिमा से क्या छिपाया और क्यों? (2)

**उत्तर** अमित ने नीलिमा से अपने विषय में यह छिपाया था कि वही वह युवक है, जिसने मीनू को विवाह के लिए अस्वीकार किया था और उसके हृदय को ठेस पहुँचाई थी। वह नहीं चाहता था कि नीलिमा को यह सब पता चले इसलिए उसने नीलिमा से यह सब बातें छिपाए रखीं।

(ग) प्रस्तुत अवतरण के आधार पर अमित की मनःस्थिति का वर्णन कीजिए। (3)

**उत्तर** नीलिमा के द्वारा मीनू के बारे में जानने के पश्चात् अमित स्वयं को मीनू की निराशा, हताशा एवं पीड़ा के लिए ज़िम्मेदार मानने लगा। वह आत्मग्लानि भी महसूस करने लगा। स्वयं को पश्चाताप की अग्नि में जलता हुआ पाकर उसके लिए नीलिमा के पास बैठना अत्यंत मुश्किल हो गया, इसलिए वह वहाँ से उठ खड़ा हुआ और घर चला गया।

(घ) नीलिमा अमित को मीनू के विषय में क्या जानकारी देती है तथा मीनू ने अपनी निराशा से मुक्ति पाने के लिए क्या निर्णय लिया? (3)

**उत्तर** नीलिमा अमित को मीनू के विषय में यह जानकारी देती है कि किसी युवक के द्वारा विवाह के लिए अस्वीकार किए जाने पर मीनू के हृदय में निराशा और अत्यधिक पीड़ा की अनुभूति हुई थी। इस निराशा से मुक्ति पाने के लिए मीनू ने पढ़-लिखकर अपने पाँव पर खड़े होने का निर्णय किया, जिससे वह समाज में सम्मान पा सके और आत्मनिर्भर होकर अपना जीवन व्यतीत कर सके।

# अध्याय 18

## पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में महाविद्यालय में खेलकूद की प्रतियोगिताएँ आयोजित किए जाने के कारण छुट्टियाँ होने, मीनू का नीलिमा के घर जाने, वहाँ दोनों की बातचीत होने, नीलिमा द्वारा उसे अशोक के विषय में बताए जाने तथा छात्रावास लौटने का उल्लेख किया गया है।

### महाविद्यालय में खेलकूद की प्रतियोगिताओं का आयोजन

मीनू ने द्वितीय वर्ष भी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया था। अब वह अंतिम वर्ष की परीक्षा के लिए और अधिक लगन एवं मेहनत से तैयारी कर रही थी। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उसे इस वर्ष अत्यधिक परिश्रम करने की आवश्यकता थी। महाविद्यालय में खेलकूद की प्रतियोगिताएँ आयोजित किए जाने से महाविद्यालय में पढ़ाई नहीं हो पा रही थी, इसलिए मीनू नीलिमा से मिलने उसके घर जाने का निर्णय करती है।

### नीलिमा की अस्वस्थता के कारण मीनू का वहाँ रुकना

नीलिमा के घर पहुँचने पर मीनू ने देखा कि नीलिमा अस्वस्थ है। उसका शरीर ज्वर से तप रहा है। सुरेंद्र, नीलिमा के लिए दवाइयाँ खरीदने गए हुए थे, इस कारण उस समय घर में कोई नहीं था। अपने बेटे अनूप को रोता हुआ देखकर नीलिमा ने कँपकँपाते स्वर में मीनू से उसे अपने समीप लिटाने के लिए कहा, किंतु मीनू ने अनूप को उसके पालने में ही सुला दिया। नीलिमा के पति सुरेंद्र, नीलिमा की दवाई लेकर लौटे तो मीनू को घर में देखकर सोचते हैं कि यदि मीनू को नीलिमा के पास बैठने के लिए कह दें, तो वे फैक्ट्री देखने के लिए जा सकेंगे। सुरेंद्र नीलिमा को दवाई देने के उपरांत मीनू के समक्ष निवेदनपूर्वक अपनी इच्छा प्रकट करते हैं। मीनू शीघ्र ही प्रसन्नतापूर्वक उनका निवेदन स्वीकार कर लेती है।

### नीलिमा के स्वास्थ्य में सुधार और मीनू से बातचीत

नीलिमा की अस्वस्थता को देखकर मीनू को उससे ज्यादा बातें करना उचित नहीं लगा, इसलिए वह पास में ही रखी हुई पत्रिका उठाकर पढ़ने लगी। कुछ समय के बाद नीलिमा आश्चर्यपूर्वक उठते हुए मीनू से कहती है कि अकेले बैठने के कारण वह बोर हो गई होगी, लेकिन मीनू ने नकारात्मक जवाब दिया। अब मीनू ने नीलिमा से तबीयत के बारे में पूछा तो उसने पहले से बेहतर बताया। नीलिमा, मीनू से उसकी पढ़ाई के विषय में कहती है कि अंतिम वर्ष होने के कारण वह अपनी पढ़ाई में अधिक व्यस्त होगी। मीनू बताती है कि दोनों वर्ष तो वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई है और इस वर्ष का परिणाम तो भविष्य में ही पता चलेगा। नीलिमा, मीनू को शुभकामनाएँ देते हुए परिश्रम का फल अवश्य मिलने की बात कहती है।

### नीलिमा द्वारा मीनू को अशोक के बारे में बताना

नीलिमा अपने भैया अशोक के बारे में बताती है कि वह दो वर्ष के लिए अमेरिका गए हैं। मीनू उनके जाने का कारण पूछती है, तो वह बताती है कि वह पढ़ने के लिए गए हैं। वह यह भी कहती है कि एक बार विदेश जाने के बाद सभी वहीं बस जाते हैं, कोई लौटकर नहीं आता।

मीनू अपने विचार प्रकट करते हुए कहती है कि वह इस तरह विदेश में बसने के पक्ष में बिलकुल भी नहीं है। हमारी सरकार हमारी शिक्षा पर अत्यधिक खर्च करती है। बुद्धिमान व्यक्तियों का चंद रुपयों के लिए इस तरह विदेश में बसने से देश का विकास कैसे हो सकता है? नीलिमा उसका समर्थन करते हुए कहती है कि इन बातों को सब नहीं समझते हैं।

### मीनू का छात्रावास लौटना

मीनू और नीलिमा आपस में बातें कर रही थीं, तभी अनूप रोने लगा। मीनू उसे उठाकर चुप करवाती है। सुरेंद्र भी फैक्ट्री से घर आ चुके थे। घड़ी पर दृष्टि पड़ते ही मीनू उठकर छात्रावास जाने के लिए तैयार हो जाती है। नीलिमा ने सुरेंद्र से मीनू को छोड़ आने के लिए कहा, किंतु नीलिमा के स्वास्थ्य को देखते हुए मीनू अकेले ही छात्रावास के लिए चली गई।

### शब्दार्थ

कँपकँपाती आवाज—स्वर में कंपन होना (voice tremor); आग्रहपूर्ण—निवेदन भरे स्वर में (insistence); सहर्ष—प्रसन्नतापूर्वक (pleasure, blithe); बुद्धिजीवी—बुद्धिमान (intellectual); वार्तालाप—बातचीत (conversation)।



## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. उसने सोचा कि आज नीलिमा के घर जाकर मिल आऊँ। वह पढ़ते-पढ़ते थक चुकी थी, इसलिए वह उठी और नीलिमा के घर पहुँचने पर उसने देखा कि नीलिमा बिस्तर पर पड़ी थी। मीनू ने उसके सिर पर हाथ रखकर देखा, उसका शरीर ज्वर से तप रहा था।

(क) मीनू कॉलेज क्यों नहीं जा रही थी? (2)

**उत्तर** कॉलेज में खेलकूद की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। इस कारण कॉलेज में पढ़ाई नहीं हो रही थी, इसलिए मीनू कॉलेज नहीं जा रही थी।

(ख) कौन पढ़ते-पढ़ते थक गई थी और उसने क्या निश्चय किया? (2)

**उत्तर** मीनू पढ़ते-पढ़ते थक गई थी, इसलिए उसने अपनी प्रिय सहेली नीलिमा से मिलने का निश्चय किया, जो मेरठ में ही रहती थी।

(ग) मीनू को कहाँ जाने का विचार आया और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू को नीलिमा के घर जाने का विचार आया, क्योंकि मीनू के महाविद्यालय में खेलकूद की प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इस कारण महाविद्यालय में पढ़ाई नहीं हो रही थी। मीनू ने खेल प्रतियोगिता में भाग नहीं लिया था। वह पढ़ते-पढ़ते थक गई थी, इसलिए उसके मस्तिष्क में नीलिमा के घर जाने का विचार आया।

(घ) प्रस्तुत अवतरण के आधार पर नीलिमा की स्थिति का वर्णन कीजिए। (3)

**उत्तर** मीनू जब नीलिमा के घर पहुँची, तो उसने देखा कि ज्वर अधिक होने के कारण नीलिमा का शरीर तप रहा था। इस कारण वह बिस्तर पर लेटी हुई थी। उसके पति सुरेंद्र दवाई लेने के लिए गए थे। इस कारण उस समय घर में कोई नहीं था।

2. मीनू को लगा कि नीलिमा तीव्र ज्वर से पीड़ित है, इसलिए उससे बातें करना उचित नहीं। उसने पास पड़ी एक पत्रिका उठाकर पढ़नी शुरू कर दी। नीलिमा को दवाई मिलने से कुछ आराम हुआ और उसे झपकी आ गई। मीनू उस पत्रिका को पढ़ने में व्यस्त रही।

(क) मीनू को क्या अनुचित लगा और क्यों? (2)

**उत्तर** मीनू को नीलिमा से बातें करना अनुचित लग रहा था, क्योंकि नीलिमा की तबीयत खराब थी। उसे आराम की आवश्यकता थी, इस कारण मीनू को उससे बात करना अनुचित लगा था।

(ख) किसे झपकी आ गई थी और क्यों? (2)

**उत्तर** नीलिमा को बुखार था। इस कारण वह अस्वस्थ थी। सुरेंद्र के द्वारा लाई गई दवाइयाँ खाने के पश्चात् उसे आराम महसूस हुआ था और उसे झपकी आ गई थी।

(ग) नीलिमा के घर में मीनू किस प्रकार अकेली थी? उसने समय काटने के लिए क्या किया? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** सुरेंद्र अस्वस्थ नीलिमा के लिए दवाई लेने गया था। इसी बीच मीनू आई और नीलिमा के पास बैठ गई। मीनू को देखकर सुरेंद्र के मस्तिष्क में विचार आया था कि वह मीनू को नीलिमा के पास

बैठने के लिए कहकर अपनी फैक्ट्री का निरीक्षण कर आए, जिसे मीनू ने सहर्ष ही स्वीकार कर लिया था। इस प्रकार नीलिमा के झपकी लेने और सुरेंद्र के कारखाने के लिए जाने के कारण मीनू घर में अकेली थी। ऐसे में समय काटने के लिए उसने पास में ही रखी पत्रिका उठाकर पढ़नी शुरू कर दी थी।

(घ) जागने के बाद नीलिमा की क्या प्रतिक्रिया थी और मीनू ने उससे क्या पूछा? (3)

**उत्तर** नीलिमा जागी, तो मीनू को अपने पास बैठा हुआ पाकर उसे आश्चर्य हुआ। दवाई खाने के उपरांत नींद आने से वह मीनू से अकेले बैठने के कारण बोर होने के विषय में पूछती है। मीनू ने नीलिमा की तबीयत के बारे में पूछा कि वह अब कैसा महसूस कर रही है? नीलिमा ने पहले से आराम महसूस होने और बदन दर्द भी कम होने की बात कही।

3. मैं तो आराम से बैठी पत्रिका पढ़ रही थी। हाँ ये तो बता, “अब तेरी तबीयत कैसी है?”

अब तो कुछ आराम महसूस हो रहा है। बदन में दर्द भी कम है। नीलिमा ने धीमी आवाज में कहा—“और मीनू तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है? आजकल तो खूब व्यस्त होगी पढ़ने में।”

(क) पत्रिका कौन पढ़ रही थी और क्यों? (2)

**उत्तर** मीनू पत्रिका पढ़ रही थी, क्योंकि नीलिमा ज्वर से अत्यधिक पीड़ित होने के कारण आराम कर रही थी। ऐसे में मीनू को उससे बात करना उचित नहीं लगा था, इसलिए वह पास में रखी हुई पत्रिका पढ़ने लगी थी।

(ख) वक्ता ने किसकी तबीयत के विषय में पूछा और उसने क्या उत्तर दिया? (2)

**उत्तर** वक्ता (मीनू) ने अपनी सहेली नीलिमा से उसकी तबीयत के विषय में पूछा था। नीलिमा अपने स्वास्थ्य के विषय में बताते हुए कहती है कि अब वह कुछ आराम महसूस कर रही है एवं उसके शरीर का दर्द भी कम है।

(ग) नीलिमा ने किससे और क्या प्रश्न पूछा? (3)

**उत्तर** नीलिमा ने अपनी सहेली मीनू से उसकी पढ़ाई के संबंध में पूछा कि तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है? इसके अलावा उसने मीनू से वकालत की पढ़ाई का अंतिम वर्ष होने के कारण पढ़ाई को लेकर उसकी सजगता एवं उसकी व्यस्तता के संबंध में भी प्रश्न पूछे थे।

(घ) वक्ता ने किससे कहा कि “आजकल तो खूब व्यस्त होगी पढ़ने में और क्यों?” (3)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् नीलिमा ने मीनू से कहा था कि आजकल तो खूब व्यस्त होगी पढ़ने में। नीलिमा का मीनू को ऐसा कहने से यह अभिप्राय था कि मीनू की वकालत की पढ़ाई का यह अंतिम वर्ष था और मीनू को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अत्यधिक परिश्रम करने की आवश्यकता थी, इसलिए नीलिमा, मीनू से आजकल पढ़ाई में खूब व्यस्त होने की बात पूछती है।



# अध्याय 19

## पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में अमित के विवाह संबंधी माँ द्वारा देखे गए सपने, अमित द्वारा विवाह की बात नजरअंदाज (अनसुना करते हुए) कर जाने, अपने भतीजे दीपक के विवाह का निमंत्रण-पत्र पाकर माँ के प्रसन्न होने, विवाह में न आ पाने के कारण मधु की उदासी, दोपहर में अमित के आने और उसकी माँ के विचारों में खोए होने का उल्लेख किया गया है।

### अमित के विवाह संबंधी माँ की इच्छाएँ

अमित का रिश्ता टूटने से घर में उदासी का माहौल था। अमित के विवाह को लेकर माँ ने कई सारे सपने देखे थे। उन्होंने सोचा था कि बहू के घर आने से घर की रौनक बढ़ेगी। इसके अतिरिक्त अमित के विवाह से उनकी कई इच्छाएँ और भी थीं। परिवार के सदस्यों की अपनी-अपनी व्यस्तताएँ होने के कारण माँ को अकेलेपन में बहू की कमी विशेष रूप से अखरती थी। उन्होंने कई बार अमित से विवाह के विषय में कहा, लेकिन वह हमेशा ही उनकी बातों को नजरअंदाज (अनसुना) कर जाता और कोई संतोषपूर्ण जवाब न देता था।

### माँ की प्रसन्नता

सुबह लगभग ग्यारह बजे का समय था, तभी डाकिए ने दरवाजे की घंटी बजाई। मधु कॉलेज के लिए तैयार हो रही थी, इसलिए माँ ने ही दरवाज़ा खोला। डाकिया विवाह का निमंत्रण-पत्र लेकर आया था। अपने भतीजे दीपक के विवाह का निमंत्रण-पत्र पाकर माँ अत्यधिक प्रसन्न हुई। माँ को अपने भाई से मिले हुए कई वर्ष बीत गए थे, इसलिए उन्होंने सोचा था कि इस बार वह कुछ दिनों तक वहाँ अवश्य ठहरेंगी।

### मधु की परीक्षाएँ और दीपक का विवाह

मधु ने माँ से पत्र के विषय में पूछा, तो उन्होंने मधु को बताया कि दीपक का विवाह शनिवार को है। उन्होंने निमंत्रण-पत्र भेजा है। माँ की बात सुनकर मधु उदास स्वर में परीक्षाएँ शुरू होने के कारण विवाह में जाने पर अपनी असमर्थता व्यक्त करती है। माँ, मधु की बात सुनकर चिंतित होती हैं कि वे मधु की परीक्षाएँ शुरू होने के कारण कैसे जा पाएँगी? मधु, माँ से विवाह में अवश्य जाने के लिए कहती है। वह कहती है कि उसे दीपक भैया के विवाह की बहुत दिनों से प्रतीक्षा थी, लेकिन परीक्षाओं की वजह से वह नहीं जा पाएँगी। उसे मामा जी के घर गए हुए भी बहुत समय हो गया है। यह कहकर वह कॉलेज के लिए चली गई। माँ विवाह में जाने या न जा पाने के विषय में सोचने लगती हैं।

### अमित का दोपहर में घर आना

दोपहर के एक बजे थे। अमित भोजन करने के लिए घर आया। मेज पर रखे हुए कार्ड को देखकर, उसने माँ से कार्ड के विषय में पूछा। माँ

अमित को दीपक के विवाह का निमंत्रण-पत्र उसे स्वयं ही पढ़ने के लिए कहती हैं। अमित निमंत्रण-पत्र को मेज पर ही रखकर तेज भूख लगने की बात कहकर, रसोईघर में पहुँच गया। माँ, अमित के लिए भोजन परोसती है, अमित भोजन करते हुए अनुभव करता है कि माँ विचारों में खोई हुई है और उसे एकटक निहारते जा रही हैं। अमित, माँ से पूछता है कि वह क्या देख रही हैं? यह सुनते ही उनका ध्यान भंग हो जाता है।

### अमित व माँ के मध्य वार्तालाप

अमित द्वारा माँ से उनके निरंतर एकटक देखने का कारण पूछने पर माँ ने उदासी भरे स्वर में कहा कि दीपक आयु में तुझसे छोटा है, फिर भी उसका विवाह तय हो गया है, लेकिन तुम्हारा विवाह अभी तक नहीं हो पाया है। अमित ने उनसे कहा कि उसने अभी विवाह करने का विचार छोड़ दिया है। माँ उसे समझाती हैं कि मधु भी विवाह योग्य हो गई है। वे उसका भी विवाह करना चाहती हैं, लेकिन मेरी इच्छा है कि मधु के विवाह से पूर्व तुम्हारा विवाह हो, क्योंकि मधु तुमसे आयु में छोटी है। वे उसके विवाह के कार्य अकेले नहीं कर पाएँगी। अमित ने माँ से कहा कि उसका अभी विवाह का इरादा नहीं है और वे मधु का विवाह कर दें।

माँ, अमित से विवाह न करने का कारण जानना चाहती थी। उन्होंने कहा कि उन्हें दीपक के विवाह में भी जाना है। उस दौरान वह मधु को किसके पास छोड़कर जाएँगी। अमित उनसे सभी समस्याओं का समाधान हो जाने की बात कहकर काम पर चला जाता है।

### माँ का विचारमग्न (विचारों में खो जाना) होना

अमित के व्यवहार से माँ आश्चर्यचकित रह जाती हैं। अमित अब तक उनकी किसी बात को नहीं टालता था, लेकिन अमित के व्यवहार में अचानक से आए परिवर्तन को माँ समझ नहीं पाती है। अमित के इस परिवर्तित व्यवहार से माँ के मस्तिष्क में अनेक विचार उत्पन्न होने लगते हैं।

वे सोचती हैं कि कहीं अमित ने विवाह का विचार तो नहीं छोड़ दिया या फिर उसने कोई लड़की तो पसंद नहीं कर ली। विचारों में तल्लीन (खोई हुई) माँ के दिमाग में अचानक सुरेंद्र से मिलकर अमित के इस बदले हुए व्यवहार के विषय में जानने का विचार आता है। वह एक-दो दिन में उससे मिलने का निश्चय करती हैं।

### शब्दार्थ

रौनक—चहल-पहल (merriment); अरमान—इच्छाएँ (desires); अखरना—चुभना (spear); एकटक—निरंतर (continue); निहारना—ध्यानपूर्वक देखना (behold); दृढ़तापूर्वक—निश्चय के साथ (with determination); विस्मित-सी—आश्चर्यपूर्वक (surprisingly); अवगत—जानना (aware)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. अकेलेपन में उन्हें बहू की कमी विशेष रूप से अखरती थी, कितनी ही बार उन्होंने अमित को शादी के लिए तैयार करने की कोशिश की, परंतु अमित चुपचाप उनकी बातें सुनकर इधर-उधर हो जाता। उनकी बातों का सही ढंग से उत्तर नहीं देता था।

(क) माँ ने किसके लिए तथा क्या सपने सँजोए थे? (2)

**उत्तर** माँ ने अमित के विवाह को लेकर सपने सँजोए थे कि अगर उसका विवाह हो जाएगा, तो घर में बहू के आने से रौनक बढ़ जाएगी। बहू आने से घर के अन्य सदस्यों के बाहर चले जाने पर उनका अकेलापन खत्म हो जाएगा।

(ख) माँ को कब व किसकी कमी अखरती थी? (2)

**उत्तर** अमित व मायाराम जी के कारखाने के लिए चले जाने एवं मधु के कॉलेज जाने के पश्चात् माँ को अकेलेपन में बहू की कमी विशेष रूप से अखरती थी।

(ग) माँ अमित पर किस बात का दबाव डालती थी? उस पर अमित की क्या प्रतिक्रिया होती? (3)

**उत्तर** माँ अमित पर विवाह करने के लिए दबाव डालती थीं, क्योंकि माँ ने अमित के विवाह को लेकर कई सपने सँजोए हुए थे। परिवार के सदस्यों के अपने-अपने कार्यों में व्यस्त होने के कारण उन्हें अकेलापन अखरता था। माँ ने कितनी ही बार अमित को विवाह करने के लिए मनाने की कोशिश की थी, लेकिन अमित उनकी बातों को सुनकर उन्हें महत्त्व न देते हुए उन्हें नजरअंदाज (अनसुना) कर जाता था। वह उनकी बातों का जवाब भी नहीं देता था।

(घ) “बातें सुनकर इधर-उधर हो जाना” से क्या अभिप्राय है? पाठ के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** “बातें सुनकर इधर-उधर हो जाना” से अभिप्राय है कि किसी की बातों को महत्त्व न देना या उन्हें अनसुना कर देना। अमित विवाह नहीं करना चाहता था, इसलिए माँ के द्वारा बार-बार विवाह के लिए दबाव डालने के बाद भी वह उनकी बातों को सुनकर उन्हें महत्त्व न देता और अनसुना करते हुए इधर-उधर हो जाता था।

2. मैं यहाँ पर ही रुक जाऊँगी। परीक्षा होने के कारण मेरा तो जाना संभव नहीं हो सकेगा। वैसे मैं तो बहुत दिनों से इंतजार कर रही थी कि दीपक भैया की शादी में जरूर जाऊँगी।

(क) माँ की प्रसन्नता का क्या कारण था? (2)

**उत्तर** अपने भतीजे दीपक के विवाह का निमंत्रण-पत्र पाकर माँ अत्यधिक प्रसन्न थी। इस विवाह के कारण ही उन्हें कई वर्षों के बाद अपने भाई के घर जाने का अवसर भी मिला था।

(ख) “मैं यहाँ पर रुक जाऊँगी” ऐसा किसने व क्यों कहा? (2)

**उत्तर** मधु ने कहा था कि मैं यहाँ रुक जाऊँगी। उसके मामाजी के बेटे दीपक के विवाह का उन्हें निमंत्रण आया था, लेकिन उन्हीं दिनों उसकी परीक्षाएँ आरंभ होनी थीं, इसलिए उसने माँ से विवाह में शामिल होने के लिए कहते हुए स्वयं यहीं रुकने का निर्णय लिया था।

(ग) मधु को किस बात का इंतजार था और क्यों? (3)

**उत्तर** मधु ने अपने मामाजी के बेटे दीपक के विवाह का निमंत्रण-पत्र आने की खबर सुनकर अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव किया, लेकिन परीक्षाएँ होने के कारण उसका विवाह में जाना मुश्किल था। वह विवाह में न जा पाने की अपनी उदासी अभिव्यक्त करते हुए माँ से कहती है कि उसे बहुत दिनों से दीपक भैया के विवाह का इंतजार था। वह इसी बहाने अपने मामाजी के घर जाना चाहती थी, क्योंकि उसे वहाँ गए हुए कई वर्ष हो गए थे।

(घ) माँ क्या सोचकर बेचैन थी व क्यों? (3)

**उत्तर** माँ को जैसे ही पता चला कि उनकी बेटी मधु की परीक्षाएँ भी विवाह के दिनों में ही होंगी। इस कारण वह विवाह में शामिल होने पर अपनी असमर्थता प्रकट कर चुकी है। मधु की इस असमर्थता के कारण ही माँ बेचैन एवं परेशान हो उठती हैं, क्योंकि उन्हें संदेह होने लगा कि वह अपने भतीजे दीपक के विवाह में शामिल हो भी पाएँगी या नहीं।

3. जब अमित ने महसूस किया कि माँ एकटक उसी की ओर निहारे जा रही हैं, तो उससे रहा नहीं गया। वह उनसे पूछ ही बैठा, मम्मी, आप क्या देख रही हैं?

यह सुनकर उनकी तल्लीनता भंग हो गई और वह चौंककर बोलीं, कुछ नहीं बेटे, कुछ... नहीं।

(क) प्रस्तुत अवतरण का वक्ता कौन है तथा उसने क्या महसूस किया? (2)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण का वक्ता अमित है तथा उसने यह महसूस किया कि जब वह दोपहर में भोजन कर रहा था, तो उसकी माँ उसे लगातार एकटक होकर निहार रही थीं।

(ख) माँ की एकाग्रता क्यों भंग हो गई? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** माँ अपने बेटे अमित को एकटक निहार रही थीं तथा उसके विवाह के विषय में सोचते हुए विचारमग्न हो गई थीं। जैसे ही अमित ने उनसे पूछा कि क्या देख रही हो, वैसे ही उनकी एकाग्रता भंग हो गई और वह चौंककर बोली कुछ नहीं बेटे।

(ग) अमित को घर पहुँचने पर क्या पता चला था? (3)

**उत्तर** अमित जब दोपहर में भोजन करने के लिए घर आया, तो मेज पर विवाह का निमंत्रण-पत्र रखा हुआ देखा। माँ से पूछने पर उसे मालूम हुआ कि उसके मामाजी के बेटे दीपक का विवाह है और यह उसी विवाह का निमंत्रण-पत्र है।

(घ) उपरोक्त कथन के अनुसार माँ क्या सोच रही थी? (3)

**उत्तर** माँ निरंतर विचारमग्न होकर अमित को एकटक निहार रही थीं और उसके विवाह के विषय में सोच रही थीं। अमित से दो वर्ष छोटे दीपक का विवाह तय हो गया था, जिसके विवाह का निमंत्रण पत्र आज ही उन्हें मिला है। अमित दीपक से बड़ा था फिर भी अभी तक उसका विवाह न हो पाया था। इस कारण माँ, अमित के विवाह के विषय में सोचते हुए विचारमग्न थीं।

4. मधु भी अब शादी के योग्य हो गई है। उसकी भी अब शादी करना चाहती हूँ। परंतु मैं यह चाहती हूँ कि पहले तुम्हारी शादी हो जाती तो अच्छा था, क्योंकि तुम आयु में भी मधु से सात वर्ष बड़े हो और दूसरी बात यह है कि मधु की शादी में भी मैं सब काम अकेले नहीं कर पाऊँगी। बहू घर में होगी तो काफी काम कर देगी।

(क) “उसने अभी विवाह का विचार छोड़ दिया है” यह कथन किसने कहा और क्यों? (2)

**उत्तर** अमित ने माँ से कहा कि उसने अभी विवाह का विचार छोड़ दिया है, क्योंकि माँ अमित के विवाह न करने के कारण परेशान रहती थीं। वे उससे बार-बार विवाह करने के लिए आग्रह करती थीं।

(ख) “मधु भी अब शादी के योग्य हो गई है” यह किसने कहा और क्यों? (2)

**उत्तर** अमित ने जब माँ से अभी विवाह न करने की अपनी इच्छा प्रकट की, तो माँ ने उसे समझाते हुए कहा कि उसकी छोटी बहन मधु भी विवाह योग्य हो गई है। वे चाहती हैं कि अमित का विवाह करवाने के बाद मधु का विवाह भी करवा दें।

(ग) वक्ता किसे समझा रही थीं व समझाने के लिए उसने क्या तर्क प्रस्तुत किए? (3)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् माँ, अमित को विवाह करने के लिए समझा रही थीं। वे तर्क देती हैं कि उसकी छोटी बहन मधु भी विवाह योग्य हो गई है और वे उसका विवाह भी करवाना चाहती हैं, लेकिन उनकी इच्छा है कि वे पहले अमित का विवाह करवा दें, क्योंकि अमित, मधु से आयु में सात वर्ष बड़ा है। दूसरा, वे मधु के विवाह का संपूर्ण कार्य अकेले नहीं सँभाल पाएँगीं। वे चाहती हैं कि अमित विवाह कर ले, जिससे उन्हें मधु के विवाह में थोड़ी मदद मिल जाएगी।

(घ) अमित ने माँ के विचारों पर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की? (3)

**उत्तर** अमित की माँ ने जब अमित से विवाह करने के लिए कहा तो उसने विवाह न करने की बात कही। जब माँ ने उससे कहा कि तुम्हारे विवाह न करने से वे मधु का विवाह करने में भी असमर्थ हैं, तो अमित ने दृढ़तापूर्वक अपनी इच्छा प्रकट करते हुए कहा कि वह अभी विवाह नहीं करना चाहता, इसलिए उसके कारण मधु का विवाह न रोका जाए।

## अध्याय 20

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अंश में परीक्षा समाप्त होने से छात्राओं की प्रसन्नता, मीनू और माया के चेहरे पर आई विशेष खुशी, पिक्चर देखने जाने का कार्यक्रम बनाने, अचानक नीलिमा और सुरेंद्र के आने एवं अमित का एक्सीडेंट होने की बात बताने, मीनू का व्याकुल होकर अस्पताल पहुँचने, अमित की व्याकुलता देख मीनू के मन में उसके प्रति लगाव उत्पन्न होने, अमित द्वारा अपनी गलती के लिए क्षमा माँगने, अमित की माँ के आने और मीनू द्वारा अमित को सांत्वना देने का उल्लेख किया गया है।

### परीक्षा की समाप्ति और छात्राओं की प्रसन्नता

मीनू ने पूरे वर्ष अत्यधिक लगन एवं कठोर परिश्रम के साथ परीक्षा की तैयारी की थी, जिसका परिणाम यह रहा कि उसके सभी पेपर अच्छे गए थे। आज उसका अंतिम पेपर था। परीक्षा-कक्ष से बाहर आने के बाद मीनू स्वयं को सभी बंधनों से मुक्त अनुभव कर रही थी। मीनू सोचती है कि अब वह पिंजरे में बंद पक्षी के समान जीवन व्यतीत न करेगी, अपितु स्वतंत्र होकर उन्मुक्त भाव से आकाश में विचरण करेगी।

सभी लड़कियाँ परीक्षाओं के समाप्त होने के कारण आज अत्यधिक प्रसन्न थीं, यद्यपि उनके चेहरों पर रात-दिन जगे होने के कारण थकान स्पष्ट दिखाई दे रही थी, लेकिन फिर भी परीक्षाओं के समाप्त होने की प्रसन्नता उनके चेहरे पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। मीनू परीक्षा-कक्ष के बाहर खड़ी होकर माया की प्रतीक्षा (इंतजार) कर रही थी। जैसे ही माया परीक्षा कक्ष से बाहर निकली, उसके चेहरे पर भी प्रसन्नता का भाव स्पष्ट दिखाई देने लगा।

### पिक्चर देखने का कार्यक्रम बनाना

परीक्षा-कक्ष से बाहर आने के बाद माया, मीनू से पिक्चर देखने के लिए कहती है, लेकिन मीनू उसे बताती है कि वह नीलिमा के घर जाने की सोच रही थी। माया के आग्रह करने पर मीनू पिक्चर देखने का निर्णय करती है। साथ ही माया को बताती है कि उसने पहले ही माँ को पत्र लिखकर सूचित कर दिया था कि वह परीक्षाओं के समाप्त होने के दो दिन बाद घर आएगी।

मीनू की बात सुनकर माया ने उदास होकर कहा कि अच्छा है मीनू कि हम दो दिन और साथ में रह सकेंगे, फिर अलग होने के बाद न जाने कब मिलना हो। माया और मीनू बातें करते-करते छात्रावास पहुँच गईं और तीन बजे की पिक्चर देखने का निश्चय करती हैं।

पिक्चर का समय होने पर वे दोनों तैयार होकर पिक्चर देखने चली गईं। पिक्चर देखने के बाद वे दोनों बाहर ही भोजन करने का निर्णय करती हैं। आज दोनों अत्यधिक प्रसन्न थीं, क्योंकि आज उन्हें पढ़ाई नहीं करनी थी और वे निश्चित होकर सो सकती थीं।

### नीलिमा और सुरेंद्र ने मीनू को दी दुःखद सूचना

छात्रावास पहुँचने के बाद मीनू अपने कमरे का ताला खोल ही रही थी कि उसे नीलिमा और सुरेंद्र आते हुए दिखाई दिए। नीलिमा को देखकर मीनू बहुत प्रसन्न हुई।

सुरेंद्र के उदास चेहरे को देखकर मीनू, नीलिमा से उनकी उदासी का कारण पूछती है। नीलिमा उदास होते हुए मीनू को बताती है कि सुरेंद्र के घनिष्ठ मित्र अमित का तीन दिन पूर्व एक्सीडेंट हो गया था। उनकी स्थिति अत्यधिक गंभीर बनी हुई है। मीनू यह खबर सुनकर आश्चर्य से

चौंक पड़ी। उसने नीलिमा से एकसीडेंट का कारण पूछा। नीलिमा ने मीनू को बताया कि अमित की कार के ब्रेक फेल हो गए थे, जिसके कारण उनकी कार पेड़ से जा टकराई। इससे अमित गंभीर रूप से घायल हो गया है।

मीनू यह सुनकर उदास हो जाती है। नीलिमा ने उसे बताया कि अमित उसे याद कर रहे थे। अगर वह उचित समझे तो उनसे मिलकर आ जाए। मीनू के पूछने पर नीलिमा ने बताया कि अमित मेडिकल कॉलेज में भर्ती है। मीनू कुछ देर सोचने के बाद कल सुबह मिलने जाने की बात कहती है।

### मीनू की आँखों से नींद गायब होना

नीलिमा और सुरेंद्र के जाने के बाद मीनू ने सोने की कोशिश की, लेकिन वह सो न सकी। अब से चार माह पूर्व जिस अमित के लिए मीनू के हृदय में घृणा व्याप्त थी, आज उसी हृदय के एक कोने में अमित के लिए स्नेह (प्रेम) भाव उत्पन्न हो गया था, इसलिए अमित के विषय में जानकर मीनू का हृदय बेचैन हो रहा था। मीनू सोने की कोशिश करती, लेकिन अमित का चेहरा उसकी आँखों के सामने आ जाता, जो उससे कुछ कहने के लिए बेचैन था। मीनू कभी सोती, कभी चौंककर जाग जाती, रातभर वह इसी तरह बेचैन होकर करवटें बदलती रही और सुबह तैयार होकर अमित से मिलने के लिए अस्पताल चली गई।

### मीनू अस्पताल पहुँची

मीनू, अमित से शीघ्रातिशीघ्र (जल्दी से) मिलना चाहती थी, इसलिए वह सुबह नौ बजते ही अस्पताल पहुँच गई। वहाँ दस बजे से पूर्व मरीजों से मिलने की अनुमति नहीं थी। अमित से मिलने की व्याकुलता के कारण उसके लिए एक-एक क्षण व्यतीत करना मुश्किल हो रहा था। जब मीनू अमित से मिलने उसके कमरे में पहुँची तो उसे देख अमित के चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। मीनू द्वारा अमित की तबीयत पूछने पर उसे पता चला कि अमित की तबीयत अभी ठीक नहीं है। जब मीनू ने अमित की दुर्घटना का कारण जानने की कोशिश की, तो अमित ने स्वयं के कर्मों के फल की बात कही।

### अमित की व्याकुलता

अमित, मीनू से उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाने एवं दुःख के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानता है। अमित कहता है कि तुम्हारे हृदय में मेरे लिए बहुत घृणा है। मैंने तुमसे इस संबंध में कई बार बात करनी चाही, लेकिन दुर्भाग्य से कभी अवसर ही नहीं मिला। मीनू उसे चुप करवाने की कोशिश करती है, लेकिन वह बहुत दिनों बाद ऐसा अवसर मिलने की बात कहकर मीनू से अपने दिल की हर बात उसे बताने की अपनी आतुरता को प्रकट करता है।

### मीनू के प्रति अमित का लगाव

अमित ने मीनू को बताया कि मैंने जब तुम्हें पहली बार देखा, तो लगा कि यही मेरी मंजिल है। मैं हमेशा के लिए तुम्हें पा लेना चाहता था, लेकिन माता-पिता के द्वारा एक धनी व्यक्ति की बेटी से विवाह तय करने के कारण ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित हुई कि मैं उनसे बाहर न निकल पाया। अमित ने बताया कि उसकी अनिच्छा के बावजूद उसका विवाह करवाया जा रहा था, जिसका वह विरोध न कर पाया था। यही उसकी सबसे बड़ी भूल थी।

अमित ने मीनू को बताया कि उस लड़की से रिश्ता टूटने के बाद से उसने कोई अन्य लड़की देखने का प्रयास नहीं किया, जिससे मेरे माता-पिता भी बहुत दुःखी हैं। मैंने तुम्हें अपनी जीवन-संगिनी मान लिया था, इसलिए मैं अभी तक तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

अमित ने कहा कि मुझे मालूम हुआ कि तुम वकालत की पढ़ाई कर रही हो, तो मैं नहीं चाहता था कि तुम्हारी पढ़ाई बीच में ही छूटे, इसलिए मैंने तुमसे कुछ न कहा, परंतु आज जब तुम्हारी वकालत पूरी हुई है, तो ईश्वर ने मुझे इस योग्य न छोड़ा। अमित की बातें सुनकर मीनू की आँखों में आँसू आ गए।

### अमित का क्षमा-याचना करना

अमित स्वयं को नियंत्रित करते हुए मीनू से कहता है कि मैंने अपने हृदय की बात बताने के लिए तुम्हें यहाँ बुलाया था, जिससे तुम मुझे क्षमा कर सको। वैसे ईश्वर तो मुझे दंडित कर चुका है, लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम भी मुझे क्षमा कर दो। इसके बाद अमित की आँखों में आँसू उमड़ पड़े।

अमित की बातें सुनकर मीनू का दिल भर आया। उसने अमित से कहा कि “अमित भाग्य ने हमारे साथ धोखा किया है। इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है और जहाँ तक क्षमा करने की बात है, तुमने कोई अपराध ही नहीं किया, तो क्षमा किस बात की। अमित मीनू से कहता है कि वह मृत्यु शैया पर लेटा है और अगर वह उसे क्षमा न करेगी, तो वह चैन से मर भी न पाएगा।”

### अमित की माँ का अस्पताल पहुँचना

मीनू ने अमित को सांत्वना देकर कहा कि वह ऐसा न कहे। ईश्वर की कृपा से वह ठीक हो जाएगा। अमित उदास स्वर में कहता है कि अगर वह ठीक हुआ भी तो पूरी तरह ठीक न हो पाएगा, तभी अमित की माँ ने कमरे में प्रवेश किया। वे मीनू को पहचान न सकीं। हाँ, उन्हें यह आभास अवश्य हुआ कि वे उसे पहले कहीं देख चुकी हैं।

मीनू ने माँ को नमस्कार किया। अमित माँ को बताता है कि यह मीरापुर वाली मीनू है। माँ मीनू से उसके मेरठ में होने का कारण पूछती हैं। वह बताती है कि वह वकालत की पढ़ाई कर रही है और अब उसके अंतिम वर्ष का परीक्षाफल भी आने वाला है। माँ ने भावुक होते हुए कहा कि मेरे बेटे पर न जाने कौन-सी घड़ी आ गई है कि उसकी यह हालत हो गई है।

### मीनू का सांत्वना देना

मीनू ने अमित की माँ को सांत्वना देते हुए कहा कि वे ठीक हो जाएँगे। अमित की इस हालत को देखकर मीनू के हृदय में अमित के प्रति दया एवं प्रेम उमड़ पड़ा। वह चाहती थी कि यहाँ रुककर अमित की सेवा करे, उसे लगने लगा जैसे उसका और अमित का रिश्ता कितना पुराना है। उसके मस्तिष्क में अनेक विचार आने लगे हैं कि क्या उसका यहाँ रहना उचित होगा?

मीनू वहाँ से जाने का निर्णय लेती है, किंतु उसको जाता देख अमित का चेहरा उदास हो जाता है। अमित चाहता था कि मीनू उसके पास ही रहे। मीनू ने उसके भावों को समझ लिया था, किंतु वह और अधिक देर वहाँ न रुककर चली जाती है।

### शब्दार्थ

दृष्टिगोचर—दिखाई पड़ने योग्य (visible); विघ्न—बाधा (disturbance); निर्दोष—दोष रहित (innocent, flawless); वर्जित—प्रतिबंधित (restricted); प्रतिष्ठित—माननीय (honorable); जीवन संगिनी—पत्नी (life-partner, wife)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- माया, मैंने अपनी माँ को पत्र में लिख दिया था कि मैं परीक्षा समाप्त होने के दो दिन बाद मीरापुर आऊँगी, क्योंकि एक दिन नीलिमा के पास मिलने के लिए जाना है और दूसरे दिन घर के लिए कुछ सामान खरीदना है।

(क) मीनू घर क्यों जा रही थी? (2)

**उत्तर** मीनू की वकालत की अंतिम वर्ष की परीक्षाएँ समाप्त हो गई थीं। उसके कॉलेज में परीक्षा के बाद की छुट्टियाँ पढ़ने वाली थीं, इसलिए मीनू घर जा रही थी।

(ख) माया और मीनू ने कहाँ जाने का निर्णय किया था? (2)

**उत्तर** माया और मीनू दोनों ही परीक्षाओं के समाप्त होने के कारण अत्यधिक प्रसन्न थीं। परीक्षाओं के दौरान निरंतर पढ़ने से दोनों ही अत्यधिक थकावट महसूस कर रही थीं, इसलिए दोनों ने मिलकर फिल्म देखने का निर्णय किया।

(ग) माया, मीनू से किस विषय में प्रश्न पूछती है तथा मीनू क्या उत्तर देती है? (3)

**उत्तर** माया, मीनू से उसके घर जाने के विषय में प्रश्न पूछती है। मीनू ने माया को उत्तर दिया कि उसने अपनी माँ को पहले ही पत्र भेजकर सूचित कर दिया था कि वह परीक्षा समाप्त होने के दो दिन बाद मीरापुर आएगी, क्योंकि उसे अपनी सहेली नीलिमा से मिलने जाना है और अपने घर के लिए सामान भी खरीदना है।

(घ) मीनू की बात सुनकर माया ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की? (3)

**उत्तर** मीनू से दो दिन के बाद घर वापस जाने की बात सुनकर माया उदास हो जाती है। वह मीनू से कहती है कि मीनू यह अच्छा है कि तुम दो दिन और यहीं रुकोगी, इसी वजह से हम कुछ समय और एक साथ रह सकेंगे, क्योंकि इसके बाद तो हम अलग हो जाएँगे और न जाने फिर कब मिलना हो।

- “मीनू, मैं तो पहले ही तुम्हारे पास आ गई होती, परंतु इसलिए नहीं आई, क्योंकि मेरे आने पर तुम्हारी पढ़ाई में विघ्न पड़ता। वैसे मैं यहाँ बहुत देर से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही थी।” सुरेंद्र जी को कुछ उदास देखकर मीनू से रहा न गया। वह नीलिमा से पूछ ही बैठी, “नीलिमा, आज तुम लोग कुछ उदास लग रहे हो, क्या बात है, स्वास्थ्य तो ठीक है न सबका।”

(क) नीलिमा से मिलने पर मीनू की क्या प्रतिक्रिया थी? (2)

**उत्तर** नीलिमा से मिलने पर मीनू अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव करती है, उसकी प्रसन्नता उसके चेहरे पर स्पष्ट रूप से नजर आ रही थी।

(ख) नीलिमा, मीनू से मिलने क्यों नहीं आई थी? (2)

**उत्तर** नीलिमा ने मीनू से कहा कि वह उसकी परीक्षाएँ होने के कारण उससे मिलने नहीं आई थी, क्योंकि अगर वह उससे मिलने आती, तो उसकी पढ़ाई में विघ्न (रुकावट) उत्पन्न होता।

(ग) मीनू किस कारण स्वयं को नहीं रोक सकी और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू सुरेंद्र की उदासी को देखकर स्वयं को रोक नहीं सकी, क्योंकि नीलिमा से सुरेंद्र की उदासी का कारण जानने की कोशिश करते हुए सबके स्वास्थ्य के विषय में जानने की इच्छा से कहा कि “नीलिमा, आज तुम लोग कुछ उदास लग रहे हो, क्या बात है, स्वास्थ्य तो ठीक है न सबका?”

(घ) नीलिमा ने सुरेंद्र की उदासी का क्या कारण बताया था? (3)

**उत्तर** मीनू के द्वारा सुरेंद्र की उदासी का कारण पूछने पर नीलिमा ने मीनू को बताया कि सुरेंद्र के मित्र अमित का तीन दिन पूर्व कार के ब्रेक फेल होने के कारण गंभीर रूप से एक्सीडेंट हुआ था, जिसमें उनकी हाथ-पैरों की हड्डियाँ टूट गई हैं। इसके अलावा कई अन्य गंभीर चोटें भी उन्हें लगी हैं। अमित की ऐसी गंभीर स्थिति के कारण ही सुरेंद्र उदास था।

- जैसे ही मीनू सोने की कोशिश करती, उसकी आँखों के सामने अमित का वह चेहरा घूम जाता, जो उससे कुछ कहने के लिए बेचैन था। उसके वे नेत्र, जो अपनी मूक भाषा में कहना चाहते थे कि वह निर्दोष है। रातभर मीनू इसी तरह बेचैनी में करवटें बदलती रही। कभी झपकी लग जाती, तो कभी चौंककर आँखें खुलतीं और उसके सामने अमित का वही चेहरा घूम जाता।

(क) अमित के प्रति मीनू में क्या परिवर्तन आ रहे थे? (2)

**उत्तर** अमित के परिवार द्वारा विवाह के लिए झूठ बोलकर अस्वीकार किए जाने के कारण जहाँ पहले मीनू के हृदय में अमित के लिए द्वेष एवं घृणा का भाव था, वहीं अब मीनू के हृदय में अमित के प्रति स्नेह का भाव उत्पन्न होने लगा था।

(ख) मीनू की आँखों के सामने किसका चेहरा आ जाता था व क्यों? (2)

**उत्तर** मीनू की आँखों के सामने अमित का चेहरा आ जाता था, क्योंकि अमित की गंभीर स्थिति जानकर मीनू के हृदय में उसके लिए स्नेह भाव उत्पन्न हो गया था। इस कारण अमित का चेहरा मीनू की आँखों के सामने बार-बार आ जाता था।

(ग) अमित का चेहरा देखते ही मीनू को क्या आभास होता? (3)

**उत्तर** मीनू जब सोने की कोशिश करती, तो उसकी आँखों के सामने अमित का चेहरा आ जाता, जिसे देखकर मीनू को सदैव यह आभास होता कि वह उससे कुछ कहने के लिए व्याकुल है। इसके अलावा मीनू को ऐसा भी प्रतीत होता था कि अमित के नेत्र अपनी मूक भाषा से स्वयं के निर्दोष होने के अलावा यह कहना चाहते हैं कि वह उसकी दुःख एवं पीड़ा का कारण नहीं था।

(घ) मीनू की बेचैनी का कारण स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** मीनू के हृदय में अमित के लिए उत्पन्न स्नेह भाव के कारण ही मीनू, अमित के साथ हुई दुर्घटना को सुनकर बेचैन हो उठी थी। अमित के प्रति उत्पन्न स्नेह भाव ही था कि मीनू की आँखों के सामने अमित का चेहरा आ जाता, जो हमेशा उसे अपने निर्दोष होने की बात कहता। इससे मीनू रातभर बेचैन होकर करवटें बदलती रही।



4. अमित के नेत्रों में आँसू देखकर मीनू का दिल भी भर आया। वह भाव-विभोर होकर बोली, “अमित, भाग्य ने हमारे साथ धोखा किया है। इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है और जहाँ तक क्षमा करने की बात है, जब तुमने कोई अपराध किया ही नहीं, तो क्षमा किस बात की।”

(क) अमित किस बात के लिए मीनू से क्षमा माँग रहा था? (2)

**उत्तर** मीनू को हुए दुःख एवं पीड़ा की वजह अमित स्वयं को मानता था। इस कारण वह मीनू से अपने अपराध के लिए क्षमा-याचना कर रहा था।

(ख) मीनू का दिल क्यों भर आया था? (2)

**उत्तर** मीनू से क्षमा-याचना करते हुए जब अमित की आँखों से पश्चाताप के आँसू बहने लगे, तो उन्हें देखकर मीनू का दिल भर आया था।

(ग) प्रस्तुत अवतरण का वक्ता तथा श्रोता कौन है तथा वे किस संदर्भ में बात कर रहे हैं? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण की वक्ता ‘मीनू’ तथा श्रोता ‘अमित’ है। अमित के एक्सीडेंट की बात सुनकर मीनू बैचन हो जाती है

तथा उससे मिलने अस्पताल पहुँचती है। जहाँ अमित को पलंग पर लेटा हुआ देखकर मीनू दुःखी होती है, परन्तु अमित उसे देखकर प्रसन्न होता है। वह अपने मन की सारी बातें मीनू को बता देता है तथा माफी माँगना चाहता है। इसलिए उसने मीनू को अस्पताल में मिलने के लिए बुलाया था।

वह कहता है कि ईश्वर उसके किए गए अपराधों की सजा दे चुका है। वह मीनू से भी क्षमा माँगना चाहता है। अमित के पश्चाताप को देखकर मीनू अत्यंत भावुक हो उठती है। अतः यहाँ इसी संदर्भ में बात हो रही है।

(घ) मीनू ने क्यों कहा कि इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** अमित, मीनू को अपने माता-पिता के द्वारा एक धनी व्यक्ति की बेटी से उसका विवाह तय करने के विषय में बता चुका था, किंतु फिर भी वह स्वयं को उसके दुःख एवं पीड़ा के लिए जिम्मेदार समझते हुए मीनू से माफी माँग रहा था। अमित को इस प्रकार पश्चाताप की अग्नि में जलता हुआ देख मीनू दुःखी हुई और अमित से कहा कि इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है, अपितु यह तो उनके भाग्य के द्वारा उनके साथ किया गया छल है, इसलिए तुम्हारा दुःखी होना व्यर्थ है।

## अध्याय 21

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में अमित की दशा देखकर मीनू के मन में आई उदासी, हॉस्टल में मन न लगने पर मीरापुर आ जाने, दो महीने बीतने पर भी प्रसन्न न रह पाने, माँ के पूछने पर बात टाल जाने, लेकिन अधिक जोर देने पर सारी बातें बताने, रोहित द्वारा परीक्षाफल के बारे में बताने पर खुशी में डूब जाने, मेरठ में वकालत के लिए रजिस्ट्रेशन कराने और महरी की लड़की के साथ ही मेरठ में किराए पर मकान लेकर रहने का उल्लेख किया गया है।

### मीनू का अचानक घर आना और माँ का चौंकना

मीनू को आज नीलिमा के घर जाना था, लेकिन वह कुछ उदास एवं परेशान-सी थी। उसे जिस व्यक्ति से आज तक घृणा थी, उसी के लिए वह इतनी परेशान क्यों? इस बात को वह स्वयं नहीं समझ पाई थी। इस दुविधा की स्थिति के कारण उसकी मेरठ में एक पल भी रुकने की इच्छा न हुई। वह अपने सामान को एकत्रित कर मीरापुर के लिए चल दी। मीनू के एक दिन पूर्व ही घर पहुँचने पर सभी उसे देखकर आश्चर्यचकित हुए। सभी ने मीनू से उसका हाल-चाल पूछा विचारों में खोई हुई मीनू से माँ ने उसकी परीक्षाओं के बारे में पूछा तो, मीनू ने चौंककर परीक्षाओं के अच्छे होने की बात कही। माँ मीनू से उसकी उदासी का कारण जानने की कोशिश करती है, लेकिन मीनू को थका हुआ जानकर माँ उसे आराम करने के लिए कहती है।

### मीनू की उदासी

मीनू को घर आए हुए लगभग दो महीने हो गए थे, लेकिन वह कभी-भी प्रसन्न न दिखाई दी। माँ ने मीनू से उसके उदास होने का कारण जानने की कोशिश की, लेकिन मीनू ने “कुछ नहीं, माँ” कहकर हर बार उनकी बात को टाल दिया। माँ, मीनू को समझाते हुए उसे अपनी परेशानी का कारण बताने के लिए कहती हैं कि माँ केवल माँ ही नहीं होती अपितु वह बच्चों की मित्र होती है, इसलिए उसे अपनी समस्या उन्हें बतानी चाहिए, शायद वे उसकी कुछ सहायता कर पाएँ। माँ के इस व्यवहार से मीनू अनुभव करती है कि माँ, माँ होने के साथ-साथ एक सच्ची मित्र भी होती हैं।

### पिताजी के साथ बातचीत और भविष्य की योजना

माँ और मीनू बातों में व्यस्त थीं, तभी पिताजी ने कमरे में प्रवेश किया और मीनू से पूछा-अब पढ़ाई समाप्त होने के बाद विवाह के विषय में उसका क्या विचार है? मीनू कुछ क्षण सोचने के उपरांत कहती है कि वह अभी प्रैक्टिस करना चाहती है और उसके बाद ही विवाह के विषय में विचार करेगी। पिताजी, मीनू को बेटी न मानकर होनहार बेटा मानते हैं, किंतु समाज के नियमों से बंधे होने के कारण कहते हैं कि समाज के कुछ नियम होते हैं और जब तक बेटी का विवाह न हो, तब तक माता-पिता को चैन नहीं मिलता। मीनू पिताजी की बातों को पलटते हुए परीक्षा परिणाम आने और प्रैक्टिस के लिए रजिस्ट्रेशन करवाने की इच्छा व्यक्त करती है। पिताजी उसकी इच्छा को स्वीकारते हुए उससे पूछते हैं कि वह प्रैक्टिस कहाँ करना चाहती है? मीनू ने बताया कि वह मेरठ में प्रैक्टिस करना चाहती है। पिताजी उसकी खुशी में ही अपनी खुशी की बात कहते हुए, वहाँ से चले गए।



### माँ को अपनी उदासी का कारण बताना

पिताजी के जाने के बाद माँ, मीनू से अपनी परेशानी का कारण बताने के लिए कहती हैं। मीनू, माँ को अमित के एक्सीडेंट तथा रिश्ता टूटने के बाद अभी तक उसका विवाह नहीं होने के विषय में बताती है। माँ, मीनू से पूछती हैं कि तुम्हें ये सब बातें कैसे पता चलीं? मीनू बताती है कि वह नीलिमा के पति सुरेंद्र का घनिष्ठ मित्र है और उन्हीं के घर वह उससे मिली थी। नीलिमा ने उसे अमित के एक्सीडेंट के बारे में बताया था, इसलिए वह घर आने से पहले अमित से अस्पताल में मिली थी। अमित ने ही उसे इस विषय में बताया था। माँ, अमित के अभी तक विवाह न करने का कारण जानने की कोशिश करती हैं, तो मीनू बताती है कि उनके द्वारा रिश्ता स्वीकार न किए जाने के बाद उसे अत्यधिक दुःख हुआ था। इस कारण आज तक उसने विवाह नहीं किया, तभी रोहित प्रसन्न मुद्रा में कमरे में प्रवेश करता है।

### परीक्षाफल से मिली खुशी

माँ, रोहित से उसकी प्रसन्नता का कारण पूछती है, जिस पर वह मीनू का परीक्षाफल आने की बात बताता है। परीक्षाफल के विषय में सुनकर मीनू बहुत प्रसन्न होती है। वह महसूस करती है कि वह अब अबला नहीं, बल्कि उसमें भी कुछ करने की क्षमता है। माँ भी मीनू की सफलता से प्रसन्न होती है। माँ से ही उसे प्रयत्नशील होकर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली थी। पिताजी ने प्रसन्न होकर मिठाई से मीनू का मुँह मीठा कराया और उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं।

### मीनू का प्रैक्टिस के लिए जाना

मीनू को मीरापुर में रहकर अपने उज्ज्वल भविष्य के बारे में शंका थी, इसलिए उसने मेरठ में प्रैक्टिस के लिए रजिस्ट्रेशन करवा लिया था। आज उसे मेरठ जाना था।

जब मीनू पढ़ने के लिए गई थी, तो उसके साथ केवल कपड़े और कुछ जरूरी सामान था, लेकिन आज वह घर-गृहस्थी का सभी सामान ले जा रही थी। मीनू जब छात्रावास में थी, तो सभी सुख-सुविधाएँ थीं, लेकिन अब उसे अलग घर बसाकर रहना था। पिताजी ने नीलिमा के पति से कहकर कमरे का इंतजाम करवा दिया।

वहाँ जाकर मीनू को अब रहना था। माँ को चिंता थी कि मीनू को न जाने कैसे पड़ोसी मिलें? इसलिए उन्होंने अपनी नौकरानी की छोटी बेटी को उसके साथ भेजने का निश्चय किया, ताकि उसे अकेलापन भी महसूस न हो और घर के कुछ काम भी हो जाएँगे। आज माँ, मीनू के जाने से दुःखी न होकर प्रसन्न थीं, क्योंकि आज उनकी बेटी इस योग्य बन चुकी थी कि वह समाज में अपना ऊँचा स्थान बनाकर रह सके।

### शब्दार्थ

धूमिल-सी-अस्पष्ट (foggy); प्रयत्नशील-आगे की ओर बढ़ने वाला (progressive); कामना-इच्छा (wishes); उज्ज्वल-प्रकाशमय (brighter); प्रस्थान-जाना/छोड़ना (departure); महरी-नौकरानी (maid)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. आज मीनू को नीलिमा के घर जाना था, पर वह आज कुछ अधिक उदास-सी थी। उसके मस्तिष्क में एक अजीब-सी परेशानी थी, जिससे आज तक वह इतनी घृणा करती थी, उसी के लिए आज इतनी परेशान क्यों .....? वह स्वयं ही कुछ नहीं समझ पा रही थी। हॉस्टल पहुँचने पर उसने अपना सब सामान एकत्रित करना प्रारंभ कर दिया। अब उसका यहाँ एक पल के लिए भी दिल नहीं लग रहा था। वह अपने सब सामान सहित मीरापुर के लिए चल दी।

(क) मीनू को कहाँ जाना था, लेकिन वह क्यों न गई? (2)

**उत्तर** मीनू को अपनी सहेली नीलिमा के घर उससे मिलने के लिए जाना था, लेकिन एक दिन पूर्व अमित से मिलने के कारण आज वह उदास एवं परेशान थी, इसलिए वह नीलिमा से मिलने के लिए नहीं गई।

(ख) मीनू क्या नहीं समझ पा रही थी? (2)

**उत्तर** एक दिन पूर्व ही अमित से मिलने के कारण वह आज स्वयं को असमंजस (दुविधा) की स्थिति में महसूस कर रही थी। आज तक वह जिस व्यक्ति से घृणा करती थी, आज उसी व्यक्ति के लिए वह चिंतित एवं परेशान थी। अपनी दुविधा की इस स्थिति को ही वह समझ नहीं पा रही थी।

(ग) मीनू, किससे घृणा करती थी और उसकी परेशानी का क्या कारण था? (3)

**उत्तर** मीनू, अमित से घृणा करती थी, जिसका कारण था-उसके माता-पिता के द्वारा झूठ बोलकर विवाह के लिए मीनू को अस्वीकार करना। आज मीनू अमित के लिए परेशान थी, क्योंकि अमित से अस्पताल में मिलने के कारण उसने अमित में पछतावा एवं अपने आप में खेद होने के भाव को महसूस किया था। इससे अमित के प्रति उसके हृदय में दया एवं प्रेम के भाव उत्पन्न हो गए थे। इन्हीं कोमल भावनाओं के कारण आज वह परेशान थी।

(घ) मीनू ने क्या निर्णय किया था और क्यों? (3)

**उत्तर** मीनू स्वयं को आज दुविधा की स्थिति में महसूस कर रही थी। इस कारण आज वह अपनी सहेली नीलिमा से मिलने के लिए उसके घर नहीं गई। अब उसका एक पल के लिए भी छात्रावास में रहने का मन नहीं था, इसलिए मीनू ने अपने सामान को एकत्रित किया और एक दिन पहले ही मेरठ से अपने घर मीरापुर जाने का निर्णय किया।

2. मीनू, पिताजी के इस प्रश्न का तुरंत उत्तर न दे सकी। वह कुछ क्षण बाद सोच-विचारकर बोली, “पिताजी, मैं अपनी प्रैक्टिस शुरू करने के बाद ही विवाह के बारे में विचार करूँगी।”  
“बेटी, यह बात ठीक है, परंतु हम चाहते हैं कि तुम्हारा विवाह हो जाता, तो हम अपनी चिंता से मुक्त हो जाते। मेरी भी तबीयत कुछ ठीक-सी नहीं रहती है।”

(क) पिताजी ने मीनू से क्या प्रश्न पूछा था? (2)

**उत्तर** पिताजी ने मीनू से यह प्रश्न पूछा था कि अब तुम्हारी पढ़ाई भी समाप्त हो गई है, तुम्हारा अब विवाह करने के विषय में क्या विचार है? अर्थात् उसके पिता जी चाहते थे कि मीनू अब विवाह कर ले।

(ख) मीनू ने पिताजी के प्रश्न का क्या उत्तर दिया था? (2)

**उत्तर** पिताजी के द्वारा विवाह करने के विषय में प्रश्न पूछने पर, मीनू ने उनसे कहा कि वह अभी अपनी वकालत की प्रैक्टिस करना चाहती है। उसके बाद ही वह विवाह करने के विषय में विचार करेगी।

(ग) पिताजी को क्या चिंता थी और क्यों? (3)

**उत्तर** पिताजी को मीनू के विवाह की चिंता थी। उनका मानना था कि अगर मीनू विवाह कर ले, तो वह एक पिता होने के नाते मीनू के विवाह के बाद चिंतामुक्त हो जाते, क्योंकि अब उनकी तबीयत भी ठीक नहीं रहती थी। वे यह भी बताते हैं कि समाज के भी अपने कुछ नियम हैं, जिनके अनुरूप सभी को चलना होता है। जब तक माता-पिता अपनी बेटियों का विवाह नहीं करते, तब तक उन्हें चैन नहीं मिलता।

(घ) मीनू विवाह क्यों नहीं करना चाहती थी? (3)

**उत्तर** मीनू ने अभी अपनी वकालत की पढ़ाई पूरी की थी और उसने पढ़ाई आरंभ करते समय ही अपने पैरों पर खड़े होकर आत्मनिर्भर बनने का लक्ष्य निर्धारित किया था। जब उसकी वकालत की पढ़ाई पूरी हो गई थी, तो उसने अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मेरठ जाकर प्रैक्टिस करने का निर्णय किया, इसलिए वह अभी विवाह नहीं करना चाहती थी।

3. “एक बार तो नीलिमा ने ही मुझे अमित के विषय में बताया था। वैसे जिस दिन मैं यहाँ आई थी, उस दिन अमित से अस्पताल में मिलकर आई थी। उस दिन उसने मुझे सारी बातें बताई थीं।”  
“अच्छा, पर इस बात को तो तीन वर्ष हो चुके हैं। उसने अभी तक शादी क्यों नहीं की?”

(क) वक्ता और श्रोता किस विषय पर बातें कर रहे थे? (2)

**उत्तर** वक्ता और श्रोता अर्थात् मीनू व उसकी माँ, अमित से मीनू के मिलने एवं उसके एक्सीडेंट के विषय में बातें कर रहे थे। साथ ही मीनू, माँ को बताती है कि रिश्ता टूटने के बाद अभी तक अमित का विवाह तय नहीं हुआ है।

(ख) नीलिमा ने अमित के विषय में क्या बताया था? (2)

**उत्तर** नीलिमा ने अमित के विषय में मीनू को बताया था कि उसका विवाह एक धनी सेठ की बेटी से तय हो गया था। अमित इच्छा न होने के बावजूद भी अपने माता-पिता से इसका विरोध न कर पाया था, परंतु कुछ समय बाद ही उसका रिश्ता टूट गया था।

(ग) मीनू कहाँ गई थी और वहाँ जाकर उसे क्या पता चला? (3)

**उत्तर** मीनू अमित से मिलने अस्पताल गई थी। वहाँ जाकर उसे अमित के विषय में पता चला। अमित ने उसके सामने अपने हृदय की भावनाओं को व्यक्त करते हुए उसके प्रति लगाव और अपने माता-पिता द्वारा एक धनी सेठ की बेटी से विवाह के प्रस्ताव में अपनी इच्छा न होने के विषय में भी बताया। उसने कहा कि तुम्हारा रिश्ता अस्वीकार करके मैंने तुम्हें बहुत दुःख पहुँचाया है। इससे मुझे अत्यधिक आत्मग्लानि महसूस हुई।

(घ) किस बात को तीन वर्ष हो गए थे और किसने अभी तक विवाह नहीं किया था? (3)

**उत्तर** अमित व उसके माता-पिता, मीनू को देखने के लिए उसके घर तीन वर्ष पहले आए थे। उन्होंने मीनू के परिवार से झूठ बोलकर मीनू से विवाह के लिए मना कर दिया था, इस बात को तीन वर्ष हो गए थे। माता-पिता के द्वारा मीनू से विवाह के लिए मना किए जाने के बाद अमित ने भी अभी तक विवाह नहीं किया था, क्योंकि वह पश्चाताप की आग में जल रहा था।

## अध्याय 22

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में मीनू द्वारा मेरठ में कमरा लेने, कभी-कभी नीलिमा के घर चले जाने, अस्पताल जाकर अमित को देखने, उसकी माँ के साथ हुई बातचीत, अमित को अभी चार महीने और अस्पताल में रहने, शाम को कमरे पर देर से पहुँचने, राजो के साथ खाना खाने तथा अमित के बारे में सोचने से उत्पन्न मीनू की बेचैनी का उल्लेख किया गया है।

### मीनू की मेरठ में प्रैक्टिस की शुरुआत

मीनू का कमरा मेरठ की एक साफ-सुथरी बस्ती में था, जो पूरी तरह अव्यवस्थित था। कमरे को व्यवस्थित करने में नीलिमा ने मीनू व राजो की पूरी सहायता की थी। राजो उम्र में छोटी अवस्था थी, लेकिन उसके साथ में रहने से मीनू को कभी अकेलापन महसूस नहीं हुआ था। वह सुबह कचहरी जाती और शाम को आती। यदि कभी अकेलापन ज्यादा महसूस करती, तो नीलिमा से मिलने उसके घर चली जाती।

मीनू को नीलिमा से अमित के अभी भी अस्पताल में होने की खबर मिल गई थी, इसलिए उसने निश्चय किया कि वह शाम को अमित से मिलने अस्पताल जाएगी। आज कचहरी में अधिक व्यस्तता के कारण वह थक गई थी, इसलिए उसका मन हुआ कि वह घर जाकर आराम करे, लेकिन उसके कदम स्वयं ही अस्पताल की ओर बढ़ चले। मीनू दुविधा में थी कि वह अस्पताल जाए या न जाए, लेकिन वह कोई फैसला कर पाए इससे पहले ही स्वयं को उसने अस्पताल के सामने खड़ा पाया।

### मीनू की अमित और उसकी माँ से मुलाकात

मीनू ने अमित से मिलने के लिए जैसे ही कमरे में प्रवेश किया उसने देखा कि अमित और उसकी माँ बातें कर रहे थे। मीनू को देखकर दोनों प्रसन्न हो गए। अमित की माँ ने उसे बैठने के लिए कहते हुए उसकी पढ़ाई के विषय में पूछा। मीनू ने उन्हें बताया कि उसने वकालत की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास कर ली है और अब वह मेरठ में ही प्रैक्टिस कर रही है। मीनू के मेरठ में प्रैक्टिस करने की बात सुनकर अमित व उसकी माँ दोनों ही प्रसन्न हुए, लेकिन अमित के हृदय में व्याप्त इस

हीनभावना ने उसे उदास कर दिया कि क्या वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो पाएगा और क्या उसके शरीर के अंग पहले की तरह कार्य कर पाएँगे? जैसे अनेक प्रश्न उसके मस्तिष्क में घूमने लगे।

### अमित के चेहरे पर उदासी छाना

स्वास्थ्य संबंधी प्रश्नों के मस्तिष्क में आने से अमित उदास हो गया। उसकी उदासी को भाँपते हुए मीनू ने उसकी तबीयत के बारे में पूछा। तबीयत में थोड़ा सुधार होने की बात कहते हुए उसके चेहरे पर उदासी छा गई थी। माँ, मीनू से कहती है कि डॉक्टर अपनी ओर से पूरा प्रयत्न कर रहे हैं, लेकिन सब कुछ ईश्वर के हाथ में है। अब इसे दवा और दुआ दोनों की ही आवश्यकता है। अमित की माँ को उदास देखकर मीनू भी उदास हो जाती है। वह उनसे पूछती है कि अभी अमित को कितने समय तक यहाँ रहना होगा? माँ ने बताया अभी चार महीने। वे भाग्य को कोसते हुए कहती हैं कि समय का चक्र किसी को समझ नहीं आता। उसने देखा कि घड़ी में शाम के छः बज गए थे, खिड़की से बाहर देखने पर बिजली का प्रकाश दिखाई दे रहा था, उसने अमित की माँ से आज्ञा ली और घर चली गई।

### राजो के व्यवहार में अपनेपन का भाव

मीनू के कमरे पर पहुँचने पर राजो उससे देरी से आने के विषय में पूछती है, जिसे सुनकर मीनू को गुस्सा आ जाता है कि वह कौन होती है, उससे कुछ पूछने वाली? तभी मीनू को ध्यान आया कि वही तो इस समय उसका एकमात्र सहारा है और अगर वह न होती तो मीनू किस प्रकार यहाँ अकेले रह पाती। राजो मीनू को कहती है कि मैंने पहले ही खाना बना लिया था ताकि आप जल्दी से खाकर आराम कर लें। मीनू

को राजो के व्यवहार में अपनेपन का अहसास हुआ और वह राजो से कहती है कि वह उसका बहुत ध्यान रखती है। राजो कहती है कि इस परदेश में यदि वह उसका ध्यान नहीं रखेगी, तो कौन रखेगा? मीनू उसकी बातें सुनकर उसे अपने लिए भी खाना लाने की बात कहती है और दोनों साथ भोजन करती हैं। राजो घर का काम समाप्त करती है और मीनू कुछ देर तक पढ़ती है। बाद में दोनों अपने-अपने बिस्तर पर लेट जाती हैं।

### मीनू की विचारमग्नता/मीनू का विचारों में खो जाना

सारे दिन काम करने के बाद राजो गहरी नींद में सो रही थी, परंतु मीनू अभी-भी जगी हुई थी। उसके मस्तिष्क में केवल अमित का उदास चेहरा घूम रहा था। अमित स्वयं की हालत से बहुत निराश था। मीनू को ध्यान आया कि अमित ने मीनू के इंतजार में ही इतने वर्षों तक विवाह नहीं किया, जबकि उसे अन्य कोई अच्छी लड़की मिल सकती थी।

उसे एक विचार बेचैन कर जाता है कि यदि अमित अपाहिज हो गया, तो उसे अमित के साथ विवाह करना चाहिए या नहीं, परंतु उसने सोचा यह दुर्घटना तो विवाह के बाद भी घटित हो सकती थी। मीनू सोचती है कि यदि अमित इतने वर्षों तक उसका इंतजार कर सकता है, तो क्या इस दुर्घटना के कारण उसे अमित की इच्छाओं को ठुकरा देना चाहिए। ऐसे ही अनेक विचार मीनू को बेचैन कर गए कुछ समय के बाद उसे भी नींद आ गई।

### शब्दार्थ

चक्र—पहिया (Wheel) कचहरी—अदालत (Court)

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. परंतु दूसरे ही क्षण मीनू के कदम अस्पताल की ओर बढ़ चले। उसके हृदय में एक अंतर्द्वंद्व था। उसका अस्पताल जाना उचित होगा या नहीं। कई बार अंतःप्रेरणा ने उसे वापस मुड़ जाने के लिए प्रेरित किया, परंतु वह इस अंतर्द्वंद्व में फैसला नहीं कर पाई। उसके कदम अस्पताल की ओर बढ़ते गए। उसने देखा कि वह अस्पताल के सामने खड़ी थी।

(क) मीनू कहाँ जा रही थी और क्यों? (2)

**उत्तर** मीनू, अमित से मिलने के लिए अस्पताल जा रही थी, क्योंकि मीनू को नीलिमा से ज्ञात हुआ था कि अमित की तबीयत में ज्यादा सुधार न हो पाने के कारण वह अभी-भी अस्पताल में है।

(ख) अस्पताल पहुँचने पर मीनू के प्रति सबकी क्या प्रतिक्रिया थी? (2)

**उत्तर** अस्पताल पहुँचने पर मीनू ने देखा कि अमित पलंग पर लेटा हुआ अपनी माँ से बातें कर रहा था। मीनू को अस्पताल आया हुआ देखकर अमित व उसकी माँ दोनों प्रसन्न हो गए।

(ग) मीनू के हृदय में अंतर्द्वंद्व क्यों था? (3)

**उत्तर** कचहरी में आज अत्यधिक व्यस्त होने के कारण मीनू बहुत थक गई थी। उसका मन हुआ कि वह घर जाकर आराम करे, लेकिन

अमित से मिलने के लिए जाने का फैसला करने से वह अंतर्द्वंद्व की स्थिति में थी कि वह उससे मिलने जाए या नहीं। एक ओर वह घर जाना चाहती थी तो वहीं दूसरी ओर अमित से मिलने अस्पताल। इस प्रकार वह दुविधा की स्थिति में कोई निर्णय ले पाती, इससे पहले उसने स्वयं को अस्पताल के सामने खड़ा पाया।

(घ) मीनू क्या फैसला नहीं कर पाई थी? (3)

**उत्तर** मीनू अंतर्द्वंद्व की स्थिति में थी कि अमित से मिलने अस्पताल जाना उसके लिए उचित होगा या नहीं। मीनू की अंतरात्मा उसे वापस घर जाने के लिए प्रेरित करती, परंतु उसने आज अमित से मिलने का निश्चय किया था। इस कारण वह स्वयं को दुविधा की स्थिति में महसूस कर रही थी। वह इस बात का फैसला नहीं कर पा रही थी कि उसे अमित से मिलने जाना चाहिए या नहीं।

2. “मीनू ने अमित के कमरे में प्रवेश किया, तो देखा कि अमित अपने पलंग पर लेटा हुआ है। मीनू को देखकर उन्होंने उसे प्रेमपूर्वक बैठाया। उसे देखकर अमित के मुरझाए चेहरे पर भी खुशी की लहर दौड़ गई।” [2017]

(क) मीनू अमित को देखने कहाँ गई थी? जाते समय वह मन में क्या सोच रही थी? (2)

**उत्तर** अमित का एकसीडेंट हो गया था। उसके हाथ-पैर की हड्डियाँ टूट गई थीं। उसे देखने के लिए ही मीनू अस्पताल गई। जाते समय वह सोच रही थी कि अब से चार महीने पहले अमित के लिए उसके मन में घृणा थी, परंतु अब न जाने क्यों स्नेह उत्पन्न हो गया है।

(ख) कमरे में प्रवेश करते ही उसने क्या देखा? अमित की माँ ने मीनू से क्या पूछा? उसने क्या उत्तर दिया? (2)

**उत्तर** अमित को देखने के लिए मीनू जब उसके कमरे में गई, तो उसने देखा कि उस समय अमित अकेला पलंग पर लेटा हुआ अपनी माँ से बातें कर रहा है। अमित की माँ ने मीनू से पूछा, “बेटी आजकल तुम मेरठ में क्या कर रही हो।” मीनू ने उन्हें बताया कि मैंने प्रथम श्रेणी में वकालत पूरी कर ली है और अब यहाँ मेरठ में ही प्रैक्टिस भी शुरू कर दी है।

(ग) मीनू के वकालत पास करने पर अमित की माँ को विशेष खुशी क्यों हो रही थी? क्या उन्हें अपनी गलती का अहसास हो गया था? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। (3)

**उत्तर** मीनू के वकालत पास करने पर अमित की माँ को विशेष खुशी इसलिए हो रही थी, क्योंकि मीनू ने निराश और हताश होकर कोई गलत कदम उठाने की जगह अपनी सकारात्मक सोच को ही नहीं बनाए रखा, बल्कि एक लक्ष्य निर्धारित किया और उसे पाने के लिए बहुत अधिक मेहनत भी की। अमित की माँ जानती थी कि अमित के विवाह के लिए एक दिन उसने मीनू को बहाने से अपनी बहू बनाने से अस्वीकार कर दिया था। इससे एक ओर जहाँ अमित की माँ को मीनू के वकालत पास करने पर खुशी हो रही थी, वहीं उन्हें अपनी गलती का अहसास भी हो रहा था।

(घ) मीनू के हृदय में बचपन से ही किसके प्रति दया की भावना थी? वह उनकी किस प्रकार सहायता करने का निश्चय करती है? (3)

**उत्तर** मीनू के हृदय में बचपन से ही दीन-दुखियों तथा शारीरिक रूप से कमजोर लोगों के प्रति दया की भावना थी। वह अपनी संवेदनशीलता के कारण ऐसे लोगों के प्रति दया की भावना रखती थी। ऐसे ही लोगों की सहायता के लिए उनकी शारीरिक अक्षमता को ध्यान में रखकर उनके अनुरूप ही काम का चुनाव करती थी। इससे अपंग व्यक्ति भी अपनी क्षमता का उपयोग कर काम कर सकता था। मीनू, राजो के चचेरे भाई मनोहर को पान की दुकान करा कर उसकी मदद करना चाहती थी, क्योंकि एक पैर के अभाव में वह चलने-फिरने में असमर्थ होने पर भी तथा हाथ की बाकी बची तीन अंगुलियों से पान लगा सकता था।

3. मीनू ने मेरठ में ही प्रैक्टिस शुरू कर दी है, यह जानकर अमित ने भी प्रसन्नता का अनुभव किया, परंतु दूसरे ही क्षण उसके हृदय की हीनभावना ने उसे उदास कर दिया। अब क्या वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो सकेगा? क्या उसके शरीर के सभी अंग पहले की तरह कार्य कर सकेंगे? आदि अनेक प्रश्न उसके मस्तिष्क में घूमने लगे।

(क) अमित से मिलने कौन आया था और क्यों? (2)

**उत्तर** अमित से मिलने के लिए मीनू अस्पताल आई हुई थी, क्योंकि उसे अमित से मिले हुए भी काफी समय बीत चुका था एवं आज उसकी याद आने पर उसने अमित से मिलने का निर्णय किया था।

(ख) अमित की प्रसन्नता का क्या कारण था? (2)

**उत्तर** मीनू का अमित से मिलने अचानक अस्पताल आना एवं उसके द्वारा यह बताना कि उसने मेरठ में ही अपनी वकालत की प्रैक्टिस आरंभ कर दी है, यही अमित की प्रसन्नता का कारण था।

(ग) अमित उदास क्यों हो गया था? (3)

**उत्तर** अमित के माता-पिता द्वारा मीनू को विवाह के लिए अस्वीकार किए जाने के बाद अमित के प्रति मीनू के हृदय में घृणा उत्पन्न हो गई थी, लेकिन अमित के साथ घटी दुर्घटना के उपरांत मीनू के हृदय में उसके लिए प्रेम भाव उत्पन्न हो गया था।

आज मीनू वकालत करती हुई आत्मनिर्भर बन गई थी, जबकि अमित इस दुर्घटना के बाद चल-फिर सकने में भी असमर्थ हो गया था। इससे उसमें हीनभावना आ गई थी और इसी हीनभावना के कारण वह उदास हो गया था।

(घ) अमित के मस्तिष्क में क्या विचार आने लगे थे? (3)

**उत्तर** अमित हीनभावना से घिरा होने के कारण उदास हो गया था। उसके मस्तिष्क में कई नकारात्मक विचार आने लगे थे। अपने स्वास्थ्य के प्रति चिंतित होने के कारण उसके मस्तिष्क में स्वयं के पूर्ण रूप से स्वस्थ होने एवं उसके शरीर के सभी अंग पहले की तरह कार्य करने में समर्थ होंगे या नहीं जैसे अनेक विचार आने लगे थे।

4. जैसे ही मीनू कमरे पर पहुँची तो राजो ने उससे पूछा, “दीदी आज आपको बहुत देर हो गई है। क्या आज कचहरी में बहुत काम था आपको?” राजो की यह बात सुनकर मीनू को क्रोध भी आया कि यह नन्ही बच्ची कौन होती है? उससे ये बात पूछने वाली। दूसरे ही क्षण उसे ध्यान आया कि राजो ही तो इस समय उसका एकमात्र सहारा है। यदि राजो न होती तो क्या वह अकेली यहाँ रह सकती थी?

(क) राजो कौन थी? वह मीनू के साथ क्यों रहती थी? (2)

**उत्तर** राजो मीनू के घर की नौकरानी की छोटी बेटी थी। वकालत की प्रैक्टिस करने के लिए मेरठ आते समय माँ ने राजो को मीनू के साथ भेज दिया था ताकि मीनू को अकेले न रहना पड़े। इस कारण वह मीनू के साथ रहती थी।

(ख) मीनू देरी से क्यों आई थी? (2)

**उत्तर** मीनू को कचहरी में बहुत काम था, उसे कई मुकदमे मिल गए थे। अपना कचहरी का काम समाप्त करने के बाद वह अमित से मिलने के लिए अस्पताल चली गई थी, जिस वजह से उसे घर आने में देरी हो गई थी।

(ग) राजो द्वारा मीनू से देरी से आने का कारण पूछने पर मीनू की क्या प्रतिक्रिया थी एवं उसमें क्या परिवर्तन आया? (3)

**उत्तर** मीनू अमित से मिलने के बाद जब देरी से घर पहुँची तो राजो ने मीनू से उसके देरी से घर आने का कारण जानने की कोशिश की। मीनू, राजो के प्रश्न को सुनकर आग-बबूला (गुस्सा) होकर यह सोचने लगी कि वह छोटी-सी लड़की उससे यह प्रश्न कैसे एवं किस अधिकार से पूछ रही है? लेकिन दूसरे ही क्षण उसे विचार आया कि वही तो यहाँ मेरठ में उसका एकमात्र सहारा है, अन्यथा वह यहाँ अकेले कैसे रह सकती थी?

(घ) राजो किस प्रकार मीनू का एकमात्र सहारा थी? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** मीनू अपने घर से दूर मेरठ में अकेली रहती थी। उसके प्रत्येक सुख-दुःख में उसके साथ केवल राजो ही थी, जिसे माँ ने मीनू के साथ भेजा था, ताकि मीनू को मेरठ में अकेलेपन का अहसास न हो और वह उसकी घर के कार्यों में भी मदद कर सके। राजो घर का काम करते हुए उसका ध्यान रख रही थी, इससे मीनू को उसके व्यवहार से अपनेपन का अहसास होता था, इसलिए मीनू को लगा कि वही तो मेरठ में उसका एकमात्र सहारा है।

## अध्याय 23

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में वकालत करते हुए मीनू की प्रसिद्धि बढ़ने, आशा और उसके पति का उससे मिलने आने, आशा द्वारा मीनू को समझाने तथा घर का हाल-चाल बताने के साथ-साथ दिल्ली जाकर रोहित से मिलने का उल्लेख किया गया है।

#### वकालत में मीनू की बढ़ती प्रसिद्धि

आठ माह के भीतर ही मीनू ने स्वयं को वकालत के क्षेत्र में स्थापित कर लिया था। मीनू दिखने में अवश्य छोटी एवं पतली थी, लेकिन उसके जोश, उत्साह एवं लगन से उसकी कामयाबी के चर्चे चारों ओर फैल गए थे। उसकी प्रभावमयी आवाज़ ने सबको मोहित कर लिया था। उसे देखकर कोई विश्वास नहीं कर सकता था कि वह इतनी साहसी होगी। पिछले आठ माह में मीनू अमित से केवल चार बार ही मिली थी, वह भी एक हित चाहने वाले के रूप में। पिछले दो माह में तो वह उससे मिल ही न सकी थी और न ही उसका कोई समाचार मिला था। रविवार होने के कारण आज वह स्वतंत्र अनुभव कर रही थी, इसलिए उसने आज नीलिमा के घर जाने का निश्चय किया था। मीनू जैसे ही जाने के लिए तैयार हुई, तभी आशा अपने पति एवं अपने बेटे के साथ मीनू से मिलने उसके घर आ गई थी।

#### मीनू में जागी मातृत्व की भावना

आशा से लगभग आठ माह के बाद मिलने पर मीनू ने अनुभव किया कि आशा में कितना अधिक परिवर्तन आ गया है। आशा मीनू से छोटी थी, लेकिन अब मीनू उससे छोटी प्रतीत हो रही थी। आशा का बेटा बहुत प्यारा था। उसका रंग-रूप आशा के समान ही था। मीनू ने उसे अपनी गोद में ले लिया, लेकिन उसकी गोद में आते ही उसने रोना शुरू कर दिया था। उसको रोता देख आशा के पति ने मज़ाक में कहा था कि “बेटे रोते नहीं हैं, आप इस समय मौसी की गोद में हो और मौसी तो माँ-सी ही होती है।” उनकी बात को सुनकर सभी खिलखिला कर हँसने लगे। रोते हुए बच्चे को आशा ने अपनी गोद में लेकर सुला दिया था।

आशा की गोद में बच्चे को देखकर मीनू में मातृत्व की भावना जाग उठी थी और वह सोचने लगी कि कितना सुखद अनुभव है माँ बनना और आशा कितनी भाग्यशाली है। आशा के पति के बाज़ार जाने के बाद दोनों बहनें कई घंटों तक आपस में बातें करती रहीं।

#### आशा द्वारा मीनू को समझाना

आशा, मीनू के भविष्य को लेकर चिंतित थी, इसलिए मीनू को समझाते हुए उसने कहा कि जिंदगी बहुत लंबी है। इसमें एक अवस्था ऐसी आती है, जब उसे अपने पति और बच्चों का ही सहारा होता है। आशा का यह इशारा वृद्धावस्था की ओर था, जब इंसान लाचारावस्था में पहुँच जाता है। “इतनी जल्दी भी क्या है? फिर सोच लेंगे” यह कहते हुए मीनू वहाँ से उठ कर चली जाती है।

#### आशा द्वारा चर्चा का विषय बदलना

आशा को लगता है कि मीनू को उसके विवाह के बारे में बात करना अच्छा नहीं लगा, तो उसने अपनी बातचीत का विषय बदल दिया और परिवार के सदस्यों का हालचाल पूछने लगी। मीनू ने उसे बताया कि पिताजी का स्वास्थ्य ठीक है और माँ भी ठीक हैं। वह पूरे दिन घर के कार्यों में ही व्यस्त रहती हैं। रोहित इंजीनियरिंग पूरी करने के बाद दिल्ली में ही नौकरी कर रहा है, जहाँ उसे तीन हजार रुपये महीना मिलता है।

आशा अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहती है कि रोहित ने उसे पत्र नहीं लिखा, लेकिन कल दिल्ली जाने के पश्चात् वह उससे मिलने जाएगी। किस प्रकार रविवार बीत गया, यह मीनू को पता ही नहीं चला। अगले दिन आशा दिल्ली चली गई। घर से सभी के जाने के बाद घर में शांति-सी छा गई थी।

#### शब्दार्थ

उत्साह—जोश (enthusiasm); हितैषी—हित चाहने वाला (well wisher); मातृत्व—ममत्व (motherhood); लापरवाही—असावधानी (negligence)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. इन आठ महीनों में उसने अपनी धाक जमा ली थी। दिखने में पतली, छोटी-सी दीखने वाली मीनू की आवाज़ में कितना जोश था, कितना उत्साह था, उसकी बुलंदी के चर्चे चारों ओर फैल गए थे। उसकी रौबिली आवाज़ सबके मन को मोह गई थी। मीनू को साधारण रूप से देखने वाला व्यक्ति विश्वास ही नहीं कर सकता था कि वह इतनी साहसी होगी।

(क) उपरोक्त कथन के अनुसार, किसने व कहाँ अपनी धाक जमा ली थी? (2)

**उत्तर** मीनू ने मेरठ में अपनी वकालत की प्रैक्टिस आरंभ कर अपनी धाक जमा ली थी। आठ माह के अल्प समय में ही उसने अपनी मेहनत एवं लगन से वकालत के क्षेत्र में स्वयं को स्थापित कर लिया था।

(ख) मीनू के प्रसिद्ध होने का क्या कारण था? (2)

**उत्तर** छोटी एवं पतली-सी दिखने वाली मीनू अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान एवं ईमानदार थी। अपने जोश एवं उत्साह के कारण ही वह ऊँचाइयों पर पहुँची थी। यही उसकी प्रसिद्धि का कारण था।



- (ग) एक साधारण व्यक्ति क्या विश्वास नहीं कर सकता था और क्यों? (3)
- उत्तर** मीनू को देखकर कोई व्यक्ति यह विश्वास नहीं कर सकता था कि वह इतनी साहसी होगी और आठ माह के भीतर वकालत के क्षेत्र में अपनी धाक जमा लेगी। एक साधारण-सी, छोटी एवं दुबली-पतली-सी दिखने वाली लड़की को देखकर कोई भी यह विश्वास नहीं कर सकता था कि उसमें वह जोश, वह उत्साह और जुनून होगा, जो वकालत के लिए अनिवार्य होता है।
- (घ) अवतरण के आधार पर मीनू की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (3)
- उत्तर** मीनू दिखने में साधारण, किंतु असाधारण व्यक्तित्व वाली युवती थी। वह अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा, ईमानदारी एवं लगन के कारण ही आज वकालत के क्षेत्र की बुलंदियों पर पहुँची थी। मीनू अपनी जोशीली एवं प्रभावमयी आवाज़ से सबको अपने वश में कर लेती थी। सभी उसकी रौबिली आवाज़ से प्रभावित थे। मीनू का उत्साह एवं उमंग उसके लक्ष्य तक पहुँचने की ललक को उजागर करते हैं।
- 2.** तभी मजाक करते हुए आशा के पति बोले, “बेटे रोते नहीं हैं। आप इस समय मौसी की गोद में हो और मौसी तो माँ-सी ही होती है।” उनकी इस बात को सुनकर सब हँस पड़े, परंतु वह बच्चा रोता ही रहा। फिर आशा ने उसे अपनी गोद में लेकर सुला दिया। आशा की गोद में उस नन्हें को देखकर मीनू का हृदय मातृत्व की भावना से अभिभूत हो उठा। कितना भला लगता है माँ बनना भी! आशा कितनी भाग्यशाली है।
- (क) मीनू के घर कौन-कौन आया था? (2)
- उत्तर** मीनू जब नीलिमा के घर जाने की तैयारी कर रही थी, तभी उसके घर उसकी छोटी बहन आशा, अपने पति एवं अपने बच्चे के साथ उससे मिलने आई।
- (ख) बच्चे ने रोना क्यों शुरू कर दिया था? (2)
- उत्तर** मीनू ने बच्चे को जब आशा की गोद से ले लिया, तो मीनू को अनजान जानकर बच्चे ने रोना शुरू कर दिया था। वह अभी अपनी मौसी मीनू को पहचानता नहीं था।
- (ग) किसकी बातें सुनकर सब हँस पड़े थे? (3)
- उत्तर** बच्चे ने मीनू की गोद में जाते ही रोना शुरू कर दिया था, तब आशा के पति ने कहा कि “बेटे, रोते नहीं हैं। आप इस समय मौसी की गोद में हो और मौसी तो माँ-सी ही होती है।” आशा के पति द्वारा यह उक्ति कहने पर सभी हँसने लगे थे।
- (घ) आशा की गोद में बच्चे को देखकर मीनू ने क्या महसूस किया? (3)
- उत्तर** आशा की गोद में बच्चे को देखकर मीनू का हृदय मातृत्व की भावना से भर गया, उसमें ममत्व का भाव जाग उठा था। मीनू सोचने लगी कि माँ बनना कितना सुखद अनुभव है एवं आशा कितनी भाग्यशाली है।
- 3.** बातों-बातों में आशा मीनू से पूछ बैठी, “दीदी, अब तो आपकी वकालत पूरी हो गई है और आपने प्रैक्टिस भी शुरू कर दी है। अब आगे आपका क्या विचार है?”
- “आगे क्या विचार है, इस बारे में तो अभी मैंने कुछ सोचा नहीं है।” मीनू ने बड़ी लापरवाही से आशा के प्रश्न का उत्तर दिया।
- “दीदी, इतनी लंबी जिंदगी पड़ी है। एक अवस्था ऐसी आती है, जब अपने पति और बच्चों का ही सहारा होता है।” आशा ने मीनू को समझाते हुए कहा।
- (क) आशा ने मीनू से क्या पूछा था? (2)
- उत्तर** आशा ने मीनू से पूछा था कि वकालत की पढ़ाई पूरी होने पर अब

भविष्य के विषय में उसके क्या विचार हैं? वह मीनू से विवाह करने के विषय में उसकी राय जानना चाहती थी।

- (ख) मीनू ने आशा के प्रश्न का क्या जवाब दिया? (2)
- उत्तर** मीनू ने आशा के द्वारा विवाह के संबंध में प्रश्न पूछे जाने पर बड़ी ही लापरवाही के साथ जवाब देते हुए कहा अभी उसने इस बारे में कुछ सोचा नहीं है कि उसे आगे क्या करना है?
- (ग) “इतनी लंबी जिंदगी पड़ी है। एक अवस्था ऐसी आती है, जब अपने पति और बच्चों का ही सहारा होता है” उक्त पंक्ति किसने, किससे व क्यों कही? स्पष्ट कीजिए। (3)
- उत्तर** उक्त पंक्ति आशा ने अपनी बड़ी बहन मीनू से कही, क्योंकि वह मीनू के भविष्य को लेकर चिंतित थी। वह चाहती थी कि मीनू भी विवाह के लिए तैयार हो जाए, इसलिए वह वृद्धावस्था की ओर इशारा करते हुए मीनू को समझाने का प्रयास करती है कि एक समय ऐसा आता है, जब अपने पति व बच्चों का ही सहारा होता है, इसलिए उसे अब विवाह के विषय में सोच लेना चाहिए।
- (घ) अवतरण का भावार्थ स्पष्ट कीजिए। (3)
- उत्तर** मीनू, आशा से बड़ी थी फिर भी अभी तक उसने विवाह नहीं किया था। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पूरी लगन से जुटी हुई थी। वह अभी अपने विवाह के प्रति उदासीन थी। मीनू की विवाह के प्रति उदासीनता को देखते हुए आशा ने उसे विवाह करने के लिए समझाया कि जीवन बहुत बड़ा है। उसमें भी ऐसा क्षण आता है, जब व्यक्ति को केवल अपने पति या बच्चों का ही भरोसा होता है, इसलिए उसे भी विवाह के प्रति उदासीनता को छोड़कर विवाह करने के विषय में सोचना चाहिए।
- 4.** रविवार का पूरा दिन किस प्रकार व्यतीत हो गया, मीनू को उसका कुछ पता ही न चला। अगले दिन प्रातःकाल ही आशा दिल्ली चली गई। आशा के पति को दिल्ली किसी आवश्यक कार्य से जाना था। आशा ने सोचा कि वह भी जाकर रोहित से मिल आएगी। आशा के जाने के बाद घर में सन्नाटा छा गया। सबके बोलने की आवाज व छोटे बच्चे के रोने के स्वर से सारा कमरा गूँजता था।
- (क) मीनू ने आशा को रोहित के विषय में क्या बताया था? (2)
- उत्तर** मीनू ने आशा को रोहित के विषय में बताया कि रोहित ने इंजीनियरिंग पूरी कर ली है और वह तीन हजार रुपये महीने की तनखाह पर दिल्ली में नौकरी कर रहा है।
- (ख) रविवार के दिन के बीतने का मीनू को क्यों पता नहीं चला था? (2)
- उत्तर** मीनू व आशा काफी समय के बाद मिली थी, जिससे दोनों के पास बहुत-सी बातें एक-दूसरे को बताने के लिए थीं, वे दोनों बातों में इतनी ज्यादा व्यस्त हो गई थीं कि दिन के बीतने का पता ही नहीं चला।
- (ग) अगले दिन आशा कहाँ गई थी व क्यों? (3)
- उत्तर** आशा, मीनू से मिलने के उपरांत अगले दिन सुबह दिल्ली के लिए चली गई थी, क्योंकि उसके पति को आवश्यक कार्य से दिल्ली जाना था। आशा का दूसरा कारण दिल्ली जाकर अपने भाई रोहित से मिलना था, जो दिल्ली में ही नौकरी करता था।
- (घ) घर में सन्नाटा (शांति) क्यों छाया हुआ था? (3)
- उत्तर** घर में सन्नाटा छाने का कारण आशा व उसके बच्चे का चले जाना था। एक दिन पूर्व जब आशा मीनू से मिलने अपने परिवार के साथ उसके घर आई थी, तो घर में चहल-पहल का वातावरण बन गया था। घर में बच्चे की किलकारियाँ गूँजने से घर का माहौल और अधिक खुशनुमा हो गया था, किंतु आज सुबह जब आशा अपने पति और बच्चे के साथ दिल्ली चली गई थी, तो घर में मीनू व राजो के अलावा और कोई न बचा, जिससे घर में सन्नाटा छाया हुआ था।



## अध्याय 24

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में रोहित की नौकरी लगने के बाद विवाह के लिए रिश्ते वालों का आना, माता-पिता के सामने उसकी बड़ी बहन के कुँआरी होने की समस्या होना, माँ द्वारा मीनू को समझाना, संयोग से इसी बीच अमित एवं मायाराम जी का आना, अपनी भूल के लिए खेद प्रकट करना एवं अमित के विवाह का प्रस्ताव दयाराम जी के सामने रखना, दयाराम जी द्वारा मीनू की सहमति लेकर जवाब देने आदि का उल्लेख किया गया है।

#### रोहित के लिए विवाह के रिश्ते आना

इंजीनियरिंग पूरी करने के बाद रोहित की नौकरी दिल्ली में एक अच्छी कंपनी में लग गई थी, जिससे उसके लिए रिश्ते आने शुरू हो गए थे। उसके पिताजी पहले बड़ी बेटी का विवाह करने की बात कहकर सबको मना कर देते थे। रोहित के लिए दिल्ली से एक रिश्ता आया था। माँ और पिताजी को लड़की पसंद आई थी। वे पहले बड़ी बेटी का विवाह करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने उन सज्जन को यह कहते हुए मना किया कि अभी वे रोहित का विवाह करने के पक्ष में नहीं हैं। उन सज्जन के जाने के बाद माँ व पिताजी दोनों ही चिंतित होकर मीनू द्वारा विवाह के लिए उदासीन एवं असहमत होने के बारे में सोचने लगे।

#### माँ द्वारा मीनू को समझाना

पिताजी, माँ से मीनू को विवाह के लिए समझाने को कहते हैं। माँ ने उनकी बातों को स्वीकारते हुए कहा कि वह उसे समझाने की कोशिश करेंगी, लेकिन उसके स्वाभिमानी होने के कारण मैं नहीं जानती कि वह विवाह के लिए तैयार होगी या नहीं? पिताजी, माँ से एक बार कोशिश करने के लिए कहते हैं कि क्या पता उसका विचार बदल जाए और वह विवाह के लिए तैयार हो जाए।

माँ ने मीनू को समझाते हुए कहा कि अब उसे विवाह के लिए तैयार हो जाना चाहिए। जब तक वह उसका कन्यादान नहीं कर देती, तब तक उन्हें सुख नहीं मिलेगा और न समाज चैन से रहने देगा। माँ बताती हैं कि वह जहाँ कहीं जाती हैं, कोई-न-कोई उनसे मीनू के विवाह के विषय में पूछ ही लेता है। कई लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि लड़कियों को इतना अधिक नहीं पढ़ाना चाहिए, क्योंकि इससे उनका दिमाग खराब हो जाता है और वे लड़कों को पसंद नहीं करती।

#### मीनू के माता-पिता का हैरान होना

माँ और पिताजी अपनी बातों में मग्न थे कि दरवाजे पर किसी ने घंटी बजाई। दरवाजा खोलते ही दयाराम जी, मायाराम जी व अमित को देखकर आश्चर्यचकित (हैरान) हो उठे। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि यह वास्तविकता है या स्वप्न। तभी ध्यान आने पर दयाराम जी ने उनका स्वागत किया। अमित को देखकर माँ हैरान थीं, क्योंकि अमित के बारे में जो कुछ मीनू ने बताया था, अमित उसके विपरीत पूर्णतः स्वस्थ दिख रहा था। माता जी ने अमित से उसकी तबीयत के विषय में पूछा, अमित ने आत्मीयता के साथ स्वयं के ठीक होने की बात कही। मायाराम जी भी बताते हैं कि ईश्वर की कृपा से अमित ठीक हो गया अन्यथा स्थिति तो गंभीर थी। “ईश्वर ने सब ठीक ही किया”, यह कहकर माँ रसोईघर में चली गईं।

#### अमित से मीनू के विवाह का प्रस्ताव

मायाराम जी को दयाराम जी से बात करने में थोड़ा संकोच हो रहा था, किंतु साहस करने के उपरांत उन्होंने दयाराम जी से कहा कि चार वर्ष पूर्व जो कुछ भी हुआ था, उसके लिए वे क्षमा माँगते हैं। दयाराम जी ने उन्हें ऐसा कहने से रोका। मायाराम जी ने कहा कि उनसे जो भूल हो गई थी, उसका पछतावा उन्हें आज भी है। उन्होंने अपने आने के उद्देश्य के बारे में बताते हुए कहा कि आज हम आपसे मीनू का हाथ माँगने आए हैं।

दयाराम जी ने अधिक समय न लेते हुए शीघ्रता से कहा कि मीनू अभी विवाह नहीं करना चाहती और उसकी सहमति के बिना वे कुछ नहीं कह सकते। दयाराम जी ने उनकी बात को सुनकर मीनू की इच्छा को जानकर उन्हें सूचित करने के लिए कहा। मायाराम जी उनका समर्थन करते हैं। उनके जाने के बाद आज दयाराम जी को महसूस हो रहा था, जैसे किसी ने दुःखी हृदय को सांत्वना (दिलासा) दे दी हो।

#### शब्दार्थ

स्वाभिमानी—आत्मसम्मान वाला (self respected); आत्मीयता—अपनेपन का भाव (affinity with closeness); नाजुक—कोमल (fragile); संकोच-सा—हिचकिचाहट (hesitation); क्षमा प्रार्थी—क्षमा माँगने वाला (apologetic)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. तभी चिंतित स्वर में दयाराम बोले, “मीनू की माँ, समझाकर तुम ही मीनू को विवाह करने के लिए तैयार करो।”

“मीनू को मैं समझाने की कोशिश तो करूँगी, पर वह बहुत स्वाभिमानी लड़की है। पता नहीं वह विवाह के लिए तैयार होगी या नहीं।”

“उसको तुम समझाकर तो देखो। हो सकता है, अब उसका विचार बदल गया हो। वह अब शादी के लिए तैयार हो जाए।”

- (क) दयाराम जी की चिंता का क्या कारण था? (2)

**उत्तर** दयाराम जी की चिंता का कारण मीनू का विवाह न करना था, क्योंकि मीनू अभी-भी विवाह के लिए सहमत न थी। वे बिना उसकी इच्छा के उसका विवाह नहीं करवाना चाहते थे।

- (ख) दयाराम जी ने मीनू की माँ से उसे क्या समझाने की बात कही? (2)

**उत्तर** दयाराम जी ने मीनू की माँ से मीनू को विवाह करने के लिए समझाने की बात कही, क्योंकि उनके बेटे रोहित के लिए भी विवाह के लिए रिश्ते आने लगे थे। वे बड़ी बेटी के अविवाहित होने के कारण उसका विवाह नहीं करना चाहते थे।

- (ग) मीनू की माँ ने दयाराम जी की बात का क्या जवाब दिया था? (3)

**उत्तर** माँ ने दयाराम जी की बात का जवाब देते हुए कहा कि वे मीनू को विवाह के लिए समझाने की कोशिश करेंगी, लेकिन मीनू एक स्वाभिमानी लड़की है, इसलिए वे पूर्ण रूप से निश्चित होकर यह नहीं कह सकती हैं कि वह विवाह के लिए उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर ही लेगी। उन्हें संदेह है कि वह उनकी बातों को सुनकर विवाह के लिए तैयार होगी भी या नहीं।

- (घ) वक्ता ने क्यों कहा कि “हो सकता है अब उसका विचार बदल गया हो?” स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** वक्ता अर्थात् दयाराम जी ने यह कथन इसलिए कहा, क्योंकि उन्हें आशा थी कि उन्होंने अभी तक मीनू की सभी बातें-वकालत की पढ़ाई करने एवं प्रैक्टिस करने की इच्छाओं को सहजता से स्वीकार कर लिया था। इसके अलावा अमित के परिवार द्वारा उसे न स्वीकारने की घटना को भी काफी समय हो गया था, इसलिए दयाराम जी को लग रहा था कि संभवतः अब उसका विचार बदल गया हो और वह अब विवाह के लिए तैयार हो जाए।

2. “और हमारा समाज भी तो चैन से नहीं रहने देता। मैं जहाँ भी कहीं जाती हूँ, कोई-न-कोई मुझसे पूछ ही लेता है कि अभी बड़ी बेटी की शादी नहीं कर रही हो। क्या बात है? क्या उसके योग्य कोई पढ़ा-लिखा लड़का नहीं मिल रहा है? कोई कहती है कि आजकल लड़कियों को इतना नहीं पढ़ाना चाहिए। पढ़ने के बाद दिमाग खराब हो जाते हैं। लड़कियों को लड़के पसंद नहीं आते।” वे दोनों चिंतित स्वर में अपने-अपने विचार व्यक्त कर रहे थे कि इतने में दरवाजे पर किसी ने घंटी बजाई। दयाराम जी दरवाजा खोलने के लिए उठे।

- (क) अवतरण में वक्ता-श्रोता के मध्य क्या बातें हो रही थीं? (2)

**उत्तर** अवतरण में वक्ता और श्रोता अर्थात् दयाराम जी व उनकी पत्नी के मध्य समाज द्वारा प्रत्येक कार्य में दखल देने एवं लोगों का उनकी बेटी के विवाह के बारे में उनसे बार-बार प्रश्न पूछने के विषय में बातें हो रही थीं।

- (ख) वक्ता ने क्यों कहा कि हमारा समाज भी चैन से नहीं रहने देता? (2)

**उत्तर** वक्ता ने यह इसलिए कहा, क्योंकि बेटी के विवाह योग्य होने के उपरांत अगर वह किसी कारण से विवाह न करे, तो समाज के लोग तरह-तरह के प्रश्न पूछने लगते हैं। इससे बेटी के माता-पिता का चैन खोकर रह जाता है।

- (ग) मीनू की माता जी ने अपनी व्यथा किस प्रकार प्रकट की? (3)

**उत्तर** मीनू की माता जी मीनू के विवाह न होने पर अपनी व्यथा प्रकट करते हुए कहती हैं कि वे जहाँ कहीं भी जाती हैं, तो कोई-न-कोई व्यक्ति उनसे मीनू के विवाह के विषय में प्रश्न पूछ ही लेता है।

कोई उनसे बड़ी बेटी का विवाह न करने का कारण जानने की कोशिश करता है, तो कोई योग्य वर न मिल पाने के बारे में प्रश्न करता है। कई लोग तो उन्हें बेटियों को इतना अधिक पढ़ाने का कारण पूछ बैठते हैं।

- (घ) दरवाजे पर कौन आया था और उसे देखने पर वक्ता की क्या प्रतिक्रिया हुई? (3)

**उत्तर** दयाराम जी अपनी पत्नी से मीनू के विवाह के विषय में चर्चा कर रहे थे कि तभी दरवाजे की घंटी बजी। दयाराम जी ने दरवाजे पर देखा कि मायाराम जी और उनका बेटा अमित उनके घर आए हैं। मायाराम जी व अमित को देखकर वे आश्चर्यचकित (हैरान) हो जाते हैं, उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि ये वास्तविकता है या स्वप्न। वे स्थिर होकर खड़े रह जाते हैं।

3. मायाराम जी को दयाराम जी से बात करने में कुछ संकोच-सा हो रहा था। फिर उन्होंने साहस एकत्र करके बात करनी शुरू की।

“....भाई साहब, लगभग चार वर्ष पहले जो कुछ भी हुआ था, उसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं। आशा है, आप हमें क्षमा कर देंगे।”  
“नहीं, भाई, साहब! इसमें क्षमा की क्या बात है।” दयाराम जी बात को सँभालते हुए बोले।

“नहीं, हमसे जो कुछ भूल हुई थी, उसके लिए हमें बहुत समय तक पछतावा रहा, परंतु जैसी होनी होती है, वैसा ही दिमाग भी हो जाता है।”

- (क) मायाराम जी को संकोच क्यों हो रहा था? (2)

**उत्तर** मायाराम जी अपने बेटे अमित के लिए चार वर्ष पूर्व मीनू का रिश्ता अस्वीकार कर चुके थे, लेकिन आज वह फिर से दयाराम जी के घर अमित के साथ मीनू के विवाह का प्रस्ताव लेकर आए थे। यह बात दयाराम जी से कहते हुए मायाराम जी को संकोच हो रहा था।

- (ख) मायाराम जी क्षमा क्यों माँग रहे थे? (2)

**उत्तर** मायाराम जी ने चार वर्ष पूर्व झूठ बोलकर अमित के साथ मीनू का विवाह करने से मना कर दिया था, जिससे मीनू के साथ-साथ दयाराम जी व उनके परिवार को अत्यधिक दुःख एवं पीड़ा की अनुभूति हुई थी। इसलिए आज मायाराम जी अपने द्वारा किए गए इसी बुरे कार्य के लिए क्षमा माँग रहे थे।

- (ग) मायाराम जी के आने का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** मायाराम जी का आज दयाराम जी के घर आने का उद्देश्य पुनः अमित व मीनू का विवाह करवाना था। वे अपने बेटे के विवाह का प्रस्ताव लेकर आए थे, जबकि चार वर्ष पूर्व इसी रिश्ते को उन्होंने

झूठ बोलकर अस्वीकार कर दिया था। वे इस बात को जान गए थे कि अमित मीनू को पसंद करता है और किसी अन्य लड़की से विवाह करने को तैयार नहीं था। इसलिए वे आज दयाराम जी से माफी माँग रहे थे।

(घ) मायाराम जी ने किस कारण मीनू तथा उसके परिवार को दुःख पहुँचाया था? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** मीनू एक पढ़ी-लिखी, समझदार, सुशील व बड़ों का आदर करने

वाली लड़की थी, जिससे अपने बेटे के रिश्ते की बात करने मायाराम जी चार वर्ष पूर्व भी आए थे। तब दहेज के लालच में आकर उन्होंने मीनू को विवाह के लिए अस्वीकार कर एक धनी सेठ की बेटी से अमित का रिश्ता तय किया था, परंतु बाद में वहाँ से भी अमित का रिश्ता टूट गया था।

चार वर्ष पूर्व धन के लालच में आकर मीनू के गुणों को न पहचान पाने और दयाराम के परिवार को दुःख पहुँचाने की भूल उनसे हुई थी।

## अध्याय 25

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अध्याय में दो दिन का अवकाश होने पर मीनू और राजो द्वारा बस से घर जाने, उसी बस में पड़ोस की मौसी के मिलने पर उनसे अभिवादन कर अगली सीट पर बैठने, मौसी के पूछने पर मेरठ में प्रैक्टिस करने की बात कहने, मौसी की व्यंग्यपूर्ण बातें सुनकर भी अनसुना करने और असहनीय बातों के प्रति भी संयम बनाए रखने, मीरापुर पहुँचने पर माँ की प्रसन्नता और मेरठ में अच्छी प्रैक्टिस चलने का उल्लेख हुआ है।

### मीनू और राजो का मीरापुर जाना

मीनू का शनिवार व रविवार का अवकाश था। उसे घर गए हुए भी काफी समय हो गया था, इसलिए वह मीरापुर जाने का निर्णय करती है। मीनू के निर्णय से राजो भी प्रसन्न होती है, क्योंकि जब से वह मेरठ आई थी, तब से वह पहली बार घर जा रही थी। उसकी माँ ने उसे पत्र लिखकर घर बुलाया भी था, किंतु मीनू को छोड़कर जाने के बारे में उसने कभी न सोचा था। दोनों घर जाने के लिए बस में चढ़ी ही थीं, तभी मीनू को पड़ोस की मौसी दिखाई दी। मीनू उन्हीं के आगे की सीट पर जाकर बैठ गई।

### बस में मौसी से मुलाकात

मीनू, मौसी का अभिवादन करती है। मौसी ने मीनू से पूछा कि वकालत पूरी होने के बाद अब वह क्या कर रही है? इस पर मीनू उन्हें मेरठ में प्रैक्टिस करने के बारे में बताती है। मौसी के पूछने पर वह बताती है कि उसने वहीं घर ले रखा है और राजो भी उसके साथ ही रहती है। यह सुनकर मौसी व्यंग्यपूर्वक कहती हैं “जब तक अपने घर का कोई न रहता हो तब तक क्या?”, यह बात मीनू को बुरी लगती है। वह समझ जाती है कि यदि उसने मौसी से कुछ देर और बात की तो वह कोई-न-कोई पीड़ादायक बात कहेंगी, इसलिए वह अपने बैग से उपन्यास निकालकर पढ़ना शुरू कर देती है।

### मौसी की व्यंग्यपूर्ण बातें

मीनू को मौसी से बातें करते देखकर उनके साथ बैठी महिला उनसे मीनू के विषय में पूछती है। मौसी बताती हैं कि वह उनके पड़ोस में रहती है। उसके माता-पिता ने अत्यधिक स्वतंत्रता देकर उसका दिमाग खराब कर दिया है, इससे वह विवाह करने को तैयार नहीं है। वह महिला उनकी बात का समर्थन करते हुए कहती है कि लड़कियों को इतना सिर पर

नहीं बैठाना चाहिए वरना भविष्य में बहुत परेशानियाँ होती हैं। मौसी के ये शब्द सुनकर मीनू अत्यधिक दुःखी हो उठती है और वह सोचने लगती है कि क्या इस समाज में कोई लड़की अपनी इच्छा के अनुसार जीवन जी नहीं सकती। एक लड़की को हमेशा असहाय समझकर कुएँ में धकेलने की कोशिश की जाती है।

मौसी की बातें सुनकर मीनू का हृदय रो पड़ता है। मौसी, मीनू के माता-पिता पर कटाक्ष करते हुए कहती हैं कि इसके माता-पिता ने जवान बेटी को इस तरह अकेला छोड़ा हुआ है, भला कोई इस प्रकार बेटी को अलग रखता है?

### मीनू की संयमशीलता

मौसी की व्यंग्यपूर्ण बातें सुनकर मीनू सोचती है कि वह उन्हें जवाब दे दे, लेकिन अपनी सभ्यता एवं संस्कारों के कारण उसने यह उचित न समझा और चुपचाप उनकी बातें सुनती रहती है। वह बैचैन होकर समाज के द्वारा स्त्री-पुरुष में भेद करने की परंपरा को समझने की कोशिश करती है, लेकिन समझ नहीं पाती।

वह सोचती है कि एक पुरुष इस समाज में अकेले रहकर कुछ भी करे, समाज उसे कुछ नहीं कहता, लेकिन एक स्त्री कितने ही संयम के साथ जीवन व्यतीत करे, उस पर आरोप लगाना शुरू कर देता है। इन्हीं विचारों में मग्न मीनू मीरापुर पहुँच जाती है। उसका मन घृणा से भरा हुआ था, इसलिए वह सीधे घर में चली जाती है।

### माता जी की प्रसन्नता

मीनू को देखकर माँ प्रसन्न होती हैं। उससे हालचाल पूछते हुए उसे बताती हैं कि उसके पिताजी उससे मिलने के लिए कल मेरठ जाने वाले थे। मीनू उन्हें बताती है कि उसकी दो दिन की छुट्टियाँ थीं और घर आए बहुत दिन हो गए थे, इसलिए वह चली आई। माँ उसे कहती है कि उन्हें उससे कुछ आवश्यक बातें करनी हैं, इसलिए वह कुछ खा-पी ले। सफर की थकान और मौसी की बातों से मीनू के सिर में दर्द होने लगा था, इसलिए वह आराम करने के लिए कमरे में चली गई, लेकिन मौसी और उस महिला की बातें उसके मस्तिष्क में गूँज रही थीं और उसे ऐसा प्रतीत होता है, जैसे आज उसका सिर इन प्रतिध्वनियों की गूँज से फट जाएगा, इसलिए वह स्वयं को नियंत्रित करते हुए माँ के पास चली गई।

### मीनू की सफलता

माँ मीनू से उसकी प्रैक्टिस के बारे में पूछती हैं। मीनू उन्हें बताती है कि पिछले दो माह में उसने तीन-चार हजार रुपये महीना कमा लिया है और आशा है कि आगे उसकी वकालत और अच्छी चलेगी। माँ कहती हैं कि यह तेरी मेहनत का फल है, क्योंकि ईश्वर उन्हीं की सहायता करते हैं, जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं। मीनू, माँ से कहती है कि उसकी सफलता में उनका भी योगदान है, अगर उनका सहयोग न होता, तो वह इस योग्य न बन पाती।

### माँ द्वारा मीनू को खुशखबरी देना

माँ, मीनू से कहती हैं वह आत्मनिर्भर अवश्य बन गई है, पैसे भी कमा रही है, लेकिन जीवन यहीं तक सीमित नहीं है। उसमें कितनी ही योग्यताएँ हों, लेकिन वह एक लड़की है। यह सुनकर मीनू कहती है कि लड़की होना कोई गुनाह तो नहीं, तब माँ कहती हैं कि लड़की होना गुनाह नहीं है, लेकिन जब तक उसका विवाह न हो जाए समाज उसे चैन नहीं लेने देता। एक कुँआरी लड़की को देखकर सभी उस पर

अँगुलियाँ उठाने लगे हैं। मीनू अपनी माँ की मंशा को समझते हुए उनसे पूछती है कि उनकी क्या इच्छा है कि वह विवाह कर ले? माँ उसे 'हाँ' में जवाब देते हुए बताती हैं कि मायाराम जी व उनका बेटा अमित तुम्हारा हाथ मॉगने के लिए आए थे।

वह अपनी पिछली गलती पर बहुत शर्मिदा थे। माँ उसे यह भी बताती हैं कि अमित ने प्रायश्चित करने के लिए ही अभी तक विवाह नहीं किया था। माँ की बातें सुनने के बाद मीनू उनसे कहती है कि वह जैसा उचित समझें, वैसा ही करें। माँ को मीनू के जवाब में उसकी स्वीकृति स्पष्ट दिखाई देती है। वह सुकून की साँस लेती हैं, लेकिन मीनू, पिताजी से कहती है कि वह विवाह में फ़िज़ूलखर्ची पसंद नहीं करेगी।

### शब्दार्थ

अभिवादन—बधाई देना (greeting); संक्षिप्त-सा—अति लघु (shortish);  
दोषारोपण—अभियोग (impeachment); प्रतिध्वनि—अनुगूँज (echo);  
गुनाह—पाप (sin); प्रायश्चित—पछतावा होना (penance)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. मौसी की यह बात मीनू के हृदय में चुभ गई। शायद उन्हें मीनू पर विश्वास नहीं था। मीनू ने सोचा कि यदि मौसी से थोड़ी देर बात की गई, तो वे कुछ-न-कुछ और ऐसी बात कह देंगी, जो उसके दिल को पीड़ा पहुँचाएगी। इसलिए उसने अपने बैग से उपन्यास निकालकर पढ़ना शुरू कर दिया।

(क) दो दिन की छुट्टियाँ देखकर मीनू ने क्या निश्चय किया और क्यों? (2)

**उत्तर** शनिवार व रविवार की छुट्टियाँ होने के कारण कचहरी दो दिन के लिए बंद थी। मीनू को घर गए हुए भी बहुत समय हो गया था, इसलिए मीनू ने राजो के साथ अपने घर मीरापुर जाने का फैसला किया था।

(ख) राजो की प्रसन्नता का क्या कारण था? (2)

**उत्तर** राजो की प्रसन्नता का कारण था— मेरठ आने के उपरांत पहली बार घर वापस जाना। उसकी माँ ने उसे कई बार पत्र लिखकर बुलाया भी था, लेकिन वह मीनू को छोड़कर घर जाने का साहस न कर पाती थी।

(ग) “कुछ भी हो, जब तक अपने घर का कोई न रहता हो तब तक क्या?” प्रस्तुत पंक्ति किसने किससे व क्यों कही? (3)

**उत्तर** “कुछ भी हो, जब तक अपने घर का कोई न रहता हो, तब तक क्या?” प्रस्तुत पंक्ति मीनू के पड़ोस में रहने वाली मौसी ने मीनू से कही थी। मीनू को बस में मौसी मिली थी, उनके पूछने पर मीनू ने उन्हें बताया था कि वह मेरठ में अकेले नहीं रहती, बल्कि राजो उसके साथ रहती है।

मीनू की यह बात सुनकर मौसी ने व्यंग्य भरे शब्दों के साथ मीनू से कहा था कि “कुछ भी हो, जब तक अपने घर का कोई न रहता हो तब तक क्या?”

(घ) मौसी की कौन-सी बात मीनू के हृदय में चुभ गई? उसके बाद मीनू ने क्या किया? (3)

**उत्तर** मौसी, राजो की उपेक्षा करते हुए परिवार के किसी सदस्य के बिना मेरठ में रहने के कारण मीनू से व्यंग्यपूर्वक कहती हैं कि “कुछ भी हो, जब तक अपने घर का कोई न रहता हो तब तक क्या?” यह बात मीनू के हृदय में चुभ गई थी और वह समझ गई थी कि यदि उसने कुछ अधिक समय तक उनसे बातें कीं, तो वह कोई-न-कोई अप्रिय बात अवश्य कह देंगी, जिससे उसको दुःख होगा, इसलिए मीनू ने उनसे बात न करना ही उचित समझकर अपने बैग से उपन्यास निकालकर पढ़ना शुरू कर दिया था।

2. उन दोनों की ये बातें मीनू के कानों तक पहुँच रही थीं मौसी के ये शब्द मीनू के हृदय में तीर की भाँति चुभ गए। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या समाज में अपनी इच्छा से जीने का किसी भी लड़की का कोई अधिकार नहीं। एक लड़की को अबला जानकर उसे कुँएँ में धकेलने की कोशिश की जाती है। ये सब कैसे नियम हैं समाज के? मीनू का हृदय ये सब बातें सुनकर रो पड़ा।

(क) साथ बैठी हुई महिला को मौसी ने मीनू के विषय में क्या बताया था? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** मौसी ने अपने साथ बैठी हुई महिला को मीनू के बारे में बताया कि वह उनके पड़ोस में रहने वाली लड़की है। माता-पिता के द्वारा अत्यधिक स्वतंत्रता दिए जाने के कारण इसका दिमाग खराब हो गया है। इसी वजह से यह विवाह करने के लिए तैयार नहीं होती।

(ख) महिला ने मौसी की किस बात का समर्थन किया था? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** मौसी ने जब मीनू के बारे में साथ बैठी हुई महिला को बताया कि इसके माता-पिता के अत्यधिक लाड़-प्यार करने एवं इसकी प्रत्येक बात को मानने के कारण अब इसने विवाह करने को मना कर दिया है। मौसी के द्वारा की गई इस आलोचना का उनके साथ बैठी हुई महिला ने समर्थन किया था।

(ग) 'ये सब कैसे नियम हैं समाज के?' प्रस्तुत कथन किसने व क्यों कहा? (3)

**उत्तर** 'ये सब कैसे नियम हैं समाज के?' प्रस्तुत पंक्ति मीनू के द्वारा कही गई थी। मीनू के द्वारा ऐसा कहने का कारण मौसी व उनके साथ बैठी हुई महिला के द्वारा निरंतर मीनू की आलोचना करना था, जिसे सुनकर मीनू को अत्यधिक दुःख हो रहा था। उनकी बातें सुनकर मीनू सोचने लगी थी कि क्या इस समाज में किसी महिला को स्वतंत्र होकर अपनी इच्छा के अनुरूप आत्मनिर्भर होकर जीने का अधिकार नहीं है? इन्हीं विचारों से उत्पन्न गुस्से से भरने के बाद उसने कहा कि ये सब कैसे नियम हैं समाज के?

(घ) मीनू का हृदय क्यों रो पड़ा? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** मौसी व उनके साथ बैठी महिला के द्वारा लगातार मीनू के विवाह के विषय में बातें करने एवं मौसी के द्वारा मीनू की आलोचना करते हुए कहा कि 'इसकी छोटी बहन की शादी हो गई है। इसके भाई की भी शादी हो जाएगी। बस, यही कुँआरी बैठी रहेगी।' ये शब्द मीनू के हृदय में तीर की भाँति चुभ गए थे। मौसी के इन्हीं कटु शब्दों को सुनकर मीनू का हृदय रो पड़ा था।

3. अभी वह इन विचारधाराओं में तल्लीन थी कि बस मीरापुर के बस स्टेशन पर आकर रुक गई। जैसे ही उसने अपना सूटकेस उठाया, उसकी नजर मौसी पर पड़ी। उन्हें देख मीनू का हृदय घृणा से भर गया। उनकी ओर बिना देखे ही वह अपने घर की ओर चल दी।

(क) मीनू का हृदय किसकी बातों से बेचैन हो रहा था और क्यों? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** मौसी और उनके साथ बैठी महिला कह रही थीं कि उसके माता-पिता ने जवान लड़की को अकेले मेरठ में छोड़ रखा है। यदि कल को कोई

ऊँच-नीच हो गई तो जीवनभर किसी को मुँह न दिखा पाएँगे। उनकी इन बातों को सुनकर मीनू का हृदय बेचैन हो रहा था।

(ख) मीनू किन विचारों में खोई हुई थी? (2)

**उत्तर** मौसी और उनके साथ बैठी महिला के द्वारा निरंतर उसकी आलोचना करने के कारण मीनू समाज में स्त्री-पुरुष के बीच होने वाले भेदभाव के विषय में सोचने में खोई हुई थी।

(ग) मौसी को देखकर मीनू का हृदय घृणा से क्यों भर गया था? (3)

**उत्तर** मौसी मेरठ से मीरापुर के पूरे रास्ते में अपने साथ में बैठी महिला से मीनू के विवाह न करने, उसके माता-पिता के द्वारा उसको स्वतंत्रता दिए जाने, उसके मेरठ में अकेले रहने जैसी बातों पर उसकी लगातार आलोचना करती रहीं। इससे मीनू को अत्यधिक दुःख हुआ। इस कारण मौसी के प्रति मीनू के हृदय में घृणा भर गई थी।

(घ) 'फिर भी समाज उस पर दोषारोपण करता है।' प्रस्तुत पंक्ति किसने व क्यों कही तथा पंक्ति में 'उस' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है? (3)

**उत्तर** 'फिर भी समाज उस पर दोषारोपण करता है।' प्रस्तुत पंक्ति मीनू के द्वारा कही गई है, जो समाज में स्त्री-पुरुष के बीच भेदभाव करने वाली मानसिकता के कारण उपजी (उत्पन्न हुई) थी। मौसी व उनके साथ बैठी महिला को मीनू के मेरठ में अकेले रहने के कारण शंकाएँ हैं, जिन्हें सुनकर मीनू सोचने लगती है कि एक पुरुष अगर अकेले रहता है, तो उस पर कोई प्रश्न नहीं उठाता, भले ही वह कितने अपराध करे, लेकिन एक महिला कितने ही संयम के साथ अपना जीवन व्यतीत करे, लेकिन फिर भी उस पर समाज दोषारोपण करना आरंभ कर देता है। प्रस्तुत पंक्ति में 'उस' शब्द नारी समाज के लिए प्रयोग किया गया है।

## अध्याय 26

### पाठ का सारांश

उपन्यास के इस अंतिम अध्याय में मीनू के विवाह की तैयारियाँ होने, पंडाल की सजावट के खर्च में से पाँच हजार रुपये किसी गरीब-बेसहारा को देने, राजो के चचेरे भाई मनोहर के आने और अपने विकलांग होने का कारण बताने, मीनू द्वारा किसी-न-किसी रूप में मनोहर की सहायता करने, अंत में पान की दुकान खुलवाने का निर्णय करने, विवाह के बाद मीनू की विदाई और उसके स्वयं के द्वारा तलाशी मंजिल तक पहुँचने का उल्लेख किया गया है।

### मीनू का फिजूलखर्ची पर विरोध करना

मीनू के विवाह की तैयारियाँ शुरू हो गई थीं। मीनू को जब यह पता चलता है कि पंडाल की सजावट के लिए दस हजार रुपये खर्च किए जा रहे हैं, तो वह दुःखी हो उठी, क्योंकि चंद घंटों की चकावंध के लिए पैसों की बर्बादी उसे पसंद नहीं थी। शाम को जब पिताजी घर आए, तो मीनू ने उनसे पूछा कि कुछ देर की रौनक के लिए आप पैसों की बर्बादी क्यों कर रहे हैं? इससे बेहतर होगा कि हम पाँच हजार

रुपये किसी जरूरतमंद को दे दें, जिससे वह जीवन भर आपको दुआएँ देगा। मीनू की ये बातें सुनकर पिताजी कुछ देर सोचने के बाद कहते हैं कि दुनियादारी के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है। बिना सजावट के रौनक कहाँ आती है। मीनू पिताजी से स्पष्ट रूप से कहती है कि वह इस तरह से पैसे बर्बाद नहीं करेगी।

### मनोहर को देखकर मीनू का दुःखी होना

विवाह में दस दिन शेष थे। मीनू बाहर बैठकर सिलाई मशीन से काम कर रही थी, तभी उसे 'नमस्ते दीदी' सुनाई दिया। उसने जैसे ही ऊपर देखा, वह मनोहर को देखकर आश्चर्यचकित (हैरान) रह गई। मनोहर का एक पैर व दाहिने हाथ की दो अंगुलियाँ कटी हुई थीं। यह देखकर मीनू, अत्यधिक दुःखी होती है और वह मनोहर को बैठने के लिए कहती है। मनोहर दीवार के सहारे बैसाखी रखकर पलंग पर बैठ गया। मीनू ने उससे कुशलता पूछते हुए, उसके साथ घटी दुर्घटना के विषय में पूछा। मनोहर ने बताया कि उसे एक फैक्ट्री में नौकरी मिल गई थी। उसे पाकर वह बहुत खुश था, लेकिन एक दिन काम करते समय उसका पैर और



हाथ की अंगुलियाँ मशीन में आने से कट गईं। मीनू यह सब जानकर बहुत दुःखी होती है। मनोहर मुस्कुराते हुए मीनू से कहता है कि उसने सोचा कि घर में काम होगा, तो वह कर देगा। मीनू उससे पूछ बैठती है कि वह क्या कर सकता है? तभी उसे अपनी गलती का अहसास होता है। वह सँभलते हुए उससे पूछती है कि तुम आजकल क्या कर रहे हो? वह लाचारी से अपने खाली होने की बात कहता है। उसके शब्दों से उसकी बेबसी स्पष्ट झलक रही थी।

### मीनू की संवेदनशीलता और दयालुता

मीनू के हृदय में बचपन से ही अपाहिजों के लिए दया भावना थी। मनोहर को वह बचपन से जानती थी, इस कारण वह उसे इस स्थिति में नहीं देख पा रही थी। वह निश्चय करती है कि विवाह में होने वाले फिजूलखर्च से पैसे बचाकर मनोहर की सहायता करेगी। मीनू बिस्तर पर लेटे हुए यह सोचने लगती है कि मनोहर की सहायता किस प्रकार से की जाए, उसको पैसे दिए जाएँ या फिर कोई कार्य करवाया जाए, क्योंकि वह सभी कार्य भी तो नहीं कर सकता। तभी मीनू के मस्तिष्क में विचार आता है कि मनोहर के लिए पान की दुकान खोली जा सकती है, क्योंकि वह चल-फिर नहीं सकता, लेकिन दुकान पर बैठकर कार्य अवश्य कर सकता है। पाँच हजार रुपयों में दुकान भी सरलता से खोली जा सकती थी। मीनू सुबह होते ही मनोहर की

सहायता के लिए सोचा हुआ सुझाव माता-पिता को बताती है। उन्हें भी मीनू का सुझाव पसंद आ जाता है।

### माता-पिता का गौरवान्वित महसूस करना

मीनू के माता-पिता को अपनी बेटी पर गर्व था कि उन्हें इतनी स्वाभिमानी व उदार गुणों वाली बेटी मिली है। उसे पाकर वे स्वयं को धन्य महसूस कर रहे थे। मनोहर के लिए दुकान खुलवाकर मीनू ने उसकी जिंदगी सुधार दी थी।

आज मीनू का विवाह था। विवाह न होने के कारण मीनू ने कितने ही अपशब्द सुने थे, लेकिन दुल्हन के रूप में आज वह बहुत सुंदर दिखाई दे रही थी। दुल्हन बनकर मीनू अपने ससुराल के लिए चल दी थी। उसे पाकर अमित भी स्वयं को खुशनसीब महसूस कर रहा था। दुल्हन के रूप में सजी मीनू कोई सामान्य या साधारण मीनू नहीं थी अपितु अपनी मेहनत व लगन से, ख्याति प्राप्त प्रसिद्ध वकील थी। आज मीनू ने अपने उस लक्ष्य को भी प्राप्त कर लिया था, जहाँ उसे पहुँचना था।

### शब्दार्थ

पंडाल—विशाल मंडप (giant pavilion); संकल्प—किसी कार्य को दृढ़तापूर्वक करने का निश्चय करना (resolution); सुझाव—प्रस्ताव (suggestion); उदार—दयालु (kind); अपशब्द—दुर्वचन (abuse); ख्याति—प्रसिद्धि (fame, goodwill)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. उसकी ये सब बातें सुनकर दयाराम जी कुछ सोच-विचार में पड़ गए। कुछ क्षण बाद वे बोले, “मीनू बेटी, दुनियादारी के लिए भी बहुत कुछ करना पड़ता है। बिना सजावट के आजकल शादी में रौनक कहाँ आती है?”

(क) पैसों की बर्बादी किसे पसंद नहीं थी? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** मीनू को पैसों की बर्बादी पसंद नहीं थी, क्योंकि उसका मानना था कि पैसों को कुछ समय की चकाचौंध के लिए सजावट इत्यादि पर खर्च कर देने से कुछ प्राप्त नहीं होता, इसलिए पैसों की बर्बादी नहीं करनी चाहिए।

(ख) किसकी बातें सुनकर दयाराम जी सोच-विचार में पड़ गए व क्यों? (2)

**उत्तर** जब दयाराम जी घर आए तो मीनू ने उनसे पंडाल के लिए किए जाने वाले अत्यधिक खर्च को पैसों की बर्बादी बताया और कहा था कि इसे किसी जरूरतमंद को देकर उसकी सहायता की जा सकती है। मीनू की इस बात को सुनकर दयाराम जी सोच-विचार में पड़ गए थे।

(ग) “दुनियादारी के लिए भी बहुत कुछ करना पड़ता है” प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि यह किसने, किससे और क्यों कहा था? (3)

**उत्तर** मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे समाज की रीति एवं परंपराओं के अनुरूप ही जीवन व्यतीत करना पड़ता है। मनुष्य को समाज में

अपनी उपस्थिति बनाए रखने के लिए कई अनिच्छित कार्य करने पड़ते हैं। प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से दयाराम जी अपनी बेटी को यही समझाना चाहते हैं। दयाराम जी ने मीनू से यह इसलिए कहा, क्योंकि मीनू दयाराम जी द्वारा पंडाल के लिए खर्च किए जाने वाले दस हजार रुपयों को पैसों की बर्बादी बताती है। मीनू की बात सुनकर उन्होंने कहा कि दुनियादारी के लिए भी बहुत कुछ करना पड़ता है।

(घ) “बिना सजावट के आजकल शादी में रौनक कहाँ आती है।” प्रस्तुत अवतरण में ऐसा क्यों कहा गया है? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** प्रस्तुत अवतरण में ऐसा इसलिए कहा गया, क्योंकि मीनू के पिताजी उसके विवाह में सजावट इत्यादि पर ज्यादा खर्च कर रहे थे, जिसका वह विरोध करती है। उनके द्वारा सजावट पर किए जाने वाले खर्च को वह रुपये की बर्बादी कहती है। मीनू को समझाते हुए पिताजी कहते हैं कि दुनियादारी के लिए भी बहुत कुछ करना पड़ता है, बिना सजावट के आजकल शादी में रौनक नहीं आती है, इसलिए वे सजावट के लिए जो पैसे खर्च कर रहे हैं, वे फिजूलखर्च नहीं हैं।

2. “ये सब समय का फेर है, दीदी! मेरे भाग्य में यही सब लिखा था। मुझे एक फैक्ट्री में नौकरी मिल गई थी। मैं अपने को बहुत खुशनसीब समझ रहा था कि मुझे इतनी छोटी उम्र में ही नौकरी मिल गई, परंतु ईश्वर को यह सब मंजूर नहीं था। एक दिन काम करते-करते मेरा पैर मशीन में आ गया। साथ ही सीधे हाथ की दो अंगुलियाँ भी कट गईं।”

(क) मीनू विस्मित-सी होकर किसे देखती रह गई और क्यों? (2)

**उत्तर** मीनू, राजो के चचेरे भाई मनोहर को विस्मित-सी होकर देखती रह गई, क्योंकि मीनू जब पिछली बार उससे मिली थी, तो वह पूर्णतः

स्वस्थ था, लेकिन इस बार जब वह घर आया, तो मीनू ने देखा कि मनोहर का एक पैर एवं दाहिने हाथ की दो अंगुलियाँ कटी हुई हैं।

- (ख) मीनू किसकी हालत देखकर परेशान हो गई और उसने उदास स्वर में मीनू से क्या कहा था? (2)

**उत्तर** मीनू मनोहर की हालत को देखकर परेशान हो गई थी। उसने उदासी भरे स्वर में मीनू से कहा था कि “क्या ठीक दीदी, आप तो देख ही रही हो” अर्थात् उसने अप्रत्यक्ष रूप से स्वयं के दुःखी होने के विषय में मीनू से कहा था।

- (ग) “ये सब समय का फेर है” यह किसने, किससे व क्यों कहा? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** “ये सब समय का फेर है” प्रस्तुत पंक्ति मनोहर ने मीनू के द्वारा उसके अपाहिज होने का कारण जानने के लिए पूछे प्रश्न के उत्तर में कही थी। मीनू ने मनोहर से उसके अपंग होने का कारण पूछा था कि “ये सब क्या हो गया, जिस पर मनोहर ने अपने भाग्य के प्रति हताशा एवं निराशा प्रकट करते हुए कहा कि “ये सब समय का फेर है।”

- (घ) “मैं अपने को बहुत खुशनसीब समझ रहा था” प्रस्तुत पंक्ति में ‘मैं’ शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है तथा वह स्वयं को खुशनसीब क्यों समझ रहा था? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** “मैं अपने को बहुत खुशनसीब समझ रहा था” प्रस्तुत पंक्ति में वक्ता अर्थात् मनोहर ने स्वयं के लिए ‘मैं’ शब्द का प्रयोग किया है। मनोहर के स्वयं को बहुत खुशनसीब समझने का कारण था—उसका अल्पायु में ही एक फैक्ट्री में नौकरी मिल जाना। इस नौकरी को पाकर मनोहर अत्यधिक प्रसन्न था, इसलिए मनोहर ने कहा कि वह यह नौकरी मिलने के उपरांत स्वयं को बहुत खुशनसीब समझ रहा था।

3. विवाह के फालतू खर्च में से कुछ रुपये बचाकर अपाहिज मनोहर की सहायता करने का उसने संकल्प लिया। रात में बिस्तर पर पड़े-पड़े मीनू यही सोचती रही कि न जाने हमारे देश में ऐसे कितने अपंग लोग हैं। यदि प्रत्येक संपन्न व्यक्ति अपनी जिंदगी में किसी एक की सहायता कर उसे छोटा-सा काम करा दे, तो हमारे देश में इन अपंगों की बेरोजगारी की समस्या दूर हो जाएगी।

- (क) मनोहर, मीनू के घर क्यों आया था? (2)

**उत्तर** मीनू के घर में विवाह की तैयारियाँ चल रही थीं। जिस कारण घर में कई तरह के काम थे, अतः मनोहर ने सोचा था कि शादी वाले घर में काम होगा, तो वह भी कुछ कर आएगा, इसलिए मनोहर, मीनू के घर आया था।

- (ख) मनोहर कौन था? उसकी हालत मीनू से क्यों नहीं देखी जा रही थी? (2)

**उत्तर** मनोहर राजो का चचेरा भाई था, जो अपाहिज था। मीनू के हृदय में अपाहिज व्यक्तियों के लिए संवेदनशीलता एवं दयालुता थी। मनोहर को तो वह बचपन से ही जानती थी, इसलिए मीनू से मनोहर की लाचारगी देखी नहीं जा रही थी।

- (ग) मीनू द्वारा लिया गया संकल्प क्या था? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** मनोहर अपाहिज था। उसके लाचार एवं बेबस होने के कारण मीनू से उसकी ऐसी हालत देखी नहीं जा रही थी। मीनू ने निश्चय

किया था कि वह किसी-न-किसी रूप से मनोहर की सहायता अवश्य करेगी, इसलिए मीनू संकल्प लेती है कि वह विवाह में होने वाले फिजूल के खर्चों में से पैसे बचाकर मनोहर की सहायता जरूर करेगी।

- (घ) मीनू के अनुसार देश से अपंग व्यक्तियों की बेरोजगारी की समस्या कैसे दूर हो सकती थी? स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** मीनू के हृदय में अपंग व्यक्तियों के प्रति बचपन से ही दयाभाव था। अपंग व्यक्तियों की बेरोजगारी की समस्या पर वह सोचती है कि यदि प्रत्येक संपन्न व्यक्ति अपनी जिंदगी में किसी एक अपंग बेरोजगार की सहायता कर उसे छोटा-सा रोजगार उपलब्ध करवा दे, तो हमारे देश से अपंग व्यक्तियों की बेरोजगारी की समस्या समाप्त हो जाएगी।

4. उन्हें अपनी बेटी पर गर्व था। इतनी स्वाभिमानी व उदार चरित्र की बेटी पाकर वे अपने को धन्य महसूस कर रहे थे। मनोहर को मीनू के घर के सामने ही पान की दुकान खुलवा दी गई। मीनू की दया भावना ने मनोहर की जिंदगी सुधार दी।

- (क) मीनू किस सोच में डूबी हुई थी? (2)

**उत्तर** मनोहर की अपंगता को देखकर मीनू ने उसकी सहायता करने का निश्चय किया था। मीनू सोच रही थी कि उसे मनोहर की सहायता किस प्रकार से करनी चाहिए, मनोहर को पैसे देकर या फिर उसके लिए कोई काम करवा कर। मीनू इन्हीं विचारों में डूबी हुई थी।

- (ख) मीनू मनोहर के लिए कार्य तलाशने में दुविधा से घिरी हुई क्यों थी? स्पष्ट कीजिए। (2)

**उत्तर** मीनू को मनोहर के लिए कार्य तलाशने में दुविधा इसलिए हो रही थी, क्योंकि एक हादसे में मनोहर का एक पैर व दाहिने हाथ की दो अंगुलियाँ कट गई थीं। जिस कारण वह ज्यादा चल-फिर नहीं सकता था, इसलिए मीनू मनोहर के लिए कार्य तलाशने में दुविधा से घिरी हुई थी।

- (ग) मीनू द्वारा सोचा गया सुझाव क्या था? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। (3)

**उत्तर** मीनू ने मनोहर की सहायता करने का निश्चय किया था, इसलिए बहुत सोचने-विचारने के बाद मीनू के मस्तिष्क में विचार आया। वह निर्णय करती है कि मनोहर को यदि पान की दुकान खोलकर दे दी जाए, तो एक पैर न होने के उपरांत भी मनोहर को ज्यादा चलने-फिरने की आवश्यकता नहीं होगी और वह एक ही स्थान पर बैठकर अपना कार्य कर सकता है।

- (घ) उपरोक्त अवतरण के आधार पर मीनू के चरित्र की विशेषताएँ बताते हुए बताइए कि उसने मनोहर की जिंदगी किस प्रकार सुधार दी? (3)

**उत्तर** मीनू स्वाभिमानी, उदार, मेहनती, कर्तव्यनिष्ठ, कठिन परिश्रम करने वाली और कई चारित्रिक गुणों से परिपूर्ण युवती थी। मीनू ने मनोहर की बेबसी एवं लाचारगी को देखते हुए, उसकी सहायता करते हुए उसने मनोहर के लिए पान की दुकान खुलवा दी थी।

मीनू के इस कार्य से मनोहर को अपंग होने के कारण अब बेबसी का जीवन नहीं जीना पड़ेगा। इस प्रकार मीनू ने मनोहर के लिए पान की दुकान खुलवाकर उसकी जिंदगी सुधार दी थी।

# अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- मीनू के हृदय में जो हीनभावना के कारण दुःख के भाव उभर रहे थे, वह अब खुशी में परिवर्तित हो गए। प्रथम श्रेणी में पास होने पर वह खुशी से फूली न समाई और नीलिमा से लिपटकर झूम गई। मीनू प्रसन्नचित्त भागी-भागी अपने घर चली गई।
  - मीनू के हृदय में हीनभावना किस बात को लेकर थी? (2)
  - मीनू के दुःख के भाव खुशी में परिवर्तित क्यों हो गए? (2)
  - मीनू के व्यक्तित्व तथा चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (3)
  - मीनू के मन में व्याप्त हीनभावना के लिए आप समाज को कितना उत्तरदायी मानते हैं? इस पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए। (3)
- उनके जाने के पश्चात् दयाराम जी कुछ निढाल-से होकर सोफे पर बैठ गए। तभी उनकी पत्नी भी वहाँ पास में ही आकर बैठ गई। कुछ क्षण तक वे उनके चेहरे को देखती रहीं। अपने पति के मन में उभरे भावों को वह अच्छी प्रकार से समझ रही थीं। जब उनसे रहा न गया, तब वह बोल ही पड़ीं “अजी, आपको क्या लगता है, मीनू का रिश्ता हो जाएगा यहाँ?”
  - किन लोगों के जाने के बाद दयाराम जी निढाल होकर सोफे पर बैठ गए और क्यों? (2)
  - ‘कुछ क्षण तक वे उनके चेहरे को देखती रहीं’—वाक्य में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए। (2)
  - दयाराम जी के मन में कौन-से भाव उभर रहे थे, जिन्हें वह अच्छी तरह समझ रही थीं? (3)
  - अपनी बेटी मीनू के रिश्ते को लेकर मीनू के माता-पिता आशंकित क्यों थे? (3)
- उन्होंने धनीराम जी से कहा कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। हम भी एक लड़की देखकर आए हैं। सबको पसंद भी आ गई है। वे नहीं चाहते थे कि एक बड़े घर की लड़की लेकर वे अपने बेटे को बेच डालें। उसके पाँवों में वे बेड़ियाँ नहीं डालना चाहते थे। मायाराम जी के मना करने पर भी धनीमल जी ने कहा, “मेरी तो बस तीन बेटियाँ ही हैं। मेरे मरने के बाद सब कुछ इन्हीं का है।”
  - धनीराम जी ने किससे और क्या कहा? (2)
  - कौन नहीं चाहते थे कि एक बड़े घर की लड़की के साथ उनके बेटे की शादी हो और क्यों? (2)
  - “मेरे मरने के बाद सब कुछ इन्हीं का है” वाक्य में निहित अभिप्राय को स्पष्ट कीजिए। (3)
  - विवाह संबंधी प्रस्ताव अस्वीकार होने के बाद भी धनीमल जी ने क्या कहा और क्यों? (3)
- मीनू अपने कमरे में बैठी सबकी बातें सुन रही थी। उसके हृदय की धड़कन तीव्र होती जा रही थी। उसे अतीत की स्मृति हो आई। पहले भी कई बार लड़के वालों द्वारा उसे नापसंद कर दिया गया था। उसे इतनी घबराहट तब भी नहीं होती थी, जब उसका परीक्षा परिणाम निकलता था, पर आज यह घबराहट कैसे?

- मीनू के हृदय की धड़कन तीव्र क्यों हो रही थी? (2)
  - मीनू किस परीक्षा के परिणाम से घबरा रही थी? (2)
  - अतीत की स्मृति हो आई तथा क्यों? (3)
  - मीनू के घरवालों पर पत्र की क्या प्रतिक्रिया हुई? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। (3)
- हॉस्टल पहुँचने पर कुछ दिनों तक मीनू का बिलकुल भी मन नहीं लगा। कुछ नया व अजीब-सा प्रतीत हुआ। शुरू में वहाँ उसकी अधिक सहेलियाँ भी नहीं बन पाई थीं। वह अपना अधिकतर समय अपनी पुस्तकों के साथ ही लगाती। किताब हाथ में लिए-लिए वह अतीत की स्मृतियों में खो गई। जब वह छोटी थी, तो एक दिन उसके पिताजी ने उससे पूछा था, “बेटी, तुम बड़ी होकर, पढ़-लिखकर क्या बनोगी?”  
नन्हीं मीनू ने जवाब दिया था, “पिताजी, मैं पढ़-लिखकर वकील बनूँगी मुझे वकील बनना बहुत अच्छा लगता है।”
    - हॉस्टल में कौन गया तथा उसे वहाँ कैसा प्रतीत हो रहा था? (2)
    - मीनू अपना अधिकांश समय कैसे व्यतीत करती थी? (2)
    - मीनू की बचपन से क्या बनने की इच्छा थी और क्यों? स्पष्ट कीजिए। (3)
    - मीनू की माँ ने उसकी इच्छा पर क्या प्रतिक्रिया दी? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। (3)
  - “अब तो वह एक बच्चे की माँ भी बन गई है, पर उसे तो अपना क्लब ही प्यारा है। बच्चे को भी मौसी के ऊपर छोड़कर चली जाती है। माँ, मैं एक दिन मौसी जी के घर गया था। मौसी जी को तो तेज बुखार था, परंतु उस बुखार में ही वे घर का सारा काम कर रहीं थीं और साथ ही उस छोटे बच्चे को भी सँभाल रखा था। मुझे तो बहुत अधिक दया आ रही थी मौसी जी पर।” अमित ने अपने विचार माँ के सामने प्रकट किए।
    - कौन एक बच्चे की माँ बन गई है और उसे अपना क्लब प्यारा क्यों है? (2)
    - मौसी जी की स्थिति कैसी है? स्पष्ट कीजिए। (2)
    - अमित मौसी जी का उदाहरण क्यों दे रहा है? स्पष्ट कीजिए। (3)
    - अमित की माँ पर मौसी जी के उदाहरण का क्या प्रभाव पड़ा? (3)
  - सरिता को कमरे में बुलाया गया। उसके साथ उसकी चाची भी आई। सरिता के चेहरे को देखते ही अमित के पैरों तले से धरती खिसक गई। कितनी प्रशंसा की जा रही थी सरिता की। नैन-नक्श में सिर्फ उसकी आँखें ही बड़ी थीं। रंग तो मीनू के सामने कहीं अधिक गिरा हुआ था।
    - ‘पैरों तले ज़मीन खिसकना’ का अर्थ बताते हुए उपरोक्त अवतरण के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि अमित के साथ ऐसी क्या घटना घटी? (2)
    - “कितनी प्रशंसा की जा रही थी सरिता की।” अमित ने ऐसा क्यों कहा? (2)
    - अमित ने सरिता और मीनू की तुलना क्यों की? मीनू का संक्षिप्त चरित्र-चित्रण कीजिए। (3)
    - अमित की चारित्रिक विशेषताएँ बताते हुए बताइए कि उसे मीनू क्यों पसंद आई थी? (3)

8. उस निमंत्रण-पत्र को हाथ में लेकर वह फिर अतीत की स्मृतियों में डूब गई। वह अपने को अभागन महसूस कर रही थी। कई लड़के उसे देखकर नापसंद कर चुके थे। यह कल्पना करते ही उसका दिल भर गया, तभी उसने अपने-आप को सँभाला और वह अपनी सहेलियों के साथ बाहर चली गई।  
 (क) यहाँ पर किसका निमंत्रण आया है? (2)  
 (ख) अतीत की स्मृतियों में डूब जाने पर मीनू उदास क्यों हो जाती है? (2)  
 (ग) कई लड़के उसे देखकर नापसंद कर चुके थे—स्पष्ट कीजिए। (3)  
 (घ) मीनू अपनी सहेलियों के साथ कहाँ जा रही है? (3)
9. तभी बारात में आये एक नवयुवक ने उसकी आवाज की प्रशंसा करते हुए कहा, “आपकी आवाज बहुत मधुर है, क्या सुन्दर गीत सुनाया है आपने।” मीनू ने जैसे ही सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा, तो वह आश्चर्यचकित हो उठी। अरे! ये तो वही लड़का अमित है, जो मेरठ से उसे देखने आया था। उसके मुँह से अपनी प्रशंसा सुनने के बाद उसके हृदय में कोई प्रसन्नता की अनुभूति नहीं हुई। उन अमानवीय लोगों के लिए जिन्होंने पैसे के लिए उसका दिल तोड़ा, उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाई।  
 (क) नवयुवक कौन है? (2)  
 (ख) मीनू उस नवयुवक को देखकर चौंक क्यों गई? (2)  
 (ग) मीनू अपनी प्रशंसा सुनकर खुश क्यों नहीं हुई? (3)  
 (घ) उसकी भावनाओं को किसने ठेस पहुँचाई थी? स्पष्ट कीजिए। (3)
10. अनेक अच्छे-बुरे विचार उसके मस्तिष्क में उठते, जिससे उसका मन और अधिक बेचैन हो उठता। अब उसे इंतज़ार था उस प्रातः का, जब वह स्वतंत्र पक्षी की तरह अपने घर जा सकेगी।  
 (क) मीनू रातभर बेचैनी में करवट क्यों बदलती रही? (2)  
 (ख) मीनू को अपनी स्थिति किसके समान जान पड़ी और क्यों? (2)  
 (ग) मीनू को सुबह का इंतज़ार क्यों था? (3)  
 (घ) “स्वतंत्र पक्षी की तरह अपने घर जा सकेगी” से क्या अभिप्राय है? (3)
11. “भइया, मैं सच कह रही हूँ। जवान बेटियों की तो बड़ी भारी जिम्मेदारी होती है। इनकी शादी हो जाएगी तो तुझे कम-से-कम छुट्टी तो मिल जाएगी। फिर रह गया रोहित, वह तो लड़का है। उसकी कोई ऐसी बात नहीं है।” बुआजी ने बहुत विश्वास के साथ कहा।  
 (क) वह महिला कौन है और किसको क्या समझा रही है? (2)  
 (ख) महिला किसके विवाह की चिंता कर रही है? (2)  
 (ग) हमारे समाज में लड़के के विवाह की अपेक्षा लड़की के विवाह को आज भी इतना महत्व क्यों दिया जाता है? (3)  
 (घ) प्रस्तुत पंक्तियों का अर्थ अपने शब्दों में व्यक्त करो। (3)
12. घर से बाहर रहकर दूसरे लोग ही अपने हो जाते हैं। माया की जब आँखें खुलीं, तो मीनू की दवाई का समय हो गया था। वह तुरंत बिस्तर से उठी और उसने मीनू को दवाई दी।  
 (क) मीनू, माया को क्यों देख रही थी? (2)  
 (ख) माया ने उठते ही क्या किया? (2)  
 (ग) “घर से बाहर रहकर दूसरे लोग ही अपने हो जाते हैं।” पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)  
 (घ) माया ने मीनू को दवाई क्यों दी और उसका क्या असर हुआ? (3)
13. माँ ने तो मीनू को अपने सीने से लगा लिया। आशा और रोहित तो खुशी से झूम उठे। ‘दीदी-दीदी’ कहकर उन्होंने अपनी सारी इकट्टी की हुई बातें मीनू को बता दीं। मीनू भी प्रसन्नतापूर्वक उनकी बातें सुनती रही। तभी माँ को ध्यान आया कि मीनू से इसकी परीक्षा के बारे में तो कुछ पूछा ही नहीं।  
 (क) मीनू कहाँ से आई थी और क्यों? (2)  
 (ख) घर पहुँचने पर मीनू ने क्या पाया? (2)  
 (ग) मीनू के घर पहुँचने पर सबने अपनी-अपनी प्रतिक्रिया किस तरह प्रकट की? (3)  
 (घ) माँ क्या पूछना भूल गई थीं? उस पर मीनू ने क्या जवाब दिया था? (3)
14. मीनू की दो महीने की छुट्टियाँ समाप्त हो चली थीं। अभी तक वह आशा की शादी की तैयारियों में ही व्यस्त थी। दो दिन बाद उसे हॉस्टल जाना था। इसलिए अब वह अपनी जाने की तैयारी करने लगी।  
 (क) किसकी व कौन-सी छुट्टियाँ समाप्त हो गई थीं? (2)  
 (ख) कौन व किस कार्य में व्यस्त थी? (2)  
 (ग) किसे छात्रावास जाना था और क्यों? उसने क्या करना आरंभ किया? (3)  
 (घ) छात्रावास जाने का समय निकट जानकर मीनू की मनःस्थिति कैसी हो गई थी? (3)
15. यह कैसी विचित्र घड़ी होती है। माता-पिता जिस बेटे का लालन-पालन इतने वर्षों तक लाड़-प्यार से करते हैं, उसी बेटे को सदा के लिए दूसरे के हाथों में सौंप देते हैं। हर पल रहने वाली बिटिया के लिए वह घर पराया हो जाता है। घर ही क्या, बिटिया भी तो पराया धन ही हो जाती है?  
 (क) यहाँ विचित्र घड़ी से क्या उद्देश्य है? (2)  
 (ख) किसका विवाह हो रहा है? (2)  
 (ग) वर्षों के प्यार-दुलार के बाद लड़की को बिछुड़ना क्यों पड़ता है? (3)  
 (घ) “बेटे पराया धन होती है।” का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (3)
16. उसके बाद जब वह नीलिमा के पास आया, तो मीनू वहाँ न दिखाई दी। उसने सोचा था कि कार्य समाप्त हो जाने पर ही वह कुछ समय बैठकर मीनू से बातें करेगा, परंतु आज भी वह दुर्भाग्यवश मीनू को अपने हृदय की बात न बता सका।  
 अमित के हृदय में उत्सुकता थी, मीनू के बारे में कुछ जानने की, कुछ समझने की।  
 (क) अमित कौन था और किस कार्य में व्यस्त था? (2)  
 (ख) नीलिमा के पास कौन आया था और क्यों? (2)  
 (ग) कौन अपने हृदय की बात किसे न बता सका था और क्यों? (3)  
 (घ) अमित के हृदय में किसके विषय में जानने की उत्सुकता थी तथा क्यों? (3)
17. जैसे ही उसकी दृष्टि घड़ी पर गई, वह एकदम उठ खड़ी हुई। नीलिमा ने उससे कहा, “सुरेंद्र जी छोड़ आएँगे,” परंतु नीलिमा की तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए उसने नीलिमा को अकेले छोड़ना उचित न समझा और वह स्वयं ही हॉस्टल चली गई।  
 (क) किसकी दृष्टि घड़ी पर गई और उसकी क्या प्रतिक्रिया हुई? (2)



- (ख) नीलिमा ने मीनू के समक्ष क्या प्रस्ताव रखा और क्यों? (2)
- (ग) मीनू अकेले ही छात्रावास क्यों चली गई थी? (3)
- (घ) अवतरण के आधार पर मीनू की चारित्रिक विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए। (3)
- 18.** उन्होंने लिफाफा खोलकर देखा तो वे प्रसन्न हो गयीं। उनके भतीजे दीपक की शादी का कार्ड था। कितनी प्रसन्न थीं आज वह। उनको अपने भाई के पास गए हुए भी कई वर्ष हो गए थे। उन्होंने सोचा कि इस बार वे शादी में जाएंगी, तब कुछ दिनों के लिए वहाँ रुकेंगी।
- (क) दीपक कौन है? वक्ता का उससे क्या सम्बन्ध है? (2)
- (ख) शादी में जाने के लिए वे इतनी उत्साहित क्यों हैं? (2)
- (ग) 'शादी' शब्द को सुनकर एक अजीब-सी प्रसन्नता यहाँ क्यों छा जाती है? (3)
- (घ) शादी के पीछे छिपे भाव को स्पष्ट कीजिए। (3)
- 19.** एक घंटे का समय कहाँ व्यतीत करें, उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था। तभी उसने एक पत्रिका खरीदी और पास में पड़ी बेंच पर बैठकर पढ़ने लगी। हर दस मिनट के बाद उसकी नजर घड़ी पर चली जाती। एक-एक पल काटना कठिन हो रहा था।
- (क) वक्ता परेशान क्यों है? (2)
- (ख) उसे यह समय बहुत लंबा क्यों लग रहा है? (2)
- (ग) इस इंतजार का वास्तविक उद्देश्य क्या है? (3)
- (घ) यह कथन किस परिप्रेक्ष्य में कहा गया है? (3)
- 20.** माँ ने उसे समझाते हुए कहा, 'देखो, मीनू बेटी! तुम अपनी परेशानी मुझे नहीं बताओगी, तो फिर किसे बताओगी। एक माँ, माँ होने के साथ-साथ बच्चों की मित्र भी होती है। इस समय मुझे अपना मित्र समझकर अपनी परेशानी मुझे बताओ। हो सकता है बेटी, तुम्हारी परेशानी में मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूँ।'
- माँ के इस मित्रतापूर्ण व्यवहार से मीनू को महसूस हुआ कि माँ सिर्फ माँ ही नहीं, वरन् उसकी मित्र भी हैं।
- (क) माँ किसे व क्यों समझा रही थी? (2)
- (ख) उपरोक्त कथन के अनुसार कौन परेशान था और क्यों? (2)
- (ग) माँ ने मीनू को समझाते हुए क्या कहा था? (3)
- (घ) 'माँ सिर्फ माँ ही नहीं, वरन् उसकी मित्र भी होती है।' पंक्ति से क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए। (3)
- 21.** मीनू को मेरठ आए दस दिन हो चुके थे। उसे नीलिमा से पता चल गया था कि अमित अभी अस्पताल में ही है। आज मीनू ने कचहरी जाने से पहले ही निश्चय कर लिया था कि वह लौटते समय अस्पताल में अमित से मिलकर आएगी। आज न जाने क्यों उसे अमित की स्मृति हो आई।
- (क) मीनू ने मेरठ में रहने का निश्चय क्यों किया? (2)
- (ख) नीलिमा कौन थी? मीनू को उससे क्या पता चला? (2)
- (ग) अमित कौन था और वह अस्पताल में भर्ती क्यों था? (3)
- (घ) अमित के प्रति मीनू की क्या भावनाएँ थीं? स्पष्ट कीजिए। (3)
- 22.** रविवार का दिन था। सप्ताह में केवल एक ही दिन तो मीनू अपने को स्वतंत्र अनुभव करती है। रविवार होने के कारण उसने सोचा कि आज का दिन नीलिमा के साथ ही व्यतीत किया जाए। वह नीलिमा के घर जाने को ही थी कि इतने में उसकी छोटी बहन आशा अपने पति व बेटे के साथ वहाँ आ गई।
- मीनू आशा से लगभग आठ महीने बाद मिली थी। कितना परिवर्तन आ गया था आशा में। माँ बनने के बाद काफी मोटी हो गई थी। यद्यपि वह मीनू से छोटी थी, परंतु मीनू उसके सामने काफी छोटी प्रतीत हो रही थी।
- (क) मीनू कहाँ जाने के बारे में सोच रही थी? (2)
- (ख) मीनू किसके घर नहीं जा पाई थी व क्यों? (2)
- (ग) मीनू ने आशा में क्या परिवर्तन महसूस किए? संक्षेप में बताइए। (3)
- (घ) आशा और मीनू का संबंध बताते हुए दोनों के व्यक्तित्व की दो-दो विशेषताएँ बताइए। (3)
- 23.** दयाराम जी व उनकी पत्नी दोनों को ही फोटो पसंद आ गया था, परंतु फिर भी वे अभी इस पक्ष में नहीं थे कि बड़ी बेटी के विवाह से पहले ही बेटे का विवाह कर दें। उन्होंने उन सज्जन को यही कहकर विदा किया कि अभी हम रोहित की शादी नहीं कर रहे हैं, न रोहित ही अभी विवाह के पक्ष में है।
- वे सज्जन तो वहाँ से चले गए, परंतु माँ और पिताजी दोनों की ही मनःस्थिति व्याकुल हो गई थी। वे इस बात से चिंतित थे कि मीनू अभी विवाह के लिए पूर्ण रूप से सहमत नहीं थी।
- (क) रोहित कौन था और वह क्या करता था? (2)
- (ख) दयाराम जी व उनकी पत्नी को किसका फोटो पसंद आया था? (2)
- (ग) दयाराम जी व उनकी पत्नी अभी रोहित के विवाह के पक्ष में क्यों न थे? कारण सहित बताइए। (3)
- (घ) माँ और पिताजी की मनःस्थिति व्याकुल क्यों हो गई थी? (3)
- 24.** वह समझ नहीं पा रही थी कि हमारे समाज में स्त्री व पुरुष में इतना भेद क्यों? यदि कोई लड़का अकेला रहता है, तो समाज उस पर अंगुलियाँ नहीं उठाता, चाहे वह कितने ही अपराध क्यों न करता हो। परंतु एक लड़की, चाहे वह कितना ही संयमशील जीवन क्यों न व्यतीत करती हो, फिर भी समाज उस पर दोषारोपण करता है।
- (क) किसकी बातें सुनकर वक्ता इतनी परेशान है? (2)
- (ख) समाज में स्त्री व पुरुष में इतना भेद क्यों है? (2)
- (ग) लड़की के जीवन में इतनी कठिनाइयाँ क्यों आती हैं? (3)
- (घ) इन पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए। (3)
- 25.** मीनू दुल्हन बनी, उसकी डोली सजी और अपने पिता संग ससुराल को चल दी। मीनू को पा लेने पर अमित भी अब अपने को भाग्यशाली अनुभव कर रहा था।
- दुल्हन के रूप में सजी मीनू आज साधारण पढ़ी मीनू नहीं, वरन् एक प्रसिद्ध वकील मीनू थी, जिसने आत्मविश्वास व लगन से विशेष ख्याति प्राप्त कर ली थी। आज वह अपनी उस मंजिल पर पहुँच चुकी थी, जिसकी उसे तलाश थी।
- (क) 'आज मीनू का कौन-सा सपना पूरा हो गया?' स्पष्ट कीजिए। (2)
- (ख) क्या वकील बनना ही मीनू की मंजिल थी? (2)
- (ग) क्या मीनू सामाजिक बंधन से मुक्त हो सकी? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए। (3)
- (घ) प्रस्तुत पंक्तियों में 'विशेष ख्याति' से क्या तात्पर्य है? संक्षेप में वर्णन कीजिए। (3)







# प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र



# ICSE

## प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 1

(हल सहित)

### हिंदी

समय : 3 घंटे

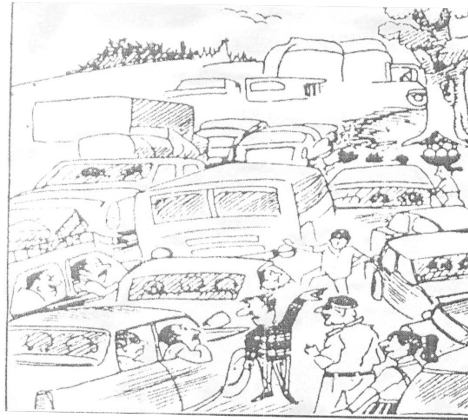
पूर्णांक : 80

- निर्देश 1. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं—‘क’ और ‘ख’।
- खंड ‘क’ के सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
  - खंड ‘ख’ से कोई भी चार प्रश्न करने अनिवार्य हैं, जिनमें दो प्रश्न पाठ्यपुस्तक के होंगे तथा अन्य दो किसी अन्य पुस्तक से होंगे।

### खंड ‘क’

[40 अंक]

1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए (15)
- इंटरनेट वर्तमान युग की माँग है। इसके लाभ व दुष्परिणाम पर अपने विचार लिखिए।
  - विज्ञापन जनसेवा में किस प्रकार सहायक है? मानव जीवन में विज्ञापन का महत्त्व स्पष्ट करते हुए समझाइए।
  - किसी रेलवे स्टेशन पर ट्रेन के आने एवं जाने के समय के प्लेटफॉर्म के दृश्य का वर्णन कीजिए।
  - ‘मूर्ख मित्र से, समझदार शत्रु अच्छा होता है’ उक्ति को आधार बनाकर एक कहानी लिखिए।
  - प्रस्तुत चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर कोई लेख अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट संबंध चित्र से होना चाहिए।



**2. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए** (7)

- छात्रावास में रहने वाले अपने भाई या बहन को पत्र लिखकर समय के सदुपयोग के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
- अपने नगर के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखकर अपने क्षेत्र में खाने की वस्तुओं में मिलावट की घटनाओं के प्रति उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए।

**3. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में ही होने चाहिए।**

एक बार महाराज कृष्णदेव राय ने अपने राज्य का वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया, उसमें आस-पास के राजाओं को भी आमंत्रित किया। सभी ने उन्हें कीमती उपहार दिए। उपहारों में चार कीमती फूलदान भी थे, जो एक राजा ने दिए थे। महाराज को ये फूलदान इतने अधिक भाए कि उन्होंने उनकी सुरक्षा के लिए अलग से एक सेवक तैनात कर दिया और उसे सख्त आदेश दिया कि यदि फूलदानों के रख-रखाव में किसी प्रकार की लापरवाही हुई या वे टूट गए, तो उसे मृत्युदंड दिया जाएगा।

वह सेवक दिन-रात उनकी हिफाजत करता था, उन पर धूल भी नहीं लगने देता था, लेकिन दुर्भाग्य से एक दिन अचानक एक फूलदान उसके हाथ से छूटकर टूट गया। खबर सुनते ही महाराज आग-बबूला हो गए और उन्होंने उस लापरवाह सेवक को आठवें दिन फाँसी देने का हुक्म दिया।

तेनालीराम को जब यह पता चला तो उन्होंने महाराज को समझाने की कोशिश की कि रामसिंह बीस वर्षों से उनकी सेवा में है, उसे इतने मामूली नुकसान का इतना कठोर दंड देना उचित नहीं है। महाराज ने उनकी एक न सुनी। वे भी अपना-सा मुँह लेकर लौट आए, लेकिन उन्होंने उस सेवक की प्राण रक्षा का संकल्प कर लिया। वे कारागार में गए, सेवक से सारी बात की जानकारी ली और उसके कान में कुछ कहकर चले आए।

दिन तेज़ी से बीते और फाँसी वाला दिन आ गया, उस दिन सभी फाँसी गृह में एकत्र हुए। महाराज अभी भी क्रोध में थे और सेवक को फाँसी पर झूलता देखना चाहते थे। सेवक को फाँसी के तख्ते पर चढ़ा दिया गया और जब जल्लादों ने उससे उसकी अंतिम इच्छा पूछी, तो सेवक ने कहा—“मैं बाकी बचे वे फूलदान भी देखना चाहता हूँ, जिनकी वजह से मैं फाँसी पर चढ़ाया जा रहा हूँ।”

महाराज की अनुमति से तीनों फूलदान उसके सम्मुख लाए गए, उसने आव देखा न ताव और उन फूलदानों को ज़मीन पर पटककर चूर-चूर कर दिया। महाराज के क्रोध की सीमा न रही और उन्होंने दहाड़ते हुए पूछा “मूर्ख ! ये कीमती फूलदान क्यों तोड़ दिए तुमने, क्या मिला इन्हें तोड़कर?” “तीन निर्दोषों का जीवन महाराज।” वह निर्भीकता से बोला—“जिस प्रकार मैं निर्दोष इन फूलदानों के कारण फाँसी पर चढ़ाया जा रहा हूँ, कभी-न-कभी मेरी तरह तीन और लोग फाँसी पर चढ़ाए जा सकते थे। ये फूलदान मनुष्यों के जीवन से अधिक कीमती नहीं हैं, महाराज।”

उसकी यह बात सुनकर उन्हें तुरंत आभास हो गया कि क्रोध में वे कैसा अनर्थ करने जा रहे थे, उन्होंने फौरन सेवक की फाँसी स्थगित कर दी।

- सेवक को क्या काम सौंपा गया था? उस काम के साथ क्या शर्त जुड़ी हुई थी? (2)
- इस कहानी में महाराज को कितनी बार क्रोध आया और क्यों? समझाते हुए लिखिए। (2)
- तेनालीराम क्या चाहते थे? उन्होंने अपने काम को पूरा करने के लिए क्या प्रयास किया? (2)
- महाराज के पास फूलदान कब आए थे? उन फूलदानों का क्या हश्र हुआ? (2)
- सेवक को फूलदान तोड़ने का अवसर कब मिला? फूलदान तोड़कर सेवक को क्या मिला? (2)

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए**

- निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार शब्दों के विलोम लिखिए (1)  
आग्रह, आरोह, आवृत्त, कठोर, चर, पक्ष
- निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए (1)  
कपड़ा, गंगा
- निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक मुहावरे की सहायता से वाक्य बनाइए (1)  
अपना-सा मुँह लेकर रह जाना, आटे-दाल का भाव मालूम होना



- (iv) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार शब्दों को शुद्ध कीजिए (1)  
 त्रितीय, ब्रिटिश, वेश्य, मेनेजर, कैंटीन, एक्ट
- (v) निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए (4)
- (क) लड़के ने माना कि दोष उसका है।  
 (सरल वाक्य बनाइए)
- (ख) छात्र ने परीक्षा उत्तीर्ण की।  
 (वाक्य में लिंग बदलिए)
- (ग) तुम फूल तोड़ोगे।  
 (कर्मवाच्य में परिवर्तित कीजिए)
- (घ) सीता कल बाज़ार गई थी।  
 (भविष्यकाल में परिवर्तित कीजिए)

## खंड 'ख'

[40 अंक]

### साहित्य सागर-संक्षिप्त कहानियाँ

#### 5. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

उनका 'हृदय परिवर्तन' हो गया है। वे आज सात दिनों से घास खा रहे हैं। रात-दिन भगवान के भजन और परोपकार में लगे रहते हैं। उन्होंने अपना जीवन जीव-मात्र की सेवा में अर्पित कर दिया है।

- (i) किसके दर्शन के लिए भोली-भाली भेड़ें इकट्ठी हो गई थीं? (2)
- (ii) भेड़ों को देखकर भेड़ों की क्या प्रतिक्रिया थी? बूढ़े सियार ने उन्हें क्या कहकर रोक लिया? (2)
- (iii) हृदय परिवर्तन की बात किसके लिए व क्यों कही गई है? जीव-मात्र की सेवा में अपना जीवन किसने अर्पित कर दिया था? (3)
- (iv) प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (3)

#### 6. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

तीन गज की दूरी से दिख पड़ा, एक लड़का, सिर के बड़े-बड़े बाल खुजलाता चला आ रहा था। नंगे पैर, नंगे सिर, एक मैली-सी कमीज़ लटकाए है।

- (i) लेखक ने अपने मित्र से वापस चलने को क्यों कहा? (2)
- (ii) मित्र के इशारा करने पर लेखक ने क्या देखा और क्या कहा? (2)
- (iii) कहानी में नैनीताल की सुंदरता का वर्णन किस प्रकार किया गया है? (3)
- (iv) नंगे पैर, नंगे सिर, एक मैली-सी कमीज़ द्वारा लड़के की स्थिति का वर्णन कीजिए। (3)

#### 7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

महायज्ञ ! सेठ ने आश्चर्य से कहा। "हाँ, वही जो आज आपने किया," धन्ना सेठ की पत्नी ने कहा।

सेठ बड़े आश्चर्य में पड़े-महायज्ञ ! और आज ! वे समझे कि उनका मजाक उड़ाया जा रहा है। विनम्र भाव से बोले, "आप आज की कहती हैं, मैंने तो बरसों से कोई यज्ञ नहीं किया। मेरी स्थिति ऐसी नहीं थी।"

- (i) सेठ ने अपनी परेशानी का बखान किसके समक्ष किया? (2)
- (ii) सेठ 'धन्ना सेठ' की हवेली में क्यों गया था? (2)
- (iii) 'महायज्ञ' की बात सुनकर सेठ आश्चर्यचकित क्यों हो गए? (3)
- (iv) 'महायज्ञ का पुरस्कार' कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? (3)

## साहित्य सागर—पद्य भाग

### 8. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

उसे भी आती होगी याद ?  
उसे, हाँ आती होगी याद।  
नहीं तो रूढ़ूँगी मैं आज  
सुनाऊँगी उसको फरियाद ॥

- प्रस्तुत पंक्तियों का प्रसंग बताइए। (2)
- 'फरियाद' शब्द से कवयित्री का क्या तात्पर्य है? (2)
- 'उसे भी आती होगी याद?' पंक्ति में 'उसे' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है व ऐसा क्यों कहा गया? (3)
- प्रस्तुत पद्यांश की कवयित्री कौन हैं? उनका साहित्यिक परिचय दीजिए। (3)

### 9. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै।  
सोवत जानि मौन द्वै कै रहि, करि-करि सैन बतावै॥

- यशोदा माता किसे सुलाने का प्रयास कर रही हैं? (2)
- यशोदा माता नींद को कोसती हुई क्या कहती हैं? (2)
- 'कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै'—पंक्ति का तात्पर्य बताइए। (3)
- बाल कृष्ण को सोता जानकर माता यशोदा क्या-क्या करती हैं? (3)

### 10. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,  
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।  
ठहरो, अहों मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा, अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम,  
तुम्हारे दुःख, मैं अपने हृदय में खींच लूँगा।

- 'और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए'—पंक्ति से कवि का क्या तात्पर्य है? (2)
- 'ठहरो अहो मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा'—पंक्ति से कवि का क्या अभिप्राय है? (2)
- प्रस्तुत पंक्तियों के कवि कौन हैं? उनका साहित्यिक परिचय दीजिए। (3)
- प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव लिखिए। (3)

## नया रास्ता (सुषमा अग्रवाल)

### 11. निम्नलिखित अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

तभी चिंतित स्वर में दयाराम बोले, "मीनू की माँ, समझाकर तुम ही मीनू को विवाह करने के लिए तैयार करो।"

"मीनू को मैं समझाने की कोशिश तो करूँगी, पर वह बहुत स्वाभिमान लड़की है। पता नहीं वह विवाह के लिए तैयार होगी या नहीं।"

"उसको तुम समझाकर तो देखो। हो सकता है, अब उसका विचार बदल गया हो। अब वह शादी के लिए तैयार हो जाए।"

- दयाराम जी की चिंता का क्या कारण था? (2)
- दयाराम जी ने मीनू की माँ से उसे क्या समझाने की बात कही? (2)
- मीनू की माँ ने दयाराम जी की बात का क्या जवाब दिया था? (3)
- प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (3)

**12. निम्नलिखित अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

तू ही मेरी एकमात्र सहेली है, जिसको कि मैं अपना सब कुछ समझती हूँ। तुझसे ही मैं अपने दिल की हर बात कह सकती हूँ।

- (i) अवतरण के वक्ता और श्रोता कौन हैं? (2)
- (ii) श्रोता ने वक्ता से क्या आग्रह किया था? (2)
- (iii) श्रोता के आग्रह पर वक्ता ने क्या प्रतिक्रिया दी और क्यों? (3)
- (iv) श्रोता, वक्ता से मिलने क्यों आई थी? वे किस विषय पर बातें कर रहे थे? (3)

**13. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

“अरे हट! वकील वगैरह कुछ नहीं बनना है। कौन पढ़ाएगा तुझे इतना? बस, अट्ठारह साल की उम्र में शादी कर देंगे। फिर लड़कियों को कौन पढ़ाता है इतना? लड़कों की बात और है।”

- (i) वकील बनने की किसकी इच्छा है और किसे यह पसंद नहीं है? (2)
- (ii) “लड़कों की बात और है” यह किसने, किससे कहा?, का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए। (2)
- (iii) अवतरण में बोलने वाले की मानसिकता किस प्रकार की है? (3)
- (iv) लड़के-लड़कियों में भेदभाव करना समाज के लिए कितना हितकर है? (3)

**एकांकी संचय****14. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

मैं जानती हूँ, तुम उन्हें प्यार करती हो। सोचो, तो कोई तुमसे कहे-तुम अतुल को छोड़ दो, क्योंकि उनकी माँ या उनका परिवार इस विवाह से नाराज है तो, क्या तुम, मैं आगे न मुन सकी। मैंने चिल्लाकर कहा, “भाभी, बस करो पर उन्होंने बात पूरी करके दम लिया, बोली, तो क्या तुम उन्हें छोड़ दोगी, बोलो .....।”

- (i) उमा वक्ता से मिलने क्यों गई थी? (2)
- (ii) वक्ता से मिलने के उपरांत उमा के हृदय में वक्ता की कैसी छवि अंकित हुई? (2)
- (iii) वक्ता का संक्षेप में चरित्र-चित्रण कीजिए। (3)
- (iv) वक्ता ने उमा से अतुल को छोड़ने के लिए प्रश्न क्यों किया? (3)

**15. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

जिनकी खाल मोटी होती है, उनके लिए किसी भी बात में कोई भी अपयश, कलंक या अपमान का कारण नहीं होता, किंतु जो आन को प्राणों से बढ़कर समझते आए हैं, वे पराजय का मुख देखकर भी जीवित रहें, यह कैसी उपहासजनक बात है?

- (i) महाराणा प्राणों से बढ़कर किसे मानते हैं और क्यों? (2)
- (ii) “जिनकी खाल मोटी होती है” पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (2)
- (iii) श्रोता कौन है? वक्ता श्रोता से किस विषय पर बात कर रहा है? (3)
- (iv) वक्ता कौन है? वक्ता की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (3)

**16. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

सर्प की भाँति उसकी भी दो जीभें हैं, जो एक रक्त से नहीं बुझेंगी। उसे दूसरा रक्त भी चाहिए।

- (i) प्रस्तुत अवतरण का वक्ता और श्रोता कौन है तथा वे किस विषय में बात कर रहे हैं? (2)
- (ii) वक्ता की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (2)
- (iii) “सर्प की तरह उसकी भी दो जीभें हैं” इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)
- (iv) प्रस्तुत एकांकी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? (3)

## व्याख्या सहित उत्तर

### 1. (i) इंटरनेट वर्तमान युग की माँग

विज्ञान के कारण पहले कंप्यूटर का जन्म हुआ और फिर कंप्यूटर से इंटरनेट का। इंटरनेट न केवल मानव के लिए अति उपयोगी सिद्ध हुआ है, बल्कि संचार में गति एवं विविधता के माध्यम से इसने दुनिया को बिलकुल बदलकर रख दिया है। इंटरनेट ने भौगोलिक सीमाओं को समेट दिया है। भारत में इंटरनेट सेवा की शुरुआत बीएसएनएल ने वर्ष 1995 में की थी। अब एयरटेल, रिलायंस, टाटा इंडिकॉम, वोडाफोन जैसी दूरसंचार कंपनियाँ भी इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराती हैं। आज विश्व के कुल 6.8 अरब से अधिक लोगों में से लगभग 2 अरब लोग इंटरनेट से जुड़े हुए हैं। पूरे विश्व में इंटरनेट से जुड़ने वाले लोगों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है।

**इंटरनेट के लाभ** कंप्यूटर नेटवर्क का आविष्कार सूचनाओं को साझा करने के उद्देश्य से किया गया था। पहले इसके माध्यम से किसी भी प्रकार की सूचना को साझा करना संभव नहीं था, किंतु अब सूचना प्रौद्योगिकी के युग में दस्तावेजों एवं ध्वनि के साथ-साथ विडियो का आदान-प्रदान करना भी संभव हो गया है। विदेश जाने के लिए हवाई जहाज का टिकट बुक कराना हो, किसी पर्यटन स्थल पर स्थित होटल का कोई कमरा बुक कराना हो, किसी किताब का ऑर्डर देना हो, अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए विज्ञापन देना हो, अपने मित्रों से ऑनलाइन चैटिंग करनी हो, डॉक्टरों से स्वास्थ्य संबंधी सलाह लेनी हो या वकीलों से कानूनी सलाह लेनी हो, इंटरनेट हर मर्ज की दवा है।

**इंटरनेट के दुष्परिणाम** इंटरनेट के कई लाभ हैं, तो इसकी कई कमियाँ भी हैं। इसके माध्यम से अश्लील सामग्री बच्चों तक पहुँचनी आसान हो गई है। कई लोग इंटरनेट का दुरुपयोग अश्लील साइटों को देखने और सूचनाओं को चुराने में करते हैं। इससे साइबर अपराधों में वृद्धि हुई है। इंटरनेट से जुड़ते समय वायरसों द्वारा सुरक्षित फाइलों के नष्ट या संक्रमित होने का खतरा भी बना रहता है इन सबके अतिरिक्त बहुत-से लोग इस पर अनावश्यक और गलत आँकड़े एवं तथ्य भी प्रकाशित करते रहते हैं। इस तरह इंटरनेट यदि ज्ञान का सागर है, तो इसमें 'कूड़े-कचरे' की भी कमी नहीं है, इसलिए हमें इसका प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

इसमें दो राय नहीं है कि इंटरनेट ने अनेक सुविधाएँ उपलब्ध करवाई हैं, परंतु यह आवश्यक है कि मनुष्य इसका सही ढंग से प्रयोग करे। साथ ही इसका विस्तार क्षेत्र पूरे देश में बढ़ाया जाना चाहिए।

### (ii) विज्ञापन

आजकल तकनीक एवं प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ ही 'विज्ञापन' संचार के सशक्त माध्यम के रूप में उभरे हैं। वस्तुतः विज्ञापन, उपभोक्ताओं को जागरूक, शिक्षित एवं प्रभावित करने के दृष्टिकोण से निर्माताओं और विक्रेताओं की ओर से विचारों, उत्पादों एवं सेवाओं से संबंधित संदेशों का अव्यक्तिगत संचार है। समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा आदि विज्ञापन प्रसारण के माध्यम हैं।

**जनसेवा में सहायक** केवल व्यावसायिक लाभ के लिए कंपनियों द्वारा ही विज्ञापनों का प्रसारण या प्रकाशन नहीं किया जाता। सरकार भी अपनी विकासोन्मुखी योजनाओं; जैसे- साक्षरता अभियान, परिवार नियोजन, महिला सशक्तीकरण, कृषि विज्ञान संबंधी योजनाएँ, पोलियो अभियान, स्वच्छ भारत अभियान इत्यादि को प्रभावकारी बनाने के लिए विज्ञापनों का सहारा लेती है। राजनीतिक दल भी अपने विचारों तथा योजनाओं को साधारण जन तक पहुँचाने के लिए विज्ञापनों का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार, विज्ञापन जनसेवा तथा लोकमत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**मानव जीवन में विज्ञापन का महत्व** कुछ समय पहले किसी भी जानकारी के लिए अपने सहयोगियों, पड़ोसियों आदि से पूछताछ करनी पड़ती थी, किंतु आज हमें भजन, गजल, गीत के साथ-साथ चाय, साबुन, तेल और सिर दर्द की दवाइयों आदि के विज्ञापन रात को सोने तक सुनाई देते रहते हैं। अब तो मैं इनका अभ्यस्त हो गया हूँ। दिनभर ये गीत और विज्ञापन मेरा पीछा करते रहते हैं। पहले बहुत मीठे गले से "रहना नहिं देश बिराना है" की लय और उसके तुरंत बाद "क्या आपके शरीर में खुजली है? खुजली का नाश करने के लिए रामबाण औषधि है।" कोई ऐसी चीज नहीं, जिसका आज की दुनिया में कोई विज्ञापन न हो। अजंता के चित्र और एलोरा की मूर्तियाँ कभी अछूती कला का उदाहरण रही होंगी, पर आज वे विज्ञापन की सहायक हो गई हैं।

उनका केश सौंदर्य एक तेल की शीशी की याद दिलाता है। हाथों की कलाकृति एक बिस्कुट कंपनी की विकास योजना के विज्ञापन के रूप में सार्थक हो रही है। देश के कोने-कोने में बिखरे स्तंभ, स्मारक वे सब इसलिए हैं कि लोगों में यातायात की रुचि बढ़े।

मीनाक्षी और रामेश्वरम् मंदिर के शिखर तथा खजुराहो के कक्ष इस दृष्टि से भी उपयोगी हैं कि वे एक विशेष ब्रांड के सीमेंट की मजबूती को व्यक्त करने के लिए विज्ञापन बन सकें। इसी तरह चाहे कश्मीर की सुषमा हो, नवयुवतियों का भाव-सौंदर्य हो, यहाँ तक कि भारत भूमि की संपूर्ण सुंदरता ही विज्ञापन के लिए है। घर से निकलते ही हर दोराहे, चौराहे तथा सड़क के खंभे पर भी विज्ञापन दिखाई देगा। हम कह सकते हैं कि विज्ञापन हमारे जीवन में रच-बस गया है।

## (iii) रेलवे स्टेशन का दृश्य

मैं ग्रीष्मावकाश में अपने मामा के घर गया था। मामा के घर से रेलवे स्टेशन थोड़ी दूरी पर ही है। मैं मामा के साथ स्टेशन तक घूमने गया। प्रातःकाल का समय बहुत ही सुहावना था। रेलवे स्टेशन भव्य और विशाल था और वह आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त था। यात्रीगण टिकट खिड़की से टिकट खरीद रहे थे। कुछ यात्री प्रतीक्षालय में बैठकर समाचार-पत्र पढ़ रहे थे। एक महाशय पान की दुकान पर सिगरेट जला रहे थे, उनका सूटकेस उनके पैर के सहारे रखा हुआ था। सुबह-सुबह चाय की किसे आवश्यकता नहीं होती, चाय की दुकान पर बहुत भीड़ थी। लोग पंक्तिबद्ध होकर चाय ले रहे थे। उद्घोषक गाड़ी के आने की सूचना दे रहे थे। यात्री चौकन्ने होकर उद्घोषणा सुन रहे थे तथा जिस प्लेटफॉर्म पर ट्रेन आएगी, उस प्लेटफॉर्म पर चले जाते थे। गाड़ी के आते ही आना-जाना, भाग-दौड़, धक्का-मुक्की शुरू हो जाती थी। कुछ लोग ट्रेन से उतरते, कुछ लोग ट्रेन में चढ़ते थे। लगभग दो मिनट तक अफरा-तफरी का माहौल रहता है। गाड़ी ने सीटी दी और गार्ड ने हरी झंडी दिखाई। ट्रेन अपने गंतव्य स्थल को चल दी। यात्रियों ने राहत की साँस ली तथा अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए।

हम घूमते रहे तथा इन सबका आनंद लेते रहे। उसी समय मेरे मामा के चिर परिचित मित्र मिल गए। वे उसी स्टेशन पर कार्यरत हैं, उन्होंने अपने ऑफिस में ले जाकर मुझे रेल-सारणी दिखाई तथा स्टेशन के विषय में बताया। उसी समय मालगाड़ी आई। मैंने डिब्बे गिनने शुरू किए। मेरे द्वारा 50 डिब्बे गिनने के बाद वे बोले बेटा यह यात्री गाड़ी नहीं, बल्कि मालगाड़ी है, जो अनेक राज्यों से होकर आती है। इसमें बहुत से डिब्बे होते हैं, जिनमें माल भरा होता है। स्टेशन का वह दृश्य मेरे लिए अत्यंत आनंददायक तथा मनोरंजक रहा। मैं वहाँ से गुनगुनाता हुआ लौट रहा था—

“गाड़ी बुला रही है सीटी बजा रही है,  
चलना ही ज़िंदगी है, चलती ही जा रही है।”

## (iv) “मूर्ख मित्र से, समझदार शत्रु अच्छा होता है।”

**भूमिका** आदिकाल से ही हम मित्रता के अनेक उदाहरण सुनते आए हैं, जिनमें से कृष्ण-सुदामा की मित्रता तो आज भी याद की जाती है। मित्रता के दो रूप हैं

प्रथम परिपक्व व सच्ची मित्रता तथा द्वितीय, अपरिपक्व व मूर्ख मित्रता। सच्चा मित्र सदैव आपके कष्टों के निवारण के लिए प्रयासरत् रहता है, परंतु मूर्ख या अपरिपक्व मित्र हितैषी होने के बावजूद, मूर्खतावश कष्टदायक हो जाता है तथा जाने-अनजाने अहित भी कर बैठता है। विद्वान् तो यहाँ तक कहते हैं कि इस प्रकार के मूर्ख मित्र से तो परिपक्व, समझदार शत्रु भी बेहतर है। इसी घटना पर आधारित एक कहानी स्मरण हो रही है।

**कहानी** एक चिकित्सक थे, जिनका नाम श्री देवकुमार था। वे अस्पताल तथा घर दोनों जगह मरीजों का इलाज किया करते थे। एक बार वे अस्पताल में मरीजों को देख रहे थे। इलाज के दौरान वे मोहन नामक मरीज की, जिसका मानसिक उपचार हो रहा था, मासूमियत से प्रभावित होकर उससे आत्मीय रूप से जुड़ गए। पता करने पर पाया कि वह मरीज अनाथ है। देव ने मोहन को अपने साथ घर ले जाने का निर्णय लिया और अपने घर पर ही उसका इलाज करने लगे। मोहन, इलाज की पूरी प्रक्रिया के दौरान देव के साथ ही रहता और ध्यान से सब कुछ देखता था। देव जी, कभी-कभी मोहन को घर आए मरीजों को दवा इत्यादि देने के लिए कह देते थे। एक दिन देव जी कहीं बाहर दौरे पर गए थे, अचानक एक मरीज दर्द से कराहता हुआ पहुँचा। मोहन से यह सब देखा न गया और भावुकता व अज्ञानतावश खुद मरीज का इलाज करने लगा। इसी दौरान गलत दवा देने के कारण मरीज की हालत और गंभीर हो गई तथा कुछ समय पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई। मोहन की इस मूर्खता के कारण एक निर्दोष इंसान की जान चली गई और साथ ही देव जी का चिकित्सक लाइसेंस भी संगठन द्वारा निरस्त कर दिया गया।

इस घटना ने उपरोक्त कथन की सत्यता को सिद्ध कर दिया कि “मूर्ख मित्र से समझदार शत्रु अच्छा होता है।”

**सीख** अतः इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि व्यक्ति में समझदारी का होना अतिआवश्यक है, फिर चाहे वह हमारा शत्रु ही क्यों न हो। इसलिए कहा गया है कि “मूर्ख मित्र से समझदार शत्रु ही अच्छा होता है।”

- (v) प्रस्तुत चित्र से प्रतीत हो रहा है कि यह दृश्य किसी सड़क जाम का है। सभी गाड़ियाँ अस्त-व्यस्त रूप से खड़ी हुई हैं। एक कार का ड्राइवर बाहर मौजूद व्यक्ति से इस भयंकर जाम का कारण पूछ रहा है, परंतु सही जवाब के अभाव में घटना को समझ नहीं पा रहा है। वहीं नजदीक में ही एक बालिका है, जो शायद वहाँ मौजूद पुलिस वाले से जाम का कारण और उसके समाप्त होने का समय पूछ रही है। भयंकर रूप से जाम लगा हुआ है, इसी कारण पुलिसवाला भी कोई उपयुक्त जवाब देने में असमर्थ है। जाम लगने की समस्या हमारे देश में आम बात है, परंतु दिल्ली महानगर में यह समस्या विकराल रूप धारण किए हुए है। दिल्ली, बहुत समय से क्षेत्रफल के आधार पर यथावत् है, परंतु पिछले 10 वर्षों में दिल्ली की जनसंख्या अनुमानतः दोगुनी हो गई है। आवश्यकता के आधार पर यहाँ अनेक चौड़ी-चौड़ी सड़कों व पुलों का निर्माण हो रहा है, परंतु जनसंख्या वृद्धि व वाहनों के प्रयोग के आधार पर देखा जाए, तो सड़क-निर्माण योजनाएँ अपर्याप्त हैं।

प्रदूषण के मामले में दिल्ली का देश में प्रथम स्थान है, जिसका एक मुख्य कारण वाहनों की अधिकता भी है। यहाँ प्रतिवर्ष हजारों नए वाहन सड़कों पर आ जाते हैं। वाहनों की वृद्धि के कारण सर्वत्र जाम की समस्या से जूझना पड़ता है। जनसंख्या वृद्धि भी इस समस्या का प्रमुख कारण है।

राज्य सरकार को इस समस्या के समाधान की ओर विशेष रूप से ध्यान देना होगा। अधिकतर अवसरों पर; जैसे-परीक्षा, साक्षात्कार, विवाह तथा पारिवारिक आवागमन में हम गंतव्य स्थल पर विलंब से पहुँचते हैं। कभी-कभी इसी विलंब के कारण रोजगार का अवसर तक हाथ से निकल जाता है। यह स्थिति जीवन के लिए अत्यंत कष्टप्रद है। सरकार को मेट्रो को पूर्ण रूप से दिल्ली व आस-पास के क्षेत्रों से जोड़ना होगा तथा वाहनों के पार्किंग स्थल के लिए बहुमंजिली इमारतों का निर्माण करना होगा और यदि संभव हो, तो संसद में प्रस्ताव पारित करवाकर दिल्ली के क्षेत्रफल में और वृद्धि करनी होगी। यह पूरी प्रक्रिया अत्यंत जटिल है, परंतु इस गंभीर विषय को हल करने के लिए प्रयास तो करना ही होगा, वरना वह दिन दूर नहीं, जब दिल्ली इतनी प्रदूषित हो जाएगी कि यहाँ श्वास लेना भी मुश्किल हो जाएगा।

2. (i) ब-210, दरियागंज  
दिल्ली।

दिनांक : 07 जून, 20XX

प्रिय अनुज,

बहुत दिनों से तुम्हारा पत्र न मिलने के कारण माताजी आज अत्यंत भावुक हो रही हैं। साथ ही तुम्हारे एक मित्र द्वारा जानकारी मिली है कि तुम अपना समय व्यर्थ के कार्यों में बर्बाद कर रहे हो। इससे वे और भी चिंतित हो गई हैं। हमारी सलाह है कि तुम समय के महत्त्व को समझो तथा अपना समय व्यर्थ बर्बाद करने की अपेक्षा, उसका सदुपयोग करो, अन्यथा तुम्हारे विद्यार्जन में बाधा आ जाएगी। समय बड़ा बलवान है, यह अच्छी तरह समझ लो। यदि एक बार यह अवसर निकल गया तो केवल पश्चाताप के और कुछ प्राप्त नहीं होगा। बाकी व्यर्थ के कार्यों और आकर्षित गतिविधियों के लिए पूरी उम्र पड़ी है। अतः आशा है कि भविष्य में तुम समय के महत्त्व को समझते हुए अपना पूरा ध्यान विद्यार्जन में लगाओगे।

अच्छा अब पत्र समाप्त करता हूँ। माताजी का सस्नेह आशीर्वाद।

तुम्हारा अग्रज

रवि

- (ii) सेवा में  
स्वास्थ्य अधिकारी महोदय,  
नगर निगम, दिल्ली।

दिनांक : 15 जुलाई, 20XX

विषय खाद्य वस्तुओं में मिलावट की सूचना हेतु पत्र।

माननीय महोदय,

मैं आपके सामने एक गंभीर समस्या प्रकाश में लाना चाहता हूँ। हमारे नगर में खाद्य पदार्थों में मिलावट की समस्या बढ़ती ही जा रही है। कल शाम 06 बजे मैंने अपने क्षेत्र की एक प्रतिष्ठित दुकान से मिठाइयाँ खरीदीं। घर आने पर मैंने देखा कि मिठाइयों में मिलावटी तेल व अन्य दोषपूर्ण सामग्री प्रयोग की गई है। इस प्रकार के खाद्य पदार्थों से निर्दोष नागरिकों की जान तक चली जाती है, परंतु ये लालची और निर्दयी प्रकृति के दुकानदार सिर्फ अपना हित साधते हैं।

मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि दिन के व्यस्त माहौल में दुकानों पर जाकर निरीक्षण करें तथा सभी खाद्य पदार्थों की जाँच कराएँ। इस नेक कृत्य के लिए हम सब आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

कमला नगर, दिल्ली

3. (i) राजा ने सेवक को उपहारस्वरूप मिले चार फूलदानों की सुरक्षा का कार्य सौंपा था। इसके साथ ही यह शर्त भी जोड़ दी कि यदि किसी भी कारणवश ये फूलदान टूट गए या इनके रख-रखाव में कोई भी लापरवाही बरती गई, तो उसे मृत्युदंड दिया जाएगा।
- (ii) इस कहानी में महाराज दो बार क्रोधित हुए। प्रथम तो तब जब सेवक से एक बेशकीमती फूलदान टूट गया था तथा दूसरी बार तब क्रोधित हुए, जब फाँसी के समय अपराधी सेवक ने अन्य बचे तीनों फूलदानों को भी जमीन पर पटककर तोड़ दिया।
- (iii) तेनालीराम उस निर्दोष सेवक का जीवन बचाना चाहते थे, इसी कारणवश उन्होंने राजा को समझाने का अत्यंत प्रयास किया, परंतु राजा ने उनकी बात न मानी। तदुपरांत तेनालीराम ने स्वयं कारागार में जाकर पूरी घटना की जानकारी प्राप्त की। अंततः उन्होंने सेवक के कान में एक उपाय बताया, जिससे संभवतः उसकी जान बचाई जा सकती थी।



- (iv) महाराज द्वारा वार्षिक उत्सव आयोजन के दौरान किसी राजा द्वारा उन्हें उपहारस्वरूप ये चार कीमती फूलदान दिए गए थे। राजा ने उन फूलदानों की सुरक्षा हेतु सेवक नियुक्त किया। एक दिन गलती से एक फूलदान सेवक द्वारा टूट गया तथा इस कारण राजा ने सेवक को मृत्युदंड दे दिया। तब मृत्युदंड के समय अपनी अंतिम इच्छानुसार सेवक ने वे बाकी बचे तीनों फूलदान मँगवाए तथा जमीन पर पटककर वे तीनों फूलदान भी तोड़ दिए।
- (v) एक फूलदान टूटने के कारण पहले ही सेवक को मृत्युदंड दिया जा चुका था, परंतु अपनी अंतिम इच्छानुसार सेवक ने अन्य तीनों फूलदानों को भी मँगवा लिया और जमीन पर पटककर उन्हें भी तोड़ दिया। सेवक ने कहा कि इस प्रकार उसने अन्य तीन निर्दोषों की जान बचाई है, क्योंकि मानव जीवन इन फूलदानों से अत्यंत कीमती है। इस बात को सुनकर राजा को अपनी गलती का अहसास हुआ और राजा ने तुरंत यह फाँसी स्थगित कर दी।
4. (i) आग्रह                      दुराग्रह                      कठोर                      कोमल  
आरोह                      अवरोह                      चर                      अचर  
आवृत्त                      अनावृत्त                      पक्ष                      विपक्ष
- (ii) कपड़ा चीर, बसन, पट।  
गंगा सुरसरि, देवपगा, त्रिपथगा।
- (iii) अपना-सा मुँह लेकर रह जाना (लज्जित होना)  
वाक्य प्रयोग विजय परीक्षा में नकल करते पकड़े जाने पर अपना-सा मुँह लेकर रह गया।  
आटे-दाल का भाव मालूम होना (वास्तविकता का पता चलना।)  
वाक्य प्रयोग अभी माँ-बाप की कमाई पर मौज कर लो, खुद कमाओगे तो आटे-दाल का भाव मालूम हो जाएगा।
- (iv) तृतीय                      तृतीय                      मेनेजर                      मैनेजर  
ब्रिटिश                      ब्रिटिश                      कैंटीन                      कैन्टीन  
वैश्य                      वैश्य                      एक्ट                      ऐक्ट
- (v) (क) लड़के ने माना दोष उसका है।  
(ख) छात्रा ने परीक्षा उत्तीर्ण की।  
(ग) तुम्हारे द्वारा फूल तोड़ा जाएगा।  
(घ) सीता कल बाज़ार जाएगी।
5. (i) सियारों ने भेड़ियों को संत का रूप धारण करा दिया था, जिसके दर्शन के लिए भोली-भाली भेड़ें इकट्ठी हो गई थीं, जिसकी चर्चा बूढ़े सियार ने पूरे वन प्रदेश में फैला रखी थी।
- (ii) संत भेड़िए को देखकर भेड़ें डर गईं और उन्होंने वहाँ से भागने की सोची, किंतु बूढ़े सियार ने उन्हें यह कहकर रोक लिया कि तुम डरो मत! भेड़िया राजा अब संत बन गए हैं, उन्होंने हिंसा को त्याग दिया है। अब वे तुम्हारी रक्षा करेंगे।
- (iii) हृदय परिवर्तन की बात भेड़िया राजा के लिए कही गई है, क्योंकि भेड़िया राजा वन प्रदेश में अपना बहुमत चाहते थे। वे चुनाव जीतकर भेड़ों पर राज करना चाहते थे। बूढ़े सियार के अनुसार, भेड़िया राजा संत हो गए हैं तथा उन्होंने जीव-मात्र की सेवा में अपना जीवन अर्पित कर दिया है।
- (iv) प्रस्तुत कहानी 'भेड़ें और भेड़िए' के माध्यम से कहानीकार ने प्रजातंत्र में निहित कमियों का बड़े ही रोमांचक और सजीव ढंग से चित्रण किया है। कहानीकार ने इस कहानी को केंद्र में रखकर ढोंगी नेताओं की असलियत को सामने लाने का प्रयास किया है। ढोंगी नेता अपने सहयोगियों के माध्यम से बड़े-बड़े वादे करके जनता को भ्रमित करके उनका बहुमत प्राप्त कर लेते हैं और बाद में उनके हितों के लिए किए गए वचनों को भूल जाते हैं।
6. (i) लेखक और उसका मित्र निरुद्धेश घूमने के बाद सड़क किनारे बेंच पर बैठ गए। लेखक को वहाँ चुपचाप बैठना अच्छा नहीं लग रहा था। उसने अपने मित्र से वापस चलने के लिए कहा।
- (ii) मित्र के इशारा करने पर लेखक ने देखा कि कुछ ही हाथ की दूरी पर कोहरे से एक काली-सी परछाई उनकी तरफ आ रही थी। लेखक ने उसे देखकर कहा कि 'होगा कोई'।
- (iii) नैनीताल अपनी प्राकृतिक शोभा के लिए विश्वविख्यात है। शाम के समय नैनीताल ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो भाप से बादल सिरों को छू-छूकर घूम रहे हों, हल्के प्रकाश के अँधेरे में बादल कभी नीले दिखते, कभी सफेद, तो कभी लाल से दिखाई देते। वे ऐसे लगते थे जैसे लेखक और उसके मित्र के साथ खेलना चाहते हों।
- (iv) 'नंगे पैर, नंगे सिर एवं एक मैली-सी कमीज' उस बच्चे की पूरी स्थिति को उजागर कर देते हैं। वह बच्चा अत्यंत गरीब था। उसके पैर इधर-उधर पड़ रहे थे। उसका गोरा रंग होने के बावजूद भी मैल के कारण काला लग रहा था। उसके पास पहनने व खाने के लिए कुछ भी नहीं था। मैली-सी कमीज उसकी गरीबी को दर्शाती है।

7. (i) धन्ना सेठ अत्यधिक धनी तथा संपन्न व्यक्ति थे, उसके पास धन की कमी न थी। अतः सेठ की संपन्नता को देखते हुए सेठ ने अपनी परेशानी का बखाना 'धन्ना सेठ' के समक्ष किया।
- (ii) धन्ना सेठ के पास धन की कमी न थी। अतः विपरीत परिस्थितियों से बाहर निकलने के लिए सेठ 'धन्ना सेठ' की हवेली में अपने एक यज्ञ के पुण्य को बेचने के लिए गए थे।
- (iii) सेठ ने बरसों से कोई यज्ञ नहीं किया था, अपितु वह तो अत्यंत ही गरीबी की स्थिति से गुजर रहा था और ऐसी स्थिति में धन्ना सेठ की पत्नी उन्हें आज ही महायज्ञ करने की बात कह रही थी, इसलिए सेठ 'महायज्ञ' की बात सुनकर आश्चर्य में पड़ गए।
- (iv) 'महायज्ञ का पुरस्कार' कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हर प्राणी के लिए हमारे मन में प्रेम, करुणा और सहानुभूति की भावना होनी चाहिए और इन्हीं भावनाओं को कर्तव्य मानकर सबकी भलाई करनी चाहिए। यही महायज्ञ है, यह सच्चा यज्ञ होता है, क्योंकि अच्छे कर्म का फल अच्छा ही होता है वही सच्चा पुरस्कार होता है। अतः भूखे कुत्ते को अन्न खिलाकर उस सेठ ने जो पुण्य कमाया था, वह उसे बेचना नहीं चाहता था। सेठ की दृष्टि से यह उसका कर्तव्य था, किंतु जब अपने इसी कर्तव्य के बदले सेठ को ईश्वरीय कृपा के रूप में एक खजाना मिला तब उसे विश्वास हुआ कि यही सच्चा महायज्ञ था।
8. (i) प्रस्तुत पद्यांश में कवयित्री स्पष्ट करना चाहती हैं कि जिस तरह मातृभूमि की याद में वे तड़प रही हैं, उसी तरह मातृभूमि को भी कवयित्री की याद आती होगी। प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री ने अपने देशप्रेम की भावना को दर्शाया है।
- (ii) 'फरियाद' शब्द से कवयित्री का तात्पर्य 'याचना' अर्थात् प्रार्थना से है। कवयित्री को संदेह है कि क्या माँ उसे भी याद करती हैं या नहीं? यदि ऐसा नहीं है तो वे माता से नाराज हो जाएँगी और उनसे याचना करेंगी
- हे माँ ! मेरी फरियाद जल्दी-ही सुन ले, जिससे मैं माँ के सामने अपनी फरियाद कर सकूँ।
- (iii) 'उसे भी आती होगी याद' पंक्ति में 'उसे' शब्द देवी माँ अर्थात् मातृभूमि के लिए प्रयोग किया गया है। कवयित्री कहती हैं कि जिस तरह वे माता अर्थात् मातृभूमि को याद कर रही हैं उसी तरह माता भी उसे याद कर रही होंगी। वे पुनः कहती हैं कि अगर मातृभूमि उसको याद नहीं कर रही होगी, तो वे आज माता से रूठ जाएँगी तथा उनसे प्रार्थना करेंगी।
- (iv) प्रस्तुत पद्यांश की कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। वे एक कवयित्री होने के साथ-साथ प्रसिद्ध गद्यकार भी थीं। इन्होंने अनेक कहानियाँ लिखीं। इनकी कविताओं में देशप्रेम की भावना प्राथमिक रूप से दिखाई देती है। इनकी 'खूब लड़ी मर्दानी' कविता जन-जन में प्रिय है। इसके साथ-साथ इनकी कविताओं में पीड़ितों और शोषितों के प्रति करुणा की भावना भी देखने को मिलती है। इनकी कहानियाँ भी गरीब, पीड़ित, शोषित जनता के प्रति गहरी सहानुभूति प्रकट करती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की भाषा सरल व सुबोध है। इनकी रचनाओं में चित्र-प्रधान शैली के दर्शन होते हैं। इनकी वीर रस से ओतप्रोत कविताएँ ओजपूर्ण हैं।
9. (i) यशोदा माता श्रीकृष्ण को सुलाने का प्रयास कर रही हैं। यशोदा माता कृष्ण को सुलाने के लिए कभी पालना हिलाती हैं, कभी उन्हें लाड़ करती हैं तथा कभी लोरी सुनाती हैं। वे नींद को भी उलाहना देती हैं कि तू आकर मेरे लाल को क्यों नहीं सुलाती।
- (ii) यशोदा माता नींद को कोसती हुई कहती हैं कि हे नींद ! तू जल्दी से मेरे लाल को क्यों नहीं आती है? तुझे स्वयं कान्हा बुलाता है, तू फिर भी नहीं आती। अतः तू जल्दी आ जा और मेरे लाल को सुला दे।
- (iii) माता यशोदा बाल कृष्ण को सुलाने का प्रयत्न कर रही हैं, लेकिन उन्हें नींद नहीं आ रही है। अतः "कबहुँ पलक हरि मूँद लेते हैं, कबहुँ अधर फरकावैं" से कवि का तात्पर्य है कि बाल कृष्ण सोते हुए कभी पलकों को बंद कर लेते हैं, तो कभी होठों को फड़काने लगते हैं। अतः श्रीकृष्ण का यह बाल रूप अत्यंत मनमोहक है।
- (iv) माता यशोदा के प्रयासस्वरूप जब बालकृष्ण आँखें बंद कर लेते हैं, तो माता यशोदा उन्हें सोता जानकर शांत हो जाती हैं तथा दूसरों को भी इशारा करके चुप रहने के लिए कहती हैं, लेकिन श्रीकृष्ण आलस त्यागकर फिर जाग जाते हैं, जिससे माता यशोदा दोबारा मधुर आवाज़ में लोरी गाने लगती हैं।
10. (i) "और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए" पंक्ति से कवि का तात्पर्य है कि जब भिक्षुक और उसके बच्चे सड़क पर पड़ी जूठी पत्तों को चाटकर पेट भरने का प्रयास कर रहे हैं, तो कुत्ते भी पत्तलों को छीन लेने के लिए तैयार खड़े हैं।
- (ii) प्रस्तुत पंक्ति से कवि का अभिप्राय है कि कवि भिक्षुक के बच्चों को जूठन खाते देख बहुत ही दुःखी हो जाते हैं तथा वे अपने हृदय में संचित प्रेम से अमृत तत्त्व को उन भिखारी के बच्चों पर न्योछावर करना चाहते हैं।
- (iii) प्रस्तुत पंक्तियों के कवि 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' हैं। निराला जी छायावाद के प्रमुख कवियों में से एक कवि हैं। उनके काव्य में जीवन संघर्ष, अंतर्द्वंद्व, निराशा आदि का समावेशन देखने को मिलता है। उनका अधिकतर काव्य मुक्त छंद में मिलता है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। उसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रधानता है। इनकी कुछ प्रगतिवादी कविताओं की भाषा बोधगम्य व सरल है। उर्दू, फारसी तथा अंग्रेजी शब्द भी देखने को मिलते हैं।
- (iv) प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव यह है कि इसमें एक बूढ़े तथा उसके दो भूखे बच्चों के विषय में बताया गया है, जिनकी हालत अत्यंत दयनीय है। कवि कहना चाहता है कि संसार में इतनी संवेदनहीनता है कि किसी को भी उन पर दया नहीं आती, जो उन्हें भोजन करा सके। कवि बच्चों को जूठी पत्तलों को चाटते देखकर दुःखी हो जाता है। वह बच्चों को अभिमन्यु की भाँति अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देता है।

11. (i) दयाराम जी की चिंता का कारण मीनू का विवाह न करना था, क्योंकि मीनू अभी भी विवाह के लिए सहमत न थी। वे बिना उसकी इच्छा के उसका विवाह नहीं करवाना चाहते थे।
- (ii) दयाराम जी ने मीनू की माँ से मीनू को विवाह करने के लिए समझाने की बात कही, क्योंकि उनके बेटे रोहित के लिए भी विवाह के रिश्ते आने लगे थे। वे बड़ी बेटी के अविवाहित होने के कारण उसका विवाह नहीं करना चाहते थे।
- (iii) माँ ने दयाराम जी की बात का जवाब देते हुए कहा कि वे मीनू को विवाह के लिए समझाने की कोशिश करेंगी, लेकिन मीनू एक स्वाभिमानी लड़की है, इसलिए वे पूर्ण रूप से निश्चित होकर यह नहीं कह सकती हैं कि वह विवाह के लिए उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर ही लेगी। उन्हें संदेह है कि वह उनकी बातों को सुनकर विवाह के लिए तैयार होगी भी या नहीं।
- (iv) 'नया रास्ता' उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य-समाज में फैली दहेज की समस्या, उसके दुष्प्रभाव, दहेज लोभियों को कुछ सोचने के लिए विवश करना है। इसके अतिरिक्त दहेज की व्यथा झेल रही नवयुवतियों को साहस, धैर्य एवं विवेक बनाए रखने की सीख देते हुए उनकी योग्यताओं को उभारना है, जिससे वे आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाकर स्वावलंबी बनें और दहेज लोभियों को अपनी भूल के लिए पछताने पर विवश कर दें।
12. (i) अवतरण की वक्ता मीनू तथा श्रोता नीलिमा है। दोनों अत्यंत घनिष्ठ सहेलियाँ हैं, जिस कारण नीलिमा, मीनू से मिलने और अपने विवाह का निमंत्रण-पत्र देने उसके छात्रावास आई थी।
- (ii) श्रोता अर्थात् नीलिमा ने मीनू को विवाह में आने का निमंत्रण देते हुए, उससे विवाह में जरूर आने का आग्रह किया था। नीलिमा ने मीनू से शादी में न पहुँचने पर उससे कभी बात न करने की बात भी कही थी।
- (iii) वक्ता अर्थात् मीनू, नीलिमा के आग्रह करने पर भावुक हो उठती है और उससे कहती है कि वही उसकी एकमात्र सहेली है, जिसको वह अपना सब कुछ समझती है और उसी से वह अपने दिल की प्रत्येक बात कह सकती है। वे दोनों बहुत घनिष्ठ सहेलियाँ हैं, जिस कारण उनके संबंध अत्यधिक मधुर हैं और उसी का ही परिणाम है कि नीलिमा, मीनू को निमंत्रण-पत्र देने उसके छात्रावास में आई थी।
- (iv) श्रोता अर्थात् नीलिमा, मीनू को अपनी शादी का निमंत्रण-पत्र देने के लिए उसके छात्रावास आई थी। नीलिमा ने मीनू से विवाह में आने का विशेष आग्रह किया था, जिस पर मीनू उसे अपना सब कुछ समझने की बात कहते हुए उससे विवाह में अवश्य पहुँचने का वायदा करती है। मीनू, नीलिमा से लड़के के संबंध में भी अनेक प्रश्न पूछती है, इस प्रकार दोनों आपस में बहुत सारी बातें करती हैं।
13. (i) वकील बनने की इच्छा मीनू की है। जब भी बचपन में उसके पिताजी उससे पूछते थे कि वह बड़ी होकर क्या बनना चाहती है? तो वह हमेशा वकील बनने की अपनी इच्छा व्यक्त करती थी। मीनू की वकील बनने की इच्छा उसकी माँ को बिलकुल पसंद नहीं थी।
- (ii) "लड़कों की बात और है"-यह मीनू की माँ ने मीनू से कहा। इसका अभिप्राय यह है कि लड़कों की स्थिति लड़कियों की अपेक्षा अधिक उच्च है, क्योंकि लड़कियों को तो अंततः घर-गृहस्थी ही सँभालनी है, जबकि लड़के घर के उत्तराधिकारी होते हैं। उनकी एवं लड़कियों की स्थिति में बहुत अंतर है। इससे समाज में लड़के व लड़कियों के बीच भेदभाव व पक्षपात का पता चलता है।
- (iii) अवतरण में पंक्तियाँ मीनू की माँ द्वारा कही गई हैं। उनकी मानसिकता लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को अधिक महत्त्व देने की है। वे पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता से जुड़ी हुई हैं, जहाँ लड़कियों को दोयम दर्जे का नागरिक माना जाता है। इसी कारण लड़के एवं लड़कियों के बीच भेदभाव किया जाता है। उनकी नैतिकता दोनों के लिए अलग-अलग होती है।
- (iv) लड़के-लड़कियों के बीच भेदभाव करना किसी भी दृष्टि से समाज के लिए हितकर नहीं है। समाज के दोनों अंग-स्त्री एवं पुरुष समान हैं तथा सभ्य समाज में उनका महत्त्व भी समान है। यदि समाज के आधे भाग को समाज की मुख्यधारा से काट दिया जाएगा, तो वह समाज कभी भी उन्नति नहीं कर सकता है, इसलिए लड़के-लड़कियों के बीच भेदभाव करना उचित नहीं है। इस भेदभाव को तुरंत समाप्त करने की आवश्यकता है।
14. (i) उमा ने माँ को अविनाश के वियोग में दुःखी होते देखा था, जिस कारण वह बड़ी बहू वक्ता को यह समझाने के लिए गई थी कि वह अविनाश का साथ छोड़ दे, ताकि अविनाश पुनः अपने परिवार के साथ रह सके और माँ खुशी से जीवन व्यतीत कर सके।
- (ii) वक्ता अर्थात् बड़ी बहू के लिए उमा के हृदय में रूपवती, गुणवान, संस्कारी, कोमल हृदयी एवं स्नेहशील नारी की छवि अंकित हुई। साथ ही, उमा को वह एक साहसी महिला के रूप में नजर आई।
- (iii) वक्ता (बड़ी बहू) अविनाश की पत्नी थी, जोकि एक बंगाली परिवार से संबंध रखती थी, उसने अविनाश से विजातीय विवाह किया था, जिस कारण माँ ने उनसे अपने संबंध तोड़ लिए थे। बड़ी बहू रूपवान, गुणी, संस्कारी और दयालु थी, साथ ही वह एक साहसी महिला भी थी, जिसने संकट के समय अकेले होते हुए भी अपने पति अर्थात् अविनाश के प्राणों की रक्षा की थी।
- (iv) वक्ता अर्थात् बड़ी बहू ने उमा से अतुल को छोड़ने के लिए प्रश्न किया कि क्या वह अतुल को छोड़ सकती है, जिससे वह अत्यधिक प्रेम करती है? क्योंकि वह जानती थी कि उमा, अतुल को बहुत प्रेम करती थी। यदि वह अतुल को नहीं छोड़ सकती, तो मैं (बड़ी बहू) किस प्रकार अविनाश को छोड़ सकती हूँ। इस बात का अहसास कराने के लिए उसने उमा से यह प्रश्न किया।

- 15.** (i) महाराणा प्राणों से बढ़कर मान-सम्मान को मानते हैं, क्योंकि वीर एवं पराक्रमी योद्धा, युद्ध में प्राणों के मोह में बँधकर रणभूमि से पीछे नहीं हटते, अपितु वे तो रणभूमि में शहीद होकर अपने मान-सम्मान को बढ़ाते हैं।
- (ii) “जिनकी खाल मोटी होती है”—पंक्ति का अर्थ है वे व्यक्ति, जिन्हें अपने आत्मसम्मान और अपने गौरव की परवाह नहीं होती और वे अपमानित एवं कलंकित जीवन जीने से भी नहीं हिचकते।
- (iii) श्रोता मेवाड़ का सेनापति अभय सिंह हैं। वक्ता अर्थात् महाराणा, अभय सिंह से बूँदी प्रदेश से मिली पराजय का बदला लेने के विषय में लाखा से बात कर रहे हैं। महाराणा लाखा बूँदी के द्वारा मेवाड़ की पराजय को लेकर बहुत चिंतित व दुःखी हैं, क्योंकि एक राजपूत का युद्ध में शहीद होना, एक पराजित एवं कलंकित जीवन जीने से कहीं अधिक बेहतर है।
- (iv) वक्ता मेवाड़ के शासक महाराणा लाखा हैं। वक्ता एक वीर, साहसी, पराक्रमी, विवेकशील शासक एवं योद्धा हैं, जिसका प्रमाण उनके कथनों से मिलता है। वे सिसोदिया वंश के थे। उन्हें अपने पूर्वजों बप्पा रावल और वीरवर हम्मीर की वीरता और शौर्य पर गर्व था। उनका मानना था कि एक योद्धा का युद्धभूमि में वीरगति को प्राप्त होना, मैदान से पीठ दिखाकर अपने प्राणों की रक्षा करने से श्रेयष्कर है।
- 16.** (i) प्रस्तुत अवतरण का वक्ता राजमहल की परिचारिका सामली है तथा श्रोता पन्ना धाय है। वे दोनों दासी पुत्र बनवीर के विषय में बात कर रहे हैं। सामली पन्ना धाय को बताती है कि कुँवर के प्राण संकट में हैं। बनवीर कुँवर उदय सिंह की हत्या करने के लिए कभी भी आक्रमण कर सकता है।
- (ii) वक्ता सामली चित्तौड़ के अंतःपुर की 28 वर्षीय परिचारिका है। वह राजवंश के प्रति वफादार और पन्ना धाय की विश्वासपात्र महिला है। सामली की वफादारी का ही परिणाम होता है कि कीरत बानी के अतिरिक्त केवल सामली को ही पन्ना धाय की रणनीति का पता होता है।
- (iii) “सर्प की तरह उसकी भी दो जीभें हैं” इस कथन का आशय यह है कि जिस प्रकार साँप की दो जीभें होती हैं उसी प्रकार बनवीर की भी दो जीभें हैं। उसकी प्यास एक के रक्त से नहीं बुझेगी उसे दोनों का खून चाहिए। पहला खून उसने महाराणा विक्रमादित्य का किया है। अब वह अपनी दूसरी प्यास बुझाने के लिए कुँवर उदय सिंह का खून अवश्य करेगा। इसलिए वह कभी-भी कुँवर की हत्या कर सकता है।
- (iv) प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से हमें यह शिक्षा मिलती है कि पन्ना धाय की तरह हमें भी स्वामिभक्ति और देशभक्ति की भावना को अपनाना चाहिए तथा अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। देश के लिए अपने प्राणों को बलिदान देने से भी पीछे नहीं हटना चाहिए। इसके साथ ही एकांकी में त्याग, वफादारी तथा वीरता जैसे गुणों को अपनाने की शिक्षा भी दी गई है। इनके माध्यम से समाज में उच्च आदर्श स्थापित किए जा सकते हैं।

# ICSE

## प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2

(हल सहित)

### हिंदी

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 80

- निर्देश 1. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं—‘क’ और ‘ख’।
- खंड ‘क’ के सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
  - खंड ‘ख’ से कोई भी चार प्रश्न करने अनिवार्य हैं, जिनमें दो प्रश्न पाठ्यपुस्तक के होंगे तथा अन्य दो किसी अन्य पुस्तक से होंगे।

### खंड ‘क’

[40 अंक]

1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए (15)
- बढ़ती हुई जनसंख्या भयावह समस्या है। इसके कारण एवं निदान पर अपने विचार लिखिए।
  - अनुशासन सफलता का आधार है। मानव जीवन में अनुशासन का महत्व स्पष्ट करते हुए समझाइए।
  - अपने जीवन की किसी एक अविस्मरणीय यात्रा का वर्णन कीजिए।
  - ‘जैसी करनी वैसी भरनी’ उक्ति को आधार बनाकर एक कहानी लिखिए।
  - प्रस्तुत चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर कोई लेख अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट संबंध चित्र से होना चाहिए।



**2. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए** (7)

- छोटे भाई को पत्र लिखकर समझाइए कि 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।' उसे यह भी बताइए कि स्वस्थ रहने के लिए किन-किन नियमों का पालन करना आवश्यक है।
- अपने नगर के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखकर चारों ओर व्याप्त गंदगी, उसके दुष्परिणाम और उससे छुटकारा पाने के उपायों के बारे में बताइए।

**3. नीचे लिखे गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में ही होने चाहिए।**

एक बार रोम का राजा एक भीषण रोग से पीड़ित हो गया। उस समय के देश-विदेश के प्रख्यात एवं निपुण चिकित्सक राजा के उपचार के लिए बुलाए गए, किंतु अच्छी-से-अच्छी औषधियों के प्रयोग से भी वे राजा के रोग का निदान न कर सके। राजा का रोग पहले की अपेक्षा दिन-प्रतिदिन बढ़ता चला गया। असाध्य रोग के कारण राजा के हृदय में विकलता और राज्य में उदासी छा गई। एक दिन एक वृद्ध पुरुष राजा के पास आया और उसने रोगग्रस्त राजा को कहा—“राजन! एक विशेष औषधि के सेवन से आपका रोग ठीक हो सकता है। यह विशेष औषधि किसी अन्य व्यक्ति के पित्ताशय (पित्त की थैली) से तैयार की जाती है। यह औषधि आपके रोग को मूल से उखाड़ने की क्षमता ही नहीं रखती, अपितु आपको चिरंजीवी भी बना सकती है।” वृद्ध के वचनों को सुनकर राजा के निराश मन में आशा का संचार हो गया।

उसने वृद्ध के प्रति मन-ही-मन कृतज्ञता अभिव्यक्त करते हुए राज्य के चिकित्सकों को एक ऐसे व्यक्ति को तलाश करने का आदेश दिया, जिसके पित्त की थैली से वह औषधि बनाई जा सके। अंततः चिकित्सकों को एक ऐसा परिवार मिल गया, जिसे आर्थिक तंगी के कारण भरपेट भोजन भी उपलब्ध नहीं होता था। इस परिवार में केवल तीन सदस्य थे—एक लड़का और उसके माता-पिता। चिकित्सकों ने लड़के के माता-पिता को प्रभूत धन का प्रलोभन देकर उनके एकमात्र पुत्र को खरीदने का प्रस्ताव रखा। धन की लालसा ने माता-पिता की आँखों पर पर्दा डाल दिया। उनकी दृष्टि में धन मोह के सम्मुख पुत्र मोह फीका पड़ गया और उन्होंने अपने घर के दीपक को चिकित्सकों के हाथों बेच दिया। चिकित्सक लड़के को राजा के सामने लेकर आए। राजा ने लड़के के पित्त की थैली को लेने के विषय में राज्य पुरोहित से विचार-विमर्श किया।

पुरोहित ने कहा—“राजन! यद्यपि देश सर्वोपरि होता है, किंतु उसका शासक उससे भी बड़ा होता है, क्योंकि वह देश की रक्षा करता है तथा हर संभव उसकी समृद्धि के लिए प्रयास करता है। ऐसे शासक के लिए किसी व्यक्ति के जीवन की बलि देना कोई अपराध नहीं है।” पुरोहित के वचनों को सुनकर लड़के को राजा के सम्मुख खड़ा कर दिया गया। जल्लाद भी तलवार लेकर वहाँ आ पहुँचे। चिकित्सक औषधि तैयार करने वाले उपकरणों को लेकर वहाँ खड़े हो गए। अब राजा के आदेश की प्रतीक्षा थी। उसी क्षण लड़का आकाश की ओर देखकर जोर-जोर से हँसने लगा। उसे हँसते देखकर, सम्राट ने लड़के से हँसने का कारण पूछा। लड़के ने कहा, “जिस देश में माँ-बाप धन के लिए संतान को बेचें, पुरोहित निरपराध मनुष्य की हत्या को उचित ठहराए, देश और प्रजा की रक्षा करने वाला शासक निर्दोष प्राणी की जान लेकर अपनी जान बचाए, वहाँ तो ऊपर वाले के न्याय पर ही भरोसा करना पड़ेगा।”

लड़के की बातों को सुनकर राजा की आँखें खुल गईं, उसे अपनी भूल पर पश्चाताप होने लगा। उसका मन ग्लानि से भर गया, उसके अंतराल में मानवता के अंकुर फूट पड़े। उसने जल्लादों को वापस भेज दिया।

- राजा को रोग से छुटकारा दिलाने के लिए क्या-क्या प्रयास किए गए? उन प्रयासों का क्या परिणाम निकला? (2)
- राजा के प्रासाद में कौन आया? उसने किस औषधि का सुझाव दिया? (2)
- उस व्यक्ति की बात सुनकर राजा को कैसा अनुभव हुआ? उसके प्रति राजा ने क्या किया? (2)
- राजा के चिकित्सकों को तलाश करने पर कैसा परिवार मिला? राजा के चिकित्सकों ने उस परिवार को क्या प्रलोभन दिया? (2)
- राजा और पुरोहित में किस विषय पर विचार-विमर्श हुआ? पुरोहित ने राजा को क्या सलाह दी? (2)

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए**

- निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार शब्दों के विलोम शब्द लिखिए (1)  
अंतरंग, अपव्यय, इति, उदयाचल, जड़, तीव्र
- निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए (1)  
इंद्र, वृक्ष



- (iii) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक मुहावरे की सहायता से वाक्य बनाइए (1)  
आस्तीन का साँप, उल्टे उस्तरे से मूँडना
- (iv) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार शब्दों को शुद्ध कीजिए (1)  
निरसता, गृहणी, नीती, घनिष्ट, कियारी, पैत्रिक
- (v) निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए (4)
- (क) जब तुम लौटकर आओगे तब मैं जाऊँगा।  
(सरल वाक्य बनाइए)
- (ख) राजा ने दान दिया।  
(वाक्य में लिंग बदलिए)
- (ग) जवानों ने आतंकवादियों को मारा।  
(कर्मवाच्य में बदलिए)
- (घ) रमा बाज़ार जाएगी।  
(वर्तमान काल में परिवर्तित कीजिए।)

## खंड 'ख'

[40 अंक]

### साहित्य सागर-संक्षिप्त कहानियाँ

#### 5. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

“कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए, तो कैप्टन किदर से लाएगा? तो उसे मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बैठा दिया।”

- (i) कैप्टन चश्मे वाला कौन था? (2)
- (ii) कैप्टन चश्मेवाला क्या करता था? हालदार साहब क्या नहीं समझ पा रहे थे? (2)
- (iii) पानवाले ने हालदार साहब को बदले में चश्मों का क्या राज बताया? (3)
- (iv) प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (3)

#### 6. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

जिस तरह सूखी लकड़ी जल्दी से जल उठती है, उसी तरह सुधा से बावला मनुष्य ज़रा-ज़रा-सी बात पर तिनक जाता है।

- (i) धर्मसंकट की स्थिति में कौन था व क्यों? (2)
- (ii) लालबिहारी कौन था? उसने आनंदी को क्या पकाने को कहा? (2)
- (iii) आनंदी के नए घर की स्थिति का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (3)
- (iv) लालबिहारी के क्रोध का क्या कारण था? सूखी लकड़ी की तुलना किससे की गई है? (3)

#### 7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

बस, फिर क्या था। लोगों का झुंड शायर को देखने के लिए उमड़ पड़ा। इसकी चर्चा शहर में भी फैल गई और शाम तक गली-गली से शायर जमा होने शुरू हो गए।

- (i) वहाँ उपस्थित लोग क्या सोचने लगे व उनकी किस बात पर दबे हुए व्यक्ति ने आपत्ति व्यक्त की? (2)
- (ii) दबे हुए व्यक्ति के प्रति माली की सहानुभूति पर प्रकाश डालिए। (2)
- (iii) माली को अचंभा क्यों हुआ? सेक्रेटेरियट में क्या अफवाह फैल गई थी? (3)
- (iv) कहानी से सरकारी विभागों की कार्यशैली के बारे में क्या पता चलता है? (3)

## साहित्य सागर - पद्य भाग

### 8. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,  
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,  
बाँकी चितवन उठा नदी ठिठकी, घूँघट सरके।  
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

- (i) मेघों के आने पर पेड़ कैसे प्रतीत हो रहे हैं? (2)
- (ii) "आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए" धूल भागती हुई किसके समान प्रतीत हो रही है? (2)
- (iii) नदियाँ किसकी भाँति बादलों को निहार रही हैं व क्यों? (3)
- (iv) प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव लिखिए। (3)

### 9. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

सात समंद की मसि करौं, लेखनि सब बनराय।  
सब धरती कागद करौं, हरि गुन लिखा न जाय।।

- (i) 'मसि' शब्द का क्या अर्थ होता है? उपरोक्त सारखी का प्रसंग लिखिए। (2)
- (ii) कबीरदास जी के काव्य में अधिकतर क्या देखने को मिलता है? (2)
- (iii) कवि ने ईश्वर की महानता का वर्णन किस प्रकार किया है तथा क्यों? (3)
- (iv) प्रस्तुत दोहे के आधार पर कबीरदास जी की भक्ति भावना को स्पष्ट कीजिए। (3)

### 10. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी  
ऊँचा खड़ा हिमालय, आकाश चूमता है,  
नीचे चरण तले पड़, नित सिंधु झूमता है।  
गंगा, यमुना, त्रिवेणी नदियाँ लहर रही हैं,  
जगमग छटा निराली, पग-पग पर छहर रही हैं।  
वह पुण्यभूमि मेरी, वह स्वर्णभूमि मेरी।  
वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी।

- (i) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि किसका बखान करता है? (2)
- (ii) भारतभूमि पर स्थित हिमालय तथा समुद्र की प्रशंसा कवि ने किस प्रकार की है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। (2)
- (iii) कवि ने अपनी जन्मभूमि को पुण्यभूमि व स्वर्णभूमि कहकर क्यों संबोधित किया है? (3)
- (iv) प्रस्तुत पद्यांश के कवि कौन हैं? उनका साहित्यिक परिचय दीजिए। (3)

## नया रास्ता

### 11. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

पिताजी व माताजी के उदास चेहरों को देखकर उसकी आँखें दुःख से बोझल हो गईं। वह उनके दुःख को भली-भाँति समझ रही थी। कितनी अभागन थी वह, जिसके कारण उसके माता-पिता इतने परेशान थे।

- (i) किसके हृदय में अंतर्द्वंद्व चल रहा था और अंतर्द्वंद्व क्या था? (2)
- (ii) मीनू द्वारा लिया गया निर्णय क्या था? क्या उसके निर्णय से आप सहमत हैं? (2)
- (iii) उसके माता-पिता का दुःख क्या था? (3)
- (iv) उसका स्वयं को अभागन मानना क्या उचित है? यदि नहीं, तो क्यों? (3)

**12. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

अकेलेपन में उन्हें बहू की कमी विशेष रूप से अखरती थी, कितनी ही बार उन्होंने अमित को शादी के लिए तैयार करने की कोशिश की, परंतु अमित चुपचाप उनकी बातें सुनकर इधर-उधर हो जाता।

- (i) माँ ने किसके लिए तथा क्या सपने सँजोए थे? (2)
- (ii) माँ को कब व किसकी कमी अखरती थी? (2)
- (iii) माँ अमित पर किस बात का दबाव डालती थीं? उस पर अमित की क्या प्रतिक्रिया होती? (3)
- (iv) प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (3)

**13. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

कई बार अंतःप्रेरणा ने उसे वापस मुड़ जाने के लिए प्रेरित किया, परंतु वह इस अंतर्द्वंद्व में फैसला नहीं कर पाई।

- (i) मीनू कहाँ जा रही थी और क्यों? (2)
- (ii) अस्पताल पहुँचने पर मीनू के प्रति सबकी क्या प्रतिक्रिया थी? (2)
- (iii) मीनू के हृदय में अंतर्द्वंद्व क्यों था? (3)
- (iv) मीनू क्या फैसला नहीं कर पाई थी? (3)

**एकांकी संचय****14. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

यदि कोई शिकायत थी, तो उसे मिटा देना चाहिए था।

हल्की-सी खरोंच भी, यदि उस पर तत्काल दवाई न लगा दी जाए, बढ़कर एक बड़ा घाव बन जाता है और यही घाव नासूर हो जाता है, फिर लाख मरहम लगाओ ठीक नहीं होता।

- (i) अवतरण में शिकायत किसको थी और क्यों? (2)
- (ii) श्रोता कौन है? श्रोता की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (2)
- (iii) श्रोता ने ऐसा क्या कहा कि वक्ता को उपरोक्त वक्तव्य कहने के लिए विवश होना पड़ा? (3)
- (iv) 'घाव का नासूर होना' पंक्ति का अर्थ बताते हुए इसे अवतरण के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। (3)

**15. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

जितना जी चाहे हँस लो, पर यह न भूलना कि मैं अभी जीवित हूँ। मेरी भुजाओं का बल अभी नष्ट नहीं हुआ है।

- (i) प्रस्तुत कथन में वक्ता कौन है? वह किससे व क्या कह रहा है? (2)
- (ii) "मेरी भुजाओं का बल अभी नष्ट नहीं हुआ है।" यह कथन वक्ता द्वारा किससे व किस संदर्भ में कहा गया है? (2)
- (iii) दुर्योधन सरोवर में क्यों छिपा था? (3)
- (iv) प्रस्तुत एकांकी के शीर्षक का औचित्य स्पष्ट कीजिए। (3)

**16. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

तुम्हारी बहन के सपने कभी पूरे नहीं होंगे और उसके सपनों के खून का दाग तुम्हारे हाथों और तुम्हारी माँ के आँचल पर होगा।

- (i) श्रोता ने वक्ता की बात से अपमानित होकर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की? (2)
- (ii) श्रोता कौन था? उसकी बहन के क्या सपने थे? (2)
- (iii) "तुम्हारी बहन के सपने कभी पूरे नहीं होंगे।" प्रस्तुत पंक्ति किसने व किससे कही? (3)
- (iv) "उसके सपनों के खून का दाग तुम्हारे हाथों और तुम्हारी माँ के आँचल पर होगा।" वक्ता ने यह कथन क्यों कहा? पंक्ति में 'उसके' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है? (3)

## व्याख्या सहित उत्तर

### 1. (i) प्रस्तावना

भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या राष्ट्र की भयावह समस्या है। स्वाधीन भारत में देश की समृद्धि के लिए किए गए सरकार के सभी निर्णय और श्रेष्ठ कार्यों में गतिरोध उत्पन्न होने का एक प्रमुख कारण जनसंख्या में निरंतर वृद्धि है। महान् विचारक गार्नर ने कहा भी है—

“किसी भी राज्य के लिए उसकी साधन-संपन्नता से अधिक जनसंख्या अहितकर है।”

#### वर्तमान स्थिति

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की जनसंख्या लगभग 121 करोड़ है। भारत इस समय आबादी की दृष्टि से दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है। वस्तुतः किसी देश की जनसंख्या ही उसकी शक्ति का आधार होती है, परंतु अनियंत्रित गति से इसका बढ़ते जाना निश्चय ही देश के लिए बोझ बन जाता है। स्वाधीनता के उपरांत भारत ने सभी क्षेत्रों में प्रगति की है, किंतु वास्तविक तथ्य यह है कि जब तक आर्थिक विकास होता है, तब तक जनसंख्या इतनी बढ़ चुकी होती है कि वह समग्र विकास को निगल जाती है। परिणामतः प्रगति की सभी योजनाएँ धरी-की-धरी रह जाती हैं।

#### दुष्परिणाम

जनसंख्या के बढ़ने से परिवार का जीवन स्तर गिरता है। जीवन का विकास रुक जाता है और नैतिक एवं चारित्रिक पतन बढ़ता जाता है। जनसंख्या के बढ़ते जाने से माँग अधिक होती जाती है और उसके सापेक्ष उत्पादन पूर्ति नहीं बढ़ पाती, जिसके कारण महँगाई बढ़ती जाती है तथा देश की अर्थव्यवस्था बिगड़ जाती है। इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि गरीबी, बेकारी, अशिक्षा, बीमारी जैसी कई समस्याओं को जन्म देती है।

#### उपसंहार

भारत जैसे विकासशील देश में बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण पाना अत्यंत आवश्यक है अन्यथा इसके परिणामस्वरूप देश में अशिक्षा, गरीबी, बीमारी, भूख, बेरोजगारी, आवासहीनता जैसी कई समस्याएँ उत्पन्न होंगी और देश का विकास अवरुद्ध हो जाएगा। अतः जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों के साथ-साथ देश के प्रत्येक नागरिक को इस विकट समस्या से लड़ना होना। समाजसेवी संस्था तथा मीडिया को भी इस कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की आवश्यकता है।

इन सब बातों पर ध्यान देकर जनसंख्या विस्फोट पर निश्चय ही नियंत्रण पाया जा सकता है। केंद्रीय एवं राज्य स्तरों पर जनसंख्या परिषद् स्थापित करना भी इस समस्या का उपयुक्त उपाय हो सकता है। आज प्रत्येक देशवासी को उनकी बातों से प्रेरणा लेकर देश को समृद्ध एवं विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प लेना चाहिए।

### (ii) प्रस्तावना

‘अनुशासन’ शब्द ‘शासन’ में ‘अनु’ उपसर्ग के जुड़ने से बना है। इस प्रकार अनुशासन का शाब्दिक अर्थ हुआ-शासन के पीछे चलना, किंतु व्यापक रूप से देखा जाए तो स्वयं को नियंत्रण में रखना भी अनुशासन ही है। अतः व्यक्ति के संदर्भ में अनुशासन का अर्थ है-जीवन को आदर्श रूप में जीना।

#### अनुशासन का महत्त्व

अनुशासन का महत्त्व न केवल मानव जगत, बल्कि पूरे ब्रह्मांड में एक समान है। चाँद, सूरज, तारे सभी अनुशासन में बँधकर निश्चित गति का पालन करते हैं। पृथ्वी पर विभिन्न ऋतुएँ निश्चित समय पर आती हैं। बीज के पनपने, पेड़-पौधों में फल-फूल लगने व उनके झड़ जाने की भी एक निश्चित अवधि होती है। जिस प्रकार प्रकृति के कण-कण में अनुशासन व्याप्त है, उसी प्रकार मानव जगत की छोटी-बड़ी प्रत्येक इकाई में अनुशासन की अपनी महत्ता है। साहित्य, समाज, धर्म, राजनीति सभी क्षेत्रों में अनुशासन का पालन करना आवश्यक है। सेनापति की बात मानने वाले अनुशासित सैनिक रणभूमि में विजयश्री को प्राप्त करते हैं। कप्तान के आदेश का पालन करने वाले खिलाड़ी खेल के मैदान में जीत की पताका फहराते हैं। गुरु के बताए मार्ग पर चलने वाले विद्यार्थी जीवन में विद्या, धन और यश के अधिकारी बनते हैं। भगवान बुद्ध ने कहा है “उत्तम स्वास्थ्य का आनंद पाने के लिए, परिवार में खुशी लाने के लिए और सबको शांति प्रदान करने के लिए सबसे पहले अनुशासित बनने और मस्तिष्क पर नियंत्रण प्राप्त करने की आवश्यकता है।”

#### सफलता हेतु अनुशासन

अनुशासन सफलता की कुंजी है। अनुशासन के बल पर साधारण-से-साधारण व्यक्ति भी सफलता की ऊँचाइयों को छू लेता है। अपने जीवन में नियम और अनुशासन का पालन करके ही महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानंद, सुभाष चंद्र बोस, लोकमान्य तिलक, डॉ. भीमराव अंबेडकर ने विश्व में अपनी पहचान बनाई और सबके प्रेरणास्रोत बने। नियम व अनुशासन पर चलने वाले विद्यार्थी की सफलता कभी संदिग्ध नहीं रहती। शिक्षकों के निर्देशों का पूर्णतः अनुसरण करने वाला विद्यार्थी आदर्श विद्यार्थी के रूप में सहपाठियों, शिक्षकों के साथ-साथ सबका प्रिय हो जाता है।

**उपसंहार**

किसी भी राष्ट्र की प्रगति तभी संभव है, जब वहाँ के नागरिक अनुशासित हों। देश के प्रति नागरिक-कर्तव्यों का पालन अनुशासित रहकर ही किया जा सकता है। देश के प्रत्येक नागरिक को संकल्प लेना चाहिए कि वह जीवन में अनुशासन को महत्त्व देते हुए अपने आप को राष्ट्र सेवा में पूर्णतः समर्पित कर देगा। हमें गाँधीजी की यह बात हमेशा याद रखनी होगी

“अनुशासन के बिना न तो परिवार चल सकता है और न ही संस्था या राष्ट्र।”

**(iii) भूमिका**

मैं शुरु से ही घुमक्कड़ प्रवृत्ति का हूँ। पिछले पाँच वर्षों में मैंने भारत के लगभग बीस राज्यों की यात्रा की है, इनमें दिल्ली, मुंबई, राजस्थान, मध्य प्रदेश, ओडिशा, गोवा आदि शामिल हैं। शहरों में भुवनेश्वर ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया है। पिछले वर्ष ही गर्मी की सप्ताह भर की छुट्टी में मैं इस शहर की यात्रा पर था। यह यात्रा मेरे लिए अविस्मरणीय है।

**यात्रा का आनंद**

मैं दिल्ली से रेल यात्रा का आनंद उठाते हुए अपने सभी साथियों के साथ सुबह लगभग दस बजे भुवनेश्वर पहुँच गया था। भुवनेश्वर के बारे में जैसा हमने सुना था, उससे कहीं अधिक दर्शनीय पाया। भुवनेश्वर, भारत के खूबसूरत एवं हरे-भरे प्रदेश ओडिशा की राजधानी है। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता देखते ही बनती है। ऐतिहासिक ही नहीं धार्मिक दृष्टिकोण से भी यह शहर भारत के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में से एक है। इसे ‘मंदिरों का शहर’ भी कहा जाता है। हम जिस होटल में ठहरे थे, उसके निकट ही राजा-रानी मंदिर है, इसलिए सबसे पहले हम उसी के दर्शनों के लिए पहुँचे। इस मंदिर की स्थापना ग्यारहवीं शताब्दी में हुई थी। अगली सुबह हम लोग जल्दी तैयार होकर लिंगराज मंदिर देखने गए। इस मंदिर के आस-पास सैकड़ों छोटे-छोटे मंदिर बने हुए हैं, इसलिए इसे ‘लिंगराज मंदिर समूह’ कहा जाता है। 185 फीट लंबा यह मंदिर भारत की प्राचीन शिल्पकला का अप्रतिम उदाहरण है। मंदिरों की दीवारों पर निर्मित मूर्तियाँ शिल्पकारों की कुशलता की परिचायक हैं।

**भुवनेश्वर की अविस्मरणीय यात्रा**

भुवनेश्वर की यात्रा इतिहास की यात्रा के समान है। इस शहर की यात्रा करते हुए ऐसा लगता है मानो हम उस काल में चले गए हों, जब इस शहर का निर्माण किया जा रहा था। शहर के मध्य स्थित भुवनेश्वर संग्रहालय में प्राचीन मूर्तियाँ एवं हस्तलिखित ताड़पत्रों का अनूठा संग्रह इस आभास को और भी अधिक बल प्रदान करता है। सैर के बाद हम लोगों ने ओडिशा के स्थानीय भोजन का आनंद उठाया। भुवनेश्वर की यात्रा को अविस्मरणीय बनाने के लिए हमने जमकर फोटोग्राफी की थी, किंतु फोटो के साथ-साथ हम सबने कई प्रकार की वस्तुएँ खरीदीं। ये वस्तुएँ हमें हमेशा भुवनेश्वर की प्राचीन कला की याद दिलाती हैं।

**उपसंहार**

भुवनेश्वर की यात्रा मेरे लिए ही नहीं मेरे सभी साथियों के लिए भी एक अविस्मरणीय यात्रा बन गई, वस्तुतः किसी भी व्यक्ति की यात्रा का उद्देश्य केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि मानसिक शांति प्राप्त करना भी होता है। सचमुच भुवनेश्वर के वातावरण में अजीब-सी पवित्रता घुली हुई है। इस यात्रा से हमारी मित्र-मंडली को जिस मानसिक शांति का अनुभव हुआ, उसे शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता।

**(iv) उक्ति का अर्थ**

‘जैसी करनी वैसी भरनी’ उक्ति का अर्थ है कि मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल उसे भोगना पड़ता है। सत्कर्मों तथा परिश्रमी मानव सदैव श्रेष्ठ लक्ष्यों को प्राप्त करता है तथा बुरे कर्म करने वाला मानव सदैव कर्मानुरूप व्यर्थ भटकता रहता है। तुलसीदास जी ने ‘रामचरितमानस’ में कहा भी है कि

“कर्म प्रधान विश्व कर राखा। जो जस करइ तो तस फल चाखा।”

अर्थात् पूरा विश्व अपने कर्मों पर ही आधारित है, जो जैसा कर्म करता है, वह वैसा ही फल पाता है। इसी तरह एक गीत भी रचा गया है

“जो बोएगा वही पाएगा, तेरा किया आगे आएगा।

सुख-दुःख है क्या, फल कर्मों का, जैसी करनी वैसी भरनी।।”

**कहानी**

इसी विषय से संबंधित एक कहानी प्रस्तुत है

दो भाई थे। दोनों कुशाग्र बुद्धि, परंतु दोनों के आचरण, व्यवहार और जीवन-शैली में बहुत अंतर था। उनमें राम धैर्यवान व परिश्रमी था, परंतु श्याम अधीर, चंचल एवं आलसी था। उनके पिताजी ने उन्हें वार्षिक परीक्षा में श्रेष्ठ अंकों से उत्तीर्ण होने का लक्ष्य दिया, ताकि दोनों का देश के प्रतिष्ठित कॉलेज में दाखिला हो सके। राम ने पूरी मेहनत और योजना के साथ पूरे समय परीक्षा की तैयारी की और परीक्षा में प्रथम स्थान के साथ पास हुआ। तदुपरांत उसने श्रेष्ठ कॉलेज में भी दाखिला पाया और परिश्रम से प्रशासनिक सेवा (आईएएस) में शानदार भविष्य बनाया।

इसके विपरीत श्याम ने अपना समय व्यर्थ के कार्यों व मित्र मंडली में व्यतीत किया, जिससे वह विद्यालय की परीक्षा तक उत्तीर्ण न कर सका। इस प्रकार श्याम ने खुद के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया और राम कामयाबी की बुलंदियों को प्राप्त कर गया। दोनों ने अपने कर्मों के अनुसार ही फल पाया। इसलिए इस घटना से यह कहावत सही सिद्ध हो गई कि

“जैसी करनी वैसी भरनी”

शास्त्रों में भी एक दोहा द्रष्टव्य है कि “बोए पेड़ बबूल का, आम कहाँ से होए।” अर्थात् मानव अपने कर्मानुसार ही फल प्राप्त करता है।

**सीख** इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि मनुष्य जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है।

- (v) प्रस्तुत चित्र में एक युवा अध्यापिका कुछ प्रौढ़ लोगों को शिक्षा दे रही है। यह दृश्य ग्रामीण प्रतीत होता है, क्योंकि स्त्री-पुरुषों की वेशभूषा ग्रामीण शैली की है। अध्यापिका श्यामपट्ट पर अ, आ, इ, ई (हिंदी की वर्णमाला) लिखकर समझा रही है। वहीं मेज़ पर दो पुस्तकें भी रखी हुई हैं, जो अध्यापिका की पढ़ने की पुस्तकें होंगी। एक व्यक्ति के हाथ में एक पुस्तक है, जिस पर अ, आ इत्यादि लिखित हैं। वैसे तो समूचे देश में ही, पर प्रमुखतः ग्रामीण परिवेश में प्रौढ़ शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है, क्योंकि पुरानी पीढ़ी के बहुत से लोग अशिक्षित हैं। इस कारण उन्हें दैनिक जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सुदूर किसी यात्रा पर जाना हो, किसी पुस्तक आदि को पढ़ना हो, जमीन-जायदाद या उपज इत्यादि का क्रय-विक्रय करना हो, तो इन सभी क्षेत्रों में उन्हें किसी अन्य पर आश्रित रहना पड़ता है। इसी कारणवश अनेक बार उन्हें आर्थिक हानि तक उठानी पड़ती है तथा कभी-कभी सामाजिक रूप से तिरस्कृत भी होना पड़ता है।

इन सब कठिनाइयों को महसूस करते हुए मेरी बहन सीता ने, जो आयु में मुझसे पाँच वर्ष बड़ी है, गाँव के वृद्ध लोगों को शिक्षित करने का निश्चय किया। सभी आदरणीय बुजुर्गों तथा प्रौढ़ों को इसकी सूचना दे दी गई। जो भी ग्रामीण पढ़ने में रुचि रखते थे, उन्हें एक निश्चित स्थान पर, निश्चित समय पर शिक्षा देना आरंभ कर दिया गया। प्रारंभ में गाँव के पाँच-सात लोगों ने शिक्षा लेना आरंभ किया, परंतु धीरे-धीरे इस संख्या में वृद्धि हो गई। परिणामस्वरूप कुछ दिनों के प्रयास के उपरांत ही उन लोगों ने पढ़ना-लिखना भी सीख लिया और जोड़-घटाव भी करने लगे।

इस प्रयास के द्वारा इन लोगों के आत्मविश्वास में वृद्धि होने लगी थी। वे सही-गलत के अंतर को पहचानने लगे और स्वयं निर्णय लेने में सक्षम हो गए। इस शिक्षा से वे आर्थिक वृद्धि के साथ-साथ, सामाजिक रूप से भी खुद को सम्मानित अनुभव करने लगे। पूरा गाँव सीता के इस मानवीय प्रयास की हृदय से प्रशंसा कर रहा था। सीता स्वयं भी इस उपलब्धि और सराहना से गौरवान्वित अनुभव कर रही थी। भारतीय प्रशासन और सामाजिक संगठनों को प्रौढ़ शिक्षा नीति में वृद्धि के लिए और अधिक प्रयास करने चाहिए। किसी ने सही कहा है कि

“पढ़ा लिखा हो हर इंसान।  
तब ही होगा, देश महान्।”

## 2. (i) सेक्टर 16, द्वारका, दिल्ली।

**दिनांक :** 15 जुलाई, 20XX

प्रिय अनुज राम,

सस्नेह आशीष।

आज तुम्हारे मित्र द्वारा ही तुम्हारे कुशलमंगल की जानकारी मिली। मुझे बहुत खुशी है कि तुम विद्यार्जन के साथ-साथ खेलों पर भी ध्यान दे रहे हो। वर्तमान समय में खेल भी विद्या के समान ही आवश्यक हैं। ये भविष्य-निर्माण में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं तथा साथ ही शरीर के स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक हैं। इससे तो तुम भी परिचित हो कि स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।

अतः स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखना, जिसके लिए निम्न सुझाव लाभप्रद हो सकते हैं

1. सुबह जल्दी उठना तथा रात को जल्दी सोना।
2. समय पर तथा सीमित भोजन करना।
3. नियमित व्यायाम करना।
4. सदैव प्रसन्नचित्त रहो तथा फल, दूध आदि का सेवन करो।
5. तैराकी भी उत्तम व्यायाम है।
6. समय-सारणी बनाकर नियमित रूप से विद्यार्जन करो।

उम्मीद है तुम उपरोक्त सुझावों के अनुसार कार्य करोगे। अच्छा अब पत्र समाप्त करता हूँ। माताजी-पिताजी की ओर से आशीर्वाद।

पत्र का जवाब शीघ्र देना।

तुम्हारा अग्रज  
श्याम



- (ii) सेवा में,  
स्वास्थ्य अधिकारी महोदय,  
दरियागंज, दिल्ली।

दिनांक : 13 अप्रैल, 20XX

विषय : अपने क्षेत्र में व्याप्त गंदगी की समस्या के संदर्भ में।

माननीय महोदय,

मैं राकेश, कमला नगर का निवासी हूँ। पिछले 10-12 दिनों से हमारे आस-पास के क्षेत्रों में गंदगी तथा कूड़े के ढेर सर्वत्र नजर आ रहे हैं एवं इनमें निरंतर वृद्धि हो रही है। सफ़ाई-कर्मचारी भी कई दिनों से नजर नहीं आ रहे हैं। भयंकर गंदगी व कूड़े आदि के कारण यहाँ के निवासियों का जीवन दूभर हो गया है तथा साथ ही संक्रामक बीमारियाँ होने का खतरा भी उत्पन्न हो गया है। अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि अविलंब इस समस्या का समाधान करें तथा संबंधित कर्मचारियों को त्वरित कार्यवाही हेतु आवश्यक निर्देश दें। मैं आपकी इस त्वरित प्रतिक्रिया के लिए आपका अत्यंत आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद।

भवदीय

राकेश त्यागी

ब-210, कमला नगर,  
दिल्ली।

3. (i) राजा को रोग से छुटकारा दिलाने के लिए देश-विदेश के प्रख्यात एवं निपुण चिकित्सक बुलाए गए, परंतु किसी भी प्रकार की औषधि से राजा का स्वास्थ्य ठीक न हो सका, बल्कि पहले की अपेक्षा राजा का रोग अत्यधिक बढ़ता चला गया। इस असाध्य रोग के कारण राजा अत्यंत दुःखी हुए तथा प्रजा भी राजा की दशा के कारण निराश और उदास हो गई।
- (ii) एक वृद्ध पुरुष राजा के महल में आया तथा राजा को रोगमुक्त करने के लिए विशेष औषधि के बारे में बताया। वह औषधि किसी अन्य व्यक्ति के पित्ताशय को निकालकर ही तैयार हो सकती थी। उस औषधि में एक गुण यह भी था कि वह न केवल इस रोग को जड़ से समाप्त करती, अपितु राजा को चिरंजीवी भी बना देती।
- (iii) वृद्ध व्यक्ति की बातों ने राजा के हृदय में नई आशा का उदय कर दिया और उन्होंने वृद्ध व्यक्ति से अत्यंत कृतज्ञता प्रकट की तथा साथ ही सभी चिकित्सकों को ऐसे व्यक्ति की तलाश करने का आदेश दिया, जिसकी पित्त की थैली से यह औषधि बनाई जा सके।
- (iv) खोज करते हुए चिकित्सकों को एक अत्यंत गरीब परिवार मिल गया, जो एक वक्त का भोजन तक प्राप्त करने में असमर्थ था। चिकित्सकों ने माता-पिता को ढेर सारा धन देने का प्रलोभन देकर, उनका इकलौता पुत्र खरीदने का प्रस्ताव रखा। सहसा वे माता-पिता धन के लालच में अंधे हो गए तथा उन्होंने अपने पुत्र को बेच दिया।
- (v) लड़के की पित्त की थैली लेने के विषय में राजा ने राज पुरोहित से विचार-विमर्श किया। पुरोहित ने कहा कि राजा देश का रक्षक है तथा देश से भी बड़ा है। ऐसे शासक की ज़िंदगी के लिए किसी व्यक्ति की बलि देना कोई अपराध नहीं है। पुरोहित के वचनों के बाद लड़के और जल्लाद को प्रस्तुत किया गया। इस पूरे घटनाक्रम को देखकर लड़का ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा।

4. (i) अंतरंग                      बहिरंग  
अपव्यय                    मितव्यय  
इति                            अथ  
उदयाचल                    अस्ताचल  
जड़                            चेतन  
तीव्र                            मंद

- (ii) इंद्र महेंद्र, सुरेंद्र, पुरंदर, देवराज  
वृक्ष तरु, पादप, विटप, द्रुम

- (iii) आस्तीन का साँप (विश्वासघाती मित्र)

वाक्य प्रयोग अभय ने मोहन की बहुत सहायता की, लेकिन वह तो आस्तीन का साँप निकला।

उल्टे उस्तरे से मूँडना (किसी को मूर्ख बनाकर उससे धन ऐंठना या अपना काम निकालना।)

वाक्य प्रयोग यह पुरोहित यजमानों को उल्टे उस्तरे से मूँडने में सिद्धहस्त है।

|      |        |        |         |        |
|------|--------|--------|---------|--------|
| (iv) | निरसता | नीरसता | घनिष्ट  | घनिष्ट |
|      | गृहणी  | गृहिणी | कियारी  | क्यारी |
|      | नीती   | नीति   | पैत्रिक | पैतृक  |

- (v) (क) तुम्हारे लौटकर आने पर मैं जाऊँगा।  
 (ख) रानी ने दान दिया।  
 (ग) जवानों द्वारा आतंकवादी मारे गए।  
 (घ) रमा बाज़ार जा रही है।

5. (i) कैप्टन चश्मेवाला एक बूढ़ा-लँगड़ा चश्मेवाला था। पैर से अपाहिज होने के बावजूद भी वह नेताजी को नया चश्मा पहना देता था। वह बहुत ही परिश्रमी एवं सच्चा देशभक्त था।  
 (ii) कैप्टन चश्मेवाला नेताजी की मूर्ति का चश्मा बदल दिया करता था। मूर्ति के बदलते चश्मे की बात ही हालदार साहब समझ नहीं पा रहे थे।  
 (iii) पानवाले ने हालदार साहब को बताया कि कैप्टन की कोई दुकान नहीं है, वह फेरी लगाकर अपने चश्मे बेचता है। देशभक्ति की भावना भरी होने के कारण वह मूर्ति पर कोई-न-कोई चश्मा लगा देता है, किंतु जब कोई ग्राहक कैप्टन से उसी चश्मे का फ्रेम माँगता है, जो नेताजी की मूर्ति पर लगा होता है, तो कैप्टन वही चश्मा उतारकर दे देता है और मूर्ति को नया चश्मा पहना देता है।  
 (iv) प्रस्तुत कहानी 'नेता जी का चश्मा' के माध्यम से लेखक ने इस तथ्य को उजागर किया है कि देश के सभी छोटे-बड़े, बच्चे-बूढ़े देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत रहते हैं, किंतु उन सबका अपनी देशभक्ति प्रकट करने का तरीका भिन्न-भिन्न होता है। लेखक ने यह भी समझाने का प्रयास किया है कि हमें किसी के छोटे प्रयासों का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए अपितु उनकी सराहना करनी चाहिए। कैप्टन के चरित्र द्वारा लेखक ने उन असंख्य देशभक्तों को स्मरण करने का कार्य किया है, जिन्होंने देशहित के लिए कार्य किया और देशभक्तों को सम्मान दिलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।
6. (i) आनंदी के पिता भूपसिंह धर्मसंकट में थे, क्योंकि भूपसिंह अपनी पुत्री आनंदी का विवाह ऐसी जगह करना चाहते थे, जिससे न तो उन पर अधिक ऋण का बोझ हो और न ही स्वयं को भाग्यहीन समझना पड़े।  
 (ii) लालबिहारी, बेनीमाधव सिंह का छोटा बेटा व आनंदी का देवर था। वह स्वभाव से अत्यंत ही कठोर प्रवृत्ति का था। एक दिन लालबिहारी ने आनंदी को मांस बनाने को कहा।  
 (iii) आनंदी के नए घर की स्थिति कुछ अलग ही थी। जिस प्रकार के वातावरण में वह बचपन से रही थी, वैसा वातावरण उसके नए घर (ससुराल) में नाममात्र को भी नहीं था। उसका नया घर किसी देहाती घर से कम न था। वहाँ घोड़े-हाथी तथा सैर करने के लिए बाग नहीं थे तथा न ही जमीन पर फर्श था, न ही दीवारों पर तस्वीरें थीं।  
 (iv) लालबिहारी जब खाना खाने बैठा तो उसे दाल में घी न मिला। पूछने पर पता चला कि घी तो खत्म हो गया है। इसी कारण लालबिहारी को गुस्सा आ गया और उसने आनंदी के घरवालों को बुरा-भला बोल दिया। सूखी लकड़ी की तुलना भूख से पीड़ित व्यक्ति से की गई है।
7. (i) वहाँ उपस्थित लोग सोचने लगे कि यदि पेड़ को नहीं काटा जा सकता, तो आदमी को ही काटकर निकाल लिया जाए। लोगों की इस बात को सुनकर दबे हुए व्यक्ति ने आपत्ति व्यक्त की।  
 (ii) माली संवेदनशील व्यक्ति था। उसे दबे हुए व्यक्ति के प्रति विशेष सहानुभूति हो रही थी। वह उसे खाना भी खिलाता है तथा उसे बचाने का हर संभव प्रयास भी करता है और उसे यह विश्वास भी दिलाता है कि तुम चिंता न करो सब ठीक हो जाएगा।  
 (iii) जब माली ने दबे हुए आदमी के मुँह में खिचड़ी डालते हुए उसे बताया कि मामला ऊपर चला गया है, तो दबे हुए व्यक्ति ने माली की बात का जवाब शायरी के द्वारा दिया, तो यह जानकर कि दबा हुआ व्यक्ति एक शायर है, उसे अचंभा हुआ और यही खबर थोड़ी देर में सेक्रेटेरियट में फैल गई।  
 (iv) इस कहानी के माध्यम से लेखक ने सरकारी कर्मचारियों और अधिकारियों में फैली अकर्मण्यता पर भी करारा व्यंग्य किया है। हर विभाग अपनी जिम्मेदारी को दूसरे विभाग पर तरह-तरह के बहाने बनाकर डाल देता है। फाइल एक विभाग से दूसरे विभाग तक घूमती रहती है, किंतु परिणाम कुछ नहीं निकलता है। प्रस्तुत कहानी सरकारी विभागों की लापरवाही और जिम्मेदारी के मुँह मोड़ने की प्रवृत्ति को उजागर करती है। इस तरह की कार्यशैली के अंतर्गत अनावश्यक नियमों का उल्लेख कर विभाग अपनी जिम्मेदारी एक-दूसरे पर थोप देते हैं।
8. (i) मेघों के आने पर पेड़ ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो वे अपनी गर्दन उठा-उठाकर लगातार मेघों की ओर देख रहे हों अर्थात् मेघों को देखकर पेड़ उत्सुकतापूर्ण अवस्था में नजर आते हैं।  
 (ii) "आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाएँ" जिस प्रकार अतिथि के आने पर गाँव की महिलाएँ स्वयं को छिपाने का प्रयास करते हुए इधर-उधर भागती हैं, ठीक उसी प्रकार धूल भी गाँव की स्त्रियों की भाँति ऐसी प्रतीत होती है, मानो घाघरा उठाकर भाग रही हो।

- (iii) जिस प्रकार गाँव में अतिथि के आने पर गाँव की महिलाएँ अपने घूँघट से ही अतिथि को निहारती हैं, ठीक उसी प्रकार नदियाँ भी जैसे बादलों को निहार रही हैं, क्योंकि बादलों को देखकर ऐसा लग रहा है जैसे बादल अतिथि के रूप में सज-धज कर काफी दिनों के बाद गाँव में आ रहे हों।
- (iv) प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव यह है कि मेघों के आगमन से पूरी प्रकृति उत्सुकतापूर्ण अवस्था में प्रसन्नचित्त दिखाई देती है। पेड़ गर्दन उठाकर मेघों को देखने लगे। आँधी के चलने पर धूल स्वयं ही भागने लगी तथा नदी भी प्रसन्नचित्त अवस्था में मेघों को निहारती हुई सी प्रतीत होने लगी।
- भाव यह है कि वर्षा ऋतु के आने पर प्राकृतिक वातावरण में विभिन्न गतिविधियाँ होने लगती हैं। उन्हीं गतिविधियों का मानवीकरण यहाँ कवि ने अपनी कविता में किया है। वर्षा ऋतु में चारों तरफ वातावरण हर्षमय और खुशनुमा हो जाता है। प्रकृति मनोरम दिखाई पड़ती है।

9. (i) 'मसि' शब्द का अर्थ 'स्याही' होता है। प्रस्तुत साखी में कबीरदास जी ने ईश्वर के अनेक गुणों के विषय में बताया है कि किसी भी तरह से उनका उल्लेख नहीं किया जा सकता।
- (ii) कबीरदास जी के काव्य में अधिकतर समाज में व्याप्त कुरीतियों, बाह्य आडंबरों, मूर्ति-पूजा, कर्मकांडों आदि का विरोध देखने को मिलता है। कबीरदास जी निर्गुण ईश्वर के उपासक थे। अतः उनके काव्य में निर्गुण ईश्वर की उपासना के रूप में स्पष्ट रहस्यवाद के भी दर्शन होते हैं।
- (iii) कवि ईश्वर की महानता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि यदि सातों समुद्रों की स्याही बनाई जाए, सारे वनों की लकड़ी की कलम बनाई जाए तथा सारी धरती का प्रयोग कागज के रूप में किया जाए, तो भी ईश्वर के गुणों का बखान नहीं किया जा सकता। कवि ऐसा इसलिए कह रहा है, क्योंकि ईश्वर के अनेक गुण हैं। उनकी कोई सीमा नहीं है। अतः ईश्वर के गुणों का वर्णन केवल शब्दों के माध्यम से नहीं किया जा सकता।
- (iv) यह स्पष्ट ही है कि कबीरदास जी ईश्वर के निराकार व निर्गुण स्वरूप के उपासक थे। अतः प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने ईश्वर के अनंत गुणों का बखान किया है। उन्होंने, अपनी साखी में ईश्वर की अनंत महिमा का वर्णन किया है। इन्होंने अपने काव्य के माध्यम से समाज में निर्गुण भक्ति की धारा प्रवाहित की। कबीरदास जी निराकार पार-ब्रह्म की ही उपासना करने पर जोर देते थे, इसीलिए प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने निराकार ईश्वर की भक्ति करते हुए बताया है कि हरि अर्थात् उनके गुण अपार हैं, जिन्हें लिखा नहीं जा सकता।
10. (i) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि अपनी मातृभूमि की भौगोलिक सुंदरता का बखान कर रहा है अर्थात् वह अपनी जन्मभूमि में उपस्थित पर्वत, झरने, नदियों, सागरों आदि की प्रशंसा कर रहा है।
- (ii) हिमालय की प्रशंसा करते हुए कवि कहते हैं कि हिमालय पर्वत अपनी ऊँचाई के कारण आसमान को चूमता हुआ प्रतीत होता है। इस प्रकार वह देश की सुंदरता को बढ़ाता है और भारत की दक्षिण दिशा में हिलोरे भरता समुद्र मातृभूमि के चरण चूमता प्रतीत होता है।
- (iii) कवि ने अपनी जन्मभूमि को पुण्यभूमि व स्वर्णभूमि कहकर इसलिए संबोधित किया है, क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहाँ की भूमि अत्यधिक उपजाऊ भूमि है, दूसरी ओर यहाँ पर्वत, पहाड़, नदियाँ आदि को पूजा जाता है अर्थात् यहाँ पर्वत, पहाड़, पठार, नदियाँ सभी को पवित्र माना जाता है, इसलिए कवि ने भारतभूमि को पुण्यभूमि व स्वर्णभूमि कहकर संबोधित किया है।
- (iv) इस कविता के रचयिता सोहनलाल द्विवेदी जी हैं। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जन-जन में राष्ट्रीय चेतना को जगाने का कार्य किया। उनकी कविताएँ राष्ट्र प्रेम से प्रेरित तथा ओजपूर्ण हैं। उन्हें 'राष्ट्रकवि' की ख्याति प्राप्त है।
- अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होंने देश के नवयुवकों को देशप्रेम का संदेश दिया। सोहनलाल द्विवेदी जी की भाषा शैली सरल एवं परिष्कृत खड़ी बोली है। कहीं-कहीं इन्होंने संस्कृत भाषा का भी प्रयोग किया है। इन्होंने प्रबंध व मुक्तक दोनों ही शैलियों में रचनाएँ की हैं।
11. (i) मेरठ वालों द्वारा अमित के साथ रिश्ते के लिए इनकार किए जाने के कारण मीनू के हृदय में अंतर्द्वंद्व चल रहा था और अंतर्द्वंद्व यह था कि इतने लड़के वालों द्वारा नापसंद कर दिए जाने के बाद वह आगे अपने विवाह के लिए कोशिश करे या नहीं? वह इसी तरह नापसंद किए जाने के दुःख एवं क्षोभ को सहने के लिए तैयार रहे या नहीं?
- (ii) मीनू ने विवाह नहीं करने का निर्णय लिया था। मीनू का निर्णय बहुत तार्किक है, क्योंकि किसी व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य सिर्फ विवाह तक सीमित नहीं हो सकता। उसे अपने जीवन का एक व्यापक एवं ऊँचा लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। मीनू ने अपनी योग्यता एवं क्षमता को समझते हुए उचित निर्णय लिया था और मैं उसके इस निर्णय से पूर्णतया सहमत हूँ।
- (iii) मीनू के माता-पिता को मीनू के विवाह न हो पाने का अत्यधिक दुःख था। उन्होंने अपनी बेटी को पढ़ाया-लिखाया और योग्य बनाया। जीवन के पड़ाव में एक पड़ाव विवाह का भी होता है, जिसे उसके माता-पिता सफलतापूर्वक संपन्न करना चाहते थे, लेकिन दुर्भाग्य से मीनू को विवाह के लिए देखने आने वाले लड़के या उसके परिवार वाले उसे पसंद नहीं कर रहे थे, जिसके कारण मीनू के माता-पिता अत्यंत दुःखी थे।

- (iv) मीनू को लगने लगा कि वह अत्यंत दुर्भाग्यशाली है, जिसके कारण उसकी शादी नहीं हो पा रही है। उसकी शादी नहीं होने से उसके माता-पिता चिंतित एवं परेशान हैं। अपने माता-पिता की चिंता या परेशानी का कारण मीनू स्वयं को मान रही है। इसी कारण वह स्वयं को अभागन मानती है, जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। मीनू की शादी नहीं होने का एक बड़ा कारण देहेज भी है और इस सामाजिक कुप्रथा के लिए वह कदापि दोषी नहीं है।

- 12.** (i) माँ ने अमित के विवाह को लेकर सपने सँजोए थे कि अगर उसका विवाह हो जाएगा, तो घर में बहू के आने से रौनक बढ़ जाएगी। बहू आने से घर के अन्य सदस्यों के बाहर चले जाने पर उनका अकेलापन खत्म हो जाएगा।  
 (ii) अमित व मायाराम जी के कारखाने के लिए चले जाने एवं मधु के कॉलेज जाने के पश्चात् माँ को अकेलेपन में बहू की कमी विशेष रूप से अखरती थी।  
 (iii) माँ अमित पर विवाह करने के लिए दबाव डालती थीं, क्योंकि माँ ने अमित के विवाह को लेकर कई सपने सँजोए हुए थे। परिवार के सदस्यों के अपने-अपने कार्यों में व्यस्त होने के कारण उन्हें अकेलापन अखरता था। माँ ने कितनी ही बार अमित को विवाह करने के लिए मनाने की कोशिश की थी, लेकिन अमित उनकी बातों को सुनकर उन्हें महत्त्व न देते हुए उन्हें नजरअंदाज (अनसुना) कर जाता था। वह उनकी बातों का जवाब भी नहीं देता था।  
 (iv) 'नया रास्ता' उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य समाज में फैली देहेज की समस्या, उसके दुष्प्रभाव, देहेज लोभियों को कुछ सोचने के लिए विवश करना है।

इसके अतिरिक्त देहेज की व्यथा झेल रही नवयुवतियों को साहस, धैर्य एवं विवेक बनाए रखने की सीख देते हुए उनकी योग्यताओं को उभारना है, जिससे वे आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाकर स्वावलंबी बनें और देहेज लोभियों को अपनी भूल के लिए पछताने पर विवश कर दें।

- 13.** (i) मीनू, अमित से मिलने के लिए अस्पताल जा रही थी, क्योंकि मीनू को नीलिमा से ज्ञात हुआ था कि अमित की तबीयत में ज्यादा सुधार न हो पाने के कारण वह अभी भी अस्पताल में है।  
 (ii) अस्पताल पहुँचने पर मीनू ने देखा कि अमित पलंग पर लेटा हुआ अपनी माँ से बातें कर रहा था। मीनू को अस्पताल आया हुआ देखकर अमित व उसकी माँ दोनों प्रसन्न हो गए।  
 (iii) मीनू अंतर्द्वंद्व की स्थिति में थी कि अमित से मिलने अस्पताल जाना उसके लिए उचित होगा या नहीं। मीनू की अंतरात्मा उसे वापस घर जाने के लिए प्रेरित करती, परंतु उसने आज अमित से मिलने का निश्चय किया था। इस कारण वह स्वयं को दुविधा की स्थिति में महसूस कर रही थी। वह इस बात का फैसला नहीं कर पा रही थी कि उसे अमित से मिलने जाना चाहिए या नहीं।  
 (iv) कचहरी में आज अत्यधिक व्यस्त होने के कारण मीनू बहुत थक गई थी। उसका मन हुआ कि वह जाकर आराम करे, लेकिन अमित से मिलने के लिए जाने का फैसला करने से वह अंतर्द्वंद्व की स्थिति में थी कि वह उससे मिलने जाए या नहीं। एक ओर वह घर जाना चाहती थी, तो वहीं दूसरी ओर अमित से मिलने अस्पताल। इस प्रकार वह दुविधा की स्थिति में कोई निर्णय ले पाती, इससे पहले उसने स्वयं को अस्पताल के सामने खड़ा पाया।

- 14.** (i) अवतरण में घर की छोटी बहू (बेला) को घर के सभी सदस्यों से शिकायत थी, क्योंकि उसे घर की नौकरानी रजवा व अपने प्रति अन्य महिलाओं का व्यवहार पसंद नहीं था। बेला को लगता है कि घर के लोग उसके साथ परायों-सा व्यवहार करते हैं, जिसके कारण उसका घर में मन नहीं लगता, इसीलिए वह अपनी अलग गृहस्थी बसाना चाहती थी।  
 (ii) श्रोता दादा जी का मँझला बेटा कर्मचंद है। वह पितृभक्त, शांत स्वभाव और पिताजी का आज्ञाकारी पुत्र है। कर्मचंद घर की समस्याओं को पिताजी के सम्मुख रखकर उनका समाधान खोजने की कोशिश करता है।  
 (iii) श्रोता अर्थात् कर्मचंद दादा जी को बताता है कि घर का माहौल बिगड़ रहा है, जिसका कारण छोटी बहू का अहंकारी स्वभाव और उसका घर के सदस्यों के साथ समायोजित (तालमेल) न होना है। कर्मचंद बताता है कि छोटी बहू शायद परिवार से अलग रहने का विचार बना रही है, जिसको सुनकर दादाजी ने छोटी बहू की शिकायत का समाधान ढूँढ़ने और समस्या को शीघ्र खत्म करने के संदर्भ में यह वक्तव्य कहा।  
 (iv) 'घाव का नासूर' होने का अर्थ है, ऐसा घाव, जो कभी ठीक न होता हो।  
 अवतरण में इसे घर के सदस्यों के बीच उत्पन्न हुई दूरियों और उनके मध्य के द्वेष-भाव के संदर्भ में प्रयोग किया गया है। दादा जी का मानना है कि छोटी बहू बेला व घर के अन्य सदस्यों के बीच द्वेष-भाव को यदि शुरुआत में ही नहीं सुलझाया गया, तो यह कभी ठीक न होने वाले घाव के समान हो जाएगा, इसलिए इनकी समस्याओं का समाधान करना आवश्यक है।

- 15.** (i) प्रस्तुत कथन में वक्ता दुर्योधन है। जब दुर्योधन मृत्यु के भय से जलाशय में छिप जाता है तो युधिष्ठिर और भीमसेन उस पर हँसते हैं, तब दुर्योधन, युधिष्ठिर से ये कथन उसे कमजोर न समझने के लिए कहता है।  
 (ii) प्रस्तुत कथन वक्ता (दुर्योधन) युधिष्ठिर से कह रहा है। दुर्योधन द्वारा जल में छिपने पर युधिष्ठिर के उपहास करने पर दुर्योधन उसे ललकारते हुए यह कथन उसके उत्तर में कहता है।

- (iii) युद्ध में दुर्योधन के सभी भाई मारे जा चुके थे, सारी सेना का संहार हो चुका था तथा उसकी युद्ध संबंधी सभी कूटनीतियाँ सफल नहीं हुई थीं। भीमसेन ने दुर्योधन को मारने की प्रतिज्ञा ली थी, जिस कारण दुर्योधन अपनी आत्मरक्षा का और कोई उपाय न देखकर स्वयं को महाबली कहने वाला द्रौत वन के सरोवर में घुसकर उसके जल स्तंभ में छिपकर बैठ गया था।
- (iv) भारत भूषण अग्रवाल द्वारा प्रस्तुत एकांकी 'महाभारत की एक साँझ' का शीर्षक अत्यंत प्रासंगिक है। महाभारत के युद्ध में कौरव पक्ष में दुर्योधन के अतिरिक्त सभी लोग मारे जा चुके हैं। दुर्योधन द्वारा अपनी जान बचाने के लिए जलाशय में छिपने पर युधिष्ठिर व भीमसेन उसे बाहर आने के लिए ललकारते हैं, जिसे सुनकर दुर्योधन बाहर आ जाता है, तत्पश्चात् भीमसेन और दुर्योधन के मध्य भीषण युद्ध होता है, जिसमें दुर्योधन घायल अवस्था में युद्ध क्षेत्र में पड़ा है और कहता है "साँझ हो रही है। मेरे जीवन की अंतिम साँझ।" अतः यह शीर्षक उचित है।

- 16.** (i) श्रोता (प्रमोद) ने वक्ता जीवनलाल की बात से अपमानित होकर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि बाबू जी बेटी वाला समझकर आप मेरा अपमान कर रहे हैं, परंतु यह मत भूलिए कि आप भी बेटी वाले हैं अर्थात् यदि आपके साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जाए, तो आपको कैसा लगेगा।
- (ii) श्रोता प्रमोद था। प्रमोद की बहन अर्थात् कमला का सपना था कि वह भी अन्य नव वधुओं की तरह अपने विवाह के पहले सावन का त्योहार अपने मायके में अपनी सखियों के साथ मनाए।
- (iii) "तुम्हारी बहन के सपने कभी पूरे नहीं होंगे।" प्रस्तुत पंक्ति जीवनलाल ने प्रमोद से कही है। जीवनलाल ने यह कथन इसलिए कहा, क्योंकि उसने प्रमोद के समक्ष पाँच हजार रुपये दहेज के रूप में देने की माँग रखी थी और कहा था कि जब तक वह पाँच हजार रुपये नहीं देगा, तब तक वह कमला को विदा अर्थात् मायके ले जाने की अनुमति नहीं देंगे, इसलिए जीवनलाल ने कहा कि तुम्हारी बहन के सपने कभी पूरे नहीं होंगे।
- (iv) वक्ता अर्थात् जीवनलाल ने यह कथन इसलिए कहा, क्योंकि उसने प्रमोद और उसके परिवार पर विवाह में पूरा दहेज न देने का आरोप लगाया। साथ ही प्रमोद के समक्ष प्रस्ताव रखा कि वह दहेज के रूप में पाँच हजार रुपये देकर अपनी बहन के सपनों अर्थात् विवाह के बाद के पहले सावन का त्योहार अपने घर में मनाने की इच्छा को पूरा कर सकते हैं, किंतु यदि वे दहेज देने में असमर्थ होते हैं, तो कमला के सपनों को तोड़ने का पूरा कसूर उन्हीं का होगा, इसलिए वक्ता ने कहा कि उसके सपनों के खून का दाग तुम्हारे हाथों और तुम्हारी माँ के आँचल पर होगा। प्रस्तुत पंक्ति में 'उसके' शब्द 'कमला' के लिए प्रयोग किया गया है।

# ICSE

## प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 3

(हल रहित)

### हिंदी

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 80

- निर्देश 1. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं— 'क' और 'ख'।
- खंड 'क' के सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
  - खंड 'ख' से कोई भी चार प्रश्न करने अनिवार्य हैं, जिनमें दो प्रश्न पाठ्यपुस्तक के होंगे तथा अन्य दो किसी अन्य पुस्तक से होंगे।

### खंड 'क'

[40 अंक]

1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए (15)
- 'ऑनलाइन शॉपिंग का बढ़ता चलन' इसके महत्त्व पर अपने विचार लिखिए।
  - नैतिक मूल्यों का व्यक्ति के जीवन में क्या महत्त्व है? वर्तमान समय में गिरते नैतिक मूल्यों के कारण को समझाइए।
  - किसी ऐसी यात्रा का वर्णन कीजिए, जिसमें आपकी गाड़ी खराब हो गई और आपको एक रात सड़क पर ही बितानी पड़ी।
  - 'दूर के ढोल सुहावने' उक्ति को आधार बनाकर एक मौलिक कहानी लिखिए।
  - प्रस्तुत चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर कोई लेख अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट संबंध चित्र से होना चाहिए।





**2. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए** (7)

- रास्ते में गुम हो गए एयर बैग को एक अपरिचित व्यक्ति द्वारा लौटाने पर धन्यवाद देते हुए पत्र लिखिए।
- बस में गुंडों द्वारा घेर लिए जाने पर एक महिला यात्री की सहायता करने वाले बस-संवाहक के साहस एवं कर्तव्य भावना की प्रशंसा करते हुए परिवहन निगम के प्रमुख प्रबंधक को पत्र लिखिए।

**3. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में ही होने चाहिए।**

राजा उत्तानपाद और सुनीति की संतान ध्रुव, ब्रह्मा का वंशज था। पिता का लाड़-प्यार पाने की इच्छा से उसने जब भी अपने पिता की गोद में बैठना चाहा, तो विमाता सुरुचि ने उसे गोद में बैठने नहीं दिया। अपमानित ध्रुव मन-मसोसकर रह जाता और अपनी माँ के पास जाकर रोता। समस्या बहुत गंभीर थी। शांत-हृदय माँ ने पुत्र को तप करने के लिए प्रेरित किया। तप करने जाते हुए ध्रुव को मार्ग में नारद मिले। उन्होंने कहा, “तुम महज क्रोध में आकर कोई शत्रुतापूर्ण कार्य तो नहीं करने जा रहे हो?” नारद की इस शिक्षा और ध्रुव के निश्चय में कोई विरोध न था। अतः जब नारद जी ने ध्रुव को अपने व्रत पर दृढ़ देखा, तो उन्होंने भी आशीर्वाद दिया और बोले—“पुत्र! तेरी माता ने तुझे जिस मार्ग पर चलने का उपदेश दिया है, वही तेरा कल्याण करने वाला है। तू भगवान की आराधना कर।”

ध्रुव ने सच्चे मन से लीन होकर कठोर तप किया। अंत में उसे ईश्वर के दर्शन हुए। उसका तप सफल हो गया। वह फिर महल में पहुँचा। उसके पिता ने खूब आदर-सत्कार किया और अंत में उसका राजतिलक कर, स्वयं विरक्त होकर वन में चले गए।

राजसिंहासन पर बैठकर ध्रुव प्रजा की भलाई करने लगा, इसी बीच उसका सौतेला भाई उत्तम एक दिन हिमालय की तलहटी में शिकार करने गया। वहाँ यक्षों ने उसकी हत्या कर दी। पीछे से उसकी माता सुरुचि उसे ढूँढ़ने चल दी। वह जंगल की आग में जल मरी।

इस दुःखद घटना से ध्रुव आग-बबूला हो उठा। वह यक्षों से बदला लेने चल दिया। यक्षों की राजधानी अलकापुरी पर उसने हमला किया। यक्ष भी लड़ाकू थे। वे भी छल-बल कौशल से ध्रुव पर हर प्रकार से आक्रमण करने लगे। दोनों ओर से घमासान युद्ध हुआ। ध्रुव के आगे यक्षों की एक न चली और अंत में उन्होंने घुटने टेक दिए। सारा रणक्षेत्र शवों से पट गया। सारी युद्ध-भूमि जीवित यक्ष योद्धाओं से खाली हो गई। ध्रुव का क्रोध इतने पर भी शांत न हुआ, उसने अलकापुरी को अपने तीरों का निशाना बना दिया। निर्दोष यक्ष काल के गाल में जाने लगे।

अब तक युद्ध योद्धाओं के बीच था, किंतु जब निरपराध यक्ष मारे जाने लगे, तब ध्रुव के दादा महाराज मनु तुरंत वहाँ पहुँचे और उन्होंने ध्रुव को इस मार-काट को बंद करने के लिए विवश किया। उन्होंने ध्रुव से कहा, “पुत्र, जिस क्रोध के आवेश में आकर तुमने इतने निर्दोष यक्षों को मारा है, इस क्रोध को अब शांत करो। क्रोध पतन का द्वार है।”

मनु ने पोते ध्रुव को न सिर्फ उपदेश ही दिया, बल्कि यक्षों के अध्यक्ष कुबेर से क्षमा-याचना के लिए भी ध्रुव से आग्रह किया। दादाजी के सत्परामर्श से ध्रुव का विवेक जाग्रत हुआ, उसने तुरंत अपनी गलती महसूस की और कुबेर से क्षमा याचना की। क्रोध से क्रोध बढ़ता है और प्रेम से प्रेम। ध्रुव को आत्मग्लानि से भरा देख कुबेर ने उसे हृदय भाव से गले से लगा लिया। इस प्रकार यह शत्रुता खत्म हुई और ध्रुव अपने राज्य को लौट गया।

- ध्रुव तप करने के लिए क्यों गया था? तप के बाद उसकी स्थिति में क्या परिवर्तन आया? (2)
- क्रोध के विरुद्ध उसे किस-किस ने और कब-कब सलाह दी? (2)
- ध्रुव ने यक्षों पर हमला क्यों किया? युद्ध का क्या परिणाम हुआ? (2)
- महाराज मनु ध्रुव के पास कब आए? उन्होंने ध्रुव को क्या समझाया? (2)
- महाराज मनु के परामर्श का ध्रुव पर क्या असर हुआ? (2)

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए**

- निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार शब्दों के विलोम लिखिए (1)  
धर्म, तृप्त, न्यून, साक्षर, सगुण, शांत
- निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए (1)  
खग, चतुर

- (iii) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक मुहावरे की सहायता से वाक्य बनाइए (1)  
इधर-उधर करना, अक्ल चरने जाना।
- (iv) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार शब्दों को शुद्ध कीजिए (1)  
शिर्षक, समिक्षा, पितांबर, कालीदास, हानी, पूर्ती
- (v) निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए (4)
- (क) यह वही छात्र है, जिसने प्रथम स्थान प्राप्त किया था।  
(सरल वाक्य बनाइए)
- (ख) मगरमच्छ पानी में तैर रहा है।  
(वाक्य में लिंग बदलिए)
- (ग) माला ने गाना गाया।  
(कर्मवाच्य में परिवर्तित कीजिए)
- (घ) मैंने खाना खाया।  
(वर्तमान काल में परिवर्तित कीजिए)

## खंड 'ख'

[40 अंक]

### साहित्य सागर-संक्षिप्त कहानियाँ

#### 5. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

“हम क्या जानें महाराज! हमारे तो आप ही ‘माई-बाप’ हैं। हम तो कोई और सरकार नहीं जानते। आपका दिया खाते हैं, आपके गुण गाते हैं।”

- (i) वन प्रदेश में किसके शासन पर खतरा बना हुआ था और क्यों? (2)
- (ii) प्रस्तुत पंक्तियों में ‘आपका’ शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है तथा यह भी बताइए कि कौन किसका दिया खाता था? (2)
- (iii) किसके मुख पर चिंता के बादल छाए हुए थे और क्यों? (3)
- (iv) ‘भेड़ें और भेड़िए’ कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? (3)

#### 6. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

“अजी, ये पहाड़ी बड़े शैतान होते हैं। बच्चे-बच्चे में अवगुण छिपे रहते हैं, आप भी क्या अजीब हैं, उठा लाए कहीं से-लो जी यह नौकर लो।”

- (i) लड़का अपना घर छोड़ नैनीताल क्यों आया था? (2)
- (ii) अपने मित्र के विषय में लड़के ने क्या बताया? (2)
- (iii) लेखक का मित्र बच्चे को वकील साहब के पास क्यों लाया? वकील साहब की वेशभूषा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (3)
- (iv) प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (3)

#### 7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

उसकी आँखें खुल गई थीं। हाथ जोड़कर बोला, “हुजूर यह मेरा पहला अपराध है। इस बार माफ कर दीजिए। फिर गलती न होगी।” शेख साहब न्यायप्रिय आदमी थे। उन्होंने रसीला को छः महीने की सजा सुना दी और रुमाल से मुँह पोंछा।

- (i) रसीला ने क्या गुनाह किया था? उसका मुकदमा किसके सामने पेश हुआ? (2)
- (ii) रसीला चाहता तो झूठ बोल सकता था, लेकिन उसने सच क्यों बोला? (2)
- (iii) रसीला को उसके द्वारा किए गए अपराध की क्या सजा मिली? (3)
- (iv) शेख साहब का व्यक्तित्व कैसा था? स्पष्ट कीजिए। (3)

## साहित्य सागर-पद्य भाग

### 8. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

जब तक मनुज-मनुज का यह  
सुख भाग नहीं सम होगा  
शमित न होगा कोलाहल  
संघर्ष नहीं कम होगा।

- (i) कवि ने समाज में रहने वाले सभी प्राणियों में कौन-से भाव के विद्यमान होने की बात कही है? (2)
- (ii) 'सम' शब्द का अर्थ बताते हुए यह बताइए कि 'सुख भाग नहीं सम होगा' ऐसा क्यों कहा गया है? (2)
- (iii) संघर्ष के कम न होने की बात क्यों कही गई है? (3)
- (iv) प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव लिखिए। (3)

### 9. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

भूख से सूख होंठ जब जाते,  
दाता-भाग्य, विधाता से क्या पाते?  
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।

- (i) 'होंठ' किसके और क्यों सूख गए हैं? (2)
- (ii) भिक्षुक के साथ और कौन-कौन हैं? उनकी दशा कैसी है? (2)
- (iii) आँसुओं का घूँट पीकर कौन और क्यों रह जाता है? (3)
- (iv) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

### 10. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

चंदा हूँ ते अति सुंदर तोहि, नवल दुलहिया ब्यैहाँ

- (i) बाल श्रीकृष्ण की जिद पर माता यशोदा क्या कह रही हैं? (2)
- (ii) माता यशोदा ने बाल कृष्ण के कान में क्या कहा? (2)
- (iii) माता यशोदा की बात सुनकर श्रीकृष्ण ने क्या किया? (3)
- (iv) कवि सूरदास जी के जीवन के विषय में बताते हुए उनका साहित्यिक परिचय दीजिए। (3)

## नया रास्ता

### 11. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

जिस समय भी माँ या पिताजी का कोई पत्र उसके पास आता, उस समय उसका हृदय व्याकुल हो उठता। उसे घर जाने की बेचैनी होने लगती, परंतु माँ सदैव उसे अपने पत्र में यही शिक्षा देती थी कि उसे लगन से पढ़कर अपने पाँव पर खड़ा होना है।

- (i) किसका हृदय व्याकुल हो उठता था और कब? (2)
- (ii) पत्र कौन भेजता था और उसमें क्या लिखा होता था? (2)
- (iii) पाँव पर खड़े होने से क्या तात्पर्य है? माँ सदैव मीनू को यह शिक्षा क्यों देती थी? (3)
- (iv) पत्र पढ़कर मीनू की क्या मनःस्थिति होती और क्यों? (3)

### 12. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

सारी रात माँ उसी के पास बैठी रही। सुबह जब उसकी आँखें खुलीं, तो माँ के चेहरे पर सारी रात जागने की थकान स्पष्ट दिखाई दे रही थी, परंतु उस समय तक मीनू का ज्वर उतर चुका था। इस बात का उन्हें संतोष था।

- (i) माँ सारी रात किसके समीप बैठी रही? (2)
- (ii) आँखें खुलने पर वक्ता ने क्या पाया? (2)
- (iii) माँ की आँखों में आँसू क्यों आए थे और उन्होंने क्या किया? (3)
- (iv) माँ को किस बात का संतोष था और क्यों? (3)

**13. निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर उनके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

कैसी ज़ालिम है ये दुनिया! सब कुछ पैसा ही है इस दुनिया में, इंसान की इंसानियत, शर्म, लज्जा कुछ भी तो नहीं रही है। पिताजी के मन में अंतर्द्वंद्व चल रहा था।

- (i) अवतरण में उपरोक्त वाक्य किस संदर्भ में कहे गए हैं? स्पष्ट कीजिए। (2)
- (ii) पिताजी के मन में किस तरह का अंतर्द्वंद्व चल रहा था? (2)
- (iii) पिताजी के घर पहुँचने पर लोगों की क्या प्रतिक्रिया हुई? (3)
- (iv) मीनू ने किस प्रकार अपने साहस का परिचय दिया? (3)

**एकांकी संचय****14. निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

कुँवर का रूठना भी मुझे अच्छा लगता है। मना लूँगी। नाच-गान, दीप-दान। इसी से चित्तौड़ की रक्षा होगी। चित्तौड़ में यह बहुत हो चुका, बहुत हो चुका और अब तो बनवीर का राज्य है।

- (i) वक्ता कौन है और कुँवर क्यों रूठ गए थे? (2)
- (ii) वक्ता का कुँवर से क्या संबंध था? कुँवर का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (2)
- (iii) “नाच-गान, दीप-दान! इसी से चित्तौड़ की रक्षा होगी?” इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि वक्ता ने यह क्यों कहा? (3)
- (iv) “अब तो बनवीर का राज्य है।” वक्ता ने ऐसा क्यों कहा? (3)

**15. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

किंतु मैं तो शृंखला को तोड़ने जा रहा हूँ। दो जातियों में जानी दुश्मनी पैदा करने जा रहा हूँ।

- (i) प्रस्तुत अवतरण में वक्ता व श्रोता कौन हैं तथा श्रोता अपने गीत के माध्यम से क्या संदेश दे रही थी? (2)
- (ii) “मैं तो शृंखला को तोड़ने जा रहा हूँ” कथन में ‘मैं’ शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है तथा वह शृंखला को तोड़ने की बात क्यों कर रहा है? (2)
- (iii) प्रस्तुत अवतरण में किन दो जातियों की बात की गई है तथा वक्ता उनमें दुश्मनी क्यों पैदा करना चाहता है? (3)
- (iv) प्रस्तुत एकांकी के शीर्षक का औचित्य स्पष्ट कीजिए। (3)

**16. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

वह किसी को कुछ गिनती ही नहीं। हम तो उसके लिए मूर्ख, गँवार और असभ्य हैं।

- (i) प्रस्तुत कथन किसने, किससे कहा? संदर्भ सहित स्पष्ट कीजिए। (2)
- (ii) प्रस्तुत अवतरण में ‘वह’ सर्वनाम किसके द्वारा किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? तथा श्रोता की भूमिका यहाँ कौन निभा रहा है? (2)
- (iii) इंदु ने मिसरानी (रजवा) की किस प्रकार तरफदारी की? (3)
- (iv) मूर्ख, गँवार और असभ्य कौन हैं? वक्ता ने इनका क्यों और किस संदर्भ में प्रयोग किया है? (3)

# ICSE

## प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 4

(हल रहित)

### हिंदी

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 80

- निर्देश 1. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं— 'क' और 'ख'।
- खंड 'क' के सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
  - खंड 'ख' से कोई भी चार प्रश्न करने अनिवार्य हैं, जिनमें दो प्रश्न पाठ्यपुस्तक के होंगे तथा अन्य दो किसी अन्य पुस्तक से होंगे।

### खंड 'क'

[40 अंक]

1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए (15)
- सामाजिक परिवर्तन में समाचार-पत्रों की क्या भूमिका है? समाचार पत्रों में महत्त्व एवं उपयोगिता पर अपने विचार लिखिए।
  - शिष्टाचार वाले व्यक्ति जीवन के हर पहलू में सकारात्मक सोच रखते हैं। सफलता के लिए शिष्टाचार का महत्त्व स्पष्ट करते हुए समझाइए।
  - किसी ऐसी यात्रा का वर्णन कीजिए, जिसमें आप अपने मित्रों के साथ जा रहे हों और आपकी ट्रेन (गाड़ी) छूट जाए।
  - “आ बैल मुझे मार” इस उक्ति के आधार पर एक मौलिक कहानी लिखिए।
  - प्रस्तुत चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर कोई लेख अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट संबंध चित्र से होना चाहिए।



**2. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए** (7)

- (i) मोटर साइकिल चोरी होने की सूचना देने तथा उसे वापस दिलाने का आग्रह करते हुए संबंधित थाना प्रभारी को पत्र लिखिए।  
(ii) आपका मित्र धूम्रपान करता है। इस व्यसन के दोषों का उल्लेख करते हुए पत्र लिखकर उसे इससे मुक्त होने की सलाह दीजिए।

**3. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में ही होने चाहिए**

उशीनर पुत्र हरिभक्त महाराज शिवि, बड़े ही दयालु और शरणागत वत्सल थे। एक समय राजा शिवि एक महान् यज्ञ कर रहे थे। इतने में भयाक्रांत एक कबूतर राजा के पास आया और उनकी गोद में छिप गया। उसके पीछे उड़ता हुआ एक विशाल बाज़ वहाँ आया और वह मनुष्य की-सी भाषा में उदार हृदय राजा से बोला—“हे राजन! पृथ्वी के धर्मात्मा राजाओं में आप सर्वश्रेष्ठ हैं, पर आज आप धर्म से विरुद्ध कर्म करने की इच्छा कैसे कर रहे हैं? मैं भूख से व्याकुल हूँ। मुझे यह कबूतर भोजन के रूप में मिला है, आप इस कबूतर के लिए अपना धर्म क्यों छोड़ रहे हैं?” राजा शिवि ने उत्तर देते हुए कहा—“मैं यह भयभीत कबूतर तुम्हें नहीं दे सकता, क्योंकि तुमसे डरकर यह कबूतर अपने प्राणों की रक्षा के लिए मेरे समीप आया है और जो मनुष्य शरणागत की रक्षा नहीं करते या लोभ, द्वेष अथवा भय से उसे त्याग देते हैं, उनकी सज्जन निंदा करते हैं। भय में पड़े हुए जीवों की रक्षा करने से बढ़कर दूसरा कोई धर्म नहीं है। हे बाज़! तुम आहार चाहते हो, मैं तुम्हारे दुःख का भी नाश चाहता हूँ। अतः तुम मुझसे कबूतर के बदले में चाहे जितना और आहार माँग लो।” बाज़ सोच-विचारकर बोला—“हे राजन! यदि इस कबूतर पर आपका इतना ही प्रेम है, तो इस कबूतर के ठीक बराबर का तोलकर आप अपना मांस मुझे दे दीजिए।”

राजा शिवि ने एक तराजू मँगवाया और उसके एक पलड़े में कबूतर को बैठाकर दूसरे में वे अपना मांस काट-काटकर रखने लगे और उसे कबूतर के साथ तोलने लगे। कबूतर के प्राणों की रक्षा के लिए और बाज़ की भूख के निवारण के लिए महाराज शिवि अपने शरीर का मांस स्वयं प्रसन्नतापूर्वक काट-काटकर दे रहे थे। अपने सुखभोग की इच्छा को त्यागकर सबके सुख में सुखी होने वाले सज्जन ही दूसरों के दुःख में सदा दुःखी हुआ करते हैं। धन्य है त्याग का आदर्श!

तराजू में कबूतर का वजन मांस से बढ़ता गया। राजा ने संपूर्ण शरीर का मांस काटकर रख दिया, परंतु कबूतर का पलड़ा भारी ही रहा, तब राजा स्वयं तराजू पर चढ़ गए। राजा शिवि के तराजू में चढ़ते ही नभ से पुष्पवृष्टि होने लगी। इतने में वह बाज़ और कबूतर अंतर्ध्यान हो गए और उनके बदले में दो दिव्य देवता प्रकट हो गए। दोनों देवता इंद्र और अग्नि थे। इंद्र ने कहा—“राजन! तुम्हारा कल्याण हो। मैं इंद्र हूँ और जो कबूतर बना था, वह अग्नि है। हम लोग तुम्हारी परीक्षा लेने आए थे, तुमने जैसा दुष्कर कार्य किया है, वैसा आज तक किसी ने नहीं किया। यह सारा संसार मोह-माया में बँधा हुआ है, पर तुम जगत के दुःखों से छूटने के लिए करुणा से बँध गए हो। तुमने बड़ों से ईर्ष्या नहीं की, छोटों का कभी अपमान नहीं किया और बराबर वालों के साथ कभी स्पर्द्धा नहीं की, इससे तुम संसार में सर्वश्रेष्ठ हो। संसार में तुम्हारे सदृश अपने सुख की इच्छारहित, एकमात्र परोपकार की बुद्धि वाले साधु केवल जगत के हित के लिए ही पृथ्वी पर जन्म लेते हैं।

तुम दिव्य रूप धारण कर चिरकाल तक पृथ्वी का पालन कर अंत में भगवान के ब्रह्मलोक में जाओगे।” इतना कहकर इंद्र और अग्नि स्वर्ग को चले गए। राजा शिवि यज्ञ पूर्ण करने के बाद बहुत दिनों तक पृथ्वी पर राज करके संसार में दुर्लभ परम-पद को प्राप्त हुए। सत्य है, अपना पेट भरने के लिए तो पशु भी जीते हैं, किंतु प्रशंसा के योग्य जीवन तो उन लोगों का है, जो दूसरों के लिए जीते हैं। विधाता ने आकाश में जल से भरे बादलों को और धरती पर फल से भरे वृक्षों को परोपकार के लिए ही रचा है। दुःख में डूबे हुए प्राणियों के दुःख का नाश ही सबसे बड़ा धर्म है। बड़े-बड़े यज्ञों का फल समय पर क्षय होता है, पर भयभीत प्राणी को दिए गए अभयदान का कभी क्षय नहीं होता।

- (i) कबूतर को शरण देना बाज़ ने अधर्म का कार्य क्यों बताया? (2)  
(ii) महाराज शिवि ने बाज़ को कबूतर देने से मना क्यों किया? (2)  
(iii) कबूतर के बराबर मांस तोलने का उद्देश्य होते हुए भी महाराज शिवि तराजू के पलड़े पर स्वयं क्यों चढ़े? (2)  
(iv) महाराज शिवि के तराजू के पलड़े पर चढ़ते ही कौन-सी विचित्र घटना घटित हुई? (2)  
(v) बाज़ और कबूतर के रूप में कौन-से देवता थे? महाराज शिवि को किसने और क्यों संसार में सर्वश्रेष्ठ बताया? (2)

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए**

- (i) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार शब्दों के विलोम लिखिए (1)  
जड़, जल, निद्रा, जीत, जंगम, ज्ञान



- (ii) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए (1)  
हाथी, हिमालय
- (iii) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक मुहावरे की सहायता से वाक्य बनाइए (1)  
झाड़ मारना, टाँग अड़ाना
- (iv) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार शब्दों को शुद्ध कीजिए (1)  
संकर, देस, भीष्म, विसम, कलस, दृष्य
- (v) निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए (4)
- (क) सच बोलने वाले व्यक्ति को कोई नहीं डरा सकता।  
(मिश्र वाक्य बनाइए)
- (ख) अध्यापक छात्रों को पढ़ा रहा है।  
(वाक्य में लिंग बदलिए)
- (ग) मैं बैठ नहीं सकता।  
(भाववाच्य में परिवर्तित कीजिए)
- (घ) लता गीत गाएगी।  
(भूतकाल में परिवर्तित कीजिए)

## खंड 'ख'

[40 अंक]

### साहित्य सागर-संक्षिप्त कहानियाँ

5. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए
- 'सब दिन न होत एक समान' अकस्मात् दिन फिरे और सेठ को गरीबी का मुँह देखना पड़ा। संगी-साथियों ने भी मुँह फेर लिया और नौबत यहाँ तक आ गई कि सेठ व सेठानी भूखे मरने लगे।
- (i) सेठ का परिचय संक्षेप में दीजिए। (2)
- (ii) 'सब दिन न होत एक समान' से आप क्या समझते हैं? (2)
- (iii) सेठ व सेठानी की पहले स्थिति कैसी थी? गरीबी के दिनों में सेठ व सेठानी को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा? (3)
- (iv) 'महायज्ञ का पुरस्कार' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए (3)
6. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए
- “पर जिस स्त्री की मान-प्रतिष्ठा का मैं ईश्वर के दरबार में उत्तरदाता हूँ, उसके प्रति ऐसा घोर अन्याय और पशुवत् व्यवहार असह्य है।”
- (i) बेनीमाधव के यह कहने पर कि “स्त्रियाँ घर का नाश कर देती हैं, उन्हें सिर चढ़ाना अच्छा नहीं है”- पंक्ति का श्रीकंठ क्या उत्तर देते हैं? (2)
- (ii) वक्ता के लिए कौन-सी बात असह्य थी तथा क्यों? (2)
- (iii) वक्ता ईश्वर के दरबार में किस बात के लिए उत्तरदाता है, क्यों? (3)
- (iv) प्रस्तुत कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? (3)
7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए
- यद्यपि बुद्धिमान गुरुजनों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गई है, परंतु असत्य के आवरण में सत्य बहुत समय तक छिपा न रह सका। आस-पास के अबोध बालकों के मुँह से ही वह प्रकट हो गया।
- (i) काकी को दाह-संस्कार के लिए ले जाते देखकर श्यामू की स्थिति कैसी थी? (2)
- (ii) श्यामू को कौन विश्वास दिला रहा था और कैसे? (2)
- (iii) “असत्य के आवरण में सत्य बहुत समय तक छिपा न रह सका।” प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (3)
- (iv) अबोध बालकों ने श्यामू को किस सत्य से अवगत करवाया? बालकों द्वारा सत्य से अवगत करवाना क्या दर्शाता है? (3)

## साहित्य सागर-पद्य भाग

### 8. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

ऐसो को उदार जग माहीं।

बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं॥

- (i) कवि ने किसकी महिमा का बखान करते हुए उन्हें उदार चित्त वाला बताया है और क्यों? (2)
- (ii) संसार में किसके समान कोई और नहीं है और क्यों? (2)
- (iii) "बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं"—इस पंक्ति से कवि का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)
- (iv) प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव लिखिए। (3)

### 9. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

लाठी में गुण बहुत हैं, सदा राखिए संग।

गहरि नदी, नारी जहाँ, तहाँ बचावै अंग।

- (i) कवि का नाम बताते हुए प्रथम पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (2)
- (ii) लाठी हमें किस-किस से बचाती है व कुत्ते से किस प्रकार रक्षा करती है? (2)
- (iii) "बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं" (3)
- (iv) गिरिधर कविराय लोगों को संबोधित करते हुए क्या कहते हैं? (3)

### 10. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

सुनाई पड़ता है कल-गान मिला दूँ मैं भी अपनी तान।

शीघ्रता करो मुझे ले चलो, मातृ मंदिर में हे भगवान॥

- (i) कवयित्री मंदिर की ओर आकर्षित क्यों होती है? (2)
- (ii) कवयित्री संदेहपूर्ण अवस्था में क्यों है? (2)
- (iii) कवयित्री को कहाँ जाने की जल्दी है? वे अपनी तान किससे मिलाना चाहती है और क्यों? (3)
- (iv) कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन के विषय में बताते हुए उनका साहित्यिक परिचय दीजिए। (3)

## नया रास्ता

### 11. निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

यह बात सुनकर सामने बैठी मीनू का चेहरा मुरझा गया। मीनू के मुरझाए चेहरे को देखकर माँ उसकी मनःस्थिति समझ गई और बुआ जी से बोलीं, "आजकल कौन मानता है इन सब बातों को। मीनू ही करेगी सारी रस्में।" यह कहकर माँ पूजा का थाल सजाने लगीं।

- (i) मीनू का चेहरा क्यों मुरझाया हुआ था? (2)
- (ii) माँ क्या समझ गई थी? (2)
- (iii) माँ ने बुआ जी को क्या कहा और क्यों? (3)
- (iv) मीनू को रस्म करते समय किन-किन स्थितियों का सामना करना पड़ा? (3)

### 12. निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

वैसे हमारे यहाँ शादी के बाद तो दावत होती नहीं है। पहले ही मढ़े पर सब बिरादरी वालों और जान-पहचान वालों को खाना खिला देते हैं।

- (i) वक्ता कौन है? वह किसके प्रश्न का जवाब दे रही है? (2)
- (ii) वक्ता और श्रोता किसके विवाह के बारे में बातें कर रहे हैं? (2)
- (iii) वक्ता और श्रोता विवाह के लिए क्या योजनाएँ बना रहे थे? (3)
- (iv) वक्ता और श्रोता प्रीतिभोज के संबंध में क्या-क्या बातें कर रहे थे? (3)

**13. निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर उनके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

नीलिमा का नाम सुनते ही वह खुशी से झूम उठी और अपनी प्रिय सखी से मिलने के लिए बेचैन हो गई। इस समय माँ घर में नहीं थी। पड़ोस में किसी के घर गई थी, इसलिए इस समय उसका जाना संभव न था।

- (i) कौन खुशी से झूम उठा था और क्यों? (2)
- (ii) नीलिमा कहाँ से आई थी और उसके आने की सूचना किसने दी? (2)
- (iii) “खुशी से झूम उठी।” प्रस्तुत पंक्ति से क्या अभिप्राय है? अवतरण में यह पंक्ति किस संदर्भ में प्रयुक्त हुई है? (3)
- (iv) किसका कहाँ जाना संभव नहीं था और क्यों? (3)

**एकांकी संचय****14. निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

हाय रे मिथ्याभिमानी! अब भी दया का ढोंग नहीं छोड़ा। पर युधिष्ठिर! तनिक अपनी ओर तो देखो। पश्चाताप तो तुम्हें होना चाहिए। मैं क्यों पश्चाताप करूँगा? मैंने ऐसा कौन-सा पाप किया है? मैंने अपने मन के भावों को गुप्त नहीं रखा, मैंने षड्यंत्र नहीं किया, मैंने गुरुजनों का वध नहीं किया।

- (i) वक्ता कौन है? उसकी चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (2)
- (ii) वक्ता किस षड्यंत्र की बात कर रहा है? (2)
- (iii) वक्ता ने क्यों कहा कि मैंने गुरुजनों का वध नहीं किया? (3)
- (iv) वक्ता ने मिथ्याभिमानी किसको कहा और क्यों? (3)

**15. निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

पागल मत बनो, कमला रोओ मत, मैं कहता हूँ! रोओ मत, इन मोतियों का मूल्य समझने वाला यहाँ कोई नहीं है। पानी से पत्थर नहीं पिघल सकता।

- (i) ‘मैं कहता हूँ! रोओ मत’ कथन में ‘मैं’ शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है तथा उसने ऐसा क्यों कहा? (2)
- (ii) वक्ता एवं कमला के बीच क्या संबंध है? वक्ता कहाँ आया हुआ था? (2)
- (iii) वक्ता ने क्यों कहा कि “पानी से पत्थर नहीं पिघल सकता।” (3)
- (iv) प्रस्तुत एकांकी के शीर्षक का औचित्य स्पष्ट कीजिए। (3)

**16. निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

चेतन से अचेतन अधिक शक्तिशाली है। उसमें अधिक आकर्षण है। इसलिए तुम एक-दूसरे के प्रति खिंचे। चाहे वह प्रेम था, घृणा थी, पर असल बात रक्त के खिंचाव की थी, वह होकर रही।

- (i) उपरोक्त गद्यांश में वक्ता कौन है? ‘वक्ता’ का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (2)
- (ii) “असल बात रक्त के खिंचाव की थी।” वक्ता ने यह क्यों कहा? (2)
- (iii) वक्ता किस प्रकार के बंधन से मुक्त नहीं हो पाया? इस एकांकी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? (3)
- (iv) “चेतन से अचेतन अधिक शक्तिशाली है।” पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)

# ICSE

## प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 5

(हल रहित)

### हिंदी

समय : 3 घंटे

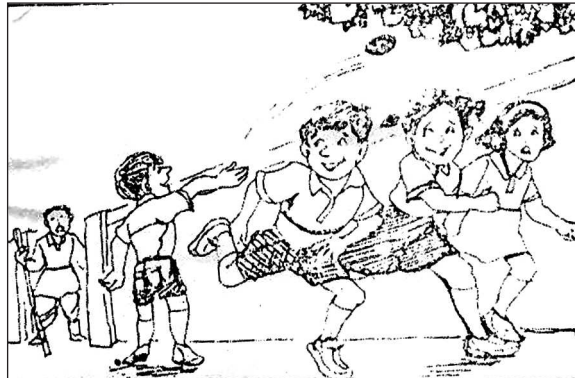
पूर्णांक : 80

- निर्देश 1. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं—‘क’ और ‘ख’।
- खंड ‘क’ के सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
  - खंड ‘ख’ से कोई भी चार प्रश्न करने अनिवार्य हैं, जिनमें दो प्रश्न पाठ्यपुस्तक के होंगे तथा अन्य दो किसी अन्य पुस्तक से होंगे।

### खंड ‘क’

[40 अंक]

1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए (15)
- अंधविश्वास वर्तमान युग की समस्या है। यह हमारे समाज में बढ़ता ही जा रहा है। यह किस प्रकार हमारे देश व समाज के लिए घातक है? अपने विचार लिखिए।
  - जीवन में अध्यापक का क्या महत्त्व है? अध्यापक बनने के लिए आप अपने द्वारा किन गुणों का होना आवश्यक समझते हैं? विचारों द्वारा समझाइए।
  - आपके द्वारा की गई किसी पर्वतीय यात्रा का वर्णन कीजिए।
  - “परहित सरिस धरम नहीं भाई” उक्ति को आधार बनाकर एक कहानी लिखिए।
  - प्रस्तुत चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर लेख अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट संबंध चित्र से होना चाहिए।



**2. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए** (7)

- (i) अपनी छोटी बहन को पत्र लिखिए, जिसमें विद्यालय के वार्षिकोत्सव का वर्णन किया गया हो।  
(ii) किसी महत्वपूर्ण पत्र के प्राप्त न होने की शिकायत करते हुए अपने क्षेत्र के पोस्ट मास्टर को पत्र लिखिए।

**3. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में ही होने चाहिए।**

एक कुएँ में एक मेंढक रहता था। एक बार समुद्र का एक मेंढक कुएँ में आ पहुँचा, तो कुएँ के मेंढक ने उसका हालचाल, अता-पता पूछा। जब उसे ज्ञात हुआ कि वह मेंढक समुद्र में रहता है और समुद्र बहुत बड़ा होता है, तो उसने अपने कुएँ के पानी में एक छोटा-सा चक्कर लगाकर उस समुद्र के मेंढक से पूछा कि क्या समुद्र इतना बड़ा होता है? कुएँ के मेंढक ने तो कभी समुद्र देखा ही नहीं था। समुद्र के मेंढक ने उसे बताया कि इससे भी बड़ा होता है। कुएँ का मेंढक चक्कर बड़ा करता गया और अंत में उसने कुएँ की दीवार के सहारे-सहारे आखिरी चक्कर लगाकर पूछा—“क्या इतना बड़ा है तेरा समुद्र?” इस पर समुद्र के मेंढक ने कहा—“इससे भी बहुत बड़ा।” उसने कह दिया—“जा तू झूठ बोलता है। कुएँ से बड़ा कुछ होता ही नहीं। समुद्र भी कुछ नहीं होता है, तू बकता है।”

कुएँ में मेंढक वाली कथा इस प्रसंग में चरितार्थ होती है कि जितना अध्ययन होगा, उतना ही अपने अज्ञान का आभास होगा। आज जीवन में पग-पग पर हमें ऐसे कुएँ के मेंढक मिल जाएँगे, जो केवल यही मानकर बैठे हैं कि जितना वे जानते हैं, उसी का नाम ज्ञान है, उसके इधर-उधर और बाहर कुछ भी ज्ञान नहीं है, लेकिन सत्य तो यह है कि सागर की भाँति ज्ञान की भी कोई सीमा नहीं है। अपने ज्ञानी होने के अज्ञानमय भ्रम को यदि तोड़ना हो, तो अधिक-से-अधिक अध्ययन करना आवश्यक है। जितना अधिक अध्ययन किया जाएगा, भ्रम टूटेगा और ऐसा आभास होगा कि अभी तो बहुत कुछ जानना और पढ़ना शेष है।

अध्ययन के विभाग भी तो अनेक हैं। विज्ञान, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, धर्म, दर्शन, साहित्य आदि ऐसे विभाग हैं, जिनके एक भी उपविभाग में व्यक्ति संपूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता, तो अनंत विभागों में संपूर्ण होने का प्रश्न ही कहाँ उठता है। हाँ, इतना अवश्य निश्चित है कि अधिकाधिक अध्ययन करते रहने से एक मानसिक परितोष, आनंद और शांति अवश्य प्राप्त होती है। उसके आगे और अध्ययन करने की जिज्ञासा भी उत्पन्न होती है। अधिक अध्ययन करने से मनुष्य के हृदय की संकीर्णता समाप्त हो जाती है तथा उसका दृष्टिकोण उदार होता जाता है। सतत अध्ययनशीलता और दृष्टि की उदारता शनैः शनैः व्यक्ति को पूर्णता और पवित्रता की ओर ले जाती है।

सतत अध्ययन एक ओर नई दिशाएँ देता है, तो दूसरी ओर पुरानी मान्यताएँ दूर कर नई स्वस्थ मान्यताओं की स्थापना में भी सहायक होता है। उदाहरणार्थ, भारत में बैठकर हम पश्चिमी अथवा अन्य किसी समाज व राष्ट्र की सभ्यता की निंदा करते रहते हैं, लेकिन जब उसी सभ्यता को स्वयं आँखों से देखते हैं अथवा उसके विषय में विस्तार से पढ़ते हैं, अध्ययन करते हैं, तो हमारी मान्यताएँ बदल भी जाती हैं। सतत अध्ययन मनुष्य की आंतरिक सत्प्रवृत्तियों को विकसित करता है, शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति द्वारा, मनुष्य की पाशविक प्रवृत्तियों को दूर कर उसे शुद्ध और पवित्र बनाता है; मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्यता की प्राप्ति कराता है।

- (i) कुएँ के मेंढक को क्रोध कब और क्यों आया? (2)  
(ii) अपने ज्ञानी होने के भ्रम को कैसे तोड़ा जा सकता है? (2)  
(iii) अधिकाधिक अध्ययन से क्या लाभ होते हैं? (2)  
(iv) पुरानी मान्यताएँ कैसे दूर हो सकती हैं? (2)  
(v) सच्चे अर्थों में मनुष्यता की प्राप्ति कब संभव होती है? (2)

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए**

- (i) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार शब्दों के विलोम लिखिए (1)  
आशा, मूर्ख, स्वतंत्र, पाप, स्वर्ग, नया  
(ii) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए (1)  
वृक्ष, पत्थर

- (iii) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक मुहावरे की सहायता से वाक्य बनाइए (1)  
खरी-खोटी सुनाना, खून का प्यासा
- (iv) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार शब्दों को शुद्ध कीजिए (1)  
निशुल्क, छीण, छय, नछत्र, वीना, प्रनाम
- (v) निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए (4)
- (क) अध्यापक के बाहर जाते ही बच्चे शोर मचाने लगे।  
(संयुक्त वाक्य बनाइए)
- (ख) लड़का गाना गाता है।  
(वाक्य में लिंग बदलिए)
- (ग) अध्यापक ने हमें आज नया पाठ पढ़ाया।  
(कर्मवाच्य में परिवर्तित कीजिए)
- (घ) सितार बज रहा था।  
(भविष्यकाल में परिवर्तित कीजिए)

## खंड 'ख'

[40 अंक]

### साहित्य सागर-संक्षिप्त कहानियाँ

#### 5. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

“मैंने स्वीकार कर लिया। ऑफिस में बैठा रहा। थोड़ी देर में भीतर से एक पुरुष के साथ एक सुंदर स्त्री निकली और मैं समझ गया कि मुझे इन्हीं लोगों के साथ जाना होगा।”

- (i) ब्रजकिशोर बाबू कौन थे? (2)
- (ii) मोहन व मनोरमा कौन थे और वे किसके घर आए थे और क्यों? (2)
- (iii) “मैंने स्वीकार कर लिया।” यह किसने कहा व इसमें क्या स्वीकार करने की बात छिपी है? (3)
- (iv) ‘संदेह’ कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? (3)

#### 6. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

दूसरे दिन भी फाइल चलती रही। शाम को जवाब आ गया। हम इस मामले को हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट के हवाले कर रहे हैं, क्योंकि यह एक फलदार पेड़ का मामला है और एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट अनाज और खेती-बाड़ी के मामलों में फैसला करने का हकदार है।

- (i) सुपरिंटेंडेंट ने आकर लोगों को क्या बताया? (2)
- (ii) व्यापार विभाग के गुस्से का क्या कारण था? (2)
- (iii) ‘एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट’ किस मामले में फैसला देने का हकदार था तथा फाइल हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट के हवाले क्यों कर दी गई? (3)
- (iv) प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (3)

#### 7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

“क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है या आजाद हिंद फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही?”

- (i) प्रस्तुत पंक्ति कौन, किससे पूछ रहा है? (2)
- (ii) वक्ता का परिचय दीजिए। (2)
- (iii) श्रोता चश्मेवाले के लिए क्या टिप्पणी करता है? श्रोता की टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया दीजिए। (3)
- (iv) सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे? (3)



## साहित्य सागर-पद्य भाग

### 8. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

जन्मे जहाँ थे रघुपति, जन्मी जहाँ थी सीता,  
श्रीकृष्ण ने सुनाई, वंशी पुनीत गीता।

- (i) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने कौन-कौन से महापुरुषों के विषय में बताया है? गीता का ज्ञान किसने किसको दिया? (2)
- (ii) जग को दया किसने और किस प्रकार दिखाई? (2)
- (iii) रघुपति राम तथा श्रीकृष्ण जी के महान् कार्यों का वर्णन कीजिए। (3)
- (iv) प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव लिखिए। (3)

### 9. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर हिंदी में लिखिए

क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी,  
क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की

- (i) 'क्षितिज' का अर्थ स्पष्ट कीजिए। मेघों के आने से क्षितिज कैसा दिखाई दे रहा था? (2)
- (ii) जब मेघों का मिलन धरती से हुआ तो क्या हुआ? (2)
- (iii) "क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की"—पंक्ति से कवि का क्या तात्पर्य है? (3)
- (iv) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के जीवन के विषय में बताते हुए उनका साहित्यिक परिचय लिखिए। (3)

### 10. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

प्रत्येक पग पर कुछ-न-कुछ  
रोड़ा अटकता ही रहा  
पर हो निराश क्यों मुझे?  
जीवन इसी का नाम है।  
चलना हमारा काम है।

- (i) कवि पूर्णता की तलाश में दर-दर क्यों भटकता रहा? (2)
- (ii) "प्रत्येक पग पर कुछ-न-कुछ रोड़ा अटकता ही रहा" प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं? (2)
- (iii) "जीवन इसी का नाम है।" ऐसा क्यों कहा गया है? (3)
- (iv) प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है? (3)

## नया रास्ता

### 11. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

अमित के नेत्रों में आँसू देखकर मीनू का दिल भी भर आया। वह भाव-विभोर होकर बोली, "अमित, भाग्य ने हमारे साथ धोखा किया है। इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है और जहाँ तक क्षमा करने की बात है, जब तुमने कोई अपराध किया ही नहीं, तो क्षमा किस बात की।"

- (i) अमित किस बात के लिए क्षमा माँग रहा था? (2)
- (ii) मीनू का दिल क्यों भर आया था? (2)
- (iii) प्रस्तुत अवतरण का वक्ता तथा श्रोता कौन है तथा वे किस संदर्भ में बात कर रहे हैं? स्पष्ट कीजिए। (3)
- (iv) मीनू ने क्यों कहा कि इसमें तुम्हारा भी कोई दोष नहीं है? स्पष्ट कीजिए। (3)

### 12. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

उसकी ये सब बातें सुनकर दयाराम जी कुछ सोच-विचार में पड़ गए। कुछ क्षण बाद वे बोले, "मीनू बेटी, दुनियादारी के लिए भी बहुत कुछ करना पड़ता है। बिना सजावट के आजकल शादी में रौनक कहाँ आती है?"

- (i) पैसों की बर्बादी किसे पसंद नहीं थी? स्पष्ट कीजिए। (2)

- (ii) किसकी बातें सुनकर दयाराम जी सोच-विचार में पड़ गए व क्यों? (2)
- (iii) "दुनियादारी के लिए भी बहुत कुछ करना पड़ता है" प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि यह किसने, किससे और क्यों कहा था? (3)
- (iv) "बिना सजावट के आजकल शादी में सौनक कहाँ आती है।" प्रस्तुत अवतरण में ऐसा क्यों कहा गया है? स्पष्ट कीजिए। (3)

### 13. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

मीनू ने सोचा कि यदि मौसी से थोड़ी देर बात की गई, तो वे कुछ-न-कुछ और ऐसी बात कह देंगी, जो उसके दिल को पीड़ा पहुँचाएगी।

- (i) दो दिन की छुट्टियाँ देखकर मीनू ने क्या निश्चय किया और क्यों? (2)
- (ii) राजो की प्रसन्नता का क्या कारण था? (2)
- (iii) "कुछ भी हो, जब तक अपने घर का कोई न रहता हो तब तक क्या?" प्रस्तुत पंक्ति किसने, किससे व क्यों कही? (3)
- (iv) मौसी की कौन-सी बात मीनू के हृदय में चुभ गई? उसके बाद मीनू ने क्या किया? (3)

## एकांकी संचय

### 14. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

इस पर पूर्णरूप से अपना प्रभुत्व जमाए, उस महान् वट की भाँति अटल खड़े हैं, जिसकी लंबी-लंबी डालियाँ। उनके आँगन में एक बड़े छाते की भाँति धरती को आच्छादित किए हुए, अगणित घोंसलों को अपने पत्तों में छिपाए, वर्षों से तूफान और आँधियों का सामना किए जा रही हैं।

- (i) अवतरण में किसके संबंध में बात हो रही है? इससे उनके व्यक्तित्व की किस चारित्रिक विशेषता का पता चलता है? (2)
- (ii) उपरोक्त अवतरण में 'वट' की तुलना किससे की गई है और क्यों? (2)
- (iii) "पूर्णरूप से अपना प्रभुत्व जमाए" प्रस्तुत पंक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि किसने और किस प्रकार अपना प्रभुत्व जमाए रखा? (3)
- (iv) वक्ता कौन है? वक्ता की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (3)

### 15. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

महल में धाय माँ अरावली पहाड़ बनकर बैठ गई हैं। अरावली पहाड़ (हँसती है) तो तुम लोग बेरिस नदी बनकर बहो न! खूब नाचो गाओ। यों आज कोई उत्सव का दिन नहीं था, फिर भी उन्होंने कहा मेरे बनवाए हुए मयूर पक्ष कुंड में दीप-दान करो।

- (i) वक्ता कौन है? उसकी चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (2)
- (ii) "तो तुम लोग बेरिस नदी बनकर बहो न" प्रस्तुत पंक्ति में 'तुम' शब्द किसके लिए और किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है? (2)
- (iii) किसने पन्ना धाय की तुलना अरावली पहाड़ से की और क्यों? (3)
- (iv) प्रस्तुत एकांकी के शीर्षक का औचित्य स्पष्ट कीजिए। (3)

### 16. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

प्रत्येक राजपूत को अपनी ताकत पर नाज़ है। इतने बड़े दंभ को मेवाड़ अपने प्राणों में आश्रय न दे, इसी में उनका कल्याण है। रह गई बात एक माला में गूँथने की, सो वह माला तो बनी है। हाँ, माला को तोड़ने का श्रीगणेश हो गया है।

- (i) अवतरण का श्रोता कौन है? वह कहाँ आया हुआ है? (2)
- (ii) वक्ता ने क्यों कहा प्रत्येक राजपूत को अपनी ताकत पर नाज़ है? (2)
- (iii) "उस माला को तोड़ने का श्रीगणेश हो गया है।" प्रस्तुत पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (3)
- (iv) वक्ता कौन है? वक्ता ने क्यों कहा कि इतने बड़े दंभ को मेवाड़ अपने प्राणों में आश्रय न दे? (3)



# नमूना प्रश्न-पत्र



# ICSE

## नमूना प्रश्न-पत्र

हिंदी

ICSE की परीक्षा के लिए नमूना प्रश्न-पत्र

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 80

निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं—‘क’ और ‘ख’।
2. खंड ‘क’ के सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. खंड ‘ख’ से कोई भी चार प्रश्न करने अनिवार्य हैं, जिनमें दो प्रश्न पाठ्यपुस्तक के होंगे तथा अन्य दो किसी अन्य पुस्तक से होंगे।

### खंड ‘क’

[40 अंक]

1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए (15)

- (i) प्रदूषण वर्तमान युग की सबसे बड़ी समस्या है। इसके कारण एवं निदान पर अपने विचार लिखिए।
- (ii) सदाचारी व्यक्ति जीवन के हर पहलू में सकारात्मक सोच रखते हैं। मानव जीवन में सदाचार का महत्त्व स्पष्ट करते हुए समझाइए।
- (iii) किसी ऐसी यात्रा का वर्णन कीजिए जब आपको एक रात स्टेशन पर बितानी पड़ी।
- (iv) “वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे” उक्ति को आधार बनाकर एक कहानी लिखिए।
- (v) प्रस्तुत चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर कोई लेख अथवा कहानी लिखिए जिसका सीधा व स्पष्ट संबंध चित्र से होना चाहिए।



2. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए (7)

- (i) अस्वस्थ दादा जी के स्वास्थ्य की जानकारी लेने के लिए दादी जी को पत्र लिखिए।
- (ii) रेलवे कर्मचारी के दुर्यवहार की शिकायत करते हुए स्टेशन मास्टर को पत्र लिखिए।

**3. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए**

अंतरिक्ष यात्री नियुक्त होने के दो वर्ष पश्चात् ही 1996 में कल्पना के जीवन में यह अवसर आया जबकि उन्हें अंतरिक्ष-यान कोलंबिया के अठारह दिवसीय अंतरिक्ष अभियान का सदस्य चुना गया। इस तरह वे अंतरिक्ष भ्रमण करने वाली पहली भारतीय महिला बन गईं। बाद में उन्होंने अंतरिक्ष के अपने अनुभवों के बारे में कहा है—“मैं यान की खिड़की से ही अपनी धरती पर हो रहे दिन और रात वाले भागों को निहारती रहती। महाद्वीप और महासागर धीरे-धीरे घूमते होते और धरती अपने सौंदर्य की मनोहारी छटा बिखेरती होती। मैं यह देखकर हैरत में पड़ जाती कि सिर्फ 60 मिनट में हमारा यान धरती की परिक्रमा कर लेता है—सिर्फ 60 मिनट, मैं सोचती कि हमारा ग्रह वास्तव में कितना लघु, कितना क्षण-भंगुर है।”

कल्पना चावला को अंतरिक्ष यात्रा का दूसरा अवसर 17 जनवरी, 2003 को मिला, जबकि वे सोलह दिवसीय अभियान के लिए एक बार फिर कोलंबिया-यान में अपने छः सहयोगियों समेत सवार हुईं, किंतु इस बार कोलंबिया की वापसी यात्रा सुरक्षित न रह सकी। कल्पना समेत छः अंतरिक्ष यात्री दुर्घटना के शिकार होकर काल-कवलित हो गए।

आज कल्पना चावला नहीं हैं, लेकिन अपने पीछे ये दृढ़ निश्चय और कठिन परिश्रम के द्वारा असंभव को संभव बनाने वाली विस्मयकारी विरासत छोड़ गई हैं।

आसमान की ऊँचाइयों को नापते हुए भी कल्पना ने अपनी जड़ों की विस्मृति नहीं की। वे अपने शहर व अपने स्कूल ‘टैगोर बाल निकेतन’ के संपर्क में जीवनभर बनी रहीं। उन्हीं के प्रयासों का फल है कि प्रतिवर्ष उनके स्कूल से दो छात्राओं को नासा अपने यहाँ आमंत्रित करता है। कल्पना भारतीय युवाओं विशेषकर लड़कियों के लिए प्रेरणा का प्रकाश-स्तंभ हैं।

- (i) कल्पना चावला किस विद्यालय में पढ़ती थीं? उनकी वजह से आज विद्यालय को क्या सौभाग्य प्राप्त है? (2)
- (ii) कल्पना चावला को प्रथम बार अंतरिक्ष अभियान का सदस्य कब चुना गया? यान की खिड़की से वे क्या निहारा करती थीं? (2)
- (iii) अंतरिक्ष-यान कितने मिनट में पृथ्वी की परिक्रमा पूरी कर लेता है? उसे देखकर कल्पना अपने मन में क्या विचार करती थीं? (2)
- (iv) कल्पना को दूसरी यात्रा का अवसर कब मिला और वापसी में क्या घटना घटी? (2)
- (v) कल्पना चावला के जीवन से नवयुवतियों को क्या शिक्षा मिलती है? (2)

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए**

- (i) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार शब्दों के विलोम लिखिए (1)  
अस्त, उपकार, एकमुखी, साकार, बाहरी, ऊँचा
- (ii) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए (1)  
अग्नि, मंदिर
- (iii) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक मुहावरे की सहायता से वाक्य बनाइए (1)  
आँखों का तारा, कमर कसना
- (iv) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार शब्दों को शुद्ध कीजिए (1)  
परिक्षा, क्योँकी, शांती, उजज्वल, अतीरिक्त, समूद्री
- (v) निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए (4)
  - (क) रामचंद्र जी का आदेश था इसलिए लक्ष्मण को जाना था। (सरल वाक्य बनाइए)
  - (ख) बालक गुड़ों से खेल रहा है। (वाक्य में लिंग बदलिए)
  - (ग) राम गेंद से खेलता है। (कर्मवाच्य में परिवर्तित कीजिए)
  - (घ) मोहन कल विद्यालय गया था। (भविष्यकाल में परिवर्तित कीजिए)



## खंड 'ख'

[40 अंक]

## गद्य संकलन

## साहित्य सागर-संक्षिप्त कहानियाँ

## 5. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

“सामने वृक्षों का एक कुंज और कुआँ देखकर सेठ ने विचार किया कि थोड़ी देर रुककर भोजन और विश्राम कर लेना चाहिए। यह सोचकर वे कुंज की ओर बढ़े।”

महायज्ञ का पुरस्कार—यशपाल

- सेठजी कहाँ जा रहे थे तथा क्यों? (2)
- उन्हें विश्राम करने की आवश्यकता क्यों पड़ी? उन्होंने कहाँ विश्राम किया? (2)
- उनकी पोटली में क्या-क्या था? क्या वे भोजन और विश्राम कर पाए? (3)
- ‘महायज्ञ का पुरस्कार’ कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? (3)

## 6. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

“तीसरे दिन हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट से जवाब आ गया। बड़ा कड़ा जवाब था और व्यंग्यपूर्ण।

जामुन का पेड़—कृष्ण चंदर

- हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट से क्या जवाब आया और क्यों? (2)
- जवाब को सुनकर मनचले युवक ने क्या जवाब दिया और क्यों? (2)
- दबा हुआ आदमी कौन था और उसने क्या आपत्ति प्रकट की? (3)
- प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (3)

## 7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

“पर जिस स्त्री की मान-प्रतिष्ठा का मैं ईश्वर के दरबार में उत्तरदाता हूँ, उसके प्रति ऐसा घोर अन्याय और पशुवत व्यवहार असह्य है।”

बड़े घर की बेटी—प्रेमचंद

- प्रस्तुत कथन किसने किससे कहा है? (2)
- वक्ता के लिए कौन-सी बात असह्य थी तथा क्यों? (2)
- वक्ता ईश्वर के दरबार में किस बात के लिए उत्तरदाता है और क्यों? (3)
- वक्ता के प्रस्तुत कथन से उसके चरित्र की किन-किन विशेषताओं का पता चलता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (3)

## साहित्य सागर-पद्य भाग

## 8. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

“झरने अनेक झरते जिनकी पहाड़ियों में  
चिड़िया चहक रही हैं हो मस्त झाड़ियों में”

वह जन्मभूमि मेरी—सोहनलाल द्विवेदी

- जन्मभूमि किसे कहते हैं? यह हमें क्या देती है? (2)
- कवि ने जन्मभूमि को अन्य किन-किन नामों से पुकारा है? (2)
- कवि ने मातृभूमि की विशेषताएँ किस प्रकार प्रकट की हैं? (3)
- प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव लिखिए। (3)

## 9. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

“सुख दुःख हमारी ही तरह  
किसको नहीं सहना पड़ा”

चलना हमारा काम है—शिवमंगल सिंह ‘सुमन’

- कवि ने हमें क्या करने की प्रेरणा दी है और क्यों? (2)
- व्यक्ति को कब तक विश्राम नहीं करना चाहिए और क्यों? (2)

- (iii) हमें हमेशा कौन-सी बातें याद रखनी चाहिए और क्यों? (3)
- (iv) घोर दुःख में भी हमें क्यों नहीं यह कहना चाहिए कि विधाता हमारे विपरीत है? (3)

**10. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

“मेरे लाल को आउ निंदरिया,  
काहे न आनि सुलावै”।

सूर के पद-सूरदास

- (i) यहाँ सूरदास जी ने यशोदा के किस प्रयास का वर्णन किया है? (2)
- (ii) यहाँ कवि ने श्रीकृष्ण की किन-किन क्रियाओं का रोचक चित्र प्रस्तुत किया है? (2)
- (iii) प्रस्तुत पद में कवि सूरदास जी ने किस सुख की चर्चा की है तथा उस अनुभव की प्राप्ति किसे हो रही है? (3)
- (iv) कवि सूरदास जी के जीवन के विषय में बताते हुए उनका साहित्यिक परिचय दीजिए। (3)

**नया रास्ता (सुषमा अग्रवाल)**

**11. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

“दूसरे दिन प्रातः होते ही दयाराम जी के घर में मेहमानों के स्वागत के लिए विभिन्न प्रकार की तैयारियाँ हो गई थीं। घर की सारी चीज़ें झाड़ू-पोंछ कर यथास्थान लगा दी गई थीं।”

- (i) प्रस्तुत पंक्तियों में कौन किसके घर आ रहा है? (2)
- (ii) आने वाले मेहमान को विशेष महत्त्व क्यों दिया जा रहा है? (2)
- (iii) विभिन्न प्रकार की तैयारियाँ विशिष्ट संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। (3)
- (iv) आने वाले मेहमान से परिवार के लोगों को क्या उम्मीद है? (3)

**12. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

“यह कैसी विचित्र घड़ी होती है। माता-पिता जिस बेटी का लालन-पालन इतने वर्षों तक लाड़-प्यार से करते हैं, उसी बेटी को सदा के लिए दूसरों के हाथों में सौंप देते हैं।”

- (i) यहाँ विचित्र घड़ी से क्या उद्देश्य है? (2)
- (ii) ‘बेटी पराया धन होती है’ का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (2)
- (iii) वर्षों के प्यार-दुलार के बाद लड़की को बिछुड़ना क्यों पड़ता है? (3)
- (iv) प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (3)

**13. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

“वह समझ नहीं पा रही थी कि हमारे समाज में स्त्री और पुरुष में इतना भेद क्यों? यदि कोई लड़का अकेला रहता है, तो समाज उस पर अँगुलियाँ नहीं उठाता।”

- (i) किसकी बातें सुनकर वक्ता इतनी परेशान है? (2)
- (ii) समाज में स्त्री व पुरुष में इतना भेद क्यों है? (2)
- (iii) लड़की के जीवन में इतनी कठिनाइयाँ क्यों आती हैं? (3)
- (iv) प्रस्तुत पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए। (3)

**एकांकी संचय**

**14. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

“भविष्य को भी तुम चाहो तो बहका सकते हो युधिष्ठिर। पर दुर्योधन को नहीं बहका सकते, क्योंकि उसने अपने बचपन से लेकर अब तक की एक-एक घड़ी तुम्हारे ईर्ष्या के रथ की गड़गड़ाहट सुनते हुए बिताई है। तुम्हारी तैयारियों ने उसे एक रात भी चैन से सोने नहीं दिया।”

महाभारत की एक साँझ-भारत भूषण अग्रवाल

- (i) कथन के वक्ता का परिचय देते हुए बताइए कि “भविष्य को भी चाहो तो बहका सकते हो” इस पंक्ति का क्या अभिप्राय है? (2)
- (ii) ‘ईर्ष्या के रथ’ से क्या अभिप्राय है? ईर्ष्या किसे होती है? यहाँ इसका उल्लेख क्यों किया जा रहा है? (2)

- (iii) “तुम्हारी तैयारियों ने उसे एक रात भी चैन से सोने नहीं दिया।” यह वाक्य कब कहा गया है तथा दुर्योधन की किस मनःस्थिति को प्रकट करता है? (3)
- (iv) प्रस्तुत कथन की युधिष्ठिर पर क्या प्रतिक्रिया होती है और क्यों? समझाइए। (3)

### 15. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

“हाँ उमा, अतुल मैं ठीक कह रही हूँ, वह नहीं बचेगा। उसे बचाने की शक्ति मुझी में है, केवल मुझी में।”

संस्कार और भावना-विष्णु प्रभाकर

- (i) कथन के वक्ता तथा श्रोता का परिचय दीजिए। (2)
- (ii) प्रस्तुत कथन किसके संबंध में है? उसे क्या हो गया है? वह क्यों नहीं बचेगा? (2)
- (iii) वक्ता यह क्यों कहती है कि सिर्फ वही उसे बचा सकती है? क्या वह उसे बचा पाती है? (3)
- (iv) अतुल माँ से क्या चाहता है? इसके लिए वह माँ को क्या चेतावनी देता है? इस चेतावनी पर माँ की क्या प्रतिक्रिया होती है? (3)

### 16. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

“तुम कभी रात में अकेले नहीं जाओगे। चारों तरफ जहरीले सर्प घूम रहे हैं। किसी समय भी तुम्हें डस सकते हैं।”

दीपदान-डॉ. राम कुमार वर्मा

- (i) वक्ता एवं श्रोता का परिचय देते हुए बताइए कि यहाँ कौन किसको रात में अकेले जाने को मना कर रहा है? (2)
- (ii) “चारों तरफ जहरीले सर्प घूम रहे हैं।”—वक्ता का आशय स्पष्ट कीजिए। (2)
- (iii) वक्ता श्रोता के प्रति हमेशा चिंतित क्यों रहती है? समझाइए। (3)
- (iv) प्रस्तुत एकांकी के शीर्षक का औचित्य स्पष्ट कीजिए। (3)

## व्याख्या सहित उत्तर

### 1. (i) प्रदूषण समस्या

अनेक समस्याएँ ऐसी होती हैं, जो पूरे समाज को प्रभावित करती हैं। इनमें जातिवाद, धर्मवाद, क्षेत्रवाद, अशिक्षा तथा प्रदूषण की समस्या प्रमुख है। ये सभी मानव सभ्यता के लिए खतरा हैं, परंतु प्रदूषण एक ऐसी समस्या है, जो केवल मानवता के लिए ही नहीं, अपितु संपूर्ण प्रकृति के लिए भी खतरा है।

**पर्यावरण प्रदूषण का अर्थ** प्राकृतिक वातावरण तथा वायुमंडल में अवांछित तत्वों का होना (जो मानव तथा जीव-जंतुओं को प्रभावित करे), पर्यावरण प्रदूषण कहलाता है।

प्रदूषण मुख्यतः तीन प्रकार के माने जाते हैं—जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण।

वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है, जिसे मशीनों तथा कल-कारखानों का युग भी कहा जा सकता है। विज्ञान जहाँ एक ओर वरदान बनकर हमारी सोच को विकसित कर रहा है, वहीं अभिशाप बनकर विश्व को महाविनाश की ओर भी ले जा रहा है। जल प्रदूषण का मुख्य कारण कारखानों से निकलने वाला गंदा पानी है, जो समीपस्थ नदियों के माध्यम से समुद्र तक जाता है। इससे संपूर्ण जल भंडार प्रदूषित होकर सिंचाई, वाष्पीकरण आदि के माध्यम से हमारे जीवन को विषैला बना रहा है। वायु प्रदूषण के अंतर्गत अनेक प्रकार के वाहनों, चिमनियों आदि से निकलने वाले विषैले धुएँ, कारखानों से उत्पन्न होने वाली दुर्गंध आदि से साँस संबंधी अनेक बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं। विश्व में कार्बन डाइ-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ती जा रही है। ध्वनि प्रदूषण ध्वनि विस्तारक यंत्रों, औद्योगिक संस्थाओं की मशीनों की घड़घड़ाहट भरी आवाजों, महानगरों में अनेक प्रकार के वाहनों द्वारा विस्तारित किया जाता है। जल, वायु तथा ध्वनि प्रदूषण को रोका जाना चाहिए। इसके लिए 5 जून को ‘विश्व पर्यावरण दिवस’ भी मनाया जाता है, परंतु प्रदूषण में कोई कमी नहीं आती। प्रकृति तथा मानवता को स्वस्थ रखने के लिए प्रदूषण को किसी भी स्थिति में रोकना चाहिए।

### (ii) सदाचार

सदाचार शब्द दो शब्दों के मेल से बना है—सत् + आचार। इसका अर्थ है—अच्छा आचरण। सत्य, अहिंसा, प्रेम, उदारता, सदाशयता आदि सदाचार के कुछ प्रमुख लक्षण हैं। जो व्यक्ति अपने जीवन में इन्हें चरितार्थ करता है, वह सदाचारी कहलाता है। सदाचरण से व्यक्ति अपने जीवन में तो सुख और शांति का अनुभव करता ही है, उससे औरों का भी भला होता है। हर व्यक्ति अपने निजी जीवन में सदाचार के कुछ विशिष्ट नियम या सिद्धांत स्थिर कर सकता है। यह बात स्मरणीय है कि सदाचरण वह है जिससे व्यक्ति के साथ पूरे समाज के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और नैतिकता को प्रश्रय मिले। सदाचार का नैतिकता से गहरा संबंध है।

इन्हें एक-दूसरे का पर्याय कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी। सदाचार का संबंध मनुष्य के मन की भावनाओं और उसके बाहरी आचरण या व्यवहार से भी है। वास्तव में मन की भावनाएँ और बाहरी आचरण एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। शिष्टाचार सदाचार का एक अंग ही नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवहार में तो वह सदाचार का पर्याय ही हो जाता है। देश-काल के अनुसार शिष्टाचार के नियमों में न्यूनाधिक परिवर्तन होते रहते हैं। सदाचार तभी संभव होगा जब मनुष्य संयम, सत्यनिष्ठा, अध्यवसाय, कर्तव्यपरायणता, क्षमाशीलता आदि गुणों का अपने व्यक्तित्व में विकास करे। सार्वजनिक स्थल पर धूम्रपान, किसी व्यक्ति से गाली-गलौज, अपने साथियों से अकड़कर बात करना, राह चलते किसी से बिना वजह झगड़ना इत्यादि अशिष्ट आचरण के उदाहरण हैं। बड़ों का आदर-सम्मान करना, अपने मित्रों एवं सहयोगियों के प्रति सहयोगात्मक रवैया, छोटों के प्रति स्नेह की भावना, सकारात्मक विचारधारा, स्थान-विशेष के अनुकूल व्यवहार इत्यादि शिष्टाचार के उदाहरण हैं। शालीनता एवं विनम्रता शिष्टाचार के ही घटक हैं। कोई व्यक्ति अपने घर पर जिस तरह अपनी इच्छानुसार रहता है, उस तरह से बाहर रहने की अनुमति नहीं दी जा सकती। सार्वजनिक स्थलों पर रहते हुए भी इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि हमारा कोई आचरण अशिष्ट न हो। बस, ट्रेन या किसी गाड़ी में सफ़र करते समय धूम्रपान करना अशिष्टता की ही निशानी है। ऐसा करते वक्त लोग इस बात का ध्यान नहीं रखते कि इससे किसी अन्य यात्री को तकलीफ़ भी हो सकती है।

किसी विद्यालय, महाविद्यालय अथवा कार्यालय में व्यक्ति का व्यवहार संस्थान के नियमों के अनुकूल होना चाहिए। अशिष्ट आचरण युद्ध, झगड़े एवं गलतफहमी का कारण बनता है। अशिष्ट आचरण के परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने उद्देश्य में असफल हो सकता है। यदि दुकानदार अपने ग्राहकों से अशिष्टता करे, तो उसके यहाँ आने वाले ग्राहकों की संख्या निस्संदेह कम होती चली जाएगी और एक दिन ऐसा भी हो सकता है कि उसे अपनी दुकान ही बंद करनी पड़े। यदि विद्यालय में शिक्षक का आचरण सही न हो, तो इसका दुष्प्रभाव छात्रों पर भी पड़ सकता है और ऐसी स्थिति में कोई भी समझदार प्राचार्य या विद्यालय प्रबंधक ऐसे शिक्षक को अपने संस्थान में रहने नहीं देना चाहेगा। इस तरह, यदि कर्मचारी कार्यालय में अपने संस्थान के नियमानुकूल व्यवहार न करे, तो उसे उसकी नौकरी से वंचित किया जा सकता है। शिष्टाचार व्यक्ति को अनुशासन की प्रेरणा देता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अनुशासन के बिना किसी भी समाज में अराजकता का माहौल व्याप्त होना स्वाभाविक है। इसी तरह, एक परिवार के सदस्य यदि अनुशासित न हों, तो उस परिवार का अव्यवस्थित होना स्वाभाविक है। सरकारी कार्यालयों में यदि कर्मचारी अनुशासित न हों, तो वहाँ भ्रष्टाचार का बोलबाला हो जाएगा। अनुशासन न केवल व्यक्तिगत हित, बल्कि सामाजिक हित के दृष्टिकोण से भी अनिवार्य है, किंतु वही मनुष्य अनुशासित रह सकता है, जो शिष्टाचारी हो।

व्यक्ति को शिष्ट आचरण की शिक्षा अपने घर, परिवार, समाज एवं स्कूल से मिलती है। बच्चे का जीवन उसके परिवार से प्रारंभ होता है। यदि परिवार के सदस्य गलत आचरण करते हैं, तो बच्चा भी उसी का अनुसरण करेगा। परिवार के बाद बच्चा अपने समाज एवं स्कूल से सीखता है। यदि उसके साथियों का आचरण खराब होगा, तो उससे उसके भी प्रभावित होने की पूरी संभावना बनी रहेगी। यदि शिक्षक का आचरण गलत है; तो बच्चे कैसे सही हो सकते हैं। इसलिए यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे अनुशासित हों, तो इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने आचरण में सुधार लाकर स्वयं अनुशासित रहते हुए बाल्यकाल से ही बच्चों में अनुशासित रहने की आदत डालें। वही व्यक्ति अपने जीवन में अनुशासित रह सकता है, जिसे बाल्यकाल में ही अनुशासन की शिक्षा दी गई हो। बाल्यकाल में जिन बच्चों पर उनके माता-पिता लाड़-प्यार के कारण नियंत्रण नहीं रख पाते वही, बच्चे आगे चलकर अपने जीवन में कभी सफल नहीं हो पाते। अनुशासन के अभाव में कई प्रकार की बुराइयों समाज में अपनी जड़ें विकसित कर लेती हैं। छात्रों के नित्य-प्रति होने वाले विरोध-प्रदर्शन, परीक्षा में नकल, शिक्षकों से बदसलूकी अनुशासनहीनता के ही उदाहरण हैं। इसका खामियाज़ा उन्हें बाद में जीवन की असफलताओं के रूप में भुगतना पड़ता है, किंतु जब तक वे समझते हैं, तब तक देर हो चुकी होती है।

### (iii) स्टेशन पर एक रात का वर्णन

मैं और मेरे कुछ मित्रों ने एक दिन वैष्णोदेवी जाने का निर्णय किया। हमने अपनी ऑनलाइन टिकट आरक्षित की। हमारी ट्रेन रात 12 बजे की थी। हम सभी मित्र पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पहुँचे। ट्रेन छूट न जाए, इसलिए हम 8 बजे ही स्टेशन पहुँच गए थे। हम सभी बहुत प्रसन्न थे। एक-एक मिनट का इंतज़ार हमें सदियों की भाँति लग रहा था। हम सभी को बस 12 बजने का इंतज़ार था। स्टेशन पर बहुत भीड़ थी। अनेक प्रकार की खाद्य-सामग्री व स्टेशनरी (पत्र-पत्रिका इत्यादि) की दुकानें व पट्टियाँ लगी हुई थीं। हम सभी ने वहाँ खाद्य-सामग्री व घर से लाए भोजन को मिलकर खाया। 11 : 45 बजे अचानक प्लेटफॉर्म अधिकारी ने लाउडस्पीकर द्वारा सूचना दी कि श्री शक्ति एक्सप्रेस 12 बजे नहीं आ पाएगी। कुछ तकनीकी असुविधा के कारण यह ट्रेन प्रातःकाल 5 बजे आएगी। हम सभी परेशान हो गए कि हम यहाँ स्टेशन पर एक रात कैसे व्यतीत करेंगे। फिर हम सोचने लगे कि किस प्रकार और कैसे पूरी रात व्यतीत की जाएगी। हमने देखा कि सभी यात्री अपनी-अपनी सुविधानुसार सोने के लिए स्थान घेरने लगे। हमने भी एक बेंच को घेर लिया जिस पर हमने अपने-अपने सामान को इकट्ठा कर रख दिया तथा नीचे एक चादर बिछाकर उस पर लेट गए। सभी लोग धीरे-धीरे सोने लगे परंतु हमें नींद ही नहीं आ रही थी। तभी हमने अंत्याक्षरी खेलने का सोचा। हम लोग अंत्याक्षरी खेलते-खेलते कब सुबह हो गई हमें पता भी न चला। हम सभी ने हाथ-मुँह धोए और चाय पी। तभी लाउडस्पीकर से कहा गया कि श्री शक्ति एक्सप्रेस प्लेटफॉर्म नं. 4 पर आने वाली है यह सुनते ही हमने अपना-अपना सामान लिया और प्लेटफॉर्म नं. 4 पर पहुँचे और ट्रेन आ गई थी। हम सभी उसमें चढ़ गए और अपने गंतव्य स्थान के लिए रवाना हुए। इस प्रकार, स्टेशन पर बिताई गई रात हमारे जीवन में अविस्मरणीय बन गई।

## (iv) “वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे”

सृष्टि के प्रारंभ से ही हम दो प्रकार के मानवों से परिचित होते आए हैं, जिनमें प्रथम हैं सत्य और मानवीय गुणों से युक्त मानव और द्वितीय हैं, असत्य मार्गी और राक्षसीय गुणों से युक्त मानव। यह शाश्वत सत्य है कि बुराई पर भलाई की सदा जीत होती है। सत्य के मार्ग पर चलने वाला, गुणी और मानवतावादी दृष्टिकोण रखने वाला मनुष्य सदा श्रेष्ठ होता है। जो इंसान मनुष्यता की भलाई के लिए स्वयं के जीवन को भी झोंक देता है, वह मनुष्य देवता के समान है और वही श्रेष्ठ मानव है। ऐसी ही एक घटना कुछ दिन पहले घटी, जिसने मेरे मन-मस्तिष्क को बहुत ज़्यादा प्रभावित किया है।

पिछले महीने मैं अपने परिवार के साथ मनाली घूमने गया था और बस में हमारे साथ तीस छात्रों का एक समूह भी था, जो अपने दो अध्यापकों के साथ पिकनिक मनाने आया था। हमने दो दिन एक साथ गुज़ारे और विभिन्न दर्शनीय स्थलों के दर्शन किए। तीसरे दिन हम सब एक साथ व्यास नदी के समीप भ्रमण के लिए गए। मेरे पिताजी ने नदी के बीच में जाने से मना कर दिया, परंतु उस समूह के 15 छात्र नदी के बीच में जाकर फोटोग्राफी करने लगे। कुछ समय उपरांत अचानक तीव्र गति से नदी का जल स्तर बढ़ गया। सभी छात्र चिल्लाने लगे। चारों ओर हाहाकार मच गया। छात्र खुद को बचाने के लिए विशाल पत्थर को पकड़े थे। कोई भी छात्रों को बाहर निकालने की हिम्मत न दिखा सका। तभी अचानक दो युवा फरिश्ता बनकर आए और नदी में कूद गए, उन्होंने कठिन संघर्ष करके उन छात्रों को रस्सी द्वारा बाहर निकाला। अब अंतिम छात्र को निकालना शेष था। बचाव करने वाला एक युवा बेहद थक चुका था, किंतु उसने हिम्मत नहीं हारी और उस छात्र को किनारे तक पहुँचा दिया, लेकिन काल के चक्र से वह खुद को न बचा सका। अंतिम लहर की तेज़ गति से वह लहरों में समा गया। अगले दिन उसका शव गोताखोरों को प्राप्त हुआ। वह युवा अपने प्राणों की परवाह किए बिना 15 छात्रों की जान बचा गया। इस पूरे दृश्य ने हम सबकी आँखों को नम कर दिया और न भूलने वाली घटना हमारे मन-मस्तिष्क में कैद हो गई। उस युवा के त्याग ने हमें नमन करने को मजबूर कर दिया और यह कहावत चरितार्थ कर दी कि

“वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे”

- (v) प्रस्तुत चित्र में चिमनियों से निकलने वाले धुएँ को दिखाया गया है। यहाँ पर बहुत सारी चिमनियाँ दिखाई दे रही हैं जिनमें से काला धुआँ निकल रहा है, जो वातावरण को प्रदूषित कर रहा है। चारों ओर भारी मात्रा में कचरा फैला हुआ है, जिसके कारण वायु प्रदूषण हो रहा है। यह चित्र महानगरों में स्थापित कल-कारखानों का है। यहाँ चौबीस घंटे कल-कारखानों से काला तथा जहरीला धुआँ निकलता रहता है, जो स्वच्छ वातावरण में फैलकर उसे प्रदूषित कर रहा है। इसके कारण सभी मनुष्यों को जीवन में अनेक प्रकार की स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, उन्हें अस्वच्छ वातावरण में जीना पड़ रहा है। इस प्रकार, स्वच्छ वायु में साँस लेना दूबर हो गया है। यह समस्या वहाँ अधिक है, जहाँ आबादी अधिक होती है और वृक्षों का अभाव होता है।

प्रदूषण के कारण मानव के स्वस्थ जीवन को खतरा पैदा हो गया है। खुली हवा में लंबी साँस लेने तक को आदमी तरस गया है। अस्वच्छ वायु शरीर में पहुँचकर घातक बीमारियाँ पैदा करती है। पर्यावरण प्रदूषण के कारण न समय पर वर्षा होती है, न सर्दी-गर्मी का चक्र ठीक प्रकार से चलता है। सूखा, बाढ़, ओला आदि प्राकृतिक प्रकोपों का कारण भी प्रदूषण है। प्रदूषण को बढ़ाने में कल-कारखाने, वैज्ञानिक साधनों का अधिकाधिक उपयोग; जैसे— फ्रिज, कूलर, ऊर्जा संयंत्र आदि दोषी हैं। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से मौसम का चक्र बिगड़ा है। घनी आबादी वाले क्षेत्रों में हरियाली न होने से प्रदूषण बढ़ा है। इस प्रकार, प्रदूषण को रोकने तथा उससे बचने के लिए चाहिए कि अधिकाधिक वृक्ष लगाए जाएँ, हरियाली की मात्रा अधिक हो, सड़कों के किनारे घने वृक्ष हों, आबादी वाले क्षेत्र खुले हों, हवादार हों, हरियाली से ओतप्रोत हों। कल-कारखानों को आबादी से दूर रखना चाहिए और उससे निकले प्रदूषित कचरे को नष्ट करने के उपाय सोचने चाहिए।

2. (i) परीक्षा भवन,  
नई दिल्ली।

दिनांक 16.05.20XX

पूज्य दादाजी,  
सादर प्रणाम।

मुझे ज्ञात हुआ कि दादाजी का स्वास्थ्य काफ़ी समय से ठीक नहीं है। मैं उनके स्वास्थ्य को लेकर अत्यंत चिंतित हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि आप दादाजी का पूरा ध्यान रखती होंगी, किंतु फिर भी मैं उनके स्वास्थ्य के विषय में जानना चाहता हूँ। पिछली बार दादाजी का स्वास्थ्य समय पर दवाई न लेने के कारण बिगड़ गया था, क्या अब वे समय पर दवाई लेते हैं? आप उनको समय पर दवाई देना तथा उनके खाने-पीने का भी ध्यान रखना। साथ ही साथ उन्हें कुछ समय खुली हवा में सैर आदि भी करवाना, ताकि वे जल्दी स्वस्थ हो जाएँ। मैं शीघ्र ही आप दोनों से मिलने आऊँगा। आप अधिक चिंता न करें तथा दादाजी को भी हौसला दें। आपके पत्र की प्रतीक्षा में।

दादाजी को मेरा प्रणाम कहिएगा।

आपका पोता

क. ख. ग.

- (ii) सेवा में,  
रेलवे अधिकारी  
रेलवे विभाग,  
दिल्ली।

दिनांक 16.05.20XX

विषय रेलवे कर्मचारी के दुर्व्यवहार की शिकायत संबंधी।

महोदय,

बहुत खेद के साथ मैं अपने क्षेत्र पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के रेलवे कर्मचारी की ओर से हो रही लापरवाही तथा इससे होने वाली परेशानियों की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहती हूँ। कुछ दिन पूर्व मैं रेल द्वारा यात्रा कर रही थी। मेरी सामने वाली सीट पर एक महिला अपने बच्चे के साथ बैठी थी। बच्चे ने खेलते समय सीट पर खाने का सामान गिरा दिया जिससे सीट और उसके आस-पास का स्थान गंदा हो गया। यह देखकर मैंने रेलवे कर्मचारी से उस महिला की सीट साफ करने का अनुरोध किया, किंतु वह रेलवे कर्मचारी एक तो काफ़ी समय के पश्चात् आया जिसके कारण उस महिला को काफ़ी समय तक परेशानी उठानी पड़ी। दूसरा आते ही महिला से अपशब्द कहने लगा। यह देख मुझसे रहा नहीं गया जैसे ही मैंने उस महिला के पक्ष में कुछ बोला वैसे ही वह मेरे साथ भी दुर्व्यवहार करने लगा। मेरे समझाने पर भी वह नहीं माना और न ही सीट को साफ़ किया।

इस तरह की कई घटनाएँ अन्य व्यक्तियों के साथ भी घटित हो चुकी हैं। रेलवे कर्मचारी अपनी मनमानी करते हैं तथा यात्रियों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं।

अतः मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि संबंधित व्यक्ति के विरुद्ध विभागीय कार्यवाही करें, जिससे यात्रियों को असुविधा न हो।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

अनीता शर्मा

3. (i) कल्पना चावला 'टैगोर बाल निकेतन' विद्यालय में पढ़ती थीं। उनकी वजह से आज विद्यालय को यह सौभाग्य प्राप्त है कि प्रतिवर्ष उनके स्कूल से दो छात्रों को नासा अपने यहाँ आमंत्रित करता है।
- (ii) कल्पना चावला को प्रथम बार अंतरिक्ष अभियान का सदस्य अंतरिक्ष यात्री नियुक्त होने के दो वर्ष पश्चात् ही 1996 में [अंतरिक्ष-यान कोलंबिया के अठारह दिवसीय अंतरिक्ष अभियान का सदस्य] चुना गया। यान की खिड़की से वे अपनी धरती पर हो रहे दिन और रात वाले भागों को निहारा करती थीं।
- (iii) अंतरिक्ष-यान 60 मिनट में पृथ्वी की परिक्रमा पूरी कर लेता है। उसे देखकर कल्पना अपने मन में विचार करती है कि हमारा ग्रह वास्तव में कितना लघु, कितना क्षण-भंगुर है।
- (iv) कल्पना को दूसरी यात्रा का अवसर 17 जनवरी, 2003 को मिला और वापसी की यात्रा सुरक्षित न रह सकी। वापसी के समय कल्पना समेत छः अंतरिक्ष यात्री दुर्घटना के शिकार होकर काल-कवलित हो गए।
- (v) कल्पना चावला के जीवन से नवयुवतियों को यह शिक्षा मिलती है कि अपने दृढ़ निश्चय और कठिन परिश्रम के द्वारा असंभव कार्य को भी संभव बनाया जा सकता है। कल्पना भारतीय युवाओं विशेषकर लड़कियों के लिए प्रेरणा का प्रकाश-स्तंभ हैं।

4. (i) शब्द विलोम शब्द शब्द विलोम शब्द
- |        |         |       |         |
|--------|---------|-------|---------|
| अस्त   | उदय     | उपकार | अपकार   |
| एकमुखी | बहुमुखी | साकार | निराकार |
| बाहरी  | भीतरी   | ऊँचा  | नीचा    |
- (ii) शब्द पर्यायवाची शब्द
- |       |                  |
|-------|------------------|
| अग्नि | पावक, आग         |
| मंदिर | देवालय, देवस्थान |
- (iii) आँखों का तारा मोहन अपनी माँ की आँखों का तारा है।  
कमर कसना युद्ध के लिए सभी सैनिकों ने कमर कस ली है।
- (iv) अशुद्ध शुद्ध अशुद्ध शुद्ध
- |          |          |         |         |
|----------|----------|---------|---------|
| परिक्षा  | परीक्षा  | क्योंकि | क्योंकि |
| शांती    | शान्ति   | उज्ज्वल | उज्ज्वल |
| अतिरिक्त | अतिरिक्त | समुद्री | समुद्री |



- (v) (क) रामचंद्र जी के आदेश पर लक्ष्मण जाने लगे। (ख) बालिका गुड़िया से खेल रही है।  
(ग) राम द्वारा गेंद से खेला जाता है। (घ) मोहन कल विद्यालय जाएगा।

5. (i) सेठजी कुंदनपुर नामक नगर में 'धन्ना सेठ' के पास जा रहे थे, क्योंकि अचानक ही ऐसा वक्त आ गया था कि सेठ व सेठानी को गरीबी का मुँह देखना पड़ा। सभी ने उनसे मुँह फेर लिया था। उनके भूखों मरने की नौबत आ गई थी। अतः गरीबी से लड़ने के लिए सेठ एक यज्ञ के पुण्य को बेचने के लिए 'धन्ना सेठ' के पास जा रहे थे।
- (ii) सेठजी ने सुबह उठते ही अपनी यात्रा शुरू कर दी थी। गर्मी के दिन थे और धूप तेज़ होने के कारण उनसे अधिक चला नहीं गया। उनका सारा शरीर पसीने से लथ-पथ हो गया। इसलिए उन्हें विश्राम करने की आवश्यकता पड़ी और उन्होंने वृक्षों के एक कुंज में विश्राम किया।
- (iii) सेठजी को लंबी मंजिल तय करनी थी, इसलिए सेठानी पड़ोस के घर से आटा माँगकर लाई और रास्ते में खाने के लिए चार रोटियाँ बनाकर सेठ को दे दीं। उनकी पोटली में सेठानी द्वारा बनाई गई चार रोटियाँ और लोटा-डोरी थे। वे विश्राम तो कर पाए, किंतु जैसे ही उन्होंने अपनी रोटियाँ निकालीं, तो उनके सामने एक मरियल-सा कुत्ता नज़र आया। सेठ को दया आ गई और अपनी सारी रोटियाँ कुत्ते को खिला दीं, इसलिए वे भोजन नहीं कर पाए।
- (iv) 'महायज्ञ का पुरस्कार' कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हर प्राणी के लिए हमारे मन में प्रेम, करुणा और सहानुभूति की भावना होनी चाहिए और इन्हीं भावनाओं को कर्तव्य मानकर सबकी भलाई करनी चाहिए। यही महायज्ञ है, यही सच्चा यज्ञ होता है, क्योंकि अच्छे कर्म का फल अच्छा ही होता है वही सच्चा पुरस्कार होता है। अतः भूखे कुत्ते को अन्न खिलाकर उस सेठ ने जो पुण्य कमाया था, वह उसे बेचना नहीं चाहता था। सेठ की दृष्टि से यह उसका कर्तव्य था, किंतु जब अपने इसी कर्तव्य के बदले सेठ को ईश्वरीय कृपा के रूप में एक खजाना मिला तब उसे विश्वास हुआ कि यही सच्चा महायज्ञ था।
6. (i) हॉटिकल्चर डिपार्टमेंट ने भी जामुन के पेड़ को काटने की इजाज़त नहीं दी, क्योंकि उनके अनुसार इस समय जब पेड़ लगाओ की स्कीम ऊँचे स्तर पर चल रही थी, तो इस समय पेड़ काटने का सुझाव उचित नहीं लगा और एक ऐसे पेड़ को जिसके फल जनता बड़े चाव से खाती है।
- (ii) 'हॉटिकल्चर डिपार्टमेंट' के जवाब को सुनकर मनचले युवक ने जवाब दिया कि अगर पेड़ नहीं काटा जा सकता, तो पेड़ के नीचे दबे आदमी को काटकर निकाल लिया जाए, क्योंकि पेड़ को काटने की अनुमति कोई भी देने को तैयार नहीं था।
- (iii) दबा हुआ आदमी 'ओस' नाम का एक प्रसिद्ध कवि था। इतना बड़ा कवि पेड़ के नीचे दबा हुआ था, परंतु किसी ने उसे निकालने का प्रयास नहीं किया। वह गुमनामी के अँधेरे में दबा पड़ा था। अतः उसने स्वयं को उस पेड़ के नीचे से शीघ्र ही निकाले जाने की आपत्ति प्रकट की। वह पल-पल मौत के करीब जा रहा था, उसका स्वास्थ्य जवाब दे रहा था। मगर वह जीवन जीने के लिए लड़ रहा था। अतः अब दबे हुए आदमी में और कल तक इंतज़ार करने की हिम्मत नहीं थी।
- (iv) 'जामुन का पेड़' व्यंग्य प्रधान कहानी है। यहाँ जामुन के पेड़ का उदाहरण देते हुए लेखक ने उसी अमानवीयता एवं संवेदनशीलता को दूर करने का संदेश दिया है। कार्यालयी कामकाज में जो औपचारिकता एवं बेकार कार्यप्रणाली है उसे दूर कर देना चाहिए। यहाँ जामुन के पेड़ के नीचे दबे आदमी के जीवन से अधिक महत्त्व उस जामुन के पेड़ को दिया जाता है, जिसमें कभी रसीले जामुन फलते थे। यह हास्यास्पद है। यही सरकार की संवेदनशून्यता है। हमें बेकार की बहस से बचना चाहिए और जीवन में यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। जीवन में सदा मानवीय व्यवहार करना चाहिए।
7. (i) प्रस्तुत कथन श्रीकंठ सिंह ने अपने पिता बेनीमाधव सिंह से कहा।
- (ii) वक्ता अर्थात् श्रीकंठ सिंह हिंदू सभ्यता के पक्षधर थे। हिंदू परिवारों के संयुक्त रूप को स्वीकार करते थे। वे स्त्रियों के प्रति अन्याय को सहन नहीं कर सकते थे। वे अपने जीवन में स्त्रियों की मान-प्रतिष्ठा को विशेष महत्त्व देते थे। अतः स्त्रियों के प्रति होते घोर अन्याय और पशुवत व्यवहार ही उनके लिए असह्य था।
- (iii) वक्ता ईश्वर के दरबार में स्त्री की मान-प्रतिष्ठा का उत्तरदाता है, क्योंकि वह हर परिस्थिति में अपने सिद्धांतों की रक्षा करता है। स्त्रियों पर होते अत्याचार का विरोध करता है तथा स्त्रियों के प्रति होते अत्याचारों का विरोध करते हुए वे अपने सिद्धांतों को प्रकट करने में भी झिझकता नहीं है। वे अपने स्वभाव के अनुसार गाँवों के अन्य परिवारों को भी कलह से बचाता है, उन्हें जोड़ने का प्रयास करते हैं।
- (iv) 'श्रीकंठ सिंह' इस कहानी का प्रमुख पात्र है। वह एक परिश्रमी युवक है। वह पढ़े-लिखे युवकों का प्रतिनिधित्व करता है। उसमें अहं का भाव भी विद्यमान है। वह हिंदू सभ्यता का पक्षधर है। हिंदू परिवारों के संयुक्त रूप को स्वीकार करता है। श्रीकंठ अपने व्यक्तित्व के अनुसार गाँव के अन्य लोगों को समझाने-बुझाने का कार्य भी करता था। वह हर परिस्थिति में अपने सिद्धांतों की रक्षा करता था। स्त्रियों पर अत्याचार का विरोध करते हुए श्रीकंठ अपने सिद्धांतों को प्रकट करने में झिझकता नहीं है। अपने भाई के अत्याचार का विरोध करते हुए अपने पिता से वह कहता है कि "लाल बिहारी को मैं अपना भाई नहीं समझता।" यह उदाहरण श्रीकंठ के सिद्धांतवादी प्रवृत्ति का परिचय देता है।

8. (i) जिस भूमि पर जन्म लिया जाता है, उसे जन्मभूमि कहते हैं। यह हमें नदियाँ, झरने, सागर, पर्वत देती है। धरती अनाज के रूप में सोना उगलती है। अनाज से देश में खुशहाली आती है तथा देश प्रगति करता है।
- (ii) कवि ने जन्मभूमि अर्थात् अपनी मातृभूमि का गौरव गान करते हुए इसे पुण्यभूमि, स्वर्णभूमि, धर्मभूमि, कर्मभूमि, युद्धभूमि तथा बुद्धभूमि आदि अनेक नामों से पुकारा है।
- (iii) कवि ने मातृभूमि की विशेषताएँ प्रकट करते हुए कहा है कि उसके देश में पहाड़ों के बीच अनेक झरने झरते हैं। ये झरने प्राकृतिक सुंदरता में चार चाँद लगा देते हैं। चिड़ियाँ जब चहचहाती हैं, घनी अमराइयों में जब कोयल की आवाज़ गूँजती है तथा जब मलय पर्वत से होकर सुगंधित हवा आती है, तो हमारा तन-मन खिल उठता है। इस प्राकृतिक सौंदर्य से मन झूम उठता है। कवि को गर्व है कि उसका जन्म भारत की भूमि पर हुआ है।
- (iv) प्रस्तुत कविता में कवि ने अपने देश के भौगोलिक, प्राकृतिक तथा आध्यात्मिक रूपों का वर्णन करते हुए इसे अनेक विशेषणों से संबोधित किया है। कवि अपने देश का गौरव-गान करते हुए हिमालय पर्वत, सागर, झरने तथा अमराइयों की प्रशंसा करता है। वह स्वयं को धन्य मानता है कि उसका जन्म उस भूमि पर हुआ है जहाँ राम, कृष्ण और बुद्ध जैसे महापुरुषों का जन्म हुआ।
9. (i) कवि ने हमें जीवन में कर्म-पथ पर आगे बढ़ते हुए समस्याओं का सामना करने की प्रेरणा दी है, क्योंकि कवि कहता है कि यदि कर्म करते हुए कुछ समस्याओं का सामना भी करना पड़े तो घबराना नहीं चाहिए, बल्कि उन समस्याओं का सामना करना चाहिए, तभी हम अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं।
- (ii) व्यक्ति को तब तक विश्राम नहीं करना चाहिए, जब तक वह अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेता, क्योंकि अगर लक्ष्य प्राप्त करने से पूर्व व्यक्ति विश्राम करता रहेगा, तो वह अपने लक्ष्य तक कभी नहीं पहुँच पाएगा। इस तरह वह अपने लक्ष्य से भटक जाएगा।
- (iii) हमें हमेशा यह बात याद रखनी चाहिए कि इस जीवन में कुछ भी पूर्ण नहीं है। मनुष्य कभी कुछ पाता है तो कभी कुछ खोता भी है। कभी उसका जीवन आशा से भरा होता है, कभी निराशा से, कभी वह जीवन में हँसता है, तो कभी रोता है। इसलिए कवि ने जीवन को अपूर्ण कहा है। इस जीवन में सफलता-असफलता तो लगी रहती है। इसलिए व्यक्ति को कर्म-पथ पर आगे बढ़ते रहना चाहिए तथा मार्ग में आने वाली बाधाओं से घबराना नहीं चाहिए, बल्कि डटकर उनका सामना करना चाहिए।
- (iv) घोर दुःख में भी हमें यह नहीं कहना चाहिए कि विधाता हमारे विपरीत है, क्योंकि इस संसार रूपी सागर में कोई मनुष्य ऐसा नहीं है जिसे दुःख न सहना पड़ा हो, जिसके जीवन में कभी तकलीफ़ न आई हो। इसलिए अगर हमारे जीवन में थोड़ा कष्ट है भी तो इसके लिए ईश्वर को जिम्मेदार नहीं मानना चाहिए। अपने जीवन में आने वाले कष्टों के कारण ईश्वर को कोसना नहीं चाहिए।
10. (i) यहाँ सूरदास ने यशोदा के द्वारा श्रीकृष्ण को सुलाने के प्रयास का वर्णन किया है। माता यशोदा विभिन्न प्रयासों के माध्यम से श्रीकृष्ण को सुलाने के लिए कभी उनके पालने को झुलाती हैं, कभी उनके प्रति स्नेह भाव दिखाती हैं, कभी लोरियाँ गाती हैं।
- (ii) यहाँ कवि ने श्रीकृष्ण की विभिन्न क्रियाओं का रोचक चित्र प्रस्तुत किया है। श्रीकृष्ण कभी अपनी आँखों को बंद कर ऐसा दर्शाते हैं कि मानो वे सो गए हों, कभी वे अपने होठ हिलाते हैं। कभी सोने का अभिनय करते हैं, तो दूसरे ही क्षण अपने जगे रहने का आभास कराते हैं।
- (iii) प्रस्तुत पद में कवि सूरदास ने वात्सल्य सुख की चर्चा की है तथा उस सुख की प्राप्ति माता यशोदा को हो रही है। श्रीकृष्ण को सुलाते हुए माता यशोदा को बाल कृष्ण के विविध क्रिया-कलापों को देखकर जो वात्सल्य सुख प्राप्त हो रहा है, उसे सूरदास ने देवताओं-मुनियों के लिए भी दुर्लभ बताया है, क्योंकि श्रीकृष्ण की बाल-सुलभ क्रियाएँ हृदय को परम सुख प्रदान करती हैं, जिसका अनुभव केवल माता यशोदा को हो रहा है।
- (iv) **जीवन परिचय**  
भक्तिकालीन महाकवि सूरदास का जन्म 'रुनकता' नामक ग्राम में 1478 ई. में पंडित रामदास जी के घर हुआ था। पंडित रामदास सारस्वत ब्राह्मण थे। कुछ विद्वान् 'सीही' नामक स्थान को सूरदास का जन्म स्थल मानते हैं। सूरदास जन्म से अंधे थे या नहीं, इस संबंध में भी विद्वानों में मतभेद है। विद्वानों का कहना है कि बाल-मनोवृत्तियों एवं चेष्टाओं का जैसा सूक्ष्म वर्णन सूरदास जी ने किया है, वैसा वर्णन कोई जन्मान्ध व्यक्ति कर ही नहीं सकता, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि वे संभवतः बाद में अंधे हुए होंगे। वे हिंदी भक्त कवियों में शिरोमणि माने जाते हैं।  
सूरदास जी एक बार वल्लभाचार्य जी के दर्शन के लिए मथुरा के गऊघाट आए और उन्हें स्वरचित एक पद गाकर सुनाया, वल्लभाचार्य ने तभी उन्हें अपना शिष्य बना लिया। सूरदास की सच्ची भक्ति और पद रचना की निपुणता देख वल्लभाचार्य ने उन्हें श्रीनाथ मंदिर का कीर्तन भार सौंपा, तभी से वह मंदिर उनका निवास स्थान बन गया। सूरदास जी विवाहित थे तथा विरक्त होने से पहले वे अपने परिवार के साथ ही रहते थे। वल्लभाचार्य जी के संपर्क में आने से पहले सूरदास जी दीनता के पद गाया करते थे तथा बाद में अपने गुरु के कहने पर कृष्णलीला का गान करने लगे। सूरदास जी की मृत्यु 1583 ई. में गोवर्धन के पास 'पारसौली' नामक ग्राम में हुई थी।

**साहित्यिक परिचय**

सूरदास जी महान् काव्यात्मक प्रतिभा से संपन्न कवि थे। कृष्ण भक्ति को ही इन्होंने काव्य का मुख्य विषय बनाया। इन्होंने श्रीकृष्ण के सगुण रूप के प्रति सखा भाव की भक्ति का निरूपण किया है। इन्होंने मानव हृदय की कोमल भावनाओं का प्रभावपूर्ण चित्रण किया है। अपने काव्य में भावात्मक पक्ष और कलात्मक पक्ष दोनों पर इन्होंने अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है।

**कृतियाँ**

भक्त शिरोमणि सूरदास जी ने लगभग सवा लाख पदों की रचना की थी, जिनमें से केवल आठ से दस हजार पद ही प्राप्त हो पाए हैं। 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' के पुस्तकालय में ये रचनाएँ सुरक्षित हैं। पुस्तकालय में सुरक्षित रचनाओं के आधार पर सूरदास जी के ग्रंथों की संख्या 25 मानी जाती है, किंतु इनके तीन ग्रंथ ही उपलब्ध हुए हैं—सूरदास, सूरसारावली, साहित्य लहरी।

1. **सूरसागर** यह सूरदास जी की एकमात्र प्रामाणिक कृति है। यह एक गीतिकाव्य है; जो 'श्रीमद्भागवत' ग्रंथ से प्रभावित है। इनमें कृष्ण की बाल-लीलाओं, गोपी-प्रेम, गोपी-विरह, उद्धव-गोपी संवाद का बड़ा मनोवैज्ञानिक और सरस वर्णन है।
2. **सूरसारावली** यह ग्रन्थ 'सूरसागर' का सारभाग है, जो अभी तक विवादास्पद स्थिति में है, किंतु यह भी सूरदास जी की एक प्रामाणिक कृति है। इसमें 1107 पद हैं।
3. **साहित्य लहरी** साहित्य लहरी में 118 दृष्टकूट पदों का संग्रह है तथा इसमें मुख्य रूप से नायिकाओं एवं अलंकारों की विवेचना की गई है। कहीं-कहीं श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं का वर्णन तथा एक-दो स्थलों पर 'महाभारत' की कथा के अंशों की झलक भी है।

**भाषा-शैली**

सूरदास जी ने अपने पदों में ब्रजभाषा का प्रयोग किया है तथा इनके सभी पद गीतात्मक हैं, जिस कारण इसमें माधुर्य गुण की प्रधानता है। इन्होंने सरल एवं प्रभावपूर्ण शैली का प्रयोग किया है। उनका काव्य मुक्तक शैली पर आधारित है। व्यंग्य वक्रता और वाग्विदग्धता सूर की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। कथा वर्णन में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। दृष्टकूट पदों में कुछ क्लिष्टता अवश्य आ गई है।

**साहित्य में स्थान**

सूरदास जी हिंदी साहित्य के महान् काव्यात्मक प्रतिभासंपन्न कवि थे। इन्होंने श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं और प्रेम-लीलाओं का जो मनोरम चित्रण किया है, वह साहित्य में अद्वितीय है। हिंदी साहित्य में वात्सल्य वर्णन का एकमात्र कवि सूरदास जी को ही माना जाता है साथ ही इन्होंने विरह-वर्णन का भी अपनी रचनाओं में बड़ा ही मनोरम चित्रण किया है।

11. (i) प्रस्तुत पंक्तियों में मायाराम जी अपने बेटे अमित, पत्नी व बेटे के साथ दयाराम जी की बेटे मीनू को देखने उनके घर आ रहे हैं।  
(ii) मीनू को विवाह के लिए लड़के वाले देखने आने वाले थे। इससे पूर्व भी कई बार लड़के वाले मीनू को देखने आए, परंतु उसके छोटे कद व साँवले रंग के कारण नापसंद कर गए थे। मीनू के परिवार वालों को आशा थी कि इस बार मीनू को पसंद कर लिया जाएगा। इसलिए आने वाले मेहमानों को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है।  
(iii) मेरठ वालों ने मीनू का फोटो पसंद कर लिया था, इसलिए वे लोग मीनू को प्रत्यक्ष रूप से देखने के लिए दयाराम जी के घर आने वाले होते हैं। दयाराम जी व परिवार के अन्य सभी लोग उनके आतिथ्य की विभिन्न तैयारियों में संलग्न हो जाते हैं। घर की सभी वस्तुएँ झाड़-पोंछकर यथा-स्थान लगा दी जाती हैं। मेहमानों के लिए बैठक भी एक मध्यम श्रेणी परिवार की क्षमता के अनुसार विशेष रूप से सुसज्जित किया गया था। घर में विभिन्न प्रकार के व्यंजन भी बनवाए गए तथा विभिन्न प्रकार की मिठाइयाँ भी बाज़ार से मँगवाई जाती हैं।  
(iv) मीनू एम. ए. में प्रथम श्रेणी से पास थी। वह घर के सभी घरेलू कामकाज; जैसे-सिलाई, कढ़ाई, बुनाई इत्यादि में भी निपुण थी, परंतु सभी लड़के वाले उसके बाहरी सौंदर्य के कारण उसे नापसंद कर जाते। उसके व्यक्तिगत गुणों को कोई न भाँपता केवल उसके साँवले रंग व छोटा कद होने के कारण कोई उसे पसंद न करता। आज मेरठ वाले मीनू को देखने आने वाले थे, क्योंकि उन्हें उसका फोटो पसंद आ गया था, इसलिए आने वाले मेहमान से परिवार के लोगों को मीनू को पसंद किए जाने की उम्मीद है।
12. (i) मीनू की छोटी बहन आशा का विवाह हो रहा था। जैसे ही उसकी विदाई का समय समीप आया मीनू की माँ का धैर्य का बाँध टूट गया और बेटे की विदाई देखकर वह रो पड़ी। लेखिका ने बेटे की विदाई से स्पष्ट किया है कि जिस बेटे को माता-पिता बचपन से लाड़-प्यार से पालते हैं उसे एक दिन अपने ही हाथों से विदा करना पड़ता है। समाज की इसी विचित्र परंपरा को विचित्र घड़ी कहा गया है।  
(ii) 'बेटे पराया धन होती है' का अर्थ यह है कि समाज में बेटियों को परंपरा से ही पराया धन समझा जाता रहा है। मीनू अपनी माँ की भावातिरेक स्थिति देखकर आहत होकर स्वयं कभी उन्हें छोड़कर न जाने का वादा करती है। तब मीनू को समझाते हुए माँ स्पष्ट करती है कि बेटे तो पराया धन होती हैं और वह अपने घरों में ही अच्छी लगती हैं।

- (iii) प्रत्येक माता-पिता अपनी बेटियों का लालन-पालन बड़े लाड़-प्यार से करते हैं, परंतु विवाह उपरांत उन्हें अपने हाथों से विदा कर देते हैं। पीढ़ियों से चलते आ रहे नियमों के अनुसार बेटियों का विवाह कर दूसरों अर्थात् अपने पति के घर जाना होता है, इसलिए वर्षों के प्यार-दुलार के बाद प्रत्येक लड़की को बिछड़ना पड़ता है।
- (iv) प्रस्तुत उपन्यास एक साँवली-सलोनी लड़की मीनू के जीवन पर आधारित उपन्यास है। उपन्यास की नायिका मीनू है, जिसके जीवन के इर्द-गिर्द संपूर्ण कथा चलती है। उपन्यास में बार-बार मीनू को लड़के वालों के नापसंद किए जाने पर मीनू के जीवन की हताशा व निराशा को प्रस्तुत किया गया है, परंतु वह निराशा आशावादी है। मीनू अपनी कमजोरी को अपनी ताकत बनाती है तथा स्वयं आत्मनिर्भर व स्वावलंबी बनने का निर्णय करती है। वह जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों का डटकर सामना करती है, जो अन्य लड़कियों के लिए एक प्रेरणास्रोत बनती है। यही इस उपन्यास का उद्देश्य है।
- 13.** (i) मीनू पड़ोस की मौसी व पास बैठी महिला की स्त्रियों से संबंधित विचारधारा सुनकर वक्ता (मीनू) परेशान हो जाती है।
- (ii) समाज में स्त्रियों को सदैव हाशिए पर रखा गया है। भारतीय समाज में तो स्त्रियों व पुरुषों की जीवन-शैली ही भिन्न है। पुरुषों के लिए अलग नियम तथा स्त्रियों के लिए अलग नियम बने हुए हैं। जहाँ पुरुषसत्तात्मक समाज होता है, वहाँ स्त्रियों को स्वयं उनके अनुसार जीवन जीने का अधिकार ही नहीं दिया जाता। स्त्रियों के साथ सामाजिक, शारीरिक, मानसिक सभी स्तरों पर भेदभाव विद्यमान है, क्योंकि वर्षों से चली आ रही परंपराओं में स्त्रियों को केवल पुरुषों के आश्रय पर ही जीवित रहना पड़ता है, जिसका आज तक पालन किया जा रहा है। इसी कारण स्त्री व पुरुष में इतना भेद माना जाता है।
- (iii) लड़कियों को उनके बचपन से ही सिखाया जाता है कि वह लड़की है, उन्हें अपनी जीवन-शैली पुरुषों के अनुरूप ही व्यतीत करनी है। पुरुष सत्तात्मक समाज कभी नहीं चाहेगा कि उनका प्रभुत्व कभी कम या नष्ट हो, जिसके फलस्वरूप कोई भी स्त्री यदि अपना जीवन स्वतंत्र रूप से व्यतीत करना चाहती भी है, तो यह समाज उसे व्यंग्यात्मक व कटु बातें कहकर उनका जीना दूभर कर दिया जाता है। जैसे मीनू के स्वावलंबन पर समाज के द्वारा व्यंग्य किए जाते हैं, इसलिए इस पुरुष प्रधान समाज में लड़की के जीवन में इतनी कठिनाइयाँ आती हैं।
- (iv) प्रस्तुत पंक्तियों का भाव यह है कि हमारे समाज में स्त्री और पुरुष में प्रत्येक स्तर पर इतना भेद क्यों है कि कोई भी लड़का अपनी इच्छा से जैसे चाहे वैसे रह सकता है, परंतु कोई लड़की यदि अपनी स्वतंत्रता से जीवन जिए तो उस पर तरह-तरह के कटाक्ष व दोषारोपण किए जाने लगते हैं। लेखिका ने पुरुष प्रधान समाज की कुरीतियों व नियमों के विरुद्ध प्रश्न खड़े किए हैं, जिससे स्त्रियों की अस्मिता व स्वावलंबन का प्रश्न पाठकों के समक्ष रखा गया है।
- 14.** (i) प्रस्तुत अवतरण का वक्ता दुर्योधन है। यहाँ दुर्योधन अपने कुकृत्यों पर पर्दा डालते हुए महाभारत के युद्ध का दोषी युधिष्ठिर को ठहराता है। इसी संदर्भ में युधिष्ठिर अपना पक्ष रखते हैं, परंतु दुर्योधन को उनकी सभी बातें मिथ्या प्रतीत होती हैं। दुर्योधन कहता है कि तुम चाहो तो भविष्य को भी जाल में फँसा लो, लेकिन मुझे नहीं बहका सकते। अतः दुर्योधन स्वयं को सही व युधिष्ठिर को गलत साबित करना चाहता है।
- (ii) जब व्यक्ति का स्वयं के भावों पर कोई अधिकार नहीं रह पाता और वह उसके अधीन हो जाता है तथा ईर्ष्या आदि भाव के रथ पर सवार हो जाता है। ज्वलनशील प्रवृत्ति के लोगों को ईर्ष्या होती है और इस भाव के कारण वह अपना सर्वस्व खो बैठता है। दुर्योधन में बाल्यावस्था से ही ईर्ष्या भाव की प्रवृत्ति घर कर गई थी और इसी कारण अंत में वह सर्वस्व खो चुका था।
- (iii) जब दुर्योधन पराजित होकर पस्त पड़ा था, तब युधिष्ठिर सायंकाल में उसे सात्वना देने हेतु गए थे, परंतु दुर्योधन को युधिष्ठिर की यह भावना छलावा लगी और उसने कहा कि मैंने अपने बचपन से लेकर अब तक की एक-एक घड़ी तुम्हारी ईर्ष्या के रथ की गड़गड़ाहट सुनकर बिताई है। तुम्हारी खुशियों ने मुझे एक रात भी चैन से सोने नहीं दिया। आज जब मैं इस अवस्था में हूँ, तब तो मुझे चैन से मोक्ष प्राप्त करने दो। यहाँ दुर्योधन की ईर्ष्या भाव का प्रकटीकरण हुआ है।
- (iv) प्रस्तुत कथन युधिष्ठिर को क्रुद्ध कर देता है। जब दुर्योधन, युधिष्ठिर को महाभारत के युद्ध का दोषी मानता है तथा उन्हें युद्ध को भीषण बनाने का भागी बताता है, तो युधिष्ठिर कहते हैं कि तुम अपनी सुध-बुध खो बैठे हो, तुम प्रलाप कर रहे हो जो अब निरर्थक है। इसका कोई लाभ नहीं है। तुमने जो पांडवों के साथ छल किया, ये उसी का परिणाम है कि आज तुम पराजित हो। जो पांडव तुमसे तिरस्कृत होकर घर-घर भीख माँगते फिरे, वन-जंगलों की धूल छानते फिरे, जिनका अधिकार तुमने छल से छीना। इन सभी कुकृत्यों के पश्चात् तुम्हारी बातों पर कोई विश्वास नहीं करेगा।
- 15.** (i) कथन में वक्ता 'माँ' है, जो इस एकांकी की मुख्य पात्र है। वह रूढ़िवादी विचारों से जकड़ी हुई एक वृद्ध महिला है। गद्यांश में श्रोता 'अतुल' है, जो माँ का छोटा बेटा है। वह आधुनिक विचारों वाला, रूढ़िवादी तथा परंपराशील विचारों के विरुद्ध मुखर होकर बोलने वाला पुरुष पात्र है।
- (ii) उपर्युक्त कथन बड़े बेटे अविनाश के संबंध में है। उसकी पत्नी अत्यधिक बीमार है तथा मरणासन्न स्थिति में है। वह अपनी पत्नी से अत्यंत प्रेम करता है। इसलिए यदि उसकी पत्नी को कुछ हो गया, तो वह भी नहीं बचेगा।

- (iii) वक्ता (माँ) जानती है कि यदि बड़ी बहू को कुछ हो गया, तो अविनाश भी जीवित नहीं रहेगा। वह अपने प्राण त्याग देगा। इसलिए वह कहती हैं कि सिर्फ वही उसे बचा सकती है, क्योंकि बड़ी बहू की बीमारी में उसकी सेवा करके वह उसे स्वस्थ कर देगी तथा उसे अपनाकर अपने घर वापस ले आएगी। अतः वह उसे बचा पाती है। इस प्रकार, माँ अपनी रूढ़िवादी मानसिकता को छोड़ते हुए अविनाश के घर जाने और बड़ी बहू को स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाती है।
- (iv) अतुल माँ से चाहता है कि वह अपनी बड़ी बहू तथा बेटे से मिल ले। इसके लिए वह माँ को चेतावनी देता है कि एक बार फिर से सोच लो। यदि तुम उस नीच कुल की विजातीय भाभी को इस घर में नहीं ला सकी, तो जाने से कोई लाभ नहीं होगा। इस चेतावनी पर माँ प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहती है कि जानती हूँ अतुल। इसीलिए तो जा रही हूँ, ताकि अपनी बहू को घर वापस ला सकूँ।

- 16.** (i) प्रस्तुत अवतरण में वक्ता पन्नाधाय एवं श्रोता कुँवर उदयसिंह हैं। यहाँ पन्नाधाय, कुँवर उदयसिंह को रात में अकेले जाने को मना कर रही हैं।
- (ii) 'चारों तरफ़ ज़हरीले सर्प घूम रहे हैं' से वक्ता अर्थात् पन्नाधाय का आशय यह है कि कुँवर उदयसिंह भवन में भी सुरक्षित नहीं हैं। बनवीर और उसकी सेना ज़हरीले सर्प के रूप में कुँवर को डसने के लिए घूम रहे हैं।
- (iii) वक्ता अर्थात् पन्नाधाय कुँवर उदयसिंह (श्रोता) के प्रति सदैव चिंतित रहती हैं, क्योंकि कुँवर उदयसिंह की धाय माँ होने के साथ-साथ उसकी संरक्षिका भी है। बनवीर राजगद्दी तक पहुँचने में कुँवर उदयसिंह को बाधा मानता है, जिस कारण वह उसे मारना चाहता है। इसी कारण कुँवर उदय सिंह की सुरक्षा हेतु पन्नाधाय हमेशा चिंतित रहती हैं।
- (iv) प्रस्तुत एकांकी का शीर्षक 'दीपदान' है। यहाँ 'दीप' का प्रयोग पन्नाधाय के पुत्र चंदन का प्रतीक है। पन्नाधाय का सर्वोच्च धर्म-कुँवर उदय सिंह के प्राणों की रक्षा करना है। जब पन्नाधाय को ज्ञात हुआ कि बनवीर, कुँवर उदयसिंह के प्राणों का प्यासा है, जो उसकी हत्या करना चाहता है, तब उनकी रक्षा के लिए पन्ना को एक युक्ति सूझी। इस युक्ति ने पन्ना के समक्ष धर्म संकट उत्पन्न कर दिया। उसने कुँवर उदयसिंह को महल से दूर भेज दिया और चंदन को कुँवर की शैया पर सुला दिया। बनवीर ने शैया पर सोए बालक को कुँवर उदय सिंह समझकर उसके प्राण ले लिए। इस प्रकार, कुँवर की रक्षा हेतु पन्नाधाय ने अपने पुत्र रूपी दीपक का दान दे दिया।







# सॉल्वड पेपर 2019



# ICSE

## सॉल्वड पेपर 2019

हिंदी

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 80

- निर्देश : 1. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं—‘क’ और ‘ख’।  
2. खंड ‘क’ के सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।  
3. खंड ‘ख’ से कोई भी चार प्रश्न करने अनिवार्य हैं, जिनमें दो प्रश्न पाठ्यपुस्तक के होंगे तथा अन्य दो किसी अन्य पुस्तक से होंगे।

### खंड ‘क’

[40 अंक]

**1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए** 15

- आपके विद्यालय में एक मेले का आयोजन किया गया था। यह किस अवसर पर, किस उद्देश्य से किया गया था? उसके लिए आपने क्या-क्या तैयारियाँ कीं? आपने और आपके मित्रों ने एवं शिक्षकों ने उसमें क्या सहयोग दिया था? इन बिंदुओं को आधार बनाकर एक प्रस्ताव विस्तार से लिखिए।
- यात्रा एक उत्तम रुचि है। यात्रा करने से ज्ञान तो बढ़ता ही है, साथ ही स्थान विशेष की संस्कृति तथा परंपराओं का परिचय भी मिलता है। अपनी किसी यात्रा के अनुभव तथा रोमांच का वर्णन करते हुए एक प्रस्ताव लिखिए।
- ‘वन है तो भविष्य है’ आज हम उसी भविष्य को नष्ट कर रहे हैं, कैसे? कथन को स्पष्ट करते हुए जीवन में वनों के महत्व पर अपने विचार लिखिए।
- एक मौलिक कहानी लिखिए, जिसका अंत प्रस्तुत वाक्य से किया गया हो—और मैंने राहत की साँस लेते हुए सोचा कि आज मेरा मानव जीवन सफल हो गया।
- नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर उसका परिचय देते हुए कोई लेख, घटना अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट सम्बन्ध चित्र से होना चाहिए।



## 2. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए

7

- आप अपने परिवार के साथ किसी एक प्रदर्शनी (Exhibition) को देखने गए थे। वहाँ पर आपने क्या-क्या देखा? वहाँ कौन-कौन-सी चीजों ने आकर्षित किया? जीवन में उनकी क्या उपयोगिता है? अपना अनुभव बताते हुए अपने प्रिय मित्र को पत्र लिखिए।
- दिन-प्रतिदिन बढ़ते हुए जल संकट की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए नगरपालिका के अध्यक्ष को एक पत्र लिखिए, जिसमें वर्षा के जल का संचयन (Rain Water Harvesting) करने के लिए व्यापक स्तर पर परियोजना चलाने का सुझाव दिया गया हो।

## 3. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए।

एक रियासत थी। उसका नाम था कंचनगढ़। वहाँ बहुत गरीबी थी। लोग कमजोर थे और धरती में कुछ उगता न था। चारों ओर भुखमरी थी। एक दिन राजा कंचनदेव राज्य की दशा से चिंतित हो उठे। अचानक उनके पास एक साधु आए। राजा ने उन्हें प्रणाम किया। राजा ने साधु को अपने राज्य के बारे में बताया और कुछ उपाय करने की प्रार्थना की। साधु मुस्कराकर बोले— “कंचनगढ़ के नीचे सोने की खान है।” इतना कहकर साधु चले गए।

राजा ने खुदाई करवाई। वहाँ सोने की खान निकली। राजा का खजाना सोने से भर गया। राजा ने अपने राज्य में जगह-जगह मुफ्त भोजनालय बनवाए, दवाखाने खुलवाए, चरागाह बनवाए तथा अन्य साख-सुविधा के साधन उपलब्ध करा दिए। अब वहाँ कोई दुखी नहीं था। सब लोग खुश थे। धीरे-धीरे लोग आलसी हो गए। कोई काम नहीं करता था। भोजन तक मुफ्त में मिलने लगा था। मंत्री ने राजा को बहुत समझाया और कहा—“महाराज, लोग आलसी होते जा रहे हैं। उनको काम दिया जाए।” परन्तु राजा ने मंत्री की बात को टाल दिया।

कंचनगढ़ की समृद्धि को देखकर पड़ोसी रियासत के राजा को ईर्ष्या हुई। उसने अचानक कंचनगढ़ पर चढ़ाई कर दी और माँग की—“सोना दो या लड़ो।” कंचनगढ़ के आलसी लोगों ने राजा से कहा—“हमारे पास बहुत सोना है, कुछ दे दीजिए। बेकार खून क्यों बहाया जाए?” राजा ने लोगों की बात मान ली और सोना दे दिया। कुछ दिनों बाद उसी पड़ोसी राजा ने कंचनगढ़ पर फिर चढ़ाई कर दी। इस बार उसका लालच और बढ़ गया था। इसी प्रकार उसने कई बार चढ़ाई कर-करके कंचनगढ़ से सोना ले लिया। यह सब देखकर राजा का मंत्री बहुत परेशान हो गया। वह राजा को समझाना चाहता था, किंतु राजा के सम्मुख कुछ बोलने की हिम्मत नहीं हो पा रही थी। अंत में उसने युक्ति से काम लिया।

एक दिन वह मंत्री कंचनदेव को घुमाने के लिए नगर के पूर्व की ओर बने गुलाब के बाग की ओर ले गया। राजा कंचनदेव ने देखा कि बाग में दाने बिखरे पड़े हैं। कबूतर दाना चुग रहे हैं। थोड़ी दूर कुछ कबूतर मरे पड़े हैं। कुछ भी समझ में न आने पर राजा ने मरे हुए कबूतरों के बारे में मंत्री से पूछा।

मंत्री ने बताया—“महाराज, इन्हें शिकारी पक्षियों ने मारा है।” राजा ने पूछा—“तो कबूतर भागते क्यों नहीं?” “भागते हैं लेकिन लालच में फिर से आ जाते हैं, क्योंकि उनके लिए यहाँ, आपकी आज्ञा से दाना डाला जाता है।” मंत्री ने बताया। राजा के कहा “दाना डलवाना बंद कर दो।” मंत्री ने वैसा ही किया।

राजा अगले दिन फिर घूमने निकले। उन्होंने देखा कि दाना तो नहीं है, किंतु कबूतर आ-जा रहे हैं। राजा ने मंत्री से इसका कारण पूछा। मंत्री ने बताया— “महाराज, इन्हें बिना प्रयास के ही दाना मिल रहा था। ये अब दाने-चारे की तलाश की आदत भूल चुके हैं, आलसी हो गए हैं। शिकारी पक्षी इस बात को जानते हैं कि कबूतर तो यही आएँगे। अतः वे इन्हें आसानी से मार डालते हैं।” राजा चिंता में पड़ गए। उन्होंने शाम को मंत्री को बुलाकर कहा—“नगर के सारे मुफ्त भोजनालय बंद करवा दो, जो मेहनत करें, वहीं खाए। लोग निकम्मे और आलसी होते जा रहे हैं और हाँ, एक बात और। मैं अब शत्रु को सोना नहीं दूँगा, बल्कि उससे लड़ाई करूँगा। जाओ, सेना को मजबूत करो।” मंत्री राजा की बात सुनकर बहुत खुश हो गया।

- राजा कंचनदेव की चिंता का क्या कारण था? उन्होंने साधु से क्या प्रार्थना की? 2
- साधु ने राजा को क्या बताया? उसके बाद राजा ने राज्य के लिए क्या-क्या कार्य किए? 2
- पड़ोसी राजा के आक्रमण करने पर कंचनगढ़ का राजा क्या करता था और क्यों? 2
- कबूतरों की दशा कैसी थी? उस दशा को देखकर राजा ने क्या सीखा? 2
- राजा ने मंत्री को क्या आदेश दिए? आदेश सुनकर मंत्री की क्या स्थिति हुई? 2

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए**

- (i) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के विलोम लिखिए। 1  
अपना, देव, नवीन, सम्मानित
- (ii) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए। 1  
इच्छा, आदेश, शिक्षक
- (iii) निम्नलिखित शब्दों में किन्हीं दो शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए। 1  
सफेद, युवा, हिंसक, जागना
- (iv) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए। 1  
कवित्री, आशीरवाद, कृतम्य, विदूषी
- (v) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइए। 1  
चंपत होना, डींग हाँकना
- (vi) कोष्ठक में दिए गए वाक्यों में निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए
- (क) प्राचीनकाल में लोग पत्तों की बनी कुटिया में रहते थे। 1  
(रेखांकित का एक शब्द लिखते हुए वाक्य को पुनः लिखिए)
- (ख) बीमार होने के कारण सुमन समारोह में नहीं आ सकी। 1  
(‘इसलिए’ का प्रयोग कर वाक्य पुनः लिखिए)
- (ग) बच्चे आम तोड़ने के लिए वृक्षों पर चढ़ गए थे। (वचन बदलिए) 1

## खंड ‘ख’

[40 अंक]

### साहित्य सागर-संक्षिप्त कहानियाँ

**5. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

उसके अन्तःस्तल में वह शोक जाकर बस गया था। वह प्रायः अकेला बैठा-बैठा शून्य मन से आकाश की ओर ताका करता। एक दिन उसने ऊपर आसमान में पतंग उड़ती देखी। न जाने क्या सोचकर उसका हृदय एकदम खिल उठा। विश्वेश्वर के पास जाकर बोला, “काका! मुझे एक पतंग मँगा दो।” [‘काकी’-सियारामशरण गुप्त]

- (i) ‘उसके’ शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है? उसके दुखी होने का क्या कारण था? 2
- (ii) क्या देखकर उसका हृदय खिल उठा था? उसने अपने पिता से क्या माँगा? 2
- (iii) उसने उस चीज का प्रबंध कैसे किया? क्या उसके इस कार्य को अपराध कहना उचित होगा? 3
- (iv) विश्वेश्वर ने बालक के साथ कैसा व्यवहार किया? संक्षेप में समझाते हुए उनके इस तरह के व्यवहार का कारण तथा सच्चाई जानने के बाद की स्थिति का भी वर्णन कीजिए। 3

**6. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

विदेशों में उसके चित्रों की धूम मच गई। भिखारिन और दो अनाथ बच्चों के उस चित्र की प्रशंसा में तो अखबारों के कॉलम के कॉलम भर गए। शोहरत से ऊँचे कगार पर बैठ चित्रा जैसे अपना सब कुछ भूल गई। [‘दो कलाकार’-मनु भंडारी]

- (i) उसके चित्रों से क्या तात्पर्य है? समझाइए। 2
- (ii) चित्रा कौन थी? उसके चरित्र की मुख्य विशेषता को बताइए। 2
- (iii) अरुणा कौन थी जब उसे भिखारिन वाली घटना का पता चला तो उस पर क्या प्रभाव पड़ा और उसने क्या किया? 3
- (iv) चित्रकारिता और समाज सेवा में आप किसे उपयोगी मानते हैं और क्यों? कहानी के माध्यम से समझाइए। 3

**7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

मैंने देखा कि कुहरे की सफेदी में कुछ ही हाथ दूर से एक काली-सी मूर्ति हमारी तरफ आ रही थी। मैंने कहा—“होगा कोई।” तीन गज की दूरी से दिख पड़ा, एक लड़का, सिर के बड़े-बड़े बाल खुजलाता चला आ रहा था। नंगे पैर, नंगे सिर, एक मैली-सी कमीज लटकाए है।

[‘अपना-अपना भाग्य’-जैनेन्द्र कुमार]

- (i) यहाँ पर किस बालक के संदर्भ में कहा गया है? उस समय उसकी क्या स्थिति थी? 2
- (ii) बालक ने अपने घर-परिवार के संबंध में क्या-क्या बताया? 2
- (iii) इस समय उस बालक के सामने कौन-सी समस्या थी? क्या उस समस्या का हल हो पाया? यदि नहीं तो क्यों? 3
- (iv) इस कहानी के माध्यम से लेखक ने हमें क्या संदेश देना चाहा है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। 3

## साहित्य सागर-पद्य भाग

**8. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

“मैया मेरी, चंद्र खिलौना लेहों ॥

धौरी को पय पान न करिहों, बेनी सिर न गुथैहों।

मोतिन माल न धरिहों उर पर झुंगली कंठ न लैहों।

जैहों लोट अबहिं धरनी पर, तेरी गोद न ऐहों ॥

लाल कहैहों नंद बाबा को, तेरो सुत न कहैहों ॥”

[‘सूर के पद’-सूरदास]

- (i) प्रस्तुत पद्य में कौन अपनी माता से ज़िद कर रहे हैं? वे क्या प्राप्त करना चाहते हैं? 2
- (ii) उनकी माता कौन हैं? वे अपने पुत्र को देखकर कैसा अनुभव कर रही है? स्पष्ट कीजिए। 2
- (iii) खिलौना न मिलने की स्थिति में बाल कृष्ण अपनी माँ को क्या-क्या धमकियाँ दे रहे हैं? 3
- (iv) रुठे हुए बालक को बहलाने के लिए माँ क्या कहती है? बालक पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है? सूरदास जी की भक्ति भावना का परिचय देते हुए समझाइए। 3

**9. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

“न्यायोचित सुख सुलभ नहीं

जब तक मानव-मानव को

चैन कहाँ धरती पर तब तक

शांति कहाँ इस भव को?

जब तक मनुज-मनुज का यह

सुख भाग नहीं सम होगा

शामित न होगा कोलाहल

संघर्ष नहीं कम होगा।”

[‘स्वर्ग बना सकते हैं’-रामधारी सिंह दिनकर]

- (i) ‘भव’ शब्द का क्या अर्थ है? कवि के अनुसार इस भव में शांति क्यों नहीं है? 2
- (ii) शब्दों के अर्थ लिखिए— न्यायोचित, सम, सुलभ, कोलाहल। 2
- (iii) ‘शमित न होगा कोलाहल संघर्ष नहीं कम होगा’ पंक्ति का भावार्थ लिखिए। 3
- (iv) उपरोक्त पंक्तियाँ ‘दिनकर जी’ की किस प्रसिद्ध रचना से ली गई हैं? कविता का केन्द्रीय भाव लिखते हुए बताइए। 3

**10. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए**

जन्मे जहाँ थे रघुपति जन्मी जहाँ थी सीता।

श्री कृष्ण न सुनाई, वंशी पुनीत गीता।

गौतम ने जन्म लेकर जिसका सुयश बढ़ाया।



जग को दया दिखाई, जग को दिया दिखाया ॥

वह युद्धभूमि मेरी, वह बुद्धभूमि मेरी।

वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी ॥

[‘वह जन्मभूमि मेरी’-सोहनलाल द्विवेदी]

- (i) प्रस्तुत कविता किस प्रकार की है इस कविता में किसका गुणगान किया गया है? 2
- (ii) कवि ने भारत को युद्धभूमि और बुद्धभूमि क्यों कहा है? समझाकर लिखिए। 2
- (iii) प्रस्तुत कविता में जन्मभूमि की किन-किन प्राकृतिक विशेषताओं का उल्लेख किया गया है? स्पष्ट कीजिए। 3
- (iv) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने भारत को किन-किन महापुरुषों की भूमि कहा है? कविता का केंद्रीय भाव लिखते हुए स्पष्ट कीजिए। 3

## नया रास्ता (सुषमा अग्रवाल)

### 11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

“मीनू ..... अरे मीनू कैसे कर सकती है? यह रस्म तो शादीशुदा बहन ही कर सकती है। मीनू की तो अभी शादी भी नहीं हुई।”

- (i) उपर्युक्त कथन की वक्ता कौन है उसका परिचय दीजिए। 2
- (ii) वक्ता ने क्यों कहा कि मीनू यह रस्म नहीं कर सकती? यहाँ किस रस्म की बात हो रही है? 2
- (iii) वक्ता की बात सुनकर मीनू तथा मीनू की माँ की स्थिति का वर्णन करते हुए बताइए कि क्या उसके द्वारा वह रस्म पूरी की गई थी? स्पष्ट कीजिए। 3
- (iv) “एक अविवाहित स्त्री को समाज में उचित सम्मान नहीं मिलता।” उपन्यास के आधार पर अपने विचार लिखिए। 3

### 12. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

आखिर सरिता को देखने का दिन आ ही गया। अमित के घर में विशेष चहल-पहल थी। अमित की माताजी में विशेष उत्साह नजर आ रहा था। माताजी के कहने में आकर उसके पिता भी इस रिश्ते में रुचि लेने लगे थे। अमित की बहन मधु भी अपनी होने वाली भाभी को देखने के लिए उत्सुक थी।

- (i) अमित कौन है उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। 2
- (ii) विशेष चहल-पहल का क्या कारण था, इस अवसर पर अमित की स्थिति स्पष्ट कीजिए। 2
- (iii) मायाराम जी को स्वर्ग की अनुभूति कहाँ और कैसे होती है और क्यों होती है? 3
- (iv) अमित और सरिता के बीच हुई बातचीत को संक्षेप में लिखिए। 3

### 13. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

मीनू के हृदय में बचपन से ही अपंगों के लिए दया की भावना थी, परंतु मनोहर को तो वैसे भी वह बचपन से जानती थी, इसलिए उसकी यह हालत उससे देखी नहीं जा रही थी। मीनू ने मन ही मन निश्चय दिया कि वह किसी न किसी रूप में मनोहर की सहायता अवश्य करेगी। विवाह के फालतू खर्च में से कुछ रुपये बचाकर अपाहिज मनोहर की सहायता करने का उसने संकल्प लिया।

- (i) मनोहर कौन था? वह मीनू के पास क्यों आया था? 2
- (ii) उसकी यह दशा कैसे हो गई थी? संक्षेप में समझाइए। 2
- (iii) मीनू ने मन ही मन क्या निश्चय किया और मनोहर की सहायता कैसे की? 3
- (iv) मीनू के इस कार्य से आपको क्या प्रेरणा मिलती है? क्या आपने भी कभी किसी की इस प्रकार से सहायता की है समझाइए। 3

## एकांकी संचय

### 14. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

अब भी आँखें नहीं खुली? जो व्यवहार अपनी बेटी के लिए दूसरों से चाहते हो वही दूसरे की बेटी को भी दो। जब तक तुम बहू और बेटी को एक-सा नहीं समझोगे, न तुम्हें सुख मिलेगा न शांति। [‘बहू की विदा’-विनोद रस्तोगी]

- (i) वक्ता का परिचय देते हुए कथन का संदर्भ लिखिए। 2
- (ii) “अब भी आँखें नहीं खुली?” कहने से वक्ता का क्या अभिप्राय है? पाठ के संदर्भ में समझाइए। 2
- (iii) एकांकी के अन्त में श्रोता क्या फैसला लेता है और क्यों? समझाइए। 3
- (iv) इस एकांकी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? एकांकी को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। 3

### 15. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

आपके विवेक पर सबको विश्वास है। मैं आपसे निवेदन करने आई हूँ कि यद्यपि समय के फेर से आज हाड़ा, शक्ति और साधनों में मेवाड़ के उन्नत राज्य से छोटे हैं, फिर भी वे वीर हैं। मेवाड़ को विपत्ति के दिनों से सहायता देते रहे हैं। यदि उनसे कोई धृष्टता बन पड़ी हो, तो महाराणा उसे भूल जाएँ और राजपूत शक्तियों में स्नेह का सम्बन्ध बना रहने दें।

[‘मातृभूमि का मान’-हरिकृष्ण प्रेमी]

- (i) प्रस्तुत कथन किसने, किससे कहा है? स्पष्ट कीजिए। 2
- (ii) मेवाड़ को विपत्ति के दिनों में किसने सहायता दी है? चारणी यह बात क्यों याद दिलाती है? स्पष्ट कीजिए। 2
- (iii) चारणी ने महाराणा को अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का क्या उपाय बताया? यह कितना उचित था, इस संदर्भ में अपने विचार दीजिए। 3
- (iv) ‘मातृभूमि का मान’ कैसी एकांकी है? शीर्षक की सार्थकता सिद्ध करते हुए बताइए। 3

### 16. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए

बेटा, बड़प्पन बाहर की वस्तु नहीं—बड़प्पन तो मन का होना चाहिए और फिर बेटा घृणा को घृणा से नहीं मिटाया जा सकता। बहू तभी पृथक् होना चाहेगी जब उसे घृणा के बदले घृणा दी जाएगी, लेकिन यदि उसे घृणा के बदले स्नेह मिले तो उसकी समस्त घृणा धुँधली पड़कर लुप्त हो जाएगी।

[‘सूखी डाली’-उपेन्द्रनाथ ‘अशक’]

- (i) प्रस्तुत कथन का वक्ता कौन है? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। 2
- (ii) श्रोता ने वक्ता को छोटी बहू के संबंध में क्या बताया था? 2
- (iii) वक्ता ने परिवार में एकता बनाए रखने का क्या उपाय निकाला? क्या वे इसमें सफल हुए? स्पष्ट कीजिए। 3
- (iv) प्रस्तुत एकांकी किस प्रकार की एकांकी है? इस एकांकी लेखन का क्या उद्देश्य है? 3

## व्याख्या सहित उत्तर

1. (i) **भूमिका** पिछले सप्ताह हमारे विद्यालय में बाल मेले का आयोजन किया गया था। बाल दिवस के उपलक्ष्य पर विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बाल मेले के आयोजन की घोषणा की थी। इस मेले का मुख्य उद्देश्य छात्राओं के मनोरंजन के साथ-साथ उनके ज्ञानार्जन तथा आपसी सहयोग की भावना विकसित करना था।

**मेले के लिए तैयारियाँ** बाल मेले को लेकर मैं हमेशा से ही उत्सुक रहा हूँ। जब मैंने सुना कि विद्यालय में बाल मेले का आयोजन होने जा रहा है, तो मेरी खुशी का ठिकाना ही नहीं था। मेले के लिए मैंने अपने स्तर पर तैयारियाँ आरंभ कर दीं। इस संदर्भ में मैंने एक भाषण तैयार किया। इस भाषण के लिए मैंने अपने अध्यापक महोदय से कुछ बिंदुओं पर विचार-विमर्श किए, साथ ही मेले में लगने वाले स्टॉल के लिए सैंडविच भी बनाए।

**मित्रों तथा शिक्षकों का सहयोग** मेरे साथ-साथ मेरे मित्र भी इस मेले को लेकर बहुत उत्साहित थे। मित्रों ने मेरे साथ मिलकर विद्यालय में लगने वाले मेले के लिए मेरे स्टॉल को आकर्षक बनाने तथा स्टॉल में खाद्य पदार्थ बनाकर लाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया। मेले का आरंभ प्रधानाचार्य एवं मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। उसके बाद सभी शिक्षकों ने विद्यार्थियों के साथ मिलकर मेले को सफल बनाने में अपना सहयोग दिया। अन्य छात्रों ने भी अनेक तरह की खाने-पीने की वस्तुओं के स्टॉल लगाए थे। इस अवसर पर हमारे स्टॉल को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ, साथ ही भाषण प्रतियोगिता में मुझे द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। सभी छात्रों ने मेले का आनंद लिया। इस मेले के द्वारा विद्यार्थियों का अन्य कक्षा के छात्रों के साथ भी संपर्क हुआ तथा विभिन्न विषयों पर

हुई भाषण प्रतियोगिताओं से सभी का ज्ञानार्जन हुआ। अंत में विजेता छात्रों को पुरस्कार वितरित किए गए तथा प्रधानाचार्य ने सभी विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के सहयोग की सराहना करते हुए इसे एक सफल मेला घोषित किया।

इस प्रकार विद्यालय में लगने वाले बाल मेले का उद्देश्य भी पूर्णतः सफल हुआ। यह मेला मेरे लिए सदैव स्मरणीय रहेगा।

- (ii) **भूमिका** यात्रा मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। यात्रा करने से न केवल व्यक्ति का मनोरंजन होता है, बल्कि इससे ज्ञानार्जन में भी वृद्धि होती है, साथ ही व्यक्ति को स्थान विशेष की संस्कृति तथा परंपराओं का परिचय भी मिलता है। मुझे भी यात्रा करने का बहुत शौक है। पिछले वर्ष गर्मियों की छुट्टियों में मैंने अपने मित्रों के साथ भुवनेश्वर की यात्रा की।

**यात्रा के रोमांच का वर्णन** मैं दिल्ली से रेल यात्रा का आनंद उठाते हुए अपने सभी साथियों के साथ सुबह लगभग दस बजे भुवनेश्वर पहुँच गया था। हमने पहले ही होटल बुक करवा लिया था। वहाँ पहुँचकर सबसे पहले हम होटल में गए। मैं इस शहर के बारे में पहले ही काफी कुछ सुन चुका था। मेरे सभी दोस्त चाहते थे कि उस दिन आराम किया जाए, लेकिन मैं उनके इस विचार से सहमत नहीं था। मेरी व्याकुलता को देखते हुए सभी ने थोड़ी देर आराम करने के बाद तैयार होकर यात्रा पर निकलने का निर्णय लिया। भुवनेश्वर के बारे में जैसा हमने सुना था, उससे कहीं अधिक दर्शनीय पाया।

भुवनेश्वर, भारत के खूबसूरत एवं हरे-भरे प्रदेश ओडिशा की राजधानी है। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता देखते ही बनती है। ऐतिहासिक ही नहीं, बल्कि धार्मिक दृष्टिकोण से भी यह शहर भारत के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में से एक है। इसे 'मंदिरों का शहर' भी कहा जाता है। हम जिस होटल में ठहरे थे, उसके निकट ही राजा-रानी मंदिर है, इसलिए सबसे पहले हम उसी के दर्शनों के लिए पहुँचे। इस मंदिर की स्थापना ग्यारहवीं शताब्दी में हुई थी। अगली सुबह हम लोग जल्दी तैयार होकर लिंगराज मंदिर समूह देखने गए। इस मंदिर के आस-पास सैकड़ों छोटे-छोटे मंदिर बने हुए हैं, इसलिए इसे 'लिंगराज मंदिर समूह' कहा जाता है। 185 फीट लंबा यह मंदिर भारत की प्राचीन शिल्पकला का अप्रतिम उदाहरण है। मंदिरों की दीवारों पर निर्मित मूर्तियाँ शिल्पकारों की कुशलता की परिचायक हैं।

**यात्रा का अनुभव** भुवनेश्वर की यात्रा इतिहास की यात्रा के समान है। इस शहर की यात्रा करते हुए ऐसा लगता है कि मानो हम उस काल में चले गए हों, जब इस शहर का निर्माण किया जा रहा था। शहर के मध्य स्थित भुवनेश्वर संग्रहालय में प्राचीन मूर्तियों एवं हस्तलिखित ताड़पत्रों का अनूठा संग्रह इस आभास को और भी अधिक बल प्रदान करता है। सैर के बाद हम लोगों ने ओडिशा के स्थानीय भोजन का आनंद उठाया। भुवनेश्वर की यात्रा को अविस्मरणीय बनाने के लिए हमने जमकर फोटोग्राफी की थी, किंतु फोटो के साथ-साथ हम सभी ने कई प्रकार की वस्तुएँ खरीदीं। ये वस्तुएँ हमें हमेशा भुवनेश्वर की प्राचीन कला की याद दिलाती हैं।

**उपसंहार** भुवनेश्वर की यात्रा मेरे लिए ही नहीं मेरे सभी साथियों के लिए भी एक अविस्मरणीय यात्रा बन गई, वस्तुतः किसी भी व्यक्ति की यात्रा का उद्देश्य केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि मानसिक शांति प्राप्त करना भी होता है। वास्तव में भुवनेश्वर के वातावरण में अजीब-सी पवित्रता घुली हुई है। इस यात्रा से हमारी मित्र-मंडली को जिस मानसिक शांति का अनुभव हुआ, उसे शब्दों में बयाँ नहीं किया जा सकता। इस अविस्मरणीय यात्रा से मैं भी डॉ. जॉनसन के इस कथन से पूर्णतः सहमत हो गया कि "यात्रा कल्पना को वास्तविकता में व्यवस्थित कर देती है।"

- (iii) **भूमिका** मनुष्य और वनों का संबंध बहुत पुराना है। आदिमानव का पालन पोषण प्रायः वनों में ही हुआ है। वनों ने ही उनकी सारी आवश्यकताएँ पूरी कीं। कोई भी काल रहा हो, वनों ने सदा ही मनुष्य का कल्याण किया है। वर्तमान में हमारे लिए वनों की महत्ता और भी बढ़ गई है। 'वन है तो भविष्य है' कथन का आशय यह है कि मनुष्य का भविष्य वनों पर ही निर्भर है। यदि वन नहीं रहे तो मनुष्य का जीवन तथा उसका भविष्य खतरे में पड़ सकता है।

**भविष्य को नष्ट करना** आधुनिकीकरण की अंधी दौड़ के कारण मनुष्य वनों को नष्ट कर अपने भविष्य को भी नष्ट कर रहे हैं। स्वयं के विकास हेतु वे वनों को काटकर उसके स्थान पर बहुमंजिला इमारतें तथा उद्योगों धंधों को स्थापित कर रहे हैं। वनों के नष्ट होने के कारण वातावरण का संतुलन बिगड़ रहा है, जिसका सीधा प्रभाव मनुष्यों पर पड़ रहा है। इसके कारण मनुष्य को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें सबसे प्रमुख समस्या प्रदूषण है। प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य संबंधी अनेक समस्याएँ मनुष्य को घेर रही हैं, जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं हैं। अतः स्पष्ट है कि मनुष्य को अपने भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए वनों को काटने से रोकना होगा।

**वनों का महत्त्व** वन हमारे लिए विभिन्न प्रकार से लाभदायी हैं। यदि वन न हों तो पृथ्वी पर जीने योग्य दशाएँ नहीं रह जाएँगी। प्राणदायी ऑक्सीजन के अभाव में प्राणियों का जीवन खतरे में पड़ जाएगा। इसके अतिरिक्त वन वर्षा के आधार हैं, जिससे फसलें पैदा होती हैं। वृक्ष मिट्टी को कटने एवं बहने से बचाते हैं। इस प्रकार वे बाढ़ रोकने में अपनी अप्रत्यक्ष भूमिका निभाते हैं। वनों के अनगिनत प्रत्यक्ष लाभ हैं। वन हमें फल, छाया, चारा, पत्तियाँ, गोंद, तेल, शहद, औषधियाँ और बहुपयोगी जड़ी-बूटियाँ प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त इमारती लकड़ियाँ भी वनों से प्राप्त होती हैं। वन जंगली जीवों और पक्षियों के शरणस्थल हैं। यदि वन न हो तो प्रकृति की इन खूबसूरत रचनाओं को देखने से हम वंचित रह जाएँगे। पक्षियों का कलरव सुनने को हमारे कान तरस जाएँगे। इन जीव-जंतुओं के बिना दुनिया कैसी लगेगी, इसकी कल्पना करना भी कठिन है।

वन दो तरह से प्राकृतिक संतुलन बनाने में सहायक हैं। एक ओर तो वन में रहने वाले अनेक जीव-जंतु छोटे-छोटे कीट-पतंगों को खाकर आहार शृंखला पूरी करते हैं, साथ ही वे मरे जीवों को खाकर सड़न और बीमारी फैलने से भी रोकते हैं, वहीं दूसरी ओर पेड़-पौधे प्राणियों द्वारा छोड़ी गई कार्बन डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर शुद्ध ऑक्सीजन देते हैं। इससे प्रकृति चक्र संतुलित रहता है।

**उपसंहार** पेड़-पौधे ऋषि-मुनियों की तरह परोपकारी तथा कल्याणकारी हैं। वनों के बिना हमारा जीवन बचना कठिन है। अतः हमें वनों को बचाने का हर संभव प्रयास करना चाहिए।

- (iv) **कहानी** एक दिन मैं अपने मित्रों के साथ 'कमला नगर' घूमने गया। हम सभी मित्र मस्ती करते हुए घूमने का आनंद ले रहे थे। तभी मेरी नजर एक बच्चे पर पड़ी, जो वजन तौलने की मशीन लिए बाजार में बैठा था उसके पास एक किताब थी। जब मैंने उस बच्चे से पूछा कि तुम स्कूल जाते हो तो बहुत दीन वचनों के साथ बोला कि हम गरीबों को कौन स्कूल भेजता है। यदि स्कूल जाएँगे तो काम कौन करेगा, लेकिन मेरा पढ़ने तथा स्कूल जाने का बहुत मन करता है। उसकी बातें सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ कि पढ़ने की आयु में उस बच्चे को काम करना पड़ रहा है। उस समय तो मैं वहाँ से अपने मित्रों के साथ चला आया, किंतु घर आकर मुझे बार-बार उस बच्चे की बातें याद आने लगीं। मैंने मन ही मन निर्णय लिया कि उस बच्चे के लिए मुझे अवश्य कुछ करना चाहिए। अगले ही दिन मैं उस बच्चे से मिलने के लिए फिर से कमला नगर गया। मैंने देखा वह कल की ही भाँति आज भी एक मशीन लिए बाज़ार में बैठा हुआ था। मैं उसके पास गया और उसके पूछने लगा कि यदि तुम्हें स्कूल जाने का मौका मिले तो तुम स्कूल जाना चाहोगे। उसने तुरंत 'हाँ' में उत्तर दे दिया, परंतु दूसरे ही क्षण वह शांत हो गया। शायद उसे लगा कि मैं उसके साथ मजाक कर रहा हूँ। उसी समय मैंने एक एन.जी.ओ. के विषय में उसे बताया, जो उस जैसे गरीब और असहाय बच्चों को मुफ्त में शिक्षा देता है। मैंने उसके परिवार के सदस्यों से बात करके उसका एन.जी.ओ में नाम लिखवा दिया। जब वह बच्चा एन.जी.ओ. में पढ़ने के लिए जाने लगा और मैंने राहत की साँस लेते हुए सोचा कि आज मेरा मानव जीवन सफल हो गया।

इस प्रकार परिस्थिति अनुरूप एक-दूसरे की सहायता करना मनुष्य का परम मानवीय गुण है। एक कवि ने कहा है कि मंदिर में दीप जलाने और तिलक लगाने से श्रेष्ठ है कि आप गरीब लोगों का कष्ट दूर कीजिए। प्रत्येक मनुष्य अपने सामर्थ्य के अनुसार ही परोपकार करने में सक्षम है। अतः गरीब असहाय व्यक्ति की सहायता करने में सच्चा परोपकार होता है।

- (v) प्रस्तुत चित्र बालक द्वारा अपने कार्य को निष्ठापूर्वक किए जाने को दर्शाता है। यह चित्र बालक द्वारा मजदूरी करने के दृश्य को दिखाता है। बालक ने मिट्टी खोदने के लिए हाथ में फावड़ा लिया है। यह दृश्य बाल श्रम जैसी समस्या को इंगित करता है। बाल श्रम जैसी समस्या आज हमारे समाज के लिए अभिशाप बन रही है। बचपन, एक बालक के जीवन का स्वर्णिम समय होने के साथ ही उसके शारीरिक व मानसिक विकास का बहुमूल्य समय होता है। उस आयु में घर की आर्थिक स्थिति कई बालकों को पैसे कमाने को बाध्य कर देती है।

आजादी के इतने वर्षों के बाद भी आज हमारा समाज उच्च वर्ग व निम्न वर्ग में विभक्त है। निम्न वर्ग के लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति न होने के कारण अपने बच्चों को कारखानों, फैक्ट्रियों आदि में कार्य करने के लिए भेज देते हैं। आज भारत ब्रिटिश की गुलामी से तो आजाद हो गया, परंतु गरीबी ने निम्न वर्ग को बेड़ियों में बाँधा हुआ है। यह चित्र हमारे समाज में फैली निर्धनता व आर्थिक समस्या की ओर संकेत करता है।

भारत सरकार ने 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों की शिक्षा के लिए कानून बनाए, जिसमें बालकों के लिए 'शिक्षा के अधिकार' को आवश्यक बताया है। इसमें सभी बालकों के लिए 'मुफ्त व अनिवार्य' शिक्षा का प्रावधान है, परंतु फिर भी आज हमारे समाज में बाल श्रम प्रमुख समस्या बनी हुई है। आज भी 14 वर्ष की आयु से कम के बालक कारखानों में काम करते हैं तथा उच्च वर्ग उनका शोषण करते हैं।

बाल श्रम एक विकराल समस्या का रूप धारण करता जा रहा है। आज जगह-जगह विभिन्न नुक्कड़-नाटक, जागरूकता अभियान आदि चलाए जाते हैं, लेकिन जब तक भारत का प्रत्येक नागरिक इस गंभीर समस्या पर चिंतन या मनन नहीं करेगा अर्थात् इन समस्या के समाधान के लिए प्रयत्न नहीं करेगा, तब तक इस समस्या से मुक्ति पाना कठिन होगा।

इस चित्र में बालक अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और लगन से कार्य तो कर रहा है, परंतु दूसरी ओर वह अपने शिक्षा के अधिकार को खो रहा है। अतः संविधान के 86वें संशोधन का ध्यान रखते हुए हमें इस समस्या के प्रति सचेत हो जाना चाहिए तथा बालक की शिक्षा के अधिकार को संरक्षित कर उसे पढ़ने का अवसर प्रदान करके उसके शारीरिक व मानसिक विकास में वृद्धि करने हेतु प्रयास करना चाहिए, तभी हमारा देश पूर्णरूप से आजाद कहा जाएगा।

- 2. (i)** परीक्षा भवन,  
दिल्ली।

दिनांक 9 मार्च, 20XX

प्रिय मित्र रोहित,

आशा करता हूँ कि तुम सकुशल होंगे। मैं इस पत्र के माध्यम से तुम्हें हस्तकला प्रदर्शनी के संदर्भ में बताना चाहता हूँ। दिल्ली एक महानगर है, वर्षभर यहाँ छोटी-बड़ी अनेक प्रदर्शनियाँ लगती रहती हैं। महात्मा गांधी के जन्मदिन पर प्रगति मैदान में प्रतिवर्ष लगने वाली प्रदर्शनी की कोई समानता ही नहीं है। इस वर्ष मुझे इस प्रदर्शनी को देखने का अवसर मिला। मैं अपने परिवार के सदस्यों के साथ हस्तकला प्रदर्शनी देखने गया। इस प्रदर्शनी में भारत के कोने-कोने से आए कलाकारों ने अपनी कला के प्रदर्शन हेतु स्टॉल लगाए हुए थे, जिनमें कश्मीर कढ़ाई वाली शॉल, गलीचे, लकड़ी से बने फर्नीचर, राजस्थान के बंधनी काम के वस्त्र, तमिलनाडु की ताम्र मूर्तियाँ आदि अनेक हस्तकला से संबंधित वस्तुएँ थीं। वहाँ हाथ से बनी सुंदर मूर्तियाँ, बिहार की मधुबनी चित्रकारी तथा जूट के बने बैग ने मुझे बहुत आकर्षित किया। हस्तकला के इन उपकरणों का जीवन में बहुत महत्त्व है। एक ओर जहाँ कलाकार की कला को प्रदर्शित कर उनकी जीविका का साधन बनते हैं, तो वहीं दूसरी ओर भारत की सांस्कृतिक कला को जीवित रखे हुए हैं। इनके माध्यम से विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक झाँकियों की झलक भी देखने को मिलती है। इस प्रदर्शनी में मनोरंजन के भी अनेक साधन उपलब्ध थे। प्रत्येक स्टॉल बहुत विशाल और सुंदर था तथा उसमें सभी वस्तुएँ अच्छी तरह से रखी हुई थीं।

स्टॉल के बाहर उन प्रदेशों के लोकनृत्य तथा लोकगीतों का आयोजन भी किया गया था। यह सब बहुत ही आकर्षण था। इस प्रकार यह प्रदर्शनी मुझे बहुत अच्छी लगी।

शेष फिर कभी। अंकल-आंटी को मेरा नमस्कार कहना।

भवदीय

क.ख.ग.

- (ii) परीक्षा भवन,  
दिल्ली।

दिनांक 9 मार्च, 20XX

सेवा में

नगरपालिका अध्यक्ष,

दिल्ली नगर निगम,

आजादपुर, दिल्ली।

**विषय** जल संकट की ओर ध्यान आकर्षित कराने हेतु पत्र।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान आजादपुर क्षेत्र में पेयजल की समस्या की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। इस क्षेत्र में पिछले पंद्रह दिनों से पेयजल की आपूर्ति ठीक ढंग से नहीं हो पा रही है। आजकल क्षेत्र में जल का संकट इतना गहरा है कि यहाँ के निवासियों का जीना दुभर हो गया। नलों में सुबह-शाम केवल आधे घंटे ही पानी आता है, जोकि साफ नहीं होता और न ही पीने योग्य होता है। वर्तमान समय में सीमित जलराशि का बड़ा भाग प्रदूषित हो चुका है, फलस्वरूप पेयजल की समस्या उत्पन्न हो गई है, इसलिए जल संसाधन, संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता है, जिसमें जनता का सहयोग अपेक्षित है। इस संदर्भ में मैं वर्षा के जल को संचयन करने के लिए व्यापक स्तर पर परियोजना चलाने का सुझाव देना चाहता हूँ कि ऐसी परियोजनाएँ बनाई जाएँ, जिससे जल का संचयन किया जाए, ताकि उस जल का उचित प्रयोग किया जा सके। आशा करता हूँ कि आप इस दिशा में उचित कदम उठाएँगे, ताकि जल संकट की समस्या से निपटा जा सके।

धन्यवाद

भवदीय

क.ख.ग.

3. (i) राजा कंचनदेव की चिंता का कारण उनके राज्य में व्याप्त गरीबी तथा भुखमरी की स्थिति थी। उन्होंने साधु से इस विकट स्थिति से बाहर निकले के लिए कुछ उपाय करने की प्रार्थना की।
- (ii) साधु ने राजा को बताया कि कंचनगढ़ के नीचे सोने की खान है। उसके बाद राजा ने राज्य के लिए जगह-जगह मुफ्त भोजनालय बनवाएँ, दवाखाने खुलवाएँ, चारागाह बनाए तथा अन्य सुख-सुविधा के साधन उपलब्ध करवाने के कार्य किए।
- (iii) पड़ोसी राजा के आक्रमण करने पर कंचनगढ़ का राजा उन्हें सोना दे देता था, क्योंकि कंचनगढ़ के आलसी लोगों ने राजा को ऐसा करने को कहा कि हमारे पास बहुत सोना है उसमें से कुछ सोना पड़ोसी राजा को दे दीजिए, बेकार में क्यों खून बहाया जाए। अतः राजा ने उनकी बात मान ली।
- (iv) कबूतरों की दशा आलसी मनुष्य के समान हो गई थी। वह अपने आलस के कारण दाने की तलाश भी नहीं कर रहे थे। उनकी दशा को देखकर राजा ने यह सीखा कि अब वह शत्रु को सोना नहीं देगा, बल्कि उससे युद्ध करेंगे।
- (v) राजा ने मंत्री को यह आदेश दिए कि नगर के सारे मुफ्त भोजनालय बंद करवा दो, जो मेहनत करेगा वही खाएगा। जाओ जाकर सेना को मज़बूत करो। आदेश सुनकर मंत्री की स्थिति यह हुई कि वह बहुत खुश हो गया।

4. (i) 

|      |        |          |         |
|------|--------|----------|---------|
| शब्द | विलोम  | शब्द     | विलोम   |
| अपना | पराया  | देव      | दानव    |
| नवीन | पुरातन | सम्मानित | अपमानित |
- (ii) 

|        |                |
|--------|----------------|
| शब्द   | पर्यायवाची     |
| इच्छा  | अभिलाषा, कामना |
| आदेश   | हुक्म, आज्ञा   |
| शिक्षक | अध्यापक, गुरु  |
- (iii) 

|       |                |
|-------|----------------|
| शब्द  | भाववाचक संज्ञा |
| सफेद  | सफेदी          |
| युवा  | यौवन           |
| हिंसक | हिंसकता        |
| जागना | जागरण          |

|                 |           |            |           |
|-----------------|-----------|------------|-----------|
| (iv) अशुद्ध रूप | शुद्ध रूप | अशुद्ध रूप | शुद्ध रूप |
| कवित्री         | कवयित्री  | आशीरवाद    | आशीर्वाद  |
| कृतग्य          | कृतज्ञ    | विदूशी     | विदूषी    |

(v) (i) चंपत होना भाग जाना

वाक्य प्रयोग पुलिस को आता देख चोर चंपत हो गए।

(ii) डींग हाँकना बढ़ा-चढ़ा कर कहना

वाक्य प्रयोग रवि को भाषा को कोई ज्ञान नहीं है। वह सिर्फ डींग हाँकता रहता है।

(vi) (क) प्राचीनकाल में लोग पर्णकुटी में रहते थे।

(ख) सुमन बीमार थी, इसलिए वह समारोह में नहीं जा सकी।

(ग) बच्चा आम तोड़ने के लिए वृक्ष पर चढ़ गया।

5. (i) 'उसके' शब्द का प्रयोग श्यामू के लिए किया गया है। उसके दुखी होने का कारण उसकी माँ की मृत्यु होना था। वह अपनी माँ से बहुत प्रेम करता था, इसलिए उसकी मृत्यु होने पर वह दुखी था।
- (ii) पतंग देखकर उसका हृदय खिल उठा था। वह पतंग लाने के लिए बहुत उत्सुक था, इसलिए उसने अपने पिता से पतंग माँगी।
- (iii) उसने (श्यामू) उस चीज (पतंग) का प्रबंध करने के लिए अपने पिता के कोट से पहले चवन्नी तथा दूसरी बार एक रुपया चुराया। उसके इस कार्य को हम अपराध कहेंगे, क्योंकि चोरी करना बुरी बात है। इस प्रकार पैसे चुराकर अपनी इच्छा को पूरा करना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है।
- (iv) विश्वेश्वर ने बालक के साथ बुरा व्यवहार किया। उसने क्रोध में आकर श्यामू को दो थप्पड़ मार दिए तथा उसकी पतंग फाड़ दी। उसके इस व्यवहार का कारण श्यामू द्वारा चोरी करना था। सच्चाई जानने के बाद उनकी स्थिति यह हुई कि वे हैरान होकर खड़े रह गए।
6. (i) 'उसके चित्रों' से तात्पर्य कहानी की पात्र चित्रा द्वारा बनाए गए चित्रों से है। चित्रा के बनाए गए भिखारिन और उसके दो अनाथ बच्चों के चित्र से उसकी ख्याति विदेशों में फैल गई।
- (ii) चित्रा धनी परिवार की इकलौती पुत्री तथा अरुणा की सहेली थी। उसके चरित्र की मुख्य विशेषता यह थी कि वह उच्चकोटि की चित्रकार थी। चित्रकारी में उसे दक्षता प्राप्त थी।
- (iii) अरुणा, चित्रा की सहेली तथा एक समाज सेविका थी। जब अरुणा को भिखारिन वाली घटना का पता चला, तो उसका हृदय उनके प्रति संवेदना से भर गया वह अत्यन्त भावुक हो गई। उसने भिखारिन के दोनों बच्चों को गोद लेकर उनके पालन-पोषण की जिम्मेदारी ले ली।
- (iv) चित्रकारिता तथा समाज सेवा में से हम समाज सेवा को अधिक उपयोगी मानते हैं, क्योंकि मानवता की सेवा ही सबसे बड़ी और सच्ची कला है। दुनिया की सारी कलाएँ इसके समक्ष निरर्थक और निराधार प्रतीत होती हैं। कहानी के दोनों पात्रों चित्रा और अरुणा में से अरुणा सच्ची समाज सेविका हैं, जो भिखारिन के दोनों बच्चों के प्रति संवेदना रखते हुए उनके पालन-पोषण की जिम्मेदारी उठाकर समाज सेवा का कार्य करती हैं।
7. (i) यह पंक्तियाँ गरीब बालक के संदर्भ में कही गई हैं। उस समय उसकी दयनीय स्थिति थी, वह काम की तलाश में दर-दर की ठोकें खा रहा था। वह नंगे पैर, नंगे सिर तथा एक मैली-सी कमीज पहने हुआ था।
- (ii) बालक ने अपने घर-परिवार के संबंध में यह बताया कि उसके कई भाई-बहन हैं। माँ तथा बाप भूखे रहते तथा रोते रहते हैं। वहाँ न काम है, न खाने की रोटी, इसलिए वह वहाँ से भाग आया।
- (iii) इस समय उस बालक के सामने काम की तलाश तथा गरीबी की समस्या थी। काम न होने के कारण उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। उसकी समस्या का हल नहीं हो पाया, क्योंकि लेखक तथा उसके मित्र ने गरीब बालक की कोई सहायता नहीं की तथा उसे ठण्ड में मरने के लिए छोड़कर वे स्वयं अपने कमरे में सोने के लिए चले गए।
- (iv) इस कहानी के माध्यम से लेखक ने हमें यह संदेश दिया है कि हमारी छोटी-सी मदद भी किसी की जान बचा सकती है, इसलिए हमें एक अच्छा इंसान बनकर परोपकारी होना चाहिए न कि सिर्फ अपने वर्गगत स्वार्थ की ओर ध्यान देना चाहिए। यदि कहानी में लोगों ने उस गरीब बालक की मदद की होती तो उसकी जान बचाई जा सकती थी तथा उसे समाज का एक जिम्मेदार नागरिक बनाया जा सकता था।
8. (i) प्रस्तुत पद्य में बाल श्रीकृष्ण अपनी माता यशोदा से ज़िद कर रहे हैं। वे चन्द्रमा रूपी खिलौने को प्राप्त करना चाहते हैं अर्थात् वे आकाश में चमकते हुए चाँद को देखकर उसे खिलौना समझ माता यशोदा से उसे लेने की ज़िद करते हैं।
- (ii) उनकी माता (नन्द की पत्नी) यशोदा हैं। वे अपने पुत्र को देखकर अत्यन्त आनंद का अनुभव कर रही हैं। बाल कृष्ण की बातें माता यशोदा में हर्ष का संचार कर रही हैं, जिस कारण वे प्रसन्न हो रही हैं।
- (iii) खिलौना न मिलने की स्थिति में बाल कृष्ण अपनी माँ को धमकियाँ दे रहे हैं कि यदि तुमने मुझे यह खिलौना नहीं दिलाया तो न तो मैं कुछ खाऊँगा और न ही मैं धौरी गाय का दूध पीऊँगा, न अपने बाल बँधवाऊँगा, न मोतियों की माला धारण करूँगा। मैं धरती पर जाकर लेट जाऊँगा और केवल नन्द बाबा का पुत्र कहलाऊँगा यशोदा माता का नहीं।



- (iv) रुठे हुए बालक को बहलाने के लिए माँ कहती है कि मैं तुम्हें एक बात बताती हूँ, उसे बलराम से मत कहना, मैं तेरा विवाह चंद्रमा से भी सुंदर दुल्हन से करवाऊँगी। बालक कृष्ण पर इस बात का यह प्रभाव पड़ा कि वे अत्यन्त खुश हो जाते हैं तथा उसी समय विवाह करने की बात कहते हैं। सूर की भक्ति भावना वात्सल्य और माधुर्य भाव से युक्ति है। उनकी भक्ति कृष्ण के लीला गान के रूप में उभरकर सामने आई है।

9. (i) 'भव' शब्द का अर्थ संसार है। कवि के अनुसार इस भव (संसार) में शांति इसलिए नहीं है, क्योंकि संसार में मनुष्य को समान रूप से न्याय का सुख नहीं मिल रहा है।  
 (ii) 'न्यायोचित' का अर्थ न्याय संगत, 'सम' का अर्थ समान, 'सुलभ' का अर्थ सरल तथा 'कोलाहल' का अर्थ शोर है।  
 (iii) 'शमित न होगा कोलाहल संघर्ष नहीं कम होगा' पंक्ति का भावार्थ है कि समानता के लिए मनुष्य का संघर्ष निरन्तर गतिशील अवस्था में ही चलता रहेगा वह कभी शान्त नहीं होगा। प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि उसको समान अवसर प्राप्त हो ताकि वह जीवन में आगे बढ़कर प्रगति कर सके, किंतु उसको वह अवसर नहीं मिल पाता और वह संघर्ष करता रहता है।  
 (iv) प्रस्तुत पंक्तियाँ दिनकर जी की 'स्वर्ग बना सकते हैं' प्रसिद्ध रचना से ली गई हैं। कविता का केंद्रीय भाव यह है कि धरती को तभी स्वर्ग बनाया जा सकता है जब धरती पर जन-जन का भेद समाप्त होगा तथा सभी को समान दृष्टि से देखा जाएगा। यदि ऐसा नहीं होता है तो समाज में सदैव अशांति तथा संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी, जिसके कारण मनुष्य की उन्नति का रास्ता अवरुद्ध हो जाएगा। अतः अशांति को मिटाकर हम अपने उन्नति के द्वार खोल सकते हैं।
10. (i) प्रस्तुत कविता देशप्रेम की भावना का परिचय देने वाली कविता है। इस कविता में कवि ने भारत भूमि की भौगोलिक विशेषताओं का वर्णन करने के साथ-साथ उसकी प्राकृतिक सुंदरता का भी बहुत ढंग से गुणगान किया है।  
 (ii) कवि ने भारत को युद्धभूमि और बुद्धभूमि इसलिए कहा है, क्योंकि भारत भूमि में कौरव-पांडव, राम-रावण युद्ध हुए हैं, जो धर्म की अधर्म पर विजय के प्रतीक थे, साथ ही इस भारत भूमि पर ही सारे जग को प्रेम, दया, अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाले गौतम बुद्ध का जन्म हुआ है।  
 (iii) प्रस्तुत कविता में जन्मभूमि की अनेक प्राकृतिक विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। जन्मभूमि कविता में भारत की पहाड़ियों में अनेक झरने बहते हैं, यहाँ की सुंदर झाड़ियों में रंग-बिरंगी चिड़ियों की चहचहाहटें सुनाई देती हैं। यहाँ घने आम के बगीचे में कोयल की मधुर तान गूँजती है तथा दक्षिण में मलय पर्वत से आने वाली सुगंधित हवा से तन-मन झूम उठता है।  
 (iv) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने भारत को राम, कृष्ण और गौतम बुद्ध जैसे महापुरुषों की भूमि कहा है। प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव यह है कि इस कविता में कवि ने भारत भूमि की विशेषताओं का वर्णन किया गया है, साथ ही प्राकृतिक सौंदर्य और महापुरुषों के वर्णन के माध्यम से स्पष्ट किया है कि ऐसी पवित्र भूमि पर प्रत्येक भारतवासी को गर्व करना चाहिए।
11. (i) उपर्युक्त कथन की वक्ता मीनू की बुआ जी हैं। मीनू की बुआ जी पुराने एवं घटिया विचारों वाली महिला हैं, जिनके कटु शब्द मीनू को आहत कर देते हैं।  
 (ii) वक्ता ने इसलिए कहा कि मीनू यह रस्म नहीं कर सकती, क्योंकि मीनू का विवाह नहीं हुआ था और विवाहित महिला ही यह रस्म कर सकती थी। यहाँ मीनू की बहन के विवाह के समय आरती उतारने की रस्म की बात हो रही है।  
 (iii) वक्ता की बात सुनकर मीनू उदास हो जाती है तथा माँ उसकी उदासी को समझते हुए कहती है कि आजकल कौन मानता है इन सब बातों को, मीनू ही सारी रस्में करेगी। अंत में मीनू द्वारा ही वह रस्म पूरी की गई थी, परंतु रस्म पूरी करने के बाद वह अपने कमरे में जाकर रोने लगती है। बुआ जी की कटु बातें उसे अंदर तक दुखी कर देती हैं।  
 (iv) 'एक अविवाहित स्त्री को समाज में उचित सम्मान नहीं मिलता' यह बात सत्य है। उपन्यास में अविवाहित मीनू को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है समाज में उसे हेय दृष्टि से देखा जाता है। उसे अपनी बहन के विवाह में होने वाली रस्में करने से रोका जाता है जोकि किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। अतः उसे समाज में वह सम्मान नहीं मिलता, जो मिलना चाहिए।
12. (i) अमित उपन्यास का प्रमुख पुरुष पात्र है, जो अपने माता-पिता का आज्ञाकारी पुत्र है। वह चाहकर भी मीनू से विवाह के लिए हाँ नहीं कर पाता, परंतु अंत में अपनी भूल सुधार लेता है। मीनू का हाथ माँगने वह मीनू के घर जाता है तथा उसी से विवाह करता है।  
 (ii) घर में विशेष चहल-पहल का कारण अमित के विवाह के लिए सरिता को देखने जाना था। घर के सभी सदस्य खुश थे। इस अवसर पर अमित उदास था। वह इस रिश्ते के लिए निरुत्साहित था उसे लग रहा था कि उसके माता-पिता कुछ पैसों के लिए उसे धनी घर की लड़की के हाथों बेचना रहे हैं।  
 (iii) मायाराम जी को स्वर्ग की अनुभूति धनीराम की कोठी देखकर हो रही थी। कोठी के लॉन में मलमल के समान बिछी घास व बेंत की रंग-बिरंगी कुर्सियाँ तथा फूलों के गमले कोठी की शोभा को बढ़ा रहे थे। उन्हें वहाँ स्वर्ग की अनुभूति इसलिए हो रही थी, क्योंकि उनके स्वागत के लिए विभिन्न प्रकार की मिठाइयाँ व फल रखे गए थे। वहाँ का वातावरण तथा वैभव उन्हें स्वर्ग की भाँति लग रहा था।  
 (iv) अमित और सरिता के बीच बातचीत का आरंभ हुआ तो अमित ने सरिता से उसकी पढ़ाई, शोक तथा काम से संबंधित प्रश्न पूछे। सरिता ने जो उत्तर दिए, उन्हें सुनकर अमित को काफी हैरानी हुई। सरिता पढ़ाई में तो कमजोर थी ही, उसे घर के काम भी नहीं आते थे। वह पूरी तरह से नौकरों पर ही निर्भर थी।

- 13.** (i) मनोहर राजो का चचेरा भाई था, जो फैक्ट्री में काम करते हुए अपाहिज हो गया था। वह मीनू के पास इसलिए आया था, क्योंकि मीनू का विवाह था, उसने सोचा कि शादी वाले घर में काम होगा तो वह भी कुछ काम कर देगा।
- (ii) उसकी (मनोहर) यह दशा फैक्ट्री में काम करते हुए एक दुर्घटना के कारण हो गई थी। एक दिन काम करते समय उसका पैर और हाथ की अंगुलियाँ मशीन में आने से कट गई थीं। इस कारण वह अपाहिज हो गया था।
- (iii) मीनू ने मन ही मन यह निश्चय किया कि वह किसी-न-किसी रूप से मनोहर की सहायता अवश्य करेगी, इसलिए मीनू संकल्प लेती है कि वह विवाह में होने वाले फिजूल के खर्चों में से पैसा बचाकर मनोहर की सहायता जरूर करेगी। इस प्रकार मीनू ने मनोहर के लिए पान की दुकान खुलवाकर उसकी सहायता की।
- (iv) मीनू के इस कार्य से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि विवाह आदि उत्सवों में होने वाले फिजूल खर्चों को कम करके उन पैसों से किसी असहाय व्यक्ति की सहायता की जा सकती है। हाँ, मैंने भी इस प्रकार से किसी की सहायता की है। दीपावली के अवसर पर पिताजी ने मुझे पटाखों के लिए 500 रुपये दिए, जिसमें से मैंने कुछ रुपयों से मिठाई खरीद कर फुटपाथ पर घूमने वाले असहाय व बेसहारा बच्चों में बाँट दी। यह कार्य करके मुझे आत्मिक संतुष्टि हुई।
- 14.** (i) प्रस्तुत कथन की वक्ता राजेश्वरी है, जो जीवनलाल की पत्नी तथा कमला की सास है। वह एक सरल हृदय वाली दयालु एवं ममतामयी माँ है। यह कथन जीवनलाल के दोहरे व्यवहार तथा उसकी लोभी प्रवृत्ति के कारण दहेज माँगने के संदर्भ में कहा गया है।
- (ii) 'अब भी आँखें नहीं खुली' कहने से वक्ता का अभिप्राय यह है कि तुम (जीवन-लाल) अब भी सच्चाई से अवगत नहीं हुए हो। जीवनलाल अपनी बहू कमला को दहेज पूरा न देने के कारण उसकी विदाई करने से मना कर देता है और अपनी बेटी गौरी की उसके ससुराल वालों के द्वारा विदाई न करने से आहत होकर उन्हें बुरे शब्द कहता है। इसी संदर्भ में उसकी पत्नी राजेश्वरी ने यह पंक्ति कही है।
- (iii) एकांकी के अंत में श्रोता जीवनलाल अपनी बहू कमला को विदा करने का फैसला लेता है, क्योंकि उसे अपनी गलती का अहसास हो जाता है कि जो व्यवहार वह अपनी बहू के साथ कर रहा है वह उचित नहीं है। अतः राजेश्वरी (पत्नी) के समझाने के बाद जीवनलाल प्रमोद से कमला को मायके ले जाने के लिए कह देता है।
- (iv) इस एकांकी से यह शिक्षा मिलती है कि हमें दहेज जैसी कुप्रथा का विरोध करना चाहिए तथा बेटी और बहू को समान समझना चाहिए। एकांकी में जीवनलाल अंत में इस सत्य से अवगत हो जाता है कि हमें दहेज के कारण बेटी तथा बहू में अंतर नहीं करना चाहिए तथा बहू को बेटी के समान ही समझना चाहिए।
- 15.** (i) प्रस्तुत कथन चारणी ने महाराणा लाखा से कहा है। चारणी को जब पता चलता है कि महाराणा लाखा ने बूँदी प्रदेश को पराजित करने की कठोर प्रतिज्ञा ली है तब वह महाराणा से निवेदन करने आती है कि वे बूँदी प्रदेश पर आक्रमण न करें।
- (ii) मेवाड़ को विपत्ति के दिनों में हाड़ाओं ने सहायता दी है। चारणी यह बात इसलिए याद दिलाती है, क्योंकि वह इस तथ्य से अवगत थी कि हाड़ा वंश वीर है और वे किसी की अधीनता स्वीकार नहीं करेंगे, जिस कारण राजपूतों के मध्य जो एकता का सूत्र बँधा हुआ है वह टूट जाएगा।
- (iii) चारणी ने महाराणा को अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का यह उपाय बताया कि वे बूँदी का नकली दुर्ग बनवाकर उस पर अपना ध्वज फहराकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लें। यह उपाय उचित नहीं था, क्योंकि इस उपाय के कारण एक वीर योद्धा (वीर सिंह) को अपने प्राणों का बलिदान देना पड़ा। अंत में महाराणा को अपने निर्णय एवं प्रतिज्ञा पर अफसोस होता है, जिसके कारण वीर सिंह जैसे सिपाही मारे गए।
- (iv) 'मातृभूमि का मान' राष्ट्रप्रेम की भावना को व्यक्त करती एकांकी है। प्रस्तुत एकांकी 'मातृभूमि का मान' में महाराणा लाखा मेवाड़ की शक्ति को संगठित करने के लिए बूँदी को मेवाड़ के अधीन करने की कोशिश करते हैं, परंतु बूँदी के शासक राव हेमू अधीनता स्वीकार नहीं करते। महाराणा लाखा बूँदी का नकली दुर्ग बनाकर उस पर अपना ध्वज फहराना चाहते हैं, लेकिन मेवाड़ की सेना का एक हाड़ा सिपाही वीर सिंह मातृभूमि का मान रखने के लिए महाराणा लाखा से लड़ते हुए शहीद हो जाता है। पूरे एकांकी में मातृभूमि के मान का महत्त्व बताया गया है। अतः शीर्षक उपयुक्त और प्रभावशाली के साथ-साथ सार्थक है।
- 16.** (i) प्रस्तुत कथन का वक्ता दादा जी (मूलराज) हैं। दादाजी एकांकी के सबसे वरिष्ठ पात्र हैं। 72वर्ष की आयु के पश्चात् भी उनका शरीर अभी तक झुका नहीं है और उनकी सफेद दाढ़ी वट की लम्बी-लम्बी जटाओं की भाँति उनकी नाभि तक पहुँच चुकी है। वे साहसी, परिश्रम, निष्ठावान और दूरदर्शी हैं, उनके इन्हीं गुणों के कारण आज तक उनका परिवार संयुक्त है।
- (ii) श्रोता ने वक्ता को छोटी बहू के संबंध में यह बताया कि छोटी बहू को अपने मायके का घमण्ड जरूरत से अधिक है और वह हमारे घर को घृणा की दृष्टि से देखती है, जिसके कारण घर की महिलाएँ उसे पसंद नहीं करती हैं।
- (iii) वक्ता ने परिवार की एकता बनाए रखने का यह उपाय निकाला कि छोटी बहू का कोई अपमान नहीं करेगा। वह आयु में हमसे छोटी अवश्य है, परंतु बुद्धि और योग्यता में हमसे कहीं अधिक बड़ी है, इसलिए हमें उसकी योग्यताओं का लाभ उठाना चाहिए तथा उसका आदर करना चाहिए। यदि कोई छोटी बहू का अनादर करे तो वे अपना नाता इस घर से सदा के लिए तोड़ लेंगे। इस उपाय में वे पूर्णतः सफल हुए तथा सभी छोटी बहू का आदर करने लगे।
- (iv) प्रस्तुत एकांकी एक संयुक्त परिवार के बनते-बिगड़ते आपसी संबंधों तथा परंपरावादी व आधुनिक विचारों के बीच उत्पन्न जटिलाओं पर आधारित है। इस एकांकी लेखन का उद्देश्य संयुक्त परिवार का महत्त्व बताना रहा है। इस एकांकी में एकल परिवार की अपेक्षा संयुक्त परिवार को श्रेष्ठ बताया गया है।

# भीड़ में खोया आदमी

लीलाधर शर्मा पर्वतीय

## लेखक परिचय

प्रसिद्ध साहित्यकार एवं स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी 'लीलाधर शर्मा पर्वतीय' का जन्म 1 जनवरी, 1919 को अल्मोड़ा, (उत्तर प्रदेश) में एक कृषक परिवार में हुआ था। अपने विद्यार्थी जीवन में प्रेमचंद के उपन्यासों से प्रभावित होकर वे कांग्रेस के सदस्य बन गए। उन्होंने काशी विद्यापीठ वाराणसी से 'शास्त्री' की परीक्षा भी उत्तीर्ण की।

स्वाधीन भारत में उन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया था। वे कई वर्षों तक उत्तर प्रदेश सरकार की हिंदी समिति के सचिव रहे तथा उपसूचना निदेशक के पद से वर्ष 1979 में सेवानिवृत्त हुए।

लीलाधर जी की भाषा सरल, सुबोध एवं सहज है। उनकी रचनाएँ कथा, रिपोर्ताज, निबंध आदि शैली में लिखी गई हैं। उनकी एक रचना 'भारतीय चरित कोश' भारत के कला, साहित्य, विज्ञान, उद्योग, खेलकूद, पत्रकारिता, मनोरंजन आदि क्षेत्रों के 2000 महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की जानकारी देती है। इसके अतिरिक्त उनकी कुछ मुख्य रचनाएँ हैं—भारतीय संस्कृति कोश, संयुक्त राष्ट्र संघ, स्वतंत्रता की पूर्व संध्या, कांग्रेस के सौ बरस और उत्तर प्रदेश की भूमिका, भारत के प्रमुख तीर्थ तथा छोटे कद का बड़ा आदमी आदि। उनकी दो महत्त्वपूर्ण रचनाएँ संयुक्त राष्ट्र संघ एवं स्वतंत्रता की पूर्व संध्या उत्तर प्रदेश सरकार से पुरस्कृत हैं।

हिंदी में उन्होंने राष्ट्रीय विषयों को अनूठे ढंग से जोड़ा है। हिंदी के विकास में उनका योगदान अतुलनीय है।

## कहानी का परिचय

'भीड़ में खोया आदमी' निबंध में लेखक ने वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या 'जनसंख्या वृद्धि' और 'पर्यावरण प्रदूषण' के संबंध में विचार व्यक्त किए हैं। लेखक ने अपने मित्र श्यामला कांत के परिवार के माध्यम से बढ़ती हुई जनसंख्या से उत्पन्न होने वाले संकटों और समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करवाया है। हमारे देश में बढ़ती हुई जनसंख्या बहुत बड़ी चिंता का विषय बनता जा रहा है।

यातायात के साधनों की कमी, आवास की कमी, भोजन की कमी, स्वास्थ्य तथा चिकित्सा सुविधाओं की कमी, उपभोक्ता सेवाओं की कमी आदि को जनसंख्या वृद्धि बढ़ावा दे रही है। इसके कारण घरों, दफ्तरों, राशन की लाइनों, स्टेशनों, सड़कों आदि पर लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही है जिससे अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। यदि समय रहते जनसंख्या वृद्धि को रोकने के उपाय नहीं किए गए, तो वह दिन दूर नहीं जब हम स्वयं इस भीड़ तथा इससे उत्पन्न समस्याओं में खो जाएँगे। देश की खुशहाली और प्रगति के लिए आवश्यक है कि जनसंख्या वृद्धि की समस्या का समय रहते ही उचित समाधान किया जाए।

इसके लिए लोगों को स्वयं जागरूक होना होगा तथा अपनी जिम्मेदारियों के प्रति सचेत होना होगा तभी इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकेगा।

## पात्र-परिचय

### बाबू श्यामला कांत

बाबू श्यामला कांत लेखक के अभिन्न मित्र हैं। वह स्वभाव से सीधे-सादे, परिश्रमी, ईमानदार, किंतु निजी जीवन में बहुत ही लापरवाह किस्म के व्यक्ति हैं। उनके सात बच्चे हैं। बड़ा परिवार होने के कारण वे सुख-सुविधाओं से वंचित हैं।

### दीनानाथ

दीनानाथ बाबू श्यामला कांत का बड़ा पुत्र है जिसे पढ़ाई पूरी किए दो वर्ष हो गए हैं, परंतु वह अभी भी नौकरी की तलाश में भटक रहा है। वह एक पढ़े-लिखे बेरोजगार युवा का प्रतिनिधित्व करता है।

## बाबू श्यामला कांत की पत्नी

बाबू श्यामला कांत की पत्नी बहुत दुबली-पतली महिला थी। बीमारी के कारण उसका चेहरा पीला पड़ गया था। इस प्रकार वह शारीरिक रूप से कमजोर तथा बीमार थी।

### लेखक

लेखक कहानी का वक्ता है, जो एक चिंतनशील व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। वह समस्या को देखकर प्रश्न करने तथा उनका समाधान खोजने के लिए तर्कशील बना रहता है।

## कहानी का सार

### लेखक द्वारा मित्र का परिचय

लेखक ने अपने मित्र बाबू श्यामला कांत के विषय में बताया है कि वह सीधे-सादे, परिश्रमी तथा ईमानदार व्यक्ति हैं, किंतु अपनी निजी जिंदगी के प्रति बहुत लापरवाह हैं। उन्होंने परिवार नियोजन को नहीं अपनाया है। वे लेखक से आयु में छोटे हैं, फिर भी उनके सात बच्चे हैं। अपने इसी मित्र की पुत्री के विवाह में सम्मिलित होने के लिए लेखक को हरिद्वार जाना था।

### लेखक द्वारा गाड़ी में बिना आरक्षण के यात्रा करना

लेखक ने हरिद्वार जाने वाली गाड़ी में आरक्षण करवाना चाहा, किंतु भीड़ अधिक होने के कारण उन्हें आरक्षण नहीं मिला। लेखक का जाना आवश्यक था इसलिए उन्होंने बिना आरक्षण के ही जाने का निर्णय किया। जब गाड़ी आई तो गाड़ी में बहुत भीड़ थी। प्लेटफॉर्म पर गाड़ी में चढ़ने वाले लोगों की भीड़ में धक्का-मुक्की होने लगी थी। लेखक को चढ़ने के लिए कुली की सहायता लेनी पड़ी। कुली ने खिड़की से ही लेखक को गाड़ी के भीतर धकेल दिया।

### गाड़ी में जबरदस्त भीड़ होना

लेखक को लक्सर स्टेशन से दूसरी गाड़ी लेनी थी, किंतु गाड़ी में भीड़ अधिक होने के कारण उसे खिड़की से ही कूदकर बाहर आना पड़ा। गाड़ी से उतरकर लेखक देखता है कि ट्रेन की पूरी छत लोगों की भीड़ से भरी हुई है। यह देखकर लेखक सोचता है कि लोग अपने प्राणों को संकट में डालकर ट्रेन की छत पर यात्रा करने पर क्यों मजबूर हुए? इन लोगों को रेल के नियमों, व्यवस्था और अनुशासन का ध्यान क्यों नहीं है?

### हरिद्वार स्टेशन पर लेखक को दीनानाथ द्वारा लेने आना

लेखक को हरिद्वार स्टेशन पर श्यामला कांत का बड़ा पुत्र दीनानाथ लेने आया। उसे पढ़ाई पूरी किए दो वर्ष हो गए, परंतु अभी भी वह नौकरी की तलाश में भटक रहा है। उसे रोजगार कार्यालय के अफसर द्वारा नौकरी पाने की आशा न रखने की हिदायत दी जाती है, क्योंकि उसी की योग्यता के हजारों व्यक्ति पहले से ही नौकरी के लिए लाइन में लगे हुए हैं। यह बात लेखक को सोचने पर मजबूर करती है कि जब छोटे शहर का यह हाल है, तो बड़े शहरों में तो बेरोजगारों की कितनी भीड़ भटक रही होगी।

## श्यामला कांत बाबू के छोटे से कमरे को देख

### लेखक का दम घुटना

लेखक जब अपने मित्र श्यामला कांत बाबू के घर पहुँचा, तो छोटे से मकान में भरे हुए सामान और बच्चों की भीड़ देखकर उनका दम घुटने लगा। लेखक ने श्यामला कांत जी से पूछा कि क्या तुम्हारे पास यही दो कमरे हैं? तब श्यामला कांत बाबू बोले कि दो वर्ष भटकने के बाद उन्हें सिर छिपाने के लिए यह छत मिली है। लेखक सोचता है कि शहर पहले की तुलना में कई गुना फैल चुके हैं। नई कॉलोनियाँ बन गई हैं फिर भी लोग मकानों के लिए भटक रहे हैं। जनसंख्या बढ़ रही है, परंतु मकान और खाद्यान्न कम हो रहे हैं।

### श्यामला कांत बाबू की पत्नी का आगमन

लेखक श्यामला कांत बाबू से बातचीत कर रहा था। तभी उनकी पत्नी जलपान लेकर आई। उनके पीछे उनकी तीन छोटी पुत्रियाँ और साड़ी का पल्लू पकड़े दो छोटे पुत्र थे। उनकी पत्नी की दुर्बल काया और पीले चेहरे को देखकर लेखक ने उनसे पूछा कि क्या डॉक्टर को दिखाकर वे अपना इलाज करवा रही हैं? मित्र की पत्नी ने बताया कि वह डॉक्टर को दिखाने गई थीं, परंतु आजकल अस्पतालों में इतनी भीड़ होती है कि डॉक्टर भी मरीजों को ठीक से नहीं देख पाते। मित्र की पत्नी बोली कि तबीयत ठीक न रहने के कारण वह अपनी बेटी के विवाह पर पहने जाने वाले कपड़े दर्जी से सिलवाना चाहती थीं, किंतु दर्जी की दुकान में भी भीड़ होने के कारण हर दर्जी ने पहले से सिलने आए कपड़ों का ढेर दिखाकर उनके कपड़े न सिल पाने की अपनी मजबूरी व्यक्त की। दुकानें पहले से कहीं अधिक खुल गई हैं, परंतु ग्राहकों की बढ़ती भीड़ के कारण अब वे भी कम पड़ रही हैं।

### श्यामला कांत बाबू के दूसरे बेटे का झुँझलाना

श्यामला कांत बाबू का दूसरा बेटा सुमंत थका-हारा झुँझलाता हुआ आया और अपनी माँ से एक कप चाय बनाने के लिए कहता है, क्योंकि वह थक गया था। उसका सारा दिन राशन की दुकान पर लाइन में लगे निकल गया, फिर भी पूरा सामान नहीं मिला।

### लेखक द्वारा इन सब समस्याओं के कारण के विषय में सोचना

लेखक सोच में पड़ जाता है कि सुख-सुविधाओं का विस्तार होने के पश्चात् भी लोगों की आवश्यकताएँ पूरी क्यों नहीं हो पा रही हैं? जहाँ देखो भीड़-ही-भीड़ है। यह भीड़ क्यों बढ़ती जाती है? क्या आदमी स्वयं इसके लिए उत्तरदायी नहीं है?

### भीड़ का समस्या बन जाना

लेखक विचार करता है कि घर में बच्चों के पालन-पोषण, रहन-सहन और शिक्षा की यदि पूरी व्यवस्था न हो, तो बच्चों की यह भीड़ दुःखदायी बन समस्या के रूप में सामने आ जाती है। बीमारी कुपोषण, गंदे और संकीर्ण मकानों के दूषित वातावरण से होती है। यदि सीमित परिवार हो, स्वच्छ जलवायु हो और खाने के लिए भरपूर भोजन सामग्री हो, तो बीमारी से बचा जा सकता है।

### बढ़ती जनसंख्या भीड़ का मुख्य कारण

लेखक कहता है कि सब जगह बढ़ रही भीड़ का कारण बढ़ती हुई जनसंख्या है। बढ़ती जनसंख्या के कारण अनुशासन नहीं रहता, दुर्घटनाएँ बढ़ती हैं। समय, शक्ति और धन व्यय करके भी व्यक्ति के कार्य सिद्ध नहीं हो पाते। वह स्वयं भी भीड़ में खो जाता है। लेखक को अपने मित्र को इस भीड़ का रहस्य

बताने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे स्वयं इस विपदा को झेल रहे हैं। अंत में लेखक इस समस्या के समाधान खोजने के विषय में कहता है कि यदि समय रहते हमारा देश जागृत नहीं हुआ, तो वह दिन दूर नहीं जब वह इस भीड़ और इससे पैदा होने वाली समस्याओं में पूरी तरह खो जाएँगे।

## कहानी का भाव/उद्देश्य/शीर्षक की सार्थकता

प्रस्तुत निबंध 'भीड़ में खोया आदमी' के माध्यम से लेखक ने वर्तमान समय की एक बड़ी समस्या बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण तथा उसके समाधान पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। लेखक ने बढ़ी हुई जनसंख्या से उत्पन्न होने वाली समस्याओं की ओर प्रकाश डालते हुए घरों, दफ्तरों, राशन की लाइनों, स्टेशनों, सड़कों आदि का उदाहरण दिया है। बढ़ती हुई जनसंख्या के प्रति जनता के मन में जागरूकता लाने के उद्देश्य से इस निबंध की रचना की गई। लेखक ने जनसंख्या वृद्धि की रोकथाम के लिए परिवार को सीमित करने का संदेश दिया है। इस प्रकार प्रस्तुत निबंध देश की ज्वलंत समस्या जनसंख्या वृद्धि पर आधारित है। आज व्यक्ति अपनी शक्ति एवं धन व्यय करने के बाद भी अपना काम पूरा नहीं कर पाता है, क्योंकि बढ़ती हुई भीड़ में आदमी का अपना अस्तित्व खो जाता है। यह दिखाने में लेखक पूर्णतः सफल रहा है। अतः इसका शीर्षक 'भीड़ में खोया आदमी' पूर्णतः सार्थक है।

## शब्दार्थ

शब्द-अर्थ पाठ्य-पुस्तक साहित्य सागर में दिए गए भाग संक्षिप्त कहानियों के पृष्ठों के अनुसार हैं।

पृष्ठ सं. 51 **नियंत्रण**—वश में रखना (keep in control), **अग्रसर**—आगे बढ़ा हुआ (proceeded), **अनियोजित**—जो क्रम में न हो (unorganised), **लेखा-जोखा**—हिसाब-किताब (book-keeping), **संपन्न**—धनी (rich), **लापरवाह**—जिसे किसी चीज की चिंता न हो (who doesn't care), **आरक्षण**—रिजर्व करना (To reserve), **कतार**—पंक्ति (line), **धक्कम-धक्का**—धक्का देने की क्रिया (push action)।

पृष्ठ सं. 52 **भीषण**—भयानक, **डरावना** (scary), **तलाश**—खोज (search), **दर्ज**—लिखा हुआ, अंकित (written, marked), **दूसमंठास**—जबरदस्ती प्रवेश कर लेने की क्रिया (act of forced entry)।

पृष्ठ सं. 53 **दुष्परिणाम**—कुपरिणाम, कुफल (misfortune), **खाद्यान्न**—खाने योग्य अन्न (edible food), **स्तब्ध**—सुन्न, निश्चेष्ट (motionless), **जाहिर**—जो स्पष्ट रूप से सबके सामने हो (which is clearly in front of everyone), **ग्राहक**—खरीददार (customer)।

पृष्ठ सं. 54 **उत्तरदायी**—जवाब देने वाला, जिम्मेदार (responsible), **दुःखदायी**—पीड़ादायक (painfull), **संकीर्ण**—सँकरा, तंग (narrow), **कचहरी**—अदालत (court)।

पृष्ठ सं. 55 **विपदा**—दुःख, विपत्ति (calamity), **चेता**—चेतना/जागना (alert)।

## प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'भीड़ में खोया आदमी' किस समस्या को ध्यान में रखकर लिखा गया निबंध है?

- (a) जनसंख्या वृद्धि (b) पर्यावरण प्रदूषण  
(c) 'a' और 'b' दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (c) 'a' और 'b' दोनों

2. बाबू श्यामला कांत के अनियोजित परिवार का लेखा-जोखा हमें परिवार के लिए किस दिशा में सोचने पर मजबूर करता है?

- (a) एकल परिवार (b) संयुक्त परिवार  
(c) सुखी व संपन्न परिवार (d) स्वावलंबी परिवार

उत्तर (c) सुखी व संपन्न परिवार

3. बाबू श्यामला कांत जी सीधे-सादे, परिश्रमी व ईमानदार होते हुए भी निजी जिंदगी में कैसे व्यक्ति थे?

- (a) सावधान (b) लापरवाह  
(c) सचेत (d) अंतर्मुखी

उत्तर (b) लापरवाह

4. बाबू श्यामला कांत की पुत्री के विवाह में सम्मिलित होने के लिए लेखक को कहाँ जाना था?

- (a) दिल्ली (b) हरिद्वार  
(c) मुंबई (d) अल्मोड़ा

उत्तर (b) हरिद्वार

5. लेखक हरिद्वार जाने के लिए गाड़ी में सीट के आरक्षण हेतु कितने दिन पूर्व स्टेशन गए?

- (a) एक दिन पूर्व (b) सात दिन पूर्व  
(c) पंद्रह दिन पूर्व (d) बीस दिन पूर्व

उत्तर (c) पंद्रह दिन पूर्व

6. लेखक को हरिद्वार जाने के लिए ट्रेन में खिड़की के रास्ते से अंदर जाना पड़ा, क्योंकि

- (a) ट्रेन के अंदर बहुत अधिक भीड़ थी  
(b) स्टेशन पर धक्कम-धक्का हो रही थी  
(c) 'a' और 'b' दोनों  
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर (c) 'a' और 'b' दोनों

7. क्या देखकर लेखक ने सोचा कि इन लोगों को रेल के नियम, व्यवस्था तथा अनुशासन का ध्यान नहीं है?

- (a) रेल में अत्यधिक भीड़ देखकर  
(b) ट्रेन की छत पर बैठे यात्रियों को देखकर



(c) प्लेटफॉर्म की धक्कम-धक्का देखकर

(d) प्लेटफॉर्म पर भीड़ देखकर

उत्तर (b) ट्रेन की छत पर बैठे यात्रियों को देखकर

8. हरिद्वार स्टेशन पर लेखक को लेने कौन आया था?

(a) श्यामला कांत जी

(b) श्यामला कांत जी का बड़ा पुत्र दीनानाथ

(c) श्यामला कांत जी का छोटा पुत्र

(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर (b) श्यामला कांत जी का बड़ा पुत्र दीनानाथ

9. लेखक ने श्यामला कांत बाबू के घर पहुँचने पर उनसे क्या पूछा?

(a) क्या तुम्हारे पास यही दो कमरे हैं?

(b) तुम्हारा मकान इतना छोटा क्यों है?

(c) तुम्हारी लड़की की बारात कहाँ से आएगी?

(d) तुमने बड़ा मकान क्यों नहीं लिया?

उत्तर (a) क्या तुम्हारे पास यही दो कमरे हैं?

10. देश की बढ़ती हुई आबादी का क्या दुष्परिणाम है?

(a) जनसंख्या बढ़ रही है

(b) मकान घट रहे हैं

(c) खाद्यान्न घट रहे हैं

(d) ये सभी

उत्तर (d) ये सभी

11. लेखक श्यामला कांत जी की पत्नी की किस स्थिति को देखकर स्तब्ध रह गया?

(a) उसकी दुर्बल काया

(b) उसका पीला चेहरा

(c) 'a' और 'b' दोनों

(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (c) 'a' और 'b' दोनों

12. "पहले ग्राहकों का दुकानों पर स्वागत होता था, परंतु अब चिरौरी-सी करनी पड़ती है। क्यों?"

(a) ग्राहकों की बढ़ती हुई भीड़ के कारण

(b) दुकानदारों की संपन्नता के कारण

(c) ग्राहकों के दुर्व्यवहार के कारण

(d) दुकानदारों के दुर्व्यवहार के कारण

उत्तर (a) ग्राहकों की बढ़ती हुई भीड़ के कारण

13. प्रत्येक स्थान पर बढ़ती हुई भीड़ का उत्तरदायी कौन है?

(a) व्यक्ति स्वयं

(b) सरकार

(c) गरीब वर्ग

(d) अमीर वर्ग

उत्तर (a) व्यक्ति स्वयं

14. घर में बच्चों की भीड़ हमें तब अच्छी लगती है जब उनके

(a) पालन-पोषण की सुव्यवस्था हो

(b) रहन-सहन की सुव्यवस्था हो

(c) शिक्षा-दीक्षा की सुव्यवस्था हो

(d) ये सभी

उत्तर (d) ये सभी

15. अस्पतालों में होने वाली भीड़ का लेखक क्या कारण मानता है?

(a) बीमारी

(b) कुपोषण

(c) गंदे व संकीर्ण मकानों के दूषित वातावरण

(d) उपरोक्त सभी

उत्तर (d) उपरोक्त सभी

## गद्यांश पर आधारित प्रश्न

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. मेरे एक अभिन्न मित्र हैं—बाबू श्यामला कांत। सीधे-सादे, परिश्रमी, ईमानदार, किंतु निजी जिंदगी में बड़े लापरवाह। आयु में मुझसे छोटे हैं, पर अपने घर में बच्चों की फौज खड़ी कर ली है। पृष्ठ सं. 51

(क) लेखक ने अपने मित्र को लापरवाह क्यों कहा है?

उत्तर लेखक ने अपने मित्र को लापरवाह इसलिए कहा है, क्योंकि वे परिवार नियोजन के प्रति सतर्क नहीं थे। लेखक के मित्र श्यामला कांत की बहुत-सी संतानें थीं। बड़ा परिवार होने के कारण वे सुख-सुविधाओं से वंचित थे। इसलिए लेखक ने उन्हें सीधे-सादे, परिश्रमी तथा ईमानदार होने के बाद भी निजी जीवन में लापरवाह कहा है।

(ख) 'बच्चों की फौज खड़ी करने' से लेखक का क्या आशय है?

उत्तर 'बच्चों की फौज खड़ी करने' से लेखक का आशय है—किसी व्यक्ति की दो से अधिक संतान होना या परिवार नियोजन को न अपनाना। परिवार नियोजन की जानकारी न होने पर परिवार को बढ़ाना जनसंख्या वृद्धि में योगदान देना है।

(ग) आपके अनुसार क्या सच में अधिक संतान निजी जीवन में लापरवाही है?

उत्तर अधिक संतान निजी जीवन में लापरवाही ही है, क्योंकि संतान अधिक होने के कारण प्रत्येक बच्चे का लालन-पालन उचित प्रकार से नहीं हो पाता। परिवार बड़ा होने के कारण सभी सदस्यों को आवश्यक सुख-सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं हो पातीं जिससे उनके जीवन में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

(घ) 'भीड़ में खोया आदमी' पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक ने किस समस्या को उजागर किया है?

उत्तर 'भीड़ में खोया आदमी' पाठ के आधार पर लेखक ने जनसंख्या वृद्धि की समस्या को उजागर किया है। इसके माध्यम से लेखक ने वर्तमान समय में बढ़ती 'जनसंख्या के कारण तथा उसके समाधान' पर विचार व्यक्त किया है। लेखक के अनुसार जनसंख्या वृद्धि के कारण आज व्यक्ति अपनी शक्ति एवं धन व्यय करने पर भी सुविधाएँ प्राप्त नहीं कर पा रहा है।

2. पिछली गर्मियों में मुझे उनकी पुत्री के विवाह में सम्मिलित होने के लिए हरिद्वार जाना था। पंद्रह दिन पूर्व आरक्षण के लिए स्टेशन पर गया तो वहाँ पहले से ही लोगों की लंबी कतार खड़ी थी। पृष्ठ सं. 51

(क) लेखक कहाँ जाना चाहता था और क्यों?

उत्तर लेखक विवाह में सम्मिलित होने के लिए हरिद्वार जाना चाहता था, क्योंकि उसके करीबी मित्र श्यामला कांत की बेटी का विवाह था जो हरिद्वार में रहते थे।

(ख) यात्रा से 15 दिन पूर्व स्टेशन पर आरक्षण के लिए जाने के बाद भी लेखक को आरक्षण क्यों नहीं मिला?

उत्तर यात्रा से 15 दिन पूर्व स्टेशन पर आरक्षण के लिए जाने के बाद भी लेखक को आरक्षण नहीं मिला, क्योंकि वहाँ पहले से ही लोगों की लंबी लाइन लगी थी। काफी देर प्रतीक्षा करने के बाद जब लेखक की बारी आई तो लेखक को ज्ञात हुआ कि सभी गाड़ियाँ पहले से ही भरी हुई हैं किसी में भी खाली सीट नहीं है।



(ग) आरक्षण लेते समय घंटों लंबी लाइन में खड़े होने का लेखक को क्या फल मिला?

**उत्तर** आरक्षण लेते समय घंटों लंबी लाइन में खड़े होने के पश्चात् जब लेखक का नंबर आया, तो उसे आरक्षण नहीं मिला क्योंकि उससे पहले नंबर पर ही सभी गाड़ियों में सभी सीटों पर आरक्षण पूरा हो चुका था। लेखक का जाना आवश्यक था, इसलिए उसने ने बिना आरक्षण के ही ट्रेन में यात्रा करने का निर्णय किया।

(घ) लेखक के किन प्रयासों से यह पता चलता है कि श्यामला कांत उसके करीबी मित्र थे?

**उत्तर** लेखक अपने मित्र की पुत्री की शादी में हरिद्वार जाने के लिए 15 दिन पूर्व ही आरक्षण लेने जाते हैं, परंतु उन्हें कोई आरक्षण वाली सीट नहीं मिलती है। इसके पश्चात् भी वह भीड़ वाली रेलगाड़ी में बिना आरक्षण के जाते हैं। उस गाड़ी में इतनी भीड़ होती है कि उसके दरवाजे से प्रवेश करना बहुत कठिन था, फिर भी कुली की सहायता से वे खिड़की से रेलगाड़ी में प्रवेश करते हैं। लेखक अपने मित्र की पुत्री की शादी में जाने के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी शादी में पहुँच जाते हैं। अतः उनके इन प्रयासों से स्पष्ट होता है कि वह उसके करीबी मित्र थे।

**3.** जब गाड़ी आई तो क्या देखता हूँ कि उसके अंदर तिल रखने को भी जगह नहीं और प्लेटफॉर्म पर चढ़ने वालों की भीड़ जबरदस्त धक्कम-धक्का करने में लगी है। मेरे पास सामान बहुत कम था, फिर भी कुली की सहायता लेनी पड़ी। **पृष्ठ सं. 51**

(क) स्टेशन पर रेलगाड़ी के आने का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

**उत्तर** स्टेशन पर जब रेलगाड़ी आई, तो प्लेटफॉर्म पर लोगों की बहुत भीड़ थी। रेलगाड़ी भी ठसा-ठस भरी हुई थी। उसमें पैर रखने की भी जगह नहीं थी। प्लेटफॉर्म पर रेलगाड़ी में चढ़ने वाले लोगों की भीड़ में जबरदस्त धक्का-मुक्की हो रही थी।

(ख) गाड़ी एवं स्टेशन पर अत्यधिक भीड़ होने पर भी लेखक हरिद्वार जाने में कैसे सफल हुआ?

**उत्तर** गाड़ी एवं स्टेशन पर अत्यधिक भीड़ होने पर लेखक ने भीड़ को देखते हुए कुली कर लिया था तथा कुली ने खिड़की से लेखक को गाड़ी में चढ़ा दिया, जिससे वह हरिद्वार जाने में सफल हो सका।

(ग) सामान कम होने पर भी लेखक को कुली क्यों करना पड़ा?

**उत्तर** लेखक जब बिना आरक्षण के स्टेशन पर हरिद्वार जाने के लिए पहुँचा, तो वहाँ वह देखता है कि प्लेटफॉर्म एवं गाड़ी में अत्यधिक भीड़ है। वह गाड़ी में भीड़ के कारण अकेले चढ़ने में समर्थ नहीं था, इसलिए सामान कम होने पर भी उसने कुली कर लिया और कुली ने उसे खिड़की से रेलगाड़ी में जाने में सहायता की।

(घ) रेलगाड़ी की खिड़की से बाहर निकलने के बाद लेखक ने क्या देखा तथा उस पर किस प्रकार प्रतिक्रिया व्यक्त की?

**उत्तर** रेलगाड़ी की खिड़की से बाहर निकलने के बाद लेखक ने देखा कि पूरी गाड़ी की छत यात्रियों से भरी है। लेखक ने इस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि लोग अपने प्राण जोखिम में डालकर रेलगाड़ी की छत पर यात्रा करने को मजबूर क्यों हैं? अतः लेखक के अनुसार लोगों को इस तरह अपनी जान जोखिम में डालकर रेलगाड़ी की छतों पर यात्रा नहीं करनी चाहिए।

**4.** “भाई नाम तो तुम्हारा लिख लेता हूँ पर जल्दी नौकरी पाने की कोई आशा मत करना। तुम्हारी योग्यता के हजारों व्यक्ति पहले से ही इस कार्यालय में नाम दर्ज करा चुके हैं।” **पृष्ठ सं. 52**

(क) प्रस्तुत कथन का श्रोता कौन है? उसका परिचय दीजिए।

**उत्तर** प्रस्तुत कथन का श्रोता दीनानाथ है। वह श्यामला कांत का बड़ा बेटा है। उसे पढ़ाई पूरी किए हुए दो वर्ष हो गए हैं, किंतु अभी तक नौकरी की तलाश में भटक रहा है। वह एक पढ़े-लिखे बेरोजगार युवा का प्रतिनिधित्व करता है।

(ख) श्यामला कांत का पुत्र रोजगार कार्यालय में क्यों गया था?

**उत्तर** श्यामला कांत का पुत्र रोजगार कार्यालय में अपना नाम दर्ज करवाने गया था, ताकि उसे योग्यतानुसार नौकरी मिल जाए, क्योंकि दीनानाथ को पढ़ाई पूरी किए पूरे दो वर्ष बीत गए थे, परंतु अभी तक उसे कोई रोजगार नहीं मिल था।

(ग) उपर्युक्त वाक्य सरकारी अफसर ने दीनानाथ को क्यों कहा होगा?

**उत्तर** सरकारी अफसर ने उक्त वाक्य दीनानाथ को इसलिए कहा होगा, क्योंकि वहाँ पहले से ही बेरोजगार लोगों की संख्या बहुत थी, अनेक युवा पढ़े-लिखे होकर भी बेरोजगार घूम रहे थे। दीनानाथ से पहले उनके समान योग्यता रखने वाले कई लोग कार्यालय में अपना नाम दर्ज करवा चुके थे। बेरोजगार लोगों के अनुपात में काम कम था। इसी तथ्य से परिचित होने के कारण ही सरकारी अफसर ने दीनानाथ को उपर्युक्त वाक्य कहा था।

(घ) बेरोजगारी जनसंख्या वृद्धि के कारण उत्पन्न हुई है। स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर** बेरोजगारी जनसंख्या वृद्धि के कारण उत्पन्न हुई है, क्योंकि जनसंख्या वृद्धि के कारण उपलब्ध सभी सुविधाएँ कम पड़ रही हैं। साधन सीमित हैं तथा लोग अधिक हो गए हैं। ठीक उसी प्रकार एक नौकरी के लिए ढेरों आवेदन किए जाते हैं। देश में बहुत-से पढ़े-लिखे युवा बेरोजगार हैं। उनके पास उनकी योग्यता के अनुरूप नौकरी नहीं है। अतः हम कह सकते हैं कि बेरोजगारी के कई कारणों में से एक कारण जनसंख्या वृद्धि भी है।

**5.** घर पहुँचा तो छोटे से मकान में सामान की ठूसमठास और बच्चों की भीड़ देखकर मेरा दम घुटने लगा। मैंने श्यामला कांत बाबू से पूछा—“क्या तुम्हारे पास यही दो कमरे हैं?” **पृष्ठ सं. 52**

(क) लेखक ने अपने मित्र से कमरे के विषय में प्रश्न क्यों पूछा?

**उत्तर** लेखक ने अपने मित्र से कमरे के विषय में प्रश्न इसलिए पूछा, क्योंकि लेखक के मित्र के घर में केवल दो ही कमरे थे और उसमें रहने वाले सदस्यों की संख्या अधिक थी। लेखक के अनुसार इतने बड़े परिवार के लिए वह घर छोटा था।

(ख) अपने मित्र के घर पहुँचकर लेखक का दम क्यों घुटने लगा था?

**उत्तर** अपने मित्र के घर पहुँचकर लेखक का दम इसलिए घुटने लगा था, क्योंकि मित्र का घर बहुत छोटा था। उसमें केवल दो ही कमरे थे और उनमें सामान ठूस-ठूसकर भरा हुआ था। अतः अत्यधिक सामान और साथ ही बच्चों की भीड़ के कारण इतने छोटे मकान में लेखक को असुविधा लग रही थी।

(ग) लेखक के मित्र ने अच्छा घर न मिलने के विषय में क्या बताया?

**उत्तर** लेखक के मित्र ने अच्छा घर न मिलने के विषय में उससे कहा कि वह दो वर्ष पूर्व इस शहर में आया था। उसी समय से वह इस शहर में मकान ढूँढ़ने का प्रयास कर रहा है। पूरे शहर का चक्कर काटकर उसके जूते घिस गए, परंतु कोई अच्छा मकान नहीं मिला। अंत में हारकर उसे यह दो कमरे वाला मकान ही लेना पड़ा।

(घ) शहर पहले की तुलना में क्यों फैलते जा रहे हैं?

**उत्तर** शहर पहले की तुलना में फैलते जा रहे हैं, क्योंकि जनसंख्या बढ़ने के कारण लोगों के पास रहने के लिए स्थान की कमी हो गई है। लोग मकान की तलाश में इधर-उधर भटक रहे हैं। लोगों को उनकी आवश्यकता के अनुसार वस्तुएँ नहीं मिल रही हैं। दूर-दूर तक नई कॉलोनी बन गई हैं, जिसके परिणामस्वरूप शहरों का विस्तार हो रहा है।

6. उसी समय श्यामला जी की पत्नी जलपान लेकर आई। उनके पीछे उनकी तीन छोटी पुत्रियाँ और पल्ला पकड़े दो छोटे पुत्र। मैं उनकी दुर्बल काया और पीला चेहरा देखकर स्तब्ध रह गया। **पृष्ठ सं. 53**

(क) लेखक के मित्र की पत्नी ने ऐसा क्यों कहा कि पहले ग्राहक का स्वागत होता था, अब ग्राहक को भी चिरौरी करनी पड़ती है?

**उत्तर** 'पहले ग्राहक का स्वागत होता था, अब ग्राहक को भी चिरौरी करनी पड़ती है' लेखक के मित्र की पत्नी ने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि लेखक के मित्र की पत्नी को शादी के लिए कपड़े सिलवाने थे, लेकिन दर्जी ने पहले से आए कपड़ों का ढेर दिखाकर कपड़े सिलाने से मना कर दिया था।

(ख) लेखक को मित्र की पत्नी कैसी लग रही थी?

**उत्तर** लेखक को मित्र की पत्नी काफी दुबली-पतली लग रही थी। उनका चेहरा पीला पड़ गया था जिस कारण वह देखने में बहुत बीमार लग रही थी। इसलिए लेखक ने उनसे स्वास्थ्य के बारे में पूछा था।

(ग) लेखक के मित्र की पत्नी ने अपना इलाज न करवाने का क्या कारण बताया है?

**उत्तर** लेखक के मित्र की पत्नी ने अपना इलाज न करवाने के पीछे यह कारण बताया है कि उनका परिवार बहुत बड़ा है। प्रतिदिन कोई-न-कोई बीमार रहता है। उसे उनका ध्यान रखना पड़ता है। इसके अतिरिक्त अस्पतालों में भी भीड़ रहती है। घंटों इंतजार के बाद नंबर आता है। भीड़ के कारण डॉक्टर मरीजों को ठीक से नहीं देख पाते। अतः वे इलाज ठीक से नहीं कर पाते हैं। ऐसा लगता है कि सारा शहर ही अस्पताल में उमड़ आया है। इतनी भीड़ के कारण उनका इलाज नहीं हो पाया।

(घ) बढ़ती जनसंख्या ने देश के अस्पतालों पर क्या प्रभाव डाले हैं?

**उत्तर** देश की बढ़ती जनसंख्या ने अस्पतालों पर बहुत बुरा प्रभाव डाला है। बीमारों की तुलना में अस्पतालों की संख्या कम है। जितने अस्पताल हैं उनमें भी डॉक्टरों की संख्या बहुत कम है। लोगों को इलाज के लिए कई-कई दिन तक इंतजार करना पड़ता है। रोगियों की संख्या अधिक होने के कारण डॉक्टर भी ठीक से इलाज नहीं कर पाते हैं। अस्पतालों को देखने से ऐसा लगता है कि रोगी तथा उसके संबंधी डॉक्टर को मधुमक्खी के छत्ते की तरह घेरे हुए हैं। इसलिए डॉक्टर को समय नहीं मिल पाता और वह रोगी का ठीक से इलाज नहीं कर पाते।

7. घर में बच्चों की भीड़ है। यह भीड़ भले ही हमें अच्छी लगती हो, लेकिन जब तक बच्चों के पालन-पोषण की, रहन-सहन की, शिक्षा-दीक्षा की पूरी सुव्यवस्था न हो यह भीड़ दुःखदायी बन जाती है। **पृष्ठ सं. 54**

(क) लेखक ने भीड़ बढ़ने का उत्तरदायी मनुष्य को क्यों कहा है?

**उत्तर** लेखक ने भीड़ बढ़ने का उत्तरदायी मनुष्य को इसलिए कहा है, क्योंकि लेखक के अनुसार पहले से अधिक संख्या में मकान एवं दुकान होने पर भी लोगों की आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो पा रही हैं। पहले से अधिक रोजगार होने के बावजूद कितने लोग बेरोजगार हैं। इन सबका मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि ही है, जिसके लिए मनुष्य स्वयं उत्तरदायी है।

(ख) लेखक के अनुसार बच्चों की भीड़ दुःखदायी कब बन जाती है?

**उत्तर** लेखक के अनुसार बच्चों की भीड़ दुःखदायी तब बन जाती है, जब सीमित आय में जीवन-निर्वाह अत्यंत कठिन हो जाता है, क्योंकि अधिक संतान होने पर उनका लालन-पालन ठीक से नहीं हो पाता। परिवार का प्रत्येक सदस्य आवश्यक सुख-सुविधाओं से भी वंचित रह जाता है जिसके परिणामस्वरूप बच्चों की भीड़ समस्या बन जाती है।

(ग) लेखक के अनुसार बीमारी किस कारण होती है? तथा उससे किस प्रकार बचा जा सकता है?

**उत्तर** लेखक के अनुसार बीमारी कुपोषण से गंदे और संकीर्ण मकानों, आवास स्थलों के दूषित वातावरण से होती है। लोगों के पास जनसंख्या वृद्धि के कारण मूलभूत आवश्यकताओं का अभाव है जिसके कारण उन्हें अच्छा भोजन एवं स्वच्छ वातावरण नहीं मिल पा रहा है, परिणामस्वरूप वह बीमार होते जा रहे हैं। इससे बचने के लिए लेखक कहना चाहते हैं कि यदि लोगों के परिवार सीमित हों, उन्हें स्वच्छ जलवायु मिले, स्वच्छ वातावरण मिले तथा भोजन पौष्टिक व भरपूर मिले, तो वे बीमारी से बच सकते हैं।

(घ) 'भीड़ में खोया आदमी' पाठ के आधार पर उसके शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर** 'भीड़ में खोया आदमी' पाठ में लेखक ने जनसंख्या वृद्धि के कारण होने वाली समस्या को स्पष्ट किया है। इस पाठ में लेखक ने भीड़ के माध्यम से जनसंख्या को ही संबोधित किया है। उनके अनुसार बढ़ती जनसंख्या के कारण घर से लेकर बाहर सभी जगह समस्या उत्पन्न हो जाती है। मकान, दुकान, भोजन, रोजगार, विद्यालय व अस्पताल आदि भी जनसंख्या के अनुसार पर्याप्त नहीं हैं। परिश्रम या धन खर्च करके भी लोग किसी सुविधा का लाभ उठा नहीं पा रहे हैं। यहाँ तक कि लोगों की मूल आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं हो पा रही हैं। उसका अस्तित्व भीड़ में कहीं खोता जा रहा है। वह विकास एवं प्रगति से वंचित हो रहा है। अतः हम कह सकते हैं कि 'भीड़ में खोया आदमी' शीर्षक सार्थक है।

## लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखक के मित्र श्यामला कांत जी ने अपने निजी जीवन में क्या लापरवाही की? इसका क्या परिणाम हुआ?

**उत्तर** लेखक के मित्र श्यामला कांत जी ने अपने निजी जीवन में परिवार नियोजन न अपनाने की लापरवाही की। श्यामला कांत जी अपने निजी जीवन में सीधे-सादे, परिश्रमी तथा ईमानदार व्यक्ति थे, परंतु वे परिवार नियोजन के विषय में सतर्क नहीं थे।

उनके चार लड़के तथा तीन लड़कियाँ थीं। इतने बड़े परिवार का पालन-पोषण करना आसान नहीं था। इतने बड़े परिवार के साथ उन्हें दो छोटे-छोटे कमरों के मकान में ही रहना पड़ता था। परिवार के सदस्यों को सुख-सुविधा के पूरे साधन भी उपलब्ध नहीं थे। पत्नी भी शारीरिक रूप से कमजोर हो गई थी। ये सब श्यामला कांत जी की निजी जीवन में की गई लापरवाही का ही परिणाम था।

2. लेखक कहाँ जा रहा था? उसे ट्रेन में खिड़की से क्यों अंदर जाना पड़ा?

**उत्तर** लेखक अपने मित्र श्यामला कांत जी की लड़की की शादी में शामिल होने के लिए हरिद्वार जा रहे थे। पंद्रह दिन पहले उन्होंने ट्रेन में आरक्षण कराना चाहा, किंतु सभी ट्रेनों में सीटें भर चुकी थीं, इस

कारण उन्हें आरक्षण नहीं मिला। वे बिना आरक्षण के ही हरिद्वार जाने को विवश थे क्योंकि उनके घनिष्ठ मित्र की लड़की की शादी थी। लेखक जब हरिद्वार जाने के लिए स्टेशन पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहाँ बहुत भीड़ है। ट्रेन के अंदर भी बहुत ज्यादा भीड़ थी। ट्रेन में चढ़ने के लिए भी यात्रियों में धक्कम-धक्का हो रही थी इसलिए कम सामान होते हुए भी उन्होंने कुली की सहायता लेकर ट्रेन की खिड़की से ही अंदर जाना पड़ा।

3. दीनानाथ को अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद दो वर्ष बीत जाने पर भी नौकरी क्यों नहीं मिली थी।

**उत्तर** दीनानाथ जैसी योग्यता वाले हजारों व्यक्ति नौकरी के उम्मीदवार थे। इस कठिन प्रतिस्पर्धा के कारण दीनानाथ को नौकरी नहीं मिली थी। वह जब रोजगार कार्यालय में नौकरी की तलाश में अपना रजिस्ट्रेशन करवाने पहुँचे तो वहाँ देखा कि पढ़े-लिखे बेरोजगारों की बड़ी लाइन थी।

पूरा दिन इंतजार करने के बाद जब उनका नंबर आया तो अफसर ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि तुम्हारा रजिस्ट्रेशन तो मैं कर लेता हूँ परंतु तुम्हारी जैसी योग्यताधारी व्यक्तियों की बहुत भीड़ है। इसलिए तुम नौकरी मिलने की उम्मीद बिल्कुल मत करना। लगातार जनसंख्या वृद्धि का यही दुष्परिणाम था कि पढ़े-लिखे, ऊँची-ऊँची डिग्री प्राप्त लोग भी बेरोजगार घूम रहे थे।

4. दूर-दूर तक नई कॉलोनियाँ बनने के बावजूद भी श्यामला कांत जी दो कमरों के छोटे से मकान में क्यों रह रहे थे?

**उत्तर** दूर-दूर तक नई कॉलोनियाँ बनने के बावजूद भी श्यामला कांत जी दो कमरों के छोटे से मकान में रह रहे थे, क्योंकि दिनों-दिन बढ़ती हुई आबादी के कारण नए-नए मकान बनने के बावजूद उनकी कमी थी। श्यामला कांत जी दो वर्ष पूर्व हरिद्वार में रहने आए थे। बहुत तलाश करने के बाद भी उन्हें कोई अच्छा मकान नहीं मिला। मकान की तलाश करते-करते जब वे परेशान हो गए तो उन्होंने गली के अंदर स्थित छोटे से मकान को ही अपना बसेरा बनाया। हरिद्वार शहर का विस्तार पहले की तुलना में कई गुना हो गया था। अनेक नई कॉलोनियाँ भी बस गई थीं फिर भी जनसंख्या के लगातार बढ़ते जाने के कारण मकानों की उपलब्धता कम ही रही। यह बढ़ती हुई आबादी का ही दुष्परिणाम था।

5. श्यामला कांत जी की पत्नी को देखकर लेखक को ऐसा क्यों लगा कि वे अस्वस्थ हैं?

**उत्तर** श्यामला कांत जी की पत्नी का दुर्बल शरीर तथा चेहरे का पीला रंग देखकर लेखक को लगा कि वे बीमार हैं इसलिए उन्होंने उनसे पूछा कि आप कब से बीमार हैं तथा क्या आप डॉक्टर को दिखाकर अपना इलाज नहीं करा रही हैं। इस पर उन्होंने यही बताया कि आजकल

अस्पतालों में बहुत अधिक भीड़ रहती है। मरीज डॉक्टर के चारों ओर मधुमक्खी के छत्ते की तरह डॉक्टर को घेरे हुए रहते हैं।

ऐसे में डॉक्टर साहब भी मरीज को अधिक समय नहीं दे पाते तथा उनका इलाज ठीक ढंग से नहीं कर पाते। ऐसे में यदि मैं डॉक्टर को दिखाने जाऊँ तो भी क्या फायदा होगा। वैसे ही अस्पतालों की भीड़ देखकर ऐसा महसूस होता है कि पूरे का पूरा शहर ही अस्पताल में आ गया है।

6. लेखक को किन बातों से जनसंख्या वृद्धि का अहसास हुआ?

**उत्तर** लेखक जब अपने घर से अपने मित्र श्यामला कांत जी की लड़की की शादी में सम्मिलित होने के लिए हरिद्वार गए तब अनेक घटनाओं से परिचित होकर उन्हें लगा कि जनसंख्या वृद्धि तीव्रगति से हो रही है। इस पर नियंत्रण आवश्यक है। सर्वप्रथम तो उन्हें हरिद्वार जाने वाली ट्रेन में पंद्रह दिन पहले भी आरक्षण नहीं मिला।

सभी ट्रेनों में सीटें भर चुकी थीं। इसके पश्चात् जब लेखक हरिद्वार जाने के लिए स्टेशन पहुँचे तो वहाँ भीड़ बहुत अधिक थी। यहाँ तक कि धक्कम-धक्का हो रही थी। उन्हें ट्रेन में खिड़की से प्रविष्ट होना पड़ा। लक्कर में गाड़ी बदलते समय उन्होंने ट्रेन की छत पर यात्रियों की भारी भीड़ देखी।

हरिद्वार पहुँचने पर दीनानाथ से उन्हें उच्च योग्यताधारी लोगों के भी बेरोजगार होने का पता चला। श्यामला कांत जी के छोटे लड़के सुमंत से उसे राशन की दुकान पर अत्यधिक भीड़ के कारण पूरा राशन न मिलने के बारे में पता चला। श्यामला कांत जी की पत्नी से उन्हें अस्पतालों व दर्जी के यहाँ भी भीड़ होने की बात मालूम हुई। अंत में लेखक के मन में यही विचार आया कि जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण आवश्यक है, नहीं तो आदमी भीड़ में ही खो जाएगा और इसका उत्तरदायित्व स्वयं मनुष्य पर ही होगा।

7. लेखक द्वारा लिखा गया निबंध 'भीड़ में खोया आदमी' के पीछे क्या उद्देश्य है?

**उत्तर** लेखक ने बढ़ती हुई जनसंख्या के प्रति लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से 'भीड़ में खोया आदमी' निबंध की रचना की है। इस निबंध में उन्होंने जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए परिवार को सीमित रखने का भी सुझाव दिया है।

लेखक ने श्यामला कांत जी के परिवार के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि परिवार को सीमित न रखने के कारण उन्हें हर सुख-सुविधा को प्राप्त करने में कठिनाई होती है। उन्हें हर जगह भीड़ का सामना करना पड़ता है चाहे वह दर्जी की दुकान हो अथवा राशन की दुकान हो, चाहे अस्पताल हो या फिर नौकरी के लिए रजिस्ट्रेशन कराना हो। भीड़ के कारण व्यक्ति अपनी शक्ति एवं धन व्यय करने के बाद भी अपनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाता। आज जैसे भीड़ में उसका अस्तित्व खोता जा रहा है। इसलिए बढ़ती हुई जनसंख्या पर लगाम लगाना अति आवश्यक है जिसका समाधान स्वयं व्यक्ति ही जागरूक रहकर कर सकता है।

# अभ्यास प्रश्नावली

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- बीमारी से बचने का उपाय क्या है?  
(a) सीमित परिवार (b) स्वच्छ जलवायु  
(c) खाने के लिए पर्याप्त भोजन (d) ये सभी
- भीड़ में खोया आदमी बढ़ती हुई जनसंख्या का दुष्परिणाम किस बात को देखकर समझता है?  
(a) सार्वजनिक स्थानों पर नियम व व्यवस्था का पालन न होना  
(b) समस्या, शक्ति व धन व्यय करने पर भी कार्य पूरा न होना  
(c) स्वयं के भीड़ में खो जाना  
(d) उपरोक्त सभी
- लेखक के मित्र श्यामला कांत जी को क्या बताने की आवश्यकता नहीं है?  
(a) भीड़ का रहस्य (b) लेखक के आने का रहस्य  
(c) पत्नी की बीमारी का रहस्य (d) छोटे मकान का रहस्य
- लेखक देश को क्या चेतावनी देना चाहता है?  
(a) जनसंख्या नियंत्रक की (b) पर्यावरण की शुद्धता की  
(c) सुशासन की (d) देश में अनुशासन रखने की
- जनसंख्या वृद्धि के कारण व्यक्ति किस प्रकार प्रभावित होता है?  
(a) व्यक्ति का अस्तित्व भीड़ में खो जाता है  
(b) व्यक्ति विकास से वंचित हो जाता है  
(c) व्यक्ति की प्रगति बाधित हो जाती है  
(d) उपरोक्त सभी

## उत्तर

1. (d)      2. (d)      3. (a)      4. (a)      5. (d)

## गद्यांश पर आधारित प्रश्न

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- पहले ग्राहक का स्वागत होता था, अब उसे भी चिरौरी-सी करनी पड़ती है फिर भी समय पर काम नहीं होता। दुकानें पहले से कहीं अधिक खुल गई हैं, लेकिन ग्राहकों की भीड़ के लिए वे अब भी कम पड़ रही हैं।  
(क) प्रस्तुत कथन किसने, किससे तथा किस संदर्भ में कहा था?  
(ख) चिरौरी-करने से क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।  
(ग) अधिक दुकानें खुल जाने पर भी ग्राहकों की भीड़ कम होने का नाम क्यों नहीं ले रही? कारण सहित बताइए।  
(घ) दर्जी द्वारा अपनी किस मजबूरी को अभिव्यक्त किया गया और क्यों?
- अस्पतालों में आजकल रोगी और उनके संबंधी मधुमक्खी के छत्ते की तरह डॉक्टर को घेरे रहते हैं। वह भी अच्छी तरह किस-किस को देखें। आजकल तो ऐसा लगता है, मानो पूरा शहर ही अस्पताल में उमड़ आया है। समझ में नहीं आता, ऐसा भी क्यों है?  
(क) उपर्युक्त कथन किस अवसर पर तथा किसके द्वारा कहे गए?  
(ख) परिवार के लोगों का अस्वस्थ होने का क्या कारण हो सकता है?  
(ग) स्वस्थ, सुखी तथा संपन्न पारिवारिक जीवन के लिए क्या होना आवश्यक होता है? कारण सहित बताइए।  
(घ) प्रस्तुत निबंध के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश दिया है?

3. जहाँ देखिए भीड़ है। यह भीड़ क्यों बढ़ती जाती है? क्या आदमी स्वयं इसके लिए उत्तरदायी नहीं है? घर में बच्चों की भीड़ है। यह भीड़ भले ही हमें अच्छी लगती हो, लेकिन जब तक बच्चों के पालन-पोषण की, रहन-सहन की, शिक्षा-दीक्षा की पूरी सुव्यवस्था न हो, यह भीड़ दुःखदायी बन जाती है।
- (क) भीड़ बढ़ने का मुख्य कारण क्या माना गया है?
- (ख) लेखक के अनुसार भीड़ बढ़ने के लिए कौन उत्तरदायी है और क्यों?
- (ग) भीड़ की समस्या के समाधान के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त कीजिए।
- (घ) 'भीड़ में खोया आदमी' निबंध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

### लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग सौ शब्दों में दीजिए।

1. लेखक ने बिना आरक्षण ही हरिद्वार जाने का निर्णय क्यों लिया?
2. लेखक का अपने मित्र श्यामला कांत जी के घर पहुँचते ही दम क्यों घुटने लगा?
3. लेखक ने बीमार होने के पीछे क्या कारण ढूँढा तथा उसका क्या समाधान बताया?





# Allinone®

संपूर्ण अध्ययन | संपूर्ण अभ्यास | संपूर्ण मूल्यांकन

**ICSE नमूना प्रश्न-पत्र**  
**सेमेस्टर I & II**

---

**ICSE सॉल्व्ड प्रश्न-पत्र**  
**सेमेस्टर I**



# ICSE

## नमूना प्रश्न-पत्र

हिंदी

कक्षा 10 (सेमेस्टर I) की परीक्षा के लिए  
CISCE द्वारा जारी नवीनतम् नमूना प्रश्न-पत्र

### निर्देश

- खंड (क) अनिवार्य है।
- खंड (ख) से केवल किन्हीं दो पाठ्य-पुस्तकों (जिन्हें आपने पढ़ा है) का उत्तर देना है।
- प्रश्नों के निर्धारित अंक उनके सम्मुख कोष्ठक में दिए गए हैं।
- प्रारंभ के 10 मिनट छात्रों के प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।

अनुक्रमांक

|  |  |  |  |  |  |  |
|--|--|--|--|--|--|--|
|  |  |  |  |  |  |  |
|--|--|--|--|--|--|--|

निर्धारित समय : 90 मिनट  
अधिकतम अंक : 40

### खंड (क)

- I. नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए (10)

प्रातःकाल प्रकृति की शोभा निराली होती है। सूर्य की सुनहरी किरणों के पड़ने से प्रत्येक वस्तु सुनहर-सी लगने लगती है। हरी-भरी घास पर ओस की बूँदें ऐसी प्रतीत होती हैं मानो सुन्दर चमकीले मोती हों। पेड़ों की चोटियों को छूती हुई सूर्य की किरणें अद्भुत शोभा प्रदान करती हैं। पर्वत शिखर स्वर्ण रेखा से खचित प्रतीत होते हैं। चारों ओर एक स्वर्गीय आभा, एक अलौकिक शोभा होती है। बाग-बगीचों में फूल मुस्कुराने लगते हैं। सरोवर में कमलों ने उनींदी पलकें खोल डाली। पशु अपने बच्चों को प्यार से पुकारने लगे। पक्षियों ने कलरव गाना आरंभ कर दिया। प्रातःकाल की शोभा का स्वर्गीय आनंद सभी ले रहे हैं। यह शोभा निराली है। यह विकास की किरण है। यह मन में आशा और उमंग भर रही है।

- हरी घास पर मोती से क्या चमकते हैं? (1)  
(क) वर्षा की बूँदें (ख) रक्त की बूँदें (ग) ओस की बूँदें (घ) मोती
- पर्वत शिखर कैसे प्रतीत होते हैं? (1)  
(क) स्वर्ण रेखा से खचित (ख) काले रंग से खचित  
(ग) बादलों से गिरे हुए (घ) पेड़-पौधों से भरे हुए
- चारों ओर कैसी शोभा है? (1)  
(क) अलौकिक (ख) रहस्यमई (ग) लौकिक (घ) चमत्कारी
- प्रातःकाल की शोभा किसकी किरण है? (1)  
(क) विनाश की (ख) विकास की (ग) स्वास्थ्य की (घ) प्रगति की
- मन में क्या भर जाता है? (1)  
(क) दुःख और आलस (ख) असंतोष (ग) आशा और उमंग (घ) करुणा

6. प्रातःकाल में पशु क्या करते हैं? (1)  
 (क) भागने लगते हैं (ख) गाना गाने लगते हैं  
 (ग) अपने बच्चों को प्यार से पुकारने लगते हैं (घ) चिल्लाने लगते हैं
7. यह शोभा ..... है। सही शब्द भरो। (1)  
 (क) निराली (ख) मतवाली (ग) अनोखी (घ) खुशहाली
8. 'अद्भुत' शब्द का अर्थ बताइए (1)  
 (क) अनोखा (ख) अच्छा (ग) मतवाला (घ) अधूरा
9. पक्षियों ने कलरव कब आरंभ किया? (1)  
 (क) प्रातःकाल में (ख) संध्या काल में  
 (ग) दोपहर में (घ) रात में
10. 'उनींदी' शब्द का अर्थ है (1)  
 (क) नींद से भरी हुई (ख) तरोताजा (ग) नींद न आना (घ) जाग जाना

## II. निम्नलिखित प्रश्नों के निर्देशानुसार सही विकल्प चुनकर लिखिए (10)

1. विलोम शब्द लिखें (1)  
 'अंतरंग' का विलोम बताइए  
 (क) बहिरंग (ख) काला रंग (ग) संगीत (घ) रंगीन
2. पर्यायवाची बताइए (1)  
 'अनुराग' का पर्यायवाची बताइए  
 (क) प्रेम-ममता (ख) राग-विराग  
 (ग) आदर-बिरादर (घ) नेह-प्रेम
3. भाववाचक संज्ञा बताइए (1)  
 'उड़ना' की भाववाचक संज्ञा बताइए  
 (क) चढ़ना (ख) उड़ान (ग) पढ़ना (घ) पंख फैलाना
4. शब्दों को शुद्ध करें (1)  
 'रमायना' शुद्ध करें  
 (क) रामायण (ख) रामयण (ग) रामायना (घ) रामाय
5. मुहावरे का अर्थ बताइए (1)  
 'गले का हार' अर्थ बताइए  
 (क) बहुत बुरी है (ख) बहुत प्रिय (ग) लालच होना (घ) बहुत कष्ट देना
6. निर्देशानुसार वाक्य शुद्ध करें (1)  
 मुसाफिर धर्मशाला में विश्राम करते हैं (भूतकाल में बदलें)  
 (क) मुसाफिरों ने धर्मशाला में विश्राम किया (ख) मुसाफिर धर्मशाला में विश्राम करने जाएँगे  
 (ग) मुसाफिर धर्मशाला में विश्राम करेंगे (घ) धर्मशाला में मुसाफिर विश्राम करेंगे
7. विशेषण बनाइए (1)  
 'अर्थ' का विशेषण बताइए  
 (क) अर्थी (ख) अंकित (ग) आर्थिक (घ) अधर्म
8. तद्भव शब्द बताइए (1)  
 'दाधि' शब्द का तद्भव शब्द बताइए  
 (क) दही (ख) दूध (ग) मटका (घ) मक्खन
9. अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द लिखें (1)  
 जो कम बोलता हो  
 (क) वाचाल (ख) मितव्ययी (ग) मितभाषी (घ) बातूनी
10. वचन बदलें (1)  
 तारा  
 (क) तारों (ख) तारी (ग) तारे (घ) सितारे

## खंड (ख)

## III. संक्षिप्त कहानियों पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए (10)

1. श्यामू की माँ कौन थी? (1)  
(क) उमा (ख) सुखिया (ग) दासी (घ) काकी
2. घर में कोहराम क्यों मचा हुआ था? (1)  
(क) काकी की मृत्यु के कारण (ख) बच्चे की मृत्यु के कारण  
(ग) दासी की मृत्यु के कारण (घ) सुखिया की मृत्यु के कारण
3. श्यामू को किसने बताया था कि उसकी माँ भगवान के घर गई है? (1)  
(क) उसके दोस्तों ने (ख) अबोध बालकों ने  
(ग) दासी ने (घ) सुखिया ने
4. आकाश में उड़ती पतंग देखकर श्यामू को कैसे लगा? (1)  
(क) खुश हुआ (ख) दुःखी हुआ (ग) आनंदित हुआ (घ) व्याकुल हुआ
5. बाबू जगत सिंह पेशे से क्या थे? (1)  
(क) डॉक्टर (ख) इंजीनियर (ग) वकील (घ) अध्यापक
6. रमजान कौन था? (1)  
(क) चौकीदार (ख) जमादार (ग) हवलदार (घ) नौकर
7. यज्ञ बेचने के लिए सेठ जी कहाँ गए? (1)  
(क) कुंदनपुर (ख) फूलपुर (ग) कुंदन नगर (घ) सीतापुर
8. हालदार साहब कस्बे से पहली बार गुजरते समय कहाँ रुके? (1)  
(क) चौराहे पर पान खाने (ख) विद्यालय के सामने  
(ग) हलवाई की दुकान पर (घ) मूर्ति को देखने
9. मूर्ति किस चीज की बनी थी? (1)  
(क) सफेद पत्थर की (ख) काले पत्थर की  
(ग) मिट्टी की (घ) संगमरमर की
10. मूर्ति में नेताजी कैसे लग रहे थे? (1)  
(क) सुंदर और वृद्ध (ख) सुंदर, मासूम और कमसिन  
(ग) कुरूप (घ) आक्रमक फौजी

## IV. पद्य भाग पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए (10)

1. कबीर दास जी किस काल के कवि थे? (1)  
(क) आदिकाल (ख) भक्ति काल (ग) रीतिकाल (घ) आधुनिक काल
2. कबीरदास जी की भाषा कौन-सी थी? (1)  
(क) अवधि (ख) ब्रज (ग) पंचमेल खिचड़ी (घ) फारसी
3. 'मैं' का क्या अर्थ है? (1)  
(क) अपना (ख) अहंकार (ग) संकोच (घ) मेरा
4. कबीर दास जी के अनुसार ईश्वर का निवास कहाँ होता है? (1)  
(क) खग में (ख) मृग में (ग) मानव में (घ) हृदय में
5. सभी को क्या सुहावना लगता है? (1)  
(क) कौवे की बोली (ख) कोयल की बोली  
(ग) सियार की बोली (घ) कौवे का रंग
6. 'बायरि' का अर्थ बताइए (1)  
(क) बाहर (ख) हवा (ग) अंदर (घ) पत्तियाँ

7. धर्मराज कौन है? (1)  
 (क) सत्यवती के पुत्र (ख) गांधारी के पुत्र  
 (ग) कुंती के पुत्र (घ) धृतराष्ट्र के पुत्र
8. 'भव' का अर्थ बताइए (1)  
 (क) भावना (ख) मूल्य  
 (ग) संसार (घ) संकट
9. श्रीकृष्ण ने गीता किसे सुनाई थी? (1)  
 (क) सहदेव को (ख) नकुल को  
 (ग) अर्जुन को (घ) भीम को
10. श्री राम के माता-पिता का क्या नाम है? (1)  
 (क) कुंती तथा पांडु (ख) माता यशोदा तथा नंद बाबा  
 (ग) माता कौशल्या तथा राजा दशरथ (घ) माता सुमित्रा तथा राजा दशरथ

**V. उपन्यास पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए (10)**

1. मीनू कौन है? (1)  
 (क) मायाराम जी की बेटी (ख) धनीमल की बेटी  
 (ग) दयाराम जी की बेटी (घ) दीपक की बहन
2. मीनू ने किसकी आँखों पर अपने हाथ रख दिए? (1)  
 (क) आशा की (ख) माया की  
 (ग) नीलिमा की (घ) मधु की
3. अमित और उसका परिवार मीरापुर क्यों गए थे? (1)  
 (क) नीलिमा को देखने (ख) मीनू को देखने  
 (ग) सरिता को देखने (घ) आशा को देखने
4. मीनू ने M.A. की परीक्षा किस श्रेणी में पास की? (1)  
 (क) द्वितीय श्रेणी (ख) तृतीय श्रेणी  
 (ग) प्रथम श्रेणी (घ) चतुर्थ श्रेणी
5. मीनू को किस नृत्य में निपुणता मिली थी? (1)  
 (क) भरतनाट्यम (ख) कुचिपुड़ी  
 (ग) कथक (घ) लावणी
6. मीनू ने नीलिमा को उपहार में क्या दिया? (1)  
 (क) किताब (ख) साड़ी  
 (ग) दीवार घड़ी (घ) झुमके
7. निमंत्रण पत्र मीनू के हॉस्टल कौन लेकर आया था? (1)  
 (क) सरिता (ख) नीलिमा  
 (ग) मधु (घ) अशोक
8. मीनू के मधुर गीत की प्रशंसा किसने की? (1)  
 (क) अशोक ने (ख) सरिता ने  
 (ग) मधु ने (घ) अमित ने
9. टेलीग्राम में क्या संदेश था? (1)  
 (क) माता जी बीमार हैं (ख) पिताजी बीमार हैं  
 (ग) नीलिमा बीमार है (घ) आशा की शादी तय हो गई
10. पिताजी को देखने कार से कौन आया था? (1)  
 (क) मीनू की मामी-मामा (ख) मीनू की नानी-नाना  
 (ग) मीनू की चाची-चाचा (घ) मीनू की बुआ-फूफा



## VI. एकांकी पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए

(10)

1. जीवनलाल कौन था? (1)  
 (क) राजेश्वरी का पति (ख) विमला का पति  
 (ग) प्रमोद का पिता (घ) कमला का पति
2. प्रमोद कौन था? (1)  
 (क) कमला का पति (ख) राजेश्वरी का पति  
 (ग) जीवनलाल का बेटा (घ) इनमें से कोई नहीं
3. कमला को मायके ले जाने कौन आया था? (1)  
 (क) रमेश (ख) प्रमोद  
 (ग) जीवनलाल (घ) राजेश्वरी
4. "हम गौने में आपकी हर माँग पूरी करेंगे" किसने कहा? (1)  
 (क) प्रमोद ने (ख) रमेश ने  
 (ग) मोहन ने (घ) राजेश ने
5. ऐसी वीर जाति को अपने अधीन करने की इच्छा करना ही ..... का चिह्न है। (1)  
 (क) देश-भक्ति (ख) प्रेम और स्नेह  
 (ग) अहंकार (घ) पागलपन
6. .... ने अपना बलिदान देकर उन्हें सोचने पर विवश कर दिया कि बूँदी पर विजय प्राप्त करने का उनका निर्णय कितना गलत था। (1)  
 (क) अभय सिंह (ख) चारणी  
 (ग) राव हेमू (घ) वीर सिंह
7. राव हेमू कौन थे? (1)  
 (क) मेवाड़ का शासक (ख) बूँदी का शासक  
 (ग) मेवाड़ का सेनापति (घ) मेवाड़ का एक सिपाही
8. मिसरानी की बातें सुनकर कौन शर्म से गड़ गया? (1)  
 (क) माँ (ख) अतुल  
 (ग) उमा (घ) इनमें से कोई नहीं
9. उमा कौन है? (1)  
 (क) अविनाश की पत्नी (ख) अतुल की पत्नी  
 (ग) अविनाश की बहन (घ) इनमें से कोई नहीं
10. अविनाश कौन है? (1)  
 (क) उमा का पति (ख) अतुल का भाई  
 (ग) कुमार का पुत्र (घ) कुमार का भाई

## उत्तरमाला

|      |        |        |        |        |        |        |        |        |        |         |
|------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|---------|
| I.   | 1. (ग) | 2. (क) | 3. (क) | 4. (ख) | 5. (ग) | 6. (ग) | 7. (क) | 8. (क) | 9. (क) | 10. (क) |
| II.  | 1. (क) | 2. (घ) | 3. (ख) | 4. (क) | 5. (ख) | 6. (क) | 7. (ग) | 8. (क) | 9. (ग) | 10. (ग) |
| III. | 1. (घ) | 2. (क) | 3. (ख) | 4. (क) | 5. (ख) | 6. (क) | 7. (क) | 8. (घ) | 9. (घ) | 10. (ख) |
| IV.  | 1. (ख) | 2. (ग) | 3. (ख) | 4. (घ) | 5. (ख) | 6. (ख) | 7. (ग) | 8. (ग) | 9. (ग) | 10. (ग) |
| V.   | 1. (ग) | 2. (ग) | 3. (ख) | 4. (ग) | 5. (ग) | 6. (ग) | 7. (ख) | 8. (घ) | 9. (ख) | 10. (घ) |
| VI.  | 1. (क) | 2. (घ) | 3. (ख) | 4. (क) | 5. (घ) | 6. (ग) | 7. (ख) | 8. (क) | 9. (ख) | 10. (ख) |

# ICSE

## नमूना प्रश्न-पत्र

हिंदी

कक्षा 10 (सेमेस्टर II) की परीक्षा के लिए  
जारी नवीनतम् नमूना प्रश्न-पत्र

### निर्देश

- खंड (क) अनिवार्य है।
- खंड (ख) से केवल किन्हीं दो पाठ्य-पुस्तकों (जिन्हें आपने पढ़ा है) का उत्तर देना है।
- प्रश्नों के निर्धारित अंक उनके सम्मुख कोष्ठक में दिए गए हैं।
- प्रारंभ के 10 मिनट छात्रों के प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।

अनुक्रमांक

|  |  |  |  |  |  |  |  |
|--|--|--|--|--|--|--|--|
|  |  |  |  |  |  |  |  |
|--|--|--|--|--|--|--|--|

निर्धारित समय : 90 मिनट  
अधिकतम अंक : 40

### खंड (क)

- निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 200 शब्दों में निबंध लिखिए। (12)
  - पुस्तकालय व्यक्ति को अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाता है। इस कथन को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालय के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
  - समाज में 'मद्य-निषेध' अनिवार्य रूप से होना ही चाहिए। इस कथन के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
  - हर व्यक्ति के जीवन का कोई-न-कोई लक्ष्य होता है। आपके जीवन का क्या लक्ष्य है? इस विषय पर एक लेख लिखिए।
  - 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान'-इस कहावत को आधार बनाकर एक मौलिक कहानी लिखिए।
  - नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर, उसका परिचय देते हुए कोई लेख, घटना अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट संबंध चित्र से होना चाहिए।



2. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए। (8)  
आपका छोटा भाई किसी दूसरे शहर में पढ़ने गया है, वहाँ वह खेलने के लिए समय नहीं निकाल पा रहा है। खेलों का महत्व समझाते हुए उसे एक पत्र लिखिए।

अथवा

विद्यालय की विज्ञान प्रयोगशाला को अत्याधुनिक बनाने की आवश्यकता समझाते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

## खंड (ख)

(20 अंक)

- निम्नलिखित पाठ्य-पुस्तकों में से किन्हीं दो पाठ्य-पुस्तकों के प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### (साहित्य सागर-संक्षिप्त कहानियाँ)

3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए।
- बेनीमाधव सिंह ने किसका साथ दिया और क्यों? (2)
  - चित्रा एवं अरुणा कौन हैं? संक्षेप में उनका परिचय दीजिए। (2)
  - “भाई नाम तो तुम्हारा लिख लेता हूँ पर जल्दी नौकरी पाने की कोई आशा मत करना।” यह संवाद किसने, किससे और कब कहा? (3)
  - भेड़िए की बात सुनकर बूढ़े सियार ने उसे क्या सलाह दी और भेड़िए ने उसे क्या उत्तर दिया? (3)

### (साहित्य सागर-पद्य भाग)

4. (i) खिलौना न मिलने की स्थिति में श्रीकृष्ण यशोदा माता को क्या-क्या कहकर डरा रहे हैं? (2)  
(ii) पाहुन के आने से गाँव में क्या हलचल हुई? (2)  
(iii) तुलसीदास जी का परिचय लिखिए। (3)  
(iv) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए। (3)  
(A) प्रबल (B) अवरुद्ध (C) विषद (D) रफ्तार (E) बयार (F) दामिनी

### (उपन्यास-नया रास्ता)

5. (i) आशा के विवाह में आई दूसरी महिलाएँ मीनू के बारे में क्या बातें कर रही थीं? (2)  
(ii) क्या अमित मेरठ वाली लड़की से शादी करने के लिए इच्छुक था ? यदि नहीं, तो शादी तय कैसे हो गई? (2)  
(iii) अमित को नीलिमा से क्या ज्ञात हुआ था ? उसे सुनकर उसने क्या निर्णय लिया था? (3)  
(iv) मीनू का चरित्र-चित्रण कीजिए। (3)

### (एकांकी संचय)

6. (i) ‘सूखी डाली’ एकांकी में बेला ने ससुराल के फर्नीचर के विषय में क्या-क्या कहा था ? यह बात कौन बता रहा था? (2)  
(ii) ‘सूखी डाली’ एकांकी में इंदु कौन है? उसने मिसरानी के विषय में बेला से क्या-क्या कहा था? यह बात उसने किसके समक्ष कही थी? (2)  
(iii) ‘दीपदान’ एकांकी में सोना कौन थी ? वह बनवीर की प्रशंसा करते हुए पन्ना धाय से क्या कहती है? (3)  
(iv) दीपदान एकांकी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। (3)

## उत्तर सहित व्याख्या

1. (i) **भूमिका** हमारे जीवन में पुस्तकालय का विशेष महत्व है। पुस्तकालय विद्यार्थियों एवं पाठक वर्ग के लिए ज्ञान का मंदिर है, जहाँ देश-विदेश के विद्वानों द्वारा लिखी ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें अत्यंत सुगमता से प्राप्त हो जाती हैं। पुस्तकालय दो शब्दों के मेल से बना है—पुस्तक + आलय = पुस्तकालय। जिसका अर्थ होता है—पुस्तकों का घर। पुस्तकालय के अंतर्गत अध्ययन हेतु कला, साहित्य, ज्ञान-विज्ञान आदि से संबंधित पुस्तकों का संग्रह उपलब्ध होता है। पुस्तकालय के द्वारा विद्यार्थियों में पुस्तक पढ़ने से संबंधित रुचि का विकास होता है। पुस्तकालय को ज्ञान का भंडारगृह भी कहा जाता है, जहाँ पुस्तकों को संरक्षित करके रखा जाता है। पुस्तकालय में पुस्तकों के अतिरिक्त समाचार-पत्र, पत्रिकाओं को भी संगृहीत किया जाता है। पुस्तकालय समस्त पाठक वर्ग के लिए अत्यंत लाभप्रद साबित होते हैं, जो पुस्तकें शोधार्थियों को बाजार में उपलब्ध नहीं हो पातीं वे पुस्तकालय में आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

**पुस्तकालय के प्रकार** पुस्तकालय दो प्रकार के होते हैं—निजी पुस्तकालय एवं सार्वजनिक पुस्तकालय। निजी पुस्तकालय वे होते हैं, जिन्हें लोग अपने घरों में स्थापित करते हैं। इस प्रकार के पुस्तकालय पुस्तक प्रेमियों के होते हैं तथा सार्वजनिक पुस्तकालय वे होते हैं, जो विद्यालय, विश्वविद्यालय, राजकीय आदि स्तर पर होते हैं।

भारत सरकार द्वारा स्थापित 'दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी' इसी के अंतर्गत आती है, जहाँ कोई भी व्यक्ति जाकर पुस्तकों, समाचार-पत्रों आदि का अध्ययन कर सकता है।

**पुस्तकालय का महत्व** पुस्तकालय मानव जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। देश के विकास एवं शिक्षा के प्रचार-प्रसार में पुस्तकालय की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता। पुस्तकालय की सुविधाओं का लाभ उठाकर मनुष्य जीवन में प्रगति कर सकता है, जो व्यक्ति पुस्तकें खरीदने में असमर्थ होते हैं, वे पुस्तकालय में जाकर पुस्तकें पढ़ सकते हैं।

पुस्तकालय में समय-समय पर प्रकाशित नवीन पुस्तकों का अध्ययन किया जा सकता है, हालाँकि भारत की बड़ी जनसंख्या के अनुपात में, देश में पुस्तकालयों की संख्या कम है। हमें पुस्तकालय का एक नया रूप भी देखने को मिलता है, जिसे चल-पुस्तकालय के नाम से जाना जाता है, जो बस अथवा गाड़ी में चलाया जाता है।

पुस्तकालय मनुष्य के विकास में सहायक है। पुस्तकालयों में पुस्तकों का चयन करते समय पुस्तकों की गुणवत्ता पर ध्यान दिया जाना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि पुस्तकालय पाठक वर्ग के ज्ञान का स्रोत होते हैं। पुस्तकालय मनुष्य को अधिकांश से प्रकाश व अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाने का माध्यम है, जहाँ हम शांत वातावरण में पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि का अध्ययन कर सकते हैं। अतः पुस्तकालय में हमें अनुशासन एवं शिष्टाचार के नियमों का पालन करते हुए, उनका सुरक्षापूर्ण प्रयोग करना चाहिए।

(ii) **मद्य शब्द का शाब्दिक अर्थ**, 'मादक' है। मद्यपान का अर्थ मादक पदार्थ का सेवन करना है। मदिरा एक नशीला पेय पदार्थ है, जिसका प्रयोग लोग नशा करने के लिए करते हैं।

नशा करने के बाद लोग अपनी सुध-बुध खो बैठते हैं और अपराधी प्रवृत्ति की ओर अग्रसर हो जाते हैं। इसके कारण भारत के कई राज्यों

में मद्य-निषेध कानून लागू किया गया है। मद्यपान का समाज में अनिवार्य रूप से निषेध होना चाहिए।

यह एक सामाजिक बुराई है। यह समाज एवं स्वास्थ्य दोनों के लिए हानिकारक है। हैरानी की बात यह है कि आज पढ़े-लिखे व्यक्ति भी मदिरापान को फैशन मानते हैं। यहाँ तक कि स्थिति ऐसी बन गई है कि मदिरापान न करने वाला व्यक्ति असामाजिक, रूढ़िवादी और पिछड़ा हुआ माना जाता है।

**मद्यपान से देश की स्थिति** हमारे देश में सरकार तथा अन्य सामाजिक संस्थाएँ शराबबंदी की बातें करते हैं, परन्तु ये सभी किसी-न-किसी रूप में इससे जुड़े हैं। इनके कर्मचारी भी शराब की लत के शिकार हैं। मद्य-निषेध के जो कानून हमारे देश में हैं, उनका विपरीत परिणाम ही सामने आया है। मद्य-निषेध के परिणामस्वरूप अवैध रूप से शराब बेचने व बनाने का कार्य किया जाने लगा। इस प्रकार से देश व समाज पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। मजदूर वर्ग शराब की लत के कारण बहुत बुरी तरह फँसा है। उन लोगों की पारिवारिक स्थिति अत्यंत दयनीय है जो शराब पीने के कारण अनेक प्रकार के रोग से (लिवर संबंधित) ग्रसित हैं, क्योंकि वे जितना कमाते हैं उससे अधिक शराब में उड़ा देते हैं। सरकार ने उन स्थानों पर शराब बिक्री पर रोक लगा दी है, जहाँ ये निवास करते हैं। इनके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है तथा ये अपनी बुनियादी आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं कर पाते। मदिरा चाहे किसी भी कारण से पी जाए, परन्तु समाज में इसका सम्मान नहीं किया जा सकता। यह पश्चिमी सभ्यता से हमारे देश में प्रचलित हुआ है। हमारे देश में लोग अंग्रेजों की नकल करने को ही अपना गौरव समझते हैं। होली, दिवाली जैसे पवित्र त्योहार या शादी विवाह में भी लोग शराब को शान एवं खुशी का प्रतीक मानते हैं। समाज में शराब का प्रचलन चाहे जितना भी हो गया हो, परन्तु यह एक स्वस्थ समाज के लिए स्वीकार्य नहीं है। नशा करने वाले व्यक्ति पर भरोसा करना बहुत मुश्किल होता है। नशा करने वाले कुछ लोग आपराधिक प्रवृत्ति से भी जुड़े होते हैं।

**मद्यपान छुड़ाने के उपाय** शराब छुड़ाना देश या समाज के लिए एक विकट समस्या है। इससे धन और स्वास्थ्य दोनों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इसके लिए सरकार द्वारा जागरूकता कार्यक्रम करवाने चाहिए। परिवार में भी इसके संबंध में शिक्षा देनी चाहिए। इसके दुष्प्रभावों से सबको अवगत कराया जाना चाहिए।

**उपसंहार** अतः मैं इस बात से सहमत हूँ कि समाज में मद्य-निषेध कानून अनिवार्य रूप से लागू किया जाना चाहिए, जिससे समाज के सभी वर्गों की भलाई तथा प्रगति हो सके।

(iii) **मेरे जीवन का उद्देश्य**

**भूमिका** संसार में प्रत्येक व्यक्ति का अपना उद्देश्य होता है। विद्यार्थी जीवन तो कल्पना तथा उद्देश्य का भंडार होता है। दसवीं कक्षा में आने पर कल्पना साकार करने के लिए विद्यार्थी में लक्ष्य निर्धारित करने की समझ आ जाती है। मेरे पिताजी एक अध्यापक हैं। वे चाहते हैं कि मैं भी अध्यापक बनूँ, किंतु मेरा लक्ष्य कुछ और है।

**मेरे जीवन का उद्देश्य** मैं उच्च शिक्षा प्राप्त कर डॉक्टर बनना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि डॉक्टरी करना बहुत ही मुश्किल है। इसके लिए मुझे अपने घर से दूर छात्रावास में रहना होगा। सर्वप्रथम मुझे मेडिकल कॉलेज में प्रवेश के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी, फिर

एमबीबीएस का पाठ्यक्रम भी बहुत विस्तृत होता है, लेकिन मैं डॉक्टर बनने हेतु कुछ भी करने के लिए तत्पर हूँ।

आजकल भारत में अच्छे डॉक्टरों की आवश्यकता है। अधिकतर डॉक्टर इस व्यवसाय को केवल धन कमाने का माध्यम मानते हैं। उन्हें लोगों की दुःख-तकलीफ से कोई मतलब नहीं होता। मैं यह कार्य केवल धन कमाने के लिए नहीं करना चाहता, बल्कि मैं यह कार्य लोगों की दुआएँ पाने के लिए भी अपनाना चाहता हूँ।

कहते हैं कि डॉक्टर भगवान का दूसरा रूप है, इसलिए मैं डॉक्टर बनकर समाज की सेवा करना चाहता हूँ। मैं गरीबों का इलाज कम-से-कम खर्च में करूँगा और दवाइयाँ भी निःशुल्क दूँगा तथा धनी लोगों से पूरी फीस लूँगा। मेरा प्रयास रहेगा कि नई-नई तकनीकों का प्रयोग कर सस्ता और अच्छा इलाज कर सकूँ।

**आज से दस वर्ष बाद की कल्पना** इस सपने को देखते हुए मैं कल्पना करता हूँ कि आज से दस वर्ष बाद तो मैं एक उच्च श्रेणी का डॉक्टर बन चुका हूँ और मेरे द्वारा जिनका इलाज किया गया है, वे लोग स्वस्थ होकर अपने घर जाते हैं और मुझे आशीष देते हैं।

**उपसंहार** मैंने अपने जीवन से जुड़े जो भी सपने देखे हैं, उन सपनों को सच्ची निष्ठा और मेहनत से पूरा करूँगा तथा मानव जाति की सेवा करते हुए एक प्रख्यात डॉक्टर बनूँगा। इस अभिलाषा को मैं अपने मन में कब से सँजोए हुए हूँ।

**(iv) उक्ति का अर्थ** “करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान” उक्ति का अर्थ है कि निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख-से-मूर्ख व्यक्ति भी सफलता पाता है। कालिदास निरंतर अभ्यास के द्वारा ही उच्चस्तरीय विद्वान् बन पाए, वहीं अर्जुन महान् धनुर्धर बने, तो केवल अपने परिश्रम और अभ्यास के बल पर। प्राचीनकाल से ही ऋषि-मुनियों द्वारा हम परिश्रम व अभ्यास के महत्त्व को देख व समझ सकते हैं। आज के आधुनिक युग में भी परिश्रम और अभ्यास की महत्ता उतनी ही अधिक है।

**कहानी** एक बालक था। वह पढ़-लिख नहीं सकता था। उसके सहपाठी उसका मजाक उड़ाते थे। वह बहुत दुःखी था। परेशान होकर वह किसी ज्योतिषि के पास गया। ज्योतिषि ने कहा—“तुम पढ़ नहीं पाओगे। तुम्हारे हाथ में विद्या की रेखा नहीं है।” एक दिन रास्ते में जाते हुए उसने कुएँ की जगह पर रस्सी के निशान को देखा। उसने सोचा यदि कठोर पथर पर निरंतर रस्सी की रगड़ के निशान पड़ सकते हैं, तो मैं भी निरंतर पढ़ने का अभ्यास करके विद्वान् बन सकता हूँ फिर उसने पढ़ाई का अभ्यास किया और एक बड़ा विद्वान् बन गया।

निरंतर अभ्यास व्यक्ति की कार्यकुशलता को निखारता है। अभ्यास के दौरान कभी-कभी नकारात्मक भाव भी उत्पन्न होते हैं, परंतु उसे स्वयं पर हावी नहीं होने देना चाहिए, क्योंकि वह विकास के पथ में बाधा उत्पन्न करते हैं। अभ्यास के द्वारा व्यक्ति अपनी बाधाओं का डटकर मुकाबला करता है तथा विषम परिस्थितियों पर नियंत्रण पा लेता है। अभ्यास ही व्यक्ति को कर्तव्य के पथ पर ले जाता है एवं सफलता प्राप्त करने में सहायता करता है। कोई भी व्यक्ति सर्वगुण संपन्न नहीं होता, न ही ज्ञान का भंडार लेकर पैदा होता है।

**सीख** हमें निरंतर अभ्यास के द्वारा अपने ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। अपनी योग्यता पर विश्वास तो होना चाहिए, किंतु अतिविश्वासी नहीं होना चाहिए, इसलिए कहा गया है

“करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान  
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान।”

**(v) प्रस्तुत चित्र में एक छोटी बालिका हाथ में एक बर्तन में दूध लेकर सामने बैठे कुत्ते को पिलाने का प्रयास कर रही है। कुत्ता शांत भाव से बैठा हुआ दिखाई दे रहा है। यह चित्र किसी सड़क का लग रहा है। इसमें बालिका का कुत्ते के प्रति प्रेम भाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है। बचपन सबसे सुंदर समय होता है। इस समय बालक का मन साफ, स्वच्छ तथा निश्चल होता है। वह न केवल अपने परिवार, बल्कि अन्य प्राणियों के प्रति प्रेम भाव से परिपूर्ण होता है। यह चित्र मानवता का सबसे सुंदर उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। हमारे जीवन में पशु-पक्षी बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हम जिस समाज में रहते हैं, वहाँ गाय, कुत्ता आदि पशु दिखाई देते हैं। बहुत सारे लोग उनके प्रति अच्छा व्यवहार नहीं करते हैं, लेकिन यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि हम पशुओं से प्रेम रखें तथा उनके साथ अच्छा व्यवहार करें। कुत्ता एक वफादार जानवर समझा जाता है। उसके प्रति हमारे मन में सहानुभूति होनी चाहिए। कभी-कभी देखा जाता है कि कुत्ता अपने मालिक के प्रति वफादारी व्यक्त करने हेतु अपनी जान तक खतरे में डाल देता है। हम जैसा उसे दिखाते हैं वह वैसा ही करता है। न केवल पालतू पशु, बल्कि सड़क पर घूमते आवारा पशु भी प्रेम के बदले प्रेम ही देते हैं। मनुष्य में सोचने, समझने तथा तर्क करने की शक्ति अन्य जीव जन्तुओं से अधिक होती है। मनुष्य चालाक होता है, लेकिन जानवर चालाक नहीं होते। वह किसी से छल-कपट करना नहीं जानते। वह तो अपना कर्तव्य ईमानदारी से निभाते हैं इसलिए हमें पशुओं से प्रेम रखना चाहिए। पशु भी प्रकृति का एक रूप हैं। अतः उन्हें भी प्रेम पाने का पूरा अधिकार है। हमें प्रत्येक जीव के प्रति प्रेम तथा दया भाव रखनी चाहिए। मानवता का यही धर्म है। पालतू पशुओं के साथ आवारा पशुओं का भी ध्यान रखना चाहिए।**

**2. परीक्षा भवन,**  
दिल्ली।

**दिनांक 22 दिसंबर, 20XX**

प्रिय अनुज साहिल,  
सस्नेह आशीष।

आज ही तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि तुमने स्वयं को छात्रावास के वातावरण में ढाल लिया है। साथ ही तुम्हारी पढ़ाई भी सही चल रही है। तुम खूब मन लगाकर पढ़ रहे हो। लेकिन मुझे ज्ञात हुआ है कि तुम केवल पढ़ने में लगे रहते हो और खेलों की ओर ध्यान नहीं देते हो। इसी कारण तुम्हारा स्वास्थ्य बिगड़ गया है।

पढ़ाई के साथ-साथ खेलों का भी हमारे जीवन में विशेष महत्त्व है। खेलों से तन और मन स्वस्थ रहता है। खेलों से शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है। खेलने से शरीर के सभी अंगों की कसरत हो जाती है। इससे शरीर स्वस्थ तथा मजबूत बनता है। खेलों से शरीर को चुस्ती-फुर्ती तथा शक्ति मिलती है। इस प्रकार खेल मनुष्य के शारीरिक और मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आशा है तुम मेरी बात से सहमत होगे और अपने जीवन में खेलों को महत्त्व दोगे तथा खेलों में भाग लोगे।

माताजी और पिताजी की ओर से आशीर्वाद

तुम्हारा अग्रज

क. ख. ग.

## अथवा

परीक्षा भवन,  
दिल्ली।

दिनांक 22 दिसंबर, 20XX

सेवा में,  
प्रधानाचार्य महोदय,  
प्रतिभा विकास विद्यालय,  
पहाड़गंज, दिल्ली

**विषय** विज्ञान—प्रयोगशाला को अत्याधुनिक बनाने के संबंध में।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की दसवीं 'ब' कक्षा की छात्रा हूँ। मेरी विज्ञान विषय में बहुत रुचि है। मैं विद्यालय की प्रयोगशाला में कुशल प्रशिक्षण पाना चाहती हूँ, परन्तु प्रयोगशाला में उपर्युक्त उपकरण नहीं हैं। हमारे विद्यालय की प्रयोगशाला के उपकरण बहुत पुराने हो चुके हैं तथा विद्यार्थियों की वर्तमान आवश्यकता के अनुरूप नहीं हैं।

आधुनिक युग में जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान की बढ़ती उपयोगिता से परिचित होंगे। विज्ञान की विषय-वस्तु को प्रायोगिक कार्यों द्वारा सरलता से आत्मसात किया जा सकता है। इसलिए प्रयोगशाला में नवीन तथा आधुनिक उपकरण की अनिवार्यता अपरिहार्य है।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि विद्यालय की विज्ञान प्रयोगशाला को अत्याधुनिक बनाने हेतु आवश्यक कदम उठाएँ। आशा है कि आप हमारी इस प्रार्थना को स्वीकार करते हुए एक नवीनतम तथा आधुनिक उपकरणों से युक्त प्रयोगशाला का निर्माण अवश्य करेंगे।

धन्यवाद

भवदीय

क. ख. ग.

3. (i) बेनीमाधव सिंह ने अपने छोटे बेटे लालबिहारी का साथ दिया, क्योंकि वह रूढ़िवादी मानसिकता से ग्रस्त थे। उनका मानना था कि स्त्रियों को सिर पर नहीं चढ़ाना चाहिए। लालबिहारी तथा आनंदी के झगड़े में उनको आनंदी का जवाब देना पसंद नहीं आता, क्योंकि उनके अनुसार वह एक स्त्री है और स्त्रियों को अधिक नहीं बोलना चाहिए।

(ii) चित्रा और अरुणा दोनों सहेली हैं। चित्रा धनी परिवार की इकलौती पुत्री तथा अरुणा की सहेली है। उसके चरित्र की मुख्य विशेषता यह है कि वह उच्चकोटि की चित्रकार थी। चित्रकारी में उसे दक्षता प्राप्त थी। अरुणा एक समाज सेविका थी। वह परोपकारी तथा दयालु लड़की थी। वह हमेशा गरीबों की सेवा करने के लिए तत्पर रहती थी।

(iii) “भाई नाम तो तुम्हारा लिख लेता हूँ, पर जल्दी नौकरी पाने की कोई आशा मत करना” यह संवाद सरकारी अफसर ने दीनानाथ, श्यामलाकांत के पुत्र से तब कहा, जब वह रोजगार कार्यालय में अपना नाम दर्ज करवाने गया था, जिससे उसे योग्यतानुसार नौकरी मिल जाए।

सरकारी अफसर ने उक्त कथन इसलिए कहा, क्योंकि वहाँ पहले से ही बेरोजगार लोगों ने कार्यालय में अपना नाम दर्ज करवा दिया था। बेरोजगार लोगों के अनुपात में काम कम था। इस तथ्य से परिचित

कराने के लिए सरकारी अफसर ने दीनानाथ से उपर्युक्त वाक्य कहा था।

(iv) भेड़िए की बात सुनकर बूढ़े सियार ने उसे चुनाव लड़ने की सलाह दी। वह बोला कि यदि पंचायत में आपकी भेड़िया जाति का बहुमत हो जाए। सियार की यह बातें सुनकर भेड़िया चिढ़ गया, क्योंकि उसे यह लग रहा था कि भेड़ों की संख्या अधिक हैं और हमारी (भेड़िए) कम। ऐसे में बहुमत भेड़ों को ही प्राप्त होगा। उसे सियार की बातें आसमानी (फालतू) लग रही थीं। अतः वह चिढ़ गया।

4. (i) खिलौना न मिलने की स्थिति में श्रीकृष्ण यशोदा माता को यह कहकर डरा रहे हैं कि यदि मुझे यह खिलौना नहीं मिला तो मैं न तो कुछ खाऊँगा और न ही सफेद गाय का दूध पीऊँगा तथा न अपने बाल बंधवाऊँगा एवं न मोतियों की माला धारण करूँगा और न ही कुर्ता पहनूँगा। मैं मिट्टी लेट जाऊँगा और माता की गोद में नहीं आऊँगा।

(ii) पाहुन अर्थात् दामाद के आने से गाँव में यह हलचल हुई कि शीतल हवा इस तरह चलने लगी जैसे कोई ग्रामीण लड़की खुशी से नाचती गाती आगे-आगे चल रही हो। हवा के चलने से घरों के दरवाजे तथा खिड़कियाँ तेजी से खुलने व बंद होने लगे। धूल भागती हुई गाँव की स्त्रियों के समान प्रतीत होने लगी। नदियाँ दुल्हन की भाँति अपने घूँघट से मेहमान को निहारने लगी।

(iii) हिंदी जगत में महत्त्वपूर्ण स्थान रखने वाले गोस्वामी तुलसीदास जी भक्तिकाल की सगुण धारा की रामभक्ति शाखा के प्रमुख प्रवर्तक के रूप में सामने आए। इनके जन्म स्थान के संबंध में प्रायः मतभेद हैं, किन्तु कुछ विद्वानों के अनुसार, इनका जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर नामक गाँव में 1532 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम 'आत्माराम दुबे' तथा माता का नाम 'हुलसी' था। इनके गुरु 'नरहरिदास' थे। इन्होंने ही तुलसीदास को वेद, पुराण और अन्य शास्त्रों का अध्ययन करवाया था। तुलसीदास को हिंदी जगत का सूर्य भी कहा जाता है। दोहावली, कवितावली, कृष्णगीतावली, विनयपत्रिका, रामचरितमानस आदि इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

(iv) दिए गए शब्दों के अर्थ इस प्रकार हैं—

- (A) प्रबल— बलवान, प्रचंड  
(B) अवरुद्ध— रुका हुआ  
(C) विषद— निर्मल  
(D) रफ्तार— गति  
(E) बयार— हवा  
(F) दामिनी — बिजली

5. (i) आशा के विवाह में आई दूसरी महिलाएँ मीनू के बारे में बातें कर रही थीं कि दयाराम जी की बड़ी बेटी कौन-सी है? जो अभी तक अविवाहित है। उसका विवाह अब तक क्यों नहीं हुआ है? पढ़ाई के चक्कर में कौन अपनी बेटियों को घर में रखता है, उनकी आधी उम्र तो पढ़ाई के चक्कर में ही निकल जाती है।

(ii) अमित मेरठ की लड़की सरिता से शादी करने के लिए इच्छुक नहीं था, क्योंकि उसे मीनू पसंद थी। सरिता के पिता द्वारा अमित के परिवार वालों को दहेज का लालच दिया था। अमित की माँ धन की लालची थी। धन के लिए उसने सरिता का रिश्ता स्वीकार कर लिया था। इसलिए शादी तय हो गई थी।



(iii) अमित को नीलिमा से यह ज्ञात हुआ कि डेढ़ वर्ष पूर्व एक लड़के ने मीनू से विवाह करने से मना कर दिया था। इस कारण उसमें निराशा उत्पन्न हो गई और उसने आत्मनिर्भर बनने का निर्णय लिया, जिससे वह अपने पैरों पर खड़ी होकर आत्मसम्मान के साथ जीवन व्यतीत कर सके। यह सुनकर अमित को आत्मग्लानि अनुभव होने लगी। वह स्वयं को मीनू की निराशा एवं दुःख का कारण समझने लगा। उसने यह निर्णय लिया कि वह मीनू से मिलकर सारी बातें स्पष्ट कर देगा और उससे माफी माँग लेगा।

(iv) मीनू उपन्यास की प्रमुख पात्र एवं दयाराम की सबसे बड़ी बेटी है। वह एक बुद्धिमान तथा होशियार लड़की है जो सदैव ही प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होती है। वह समाज की रूढ़ियों के विरुद्ध खड़ी होने वाली नवयुवती है। उसमें आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा हुआ है। उसी का परिणाम है कि वह कुछ बनकर दिखाने एवं अपने पैरों पर खड़ी होने की इच्छा रखती है। इस प्रकार मीनू एक साहसी, परिश्रमी, दृढ़ निश्चयी आत्मविश्वासी युवती है।

6. (i) 'सूखी-डाली' एकांकी में बेला ने ससुराल के फर्नीचर के विषय में कहा था कि यह फर्नीचर टूटा हुआ तथा पुराना हो गया है। इसलिए उसे कमरे में रखने से मना कर दिया। यह बात मँझली बहू बता रही है।  
(ii) 'सूखी डाली' एकांकी में इंदु छोटी भाभी की बेटी और परेश की बहन है। उसने मिसरानी के विषय में बेला से कहा था कि मिसरानी

हमारे घर में दस वर्षों से काम कर रही है जिसके कारण वह एक आज्ञाकारी, विश्वसनीय और समझदार होने के रूप में जानी जाती है। यह बात उसने बेला के समक्ष कही थी।

(iii) 'दीपदान' एकांकी में सोना, रावल सरूप सिंह की पुत्री है। वह अत्यंत सुंदर, नटखट व कुशल नृत्यांगना है। उसके सौंदर्य एवं नृत्य को देखकर कुँवर उदयसिंह उसकी ओर आकर्षित होते हैं। वह अत्यधिक वाचाल महिला है। वह बनवीर की प्रशंसा करते हुए पन्नाधाय से कहती है कि ओहो बनवीर! उन्हें श्री महाराणा बनवीर कहो। हमारे लिए वे एक रेशम की झूल लाए थे। उसे सिर पर ओढ़कर नाचने से ऐसा लगता था, जैसे मकड़ी के जाल के आस-पास चंद्रमा की किरणें धिरक रही हैं।

(iv) दीपदान ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित एक एकांकी है। दीपदान एकांकी का आरंभ दीपदान उत्सव से होता है। बनवीर इसी उत्सव की चकाचौंध में नगरवासियों को डालकर राणा साँगा के छोटे पुत्र और चित्तौड़ के उत्तराधिकारी कुँवर उदयसिंह को समाप्त करने का षड्यंत्र रचता है। कुँवर उदय सिंह के शयन कक्ष में पहुँचकर वह कहता है, "मैं भी यमराज को इस दीपक का दान करूँगा। यमराज! लो इस दीपक को। यह मेरा दीपदान है।" वहीं दूसरी ओर पन्ना धाय महाराणा परिवार के कुलदीपक को बचाने के लिए अपने पुत्र चंदन को बलिबेदी पर चढ़ा देती है। अतः शीर्षक 'दीपदान' सर्वथा उपर्युक्त है।

# ICSE

## सॉल्वड पेपर 2021-22

हिंदी

कक्षा 10 (सेमेस्टर I)

### निर्देश

- खंड (क) अनिवार्य है।
- खंड (ख) से केवल किन्हीं दो पाठ्य-पुस्तकों (जिन्हें आपने पढ़ा है) का उत्तर देना है।
- प्रश्नों के निर्धारित अंक उनके सम्मुख कोष्ठक में दिए गए हैं।
- प्रारंभ के 10 मिनट छात्रों के प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।

अनुक्रमांक

|  |  |  |  |  |  |  |  |
|--|--|--|--|--|--|--|--|
|  |  |  |  |  |  |  |  |
|--|--|--|--|--|--|--|--|

निर्धारित समय : 90 मिनट  
अधिकतम अंक : 40

### खंड (क)

- I. नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए (10)

थामस अल्वा एडिसन एक महान् आविष्कारक थे। आज भी पूरी दुनिया इनके आविष्कारों का लोहा मानती है। अल्बर्ट आइंस्टीन जैसे चोटी के वैज्ञानिक भी इनके बहुत बड़े प्रशंसक थे। एडिसन बचपन में ही बहरे हो गए थे, लेकिन इस कमी का उन्होंने कभी एहसास नहीं हुआ। उल्टे इसे उन्होंने वरदान ही माना। जीवनभर वह अनुसंधान करते रहे। बिजली का बल्ब, ग्रामोफोन, वोट रिकॉर्डर, चलचित्र कैमरा जैसे 2,500 आविष्कारों से उन्होंने मानव को सुख-समृद्धि प्रदान की।

पोर्टहरन से डेट्रायट तक रेलगाड़ी के डिब्बे में सब्जी बेचने, अखबार निकालने से लेकर टेलीग्राफ ऑपरेटर के रूप में अपनी जीवन-यात्रा शुरू करने वाले एडिसन दुनिया भर में अपने आविष्कारों के लिए चर्चित हुए। उनका कहना था कि “बहरेपन ने मुझे गपशप के आनंद से वंचित कर दिया पर इसकी मुझे खुशी ही है। रात को जिस होटल में मैं खाना खाने जाता, वहाँ जब दूसरे लोग गपशप में लगे होते, मैं अपनी समस्याओं के बारे में सोचता रहता। यदि मैंने भी वे सब फिजूल की बातें और आवाजें सुनी होती जो सामान्य आदमियों को सुननी पड़ती हैं तो शायद आज मुझमें इतना मनोबल न होता।” इस तरह से एडिसन ने बहरेपन अभिशाप को वरदान में परिवर्तित कर दिखाया।

- बचपन से ही एडिसन को किस समस्या का सामना करना पड़ा था? (1)  
(क) बहरेपन की समस्या का (ख) गूंगेपन की समस्या का  
(ग) लंगड़ेपन की समस्या का (घ) अंधेपन की समस्या का
- कौन से जाने-माने वैज्ञानिक थामस अल्वा एडिसन के बहुत बड़े प्रशंसक थे? (1)  
(क) अजब सिंह पोखरवाल (ख) अल्बर्ट आइंस्टीन  
(ग) संदीप शर्मा 'हंस' (घ) चार्ल्स डार्विन
- निम्न में से कौन-सा आविष्कार एडिसन के द्वारा नहीं किया गया था? (1)  
(क) बिजली का बल्ब (ख) चलचित्र कैमरा (ग) ग्रामोफोन (घ) टेलीफोन

4. एडिसन के जीवन के शुरुआती दौर में कौन-सा कार्य उनके द्वारा किया गया था? (1)  
 (क) दूध बेचने का कार्य (ख) गाड़ी चलाने का कार्य  
 (ग) सब्जी बेचने का कार्य (घ) बागवानी का कार्य
5. एडिसन दुनिया भर में क्यों चर्चित हुए? (1)  
 (क) लेखन प्रतिभा के कारण (ख) रेलगाड़ी के डिब्बे बनाने के कारण  
 (ग) अपने आविष्कार के कारण (घ) अखबार निकालने के कारण
6. एडिसन को किस बात की खुशी होती थी? (1)  
 (क) धन कमाने की खुशी (ख) नाम कमाने की खुशी  
 (ग) गपशप के आनंद से वंचित होने की खुशी (घ) घूमने-फिरने के आनंद से वंचित होने की खुशी
7. जब होटल में खाना खाते समय लोग बातों में लगे रहते थे, तब एडिसन क्या किया करते थे? (1)  
 (क) घूमने जाया करते थे (ख) कहानी सोचा करते थे  
 (ग) पत्र लिखा करते थे (घ) समस्याओं के बारे में सोचा करते थे
8. एडिसन के कार्यों से सम्पूर्ण मानव-जाति को क्या प्राप्त हुआ? (1)  
 (क) धन-दौलत (ख) सुख-समृद्धि  
 (ग) शांति और सहयोग (घ) आचार-विचार की शुद्धता
9. 'एडिसन जीवनभर अनुसन्धान करते रहे।' इस कथन के माध्यम से उनकी कौन-सी विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं? (1)  
 (क) मेहनत और लक्ष्य के लिए समर्पण (ख) सादगी और चतुराई  
 (ग) परोपकार और अहिंसा (घ) सहनशक्ति और ईश्वर भक्ति
10. किस शक्ति के बल पर एडिसन ने अपनी एक शारीरिक कमी के अभिशाप को वरदान में बदल कर दिखा दिया था? (1)  
 (क) धनबल (ख) भुजबल (ग) मनोबल (घ) तपबल

## II. निम्नलिखित प्रश्नों के निर्देशानुसार सही विकल्प चुनकर लिखिए (10)

1. विलोम शब्द  
 'अपव्ययी' शब्द का विलोम बताइए (1)  
 (क) अव्ययी (ख) व्ययी (ग) मितव्ययी (घ) कुव्ययी
2. 'उत्तम' शब्द का पर्यायवाची शब्द बताइए (1)  
 (क) अच्छा (ख) उचित (ग) श्रेष्ठ (घ) उपयुक्त
3. 'पत्थर' शब्द का विशेषण शब्द बताइए (1)  
 (क) पथरीला (ख) पत्थरी (ग) पत्थरीला (घ) पथरेला
4. 'मधुर' शब्द की भाववाचक संज्ञा बताइए (1)  
 (क) मीठा (ख) मिठास (ग) मधुबन (घ) मधुरता
5. 'उपलब्धी' शब्द का शुद्ध रूप बताइए (1)  
 (क) उपालब्धी (ख) उपलब्धि (ग) उप्लब्धि (घ) उप्लब्धी
6. निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ बताइए (1)  
 "ईद का चाँद होना"  
 (क) बहुत सुंदर होना (ख) गायब हो जाना  
 (ग) बहुत बड़ा होना (घ) बहुत दिनों बाद दिखना
7. 'पंद्रह दिन में एक बार होने वाला' इस वाक्यांश के लिए एक शब्द है (1)  
 (क) निष्पक्ष (ख) पक्षपाती (ग) पाक्षिक (घ) पक्षधर
8. 'बालिका' का बहुवचन रूप है (1)  
 (क) बालिका (ख) बालिकागण (ग) बालाएँ (घ) बालिकाएँ
9. माँ ने खाना बनाया (नहीं शब्द का प्रयोग करें लेकिन अर्थ न बदले) (1)  
 (क) माँ ने खाना नहीं बनाया (ख) क्या, माँ ने खाना नहीं बनाया?  
 (ग) माँ ने खाना बनाने से इंकार नहीं किया (घ) नहीं, माँ खाना बनाएगी

10. निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तन करें

‘भारत ने नया उपग्रह छोड़ा।’ (‘द्वारा’ शब्द का प्रयोग करें।)

(क) भारत द्वारा उपग्रह छोड़ा है

(ख) भारत द्वारा नया उपग्रह छोड़ा गया

(ग) भारत द्वारा नया उपग्रह छोड़ा जाएगा

(घ) जो उपग्रह छोड़ा गया वह भारत द्वारा ही भेजा गया है

### खंड (ख)

#### III. संक्षिप्त कहानियों पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए

(10)

1. ‘यह इंसाफ नहीं अँधेरे है। सिर्फ एक अठन्नी की ही तो बात थी।’ इस कथन का वक्ता कौन है?

(1)

(क) दासी

(ख) बाबू जगतसिंह

(ग) रसीला

(घ) रमजान

2. ‘हुजूर मेरा पहला अपराध है। एक बार माफ कर दीजिए।’ कथन के वक्ता और श्रोता कौन हैं?

(1)

(क) रमजान (वक्ता) और इंजीनियर बाबू (श्रोता)

(ख) रसीला (वक्ता) और इंजीनियर बाबू (श्रोता)

(ग) रसीला (वक्ता) और शेख सलीमुद्दीन (श्रोता)

(घ) रसीला (वक्ता) और पुलिस वाला (श्रोता)

3. भोला सकपका कर एक ही डाँट में ..... हो गया। ‘काकी’ नामक कहानी के आधार पर रिक्त स्थान में उचित शब्द चुनें।

(1)

(क) हतबुद्धि

(ख) मुखबिर

(ग) बेहोश

(घ) सचेत

4. ‘काकी’ कहानी का प्रमुख संदेश क्या है?

(1)

(क) एक बच्चे के खेलने के शौक को समझना

(ख) एक बच्चे के पतंग उड़ाने के जोश को समझना

(ग) एक बच्चे के माँ के खोने के दर्द को समझना

(घ) एक बच्चे की पढ़ाई न करने की आदत को समझना

5. मैंने तो बरसों से कोई यज्ञ नहीं किया। मेरी स्थिति ही ऐसी नहीं थी।” यहाँ सेठ जी अपनी किस स्थिति की बात कर रहे हैं?

(1)

(क) अपनी बीमारी की

(ख) अपनी गरीबी की

(ग) अपने शौक की

(घ) अपनी दुकान की

6. धन्ना सेठ की पत्नी के पास कौन-सी शक्ति थी?

(1)

(क) देवी भक्ति

(ख) दानव शक्ति

(ग) तांत्रिक शक्ति

(घ) दैवी शक्ति

7. सेठ का स्वभाव कैसा था?

(क) विनयशील और अनुदार

(ख) कर्तव्यपरायण और क्रोधी

(ग) लोभी और कृपण

(घ) विनम्र और उदार

8. ‘नेताजी का चश्मा’ नामक पाठ में हालदार साहब को पान वाले की कौन-सी बात अच्छी नहीं लगी थी?

(1)

(क) पान वाले का बहुत बोलना

(ख) पान वाले का अधिक पान खाना

(ग) एक देशभक्त का मज़ाक उड़ाना

(घ) पान वाले का अपनी ही दुकान के नीचे पान थूकना

9. जिस कस्बे से हालदार साहब गुजरते थे, वह कैसा था?

(1)

(क) कस्बा बहुत बड़ा नहीं था

(ख) उद्योग धंधों से युक्त था

(ग) अत्यधिक विकसित था

(घ) बहुत बड़ा था

10. ‘नेताजी का चश्मा’ कहानी के अंत में हालदार साहब ने नेता जी की मूर्ति पर कैसा चश्मा देखा?

(1)

(क) सुनहरे फ्रेम वाला चश्मा

(ख) पतले तार वाला गोल चश्मा

(ग) सरकंडे से बना छोटा सा चश्मा

(घ) काले रंग का चौड़े फ्रेम वाला चश्मा

#### IV. पद्य भाग पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए

(10)

1. कबीरदास जी के गुरु का नाम क्या था?

(1)

(क) रामानंद

(ख) सदानंद

(ग) शिवानंद

(घ) नरहरिदास

2. कबीरदास जी के दोहे में ‘सांकरी’ शब्द का अर्थ क्या है?

(1)

(क) तंग

(ख) संकल

(ग) संकल्प

(घ) चौड़ा

3. गिरिधर कवि ने किन्हें अपनी कविता का विषय बनाया?

(1)

(क) नीति, वैराग्य और अध्यात्म को

(ख) श्रृंगार एवं वात्सल्य को

(ग) ईश्वर के निराकर रूप को

(घ) भारत के गरिमापूर्ण अतीत को

4. 'कह गिरिधर कविराय, जगत यही लेखा भाई। करता बेगरीजी प्रीति, यार बिरला कोई साँई।' इस दुनिया में कैसे लोग आसानी से नहीं मिलते? (1)  
 (क) निःस्वार्थ भाव से प्यार करने वाले (ख) बड़ों का सम्मान करने वाले  
 (ग) बुजुर्गों की परवाह करने वाले (घ) देश के लिए बलिदान करने वाले
5. 'स्वर्ग बना सकते हैं', कविता किस प्रसिद्ध कवि की रचना है? (1)  
 (क) सोहन लाल द्विवेदी (ख) रामधारी सिंह 'दिनकर'  
 (ग) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (घ) सुभद्राकुमारी चौहान
6. मनुष्य को बाधा रहित विकास के लिए किस बात की आवश्यकता होती है? 'स्वर्ग बना सकते हैं' कविता के आधार पर बताइए (1)  
 (क) कर्तव्यविमुख जीवन (ख) आशंकाओं से मुक्त जीवन  
 (ग) मुक्त बाधाओं का जीवन (घ) मुक्त प्रकाश का जीवन
7. रामधारी सिंह दिनकर जी को ज्ञानपीठ पुरस्कार उनकी किस रचना पर मिला था? (1)  
 (क) उर्वशी (ख) हुकार (ग) रेणुका (घ) कुरुक्षेत्र
8. 'वह जन्मभूमि मेरी' कविता में 'अमराइयाँ' शब्द का क्या अर्थ है? (1)  
 (क) आम का पौधा (ख) आम के बगीचे (ग) आम की गुठलियाँ (घ) अँगड़ाइयाँ
9. हमारे देश में पहाड़ियों से गिरते झरने किस बात का प्रतीक हैं? (1)  
 (क) नदियों का (ख) चलते रहने का (ग) प्राकृतिक सौन्दर्य का (घ) गिरते रहने का
10. त्रिवेणी में किन-किन नदियों का संगम होता है? (1)  
 (क) गंगा, यमुना और सतलुज (ख) गंगा, यमुना और गोदावरी  
 (ग) गंगा, यमुना और सरस्वती (घ) गंगा, यमुना और झेलम

#### V. उपन्यास पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए (10)

1. 'नया रास्ता' नामक उपन्यास में सेठ धनीमल की पुत्री से रिश्ता करने के लिए सबसे अधिक उतावलापन कौन दिखा रहा था? (1)  
 (क) अमित की माँ (ख) अमित के पिता (ग) अमित की मौसी (घ) अमित की बहन
2. 'नया रास्ता' नामक उपन्यास की मुख्य पात्र 'मीनू' बचपन से ही क्या बनना चाहती थी? (1)  
 (क) इंजीनियर (ख) चिकित्सक (ग) वकील (घ) लेखिका
3. 'नया रास्ता' नामक उपन्यास में सरिता को देखने जाने वाले लोगों में से कौन नहीं था? (1)  
 (क) मायाराम जी (ख) अमित (ग) अमित की माँ (घ) नीलिमा
4. धनीमल जी अपने साथ किस फल की पेटी लेकर अमित के घर आए? (1)  
 (क) आम (ख) कश्मीरी सेब (ग) अँगूर (घ) संतरा
5. सेठ धनीमल अपनी पुत्री को शादी में क्या देना चाहते थे? (1)  
 (क) तीन लाख का एक फ्लैट (ख) तीन लाख की एक गाड़ी  
 (ग) तीन लाख का जेवर (घ) तीन लाख नकद
6. 'नया रास्ता' नामक उपन्यास के पात्र मायाराम जी कहाँ के निवासी हैं? (1)  
 (क) मीरजापुर (ख) मेरठ (ग) हरियाणा (घ) दिल्ली
7. 'नया रास्ता' नामक उपन्यास में मायाराम जी की पत्नी को क्या युक्ति सूझी? (1)  
 (क) अमित का विवाह मीनू से करवाने की (ख) अमित का विवाह नीलिमा से करवाने की  
 (ग) अमित का विवाह आशा से करवाने की (घ) अमित का विवाह न करवाने की
8. '.....' की बातों में मीनू के प्रति विशेष स्नेह दिख रहा था, किन्तु मीनू ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। रिक्त स्थान के लिए निम्नलिखित में से उचित विकल्प चुनें (1)  
 (क) अमित (ख) अशोक (ग) नीलिमा (घ) मायाराम
9. 'नया रास्ता' नामक उपन्यास के पात्र अमित की बहन का नाम क्या है? (1)  
 (क) नीलिमा (ख) मधु (ग) सरिता (घ) आशा

10. 'नया रास्ता' नामक उपन्यास समाज में फैली किस समस्या पर आधारित है? (1)  
 (क) विधवा-विवाह की समस्या (ख) अनमेल विवाह की समस्या  
 (ग) दहेज प्रथा की समस्या (घ) अशिक्षा की समस्या

**VI. एकांकी पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए** (10)

1. 'संस्कार और भावना' नामक एकांकी किस समस्या पर आधारित है? (1)  
 (क) दहेज-प्रथा पर (ख) बाल-विवाह पर  
 (ग) अन्तर्जातीय विवाह पर (घ) घरेलू हिंसा पर
2. 'संस्कार और भावना' नामक एकांकी में माँ को किसके घर से और किसके द्वारा बड़े पुत्र की बीमारी का पता चला? (1)  
 (क) स्वयं के घर में अतुल द्वारा (ख) कुमार के घर में मिसरानी द्वारा  
 (ग) स्वयं के घर में उमा द्वारा (घ) मिश्रा जी के घर में मिसरानी द्वारा
3. 'संस्कार और भावना' नामक एकांकी में अविनाश ने 'संतान का लालन-पालन करना' कौन-सा कर्तव्य बताया है? (1)  
 (क) सामाजिक कर्तव्य (ख) मौलिक कर्तव्य (ग) पारिवारिक कर्तव्य (घ) नैतिक कर्तव्य
4. 'बहू की विदा' नामक एकांकी में राजेश्वरी को ऐसा क्यों लगा कि प्रमोद झूठ बोल रहा है? (1)  
 (क) प्रमोद के हाव-भाव से (ख) अपने पति के स्वभाव की जानकारी होने से  
 (ग) भाई-बहन की बातों से (घ) कमला के बोलने से
5. 'बहू की विदा' नामक एकांकी में जीवनलाल के दुःख का कारण क्या था?  
 (क) बेटे की ससुराल के ताने सुनना (ख) बेटे की ससुराल से दहेज कम मिलना  
 (ग) बेटे की ससुराल से बहुत सारे रिश्तेदारों का आना (घ) बेटे-बहु द्वारा उनका (जीवनलाल) कहना न मानना
6. "अगर हर बेटे वाला यह याद रखे कि वह भी बेटा वाला है तो सब उलझनें सुलझ जाएँ।" कथन के वक्ता और श्रोता कौन हैं? (1)  
 (क) जीवनलाल (वक्ता) और राजेश्वरी (श्रोता) (ख) राजेश्वरी (वक्ता) और जीवनलाल (श्रोता)  
 (ग) प्रमोद (वक्ता) और कमला (श्रोता) (घ) रमेश (वक्ता) और गौरी (श्रोता)
7. 'मातृभूमि का मान' नामक एकांकी किस प्रकार की रचना है? (1)  
 (क) ऐतिहासिक (ख) पारिवारिक (ग) पौराणिक (घ) हास्य-व्यंग्य प्रधान
8. 'मातृभूमि का मान' नामक एकांकी में राव हेमू कहाँ का शासक था? (1)  
 (क) मेवाड़ (ख) मालवा (ग) बूंदी (घ) चित्तौड़
9. महाराणा लाखा और राव हेमू के बीच युद्ध किस मैदान में हुआ था? (1)  
 (क) हल्दीघाटी (ख) नीमरा (ग) कुरुक्षेत्र (घ) पानीपत
10. "अपमान की वेदना में जो विवेकहीन प्रतिज्ञा कर डाली थी, उससे तो छुटकारा मिल ही जाएगा।" महाराणा की इस प्रतिज्ञा को पूरी करवाने के लिए क्या प्रबन्ध किया गया था? (1)  
 (क) बूंदी के राजा की मूर्ति तैयार करवाई गई (ख) बूंदी के सेनापति की मूर्ति तैयार करवाई गई  
 (ग) बूंदी का नकली दुर्ग तैयार करवाया गया (घ) बूंदी का नकली मंदिर तैयार करवाया गया

**उत्तरमाला**

|      |        |        |        |        |        |        |        |        |        |         |
|------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|---------|
| I.   | 1. (क) | 2. (ख) | 3. (घ) | 4. (ग) | 5. (ग) | 6. (ग) | 7. (घ) | 8. (ख) | 9. (क) | 10. (ग) |
| II.  | 1. (ग) | 2. (ग) | 3. (क) | 4. (घ) | 5. (ख) | 6. (घ) | 7. (ग) | 8. (घ) | 9. (ग) | 10. (ख) |
| III. | 1. (घ) | 2. (ग) | 3. (क) | 4. (ग) | 5. (ख) | 6. (घ) | 7. (घ) | 8. (ग) | 9. (क) | 10. (ग) |
| IV.  | 1. (क) | 2. (क) | 3. (क) | 4. (क) | 5. (ख) | 6. (ख) | 7. (क) | 8. (ख) | 9. (ख) | 10. (ग) |
| V.   | 1. (क) | 2. (ग) | 3. (घ) | 4. (ख) | 5. (क) | 6. (ख) | 7. (ग) | 8. (ग) | 9. (ख) | 10. (ग) |
| VI.  | 1. (ग) | 2. (ख) | 3. (घ) | 4. (ग) | 5. (ख) | 6. (ख) | 7. (क) | 8. (ग) | 9. (ख) | 10. (ग) |